



अनुसायन जो भक्तम गृहानाची दिवाकर।)

वर्ष ६६ रोरसमूर, सौर माध, अक्रिका-संवत् ५२१७, जनवरी १९९२ ई॰ पूर्ण संख्या ७८

# भगवान् नर-नारायणकी वन्दना

ताली नामे भगवाने पुरुषाय भूते विश्वास विश्वगृतये पादेवतार्थः। नाराषणाय आवये च नतेशभाष ईशाण संसतनिरे निगमेश्वरायः॥ सङ्ग्रंतं निगम आस्माहःअकातं मुद्धानि एव कवायोऽनपरः सतपाः।

ते वर्षकार्यक्षणवातिकमकीतं 🖮 महापुरुषमास्त्रनि पूरकोधम् ॥

(जीमस्यागात १२।८।४७,४९)

( महर्षि मार्कण्डेमणे कि है—) बावन ! आप अन्तर्याणी, सर्वव्यापक, सर्वस्वरूप, जगदुर, परमराध्य और शृद्धस्वरूप है। समस्त लीक्क और वैदिक वाणी आपके अर्थन है। बाव है बेदणार्गक प्रथमक है। में आपके इस पुगलस्वरूप नरोत्तम स और प्रक्रिक नरावण्यों कारकार करता है। बावे ! वेदणे बावन साक्षास्वर कराविवास बाव पुगलस्वरूप नरोत्तम स और प्रक्रिक नरावण्यों कारकार करता है। बाव आदि बड़े-बड़े प्रतिमाध्यली मनीवी उसे प्राप्त करतेकर यह बाव रहते प्रतिमाध्यली मनीवी उसे प्राप्त करतेकर यह बाव रहते हैं। बाव स्वयं केस सोवते-विवारते हैं, वैसा हो जील ल्याक्य और एप बढ़ण करके बाव उनके सामने बावा हो जाते हैं। यहस्तवर्य अप देह आदि बाव उपाधियोंने किये हुए विद्युद्ध विद्यालयों है है। हे पुरुषोत्तम ! में आपको बन्दना करता है।

## वैदिक स्तयन

हिता जानको हुन्दर्भ गरिकक्ष जानको जानह। तेन जानको पुर्वाचन कर पुरुष जाना तिहा करहा।

अविशः मध्यम्भे नो कुछ में वद-चेतनस्थन बनत् है, तन समस ईसरो जात है। उस ईसरेसे साथ स्वते हुए त्यापूर्वक (इसे ) फेनते खो। (इसमें ) नासक यह होतो, (क्वॉफ ) वय—चोल-पदार्थ विस्तास है अर्थात् विस्तास भी वहाँ है।

षे नो किंदं एं करकः । यं ने कावर्षका । से न इन्हें बुद्धानीः । यं ने किन्तुकारकः । नमे प्रदाने । नमर्गः कावे । नमेन अवर्थ अव्यक्ति । व्यक्ति अवर्थ अद्धा वर्षकारि । वर्ष वर्षकार्थि । वर्ष वर्षकारि । राज वर्षकारि । राज्यकार्यु । सङ्गारमन्तु । अवतु काव् । अन्तु कार्यस्य । अन्तु कार्यकः वर्षकः वर्षकः ।

हमारे रिले (दिन और जार्क अधिक्रात) जिस विका मारणवाद हो ( तथा) ( एते और अपलेष अधिक्रात) अला ( गी) मारणवाद हो। [ यह और सुर्वाण्यातक अधिक्रात) अर्थत हज़रे रिले मारणवादारों हो, ( मार और पुत्राओंक अधिक्रात) हज़ ( तथा) ( जार्न और मुद्राके आक्रात) वृहस्तीत ( एते ) हमारे रिले प्राणि प्रदान भरतेवाले हो। जिस्सा जारणवादी जिला अर्थतात है। इस के प्राणि प्रवास है। इस के प्रवास है। इस के प्रवास है। इस के प्रवास है। ( उन्होंक सभी ऐनाताओंक अम्मानवाद है साले रिले नवस्ताद है। हे जान्त्रेस। इसरे रिले नवस्ताद है। हे जान्त्रेस। इस के प्रवास कहा कहूँगा, ( तुन मारके जाविक्तात है, इसरियो मार प्रवास है। इस मारके जाविक्तात है, इसरियो में तुन्हें) मार मारके प्रवास कहा कहा कहूँगा, ( तुन मारके जाविक्तात है, इसरियो में तुन्हें ) मार मारके मारक जाविक्तात है, इसरियो में तुन्हें ) मार मारके मारक मारक कहा कहा है।

निर्ध देवानापुरावर्गनं वशुर्वित्रक वटनस्थातेः । आत्र व्यवस्थानी अवस्थि : वृर्ध आत्रा जगतसस्युवश्च ॥ यो विकास विकास वृह्य हैं, वित, यस्त क्या और देवाओं एवं व्यवस विवक्ते व्यवस्थित का है और स्थानर तथा अञ्चय सबके अन्तर्वारी आत्रा है, वे पगवान् सूर्व आवरण, पृथ्वी और अन्तरिश्वलेखको अपने जवाशते पूर्व करते वह आवर्षसम्बद्धे वित्ता हो रहे हैं।

> नेद्रकोर्त पुरस्त पहान्तव्यक्तियाणी साहाः परस्तात्। सर्वेत विद्यालयी मृत्यूनीति सामाः कथाः विद्यानेद्रस्तकः॥

मैं आदिता-स्वरूपकारे पूर्वभवातस्य व्यान् पुरुषके, को अध्यवस्तरे क्रांता परे, पूर्व प्रकार। देनेकारे और परमाना है, उनको जनता है। उन्होंको जनकर भट्टम कृत्युको राजि वाता है। सनुष्यके दिन्ये मोश-प्राहिका दूसरा कोई अन्य मार्ग नहीं है।

#### विकारि के प्रविक्तितारि परायुक्त । यद् धारे शक जा सुन त

समल संसारको उत्पन्न करनेवाले—सृष्टि-कलन-संसार करनेवाले क्या क्या देदीयमान एवं जगत्को सुमक्योंने प्रवृत्त क्यांको है परव्यात्कार संवित्त देव ! जान हमारे समूर्य—आधिपोतिक, आधिदैविक, आधिदैविक, आध्यतिक—दुरितों ( कुलावो—पाने ) क्या हमारे दूर—बहुत हुए के आहे, दूर करें, किंदु जो बा ( पराप्त ) है, करनाम है, त्रेम है, बात है, उसे हमारे लिये—विवाके हमा सभी अभिनेति लिये—वारों ओरसे ( मलीपोति ) ले आये, दे—'यद पर्य तार बार सुरा ।'

जसले मा सह गमन । तगरो मा जोतिर्गलन । कुलोबाँउपूर्व गमन अ

🖣 भगवन् । आप 🛗 असरहसे सरहसे ओर, उनसे न्योजियी और 📼 मृत्यूरे 📼 📹 और हे घरते ।

# पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्

(आदित्याद्यसारामृत)

यस्यकृतं दीविकारं विकासं साप्रधं तीव्यवनदिकात्। इतिहानुः स्वाक्यास्तं व वृत्ताः मां तस्तवितृतिस्यम् ॥
स्वयक्षातं देशनयैः सुपृत्ति विदेः सूनं मान्यवृत्तिविकार्। व विकास व्याप्ताः सूनं पुतातः मां तस्तवितृतिस्यम् ॥
स्वयक्षातं सान्यनं वात्रार्थं वैत्रोक्यपूर्धं विगुक्तानक्ष्यम् । स्वयक्षित्विकार्यक्षः पुतातः मां तस्तवितृतिस्यम् ॥
स्वयक्षातं मृद्यतिक्षयेथं प्राप्तः वात्रा वृत्ताः कात्राव्यत् । स्वयक्षात् वेद व वृत्ताः सः पुतातः मां तस्तवितृतिस्यम् ॥
स्वयक्षातं व्यक्तियः विद्वार गर्नातः व्यवक्षात् स्वयक्षित् । व्यक्षात् वेद व वृत्ताः सः पुतातः मां तस्तवितृतिस्यम् ॥
स्वयक्षातं वेदविद्यो विक्तिः नार्वातः व्यवक्षात् । व्यक्षात् वेदव्यवक्षात् वृत्ताः मां तस्तवितृतिस्यम् ॥
स्वयक्षातं वर्त्तवेतः विद्वार वर्तातः वर्तात्वः । व्यक्षात् वर्तात्वः वृत्ताः मां तस्तवितृतिस्यम् ॥
स्वयक्षातं विद्वारम् अस्तव्यक्षात् स्वयतः स्वयतः वर्तात्वः । व्यक्षात्रम् वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः ।
स्वयक्षातं विद्वारम् अस्तवः प्रवतः स्वयतः वर्तात्वः । व्यक्षात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः ।
स्वयक्षातं वर्तात्वः विद्वारम् वर्तत्वः वर्तात्वः वर्तात्वः । स्वयक्षात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तत्वः ।
स्वयक्षातं वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः । स्वयक्षात्वः वर्तात्वः प्रवतः प्रवतः ।
स्वयक्षातं वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः । स्वयक्षात्वः वर्तात्वः प्रवतः प्रवतः ।
स्वयक्षातं वर्तावः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः । स्वयक्षात्वः वर्तात्वः प्रवतः स्वयत्वः प्रवतः ।
स्वयक्षातं वर्तावः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः वर्तात्वः । स्वयक्षात्वः वर्तात्वः प्रवतः स्वयत्वः प्रवतः स्वयत्वः ।

विन भगवान् सूर्यका ब्यान तेजोमन मात्रान विशास, रहाक समान प्रभासित, अनादिकास-स्वरूप, समस्त लोकोंका दुःख-दारिह्य-संहारक 🖁, 🐠 मुद्रो 🕬 करे । 🕼 मनमान् सुर्वका वरेण्य गणान देवसमृहोद्वारा अर्चित, विद्वान् बाह्मजोद्वारा संस्तृत जना साम्बोको मुनित है में बाकिन है, वह मुझे धीरत करे, मैं उसे प्रजान करता है। जिन भगवान् सुर्मका मण्डान अखण्ड-अविच्छेड, अनस्वकप, 🗺 लोकोद्धव पूज्य, सत्व, रज, तम—इन तीनी गुणीसे युक्त, समस्त तेजों तथा प्रकाश-पुक्रसे युक्त है, 🐠 मुझे 🐃 करे । 🕼 भगवान सुर्यका 📶 प्रधान गुढ़ होनेके कारणा अत्यन्त कठिनतासे 💌 🗺 🛔 तथा भागोंके इदयमें भागांक 📹 उत्पन्न करता 👢 जिससे समस्त पापीका श्रम हो जाता है, वह मुझे पनित्र करे। 🔤 भगवान सुर्वका मण्डल समस्त आधि-व्याधियोका उत्पूलन करनेमें आयन्त कुराल है, 🖷 ऋकू, थजु: 🕬 साम—इन तीनो 🕬 🚃 👊 संस्तृत 🖁 और 📖 इस भूलोफ, अन्तरिक्षलीक तथा सर्गालोक सदा प्रकाशित तथा है, वह मुझे बीबा करे। किन भगवान सुर्वक श्रेष्ठ मण्डलको वेदवेसा विद्यान डीक-डीक जनते तथा प्राप्त करते हैं, चारणणा 📖 सिद्धोंका समूह जिसका गांग करते हैं, योग-साधना करनेवाले नोगिशन जिसे प्राप्त करते हैं, वह मुझे पवित्र करे । जिन मगवान् सुर्वका लगान सभी प्राणिबोद्धारा पुकित है तथा जो 🞹 मनुष्यलोकमें प्रकारका विस्तर करता है और जो कालका भी काल एवं अनदिकाल-रूप है, 🎫 पुन्ने पवित्र करें। जिन भगवान् सूर्यके मण्डलमें बहुत 🗯 विष्णुकी आखा है, जिनके नामोच्चारणसे म्हार्येक पाप 📶 📶 जाते है, जो क्षण, कला, बाह्य, संवत्सरसे लेकर कल्पपर्यन्त बालका कारण तथा सृष्टिके प्रलयका भी कारण है, 📧 मुझे पन्ति। किन भगवान् सूर्यकः भणातः प्रआपतियोधी भी उत्पत्ति, पालन और संद्यर करनेमें सवान एवं प्रसिद्ध 🖥 और जिसमें यह सम्पूर्ण जगत् संहत होकर तीन हो जाता है, 🗯 मुझे चीवत करे । जिन भगवान सूर्यका मण्डल सम्पूर्ण प्राणिवर्गकः तथा विष्णुकी भी आत्मा है, जो सबसे उत्पर 🎫 लोक है, शुद्धातिशुद्ध सारमृततत्त्व है और सुक्षम-से-सुक्ष्म साधनोंके द्वारा योगियोंक देवपानद्वारा प्राप्य है, यह युद्दी बाँका करे । जिन भगवान् सूर्यका मण्डल वेदवादियोद्वारा सदा संस्तृत और योगियोको योग-साध्नासे प्राप्त 📷 है, मैं 🗺 काल और तीनों लोकोके समस्त तत्वोंके ऋता उन भगवान् सूर्यको अभाग करता है, वह मण्डल मुझे परित्र करे।

## पुराण-अवण-कालमें पालनीय धर्म

सन्धार्णितसमानुस्त राज्यकार्वेषु व्याच्या । व्याच्याः श्रुवयोशनयाः श्रेतारः पुण्यभागितः ।।
अभवस्य मैं क्रमां पुण्यं शृज्यन्ति मनुवाक्यमः । तेलं पुण्यक्ति नस्ति दृःसं व्याज्यक्रयमितः ॥
पुराणं वे व सम्बूत्य राज्युक्तदेक्तयमैः । शृज्यक्ति व व्याच्या वर्षा व्याच्या स्वयदः ॥
सामाणं वर्षार्थमानायां में ग्राव्यक्तयाते नतः । भोषायारे व्याच्याता तेषां व्याच्या सम्बदः ॥
सोम्पीयमसस्त्रा ये व व्याच्या शृज्यक्ति भावनीय् । ते व्याच्याः प्रशासने व्याच्या मनुवाक्यतः ॥
साम्बूतं प्रशासने ये व्याच्या शृज्यक्ति व्याच्यात् । व्याच्या व्याच्याः ।
ये व तृष्ट्वासनायवाः क्रमां शृज्यक्ति व्याच्याः । अञ्चल्यक्तान् पुण्यक्ति व्याच्याः ॥
से वै व्याच्याच्याः वे च व्याच्याक्तिकाः । शृज्यक्ति सन्द्रमां वे वे व्याच्याद्वित्यादयाः ॥
असम्बर्धस्य गृज्यक्ति विवयक्ता स्वाच्यं वे । तथा प्रव्यानः शृज्यक्ति व्याच्याव्याः । सा

जो लोग अद्धा और पत्तिनों सन्तम, अन्य कानीकी त्यात्मासे रहित, चीन, पवित्र और शानाचित्तसे (पुरानकी कामको) अपने करते हैं, वे ही पुण्यके भागी होते हैं। जो अपने मनुष्य पत्तिन्तित होकर पुण्यकथाको सुनते हैं, उन्हें पुण्यकत तो मिलता नहीं, उत्तरें प्रत्येक काम सुनते हैं, वे लिखेरेह होति व्यक्ति अर्थात प्रत्यान होते हैं। जो मनुष्य काम हिते समय अन्य कामेंकि तिने वहाँदि उठकर अन्यत्र जोते हैं, जे लिखेरेह होति वालीक अर्थात यह हो बाती है। जो पापी अध्यम मनुष्य मस्तकथर पाड़ी करिका (या दोपी लगावर) पाँका कथा सुनते हैं, वे अपनत होवार जाया होते हैं। जो लोग पान प्रवाते हुए पवित्र कथा सुनते हैं, उन्हें कुतेब्स कल भश्यक करना पहला है जीत बनवूत उन्हें प्रमुखी के जाते हैं। जो होगी मनुष्य (प्यासासनते) जिले अस्तवपर वैठकर कथा मुनते हैं, वे अथ्यय नरखेका भोग वनके कीआ होते हैं। जो लोग (व्यासासनते) जिले आसनपर अथवा मध्यम असनवर वैठकर तथा मुनते हैं, वे अथवा नरखेका भोग वनके कीआ होते हैं। जो लोग (व्यासासनते) हित्र आसनपर अथवा मध्यम असनवर वैठकर उठाय कथा लगा करते हैं, वे अर्थाव वरखेका होते हैं। (जो मनुष्य पुरावकी पुराव और आसको) विश्व प्रचान विवे ही कथा मुनते हैं, वे अपनार साथ होते हैं। वे लोग स्वात होते हैं। वे अपनार साथ होते हैं।

पः नृत्योति कामां पहुः सनानासनसंक्षितः । पुरस्तानसमं कार्य सम्बद्धाः प्रकार सम्बद्धाः प्रकार । ये निन्दानि पुरायदान् समा वै अवदारितीत् । ते वै अवदार्त कार्यः प्रकार सम्बद्धाः । समावित् है ।। कार्याविद्यि वै पुरस्त न नृत्यानि कार्या नातः । ते पुरस्ता नरकान् केरान् ध्वापः वनसूकताः ।। ये कामामनुत्योदाने वर्ताव्याना निर्वादानां निर्वादानां निर्वादानां । अवद्यापाने वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । अवद्यापानां पुरस्ता प्रवादाः प्रकार प्रवादाः प्रवादाः । वर्ताव्यानां प्रवादाः पुरस्ता प्रवादाः प्रवादाः । वर्ताव्यानां प्रवादाः पुरस्ता प्रवादाः प्रवादाः । वर्ताव्यानां प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः । अवदादानिर्वादाः प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः । वर्ताव्यानां प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः । वर्ताव्यानां प्रवादाः प्रवादाः प्रवादाः विद्यानां । वर्ताव्यानां प्रवादाः विद्यानां प्रवादाः विद्यानां व्याव्यानां प्रवादाः विद्यानां व्याव्यानां विद्यानां । वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । विद्यानां व्याव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां । वर्ताव्यानां वर्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्ताव्यानां वर्यानां वर्याना

इसी प्रकार को वत्ताको समान अस्तनपर बैठकर कथा सुनका है, वह गुरु-सच्चा-गमनके समान पापका भागी होकर तरकंपामी होता है। जो मनुष्य पुराणीके इतता (ज्यास) और बार्चिक हरण करनेवाली ब्याची निन्दा करते हैं, वे सौ जन्मेतक सुकर-योतिमें उत्तप होते हैं। को मनुष्य इस पुष्य ब्याची बची भी नहीं सुनते, वे घोर करकोका भीग करके वनैले सुनार होते हैं। वो नरश्रेष्ठ कही जाती हुई कथावन अनुमोदन करते हैं, वे कथा न सुननेवर में अविनासी परम पदको प्राप्त होते हैं। को दुष्ट कही जाती हुई कथामें विद्य करते हैं, वे करोड़ों क्योंक नरकोका कोग करके असमें द्याचीण सुश्रर होते हैं। जो लोग सामारण पनुष्योंको पुराणसम्बन्धी पुष्य कथा सुनाते हैं, वे सौ करोड़ कल्लोसे भी अधिक समयशक ब्रह्मलेकमें निवास करते हैं। जो मनुष्य पुरायके इतत बखाको आसमके सिये कम्बल, मृत्यवर्ग, बस्न, सिहासन और चौको प्रदान करते हैं, वे व्यर्गलेकमें जकर अधीष्ठ धौगोश्न उपचेश करनेके बाद बहा कादिके खोकोंमें निवास कर अनामें निरामय पदको प्राप्त होते हैं।

पुराणस्य अवस्थाः ये वरस्तरपृष्टसम्। योगियो इत्यास्त्रस्य सामि सामि पर्ते । ये स्थापातकैर्तृतः अवस्थिति से । पुराणस्यास्त्रेतं से प्रयाणि सर्व पर्दाण पृत्यास्त्रः । पुराण योगान् वर्णस्य विकृतोकं प्रयाणि ॥ । पुराकं पूर्वित प्रशान् वर्णस्यात् । पुराकं पूर्वित प्रशान् वर्णस्यात् । सामि । । सामि प्रयाणस्य पर्वाणस्य पर्वाणस्य । सामि । । सामि प्रयाणस्य पर्वाणस्य पर्वाणस्य । सामि । । सामि प्रयाणस्य प्रशानस्य । सामि प्रयाणस्य पर्वाणस्य पर्वाणस्य । प्रयाणस्य पर्वाणस्य । सामि प्रयाणस्य प्रयाणस्य । सामि प्रयाणस्य पर्वाणस्य पर्वाणस्य । सामि प्रयाणस्य पर्वाणस्य पर्वाणस्य । सामि प्रयाणस्य पर्वाणस्य पर्वाणस्य । प्रयाणस्य । प्रयाणस्

इसी तरह को रहेग पुराजकी पुराजकी किये उसम लेड अध्यक प्रदान करते हैं, ये सावेक जन्ममें पोगीवा उसमोग करनेकाले एवं इसमें होते हैं। यो महापादकीमें पुरा अवका उपकारण होते हैं, ये सावे पुराजकी कथा सुनित्ते हो परंग परको प्राप्त हो जाते हैं। यो महापादकीमें प्राप्त विकानीकानमें पुराजकी कथा सुनात है, यह खेळालुकार भौगोको धोगकर विकानीकानमें परंग जाता है। यानकी समाप होतेकों भोगा पुरा प्रचानकी कथा सुना करें। समझाप सहायक महापादकीय पादकारों पूर्वा करें। उस समय बावकारों मी, पूर्वा, सोच और कक देश व्यक्तिये। सहस्रवाल महापादकी महार्थ, ताहु और जीवक केवन कराय व्यक्तिये। सहस्रवाल कावकारों प्राप्त हों हों। सावकार परंगा करते हों। सावकार परंगा करते हों के स्वत्त करें—'आप व्यवस्था' प्राप्त हों हों। इस प्रवार कावकार, प्रचार कराय है, असकार कृत्य है। यो मनुना इस प्रवार कावरपूर्व करात है, वह साव परंगा है। यो विकास व्यवस्था कराय है, वह साव परंगा है। यो विकास व्यवस्था कराय है, वह स्वता कराय है, वह सुराज-अक्षणका सम्पूर्ण एक परंगा है।

पुराण-महिमा

व्यासनीत्वाचेतः स्तृतिचेते पृक्तन्ते ॥ स्तृतिचेतः विनाचेतः पुराचेतु अस्तिः । पुराचपुरावाकातं वर्णतं जनसङ्ख्या ॥ सर्वेदं व्यापं वर्णा पुराचेत्वते व संस्थाः । य वर्षा व्यापनाति व सुद्धिः कार्व्यतिकति । तिनिवृद्धिकृत्वे सात्रा सर्वयतिकति । इतिहासपुराचेत्व विकालेत्वां सुन्तः पुरा । वशा दृष्टं वि कोतु व्यापनं स्तृत्वते । उत्पन्निक दृष्टं वि कार्युक्तीः प्राचीतते ।

(Mr. P., IV, Mr. RY)

यत्र एवं कर्मकानको तिये केंद्र प्रमाण है। वृहरानोंके दिन्ने स्वृतियाँ ही प्रमाण है। किंदु केंद्र और स्वृतिकान (धर्मजाना) रोनों ही सम्यक् रूपसे पुरानोंने विकास है। वैसे प्राप पुरान परमाणको का अनुत कात् उत्पन हुआ है, वैसे ही सम्पूर्ण संस्मापक प्रमुख—स्वतिय पुरानोंसे ही उत्पन्न है, इसने तैकाना भी संस्था नहीं है। वेदोने तिथि, नवाद आदि कारू-निर्वाधक और प्रह-संवादको कोई युक्ति नहीं बतायी गयी है। विधियोगी वृद्धि, क्रय, पर्व, प्रकृत व्यविकास निर्वध भी उत्पन्न महिं है। यह निर्वित सर्वध्यम इतिहास-पुरानोंकि हार ही निवित्त किंवा क्या है। जो बाते वेदोने नहीं है, वे सब स्वृतियोगे हैं और जो बाते होनोंने नहीं मिलतों, ने पुरानोंके हार हम होतो है।

## 'भविष्यपुराण' — एक परिचय

भारतीय व्यक्तपर्मे प्राचीका एक विक्रिष्ट रखन है। इनमें बेटके निगृह अधीका स्पष्टीकरण 🖹 🖹 🛍 कर्मकरण, उपासनाकाण्य तथा अनमाण्यके सारताम विश्वासे साध-साथ क्यांविकाके ह्या ज्याच्या करताचे 🗯 गृह-से-गृहतम क्या हरवाहम कर देनेकी जरनी अपूर्व विशेषता भी है। इस यूनमें धर्मको रक्षा और ब्रांकिक मनोरम विकासका जो परिवेरिक दर्जन हो रहा है, उसका समस्त क्षेत्र पुराण-साहित्यको हो है। वहताः पारतीय संस्कृति और साधनके क्षेत्रमें कर्म, ज्ञान और मर्किनक मूल जोत केंद्र क श्रीतको हो माना गया है। येद अवीतकेय, निस्त और ततने भगवान्त्री राज्यमंथी मूर्ति है। सक्ष्यतः वे भगवान्ते साथ अभिन्न हैं, परंतु अर्थकी चृष्टिमें केंद्र अरकत दुक्छ भी है। जिनका प्रष्ठण रायसको जिला भारे किया जा राजा । ज्यारा, प्तरचीकि आदि ऋषि तरस्यक्रम ईश्वरकृष्यमे हो वेदका प्रकृत अर्थ जान पापे थे। उन्होंने यह भी जाना था कि समत्के करणामके लिये केंग्रेस निगृह अर्थका प्राप्त करोच्ये बावप्रवास है। इस्तियं उन्होंने उसी अलेके आण प्राचने पुराण, समामन और महाभारतके हार तकर किया है होती शाधीमें पक्ष है कि रामधन, जाना और पुरानेधी सहायक्षासे बेटीका वर्षे सम्बन्ध चारिये-- इतिहास-पुराणाच्यां तेरं प्रस्कृत्वंहचेत्।' इसके साथ इतिहास-पराणको बेटीके अस्ताल पहल बेटके रूपने बान गया है। छन्दोग्योपनिषद्भे नारद्यीने सनरकुमारश्रीके 🕮 है---'स क्षेत्राच ऋषेतं वनवोऽध्येषि चक्रवि : सामवेदनावर्वधे चतुर्वनिविद्यासन्दर्भानं वद्यानं वेदानं बेह्मर ।' 'मैं ऋग्वेद, यजुनेंद, सामवेद तथा चीचे अवाचिद और पाँचवें केंद्र इतिहास-पूराणको जानता है।' इस प्रकार पुराणेकी अनादिता, माणीयका जब महरूपपताका वर्षे उल्लेख 🖁 और 🛲 सर्वश 🚟 तथा यथार्थ है। चम्बान् व्यासदेवने प्राचीनराम पराणका प्रकास और सदास किया है। वस्तृतः प्राण अनादि और नित्य है।

पुराणोमें पत्ति, ज्ञान, वैराम्य, सदाचार तथा सकाम एवं निकारमकर्मकी महिमाके साथ-साथ यज्ञ, 💷, दान, 🖜 वेलंदियन, देवपूजन, श्राद्ध-सर्पण आदि आक्रांपितित पूण कर्मोंने जनस्वधारणको प्रवृत करनेके रित्ये उनके लीकिक एवं पार्ट्डीकिक करनेका भी वर्णन किया गया है। इनके अतिरिक्त पुण्योंने अन्यान्य वर्द विक्यंतिक सम्मावेश प्रथा जता है। इसके प्राण ही पुण्योंकी कत्याओंने असम्माव-सी दीसनेवाली पुष्ण करे परान्य विदेशी-सी भी दिसानी देती है, जिसे लाल्य अञ्चलके पुण्य करन्यनिक मानने लगते हैं। परंतु यक्षार्थने वर्जी ब्या वर्स है। यह ब्या है कि पुण्योंने कर्हों-कर्डी ज्यानिकता हुई है कि विदेशी तथा विद्यानिक आक्रांपन जल्यापाली बहुतसे लेख जाव वपरत्वा भी नर्डी है। इसी तरह कुछ अंदा बहिता भी हो सकते हैं। परंतु इससे पुण्योंकी मुक्त महता तथा प्राचीनताने कोई कथा नहीं आती।

'भविष्णपुराण' जाता महापुराणेके कारार्गत एक पराण्यूनी भारता हुए हैं, इसमें कर्म बाराम है। महापि है, जिसे पद-सुनकर प्रमानन होता होती है। प्रक्रियपुराणके अनुसार इसमें प्रकास हजात उत्तेक होने पाहिषे; प्रमान आहर्तन सहसा उत्तेक हो इस पुराजमें अपलब्ध है। पुना अन्य पुराजोके अनुसार इसको उत्तेक-संबना साथे पीयह बाला होनी पाहिषे। इससे यह प्रतीत होता है कि जैसे विल्युपुराजनी इत्तेक-संबन्ध विल्युधनीतरपुराणको साम्पितित करनेते पूर्व होती है, वैसे ही प्रधानपुराजनी प्रविच्यपुराजको उत्तरन है। इस क्या मुख्यकरको हम, दान व्यं उत्सवोंका ही वर्णन है।

वस्तृतः विशेष्णपुराण स्वैर-प्रधान अन्य है। इसके अध्यात्मृदेव गणवान् सूर्ण है, वैसे वी सूर्यनारमण प्रत्यक्ष देवता है जो प्रकारकोंने परिणानत है और अपने शामोंके अनुसार पूर्वतात्मके वांची प्रतिवित है। दिजमायके रिज्ये प्रातः, व्याप्ता एवं सार्वतात्मको संव्यामें सूर्यदेवको अर्थ्य प्रदान करता अभिवार्य है, इसके अतिरिक्त को तथा अन्य आश्रमोंके रिज्ये जो निवारत सूर्यार्थ्य देवेको विधि बतरसमी गयी है। आधार्यकार और व्याप्तिक रोग-प्रकेष, संवाप आदि

सांसारिक द:रहेकी निवृत्ति भी सूर्योपासनासे सदा: होती है। प्रायः पुरानोमें शैव और वैकावपुरान ही अधिक प्राप्त होते हैं, विक्वें शिक और विक्कि पहिमाना विशेष कर्पन मिरावा है, परंतु पगवान् सुप्रदेशकी चीवनाः विस्तृतः 📫 🗂 पुराजने उपलब्ध है। यहाँ पगायन् सुर्वनश्चकाओ जगरकता, जनारवास्त्र एवं जगलंहारक पूर्वका परमारको रूपवें प्रतिक्रित किया गया है। सुर्यक यहनीय स्वरूपके साथ-साथ ठनके परिका, जनकी उत्तहत कवाओं राख उनकी जानाक-प्रक्रांतका कर्णन भी यहाँ उपराज्य है। उनाय दिन पूल कर है, उनकी पुजाविधि क्या है, उनके आयुध-- व्योगके जाता तया उनका भारतस्य, सूर्व-नमस्कार और सूर्व-प्रदक्षिणायो विशेष और वसके फल, सूर्वको दोप-दानको लाख 🖮 मीपा, राजी साथ ही सीरधर्म एवं दोलाबी विकि आदिका महत्त्वपूर्ण कर्नन हुआ है। इसके बाब ही सुनिक विराह सक्तपंत्र कर्णनं, प्रदश्न मूर्तिनीका वर्णन, सुर्याच्यार तथा धरावान् सूर्यको रक्षणाम अवदिका विकिन्न प्रतिकारम हथा है। सुर्वको उपासनामें ब्राह्मेको विस्तृत पार्चा विराती है। सुर्वदेवको तियं तिथि है 'सामी'। बात विरोध पराभवियोके साथ भागों विभिन्ने अनेक वर्ताचा और उनके उदायनेका वर्ता निस्तारसे वर्णन हुआ है। अगेक सीर तीचीक भी वर्णन विल्ले है। सूर्वोपसक्तमें पानशुद्धाको जानक्वातान्य निर्मेन बर दिया गया है। यह इसकी मुख्य करा है।

इसके अतिरिक्त लहा, गर्नेश, कार्तिश ता अति आदे देवीक च वर्षन जान है। जिल्ला लिंग्से और नवार्ति अधिहात-देवताओं तमा उनकी कुलके फलका च वर्णन निरुता है। इसके साथ ही बाह्यकर्षि बहायरिकर्वका निरूपण, गृहस्थार्थका निरूपण, माता-पिता तमा अन्य गृहज्योंकी महिमाका वर्णन, उनको अधिवादन कर्मन किए, उपनयन, विकाह आदि संस्कारीका वर्णन, सी-पुरुवेकि सामृद्रिक सूच्याश्चान-रुक्ता, कियोक कर्मण, वर्ण, ब्याला और उसम व्यवहारकी वार्ते, बी-पुरुवेके पारस्परिक व्यवहार, पश्चमहायसीका वर्णन, बार्लिकरोब, अतिविस्तरकार, क्यांक्र विभिन्न मेट, मान्-चित्-जाट, आदि उपादेश विषयोगर किर्मान में उस्तान मिलता है, किसके साथ नागंकी उर्जात, अमेरि लक्षण, लक्षण और विभिन्न जातियाँ, सर्वेत काटनेके काम उनके किर्मान मेंग और उसकी विभिन्न आदियाँ, सर्वेत काटनेके काम वर्णन पार्ट उनलमा है। इस पर्वेकी विशेषता पह है कि सभी काम उत्तान अम्बद्धलाओं हो विशेष प्रमुखता दी कर्म है। बोर्ट के मान्स कितन में विद्वान, वेदाध्यायों, काम तथा उत्तान जातिया कर्में न हो, पदि उसके उम्रावरण वेद्या, उत्तान कर्म है। हम पर्वेकी क्षा मान्स्ता। लोकों तथा उत्तान जातिया कर्में न हो, पदि उसके उम्रावरण वेद्या, उत्तान कर्म है। हो वह सेत्र पुरुष नहीं कहा जा सकता। लोकों तथा और उत्तान पुरुष ये ही है को सदावारों और सत्तानकार्यों है।

चरित्वपुरावने बाह्यकाँ बाद मध्यमपर्वका प्रारम्भ होता है। विकामें लुटि रामा गात कर्म्म एवं सात पाताक लोकोका कर्मन हुआ है । अमेरिकार तथा चुनोएके अर्थन भी गिराते हैं । इस कोर्ने नरकराजी महत्वीके २६ दोन बताये गये हैं, किसे त्यपार सुद्धापूर्वक महत्त्वको इस लेखाई रहना चाहिये। प्रशासि कामनी विकि तथा प्राण-मध्यमको महिमाका क्यों की का प्राप्त होता है। प्रत्योंको अद्या-मसिप्पर्कक सुलोरे ब्हाइट्य कार्ड अनेक पापेसे मृति गिरुती है। जो अतः स्त्री तथा सार्थ चरित्र होबार पुराणीका समय करता है, क्रमा अवत, विक्यु और दिला असम हो जाते हैं<sup>र</sup>। इस क्रमी इक्टर्रकर्मक विकास अस्यात समावेको साथ निम्म गमा है : बो कर्म अनसम्ब 🖁 तथा निष्यमधावपूर्वक किमे गये 🚅 🗻 स्वयाधिक रूपसे अनुवर्गाभतिके रूपमें किये गये सरिकारण असी जेंग कर्ष अन्तर्वेदी कर्मीय अन्तर्गत आते हैं. देश्ताकी स्थापन और उनकी पूजा, कुओं, पोपाय, वास्तव, बायली कादि सुद्धाना, वृक्षारोपण, देवालय, धर्मसाला, उद्यान अर्थी: तमावाना राष्ट्रा गुरुवानोंकी सेवा और उनको संतर करन-ने सब किया (पूर्त) कर्म है। देवालयेंके निर्माणको विकि, क्रिकालको प्राप्त करेन छन्। रवापना, प्रतिहाकी कर्तव्य-विधि, देवताओंकी पुजापद्धति,

१-स्तिकारहरूको सुरूप कारण दिलेक्ट । जुल्हो व्यक्तियो स्थानकारो प स्था। सम्बं प्रकारण को पुणिकृत कृति १० । उस्त विनुद्राता स्था कृत्यो स्टूप्सान्य ॥

उनके प्यान और मन, यन्त्रोंके ऋषि और सन्द—इन समोपर पर्याप्त निरोजन विस्था गया है। प्रमाण, कया, मृतिका, तसा, राम पूर्व करना नोत पातुन्त्रोंसे मनी उत्तर्ग रुवानोंसे मुक प्रतिभावत पूजन करना जीवकार पाना क्या है। इसके साथ संग तालाव, पुष्पतियों, तार्व तथा प्रवन निर्माण-पद्धति, गृहकाल्-प्रतिद्वाको स्था, पुष्पतानुने क्या देवताओंकी पूजा को बाय, इस्तर्दि विक्योगर भी प्रकार रुवान गया है।

वृत्तरोपण, विकास प्रकारके कृतीकी प्रतिक्रमा विकास तमा गोचरपुरिको प्रशिक्ष-सम्बन्धे चर्चाई श्रेरतके है। 🖻 व्यक्ति क्रया, फूल तथा फल देनेवाले नुवर्तेका 🔤 📟 है या करिने तथा देवालयमें वृक्षोंको एकाला है, यह अपने नितान्त्र वर्ध-से-बर्ध कार्य करता है और प्राप्यन्त उस मनुष्यकोको नकते बहत तथा सुध गाँउनको प्राप्त करता है। जिसे पुत्र नहीं है, उसके रिप्से कुछ ही पुत्र है। पुनारोपगकराचिः लेकिक-परलेकिक कर्ने पुन से करते एतं है तथा उसे उत्तम शोक प्रधान करते हैं। यदि कोई असरप पुरुषा आरोपण करता है तो नहीं उसके रिप्पे एक लाक पुत्रोंसे भी बदकर है। अखोक वृक्त लगानेसे कभी छोक नहीं होता। मिल्म-मृक्ष दीर्थ असुच्य प्रदान करता है। साम्रे प्रकार अन्य वृक्षीके रोपणको विक्रित पराज्ञतिर्ध आयो है। समी मामुरिक कार्य निर्वित्ततापूर्वक सत्यन हो जाने सथा शान्ति-पह त में। इसके तिये बह-शान्ति और वातिका अनुद्वानीका भी हुसरी कर्णन मिलान है :

भविष्यपुरानके इस पर्वमें बर्गवरायका थी लिए लिए अथा होता है। लिए महोका विषयन, कुम्ब-निर्वाणकी योजन, भूष-पूजन, अधिरांस्थापन एवं पूजन, काहि अमेरिक स्थाल-निर्वाणका विषान, कुस्त्रकविष्यत-विषि, होगहरूकोच्या वर्णन, यहपात्रीका काला और पुर्वाणुकिको लिए, सहादिकामी दिशाणका महस्त्रमा और लाख-गामा आदि विधि-विष्यानीका विस्तारपूर्वक वर्णन लिए स्था है। सामाजिहन कहाँद कार्य दोसानावहत हो बर्गवण्याका कभी नहीं करना चाहिये। ऐसा यह कभी सपक नहीं होता। जिस यहका जो साम बतलाया गया है, उत्तरिक अनुसार करना चारिये ।

इस करने और जाद परिवर्षक दर्शनका विशेष पर में वर्षित हुआ है। पयूर, कृषम, सिंह एवं क्रीस और करिका परिं, जोली और कृषपर पूरुसे भी दर्शन हो साथ तो उसको प्रमुख्या करना चाहिये। ऐसा करनेसे दर्शकके अनेक क्योंके पण नष्ट हो जाते हैं, उनके दर्शनकासे कर तथा आयुक्त कृदि होती है।

कोई वो कार्य देशकार्य यह रितृकार्ग निया समयपर किये कर्मपर काराके अवकारण ही पूर्णकर्पन फाराबद होते हैं। समयके किया की गयी क्रियाओंका कोई काल नहीं होता। कारा कार्यायमान, मास-विकासन, तिथि-निर्मीय एवं वर्षभरके विशेष कर्मों तथा विकियोंके पुण्यानद कुरवेचार विकेशन भी इस कर्मी साम्रोपालुकारणे सम्पन्न हुआ है। को सर्वसाध्यरणके

अपने पार्ट गोन-प्रकारों जाने किया दिया गया कर्ने क्रिकेट क्रिकेट हैं। समान गोकने विचाहारि क्रिकेट क्रिकेट हैं। स्था प्रकारकार्क प्रस्पायके आगंधा अस्यया क्रिकेट हैं। अपने-अपने गोज-प्रवासके पिता, अस्यया प्रकारकार्क प्रकार प्रकार क्रिकेट हम क्रिकेट प्रकारकार्क प्रकारकार प्रकार क्रिकेट हम क्रिकेट

व्यक्तपुर्वामें व्यवपायकि कर प्रतिसर्गवर्ग कर कारोंगे हैं। प्रायः अन्य पुरायोगे सरवपुण, हेता और प्रायके प्राचित राजानीक इतिहासका कर्णन मिलता है, परंतु कार्यापुरायोग कार्युनिक इतिहास भी मिलता है। परिवारुगयके विकास नामको सार्यकरा परिवारुगयके विकास परिवार, तेरावुगके प्रथम कार्यापुरायके वर्णन, हायरपुणके वन्त्रवंत्रीय कार्युगके कार्युगके कार्युगके वन्त्रवंत्रीय कार्युगके वर्णुगके वर्णन, हायरपुणके वन्त्रवंत्रीय कार्युगके वर्णन है। इसके कार्युगके वन्त्रवंत्रीय कार्युगके वर्णन है। प्रश्लाने राजा प्रायक्त कुरुश्चेक्में मह कार्युगके प्रवास्त्रवं राज्य विकास कार्युगके वर्णना कार्युगके कार्युगके वर्णना कार्युगके वर्णना कार्युगके कार् वृद्धरी इच्छा पूर्ण होगी। इस करदानके जणावसे आदम नामके पूरम और समावती (होया) जान्यी व्यक्ति मरेन्यानंदर्वेची वृद्धि हुई। करिन्युगके तीन हजार वर्ष व्यक्ति होनेपर विक्रमादित्यका आविर्णाय होता है। हसी वाला रहानिकर वैद्यारकर जानम होता है, जो विक्रमादित्यकरे कुछ कवाई सुनाता है और इन कवाओंके व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्तिक दिखा भी जदान करता है। विक्रमादित्यकों गर्मी इन कथाओंका संग्रह 'वैद्यारम्याविद्यमि' व्यक्ति 'वेद्यारम्योदाने' क नामने सोक्से प्रदिश्व है।

प्रतके का संगायसम्बद्धां कवाचा करें है। नारतकारी प्रारम्भावनमात-कना कामण प्रार्कात है और इसला असर-जन्मर पी सर्वाधिक है। पासीय सनावन परमारों किसी भी महाराज कार्यका लागा परावान गणपतिके पूजनसे एवं उस जार्रांची पूर्णता चणकप् सर्वनारायणके कथाव्यणके प्रापः राज्यों जाते है। भविष्यपुराणके प्रतिसर्गपानि पर्गावन् सरवक्तपानात-कथाका उल्लेख का लियाची जा है। यह कथा रकारपुरणको सर्वालतं कथासे नित्तती-गृतको होनेपर 🖷 निर्योग रोजक एलं श्रेष्ठ असीत होती है ३ वालावने इस न्यापनय र्मसारको पास्तविक सरा हो है हो नहीं-'मानके विकार भाको माध्यको विकास सक्तः ।' परमेश्वर ही विकासमाधिक सत्य में और एकमात्र बार्ड ध्येप, क्रेप और उपाय है। हान-नैराय और असथ जिल्हें हुए को साहारकर बन्ने योग्य है। यसकः सरम्बाधनमञ्जूषा कार्य का सह संविद्यनन्द प्रामालानां आराष्ट्रभसे हो है । निष्याण उपासनासे सरपत्तक्य नारायणको प्राप्ति हो हो है। सहः त्रदा-परिपूर्वक पूका, जनावाल एवं त्रसद आदिके हा। का सरपक्षकप परवदः परमाना भाषान् सर्वनायमान् उपासनासे स्त्रभ उठाना चाहिने।

इस सम्बन्धे अस्तिम अध्यानीने पितृतार्था और उनके नेप्तमें उत्पन्न होनेवाले व्यक्ति, बीमानाम, पाणिन और करसीन आदिकी रोचक कम्पाएँ प्राप्त होती हैं। इस प्रकरणने नामकरियमंकी विधिन्न व्यानमाएँ करते हुए नाम कहा गया है कि 'जो गृहस्थापर्मि एहता हुआ बितारी, देवसाओं और अतिथियोंका सम्मान कमा है और इन्द्रियसंख्यपूर्वक महाकारमें ही पार्थका प्रकार करता है, वही मुक्य स्थानित संकार का इन ज्', 'मह कु क्' इरवाद चतुर्रश स्थानित संकार 'मह व ज्', 'मह कु क्' इरवाद चतुर्रश स्थानित स्थान महाना महाना प्रकार करता करता करता उन्हेंने स्थानित संकार का महान् लोकोपका किया ! तदकार केपदेशके परित्रक प्रसंग तथा सीमस्यग्वतके स्थान प्रकारकी महारूपमें स्थानको स्थानको स्थानको स्थान करता, प्रकारकी महारूपमें स्थानको प्रकार स्थानको स्थान

पविष्यपुराणके श्रीतसर्गणवंत्रत दोसरा कच्छ रामांदा और कृत्योग अर्थात् आरक्ष और कदल (बदगरित) के चाँत तथा जयजन्द्र एवं पृथ्वीराज जीवरगको बीरगाधाओं से परिपूर्ण है। इचा भारतमें जागनिक भारतीयत उपरासमा वीरकान्य का कार्यक है। सम्बंध सुन्देलकाची, भोजपूरी अबंद का संस्कृत है, किन्में बलाओंक बोदा-बोदा के है। इन कवाओंका पुरु वह जीतसर्पवर्ष हो प्रतीत होता है। प्राय: ये कथाई रचेकरकाके अस्तार अविज्ञामेंकियर्ग-सी मतीत होती है, कियु ऐतिहासिक दहिये यहत्त्वकी भी है। इस सम्बर्ध द्या जारिकादन तथा ईप्रतमसोहको सभा भी आधी है। एक प्रमय सकार्यात प्रातिनकानने विभागिकारपर गीर-काफि एक सुन्दर पुलको देखा, जो बेद बच्च घरण किने या। इक्तरजबो विकास करनेक वस पुरुषने अपना परिचय हैं। हुए अपना का देशमानी कराया । साथ ही आपने शिक्कणीका भी संकेपने वर्णन स्था । अस्विकास्थले वेशमें अस्तिम दसने गावा भोजराज हुए, जिनके साथ प्रसादकी बावाला भी क्यांन मिलवा है। एक चोवने महस्वल (मदीन) में प्रिश्त नहादेकका दर्शन किया तथा प्रतिस्थावपूर्वक पुजन-स्तृति की । थगवान् क्षियने प्रकट लेकर ग्लेक्कोरे इतित ॥स स्थानको त्वागकर महावरकेवर 👫 जानेकी आजा प्रदान की। कदनना देखान एवं कसायन आदि राजाओंके आविर्धावकी क्या तथा इनके वंजने होनेवाले कौरवांज एवं पाण्डवांजीके रुपमें क्षा राजवंद्रीक विवरण प्राप्त होता है। कौरवोद्रीकी पत्रका और पाण्डमोशीकी विजय होती है। पृथ्वीराज चीवनको बीरपति का होनेके जन्मा सहोडीन (मृहम्मद

गोरी) के द्वारा कोतुकोदीनको दिल्लीका जासन सौंचकर इस देशसे भन स्टब्स्ट से जानेका विकास जात होता है।

प्रतिसर्गपर्वकर अस्तिम चतुर्व कन्त्र है, विसमें सर्वकथम करियामें जना आनवंदीय रुजनोंके बंहास परिवय मिलता है। जवनना राजस्ताना तथा दिल्ली नगरके राजवंशोंका इतिहास पात्र होता है। राजवानी मुख्य नगर अजमेरकी कथा गिराती है। अक्ना (अब) ब्हार्क हार र्राकत होने तथा माँ लक्ष्मी (रमा) के जुनानमनले रूप क त्यणीय हुए नगरीका नाम अञ्चलेर हुआ। हुनी सकार राजा जयसिंहने जयपुरको बसाया, जो भारतका समीधिक जुल्हर नगर माना प्राप्ता है। कृष्णकर्मकि पुत्र करको कदयपुर नायक गार बसाय, बिस्ता। प्रयुक्तिया सीन्दर्य अस्त भी दर्शनीय है। काम्पनुस्त नगरको कथा भी अञ्चल है। एका बन्तको तपस्थाने मगानती कारव करून होकर कन्करणार्थे केन्द्रकटन करते हुई अप्रति हैं। उस कन्यने काइन्कपने कर नगर पात प्रमानको प्रदान किन्त, विस्त कारण इसका नाम 'कान्यपुर्वा पदा । इसी प्रकार निजयुक्तका निर्माण भी भगवातीके जसादसे ही हुआ। इस स्थानको विशेषता यह है कि यह देवताओंका त्रिय नगर है, यहाँ करिका अवेश नहीं से सकता। इसीरिओ बारता जल 'करिंगर' भी नहा गया है<sup>5</sup>। 🗺 प्रकार बंगालके एवा भोगकाकि पुत्र कार्तिकानि न्हालालेकी वपासना भी। भगवती मालीने बस्ता प्रोपार पूर्णी और कारेग्योक्षे वर्ण की, जिससे एक सुन्दर नका उरका हुन। के शरिकासपुरी (करकसा) के जमने प्रसिद्ध हुआ। चार्चे तर्गिक जलकर्म जाता गाता चार्च क्योंने महत्त्रोची अध्यक्त निकारण और फिर आगे बालकर दिल्ली नगरण बढानीका शासन, तैमरहंगके हात बांग्यार आक्रमण करने और लुटनेकी क्रियाका वर्णन भी इसमें प्राप्त होता है।

कारियुगमें अवतीर्थ होनेवारे विभिन्न और भरतेकी कथाएँ भी यहाँ उपराध्य है। श्रीशंकरवार्थ, श्रीरामानन्द्रावार्य, निम्मादिख, श्रीधरकामी, श्रीधिम्मुखानी, वारहमिटर, भट्टोच दीवित, भन्नानी, कृष्णवैकन्दरेव.

श्रीरामानुष, श्रीमध्य एवं गोरसनाय आदिकः विस्तृत चरित्र यहाँ जीवंत है। जान ये कार्य सुप्रीत तेज एवं अंत्रासे ही उत्पन्न बतार्थं गर्व है। चरिष्यपुरुषमें इन्हें ह्यदश्रदिसके अवतारके कपने प्रस्ता किया पना है। वस्तियुगमें वर्गरकार्य इनका क्षेत्र है। क्षित्र समदायोकी स्वापनाथे इनका योगदान है। इस प्रसंनोंने प्रमुखता चैतन्य महाप्रमुक्ते दी गयी है। ऐसा भी 🚟 होता है 💷 जीवन्याचैतन्यने ब्रह्मसूत्र, गीता क उपनिषद् विवर्ताल की साम्बन्धिक दृष्टिसे मानाकी एपता **जो भी भी और न जिल्ली सम्बद्धावकी ही अपने सम्बद्धों** न्यापण की 🖷 । बद्धार-पायसे नाम और गुणकीर्तनमें विभोर जारे थे। प्रत्याप जनकर्षा प्रत्यत ही सके होकर उन्होंने अन्य जन्मांच्यां श्रीताली तांत पर दिया। साथ श्री वर्त संत सुरकारको, कुलाबिदासको, कबीर, नरसी, पीपा, क्तक रैक्स, नामदेव, रेकम, बच्च परात जारेका कथाएँ मी है। जारहर निमे, पुरे, बर, जाराज, पर्वत, भारती पूर्व ताथ न्द्रों इह <del>नर्म सामुओको न्युप्तिका कारण</del> भी किन्न है। बरावर्ते कटवाली तथा प्रत्यिक्तको उत्पत्तिको कथा भी

भगवान् नाजांका जो परमहामापमें चितित किया गया है। भूगवानन सदारिताची तपस्ताने प्रसन्न होकर मगवती व्यानकार अवेंने भगवान् दिवाके पुनरूपमें अवतार धारण किया। इसमें प्राच्या एवं कुम्पकार्यके जावाते काल, व्यावधार बीत्मुक्त्य्यंकी रोचक कथा भी मिलती है। किसाबी सार्थ व्यावधार उनते हुए लाल सूर्यको देश फल समझमार उसे निगलनेका बाला करते हैं। सूर्यके अध्यापमें अध्यापा देखकार इन्द्रने उनकी हुए (दुव्वी) पर वक्षते प्रसार किया, जिससे स्नुव्यान्त्ये दुव्वी देश हो जाती है और वे पृथ्वीपर गिर पढ़ते हैं। व्यावधार करते हैं। सूर्यके अध्यापमें अध्यापा देखकार इन्द्रने उनकी हुए (दुव्वी) पर वक्षते प्रसार किया, जिससे स्नुव्यान्त्ये दुव्वी देश हो जाती है और वे पृथ्वीपर गिर पढ़ते हैं। व्यावधार कर स्नुव्यान् पड़ा। इसी बीच स्वरण उनकी है। पक्षकार करना बाला है। फिर भी उन्होंने सूर्यको नहीं कोड़ा। एक जानक स्वरणने पुद्ध होता हह। आपनी स्वरणने स्वर्थ पिता पृति वहाँ अही हैं और बैदिक स्तुमान्त्रीको प्रस्तकार सामा विषय सुकृते हैं। सदनकार अक्ष्मानीको प्रस्तकार सामा वृद्धि और उत्पत्तिको सामा एवं दिन्य-पार्वरीको सामा व्योप सुन्या है। अस्तिय अस्त्रामोने पुणाल कादशासोने सामा वृद्धि अपन्य, सम्बन्धि कार्यामोने पुणाल कादशासोने सामा पुणाले सामा वृद्धि अस्त्राम, समामान है। समामान कार्यामान का

ात पुराशका अस्तितः व्या है उत्तरको। व्याप्ति कार्या असूत्त श्रृङ्गालका प्रतिपादन पार्ट हुआ है। अस्येक विशिष्यो, स्वसी पूर्व नव्यक्रीक कार्या एका उन विश्विष्यो आदिक अधिकार्यु देक्साओंका वर्णन, प्रशासी विश्व और उत्तरकी प्रत्यक्ष्मी कार्या कर्मन, प्रशासी विश्व और उत्तरकी प्रत्यक्ष्मी कार्या कर्मन, प्रशासी विश्व और उत्तरकी प्रत्यक्ष्मी कर्मन कर्मन प्रतिकारण क्यां

त्यस्पर्वति प्रस्तानि श्रीनस्दर्शन्ति भगवान् श्रीनस्वान विक्ष्मुणायाथा दर्शन कराते हैं। विक्षी समय कारणानि श्रीतद्वीयमें भगवान् वावान्त्रका दर्शनकर उनके वाकान्त्र देशनिक्षी हथा। अस्ट की। नार्द्शीके वार-वार आवा करवेगर श्रीनसायण सारद्शीके साथ वाव्यूप्तियों आने और वार्ति एक आकृत्यस कारणा कारणा कि रिज्या। विदेश नगरिये धन-भगवसे समुद्ध, उद्यानी, पश्चास्त्रका कारण, कृतिवार्त्यकों पश्चीपति करनेशास्त्र भीरभार नामका एक वैद्या निवास करता या, वै दोनों सर्वप्रकार मोजनके किने पूछा। यह सुनका कृत बाह्यस्वस्त्रपास मोजनके किने पूछा। यह सुनका कृत बाह्यस्वस्त्रपास मोजनके किने पूछा। यह सुनका कृत स्वान्त्रपासम्बद्धी भगवान्त्री हैसकार कहा— दुसको अनेक पुत्र-पीत्र हों, तुन्हारी केसी और पश्चासकी नामका एक दरिष्ठ बाह्यस्थान

बहुत 📰 🛚 🖣 🛒 उसके 🗪 पहुँचे, बहु अपनी खेती व्यक्ति किलाने रूप था। चनकान्ने उससे कहा—'हम क्हारे अक्षिप है और **चुने हैं**, अवः मोजन क**ाओ** ।' उस असी अपने अपर त्यवर छान-पोजन आदि करका, अन्तर उक्षम प्रत्यपर प्रापन आदिको व्यवस्य को । कतः उठका पर्वकाने सहावसे बद्धा- 'हम तुन्हारे परमें मुख्यूर्वक छे, परनेकर करे कि तुन्हारी केती निष्फल हो, कु**रूप अस्तरमा पूर्ण** न हो' हाता करूकर में कहति पर्छ को । 🖦 देखान जाहबीने आधर्यपत्तिन होकर पुता---'पनवन् १ बैदवने अवनके कुछ भी सेवा नहीं की, परंतु आपने 📰 क्रांच का दिका, बिन्तू हम सक्कालने ब्राह्मसे आपकी बहुत तेला भी, फिर भी उसे स्थापने आरडीचीएके कमाने शास ही हिन<del>ा - देखा विकेश करो किया</del> ?' नगनाको कहा--- 'करद ] कांगर 🚟 विकासि विकास पार होता है, एक दिन इस योजनेसे इतना हो पाप होता है। यह बैहम अपने १६-वीडीक स्थल इस्से क्षांक-सार्वाचे सरह इत्या है। इसने न हो उसके परने **विकास विका और व पोजन ही बिल्म, इस महाराजे परने** कर्म और विश्वास किया। इस ब्राह्मणको ऐसा माहीबीद दिया कि विकास यह सराज्यात्त्रमें न चैसकार मुक्तिको साह कर सके । इस प्रधार कालबीत करते हुए वे दोनों अपने बढ़ने लगे । आणे बलकर चनवाको 🚃 📆 काश्यक्रमके स्रोतरमे अको पायके कान कराकर एक सुन्दर काल सराव प्रदान 📖 तब एक श्रमने विवाह करकर पुत्र-वैजीसे सन्प्रम बगव्यक्तको व्यवसे क्षेत्र कर दिया तथा बुक्त समय भाद पुनः कटबोको अपने स्वाधनिक रूपमें 📖 पगवन् अनिहै। हो क्ये : जारदावेरे अनुसर किया 🛲 इस भावके प्रभावके संस्थरके जीव, पुत्र, की, कर मादिने आसक्त हो रेवे-गारी हुए अनेक प्रकारक 🚃 🔤 🛊 । 🚃 मनुष्यको इससी सवधन सन्त प्रतिवे। इसके 📖 संसारके हिन्सन विसारपूर्वक वर्णन किया

प्रसंके ब्या संसारके हिमाना विसारपूर्वक कर्मन विस्ता गया है। नामका मुचिहिर नगवान् तीकृष्णसे प्रम करते हैं, यह बीव विसा कर्मसे देवता, मनुष्य और पशु आदि विस्ता तरफा होता है ? जुन और अञ्चून ब्याबा मोग यह कैसे करता है ? ब्याबा करर देते हुए मगवान् सीकृष्ण कहते हैं कि तरफा कर्मोंसे देवचेनि, निजवर्णसे मनुष्यचेनि और पानकर्मसे

पन्न आदि योगियोंने चन्द्र होता है। वर्ष और अवन्द्रि निक्यमें सूरी ही प्रकल है। पारसे कारकेट और कुमसे क्यकोन प्राप्त होती है"। बस्तुतः संस्त्राधे कोई सकी नहीं है। प्रत्येक प्रत्येको एक दूसरेसे धव कहा स्वता है। यह कर्मका प्राप्ति जन्मसे रेक्स्ट अन्तराक दःची ही है । को पूर्व विवेदित 📕 और बत, दान तथा उपलब्ध आदिये तत्वर छते हैं, वे 🏗 सदा सची रहते हैं। तदकतर यहाँ पक्षका अंकुलके 📖 विविध प्रकारके पार एवं पुरूष कार्रोध पान कार्या गय है। अध्यम कर्मको हो चल और अवन्त्रे कहते है। स्थान सुरुव, आतिहरूव विक्र चेटोहार करोड़ो प्रकारक पाप है, पर यहाँ वर्ष-बढे प्रयोक्त संबोधने वर्णन किया गंधा है। अधीका कितन, दूसरेका अभिन्न-कितन और अकर्ष (कुळर्ग) में अभिनेत्रा—ने तीन व्याप्त पान है। प्रसाय, अप्रिय, कास्त्व, पर्योग्न्य और विद्यासा अर्थात् कुराहरे—ये याँव काविक यन है। अध्यक्तकार, 🚟, मिथ्या कामहेका (असंबंधित जीका करेत करना) 🛗 भाषत-स्टब्स्—मे कार सार्थिक 🚃 है। इस 📖 🚟 कारोंको भएकाची माति होती है। इसके मान हो को पूछन संस्कृतकर्यो साम्बद्धे उद्धार करनेकाके प्रमानन् सर्वाक्षय अकाव मगवान विकास हैय रकते हैं, वे योग नरकमें पहले हैं। सहस्रका, सुरावन, सुकर्वकी चोटी और गुरुपतीगरान-के THE THEORY & I PT THEORY WITHOUT IN THE रहमेकाला परिवर्ष महापातको गिन्त जाता है। वे सची नत्वामें जाते हैं। इनके अतिहास कई प्रकारक उपकारकीया भी कर्जन आया है। विस्तार पान पुत्रम और सम्बन्धन हो है।

इस्रिटिये वृद्धियान् मनुष्य अधिरको नका कानका तेरामात्र भी पाप म करे, पापसे अध्यक्त ही उसक कोकत पहला है। पापका पारत दुःवा है और नरकाते हाला दुःश कहीं नहीं है। पापी सनुष्य नरकावारको अननार किर पृथ्वीपर मुझ आदि अनेक अधारकी स्थापर-वेतिकोने जना पहण करते हैं और अनेक हाल भोगते हैं। हालाह बीट, पर्याप, पासी, पत्रा आदि अनेक केनिकोने जना तेरो हा अधिदुर्रुष क्ष्मुच-जन्म पाते हैं। सर्ग एवं मोश देनेवास क्ष्मुच-जन्म ब्याब देखा वर्म करना पादिये, जिससे ब्याब २ ब्याब पदें। वह मनुष्य-चीन देखाओं ब्याब असुरेके सिमे भी अस्वका दुर्हिभ है। ब्याबि ही मनुष्यका जन्म मिसता है। मनुष्य-ब्याब व्यावस्था ब्याबिक कृष्टि ब्याब पादिये। को अपने कृष्याकों ब्याब धर्मका प्रसान ब्याब करता है, उसके समान मुखं कीन क्षेत्रा ?

क देश सबी 🔤 📹 है। बहुत पुरुषी प्राणीका क्रम ब्याजनी केल है। 📺 देखने 🚥 📖 के अपने 🚃 🚾 रिन्ये सरकर्म 🚃 🖁 🚃 मुद्धित्वन् है । जिसने हेल 🔚 मिला, श्रस्ते अस्ते 🚟 साथ 📖 पर्वे । 🚃 🚅 प्रदेश 🚃 🐧 🚃 🖫 📺 पुण्य 📟 सके, 📖 रोज च्योजे, सहये 📹 🔡 नहीं है समस्ता । दिन-रातके 🚃 🚃 अस्तुके 🖩 संदा माध्यित हो रहे है। फिर भी महत्त्वोको 🚟 🚟 🎮 🛍 एक दिन पुरस् 🖦 पहुँचेनी और इन 🔤 🚟 व्यक्ति क्षेत्रकर 🚟 🚥 वानः पहिनाः 🔤 अपने क्रमते से अपने 🚃 🚟 🖼 पर्व 🔤 हो। ? अनुस्थात 🔤 द्वार हो 🚞 अर्थात् राहोके दिन्हे 📖 है । 🖩 🚃 करते 🖥 वे सुवायुर्वक वाते है । दान-जेन कारि अनेक एक पाठे हैं। पूक्षे बाते जाते हैं, इन सब 🚃 🚃 पूज्य कर्म हो 🚃 बाहिये। पूज्य कर्मेंसै 🚃 🖚 🔛 🛮 🍱 पान करनेसे नरककी जाति होती 🖣 । 👊 प्राप्ता सर्वातपायसे धीपस्थाल-प्रभूकी शरणी आहे 🖥 के परायक्षक विभाग अलग्ने तरह प्रत्येते 📖 नहीं होते. इप्रतिको कृत्यो कृत्यार चरित्रपूर्वक ईक्षाओ आराधना 🎹 व्यक्ति 🚃 सभी प्रकारके प्रचौरी निरंत्तर बंधन वाहिये। परावान् औक्ता पश्चितिहरसे कहते 🖥 📰 यहाँ भीका नकोका 🗎 🛗 📖 🖦 है, उन्हें ब्रह-उपवासरूपी नैकारे 🚃 विका वा समता है। 🎟 📰 दुर्लग मनुष्य-जन्म प्रकर ऐसा कर्म करना चाहिये, जिससे 🚃 📉 र 🚃 पढ़े और बंध क्या 🖥 📰 न जब और 📰 🚃

भी न हेना पढ़े। निस पनुभाको बीति, दान, प्रत, उपकास

जात्वा परणत बना है, यह परलेकमे उन्हें कमीके छव सुख भोगता है। इस तथा श्वाध्याध न करनेक्सेट्यों कहीं भी भारत नहीं है। इसके निवरीत बरा-स्वाध्याय करनेवाले हुता संद्रों सुसी रहते हैं। इसलिये इस-स्वाध्याय अवस्य हुता पातिये।

🚃 पर्वमें अनेक वसीची कथा, महरूप, विकार तथा फरम्बुरियोका वर्षन स्थल गरा है। साथ हो बाहर उद्यापनको निर्मित्र भी बसाची रूपी है। एक-एक विभिन्नेने वर्ड मरोका विभाग है। वैदे प्रतिपदा लिपिने तिलवान्य, असोनका, क्षेत्रिक्तवात, कृतकोवत 🚃 🚃 हुन्य । इसी 🚃 🛗 महारत, 🎹 मधुकनुर्दान्य, हरमार्कात, राज्यिकृतेयाल, अवियोगवृतीयाल, डमार्थकेशका, सीमान्यसम्ब, अक्स्युतीय, स्तकत्त्र्योजी हतीयालस तथा अस्यवहतीया उत्तरि अनेक वत हतीया शिक्ति ही मॉर्गेंस है। इसी अवद गमेशकार्थ, स्टब्स्टिंग विशोक-पहरे, कमरामही, मन्दर-पहरे, विकास-सामी, मुख्यमरग-सत्रमी, करकान-सत्रमी, कर्वना-सत्रमी, गुप-सहमी क्या अवल-सहमे 🚾 🚟 🚃 नर्गन हुआ है। तदनकार मुध्यहानी, श्रीकृत्वकान्यहानी, 🚟 क्षपति एवं दुर्वाहमी, अन्नवहन्त्रे, श्रीकृष्यक्रमी, व्यवस्थानी, आदहदशमी सहरि सतीका व्यवस्था हुआ 🗗 📆 कारकारको, आरम्बहारको, गोलसस्हारको, देवकानके एव देखेलागी श्रदती, शीराजनकदती, मल्लक्रदती, विकय-सक्त्रप्रदर्शः, गोनिक्दप्रदर्शः, असम्बद्धदर्शः, धरणीवत (करक्द्रादक्षी), विशेष्ट्रादक्षी, विश्वविद्धादबी, मदनकृष्यती आदि अनेक इत्यती-करोधा निकाल 🚃 है। प्रयोदशी तिथिके अन्तरीत अव्यवकात, दीर्चन-दीर्गम्बानास्त्रस्त, वर्गक्तवा समावान-जन (कादर्शन-प्रयोदशी), अनुसूत्रपोदशीयतका विवास और उनके फलके कर्गन रिखो है। चतुर्दशी 🚃 🚃 🧰 🧰 (कदली-) तव, शिवकत्देशीयत्वे महर्वि व्यक्तिकत अस्पान, अनना-चतुर्दरक्षित, अधिनव-तत, नवतत, फलस्वाप-चतुर्दरक्षित अदि विभिन्न बलोका निरूपण हजा है। तदननर अमाकारामें ब्राइ-सर्वेक्की | क्यां पूर्णपासी-जरोका वर्णन, जिसमे वैद्याको, 📟 और 📖

पूर्णिकको विद्योग स्थापन वर्णन, साविश्वेत्रत-कथा. वृत्तिका-सर्वके प्रशेषको एकी कर्तिमधातका आरुपन, मनोरम-पूर्णिक तका स्थापन पूर्णिकको वत-विधि आदि साव्यानीका वर्णन किया स्था है।

विश्विके निरुप्तको अन्तर नक्षणे और
मारोकि व्यवस्थानीय पर्नत हुआ है। अनुप्रवान-माराययने
पृत्तका श्राम है। प्रस-नक्षणात्ये
प्रवान श्राम है। प्रस-नक्षणात्ये
प्रकान श्राम है। प्रस-नक्षणात्ये
प्रकान, कृतक (वैगन)-स्थापका एवं प्रह-नक्षणात्ये
विश्व प्रकान विश्व, प्रम (विदि)-सा तथा
प्रकान विश्व प्रकान विश्व, प्रम (विदि)-सा तथा
प्रकान श्राम है। प्रम स्था पृत्यक्षणा १२१ वे
सम्बाद्ध प्रमा प्रमा हुए है। प्रम प्रमा १२१ वे
सम्बाद्ध प्रमा है। स्थापका प्रमा हुए वे। प्रम प्रमा १२१ वे
सम्बाद्ध प्रमा है। स्थापका प्रमान स्थानका विश्वन,

**मृत्युरो पूर्व अर्थात् मरमारता गृहस्य पुरुवको पारीरहा** रचन किस प्रकार करना चाहिके, इसकर 🚃 🖩 सुदार विकास समा १२६ में अध्यानमें मुखा है। यह पुरुषके यह भारतून हो कि मृत्यु समीप का गयी है तो हमें सब कोरसे मन इटाकर प्राप्ता प्रमुखन् विकास अथना अपने इटऐकका रात्म करन करिये । भागते हाँका होकर बेर तक यात्म करके सभी उपकरोंसे करायको पुजाबर सोहोंसे सृति करे। **माना एकांक अनुसार गांप, धुनि, सुवर्ण, वहा, अ**प्र अविकार क्षेत्र को और सन्त्, पुत्र, मित्र, औ, सेत्र, धन-प्रान्ध क्या पत् आदिसे फिल इटायर ममलका सर्वधा परिस्था। कर 📭 📰 ऋषु, उदासीय, अपने और पराये क्षेणोंके उपकार और अध्यक्तके विषयमें विषय न करता हुआ अपने मनको पूर्व उक्त तर है। बनदुर पगवान् विज्युके जाताता मेत नोर्द कन् नहीं है, इस प्रकार सम कुछ छोडकर सर्वेतर भगवान् अध्यक्षको इदको धारण काके निरन्तर वास्टेवके वसका लाल-वर्तिम करता रहे और 📖 मृत्यु अत्यन्त समीप अ जब वे दक्षिणप्र कुश विकास पूर्व 📖 अस्ति और प्रेमकर समन को और परमाल-प्रभूते यह प्रर्थन करे कि 'हे

जगक्रभ ! 🖩 आपका 🖩 📳 आप श्रीक मुक्तने विकास की, क्यू एवं अकाक्षमी भार महाने और अपने कोई अचा न रहे। मैं अनुपन्ने अपने सामने देश रहा है, आप भी सूत्रे देशें (' इस 🚥 पगवान् विष्णुको 🚥 को और 🚥 दर्शन करे। यो अपने इष्टरेकका 🚃 पगवन् विकास भ्यत्रकार 💷 📖 प्रात्ता है, उसके सम पान कुट 👊 🎚 और का मगवान्ते 📖 हे जल है। मृत्युक्तले यह हत। करन 📟 न हो से 📖 सरह उच्चर था है 🖩 को रापाले विकासि इटावर मेमिन्द्रमा स्थान करते हर 🚥 त्याग् करना चाहित्रे, कांग्रेक व्यक्ति विश्व-विश्व प्राप्त स्थरनकर माग स्थान करता है, इसे बड़ी पान पाड खेला है। 📖 💴 प्रसारते निवृत्त क्षेत्रर वासुदेवका 📖 और निगत करन है 🚟 🖫 🔛 ज्यंकी नगककुर विका-ध्यानके सकायक भी अनुबन्ध शहर क्या है। 🖿 सामग्रीके 📖 🚃 राज्येती और काले योज्य है। किया गया है—(१) एउन, अरबेन, अवन, चेकन, 🚃 मणि, सी, गन्द, मरुप, क्य, सायुक्त 🚟 📺 बह मोहजन्य 'आद्य' 🚃 बहा न 🕏 : इस 🚃 तिर्पक-योगि क्या आवेगांत्यो जात होती है। (३) अभागमें पदि जरतमे, गहरे, तककरे, मेराबंधि उपर सकर करनेको इच्छा रहती हो, देखी हिल्लाओं निकास थन स्टब्स हो, हरें। 'ग्रीर' व्यक्त नवा गया है। इस व्यक्तमे नरक प्रत्य क्षेत्रा है। (३) व्यापन विकास हिम्सको स्थानन, व्यापन विका, प्राणियोके करफायको पालना अवदि धरक 'चार्य' प्यान है। 'बार्च' प्यानसे लगंबरे अवका दिवालोककी प्रति होती है। (४) च्याचा इन्द्रिगोम्ब अपने-अपने विकासेने निवृत्त हो पान, इदयमें इष्ट-अनिष्ट — किसीका भी निपन नहीं होना और ...... होकर एकमान परमेकका विभान करते हुए परमारचीत 📕 जान — यह 'ऋष' ध्वानका सकर। है। इस ध्यानमे मोधानी 🔚 🚃 भगवानी से ऋते है। इसरित्ये ऐसा 🚃 🚃 चडिन्ने 🕮 करणकारी 'सुक्र' व्यक्तमें ही विश्व रियर हो वान।

इस प्रकरणके बाद राजकी महिमा एवं विशिष उसस्योका

कर्नन बाब है। सर्वत्रथम दीपदानकी महिनानें रागी र्वातको व्यक्तकम एक क्येन्सर्गमी महिन्दका वर्णन हुआ है। अन्तर कन्यदानके महस्तपर प्रकास दाला गया है। आपनाचेंसे अलंकत कन्याको अपने वर्ण और जातिमें धन ब्यायी गयी है। अनाय कन्यके प्रकार करणा में विशेष फल पाछ गया है। इस प्रवण केनुद्धानका विश्वाद कर्णन आह होता है। वर्ष प्रकारकी केनुओंके दानका प्रभावन अस्या है। प्राथम भेट्र, विसमेन, जलमेन् मुनकेन्, राजनकेन्, काञ्चनकेन्, राजकेन् आदिके वर्णन जिलते है। इसके अधिरिक करिएकदान, महिकेदान, मुस्दिन, सीवर्गभीतादान, गृहदान, असादान, विचादान, मुलापुरवदान, दिराज्यमधीत्म, स्ट्राप्यका, स्ट्राप्यकारमः गणा मोन्हरं महिले. पारतपुर्वपानी, and intens हेमहरितरच्यन, विश्वपह्मान, . क्यार्गत्त्व, स्वापर्वत्वान, मुख्यालयम्, हेम्प्रचालयम्, 🎟 🚚 , बार्यासायलयम्, पुराचलका, राज्यसम्बद्धान, वैष्याचलकान शुध्न प्रार्वसम्बद्धान संस्कृतिमे विशेष महत्त्व है। रूप विकास करिया प्रमुख 🚃 🖥 🚟 🚟 अलग-अलग महमा भी है। 🔤 इन 🚃 🔛 वर्णन वृक्ष्य है। हेरिलकोसस्य, दीनव्यक्तियोगसम्, १६८४म्म, अङ्गानवर्षा-इरमयः, व्यक्तिक 🔚 📖 स्थारे वर्णित है। होतिकोस्सवर्षे करण कि है। इस क्या कोरिहोस, स्वाकोप, गलनाजात्वीच अवदिके विधान भी दिये गये हैं। व्यक्तिवयुक्ताने का और दान आदिके वकारणमें जो कलजुरियों दी गयी है, ये मुख्यतः इत्रक्षेक तथा परहोक्यों कुरतेन्त्र 🚃 तथा योगेवर्य और 🔤 जाद रोबवेनर प्रतिसे ही सम्बन्धित है। सामान्यतः भन्नवको जीवनमे दो बाउँ प्रचारित 📖 है—एक से दःश्रोधा पर और इसरा स्वाका प्रहोधन । इन दोनोंके लिये सन्तय कुछ भी करनेकी तत्पर खंडा है। परमाल-प्रकृषे हम्बरी आत्या एवं विचास जापत् हो और बमारे ....... पगवान्से स्वापित हों, इसके लिये अपने

सामी और पराचेंने लेकिक तथा परलेकिक कामनाओंकी

सिदिके एक फल्युतिक विकासकार बदर्शित हुई है। वास्तवमें दृ:बोके भवसे तथा सार्व आदि सुबोके प्रत्येवनसे जब मानव देक बह तह, हान आदि संस्थानीकी और अनुस है। जाबा 🛮 और उसमें उसे संधानतके साथ अवनदायी अनुष्ति होने लगती है तो आगे चलकर वह सत्कर्म भी उसका सामाव श्रीर ज्यसन का 📖 🛮 और 📖 🗎 भगजकुराने 🚃 आदिके द्वारा 💹 🚃 🚃 📖 हो करा है अवन मानव-जीवनके एका उद्देशको वह का लेख 🛊 🖫 🚾 भगवतभीरमे देश नहीं रूपती । कशुतः मानव-जीवनका मुख्य उद्देश माध्यक्षांत ही है और माध्यक्षांत निकास अवस्थाते ही सम्मन है। यहाँ बद-दान आदिके प्रकरनमें जो परस्मतियाँ आवी है, वे लीविक एवं कार्लविक ...... हे समर्थ | है. अनुद्रान किया जाय हो से जन्म-मरनके सन्धरते मुख कर धगवास्त्रति शरानेमें भी पूर्व समर्थ है। अतः कल्यानकार्यः पुरुषोंको ये बल-दान आदि कार्र नामकडीतको निव्यवस्थाने ही करने क्वतिये ।

एक बात और ध्यान ऐंग्या है, को मुद्रिकटी लेलांगा वृद्धिमें प्रायः करकती है—वह यह कि पुरुषेने नहीं किस देशता. 🚃 🚃 और तीर्थका म्हलन कारणक 🚃 है. 🏬 🚃 प्रबंधिर माना है और अन्य सबके द्वार उसकी 🏬 करायी गाँधी है। गहराईसे 🚃 न 🚞 📺 कर विकित-सी प्रमीत होती है, परंतु इसका करावे 🕬 है 🕏 धगमानुकः यह लोलाभितम ऐसा आधार्यका है कि इसमें कर ही परिपूर्ण चगवान् विभिन्न विभिन्न लीलरव्यापारके लिये 🚟 🚃 📉 समाय तथा अधिकारसम्पत कल्बामके लिये अनन्त विधित्र 🔤 🔛 🔠 भगवान्के ये सभी क्य नित्य, पूर्वतन और सविद्यन-दशक्य है, अपनी-अपनी रुचि और निहाके अनुसार जो जिस कप और नामको इह बनाकर मजता है, यह उसी दिव्य नाम और रूपमें समस्त इन्स्तव भगवानुको जात 👊 लेख है, क्लेंकि मगवानके सभी रूप पूर्वतम 🖁 और उन 🚃 रूपेने एक ही पगचान छीरव कर रहे हैं। वर्ती तथा दान आदिके

सम्बन्धे पी नहीं बता है। ज़तारम ज़द्धा एवं निहाकी दृष्टिसे सम्बन्धे करणाण्यं जहीं निस्तक वर्णन है, वहाँ उसकी सम्बन्धे करणा चुकितुक है है और परिपूर्णतम दृष्टिसे जो है। तीर्चीक्ट बात यह है जिए परिपूर्णतम विक्रिय जान-क्योंकी उपस्तन करनेवाले संतो, महस्त्राओं और स्वस्त्रावनाके प्रतापने विभिन्न करमय भगवान्त्रों जिल्ला कर हिन्दा और वहाँ उनकी अपने है साधन-स्वापने प्रतापत हिन्दा और वहाँ उनकी को। इस है पर्याक्षित क्रूपता सहस्त्रावकी संग्राह्म के प्रतापत है जो स्वयुद्ध निहा और बाक्षेत्र अनुस्तर सेवर करनेवालेको प्रवापोन्य पाल देते हैं, सर्वक क्षेत्र है। इस दृष्टिसे स्वापीन्य पाल देते हैं,

का एक है, इसकी पुढ़ि 🖥 इसके पर्श्वणीत से कसी है कि हीन करे कारेकाले पुरालोंने कियाबी और वैधावपुरालमें स्कारक सहस्य हरू 🔤 है तथा दोनोंको एक बताया गया है। इस्ते प्रकार अन्य पहल-विशेषके विक्रिष्ट प्रधान देवने जन्मे 🖩 क्षेत्रुवाके जन्म पुरानेकि प्रथान 🏬 👑 असना ही स्वरूप बहरूका है। यह अभिवायुक्तम सीरपुराज है, जिसमें पगवान् पूर्वकटक्क्की अनन्त महिमाका वर्षन आर होता है। पोतु इसी पुराचके अन्तमें 🚃 २०५ 🖥 सदाचारेस निरुपण 📷 है। इसमें यह बात आये है---भगवान् श्रीकृष्ण अभिविद्यसे कहते हैं—हमने महोने अनेक देवकओका तुवन सामा चवत परंशु बारावमें इन देवीने कीई बंद नहीं । 🗈 सहस है, वही विच्यू, जो विच्यू है वही दिख्य है, नो दिल है वही सुर्य है, 🔣 सुर्य है वही और, जो **औ**र हैं 📰 कारिकेन, जो कार्तिका 🛮 वही 🔤 अर्थात् इन देवकाओं से कोई मेद नहीं। इसी 🚃 गौरी, लक्ष्मी, सावित्री 🛲 प्रक्रिकोर्ने 📢 नेदक लेश नहीं। चाहे जिस देवी-देवटाके उदेश्वसे वटा करे, पर पेट्युटि न रखे, क्योंकि 🚃 बनर, सिय-इक्टिमन 🕏 ।

विक्री देवताका आक्रय लेकर नियम-व्रत आदि करे.

परंतु जितने त्रत-थान आदि बताये पये हैं, ये सम आवस्तुक पुरुषोर सपाल होये हैं। आवस्तुक पुरुषोर सपाल होये हैं। आवस्तुक करते, बाहे उसने कहां अङ्गांस्तदित बच्चे र पड़ा हो। जिस बाँति पंचा जमनेपर पहित्योक्त बच्चे चोसलेको होत्ह्यर उह बाते हैं, उसी अति आवस्तान पुरुषको केंद्र को मृत्युके सम्ब त्यान देवे हैं। वैसे अशुद्ध पंजने जल अवस्त्र धानके चर्मने दृष्ण क्रमेंछे अपवित्र हो करता है, उसी अवस आवस्त्रीतने विवत हाता ची व्यक्ष है। आवार ही वर्ग और कुरुव्य मूल है—जिन पुरुषेंग अक्ष्यर होता है से ही सरपुरुष कहरको हैं। सरपुरुषेंका जो अक्ष्यप है, उसीका जाम सर्व्यक्ष है। ही पुरुष का अक्ष्यप चाहे उसे अवस्य ही सदावारी होना चाहिये। चाहित्वपुरुष्

# अक्ष्युपनिषद्

( नेजरोप्यारी रहा )

पृष्टिः इते । अश्र १ सङ्गुद्धिभेगवान्यद्विकारेके जन्म । स आहितं जन्म चशुन्तिविकाम समयुक्तः । के नमे भागते हित्तांवादिकोकते नमः । के सेवान्य नमः । के व्यक्तिका नमः । के समये नमः । के समयो नामः । के अससो मा सद् समय । क्यान्य का न्यान्यको । कृत्येविकाने । व्यक्तिकाने । विश्वानि वृत्येविकाने क्यान्यको क्यान्यको वृत्येः । कि नमे समयो श्रीकृतिवादिकामिकाने क्यान्यको । क्यान्यको व्यक्तिकाने । कि नमे समयो श्रीकृतिवादिकामिकाने क्यान्यको । क्यान्यको ।

र्वं पञ्चलतीनिक्या स्ताः तीन्त्रवेतरायनः स्त्रीवेत्रस्थित्वश्चलीकां अनुको के व्यवस्थिते व सरवादित्येनी पत्तति । व व्यवस्थितवे पत्तति । अन्ति अनुस्यन् पत्तिस्थल व्यवस्थला व द्वं व व स्त्रम् भवति ।

हाति स्ते । वशु-प्रदेशको प्रवासक सम्मान् स्वयुक्तकानको स्थान है। स्थान स्वरंग सहस्ति प्रवासकान सम्मान् स्वयुक्तकानको स्थान है। स्थान स्वरंग स्वरंग प्रवासक सम्मान् स्वयुक्तकानको स्थान स्वयुक्तकानको मनस्तर है। स्वीपुक्तकानको स्थान प्रवासकार है। स्वीपुक्तकानको स्थान प्रवासकार है। स्वीपुक्तकानको स्थान प्रवासकार है। स्वीपुक्तकानको स्थान प्रवासकार है। स्वयुक्तकान स्वयं स्वयं

इस प्रकार अञ्चलकियाके द्वारा सूचि किने कानेकर करकान् सूर्यकारका करका जाता होकर केले—'से बाह्मण इस अञ्चलकियाका नित्य क्वा करता है, उसे अधिकार रोग नहीं होता, उसके कुलने व्या अंका नहीं होता। व्या बाह्मणीको व्या करा देनेकर इस विद्याली व्या विदेश है। यो व्या कानका है, व्या नकान् हो व्या है।

परमार स्थापन के स्थापन के प्रतिकृतिक स्थापन के स्थापन क

#### बीयजेकाय नयः

## 🕉 नमो भगवते वास्टेकाय

# संक्षिप्त भविष्यपुराण

कास-दिन्य महर्षि सुकन्तु रूवं का सकानीकका संवाद, धविन्यपुराणकी महिमा एवं धरमता, सृष्टि-वर्णन, को बेद, पुराण एवं चारों वन्त्रीकी उत्पत्ति, चतुर्विच सृष्टि, काल-गणना, वृगोकी संक्या, उनके किया

मरं विकास । many and manggleing at 'बदरिकायमनिकासे प्रसिद्ध जाने क्षेत्रसायण तथा क्षेत्रर (अल्लावीनी कार्याच्या भगवान् स्वेत्राच्या तथा 🔤 नित्य-समा 📟 मार्थेद अर्थुन), 📟 📰 🗯 करोचारी भगवती भरताते और अन्त्री सार्व्या 🚃 नाके अन्तःकाणम् देवे 🚃 🚃 🚃 कर्पनेकाले 🚃 🚾 राज्यमा, महाभारत 📑 आण 🚃 इतिहास-पुरामादि शर्थान्यो-स्य पाठ 📖 व्यक्ति 🖍 क्षणी पराप्तरकृतः सम्बन्धीकृत्यक्षे स्वतः । परवासकामसम्मरिको पर्यक्षप्रमानुने 🛗 🛗 🖦 'नरापारके 🛍 तमा सरम्बरीके इदमको 🚃 करनेवारे भगवान् स्वकारं 🖮 हे, 🚟 नुसक्तान्ते निरस्त अमृतमधे कर्णका का सन्दर्ग 🔤 पन करता है।' में भीशत कारकारकार 📖 विकास केर्युक्ति क अनुस्तान । पुरुषा पविश्वसूक्तमा नृतुन्तन्, क्रमती पुरुषे एक स्थान तरह क तरह की ।। 'वेटादि आस्त्रेके जननेवाले तथा अनेक विकर्षेके वर्णन विद्यान् बाह्यणको सर्वजिटत सीगीवासी सैकडो चौओको दान

देनेसे जो पुरुष बात होता है, ठीक उठना ही पुरुष इस पायाना

महाप्राणकी उत्तम कथाओंके अवन कानेसे आह होता है।"

व्यवनेषाके प्रमुख प्रश्निक कथनानुसार सभी द्वाकीके बाननेषाके प्रमुखन् वेदक्याससे प्रार्थनापूर्वक जिज्ञास। नी प्राप्ते पुरुष्ठ व्यव प्रयंगयी पुरुष-कथाओंका जवण बावने विश्वित हो बाउँ और इस संसार-सागरसे मेरा

१-'कर' राज्यमें Billion ann कई पुरानेंने स्था है। चरित्यपुराको स्थानी चीचे स्थान (प्रत्येक ८६ से ८८) में इसे विश्वारसे

च्या है. 🔛 💴 च्यक्तिः

उद्धार हो जस्प ।

ध्यासकीने अञ्चा—'धवन् ! यह 🟬 क्रिम्ब सुरस्य महान् तेजस्ती एवं हाता रजकोंका क्रवा है, कर आकर्ष जिल्लासको पूर्ण करेगा।' मुनियंति भी 🚃 🚃 अनुस्थेदन किया । तदनकर 📖 सतानीकने महामूर्ति सुनन्तुसे उनदेश करनेके 🗺 🚾 की —हे दिक्केष ! आप कृपकर 📟 पुरवारवी कथाओंच्या करीन की, फिल्के शुनोको सभी पाप नह हो जाते 🛮 और शुभ फरनेकी मध्ये 🔤 है।

महासूनि क्या बोले--- एक् १ व्यक्ति स्था पीवा करनेवाले हैं। उनके सुक्तेबे क्ट्राव कर्क पायेसे मुक हो साम है। बताओ, 🚃 क्या सुन्नेको १९७४ है ?

राजा सतानीकाने बाह्य-अस्तुन्तरेत ! व कीको धर्मशाबा है, विनके सुरानेसे मनुष्य चर्पासे मुक्त हो जाता है।

सुयम् पुनि कोले — दक्षन् | मनु, विष्णु, 📖 अध्रेत, परिता, दश, संपर्ध, प्रकाराय, क्षात्रिक अवस्थान, प्राप्त कारवायन, कुडरपति, गीताय, उश्चन, रिजीवान, 🎹 📖 अधीर आदि अभिनेशार 🔤 ननादि बहत-से 🚃 👫 इन वर्मशाकोको सुरुवर 📑 🔠 इरपञ्चनकर मन्त्र 💹 अकर परम 🔛 🛪 🚃 है, इसमें 🎆 🛍 नहीं है।

प्रसानीयाने कहा — प्रयो ! शाम प्रमाणीयाँ आयने बका है, इन्हें मैंने सूचा है। अब इन्हें धुन: मुननेको इच्छा नहीं है। कुपाकर अस्य बारी वर्जीक कर्ष्यालके लिये जो उपकृत धर्मदाका 🖁 उसे मुक्ते बताये ।

सुरुषु चुनि भोले-नो महत्त्वको ! संस्थरने निमा अभिमेकि उद्धारके किने अकात् महामूर्यम्, औरामकथा अध महापारत 🔤 सद्भाग नौकानमी साधन है। 📺 महाप्राणी 🖮 🚃 प्रकारके व्यक्तानीको प्रशीवीडे संबद्धकर मत्यवतीके पुत्र वेद्व्यासचीने विद्यालयात्रका की रका की, जिसके सुनोसे पहुला बहुएशकके क्वोंसे मुक हो है। इनमें क्या प्रकारके व्याकरण ने हैं—ब्यह, केन्द्र, यान्य, रोह, कायव्य, बारुण, साथित्र्य तथा केव्यव । अहर, प्रया, विका, 🔠, धारवत, करदीव, मार्ककोब, आँध, चरिक्य, म्बर्जनर्वे, स्टिक्ट, स्वयक्, स्वरूप, वासन, कुर्म, मत्स्य, गरंड तथा **महाम्यः—ने अक्षरह महापूराण है। ये सम्बं चारों वजेंकि किये** उपकारक है। इनमेरी आप क्या सुनना चारते हैं ?

राज्य सरक्रमीकने कहा — हे विश्र ! मैंने पहाश्वरत सुन है तथा स्रोतनकथा भी सुनै है, अन्य प्राणोंको भी सुना है, किन् धविष्यपूर्वन 📰 सुन्त है। जन्म विष्यतेष्ठ ! आप पविष्य-पुराजको मुझे सुन्धरे, १२ विकास मुझे महत् कौतुहरू है। सुमन्तु सुनि ओहे-- राजन् । अपने बहत उत्तम बात

📹 है। मैं शायको चाँकप्यपुराक्को कथा सुनात हैं, जिसके 🚃 🔤 📰 महे-को 📰 मह हो जते 🖡 🔤 अध्यमेश्वाद 🚃 पुण्यकल बाह्र होता है तथा अनामें शुक्रिकामी असे होते हैं, स्थि कोई संदेह नहीं। यह साम पुरान पहले सहाजीहारा बका गया है। बिहान् जाहरणकी इसका 🚃 स्थापना अपने दिल्लो तथा लिए क्लान क्षिके अवदेश करना चाहिये । इस पुरायमें और एवं स्मार्त सभी व्यविधा क्षांत्र हुउस है। यह पुरान अस्य महत्त्वाद, सदबुद्धिको बद्धानेकारम्, बद्धा एवं व्येति प्रदान कालेवारम सध्य परमपर-पोक प्रश्न 📰 🔭 पुरिद्विकारियः ।

THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NAM (आक्रमी १ (४१)

इस धरिक्यकायुक्तको सभी धर्मीका सीनवेश हुआ है 🚃 🚃 🚟 दुन्ने और दोबेंकि क्लॉक्स निकारण किया im है। करो कर्नो एका आक्रमोके **बद्धालाला** भी वर्णन किया 🚃 है, 🚟 'सदाचार ही ब्रेड धर्म 🖹 देसा बुतियोगि कहा है, इसलिये अञ्चलको नित्य आचारका पालन करना चाहिले, नवेकि सदाकारों वितीर बाह्यण किसी भी अकार बेटके फलको 🚃 नहीं कर सकता। सदा आचारका पालन करनेपर से यह सम्पूर्ण 🚃 अधिकारी हो जाता है, ऐसा बद्धा भवा है। सटाकरको 🔣 मुनियोने प्रम् तथा तपर्वाओंका मुरु 🚃 पान है, सनुष्य भी इसीका 🚃 लेकर वर्गान्यस्य करते हैं। इस 📖 इस पविष्यमहापुरायमें उक्रवास्का वर्णन किया गया है<sup>1</sup>। तीनों स्प्रेकोंको उत्पत्ति,

१-आकरः प्रकारे भर्तः शुलुकशः नकेतन । तस्त्रार्धानन् कारकृते निन्तं स्वाटनकान् हिन्नः त

विवाहादि संस्कार-विधि, जी-प्रूचेके लक्षण, देवपुर्वका विधान, राजाओंके धर्म 🔣 कर्तव्यका निर्णय, सुर्वकावया,

विष्यु, रह, दर्भ तथा सरकारकाच्या पहलव एवं पृष्य-विभान, विविध 🎟 वर्षन, उत्पद्धर्म 📟 ऋश्वेस-

विधि, संध्याविधि, जान, तर्पण, बैद्धदेव, घोजनीवीध, अतिकर्म, कुरुवर्म, वेदक्म शका वक्क-प्रवासन्ये अनुवित

होनेवाले 📖 वज्ञेका वर्णन इआ है।

📕 कुलब्रेष्ट कताबीक ! इस पदान्तावको | र्चायरको, राज्यने विष्कृतके, विष्कृते नशरको, नशरने इन्हर्को, इन्हरे पराइएको समा पराइएवे ब्लाइनको स्टब्स और व्यापको

प्राप्त विषय । इस 🚃 परण्या-प्राप्त इस 🚃 भविष्यमञ्जूशकको 🖩 अस्पत्ते कल्ला 🛊 , इसे सूने ।

इस पविष्यकानुस्थली इस्तेल-संख्य क्यान स्थान 👫: इसे प्रतिन्तृर्वक सुननेकारा ऋषि, वृद्धि क्या समूर्ण सम्पत्तिमें से सार करता है। सहस्यात्मा स्था इस नवस्यानने

पर्व 🌃 गये है—(१) प्रका, (३) वैच्या, (१) तैंश, (४) त्ववृ तथा (५) प्रतिमर्गन्यं । प्राच्ये मर्ग, प्रतिसर्ग, बंदा, मन्त्रका 🚥 बंद्रामुख्येल—ये 🕶 🚥

बताये गये हैं तथा इसमें चैटक सामाधारा थी वर्गन है'। चीवत विद्यार्थं इस प्रकार है—क्या केट (अन्त, क्या, सम्ब अधर्य), छः वेदाङ्ग (जिला, करण, निरुक, क्यान्यन, कर,

क्केंद्रिक), मीन्त्रेसा, न्याय, पूराण तथा धर्मप्रकर । आयुर्वेद, धन्मेंत, गान्धमंत्रेद तथा अर्थपुरम्— इन पारेको मिलानेसे

अक्सर विचाएँ होती है।

भूमानु मुनि युवः कोले—हे कवन् ! अब वै भूतवर्ग अर्थात् समस्त प्राणयोको उत्परिका वर्णन काला है, जिसके स्ववेसे सभी पापीकी निवृत्ति हो आहे है और प्रवृत्त पटन शास्त्रिको प्राप्त करता है।

है 🔤 ! पूर्वबङ्गलमें यह सारा संसार अन्यकारने व्यक्त 👊, कोर्ट पद्धर्व दृष्टिणत नहीं होता था, अविदेश या, अतर्क चा और प्रसुत-स्त चा। उस समय सुक्ष्म असीन्द्रिय और

सर्वप्रकार 📰 परावार 🚃 परावार परासंते अपने इतिरसे स्थाप सृष्टि करनेकी स्थाप की और सर्वप्रथम क्रमानने वरणी उत्पा क्रमा तक उसमें अपने तीर्यरूप

इक्टिका अकान किया। इससे देवता, असर, मनुष्य आदि समूर्ण बगत् उत्पन्न हजा। यह वीर्य जलमें निरनेसे अस्टन्त प्रवासका सुवर्णका अच्छा हो गया। उस अच्छके मध्यके वृद्धिकार्था अपूर्वेक लोकविकामह व्यक्ता उत्पन्न हुए।

मा (बनवान) से जलावे उत्पक्ति हुई है, इसलिये जलावे ना करते है। यह का विसम्ब पहले अपन (स्थान) हुआ,

📰 नारायण बाहरे है। ये सदसहूब, अव्यक्त एवं विराधकारण है, इनसे किन पूज्य-विद्योगको सृष्टि हुई, में लोपाने बहाकि 🚃 अभिन्द हुए। बहार्जीने दीर्बन्यतंत्रन्तं तपस्य 🖫 और

🚃 🚃 🖥 थाग कर दिवे । एक धारासे मुॉम और दूसरेसे स्थानुस्य रक्त्य था, क्ल्प्स स्ट्रा, स्ट्रा दिवाओं तथा

करणका विकास-स्वास अर्थात् समूद्र धनाया । पित्र महदादि क्या सभी व्यक्ति स्वय भी।

क्रमानको सर्वश्रम्म आकारको अस्म निमा और फिर हरूरो <u>हता.</u> आहे, हता और पृथ्वी---इन स्लास रचना 🔤 सहिके आदिने ही 🚃 उन सबके नाम और कर्न केद्रेके निर्देशकतृत्वर 📆 निवश कर उनकी अलग-अलग

संस्थारी कम दी । देवताओंके तृतित आदि गण, क्योतिहोमादि अवतन बड़, बह, नक्षत्र, नदी, मन्द्र, पर्वत, सम एवं वियम

मुन्दै अबंदि उत्पन्न कर कारूके विभागी (संवस्सर, दिन, 📖 अवदि)और ऋतुओं आदिश्रीरचना की। काम, क्रोध आदिश्री

भाषामञ्जूषे विवे २ वेद्धानमञ्जूषे । अध्योग च संकृतः समूर्वकरणकु सुरः । एकमानातो दृष्ट्य धर्मस कृत्ये पील् । सर्वतः काले 🚃 अनुहः परम् ॥ अन्ये न 🚃 राजनाव्यां मॅक्सिक रूट । एक्सीकन् पूर्वने 😹 🚃 न व्यक्तिकः ॥ (म्ब्यूपर्व १ (८१-८४)

१-वर्तमन 📖 भविष्यस्थानक जे संस्कान उन्हेंन है 📹 🗯 घनम, धनम, धनिनये नवी उत्तर समक कर सर्ग सिस्ते हैं और इस्पेक-संस्था के प्रधान प्रधाने 🚥 नगपन अहुईन 📭 है। इस्पे 🛍 🚃 जल 🔤 सारे को 🖫

२-सर्गं ॥ प्रतिसर्गेष्ट वेशो सन्दर्भराणि य ॥

वंद्रान्यरेतं वैव प्राचे प्राच्यायम् । यर्द्रीयंश्रीवर्धानवृतितं

(बस्तवर्ग २ । ४-५)

W, I

अधर्मको रचना को और जनविष प्रणिजगत्को सृष्टिकर ठनको सुक-दुःस, हर्व-प्रोक्त आदि इन्होने संयुक्त किया। 🕍 वर्ग जिसमे किया था करनुसार 📰 (इन्ह्रू चन्द्रू सूर्व आदि) परीपर नियुक्ति हुई। हिसा, अहिमा, युद्, हुन, वर्ग, अवर्ग, सत्य, असत्य आदि जीवोंका कैश स्वयाव 📺 📆 वैसे ही उनमें प्रविष्ट हुआ, जैसे विकित ऋषुओंने क्योंने पूर्ण, पाल आदि उत्पन्न होते है।

१२१ लोक्स्पी अधिवृद्धिके लिये बहुतकीने अपने मुक्तारे 🚃 बाहुओं से स्तिय, कर अर्थात् 📰 बैहव 📰

चरणेसे पूर्वोको उरका 🔤 अञ्चलक करे पूर्वासे 🔤 वेद कराम हुए। पूर्व-भूकार ऋषेद अवट हका, उसे वरित्र भुनिने बहुच किया । दक्तिय-युक्तने कबुवेद उपमा हुआ, 📰 महर्षि यात्रकरकाने 🚃 🚾 प्रश्निम-पुकारे 📹 मि:सूत बुध्य, उसे गीतमञ्जाभिते 🚃 भिन्न और उत्तर-मुक्तमे अवर्ववेद प्रापुर्वत हुआ, व्यति रहेकमुक्ति 📰 चीनको प्रतम किया । सहस्थेके लेकप्रसिद्ध पहल (३००) मुक्तमे अराग्ड पुराव, इतिहास और प्रमाद स्पृति-दशक अस्त

इसके कर सहायोगे अपने देहके हो भाग किये । हाहिने भागको एक 📖 बार्गे भागको सी करूपा और उनके विराह पुरुवको सृष्टि को। उस विध्य कुल्ले 🚃 🚃 सुद्धि रचनेकी 🔚 बहुत कालतक तपस्य 🗎 📖 सर्वप्रथम दस ऋषियोको उत्पन्न किया, जो अध्यक्ती बद्धारहरू । उनके नाम इस अकार है—(१) नाटर, (२) भूगु, (३) व्यास्त्र

(४) मचेता, (६) पुलह, (६) सञ्जू, (७) पुलस्त, (८) अप्रि. (९) अनुषा और (१०) वर्तीय। इसी प्रकार अन्य महातेकसी ऋषि भी उत्पन्न कृत्। अनन्तर देवता, 🚃

दैख और राक्त, मिलाच, गन्धर्व, अप्तारा, वितर, पनुष्य, स्मि, सर्प आदि बोनियोंके अनेक गल करका किये और उनके

रहनेके स्थानीको कारणा विद्युत, मेच, कन, इन्ह्रकनुष,

निर्वतनि ततसारमानुस्यत् युक्तकृतेहरः। तथानाः स्कृतकानि कारणः रोजावृतिकः स २-अवेषम्यः करम्पानस्या सम्बन्धिकरकेण्यः।असूना 🚃 वे ने कृतस्यानः सून्यः॥

पुण्यिकः पर्वतन्त्रीय युद्धारत्थयतः स्पृताः। तसमा अकृत्येत्। असःस्का चननेते न्यद्वारार्थकाः ।

कुमकेद (पुण्डल को), उल्का, निर्मत (मादलोंकी गहगहरूट) और छोटे-बहें नक्षत्रेको उत्पन्न किया। मनुष्य,

🔚 अनेक प्रकारके मत्त्व, करह, पक्षी, हाथी, खेड्डे, पर्गु, मुग, कृषि, कीट, प्रतेष आदि होटे-बड़े जीवीको उत्पन्न किया। इस प्रकर उन पास्करदेवने प्रिलेक्कि 📖 की।

हे राजन् ! इस स्रहित्सी रजनकार स्रहिते जिन-जिन क्षेत्रेक जे-जे कर्न और क्रम कहा गया है, उसका मैं धर्मन करक है, अस्य सुने।

क्रथी, क्याल, मृत्र और विविध पश्, पिदान, मनुष्य क्षमा श्वास अर्थद मध्यून (गर्यसे उत्त्य संग्वाके) प्राणी है ( कर्प, क्यूने, सर्प, मगर तथा अनेक प्रकारके पश्री अध्यान (अर्थाने उत्का इंनेवारं) है। मक्ती, मक्तर, ब्रै, कटमल अबदि जीव संबद्ध है अध्यांत् वस्त्रिवेशी उच्चारी उत्पन्न होते हैं। चुनिको 📫 📟 📟 🛗 पुन, ओवधियाँ आहे. बाहुमा 🚃 है। यो पालके सम्बद्धा रहे और सह 😁

🛥 व नह हो 📖 तथा शहर कुल और परस्वारे वृक्ष 🖡 वे ओवीय बहरूको है और 🏭 एकके आये विन्य ही फरलो 🐧 🖫 📟 📕 समा जो एन्टर्स और फलते हैं उन्हें बुध

🚃 है। इसे 📖 गूरण, करली, विद्यान आदि भी अनेक चेद 🛗 है। वे सब 🛲 📖 काम बरमाने अर्थात् वृशसी **ाव्या** प्राप्त काटकर भूमिने ताड़ देनेसे इस्का होते हैं। ये

वृक्ष अर्थः 🗷 काम-सरियामा 🛮 और 🗃 सुर-दःसका 🚃 🛌 है, परंतु पूर्वजनके 📖 कारण तमोगुणसे व्याप्तान रहते हैं, इसी कारण पनुष्योकी भारत बातबीत आदि करनेने शयर्च नहीं हो यहें।

📻 🚃 📉 व्यक्ताच वराधर-जरात धरवान धारवस्से रुपन दुश्य है। अस वह परमात्म निहानम आश्रम प्रहण कर 🖿 🖚 💐 है, तब 🖿 संसार उसपे स्था हो जाता है और क्य निरुक्त 📖 करता 🛮 अर्थात् जागता है, 📖 सम् सृष्टि उत्पा 🛅 🛘 और समस्त औष पूर्वकर्मानुसार अपने-अपने

१-वरम्पः 🚃 पद्म सेटनिकृत्यः स्टब्स्स पूर्णाः विकासीः

(आक्रमणं २ । ५६-५७)

(स्कृष्यं २०७६—७५)

कर्मोंमें प्रकृत हो जाते हैं। यह अञ्चय परफाया सम्पूर्ण करकार संस्मरको अञ्चल् और शयन दोनो अवस्थाओहरूत कर-कर समा और समा करता सम्बन्ध है।

परमेशर अरुपके प्रारममें सृष्टि और कम्पके अन्तमें प्रारम्य परती है। फरूप परमेशरका दिन है। इस कारण परमेशरके दिनमें सृष्टि और राजिये प्रतम होना है। हे सभा प्रशासिक। अस साथ कारण-मामानों सुने—

अञ्चलक निर्मेष (परम्क निर्मेष सम्बन्धे निर्मेष बाहिते हैं) की एक काहा होती है अर्थात् जितने सम्बन्धे अञ्चलक का परम्बंधेश निरम्भ हो, उसने कारणके बाह्या करते हैं। मैस श्राह्मधी एक कारण, तीस करणका एक कम, कारण क्रमका एक मुद्दूर्त, तीस सुदूर्वका एक दिन-रात, तीस दिन-रातका एक महीना, दो महीनोंकी एक जातु, तीन जातुका एक अच्छा तत्वा अवनोका एक वर्ष होता है। इस अच्छार सुर्वकारणक्ते द्वारा दिन-रातका कारण-विधास खेला है। समूर्व जिल्ला

विश्वास करते हैं और दिनमें अपने-अपने कर्मने प्रमुत होते हैं।

हिन-रात मन्त्रोंक एक विश्वास का कि
है अर्थात सुद्ध पश्चम रिकारको गाँउ और कुम्प विश्व दिन
होता है। देवताओंका एक महोचार (दिन-रात) मन्त्रोंक एक
विश्व कर्मन होता है अर्थात् रात्रापण विश्व तथा सम्बद्धाः एक
विश्व कर्मन होता है। हे एकन् । अब अरथ सहस्रोंके इत-दिन
और एक-एक पुगके अव्यावको मूने—अर्थन्त्र पर हमार
वर्गना है, उसके संपर्धातको चार हो हिन तथा संप्राप्ते कर
सी वर्ग मिरानकर इस प्रकार चार हमार आठ सी दिन्स वर्गन्तः
एक संस्थान होता हैं। इसी अवसर बेतानुन तीन हमार कर्मन्त

वर्ष, प्राप्त के हमार वर्षोंका संस्था तथा संस्थापको चार सौ वर्ष पुरुष के हमार कार सौ वर्ष शका करिल्युम एक हमार वर्ष तथा संस्था और संस्थापको के सौ वर्ष विरायक मारह सौ वर्षोंक माराम होता है। वे सम दिवस वर्ष मिरावक मारह हआर दिवस वर्ष होते हैं। वही देवताओंका एक पुग कहराता है।

ा विकास कर्म अन्यत्र स्थान है। यह महत्व्य अपनी विकेट अन्यत्र सेकर स्थान है का सन्-असन्-अप पनको स्थान है। यह सन मृष्टि करनेकी इच्छाने विकासको प्राप्त होता है, उस उससे प्रथम अवस्थान-तत्त्व अस्पन होता है। अवस्थानक गुल पन्द करा बाद है। विकासपुरत आकाशो का प्रथमिक गुल कर्म बाद करनेवाले प्रथम वास्की उसमि क्षेत्री है, निकास गुल कर्मा है। इसी प्रथम विकासवान वास्की अपन्यवस्था गुल क्ष्म है। विकासकान सेकाले अस्त, जिसका गुल रस है और असने गम्बद्धानको पृथ्मी अस्त्र होती है। इसी प्रथम इतिका अस्त बाद्या रहता है।

पूर्वने करह हजार स्थान क्याता से एक स्थान पूर क्यान गया है, वैसे हो एकहरूर बुग होनेसे एक मन्यगर होता है। ब्यानीक एक दिनमें चीदह गणायर कातीत होते हैं।

सारकपुर्णने वर्षक कार्य पाद वर्तमान करते हैं अर्थात् सारकपुर्णने वर्ष दे (अर्थात् सर्वाहपूर्ण) रहता है। स्ट-एक वर्गण प्रदेश साथ है,—अर्थात् नेताये धर्मक तीन कार्य क्ष्मपूर्ण के साथ कार्यन्तुगर्भ कर्मक एक ही चाण साथ क्षमपुर्ण के साथ साथ अर्थाक रहते हैं। सारक्याके

१-एक संस्थिति पूर्वी सूर्व-संस्थितकां नकाको होर कर 🚃 है। बाद और अमेका एक और वर्व रीत है और सनुध-प्रकार यही एक और वर्ष देवताओंका एक अहोदक क्षेत्र है। ऐसे हो जेन उद्योग्लोक एक कर और 🚃 क्षरांका एक दिवा 🕮 📆 है।

<b>ा</b> तंत्रकांस्त्रोत पूर्वेक पर	fire will	सीर क्योंने
१-स <b>राकृत्यः</b> सार	W.644	\$9,36,000
र-जेवानुगम्ब मान	3,500	\$2.3E,000
६-द्यपरकुरका सार	5'Aes	4,88,000
४-व्यसिनुसम्ब 🚃	9,9++	W.37,000

महायुग वा एक सङ्कृषि—

\$3,000

ার ই, ইত, তত তথ্য

मनुष्य धर्मात्मा, नीरोग, सत्यकदो होते हुए कार सी क्वीतक जीवन पारण करते हैं। किर केत आदि क्वोंने इन सची क्वीका एक चतुर्वाता न्यून हो जाता है, बचा क्रेक्के मनूना क्षेत्र सी वर्ग, प्रायके दो सी वर्ग तथा व्यक्तिकृति एक सी वर्गतक जान भारत करते हैं। इस खारे व्यक्ति धर्म में जिन्हासा होते हैं। सस्पन्नमें करता, जेतने इत, हपत्वे यह और कलियुगमे दान प्रथम धर्म मान गया है।

परम स्थितान् परमेक्टने स्ट्रिकी उक्के देखे अपने मुक्त, भुक्त, करु और चरनोंने हमातः आहम, बर्किन, बैदन तवा चुर--पुर 📖 क्लोको 📖 क्लिक और उनके सिवे क्षाण-अलग क्योंके बार्क के । विशेष व्यापक पदाना, 📖 करना पता कराना तथा दान देना और दान रेला—ये कः कर्म निश्चित किये गये हैं। पहन, यह करन, दान देना तथा प्रमाओका प्राप्त कादि सन्न व्यक्तिके रिको नियम किमे गये हैं। पहला, यह करना, यन देला, पञ्चलोकी करना, क्रेती-क्सपारसे क्यार्थन करना—ने क्या वैद्योंके लिये विश्वीर किये गये और इन तेले क्योंकी केक करण--- यह एक मुक्त कर्म सुद्धेका नियम किया गया है।

पुरुषकी देहने गाणिसे कपरका भाग अस्तरून परिवर पान 🚃 है। उसमें भी मूच प्रचल है। सदस्य प्रक्रिक गुक (क्सम्बद्ध) से बरणा हुआ है, इस्तिको सब्दान सबसे उत्तम 🖟 यह बेराको मानो है। जहारतीने बहुत कालाहर सरावा नमके सबसे पहले देवना और विनरीको 🚃 तक कन्य पहेंचनिके रिप्ने और सम्पूर्ण 🚃 स्था करने-केन् सक्तामको उत्पन्न किया । विशेषामक्षे अस्पन्न होने और नेदको धारण करनेके कारण सम्पूर्ण संसारका सामा धर्मतः अस्तरण ही है । सब पूरी (स्थायर-बहुमकम पदार्थी) में अली (कीट आदि) श्रेष्ठ हैं, प्रशिववेंमें बृद्धिये व्यवहार करनेवाले पद्म आदि बेह हैं। मृद्धि रहनेव्यक्ते जीवीमे मनुष्य होह है और मतुष्योमे हाला कहागोपे विद्यान, विद्यानीमें कराबदि, और कृतवृद्धियोमे कर्म करनेवाले तथा इनसे सक्ष्येता—बहुद्वानी ब्रेष्ठ हैं। ब्रह्मलका जन्म धर्म-सम्पादन कानेके रिप्पे हैं और धर्माचरणसे ऋहाण ब्रह्मस्व तथा ब्रह्मस्वेकको प्रक करता है।

राजा शतानीकने पूछा—हे महसूने ! बहालोक और बहुएव अति दर्शम है फिर बहुएकमें कौनले हेरे गुल होते हैं.

जिनके कारण 📖 इन्हें प्रवा करता है। कुमाकर 📖 । वर्णन करें।

सुकन्तु कृति कोले-हे एउन् ! आपने वहत ही पूर्ण है, || आफ्को वे करो बताता है, उने व्यानपूर्वक सुरे।

जिस कहानके 📖 प्रत्योगे 🚃 गर्भाचन, पुंसवन अदि अहतालीस संस्कार विभिन्नकंत हुए हो, 🔣 🚃 ब्युहरनेक और ब्युहरूको प्राप्त करता है। शेकार 🖥 ब्हाल-प्रक्रिक मुख्य कारण है, इसमें कोई संदेश नहीं।

सामानीकने पुत्रा—महत्त्रम् । वे संस्कार 🚃 है, 📷 विकास मुझे बहान बौतुहरू हो रहा है। कृतका 📖 हुने कार्त ।

सुराक्षी बोले--एक्ष्! वेधार जानीमें जिन 🚃 🛗 निर्देश इश्य है 🚃 मैं वर्णन 🚃 है— कर्वाचार, पुंतवर, सीमकोत्रपर, जतकर्म, समकरण, असरायान, कुद्धानार्य, उपनयन, यह प्रकारके बेदावत, बेदकान, विकास, प्रकारकारक (विजयो देवता, विवरो, अनुका, 🚌 🔚 📰 हति होत्री है), सारपाकपत्र-संस्था— अरुकाहम, फर्कन, ऋकनी, अनमहायमी, वित्री (शुरुगांव) तत्व अववयुर्वे, साहविषेत्र-संस्था—आग्र्याधान, अप्रिहेत, दर्श-पैर्वमास, कार्युनीस, निरुद्धपञ्चन्य, सीतामणी और स्वरकेय-संस्था-अधिक्षेत्र, अस्त्वीव्होत्त, उपन्य, पोडस्रे, बाजपेय, अधिका और असोर्याय---चे पालीस साहायके 🚃 है। इनके सम्ब 🖩 ब्राह्मणमें आठ आरमपूर्ण भी नामा 🗺 चहिने, निससे महानी प्राप्ति होती है। ये आह गुण इस प्रकार हैं—

#### 🚃 🕶 क्रान्तिरनावासे च पश्चरूप् । अवर्तन्ते तक सीकारपुत्र व मुख्यहा।। (जनसर्व २ । १५६)

'अनस्या (दूसरोके मुलीमें दोष-बृद्धि नहीं (सना), एक, 🚃 अनावास (किसी सामान्य बातके पीछे जानकी बचै २ लचन), प्रमुल (सङ्गूलिक वस्तुओंका धारण), असर्थिन्य (दोन 📖 नहीं बोलना और 🚃 कृपण द कान), श्रीच (क्याम्यन्यत्वी सृद्धि) और अस्त्रहा—ये अब्द आत्माम्म है ।' इनकी पूरी परिभावा इस प्रकार है—

गुणीके गुणोंको न स्थिपना अर्थात् प्रकट करना, अपने मुर्गोको प्रकट न करना तथा दुसरेके दोखेको देखकर प्रकार न क्षेत्रा सम्बद्धका है। अपने-पराचेमें, 🎮 और प्रावृत्ते अपने सम्बन व्यवहार करना और दूसरेका दुःशा दूर करनेकी इच्छा रसना दवा है। यन, वचन अधवा प्रकेरते वर्धे दःश को पहेंचाये तो 🚃 क्रोध और 🔣 न 🚃 🦭 है । अध्यक्ष वस्तुका 🚃 न करना, निव्दित पुरुषोका सक्षु न करना और सदाबरको स्थित बार्क स्थेब 📰 🚃 है। जिन सुध करनेके रावेरको 🚃 होता है, उस 🚃 इतात नहीं 🚃 चाहिये. .... सम्बद्धाः 🕯 : निरंप अपने 🚟 🖼 करण और

कुं। कर्मोका परित्याग करचा—यह स्मूल-गृह्य अञ्चलका है। बड़े बड़ एवं जीवगरे न्वचीपर्शित धनसे उदारतापूर्वक केहा-बहुत नित्य चल हारच अकार्यका है। ईक्षरकी कृपासे का बोहों-को सम्बंधिने भी संस्कृ रहना और दूसरेके धनकी विक्रिया की इक्क न स्वाम अस्तुहा है<sup>र</sup> । इन आठ मुखें और कृषेक संस्कारेंसे 🔣 अकृष्य संस्कृत 🖥 🚃 बहालोक 🚃 महाराज्यो ............ है। ......... गर्भ-शक्ति हो, सम संस्कार विकास 🚃 कुर् 🗎 🔤 यह वर्गक्रम-वर्णक पालव करत 🛮 🖟 उसे बावांक मुक्ति 🗪 होती है।

(अस्थाय १-२)

## गर्थाजनसे पञ्जेपबीतपर्यन्त संस्कारीकी संक्षिप्त विकि, अन्नजनंता तथा घोजन-विकित प्रसंगये वनवर्धनकी कथा, हार्थाके लीई एवं अञ्चयन-विधि

राजा शतानीकर्ष सहर—हे पूर्व । अवने पूर्व जातकार्योदे संस्कृतिके विकास कार्या, अस 🚃 🧰 इंक्सपेके रुक्तण तथा करें 📶 एवं 📖 कुरव करें।

सुमन् पुनि केले-एकन् । गर्थाचन, प्रस्का, सीमक्तीअपन, जासकर्म, असाराहान, क्यावर्म तथा पहोच्यात आदि संस्कारोके बाजी द्विजानिके बाजी सक गर्भ-सम्बन्धी सभी दोष निवृत्त हो जाते हैं । वेदायस्थर, 🚃 होस, त्रीवद्य वत, देववि-पित्-तर्पण, प्रकेरकदन, 🚃 महत्त्वक और ज्योतिहोस्तदि पञ्जेके 📖 वह 🛗 👊 नात-मानिक योज्य हो प्राप्त है। बार इन व्यानिक विकास अवस्थि स्रो—

पुरुषका जातकर्म-संस्थार नालकोदनसे पहिले विका आता है। इसमें वेदमन्त्रीके उत्तारमन्त्रीक कलक्का सूचर्ग,

मचु और कुरका प्राप्तन कराया जाता है। दसमें दिन, बारहवें दिन, व्याप्ति दिन क्या एक मास पूरा होनेपर शुध सिधि-🏬 और सूच नवार्ये नामकरण-संस्कार 🔤 🚃 है। सदानक 📖 सहरुवाकक 📠 चहिये, जैसे शिवशर्यी । 🚃 🚃 असे इन्हरूने । वैद्यका धर्मपुरः 🔙 धनवर्षन और प्रतक्त भी 🚃 🚃 🚃 स्वान चाहिये : जन 🎹 एकना चाहिये, जिसके बोर्स्टर्नेये क्य न हो, कुर न हो, 📟 स्पष्ट और 🚃 हो, जिसके सुरोते यन 📖 हो शया महरूस्चक एवं असीवदिवृक्त हो और किसके अन्तमें आकार, ईकार आदि रीयें का हैं। वैसे पञ्चेत्रदेवी अहर ।

अध्यक्षे अध्यक्षे दिन ==== चतुर्च मासमें बाह्यकारे भरते 🛍 निकारमा चाहिये. 💹 📖 बहते हैं। सुटे

मसमे बारम्बन अप्रवासन-संस्कृत 📖 वाहिये । पहारे 📰

१-म गुनान् मुनिने हरित् 🗈 मीरकारमुख्यानि : सहस्रते 📁 आस्टोनिसमुख लगे क्यूगों व निते देही व तठ। जन्महर्ति का नाम व रथ परिवर्तित । क्षण 🔤 यात्रे व दुःसेनेत्वरितेन वतन कृष्णी न भारतिः सर एक परिवर्तिक । संसर्गक्षान्तरिन्ति । अस्यो य सन्वस्थान प्रोधनेत्रम् प्रवस्थितम् । क्रोरे 📟 के गुवेबार व कर्मच । अस्तर्ग का क्ष्मीत अस्त्राकः म उन्हरं॥ निरमायप्रसानिकर्जनम् । एसीदः स्थाने केने महिनीयांताकादिनिः स प्रदारमञ्ज्ञीनकारकार । अञ्चलकी भवेरकोन 🖮 स्वत्वेद्वायभ कन्ना। अहिनक प्रत्येष् सामग्रह

(**कार**को २ (१५७ **– १५**४)

तीसरे जनमें मुक्तन-संस्कार करना कहिये। वर्षसे आठवें वर्षमें महराजका, त्यारहवें वर्षमें शक्तिकार और कारहवें वर्षमें विश्वका वर्षों वर्षमें वर्षमें वर्षमें । परंतु वर्षमें वर्षमें वर्षमें वर्षमें । परंतु वर्षमें वर्

🚃 📰 रक्तन चारिये।

१-तयार्थ

रवाले प्रकृतारमधी है। एवंदी अपने संस्कृत कृत्य (करत्ये)-धूग-वर्ध, स्टलस्क मृत्या वर्ष और कारेका वर्ष भारत करना चाहिये। इसी स्थार हामताः सम (टाट), अरुसी और भेड़के अनका साम धारण करना बाहिये । सामण सामकारेके लिये तीन राजीबारचे सुरुदर बिल्ला मुक्तको, बिल्ला 📺 मूर्वा (मूरा) 🖷 और वैद्ययके लिये सनब2 वेकला बड़ी क्ली है। मूंत्र आदिके अप न होनेकर हत्यकः कृत्य, अक्रमक्क और बल्यम नामक राजकी मेसरराको 🛅 रुद्धीचारी 🚟 🙉. तीन 🚃 पाँच 🚃 🛗 रुग्तन्त्रे व्यक्तिये । स्वयुक्त कपासके सुरक्षा, श्रविष सनके सुरका और वैद्यम भेड़के कनका बाह्यभवीत भारत करे। साहांत्र विस्त, परमञ्ज क प्रक्षका दश्क, जो सिरएर्जन हो उसे घारण करे : 🚃 बड, श्रदिर या मेतके ....... मस्तकपर्यना केना और वेदन पैसन (पोल् वृक्षकी रूक्षकी), गुरूर अवना पीपरुके काहका दक्क नारिकापर्यम कैया चारण करे। ये टब्ड सीचे, क्रिट्राहित और स्ट्र होने चाहिये। यहोपबीत-संकारचे अचना-अचना दुन्ह धारणकर प्रगवान् सूर्वनस्थानका उपस्थान को और मुख्यी

विश्व भूगि । विश्व भौगते समय उपनीत ऋहण वट् देनेक्स्पेसे 'चलति ! चिक्कां ये देहि', श्रीवय 'चिक्कां व्यवि ! ने देक्षि' तक कैस्य 'विश्वते देवि मे भवति !'—नस प्रकारते 'बबारि' इस्टबंब क्योग करे। विश्वामें वे सूवर्ण, 🚃 🚃 अन्य अञ्चलकार्धको दे । इस प्रकार भिक्षा प्रहणकर ब्यानको उसे गुरुको नियेदित कर दे और गुरुको आहा पाकर वृत्तीक्ष्म है अवस्थानस वैद्या भरे। वृत्ती और मुक 🔤 क्षेत्रन करनेसे उच्यु, एक्रिज-युक्त करनेसे युक्त, पश्चिम-मुख कार्यको राष्ट्राची और उत्तर-मुख्य करके योजन कार्यको संपन्ने ऑपनुद्धि 🔣 है। एक्स्प्रॉक्त हो उत्तम अत्रका योगन व्यक्त अनगर आयागावर अही (और) 🚃 🚾 वसको भागो भन्ने । अभन्ने निस्य सुन्ति भागो **व्यक्ति और अन्नको निन्दा किये किया योजन करना चाहिये।** असम्बद्ध दर्शनकर संसुष्ट एवं प्रसन्न होना चाहिये। हवस भोजन करना च्यांत्रचे । पुरिता असके धोजनसे बाल और तेजकी वृद्धि होनो 🛊 🛲 🊃 🔤 भोजनसे बाह और तेज दोनीको 🚃 🚾 के । 🚃 सम्बद्ध उत्तम जनवर भीजन करना व्यक्ति । उन्हरू (बुटा) विभीको नहीं देना व्यक्तिये तथा स्वर्ध भी निवरीका अध्यक्त 🚟 🚃 चाहिये । 🚟 🚟 📆 🚃 🗃 ओढ़ दे 🍱 🚃 जहण न महे अर्थात् मार-आर क्षेत्र-सोद्धकर चोजन न भंगे, एक बार बैठकर हसिपूर्वक भीतन कर हेना-व्यक्तित औं पूरूब बीच-बीचमें विचोद करके. क्षेत्रपत भोजन करता है, उसके दोनों क्षेक नष्ट हो जाते हैं. कीर धनवर्धन वैद्यके हर थे।

🚃 करे तथा 🚾 अनुसार सर्वप्रथम माता, बहिन वा

राज्या सतानीकाने सूक्षा—ध्याराय । साम धनवर्धन वैद्यकी कथा सुनाइने । उसने कैसा भोजन किथा और उसका मा परिचल हजा ?

सुमन्तु मुस्ति कहा—राजन् ! स्ववद्याको बात ॥, पुन्करकेको कर-कन्सो सम्बद्ध करवर्धन नामक एक देश्य । एक दिन ॥। जिस्स अनुमें मध्यकृते समय

्यूनवेदिस्यानकार्वीतरमुक्तानम् । दर्शाचन् तस्य कृषेत् 🖩 अविदेशानि पास्त ॥

পুলি সামা সিংগ কান্ট্রনা কর্মান । সংক্রিয় যু তল্পোল্ডগ কান্ট্রিয়ন্।

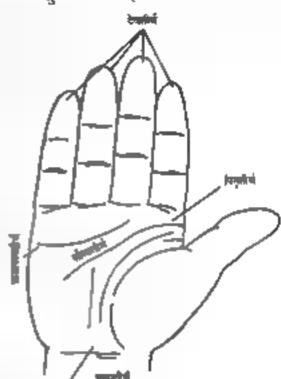
वैश्वदेव-कर्म सप्तन कर अपने पुत्र, मिन तथा कन्यु-काशवीके 🚃 भोजन 🖿 रहा था। इस्तेमे 📑 अवस्थान् 🚞 💳 एक बार्क्स सम्बद्धी पहा । बार सम्बद्धी सुनने 🖫 👊 दयायाः पोजनको क्रोडकर बाहरको ओर दीका । सिंग् जनकर वह बाहर पहुँचा वह आवाज बंद हो नगर । जिन स्त्रैटकर उस 📻 पत्रमें 🛮 संद्रा हुआ संज्ञा 🗈 उसे का रिन्या। भोजन पहले ही उस पैरुपकी मृत्यु हो पनी 🔤 📻 अपराधवात परलेकरें के उसकी दुर्गीत हो। इस्मीरने केंद्रे हर पोजनको फिर कथी नहीं खत्म सहिये। उर्वक योजन भी नहीं करना चाहिये । इससे क्ररेशने अरविषक रसकी उत्पत्ति होती है, ब्लाइ प्रविक्ताय (मुख्यम, क्यारी), ग्या) अवद अनेक रोग उत्पन्न हो बाँवे हैं। अवन्ति हो बावेने स्वय, दार, तप, होम, तर्पम, एक आदि कोई भी एल्क कन डीकसे सम्बद्ध नहीं है। पति । स्वतं पोजन करना करना देन करना 📟 है---अपप पटती है, लोकमें निष्या होती है तथा असमें सहित 📑 नहीं होती । संस्कृष्ट मुक्तमे कहाँ नहीं करन स्वकृषे । 📖 पश्चिमवाके रहना जातिये । पश्चिम व्यक्ता वहाँ संस्थाने 🛍 🛊 और असमें कार्म कार्य है।

राजाने पूछा — मुनीवर १ जब्दान किस कान्ति करनेथे स्था होता है ? इसका अप सांध करे :

सुमण्डु मुनि बोले — एउन् ! के सहाम निर्माणक अध्यमन करता है, यह पवित्र ही जाता है और सरक्षणिय अधिकारों ही जाता है। आवश्यकों विशेष कर है कि साथ-पवित्र योगर पवित्र स्थानमें अध्यक्षण उत्तर पूर्व अध्यक्ष जातवी और मुख करके बैठे। दाहिने संज्ञकों अध्यक्ष करता और वित्र कन्यक्ष एवं केनले रहित जीतक एवं विकास करने और वित्र कन्यक्ष एवं केनले रहित जीतक एवं विकास करने आवश्यन करे। साहे-करहे, बात करते, इधर-उधर देखते कुर, इध्यक्षणे और अध्यक्त होकर आवश्यन न करे।

हे एउन् ! अक्षणके दक्षीये सबने चीच सीचे को को है--- (१) देवतीर्थ, (२) विद्तीर्थ, (३) व्यक्तीर्थ, (४) प्रजापत्यतीर्थ और (५) सीन्यतीर्थ। अब **व्या**  सुने अंगूडेके पूरुमें बकातीर्थ, कनिसके मूरुमें कम्पानार्थ देवतीर्थ, असुरियोके अग्रयागमें देवतीर्थ, तर्जनी
 असुनके प्रितृतीर्थ और संपर्क पथ्य-भागमें

\_\_\_\_



र्शन्यतीर्थं कहा जाता है, जो देवकर्गमें प्रशास माना गया है । देवाओं, स्वयनको अपित आदि जो देवलेक्सें, तर्पण, विकादान्यदे कर्म पितृतीर्थंते; अवकान सहातीर्थंते; सिवाहकें का स्वयन्तिकादि और सोकान प्राचायस्वतीर्थंते; कमच्यंतु-च्यान, द्विकासमादि कर्म सीव्यतीर्थंते करें। साहातीर्थंते उन्हर्णकृति सात जिल्लामा है।

अनुस्तिनोको निराजनर एकामीका हो, पीवन अरुसे निजा सन्द किने सँग कर आकान करनेसे महान् करू होता है जिसे विक्ती प्रसम्ब होते हैं। प्रथम आकानसे क्रायेद, हिंदीको कनुकेंद्र और तृतीको सामनेदको तृति होती है तथा आकान करके बरुजुक दहिने अनुदेसे मुसका स्पर्श करनेसे

<sup>-</sup> असुद्धमृत्येतरती नेत्र रहा 📖 स

व्यापिक विकास क्षेत्रकार । साथ व्यक्तिकामुक्ते अनुस्था वृ तैकाम् ॥
 वर्ष-व्यापक विकास विकास विकास । स्थापक व्यक्तिकार ।

अधर्ववेदको तृति होती है। ओहके 🚃 🌉 और पुराणीकी तृति होती है। मस्तकने 🚃 बार्टको भनवान् रह प्रसप्त 💹 है। शिकाके सार्वती श्राधिका, 🖼 अधिके स्पर्रसि सूर्य, नासिकाके स्पर्दाते बाद, कानोके स्वर्ताते दिशाई, भुआके स्पर्शसे राम, कुनेर, करण, इन्द्र तथा आधिक दुव होते है। नाणि और प्राणीकी प्रन्यिबोंके स्वर्श करनेसे साबी हुत हो जाने हैं। पैर घोनेसे विष्णुभगवान, पृथिने जरू खेळानेसे पामुकि आदि 🚃 🚃 🛗 जो जलक्यु शिले 🕻 उससे चार प्रकारके भूतव्यापको तुनि होती है।

असूद और तर्जनीसे देश, असूद क्रम अस्वातनात ज़रिका, अज़ुड़ एवं मध्यमाचे युक्त, अज़ुड़ और क्रिन्डकारे प्रान्, सब अञ्चलियोरे पुजाजीका, अनुद्राने व्यक्तिकार तथा सभी अञ्चलियोगे दिलक मर्गा करक करिये। अञ्चल आरिकार है, तर्जनी वायुक्तप, हाला प्रकारनिकाप, हालाका सूर्यक्रम और कन्मिहक 🚃 🗗 🖰

इस विधिमे सहायके आवसन करोपा सन्पूर्ण करत्, देवता और 📟 तुत्र हो जाते है। ब्याइन सदा पुजनीय है, क्योंकि 📖 सर्वदेशस्य 🕯 ।

बाह्यंचीर्थं, प्राज्ञायस्थतीर्थं 🚃 रेचवीर्थसे अवस्थान

बहे, बहु विकृतिर्वसे कभी भी आवमन नहीं करना चाहिये। अस्वयनका करु इट्काक जन्मा ब्रह्मणकी; कण्टतक जानेसे कृषिक्को और वैद्यक्को जलके प्राप्तनसे mm शहरूने अल्के रवर्जनको सुद्धि हो कर्ज है।

व्यक्ति हाचके नीचे और क्षये कंचेयर पत्नोपनीत रहनेसे 📖 उपनीके (सन्य) फरलावा है, इसके विलोग रहनेसे भार्यात् राज्ञेक्योतके दाहिने कंबेसे बावीं और रहनेसे **ार्थ्य (अनसम्ब**) नवा गरेजे मात्ववी तरह यक्षेपवीत मार्थित सहस्र का है।

वेक्स, मुग्ताल, दश्द, महोदवीत और कमण्यलु — इनमें कोई भी बीज यह हो जाय तो उसे करामें विसर्वित कर क्योक्टनपूर्वक दूसरा काम काम स्तिये। उपयोगी होकर और दाहिने हाकको कान् अर्थात् पृष्टनेके भीतर 🚃 🚟 🚃 अञ्चलम्य करता है यह परिवर्ष 🗒 📖 है। महा वियोक स्थान ···· सम्बद्धाना ···· अवैर अञ्चारित्योके जो पर्व है, ने विकारक आदि देवध्यक कार्ने वाले हैं। इसरियो अञ्चानका प्राहेक 🚛 सर्वदेवमय है और 📰 🔤 आधान करनेवारम अन्तर्वे व्यर्गनोकाको प्राप्त करता है । (अध्याय ३)।

## वेदाध्ययन-विधि, ऑकार तथा ग्यम्बी-महात्या, आवार्यादे-राक्षण, ब्रह्मचारिधर्म-निकयण, अभिवादन-विधि, कारकको महिनायें अक्रिरापुरका आववान, माल-विता और गुरुकी महिपा

सुषम् पुनिने सहा—राउन् भारतमा केवनन (सभावतेन)-संस्कर सोलहवे कांगे, वर्षप्रका व्यक्तिये कांगे राजा वैद्यवस्य प्रचीमचे वर्णमे करन्य चाहिने । 🚟 👫 संस्कार **ब्याना करने पारिये । केउक्स-संस्थार विशेष अनुसर कार्य** तो गुर-गृहमें रहे अथवा अध्ने कामे अस्कर विकास कर अप्रित्तोष्ट प्रकृष करे । कियोंके रिज्ये मुक्त संस्कार किया है । राजन् ! बहारिक मैंने उपनयनका विद्यान कालावा । क्षाब

अक्टेबर वर्ग बलते हैं, 👯 📖 सुने । 🏣 पक्षिपबीत कर पुरु पहले उसको सीच, सरकार, संध्येपासन, ऑफ्नार्य और वेटका अध्यक्त करावे । तिल्य भी आवगन कर <del>उत्तर्वानम्य के व्यक्तकारि वीधका</del>र एकामिक हो प्रसन्न-मनसे वेदाय्यक्तके सिथे बैठे । पदनेके 🚃 तथा असमें गुरुके क्लोंको करना करे। पढ़नेके 🚃 दोनों हाधीकी जो महारि 🛗 जती है, उसे 'बहुमहारि' कहा 📖 है।

अञ्चलो जीवर्गकार क्षेत्रके उनकु अर्थेकिनी व अजिपका राष्ट्र सूर्य- वर्धनहाँ 🚥 कियो । प्रजायक्रिकाम 🕸 सम्बद् प्राप्तमक्षण ॥ ania करमने द्रोता जिल्ला करा a

(ब्बाएर्ड है। ८४-८५)

ग्युरकाः स्रोताः सर्वे क्रेया भारतसम्बद्धानम् 🛗 विश्वसाति चिद्ध से 🛚 कर्म करे चिल्ल हैं।

(विक्रापर्य ३ ! १३ — १८)

विभय पुरुका दाहिना करण दाहिने हरकरे और सार्थ करण वाथे हायसे सूकर उनको प्रकास करे। बेटके कानेके समय आदिमें और अन्तमें ओकारका उकारब न कानेके सम किकार हो जाता है। पहलेका पदा बुकर विस्तृत 🏗 करा 🖁 और आरोका किया वाद नहीं होता।

पूर्वदिश्वमें अञ्चलकाले क्याके अस्तरक क्रिका परण करे तथा तीन कर अन्यक्तमो विका क्रेकर ऑकारका उच्चरण करे । प्रजानीतेन तीने बेटोके जीती-विवयत ······ उकार और सकार---इन तीन क्लीको हीनी केट्रेसे निकारम 🖟 इनसे 🕮 अस्त है। पूर्वक सः---वे 📰 क्याहरियाँ और पापत्रीके तीन 🚃 तीनो केटेसे 📟 🖫 इसकिये के बाहरण औरका तथा काहरीकृतेक 🔤 मध्यीका दोवो संस्थाओंने जब बदल हैं, 🐨 बेट्याओं पुरुषको जार करता है। और के बाह्यक, बाह्यक, केरव अपनी Marie 188 क्षेत्रे हैं, उनकी मान पुरुषोमें निन्दा क्षेत्री के तका परलेकमें भी में कल्याकरे 🔤 📑 होते. इसल्ये जिल्ह क्ष्मेंका स्थान वहीं करना चाहिये । प्रजब, होन स्ववहरियों और प्रिपदा गायवी-स्थे सम्बद्धाः को मन्त्र (गायवी-सन्त्) होता है, यह सरक्षका मुख्य है। को 🚌 गामकी-सन्तरका श्रद्धा-भक्तिसे 📖 वर्गतक विस्य विकास विधिवृर्वक जन करता है, वह व्यपुत्री तक बेगनगढ़ 🚃 🚃 सक्यको बारणकर प्रकृताकको प्रश्न करा। 🛊 । एकाकर 🕉 परमान है, जागासाम परम तथ है। अधिको (गायको)से बहमर कोई मन्त्र नहीं है और मौनसे सत्व खेलना केस है। सपस्या, संबन, दान, पञ्जदि क्रियाएँ स्वरूपतः नदस्यान् हैं. किंतु प्रणय-स्वरूप हाला वह ओकारका कर्ण अन्। नहीं होता। विभिन्नको (दर्श-पौर्णमास आदि) हे समृद्ध (प्रणवादि - जप) सटा ही बेह है : उद्यंत्र-जप (विस्त जपने केवल ओठ और बीम चलते हैं, शब्द व सुन्नयी पहें) त्यक पुत्र और उपांशु-जयसे मनस-जय हजार मुन अधिक फल देनेकारम होता है। यो पाकवड़ (पितुकार्ग, हका, विलिवेशदेव) विधि - यक्के बरासर है, वे सभी जप-बदाबी सोलहर्षी कलाके बच्चार 🕅 नहीं है। अक्षानको सब सिद्धि जपसे प्राप्त हो जाती है और कुछ करे या न करे, पर व्यक्तनको गवयत्री-जप अवदयः करना चाहिये।

मुखेदमसे पूर्व जब तहे दिखानी देते रहे तभीसे आहः-संग्रा आरम्य कर देती चाहिये और सूर्योदयपर्यंत गावती-अप मारम्य मा और आरोके दिखानी देतेतक गावती-जप मारता तहे। जातः-संग्राम कड़े होका जा करतेसे सिंगी पाप नष्ट क्षेत्र हैं और सार्थ-संग्रामे समय मार्थी मारमी-जप करतेसे दिनके चप नष्ट होते हैं। इस्तिको दोनो कालोको संग्र्या अवस्थ करने चाहिये। जो दोनो संग्र्याओको नहीं करता इसे सम्पूर्ण दिखानिके विकित कर्मीने चहित्रका कर देना चाहिये। मार्थे एका नर करतेसे चहुत लाभ होता है। समीके स्थार राज्यकित क्या करतेसे चहुत लाभ होता है। समीके स्थार राज्यकित क्या करतेसे चहुत लाभ होता है। समीके स्थार राज्यकित क्या करतेसे चहुत लाभ होता है। समीके स्थार क्या और जो सहा-पहादि विका-कर्म है इसके स्थार क्यारमी अनक्षका विवार नहीं करना चाहिये अर्थात् निरामकांचे अनक्षकाय नहीं होता।

**अस्ति । अस्ति समामर्तन-संस्करतक किया गुरुके** 💴 प्रे । चुनियस 🚃 सरे, सल्पात्त्वाची गुरुको सेवा करे 🌃 विकास करता हो । सब पुरक्त आगते हुए की जहांबत् रहे । अन्यार्थका पूर, केवा कालेकाल, अभ देवेकाल, वार्मिक, ——, विश्वासी, इंक्सिम्बन, उद्यार, सामुखन्तमा तथा अपनी करिकारम—के दश अध्यायको बोग्य हैं। विना पूछे किसीसे कुछ न करे, अन्यापसे पूर्णनाएंको कुछ न बताये। यो अनुष्यत केवले पूरुता 🛮 और थी अनुष्यत केवले उत्तर देता है, वे दोनो नरकमें अहे हैं और बगत्में सकते अधिय 🎆 हैं ( निस्तको क्यूप्रेनेसे वर्ण का अर्थको आहि न हो और वह कुछ केळ-अञ्चल भी न करे, ऐसेको कभी न प्रकृष, क्योंकि ऐसे विकार्गको से वर्ष विका क्रमाने बीध-वयनके समान नियतल 📰 है। 🔤 अधिकृत्-देवताने अहानसे कहा—'मै कुरूरी 📖 हैं, मेरी चल्डोबर्नेत 🚃 करो, मुझे ब्राह्मणी (अध्यक्तों) के मुनीनें दोक-बृद्धि रखनेवालको और देव करनेवालेको न देव, इससे मैं 🚃 रहेगी। जी 📺 निवेन्द्रिय, परिवा, जीर समादसे गृहत हो उसे महो देव हैं

वो कुरबी आहमा शिवा बेट-शास आदिको स्तर्थ महन्त करता है, वह अति भवंकर प्रेरत नरकको प्राप्त होता है। ■ स्वीतिक, वीदिक सम्बद्ध अगरप्राप्तिक प्राप्त दे. उसे गुरुके अने, श्रम्या समास अवस्तर न कैंटे।
पहिलेसे बैटा हो तो गुरुको असे देश निने तस समा और
उनका अधिकादन करे। कृद्धानीको अने देश स्थित स्था स्थान स्थान है, इसलिने नात्वपूर्वक कहे हिन्स स्था प्रमान करनेसे वे प्रमा पुनः अपने स्थानस २० वर्ष है।
स्थान करनेसे केसा और उन्हें प्रमान करनेसारे पुण्योत है।
स्थान और क्लान्नों कार्य करनेसारे पुण्योत है।
सामायावीको अस्तु प्रमान करने सामे सम्भावीकाः।
सामायावीको अस्तु प्रमान करने सामे सम्भावीकाः।

निर्श कर्युर्थेयः वार्व तिया प्राथति प्रश्चनी । स्थापि मान्यस्थापनि परीचे व्यासूनस्य ॥ (स्थापनि ११७०) रण आदि व्यवस्य कहे हुए, अविवृद्ध, येगी, भारमुक, की, स्ववक्ष (विस्तवस सम्बद्धल-संस्कर हो गया हो), IIIII और कर (दुस्का) बदि सम्पनेसे आते हो तो इन्हें मार्ग पहले देश व्यक्ति । ये सभी चदि एक साथ आते हो तो स्वातक और कवा IIIII है। इन दोनोंगेसे भी स्वतक विदेश मान्य हैं।

🖥 सहाम सम्बद्धाः उपनयन कराकर रहत्यः (यज्ञः, विस्त

और उपनिषद्) सथा करपर्साहत वेद्याध्ययन कराता है, उसे

भाग करते हैं। यो विकास विकास वेदका प्राप्त नेटमू पहाल है, यह समामान भगेला है। अर्थात् गर्यावामार संस्करोको रोंगरो व्याप्त अर्थादो व्याप्त है, उस समामाने हुए करते हैं। अर्थादो व्याप्त है, उस समामान वरण स्वाप्त व्याप्त विकास करते हैं। व्याप्त व्याप्त व्याप्त है। यो पुरुष केट-कार्यके देने व्याप्त पर है, उसे मारा-विवास समाम उससे करते हैं। यह नहीं करता व्यक्ति ।

उपायकानी रार गुना गीरण असमार्थका और आचार्थसे सी गुन्द विकास राधा विकास हजार गुना गीरण माराज्य होता है---उपायकान्यकानार्थ सिकासी पूर्ण विकास । सहसेन्द्र विकृतिस गीरणेजानिरिकाने ।

(mptd v 195)

जन्म देनेवारत और वेद पद्मनेवारत— ये दोनों पिता है, किंतु वार्थ वा वेदाध्यम व्यास्तित केंद्र है, व्यास व्यास्त्रक मुख्य क्यार तो वेद प्यानेसे के होता है। इसरियर व्यास्त्रक कार्य किंद्रने पूर्ण हैं, उनमें सबसे अधिक गैरफ व्यास्त्रका है होता है।

राक्षा कारावीकाने पूछा—हे मुते ! आपने अभवाता आदिके राज्या बताने, अब महागुर किसे बहते हैं ? यह भी बजानेकी कृता करें !

सुरुष्यु कृति कोले--- राजन् ! 🍱 ब्यासा जयोपकीयो हो अर्थाम् अक्टरस्पूराण्, सम्बन्धः, विष्णुकर्मः, तिरावर्मः, ग्यास्थारः (अरबान् ऑक्ट्रान-ट्रैपायन व्यवस्ट्रारः 🔤 महत्त्वस्य जो प्रकृत बेटके समसे भी विकास है) तथा 🔤

¥194)

१-वर्कन्यं राज्योत्थास्य केन्द्रितं स्थितिः स्थितः। स्थानसम् कृत्याः॥ कथा देशे करणः च ॥ - एकं समाप्ते ॥॥। पुन्नी स्थानस्यतिकै। अन्यां सम्याने सम्यान् स्थानके पुनकारकः॥

एवं स्मार्त-वर्ग (विद्वान् स्वेन इत सम्बद्धाः का समा श्राधित करते हैं। का जाता हो, यह महागुरु कहरवाड़ हैं<sup>1</sup>। कह सभी पर्लेक किये पून्य है। जो उल्लाहरा भोड़ा या बहुत उपकार करे, उसको भी उस उपकारके कहते पुर बानक पाहिये। अवस्थाने पाहे कोट क्ये र हो, पद्मीको वह बाहक बुद्धमा भी विश्व 🖫 सम्बद्धा 👣 ५००३ । इस विश्वमी 🚌 प्राचीन आसवार सनी---

पूर्वकारको अञ्चल पुर्वक युव शृहकति (आस्क होनेक थीं) गढ़े मुद्धीको पहाले ये और चहानेके समय है हुते ! यही देश पहले थे। यहम्बद्धाः 'पूर' अन्तेपन तुनकर उनको यहा औन ६३० और वे देवलाओंक कर को तथा इन्होंने क्या भवाना बरस्यका । तक देवताओंने क्या---पिदार्ग । अस भारतको न्याचेचित बात हो बाई है, विवास भी नव हो नर्पात् कुछ र कारत हो बढ़ी सखे आकंते कारण है. किन् को मक्करो देवेवारम 🖟 (केटॉक्टे क्यूनेकरक है), दरदेशक है, यह युवा आदि होनेक में किए होता है। अवस्थ अधिक इत्या, केंद्र की इत्या और बहुत कि क्या कर् क्षक्रवेश होनेसे कोई कहा गहीं होता, बहिक इस विकास 🚟 🚾 पर नगराना की 🛊 कि को विकास अधिक के, 🔛 सबसे महान् (बुद्ध) है। प्रदान, श्राप्तिन, बैकन और सहीते जमदाः क्रम, बस, का तक राजसे बहुका होता है। है।स्टेड कर बेत हो कोनो नोई कुछ नहीं होता, की कोई कुछ की नेवाद राजीक प्रतिपति जन कर का से के अवेदो 🕮 (महान) सम्बाम व्यक्ति । वैशे पक्षणे वाप प्रत्ये, वापदेशे पहा मुग विभी सम्बन्ध नहीं, उसी प्रकार बेटरी होन सहस्वका कथ विकास है। कुर्राको दिया कुमा दान जैसे विकास होता है, देशे ही नेवली जानामोंने न सन्तेवले सहात्त्वस सन निकार होता है। ऐसा बहान क्याकाम स्थान होता है। वेदीका सर्व कवन है कि जो इमें पहकर इनक व्यास्ता 🗷 करे, यह पहलेका सार्व देख उठावा है, इसकिने केंद्र पहला वेदने को हर क्योंक ने हाता करता है अर्थाद करनकर

आवरण करता है, उसीका वर्षे पहला सफल है। जो नेदादि 🚃 🖛 क्यांका, कांका उपदेश करते हैं, वहां उपदेश डीक है, मिन् को यूर्व केव्रटि प्राचीको जाने विना वर्गका उनदेश कारो है, वे बड़े चलके पानी होते हैं। जीवरहित (अपवित्र), बेहरे रहेश तथा न्हारत प्राप्तनको जो अन दिया जाता है, यह अस रेट्स करता है कि 'मैंने देख फीन-सा पाप किया था जो हेंने पूर्व अञ्चलके 📾 प्रदार और 📰 आप थरि सकेवनिको दिया क्षेत्र हो प्रस्ताको क्षत्र अस्त 🛡 और 1680m है कि 'मेरा उन्होच्यान है, जो मैं ऐसे 169के द्वाप आप ( विक्र क्या कर्म अभ्यास्त्रे सन्दर्भ स्मानके पर्यो क्योगर सभी अवहर ओवरियाँ अति प्रसम् होती हैं और कारों में कि का 🎹 है। सदादि हो करने 1 तत, 🖳 और करते केन सहायको दल गई देश पाहिये, 📟 🚃 🚃 🛒 🚃 सबती । इस्रविये विकास है देश देश है जिल्ला के लिए हैं कि है जो जो है ज है। याके समीय स्वनेकारे मूर्व स्वयूनके दूर स्वनेकारे विद्युन् 📰 📰 छन देना च्याप्रेचे । परंतु 🚾 🔤 - अक्रम | स्टब्स प प्राप्त हो तो उत्तर **व्यापन न को । परावान कालेसे देख नरहाना जारे होती** है, क्केंक सहस्य करे निर्मुण हो या मुख्यान, परंतु करें यह कारणी कारण है के यह परमहेश-सरस्य है। येले अवसे स्ट्रेस कर, जरने क्षेत्र कर पहल गुजवारक है, वर्ष है विकास करते और कहान भी वेदार भारतकार प्रधान है। व्यक्तिक पर्याच्या रिक्री स्वयस्त राज्य हेमसे श्री **ार्थिका** करन के हैं। धर्मनी इच्छा करनेवारे शहरकारी संय हुए क्या का वक्केस अनेन करन चारिने। विश्वेत 🚃 🚃 और सन्द है, व्य वेदालमें को गमे मैध 🚃 🚟 २६ (म्हरू है। नार्व हेनेपर 🖫 ऐसा 🚃 3 को निससे फिलीकी आत्म दृ:बी हो और सुन्ने-क्लोको अच्छा च रूपे । दूसरेका अववस करनेको बुद्धि नहीं **व्यक्ति प्रकार वैदा करूद मेठी पाणेसे मिलता है.** 

१-क्येक्सेचे ने 📰 = पहरूरक्ये।न्यव्यक्तकी राज्य कीर्र 🚥 विज्ञानकंद्रचे 🔤 🚃 च्या च्या । साम के च्या 🛊 नव्याचार्य स्वया क्षेत्र प्रयोग एकेट कार्यका प्रश्नेपरे क्ष्मीय क्षम क्षेत्र प्रथमित स्थितिकः ।

वैसा आन-द न कर्जनंत्रभोसे मिरमा है, न कद्वसे, न स्थान और स्थान करमें। स्थानको स्थान स्थानको स्थ

वृत्तार पश्चेपणीत होनेसे और संस्ता बश्चमे देशा रेनेसे।
पश्चेपणीतमे समय पायस बाता अध्याप विता होता है।
पश्चेपणीत होनेसे पूर्व वितार यो सैरिक
वह 
। मानुने वि
प्राप्त के पश्चेपणीत हिन्न) केदम्याच्या स्वारण न को, ब्याव्य प्राप्त न हो साथ, त्याच्या व्य दूर्व समय व्यव प्राप्त है। पश्चेपणीत सम्पन्न हो अभिन्द बहुको साव्या उन्हें समय व्यव प्राप्त के पश्चेपणीत सम्पन्न हो अभिन्द बहुको साव्या उन्हें समय व्यव प्राप्त कराव व्यक्ति और समीसे विवारणीय केदम्याव्य प्राप्त सम्पन्न को-से मेकला-वर्ध, प्राप्त स्वारणीत स्वारण को-से मेकला-वर्ध, प्राप्त स्वारणीत स्वारण करें। अपने स्वारणीय व्यव्य स्वारणीत स

सूठ बोलना, निन्दा करना, विश्वेषिक समीप बैठना और काम, क्रोभ रामा लोमादिके पश्चीपूरा होना—इत्यदि करी महाकारीके लिये निविद्ध हैं। उसे संस्थापूर्वक एकावी साम

रहे । 🔤 🚃 🖮 हो देशता, 📖 उन्ह निर्देशन

तर्पण करे । पुष्प, पारत, पारत, ग्रामिका, वृत्तिका, पुरात 🚟

व्यासम्बद्धाः हिसा, प्रारीरमें उत्पटन, स्वयन रूपाना, पूजा स्वर एक पारण करना, पीत सुरस्त, तत्व देखान, सुरक्षा कोरसम्ब, अव्यवस्थान प्रस्ता प्रस्ता प्रमान, प्रतिका और कुशा तथा अव्यवस्थान प्रस्ता निस्ता तथा । जो पुरुष अपने कार्यीय करण हो और केटादि-शासोंको पढ़ें तथा प्रसादिने सदासान् हो, हेरो कुटलोंके परसे ही बहाचारीको स्थान सम्बन्धान करनी व्यक्ति । मुल्के कुलमे और अपने परिवासिक बन्धु-बान्धवीके स्थान स्थान को, किंदु जो महत्त्वतंत्रको हो उनकी विकास को, किंदु जो महत्त्वतंत्रको हो उनकी विकास के। विकास समित्रा सम्बन्ध सार्वकार और समित्रा करे। समित्रा समित्रा समित्रा समित्रा स्थान है। स्थान समा विकास न के। विकास समा समाम कुल्य है। स्थान समा विकास

स्थान के हैं।
सहस्राधि गुरुके सम्मुक तथ कोइकर कहा रहे, जब गुरुके आहा हो तथ कैठे, परंतु आसन्तर न कैठे। गुरुके स्थान पूर्व ठठे, संक्षित प्रधान सोवे, गुरुके सम्मुक अनि गासको कैठे, परोक्षणे गुरुका मान ठकरण हा करे, किसी थी साठचे गुरुका ज्ञाबारण आर्थाद नकत न करे। गुरुकी किया हा करे और कहा निष्य होती हो, आरोकका होती हो महाँसि उद्याद करता हाता सामा साथ हाता होती हो महाँसि

को केवल करायके रिप्ते पहा गया है, शरीब और वैत्रपोर

क्रीन्स्यातमा निष्यु गुरेनीत प्रकर्ति । कर्मी क्रान्तिकारणी प्रकर्म क्रान्तिकारः ॥ (क्यानी ४ । १५१)

व्यवस्था वहा कुथा गुरुष अभिवादम न बाँद, अभीत् व्यवस्था उत्तरकर प्रवास करे। गुरुषे साथ एक शहन, शिला, वैकासन व्यवस्था है। गुरुषे गुरु तथा श्रेष्ठ वहे। गुरुष्य स्वयमं क्षेत्रके गुरुषे समान ही समझे, परंतु गुरुपार्थिक उत्तरन समाना, कानादि कराना, वरण एकाना अपि विकार निविद्ध हैं। माता, वहन व्यवस्थान विद्वानको विकारम्य न वैते, व्यवस्थान इन्द्रियोका व्यवस्थान विद्वानको

१-न तम तसी ॥ सर्रेकं र करससी न वीकन्यस्था। **महत्त्वी ॥ पूर्ण क्या नकुरवर्णि वर्णा**॥ (सहस्र्वी ४ ) १२८) १-मत्र स्वयं पूर्णि ॥ न **व्यवस्था को**त्। कस्मिनिहस्स्रको **व्यवस्था स्वर्णि** ॥ १ १८८४)

स्रोदरी-सोदरी जल मिल जाता है, उसी प्रकार सेका-प्रकृष करते-करते पुरसे विद्या पिल जाता है। पुष्टन विद्या है, जाते है। पुष्टन विद्या है, जाते वैसा भी सहावारी से उसको गाँवमें सहते हुए सुवोदन विद्या प्रकार नहीं होना चाहिये। अर्थात् करके व्या अर्थाय निर्वत स्थानपर जातर दोनों संस्थाओं संस्था-करन करना चाहिये। जिसके सोते-सोते सुवोदय अर्थाय कुर्वत हो जाव वह चहान् पापका विद्या होता है और विद्या अर्थाय कुर्वत हो जाव वह चहान् पापका विद्या होता है और विद्या अर्थाय कुर्वत हो जाव वह चहान् पापका विद्या होता है

मता, पिता, पर्व और आव्यर्थका विपक्षिमें 🔣 🚃 न को। सामार्थ सहस्रको धूर्त है, दिल प्रसाधीको, प्रसा पृथ्वीको तथा भाई अक्सपूर्ति है। इसलिये इनका कहा श्राहर च्याप्रिये । प्राणियोच्ये 🚃 तथा प्रस्ता-वेपान्ये माता-मिताको जो क्रेन्स सहन करना कहता है, उस क्रिकार न्दरम वे भी क्वेंमि भी सेवा करके नहीं कुछ करे<sup>र</sup> । मारा-पिता और गुरुको सेवा निरु धरणी पार्क्षणे । इन डीनोके मंताह हो जानेसे सन जनातम तयोका फरू बात हो जाता है. इनकी सुभूष ही पराप क्षप कहा गया है। इन क्रीनेकी अवद्यक्ते 🔤 किसी अन्य पर्यका आवश्य नहीं करना व्यक्ति । वे 🛍 तीनो क्लेक हैं, ये ही तीनों अवश्रम है, ये ही सीने केट है और ये ही 📟 आर्राप है। मात्रा गर्भापन 🚃 अपि है, 🔤 विभागामि-लक्ष्य है और पुर आक्रकरीय अक्षेत्र है : विस्तवर वे र्तानों प्रसन्त हो जाये. यह रहेनों हमेकोपर विकय प्रसा कर होता 🛮 और दोप्पणन 🔣 पूर् देवालेकने देवताओंकी 🕬 सुक भीग करता है।

तिषु धुनेषु कीषु जीवनेकाक्काने पृष्टे । वीकामानः स्वयुक्त केकाद्वीति केको ॥

(per 1 x 1944)

विकास विकास इंद्रालेक, माताबी व्यक्ति मध्यालेक और गुजबी सेवास इंद्रालेक प्राप्त होता है। जो इन तीनोकी बेबा करता है, उसके सची वर्ष सफल हो जाते हैं और जो इनकर असदर नहीं करता, उसकी सची क्रियाएँ निकल होती है। सामान ये स्थित व्यक्ति हैं, तबहक इनकी निस्प सेवा-पुत्तुबारकों सकैंदें पुस्तका सम्पूर्ण कर्तव्य पूछ हो जाता है, बढी सामान् वर्ष है, अन्य सची उपकर्ष करें गये हैं। उसम विका सबाव पुरुषों हो तो भी अससे महण कर

च्याहिये । स्था प्रकार बाज्यालमे भी मोश्वधर्मकी हिन्छा, कुलसे थी उत्तम की, विवसे वि अभूत, श्राहको भी सुद्धर उच्चेरकमक कर, समुद्दे वि सक्तका और विवस्त स्वास्त्रे भी सक्तके बहुत कर लेना चाहिये । उत्तम सी, बा,

विकार वर्ग, सीच, सुकारित तथा अनेक स्वासके ■ या थी, सहम कर हैने चाहिये। गुरुके इस्टर-स्वागवर्गक को गुरुकी सेक बातत है, यह हैंड़ बहुतुक्कित यह करता है। यहनेके समय गुरुको कुछ देनेकी इस्का न करें, किंद्र पहनेके अन्तर, गुरुको आहा पाकर भूमि,

सुनर्ग, गी. पोदा, क्या, क्यान्य, धान्य, प्रतक वक्ष वक्ष आदि स्वतं प्रतिको अनुसार गुर-दक्षिणाके क्याने देने व्यक्तिये। क्या नुकार देशका हो प्याचा तथ गुजवान् गुठवुत, गुठकी की और मुख्के प्रदानके साथ गुरुके समान ही व्यवहार करना

चाहिये। इस स्थान में अधिकान-रूपसे नदाचारि-धर्मक अकारण करता है, 🖦 अद्वारोजनके जात करता है।

सुभाषा मृति पुनः भौति—हे स्थान् ! इस प्रथम स्थान् स्थान् । सहस्रात्म उपनयन करान्त्रों, स्थान्यम प्रथम और वैष्ट्रयमा अस्त् असुने प्रथम भागा गया है। अस्य गृहस्यान्यमंत्रा वर्णन सुने । (अस्यान ४)

१-अ**व्यक्ते व्यक्तो पूर्वः विका पूर्वः सामाने । सामान्यन्तरिक्षेत्रीर्वर्गः साम्यूर्विकारः ।** मन्यात्त्रवितरौ 🎹 सहेते सम्बन्धे तृष्यम् । य ताम विकारिः सामा वर्षे वर्गस्तितरः ।

२-भद्रकाः सुधि विकासकरीताकारणि । जनकारीः यरे 🔤 🔤 दृष्ट्रभारणि । विकासभागुर्वे अर्थे कारवरणि सुमाणिकाः । अधिकारणि अस्तुकारणेकारणि साम्राज्य । (सहस्यं ४) १९६-१९६)

(अहरणी छ । २०७-२०८)

### विवत्तु-संस्कारके उपक्रममें

## और अञ्चल सञ्चलतेका वर्णन

#### तवा आवरणकी बेस्ता

सुमन्तु मृति बोले--- तकत् । भूतके ज्यावकी ज्यावकी जतका पारान करते हुए कारकान्ये केटरप्यका कर गुरुव्यक्तवर्थे प्रवेश करना चाहिये । 🖿 आनेपर 💳 🚃 📆 पहले पृथ्य-मारा पहनावत, प्रस्कावर 🚃 अस्ता मेनुवर्ष-विभिन्ने पुजन करना थाहिये। का गृहसे आक्र प्रतकर उसे ज्ञान लबजेंसे एक समसीय कन्करे विवह करन चहिने।

राजा सत्तानीकने युक्त—हे मुनिश्वर ! अस्य प्रथम विक्रोंके लक्षणेका कर्षण की और कह के कहते 🔣 फिल लक्षजीके युक्त करना पूप होती है।

सुमन्तु मुन्नि कोली—राजन् ! पूर्वपारको 🚃 📉 पुर्वनेपर सहाजीने जिल्ला को उत्तम राज्य को है, उन्हें में संश्रीयमें बतलाल हैं, आप भ्यान देखर भूते ।

व्यापनिने कहा--- क्षिपको ! विश्व क्षेत्रे करण स्वस् काराके समान काविकारे आक्ष्य केवल तक पुनिक सम्बद्धाः सम्बद्धे प्रदेशे हो, अर्थात् बीचने क्षेत्रे न 💹 के करण क्तन एवं सुक्र-भोग प्रदान करणाल इस ै। प्रस्त 📹 बरण करते, फटे हुए, मोसरहित और अधिओंने पुत्त हो, धह को वरिता और दुर्भगा होती है। यदि फैस्सी अनुरिज्यों परकर पिली हो, सीची, पोल, जिल्हा और सुद्धन नकोसे कुछ हो हो 📰 स्त्री आरम्पा ऐश्वर्यको प्राप्त कारोपार्टन और राजधीको होस्त्री

🞚 । सेटो मेगुलियाँ आयुक्ते बढ़शी है, परंतु कोटो और बिएस भैगुरिको धनका नदा करनेवाली होती है। निम क्रोंके हाथको रेकार्य गहरी, फिल्प और रक्कपर्ववी

होती है, यह सुख पोगनेवाली होती है, इसके विकास टेड़ी और ट्टी हुई हो से एक दरिद हाता है। **सामन** समझ **व्यक्ति**के मुलसे तर्वनीक्षक पूरी रेका चहने जान हो ऐसी की सी वर्षकर जीवित रहती है और यदि न्यून हो तो आए कम होती है। जिस 🚃 हादकी जैपुरिवर्ग पोस्त, रहबी, शतरी, मिरहानेपर विदर्शहत, कोमल तथा एककर्मकी हो, वह स्त्री अनेक सुरा-पोगोको 📖 करती है। जिसके नस कक्कीव-पूजके

समान त्यल एवं कैचे और किन्य हो से वह देशमंको प्रक करती है तथा रूके, टेवे, अनेक प्रकारके रंगवाले अवद्या बेव

या नीले-पीले असोकाली स्त्री दुर्चम्य और दाख्यिको प्रश्न होती

है। 🔤 🚾 🚃 कटे हुए, इन्से और व्यक्त अर्थात् र्जने-विचे एवं होटे-बड़े हो यह यह च्हेंगरी है। जिस कीकी अमुरिन्देनि पर्दोपे अधान रेका हो अधवा यवका चिक्र होता है,

उसे अच्छर सुरत तथा इस्हाद बन-मान्य ऋत होता है। क्रिय 📟 विकास सुरुष्ट तीन रेकाओंसे सुरक्षेपित होता है, यह

विकासकार कवाच चोप और दीर्घ आयुक्ते प्राप्त करती है। निस सीको सीको का अकुरुके परिमापये त्यष्ट सीन रेकर्ष हो से यह सदा राजेक अवभूषण पारण करनेवाली होती

है। दुर्वत अध्यास्त्री की निर्वत, दीर्घ खेळावारने संघर्ता, पुरवामीचान्यात्वे मुख्यस्य होती 🖥 और स्पृत्त 📼 🚾 दु: या-अंदाय प्राप्त करती है । विकास दोनों संध्ये और कुमहादेखा (गरदक्का ठठा हुआ विकरण पाग) जैले न हों, वह की दीर्प

क्युपारचे तथा करून 🐿 भी परस्यासूच्या सहता है। 📟 चांको जानका न चतुत बोटो, न पतलो, न टेबी, न म्बन्स स्था और न स्था सता है यह के। स्था है। जिस व्यक्षि की केवी, कोमल, सुध्य तथा आयसमें मिली हुई र

हो, 🌉 🛲 सुक कार करती है । शुक्रके समान और सौभाग्य प्रदान करनेकारमें होती है। क्रिकेंट काहे, क्रिक्ट, बंदगरा और

रंभी क्षेत्रकरें। केन्द्र उत्तर होते हैं।

**इस्ट कोमल, बील, प्रमर, मयूर तथा वेलु (पेती) के** समान करवारने कियाँ अपार शुक्र-सम्बद्धि प्राप्त करती है और क्षत-व्यक्तियोसे युक्त होती है। इसके विपर्धत कुटे हुए आसिके करके समान करकारी के गर्दक और कौवेके संदुत्त भरवारत्र निवर्ष रोग, स्वर्धि, चन, लोक तथा दरिहताको प्राप्त करती हैं। क्षेत्र, पान, कुल्प, ........... तथा मदमक हाथीके समान

अपने कुलको विकास कमनेवाली और राज्यकी राजे सहा है। 🚃 सियार और 🚃 समान

को निद्वीय । मुगके समान गतिवाली दासी इतामिनी भी बन्धकी होती है। क्रियोंका फॉलिनी.

बोबेक्न, अर्ज, कुंकुम अववा तरे-तये निकले हुए दूर्वाङ्कुरके सदम 📺 ज्वम 🚟 है। 🔤 सिप्पेके शरीर 📖 अङ्ग

कोपर, होन और वसनिसे सीव 🖮 सुगन्धित होते हैं, वे

विक्री पन्य होती है।

करिल-वर्णकारी, अधिकाती, वेरिजी, वेजेंके कीता, अस्त्रण कोटी (बीनी), बाकार तथा पितर वर्णकारी कन्कते विवाह नहीं करना चाहिये। नश्चा, वृश्च, नदी, मरेक्क, वर्णत, पत्री, साँच अबदि और दासीके नामपर जिसका नाम को तथा कपत्रने नामगारी कन्कते विवाह नहीं करना चाहिये। जिसके ् सब अङ्ग ठीक हों, सुन्दर नाम को, इंस वा हार्थकी-सी गति हो, -वो सुश्म रोम, केन्न और दक्षिकारी तथा कोशवादी हो, देशी अन्त्राति विवाह करना ततम होता है। मी तथा पत-वान्वदिशे अस्त्रीयक समृद्ध होनेपर वी इन दस कुरतेने विवाहका सम्बन्ध स्वापित नहीं करना चाहिये—जो संस्त्रपति सेवत हो, विवाह

पुरुष-संतरि न होती हो, जो बेट्के पहन-पहनसे व्याव हो,

जिनमें जी-पुरुवेकि ऋष्टिपर बहुत एके केना हो, किनमें कार्य

(क्कसीर), इत्य (क्षत्रवस्त्य), अन्द्रमि, मिरगी, 🛅 व्यय और कुद-जैसे रोग होने हों।

अवस्थाने व्यक्तिमें पुनः काइः—ये सन उत्तम रुक्षण निवा कम्पाने ही और विस्तम आवरण भी अपन्न हो उस कन्याने निवाद करना चहिये। प्रीके स्वर्णभेगी अपेश्व उसके अवस्थानों ही आविक प्रशास कहा गया है। यो की सुन्दर अर्थर तथा कुन रुक्षणोंसे पुतः मा है, किंतु पदि बाव सदावारसम्बन्ध (उत्तम आवरणपुतः) नहीं है तो वह प्रशास वहीं अनी गयी है। अतः क्रियोमें आवरणकी प्रयोद्धलो अवस्थ देशक चाहिये। हेरी सहस्थानों क्षण सदावाको सम्बन्ध मुक्तमाने विवाद करनेवर वहीं, वृद्धि तथा सर्वार्थि प्रशासना होती है। (अवस्था ५)

# गुरुसासमये 📨 एवं 🔤 🚃 धन-सन्धवन करनेकी ।

समान कुलमें विवाह-सम्बन्धकी प्रशंसा

राजा समानीकाने सुरुष्णु भुनिको सुक्रा— करकर् । स्मान स्मान स्मान सुन्त, अस्म करके सर्व्युच (सदावार) को भी में सुनना सहवा हैं, उसे आन करकनेको

कृता वरें । मूनि कोहें—महत्त्वह

प्राणियोक्ते क्रियोक्ते सर्व्युत्त 🖿 📖 है, 📰 वै 🚃

सुनाता है, आप ध्यानपूर्वक कुने। यक श्राणिकी व्याप्त सहस्रकी स्थापति व्याप्त स्थापति व्याप्त स्थापति व्याप्त स्थापति व्याप्त स्थापति व्याप्त स्थापति स

केवल शिक्षा है। इसिल्में चन-सम्बद्धन करनेके शिक्षा है। पृहस्वावममें प्रवेश शिक्षा जिस्ति। मनुष्यके सिन्धे और नरकारी माता सहनी अच्छी है, किंदु भरमें सुमाने वहारे हुए सी-पुत्रोंको देखना अच्छा नहीं है। कटे और मैले-पुत्रोंको क्या सहने, आति दीन और मूचे सी-पुत्रोंको देखकर विकास हदय विद्याल नहीं होता, वे काले स्वयन अति कटोर है।

ठनके जीवनको विकार है, उनके दिन्ये तो मृत्यु ही क्या उसस्य है अर्थात् हेरी पुरुषका यर जाना हो हैया है। अतः विकास विकास अर्थहोन पुरुषके विवर्ण-(धर्म, अर्थ, काम-)को

लिला कही सम्मन हैं ? यह की-सुक न आह कर बातना ही भोगता है। ■ व्यक्ति किया गृहस्थाश्रम नहीं हो हासाय थन-विद्यान व्यक्तियोग्रहे ■ गृहस्थ सननेका अधिकार

नहीं है। कुछ रचेन संसामको ही विकास सामा भागी है अर्थात् संसामसे ही धर्म, अर्थ और कामकी प्राप्ति होती है, ऐसा सम्बास है, चरंत् नीतिविद्यारदोका यह अधिमत है कि

के दो क्वालका कहा गया है—इट वर्ष और पूर्व वर्ष। क्वाद करना का वर्ष है और नयो, कूप, तालान आदि कालान पूर्व वर्ष है। ये दोनी धनसे ही सम्पन्न होते हैं।

कर और अन्य को---ये दोनी विधरी-साधानके हेत् है। धर्म

दाँखीके बन्यू भी उससे रूपमा करते हैं और भनाक्यके अनेक बन्यु हो जाते हैं। घन ही त्रियांकर मूरू है। चनवान्में विकार, कुरू, शीरू अनेक उत्तम गुण जा जाते हैं और निर्धनमें विकासन होते हुए भी ये गुण नह हो जाते है। झाख, शिल्प, बन्य और अन्य भी विक्तने कर्म है, उन समका तथा धर्मका पूर्वजन्मने किये गये पुन्योंसे ही इस जनमें जनूत करती जात होती है और धनसे पुन्य होता है। इसकिये धन की पुज्यका अन्योन्यक्षय सम्बन्ध है अर्थात् के एक दूसके करक है। पुन्यसे धनार्थन होता है और बनसे पुन्यवर्धन होता है—

प्रकृतिर्वित्तः सम्बद्धनेकामानिकृतः । भूको वर्षेण सामुक्तः स्था स्थिति सः स्थाः स

(10070) 6 (33)

काना चाहिये। सीरहित तथा निर्मन पुरुषक क्रियर्ग-साम्पर्ने सामार्थः है। साः भर्या-प्रकासे हिंदान सम्पर्धः अर्थार्जन अवदय कर लेना चाहिये। न्यायेक्टिनेट धनकी स्थार

--- इसलिये विद्वान् समुख्यको इसी वीटसे विवर्ग-स्थाप

श्रोनेपर दार-परिष्ण करना चाहिये। अपने कुरती अनुस्त्र, धन, सित्रा आदिसे प्रसिद्ध, अनिन्दित, सुन्दर व्या वर्णकी साधनभूता

होता है, तबतक पुरूष अर्थ-पारीर 🖩 सत्त है। इत्सान्त्र मधाक्रम र्रोचत अकार प्रका हो जानेपर विकास करना चाहिये। जैसे एक पहिलेका रथ अध्या एक पंस्तवारण क्यों किसी

ार्जी संपाल गर्ही हो पाना, पैने ही सीक्षेत्र पुरुष व्याप्तानः सभी पर्यकृत्योपे असपाल व्याप्तान है—

इसकारी को यहाँकाओं पक स्टा

भाग स्थादकोष्यः सर्वकर्मस् ॥ (स्थादकी ६१३०)

क्की-व्यक्रिक्त वर्ग तथा अर्थ दोनोमें बहुत 📖 होता 🕯 और इससे अवपारंपे 🔚 उत्पन्न होती 🐧 पानासार कुम्बर्की नुतीय पुरुवर्ष भी भार हो जाता है, ऐसा विद्वानींका क्का है। विकास-सम्बन्ध हीन स्वस्त्वत होता है—नीच कुलमें, सक्का कुलमें और उत्तम कुलमें । बीच कुलमें विवाह कानेके निन्दा होती है। उत्तन कुलवालेके साथ विवाह करनेसे वे 🚃 करते हैं। अपनेसे बढ़े 🚃 📖 बनाय गया विवाह-सम्बन्ध, बीवके साथ बनाये गये विवाह-सम्बन्धके प्रापः सम्बन्ध हो होता है । इस बक्तम अपने सम्बन कुलने 📳 विकास करना कारिये। प्रमुखी स्त्रेग विकासिय सम्बन्ध भी नहीं स्वयंते । यह बैस्त हो एल्काब होता है जैये कोयल मार्थित् क्षेत्रको अभिवृद्धि होती 🚃 🖠 और विवरि-सम्बन्धि समय भी प्रायतक भी देनेमें 📟 । 🔛 💮 उन्हाम क्यालाता है। परंतु 🚃 बात उनमें ही होती है जो कुल, डील, विश्वा और धन सम्बन्ध होते है । पनुष्यंके 🔛 और कृतहराकी पर्दशा

(এখনৰ ১)

विवाह-सम्बन्धी सार्वोका निकारण, विवाहचीम्थ कन्यके स्थाय, बाव प्रकारके विवाह,

ब्रह्मकर्त, आर्यांक्स आदि काम देशोका वर्णन

श्रहाती बोर्ट--पुनिक्ये । से क्या श्रहायी व्यक्ति अर्थात् माताको सात पीक्षेक अर्थात्को न हो व्यक्ति स्थान गोत्रकी न हो, व्यक्तियोके विवाद-सम्बन्ध क्या संतानोत्पादनके रिव्ये अर्थाता मानी गानी हैं। विवाद कर्यके पहुर्द न हो और जिसके पिताके सम्बन्धने कोई व्यक्तियों न हो ऐसी क्रायांसे पुनिका-पर्यकी अर्थकाले बुद्धियान् पुरुषको

विवाह 📰 करना चाहिये। धर्मस्वधनके 🔤 🔤

अपने-अपने कर्मकी बन्धारे विश्वाह करता श्रेष्ठ करा गया है। क्रिकेट इस लोक और परलोकने दिवाहितके क्रिकेट करनेकले आउ प्रकारके स्थान कहे गये हैं, जो स्था

**स्थानम् से हेर्डा है : स्थिति समान और परामर्श समानके** 

साथ ही करना व्यक्तिये, अपनेसे बहे तथा छोटेके साथ नहीं।

🚃 📟 🛍 ਦੂਰੀ 🔃

ज्ञस्य है—

देव, आर्थ, प्रश्नायस्य, आसुर, पान्धर्य, राष्ट्राय तथा पैतस्य : अच्छे श्रील-स्वायकवाले उदाय कुलके परको सर्व कुलकर उसे अलंकुब और पृतित कर कन्य देने 'बाह्य-

१-असरिक्श क्षा मानुस्तरोता च क लिक्का का प्रस्ता दिश्वतीओ **व्यक्ति वेन्द्रोत (स्व**कर्ण का १, सनुः ३ । ५)

र-पिता विस्तवे पुत्रसे अपने 🚟 🐃 करण 🛮 को पुरिष्य 📫 🛊 ।

विकार' है। यंद्रमें सम्बद् प्रकारों कर्य करते हुए ऋतिक्कों अलंकृत व्याव देनेकों 'देव-विकार' करते हैं। वरते एक या दो व्याव करते हैं। वरते एक या दो व्याव करते हैं। 'दूब दोनों एक साथ पूजन-वर्णका पालन करों' वह करकर पूजन करके जो कन्याद्रम विकार पालन करों' वह करकर पूजन करके जो कन्याद्रम विकार व्याव है, व्याव 'प्रजापन-विकार' व्याव है, को 'प्रावच व्याव व्याव व्याव है, को 'प्रावच व्याव व्याव व्याव होता है, को 'प्रावच व्याव व्याव व्याव व्याव होता है, को

कान्यका अपहरण करके लाना 'राक्षस-विकाद' है। सेन्से हुई, मदसे मतवारमें या यो कान्य प्रांगल हो नर्ज हो उसे फाक्सकी

हरा है अन्य पत्र 'पैदाप' जपक अकर केंद्रिक विकास है।

साहा-विवाहमें करना भवीबाउँ पूरा दस वैद्धी आगे और दस पीडी पीछेके कुरबेका तथा इस्टेक्स जनत भी उद्धार करता है। देव-विवाहके अवत्र कुछ सात बोदी अल्टे तथा प्रात पीची पीछे इस बाला चौदह पीडियोका उद्धार करनेकाल देशा है। आर्थ-विकासमें दरपत पूर्व तीन अगरते 📖 🙌 🛗 कुरवेका उद्धार करना है तथा प्राचापत्य-विकाससे उत्तव पूर छः पश्चिम तथा छः आगेके कृत्येको तस्तक है। स्वकृति अस्क बार विवाहींसे उत्पन्न कुत सहारोजसे अन्यत, जीलकान, कन्न, सत्त्वादि गुनीसे थुल, संस्वान, पुरुषन, परात्ती, बाल्ड और दीर्पकोची होते हैं। रोग पार विकाहोसे उत्तरत पुत्र हुई-साधान, चर्महर्वी और मिध्यायाची होते हैं। अन्तिन्त विकासिने संस्था भी अनिन्ध ही होतो है और निन्दित विकालेकी संतान भी निन्दित होती है। इसरियो आसूर आदि ह्याल विकास हार कंदन चाहिमे । सन्याका पिता करने गरिकेटिका भी धन न है । धन छेनेसे वह अपस्यविक्रमी अपनि संवानका वेयनेश्वरत्र हो जाता है। वो पति या विस्त आदि सम्बन्धी वर्ग

मेहका कन्यके धन आदिसे अपना जीवन चलाते हैं, वे

अधोगतिको पाप्त होते हैं। उतर्व-विकासी जो मो-विका

हेम्नेकी बात कही गयी है, वह भी ठीक नहीं है, क्लेकि कहे.

भोड़ा के वा अधिक, यह कन्याका पूरूप ही 🛗 जाता 📗 चित्रक करने कुछ भी होना नहीं चाहिये। 🛗 कन्याओंके विकित करन्याले दिया हुआ वस्तानुकवादि विता-प्राता आदि

नहीं रेक्टे, प्रस्कृत कल्काको ही देते हैं, वर्तास्थाल नहीं है । यह कुल्याकृतका पूजन है, हरून कोई डिस्साद दोव नहीं है। इस प्रकृत उत्तम कियान करके उत्तम देखने निवास करना चाहिये,

इसमें क्या विकास की होती है। क्या पूर्ण — बहुन् । व्या कीन-सा देश है, जहाँ विकास करनेसे वर्ष और पराची कृति होती है ?

ज्ञानी कोले—पुर्वकरो । जिस देशमें वर्ष अपने करे करवार स्थल स्रे, वर्ष विद्वान् लोग निवास करते हैं। और सो कावहर प्राचीक-रितिने सन्दर्भ होते हो, वही देश

व्यक्ति पूजा—महत्त्वन ! विद्यन् वेतन शास्त्रोत्तः अवस्त्राचने वदन करते हैं और धर्मकावर्ष जैसी विधि निर्देश की गर्था है उसे इसे अवस्त्राचे, इसे इस विकास सहान् कौतुहरू हैं का है।

स्कृत्यां कोके — राग-देवके साम स्टब्स एके विद्यान् विक वर्षक निरंप अपने सुद्ध सन्तः/करणसे सावरण करते हैं, उसे साम सुर्वे —

इस संस्करने व्यक्त क्यान वस्ता करना केन्न नहीं है। व्यक्त अध्यक्त करना और वेदनिहित कर्म करना भी कराव है। संकरणके करणक उत्पत्र होती है। वेद पहणा, यह करना, वय-नियम, व्यक्ति कर्म सम संकरप्रमूखक ■ है।

हार्विदिन्ये सामी बाव, दान कादि कार्य संकरणपठनपूर्वक वित्ये व्यक्ति है। ऐसी कोई भी क्षित्रा नहीं है, जिसमें काम न हो। जो कोई भी जो क्षा काम है का हम्बासे ही करता है<sup>र</sup>।

श्री, स्मृति, सदाकार और अपने आत्माकी प्रसन्नता— इन कर कारोसे कर्मका निर्मय होता है। श्रुति तथा स्मृतिमें कहे गये करिक आकारको इस लोकमें बहुत यहा प्रश्न होता हैं और परत्येकमें इन्द्रत्येकमी होती हैं। श्रुति वेदको कहते हैं और स्मृति धर्मश्राकका नाम है। इन दोनोंसे सभी वालोका

१-कामने गमन कर पुरस्कित है। पेलके करपको साथ केर, बहु, कर सर, स्थानका स्थित साथ हो सुन कार्यन है। गीता (७। ११) में सि कार्यन् 'कार्यकार् पुरेषु कार्यकार कार्यन् "कार्यकार कार्यन् स्थानकार कार्यन् स्थानकार केर्यक स्थानकार कार्यकार कार्यका

विचार करें, क्योंकि धर्मकों कड़ ने ही है, जो करिंक मूट हा दोनेंका तर्क आदिके द्वार स्थास करता है, उसे सल्कृत्येको रिस्स्कृत सा देन काहिये, स्थास स बेवरिंग्ट्स होनेंग्रे नारितक से हैं<sup>1</sup>।

स्थि मनोद्वार गर्थाभागे के तथा अपने अधिकार है। सरसारी तथा दुबहरी—इन से देवचीरवींक बीचका को देश है । देवसाओं हुए साथा गया है, स सद्वावर्त कहते हैं। उस देवसाओं हुए साथा गया है, स अध्यार परम्पद्दी परश्र साथ है, साथा स्थापत स्थापत कर

# 🚃 एवं 🚃 🕮 आसन 🚃 सी-पुरुवेंचे

#### पारस्परिक स्ववहारका कर्णन

महाराजी बोर्के— मुनेकरो । जसन देतिसे विकाद सम्मान कर गृहरूको जो करना चाहिये, उसका में कर्ना करता है। सर्वप्रथम गृहरूको उसका देसमें हिंस अवश्रम हैं। खाहिये, जाई यह अको पन तथा संबंध नार्मच्यी १था कर स्वतः। विना अवस्थान इन विकास त्या नहीं से सकती। वि दोनों—चन एवं जी—विकास हैं। है, इसकिये क्यां प्रमानपूर्वक रक्षा अवस्था करने चाहिये। पुरुष, स्थान और पर—में तीनों आश्रम स्वाहताते हैं। हन सीनिके चन अवस्थित रक्षा और अवस्थानिक होता है। कुन्छेन, नीनिकान, बुद्धिका, सर्वामदी, विनयी, धर्मात्म और दुवसती पुरुष अवस्था अवस्थे होता है। सहीं वर्मात्म पुरुष रहते हो, देशे नगर अवस्था अवस्थे निवास करना प्राहिये। ऐसे स्थानमें गुरुषनोक्षी अनुमाध सेम्बर अवदा उस काम आदिये वसनेत्याले वेहजनोत्सी सहमति जा।

कर रहनेके रिज्ये अविवादित स्वरूपे पर कराना च्यहिये, परंत

व्यवस्ता विकास स्थान स्

१-नियमे वर्षमुक्त स्वयु स्थितिको असेव व ) त्यावारण साम्यावारमास्त्रीकेत व ॥
तुर्तिस्तृत्वितं वर्षमञ्जीवार् अस्य सः । अस्य वेद आं विद्या साम्यावेदस्यम् ॥
भूतिस्तृ केदे विद्या वर्षमञ्जीवार स्वयु । तुर्वित्तृ विद्या । तुर्वित्तृ विद्या । त्याविद्या विद्या । विद्या ।

(स्वकृष्णे ७१५२,५४—५७) (स्वकृष्णे ७१५३)

(सहर्षा ५१६५)

किंतु व्यवहारमें विकास समान ही बेहा दिखाने बाहिने। विदेवसम्पर्त उसे प्रकाद क्रिकाओं ही नियुक्त करना वाहिने। कींको स्थार्थ भी संपर्ध काली नहीं बैठना चाहिने।

दरितता, अति-रूपमस्त, असत्-व्यक्तिम सङ्ग, राजणात, वेपादि प्रकार पान पारक ब्राह्म अवस्थ-प्रकार करना, ब्राह्म गोडी आदि ब्रिट रूपना, ब्राह्म न करना, जादू-टोन करनेवाली, विश्वकी, कृदिहनी, हाई, ब्रिट श्रह्म ब्राह्म

ा उद्यान, यहा, निकन्त्रय आदिये जना, अव्यक्तिक तीर्यभाव कार्या अवना देवताके दर्शलेक क्रिये कुरना, प्रक्रिके

नहुत होने, स्थान करने, पुरुषेते साराज्य करने, असे कुर, असे सेन्स, स्थान

निक्द होता, ईम्पॉल् वधा कृतन होता और विश्वी अन्य होते. वसीपूर्त हो जना—में सब हाता हात उसके विश्वसके हेतु हैं। ऐसी विश्वास अधीन हात हुन्य हैं जात है ही यह हा निक्तीय हो जाता है। यह प्रकार हो अधीनका है कि उसके

भूत्व मिनद करों है। स्ताम चौर कुलल न में हो भूत्व स्वर

भी बिगढ़ जाते हैं, इस्तरिजें समयके अनुसार वर्षोंकित हैंकिने अन्य और क्रिकेंटिक के क्रिकेंटिक क्रिकेंटिक

वाहिये। यसी पुरुषका स्थान दारीर है, बेलवी स्थान वर्ण-स्थानिक सामना नहीं हो समजी । इस कारण सीमा सदा आदर नदना वाहिये। ससके असिक्ट नहीं करना चाहिये।

वीके परिवास क्षेत्रेक प्रापः संग करण देश जात है---(१) मर-प्राथमें विरस्ति, (२) अपने पतिमें और साथ

है---(१) मर**-पुरुपमें फिरोक्त**, (२) अपने प्रतिमें श्रीति ता (३) करना **रख्या** समर्थता<sup>।</sup>।

क्वम क्रीको साम तथा द्यक्तीतिसे अपने क्रमीन रहे।

च्चा क्रीको दान और चेदले और चच्च क्रीको भेद और चन्नोपूर करे। पांतु दण्ड चच्च चच्च भी

साम-दान आदिसे उसको Immi III है। भर्तका आहेत करोजाती IIII व्यक्तिकरियो III कालकृट विक्के समान होती है, इस्तिको Immi परिस्तान कर देना चाहिने। उत्तम कुलमें

अतेर भर्तका हित बाहनेवाली स्थान अतेर भर्तका हित बाहनेवाली स्थान सहा अस्ट्रा काटक बहिये। इस स्थान स्थानका वृक्ष्य बारुता है 🚃

अध्यक्ष करक है और स्पेक्ट सुक पास है।
अक्षानी कोले----पुनेवरों । मैंने संबोधमें पुरुषोकों

पुरुषेके प्रशास क्षेत्र करून पाहिये, उसे क्या स्थाप क्षेत्र करून पाहिये, उसे क्या

सम्बद्ध समाज्य कर्यक्री क्रियोको प्रतिका प्रेम स्म स्मि । जन स्मि ह्या तथा नगर्ग स्मि भी स्मि प्राप्त हो सर्वा है, स्मिन्द्र्यक स्मि प्रतिकार स्मि स्मान अन्यद्श्यक है। सन्दर्भ स्मिन्द्र्यक स्मि अनेपर से इसम फरन हो। स

अस आक्रमे काम जाना है। कियोका अक्रमें है और । असम कामेर्से है। अक्रिय काम अन्तर्वकारी माना

हैं। क्षिप्त दूर्वरोगे विश्वि-निर्मेश वामनेकी अवेशा क्रांबे हैं। व्यक्ते के ठर्म पर्स इस क्लॉबर क्षिप्त करता है और पर्तांक

पुत्र करे कि प्रतिज्ञातके विश्वतक्ति । पुत्रिके विश्वति क्षेत्रकर अपने बढ़े पुरुष कि मार्गपर

के क्षिण बलनेने उसका सब प्रकास करवाण है।
 क्षिण की है जुड़कके धर्मेका मृत है। (अध्यक ८-५)

एवं समावारका वर्णन, व्याप्त गृहस्य-प्राप्तिः व्यवकारकी आवश्यक गाउँ

ज्ञानी जेले—मृत्रीको । मुस्ता-क्रीका मुस्त ध्वनपूर्वक स्ट

परिश्रवा सी है, परितरता की परिवस कारायन किस विधिसे असरावन करने योग्य **मार्थ** यह है

करे, असका बात में वर्णन करता है। अपन साम इसे कि असकी चित्रवृत्तिको मलीवीति व्यवसार 📟 अनुसूरण

१-सर्गाले अवकः सन्य ह्यु करमञ्जन्। पर्युक्तमानीकः निवे 🔤 📟 । (स्थाननं ८ । ६६)

२- संस्थितको न मोना न प्रभानं व वालो । उत्पादिकने अन्यचे उत्पादकंतर्वेदम् । (सहसर्व ५ (६)

३-इस प्रकारमें आफेर कुछ आहा—चेरका, व्याप्ता, कृषि और सोवा-चेवस्था आदि विका प्रक: कार्यक्रकारे सम्बन्धित है, जे स्थापण स्थापन हो गये है। हमक स्थापन विकास चिकासम्बन्धित निरुता है, विकास कुछ अंक नहीं दिने जा से है।

चलन और सदा उसका दित चहते श्रामः। अर्थात् परिके चित्रके और स्वेकित व्यवहार करता. परिवासका मुख्य धर्म है-

**स्थापनाय क्रिक्ट विकास** विकासमञ्जूषीया विवेषिको च सर्वेदा । (अग्राम्ये १०११)

परिके माता-पिता, बहिन, क्येष्ठ वर्ष, कावा, आवार्ग, मामा तथा बुद्ध विको आदिका को आदर करना चाहिने और 🗎 सम्बन्धने अपनेसे छोटे हो, 🔤 नेहपूर्वक 👊 🔣 व्यक्तिये । यहाँ भी अपनेसे बढ़े साल-काहर वा गुरू विकासन हो या 🚃 📟 उन्होंबत हो नहीं उनके अनुकृत 📗 आयरण करन चाहिने; स्वयन का चटा प्राचन रूप प्रचलक माना राजा है। इस्स-परिद्वास करनेकारे प्रतिके दिल और देवर अवदिवे साथ 🗏 व्यवस्थि बैक्का 🔤 📟 🚃 बरुप चाहिये। सिंह्म पुरुषके 📾 एकान्यमें बैठना, स्वकृत्य और अरबोधक हास-परिहास करना समः कृत्येन ब्रियोके पारित्रत-धर्मको नष्ट करनेके कारण करते है। सहस्रा बुहुके संसानि अवन्य प्राथिक साथ शतक-प्रोक्तम काला अभित नहीं होता, क्योंकि न्यतन्त्र कियोगरे विश्वीवन्त्र एकान्तरं को आकारणके दिन्ने सपारक हो 🔤 🛊 : 🚃 उत्तन 🚃 पेसा नहीं करना चाहिये। इस शिरमे 🚃 🏬 📰 विगयता और कुरुवर्ग निन्दा को नहीं होती। कुं स्तंत्रत करनेवाले और बुरे भावोको प्रकट कानेवाले पुरुवेको नई श रिताके समान 🚃 🚃 🚃 🚃 🖛 उत्तर 📺 परिस्थाम कर दे । दुष्ट पुरुषोध्य अनुन्यत जासह स्वीवार करना, उनके साथ वार्ताल्यप करता, हासपुक्त संकेत अक्का कुट्टिपर ध्यान देना, दूसरे पुरुषके हाक्से कुछ लेख वा उसे देन सर्वक धीरवाज्य है। 🚃 🚃 बैठने क कड़ा होने, सबकांकी ओ, देखने, किसी अपॉर्डियत देश वा भागे जाने, उद्यान 🚟 प्रदर्शनी आदिमें रुचि रक्षनेशे सीको मचक चाहिने। महत पुरुषेके मध्यसे निकलना, जैसे त्यासे सेकन, हैसी मजन करना एवं अपनी दृष्टि, काणी तथा ऋषिरसे कामरूप प्रकट करना, भैरवारना तथा 🚃 भरता, रहा स्वी, निष्कृती, लियक, मान्त्रिक आदिमें अस्तरिक और उनके 🚃 📆 निवास करनेकी इच्छा—ये सम बाते परिवास क्षीके रिजे

🚃 🛊 । इस ऋक्षरके अन्वरण 🖩 प्रायः दुष्टेकि लिये 🗎 र्शका होते हैं, कुलीन सिकोंके लिए नहीं। इन निन्दरीय करोंसे अवनी एक करते हुए क्रियोको चाहिये कि वे अपने परिवद-धर्म क्या कुरुकी मर्यादकी रक्षा करें।

करन को परिवर्ध पन, क्यन तथा कर्मसे देवताके समान सन्दों 🛲 सामा अर्थाधूनी बनकर सदा उसके हित करनेथे करा, रहे । देवक और विकॉक कुल तथा परिके सान, भोजन क्षं अञ्चलकेक कारतान्तामा आदिमें बढी हो सावधानी और सम्बद्धा कान रहे। यह पतिके निजेको दिन तथा इत्कारोको सङ्के 🚃 सन्दर्भ । अधर्म और अनर्पमे दूर कुम्बर 📟 भी उससे क्यापे। 📟 🖦 प्रिय है और क्षीय-स्था प्रोक्षणादे पदार्थ इसके रित्ये क्षाताल है 🚥 कैसे परिनेत साथ विकारी अमेरिये समायात आये इस बातको सर्वेटा 🐖 क्यान रकतः काहिये, सत्य 🖹 🛗 🚟 अभितृह को रक्त विश्वी

रहकेल कर और प्रतिन—ये दो गृहिनियोक लिये मुक्य है। इस्केंबने प्रवस्तुर्वक 📰 सर्वप्रयम् अपने यर तथा 🚃 सुरालुत (परित्र) रखे। 📖 ये अधिक स्वयद्ध 🔤 भूष्या वरको एक । 🔤 बदलीमे पुन्त-अर्थना करे और कारक्षारको भागी वस्तुअवेको कथाविभि साफ रखे। प्राप्ताः, 🚃 🚟 सार्थकारको समय परका मार्गभका लच्छ करे । 🚃 🚃 सम्बद्ध करका ले । दास-दारेस्पोको भोजन 🚃 संस्कृ कर इन्हें असने-अपने कार्योमें लगाये ! जीको अधित है कि 📺 प्रयोगमें आनेवाले शहर, कर, मूल, फल **ब्यादक प्राप्ता अपने-अपने समावन्त संग्रह धर है** और सम्बन्धर इन्हें खेत अवस्थि बजा है। तथि, करि, लोहें, कास और विक्रीसे अने हुए अनेक प्रकारके वर्तनीका चरमें संप्रह रक्ते। बल रक्तने क्रमा बल निकालने और क्ल पीनेके करुआदे का, अब-माजे आदिसे सम्बद्ध विभिन्न का, भी, तेल, दृष, द**्दी आ**दिसे सम्बद्ध वर्तन, मूसल, ओसली, 🌉 , चरुनी, सेंहसी, सिल, लोवा, चध्दे, जियटा, कहाही, क्यां, तराबु , 📖, पिटार, संदुक, परंग तथा चौकी आदि मुद्रस्थीके प्रचोतमें अनेत्राले आवश्यक उपकरणेकी प्रकारकुर्वक व्यवस्था करनी चाहिये । उसे चाहिये 🎹 🖿 हींग, बोत, नियाल, वर्ड, मारिब, धनिया तथा सीठ आदि अनेक प्रकारके मसाले, लगण, अनेक प्रकारके सहर-पदार्थ, मिल्का, अवार आदि, अनेक प्रकारकी दाले, सम प्रकारके तेल, सूचा काह, विविध प्रकारके दूध-दक्षिणे मने पदार्थ और अनेक प्रकारके बात अविद ओ-ओ मी काह किए बात बात अवारक प्रकारके बात अविद लो-ओ मी काह किए बात बात अवारक प्रकारक पहलेने ही संग्रह करना चाहिये, जिसके सम्पर्ध अमें दूँधना न पड़े। जिस बस्तुमी भविष्यमें आवश्यकता पड़े, उसे पहलेने ही संग्रहमें स्थान चाहिये। सूची-गीले, विसे, विसे पहलेने साम करने और पत्रे आवश्यकता पड़े, विसे पहलेने साम करने और पत्रे आवश्यकता प्रकार विसे स्थान करने और पत्रे आवश्यकता प्रकार विसे स्थान करने और पत्रे सामा चाहिये।

परवास को गुर, भारत्य, युद्ध, अञ्चलत और पीतके सेवामें आत्कार म करे। प्रसिद्धी प्रमान करे विकार । देवर अवदिके द्वारा परिने हुए चन्न, पाला तथा आपूरकोको सह कभी न हो पारण करे और न इनके समज, अवसन हाएक बैठे । गीव्य इतक दूध निवाले कि 🚟 🚃 भूके न स कर्ष । वहार थी बनाये । वर्ष, प्रस्ट् 🌉 बसला 📺 गायको दो बार दुइना चाहिये, जैन ऋतुओंने एक हो कर दुवे । करवाहे, जाले आदिको करवाहीके करते हमये अवका अवक दे। गोदोहक अप्रयोग्य 📖 अपने 🚟 व ता 📖 का देवता रहे, साथ हो तब भी ध्वान रखे 🎫 तुव कुलेकाल सम्बंधर दुख यह रहा है या नहीं, क्येंग्रिक दोहर्गक क्येंग्रिक क्षात्रक हो पायको द्वारा चरित्रे। स्वयंक्ष अभिकारण अच्चा नहीं होता। जब राज ब्याप जल्द, तब एक पहीचेतक **ावा दूध नहीं निकालना चाहिये, उसे बढ़देको ही पीने देख** वाहिये। फिर 📺 फोनेतक एक भनवा, तटकार 🚌 महीनेशक दो करका और फिर सीन बनका दूध निवासका चारिये। एक पा 💆 धन अक्षतेले क्षिते क्षाव्यम होहन चहिने। यदासमय तिलको राली, कोयल 🔀 पहरा 🚃 तथा जल आदिसे महादोका प्रस्टन करना सहिये। 📰 गर्भिगी, दूध देनेवाली, बस्रदेवाली तथा बरियावाली—इन पाँची पांचीका भास आदिके 🚃 🚃 अध्यक्त पारवन-पोषण करते रहना चाहिये। विन्हींको 🖷 न्यून तक अधिक न समझे। मैंके गहेमें गंदी अवस्थ बॉबनी बहिते। एक तो पेटी ऑपनेसे गौकी लोफ होती है, दूसरे उसके पान्दोंसे कोई जीव-जन्द हरकर उसके पास नहीं उनते, इसके

कारण रका में होती है और मी वहाँ चली जाय से उसके ज़ब्दसे उसे हैंगा भी जा सकता है। हिसक पशुओं और सर्वेसे प्रीत, जान और वससे कुक, सम्बाग्द मने वृशीयारे तक पशुओंके रेमले पहिन स्थानक मार्वेकि रहनेके किये मोष्ठ जा मोश्रमण बक्दनी चहिने। वृशि-वदर्यमें रूमें संवक्तिक रित्ये देश-वहत और उसके पश्चा अनुस्प जेवन सथा वेशनका ज्ञान करना चहिने। केंग, करिवान अथवा वाटिका आदिमें कार्य में संवक जाता रूमे हो वहां भार-भार जाकर उनके कार्य हिंचे बाली जी अन्य हो, अन्यत्र कार्य करना हो, उसका जाता में संवक्त करें और उसके रित्ये मार्या स्थाप स्थाप अपरांत क्षेत्र के और उसके रित्ये मार्या स्थाप स्थाप स्थाप प्रवास कार्य और कर-कुलके बोलीका संग्रह करें क्षा

करका कुल है की और मुखरकासमध्य मुख है अस । क्याचीन चार्ची मुकाइसा रोग्ध च्यारिये आर्थात् आवस्ये वह वृथा 🚃 न करें, सदा स्थान रचे । वर्ष स्थानमध्य केना चाहिने । अभारिने कुतहरत डोना मुहिनियोक रिप्पे अच्छा नहीं याना जाता ( यह करनेने और सर्व करनेने मध्यक्की, बल्पीक और **ार्थि** सम्बन्ध हानि-रचन देखका अलको धोडा-सा क्याकार अस्तरे अवदा न करे । क्येंकि श्रीहर-श्रीहा हो क्यू इसके करती हुई मायुमककी किताना एकता कर लेती है ? इस्से क्या रोक्य वरा-वरा-सी मिड़ी लकर विश्वन क्रेबा वल्मीक 🚃 केली है ? किंतु इसके विश्वीत बहन-सा बनाया गया अंजन भी नित्त चोदा-चोदा आंचले बालते रहनेसे कुछ िनोंने सम्बाद हो जाता है। इसी वितिसे सभी वस्तुओंका संप्रह और कर्ष से बक्त है। इसमें खेड़ी वस्तुकी अवद्य नहीं करती व्यक्ति । परके सभी कार्य भी-परुषके एकप्रत होनेपर 🖹 अपके होते हैं।

क्यार्ने ऐसे भी कमारों पुरूष हैं, जिनके साथ कार्यीये सीवी बचानक सहती हैं। यदि सी बुद्धियान् और मुझील हो तो कुक लगि नहीं होती, विस्तु इसके सामा होनेपर अनेक प्रकारके दुःस होते हैं। सामा सीकी थोग्यत-अयोग्यताको कीको समझका बुद्धियान् पुरुषको उसे कार्यमें नियुक्त करना

काहिये। 🕍 प्रकार योज्यातसे कार्यने निवृत्त की पनी कीची व्यक्ति कि 📖 सीमान्यका 🖜 अपने काल आदिसे असी पतिको पत्नीपाँति सेवा कर उसे अपने अस्कृत करूने।

ब्रह्माओं कोले-हे मुक्केचे । माने की ब्रह्मानाल सबसे पहले उठे और अपने कार्यने प्रमृत हो बान क्या स्टिमी सबसे 🔤 भोजन करे और 🔤 कटमें सेचे । 💳 स्था ससर आदिके उपस्थित न रहनेज स्थित्रों करूरी 🚟 कर नहीं करनी चाहिये। यह बड़े समेरे ही बन बान : 📰 चाँके ातान वर्षण्य है क्रम सम्बद्धाः सम्बद्धाः अस्ति है, बहुद न जान । जन पति भी जन उठे तम बहुनि सभी अवस्थान कर्ष करके, गरके अन्य कार्योच्ये भी प्रस्कदरहित होनार करे । स्टीके पहले ही उत्तम वकापूननोको उत्तमका करके कार्नेको करने योग्य साधारण क्यांच्यो पहनवार तराम् सम्बन्धे करने खेळा महाराज्य विश्वास करना **पाइन**ा इसे **पाईने कि सबसे पा**ईने रसोई, पुरस्य मार्थिको परमेपाति सीय-केवका सम्बद्ध ध्ये । मांज-धो और प्रिच्या वहाँ स्वो तथा ..... भी सम 🚃 🚃 कहाँ इस्ता को । सोई-पर 🛚 🖹 अधिक गृह (संद) हो और न एकदम सुरत 🛊 हो। सन्धः विस्तीर्ण और किसमेंसे यूजां निवाल जाय देखा क्रेस पाक्रिके।

🚃 📶 , रसर्व अभवा कुश्चवे 🚃 📹 रचक्रका अंदर-महरसे अच्छी तरह भी हैना चाहिये। सार्थ धूर्र-मागके हता तथा दिश्में कुन्में अने हता देखा धाहिये. जिसमें उन पार्क रका प्रकारक पूक-दक्के स्वर्ध कराव न होने पाये । जिना ओफिश फरोमें एक दूध-दही विकृत हो जाता

रहोर्च-धरके पोकर व्यक्ति 🚃 रूक-श्राहेक

। इप-दर्श, भी तथा बने इप चलादेको सामधनीसे स्थाव चाहिये और उसका निर्मेशन करते रहना चाहिने।

क्रान्त्रदे अध्यक्षक कृत्य करके उसे अपने हायसे प्रक्रिके लिये मोजन बनाना चाहिये। उसे यह विचल करना चाहिये कि मधुर, श्वार, अम्ल आदि रसोमें कीन-कीन-सा चोजन परिचने हिंद है, जिल भोजनसे अधिको मुद्धि होती है, कहा पान है और कौन मोजन कारके अनुरूप होगा, क्या अपभ्य है, उत्तर 🚃 किस भोजनसे प्रश्न होता और 📰 भोजन पहले. अनुरुष होगा आदि प्रत्या परविभागि विचारकर और निर्णयक उसे वैसा ही भोजन प्रीतिपूर्वक करूना नहींने।

रखेई-परमें सदारे काम करनेकाले, विश्वस्त तथा आहारका परीक्षण करनेवारे व्यक्तिको हो सपकारके रूपमें निवक्त करना च्यांको । रक्षोकि रक्षकों किसी अन्य 🔤 सी-प्रश्नेको न 🐖 दे। इस विकिसे पोक्न क्यानर सब पदायीको सन्क

फरोसे आकादित कर देख काहिये, किर रसोई-सरसे बाहर आकर प्राप्ति आदियो चेक्कर, सामा होकर, गन्द, राज्युरू, क्या विकास विकास विकास विकास विकास विकास

कुरवर्षे । सब प्रकारके ब्याह्मन फोसे, जो देख-कारके निपर्धत न हो और रिज्ञा चरसर विरोध भी न हो, नैसे तुथ और राज्यकर है। जिस पदार्थने परिन्ती अधिका राज्य देखे उसे और पर्वतः 🚃 🚃 परिवते जैतिपूर्वक पोयन कार्यः।

स्वारका स्था व्यवस्था समान सथा उनकी र्मक्रमेको अन्तरी संकारते को अधिक हिन्द सन्तर्भ । इन्हें वर्ष-अनुरक्षेत्रे अस्ते पहार्थके समान ही शत्त्रो । येका, ···· अपनुष्पत् अनुष्य अनीत् समस्याः विविद्यानि त हे हे, तन्त्रक सर्व भी प्रकृष । 😿 । पदि सम्बद्धेको अथना निर्मा अविका कराने कुछ हैन हो जान हो उसकी विकासके किये कार्या अन्देशी परवेषति भवत्वा कराये । नैकर, कथ् और नपनीको राजी देख कर्प भी उन्हेंकि समान दाजी होये 🚞 🚟 सुक्रमे मुख मने। 🚾 कार्याहे अवकास भिरत्नेक से बाब और रहिमें स्टबर अनावज्यक धन-व्यव 🚃 💹 🚃 क्वरताने और-और समावाने। 📫 🛗

बड़े, किन् बदि कोई अन्या अधिकार आदि 📖 दोन देखें, मिसे गुप्त रक्तनेसे कोई अवर्ष हो हो ऐसा दोष परिका mille 🚃 देन 🔤 । दुर्नेगा, निःसंसान तथा परिद्वारा तिरस्कृत रूपालको सदा आधारन दे। उन्हें भोजन, बदा, आयुक्त अधिसे द:बी न होने दे । बंदि किसी शैकर आदिपर बिल कोप को से उसे भी अस्त्रक्त करना चाहिये, परंत यह अवदय 🚃 📹 केना चाहिने 🗃 इसे 🚃 देनेसे कोई हानि वर्षे होनेकाचे है।

🚃 🐷 एकको स्थानमे बसचे, परंतु सप्तीरवेकि 📖 न

इस जवार की अपने चरिको सन्पूर्ण इंच्याओंको पूर्ण को। अपने सुक्षके रिल्मे जो अपीष्ट हो, उसका भी परितास कर परिके अनुकूर हो सब कार्य करे । क्योंकि कियोंके देवता पति, अमंकि देवता आहाम हैं तक्क आहामोंके देवता अति हैं और प्रकाशीका देवता रामा है।

क्रियोके विवर्ग-पाहिन्छे हो मुख्य रूपाय हैं—जनम राज प्रकारते जनन अस्त रक्ता और द्वितीय जनसम्बद्ध परिवादा । परिवे कितके अनुवाद चलनेसे वैसी प्रीति परिवादी कीयर होती है वैसी 1880 कपसे, बैकासे और अलंकारादि आभूक्लोसे नहीं होती । क्लेंकि प्रमः यह देखा जाता है कि उत्तम १९५ और नुवायस्थानाती विवर्ष भी प्रतिके विपरीत कारका करनेसे दौर्भायको सह करते हैं और सही कुरून तथा प्रीन अवस्थानाती कियाँ यो परिके विकोध अनुसूत्त चलनेसे उनकी सरवस्त 📰 🖥 📰 है। 🚃 बीहें: विश्वक 🚃 भागेभीते 🚃 और उसके कुनुसार आसरण बारण यही विकास स्थित तक सुरकेक हेतु है जिए यही समझा नेष्ट योग्यताओंका कारण है। इसके विका क्षे बीके अन्य कथी कुछ बन्यसम्बद्धी कहा हो जहे हैं अर्थाह निकारः हो आते हैं और अनर्कत बारण कर बाते हैं : इसरित्रे योगो 📖 गेन्यस (गर्गयसमा) सर्वत वदसे कम यानिये ।

समय मानवार सामि व्यक्त विका है वह पतिदेशके शामित सार्थ अपने हामसे सामे काम केमा है तथा शासाम्पर मैठाये और पंचा हायथे सेमार चरिनवीर दुस्तवे और सामधान होमार उनकी नवाम प्राप्त मानवेगे प्रतिका करे। ये साम काम दासी पत्र वास्तवेगे। पत्रिके काम, आहर, पानविमें स्पृद्धा दिसाने। पत्रिके सामुक्त स्वाप्तवाद्धाः स्वयंप्तविम् सामी पत्र की केमानवि सम्बद्धाः मेरे। अपने मानु-मानव्ये तथा परिके सामुक्ते और सामविके साम स्वापत-स्वयंद्ध तथा परिके सामुक्ते और सामविके साम स्वापत-स्वयंद्ध तथा परिके सामुक्ते और सामविके साम स्वापत-स्वयंद्ध तथा परिके सामुक्ते अभेत् विकास पत्रिमी स्वी अवस्थाओंने सामुक्तवी अभेका परिवृत्य ही विक्रोंक पूजा कि है। साम नोई भी कुरकीन पुरुष

अनुनित हो है। 🚃 विकाद 🚃 🚃 🚃 अपनी आविशिवाची हुन्छ बहन 🏢 महान्या और कुलीन पुरुषोची रोति नहीं है, उत्तः स्वीके सम्बन्धियोको चाहिये कि 🛮 केवल विश्वकं लिके, 🚃 लिये ही सम्बन्ध महानेकी 🚃 🔤 और स्मानवार पंचारतिक दसे कुळ देते भी रहें । क्समें मोर्ट कह लेनेकी हकत न रहें। **व्यक्ति स्थापित । अस्ति सर्वाच करना** च्याके, 📟 परस्प और-शम्बन्धके वर्षा सर्वत्र करनी चर्मने और सन्तर्भ 🎟 📖 📖 चाहिये। कप्-पूर्णिक व्यवहर 📑 सम्बन्धिक प्रति ऐसा di der to यो 🔤 🚃 अनुसूचको भागीयाँति सानकर स्वकार **पान्त है, क** प्रति और उसके वस्पु-वास्पर्वको अरक्क मान्य होती है। परिन्धी विष, सामु मुसमार्की संधा सन्त्रनिको प्रसिद्धको हता 🚟 भी 🔤 लेकापबादसे 📰 📰 स्था चार्क्य क्यांना सीता आहे. उत्तम 🛮 । कोव्य क्षेत्रेके कारण, गुल-दोबोका ठोक-ठीक निर्मय ॥ शह

नहीं हो सातों। देवनेश सरका कुयोगसे अन्यक ध्यवहारकी अनिध्यमध्ये (हा) इंट्रप्यारी की मी लोकप्रवादको प्राप्त हो बाधों है। विकोध्य कर दीर्भाय हो दुःश्य योगनेका कारण है। इसका कोई प्रतिकार नहीं, यदि है तो इसकी ओवधि है उत्तम परिकार (हा) और लोक-स्ववहारको (हा) समझना। समझनी कोरो-मुनोक्षरे ! उत्तम आवरणवारते (हा)

प्रमेशे क्षण अन्य अधिनयसीलताके 🚃 🚃

न्यव्यक्तको समझन आवन दुष्पर है । डीक प्रकारते दूर्राफी

पर्वपृत्तिको न सम्बाधिक करण तथा कपट-दृष्टिके करण एवं

Malian हो जानेसे 🎆 बहुत ही बाम क्रियों है जो करोसित

अदि कुछ सक्त करे या अपनी इच्छासे यहाँ याहे यहने आय, तो उसे अवस्थ कर्लक रूपता है और झूछ दोष रूपतेसे कुल अवस्थात है अला है। साम कुलको विकास हिन्दे यह अवस्थात है कि वे किसी को मॉर्स अपने कुल—मातुकुल,

१-पर्नोपरेका नार्य वर्ष वस्त्रात्रेकाः । त्याना स्टीतेकाः प्रमा सम्बद्धाः । तस्त्र तिवर्गसीयद्वी प्रदेशं काल्याकम् । पर्नुकंतुकृतस्यं का श्रीतन्त्रीयुक्तस्य म तस्य वीको क्षेत्रे जावि को ॥ भूकाम् । वस्त्र विकानकृतस्य विदर्शः काल्योकस्य ।

<sup>(</sup>**IIII)** (\$174—\$0)

वितृतुक एवं संद्रांत्रको करंग्य म रूपने है । ऐसी कुर्यन प्रापे ही वर्ग, अर्थ तथा काम—इस विद्यांको विश्व हो सबती है। इसके विपरित हुँ। अवस्थावरण विश्व अपूरण पानंकारी विध्य वर्णने मेरे पुरांको के विकास रेखी हैं। किन विश्वेक विध्य अपूरण के और विकास रुपन आवरण है, उनके दिने हासका प्रधार होता के विकास रुपन आवरण है, उनके दिने इतम अवस्था । वि सी पीता और सोकार्य अपने क्योंकित अस्पना करते हैं अर्थात् परिते व्यापात्र हरमुक्त अवस्था करते हैं अर्थात् परिते व्यापात्र

स्ति । प्राप्ति । प्र

(mpol protection)

विश्व करेड्से गया हे, व्या व्याप्त व्

हम जन्मर शर, वान्य समा समाह सभी अवस्थाओं विक-विकास करती थी, क्लीक क्लिक अनुसूर दाना को और उद्धा नवकीयों को ॥ मरे तका अस्तक विवस क्लिक हो। इस प्राप्त अस्ति क्लिक क्लिक करती है, व्या स्ट्युकेंकी अभिनुद्धिक लिये जन्मजीक दानी है, व्या स्ट्युकेंकी अभिनुद्धिक लिये जन्मजीक दानी है वक्ष सम प्रमुखें व्या

माना वर्ष असे लोकपुत्र हो और उसमा कारण न को, वह की दुर्गण कारणती है। उसे व्यक्ति कि यह नित्य सरा-कारणतीर व्यक्ति संस्था करें। जाति से वोई की दुर्गण अवस्थ कुमान (सीमान्यश्रादित्री) नहीं होती। यह अपने सराव त्यवस्थ कारणती न कार्यके, क्या प्रतिकृत वर्ष्यकें और लोकप्रिक्ट अवस्था मान्यकें, क्या प्रतिकृत वर्ष्यकें और लोकप्रिक्ट अवस्था कार्यकें दुर्गण हो जाते हैं। इसेक्किं सामा व्यक्ति कार्यकें कारण ही व्यक्ति के स्था समोद्राह्म कार्य न कार्यकें हाला है। इसेक्किं सामा है। इसरियों कीको कर, प्रथम हमा अपने कार्योग्रह

६-वृत्तकारमः पानी शासनीयात्रवारिनीः पूरवार्त पूर्वते 🔤 पृथ्यते पानीतु सः। पूर्वतन्त्रवे 🔤 शीरणस्त्रीतवार्यः। तेल 🔛 ॥ विर्देशं कृत्यकारेशस्त्रुत्वस्त्।

सभी अवस्थाओं में पतिके अनुसार 🖫 प्रिय अवस्था काव 📲 और परिवर्ध सेक्को सभी सुक्तें तक विवर्गको भी प्राप्त 📰 व्यक्तिये । इस प्रकार को गये की-कुछको क्लीपाँति समझक्त होती हैं<sup>स</sup> । सेव 💹 🗀 🚃 📖 🔠

(300 to -- tu)

# पञ्चमहायद्रोंका वर्णन 📖 इत-उपकारोंके 🏬 अस्तुरका निकारण एवं

प्रतिपद्य व्यक्ति, जन्मपूर्ण और महत्त्वय

मुनिने कहा—राभन्। 📰 🔤 होते कुर भी यह इन चीन महीको भही कारता है 🖷 उपकार लक्षण और प्राप्तका वर्णन करके बहुतवी अपने रहेक, तथा ऋषियम भी अपने-अपने .......... और चले गये। अस गुरुरवेंको कैसा आकरण करण पाहिने, और मैं बाहरत है, आप ध्यानपूर्वक सूने---

गुहरुवेको वैकाहिक आफ्रिमे विक्रियुर्वक मुख्यकारीको 🚃 चाहिये 📖 पञ्चमहायक्षेत्र 🔣 सम्बद्धः साल नाहिये । गुरुओचे यहाँ जीव-हिला होनेके 📟 स्थान 🖫 ओसली, पानी, पुरहा, हाड़ 🚃 🚃 🚟 स्थान र इस हिमा-योगमे मृति 🛗 लिये गृहम्बोको पहुम्बान्यो— (१) वित्या, (१) वित्या, (१) देववा, (४) चृत्या

(५) अतिविध्यक्तो नित्य सम्बद्ध करनः चर्तते । 🚃 📖 तथा अध्ययम करन 🖷 स्थापन 🤾 स्थापन कर्न वित्यव है। देवताओंके 🛗 हमन्त्रदे कर्न देवका है। मलिमेश्वेष कर्न भूतयत 🖟 तथा 🛲 एवं अध्यापकेक ार्थिक करना असिवित्य **8**—

अध्यापने प्रमुख्याः विश्वपद्धक्षः सर्वेशन् । होत्रो 💹 अहिन्सीनसामाञ्चाक्रीअसिक्युकारम् 🗈

(मध्यमं १६।४) —ान 🛗 नियमेंबा फल्प 🌃 गृहाची परमे रहता हुआ भी पहासूना-दोषोसे लिम नहीं होता। भदि समर्थ

जीवन की व्यक्ति है। **व्यापन प्राप्त—सित बहुज**के परमें

आधिकेर नहीं होता, यह पृष्ठकोर समान होता है-पह आपने ब्बा है, पातु किर का देवपुका आदि अववैक्षे क्ये करे ? और चरि देशी कर है से देवता, पितर इससे कैसे संतृष्ट होंगे. 🚃 अप निरामस्य को ।

सुक्क कुर्व कोरो-एक्ट् । 🚃 प्राप्तनीके घरने अभिक्रोत न को उनका उनकर अंत. उपलास, नियम, दान तथा रण्याको स्तृति, चरित मादिसे होता है। जिले देवताको जो तिथि के, उसमें उच्चार करनेके के देवता उसका जिल्लामध त्रका क्षेत्रे है---

क्रमेच्यानीय वैद्यानाको स्त्रात Refraggession: जीवा केवाययकोची भवनित (MITHER EX | ED-18)

'क्स्मने 📖 स्ट्रा-महाराज 🛚 असम्बन्धस्था विदेश बानेवाले वर्ती, तिथि-वर्तीमे किये जानेवाले भोजने तथा उपकारकी विधियोका वर्णन करें, विनके सक्यमे तथा विनक्त आकाण कर संसारसागरसे मैं

१-न वर्गप दुर्गमा नाम सुमान ताम सामितः ( सम्बद्धान्यकृत्यकोषः विदेशे दिव्यविक्राणः । पर्विकार्याकास्त्रस्य स्वाप्ताने । प्रामिकार्याकार्यः स्वापः हर्गन्तः 📰 : । अनुकृत्यन्त्रमानेवृत्तेः वरोऽरि विश्वतं क्रवेत्। अनिकृत्यविष्येत्रसम् 📖 अहेशक्रीस्थात् (ह रास्थात् प्रार्थतसम्बद्ध प्रवेतवाराणकारीकः । तस्य व्यवस्थाति । तस्य वृत्तिवारी । एकरेव व्याप्त वर्ष्ट्रीयार्थः। परिचयन सन्तुर्व देवने वर्षायस्त्रीता

(स्थापने १५। १६---१९, ३२)

[ वर्तमान समयमें **व्यवक्ता** सम्बन्धके प्रभावते देशमे वृत्तिक और **राष्ट्रश**रकपूर्ण व्यवस्था कर गया है । विश्वेसे सम्बद्ध परिवरपूरणका वह उस्लेक रामार्थण, स्थापन, स्थापने 💷 अन्य पुराकेटे 🔣 उसल्या 🛊 । उसके 🔛 साथ साथ स्थापना प्रस्ता पुरान स्थापना स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना पत्तन है, 📖 प्रथम संवर्धकोच्या को पहल है। अनः सनोको सदावरकार 📖 व्यान देनेको अवस्थानक है।]

मुक्त हो अर्क तथा मेरे सभी प्रण दूर हो अर्थ । साथ ही संसारके क्रिका भी कल्यान हो अथ ।

सुष्यम् युनि कोले—मै शिविधोर्गे विदेश कृत्योचा वर्णन ब्याम है, जिनके सुनवेले ब्या ब्या को है और उपनासके कलोकी ब्या को जाती है।

प्रतिपदा तार्यका दूध तथा हरू कर्यों तथा विकास

करें । तुर्ववाके दिन तिसाम मक्का करे । इसी प्रकार नतुर्वीको दुव, पश्चमीको फल, बहीको राज्य, सहयोको जिल्लाहर करे । अहपीको पिष्ट, नक्पीको अनुस्थिक, 📟 और यहर्षशीको क्यान 🚃 सहै । पुर्विकालो कुलाबा जल की शंका अनावास्त्रको इकिक-नोजन को १ का एक विकास भोजनकी विकि है। इस विकिसे को पूरे एक पश्च मोजन करना 🕽. यह दस असमेथ-व्यक्तित एक 🗷 स्था स्था 📗 📰 मन्त्रपारतक सर्गमे अवन्य नेपता है। चर्द स्टेन-चर माराक इस विधिने भीतन करे तो यह सौ अध्योग और सी राजसूप-पश्चीका ततन बता करता 🖟 तथा कार्यने 🛗 मन्यक्तरेतक सुब भोग करत है। पूरे आह महीने इस विश्वित भोजर 🎟 में इसर पहोचा कर पता 🛡 और चैदह मन्त्रपारपर्वत सामि वश्रीक सुस्त्रोका उपन्येत काल 🖟 । इसी 📖 परि 🚃 वर्षपर्यंत्त नियमपूर्वंत इस धोजा-विधिया पालन करता 🖁 तो वह सुर्पेलोको 👊 वन्यास्थितक आनन्दपूर्वक निवास 🚥 🕯 । इस उपलास-विकियें 📶 क्यों 🚥 भी-क्षें—संबोध्य अधिकार है। 🖹 इन विधि-जनीत्र व्याप्त कर्म, व्याप्त वैद्वसम्बद्ध तृतीया तथा 🚟 पूर्विमासे 🚃 🐧 वह रूपी 🚃 जार कर अनामें सूर्यरहेकाको जार होता है। पूर्वजन्पने विज पुरुषेनि वत, क्यांका आदि किया, दान दिया, अनेक क्यारसे असर्के, साधु-संत्रे एवं तपस्तियोको सन्दृष्ट किन्या, माला-विका और गुरुको सेवा-शुक्रमा को, विधिपूर्वक तीर्वमहा। की, वे पुरुष स्वर्गमें दीर्घ कालतक रहकर जब क्वाबेकर बच्च हैते हैं, 🚃 उनके चिह्न—कृप-फल प्रत्यक्त ही 🚃 👣 🧗 यहाँ उन्हें हाथी, भोड़े, पालकी, रश, सूकर्ण, रहा, कंग्रहण,

केपूर, प्राप्त कुण्डल, प्राप्त उत्तम वस्त, श्रेष्ठ सुप्तर स्त्री तथा अपने प्राप्त होते हैं। ये आधि-ध्याधिसे मुक्त होकर दीर्पायु होते हैं। युव-पौक्षरिका सुस्त देवते हैं और कदीवनीके ब्रुटि-पाउटाय जनाने जाते हैं। इसके विपर्धत जिसने तत, कन, उपवास हैं। काम हिंदी हिंदी हिंदी कि काम, अध्य, सूख, केप्सा, गूँगा, युव्या क्या येग और दरिहतासे पीड़ित स्वाप्त है। संस्थाने हिंदी प्राप्त क्या प्राप्त है। स्वाप्त कुण्डल-प्राप्त है आपने हिंदी संस्था पर्धका है। स्वाप्त कुण्डल-प्राप्त है आपने हिंदी संस्था

रेणकाको विकल तिथिनी पृथ्य करनी पाहिनो और वस अवदि किस स्थानमा करने पाहिने किनके करनेसे मैं सामा हो जाते और

स्वासे पहले में संक्षेपने स्वीत्वा वर्णन करता हूँ। प्रथम कर्णाको कर अपने कर उसमें सेव प्रविद्य किया, उससे एक अपने उसमें हुआ, उससे बहुत अपने हुए। उन्होंने स्वीत्वी हुआसे उस अपने क्या अपने पूरि और दूसरेसे अपने और जिस दिन मा सब काम किया अपने अपने क्या । अपने में संस्थित आत्राह्म अपने अर्थ क्या क्या अपने प्रकार अपने विषया इसस्यों इसका नाम प्रकारदा हुआ। इसीके कद सभी तिथियों उस्ला औ।

अब मैं इसके उपकास-विधि और निवर्गका वर्णन करता है। कार्तिक-पूर्णिमा, माच-सामी तथा वैशास शुद्ध तृतीयामे इस प्रतिक्य विधिके निवम एवं उपवासीको विधिपूर्णक प्रारम्भ करता व्यक्ति । यदि प्रतिक्या विधिक्षे निवम प्रहण करना है तो प्रतिक्यासे पूर्व चतुर्दासी विधिको भीकाके अनसर प्रतक्त संकरण केना चाहिये। अमावास्थाको विकास स्नाम करे,

१-निस, वैक्तिक और सम्बन्ध में 🛗 🛗 🛗 🗱 🗱 🗱 काम-कार्वेक प्रकार वरू रहा है। इसी कार्वेक शिकायधानके भगवर्यास्त्रर्थ 🎟 अन्य-मरक्षेक कार्यन्ते पुरिक में बिक्स 🛗 है।

(अध्याव १६)

मोजन न करे और गायतीया जय करता रहे। प्रतिकदाके दिन प्रतःकारक गंध्य-मारूप आदि उपकारों है है जिस्सानी पूजा करे और उन्हें यथायांकि दूध दे और बादमें आवाडी पुहाबर बात हीं—ऐसा कहे। सार्थ भी बादमें नाकार दूध विमे। इस विभिन्ने एक वर्षका बरावर अन्तमे बातामीया पुजन कर वस समझ करे।

इस विधानते हत करनेपर इस्तिके स्था चंच दूर हो जाते है और उसकी सामा शुद्ध हो जाती है। सा रिज्य-इसीर धारणकर विभानमें कैठकर देशरकेको देखाओंके साच आतन्द प्राप्त करता है और जब इस पृज्यीकर सम्बर्गमें जन्म रेजा है से इस जन्मतक केट्निकाका सम्बर्ग सम्बर्ग करवान, स्था अधुन्य, आग्रोमकान, स्था सम्बर्ग, च्या करनेकरम, महस्यानी महाय हता है। विश्वामित्रपृतिने व्याह्मका प्राप्त कर्षी हो सका। अतः उन्होंने नियमसे इसी प्रतिपद्धका प्रता व्याह्म । इससे थोड़ेसे समयमे महायानि उन्हें व्याह्मका कर्मा दिया। प्रतिथा, वैश्म, सूद्र अहि कोई इस विविध्या बात करे से यह सब प्राप्तिने मुक्त होकर दूसरे अच्यो व्याह्मक होता है। हैडच, माल्यांच, तुरुक्त, क्या, शक आदि महेक्ड व्याह्मकाले भी दूस अल्के प्रधानने बाह्मक हो सकते है। वह विविध्यास पुरुष और कल्यांक करनेवासी है। यो इसके प्राप्तकारों पहला व्याह्म सुन्ता है यह प्रहिट, वृद्धि और

-process-

## प्रतिपरकरूप-विकारकारी अञ्चानीको पूजा-अश्रीकी महिमा

राजर समानीकाने कक्षा-स्टब्स् । एक किन्स् विधिने किये जानेकाले कृत्य, सद्यातीके कृतकार्ध विधि और उसके फलका विस्तारकृतिक कर्नन करें ।

सुवस्य युनि कोसे—हे सम्बर् ! पूर्वकरको स्थापन सङ्गातका सम्पूर्ण सगर्वक तर में अनेक सर्वक जल-ही-जल हो गया। इस समय देवताओं में के प्रमूचिक स्थापी समय पुर् और उन्होंने अनेक रहेको, देवगाची तथा स्थापी समय पुर् और उन्होंने अनेक रहेको, देवगाची तथा

का अन्य व्यक्ति पितानक हैं, इसकिने व्यक्ति करा हुए कार्य काहिने। ने व्यक्ति सुदि, व्यक्ति काल

करनेवालं है। इनके मनसे कार्य, व्यवश्यकतो विक्युध्य आविर्धाय हुआ। इनके कार्य मुख्येसे अपने कः अभूकि साव वार्ये वेद प्रकट हुए। सभी देवता, देख, गृभ्यकं, व्यव, कवास, नाग आदि इनकी पूजा करते हैं। यह सम्पूर्ण कगन् व्याप्तय है और महामें विका है, ...... स्वाप्ता सवसे कृत्य है। कन्म,

खर्ग और मोश्र--ये सेनो पदार्थ इनकी सेवा करनेसे आप हो जरते हैं। इसरिज्ये सदा प्रसातियदारे कवाजीवन निकासे बदाजीकी पूजा करनी जाहिये। जो बदाजीकी सदा परिवसे पूजा करता है, यह समूज्य-स्वरूपमें साधार्य सहा है। स्वाक्रिकी पूजाने अधिका पूज्य विश्तीमें न समझनार संद्रा स्वाक्रिकी पूजाने करते रहता चाहिये। यो अक्षाजीका परिदर

वेद-वेदान्त्रपारम्य कुरवेन महरूप होता है। किसी अन्य कटोर स्व क्रिकेट अस्परस्थात नहीं है, केवल अहाओंको पृष्यसे दी सभी पदार्थ क्या हो सबसे हैं। ब्रिकेट अहाओंके प्रदिश्में होटे क्या रहा क्या हुआ सावधानीपूर्वक

चीर-चीर साम् देता है तथा उपलेपन करना है, वह च्याद्रावण-जतका फल जात करता है। एक प्रकारक सहाजीके विन्होंने को इसक् लगाना है, यह सी करोड़ युगसे भी अधिक

बहरबेकमें पूजित होख है और अनजर सर्वगुणसम्पन्न, वारो

१-१सका कर्पन दोक इसी अवस कारकुरको इसते 🔣 🛗 हासाइ हासाइ है और कुर्व-विकासी एवं अन्य क्येरियमधीने हो स्थ्यीयकपूर्वक प्रवक्ति है। सकारपद्ध, अध्यक्ति, हासाइ आदिने से संपूर्वत है।

वेदोंका हाता वर्षाका राजाके रूपमें पृथ्वीपर ...... है। प्रतिपूर्वक स्थानजीका पूजन न करनेक्क ही मनुष्य संस्थापें मटकता है। जिस तरह पानक्का .... विक्रमेंने पत्र .... है. वैसे ही वदि बहुतजीमें पन ...... हो हैं है एक कीन ..... होगा ........................ हो जी है। मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकता । अहा जीके जी ..... विष्या मन्दिरका संदार करनेवाला आणी मुक्ति पत्र ........ है। महाजीके समाय ... कोई देवता है र मुख्य र इसन ........ है। कोई तप ......... है।

होता है। यह एवं आक्रिकेशिके व्यक्तिक व्यक्तिक और पैत्रपको कवित्य गी रखनी चाहिये। व्यक्तिक व्यक्तिक कवित्य गायके पुनसे अभ्यक्त करना चाहिये, व्यक्तिक

निर्म गर्व विकास होता है। इस विकास होता है। इस विकास है। विकास उद्धार है स्थार है। सुवर्ण-स्थादिने अलकुट दस हमार सबस्या में बेददा अक्षानोको देनेने जो पूज्य होता है,

वही पुण्य महाज्योगने दुष्यते साम करानेने साम होता है। एक बार भी दूषने महाज्योगने कान करानेवातः पुरुष सुष्यदिः विमानमें विराजाना हो सहालोगने पहुँच आता है। स्थाने सान करानेमर विष्णुलोगनी साहि होती है। सामुले साम

करता है। वस्त्रते 🔤 हुए जरूसे सहक्रमेकं कान कड़नेपर 🔤 सदा रहता 🖁 🔤 सम्पूर्ण 🗺 दसके वंशीपत हो

ा सद्य एस एसा 🛮 📖 सन्पूर्ण 🔤 दसका बरशकुत हा जाता है। संबीमीममोसे 📰 कटनेपर सहस्तोक, क्यूनके असमें ब्या करनेया स्ट्राटेक, कमलके पुत्र, तीलकमल, पाटला (स्केत-स्वरू), बनेर आदि सुर्गायत पुत्रोमे स्थान अञ्चलकमें पुत्रित होता है। क्या और अगरके

वस्ति स्थान करनेकर मा गाववीयन्त्रसे सी मार जलको अधियनिका कर उस बलको स्थान करानेकर महालोककी प्राप्ति होती है। जीतल जल का कपिला गावक धारीच्या दुग्धसे स्थान

माना वृद्धसे जान करनेसे सभी क्योंसे मनुष्य मुक
 में है । इर माना माना माना क्या कियुर्वक कृता
 माना है । इर माना माना माना होता है । मिहीके

व्यंक्री अधेक व्यंके घटते बहार्यको लाग करानेपः सौगुना, ब्रिटिक ब्रटसे त्वकपुत्र पत्न होता है और सुवर्ण-कलवासे ब्राम करानेपर कंडिंगुक फल खह होता है। ब्रह्माबीक दर्शनसे इनका सार्व करना श्रेष्ठ है, स्वर्णमें पुत्रम और युजनसे पुत्रसान

अधिक प्राप्ताक है। सभी शांका और मानसिक पाप कुरुवान शांका नह हो जाने है।

राज्य । इस विविध से साथ करावार मानित्वीक सहाजीकी
पूजा क्या क्यार करावे चाहिये—पवित्र बका पहनकर,
अवस्थार क्या सम्पूर्ण स्वास करावा क्यानिक प्रथम चार हाथ
विव्या स्वासी एक अहदार-अवस्थार विव्या करे। उसके
वाल अस्य कर्नपुत्र क्यारक्यात्रक्या हिन्से और पाँच रेगीसे
वाल करे।

भाषांके अवसंद्रास सरीरमें न्यास कर देवताके प्रारंगी स्थान करन सारिके। प्रयासक्त प्रापकी-सम्बद्ध हास

अधिमनिका केलर, सार्क, करान, कपूर आदिते समान्यतः कराने सभी पुक्रहानोका मार्चन करान साहिये। अन्तरार पूजा साहिये। सभावका उत्तारण कर पीठानावन और प्रमानसे

श्रीमहाजीका ध्यान कर पूजा करती काहिये । जो पुरूष प्रतिपदा स्थान

है, वह चिरकारनक महारवेकमें निवास करता है।

(अध्याव १७)

### ह्याजीकी हारायाचा विभाग और कार्तिक सुद्ध प्रतिपदाकी महिमा

सुपन्तु भूनिने कहा—हे उना रागानीक !

मासरे 
रथकात्रका उत्सव 
है कि कार्रिकारी पूर्णिकको मृगक्कि
आसनपर सावित्रिके साथ बहाजीको रथके
और 
साथ बहाजीको स्था रथका निकास । विशिक्ष 
उत्सक्के 
साथ बहाजीको रक्कर नैक्को और रक्के आने

महम्माने पात सहाय साव्यक्तिकृत्वे 🔛 📰

क्षरमे । .... रात्रि जागरण करे । मृत्य-गील ...... कारण एवं विविध प्रक्रियोर्ड सरहाजीके सम्मृत्य प्रदर्शित करे ।

प्रकार एडिमें आगरण कर ऑनक्ट्रके दिन प्रकारक महाजीका पूजन करना चाहिते।
चाहिते, अनक्ट्र पूज्य क्रव्होंके आथ श्यापात चरक करने चाहिते।

वारं वेदीके ह्या उत्तम प्राह्मण उस विकास है। स्थानीके स्थान आपने स्थानिक स्था

करे । रथके आगे प्रह्म, भेरी, मृदक्ष अस्टि सिवाध साम वशके रहें । इस प्रकार सारे नगरमें रथको कुमान व्यक्ति और कनस्की बद्धी चाहिये, अनुचर उसे अपने स्थानपर हे आना

 अस्ती कर्षः शक्तवीको उनके मन्दिरमें स्थिति
 इस रचनावाचे सामान करनेवाले, स्थवने सींकनेवाले तथा इसका दर्शन करनेवाले प्रथी महालोकको प्राप्त करते हैं।

्रेक्करतेके दिन वहाजीके व्यव्याने दीप प्रश्वास्त करनेवास व्याननेकाने का काता है। दुसं दिन वसिपदाको सहाजीकी [8] करके सर्व की क्या-आयुक्तमे असंस्कृत होना वाहिये।

मा मिथा महाधीको बहुत मिय है। इसी तिथिसे क्षिको स्थान सामा दुआ है। सा दिन पुजरूक सामान-भंकन करानेसे विक्शुलेकाचे शांति होती है। मानसे पुजरूकारिकाले दिन (बोली सलानेके दुसरे दिन)

क्यालका स्पर्धकर कान करनेसे सभी आधि-अवधियाँ 🖫

से बाले हैं। उस दिन भी, घडिए आदिको आतंक्क्रकर उन्हें सम्बद्धे व्याप्त प्रकार प्रकार कर कर कर कर कर कर कर कर व्यक्ति । चैक्र, ब्याप्त और क्रांतिक इन तीनी धारीमीकी प्रकार की है, किंदु श्रमी प्रकारक प्रकार विदेश श्रेष्ट

है। इस दिन किया हुआ कान-दान आदि सी पुने फलको देश है। इस क्षित्र इसी दिन प्रथम मितम था, इसलिये अधिका मेह करी क्षित्र है। (अध्याय १८)

## द्वितीया-करपने महर्षि करानकी ।

सुमन्द्र मुनि बोले—हिताच विकित्ते कार्याः १-३के सम्मूल महमें अधिनीकुमारिको सोमपान कहना — राजाने पूछा—मध्याध ! इन्हके सम्मूल —

अभिनीकुमारीको उन्होंने सोमरस विस्तवा ? क्या श्वतकन ऋषिकी तपास्त्रके प्रभावकी प्रथलको इन्हें कुंछ भी कलेने समर्थ नहीं हर !

सुमन्तु मुनिने कहा — संस्थियमधी पूर्वसंप्याने सहाले. तटपर समाधिस्थ ही ध्यक्तमूनि बहुत दिनोसे तमस्याने सा थे। विश्व व्यास अपनी सेन और अनःपुरके व्यास साथ नेकर पायसन प्रस्तीत गुज़-कानके किये वहाँ उन्नवे। उन्होंने व्यवनाविके अन्तवके समीय व्यास गुज़-स्वान सम्बद्ध विका तका देवताओंकी आराधना की और पित्रतिक तर्पण

🔳 एवं पुरुषीक्षीया-असमि परिपा

विश्वा । नदेनकर संब के अपने नंगरकर ओर जानेको उद्यत हुए तो उसी काम किसी सभी सेनाएँ क्वाकुल हो गंभी और मृत्र तथा विष्ठा उनके कामका है वंद हो गये, आँखोंसे कुछ भी नविं दिखायी दिया । सेनाकी वह दक्ष देखकर राजा घबड़ा

पगर्य तु गया पुण्या करी पुण्या पुनः पुना । प्यत्नसम्ब अञ्चल पुणा पुणा तकपृष्ट वर्तम् ॥

तमा —

क्षुमधीत वर्षाता व्याप्ता अस्तर्भ पनि ।

१-अन्य प्राणीमें तथा महाभारको अनुसर का अवस्य स्केरका 🎮 🔤 मोता संत्यकर था, तो आप देवनुष्यके व्यापे प्रस्ति है। क्रमः पुराणीमें यह क्रमेंस को प्राप्त सेता है—

उठे। राजा सर्वाति प्रत्येक व्यक्तिसे पूछने लगे—व्या तकार्धा व्यवनमृतिका विका आश्रम है, विस्तिने कुछ क्राव्यंत को वर्षी किया ? उनके इस प्रकार पूछनेयर किसीने कुछ भी नहीं सहस

शुक्त-काथे आपने कितानी कहा—महाका । पैने एक आखर्य देखा, ब्राह्म में वर्णन कर ब्राह्म है। अपनी सहेरिक्योंके साथ में वन-विद्यार कर रही भी कि एक औरछे मुझे वह राज्य सुनानी पड़ा—'सुकाने ! तुम हका शाओ, ब्राह्म इधर आओ।' यह सुनान में करना सामानी साथ उस एक्टकी और नर्था। वहाँ करना मेंदि एक सहय केवा करनीक



देशा । उसके अंदरके कि देशकान से पदार्थ कि दिशकान से पदार्थ कि दिशकान से एक कि देशकान से हैं। कि अपनी पूर्वां और चन्नाकालों कुला के असमान से प्राप्त कि हैं। कि अपनी पूर्वांत और चन्नाकालों कुला के असमान से प्राप्त कि समान से प्राप्त कि से प्राप्त कि समान से प्राप्त कि से प्राप्त कि समान से प्राप्त कि समान से प्राप्त कि समान से प्राप्त कि समान से प्राप्त

यह सुनकर राजा बहुत काबुक्त हो को और अपनी कन्या सुक्त्याको लेकर वहाँ गये नहीं व्यवकामृति राजस्थी मा थे। व्यवकार्शिको वहाँ समाधिस्य होकर मा हुए इतने मा ध्यतीत हो गये थे मा उनके उत्तर मामा का मा जिल केजस्वी छिट्टोंको सुकन्याने कुदाके आक्रमकरो सींच दिया मा व तस महत्त्वपरकोके प्रश्वतस्थान नेत्र थे। em वहाँ पहुँचकर अधिकन दोनकाके साथ emm करने रुगे।

ाम चेले—महातव ! भेरी कश्वासे बहुत बढ़ अच्छाप 🖥 पत्रा है। कृशका स्था कों :

व्यवस्तुनिने व्यक्त म्हास्ताच हो मैंने क्षमा किया, परंतु सम्या कन्यका मेरे साथ विवाह कर दो, इसीमें तुष्टारा करणान है। शुनिका क्यम सुनकर राजाने सीध हो सुकन्यका व्यवस्थानिके स्थान कर स्था। सभी सेनाएँ सुकी हो गर्यों मुनिको प्रशासन सुक्तपूर्वक संभा अपने नगरमें आकर

अस्मे स्टो (स्वाप्त चे व्याप्त पाट प्रतिपूर्णक पृथ्वि सेवा करने स्टा । एकवान, आधूनण उसने स्टार दिये और कृत्यों करने स्टा प्राचन प्रति कर दिया । इस प्रकार पृथ्वि सेवा करते हुए पुष्क समय करतीत हो गया और वसन्त व्याप्त करती हुए पुष्क समय करतीत हो गया और वसन्त व्याप्त करती । किती दिन पुष्कि संतान-प्राहिक स्टियं अपनी

विकास विकास । अपना विकास विकास विकास विकास । अपना विकास विकास विकास विकास । अपना विकास वि

🎹 सुकन्याच्या अस्तुस्य विकासः। इसपरं सुकान्याने असिदान

कुक्तरमा तथा सुन्दर भवा-आकृतनोते आर्ककृत

व्यवनकृतिने व्यवस्य क्षेत्रार कहा—न पैरा शता कप विदेश व सुक्तरे पिताके समान मेरे कस बन है, जिससे सभी विद्यास व्यवस्था में स्वास

्राम्बर्धाः कोरलै—महरप्य । व्या अपने तपके प्रमुख्ये सम्बद्धक करनेमें समर्थ है। आपके रिप्ये व्या कीर-में व्या कर है?

च्यान्यकृषिने चया—पंकपृति । इस कामके लिये में अपनी वक्ता कार्य व्या कर्तना । इसना कर्तकर वे पहलेकी व्या क्याचा व्या सके । सुकन्या भी अनकी सेवाने व्यास हो क्यो ।

इस जन्मर बहुत करू कार्तात होनेके बाद अधिनीकुमार उसी पार्गसे चले जा हैं। वे कि उनकी दृष्टि सुकन्पापर पढ़ी। अधिनीकुम्बारीने कक्का—महे! तुम कीन हो ? और इस बोर ककी अकेली क्वों रहती हो ?

सुकानाने कहा---वै 📖 शर्यातिकी सुकन्य नामकी

1

अधिनीकुमारोंने कहा—हम देवकाओंक का अधिनीकुमार है। इस वृद्ध पविसे हुनों ■ सुरू विकेश ? ■ दोनोंने किसी एकमा वरण कर हो।

सुकन्याने कहा—देवकाओ ! व्याप्त ऐक व्याप्त नहीं । मैं परिश्रका हूं और व्याप्त क्यारसे अनुस्क व्याप्त दिस-रात अपने परिश्रक सेवा कस्ती हैं ।

अधिनीकुमारोंने कहा — बाँद ऐसी बात है तो बात तुम्हारे परिदेशको अपने इसकारण द्वारा अपने समान सहस एवं शुन्दर बना देंगे और सब हम सीचे नहामें सकस्य सहस निकाल पिट विशे तुम परिकामने काम काम खाड़े कर देना।

सुवान्याने अक्षा—नै तेन्य 🔤 लक्षके हुए 🗐

अधिनी सुव्यानी ने स्वया -- तुन सन् वीको पूर्व आओ, स्वयास का नहीं अहीताने होने। सुव्यानो भवतान पृथ्वित वास कानर उन्हें सन्पूर्ण कृतान स्वयास अधिनी सुमारीको बात स्वयास कर व्यवस्तुनि सुक्रमाओ लेकर स्वया वास आये।

व्यवनपृतिके सहा--- अधिकेषुमाके । अध्यक्षे व्यव इमें सीकार है । आप इमे उत्तम कप्यवन् करा है, किर कुक्ष्मा याते जिसे अरण नहें । व्यवनपृतिके इसमा क्रम्पेयर अधिनीकुमार व्यवनपृतिको रोकर महत्वके व्यवन क्रम्पेयर अधिनीकुमार व्यवनपृतिको रोकर महत्वके व्यवन क्रम्पे हैका कि ये सीनों तो समाम स्थ्य, सन्तन अवस्था क्रमा सम्बद्ध वसार्थ्यकोरि अर्थकृत हैं, किर इनमें मेरे स्था व्यवनपृति स्था है ? स्था स्था माना स्था और व्यवनुत्त से अधिनीकुमारोको प्रार्थना करने रूनी ।

सुकन्या बोली — देवो ! जलका कृत्य पतिहेकका की मैंने परित्याग नहीं किया का अब सो आवकी कृपको उनका रूप आपके समान सुन्दर हो गया है, फिर मैं कैसे उनका परित्याग कर सकती हूँ। मैं आवकी श्राण हूँ, सुक्रण कृता कीजिये। सुक-कारी इस आर्थनारी अधिनीकुमार प्रता हो गये हिंद अपूर्ण देवताओंके निहींको प्रता कर रिज्य । सुकन्यने देवता है कि पुरुषेत्रीसे हिंदी स्था थिए नहीं रही है और



उनके करण भूमिको उनमें नहीं कर रहे हैं, मितु जो गीसरा पूजा है, का भूमियर साझ है और उसकी पराने भी गिर शही है। इन विक्रीको देशकर सुकल्योंने सिक्स कर लिया सि ये साल पूजा है। सि स्क्रम कामान्त्रीय है। तम इसमें उनका करण कर रिजा। उनके समय आवश्यको उसका पूज-वृद्धि होंने साली और देशमान पूज्येंच सामी रहते।

व्यापन्त्रियो अधिनीकुमारोसे कहा—देखे । आप लोगीन मुक्तपर बहुत उपकार किया है, जिसके फलसक्य मुझे उत्तर क्षा और क्षांत करी बात हुई। अब मैं आपलोगीका वर्ष, व्याप वर्ष अपनार करनेवालेका

क्षा करें करक, वह क्रमसे इस्तेस तरकोंने जाता है', इस्तरिये अपन्या में 📰 जिम करें, आप रहेग करें।

अधिनीकुमारोने जातं बद्धा—महस्यन् ! यदि आप इन्ययं किंग करण ही बहते हैं तो अन्य देवताओंको तरह हमें भी बहुमान दिलकहते । व्यवनमृतिने वह बात स्वीकार कर हमें, किंग में उन्हें विश्वकर अपनी महर्या सुकत्यांके साथ अपने अक्षाओं बहु बने ।

क्या 🚃 🚾 यह साध बुतान्त अत हुआ तो वे

🖷 रानीको साथ सेकर सुन्दर रूप-प्राप्त महारोजनी च्यवनञ्जविको देखने अध्यक्तमें अध्ये । एउसने च्यवन्युनिको प्रणाम किया और उन्होंने भी राजका स्वापत किया : मुक्तमाने अपनी मालबर आरिनुत्र किया । क्या 🏬 अपने मानात महासूनि च्यवनका उत्तम कम देसका अस्पन प्रसन्न हुए।

ध्यवनभूतिने राजासे कहा---ग्रजन् ! एक महस्त्रको सामग्री एकप कीजिये, हम आदसे यह कत्वेंने : व्यवन-पुनिको आहा प्रमुक्तर तथा स्वर्णीत अपनी सुक्कानी त्येट आये और यह-सामग्री एकक्कर यहकी तैकरो करने सने। मन्त्री, पुरोशित और आचार्यको ब्लाकर महावरकी सिन्ने उन्हें निवृक्त किया । व्यवसमूचि भी अवनी वर्गी सुख्याको हेन्छ। यह-स्थलचे पद्यो ।

समी ऋषिराजीको आमन्त्रका देकर 📖 ब्रह्मक गाव । विविद्र्येक 🧰 प्रारम्भ पृक्षाः प्रशिवन् अतिकृष्यने न्याहरकारके पाय देवताओको आही हैने सने। सन्ने देवता अयमा- 📖 यह-याग 💹 वहाँ जा वहेंचे । व्यवस्युनिके कहानेसे अधिनीकृतार भी 🎆 आवे। 📖 🚃 आनेका अयोजन शक्ता गये।

इन्द्र कोले---पुने । वै केनो अधिनीकृत्यर विकासका मैद्य है, इसलिये ये यज्ञ-भागके अधिकारी नहीं है, अब्ब इन्हें आकृतियाँ प्रदान न करवाचे ।

ध्यमनमुनिने इन्हर्स कहा—ये देवता 🖟 और इन्हर मेरे उत्पर बढ़ा उपकार है, ये मेरे ही आय-बच्चर बड़ाँ पर्धार



📕 इसलिये मैं इन्हें अवस्य यञ्चभाग देंग्य । यह सुनकर इन्द्र क्रव हो उठे और कठीर शास्त्रे भहने छगे।

**इन्ह्र बोले—प**र्द तुम भेरी बल नहीं मानीने के जज़से कुरक में प्रहार करूँका । इन्ह्रकी ऐसी चाणी सुनकर च्यवनमुन्दि विश्वम् 🖈 🚃 📰 🦏 और उन्हेंने अधिनीकुमारीको बहुमान दे ही दिया, क्ष्म हो इन्द्र आवन 🚃 हो उठे और 🚃 जो 🛱 च्यवनपुनियर प्रहार करनेके लिये अपना थप उद्याप 📢 🖫 व्यवनार्शने अपने सर्वे प्रपादने इत्यव लाव्यव कर दिया । इन्ह्र हायभे वक्ष क्षिमे स्वक्रं ही रह गये ।

व्यवस्थानिके अधिनीक्ष्मारीको यञ्जना देवस अधनी 🚃 📷 कर 📰 और पहलो पूर्व किया । उसी समय पर्डा स्क्रामी उपरिचन हुए ।

**व्याप्तिने कार्यम्युनिसे कहा**—महामुने । आप कुरको भ्रम्भन-वृक्त कर है। अधिनोक्**म**कि यह-भाग दे दे । इन्द्रने की सरभवसे मूक्त करनेके किये प्रार्थन भी ।

🊃 ब्याप — पूने ! अवयके तपको प्रसिद्धिके किये ही की इस अधिकोश्यक्तिको पश्चिम चान केनेके होस्य था, अस कारमें सब 🚟 कार्य 🚃 📻 अधिनीवृत्सरीकी 🕶 ब्यानारः स्वयः बांस्य और इनको 💯 में प्राप्त होगा । अवने इस तरके प्रभावको जो सुनेम अथना पर्देगा, यह भी क्षम् रूप 💓 कैक्सको छल करेगा । इसमा आहमार देशसङ इन्ह टेक्स्प्रेकको चले गये और च्यवनमृति सुकन्य तथा एवा **ाशिक्ष स्तर्भ अवस्थित सीट आये 1** 

बहाँ उन्होंने देखा कि बहुत उत्तम-उत्तम महरू बन गये हैं, जिनमें शुन्दर अववन और वाजी आदि विहारके रिप्टे भनें 👳 है। चाँत-चाँतिकी क्रम्बाई विक्री हो है, विविध स्त्रीसे 🚃 अपूर्वनी तक उत्तम-उत्तम वस्त्रोके देर रूपे हैं र 📺

देशकर भुकन्यस्तीत ज्ववनमुनि आसन्त प्रसप्त 📕 गये और उन्हेंने यह 📖 देवराज इन्द्रप्राण प्रदक्ष समझकर उनकी

प्रशंसा की।

**प्राप्ति सुवन् राजा सत्तानीकसे बोले—**रजन् ! इस प्रकार द्वितीया तिथिके दिन अश्विनीकृमापेको देवस्य तथा ब्द्राच्यम प्राप्त हुआ था। अब आप इस द्वितीया सिधिके बसका 📰 स्टी—

**प्रतानीक बोले**—को पूरूप उत्तम संपक्षी इच्छा करे

🚃 कार्रिक मासके 🊃 📖 🚃 बतको आस्थ करे और वर्षपर्यक्त संबंधित होकर पूज-क्रोकत करे। जो उन्हाप हरिष्य-पुष्प इस ऋतुमें हो 🚃 🗪 करे । इस प्रकार 🧰 वर्ष वरस्य सोने-चाँदीके पूष्प 📖 अथवा कारलपुर्वाको हास्त्राचीको देकर प्रश्त सत्त्वत करे । इत्यते अधिनीकृत्वत संस्कृ 🔤 उत्तम रूप प्रदान करते हैं । जही उत्तम विकासिने बैठकर स्वर्गमे 🚃 करपवर्णन 📖 स्वोक्ट टपकेन 🚃 ै 1 फिर मर्त्यत्येकमें 🚃 रेजर बेद-बेदाहोका 🚃 🚃

**্বার্থিক ক্রিন, বুর-বীর্মীন বক্ত, জলা ঘর্মাবালা** 🚃 🔚 है अनवा मन्दरेशके उत्तम नगरमें राजा होता है ।

क्वन् ! इत पुरुद्धितीय-प्रकार 📟 मैंने आपको

🚃 📗 पत्सीहरीच ची 🔛 है, जिसे अञ्चनसम्बद्धाः विकास विकास है। फल्हितीयको 📗 बळापूर्वक बर 📖 है, यह ऋदि-सिदियो अक्षकर अपनी पर्वकार भारत का लाग है।

(अञ्चय १९)

# कल-क्रितीया (अञ्चयक्रमन-इत) का इत-विवाय और विवीधा-करपकी समाप्रि

राजा सत्तानीकले कहा-मुने । शृहकार 🖮 कल अनकत्वो 📰 है, इन्हें अनकत्वर सप्यापर सपर्पित करन 🚃 और 📹 भी प्रक्रिक 🚃 वर्षी कालेको 📖 दूसरे दिन 🌃 दक्तिमा देनी पाहिये।

> राजा सरक्ष्मीकाने सूक्षा—अहानुने ! भगवान् विच्युको ब्बैन-से फल जिय 📗 आप उन्हें बलायें । दूसरे दिन आधार्णीकी

🚃 छन देख चलक्रिये ? 📰 भी कहें ( सुरम्भु सुनि बोले — एक्ट्र 🗄 तल बहुने थे 🗏 पाल हों और क्षेत्र 🔛 🚃 भगवान् जिल्लुके किये 🚟 बादना चाहिये । बक्ये-क्यो तथा क्यो फल इनकी सेवामे नहीं चढ़ाने साथ ब्रीवासचारी पगवान् ब्रीविक्तुस्य पूजनका हाथ केंद्रकार च्यक्ति । भगभान् विभ्युक्ते सासूर, मारिकेल, ह्याला आर्यात् विक्रीत जादि मकुर परलेको समर्पित करना चाहिये। भगवान् प्यपुर विस्तारी प्रस्ता 🔡 है। दूसरे दिन बाह्यणीको भी इसी

> हम जन्मर को पुरुष चार मासतक जत करत है, उसका 📺 📰 वर्ष वर्ष स्थाप रह नहीं होता और न 🖹 केवर्षकी करनी क्षेत्री है। की की इस अधको फरती है वह सीन नामेंथक व विश्वक होती है । हुनीय और । पतिसे मुचकु ही

> ल्याले वयुर फल, वया, अस तथा सुवर्षका दान देश चाहिये ।

इस व्यक्ते दिन असिनीकुमारोकी 🔣 🚃 करनी व्यक्ति । करन् ! इस प्रकार मैंने द्वितीया-कल्पकः वर्णन (अस्याय २०)

विश्वन को, विसके करके। सी 📖 नहीं होती और पति-पत्नीका 🚃 📰 🖫 📆 होतः । सुकत् पुनिने **अक्षा**—स्वन् । में परव्यक्रिकाल विभाग करता 🛊 , इसीका नाम अञ्चन्यञ्चना-विश्वेषा 🔡 है । इस 🚾 विविधूर्वक करनेसे 🔛 🚃 🚃 🔤 भी-पुरुवका सर्वर विधोग 🐫 💹 होता । 🚃 लक्ष्मीके साथ भगवान् विष्णुके शायन विष्णा समय पह वक होता है। भाषण मारावेद कृष्ण परावधी है(सेपावेद दिन 🎞 🚟

शीवशायारित् शीवान्त 🚟 वीकोऽन्यन् ः मा प्रजासं में कह अमेरीकाकहरू ह ,पासक्ष का प्रसारकातु को प्रभावकातु के कालः स जनमे मा प्रजावनम् मतो कृत्यत्वभेद्धाः । अस्या विकृषेत्रं देव न कश्रविक्रक चावर् ॥ तमा कररअसभानो के 📖 मे विकृतकान् । iiii न प्रत्ये कर .... हे कर्कास्त =

🚃 🚃 प्रार्थना 🚃 व्यक्तिये —

**ा मनाप्यस्**यस्य तथा तः प्रथसक्र<sup>र</sup> ।

(अपूर्ण २०१७—११)

इस 🚥 विष्णुकी 🛶 करके 🚃 प्राप्तिके। के विकास है।

कार्क है।

१-दे अंक्स-विकार 🚥 📟 📖 📖 १९६६ भगवन् विन्तु ! वर्ष, अर्थ और कामले पूर्व करोबाल मेर गुहारा-आवस कभी 📷 न हो। मेरी मौर्ट भो 📾 न हो न कभो भेरे प्रतिकारके होना कहने पहें 📰 🗷 रह 📳 । कर 🔤 📟 की 🖼 🖼 🖽 और 🔤 पति-पत्नीमें भी 🔤 मतभेद उत्पार न हो । हे देश ! मैं हर्भावेशे कभी विमृद्ध 🗈 होते और पत्नीहों भी कभी पही विद्योगकी 🔤 न हो । प्रभे ! जैसे आपनी प्राप्त कभी रुपयोसे प्रन्य नहीं होती, उसी काल नेते काल में 🔤 प्रोक्कारित एवं 🖼 वस 🖼 प्रन्य 🗈 हो ।

### तृतीया-कल्पका आरम्ब, न्वेरी-कृतीया-इत-विकान और उसका फल

मुख चहती हैं, उसे दृतीयका तब करना चारिये। 

सुख चहती हैं, उसे दृतीयका तब करना चारिये।

सर्क नहीं कान चाहिये।

पर्वच वातका समुद्राम 

संतुष्ट होकर रूप-सीमान्य तथा सावका प्रदान करते हैं।

वर्णन विकास है, उसे आप सुने—

पुरुषेकि कल्पापके लिये मेरे इस सीवान्य व्यक्ति कल्पापके लिये मेरे इस सीवान्य व्यक्ति कल्पापके लिये मेरे इस सीवान्य व्यक्ति कर्पापके करती है, व्यक्ति क्रायं क्रिक्ट अवन्यक्ति कर्पापके कर्पापके हैं, व्यक्ति क्रायं क्रायं कर्पापके कर्पापके हैं, व्यक्ति क्रायं कर्पापके कर्पापके क्रायं कर्यं कर क्रायं कर्पापके क्रायं कर्पापके क्रायं कर्पापके क्रायं कर्पापके क्रायं कर्

भोजन नार्षः स्थापितः गीरी-अतिनार्षः सम्बद्धः है। शपन करे। दूसरे दिन व्याप्तः व्याप्तः दे। इस अकार व्याप्तः व्यापतः वयापतः वयाप

मदि विश्वक इस व्याप्त करती है से वह कार्का अपने साथ थहाँक सुसोक्य अपनेग करती है और पूर्वेक व्याप्त सुसोक्ये भी व्याप्त करती है। देवी इन्द्राजीने पुत्र-प्रक्रिके दिन्धे इस व्याप्त अनुहान व्याप्त था, इसके प्रभावसे उनी जनना नामका पुत्र भार हुआ। अक्नाति व्याप्त विस्ति के विश्वक अन्यक्तमः अस्ति अस्ति प्रश्नित स्थानि विकारीः अस्ति विकारीः व

इस बाब का कृतिया विधि-वात हारे संसादये पूर्णत है है। कैतान, बाब तथा मान कृतिया वात मानोकी कृतियासे अधिक उत्तम है, बाब बाब क्या क्या क्या कृतीया विजेश कर देवेकाले हैं।

व्याप्त सामान्यकारो प्राची किये है। का सम्बद्ध कृतिया है। 📖 📖 तृतीयको 🚃 🚃 न्यान्य 📟 तृष्टेवार्थे पुरुषे 🛗 अवृष्टी (मालवृक्षा) 🛍 दान करना व्यक्ति । जनकर स्तुरको 🚃 🛗 मान 🚃 क्रीकको मोदक 🗐 बहुन्य दान 🚃 स्वीपे। केळक **व्यक्ति हर्तकाने कदमीनीता** जल तथा मेदकोर क्रमले अपूर्ण 🚥 सभी देवता 🛍 होते हैं। देवताओंने नेपाक कराको गुर्वकाने IIIIII दुर्वका कहा है। इस दिन अध-कक्त-पोजन-सुकर्ग और जरु आदिका दान करोसी अध्यय 🚟 को 🛍 है। इसी 🚃 हम वृत्तिभावन Alla sesse वृत्तीया है। इस वृत्तीयके दिन जी <u>साथ</u> 💹 🚃 किन्स नका 🖁 🚃 🚃 हो जाता 🖥 और दान सर्वत्वेकको अस बरता है। इस रिविको जो 🐃 करण है कह अब्दि-कृदि, और 🛲 सन्यत 🖹 जाता है। (अध्याप २१)

## चतुर्थी-जल एवं अनेदरजीकी बाल साल रेलमुखिक इसकाया संदिश् परिचय

सुमन्तु मुनिने सद्धा—राजन् ! तृतीय-करपदा वर्णन करनेके अनकार अस मैं चंतुर्थी-करपदा वर्णन करता है। बतुर्थी-विधिमें सदा निपक्षर स्वयन कर पहला पाहिने। बाह्यपन्ते तिरुक्त दान देवर सर्व मी तिरुक्त भोजन करना व्यक्ति । इस प्रकार कर करते हुए दो वर्ष व्यक्तित होनेपर मगजान् विकासक प्रसान होकार अधीको अभीष्ट फल प्रदान करते हैं। उसका भाष्मोदय हो त्याता है और सह जन्मर कर-सम्बक्तिक स्वामी हो करता है तथा परलोकों भी अपने पुण्य-फलोका उपनीम करता है। कुन्य समझ होनेके स्वास् ४स लेकने पुनः व्यक्त वह रीजीनु, कनियान्, कुटियान्, धृतिमान्, वक्ता, पाण्यवान्, अपीष्ट कार्गे 📖 असाध्य-

भी शत-गरमें 🖫 सिद्ध कर राजकार कर सनी. केंद्रे, २६, पत्री-पुक्ते बुक्त 🖥 सात वन्धेतक क्या होता 🕏 :

राजा इसानीकने पूछा—मुने । ननेजबीने व्यवस रिप्ये निवा उत्पन्न विजया था, विक्रमें बदरण रूपें विवाधिकायक कहा गया । 📖 🚟 तथा करते छठ 🚟 क्रफा करते च्यारणको मुझे कहानेका 🚃 को ।

सुयन्तु मुनि बोले—एक्स् । एव 🛍 असे 📖 शासके अनुसार सामिकारिकेको पुरुषे और 🚃 सेह लक्षणेकी रचना की, 🛥 समय गणेक्षणेने 📟 📖 इसक 🚃 इन्ह्र हो 🕍 और 🚞 गरेहरक एक दी। क्लाइ किया और उन्हें मारनेने लिए उपल 🖬 इते। उस समय भगवान् इस्तुरने अन्त्यो रोकारः पूछा कि तुन्हो स्रोकार **2 3 3 7** 

कार्विकाने कहा-नितामी ! मैं प्राचेत्रे राजन क्याकर क्रिमेंके रूक्षण क्या रहा था, इसमें इसने क्रिक्त क्रिका, जिससे जिल्ला लक्षण में पड़ा बना कारण इस बसन 📲 प्रदेश हो आया । त्या सुरस्तर नहत्त्वेवजीर वर्तन्तिको होन्वको शान्त विश्वा और 🎹 हर् ठन्होंने नृक्ता।

शहर बोले---फ़ा । दूस पुरुष्ठे तथल 📖 हो ते बताओ, मुक्त्रे पुरुषे कीन-से लक्ष्म है ?

कारिकेयने चक्क — पहाराज ! अवनी देख समात है 🖿 संसारमे 🚥 कमालीके नामसे प्रसिद्ध होने । पूरक 🖘 बचन सुनकर महादेशमीको कोथ हो बाला और इन्हेंने इनके देश राज्यण-प्राचको उद्यक्षण सन्द्राचे केन्द्र दिया और सर्व असर्घान 🖩 गये ।

बदमें शिक्कीने सम्द्रको ब्लाका कहा कि को दिल्लेके अवपूरण-स्वरूप विस्तवाण सम्बन्धेकी रचन करे और कारिकेयने जो पुरुष-लक्षणके विकामें कहा है उसकी बड़ी ।

समुद्रने कहा—ये मेरे प्रत पुरुष-छश्चनक 📖

कहा व्यक्तम, वह मेरे ही ताम 'सामुद्रिक प्राप्त से प्रसिद्ध केला। भवन्ति ! 🛲 🗏 🚃 पुत्रे दी है, 😅 निवित ही। पूर्व क्रेके ।

इक्क्षुरजीने पुत्रः बाह्य---क्रांसिन्य ! 🚃 📖 तुमने 🗬 प्रमेशका 🕅 उच्चद 🕬 📗 दे हो । विश्वय ही जो कुछ यह कुछ। है, क्षेत्र 🖥 भा। देवदोगसे यह गलेशके बिना 🚃 नहीं 🚃 इसकिये उनके छए यह विश उपस्थित किया प्रकार **पर्न** तुन्दे तक्षणको अनेका 🛮 ते समुद्रते 🗪 📫 हो, फिन् को-प्रचेक यह केंद्र रुक्षण-जाक 'सम्बद-प्रास्त' इस अवले ही प्रसिद्ध होगा । गणेशको तुम दति-युक्त कर हो ।

कार्यकार्थं यक्षान् देववेनेप्रस्ते वद्या--आक्ष बाहनेके में दांत के विनायकके हामने दे देख हैं, किन् पूर्ण इस कार करना वार्य करना वा 🗏 इच्छ-उच्छ कृषेत्रे 🔣 क्छ फेका गया दौन इम्हें यहन कर देखा। देसा कक्कर 🎟 📰 सकते दौर दे दिया। धगवान देखें व्यक्तिको प्राप्त हैं वामोंके रिन्दे लाला भर रिन्दा ।

कुरुन् पुनिने बद्धा-एकन् ! 🚃 भी भगवान् प्रमुख्के कुर विकास महारह विकासकी 🛗 हायने दति रिक्ने देखी का स्वाती 🕯 । देवताओंकी यह स्ट्रायपूर्व 📖 🔣 अवयरे कही । इसके 📟 मी नहीं 🖦 पाये थे । पृथ्वीपर इस रहसको जनक के दुर्छभ 📓 है। प्रसन्न होकर 🛅 इस कारको अन्तरे से कह दिना है, किंदू राजेक्स 🛍 📠 अनुसक्त्या चतुर्वी शिक्षिके संयोगका ही व्यक्ती वर्गहर्वे । औ विद्वान् हो, उसे च्यक्तिये कि कह इस कथाओं बेदपारवृत्त श्रेष्ठ दियो, अपनी व्यक्तियान वृतिने तमे हुए श्रामियो, बैएवी और गुक्कन् ऋडेको स्नादे। यो 📺 क्युर्वीवास्य प्रकार सन्ता है. उसके रिज्ये इस लोक तथा परलोकने कुछ भी दुर्लय नहीं क्ता । उक्की दुर्वित नहीं होड़ी और न कहीं वह पर्यावत होता है। चरतकेत ! विक्रिंग-रूपसे वह सभी कार्योंको 📰 📧 📰 लेखा है, इसमें संदेश नहीं है । उसे ऋदि:-युद्ध-ऐसर्थ भी प्राप्त हो 📖 है। (अध्याप २२)

### सतुर्भी-करूप-<del>वर्णनये क्लेक्क्जीका विद्य-अधिकार 📖 उनकी पूजा-विधि</del>

चारानीकने सुमन्त् भूमिसे पुछन—विकास ! गणेक्कांको गणेका एजा किसने 🚃 और 🕸 🖼 कार्तिकेयके रहते हुए ये कैसे विश्वीके अधिकारी 📕 मये ?

समन्तु मुनिने कहा — कवर । अपने बहुत अवही बहुत पूर्ण है। जिस कारण ये विकासका हुए हैं और किन निर्मोको करनेसे इस पट्पर इनकी नियुक्ति वर्ड, वह मैं कह रहा हैं, उसे अग्य एकाश्रवित संकर सुने । यहके कृतपुराने क्रवाओवी का पृष्टि हुई तो किया किल-जानको देवले ही देवले कर 🔤 सिद्ध 📗 जाते थे। 📖 🚃 आकृत्व हो 🖦 हेश-गीरत 🛗 अनंबारके परिपूर्व प्रकारी देशकर सहस्रे नक्त सोच-विका काले प्रज-समृद्धिके हिन्न विद्यालका विनियोषित किया। एकः ब्रह्मके प्रयासी पनवान् प्रकृते गर्नेवाको उत्पन्न किया और उन्हें विकास व्यक्ता ।

राजन् ! 🔣 प्राणी नानेकारी 💷 पूजा 📰 🔛 सार्व आरम्भ करता है, इस्कें सक्षण शुरूके मुन्दिन—वह स्कूट नवप्रमे अस्यन्त गहरे जसले अफोबरे कुसते, बाल बस्ते हुद् क केता मुद्रापे देकता है। कारक बच्चसे आव्यादित तथा हिसक ज्यामदि पश्कीपर अपनेको स्थात दश्य देवला है। अन्तर्क गर्दभ तथा केंद्र आहिपर च्याकर परिक्रकेंद्रे फिर 🐲 🔤 जाना हुआ देखता है। ओ मानय चेन्यक्रेयर बैठकर क्रयनक जलकी तरेगोंके बीच गया हुआ देखता है और पैदल कर रहे लेगोरी विश्वर प्रमानके लेकको जाता हुआ अवनेको स्टाप्टे देखता 🖁, यह निवात ही अरकत दुःश्री क्रेस है।

जो राजकुमार स्वप्नमें अपने चिता राज्य आयुक्तीको विक्रांत अपने अमरिक्त, करवीरके पुरुषेकी मारकसे विपृत्तित देखता है, वह दन पगवान् विशेषके द्वार किए उरका कर देनेके कारण पूर्ववंशानुगत आह राज्यको आह नहीं कर करा । कुमारी क्रमा अपने अनुरूप पतिको नहीं प्रका कर साथे। संबिधी औ संतानको नहीं प्राप्त कर पाली है। होदिन सहदन उक्कार्यत्वका रमध नहीं प्रक्ष कर पाता और ज़िला अध्यक्त नहीं कर पाता। वैदयको ज्यापारमें लाभ नहीं 🚃 होता 🌹 और कृषककी कृषि-कार्यमें पूरी सफलता नहीं 🖳 । इसरियर कबन् ! ऐसे अशुभ लागेको देखनेक भगवान् गणपतिकी प्रसानको लिके

विसंयक-जानित करनी खाँहरो ।

**पुरा प्रश्नामे अर्थमिक दिन, अहस्यतियार और पृ**य्य-नका होनेका गर्वकारीको सर्वोधीय और सगरिवत द्रव्य-🚃 📰 करे तथा उन भगवान विशेषके सामने 🔛

कराये । तदनकार धनवान् 🚃 🚾 गणेत्रको पृत्रा 🚾 सभी 📖 सभा 🚃 पूजा करे। चल 📖 स्थापित 📖 उनमें रक्षपुरित्यः, पुणुतः और गोरोजन आदि 📖 तथा सुपन्तित पद्भवे और । सिक्रमस्थ गर्नेद्राजीको 🚃 कराना चाहिये। कान करते समय इन मन्त्रेका उत्तरण को-

रक्ताको रक्तकरवृतिथिः सक्तं कृतस्। केन स्वाचीकविद्यापि पात्रकान्यः पुरुष् हे ॥ कर्ण ने करको साम भगे भूती वृक्तपतिः। व्यवस्थितकः सन्द्रश्च भने समुर्वयो श्रृष्टः।। यते केलेपु कैयांच्यं सीवनो यक मूर्यनि । सरको कर्मकेस्ट्रकेसक्स्प्राप्तु है सद्य ।।

(सार्व्य १३ । १६—११)

इव सम्बोसे कार कराकर हवन अहरि कार्य करे । अनन्तर सक्ते पुरा, दुर्व तथा सर्वप (सरहो) ऐकार गणेशकीकी माता वर्षसंबंधे सेन कर पुष्पक्रारे ब्याब करनी वाहिचे। **इक्टर**ण करते हुए इस **बा** पार्थना करनी चाहिये—

🕶 👺 पाने केंद्र 📟 भगवाने 🐯 🛧 : कुमान् हेरी: धार्ग हेरी: प्रस्तांत् कारणांक हेरी: में ।

🚃 📫 में के 🔤 स्थापिय च 🛚

(अक्टर्म २३ । २८)

अधीत् हि मनवाति ! अस्य मुझे कय, यहा, तेज, पुत क्या कर दे आप मेरी सभी धरामताओंको पूर्व करे। मुझे अधल चुद्धि क्यान करें और इस पृथ्वीपर प्रसिद्धि दें।'

अर्थनके पक्षद् सहनोको तथा गुरुको भोजन क्दे क्य-वृपल तक दक्षिण समर्पित करे। इस प्रकार मगळ्य गर्नेज तथा प्रहेकी पुत्र करनेसे सभी कर्मीका 🚃 🚃 📰 है और अस्वन्त क्षेत्र रूक्पीको प्राप्ति होती है । सुर्य, **व्यक्ति और विभावकता पूजन एवं तिलक करनेसे सभी** सिद्धियोगी अभि होतो है।

### पुरुषेके शुभाशभ रुक्षण

राजा सत्तानीकने पूळा—किन्द्र ! श्रो और पुरुषके ओ लक्षण कार्तिकेयने सन्दर्भ थे और जिस अन्वको अनेविधे आकर भगवान् शिवने समुद्रये केंक् दिया व्या बाह कार्तिकेयको पुनः प्रका हुआ या नहीं ? इसे अबर पुन्नो बताये ।

सुष्यस्य पुनिने व्यक्त — एकेट !

पुरुषका जैसा रुक्षण वाहा है, वैश्वः ही व कह एत है।

प्रोमकेट भगवान्के सुद्रा कार्तिकाने जब अपनी प्रतिके हारा क्रीवधवेतको निर्दार्ग कार्तिकाने जब अपनी प्रतिके हारा क्रीवधवेतको निर्दार्ग किया, इस समय सहस्रकी इन्यर प्रसार हो उठे। उन्होंने कार्तिकानो कहा है इस कुम्बर कार्य है, जो बाहो वह वर सुहारे पाँग रहे। इस नेजकी मुखार कार्यन नतस्त्रका होका दनों प्रमान किया और कहा कि

(व्याप्त विकास क्षेत्रक क्षेत्रक है। क्षेत्रक क्षेत्रक है। क्षेत्रक क्षेत्रक है। क्षेत्रक क्षेत्रक क्षेत्रक है। क्षेत्रक क्षे

भिष्या आकार समुद्रमे देका दिया। यह मुद्रो यूल भी क्या है। व्याः इसको मुक्तिको पेरी इच्छा है। अरच कृता करके उत्सावक वर्णन करे।

व्यक्ताची जोले — तुमने अच्छी कथा पूर्व है। समुद्रने वित प्रकारने इन एथानोको कहा है, उसी प्रकान में शुन्हें सूना रहा हूँ। समुद्रने जी-पुरुवेकि दक्तम, प्रध्यम तका अध्यम— तीन प्रकारके क्षाता करतको है।

मृपास्य रुक्षण देवनेवालेको वाहिक ■ वा सुन मृह्ति मध्याहक पूर्व पुरुषके रुक्षणेको देवो । मध्यासस्य । स्ववागति, समूर्व अस्, दांत, केस, नक, राही-पुरुष्ध रुक्षण देवना वाहिये । पहले आयुक्ते परीक्षा काके ही रुक्षण बलाने वाहिये । आयुक्तम हो तो सभी रुक्षण व्यर्थ है । अस्मी अहुरिख्योंसे को पुरुष एक सी व्यर्थ कामे बार हाथ करहे अहुरिख्योंसे को पुरुष एक सी व्यर्थ कामे बार हाथ करहे अहुरुष्का होता है । च अहुरुष्का होतेवर असम बाहर जाता है—

हिम्मर । अब मैं पुरुषके अमुनिय ल्याण कहता हूँ। विसका पैर कोपल, मांसल, रक्तवर्ण, किन्ध, ऊँका, प्रशिक्षेत एकत और नाड़ियोंसे क्यार न हो अर्कात् नाड़ियाँ दिस्तवी नहीं पड़ती ही तो इस पुरुष राजा होता है। विसक्ते पैक्के तल्केमें अंकुराका चिक्न हो, वह सदा मुखी रहता है। क्युक्के समान

लंबाकि प्रमाणका यही एकान आवार्य समुद्रने कहा है।

हुई अङ्गरिक्नेकास, सुन्दर चर्कि — एड्रीसे युक्त, निगृद टक्नेकरंग, सक वर्ग कनेकरा, प्रसंदरान्य, सार्क्निक बच्चेंसे असंकृत क्ल्प्याल पुरूष एक होता है : सूर्पके समान क्या, सफेद क्योंसे कुल, टेक्नै-कवी नाकियोंसे व्याप्त, विरल अवस्थिते कुछ चरणवाले पुरूष दरित और दुःसी होते हैं। विसम्बद्ध करून आएमें प्रकारी गयी मिट्टीके समान वर्षका होता है, 📖 🚃 कानेबाल, पीले पाणवाल अगस्य-गमन कानेकारम, कुरमावर्गक धरणवास्त्र महावान करनेवारम तथा केवलकि कामकला अधक्य पदार्थ भाग करनेवाला होता 🕯। 🎟 पुरुष्के पैरोंके मैगुठे मोटे होते हैं वे भाग्तहीन होते 🕯 । विकृत मेगुठेकले सदा पैदल बलनेकले और दृश्वी होते 👣 क्रिक्ट, विकुल तथा हुटे हुए अंगुरेकाले अतिहास निनित 📰 🖥 🚥 टेड्, क्रेंटे और फरे 🚃 अँगृहेवार्ल 🚃 भोगते है। व्यक्त पुरुषके 📟 तर्जने अगुरते अगुरते बढ़ी हो क्सको औ-सूक कार होता है। शरीशुद्ध अंगुलाँकै बड़ी होनेपर स्वर्णको ऋषि होसी है। चपटी, बिरल, सूची अंगुरने होनेपर कुरू 🚃 हेन्स है और 📖 दुःस भोगता है। हक्ष और केत हन्त्र क्षेत्रेपर दःस्त्रपरे 🔤 📰 है। सराम नक होतेपर कुल औरूपहेत और कामनीपरहित होता है। रोमसे पुरा जंगा 🚃 🚃 हैना है। जंधे छोटे होनेपर ऐसर्प जान होना है. जिल्लु अञ्चलने रहता है। जुनके समान जेव्ह होनेपर राजा केल 🕏 । संबंध, मोटी तथा मांसरन अधानात्त्र पृष्टर्य माप्त करता है। सिंह तथा अधके संध्यम जंपायास्त्र धनवान् होता है। विसके भूटने पांसरवित होते हैं, वह विदेशमें मरता है, विकट कन् केनेक्य दरिष्ठ होता है। बीचे बुटने होनेक्य सी-जित होता है 🔤 बांसक बादु होनेपर राजा होता है। इंस, बाल पक्षी, पुरू, क्ष. सिंह, ग्राची तथा अन्य श्रेष्ठ पञ्च-पश्चियोके **माना** अधि क्रेनेपर व्यक्ति 🚃 🚃 भाष्यवान् होता है। थे उक्कार्य समुद्रके क्यान है, इनमें संदेह नहीं है। 🚃 प्रवक्त रक्त कमलके समान होता है वह धनवान्।

होता है। पुरु त्यस और पुरु करता संघरवात्म मनुष्य

अचन और चपनर्मको करनेवाला होता है । जिस पुरुका रक्त

मुँकेके सम्बन्ध रक्त और जिल्हा होता है, वह सात द्वीपीका राजा

होता है। मूग अवस्य मोरके सन्तन पेट होनेका इतम पूजा होता है। 📖 मेरक और सिंहके सन्धन केट होनेपर कथा होता है : मांससे पुर, सोचा और गोल पश्चीवास्त्र व्यक्ति करा होता है। 🚟 समान फैठकहरू आफि सेनाकी होता है। शिक्तके समान संभी पीठवाला व्यक्ति बन्धनने ....... है। कपूर्वके समान पेडवाला पुरम बनवान् तथा सीपान्य-समान होता है। चौड़ा, मांससे पुरू और केनवुट वक्ष:स्थलकान पुरुष सतायु, धनकान् और उत्तन भोग्वेच्ये 🚌 करता 🕏 । स्तां, कवां, विरत्न शक्तां अंतुरिक्तांकरम पूरण कार्यान और सदा द:भी खता है।

जिसके रायमें मरकरेका होती है, उसका कार्य किन्द होता 🖁 और 📖 चनकन् तथा पुत्रकान् होता 🛊 । 🚟 🗷 हाथने तुला अथवा वेदीका विदः 🔣 है, का पुरुष न्यायाओं 📖 करता 🛊 । विश्वाम श्राचने सोमल्याच्या चिद्ध होता 🐛 🐗 📖 📖 हैं और यह बरता है। निस्तेष शक्ती पर्वत और कुक्स विक होता है, स्थान सहस्र साथ हाला है और 🚌 🖼 रेजकोका साम्ये होता है। जिसके हाधमें कही, काफ, ओका, सहर और वंशुरुवा 🔛 होता 🗓 व्या युद्धने 📟 होता है। 🔤 सबसे भाग और प्रक्रम्थ 📰 🛅 है, 🖘 जहानमें न्यापार करता 🖩 और धनकन् होता है। जिसके संध्ये श्रीवास, कवल, कह, रच और करवाव्य विक्र 🚃 है, यह अपूर्णित एका होता है। वाहिने हाक्के क्रिपुटेने क्वास 🔙 रहनेपर पुरुष सभी विद्याश्लेखा प्राप्त तथा समाप्त होता है। 🔤 पुरुषके हाथमें कनिहाके जैसेके तर्जनीय क्षण्यक रेका भरी जाती 🖣 और बीचमें अरंग नहीं राजी 🕏 तो का पुरुष सी क्वोंतक जीवित रहता है। विस्तव पेट सीवेड समान रंगा होता है यह दरिड़ी और अधिक च्हेनन करनेकरण होता है। विस्तीर्ण, फैली हुई, गम्बीर और मोल जन्मिकारण व्यक्ति सुरः भोगनेवाला और का-चान्यसे सन्तव होता है। 💵 और छोटी नाभवारम व्यक्ति विविध ब्रेड्सेंब्रे भोगनेकारम ब्रेडा है। वरिको नीचे नाभि हो और वह दिवस हो को चनको हानि होती है। दक्षिणावर्त नाभि बढिद्र प्रथम करती है और कमावर्त नापि शान्ति प्रदान करती है। स्ट्रै दलेखले कनलकी कर्णिकाके समान नापिकाला पुरुष साम होता है। पेटमे एक बांट होनेपर शस्त्रमे मारा जाता है, दो बांट होनेपर सी-जोनी

होता है, तीन बॉल होनेपर कता अवना अवनर्य होता है। चार 🔤 होनेक अनेक 🚃 होते 🛊 📟 📟 होनेक 🚃 ਰਾਚੇਸ਼ 📖 🟗

किरके रक्ष्य कठोर एवं मंद्रस्य तथा समान हों वे छना होते हैं और सुक्षे रहते हैं। जिसका वक्तःस्वरू बदबर, बमत, मांसर और विकास होता है वह समाके समान होता है। इसके मिनारी कहें हेमवाले तथा को दिवादी वहनेवाले वक्ष:अस्ल प्रक: निर्वजीके के होते हैं। दोनों बक्त:स्वरत समान होनेक पुरुष परस्का ூ 🕏 है, पुष्ट होनेपर शुरुषीर होना है, होरे 📰 बन्दीन स्था कोटा-बद्धा होनेपर अधिरवन होता 🛊 और क्रमाने पाठ करा है। विकार इनुसारत धनहीन तथा उसत क्ट्र(दुर्ज़) अस्य भेली क्षेत्र है। विपरी मीनामारम भगाँन 📰 है। महिनके समान 📰 प्राचीर होता है। मुगके सामा 📰 📰 ដ 🛊 । सामा 📰 एवा 🗺 है। केव, रूर, 🕮 🍱 बगुरेके 🕬 📧 📺 जेक्कल पर्यान क्षेत्र है। 🎹 प्रेयवाल धरवार् और सुन्नी क्रेशा है। पूर, दुर्गन्करहित, सम एवं बोढ़े 🔤 कुछ व्यापनार 📆 होते हैं, जनवनी भूताई क्रमरको जिला 🌃 है, यह बन्धरूपे पहला है । होदी धूना रहनेपर राज होता है, क्रेंडी-कड़ी 🚃 होनेवर चोर होख है, 🔤 🚃 होनेवर सभी गुलेसे युक्त होता है और जानुश्रीतक लंबी भूजा होनेपर कन क्षेत्र है। निसके इथना तल पहर होता है उसे पिताना धन नहीं 🖦 होता, बढ़ करबेक होता 🖥 । डेब्बे करतरन्त्रास्त्र पूर्व दाहे, विका राजके समान राजनर्जकरण काताल होनेपर राजा होता है। 🔤 करक्षसमस्य पूरुव 📰 वाद्याच्याचा करनेवास्त्र, वाद्या और नीता करतररकारम महादि प्रक्तीका पान करनेकारम होता है। रूको करतररमारम पुरुष निर्धन होता है । जिनके हाथकी रेकाएँ और सिन्ध होटी हैं वे मनवान होते हैं। इसके विपरीत रेक्क्कले दर्फ क्षेत्रे हैं। जिनकी अँगुरिनमाँ विरल होती हैं, उनके चार धन नहीं उकरता और गढ़री तथा किरहीन अँगुली क्रानेपर 🚃 संचनी सहवा है। **ा पुरः होते—स्ट**क्किय ! सन्त्रमण्डलके

समान मुख्याला व्यक्ति प्रमोत्मा होता 🛭 और जिसका मुख

सुँकको व्यक्तिका होता है वह पापदीन होता है। देहा, 🚃

कुरा, विकृत और सिंहके समान मुक्काला की होता है।
मुन्दर और कानिस्तृत होत हायोंके सन्तन गए हुआ समूर्ण
मुस्ताला काला एवा होता है। काल अथवा बंदके सन्तन
मुस्ताला करतेत धनी होता है। किसका पुता बड़ा होता है
उसका दुर्माण रहता है। सोटा मुक्काला कृत्वा, होता है
उसका दुर्माण रहता है। सोटा मुक्काला कृत्वा, होता है
मुस्ताला मनतिन और वापी होता है। चौत्रीटा मुक्काला पूर्व,
वीके मुक्के सन्तन मुक्काला और वहीं मुक्काला पूर्व,
विके मुक्के सन्तन मुक्काला और वहीं मुक्काला पूर्व,
विके मुक्के सन्तन मुक्काला और वहीं मुक्काला पूर्व,
विके सुक्के सन्तन मुक्काला काला निक्र कर हो अला है।
विक्राण कार्याल पूर्व मुक्का होता है। सिंह, वाच विके हाथोंके समान कमोल्याला काला विकास चौन्न सन्दर्शतयोग्नाला और सेनाका कार्यालयोग्नाला होता है। तह सन्तन होता है। सिंहला चौन्नका ओठ सार्वाणका होता है, यह सन्ता होता है। किसका चौन्नका ओठ सार्वाणका होता है, यह सन्ता होता है और कमालके सार्वाण संवाणका होता है।

जिसके 🚃 गोसरहित हो का संज्ञानी का बाह्य है। विषया कार होनेपर रोगी, क्रांटा होनेपर कुपण, प्राकुके सम्बन कान होनेपर सका, कड़ियोंने कवा होनेपर कुर, केड्रोसे पुस्त होनेपर दीर्पतीयी, बढ़ा, एड तथा रंग्य कान होनेपा चीर्यः तथा देवता और बाह्यजब्दी पूजा करनेकाला एवं राजा होता है : जिसकी नाम एककी चोंकने काम 🖥 📺 📺 भोगनेकार और भूका 🚃 📰 होता है। 📖 नक्कारक एका, रूंबी नाककारत भीगी, होटी नाककारक वर्वाझेर, हाथी, योदा, सिंह या सूर्वको चलि ग्रीको अव्यक्षक स्थायनके 🚃 होता है। कृष्य-पुराबदे कालीके 🚃 उरस्यान दाँकवास्त्र समा तथा हार्थाके समान दांकवास्त्र एवं विश्वने दतिकाला गुणवान् होता है। माल् और बंदरके मानन दतिकाले नित्य मुखसे व्याकल रहते हैं। कराल, करते, अलए-अलव और पुद्धे हुए दरिवाले दःससे 🚃 कर्मात कानेवाले 🚵 है। बतीस दाँतवाले एजा, एकर्नोस दांतवाले भोगी, तीस वीतवारी सुख-दु:स भोगनेकारी तथा उससेन दर्शकारी कुन दुःस हो मोगते हैं। कालो य चित्रवर्णको जीम होनेपर व्यक्ति दासवृतिमे जीवन व्यतीय 🚃 है। रूखी और 💹 बीभवाटा होथी. रेतवर्णकी जीभवाटा पदा आवरणसे सम्पन्न होता है। निम्न, सिन्ध, अजधान स्तत्वर्ण और होटी संभ 📰 पुरु अंग ३ —

विद्वानस्य विद्वान् होता है। कमलके पतेके समान पतली, लंगो व बहुत पोटी और न बहुत पौदी विद्वा रहनेपर राजा होता है। कर्ल रेक्का वालुकास्त्र अपने कुरुका नाशक, पीले वालुकास्य सुक्व-दुःसा क्षेण कानेकास्त्र, सिंह और हार्थके वालुके समान क्षा कमलके समान तालुकास्य राजा होता है, क्षेत्र वालुकास्त्र मनकान् होता है। रूका, ब्या हुआ ब्या विद्या वालुकास्त्र मनका अस्त्रा नहीं माना जाता।

आरक्षकं पूर्व बन्ध माने शर्व है। इंडिफोर समान सरकारें क्या, महान् करी तथा विशिष सुबोध्य भोग करनेवाले होते है। बारवायके समान जिल्हा कर होता है ऐसे कार्तर धना सभा 🚃 🗰 होते हैं। 📑 एवं चुंदुनिके 🚃 क्यांकार पूर्व तक होते हैं। करो, उसे, हर, प्रमुखेंक सम्बद्ध समा वर्षरकृतः स्वरकाले पुरुष दःस्वपानी होते हैं । बील-कन्छ क्योंक समान करवाने भागवान् होते हैं। पूरे विकास सम्बन तथा इंट-कुट 🚃 अधन करे पर्य है। द्वारिको प्रवर्ष अवत नेक्कल एक, व्यक्ति समान 🔙 🖳 इतन समान नेजनात्म पुरुष अधम होता है। क्यून एवं क्यूनके समान 📖 वध्या माने जाते हैं। प्रकृतके <sub>स्थाल</sub> विकृत्य वर्णके नेत्रवालको एउको कानी भी ल्याम कर्षे करती । गेरीकर, मृजा और हरत्वरूके समाप विक्रान्य नेप्रकारक मारामान् अपैर यनेश्वर होता है। अर्थमानुके सम्बन सरस्य क्षेत्रेयर राजा क्षेत्र है। बहा सरस्य होनेपर इनकान होता है। 🚾 रुत्ताट होनेपर धर्मारक होता है। लस्पदके बीच जिस की तथा पुरुषके पणि आदी रेका होती है वह भी वर्षोगक जीवित रहता है और ऐश्वर्ष भी प्राप्त करता है। बार रेका होनेपर अस्ती वर्ग,तीन रेस्क होनेपर इस्तर वर्ष, दे रेसा होनेकर साठ कर्ष, एक रेसा होनेवर बास्प्रेस वर्ष और एक भी रेका न होनेकर प्रचीम काला आक्वारत होता है। इन रेकाओंके द्वार होन, यध्यम और पूर्व आयुक्ती पहेला करनी चाहिये । होती रेखा होनेपर व्यक्तियुक्त तथा अल्पायु और लंबी-लंबी रेसाएँ होनेपर दीर्बायु होता है। जिसके ललाटमें

विञ्चल अथवा पश्चिमका चित्र होता है, वह बदा प्रतापी,

सम्बद्ध एका होता है। क्षत्रके समान सिर होनेपर एका.

रंखा सिर होनेपर दु:की, दरिड, विषय होनेपर समान ग्रमा गोल सिर होनेपर सुखी, इत्योंके समान सिर होनेपर राजके समान होता है। जिनके केश अध्या शेष मोटे, करते, धनित और आगेमे पटे हुए होते हैं, वे अनेक प्रकारक दु:स चेनके

तमा है। महुन गहरे और कठार केटा दुःकदापी होते हैं। विरल, इसके जिल्हा, कोकट, प्रवर अवना अंगलके समान अतिहास कृष्ण स्थित केटलाला पृश्य अनेक क्वारके सुकारा भीग करता है और नेको रूमा होता है। (अच्चाय २४—२६)

क्रेंग्या 📖 होता है। और 📖 हेनेया सुकी, 🔤

# राजपुश्चीके राक्षण

कार्तिकेताओं के कहा-व्याप्तः । अस्य सम्बद्धाः इतिके अपूर्विक सम्बद्धांको वस्त्रोको कृपा को ।

सहायों बोले—ये म्लूब्बेमें एकओंके अब्रॉके क्यांने को संकेरमें बताब है। यह ये स्वाप व्यवस्थ पुरसेसे ■ प्रकट हो से में भी राजके समान होते हैं, ■ अब स्ने—

🔤 पुरुषके नामि, सर और शरीपरधान—ये 📟 गर्भीर हो, शुक्त, लकाट और क्यात्मक—ये 🌆 📰 हो, बचारयल, कस, मारेनक, नक, मृत्रा और कुम्बदिका---ये 🚌 🚃 शर्मात् क्रेवे हो, स्टब्स, 🥅 🚃 🚟 बंदा—ये लार हरू हो, नेजेंक जल,हरू, केंद्र, ताल, 🚟, विकास सभा नवा—ये जात एक वर्गके हो, हम्, नेत, पृथ्व, भाषिका सवा दोनी कार्नाका अन्तर---चे 📰 📆 हो सक दल, केदा, अनुस्थिके वर्ष, बाब क्या क्या -- वे पॉक सुरूप हों, यह सप्तद्वीपक्ती पृथ्वीका ग्रमा होता है। 📖 नैह कम्लद्रलके समान और अन्तमे रतन्त्रके होते हैं, यह लक्ष्मीका स्वामी होता है। शक्यके समान विहास नेप्रकारत पुरुष महारथा होना है। सूची औरत्यास्त्र इत्योक, योख और वक्रके समान यूननेवाली ऑक्सबला चेर, वेकदेके मन्त्रक आधिरवारम 📰 होता है। नीए कमरुके समान नेत्र होनेपर विकान, इयामकर्गके नेत्र श्रीनेयर सीमान्यदशकी, विद्याल नेत होनेपर भाष्यवान, स्वूल नेत्र होनेपर एकपन्ती और दीन नेत्र

होनेका अल्बापु और विकास करूत लंबी होनेपर दरिद्र और दोनों कोंग्रेंके जिले हुए होनेकर घनहीन होता है। सब्दर्भागी केंग्रेंके अंत सुर्ध्य चीडकाले परदाराधिगामी होते हैं। बालकाकानको समान भीई होनेकर बात हैता है। उत्ता और लकाट होनेका उत्तर हुए होता है, बाती है को है केंग्रा कर्वकाल और घनसे पुल होता है, बाती हैका कर्वका सेनेकर आवार्य है। जिला, हास्क्यूक और अव्यक्ष्य पुल स्वासेकालय होते कर्व बेहनेकाला केंद्र नहीं है। अवय पुल्ला हान्य क्रम्यकाहित कीर-वीर होता है। अध्यम होता प्रकास हान्य क्रम्यकाहित कीर-वीर होता है। अध्यम होता प्रकास हान्य क्रम्यकाहित कीर-वीर होता है। अध्यम

अस्त प्रकार पुरुषेके शुभ और असून लक्षणोकी मैंन अवन्ते कहा । अस्त निविके लक्षण वनस्तात है।

व्यक्ति रचनी व्यक्त विषया विश्वास्त्र भारत-शिताको व्यक्ति-व्यक्त क्रोता है। अञ्चली आकृतिक सम्बन्ध सिरधारण सदा

कार्रे-न-कार्वे 🚃 करता रहता है। निम्न सिरवारी अनेका

(अध्याम २५)

# तिवयोके शुष्पाञ्चण-तक्षण

ज्ञाहाकी श्रीहे—क्षांतिकय ! क्रिकेंक जो स्वतंत्र 📑 :

पहले नारदणीको बतस्यये 📕, उन्हीं खुपाश्चम-त्यक्रणीको बताता हूं। उत्तप क्षात्रका होकर सुनै — शुप मृहुर्कने कन्कके हाथ, पैर. अंगुली, नला हायको रेखा, जंबर, कटि, नावि, उन्ह, पेर, पीठ, भुजा, कान, 🔤, ओठ, दौत, क्रमोल, गला, नेष्ठ, नासिका, ललाट, सिर, केन्न, 📖, वर्ग और वीरी—इन समके राजन देशे।

अनुबंधिके करनेवारम खेता है।

विस्तवने स्रोकार्ट रेखा हो और नेत्रीका प्राप्तभाग कुछ त्वाल हो, वह Ⅲ दिस घरमें जाती है, उस घरको प्रतिदिन वृद्धि Ⅲ है। विस्तके त्वलाटमें विश्वलवन विद्धा खेता है, वह वर्द हवार टासिप्तेको ⅢⅢ होती है। जिस खोको राजहंसके समान वृद्धि, मृतको समान विद्या सुगके समान Ⅲ स्रीरका वर्ण,

दति थराभर और छेत होते हैं, वह उत्तम की होती है । मेडकके समान कृशिवालो एक ही पुत्र उत्का 📟 🛮 और 🚌 पुत्र राजा होता है। इंसके समान मृद्द बचन बोतनेवाली, इक्टरके समान पशुरू वर्णवाली की धन-धन्यमे सम्बद्ध होती है, उसे आठ पुत्र होते हैं। जिस ब्रोके संबे करन, सुन्दर नक और चीह घनुषके सम्बन टेवी होती है, यह अनिराध सुसका भीग करती है । तन्त्री, स्थानवर्णा, मध्र भाविती, इक्कां समान अधिकाय स्वक दतिकारी, फिल्म अमुरेसे समन्त्रित को अनिकाय ऐसर्वको प्राप्त करती है। विस्तीर्ण जंग्यश्रीकालो, ब्राह्म सम्बन मध्यभागवाली, विद्वार 🛗 से ठने होते है। जिस बीके वाध सतना, प्रापमें, कानके 📖 🖪 क्लेपर विस न्तरक पक्ष होता है, उस कीको प्रचन पुर अपक 🕬 🛊 । जिस जीका पैर रक्तवर्ण हो, हेवूने बहुत ऊँके न हो, होटी सुद्री हो, परस्म मिस्रो हुई शुन्दर आगुरिज्यों हो, 🚃 🖫 हों—ऐसी 🖩 अस्यन्त सूच्य फोग करती है। 🕬 🗓 फैर बढ़े-बढ़े हो, सभी अल्लेने रोम हो, होटे और बेटे हाथ हो, बह दासी होती है। जिस क्षेक्र के उत्पन्न हो, जून विकृत हो, उपरके औठके अपर रोग है। यह सीम अपने प्रतिको मार रेसी है। जो स्वी पश्चित्र, परिवास, देवरत, गुरु और स्वकृत्येकी चरत होती है, 📺 मानुबी कहताती है। निस्य 🚃 कानेवाली, सुगाभित हम्य लगानेवाली, भक्त वचन बोलनेकारी, बोह्य भानेवाली, कम सोनेवाली और सद्य प्रवेश रहनेवाली सी

देवता होती है। मुझकपरी चाप करनेवाली, अपने पापको क्रियमेक्टबं, अपने स्टबके अधिप्रायको 💹 आगे 🚃 न करनेकाली 📰 प्यार्थरी-संज्ञक होती है। कथी हैंसनेवाली, 🚃 🚃 कानेकसी, कभी क्रोच करनेकाडी, कभी प्रसन्न रहनेकारचे 🚥 प्रत्येके मध्य रहनेवासी जी गर्दधी-श्रेणीकी होती है । पाँत और बान्सवीके द्वारा बले गये हितकारी बचनको न मानविकारचे, अवनी इच्छाके अनुसार विद्यार धारनेवासी की आयुर्वे कही जाती है। यहत सानेवासी, बहुत बोस्टनेवासी, कोर्ट = केलनेकाली, प्रतिको मारनेकाली स्वी राधसी-मंत्रक 🚃 🛊 । 🔤, अन्यार और एन्यमे सील, सदा महिल ······ अधिकाय प्रयंका को विकासी कहरूको है। अविक्रम सक्रम सम्पन्नास्त्री, ब्राह्म नेत्रीबाली, इचा-हधा, देक्क्कर्य, 🎹 📖 बान्धे-सङ्घ्य होती है। चन्द्रपूर्वी, नदमत 🚟 समान भलनेवाशी, रत्तवनिक नवीवाली, राध सक्षणंको प्रक दाय-वैरवान्त्रे 🚮 विवासरी-शेमीको 👯 है । केल, पुरञ्ज, कंकी अगाँद बारोके अस्टोको सुनने तथा पुन्ही 🔤 🚃 स्विधान प्रथमिन अधिकाचि रक्षानेवाको 📑 mandi-defent till til सुमन्तु मुनिने कहा-एजन् । बहुनजी इस प्रकार सी

(अध्याप २८)

(अध्याप २९-३०)

### विनायक-पूजका 🚃

भना**गीकने कहा—**मुने ! अब अन्य मुक्ते चनवान् गणेक**की आराधनके विका**ष्ट्री जनलाने ।

सुयन्तु मृति बोले—एकम् । परावान् गणेतस्य कार्यपानमें किसी तिथि, नक्षत्र या उपजासर्वद्रको अवेका महीं होती । जिस्र क्या थी दिन अद्धा-प्रक्रिपृष्ठंक भगवान् गणेतस्य पूजा की जाय तो कह अध्येष्ट फलोको देनेकाली होती है । कामना-पेदसे अलग-अलग कल्कोसे गणवतिको मूर्ति बनाकर उसकी पूजा क्या भनोवाज्ञित फलकी क्या होती है । 'पहाकणांच<sup>®</sup> स्विक्टे, कहानुष्यास्य कीसहि, सामे दनित: असोद्यान्।'—क्या गणेत्र-मान्द्रश्चे है । इसका जप व्यक्तिये ।

क्षेत्रको प्रके स्थे ।

तुम प्रथमि प्रमुक्ति उपमान कर वो भगवान् भगेतका पृत्रन बनला है, स्थिति सभी कार्य सिद्ध हो आते हैं। और सभी अनिष्ट दूर हो जाते हैं। औपरोक्ताओं अनुकूल सेनेचे सभी जमन अनुकूल हो जाता है। जिसपर एकदस भगकन् गव्यक्ति संतुष्ट होते हैं, उसपर देवता, वितर, मनुका उसदि सभी प्रथम रहते हैं। इसस्थिते सभूमें विश्लेको निकृत करनेके सिन्ये श्रद्धा-भक्तिपूर्वक गणेशकीकी स्थानाम करनी साहिये।

और प्रचेतिः - सामिक्यनिकेयको अस्तरकार अपने

१-परम्परामे अमेरिक गणेता सामुख्ये 'एक्ट्र-क्र्य' क्रह है।

२-एक्टने जन्मध्ये कोडी नृष्टिकाने। विवृद्धिकानुष्यकाः कर्षे तृष्यीन चालः ( **अवस्थ**ि ६० । ८)

## चतुर्थी-करूपमें किया, शान्ता तथा सुरश—तीन प्रकारकी चतुर्थीका फल और उनका इत-विधान

सुमन्तु मुनिने कहा — एजन् ! यतुर्थी तिथि छन प्रकारकी होती है — दिखा, इक्का और सुन्य । उन्य में इनका स्थान कहता है उसे सुनें —

पाद्रपद मासको सुद्धा क्युथीका नाथ दिला है, इस दिन जो कान, दान, उपवास, जय अस्टि सत्कर्म किया जाना है, यह गणपतिके प्रसादसे सौ गुना हो जाना है। इस चतुर्वीको गृह, लगण और पुराका दान करना कारिये, यह सुम्बद्ध काना गया है और गृहके अपूर्वे (मालपुआ) से माहागोदिन पोजन कराना चाहिये सभा उनको पूजा करा। माहिये। इस दिन जो सो अपने साल और समुद्रको गृहके पूछ तथा स्थापित पूछ किरखरी है यह गणपतिके अनुप्रस्ते सीमान्यको होती है। परिचरी साला करनेवाली साला किरोक्सपंत्र इस च्यापीका करा करे और गणेवाजीको पूजा करे। नकन्? यह व्यापीका

माप मामकी सुक्त चनुर्वाकी जानतां करते है। यह जानक तिथि नित्य शासि प्रदान करनेक वश्रम 'शास्त्र' विश्व गयी है। इस दिन किसे हुए जान-राजांद किसी गयेश केशे क्या पूजा परन्याकर ही जाने है। इस शास्त्र नक्य करक चनुर्वी निविधको अपवास कर शंभेशनीकर पूजन तथा हकन करे और लखने, गृह, शास्त्र क्या गृहके पूर कार्योकर दानमें दे। विशेषकरपरी किसी अपने समूर आदि पूजा करोकर पूजन करे एवं उन्हें पीजन कराये। इस अपनेक करनेक अपना सीधारपती जात होती है, समका किस दूर होते हैं और गुणेश्वर्यकर कुमा क्रम होती है।

किसी भी भागिक भीमकारपुक कुल चनुनीको 'लुक्क' कहते हैं। यह वह किमोको सीभाम्य, उनम रूप और सुन्न देनेवारत है। भगवान् इसून एवं माला चनंतीके संयुक्त देनेवार है। भगवान् इसून एवं माला चनंतीके संयुक्त देनके मृश्विद्य रक्तवर्णके मङ्गुरूकी दर्शति हुई । मृश्विद्या युव होनेके वह भीम कहलाना और कुल, रक्त, और, अङ्गुक्त आदि नामीसे प्रसिद्ध हुआ। वह शरीरके अनुनेको रक्ष करनेवारण तथा सीम्याय आदि देनेवारण है, इस्मेलिये अञ्चलक कहलावा। जो पुरुष अध्यवा सी चीमवारपुक्त शुक्र चतुर्णीको उपवास स्थान

रक चन्दर, रक पुष्प आदिसे औपका पूजन करते हैं, उन्हें सीवान्य और उत्तम रूप-सम्बद्धिको प्रदी। होती है।

त्रवय संकल्पकर सान करे. अननार गणेश-स्मरणपूर्वक सम्बन्धे सुद्ध मृतिकर लेकर इस मनको पढ़े—

प्रदा विकास पूर्व कृष्योकोञ्चारम किस । मामान्त्रे वह प्रत्योगं यन्त्रया पूर्वपंतिमध् ॥ (स्थापनं ३१ । २४)

इसके 💷 भूतिकको पहाजलते व्यक्तकर सूर्यके स्वयने करे, स्टब्पर अपने सिर आदि अङ्गोमे लगाये और पिर बलके 📖 सहा बोकर इस मन्त्रको पढ़कर नमस्कार और 🗝

स्वकारो चोतिः **व्याः हैक्श्वन्यहीकसम्**। कोक्क्क्योदिसम् व्याः स्वतः स्व

अन्यक्त सकी विद्या, महित्यों, सरीवारे, अस्ती और विद्यालया विद्यालया प्रकार भावना करता हुआ

कामका कान करे, फिर परिव होकर घरमें आकर दूर्वा,
 काम, इस्से शचा गीका स्पर्ध करे। इनके स्पर्ध करनेके मन्त्र

इस प्रकार है— दूर्ण स्वर्ग करनेका क्या सं दूर्वेऽमृत्यापासि स्वरिकेश व्यक्तिः = व्यक्ति सः सरस्ये दुरितं ==== कृतम् (

ामहापूर्व ३२ : ३१ - ३२ ) इस्मी स्वर्ग कारनेकर हाता परिवारको परिचा स्वे काश्यवी अभिन्न शृती । इस्मी श्रमक के कार भूग वैश्वित कारकश्य ।। (अक्टर्क १५ : ३३)

वीयस-मुक्ष त्यर्थं करनेका पत्र नेकस्पचारितं दृश्यं कुश्यां सुविधिशानम्। कक्षानं स समुद्रोधमकासः ≣ श्रमसः थे।। (स्थापनं ११ (१४)

वीको त्यसं करनेका मधः सर्वदिकाणी देखि पुन्तिमस्तु सुदूरिका। भरकात् स्पृतसीय करे 🛗 विद्या 🚥 मदः॥ (स्मृतसीय देश १३६)

धरापूर्वक पहले पौकी प्रदक्षिण कर उपर्वक कन्नको पदे और गीव्य स्पर्ध करे। जो गीवन प्रदक्षिण करता है, उसे सम्पूर्ण पृथ्वीको प्रदक्षिणाका करा 📖 क्षेत्र है।

इस प्रकार इनको स्पर्धकर, हाय-के खेळा, अक्रान्यर वैठकर आश्रमन बरे । अनन्तर सरिद (सेर) को समिपाओस अपि प्रज्यस्तित कर, पृत, दृष्य, यथ, तिल तथा विविध ४६० पदार्थीसे मन्त्र पढ़ते हुए इक्त को । आहुनि इन शनोले दे—४५ सर्वाप 🚃 🕉 सर्वापुरूष 🚃 🛍 शोज्युत्सकृषयाम हान्यः, अत्र कृत्याच स्वाहः, लरिकाकृत्य साहा तथा ३० खेडीसाकृत्य स्थाप । इन प्रत्येक मकोसे १०८ या अपनी प्रतिकं अनुसार आहर्ति है। अन्यत सुवर्ण, चाँदी, कन्दन या देवदावके काहकी बहुनाओं वृति साम तमि अथवा भोटीक पात्रमें उसे व्यवस्था करे । यो, कुंकुम, रक्तकन्द्रन, रक्त पूच, वैकेश आहिये उनकी पूजा करे अभवा अवनी प्रतिने अनुसार पुत्र करे। अभवा शब्द मृतिका या बॉमसे 🔣 पात्रमें कुंक्स, केसर 🚟 📖 अद्वितका पूरा को । 'अदिर्मुख-<sup>1</sup>' (स्वर्ट) वैदिक क्लोहे

राजी उपचारीको समर्पित कर यह मूर्ति साध्याको है है और क्याइनिक भी, दूध, जावल, गेहैं, गुरू आदि वस्तु भी कक्रमकं दे । धन कर्मकर कुरम्मता नहीं करनी चाहिये, क्वॉकि केन्द्रकी करनेसे फल नहीं का हेला।

इस प्रवार कर कर भौनवृक्त चतुर्वीका प्रतकर श्रद्धा-पूर्वक दस अवना पाँच तोले सोनंकी प्रमुख और भगपाजा मूर्ति मनकाये। उसे मोस पर वा दस परुके सोने, चाँदी अन्यवः तता आदिकं पात्रमे श्रीतस्त्रवेक त्यापित करे । सभी उपवर्तने पुत्र करेन्द्र बाद द्वीक्षणके साथ सरगढ सहापकी उसे 💐 इससे इस स्टब्स सन्दर्भ फल प्रस् होता है। एउन्। इस प्रकट इस उदय लिथको 🕅 कहा । इस दिन जो बह करता है, इस पन्डपर्क ममान करितनान, सुर्वक समान ठेवाली एकं अध्यक्षम् तथा बायुक्तं समान बलवान् होता है और अन्तर्भ महागणवर्षकं अनुबद्धमे चीधरवेकमे निकास करता है। 📠 वेर्वकंत व्यक्तव्यको को व्यक्ति भौत्तव्यक पढता-सनता है, कर व्यवसनकारिये क्<sub>लि होकर क्षेत्र सम्पर्तिको प्राप्त</sub> करण है। (अध्यक्ष १९)

सुमन् पुनि बोले — राजर् ! अध वै पहले -कान्यक वर्णन करता है। पञ्चमी तिथि न्हणीको अन्यक 🔤 है और राहे आनन्द देनेपाली है। इस दिन नापलेकने विदेश उत्सव होता है। पहानी विभिन्नी जी व्यक्ति नरमेको दुपको सान करता 🖟 उसके कुलमें वास्त्रीक, तथक, कारिया, प्रांपपट, ऐरायत, भूतराष्ट्र, कार्योटक तथा धनक्रय---ये सभी बडे-बडे नाग अभय दान देते हैं — इसके कुलचे सर्पका 📖 नहीं 🚃 । 📺 वार माताके शापसे जागरदेश जनने तम एवं भे -इसीलिये उस दाहको व्यथनको दूर कलेके लिये प्रकृतीको पायके दुधसे नागीको आज भी छोग धान कवले हैं, इससे

राजाने पूछा—भहराज ! नागमताने नागेको क्ये इसप दिया था और फिर ने कैसे बचा गरे है इसका आप विस्तारपर्वक वर्णन करें।

सर्प-भय नहीं रहता।

**ार्ज मुनिने कहा—एक बर राक्षमें और देवलओंने** 

पञ्चमी-कल्पका आरम्भ, नागपञ्चमीकी कथा, पञ्चमी-व्रतका 📖 और फुरु

मध्यक्ष प्रथम किया । स्था समय समूहसे अतिदाय बेंग उमे: क्षण करूक 🚃 🚃 निकास, उसे देखकर च्या कहा अपनी सम्बंध (सीत) विन्तास कहा कि देखां, यह अध्य बेतवर्णका है, परंतु इसके बास काले डीस पहले हैं : क्ष्म विश्वपूर्ण 🚃 कि 🛊 🖩 यह अब सर्वश्रेत 🖟 न कारत 🛘 और न त्यरु । यह सुनकर कहुने कहा---'मेरे इस्त्रं को कि चरि मैं इस अवके बालोको कुळावर्णका दिसा है के तुम मेरी दामी हो जाओगी और चंदि नहीं दिसा सक्ते के में कुछाई दासी है। जाउँगी ( ) 🚃 यह अर्त स्वीच्यर कर स्त्रे । दोवें अनेथ 🚃 हुई अपने-अपने स्थातको 🚃 🎟 । बहुने अपने पुर नापेको मुलाकर 📖 वृतास उन्हें पूरा दिया और बहा कि 'पुत्रे ! तुम अक्रके बाहके

· सुक्त होकर उम्बे: सम्बो: स्वीरमें रिज्यद जाओ: जिससे

वर कुम्मवर्णका दिस्तको देने छगे। ताकि मैं अपनी सौत

विकारको क्रिक्टर उसे अपनी दासी बना सकुँ (' माताके इस

(mpsd \$3 ( \$3-00)

वचनको सनकर नागीने कहा—'माँ ! यह क्रफ सो इमसीग नहीं करेंगे, चाहे तुम्हाएं औत हो या हार। छलाने जीतना बहुत बड़ा अधर्म है।' एजेका यह जबन मनकर कहने क्रुट लेका कहा--- तुमलंगा मेरी आजा नहीं सतनते हो, इस्तरिकं में सुन्हें 🚃 देती हैं कि 'पान्कवेंकि बंदाने उत्पन्न राज 🚃 🖚 सर्प-सद करेंगे, तब उस बक्रमें तुम सभी अक्रिने बस जाओं में । इतना कहकर कहू भूष हो भयी । जागाम अन्यस्थ राव सुनगर भारत बावहाये और वास्त्रीको सामने लेकर बहाजीके जस पहुँचे तथा बहाजोको अपना सार क्रान्त सुनाया । इसपर बद्धान्त्रोंने कहा कि वास्टेंड ! किया का करी । 🎹 📺 मुने---वायाका-वेदावै बहुत बड़ा नवस्वी सारकार मामका आहान द्वापन होता । दुसके साथ मून अवने परस्का नामधारण बहिनका कियार कर देना और कर जो भी कहे. उसका क्वन जीकार हाता । उसे आलीक कुनका किरकार पुत्र करपत्र होगा, बार जनसेवयके सर्वयक्तको नेकेटा और तुमलोगोंकी 🚃 करेगा । 🚃 इस ककाको मुख्यन नागर्क बामुकि आदि अनिवाद प्रवस है, उसे 🚃 का

सुमन्तु मुन्ति इस काशास्त्रो सुनाका कहा — गक्न् ! यह यह तृत्वरे पिता गजा उनमेनयने विन्ता था : बार्च कर श्रीकृष्णभगवान्ते भी यृध्विहरसे कही थी कि 'सक्क् ! आश्रहे सी वर्षके बाद सर्पयह होगा, किसमें श्रहे-बांह विकास और शुरु नाग यह हो जायेंगे। करोड़ी जल अब अवैहर्ष दृश्य होने क्लोगे, तब आसीक नामक बल्लान सर्पयह रोकस्त्र जायेंग्रहे १४३ करेगा। 'बाह्याजीने पहलीके दिन वर दिया था और अस्तिक मुनिने पहलीको हो नागोको रक्षा धर्म थी, उसा प्रश्नाची विद्या नागोंग्रहे बहुत हिए हैं!।

अपने लेकमें भा गर्व :

पश्चमीके दिन नागोंकी पूजाकर यह प्रार्थना करनी चाहिये कि जो नाग पृथ्वीमें, आकाशमं, व्यर्गने, मूर्गकी किरणेमें, सरोवयेमें, तापी, कृप, बावाबा आदिये रहते हैं, के अब हमकर बावा हो, हम उनको कर-बार नमकार करते हैं। सर्वे नामाः प्रीयकां ये ये वेशीस्त् पृषिकीतारे॥ ये व हेरिस्वरीतिस्था केश्नारे दिकि संविधताः। वे न**्यु** व्याग्याचा ये सार्वातगामिनः। वे वा व्यापीतकानेषु तेषु सर्वेषु ये नयः॥

 मा नागोको विसर्जित कर ब्राह्मणीको भोजन करान बाहिये और क्यां अपने कुटुनियोंक साथ मोजन प्रमा बाहिये।
 भीत्रा भोजन बरं।

इस प्रथम नियमानुसार जो पश्चमेको नागीका पूजन करता है, बार होड़ विध्यकों कैठकर नागलोकको जाता है और करने द्वारापुरुषे कहुन करकानी, सेगसीहरू तथा प्रतापी सामा है। इसकिये की, और तथा मृग्यको हा। नागोकी पूजा कारिये।

राज्याचे पूडार—माउठात ! हातु सर्वके काउनेसे सरवेकाना कडीक किया गरिकारे बाग होता है और जिसके स्वान-विका, भाई, हा आदि सर्वके काउनेसे मो हों, उनके उद्धारके व्यक्ति कीन-सा हता, दान व्यक्ति उपवास व्यक्तिये, यह आप कार्यों ।

सुयन्तु मुनिने कहा — राजन् । सर्वके काटमेसे को माता है, यह अव्यंग्योतको प्राप्त होता है तथा निर्मित्र सर्व होता है और रिजयके पाना-रिपल आदि सर्वके काटनेसे माते हैं, वह उनकी सहितके किये आहपटके सुद्ध पश्चकी पश्चमी तिथिको उपवास कर अव्यंग्य कही गयी है। इस अवस्थ बाला मायेनेतक चतुर्यी तिथिको दिन एक बार बालिये । पृथ्वीपर नागीका वित्र अद्भित्त बात अवयंग्य करने चालिये । पृथ्वीपर नागीका वित्र अद्भित्त बात अवयंग्य व्यंग्य, क्यंग्य बालिये । पृथ्वीपर नागीका वित्र अद्भित्त बात अवयंग व्यंग, क्यंग्य बालिये । पृथ्वीपर नागीका वित्र अद्भित्त बात अवयंग व्यंग, क्यंग्य व्यंग्य, क्यंग्य व्यंग्य, क्यंग्य व्यंग्य, क्यंग्य व्यंग्य, क्यंग्य, व्यंग्य कर यो, स्थंप और स्कृत इत्यंप प्राप्त नेयेसोंसे उनको पृथ्व कर यो, स्थंप और स्कृत इत्यंप प्राप्त नाम्यानेत्रे वित्रक्षये । अनका, क्यंग्रिक, इंग्य, पद्म, क्यंग्य, क्यंग्रेटक, क्यंग्रेटक,

१-प्रमाणं 📧 भीवता सद्धाः श्रीवाच श्रीसम्बन् । सम्बद्धिः प्रमानके 📰 । टॉक्स 📰 । नागानपानन्यसम्बन्धिः 💷 वे सम्बन्धाः ॥

<sup>(</sup>बायपर्व ३२ (३२)

२-वर्तमानमें कारश्चमी करा मार्ग पहलूने का काने, नियम-कानीके अनुसार कामा युक्त पहलोकों सेसी है। यहाँ या से क्षा असुद्ध है या करनावाने कामे पाइपटमें नामकाची काली जाते होते होते।

ध्रस्पष्ट, प्रेस्सपाल, क्वलिक, तसक और पिगल--- हन बारह न्हर्गोकी बारह महीलेंगे क्रमक: पूज करे ह इस प्रकार वर्षपर्वन इस एवं प्रकार 📖 परना करनी चाहिये। यहतसे माहालंको घोषक कठना चाहिये। विद्यान् ब्राह्मणको सोनेका नाग कराका उसे देना व्यक्तिये । यह

स्वापनकी विधि है। एउन् ! आयके पिता जनमेजको भी

अपने पिता परीकितके उद्धारके किये का बात किया या और स्रोनेका बहुत पारी नाग तथा अनेक फौर्ट करवालेको हो की। ऐसा करनेपर वे पित्त-जाजने मृतः इए वे और परिधित्ने 🛍

उत्तम स्वेकको प्राप्त किया था। अस्य भी 🎹 📖 सोनेका नाय करकर उनकी पुराकर उन्हें ब्राह्मभक्ते दान करें, इससे

आप थी पित-ऋणसे मुक्त हो जायेंगे । राजन्: को कोई भी इस -क्रम्पक्रमी-करको करेगा, साँपसं हैसे जानेपर पी 🚃

क्षुपरनेकको प्राप्त होता और जो व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इस कथाको सुरोग्द, उसके कुरूमें कथी भी साँधका भय नहीं क्षेत्रः । इस प्रकृषी-शरके करनेसे बाला लेकाकी प्राप्ति होती है ।

(अञ्चल ३२)

## सर्वेक लक्षण, खलम और जाति<sup>र</sup>

राजा सतानीकने पूछा—पुरे ! सर्वेके किउने रूप है, क्या रूआण है, कितने रंग है और उनकी किनने जातियाँ है 🤇 इसका आप वर्णन करें।

सुमन् मुनिने कहा—रुवन् ! 📰 🚟 सुनेर पर्वतपर महर्षि 🚃 और गीतमका 🕷 👊 🚃 उसका मैं वर्णन भारता है। यहाँदि भारतपद किसी समय अपने आव्रयमे 📰 थे। उस समय 🔤 उपल्थित पहाँचे गौतको क्रके प्रभावकर विवयपूर्वक पुरा — महरकर! स्थिति स्थान, जाति, वर्ण और संधान किस एकारके हैं, उनका आप वर्णन करें तथा उनकी उत्पति किया करका 🌉 है यह 🛍 बताये । 🖩 विष किस प्रकार होड़ते हैं, विषके किसने बेग है, विषके कितनी नहींहर्ष्य हैं, सर्पिके दोश किशने प्रध्यर्पक 📰 है.

सर्विजीको पर्ध कम होता है और का 📟 दिनेने जसक करता है, की-पुरुष और नपुसक सर्पका क्या स्टब्स्म है, के क्यों क्यरते हैं, इन सम मारोको 📖 कृष्णकर युक्ते कक्षणे । करपपनी कोले—मुने ! अप 📖 देकर सुने 🛭

संपंकि सभी मेटोका वर्णन करता हूँ । ज्येश और उन्नवन वासमें सपौंको मद होता है । उस समय वे मैकून करते है । वर्षा ऋतुके बार महीनेतक ........ गर्भ ध्वरण करती है. कार्तिकरे दे सी चारतीस अंधे देती है और उनमेंसे कुसको सबये प्रतिदिन काने रुगरी है। प्रकृतिकी कृपासे कुछेक ओड़े इधर-उधर बुरुककर बाते हैं। सोनेक्ट्री तयर चमकनेकाले अंडोमें पूरवा.

सर्वेदक 📖 स्थान आपवाले और लंबी रेक्समेंसे मुक्त 🚟 🔃 तथा विशेषपुरुषे 🛌 रंगकले 🔤 वीच नकुरक सर्व क्षेत्रा है। उन अक्षेत्रके सर्विनी सः महीनेतक सेती है। अस्पार अंबोंके पुरुषेपर उनसे मर्प विकालते हैं और दे हीं बाला मालसे केंद्र करते है। अंदेके बाल निकलनेके कार पहला विकास कुल्लाकर्य हो जाता है । सर्पेश्वी आयु एक सी बीस वर्षको होती है और इनकी मृत्यु आठ अकारके होती है---मेरले, अनुव्यते, शबोर वश्रीते, विल्लीसे, नकुरुसे, जुकरसे, जुक्किस और गी, मैस, चोड़े, उंट आदि पञ्चअंके सुरोसे दब अनेपर । इनसे बच्चेपर सर्प एक सौ कीस वर्षतक सम्बद्धी रहते हैं। साल दिनके 📖 दोन उपले हैं और इस्क्रीस दिवसे किन हो जाना है। सॉप काटनेके तुरंस बाद अपने जनकेसे सीवन विवक्त तथा। करता 🖁 और पिश विध (कहा हो कथा है। सर्विजन्मे साथ भूमनेवास्त्र सर्व बास्तरर्व कहा जाता है। 🚃 दिनमें वह बचा भी 🚃 द्वार दूसरे ऋणिमेंके प्राण (हरनेने समर्थ हो भारत है। एः महीनेने कंचुक-(केंकुल-) का स्थाप करता है। सीपके दो सी चारतेस पैर होते

इसीलिये दिखायी नहीं देते। चलनेके व्यवस्थानिकल आते हैं और अन्य समय चोतर प्रविष्ट हो जाते हैं । उनके शरीरमें दो सी बीस अकुरियाँ और दो सी बीस संधियाँ होती हैं। अपने न्याबके विना 🛗 सर्प उत्सन्न होते हैं उनमें कम विष रहता 🖥

🕽, परंतु वे पर पायके रोवेके समान बहुत सूक्ष्म होते हैं,

१-दिवासम् एकावर और अधिदर्शन<del>को विकासी</del> क्या <u>कार्योद कमो - सुब</u>र, <u>सार,</u> कार्युके विकासकारोंने भी एउं सामा वर्णन मिलता है।

और वे पवहसर वर्षसे अधिक **मा** भी नहीं हैं। **मा** वर्षते हैं। दाँत लाल, पीले एवं सफेद हो और विषया वेग भी मंद हो, वे अल्पाम् और बहुत हरपोक होते हैं।

सौंपको एक मुँह, दो जीध, 📖 दांत और विवसे परी हुई बर दावें होती हैं। 🖿 दाक्षेके नम मकते, कराखे. कारुयत्री और यपद्ती है। इनके 🚃 🚃 किन्तू, सह और यम—ये 📖 देवता 🛊 । यमदुरी 🚃 🚃 📹 📖 है। इसपर प्रया, तन्त्र, ओर्चीय आदिका कुछ भी 🚃 नहीं होता। 🚾 🚃 चिह्न शक्तके समान, 🚃 कायके 📉 समात 🚃 🚃 इत्थके 🚃 🚃 होता है और यमदूरी कूर्मके हाता होती 🞚 । 🖩 क्रमक 📖 दो, 🔤 और चार महीनोमें उत्पन्न होती 🖥 और उन्मन्तः 🚃 पिल, क्रफ और मॅन्सिक इनमें होता है। कमदाः गृहक्क ध्वतः क्षायपुरत अस, क्ष्ट्र पदार्थ, संनिपातये 📖 🚃 🚃 इनके हारा 🔤 गये व्यक्तिको देश व्यक्तिये। केट, 🚃 पैट और कृष्ण—इन चार दावेकि ऋगक्तः रंग है। एके 📟 क्रमशः बाह्यम्, शरीयः, 🎹 📶 रहः 👣 🚟 छक्के सदा विश् नहीं रहता। दाहिने नेजके समीप किन तहनेका 🚃 है। 📰 करनेपर वह 🔛 पहले मस्तकमें आता है, 📖

आठ करणोरी सीप 🚃 है—दक्तेसे, पहलेके

भागनी और फिर नाड़ियोंके द्वारा राक्ष्में पहेंच जाना है।

वैरसे, अवसे, भद्रसे, भूकते, विश्वका वेग होनेसे, रकाके सिन्दे 📖 बासकी प्रेरणासे । जब सर्प कारते 🖥 पेटकी ओर उसर 🚃 है और उसकी दाइ देवी हो जावी 🗓 तम 🔤 🚃 ३३६ समझन्त चाहिये । 📖 काटनेसे बहुत 🌉 चाव 📕 चाव, उसको अस्थपा हेचसे काश है, ऐसा समझना वाजिने । एक दाइका चिह्न हो जान, किंदु 📖 भी भरतिभाँति 🚃 न को तं पवसे काटा हुआ 🚃 पाहिये। इसी 🚃 🚃 एद 🔛 दे के मदसे 🚃 हुआ, दो द्युव दिश्वाची दे और महा 🚥 चर माप तो भूसने 🚥 हुआ, खे 🚃 दिखायी दे और पावमें रक्त 📕 जाय ते विवर्क केमसे 🚃 १७७, रो राह दिकाची रे,किंतु 🚃 न रहे से रंगानको १४६के लिये बाह्य इश्य मानमा पाहिये। वैतको तरह तीन 🚃 गहरे दिव्याची 🖁 🖦 धार दाद 🚃 🗰 है 📱 📖 पेरफासे करटा हुआ जानना चाहिये। यह आस्वाध्य 📗 📖 कोई 🗷 📟 नहीं है<sup>†</sup> । क्षके अष्टके दह, दहलुके और देहोदल—ये हॉन

स्वयं काट्या दह, दहानुवान आर दहानुवान—म तान नेद हैं। व्यास्ट काट्योंके व्यास्ट मीवा यदि सुके तो देह तया काट्या पर वि ते दंहानुकीत कहते हैं। इसमें तिहाई विच यहता है वि व्यास्ट सब विच इंगल विवास विवास पट विवास काय—पीठके बल क्लटा है। जाय, इसका पट

(अध्यय ३३)

### विभिन्न तिकियो एवं नक्षणोर्ने कारत्सर्पसे 📑 हुए पुरस्के लक्षण, नागोकी उत्पत्तिकी प्राण

कावय मृति घोलि— मैतम ! अध मै कालसर्थमे कारे हुए पुरुषका लक्षण कहता हूँ, जिस पुरुषको कालसर्थ कारण है, उसकी जिह्ना मंग हो जाती है, बटवमें दर्द होता है, नेजोसे दिखायी नहीं देता, दांत और दारीर पके हुए अध्युक्त कलके समान काले पड़ जाते हैं, अनुदेगे जिक्किता अह आही है, विद्यालय परित्याग होने लगता है, कंधे, कमर और मीचा हुक

कते हैं, मुख क्षेत्रेकी ओर एटक जाता है, आंधे वह आती हैं, अग्रेरमें टाह और कम्प होने लगता है, बर-बर आँखें बंद को कतो हैं, शक्को इत्तरिये कारनेपर खून नहीं निकरूता। वेक्से मारनेपर भी कारीरमें रेखा नहीं पढ़ती, कारनेका स्थान करे हुए अपनुष्के सम्बन नीले रंगका, पूरण हुआ, रक्तसे परिपूर्ण और कौर्यके कैस्के समान हो जाता है, हिचकी आने

१-सम्बे स्वरोद्धी रहको कपूरी पना-इसकेंने विकेशक प्रकारीनीत्वदूरी कार-बना और संबंधी सीवर्ग उनके हिल्ला आयुक्त ओपियर्ग हैं। कुछ अन्य ओपियर्ग की अनुक हिल्ला क्षेत्री किया कर क्षिण कर क्षेत्री हैं। बुंदून क्षीके हिल्ला केनेक किसी हैं। अन्य सर्वर्भ विध नहीं बदला । क्षीय क्षीयर हहा केनेकी की साँध कारते हैं—

लगवी है, कष्ठ अवस्य हो जाता है, बासकी माँत बहु वार्ध है, अगेरका रंग पील चड़ जाता है। ऐसी अवस्थाको कालसपैसे काटा हुआ समझना चाहिने। उसकी मृत्यु आसता समझनी चाहिने।

भाव फूल जाय, शिले रेगका हो उत्तय, अधिक परहैशा आने लगे, ताकरो बोसने रुगे, ओड स्टब्स कार, इस्को कम्पन होने रुगे तो कासमार्थसे काटा हुआ समझात पाहिये। दाँत पीसने रुगे, नेत्र उत्तर जाये, रुंगी धास आने रुगे, खेखा रुटक जाय, नाचि फड़कते रुगे तो कासमार्थसे काटा हुआ जानमा चाहिये। दर्पण या असमें अपनी साचा न दीको, मूर्ग तेमहीन दिखायी पड़े, नेत्र स्थरू क्षे जाये, समूर्ण स्थीर कहके

अष्टमी, नवधी, कृष्णा चतृदंगी और सामध्यानीके दिन जिसको साँप काटता है, उसके प्रायः प्राय नहीं काले। असी, आंश्रीया, मध्य, भरकी, कृषिकार, विकासक, तीनो पूर्व, कृत, स्वाती और शांतिमा नक्षणमें विकासी साँप काटता है यह भी नहीं जीता। इन नक्षणोमें किय पीनेकाला आहित की तस्कार कर जाता है। पूर्वोता तिथि और स्वात दोनों मिल्ट क्या लखा सम्बद्धारमें, प्रमेशवर्षों और सूची कुक्तो सीचे विको साँप काटता है यह नहीं जीता।

माहिये, 📟 शीम 🗎 🚌 📟 🖫

मनुष्यके सरीरमें एक सौ आज मर्ग-स्थान है, इनमें ■ संख्या अर्थात् लरलाटकी हुई।, आँखा, भूकमा, खील, अप्यामोशका उत्परी चांग, केस, केसे, इटब, बकास्वरूट, कर्तु, ठोको और गुदा—ये बारह मुख्य मर्म-स्थान हैं। इनमें सर्व विकास अक्षण सम्बन्धत होनेपर पनुष्य विकास पाता।

अब सर्व काटनेके काद वो वैद्यको बुस्तने जाता है उस दूनका मामान क्यात है। उत्तम व्यक्ति होन क्या दूत और मा कातिका उत्तम वर्ण दूत की अवका नहीं होता। यह दूत इसकी टंड किये हुए हो, दो दूत हो, कृष्ण अवका स्तम्यक बाने हो, मुख इके हो, किएका एक बच्च क्येटे हो, सर्वरमे तेल लगाये हो, केल खोले हो, जोएसे बोलता हुआ आये, साव-केर केटे तो केला दूत अवक्त अञ्चल है। जिस रोगीका दूत हम स्थानीस युक्त केटके समीच जाता है, वह येगी अवक्रय ही मर बासा है।

अवस्था सेले — गीवम । अस मै पाणान् शिवके इस्त परित्र सार्गेनी उत्पंतिके विषयमें बहता है। पूर्वकालमें अक्षामी अनेक नार्गे एवं प्रहोकी पृष्टि की। अनक भाग सूर्य, कहाका कृत, तथक और शंकायल शरीश्वर प्रहोक रूप है। स्थानी दिन दसकों और चौदहवों क्याचे, सोमकाको सरहर्वा, भीसवारको स्थान और दसवी, कृतकारको स्था, कृतकारको हसरा और हता, सुक्रको चौथा, साहका और करहर्वा, प्रान्तिका प्रहार, सोलक्षको चौथा, साहका और करहर्वा प्रहारचे अञ्चल है। इन समयोग सर्वक करहर्वा स्थान और सरहर्वा प्रहारचे अञ्चल है।

(अस्पाप ३४)

सर्पेकि विकास वेग, फैलाव तथा हाता बातुओंमें प्राप्त विवके लक्ष्य और वनकी विकित्सा

कर्षपत्नी कोले — गीतम । यदि यह अत हो जाव कि सर्पन अपने यपद्रती नामक दावसे काटा है तो उसको विकित्सा न भरे । उस व्यक्तिको परा हुआ हो सम्बो : । दिनमें और राहमें दूसरा और सोलवर्षा प्रकाश समित । नागोदय नामक वेला कहो गयी है । उसमें साम काटे हो कालके द्वारा काटा गया समझना चाहिये और उसको विकित्स नहीं साम चाहिये । पानीमें बासा इक्नेनेपर और उसे उखनेवर

बारके अपधापसे जितना कर पिस्ता है, उतनी ■ मात्रापे विव सर्प प्रविष्ट करून है। वह ■ सम्पूर्ण इसेएमें फैल जाता है। जितनी देखे साथ ■ और समेटना होता है, जतने ही सूक्ष्म समावने काटनेके बाद विव मालकमें पहुँच जाता है। इक्से आपत्री ■ फैलनेके समान रक्तमें पहुँचनेपर विषकी वहुव वृद्धि से ■ है। वैसे जरूमें तेलकी बूँद फैल जाती है, वैसे की स्ववाने पहुँचकर विव दूना हो ■ है। रक्तमे

१-प्यस्थेपनियर् एवं ताक्ष्येपनियर्षे कार्यके कारते 🗟 कव को गवे हैं, वहाँ कवाम ज़िक्सन वर्षन 🖟 वैसे भगवस्तृतासे 🚃 भी आसध्य नहीं है ।

चीगुना, क्लिक आह गुना, कक्षमें सोलह कुना, कक्षमें कंस गुना, मञ्जले साठ गुना और प्राणीने पर्देशकर वही किन अनन्त मुना हो जाता है। इस प्रकार सार दारीरामें क्लिके क्लाक हो जाने क्या श्रमणदाकि बेट् हो अनेपर यह जीव बास नहीं के पता और उसका अन्यक्ष हो जाना है। यह दारीन पृथ्वी उन्हेंद पश्चमृतीसे 📖 है, मृत्युके बाद मृत-च्याचे अलग-अलग हो जाते 🖥 और अपने-अपनेमें होन हो जाते हैं। 🚃 🚃

बहुत 🔛 🔤 विस्मन होनेक रेग असाध्य हो जला है। सर्परि जीनोक 🛗 🖼 🕬 🕬 आज सरक करनेकारण होता है, जैसे ही इस्टिक्स अहीं, विक जे प्राणको हरण करनेवाले होते हैं।

विक्के पहले बेगर्न रोमाझ तथा दूसरे बेन्से 📖 कारत है। तीसरे केगमे प्रारीर कर्षपक 🖫 लक्क चौथेने अवनापारित अन्यवस्त्र होने स्तान्ति है, चीचतेने दिचकी अपने लगती है और सहस्र दीया लटक 👊 है तथा 📢 बेगाने प्राण विकल जाते हैं। इन सात बेगोमें अधेरके रक्तो धातुओंके किय क्यार हो जाता है। इन धालुओंने कर्षे हर किया अलग-अलग लक्षण तथा उपचर इस क्यार है---

आंबोंके आर्थ मेंबेव का जान और ज़रीरने बार-बार अरुभ होने रूपे से यह जानन 🚟 🎮 📭 🖼 🖫 इस अवस्थाने अवस्था मह, व्याप्ता, तनर और विनेन्-इनको जलमे पोरका पिरमंत्रे हाण्या क्या अन्य हो सक्ती है। त्वचारे रक्तमें टिम पहेंचनेवर प्रमीरमे यह और मुख्जी होने लगती है। प्रमेतल प्रवार्थ अध्यक्ष समत्त्व है। उन्होर (स्थान) थन्दन, कुट, तयर, नीलोत्पल, सिद्वास्की अह, प्रतृत्की बहु, 🔤 और मिरच—इनको प्रेसकर देश चाहिये । इससे बाच शक्त न हो तो भटकटैया, इन्हायणबंदे 🖿 और प्रयंगवाकी मीमें पीसकर देना चाहिये। यदि इससे भी शस्त 🖝 हो तो रिदेवार और सँगका नस्य देन। चाहिये और पिलाना चाहिये । इसीका अञ्चन और लेप भी करना चाहिये, इससे एक्ट्रो प्राप्त विषयी बाचा शास्त हो जाती है।

रक्तसे पित्तमें किन पैहच जानेपर पुरुष उट-उठकर । रामता है, अरीर पीरत हो जाता है, सभी दिशाएँ पीले वर्गकी दिसायी देती 🤾 शरीरमें दाह और प्रवल मुच्छी होने लगती है। इस अवस्थामें पीपल, ऋहद, महका, भी, तुम्बेकी 📖, इन्द्रवाचको जङ्ग---इन समको गोमुत्रमें पीसकर नही, लेपन 🚃 अञ्चन करनेसे विषया वेग हट जाता 🖥 ।

वित्रसे विवर्के कपाने प्रवेश कर जनगर शरीर जवज अक्षा है। श्वास भरवेश्वीत नहीं आती, कण्डमें वर्षर दान्द होने रुपता है और मुकारे रूप भिरने रुपती है। यह रुधन देसकर चेवल, मिरव, सींड, इलेन्सक्क (बहुबार कुस), न्त्रेच रूवं मचुनाको समान पाण करके पोपुत्रमें पीसकर 🚃 और अञ्चन रूपाना चाहिये और उसे पिरताना भी च्चीके । देख करनेसे विषक देग शन्त हो जाता है ।

कारते काममें किन प्रवेश करनेवर पेट पूरत 🚃 👢 कोई भी पदार्थ दिकाली नहीं पहला, दृष्टि-भंग हो जाता है। ऐसा लक्षण होनंपर दोला (सोपागास)वर्ष वक, प्रियाल, गमर्थायात, पारंगी, वच्चा, योपल, देखदार, महुशा, मधुसार, सिद्धार और हॉन—इव सवको वीसकर गोली बना ले और रेकेको किरको और अञ्चन सभा केवन करे। यह शोबीय 📖 🚟 । हरू । एस 🛊 ।

बातने सकामें किय पहेंचे कलेवर दृष्टि वह हो जाती है, 🞮 🛶 बेम्प हो जियक हो जले हैं, ऐसा लक्षण होनेक 🔹 उन्हर, प्रवंताकृत कर और चन्द्रनको बोटकर पिलाना 🚟 और नस्य 🎟 भी देना चाहिये। ऐस्स करनेसे विषका रेग हर 🚃 है :

क्ष्माचे क्षेत्रकालेचे विष प्रदेश क्रावेपर सभी इंद्रियाँ निश्रेष्ट हो जाती है और थह जमीनक गिर जाता है। काइनेसे रक नहीं निधनका, केशके बजाइनेक भी कर नहीं होता, उसे भृत्युके ही अधीन सम्बाहना चाहिये । ऐसे रुक्षणीसे पुक्त रोपीकी सामारण पैदा चिकित्स नहीं कर सकते। किनके पास सिद्ध पन्य और ओवधि होगी वे ही ऐसे रोगियोंके रोगकी इटानेमें समर्च होते हैं। इसके रिज्ये सामात बदने एक ओचीर कही है। मोरवा पित साथ मार्जास्का पित और गन्धनादीकी बढ़, कुंकुम, रामर, कुट, कस्समर्दकी खाल तथा उत्पल, कुम्द और समार---१न हीनेकि केसर---समीका समान माग लेकर उसे पोश्चमेरं पीसकर 🚃 दे, उत्हान लगाये। ऐसा करनेसे कारुसर्रसे डेंस्स हुआ भी व्यक्ति शीम विपर्राहत हो जात है। यह मृतसंजीवनी अवेचीय है अर्थात् मरेको भी जिल्हा देनी है। (अध्याय ३५)

# सर्पोकी भिन्न-भिन्न जातियाँ, सर्पेकि काटनेके रुक्षण, पञ्चमी वागोसे सम्बन्ध और पञ्चमी-तिकिमें व्यासी पूजनका फल एवं विधान

गौतम धुनिने कारक्षणीसे भूका—महस्मन् ! सर्ग, सर्पिणी, नालसर्ग, सृतिका, उत्तेसक और व्यक्तर नामक मर्गोक नारनेमें क्या भेद होता है, बाबो लक्षण आप अस्वर-अस्त्र। बतामें।

स्थान वोले—यै पुन सकते तथा रूप-संक्षणोको संक्षेपये कारणता हैं, सुनिये—

नदि सर्व काट तो दृष्टि उत्परकरे हो जातो है, स्वयंत्राक काट नेसे दृष्टि नीचे, बारकसर्वक काट मेरो छाड़ियों जोर उर्जेट सरकसर्वनाम काट नेसे दृष्टि वार्ची ओर सुच जातो है। गर्मिणीके काट नेसे पसीना आता है, प्रस्ती करेंट तो रोजाइ और सामा होता है तथा नपुंत्रकारे काट नेसे इतोर टूट ने साम अधिक कियपुरत होता है। यदि उन्हेंसे इतोर हमने समय अधिक कियपुरत होता है। यदि उन्हेंसेसे, बहनो, साम सर्व काट या सोने हुए या प्रमत्तको काटे, सर्व इ दिखानी को अपना पहें, जानाइसे के हो तो वैदा

सर्प चार प्रकारके होते हैं---टबॉका, प्रधाली, खाँचल और व्यक्तर । इनमें दर्शकाका विश्व शहर कार्यक, 🚃 🚃 पित-सभाव, गरिक्तक कल्पालक और क्यार सक्क सॅनिपत-स्वमानका होता है अर्थाद उसमें बात, विता और काम — इन सर्वेक्स अधिकता होती है। इन संवेक्ति रहान्यी परीक्षा इस प्रकार करनी चाहिये । दर्वीकर सर्वेने रक कृष्णकर्ण और खल्प होता है, मण्डलमें बहुत पद्मा और लाट रेक्स रक्त निकलका है, राजिल तथा व्यक्तरमें दिल्प और चोड़ा-सा इचिर निकलता है। इन जर जातियोंके अविभेक्त क्योंकी अन्य कोई फॉक्सी जाति नहीं मिलती। सर्व सद्भाग, धार्मन, वैदय तचा शुद्र--इन चार क्लॅंकि होते हैं। सङ्ग्रल सर्व कांट्रे को अरिप्टें दाह होता 🖟 अवस्य मुख्यं 📾 जाती है, मुख कान्य पड़ जाता है, मज्ज स्तम्भित हो जाती है और चेतना जातो सहती है। ऐसे लक्षणीके दिस्तायी देनेपर अवागन्या, अवापार्ग, सिद्वारको भीमें पीसकर नत्य दे और पिलांव 🖥 🎟 🖜 निज़रित हो जाती है। शक्षिय क्लीक सर्वक काटनेक आधारों

मुर्च्छ का जली है, दृष्टि उत्परको हो जाती है, अत्यधिक पोड़ा केने रूपनी 🛘 और 📖 अपनेको पहचान नहीं पाता । ऐसे **ार्क्स होनेवर उठकावर जड़, अधार्मार्ग, इन्ह्रावण और** शियंगुको भीने चैसकर जिला के तथा इसीका नव्य देनेसे ए**ये** किलानेसे बाब्य बिट बाती है। बैट्य सर्प डेंसे तो क्या बहुत अब्ब है, पुरुषे तम बहती है, पुष्कों आ जाती है और यह चेतन्त्रञ्जन हो जान है। ऐसा होनेपर अक्षणन्त्र, गृहधूम, गुन्नुक, दिसीन, अर्थ, पत्मश और बेन गिरिकाणिक (अपर्वाचल) ---इन सबको गोमुत्रमे पीसकर 📖 देने 📖 परनंदी कर स्थान क्या समान दूर है जाते है। जात व्यक्तिकरे 'हुद सर्व कारास है, उसे चीन लगवर क्या होता है, 뺴 अङ्ग चुलब्जने रुगते हैं,इसकी निवृत्तिके लिये कमल, कमरूका केमर, लोग, औड, शहद, मधुसार और केलोग्डेसकार्थे — इस सकको समान भागाँ रेज्यर शीताल जलके साच फेलकर नाथ आदि है और धान कराये । इससे नियका बेग 🚃 हो 🚃 है।

🔤 मध्यक्रके पहले. श्रीतेष सर्व पश्याह्रमें, वैक्रम स्त्र मध्यक्रके बात और शुद्र सर्प संध्यके समय विकरण करता है। ब्रह्मण प्रयं साथू एवं एक, अधिय मुक्क, बैदन मेराक और सुद्र स्त्य सभी पदार्थीका भक्षण करता है। क्रकार सर्प आहे, श्रांतिष क्षांतिने, वैद्रय बाम और हाद सर्प 🕶 वस्तक है। मैचनकी इच्छासे पीड़ित सर्प विपक्त चेपके कहनेसे क्याक्ट होकर शिना समय भी काटता है। सहाण सर्पमें कुलके सम्मन गन्ध होती है, शतियमें जन्दनके समान, वैदयमें मुक्के सम्बन्ध और शुद्र सर्पने मत्त्वके 🚃 गन्ध होती है। कहन सर्व नदी, कृत, तालाब, क्राने, बाग-बगीचे और पवित्र १इते हैं। इतिय सर्प आम्, नगर आदिके द्वार, तात्त्रय. चंत्रुवाच तचा तोरच आदि स्वानीमें; वैश्व सर्व क्वरूवन, 🚃 ····र मस्म, चल आदिके देर तथा कुर्तोमें; इसी प्रकार शुद्र सर्व अवस्थित स्थान, निर्जन वन, शून्य घर, श्मशान आदि सुरे 쨰 🖛 निकास करते हैं। ऋदाण सर्व चेत एवं कांपल वर्ण, अफ्रिके समान तेजली, मनली और सहितक होते हैं। क्षत्रिय सर्प मुँचेके सम्बान रक्तवर्ण आदवा सूवर्णके तृल्य पीत वर्ण तथा सून्के समान तेजस्थं, नैश्न सर्ग अस्त्रमं अवन्य वाण-पुणके समान वर्णवारे एवं क्षनेक रेकओसे बुक रूथा शुरू सर्ग अञ्चन अध्या सम्बन्धे समान कृष्णवर्ण और कृष्णवर्णि होते हैं। एक अनुसके अन्तरमे हो दंश हो से वास्त्रमर्थका काटा हुआ वानना चाहिये। हो अनुस्त अस्तर हो तो तस्त्रम सर्पका, वर्ष अनुस्त अन्तर हो तो बुद्ध सर्पका दंश समझका चाहिये।

अनसनाम सामने, कार्नुक अंदेर, अंदेर होती है।
अंद देखता है और अंदेर कार्नुक, कार्नुक, पद, महत्त्वय, पंजायक
और कुदिक— ने आंद्र शांग कार्नुक, महत्त्वय, पंजायक
और कुदिक— ने आंद्र शांग कार्नुक, महत्त्वय, पुरु, धन
और अर्थवन्द्र— ने कार्नुक अंदिक, महत्त्वय है।
और कुदिक— ने होती बाहुआ नाम-सादिक है।
अंदि कुदिक— ने होती बाहुआ नाम-सादिक है।
अंदि कुदिक पह नाम है। अनस्त और कुदिक नाम सुहायमं क्या वहस्त्रीते कार्नुक नाम है। अनस्त और कुदिक नाम सुहायमं क्या वहस्त्रीते कार्नुक नाम है। अनस्त और महत्त्वय सहस्त्र कार्नुक नाम है।
अपित कार्नुक है, पद्म और कार्नुक सुहायन नाम कुद्रुक कार्नुक सुहायन सहस्त्र कार्नुक है।

सुमन्तु मुनिने पुनः कहा—इकत् ! 🎟 वे शताः

और विकित्स महर्षि कञ्चपने महासूमि गौतसको उपदेशके असंगमें कहे थे और यह भी कतावा कि सदा धिकपूर्वक बच्चेंकी पूजा करे और पश्चमिको विशेषकपते दूध, सीर अवंदिसे उनका पूजन करे। सावण सुप्ता पश्चमिको द्वारके दोनों और गोवसके द्वारा जाग कर्कने। दही, दूध, दूधी, युग, कुछ, अर्थर केंग्न अर्थर अनेक प्रकारके नैक्टोंसे नागोंका पूजनकर क्यों क्या प्रमान करावे। ऐसा करकेंग्र उस पुरुषके कुरुपे कर्या

पडामीको अनेक रंगोके जागीको चै, कोर, दृष्ट, जा आदिसे पूजनकर गुण्डलको भूग दे। ऐसा करनेके क्या जाग जसक होते हैं क्या उस पुरुषको साह चेत्रीकरको क्या पर क्या शहरा।

आंधन मासकी प्रश्नामिको कुदाबर नाग स्थास गाम्य, पुत्र अस्टिमे स्थास स्थाप करे । दुध, यी, जरूने कान कराये । दुध दुधने पर्क हुन हिंदी क्षेत्र स्थाद नाग संतुष्ट होते । अस्टि कह पुत्र नागलेकाने स्थास महुत कारणाक मुस्तका योग कराय है। राज्य ! इस प्रकृति सिधिके स्थास मेंने करार स्थास अहाँ 'इन्ट कुरकुरुके कह स्वाहा' — ११६ सम्ब

(अभ्याय ३६ —१८)

### वही-करप-निकारणचे स्क्टर-वही-क्रतकी परिमा

सुकन्तु सुनि बोले— राजन् । अस दे ब्हा सावन् फल्पकः वर्णन करता है। यह तिथि सभी मनोरधोको पूर्व करनेवास्त्रे है। कार्निक मासकी पश्ची निधिको फल्पक्रकार का विधिवत किया जाता है। यदं राज्यक्त राजा हम समा अनुग्रान करे तो स्था अपना राज्य प्राप्त कर लेका है। इसलिये अधिकाय रक्षनेवाले व्यक्तिको इस कत्का व्यक्त-

पूर्वक 🚃 करना चहिये।

यह तिथि स्वामिकार्तिकेयको अस्वन्त प्रिय है। इसी दिन

कृतिकाओक पुत्र कार्तिकासा आविकांश पुत्रा था। वे भगवान् सकूर, आपि तक गामके भी पुत्र कहे गये हैं। इसी व्यक्ति विकास स्वाधिकारिकेश देवसेनाके सेनापति गुए। इस 1884 अनकर पृत्र, दही, जल और पुष्पीसे स्वाधिक कार्तिकायको दक्षिणको ओर पुष्पाकर अर्थ देना चाहिये।

अध्येदानका पन्त्र इस प्रकार है—

भार्तिकरण स्थल साहायतिसमुद्धाः । स्वर्कनातिस विको स्कूतनर्ग नमोऽस्तु ते ।

### १-४६२मीर नागोपत देश माना जाता है : "मेन्डप्रकृतुलामे इतका किलुक पूर्वन है (

२-पांडाकृष्टि अनुसार मिल्ला दृष्टा कईको स्वार-१ई: होती है तथा कार्निक दृष्टा कहोको मीर-वहीं साम जाती है, किस दिन समृत्ये पारतमें सुर्वेष्टमना होती है। पांतु कार्य कार्निक दृष्टा कहिल मानो कार्यन सामा है, पार सामा समामाना । अनुसार करी पूर्व सेनैकारे मास) के अनुसार प्रतीत होती है।

प्रीमतां देवसेनानीः सम्बद्धन्तः

(कार्या ३९ । ६) सहायको अप देकर राधिने फलका भोजन और भूमिपर प्राचन करना चाहिये । अतके दिन प्रकार रहे और सहावर्षका पारत्न करे । शुद्ध पत्र ब्या कृष्ण पश्च—दोनो पहिसोको कर सत करना चाहिये । इस बराके करनेसे प्रणाम् विश्वास कृपासे सिद्धि, भृति, तुष्टि, राज्य, अप्यू, उश्लेष्य और मुक्ति पिससी है । जो पश्च उपलाद न कर सके, वह राधि-कर हो वरे, तब को देनो शिक्षण उत्तम करू प्राप्त होता है। हवा तकको करनेवारू पुरस्को देवता भी नशस्कार करते हैं और वह इस स्पेकमें अकर कार्यसी एक होता है। एअन् ! ओ पुरूष बढ़ी-वनके महस्त्यका मित्तपूर्वक तक्षण करता है, वह भी व्यक्तिकार्तिकवारी कृतासे विविध असम पोग, सिद्धि, सृष्टि, कृति और सक्तिको कहा करता है। परस्तेकमें ....

गरिया भी आंचकारी होता है।

(अच्चाय ६९)

### अस्वारणकी सेहताका प्रतिपादन

राजा समामीकने मद्भा — पुने : अध अस्य सद्भावः आदिके आवरणको सेहताके विकायमें बताराजेको हुन्य विदे (

सुषम् युनि बोले— रावन् ! मैं अस्यात संकेशने इस विकासने सामा है, हिंड अस्य सुने । अस्य आर्थका अनुसान करनेवाले प्राथकपरिने कहा है कि 'येट अस्यारहीनको सामा नहीं कर सकते, भले ही हम्म सभी असुनेक साथ विकास अध्ययन कर ले । येट पदना तो साहायका दिल्लामा है, वृह्ण सहस्याका मुख्य संक्ष्य तो सहायका है बसलाय भया है है ।

माह्मणया मुद्रम्य रूथ्या ता सदायरण हो बहरराज्य गया है? । याचे वैद्यास अध्ययन करनेपर भी यदि यह आवश्यको हैं। है ती उसका अध्ययन बैसे ही निकाल होता है, जिस प्रवार वर्षसकते रिक्रो स्थाप निकाल होता है।

जिनके संस्कार उत्तम होते हैं, में भी दृश्यारण कर मांचा ही जाते हैं और करकमें पढ़ते में इस क्षाना में उत्तम आवाणने अच्छे कहरतते में एवं अर्थ आह करते हैं। मन्में दृष्टता भरी रहे, बाहरते सब संस्कार हुए हो, ऐसे वैदिक संस्कारींसे संस्कृत करियंच पूरूप आवश्याचे सुद्दीस की क्षाणा मिल्म हो जाते हैं। हुन कर्म करनेवालम, ब्रह्मसम्म करनेवालम, गुरुदारणामी, चोम, गीओंको मानेवालम, करावाणी, परस्वीगामी, मिच्यावादी, नरिसक, वेद्यानच्छा, निविद्ध कर्मोच्य आवश्य करनेवालम यदि ब्राह्मण में और सभी तस्तकों संस्कारसे सम्पन्न भी है, वेद-वेदान-परस्कृत भी है, किर यो उसकी समृति नहीं होती। दयाहोन, हिसक, अतिकृत द्वश्यिक, कपदी, रहेणी, पितृत (चुमारुकोर), अर्दिकाय दृष्ट पूरूप वेद

पदकर भी संसारको उगते हैं और 🔚 बेचका अपना

कंपन-वापन करते हैं. अनेक **व्याप्त इस-छिएसे प्रजानी** इस कर करते अपना सामाधिक **व्या**क्ति करते हैं। ऐसे

ब्रह्मण शुरुते भी अकन हैं। को सहा-आकर्षक ब्रह्मा कने, अन्यस्य और कुम्बर्गक ब्रह्मा किसीया, संस्थिती और सदावारी

हो, व्यवस्था पासम, शायात तथा सदावरणमें क्या रहे, सबके क्यान पास रहे, बेद-बेदाम और सम्बन्ध मर्मक हो, सम्बन्धि हैं स्थित रहे, क्रोध, मस्सा, मद सबा शीक आदिसे बीत हो, बेदक पटन-पटनमें आसल रहे, किसीका

अस्विधक हम्म २ करे. एकाना और सवा स्थानमें रहे. मुक-दुःकमें सम्बन हो. धर्मनिष्ठ हो. पाकचरणसे हरे, आसिह-

निर्देशकर, दानी, श्रुर, असमेना, शास्त-समाय और अवस्थि के तथा सम्पूर्ण शास्त्रण परिनिष्ठत हो—इन गुणोसे एक पुरुष शास्त्रण क्षेत्रे हैं। असमे भक्त होनेसे आहाण, अवसे

रथा करनेके संस्त्य समिम, वार्ता (कृषि-विद्या आदि) का सेवन करनेसे वैदय और सब्द-श्रवणभावसे को दुरागीत हो

अनसूच, अनुष्यता, अस्तेय, अमात्सर्थ, वर्धकान, इहाधर्य, अधितक्य, वैराप्य, पाय-मीरुता, अद्रेप, गुरुत्पुश्रूवा अदि, गुण जिनमें रहते हैं, उनका स्थापन दिन-प्रतिदिन

समृत्य ग्रह्म है। सम, तप, दय, सीच, धमा, म्रह्युता, श्चन-विज्ञान और अस्तिस्य —ये अक्टनोंके सहज कर्य हैं। जानरूपी शिक्षा,

अस्थारोज्ञम् न पुत्रीत वेदा कान्यवीतः का चहुनिस्तृः । जिस्पे हि वेदाव्यको द्वित्यत्रे कृत स्कृत सहवस्थाने तृ ॥ (अञ्चलको ४१ । ८)

तथोरूपी सूध अर्थात् वश्चोपयोत् स्थान रहते हैं. स्थान यनुने बाह्यण कहा है। पाप-कर्मोंसे निकृत होकर ठतम स्थान करनेवारम भी अञ्चलके सम्बन ही है। श्रीरूसे युक्त शुद्ध सि बाह्यणसे स्थान हो समस्त में और अवकररिन स्थान भी जुद्धसे अध्या 🖟 मता है।

जिस तरह देव और पीक्वके जिल्लोपर कार्य सिद्ध होते हैं, है है उठम करि और सत्कर्मक चेग होनेपर आवस्यकी पूर्वक सिद्ध केरी है। (अध्याद ४०—४५)

## धक्यान् कार्तिकेत 📖 🎹 मही-प्रतकी पहिन्त

सुमन् पृति बोले---राजन्! महापद स्वस्थते वहीं
तिथि बहुत उत्तम निर्धि है, यह मधी प्रायंक्त इरण करनेवालों,
पूर्व प्रदान करनेवालों तथा सभी करनाण-प्रमुखेंकों
देनेवाली है। यह विधि कर्वाविक्यको अंतराण प्रिय है। इस्व
दिन किया बुआ कान, दान आदि सरकर्म अध्यय होता है। यो
दिवल दिश्व (कुमारिका-केंग्र) में विकास करनेकले पूर्वार
कार्तिकेवाका इस तिथिको दर्शन करने हैं, वे ब्याकरण आदि
वार्षिकेवाका इस तिथिको दर्शन करने हैं, वे ब्याकरण आदि
वार्षिकेवाका इस तिथिको दर्शन करने हैं, वे ब्याकरण आदि
वार्षिकेवाका पूर्वन करने हैं, इसलिको ब्याविकेवा प्रायंक्त कार्तिकेवाका पूर्वन करनेसे मानव सर्वकारिका करने क्या करना है और अन्तर्थ प्रमुखेकों निवास करना है। ईट, पन्धर, करन श्राविकेवाका पूर्वन करनेसे निवास करना है। ईट, पन्धर, करन स्वार्थिक इसा बद्धान्त्रिक क्याविक्यक करना है। ईट, पन्धर, करन स्वार्थिक विमानवे वैद्यकर व्यक्तिक्यक करने क्या क्या करने करने करने करने करने करने कार्तिकवारी पूजा करकेपर हाली, बोझा अवदि वाहनीका स्वामी

है और सेजवर्तिका की प्राप्त होता है। श्रेणाओं के

हो आवादना करनी वाहिये। जो प्रणा
पृष्टीकाओं के पूज पर्वाचन कार्तिकवारी आवादना कर युद्धके

प्राप्तान करना वाहितकवारी आवादना कर युद्धके

श्रेणांको करना कर देना है। विवादकवारी चेपक आदि

विविध्य पृथ्वीको करना कर देना है। विवादकवारी चेपक आदि

विविध्य पृथ्वीको करना करनेवारना कर्मक श्रेणांको मूल हो

वाह्य है और दिखालोकको प्राप्त करनेवारना क्यांकि श्रेणको महः

पृज्वनका गाँको केवन करनेवारना क्यांकि श्रेणको महः

पृज्वनका गाँको केवन करनेवारना क्यांकि श्रेणको महः

व्यक्तिकालेको क्यांकित अनका व्यक्तिक है। की क्यांकि

क्यांकिकोंको क्यांकित अनका व्यक्तिक है। की क्यांकि

क्यांकिकोंको किया अनका व्यक्तिक हमानि श्राप्ति क्यांकि

(अध्याय ४६)

## सप्तमी-कल्पमें भगवान् सूर्वके 🖩

### न्या निकारण एवं साळ-सप्तमी-वत

अभिकास नेजके अस्था मेरी दृष्टि इनकी और उत्तर नहीं धारी, विससे इनके असूनेको में देख नहीं या सी हूँ। मेरा मुक्के-वर्ण, कम्माप प्रतीर इनके तेजसे दाध हो उत्तरमण्डलंको से गया है। इनके साथ मेरा निर्वाह होना बहुत करिन है। यह सोक्का उसके अधनी सरवारी एक भी उत्पन्न कर उससे क्या—'तृप अध्यान सुर्वक समीप मेरी जगह रहना, परंतु यह भेट खुन्को न पाये।' ऐसा सम्बद्धकर उसने उस समया नामकी सीको कार्य रख दिवा तथा अपनी संतर ब्या और वस्तुनको वहीं सोककर वह तपसा करनेके दिवो उत्तरकुर देशों चली गयी और वहाँ बोदीका रूप पारमकर तपसाने रत रहते हुए उत्तर-वस्तर अनेक वर्णें का वस्तर सुपता हो।

१-सूर्यको पत्रहे 'रूपा' का दूसरा साम 'स्थान' है। अन्य कुरचेके न्यानको विकासकोत पूर्व करू गया है।

मगवान् सूर्यने सरावको ही अपनी चनी समझा । कुछ समक्के बाद रामासे संग्रेश और तपती नामको दे संज्ञाने उत्पन्न हुई । साम अपनी संज्ञानपर कानुन क्षण कामी अधिक सेंग्ड करती थी । एक दिन कमूना और तपकीने विकाद हो गया । परत्यिक शापरे दोनों नदी हो गयों । एक बार विवाद हो गया । परत्यिक शापरे दोनों नदी हो गयों । एक बार विवाद हो या प्रमुनाके भाई रामको ताहित किया । इसपर कामे कुछ होकर साम दे दिया—'भूड । तुमने मेरे उत्पन्न काम हात्या है, इसिंग्ड हुन्हार प्राणिनोंका प्राणिहितक रूपी च्या बीपरंग कर्म व्यापत सेंग्ड हुन्हार प्राणिनोंका प्राणिहितक रूपी च्या बीपरंग कर्म व्यापत सेंग्ड हुन्हार अपने विवाद पुन्तिक रूपी च्या बीपरंग कर्म व्यापत स्थानित अपने विवाद पुन्तिक रूपी में कुप्तिका उने चार व्यापति ।'

यम और क्रमाना इस प्रकार निकाद हो ही रहा था कि 🕬 समय भगवान् सूर्य वर्ता आ प्यूर्वि । यक्ते अको विका भगवान् सुपेते कहा—'दिलामे । 🖮 हमती कता कटावि नहीं हो समारी, यह कोई और की है। यह हमें निरंप हुए मानसे देवानी है और हम सभी भर्द-बढ़-वेमे समान दृष्टि तथा समान व्यवहार नहीं दश्ताहै । यह स्तुत्वर प्रशासन् सुनी हुन्ह होका कामाने कहा—'तुन्हे यह स्वित नहीं है कि अवने संस्थानीमें ही एकसे प्रेम करो और चूसरेले हुन। किसने संस्थान 📕 सम्बद्धे समान ही समझन चाहिये । तुक् विका-दृष्टिसे अधे देशमी 🖹 ?' यह सुनकर काम 🖩 कुछ न बोली, पर काले पुनः करा—'पिताओ ! यह दुहा मेरी माता नहीं है, बरिक मेरी माताको छाया है। इसीसे इसने मुझे राज्य दिया है।' यह क्लकर स्थाने पूर) जुलान्त उन्हें सतस्त्र दिया ( इसक्र पर्याक्त सुर्यने कहा—'बेटा ! तुम बिन्ता न करे : कृमिनल बेस और रुपिर लेकर भूलोकको अले आयेगे, इससे तुन्त्रश चौव गलेगा परि, अच्छा हो जानमा और महास्थीकी आहारी दन लोकपाल - परको भी जल करोगे। तुन्तरी बहन पम्हणा जल महाजलके समान पवित्र हो जनगण और तपक्षेत्र जल नर्मदाजलके तुल्य 🌃 मारा बायमा । आजसे यह सम्ब सक्के देहोंसे अवस्थित होगी 🖒

ऐसी व्यवस्था और मर्थादा नियर कर वनकात् सुर्व दश प्रजापतिके पास गये और उन्हें कपने आगमनक करना बताते हुए सम्पूर्ण वृद्धान्त वन्ह सुन्वया। इसका दश विकास

कहर—'आको अति क्वान्ड तेजसे व्याकुल होकर आपकी भार्य उत्तरकुर देखने चस्त्री गयी है। अब आप विश्वकर्तसे अपना रूप प्रदेशक करना ले।' यह कहकर उन्होंने विकारमान्त्रे म्हलकर उनसे कहा—'विकारमान् । 📖 इनका मृत्य 📟 📟 🖿 दे 🗀 तब सुर्यको सम्पति प्रकर अपने कशन-कर्मरे सूर्वको हाला प्रारम किया । असूरिके समझनेके सामा सूर्यको असिकार पीछा ही को की और बार-बार पूछा का जाती हो। इसीरिस्के 📰 📰 सम अब्रु तो डीक कर लिये, 🖿 वय पैरीकी अञ्चलिकेको छोड विका एक सुर्य भगव्यन्ते कहा-क्रिक्कर्मन् ! अपने से अन्यत्र कर्म्य पूर्ण कर किया, परित् हम 🚃 🚃 हो रहे हैं। इसका कोई उपाय करानुये।' · अवयः - अनवन् । अवयः राजकान् और करकीरके पुर्णेका समूर्ण प्रतेरवे 📰 करें, इसमें तत्काल यह बेटना क्रमं 🖁 अपनी (' परावान् सुर्वने 🛗 📰 कंपनासुक्षार अपने 📆 प्रतिस्में कृत्या 📆 📖, जिससे 🗺 प्रारी बेडमा बिट नवी । उसी दिनसे एकबन्दन और करवीएंक पूज बनन्त्रम् सुर्वको 🕬 मा 🎒 गये और उनकी पुजाने प्रकृतः 🌃 तने । एर्पनगवानुके स्तरेगके सर्द्यनेके जो तेज निकता, कर रेजरे 🖼 📖 भरनेकरे 📖 निर्मण हुआ। भगवन् सुन्नि भी हाता उत्तम कप हाता प्रसन-**अभी अपनी भार्यके दर्जनोको उत्कान्द्रासे तत्कारः उत्तर-**कुमकी और प्रस्थान किया । वसीं उन्होंने देखा कि वह पोड़ीका

पर-पूरवरी आहोदारे विशे अपने दोनों नासपुटोसे सूर्वके तेजको एक बात बात केंक दिया, किससे असिनी-कुमारेकी उत्पंत हुई और यही देवताओंके वैध हुए। तेजके बात अज़से कित्तको उत्पंत हुई। तपती, हाने और सावविं—वे तीन संताने सावासे और बधुना तथा यम संज्ञासे उत्पन्न हुए। सूर्वको अपनी मार्चा उत्तरकुरुमें समग्री तिथिके दिन मान हुई, उन्हें दिव्य रूप समग्री तिथिको ही मिल्ल तथा संताने में इसी विविद्यों यह हुई, अतः समग्री तिथि भगवान्

सम्ब धारणकर विकास कर होते हैं। भगवान सुर्य भी अध्यक्त

को व्यक्ति पश्चमी विकिको एक समय पोजनकर पश्चीको

सर्वको 📰 📰 है ।

व्यास्ति करता है स्था सहमीको दिनमें उपकासकर क्ष्य-भोज्योके साथ विविध प्राक-पदार्थोको मगरान् सूर्यके स्थि अपिंग कर खद्दार्थोको देता है तथा गतिये मौन होकर पोयन करता है, वह अनेक प्रकारके सुख्येका पोग करता है तथा सर्थंत्र विजय प्राप्त करता एवं अक्तमे उक्तम विकासक क्ष्यकर सूर्यकोकमें कई प्रनामाधीतक निवास कर पृथ्वीपर पुत्र-पौजेशे समन्तित व्यास्ति एका होता विकार देशीकारकर्वन विकारक संभ्य करता है।

प्रजा कुरूने इस समयी-बस्त्य बहुत कारानाक प्रमुखन किया और केवार उसकाय है पोजन किया । इसीसे इन्होंने कुर-सेव नामक पुण्यकेत की किया और इसका नाम रखा पर्यकेत । समयी, त्याव, यही, तृतीया और प्रक्रमी—के विकित्य कुन इसम है और बी-पुल्योको केनेवानिका करू प्रदान विकित्य कुन है। मामकी संसमी, आधिकारी विक्रमी—के विकास है। इन महाना विक्रमी प्रसाद मानी पनी है। विक्रमी प्रकृत सम्मास इस बतायो प्रसाद मानी पनी है। विक्रमी प्रकृत महान कालोंको देन बाहिये और एडियो कर्य की उनका है। महान काला चाहिये। इस प्रकार कर प्रसादक क्रम कर बात कर पहरूप प्रसाद करना चाहिये। इस उनका के प्रकृतकार सुर्व प्रमुख प्रसाद करना चाहिये। इस उनका क्रम प्रकृतकार सुर्व प्रमुख करना चाहिये। इस उनकार कर प्रसादक क्रम कर बात करना

💬. 🚃 👊 १५ और पायसका नैकेश सुर्वेश्वरायनको सन्वर्गित करना चाहिये। ऋहायोको भी पावसका भोजन कराना चाहिये । दूसरे पारणमें क्रानके जलसे नकान पर्वकारकाको साम कराकर साथै गोमयका प्राप्तन करना चरित्वे और बेत चन्द्रन, सुगमित पुन्न, अगरका धूप तन्त्र गृहके अपूर वैनेदाने अर्थन करना खाहिये और ककि समाव होनेकर 🚃 पारण करना वाहिये। गीर सर्वपका उच्छन व्यास्त्र वनकान् सुर्वको सान कराना व्यक्तिये । इससे सन्पूर्ण क्या 📺 हो। जाते हैं । किर रसत्वनदन, करबीरके पूका, 🚃 📰 अनेक पश्य-भोज्यसहित दही-भात नैकेक्स्में अर्थन करना चाहिये. तथा बढ़ी ब्राह्मणीको भी भीजन करान नाहिये। भागवान् सुर्पनारायणके सम्बद्ध अञ्चलको प्राप्त-अवन करक 🚃 🚃 स्थपं अधिना शाहिये। অনুপৰী জীৱন সাম বীয়লিকটা কল-সামূহত, 📖 अर्थः देका प्रस्त 📖 पहिषे । पैराणिकके संतुष्ट क्षेत्रेयर चरावान् सूर्वतरायण प्रसन्न हो आहे है। १९४४क्ट्रा, करकेरके पूजा, गुजुलका भूच, मोदक, वायसका नैवेश, युन, सम्बद्धाः, पुरुष-प्रथः और चैरानिकः—ये 📰 भगवान् सूर्वको अञ्चल स्थित है। राजन् । यह प्राप्त-सहसी-इत धारकम् सूर्वको असि विस्व है। इस सलका करनेवाला प्रस्व भागकार्थ होता है।

(अच्योप ४७)

# भीकृष्ण-साम्ब-संबाद 📖 धगवान् सूर्यनारायवद्यते पूजन-विधि

सुमन्तु चुनि बोले—राक्त् ! इस विनया भगवान् श्रीकृत्य और उनके पुत्र साम्बक्त जो परस्य संकट हुआ था. उसीका मैं वर्णन करता है, उसे आप सुने।

एक बाब अपने पिता भगवान् औकुम्माते पूछा—'पिताओं! पनुष्य संस्तारमें कन्म-महत्त्वकर कीन-सा कर्म करे, जिससे उसे दुःसान हो और मनोवाध्वित फलोंको खार कर वह स्थर्ग प्राप्त करे तथा मुक्ति भी बात कर सके। इन विकास अपने वर्णन करें। मेरा मन इस संसारमें अनेक विकास अधि-व्याधियोंको देशकर अस्तरण अदास हो रहा है, पुढ़ी श्रम्भात भी जीनेकी इच्छा नहीं होती, अतः आप कृष्णकर ऐसा अधिन वन्त्रों कि जितने दिन भी इस संसारमें रहा जाय. वे आधि-व्याधियाँ पीडिन ■ कर सके और फिर इस संसारमें जन्म ■ ■ अर्थात् पीडा भार हो जाय।

भगवान् श्रीकृष्यने कहा—वस्ता देवताओंके भसादसे, उनके अनुभारसे तथा उनकी आराधना करनेसे बा सब कुछ अब हो सकता है। देवताओंकी आराधना ही बाब उचाव है। देवता अनुभान और आगम-प्रमाणोसे सिद्ध होते हैं। विशिष्ट पुरुष विशिष्ट देवताओं आराधना करे तो वह सामाने बद्धा—महाराज ! प्रथम से व्यक्ताना अमितायमें ही संदेह है, कुछ त्येग कहते हैं देवता है और कुछ कहते हैं कि देखता नहीं है, पित विदिश्न देवता किन्हें सम्बा जाव 🖣

भगवान् सीकृष्ण कोले---वस ! आगमधे, अनुवासी और अनुसारे देवताओंका होना सिद्ध होता है।

क्रिक्ट कहा—यदि देवता प्रत्यक्ष 📖 हो समस्ते हैं 📕 फिर उनके साधानके लिये अक्ष्यन और अक्षय-क्रयानकी कुछ भी अपेसा नहीं है।

श्रीकृष्य बोले—बस्स ! सर्थ 🚃 ऋषः 📲 होते । स्वयः और अनुसारके ही हकारी देखताओंका होना विद्ध होता है।

साम्बने महा—पितानी । 🔡 देवता प्रचळ है 🐙 विदिश्व एवं अभीड् 🚟 देनेव्यक्ते 🗓 पहले अस्य उन्होंका कर्णन करें । अनगतर प्रका तथा अनुवानमे सिद्ध होनेवाले देवलाओका वर्णन करें।

श्रीकृष्याचे कहा — यत्वश देवता 📗 📖 🛚 भगधान् सूर्यनारायम् 👭 है, 🕎 नकुन्त दसरा कोई दिस्स नहीं है। सम्पूर्ण जगत् इन्होंसे उत्तन हुआ है और अन्हमे **इन्होंने** जिलान भी हो जामाव<sup>र</sup> ।

सस्य आदि यूनी और काराकी गणना इन्होंसे दिन्ह होती है। प्रह, नक्षण, योग, करण, खींच, आदित्य, धस्, धर, धार् अप्रि, अभिनीकुमार, इन्द्र, प्रजापदि, दिइडरी, पृ:, प्रथ:, ३६-ये सभी रहेक और पर्वत, नदी, संबंध, नाग तथा सम्पूर्ण भूतामध्ये उत्पत्तिके एकमात्र हेत् भगवान् सूर्व-प्रकाल है 📳 🚃 सम्पूर्ण काकर-जगत् इनकी ही इच्छाने उत्पन्न हुआ है। इनमी ही एकारो स्थित 📗 और राजी इनमी ही इन्हारो

अपने-अपने व्यवकारमें प्रवृत्त होते हैं। इन्हेंकि अनुबहसे 📰 सार संसार 🚃 🚃 देता है। सूर्यभगवानुके उदर्क साथ कार्का उदय और उनके अस्त होनेके साथ जनत् उसत् होता है। इससे अधिक न कोई देवता हुआ और न होता। वेदादि आओं तथा इतिहास-एरामादिने इतका · अन्तरका आदि सन्दोसे प्रतिपादन किया गया है। 🗏 🚟 ज्या है : इनके सम्पूर्ण गुले और प्रधानीका वर्णन सी 🔤 🔛 🔤 🗃 समस्ता । इसीरिजर्व दिवाकर, पुष्पकार, अवके कामी, सम्बोध 🚃 और संस्था संसर करनेकाले की ये ही कहे गये 🛊 । ये 📰 शायदा है।

🖫 पुरुष सूर्व-मण्डलको रचनकार प्रतः, मध्यप्रह और कार्य इनको पुरा कर इपकार करात है, यह परपारिको जार करक है। किन को प्रत्यक्ष सूर्यकरायगणन मस्तिपूर्वक पूजन करतः है, उसके रिज्ये क्षेत्र-सा पदार्थ दुर्लभ है और जो अपनी अन्यक्ताने हो बन्धलस्य धान्यन् सुर्वको अपनी सुन्निहोत्। निश्चित कर देखा है तथा देखा समझ्यार यह शमन ध्यानपूर्वक पूरत, इका 🖦 ३५ करत 🗓 📖 सभी कमनाओंको 🚃 करता 🛮 और अन्तमें इसके रमेकको 📖 होता है। इसरिन्ये हे एवं । बार तुम संस्थली स्टब्स खाइते हो और भूतित तथा मुक्तिको इच्छा रकते हो ते विधिवृत्येक प्रत्यक्ष देवता धगवान् 

तथा अवधिनविक्ति कोई भी द:क नहीं होंगे । जो सूर्वभगवान्त्रते अरममें जाते हैं, अनमो किसी अभारका भय नहीं होता और उन्हें 🛍 होक तथा परहरेकमें 📠 सह प्राप्त 🛤 🕏 । स्वयं भैने चगवान् सूर्यको बहुत कालतक मधाविधि कराकन 📰 है, उन्हर्क कुलारे यह दिवय जन मुझे प्राप्त हुआ। है । 📖 बहुबर प्रमुखोके हितक। और कोई उपाय नहीं है ।

(SY PRIME)

## श्रीसर्वेनारायणके नित्वार्चनका विधान

सूर्यनारायणके पुअनका विभाग बताते हैं, जिसके करनेसे सम्पूर्ण पाप और विभ नष्ट हो जते 🛮 तथा सभी मनोरबोदी

मगवान् औकुभाने कहा—सम्ब ! 🚃 📉 सिद्धि होती है और पुष्प को प्रात होता है । प्रात:काल उड़कर त्रीय अस्ति निकृत हो नदीके तटपर जाकर आचमन करे तथा सुबेदेशके समय सुद्ध पुरिकाका सरीत्पर रोपन 📖 स्त्रन

करें । पुनः आवसन कर शुद्ध करा घरण करे और सामग्र सन्धं 'और सरवीरकाय स्थान' से सूर्यमानकान्छे अर्थ दे तथा इदयमें मन्त्रम म्यान करे एवं सूर्य-मन्दिरों आवस सूर्यकी पूजा करें । सर्वप्रथम अद्धानूर्वक पूरक, त्यक और कुम्मक सामा सामग्री कर वायकी, आक्रेजी, मन्देन्द्रे और वारंजी घरणा करके मृतशुद्धिकी वैतिसे शरीरका सोचण, दहन, सामग्री और प्रका करके अपने शरीरको सुद्धि कर लें । अपने शुद्ध इदयमें भगवान् सूर्यकी भावना कर स्थि प्रयान वरे । स्थूल, शुक्ष शरीर तथा इत्योको अपने-अपने स्थान वरे । स्थूल, शुक्ष शरीर तथा इत्योको अपने-अपने स्थान वरित्ती स्थान, स्था सामग्री स्थान करा, ४० को स्थान वित्ती स्थान, स्था स्थान स्थान विकास स्थान, ४० को स्थान स्थान अस्थान कर ।

—- हम मानीके अञ्चलका कर पूजा- काराविक पूण कारावे अभिनानित जलाहरा प्रोधान करे। किर स्पृत्तिन पूजारे क्षित्र सरक सूर्व-मृतिये और गरिके समय अधिये वाहिये। मधानेकारणं पूजीपमुक, स्वयंकरत्ये प्रीधानंत्रमुक व्यक्ति उत्तराधिम् क होकर पूजन करनेका विकास है। 'श्री सर्वोक्ष्यका स्वाहा' इस समाधर पूछ व्यक्ति स्वयंक्ष्यक्रि बीध पार्टाल-कामलका व्यक्ति कार्य उसके प्रकार स्वयं किरणोसे देवीच्यान भगवान् सूर्वनावक्ष्यी सूर्वेक्ष्य ध्याप करे। किर रक्ताकर्म, अस्तिर आदि संस्थुओं, पूछ, ख्री, अनेक प्रकारक नेक्स, प्रकार्यका आदि उपकारोरे कृत्य करे। अवस्था रक्ताचन्द्रससे तामकार्ये क्ट्रार-कमार व्यास्थ उसके कार्यो सभी उपवारीसे भगवान् सूर्वनारायपका पूजन करे। वाले ट्लीमें वडाइ-पूजन ब्या उत्तर आदि दिशाओंमें सोमादि अट ब्यामी अर्थन करे और अधिदेववाली तथा उसके आयुर्वोच्य के उत्तर दिशाओंमें पूजन करे। नामके आदिमें व्यास समावार जाको चतुर्वी-विभातायुक्त करके अन्तमें नमः करे— ब्यामी अर्थन करे। अन्तरार कोर्य-मूड, रवि-मूड, च्यामी समावा पूजन करे। अन्तरार कोर्य-मूड, रवि-मूड, च्यामी समावा पूजन करे। अन्तरार कोर्य-मूड, रवि-मूड, च्यामी समावा पूजन करे। अन्तरार कोर्य-मूड, रवि-मूड, च्यामी क्यामी समावा पूजन करे। अन्तरार कोर्य-मूड, रवि-मूड, च्यामी मूडाई ब्यामी वय, कार्य, कार्य अर्थिक व्यासिक व्यासिक

प्रस्ता कर विशेष प्रतिपूर्वक सम्पन्नके व्याप्तान पूर्वनावक्षणक पूजन करनेसे सभीह मनेस्थीको जिल्ल होनी है । इस विधिसे पूजन करनेस हैंगा रंगमे मुक्त हो जाता है, बनहीन धन जात करता है, वनहीन धन जात करता है। वृद्धनावक्षणक पूजन करनेकाल पूजन प्रत्न प्रति है। वृद्धनावक्षणक पूजन करनेकाल पूजन प्रति है। वृद्धनावक्षणक पूजन करनेकाल पूजन स्ता है। वृद्धनावक्षणक पूजन करनेकाल पुरस्त प्रति है। इस प्रति होती है। ऐसा पूर्वकल्पन्न पूजन करनेस कन भाग, संसान, पद्म आदिको मिला अधिकृदि होती है। सनुष्य निकास हो जाता है तथा असको तक सहित जात होती है। (अक्षांच ४९)

# भगवान् सूर्वके पूजन एवं इतोद्यापनका विधान, हादश आदिखोंके

नाम और रक्षसमुपी-व्रतकी पहिपा

भगवान् श्रीकृष्णने प्रदेश—सम्ब ? अन मैं सूर्वके विशिष्ट अवसरोंपर होनेवाले कत-उत्सव हो पुनाने विधिपांका वर्णन बात हूँ, उन्हें सुने : किसी मासके सूक्ष्मक्षकी सामग्रे, पहण या संक्षालिके एक दिन-पूर्व एक बात हविष्यालका मोजन कर सामकालके समय घलीपाँत बात आदि करके अठणदेकको बाता करना वर्षिये तथा सभी इन्द्रियोको बाता पणवान् सूर्यका ध्यान बात वर्षिये जपीनपर कुशकी सम्बापर बाता बाहिये। दुसरे दिन भागानास नव्हरण भागानास माना विधिपूर्वक स्तान सम्पन्न करके संच्या करे स्वां पूर्वेक मन्त्र 'ठ सालोत्स्वाच स्वाहा' का अप एवं सूर्वपणवान्त्री ह्या करे। आंग्रको सूर्यतापके रूपमे समझकर वेटी बनाये और संक्षेपमे हवन तथा तर्पय करे। गायती-मन्त्रसे ओखनकर पूर्वाम और उत्तराम कुझा बिखाये। अननार सभी पालेका सोचन कर दो कुझाओंकी प्रादेशमालको एक पवित्री बनाये। ह्या पवित्रीसं सामी वस्तुओंका प्रोक्षण करे, थीको अंग्रिक स्वांदर विवक्त से, उत्तरको और पापमे उसे रख दे, अनगर जरको हुए उल्युक्त पर्योग्रकरण करते हुए कृतक तीन बर उत्प्रधन करे । सुवा आदिका कृतीक द्वारा परिवारोन और समोक्षण करके अधिमें सूर्यदेकको पूजा करे और स्थान समो स्थान वह सभी कियाई सम्पन्न करने चाहिये। पूर्णाहरिके पक्षाद् सर्पन करे । अनन्तर क्यानोको उत्तम कोजन कराना चाहिये और समावर्गिक उनको दक्षिण को देवे व्यक्तिको ऐसा करनेसे मनोगाजिसन करको साथ होती है।

स्वय व्यवस्था व्यवस्था वरून सम्बद्ध सूर्यको पूजा को । इसी प्रवार कम्प्राः पाल्लुमाने सूर्व, बेक्से बैदनका . व्यवस्था पाता, ज्येष्ठामें इन्द्र, आक्यूमें रांच, अक्यूमें नथ, व्यवस्था पान, आधिनमें क्यूमें क्यूमें क्यूमें कहा, क्यूमें क्यूमें विश्व सभा पीच साममें विक्यूमानक मूर्यका अर्थन करे । इस विविक्ते बारती मानमें अरम्पर-अरमा नामोने भगवान पूजा पूजा करनी पाति । इस प्रवार शहा-भनित्यूर्वक एक वित्र पूजा व्यवस्थान वर्ष क्या पुजाना करना का को कना है।

उपर्युक्त विधिसे एक वर्गतक इस कर रक्षणीटन सुवर्णका एक रथ जननाये और उसमें साल केंद्रे करवाये : १४के मध्यये भौतिक कामलके क्रपर स्त्रीक आधुकरीके आरंजुर सूर्य-नारायकार्या सोनेकी पूर्ति ज्यापित क्ये । रक्के अलो इसके मार्थको केन्त्रमे । अननर 🚃 इन्हरनोपे 🚃 🚃 सुर्योकी 🚃 कर तेरहवे पुरुष आरमार्वको स्वध्याद पुर्वनाग्रयण समझकर उनकी पूजा करे तथा उन्हे एथ, 📖 भूमि, गौ आदि समर्पित करे । इसी प्रचय राजेके आभूकर, बस्त, दक्षिणा और एक-एक भोड़ा उन बारह अहालोको दे राचा हाथ ओइकर यह प्रार्थना करे—'ब्लक्ष्मच देवनाओ ! इस सुर्ववरको उद्योपन करनेके बाद यदि असमर्थतास्य काने मुर्वप्रत न कर सक् से मुझे दोन न हो । बहुवर्षेक स्थ्य आचार्य भी 'प्रवमस्त' ऐसा करूबर करमानको आर्थार्थाद दे और कहे — 'सूर्यभगवान् तुमक्र प्रमन्न 🕏 । जिस मनोरधकी पृक्षिके रिज्ये तुमने पन्न वत किया 🖥 और भगवान् सूर्वको पूक की है, यह शुम्हारा भनेश्व मिद्ध के और भगवान् यूर्व उसे पुरा करे । अब इस न करनेपर भी शुमको दोष नहीं होगा ।" इस

प्रकार आशीर्वाद प्राप्त कर दोनों, अन्यें तथा अनायोको यथाशकि पोजन कराये तथा बाह्यजीको पोजन कराकर,

🌃 पर्याक्त इस स्वाप्यी-शतको एक वर्षतक करता है, 📖 सी केवल संबे-केंद्रे देशका 🚃 राजा होता 🛭 और इस तराके फलसे सी क्वोंसे भी अधिक निकरण्यक शाम करता 🕯 । जो बड़ी इस इंडक्ने करती है, यह धनपत्नी होती है । निर्धन व्यक्ति इस संस्को राजविर्धाय सन्तर कर बरालायी हुई विधिके अनुसार समित्र रथ बाहानको देख है से वह असरी योजन लेक-क्रीय राज्य का काता है। इसी प्रकार आरेका रथ बनकार कर करकेकस्य साठ कंपन विस्तृत प्रश्य प्राप्त करता है तथा यह विराय, नीर्यन और सुरते रहता है। इस ब्रह्मके करोसे कुछ एक कल्पाक मुर्वकोको निवास करनेक प्रश्नात् राम होता है। यदि कोई व्यक्ति मगवान शृष्की मानसिक आरुवान के बारक है से वह भी प्रवास आधि-व्याधियों है रोहत 🖮 स्वस्युर्वक क्षेत्रम कालील करता है। जिस्स प्रकार भक्तान् मुक्तां कृता स्वतं 🌃 का पाता, उसी 🚃 कर्नासक पुरु विविद्या साधभन्ते कियो प्रकारको आयोतको स्कृत नहीं कर 🔤 🔛 प्रजीक द्वारा असिपूर्वक विभि-विभागमे सन सम्बन्धः 📖 हुए भगवान् सुर्यमरायणकी अस्तर्थन की के किए इसके विषयमें क्या कहना ? इस्तरियं अपने करणालके लिये भगवान सुपंकी दुना अवस्य करनी व्यक्तिये ।

पूज ! सूर्वनसम्बद्ध इस विधि-विधानको लग्ने अपने पूजाने मुझमे बन्ध था। आजनक उसे गृह रसकर पहली बार मिंगे सुबसे बन्ध है। येने इसी बनके प्रधानमें हमारों पुत्र और पंजीको जान किया है, देखोंको जीता है, देखताओंको प्रश्नों किया है, येर इस च्यामें स्वा सूर्वभगवान् निवास करते हैं। जहीं को इस च्यामें इतना तंज कैसे होता ? यही कारण है कि सुक्ताप्यक्षम निरंग जप, ध्यान, पूजन आदि करनेसे मैं वगत्वा पूज्य हैं। बन्ध ! तुम भी पन, वासी तथा धर्ममें मूर्वजाप्यक्षम आवधना करें। ऐसा करनेसे सुन्दे विविध सुन्त जान सेंगे। वो पुरुष मिंग्युर्वक इस विधानको सुनता है, बा

१- प्रायः अन्य सभी पुरुष्यंने चैत्रदि बारह पहीनेचे पूर्वके ये सम जिल्लो है— चरा, अन्येय, स्था, करण, इन्ह, विकासन, पूछ, पर्यन्य, अंध, भाग, त्याष्ट्रा और विरुष्ट्र। करपर्यक्षेत्रे अनुस्ता नामीचे चेट हैं ।

भी पुत-पीत, आरोग्य एवं रूथमीको प्राप्त करना है और सूर्यरुपेकको पी प्राप्त हो जाना है।

भ्येष्ठ आदि चार महीनोमें क्षेत्र चन्द्रन, क्षेत्र चुन्द्र, कृत्रक आगठ चूप और उत्तम नैनेद्र सूर्यनागयकको स्थल काला चारिये। इसमें पञ्चगन्वज्ञासम कर स्वद्रानोको समृद्ध चेदान कर्मना चारिये। आधिन अवदि चार प्रास्तेने अगस्य-पुत्र, अपराणित थूप और गुरुके पूर आदिका नैनेश तथा इसुरस भगवान् सूर्यको सम्पर्कत व्यक्त प्राहिषे। स्थानाहित बाह्मण-पोकन कराकर आस्मसुक्ति लिने कुलाके अस्त्रो स्वत करना पाहिये। उस व्यक्तिका लिने कुलाके अस्त्रो स्वत्र करना पाहिये। उस व्यक्तिका राजका दान करे और सूर्यमगवान्त्री प्रस्त्रताके लिने वाचानोत्स्रवाच काचोजन करे। महापुष्पदाधिनी व्यक्ति स्वत्रीको स्वयस्त्री व्यक्ति गया है। व्यक्तिसमित नामसे अधिका है। राजनाहर्यको को प्रकार व्यक्ति क्रियं प्रस्ता वन, विद्या, पुत्र, आतेन्य, आपु और उस्तानेत्रम क्रियं प्रस्तु करना है। हे पुत्र । तुम भी इस सत्त्रमे करो, जिससे तुम्होर सामे इस्तेहरोको सिर्वेड हो। व्यक्त व्यक्तर प्रमु, स्वत्र

सुष्यमुने कहा — राजन् ! उनको आहा पाश्य सहमाने थी भवितपूर्वक सूर्वनाराज्यको आराधनामें तत्का हो रचमासमीका त्रम कित्या और मुक्त हो सथपमें रोजम्युक होकर समीवाज्यिक पाठ सात कर निका"। (अध्योध ५० – ५१)

गळ-प्रयासी औक्तर अन्तर्रत से गरे।

## सुर्वदेवके रह एवं उसके साथ भ्रमण करनेकाले देवता-नाग आदिका वर्णन

राजा भ्रातानीकाने पूजा — मूने । सूर्वन्याकाकी रथपात्र किस विधानसे करनी पासिये । २व केन्द्र कांक्रा चारिये ? इस रथपात्राका प्रचलन मृत्युक्तेकचे विधाके प्रशा तृजा ? इन सम पासीकी आप कृताका मुक्ते कललाये ।

सुष्यम् सुनि बोले --- राजन् ! किसी काम सुपेर पर्यतपर संग्रामीन घरानाम् रहते बावाजीसे पृष्ठा--- 'अध्य ! इस लीकको प्रकारित करनेवाले भागवान् सूर्व किस प्रकारके रथमें बैतकर भ्रमण करते हैं, इसे आप कामरे !

सहारकीने कहा—कियोगन! सूर्वनाशत≅ जिस प्रकारके रथमें बैडकर भ्रमण करते हैं, इसका के कर्पन करता है अप मनद स्ते।

एक हाता, विशेष स्थित, पणि और तथा खणीम्य अति व्यक्तिमान् आठ बन्धीसे युक्त एवं हाता नेपिसे सुप्रक्रितः— इस प्रकारक दस हजार बोजन रहेते-चोड़े अधिकाप प्रकारामान अपरे-१चमे विराजनान परावान् सूर्य विवरण करते रहते हैं। एकके उपाचमे ईचा-टच्च जीन-गून्य अधिक है। नहीं उनके आर्थि अच्च बैठते हैं। इनके एक्का युआ सोनेका चना हुआ है। इचमें काबुके स्थान बेगवान् छन्दक्वी सात घोड़े जुते रहते हैं। संवस्तान्ये जितने अवयत्त होते हैं, वे ही रकके अङ्ग है। लेने बाल कावकी जीन गरिमयों है। पाँच ऋतुएँ और है, छड़ी

१- विम्स दिन **व्याः दिनका अधिक अ**का जिलाका सार्थः का प्रवेशः निर्माणमा बीजान व्या पूर्णः तम इकाव्यः व्यावस्य विद्यास व्यावस्य है, हुने एकपुरु-अस्य कार्यः वान्य के और दिनमार प्रत्यक्तका प्रिक्तं केवल व्यान्तः व्यावस्य है।

<sup>े</sup> रेक्समधीक विकास करवास्त्र, करवास्त्रहर, समाय आदिक अभिन्य करवृत्य मा कानुस्त्रको आध-सात्रकारी पहर विकास अर्थ इत-विकास विकास हुआ है और कुछ प्राकृति के इस्ते शिष्ट भागान् सुर्वेत स्थान करवन अर्थकारी प्रचय मान करवेता उस्तेन किया गया है। जैसे रामकापीक स्था अर्थन्त समाय अर्थकारी स्था अर्थकारी स्था अर्थन्त समाय अर्थकारी स्था अर्थकारी स्था अर्थकारी समाय कर आर्थ है।

प्रात नेमि है। दक्षिण और उत्तर—वे दो अधन शर्थक दोनो भाग है। महर्त स्वके उच्, करल, दान्य, काहरू, स्वके कोल, सम असरम्ब, निर्मेष रक्षके कर्ण, ईम्ब-दम्ब सन, सनि क्याय, धर्म रथका प्याव, अर्थ और काम प्रशिक्त अञ्चलन, गायजी, विष्ट्य, जगती, अनुष्ट्य, पीकि, बृहती तथा उन्जिक् — वे सक सन्द भारत आधा है। धुरीयर चक्क पूमला है। इस चकारके रथमें बैहक्त भगवान सर्व निरक्तर उत्कारको प्रकल करते रहते है।

देव, प्राप्त, गन्धर्म अध्यक्ष, चन, चनमा और राजस सुर्वक रहके साथ पुषते रहते हैं और दो-दो कारोंक बाद इसी परिवर्तन 🗒 जाब है।

धाता और अर्थमा—ने हो अतदित्य, पुरुषय तथा पुरुष नामक दो ऋषि, सम्बन्ध, वास्तुंक नामक दो जन, तृन्दुर और तार, ये हो गुन्धर्व, प्रत्युकारक तथा पुष्टिकारकाण के अध्यसाई, रचकुरका तथा रचीका ये दो यस, हेति तथा क्रोफी समझे हो एक्स में इसका के और वैश्वास भागी रचके आने 📖 करते हैं।

मित्र तथा करण पामक दो आदिता, 🚟 सक 🛚 ये हो ऋषि, तक्षक और अनन्त हो नाग, मेनका तथा महत्त्वन्य ये हो अस्पराएँ, हाहा-हुट् दो गन्धर्य, रक्तवान् और स्थापित ये दो पक्ष, ब्रीस्पेय और मध नामक दो शक्तर क्रमफ़: 📺 त्रचा आवाद कसपे सुर्वत्थके बाध चलके करते हैं।

शायण तथा भारपदमे इन्द्र तथा क्रिक्टबन् सम्बद्ध दो आदित्य, अम्रेश तथा भूग नामक दो ऋषि, एतमको तथा शहापाल थे दो नाग, प्रम्लेचा और दुंदुका नामक दो अपरार्ध, भानु और दुईर नामक गन्धर्व, सर्प तथा सदा 🚥 ये ग्रसस, स्रोत तथा अपूरण कमके 🖺 वस सुर्वरक्के 🚥 चलते रहते हैं।

आश्वन और कार्रिक पासमें कांन्य और पूज नामके दो आदित्य, 🚃 और मैतम कमक दो ऋषि, विक्रतेन तथा वसुरुचि न्यमक दो गन्धर्व, 🚃 तथा पृताची 🚃 दो अपरार्ध, देखका और धनक्रम क्रमक दो नाग और सेन्ट्रिय तथा सुवेण नामक दो यक्ष, 🚃 एवं कत कल्क दो उत्तरस सूर्यस्थके साथ चला करते हैं।

मार्गशीर्ष तथा पौष मासने अन्य तथा पर नामक

दो अस्टिख, कदक्क और कत् नामक दो ऋषि, महापंध और क्वोंटक क्वक दो नाग, विज्ञानुद और अरणायु नामक दो कन्दर्व, सहर सन्त्र प्रहरूपा जनक दो अध्यस्पर्ग, नाश्य तथा अस्ट्रिकेम कामक प्रथा, आप तथा वात जमक दो राखस शुर्वरथके साथ चला 📖 है।

भा<del>ष-कारण्</del>नमें क्रमकः पूज तथा जिल्ला नामक दो उम्बद्धित अपद्रित और विश्वापित नामक दो ऋषि, क्यारवेय और कम्बलस्था ये दो नाग, घुलग्रह नथा सुर्पवर्ण नामन के चन्नवं, विकोतक और एका ये हो अवसाएँ तथा संगजित और सर्वावत् नामक दो यक्त, ब्रह्मोपेलं तथा यहाँपेस नामक **के राधम सुर्वरथ**के साथ चला करते हैं'।

**व्याजीने कहा —** सहदेव ! सनी देवसओंने अपने 📺 📰 अम-सर्वोको भगवान सुर्वको स्थापे कियों इन्हें दिया है। इस प्रयत्ना स्था देवाना उनके रचके साब-साब चमन बरते ताने हैं । कुन कोई भी देखता नहीं है अं श्वके की । अले : इस समीटकारण सुर्वनारायकारे 🚃 📉 प्रायमम्म, महिक स्वायस्य, भागदक्त विकासक्य 🚃 हैय दिश्यकरूप यानते हैं । पे स्थानाभिमानी 🚟 📰 📰 भगवान् सूर्यको आप्यापित करते रहते। है। देवता और ऋषि 🚃 भगवान् सूर्यको स्तुनि करते एतने है, मन्बर्ध-राज पान करने रहते हैं तथा अध्यक्षणे स्थके आगे. कुल करती हुई बलती पहली है। एक्स स्थक पीछे-पीछे चलते हैं। साठ हकार चालचित्रंथ अधिगण रचका भारी ओरसे पेरबर करते हैं। दिवस्पनि और स्वयम् रचके आगे, भर्ग अोर, 🚃 वापीं ऑर, क्लंब दक्षिण दिस्तमें, चरुण उत्तर दिशाने, वीतिहोन और द्वार रचके पीछे रहते हैं। रचके पोठमें पृथ्वी, यहरूने आकादा, रचकी कान्तिमें सार्ग, ध्वाजां। दण्ड, प्रवासको धर्म, प्रताकामे ऋदि-वृद्धि और 🖩 निवास 📰 है। अक्षत्रदेखके उत्पर्ध भागमें गरुड तथा उसके उत्पर क्षण स्थित है। केशक पर्वत सत्रका देखा, हिमानेल स्थ हंग्यन सूर्यक साथ रहते हैं। इन देवताओका बल, गा, तेज, केम और तस्य बैसा है वैसे ही सुर्वदेव तपते हैं। ये ही देवगण 🔤 है, बरसने है, सृष्टिका पालन-खेवण करते हैं, जीवींके अञ्चल-कर्मको निवृद्ध करते हैं, प्रश्वओको आनन्द देते हैं और सभी प्राणियोंकी रक्षणे तिये भगवान् सुर्वक स्वय प्रमण करते (इते हैं। अपनी किर्योधे स्वाण्या वृद्धि स्व सूर्व-मगवान् देवताओंका पोषण करते हैं। सुझ पक्षणे सूर्य-किर्योधे चन्द्रमाकी क्रमणः वृद्धि होती है और कृष्ण पक्षणे देवगण स्वाप्त प्रम करते हैं। अपनी किर्योधे पृथ्वीका रस-पान कर सूर्यनागवण वृष्टि करते हैं। इस वृद्धिसे सभी ओविषयों उत्पन्न होती हैं तथा अनेक प्रकरके मन भी उत्पन्न होते हैं, विससे पितरों और मन्त्योंको तुर्वत होता है।

एक व्याचन १६म अनुसार सूर्यक्रमण बैठकर एक अहोराइमें सातों द्वीर और समुद्रोंसे युक्त पृथ्वीक पाते विकास प्रमण करते हैं। एक वर्षमें ३६० वस प्रमण करते हैं। विकास पूर्व अध्ययक्तीमें जब पश्चाद होता है, तब उस समय पश्ची संपानी पूर्वी सूर्योदय, यहनाको सुखा अध्ययि वृत्योत होता है। संपानीमें और सोमबर्ग विचा गामको कारीये सूर्यांत होता है। संपानीमें अब पश्चाद होता है, तब मुख्यों हुन्यांत वस पण्याह होता है, उस समय विभागे उदय, अंगशवतीमें आणी रात और संवयनीमें सूर्यास्त होता है। विभा नगरीमें अप आणा होता है, तम अमरावयीमें सूर्योद्ध संवयनीमें आधी रात और सूच्या चण्यां वरणायों नगरीमें सूर्यास्त होता है। इस अवस्य मेंस पर्यास्त प्रशिक्त करते हुए भगवान् सूर्यका उदय और अस्त होता है। प्रश्वतमें प्रभाहतक सूर्य-विद्यांकी सूदि और प्रध्याद्धी आहराक द्वारा होता है। जाई सूर्योद्ध होता है। एक पूर्व दिशा और उस्त आणा होता है। जाई सूर्योद्ध होता है। एक पूर्वने पूर्वका तीसार्थ पान सूर्य स्त्रीय पाने हैं। सूर्य-भगवाद्ध उदय होते हो प्रतिद्य इन्ह पूजा करते हैं, मध्याद्धी करता, असर्वक आणा परण और अर्थविनमें मीम पूजन करता, असर्वक आणा परण और अर्थविनमें मीम पूजन

विष्णु, जिल, कह, सहस, अस्ति, व्यपु, निर्मात, ईशान विष्णु देवगण्ड व्यक्ति सम्बोधिक साहामेरकारे करूपाणके विष्णु विष्णु सुर्वेकी अवस्थान क्यों रहते हैं।

(Spring 1/5-1/8)

# भगवान् सूर्यकी महिमा, विश्वित्र ऋतुओंचे उनके।

भगवान् सहते कहा—सहन् । असने पर्यकत् सूर्वनारायणके भारतस्थका विकास, विकास सूर्वनेते हमें बहुत आनन्द मिला, कृताकर आप उनके व्यक्तवका और वर्णन करें।

महानि बोले—हे रंग्र ! इस्तालकार पैरनेक्के पृत्य पणकार मूर्गनागण ही है। देवता, असूर, महत्त्व आदि सभी इत्तीने उत्तम हैं। इन्ह, फड़, ठड़, असूर, निष्णु तथा दिना आदि जितने भी देवता हैं, सबने इन्होंका तेल काता है। और विधिपूर्वक दी तुई आहुति सूर्यमणकान्त्रों ही कह कोते है। भगवान सूर्यसे ही वृष्टि होती है, वृष्टिसे अकादि उत्तक कोते हैं और यही अस साविधोंका जीवन है। इन्होंसे जन्दकी उत्पत्ति होती है और अन्तमें इन्होंसे सभी सृष्टि विस्तेन हो सावि है। ध्यान करनेवाले इन्होंका ध्यान काते हैं तथा ये पोखकों इक्स रसनेकालके लिये पोक्षकारण है। बांट सूर्यभणकान् व हो तो क्षण, मुहूर्त, दिन, यवि, पक्ष, मास, अस्तु, अधन, वर्ष तथा पुण आदि काल-विभाग हो ही नहीं और काल-विभाग

# उनके बार्क कर्य 🖦 उनके फल

व हिन्स जगन्तर कोई स्थापार भी नहीं घण सकता। अनुओवर विभाग ह से तो फिर फल-फूल, संती, ओशिधर्षी आदि विश्व क्या से सकती हैं ? और इनकी उत्पक्षिक विता अधिकांका स्थाप भी कैसे रह सकता है ? इससे पर सरह है सिंडम (धरानरात्रका) विश्वके मुस्तभूत कारण भगवान् सूर्य-सम्बन्ध से हैं। मूर्यकरावान् वसना अनुमें क्यिक वर्ण, प्रोक्सी तब सूर्यकी स्थात, वर्णने केत, उत्तर अनुमें पाण्डु-वर्ण, हेम्पलने सासवर्ण और जिक्कि अनुमें स्वावर्णके होते हैं। इन क्योंका अस्था-अस्या कार्य है। स्ट. ! उसे आप सुने।

यदि मूर्यभगवाम् (असमयमे) कृष्णवर्णके हैं तो सम्प्रत्में पंच होना है, तासवर्णके हों तो सेनापतिका नाश होता है, पीतवर्णके हों तो एजकुमारकी मृत्यू, खेत वर्णके हों तो राजकुर्वोहतका स्वंस और चित्र अस्ता भूमवर्णके होनेसे चौर और शतका भव होता है, परंतु ऐसा वर्ण होनेके अननार यदि वृष्टि हो स्वा है तो अनिष्ट फल नहीं होते\*।

(अभ्याव ५४)

## धनवान् सूर्वका अभिनेक एवं उनकी स्वयान

रहते पूछा—सहर्! भगवान् सूर्वको रभवात का और किस विधिसे की जाती है? रचकात करनेवाले, स्वको सींचनेवाले, रचको वहन करनेवाले, रचके साथ जानेवाले और रचके आगे नृस्य-गाम करनेवाले एवं राजि-सावरण करनेवाले पुरुषोको क्या परस साथ में है? इसे आप सोवकस्थालके लिये किस्तरस्थांक कराइये।

1

जहरूकी **मोले**—हे सह 1 आपने स्मृत करन करा किया है। **व्या** व इसका विशेष करना है, व्या हमें स्थाप-मनसे सुदे।

भगवान् सूर्ववर्ष स्थानक और प्रयोक्तन—ये दोने जगत्के करपालके स्थि मैंने प्रवर्तित किये हैं। शिवर देखने ने दोनों महोरसम् आयोक्तित किये ब्रि. है, वहाँ दुर्विक ब्रि. ब्रि. वहाँ दुर्विक और न केरी आविका कोई वस है रहत है। इसस्ति दुर्विक, अवस्ति आदि अवस्थित स्वांकि स्थि इस उत्स्वोको मगान किया । स्थानका दुरु विक्रि व्यक्तिके पूर्वके हारा भगवान् सूर्वको अद्युव्वक स्थान करान व्यक्ति । ऐसा करनेवस्त्र पूरुष सोनेके विमानने कैठकर व्यक्तिकाल जाता है और वहाँ दिस्स भीग प्राप्त करता है। अर्थ व्यक्तिके भारत्के भगवान् सूर्वको अपित करता है, यह सारत्वेकको भारत्के भगवान् सूर्वको अपित करता है, यह सारत्वेकको अस्ति है। ओ असिदिन मगवान् सूर्वको भारत्वके प्राप्ति है।

पीय सुद्ध साम्मीको नीधीक शतः अधवा परिश्व शतःको वेदमनोके हारा भगवान् सूर्यको स्तन आता व्यक्ति । सूर्य-भगवान्के अधिनेकके समय प्रथान, पुष्पर, कुल्लेप, निर्म्य-पृथ्दस (पेहमा), सोपा, गोकर्ण, महत्वतं, कुल्लां, विस्त्यक, नीरुपर्यंत, महतद्वार, महत्त्वामन, करस्क्रिय, विश्वन, भाष्टीस्वन, क्रमतीर्थ, रामसीर्थ, महत, वसून, समस्त्री, सिन्तु, चन्द्रपाण, काँद्रा, विपादम (व्यासनदी) , तापी, शिवा, नेकस्ती (वेसचा), गोटकरी, पर्योच्पी (मन्द्रांसिनी), कृष्णा, नेक्स, सराषु (सरस्त्रा), पुन्तांतिणी, वौदित्रमी (वोसी) तथा सरपु आदि सभी सीची, निद्यो और समुद्रोधत स्मरण करना चाहिने । दिव्या आक्रमी और देशस्थानीका भी समरण करना चाहिने । इस प्रकार कान करकार तीन दिन, भात दिन, स्मान अपना सामा साम अभिनेकके स्थानमें हो क्यासन्त्रा अधिकास करे और प्रतिदिन मस्तिपूर्वक रूनमी करसा हो।

मान वार्त्यक कृष्ण पश्चामें सहायोगों बहुत्य करवाही तथा अविदिसे स्ट्रोबिस चौबीए एवं चौद ईटीसे बनी वैदीयर कृषेक्कक्वके प्रतिवर्धित स्वर्धित 📰 तवन, ब्रह्मण-पोजन, केद-फड 🚟 📖 प्रकारके मृत्य, गीत, 📖 आदि स्तिकारी करना काहिये। सामावर साथ शहर कर्**वीको** अन्यन्ति जत करे, पद्मगांको एक कर भोजन करे, पहाँको व्यक्ति सम्बन्ध ही भीतान को और कहानोको उपनास कर हमन. व्यापन विकास करें। शक्यों दक्षिण देखा कैर्यानकार्धः चर्लकाति पुत्रः करे । तरनकार रजनदित सुवर्गके 💷 परवान् सुर्वको 🚃 को । उस 🛗 👊 🔛 व्यक्तिक 🔤 हो सहा करे। स्रोतमें जानतम करे और क्य-मेत परस्क है। याच उत्तर अहमेको स्थापना करनी **पार्वित । एकके आ**गे विविध्य **क्षावे काले रहें, गुरुव-गील औ**र पहुल बेदच्यति संती रहे । रचवात्रा प्रथम नगरके उत्तर दिशासे प्रतम्म करनी चारिये, पनः सम्पदाः पूर्व, 🎹 और पश्चिम दिकाओं के असम कराना चाहिये । इस क्षाक रचपाना करनेसे राज्यके सभी 🗯 अन्त 📕 जाते हैं। राजाको युद्धपे विजय मिन्नवी 🖁 🚃 उस सम्बन्धे सभी प्रवर्ण और प्रश्नाण केकेन एवं सुर्व्ध हो जाते हैं। रथमात्र करनेवाले, रथको

वहन करनेवाले और रक्के साथ व्यक्तेवाले सुर्वलोकमें निवास करते हैं।

स्त्रने कहा—हे लहान् ! मन्दिले ऋष्यतः प्रक्रिकाने

किस प्रकार इंडाना चाहिये और किस प्रमार रचमें विराजधान

करना चाहिये । इस विषयमें मुझे कुछ संदेह हो रहा है, क्लेंकि

वह प्रतिमा तो दिवर अर्थात् अञ्चल प्रत्यक्त है। अवः 📖 कैसे चरत्रमा जा सकता है ? कुमायर आप मेरे इस संज्ञानकी

वर करें।

ब्रह्माची बोले—संवस्त्रके 🚾 🕶 쨰 रथका पूर्वमें मैंने वर्णन किया है, 📰 रच सभी रजीवे शहरा

रथ है, उसको देसका ही विश्वकारि सभी देवलाओंके 🛗 अलग-अलग विविध जिल्ला १थ कहरे है। उस प्रका

रशकी पुत्राके रिल्मे मनावान सूचने अचने पुत्र सन्तरो वह १६

प्रदान किया। मन्ते राजा इश्याकुरने दिवा और तबसे वह रथपात्रा पुलित में गर्फ और परम्पर्के क्ली का रही है।

इसरिय्ये सूर्यकी रथयाकका इसस्य समान वाहिये। यानवान्

सुर्य हो सहा आकाकार्ने धमन करके रहते हैं. प्रतिभाको करानेमें 🔣 🖩 रोप नहीं 🏗 हारकप् सुर्वेक

अमन करते हुए उनका रथ एवं मण्डल दिकाची नहीं चहना. इस्रोंक्रये मन्त्र्योने रथयाज्ञके द्वारा ही उनके रथ एवं

दर्जन किया है। जाता, विष्णु, दिश्व अतदि देखेंपर सामाण स्थापित हो जानेके बाद उनको उठाना नहीं चाहिये, कियु सुर्थ-

नारायमाकी रक्षयात्रा प्रभाशीकी शासिके किये 🔤 📑

चाहिये । सोने-चर्दी अच्छा उत्तम मध्युवर असिक्षय स्मर्केय और बहुत स्टुड़ हाला निर्माण करना चाहिये। उसके श्रीवर्ण

भगवान् सूर्यको प्रतिसको स्थापित कर उत्तर लक्षणोसे युक असिशव सुशील हरित कर्णके घोडोंको रक्ष्मे नियंजित करना

चाहिये। उन घोष्ट्रेको केदारसं 📟 अनेक आपूर्णा, पूजमालाओं और चैक्स आदिसे अलकुत करना चाहिये। रथके रिव्ये अर्थ्य 🚃 करना वार्डिये । इस प्रकार रक्की

तैयार कर सभी देवताओको पूजा तन सद्दान-भोजन कराना

चहिये। दक्षिणा देकर दीन, अंधे, उपेक्ति तथा अनायोकी भोजन आदिसे संतृष्ट करना चाहिये। उतम, मध्यम अचना अध्य 🔤 भी व्यक्तिको विमुख नहीं होने देना बाहिये। रभक्त-लरूप इस सूर्वमक्ष्यपूर्ण भूसरे पीहित, विना

चेवन किये वॉद कोई व्यक्ति पत्त आज्ञावाला होकर लौट ज्यात है से इस कुणुल्यसे उसके सर्गस्य पितरॉकर अधःपतन

हो जाता है<sup>1</sup>। क्याः सूर्व भगवानुके इस बहुने भोजन और दक्षिणासे सक्को संसूष्ट 🚃 चाहिये, क्वोंकि विना दक्षिणाके प्रशास नहीं होता 🚃 🚃 पन्त्रोंसे देवलओंको

जनम 🔤 पद्धर्थ 🚟 सत्य चाहिये—

🚃 👊 में देवा आदित्या क्सक्तवा।)

**यक्नोऽवादिनो 📖**ः सुवर्णा प्रापा महाः। असूच वासूकामता रक्षाता पास्तु देखताः ।।

विकास लेककला वे व विवर्धनावास: । स्तरनः 📖 कुर्वन्तु 🖥 स 🚃 प्रतृतेयः ॥

मा विकास का में अर्थ का भू से परिवरिक्षण: । स्तैन्य चक्तु तृहाह देवा पूरागणस्था॥

(प्राक्तमार्थ ५५। ६८ -- ७१) यन्त्रीते 📖 देवत् 'बाध्येष्यः', 'प्रक्रियः', 'कानकोका' तथा 'रवानार' इत जावाओंका पाठ करे।

- पुरुष्णकृष्णवन और अनेक प्रवासके मङ्गल वासीकी 🚃 🚃 सुन्दर 🎆 🚃 मार्गक् स्थको चलाये, जिससे

क्योंपर क्रांक म सर्गे । बोहेके अध्यवमें अच्छे बैस्प्रेकी रक्षमें

🚃 च्यक्ति च प्रवास ही रथको साँचे । 🛗 स सीलह कक्क जो सुद्ध अक्करणकारे ही तथा हती हो, वे प्रतिमानी व्यक्तरमे ........ वही लावकारीसे स्वयं स्वापित करें । सूर्व-

(कार्या) असक दोनों प्रतियोको स्थापित करे । निश्चमाको दाविनी ओर तथा राष्ट्रीको बार्पी ओर स्थापित करना चाहिये : वेटनटी दो सहण प्रतिमाओंके पीग्रेफी ओर बैठे

🚃 📕 ओर सुर्वेटकको एही (संज्ञ) 📑 निश्तुमा

और उन्हें सैफलकर स्थिर रखें। खरधी 📕 कुशल रहना मुक्कंट्रस्टसे अलेक्ट छत्र रथके ऊपर लगाये. सन्दर स्त्रोसे जटिन सक्रियक्स वक्त क्वण min

चकुषे, जिसमें अनेक रंगोंको साह पताकारै लगी हों। रथके अपनेक प्राथमें सार्यक्रके रूपमें बाह्यक्रो बैटना चाहिये।

सुर्वकर्णा व विकास विकास । शुप्तकारावर्षिकः । अस्त्रवृति विकृतित सर्वाच्यानीय कार्यन्त् स यश्चिनयति भागाः (अवस्थिति ५५) ६६-६६)

ब्रह्मरहित व्यक्तिको १६के उत्पर 📰 🚃 चाहिन, क्वीकि को श्रद्धार्यहरू व्यक्ति 🚃 आश्रद्ध श्रेमा 🖫 सामा सामा नष्ट हो जाती है। असरण, श्रम्भय और वैद्यवस्थे ही श्रमके बहुन करनेका 📰 📲 है। अपने स्थानमे चलका सर्वाचन रक्षा उत्तर द्वारपर हे जन। चाहिये । वहाँ एक दिनतक रककी 🊃 करे, 📖 दृत्य-गीर्ताद-उत्सव, चेदपाठ तथा प्राचीकी 📖 होनी चाहिये। यहाँ सदाय-भोजन मी अन्त्रम चहिये। नवमीके दिन रम चलकार पूर्वद्वारम 🖩 जाय, एक दिन 🚟 रहे । तीसरे दिन दक्षिण हारक एक हे क्या तथा 🞹 💌 पश्चिमद्वारक रथ से जाय । कहाँने नगरके मध्यमें रथ से कार,

वहाँ कुमा और वरका को, दीवमारिका प्रकारित की, अक्रमोके शन दे और श्रीका करावे । अनन्तर कहाँसे मन्दिरमें रक्षको स्थल 🚃 । वहाँ नगरके सभी स्त्रेग मिरकार पुजन और उत्सव करें। एक दिन-यत स्वमें ही प्रतिमा रहे। दूसरे दिन परावान सर्वकी प्रतिपाको स्थारे उतारकर नहीं पुराधामसे मन्दिरने स्वाहत करे । इस प्रकार सहमीते प्रमोदशीतक रक्कम होनो कहिये और कहुईसीको प्रतिक पूर्व स्थानमें क्वाचित कर है। इस रक्षणायके करनेसे सभी विज्ञ-नाकाएँ Property well fin

(अभ्याम ५५)

## रक्षमात्राचे विक्र होनेपर एउं गोबार्चे 🛍 प्रहेंके 📖 जानेपर शान्तिका विकान और विलगी महिना

भगवान् सहे पुत्र--वाश् : जल पः ::::::: वर्णन करे।

ब्रह्मानीने कहा—वह ! १४को वीर-बीर |

🚃 📆 जिससे 🚃 🚃 अब्दि 🤊 लगने पाने ( मार्गको पृद्धिके लिये प्रथम प्रतीहार और एक्ट्रमध्यः छल मार्गमें कवे। पिगरु, १क्षक, श्रारक, दिल्ही तक लेकक--- वे भी रथके साथ-साथ चले। इतनी सतकेता और क्यानतासे रमको ले जाया जाय कि रधका कोई अञ्च-भन्न न हो । रधका विवादण्य ट्राटनेमर साहान्येक्ये, अक्ष ट्राटेंग्स क्षत्रियोक्ये, साहा इंटर्नेपर वैषयोको, प्राध्याके इंटर्नेपर ऋषेको भग होता ै ह पुगके भन्नमे अन्तवृष्टि, पीठके भन्नमे प्रजानो पर, रचका यक दृटनेसे अनुसेनका अगमन, ध्वासके गिरनेसे राज-अङ्ग तका प्रतिमा सान्वत होनेसे बनावा मृत्यु होती है। संबंध टुटनेपर यूनशजनी मृत्यु होती है। इनमेंसे फिली भी प्रकारका उरपत होनेपर उसकी शानि 🚃 🚾 परिषे २७० माराणको भोजन और 📰 देन चहिन्हे 📷 विविपूर्वक मह-शान्ति 📟 वाहिये । १४के ईशानकोनमें केटी 🚃 कुण्ड बनाकर पुत और समियाओंसे देवता तथा आहेकी प्रसम्बद्धे रिज्ये क्ष्यन करना चाहिये और इन नाम-मन्त्रीते आहति देनी चाहिये— ' 🖎 अन्नये स्वक्त, 🗈 श्रोकव स्वक्त, अर्थ प्रकारतये स्वक्ता ('—इत्सादि । अनसा 🚃 🔚 कल्याणके लिये इस प्रकार प्रार्थन्त 🚾 व्यक्ति—

स्वस्वतिता च विशेषाः स्वीत को कौव च ।

नोध्यः स्वतित प्रवाध्यक्ष चयतः प्रान्तिरम् वै ॥ 📑 चेत्रक् 🥅 🚃 सामितस्य प्रमुख्ये (

🖀 प्रकारकार्वकातु 🖀 स्ताव्यति 🚃 वै 🛭

पुः सर्वपरस्य 📖 पुत्रः 🚃 पाः

राह्मेकाम् नक 🚃 सर्वातस्य तथा स्तेः ।।

🖷 📰 बगतः 🚃 चेतुः 🚟 स्वयंत्र हि । व्यापनाथ प्रोत्तर साथि 🚃 विवस्तरे ॥

constraint sale (144-145)

अपनी जन्मकाराते हुए स्थापने रिवत प्रहेशिये प्रसन्तरा क्या ज्यानिके किये यह-समियाओंसे हवन करना चाहिये। ये समिक्क्ष्रै ब्रदेशमात्र संबी होनी चाहिये। सुर्वेक रिप्ने अर्थको, कहराके रिजे पलासकी, सहरूके लिये खदिएकी, क्योंक निर्दे अवध्यानीकी, बृद्धक्वीके रिष्ये वीपरवर्षी, राष्ट्रके रिध्ये गुल्पकी, प्रतिके रिक्ये प्रामीकी, सहके रिक्ये दुर्वाकी और केव्येक रिज्ये कुरवाकी समिक्षा ही श्वासके रिज्ये प्रयोग करना थादिये । उत्तम भी, ऋहा, 📖 बैल, सुवर्ण, 🚃 युगल, क्षेत अब, काली नी, लोहबात और छान—ये क्रमक: नी प्रह्मेंकी र्द्धन्त है। 🚃 और चत, घी-मिश्रेस स्क्रेस, इकियाज, कीराम, व्यक्तिकार, युर, तिरु और उहदके बने पकाम, मुखेबस्य पस्तु 🚃 भारा एवं कांबी---ये क्रमञः नवक्येके भोजन है। 📰 प्राधितमें कावच पहन लेनेसे खण नहीं रूपते, वैसे से बहोकी शासि करनेसे किसी प्रकारका उरकात नहीं होता । अहिसक, विहेन्द्रिय, निषमपे स्थित और

न्यायसे भनार्जन करनेवाले प्रत्योक प्रदेखा मदा अनुबद्ध रहता है। 📖 पन, परानका जातक रिप्ने, अनावृष्टि होनेवर, आरोग्य-प्राप्तिके लिये तथा सभी उपद्रवीकी शानिके लिये महोकी सदा पूजा करनी चाहिये। संतानसे 📖 😎 संतानवास्त्री, मृतवस्सा, मात्र बन्दा सामनवास बी संसानदोलको निवृत्तिके स्थित, जिसका गुण्य नह को नवा हो वह राज्यके सिमे, रोगी पुरुष रोगार्थ ऋष्तिके सिमे अकार्य महोकी राजीत करे, ऐसा क्नोक्किन कहा है<sup>1</sup>। प्रशेकी प्रतिका 📖 स्फॉट्क, स्तबन्दन, सुवर्ण, चोदी, लोहे और 🔤 **जन्म कार्यकर कार्यक प्रश्ने विकास निर्माण कार्य कर** विक प्रक्रम जो वर्ण हो इसी रंगके बच्च एवं पूर्व उन्हें सर्वार्थन करे । गुगुलका भूप समीको आर्पेत करना 🚃 'शा कृष्णेक' (यकु-३३। ४३) , 'हर्ग हेकर' (यकु- १ (४०) दिवादि नवासीके अलग-अलग मिन्नी स्वान्त्व महके नामसे समिया, युव, प्राह्म और दहाँको एक सी आठ राजन अञ्चर्तर आहरियाँ दे तथा सहम्पीको चोजन करने । उन्हें अवाधारिक दक्षिणा दे। जो यह किसके फेक्ट अध्यक्ष सूर्वकी प्रतिकाको राजने असरकर मान्यतमे स्थापित करे, दिल कुन्करनीमें युद्ध स्थानपर स्थित हो, उसे उस स्थान कार्यांक पुत्रा करनी वालिये । महादेव । मैंने इन महोब्ये देशा का दिवा 🖥 कि लोगोद्याप तुम सम पुणित क्रेओं । एकओका 📖 और परान तथा मनुष्यीका 🚃 और सम्बन्धियोका यात्र 🎫 अभीत है, इप्रतिने प्रदुष्टानि अवद्य अदन्ते व्यक्ति। एए,

गाम, राजा, गुक्जन तथा आहाम पुनन करनेकारे 📖

स्रह 🚃 सुरह 🚃 🚾 है। 🚃 अपनान 🚃

अनुसाको अनेक प्रकारके दृ:सा मिलते हैं। यह करनेआहे,

सरम्बद्धी, जप, होम, उपवास आदिने 🚃 धर्मात्म पुरुवीकी सभी बाबाई शान हो जाती हैं। इस क्यारने 📖 📰 रथको पुनः चल्पना चाहिये और 🔙 🚃 पुराकार अपने १कावमें पहुँच जानेपर रच-स्थित देवकानोकी 🚃 करनी चाहिये। 🚃 होनेपर बहाँकी क्रानिके 🚃 🎚 रक्रें 🥅 सभी देवताओकी 🗏 पूजा ऐसा करनेसे संबी लाहके इत्यतीकी सब अवत्ये अनि 📗 वर्ग है। दर 🚃 प्रश्निक रिये ब्रह्ममोद्ये 📰 प्रदान करे 🚃 🚟 माथ किलोबर इवन 💹 उत्तर देवक्क्शोको ध्य दे । 📉 🚃 🚾 लिये स्वाह्यसम्ब अस्तत, विनयेके लिये अनुव तथा स्टालोके लिये आवयसक्य कहे गये है । ने 🎟 करनको असूसे उत्तन हुए 🛙 📖 देशका एवं 🚃 🚾 क्रिक है । क्राम, दान, हक्षन, शर्वण और मोजनमें प्राप्त पर्वता यहे गये हैं।

साचिक किये थेप, 🚃 जी, असत. क्यातके बीज, क्यक तथा 🚃 गृहीहे 🚃 वट सूर्यकारकाको 📉 इत्या स्थापन करे । वहाँ दस 🚃 📉 विविष्यंक पूजा करे। इस दिक्तक 📟 📰 पुना पर्यक्रका पुना बहरूरों है। इस 📖

हर क्यार वह और देख्याओंका एकनका भागान

पुरुषक विर भगवान् सूर्वकद्मकानो पूर्व प्रशासक प्रशासित च्या चारिते ।

(अध्याय ५६-५७)

१-वया स्थापना करने साथ शुक्तात्त्व देवेकच्या प्रतिर्वति करवन्॥ अविकारत देशाल क्वीविकारत स्थापित व विकास अद्यास अद्यास प्रदेश महाः पुरस्य 🚥 स्ट 🚃 विपूर्तः बद्धः । श्रीकानः प्रशीवकानो सः व्यापन्ने सम्बन्धेत् ॥ प्रस्थान् प्रत्याने स तर्ववानिकान् पुरः। सामान्य परेवार्धं प्रश्नाकान् स कोत्। मारा काराः प्रतियन्ते 🗷 च कामाना कोत्। कारामाने कृषे कहा 📰 👊 🛍 कोत्। 

(माहार्क्य ५६ । ३० — ३५)

(ब्रह्मपर्य ५६ । ४५,४५)

१-टेक्कमपूर्व 🔛 मिनुर्व कि मानानुसन्। जल्बे 🚃 🖘 वन्त्र होतन् विदुर्वकः 🛭 करकारकहूमा 🎬 चीत्रक्ष तथा इस । सहने दारे तथा होने सामि प्राप्तरे पक्ष 🗈

२-अहा क्ये नेत्यास मृत्ये स्थानकातना । पृथ्याः पृथ्यन्ते निर्दारकावनिकः ॥ सम्बद्धी अरेक्कानकार्य सम्बद्ध निरूपेक्कार्यसम्बद्धाः स्वयत्त्री स्वयत्त्री स्व

(माहापर्धा ५७ । १५-१६)

## सुर्वनारायणकी रचवात्राका फरव

जन्माजीने कहा—हे महादेव ! इस क्वार 📟 ओपसी भगवान् भारकरकी रथपात्र करनेवारश और दसीसे करानेवाला व्यक्ति परार्थ वर्षी (ज्ञायाजीकी आधी आदी) तक स्येलेकमें निवास 🚃 है। उस व्यक्तिके वरतमे 🛭 कोई दर्फि होता 🖥 न कोई गैंगी। सूर्व भगवानके अध्यक्तके निये 🖷 समर्पण करनेवाले तथा अनेक अस्तरका जलका बर्जनको व्यक्तिको सूर्वकोक प्राप्त होता है। यहा आदि तीथीरी कर राज्य को सूर्वकारकाको साथ कराता है, यह कालकोस्क्रो निवास करता है। लाग रंगकर पात और गुरूक 🔤 सर्वार्थेत करनेकालः 📖 प्रजापतिरकेकारे जा। करना 🖫 भिक्तपूर्वक सूर्वनारायकको द्वारा करकर दूसन करनेकाल कारित सूर्यलोकमें निकास करता है। यो कारित मुख्येकको रक्षपर चवाता है, २६कं मार्गको पवित्र करता और पूर्व, होरण, प्रताना आदिने अलंका करता है, यह वायुन्तेकने ल्यात मराता है। जो अवस्ति तृत्य-गीत आदिके द्वारा पुरुद् इसका मनाता है, यह मुर्थरनेकको जस करना है । जब सुर्थरेक १४वर विरायकात हरते हैं, इस दिन जागरण कानेकाल प्रथमन् करीक निरम्पर असन्द प्राप्त करता है। यो कार्यक भगवान समेकी सेवा आदिके लिये व्यक्तिको नियोगित काला है, कर सभी कामनाओंको पातकर सूर्यन्त्रेकमें निवास करता है। रपाकड भगवान सर्पका दर्शन करना बडे ही 🚞 क्या कर है। जब रधको यात्र उत्तर अथवा दक्षिण दिशाली और हेती है, इस एमय दक्षन करनेश्वरक व्यक्ति चन्य है। विका दिन रधपांच हो, उसके सालपर बाद उसी दिन पूरः रक्याज करने वाहिये। यदि वर्षके बाद बाता न करा सके ते काहते 🖼 अतिशय उत्साहके साथ उत्सव सम्बन्न का कहा सम्बन्न करानी

चहिने। केवमें 📖 नहीं करनी चहिने।

📰 प्रधार हन्द्रध्यायके उत्पावमें थी यदि विष्य हो जाय तो बाह्यवे कमि ही इसे सम्पन्न करना चाहिये। जो व्यक्ति रक्षककी 🚃 करल है, वह इन्ह्रांट लोकपालके साम्बनको 🚃 📖 है। जातामे विक्र करनेवाले व्यक्ति मंदेह 🚃 राजस होते हैं। सुर्वजरायकको पूजा किये 🥅 जो अन्य 💹 पूजा करता है, वह पूजा 📖 है। रक्षमानके 🚃 जो सूर्यवस्त्रकाका दर्जन करता है, यह किन्यन हो काल है। बही, सहसी, पूर्णिया, अस्मवास्त्र और 🚃 🚾 टर्सन करनेसे बहुत एक्य 📺 है। आवाद, पूर्विमान्द्रे 🚃 अनन पूर्व होता है। इन क्षेत्र मानोपे भी स्थानक करनी प्रतिपे। इनमें 💹 🚃 (क्वर्लिक-पूर्णिक) 🔛 🚃 फलदायक होनेसे · प्राप्त करू करा है। इन समयोगे उपग्रसकार जो व्यक्तपूर्वक प्राप्तक सुर्वको पुत्र करता है, का सहनिकं प्राप्त करना है। अंकारकर अनुबद्ध करनेके दिन्ये प्रतिनामें रियत 🎮 सुब्दिव 🔤 🚃 महत्त्व करने 🕏 🖬 व्यक्ति मृत्यन करकर 🚃 जप, क्षेत्र, दान आदि करता है, वह 📖 होता है । सूर्य-क्सको **स्थान** हो मुख्यन स्थास चाहिते । औ मिक प्रमाण क्षेत्रित होकर सुर्वनाययनकी आयधना 🚃 है. 🚾 परम परिचने प्राप्त 🚃 है। महादेवजी । इस रभवाजके निधानका 🔡 वर्णन किया। इसे जो पदता है, मुख्य है, 📺 सभी व्यवस्थि दोनीसे मुक्त हो जाता है और विक्षिपूर्वक रचन्यकामा atminu कारोधास्य व्यक्ति सूर्यरहेकको क्ता है।

(अध्यक्ष ५८)

## रवसप्रमी तका भगवान् सर्यकी महिमाका वर्णन

ब्रह्माची बोले—हे छ ! 🚃 पसके हुइ पडानी वार्धी दिविको स्थान असके गन्धार स्थान सर्पमराकाको एककर राष्ट्रिमे उनके सम्पूक्त सका को। सप्तमीचे प्राप्त-काल विधिपूर्वक पूजा को और उद्यक्तपूर्वक ब्रह्मलोको भोजन कराये। 📰 🚃 एक वर्षतक स्वरूपीको क्कार रक्का को। कृष्ण्यकों तृतीया तिथिको एकपुक्त, चतुर्वीको नक्तवत्, पद्मपीको अव्यक्तिस्त्रत<sup>र</sup>, बहीको पूर्ण उपकस उक्ष सामनेको परण को। रघस्य मगवान् सुर्वकी भरतेभीते पूक्तका सुवर्ण तथा रखदिसे अलंकृत तथा ले(ण् प्रकारिके मुस्रिकेट रक्षमें सुर्वनाययंक्यी प्रतिमा स्थापित कर आहाणकी पूजा करके उसका दान कर दे। स्ववंदे अव्यक्ति अव्यक्ति स्वाक्ति अव्यक्ति स्वाक्ति अव्यक्ति स्वाक्ति स्वाक्

सुमन्तु सुनिने कहा - एकर्। इस प्रकार रक्षणाका विषान क्षणा क्षणा अपने संकल्पो वर्त क्षेत्र और स्प्रदेवल भी अपने भाग करे गये। क्षण क्षण क्षण सुनन बाहते हैं, यह बतायें।

राजा पासानीकाने सहा:—वे नवारांक ! सूर्वरेचके प्रभावका में अहारिक वर्षत करूँ : स्टास्टी अनुसाने सूर्वाहर



अर्थद मेरे पिक्रमहोको सभी 🚃 दिल्क भोजन 🚃

कलेकला जवार पन पिला था, जिससे वनमें भी से बाहरूनेको संसूष्ट करते थे । जिन भगवान् सुर्वकी देवता, ऋषि, 🔤 तथा पनुष्य अर्थादे निरन्तर आराधना करते रहते 🖥 🖿 करका कारा के महारकार की अनेक बार शुर्व है, 📰 **उनका पाल**क्य सुनते-सुनते पुले दुवि नहीं होती। ज़िनसे सम्पूर्ण किया करूप हुआ 🛮 📖 जिनके उदय होनेसे ही 🚃 र्कावार चेटावान् होता है, जिनके हाचोरी लोकप्जित बहुत और चिन्तु तथा लल्बरसं अंकर उत्पन्न हुए हैं, उनके प्रभावका 🚃 कीन कर सकता है ? 📖 मैं 🚃 सुनना चाहता है कि 🚃 मन्य, स्रोत, दान, स्थान, अथ, पुत्रान, होम, 📖 शक्षा मार्थ कार्नरे चगवान् सूर्य 🚃 🖮 प्रापी **ब्ला** निवास करते हैं और संस्था-सागरसे मुक्त करते हैं, अप उन्हीं उत्तय पन्त, स्वोत्र, रहस्य, विद्या, पाठ, बार आदिको क्याने, जिनमे पगवान् सुर्पका क्षेत्रंन हो और जिहा धन्य हो। 🚥 । 🚟 💹 विद्धाः धन्य 🛊 जो भगवान् सूर्यका स्तवन बार्डा है। सुर्वको अस्तुकार्क किना वह सरीर व्यर्थ है। एक बर भी सुवैक्यपनाको प्रभाव करनेले प्राचीका गवसागरसे उद्धार को पाल है। रखेका अवस्था नेरुपनेत, आश्चर्योका अस्तरप अवस्तरा, लेथ्वेंबर आश्रय यक्त और सभी देवताओंक अगम्बन् सूर्व है। मुने । इस प्रकार अनन गुणोशाले क्ष्मकन् सुर्वक पाहरूकको 🕅 बहुत 👊 सुना है। देशगण भी धनकान् सुर्वको 🗗 🚃 करते हैं, यह भी मैंने पूर्व है। 📫 के 🔚 एड 🖦 है कि सन्पूर्व माजियोंके हदयने **व्यक्ति** तथा सम्बन्धको समस्त पाप-तार्पको दुः करनेवाले नगवान् सूर्वको प्रसिद्धर्वक उपासना कर मै भी संस्थातरे भुक्त को आई।

## भगवान् सूर्यद्वारा योगका वर्णन एवं ज्ञाहानीक्षण दिप्तीको

दिका गया व्यवस्था

सुधन्तु सुमिने कहा—एकन् ! ऋषियोको 🔤 प्रकार बहाजीने सूर्यनगरणकी अवगयनके 🎟 अपेदन दिया 🖦 उसे मैं सुनाता है।

समय अधियोंने ब्रह्मचीसे अर्थन की कि महाराज ! सभी प्रकारकी चित्तकृतिके निशेषकणी खेलको अवने कैनल्क्क्टको देनेकल्प कहा है, किंतु यह योग अनेक अन्योगी स्थानी साधनाके द्वारा प्राप्त हो सकता है। क्योंकि

(अण्याय ५१-६०)

भारता अरुत् आकृष्ट करनेकाले विषय प्राप्ता दुर्जय है, यन किसी अकारते स्थित नहीं होता, गग-देव आदि दोप नहीं कृटते और पुरुष अल्पाय होते हैं, इसलिये योगसिदिका प्राप्त होना अतिदाय कठिन है। अतः अल ऐसे किसी साधनका उपदेश करे जिससे विना परिजयके हो निस्तर हो सके।

**---** )

बहुइजीने कहा — मुनेकरे ! 📖 पूजन, 🚃 जप, वालेपजास और बाह्मण-भोजन आर्दिश सूर्वजारक्षणकी आरायना करना ही इसका मुख्य ३५/व है। यह कियाबंग है। 📖 पुद्धि, 🔜, दृष्टि आदिसे सुकेवयरमध्ये अध्यक्षको तरम रहे। वे ही भरकत, अकर, सर्वञ्चले, सर्वज्ञते, अध्यक, अधिनय और मोखको देनेवाल है। जल 🚃 क्रांकी आरामना कर अपने मनोवर्धकात परकार प्रता को 🔙 प्रवसागरमे मुक्त हो जायै। ब्रह्माजीसे यह सुनकर पुरिचल सूर्वनायक्ककी उपासना-सम्ब क्रियाचेयानं 🚃 हो एये । हे राजन् । विक्योंने कुने एए संसारके दःशी ओमोको स्वत प्रदान करनेवाले सूर्यक्रायणकं 📟 🖛 🛊 इसलिये उदते-बैदते, बस्को-सेते, धोवन करते हुए कहा सूर्यन्यप्रकार हो कारण करे. अस्तिकृतिक उनकी अस्ताकको प्रकृत बीओ, जिससे जन्म-मरण, असीप-स्वर्धपरे क्षक इस संसारसमुद्रक्षे तुम पार हो जाओंगे । जो पूरक जगन्यती, सटा करान देनेकाले, दयालु और पहींक 📖 संस्कृतकानाना इस्टामें बाता है, यह अध्ययन के मुक्ति भार काला है।

सुनन्तु मुक्ति पुनः कहा—सन्द । कका कारले दिष्णीको महाहरपा रूप गयी थी। उस महाहरकके परपनो दर पारक लिए उन्होंने बहुत दिनोतक मुर्वकरूपमध्ये आसुध्य और स्तृति की। उससे असम हो बगवान् सूर्य इनके पान अस्ये । भगवाम् सूची कहा—"रिजियम् । सूचारी वकिन्स्वेक की गनी सुविसे में कहत प्रसन है , अपना अभीत का कीये (

दिया, यह मेरे सीमान्यकी बात है। वही मेरे निये सर्वहेस 📰 है। पुष्पहीत्रेके लिये जाता दर्जन सर्वदा दर्लम है। जान सबके इदयमें नियत है, अतः अस्य समका अभिकाय जानते हैं। जिस प्रकार मुझे सहाहत्या रूपी है, उसे तो अपर सावते 📆 हैं। भगवन् ! जान मुक्तपर पेस्त अनुबद्ध करें कि मैं इस निर्देश महाहरवासे तथा अन्य पायेंसे इतित मुक्त हो बाई. और मै सफल-मनेरव हो ऋडे। अप संसारते ......

कारकर्वे, जिसके अध्यालसे संसारके प्राण सुन्नी हों। शिक्टोंके इस वक्तको सुनकर 📖 भगवान सुर्यन उन्हें निर्वोक-योगक उपरेक्ष दिया, जो दःसके निर्वारणके क्रिये औरपश्य है।

दिव्योने प्रार्थना करते हुए कहा---महाराज ! यह क्रिकल-चेप तो **चहुत च**ित्र है, **ब्राह्म** इन्द्रियंको जीतना, मनको स्थिर करना, अर्थ-इन्हेर्लाटका अधिमान और पमलका त्यान प्रात्याः था।-द्रेषसे वचन---ये 🚃 अतिहास कट्टसाच्य है। ये को कई जन्मेंके अध्यास करवेसे आह होती है। अतः उक्त ऐसा सामान कालाओ, जिससे अनायास किना विद्याप परिकर्ण 🛮 🔛 🛍 हे अप ।

व्यवसाय् सूर्ववे बाह्य-गणनथः। यदि सृष्टे वृत्तिकी

हम्बा है के स्वयंत्र केरोंको यह करनेवाले क्रियायोगको सुरी। अपने मक्को मुहारे लगाओं, प्रतिको सेए प्रजन करो, मेरा कबन करो, मेर परायण हो जाओ, आत्माको मेर्ने लगा हो, 📹 नमस्त्रार करे, 🛅 🚃 करे, सम्पूर्ण बद्धाप्यमे पूरे · सम्बद्धी , ऐसा करनेसे तुन्हारे सन्पूर्ण दोवीका िकास हो कामान और तुम मुझे 📖 कर सोगे : धसीधाँसि मुहाने अक्सल हो जानेकर राग-लोबादि 🚃 🚃 🗏 व्यक्ति कुरस्कृत्यक ही बाला है। अपने मनको स्थिए करनेके लिये खेला, चाँदी, तहा, पाकपा, काह आदिसे मेरी प्रतिपाकः निर्माण 🚃 🔳 विष्य ही निरमकर विविध उपचारोस चिक्युर्वक पुजन करे । सर्वकारको प्रतिमाका आक्षप प्रमुण करो । चन्छते-फिरहे, धोजन करते, आगे-पोक्ने, अपर-नीचे दशिक म्बान करे, उसे पश्चित तीचेंकि जलके जान कराओ । गन्ध, पुष्प, कस, मायुक्य, विविध नैकेंद्र और को पदार्थ स्वयंको किय हो उन्हें अर्थण करो । इन विविध अपधारोंसे मेरी प्रक्रियको संतुष्ट करो। कभी पानेकी उच्छा हो तो मेरी मृतिके आगे मेरा गुण्यनुस्वद पाओ, सुननेकी एकत हो तो हमारी कथा सूचे । इस ककर पूजाने अपने मनको अर्पण करनेसे तुन्हे क्रमक्टकी काल हो कामगी। सभी कर्म मुहामें अर्पण करो, हरनेकी कोई बात नहीं। युद्धानें यन लगाओं, जो कुछ करी मेरे रिजे करे, ऐसा करनेसे तुम **अग्रहत्या आदि सभी दोव-**पापेक्षे

रहित होकर मुक्त हो जाओंने, इसस्थि तुम इस किवाबीगक। आश्रय महत्र कते ।

आप विस्तरसे कहे, बाज अपके विना कोई भी इसे बराह्मोमें समर्थ जा है। यह अरवन गोकरेव और प्रीका है। यक्तान् सुर्वने कहा—तुम किना बा करे। इस

सम्पूर्ण क्रिन्यमोगम् बहारमै तुमको विस्तारपूर्वक उपरेज करेगे और मेरी कृपासे तुम इसे प्रकृप करेगे। इतना सक्तर सोनो जिल्ला दीपालकप भगवाप् सूर्व अशासिक हो गये और दिख्यों भी महाजिक पालको चले गये। बहारनेक पहुँक्यन दिख्यों मुरुगेह चतुर्मुक सहाजीको उनका कर कहने रुगे।

विकास मार्थनायूर्वक कहा -- महान् १ मृत्र भगवान् सूर्यदेकने आपके कल मैका है। आप कृष्यका युवे विका-केगका वपदेश करें, जिसके सहारे मैं दक्षित ही मगवान् सूर्वको प्रसार कर सकुँ।

जाहाणी कीले — गमापिय । यरकान् सूर्यका दर्शन करते ही तुकारी सहाहरण से नह हो गया। हुए सम्बद्ध सूर्यक हु सो प्रथम पीजा प्रहण करते, क्योंक दोकांक किया उपासना गरी होती। जन्म काला कुरमसे अनकान् सूर्यके पीति सोती है। यो पूज्य भगवान् सूर्यके हुँच रक्या है, जाहाल बात बेदकी निका करता है, उसे अवदाय ही अवस्य पुरवसं उरका सन्तो। नामाक प्रमायने ही अवस्य पुरवसंग्रे अस्पाय पुरवसंग्रे अस्पाय कोती है और जिल्हा सामा प्रेम स्वत्य पुरवसंग्रे अस्पाय के किये दीकाको हुन्या होती है। इस प्रवस्ताय में स्वानवाल पुरवसंग्र हाम प्रकारण उद्धार करनेवाल एकावा मगवान् सूर्य ही है। इसकिये तुम दीका बहुन कर अगवान् सूर्यी तथान होकर उनकी उपस्ता कते, इससे शीवा ही मगवान् सूर्य तुमपर अनुस्ता करेंगे।

विष्यीने पूजा—महाराज । दीवाका अधिकारी **पान** पुरुष है और दोखा-अहम करनेके बाद कड करना पाहिने। कृषका अहम इसे बतायें।

त्राहात्वीने कहा —दिन्यन् । दीशा-अवन्यी इच्छाकले व्यक्तिको पन, सामा और शर्मसे हिला नहीं करनी चाहिते । सूर्यमगवान्मे भीक करनी चाहिते, टीविश कहानीको

नगरकार च्या चाहिये, किसीसे ट्रोह नहीं करन चाहिये। सभी प्रान्तिकोको सुर्वके स्थमे हाल्यना चाहिये। देश, मनुष्य, पञ्च, पञ्ची,चींटी, वृक्ष, 📖 आदि जगतुके मनी पदार्थी और आत्मको सुर्वसे निम्न न समास्कर मन, वयन और कर्मने जीबंधे एकबृद्धि नहीं करनी चाहिये---🔤 से पूरण 🚃 अधिकारी होता है। जी गति कुर्व-कारकार्य अवयानकारे जात होती है, वह न तो तपसे भिलती है और न बहुत दक्षिणकाले पञ्जेक करनेले। 📖 क्रमारों 📕 धनवान् सूर्यका 📖 है, वह बन्द है। दश सूर्वकरके अनेक क्लोका उद्धा हो कहा है। जो अपने क्टब्कटेड्वमें भागकान सर्वकी कार्या करता है, यह निरुपय होकर सूर्वलेकको जात करता 🖁 । सूर्वका मन्दिर करानेकारक अपनी · पंतिक्षेको सुर्वक्षेको **। । । । । । । । ।** । शीर जिलने 🚃 🚟 पूर्व 🚾 है, इसने क्यार 🚞 📰 कुर्वलोकाने अक्टब्स्ट व्यक्ति करता है। विकासमाधाने सुर्वकी उपासना करनेकरण व्यक्ति मृत्तिको आर 📖 है । जो इत्तम तेन, कुटर पुण, 🚃 सुर्गाधात धूप श्रीतिन सूर्य-है । यक्ष्मे कहन सामक्रियोकी अपेक्षा रहती है, इसलिये सनुस्य मंद्र भारत भारत व्यक्ति पूर्वासे भी मुर्वनारायमध्ये 🚃 करनेसे यह करनेसे थी अधिक फरन्दरे 

व्यक्तरका यस गायसकारविष्ठाः ॥ च विक्रियक्तकको प्रकृतिस्वर्शकोः । भाषा पु पुंत्रीः पुता कृता दृशीहुरैरचे । व्यक्तिकी वि कर्ल सर्वकोः सुकृतिक्य् ॥ (स्थापने ६३ (३३-३३)

विकित् है सार, पुन्न, बूच, बाब, आसूबण तथा विविध प्रकारके नैकेश को भी लाए हो और तुन्हें जो किय हों, उन्हें भीतिमुर्वेक सूर्यकारमानको निवेदित करो । तीपिक जरू, दही, दूच, पृत, अर्कन्न और अरूदले उन्हें खान बनाओ । गीत-वास, नृत्व, स्तृति, बाह्म्य-भीजन, हवन आहिसे भगवान्को प्रसान करो, किंदु स्मान पूजाएँ पत्तिमूर्वक होनी व्यक्तिये। मैंने मगवान् सूर्यकी असाधना करके ही सृष्टि की है। विच्या उनके अनुप्रहसे ही जनकुक पालन करते हैं और स्त्रने उनकी प्रसन्नतासे ही संहारहासित प्राप्त क्षी है। ऋषिणया भी उनके ही कृषाप्रसादको प्रसक्तर मन्त्रींका (स्वाप्तास) करनेमें समर्थ होते हैं। इसस्तिये हम भी पुत्रन, (सा. उस्तास अहिंसे वर्षकर्षन (स्वाप्तास)

आरुपना करे, जिससे सभी क्षेत्र 📺 हो जायेंगे और तुम इसींच क्रम करेंगे<sup>र</sup> ।

(अध्याय ६१—६३)

## -6:53:00-

## पगवान् सूर्यके अनुहान तथा व्या पन्दितीये अर्थन-पुजनकी कल-सहसी-व्रतका फल

दिप्योमे सहारपीसे पूजा—सहन् ! अस्पने अस्टिक-तित्यापोगको मुझे बतल्यमा, अस्य अस्य यह बतलानेकी हात करें कि भगवान् सूर्यं उपवासको कैसे स्थाय होते हैं ? हात्सा सरनेकालोंके रिज्ये क्या-क्या स्थान्य है ? अस्याय-प्रमे हात्सा करेंगा चाहिये, इसका काल विकासपूर्वक वर्णन करें।

करंगा चाहिये, इसका काल विकासपूर्वक धर्मन करे। **महाग्यीः जोले — दिन्दिन् !** चनकत् सूर्व पून आदिहात पुजन करनेके 🖩 📖 हो जाते 🖥 और उत्तय करन देते 🕏 । घोषीसे रहित होका सद्युक्तिका आजन कर सची भोगोका परित्याग करता है ३५कास कहरूका 👫 🛌 🚃 उपवासके क्यों नहीं पर्योक्तिकत करा का क्या ? एक रहत दें यत, तीन रात या नत-जत करनेवारत निकास होकर उपनासकर मन, क्वन और 🚃 सूर्यनायकनको आज्ञयनको तरम रहे हो अग्रास्त्रेकको जाह कर सकता है। यह साधार किसी काममाने दत्तकित होकर भगवान् शुर्वेश्ये उपस्यक करना तो प्रसम बीक्स चण्यान् उसकी कामना पूर्व का देते हैं। Marie स्था करनेवाले जगदरक सुकैन्यायकार्यः तत्त्रपतापूर्वक आरधकके किन किनी प्रकर के सहाते नहीं मिलती : अतः पुष्प, चृप, चन्दन, 🎹 अवस्ति धारिक्ष्युर्वधः सुर्वकी पूजा और 🎟 प्रसन्नतको लिये उपलब्ध करना बाहिये। उत्तम पुत्रके न मिलनेपर कृष्टेके क्षेत्रल पर्वे अथवा दुर्वापुरसे पूजन करना काहिये। पुष्प, पत्र, ५६ल, जल जो भी वचारतित मिले, उसे ही भीतके साथ चगवान् सूर्वको अर्वन करना चाहिये। इससे मणवान् सूर्यको अनुस तृष्टि प्रात होती है। सूर्वनारायणके मन्दिरमें सदा प्रबद्ध देकेस चूकिये जिलते कणिकाएँ होती 👢 उतने समध्यकक सूर्यके सम्बन होकर यह

स्वर्गमें रहता है। मन्दिरके छोटे भागका भी महर्मन कानेपर उस

दिनके पत्रको व्यक्ति पुरू 🖟 📖 है। 🔣 गोमपरि, पृत्तिका अवन्य 🚃 चतुओंक क्लॉसे मन्दिये उपलेका 🚃 है, 🕶 🚃 🚃 सुर्थलोकमें 🚃 है। मन्दिरमें जलसे विवश्या करनेकाल करणलेकमें 🚃 📖 है। 🗐 रेजन 🔤 हर 🚟 पुष्प शिक्षेपता है, 🚃 कची दुर्गति नहीं 🚃 🚃 वन्द्रांने देशक प्रस्तातित कानेवाला 🚃 सुधी ज्वकोरी जाता व करता है। जवकोर्यास्थे इत्तर 🔤 अञ्चल संभी 🕮 पत्तकाके बाधुसे हिलनेपर 🚃 🖥 करों है। गील, काब और नुस्के हुन्छ मन्दिरमें इस्तव 🚃 🚃 किसानमें 💹 है, गम्बर्ध और अपराएँ 📟 💴 गान 💹 नृस्थ करती है। यो 📖 पुराणका चार 🚥 है, उसे 🔚 मुद्रिको माग्न होती है और तह 🚟 🖟 (सभी 🚟 गत जाननेवास्य) हो 🚃 है। 🚃 ! सूर्यंबरे आराकनारे जो बाहो 📉 प्राप्त कर सकते हो । इनकी आपकारते 🔚 स्त्रेग गुन्धर्व, बर्देश्वय विद्याबर, 🚃 देवता वन गये 🖁 । इन्द्रने इनकी आप्रधनासे ही इन्हरूद प्राप्त किया है। ब्रह्मकारी, गृहत्य और भानप्रस्थ एवं विकासिक के ही उपास्त्र है। विकेटिया संस्थाती भी इनके अनुम्बरते 🖥 मुक्तियने भार करते 📗 📖 ये ही मोक्षके 🚃 है। इस तरह सभी वर्ण और आधनोकि आशंच एवं परभगति मगवद सुर्व 🔣 है। विभिन् ! अन मैं 🚃 🚃 और फल-सप्तमीका

वर्षन करक हैं। फल-सम्मीका जन करनेसे सभी 📖 नष्ट हो

कते हैं 🔤 सूर्वल्येककी प्राप्ति होती है। 🚃 🚃 शहर

चतुर्थोंको अवस्थित-का कर पश्चमीको एक बार फोजन करे,

व्यक्ति निक्कोच, विकेटिय होकर पूर्ण उपवास करे और

१-कियाचेगका वर्गन 🛗 पुरुषोधे निकास 🖥 विशेषकाले वसकुरुधाः विश्वकोतहार-साह 🚃 🐮

रे-अक्टूबरर प्रतेष्ये वस्तु अस्त्रे सुन्दे सह । क्रांक्ट सा विदेश: सर्वचेन्द्रवर्त्तीत: । (स्वापर्य १४ । ४)

भतिके साथ सभी ............. सुर्वनश्वभक्ती पुता को । रतमें मगवान् सुर्यके सम्पुक्ष पृथ्वीयर प्रावन करे। सामाना सूर्व भगवासूका भ्यान करते हुए 🚃 उठकर सहा-पत्रन करे और सञ्दर, नारिक्ल, आय, यात्रहेन आदि 📟 चेन रुवाये और बहानको दे 🚃 📰 भी प्रसादके रूपमें उन्हें 🚃 करे । यदि ये 📖 न मिले के साहित (ज्ञावहर) 📰 📰 गेहँका 🚃 लेकर उसमें गुढ़ मिलाने और 🔤 🚃 है भगवान् सूर्वको चोग तमाचे, ब्लास्ट इका कर कक्रण-भोजन कराये । 🚃 🚃 🚃 वर्षतक स्थायेका क्रा कर अन्तमें प्राप्ता करे। योजूह, गोमव, गोदुन्त, दही, भी, कुराका जल, 🎆 मृतिका, तिल और सरसंका उपटन, वृषी, गीके सीमका जल, चमेलीके कुलके सा—इनसे 📖 🔣 और प्रमुख 🖥 📷 करे । ये 🐯 🛗 प्रमुख बर्गावर्गेड है। सभी 🚃 पत्न, सरवसन्त्रत 🍁, बन्ववृक्ते 🚃 वक्रकेंक साथ मी, विद्युवके 📖 🚃 और 💹 क्या महर्गाको वे। यो सरिश-सम्बद्ध हो यह 📖 अथवा आहेके

िक्टक, फरू क्या दो पका दे। सोना, रहा और बस क्या को । के फरू-सामीका विधान कहा गया है। का अविशय पुण्यमंत्री सामी सभी पाणेका

कालेकाली है। इस सामा व्याप्त मनुष्य सूर्यलेकाको प्राप्त काला है। वहाँ देव, गन्यां और अपस्याओके साथ पूछित होता है। इस सामा जो काला है। इस अतके कानेसे महाप्य मुक्त, काला इन्हरलेक, वैद्य कुनेर-लोकाने निवास करता है। यूह इस सामा करनेसे हैं काला आह कर तेना है। पुत्रहीत पुत्र अस सामा है, दुर्जना सीमान्यशास्त्रिमी होती है और विधास अपने समामा महिन हस सामान्य पदार्थिको सदाद करनेवाली

# एत्य-समुगी-जनके 🔤 त्याच्य पदार्थका निवेश 💳

## जनका विधान एवं फल

स्त्री है। (अध्यय ६४)

मदाजीने बद्धा---दिव्यत् । अस्त मे उद्दर्श-आर्थ--जनका विभाग 📺 रहा हैं। इस जनके करनेके अध्योते अध्यो अनेवाली साम पीढी तथा पीढेर्फ में साम पहला कुलोक उन्हार हो जाता है। जो इस असका कियमसे पालन करता है, उसे धन, पुत्र, आरोग्य, विद्या, विजय, 🗐 तथा अध्याय असुको भी 📖 📗 📟 है। इस मुलके नियम 🚃 प्रकार हैं—सबमें नैत्रीभव रसते हुए भगवान् सूर्वका 📖 काता रहे। भनुष्यको जलके दिन न तेलका स्पर्धा करना चाहिये, न नीक्ष वस सरण करना चाहिये तथा व अधिकेसे साम सरमा चाहिये । 🎟 करूर तो करे ही नहीं । इस दिन नीहन 📟 करण करके जो सरकर्म करता है, वह निकाल हुन्हें है : 🔌 बाहाण इस अतके दिन एक बार नीतन वका भारत कर ले जे उसे उचित 🖥 कि सर्वाची सुद्धिके लिये उपवास करके पदापट्य-प्रारम करे. तथी वह श्रद्ध होता है। वहि अञ्चनका बैल वृक्तको लकड़ीसे कोई महाज दन्तकावन कर लेखा है हो वह दो अल्झावण-जत करतेसे. सुद्ध होता है। इस दिन

रेम्प्यूपने व्या रंगके अवेश करनेशामी ही तीन पृष्टू-व्यापना करनेशे कि कि है। जी प्रमुख करनेशे कि क् नैक कुछके कियाने अल्ल जाता है यह प्रमुख-प्राप्तनसे ही सुद्ध केला है। वहाँ चेक एक बार क्षेत्री जाती है, यह पृष्टि

रहसन-स्थरणे-असके दिन को तेलका स्वर्ध करता है,
उसकी विश्व पार्था नह हो करती है, अतः वैलक्ष स्पर्ध नहीं
करना करिये । इस सिवियने किसीके स्वाय द्रोह और क्रूरता भी
करना करिय नहीं है । इस दिन गीत माना, नृत्य करना, विश्वास स्वान करना, क्ष्म देखना, जन्म हैसना, जन्म स्वाध स्वान करना, चून-क्रीका, ऐना, दिनमें सोना, असस्य मेरिन्त,
दूखोंके अनिष्ट्रका विकान करना, किसी भी जीवको कष्ट देना,
अस्विक केवन करना, गरी-कृतीमें घूमना, व्यान, इंग्रेक,
करना तथा कृत्या—इन सम्बन्ध प्रयानपूर्वक परिस्थान व्यान

इस वक्का अस्थ 📕 भारतो करना चाहिये। इस

करनेवाले मनुष्यको चाहिये कि 📰 पैचारि पासीने 🚃 अर्थमा, भित्र, वरुण, रुन्त, विकस्त्रम्, पर्थन्य, पृष्, पग, **ाः, विष्णु तदा भारतर--- इन छटश सुबीध क**नशः पुत्रन करे। प्रस्केक सहमीके दिन भोजक बाह्यकरो 📖 📖 भेजन करकर 💹 पुरुसहित 🚃 एक 📖 सूर्व्य और राधिका देनी भाषिये। 🔠 🚃 व 🚃 तके तो 🔛 बारायको 📗 पोधकारी पति योगर करावर 🔤 🚃

दाममें देनी चाहिये।

हे दिन्दिन् ! इस 🚃 🗏 सप्रमीके इस पाइरत्वका वर्णन किया, जिसके अवक्षमात्रसे भी सभी भए नष्ट हो जाते है और सुर्वक्रीकामें 🚃 🚾 है।

सुरुपु बोले-स्वप् । इतन कहकर बहुमओ अन्तर्यान हो यहे और दिन्हीं भी उनके द्वारा बताये गये इस बतके अनुसार सूर्वनारायका पूजन करके अपने मनोव्यम्हित कलको प्राप्त करकेने 🚃 हुए और चनवान् सुर्वके अनुभर 🖥 म्मे । (अध्यय ६५)

# प्रीक्त एवं द्विज, वरिन्ह एवं 🚃 🚃 🚃 और ऋगके संबाहरे आदित्वकी आराधरावन महास्य-कवन, भयवान सर्वकी ।

राजा स्तानीकने बद्धा-यूने । 📖 पनकन् सुर्वनायकाके सामाना और 🖥 कर्नन करें। समाना अपुरसमी वाणी सून-सूनकर पुत्रो तृति नहीं को रही है।

सम्बद्धानि सहा—एकर् । इस व्यवस्था 🕮 और हिजना को संबाद हुआ है, उसे आप मुने, मिन्ने सुनकर बातव सन्पूर्ण प्रापेसे मृक्त हो सका 🛊 ।

एक अरक्त रक्तीय आक्षय था, जिसमें शर्थ कुछ फ्लोंके भारते हुक हो थे। कहीं पुग अपनी सींगोरी परकार एक-इसरेके प्रारंभे कुमला से थे, विसी टिइस्से मनुरोक कुरव और धानरोंकी मधुर हाता गुरुत हो रहा का देशे मनेकारी अनुसर्वे अनेक तथिलयोजे सेवित प्रणकत् सुवीत अनन्य पंता शिक्ष शामके एक मूनि रहते थे। ..... कर चेजक-कृमार्रीन पृतिके समान जनक विनयपूर्वक सामग्राह्य 🔤 निवेदन किया---महाराज ! बेट्कि विवयमें हमें संदेह ै । आप सरका निकारण करें। अन विनयी फोलकोकी इस प्रार्थनाको सुनकर प्रसम्भ सूर श्रीकानी उन समीको वेदारकावन कराने लगे । एक दिन वे सभी कृत्यर बेटका आध्यका कर खे थे, उसी समय परम हफ्ती दिन राजके एक केंद्र मूनि वर्ड आये । अभित तेजस्थे स्त्र संख्य मृत्ति स्त्रभई विधिवत् सर्वन **वर्त और उन्हें आसनपर बैदाया। उन कुमारोने भी उनाड़े** क-दना की, जिससे दिस बहुत प्रसन्न हुए ।

र्श्वल **मु**पिने 🖿 मोकक-कुम्बतीसे कक्र—िहरू पुरुषके अगगनको अनकाय होता है। 📖 दूस सब इस ਲੇ ਬਾਦੂਆਂ ਮਾ-

स्वयंत्र अक्टब अध्ययन सम्बद्ध करो । यह सुनते ही मुख्यारीने लको-सको 🚃 बंद 🚃 दिये।

दिसने 🚃 पुनिसे पुल—ये 🚃 कीन हैं और क्या पहले हैं ?

🚃 🚟 🛲 🗪 करें केंद्र, सूर्यनायमञ्जे कुनन और हक्का विभाग, प्रतिद्वाविधि, स्थयानाची 📰 🛍 सहसी ■ बरुपका वे च्या कर रहे हैं।

🛮 और चगवान् शुर्वेक अधंत्रको क्या विधि 🖁 ? सूर्य-मन्दिरमे 🚃 पूर्व, दीव 🔤 📟 🖦 फर- 📖 होता 🖁 ? किस अब, नियम और दलसे भगवान् सूर्व प्रस्ता होते हैं ? वर्षे बीन-से पुरुष-पूर्व तथा उपहार दिये आते हैं ? यह 📖 मैं शुरूप कारक है इसे जान महाने । शुरूपारायको महारूपकी ची विजेक्सपते चर्चा करें।

📰 चुनिने कहा—इस 🔤 वे 🚃 साम और महर्षि चरित्रके संबदका वर्णन 📖 रहा है। एक बार सम्ब नहीं विशिष्टके पवित्र सामाना गये।

काँ सकर उन्होंने शिकारमा वसिष्ठके चरणेंमें सामा किया और वे 🚃 जेड़कर 🎆 श्रवसे सहे 📗 गगे। महर्षि वरितृते भी उनके पश्चिमानको देखकर प्रसन-मनसे उनसे

व्यक्तिक कोले—सम्बर्ध कुक्तर 📕 सम्पूर्ण प्रतीर

भवंकर कुछ-रोगसे विदीनें हो गया था, वह सर्वधा रोगमुक कैसे हुआ और तुम्हारे प्रारंखन दिव्य 📖 📺 क्रीण कैसे बढ़ गयी ? यह सब मुझे बताओ ।

🚃 तनके सहस्रतामेद्वार 🗷 🖫 उस 🚃 📖 प्रभावसे उन्होंने प्रमान होकर मुझे साधान दर्शन दिया है और उनसे मुझे करकी भी ऋति हुई है।

मसिक्को पुतः पूका—तुमने विका विकास स्वीकी आराधन को है ? तुन्हें किस वत, तर 🚃 दनसे 🚃 साचात् दर्जन हुआ ? यह सब विसारसे बतलाओ ।

सामाने क्या-व्यक्ता ! सुर्वको प्रसम् किया 🗓 का सम्बद्ध कृताना अन्य 📖 पूर्वक सूने।

आकरो पहुत पहुले 🔣 अञ्चलकत दुर्वासः मुख्यि

रपद्मार मिना था। इस्रोतने हरेको अकर उन्हेंने मुझे कुक्करोगर्से प्रस्त होनेका जाप दे दिया, जिसमे में कुक्करोगी हो गया । तम अरवन्त द्वांबी एवं लब्बित होते हुए की अपने पिछ भगवान् अंकुम्बर्क यस असर निवेदन केया—'तान ! वै दुर्जाल भूतिके पायसे कुछरोगसे प्रश्न केकर जन्मीयक पेडिस 📕 📰 है, मेरा शरीर गलना 🗷 रहा है। सम्बन्ध स्वर 🕸 बैठता जा रहा है। पीड़ासे प्राप्त निकल रहे है : बैची 📟 श्राप उपनार करनेपर भी पूत्रे जानि नहीं मिलती। जन अवस्की आहा प्राप्त कर है प्राप्त त्यापना चारता है। अतः 📖 मुझे यह आखा देनेकी कृषा करें, जिससे मैं इस करूने मुक 📕 सकूँ।' मेरी यह दौन जवन सुनकर उन्हें कहा दुःस हजा और उन्हेंनि क्रमपर 🎟 कर मुक्तमे कहा—'पुत्र ! 🚧 भारण करे, चिन्ता पत करे, क्योंकि जैसे सुने किन्वेन्त्र्ये आग अक्षाकर भरून कर देती है, कैसे ही किन्त करनेसे वेश और

मगवान् ब्रीकृष्य केले—कृ । एक सम्पन्नी 📖 ब्रह्मजीको प्रभाम 🎟 और उनसे पुछ कि पहासन ! मोधा

अभिक कष्ट देख है। मिलपूर्वक तुम देक्यापन करे। उससे समी रोग 🚃 हो जायैंगे / पितके ऐसे क्यन सुनकर मैंने

पुळा—'तात ! ऐसा सीन देवता है, जिसकी आराजन 📟

इस भवेकर रोगसे मैं मृक्ति पा सकुँ ?'

🌉 योगिशेष्ठ याङ्गवल्कम मृतिने अहारशेकने 🚃 पदावेनि

करनेके इच्छक प्रजीको किस देवताकी आराधन करनी चारिये 📱 अधाय स्वर्गको प्रतीर किस देवताको उपासना करनेसे होती है ? यह प्रयापर विश्व किससे उत्पन्न हुआ है और किसमें लीन होता है ? इन समका जात वर्णन करें।

**ब्रह्मणी चोले**—मार्चे ! ज्याने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है। यह मुक्तार में बहुत प्रशान हूँ। में अवपके प्रश्लोका उत्तर दे सा 🜓 इसे व्यानपूर्वक सूर्वे—जो देवप्रेष्ठ अपने उदयके साथ हो सपस्य जगरूका अन्यकार यह कर तीनी लोकोंको प्रतिकारित कर देते हैं, ये अवार-अवर, अव्यय, जाधन, 🚃 २ २ अञ्चलके जननेवाले, कर्मलाकी, सर्वदेवता और जनकुरे 🚟 है। 📖 मण्डल कभी श्रय नहीं होता। वे 🚃 📉, टेबलाउंके 🖿 टेबला, जगत्के आधार, सृष्टि, विकास संदारकाई है। बीची कुछ वायुक्तप होकर जिनमें लीन हो जले हैं, जिनकी सहस्र रहिमधोंने पूनि, सिद्धगंग और देवता निवास करते हैं, जनक, 📖, शुक्रदेव, वालकिल्य, अधिकान, यक्षतिक अवदि योगिका विकास प्रधान क्कालमें संबद्ध हर हैं, ऐसे वें बच्चा देवल सुर्वकरायण ही है। सहर, किन्तु तथा शिव आदिका नाम तो मात्र सुननेमें ही an है, पर सर्वाक्षे के दृष्टिगोचर नहीं होते, किंतु तिनिमन्त्रस्य सूर्वकरायम् समीको प्रश्नास दिसापी देते हैं। इसरिज्ये ने सभी देवताओं में बेहतम हैं। अतः माहबरूका । श्वकारे 🖩 सूर्व-वरायानके अतिरिक्त अन्य विस्ती देवलाकी उपस्य नहीं करनी चाहिये। इन लांका देवताको आराधना करनेसे सभी फल बाह हो सकते हैं।

पालकारक मुनिने अञ्चा—महाराज ! आपने मुझे बहुत 🗱 उत्तम उपदेश दिया है. वो बिलकुल संस्थ है, मैंने पहले भी बहुत कर सुर्वजगणनके महात्यको सुन्न है। 📰 ट्रांबण कब्रुस्से विष्णु, खान असून्से 📰 आप और कलारेसे बद उत्पन्न हुए हैं, उनकी गुलना और कीन देवता कर सकते हैं ? उनके गुलोका वर्णन पत्न किन सक्दोंने किया जा 📖 है ? 📟 मैं उन्हां 📰 आराधना-विभिन्ने सुननः **ब्याह्य हैं, जिसके क्षप्त में संसार-सागरको पार कर जा**जे । **य** 

कीन-से तत-उपकास-दान, होय-जप आदि है, जिनके करनेसे सुर्केन्द्रप्रयुक्त प्रस्ता क्षेत्रपर समस्त कहोंको दूर कर देते हैं 🗓 यह

अहम करुलनेकी कुमा करें; क्वीकि प्राणियोद्वारा

धर्म, अर्थ 📖 कामनी प्रक्रिक क्रिये को चेहाई की कार्ट है. उनमें बढ़ी चेहा 🚃 है जो मगण्यन् सूर्यका आजय ऋष कर अनुद्वित हो। अन्यवा ने सभी क्रिक्ट वर्ण है। इस अपार भेर संसार-सागरमें निमय प्राणिनोद्धार एक 📰 🗏 किया गया सूर्वनयसम्बर मुक्तियरे कार 📖 देता 👫। भक्तिमावसे परिपूर्ण व्यक्तकारको इन वक्तोको सनवन सद्याची प्रस्ता हो उठे और काले रूपे कि चलकाव ! 🚃 सूर्यनारायणको आराधनाका जो उत्तव 🚃 है, उसका 🖣 कर्मन कर रहा 🐧 एकप्रपंकित होकर 📖 सुने ।

ब्रह्माजी बोले-अर्दि और अन्तरे रहित, सर्वज्यत, परमञ्जू अपनी लीलपसे बहुर्वत-पुरुष-रूप 🚃 🚾 तंसारको उत्पन्न करनेवाले, अश्वर, सृष्टि-स्वनके समय सहर, पालनके अध्य किया और संबादकाराये रहता 🚃 पाल करनेवाले सर्वदेवमय, पूज्य मनवान् सूर्यन्ववनन ही है। 🚃 🛮 भेदाभेदसकप 🖿 भगवान् सूर्यको 🚃 🔛 📖 🚃 नाम कर्गन कर्मगा, 🛌 अस्त्रम 🚃 🕽 🕮 प्रकार होकर भगवान् भारकरने नुहाये 📖 🖦 ।

प्रहारणी पुनः थोले---पाज्यस्यन ! 🚃 📖 🎉 पगवान् सूर्पनारायणको स्तृति को । 🗯 सुनिसे 🗯 होका 🛮 📖 प्रकट हुए, तब 🛍 📖 पुर 🗷 पहराज ! केर-बेटाक्रोमें और पुराजीमें आपका ही प्रतिपदन हुआ है। 📺 प्राप्ता, अञ्च तथा परवदास्वरूप 🛊 । यह जनत् अवने ही नियम है। गृहस्थाशम 📖 पुरु है, ऐसे 🛚 करो आश्रमोचाले एत-दिन आपको अनेक पूर्तियोक पूजन करते है। आप ही सबके भारत-पिदा और चून्य है। अस्प विका देवताका स्थान क्यां पूजन करते हैं 🏻 मैं इसे नहीं संबद्ध 🖜 गा। हैं, इसे मैं सुनना चाहता है, भेरे मनमें बड़ा कौतुहरू है।

चगवान् सूर्यने बद्धाः—ऋत् ! यह अस्पन गृह का है, किंतु आप मेरे परम चक है, इसलिये में इसका कवावत्। वर्णन कर रहा हैं---वे परमात्मा सभी आंक्जिये व्यास, अचल,

निरम, सुभग तथा 📰 📕 तन्हें क्षेत्रज्ञ, पुरुष, दिरम्यगर्थ, महान् प्रयोग तक बुद्धि आदि अनेक नामेसे अधिकृत किया जाता है। यो तीनों स्टोकोंके एकमात आधार है, वे लिएन क्षेत्रर 🖩 अपनी इच्छासे सगुण हो जाते है, सक्के 🚃 🖫 सतः कोई कर्म नहीं करते और न हो कर्मफलको प्रक्रिये सेल्प्सि रहते हैं। वे परमारम 📖 ओर क्षिर, नेत, स्रव, पेर, चरित्रत, कान तक मुक्षवाले 📕 वे 🚃 नगरको अञ्चलित करके अवस्थित 🖁 🚃 संधी 🚃 🕶 स्वयन्त्र होकर अवन्यपूर्वक विवरण काते हैं।

सुन्वराम कर्मकम केमबारम सधैर केम कहरतता है। इसे 📟 कारण परमान्य साह कहत्वले हैं। 🖥 अवन्यक्ष्यूची प्रथम कारोचे पूर्व, कहत प्रण पारण करोचे विकास और पारण-पेत्रण करनेके कारण महासूत्रप कहे जाते है। वे हैं अनेक रूप चारण करते हैं। जिस प्रकार एक ही कपु सरोवरे जल-अपन 🛲 अनेक रूप शरण किये हुए है और देशे एक है आहि अनेक स्थल-पेटीके स्वरण अनेक क्योंने ऑक्ट्रेड की जले हैं, उसी प्रकार परमाल 🔣 अनेक च्या व्याप कर करते हैं। विस **व्या**पक 📰 📰 🖛 सन्तरम्य हो 📰 🐛 🗯 अगर 🚃

परमाणका सम्पूर्ण बगत् उत्पन्न होता है। जन वह अपनी इच्छाने संस्तरका संकार करता है, तब फिर इकान्दे ही रह कार है। परमारकको सोहकर कामूने कोई स्थापर या बनाव पदार्थ नित्र वहीं है, क्योंकि वे अक्षय, अप्रमेय और सर्वप्र बाढ़े आते हैं। इससे बहबार कोई अन्य नहीं है, वे ही पिता 📗 वे ही प्रकारित हैं, संभी देवता और असूर आदि उन परधारण मनकरदेवको अवस्थान करते हैं और वे उन्हें सदित प्रदान 🔤 है। वे सर्वनत होते हुए भी निर्मुण है। उसी आलस्वरूप परनेपरका 🖣 प्यान करता है तथा सूर्यरूप अपने आलाका ही पूजन करता हैं। हे ब्यक्करचय मुने ! धगवान् सूर्यने सार्य ही वे कर्ते मुक्तसे कही थीं। (अध्याध ६६-६७) +・現代を養い

मुर्वज्ञानको मुक्तिकाल देशकः । [ - दर्गेसेस्सरंकरकारकंकरमध्यास्य

## सूर्यनारायणके 💹 पुष्प, सूर्यमन्दिरमें मार्चन-लेयन आदिका फल, दीपदानका फल तथा सिद्धार्थ-स्क्रामी-क्राका विचान और 📖

🚃 बोले—बक्रमस्थ | एक बर मैंने मनकर् सूर्वनारायणसे उनके त्रिव पुष्पीके विकास जिल्लामा 🛗 । त्रव उन्होंने बहा था 📆 मरिसम्बद-(बेस्ब कुरुवने एक जाति) पुन्प मुक्ते आरपक्त विया है। जो मुक्ते इसे अर्पन करता है, यह उत्तम भोगोको 🚃 📰 🛮 । पुत्रे 🔛 कालः अर्थन कानेते सीमान्य, सुगन्धित कुटज-पुरुक्ते अक्षय ऐक्वेकी प्रति 🎹 है 📖 मन्दार-पुन्पसे सभी प्रकारके कुछ-रोजीका जान 🔝 है और मिल्य-पत्रमे पूजन करनेवर विपुत्त 🚃 🚃 श्रीती है। मन्दार-पुष्पकी मान्त्रसे सन्दर्श विकास वृक्ष, क्कुल-(मैलसियै-) कुक्की 📖 रूक्की 🚃 लाम, पलासपुरमसे अस्टि-दश्रीत, अभस्य-पूजाने 🚃 करनेपर (नेरा) सूर्यनारायकमा अनुब्ध समा करवार-(क्लैल-) पुष्प समर्पित करनेमें मेरे अनुकर होनेका सीमान्य जार होता है। बैकाके पूर्वोंसे सूर्यंबर्ध (कंटे) पूजा करनेपर के लेकको जाति होती है। एक इजार कमल-एक क्यूकेक 🖩 (सूर्य) लोकमें निवास करनेका धरा क्रम होता है। कहरा-पुष्प अर्पित करनेसे भानुसोक जात होता है। कालुरी, कपान, कुनुम तथा कपूरके थोगरी बनाये नये 🚃 📉 नवका रेक्ट करनेसे सदति जार होती है। सुर्वभरतकानुके वन्दिरका मार्जन तथा उपलेचन करनेवाला सभी रोगोंसे युक्त हो कार्ज 🖁 और 🎟 प्रोप्त ही प्रमुद धनमते प्रती होती है। को महिल्लीक गेरूसे भन्दिरको लेगन करता है, उसे सम्पत्ति पात होती है और वह रोगोसे मुक्ति प्राप्त करता है और यदि मृतिकासे लेपन चला है तो उसे अठारह प्रथमके कुछरोगोसे भूकि मिल जारी है।

सभी पुर्विति करवीत्वर पूचा और समस्त विसेचनीने रक्तवन्दनका विलेचन मुझे अधिक विच है। करवीरके पुर्विते के सूर्यमगवान्त्री (मेरी) पूजा करता है, हा संसारके सभी सुर्वोको पोगकर अन्तर्वे विकास विकास करता है।

पन्दिरमें लेपन करनेके पश्चात् मण्डल बनानेश सूर्यलोकको व्या होती है। एक मण्डल बनानेशे अर्थको प्रति, दो मण्डल बनानेशे अर्थाण, तीन मण्डलको रचना करनेले अर्थिच्छत्र संतान, व्या मण्डल बनानेशे लक्ष्यी, पीच मण्डल बनानेशे विपुल धन-प्रत्य, वाः मण्डलेको स्वना करनेशे आयु, 📖 और यद्भ तथा सात मण्यालंकी रचना करनेसे रण्डलका अधिपति होता है सक्त आयु, धन, पुत्र और रुज्यपी प्रति होती है एवं अन्तमें उसे सूर्यलेक मिलता है।

विद्यों पुरावर दीवक प्रव्यक्तित करनेसे नेत्र-रेग नहीं होका। प्रमुख्ते तेलका दौवक जलनेसे सीधाप्य प्राप्त होता है, किलके तेलका दौवक जल्मनेसे सूर्यलेक ब्या कहुआ तेलसे ब्याह्म स्वासीय समुशीय विकास ब्याह्म होती है।

प्रमाण गंव-पृथ- वृष-दीव आदि उपकरीते सूर्यका
पृथ्न कर करा प्रकरके नैबेध निकेटत करने पाहिये। पृथीय
और कनेरके पृथ्न, श्रुपैसे विकय-पृथ्न, गर्थोमे कुंकुम,
रम्बल रसम्बन्ध, टीपेसे पृतदीय तथा नैकेदीये मोदक
पण्डान् सूर्यकरायको करम प्रिय है। अंतः श्रुपी पश्चुओरे
उनकी पृष्ण करने व्यक्तिये। पृष्ण करनेक पश्चम् प्रदक्षिणा
और क्यक्तिय करके हाथमें केत सरसीका एक दाना और जरूर
रेका सूर्यभगवान्के सम्बुल कर्के होकर इदयमें कुंबाह
क्रम्यका विकान करते हुए सरसीमादित जलको पी धामा
स्थान परंतु दतिके अस्वय स्पर्ण क्रिये हो। इसी प्रकार दूसरी
स्थान करना करिये अस्वय स्पर्ण स्थानिक हो। इसी प्रकार दूसरी
स्थान करना करिये और इसी तरह सातवीं सप्तमीतक एक-पृक्ष
स्थाने हुए इस सन्तकों स्थानकों सप्तमीतत करके पान

विकार्यकारणं व्या सोके सर्वत शूचके वधा । तथा व्यापि विकार्यविश्वतः कुरुतं रविः ॥ (वास्त्रवं ६८ । ३६)

वस्त्रकार श्रांकोक देविसे जब और हवन बनना चाहिये।
वह भी विधि है कि प्रचय सहयोके दिन जलके साथ सिन्हार्थ
(सरसों) का कन करे, दूसरी सहयोको पृश्के साथ और आगे

(सरसों) का कन करे, दूसरी सहयोको पृश्के साथ और आगे

(सरसों) का कन करे, दूसरी सहयोको पृश्के साथ और आगे

(सरसों) का कन करे, दूसरी साथ और प्रक्रमानक सिन्हार्थका

करे। इस प्रकार की सर्थय-स्वामीका जत करता है, ब्रा बहुत-सा कन, पुत्र और ऐसर्य ब्रा ब्रास्ट है। उसकी सभी

यन:कप्रमाई सिन्द हो जाती है और वह सूर्यरकेकमें निवास
करता है। (अध्याय ६८)

## भूभाञ्चम 📖 और उनके फल

**अ**ग्राप्ति शेले—बक्रालय ! जे व्यक्ति सक्तीने उपवास 📰 विधिपूर्वक सुर्वनग्रकाका पूका, जप एव ादि क्रियाएँ सम्पन्नस दक्षिके 🚃 सूर्वनस ध्यान 📰 हुए सरान करता 🕏 तम उत्ते 📖 जो 🚃 दिखायी देते हैं, उन साप्र-फलोका में 🚃 🔤 📖 रहा है। यदि स्वापे सुर्वका इदय, इन्ह्रभ्क और कन्द्रक 🔤 दे तो सभी समृद्धियाँ 🚥 होती हैं। याता पहने व्यक्ति, 📟 या 🚃 आयाज, क्षेत्र कमल, बाबर, 📖 सीना, सरम्बर्ग, पुरुषी प्राप्ति, संधितका श्रीप्रा च निकालना 📖 पान करना पेसा कात देखनेसे ऐक्पीकी 📰 🔤 है। युक्तक प्रवासीके दर्शनके एव-व्यक्तिक 🚥 📟 है। सप्रमे 🚃 वृक्तपर चढ़े 🚃 असने मुख्ये 🚃 र्गी का स्थितनेका दीएन करे ही और 🔣 केवर्ग प्रका होता है। संदे या 🔛 🔛 अथवा 📟 🗎 नजने 🔛 🚃 🖟 📰 बतानी 📰 🌉 है। 📺, बद तथा बुद्धने विजनकारिका जो 🚃 देशना है. 📷 भूका 🚥 🕬 🗓 मो अग्नि-वान करता है, 🔤 🚃 🚃 है। यदि स्थाने अपने अक्र प्रन्यतिन केते दिस्काने दे और विरामें पीका के 🖥 सम्पन्ति विरामी है । केन 🚃 बन्धा, बन्धा

और ब्रह्मल एसीका दर्शन जुम होला है। देवल-आहाण, आवर्ष, पुर, पुर, तथा 📖 स्त्रमें 🖩 🚃 पर्जने 🗓 क ··· होता है<sup>9</sup> र स्वयमें सिरका कटन ···· फटन, पैटोने बेटीका बहुना, सन्य-अधिका संकेतक 🖥 । स्थाने चेनेसे हर्पकी 🔤 📰 है। योद्ध, बैल, बेल कमल तथा श्रेष्ट हाथीयर 🚃 🚃 च्यानेसे महान ऐश्वर्य का 📰 है। यह और **ार्थिक प्रमादेशे, पृथ्वीको उत्तर दे और पर्वतको असाह** केलेंद्र को कार्यका लाभ होता है। पेट्से 🔣 निकारेंद्र और उसमें कुकाओं लपेटें, व्यंत-प्रमुद्ध तथा नदी 🚃 करे हो अल्बाधक देवनंत्रं 🛗 होती है। सन्दर बन्धि गोदमें बैठे 🚾 बहुत-से 📖 आशीयांद है, 🚃 बाढ़ि प्रश्नात की. 🚟 🚃 हो, अचीर बात मुख्ये और बाहनेमें 🔤 क्या यहरूदायक 🚃 📰 दर्जन एवं प्राप्ति हो से भन और असेन्यक राज्य सेना है। 💳 🚟 🚃 🚃 और प्रमी है, 🛗 उन 🚟 देगी देवता है 🖥 यह रेगके युक्त से बात है। इस अवल श्रीकी हुए देशनेक प्रश्नात मातःकार कारकार राज-स्थाप अध्य सम स्टब्स पारिने<sup>1</sup>।

(अध्यम ६९)

## भिन्दार्थ-(सर्थय-) सहायी-प्रतके ब्रह्मानगर्था ज्यान

व्यक्तियों के से स्वयंत्र का शिक्षा के स्वयंत्र का स

क रिजार्थ-सामीके उम्रापनकी संवेश विकि है।

हक प्रयाद परिष्णुर्वेक साठ सहयोवन मा करते हैं। अवन सुकारी आहे होती है और देश अनुसंध-पश्चमा पाल आत होता है। इस करते सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। अनुसंधे देशकर मा सम्बद्ध क्या हुए साथ सभी देग इसके अनुसन्धे दूर चानते हैं। जात-नियम सभा तम करके संख सामविकों जन बरनेसे प्रमुख निवाद, चंद, पुत्र, चान्य, आरोग्य और वर्षको तथा अन्त समयने सुर्वकोकाको प्राप्त कर देशा है।

परव्यद्वनि तत्वनी सरवमेन हैं: निर्दिशः। (1000) ६५ । एउ-ए५)

१-देवदिकसगणकंपुरनुद्धारम्भः

२- परत तथ निरंति । विकास क्षेत्र । विकास कर्षा । विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र विकास क्षेत्र । विकास क्षेत्र विकास क्षेत्र ।

इस सप्तमी-व्रतको विधिका जो 🚃 🚃 📱 🚃 उसे पक्ता है, 🖿 📕 सूर्वनारायणमें स्थेन 📕 जाता है। देवता और मुनि भी इस वतके महास्थको सुनका सूर्वनस्थलके शक हो गये हैं। जो 🎹 📰 आक्रवनका स्वयं सक्तव काता है 🚃 दूसोको सुनतः 🖁 🖥 वे दोनी सूर्यलोकको आर्थ 🕏 । रोगी यदि इसका ...... करे तो रोगकुक हो जाता है। इस वतकी विकास रक्तेवाल भक्त ऑपलॉक इच्छाओंको प्राप करता 🛘 और सर्वस्थेकको जता 🖫 📖 🚃 🚃 पहुंबर पात 🔣 जाय से मार्गने 🔛 🔛 🚟 🚃 स्थाल होती है। जो कोई भी जिस भ्यार्ककी कामन हाला है. ल्ह्यस्तर 🚃 📖 धनसन् सूर्वका नाम-स्तोत इक्काची सोले—बद्धमस्यः ! मनकर् 🐺 🎏 क्रमोंके सामनसे प्रसार होते हैं, मैं उनका कर्पन कर रहा हूं... 📖 सूर्याय निरमाय राज्येत्रकांच सामन्त्रे । भारतसम् पराष्ट्राच मार्गेन्यस्य विकासीः श निस्त्, रहि, अधे, धानु, चानस्त्, मकनु, मार्चन्द्र कथा विकासान् नामीसे युक्त भगवान् सूर्वको 🔣 जनस्कार ै। आवित्यायाविकेवाय गमके योगनाति । विवासताम सीराय अपने विवेदान क आदिदेव, र्युक्तमाली, दिवाकर, दीव, अपि तथा । नामक भगवान आदिसकी नेश आहात है।

प्रभावताच विकास तकते.औद्वीताच्या । सर्वे गोपार्थ 🜃 🜃 🗷 वनमे तकः ॥

गोपति (किरमॅकि स्थानी) तथा दिवयति मध्यक्ते हैं, आवके

रमें 🔤 🚃 च अर्थने सम्बद्ध थ।

पूर्ण व्याप्त विशास वर्शनाव्यको तथः ॥

नमी हिनकते नित्यं बर्णाय 💷 💷

हरचे इरिवासाय क्रिक्ट मतमे उपः । हितकृत् (संसारक कल्यम करनेवाले), वर्ग, तपन,

हरि, हरिताश (हरे रंगके अखेक्करे), विकारि जनकन्

अंजुलान् नामकाले भागवान् सूर्वको मेरा प्रकास है।

खता, 🎟 , अर्थम, कस्म, पूच, भग, दिश, धर्मन्त्र,

भेग नित्व नमस्कार है।

हे अदिक्षिके पुत्र भगवान् सुर्थं ! आप प्रभावार, मिता,

वह हों। विकास कर कर है। गर्भिकी हैं। अवस्था सुने हो वह सुकर्ष्य पुत्रको जन्म देती है, बन्धा सुने हों कर करती है। बाइवल्का ! कर सब हिंदी है, बन्धा सुने हों हों कर करती है। बाइवल्का ! कर सब हिंदी हों और मैंने अरुपको सुने दों और हिंदी अरुपको सुने दों और हिंदी अरुपको सुने दों और हिंदी हों को अरुपनी कर हैं। हिंदी हों को अरुपनी हिंदी हैं। हैं। इदित होते ही को अरुपनी हिंदी हैं। वे इदितान सुर्व-उद्यान हैं। बन्दान करा-पिता तथा गुरु है, अरुपक प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त प्राप्त प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त हैं। अरुपक हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक प्राप्त हैं। अरुपक हैं।

# स्वयं नित्य मेर नगरवार है । स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं । विष्णु स्वयः (विष्ण), जाना समस्ति, हे स्वयं के स्वयं स्वयं सर्वप्रवास्थ व । अदिवेष, एककार्य (विष्णं स्वयं प्रवास के), अवेत्वयं, एककार्य (विष्णं स्वयं प्रवास के), अवेत्वयं, एककार्य (विष्णं स्वयं प्रवास के), अवेत्वयं, एककार्य स्वयं सर्वप्रवास व । सर्वेष्णं सर्वप्रवास मेरा नित्य नगरवार है। विषय सर्वभूवार्य विकासार्तिस्थयं व । स्वः क्वारंगंवायं सर्वेष्णं ।।

नाः च्यानकेषाय नवे वेदाविजूतिये॥ संगतः व्यानकेषाय नवे वेदाविजूतिये॥ संगतः व्यानकात्वर हित करनेवाले, विवा (करणायकार्थ) और असर्विद (दुःस्थिनाद्यो), पद्मक्योध (कम्पलेको विकासित करनेवाले), वेदादिसूर्ति भगवान् सूर्यकरे नवस्तर है।

प्रशासकार का अध्यक्ष अध्यक्ष स्थापकार का अध्यक्ष स्थापकार का प्रशासकार के । जीवानुक राज्या प्राप्तकार का प्रशासकार के । जीवानुक राज्या प्राप्तकार के ।

विकास को निन्धं नयः कृष्याम निन्ध्यः । कोऽस्कारिकिकृतम् को स्थास निन्धाः ॥

(अध्यक्ष ५१)

पिक्न, कृष्ण, अदितिस्य तथा सभव नामकाले पर्यापन्। सुर्यको कर-बार नगस्कार है।

ब्रह्माकीने कहा — अङ्गलस्य ! जे वन्त्रः साम्बारः और प्रतःषाल इन नामोका परित्र होकर पढ़ करता है, वह मेरे समान ही मन्त्रेजध्यात परकेको प्राप्त करता है। इस जम-स्रोजसे सुर्वेक्ये ......... करनेपर उनके अनुष्यक्षे वर्ग,

व्हर्क, काम, आरोम्ब, राज्य तथा विजयकी प्राप्ति होती है। यदि पन्नव कथनमें हो तो इसके पाउसे कथनमूक हो जाता है। इसके अप करनेसे शब्दी धावीसे सुरकाए मिल जाता है। यह को सूर्व-स्तोत मैंने कहा है, वह अत्यन्त रहस्यभय है।

## -ac-

## जन्मक्रेयमें सूर्यनारायणकी आराधनाके तीन प्रमुख स्थान, दुर्वांसा युनिका साम्बको ऋप देना

सुचन्त्र सुनि बोले—एकर् ! सहस्रकेशे इस जन्म रुप्टेश प्रक्रकर याक्रकरण भूगिने भूर्यमणकाम्बी स्वयाकन की, जिसके प्रधानके उन्हें सालकेक-पूर्वत कर पूर्व । अतः भगवान् सूर्वको 🚃 काके 🚃 🗎 🚃 देखपुर्वक मोक्को 🚃 🚃 सकेंगे।

राजा समानीकाने पूका-मूने । जन्मक्रीयमे धारकत् सृप्दिकका 📰 स्थान कहाँ है ? ऋई विकित्र्यंक 🚃 करनेसे प्राप्त 🗸 बनोकाव्यतः करूबदे 🛗 🖥 सके :

सुमन्तुः मुनिने भक्षाः — राजन् ! 📰 जन्मुद्रीपने पनवान् सुर्केनप्रयंत्रके मुख्य तीन स्थान हैं<sup>1</sup>। प्रथम इन्द्रका 🗒 इनक मुखीर 📖 सीमरा तीनी लोकोमे प्रसिद्ध कालप्रिय (कालपी) नामक स्वान 🖥। इस द्वीपमें 🚃 🕮 अतिहरू स्वा स्थान भी सभावानि प्राप्ता है, 🔝 🚃 नदीके नदक अवस्थित है, जिसको साम्बपुर भी कहा जत्त है, वहाँ भगवान्। सुर्यभारामण व्यास्त्र भारतिको प्रसात होका होकावरण्याको रिष्ये अपने 🊃 🚟 दिल-रूपमें विकास करते हैं। 📮 भक्तिपूर्वक उनका पूजन करता है, उसको ये स्वीकार करते हैं। राका प्रमानीकने धुन: पुरा --- महामने ! सम्ब सीन

है ? किसका पुत्र है ? भगवान् सुबी उसके उत्तर अपनी 📖 क्यों 📰 ? यह भी 📖 📖 कुमा 🕸 ।

स्यन् यनिने कहा—गणन् ! संसार्थे छदत . प्रसिद्ध है, उनमेरे विका नामके जो अहंदरन है, वे 📖 जगहने

कमुदेव क्रीकृष्णरूपमें अवसीर्ग हुए। इनकी प्राप्यवती नामकी पार्वेसे महावरणवाली साम्य नामक पुत्र हुआ। वह प्रतपका कुल-रोगसे प्रस्त हो गया। उससे पुत्त होनेक लिये हरले चलक्कम् सूर्वकार्यकार्यः अवस्थान की और उसीने अपने मामग्रे सम्बद्धाः सम्बद्धाः 📰 📰 यहीयाः भगवान् कुर्वनगरकामे प्रका 📖 📖 को ।

तरक **क्रांजनीकाने पूछा—पदा**ग्रज ( साम्बके हारा ऐसा कीन-सर अक्सप हुआ था, विस्तरे उसे इतना कटोर ज्ञाप निरुष्त । बोकेने अपराधान तो 🚃 नहीं निरुत्ता ।

**ार्क्स मुनिने सदा—पन**् । इस मृतासका वर्णन हम संक्षेत्रमें कर रहे हैं, अल्प स्वमध्यन होकर सुने । एक समय स्ट्रके अवसारकृत दुर्वासा मृति सोनी स्ट्रेम्प्रेमें विश्वरण करते हुए क्रायाक्षेत्रे अस्ये, परंतु वीले-पीले नेवीसे युक्त कृषा-असीर, 🚃 विकृत रूपवाले दुर्वसाको देखका 🚃 अपने सुन्दर सक्यके अहंबरमें कावर उनके देखते, बलने आहे. बेहाओंकी स्वत्र्य करने लगे। उनके मुखके समान अपना ही विकृत पूर्व बनावर उन्होंकी पाँति चलने रुने। यह देखकर और 'सम्बन्धे रूप तथा मैकनका अस्यन्त अभिमान है' 📖 सम्बद्धान्त दुर्वासः मुनिको 🚃 📆 प्रोध 📗 आचा। वे 🚃 📰 हुए यह 📰 उदे—'साम्ब ! मुझे कुरूप और अपनेको अति कारताल कार हुने मेरा परिहास भिन्मा है। ना, वू औन से कुछरोगमें त्रसा हो जापाता।

र-III तीने स्थानेंके विशेष जनकरिके रियो 'कारकार'के ५३वे वर्षि विशेषकु 'सूर्वहु'as IIII IIIII' पूर्व-पॉन्ट्' sam अस्ति संस देखना चर्काय ।

२-पारे नगर अने परस्क 'पुरस्कान' पुरः पुरस्कान प्रकारने 'कुसार' 🔤 📖 गुआ, यो आव प्रक्रिकारने राह्मैके प्रीवास चगमें कित है।

ऐसे 📕 एक बार पूनः परिहास विजे अलेके बारून दुर्वासा मुनिको फिर राजा देना पदा और उसी फाफो कलकरूप सामारी लेकेचा एक पुसर काला हुआ, बो समस्त बहुवेशियेकि विन्तत्रका करण कर।

अतः देवता, गुरु और ब्राह्मण आदिको अवद्यः मुद्रिधन् । पुरुषको कभी नहीं करनी बाहिये। इन लोगोंके समान लदैव विनम्न ही बना रहना चाहिये और सदा मक्द वालो हो बोलनो चाहिये । राजन् ! सहराजीने भगवान् शिक्षके सम्बद्ध 🗐 📗 इलोक पढ़े थे, क्या अनुबंध जापने सुना नहीं है ?

 प्रमिन्नीको व्यवस्थान व्यवस्थान । स्वयारमुष्ट्रः परदारवर्षिसे २ शस्य लोके भवनकि विक्रिक् ॥ न तथा प्रची न व्याप्त । करूने नेव शीवरच्याचा । प्रकृतकारी पूर्ण का 📰 स्मृतकारिको सानी 🛭 (SE-10) (a) (A)-10)

📹 पर्यात्म है उचा जिसने 🚃 एवं क्रोधपर विजय 🚃 🚃 हो है, 🔙 🌉 और 🔙 है, दुस्रेको 🔙 🌃 देख, 📟 ब्रोसे संबुध 🖁 हचा पराची ब्ह्रेम्ब परित्याग 📰 🕯, ऐसे महानके सिये संसारमें विश्वेतपात भी 📰 नहीं है है

'पुरुषको चन्द्रमा, बल, 🏬 अप्रैर झीतल साचा वैसा नहीं कर पत्ते हैं, जैसा अध्यक्ष उसे क्रिकारी मंध्र 🚃 तुननेसे यस 🚃 है।'

करन् ! इस 🚥 दुर्जसा मुनिके प्राप्तके सामाको कुछनेन हुआ था। उद्यक्त उसने धारवान् सुर्वशायणकी अवस्था बाले पुरः असरे सुन्दर रूप तथा असोन्यको हास 🔤 और असे 🚃 सम्बद्ध 📖 एक 📖 हाना पगवन् 🚟 🚟 मिद्धः।

(39979 99-99)

## ---सुर्यनारायकाकी स्राह्म मूर्तिकोका संबंधि

राया रातानीकने कक् — कुन्ने ! 🚃 इत है. 🔤 स्थान बन्नवकारक से नहीं है. 🔛 🗐 🖦 ३० स्थानके यावात्मका इतना वर्णन केले 🛍 🗒 🕏 २ इतन्ये युक्ते संदेश है ।

लुक्का मुनि बोले—भरत ! वर्णन् सूर्वन्यवस्य स्थान को सनावन-बनलसे है। सान्यने उस स्थानकी प्रतिक्र को कदमें की है। इसका हम संक्षेत्रमें कर्नन करते है। अबर प्रेमपूर्वक उसे सूने-

इस बाह्या परमाहरसम्य अवस्थाने कारकत् सूर्व-नापपणने अपने विक्रकपने तप 🔤 🛊 । 🗎 🛊 अञ्चल **ार्या**क भगवान् सूर्यं क्रिक देवताओं और प्रकारोकी सुक्रि करके सार्य बारह रूप करण कर अदितिके गर्पसे इरफा हुए। इसीसे उनका 🚃 आदित्य पदा । इन्द्र, वाता, पर्यन्य, 🚃 लष्टा, अर्थम, भग, विवरमन्, अंत्र, किन्नू, करन तथ मित्र—ये सूर्य भगवान्त्री द्वादश मृतिर्ध है। इन सबसे सम्पूर्ण जगत् 🚃 है। इनमेंसे प्रकम 📆 नामक 🚟 देक्सजमें स्थित है, जो सभी दैत्यों और टाक्केक संहार 🚃 है। दूसरो पाता नामक मुर्ति कन्नपतिमे दिवत होका सृष्टिकी

🚃 📟 🛊 । 📰 पर्यन्य मानक मूर्ति 🔤 🐃 केवर अव्यवस्थ करते है। एक 🚥 बीधी मूर्ति पन्नोमें अवस्थित होकर व्यक्तिक 🚾 नाती है। प्रोक्ती 🚃 🚃 📕 📗 बनत्वतियो 🚾 ओवधियोंने रिश्त 🕯 : 🚃 🚃 आर्थ्या प्रजाको रक्षा कालेके लिये पुरोपे रिवल है। ब्याबा पन करक पूर्ति पृथ्वी और फ्लेसेंगे 📖 है। **व्याप्त क्रिक्ट** मार्ग मृति अपिये क्रिया है और यह - अनुसर्वे प्रवासी है। नवीं अंत् MINI पूर्वे चत्रको **माना है,** जो जगरूको **माना** 📖 है । इसमी बिन्नु 📖 मूर्ति दैल्प्रेका 🊃 📖 रिस्पे सदैव ...... भारण करती है। त्यारहवीं वरूण समकी मूर्ति समझ जनवृत्ते 🛗 🚾 है और समुद्रने उसका 🚃 है । इसीरिन्ये समुद्रको वरुगारूय 🔣 कहा जाता है । बारहवीं नगर मृति जनस्य क्या करनेके रित्रो चन्द्रमागा 🏬 उटपर विस्तामन है । यहाँ सुधैनसम्बद्ध 🚃 वाद-पान करके वय 📖 है और मित्र-रूपसे यहाँपर 🚃 🕏 इसक्ति इस स्थानको शिक्पर (मित्रवन) भी कहते हैं। ये **व्या** कृष्णमधी दृष्टिले होताला अनुप्रह करते हुए मल्लेको भारि-भारिके वर देकर संस्तृह करते रहते हैं। यह स्थान

पुण्यप्रद है : महामाहो । वहींपर अभित तेजसी साम्बने सूर्यनसम्बन्धी आराधना करके मनोबाधिका करा प्राप्त किया है । करकी सामान और आदेशने साम्बने वहीं करकन् सूर्वको प्रविद्यापित किया । जो पूरूप प्रक्रिपूर्वक सूर्यनारायको प्रणाम कारा है और प्रदा-प्रक्रिसे उनकी आयाचना करता है, यह सम्पूर्ण प्रपोते मुकाहेका सूर्यसोकमें निवास करता है । (अञ्चान ७४)

## 💳 🚃 सुर्वेक विराद्ध्य तथा उनके प्रभावका वर्णन

सुमन्त्वी ओलं—उजन् ! मन्त्रा कुरतेगका प्राप्त प्राप्तकर दुःचित हो सम्बन्धे अवने दिला भगवान् औकृत्यको पूछा—तात ! मेरा यह बद्ध कैने दूर होगा ? कृत्यकर इसका स्पाप आप बताये ।

भगवान् वीकृत्यने व्ययः—वसः ! तृतः भगवान् सूर्वजी कारायन करे, समसे तृत्वतः यह कृश्येण दूर से वास्त्रात्व तृतः वास्त्रात्व भूवेनस्त्रायको विभागको विभागको विभागको विभागको वास्त्रात्व । व

एक विश्व जाराओं इत्याप्युटीने पंगमान् सीकृतनका दर्जन करनेके दिन्मे आमे । असे समय साम्यने अस्त्यत्त विश्वा भागते बाता उन्हें जनान विश्व और हाथ जोक्यन क्रिकेट विश्व महामुचे । मैं आपनी करण हूँ, आप पेर उपय कृतानक कोई ऐसा उपाय बताये, जिससे मेरा शरीर कुत्रातेमके मुक्त हैं ।

नारक्जीने कहा — स्तम्य । स्ति देव सम्बद्ध स्तुति करते हैं, उन्होंका शुक्ष भी पूजक करे। स्ति कृत्यते दुव रोगने मृत्य हो जाजीने।

नारक्ष्मीने कहा---पुत्र । समस्त देवकानेके पुत्रम् नगरकार करने योग्य और निरक्तर स्तुत्व मनवान् सूर्वकरायण ही हैं। तुम उनके प्रमायको सुनो----

समय समस्त लेकोमें निकरण करता हुआ है सूर्यत्येकमें पहुँचा। वहाँ मैंने देखा कि देवता, गण्यर्थ, नण, यस, ब्लाइ और अपस्पई सूर्यनसम्बद्ध सेवाने लगे हुए हैं। गण्यर्थ गीत जा स्त्र हैं और अपस्पई नृत्य कर हो। हैं। ससस-पद्म तथा नग सक्त अरूप करके उनकी स्वाके लिये

सके है। अन्तेर, कबुकेंट एवं साधवेद शृतिका सकप धारण कर स्वर्थ सुरि कर रहे हैं और ऋषियान भी वेदोंकी ऋचाओं से 🚃 🚃 कर खे हैं। पूर्तकवर्षे जातः, मध्याह और कार्यकारमध्ये होन्ते सुन्दर | | | | संध्यारी हाध्ये वक तथा 🚃 बारन 🛗 हुए सूर्यन्यरूपले बार्ट और स्थित है। **ा राज्यकार्य है, यक्ष्मह-संदर्ध कटायके समा**ग 🔤 मार्च-संच्या नंगरको 🚃 वर्गवारी है। देखान सेनी संबद्धजीमें ३५ माचान् सूर्यका पूजर करते हैं। हन्द्र सर्देव 🚛 कहे 🚃 भगवान सर्वकी ज्ञवन्त्रवा 🖛त रहते हैं। परवृक्त ज्येष्ठ भारत असल उनका सार्वय है। का कालके अक्क्केस निर्मित इनके १५६६ संसालक है। हो व्यक्ति क्रम्प्रकथ साल जन्छ उनके त्यमें जुते हुए हैं। सही समा निवृत्त जनको से परिवर्ध उनके दोनो ओर बैटी हुई है। सभी 🔤 हाथ जोड़कर पार्च 🔣 स्त्री हैं। पिगर, रेजाक, **ावाच्या** अदिशन तथा करमाव नामक दो मको द्वारपालके रूपमे 🔤 💌 लगे हुए हैं। दिच्ही 🔤 सामने तथा ब्यान आदि सची देवता इनको स्ट्रीत कर रहे हैं।

भगवान् शूर्धनाराथयका ऐसा जानाय देखकार मैंने होता विक्र भड़ी देव हैं, को समस्त देवताओंके पूज्य हैं। सम्ब | तुम

समाने पूजन-महाराज ! मैं मंत्रीमित यह जानता चहवा है कि सूर्वनगणना सर्वगत मैंसो है ? उनकी कितती रिस्मव है ? कितनी मूर्तियों है ? उन्हों तथा निशुभा नामकी ये दोनों मार्चाई कीन है ? पिगल, रेस्कक और दण्डनायक कार्य पन्न कर्य करते हैं ? करचान, पश्ची कीन है ? उनके आगे स्थित रहनेकरण दिपदी कीन है ? और ये कौन-कौन देखता है, जो उनके चतुर्दिक् साहे रहते हैं ? आप इन समका उनका अच्छी तरहते वर्णन करें, जिससे हैं मी सूर्यनागणके उनका आपा

नास्कृषीने कहा — साम्ब ! अब वै सूर्वज्ञत्वकृते 📺 रूपका वर्णन का 📰 🛊 : तुर उसे प्रेमपूर्वक सुन्ने— विषयान् देव अध्यक्त कारण, नित्य, सन् एवं अस्तर् खरूप है। जो तत्वचित्तक पूरव है, के उनको प्रचान और प्रकृति 🚃 करते हैं। ये गम्प, 💹 तथा स्लग्ने होन एवं ऋत्य और स्पर्शसे पहल है। के अगुरूबी बोर्न 🖁 तथा सम्बद्धन परमदा है। वे संची प्राणियोंके निकला है। वे अव्यक्ति, अनवा, अथ, सुरथ, विगुण, 🎟 तथा अधिकेष है, उन्हें परवपूरण an em है। उन्हें महत्त्वा पंत्रकार सुर्वते यह तक <u>स्त्रक</u> परिव्यक्त है। 📰 परमेक्सको 📰 🚁 एवं केक्स-लक्षणोजाती है। उनको चुद्धि वर्ष एवं ऐसर्पको प्रदान कानेकाले 📰 मुंद्र असे क्ली है। इन असल्या 🗟 प इच्छा होती है, कही सब उत्पन्न होता है। 🖩 ही सुद्धिके सबक चतुर्वक ब्रह्मा चन जाते हैं और प्रस्तवके समय बालकक हो जाते हैं। पालनके समय वे ही पुरुष किन्युक्त प्रक्रम कर लेते है। सबक्द पुरुवारे ये तीयो अवस्थार्ग उनके तीन गुलोके अनुसार 🞙 । ये आदिदेश होनेके 🚃 🚃 तथा 🚃 होनेके कारण अन को गये हैं। देखकाओंने पहान होनेसे 🛭 महार्थेल 🎆 गर्थ 🖣 । हाताल लोक्बेंब ईस होने 🚃 अन्येक होनिके कारण 🖩 ईशर 💹 गये है। सहस्य होनेसे सहक राजा 🚃 🛗 पर महे 📖 है। 🛚 सपस प्रकारित रक्ष और पाएल करते 🕽, इसरिन्धे 🚃 🛗 गर्व 🗓 पूर्वर प्रापन करनेसे 'पूरव,' 🚃 न 📰 और अपूर्व क्षेत्रेक्रे 'स्वयम्भु' नामसे प्रसिद्ध है। हिरण्याब्दमें १६वेके 🚃 वे हिरण्यगर्भ कहे आहे हैं। ये दिशकोंके स्थानी, 📰 🙉 देवताओंके भी देवता होनेसे देवदेव तथा दिवाका भी कहे जते हैं। तलहरू। ऋषियोंने अपूछे जर कहा है, वह अपू इनका अस्त्रम है, इसीलिये 'आप' जरावण करे को है। 'अर' 🕶 श्रीभतावाचक 🚃 है। 'तहर' 🖫 समूद-का धूरण करनेपर फिर उसमें फ़िक्स नहीं रहती, इस्त्रेके कारण उसे नह

करते हैं। प्ररूपकारूमें सभी स्थावन-बंगम 🚃 🗟 🚟 हैं।

नव सम्पूर्ण जगत् समृद्रके सम्प्रन एकाकार हो जाता है, छव

वे पुरुष नारावणस्था भारम करके तस समुद्रमें ऋका करते हैं।

वे पुरुष वेदीमें सहस्रों सियो, सहस्रो मुज्यको, स्ट्रांबी नेत्रों 🚃

सहलों चरणेंवाले को गये हैं। ये 🖩 देवलओंने प्रथम देवल

📟 जगतुकी रक्षा करनेवाटे हैं।

**कस्त्र्वीने पुनः बद्धा**—सम्ब ! सहस्रपुगके समान ज़ज़्या थांक विकासर प्रधान होते ही उन पुरुषने जब सुद्धि रक्षनेकी उच्छा की, तम उन्होंने देखा कि सम्पूर्ण पृथ्वी जरूमे कृषी हुई है। 🚃 उन्होंने क्याहरूप घारण करके प्यास्तागरके जलमे 📖 १०किश ३३३६ किया । उस समय करण केवल इसीर कर्जनत हो उठा और सेमोंने स्थित महर्षितन उनको स्तुति करने छने । पुनः सहाका रूप धारण करके ने सहिन्दी रचना करने लगे । उन्होंने सर्वप्रयम अपने ही स्वान अपने क्यरे पुरा-सहित श्रेष्ठ दस मानसपूर्वीको इत्यत किन । जिन्हे जम हैं — पृतु, ऑगत, ऑह, पुरस्त, पुरस्त, 🚃 मर्धान, दश 📢 बाँगाः—इन प्रशापतिनीकी सृष्टि क्ला का ब्राह्मका देश-कालासे हैं हो सूर्यनारायन देखे ऑस्ट्रीके पुत्र-काली साथे कहुर्जूत हुए। मरीविके पुत करकर कुर्। दक्षकी कन्या अदितिका विवाह महर्वि कहरपके साव हुआ। उसने 'धूर्युक: माः' से संयुक्त एक अच्छ उत्पत्त किया, किसने हादशान्य भगवान् सूर्य प्रकट हुए। इस पूर्वमञ्चलका क्यार में इजार केवन है । स्टाईस हवार केवन 🚃 📰 🕼 विस अवज्ञ कदम्बस पूर्व कार्व ओर के अरोमें काम रहता है, उसी प्रकार सूर्यनपहल अपनी **व्यक्तिल परम्या राजा है। यह सहस्ते सिरवाल प्**रप विस्ताने परमारक कहते हैं, इस देनोमच मण्डलके मध्य विश्वत है। यह अपने 1000 किरपोद्वारा नदी, समुद्र, इद, कुप अप्रदेशे जलको प्रकृष कर 🔚 है। सूर्यको प्रभा (तेज) समान क्या प्रवेश कर जाती है, इसीटिये क्या आहे दूरसे 🖟 व्यक्तवा देने लगती है। सुपोदक्के समय वही जना पुरः सूर्वमे प्रविष्ट हो जाती है। प्रवरशाल और उज्यास—मे दोनों गुल सुर्वने तथा अग्रिमें भी है। इस प्रवार सुर्व और 📠 एक दुसरेको आप्तापित किया करते है। सम्ब ! हेरि, किरण, ग्रें, रहिम, गणरित, अमीप, सन,

सम्ब ! हेरि, कित्रण, गी, रिश्म, गमस्ति, अभीतु, सन, उठा, जमु, मरीचि, नकी, दीचिति, सम्ब, मयूस, भानु, अंतु, समर्थि, सुर्ग्ण, कर सम्ब पद—मे बीस अगवान् सूर्यकी विस्त्येक सम सहे को हैं, जो संस्थ्यमें एक हजार है। इनमेंसे बार सी स्थान कृष्टि करती हैं, जिनका नाम करन है। इन स्थान अमुक्तमम है। रीन सी किरणे हिमको यहन

करती है। उनका नाम चन्द्र 🖁 और वर्ण 📰 है : 🚟 📰 सी रक्षा 🔤 भूपकी 🔛 🖟 वे 🔤 ओवधियो, त्यवा तथा अमृतके 📖 मनुष्ये, 📟 💳 देवताओंको सदा संतर 🚃 📰 🐌 🗈 🚃 काल-स्वरूप सुर्वदेव 📰 लेक्द्रेये अपने तेजसे वको खते हैं। वे ही अहम-निष्णु तथा शिव है। अन्य, यक एवं साम—ये तीनों केद मी ये 📕 है। वात कालमे आयोद मध्यक्रमण्डमें प्रकृति तथा 🚾 सामवेद 🚾 स्तृति करते हैं। ब्रह्म, बिच्चु तथा 📖 छुठ इनका पूजर 🔤 होता 🚃 है। जिस 🚃 🌉 है, इसे 🚃 सुर्वकी बिहले थी सर्वकात है। 🕮 सी बिहलोके 📠 पुरस्केत प्रकारित होता शाता है। इसके प्रकार को तेन किरने हैं, वे वीन-तीन सीकी संक्यामें तीन अन्य 🔤 लोकों (मूकलीक उदैर सालेंक) को 📉 📫 👣 एक सी 🐃 प्रताल 🚃 🔛 है। 🗎 🚃 मह तथा 🚟 🚃 अध्यान है। काला, 🙉 📖 🖦 करणलेने सुर्वनायकाका ही प्रकार है। इनके 🙉 सहक विल्केने भागोपक सात किराने मुक्त है, 🔤 मुक्ता, हरिकेश, विश्वकर्मा, एमं, रहिम, विष्णु और सर्वकम् 🚃 जन्ह है। सम्पूर्व जनस्था पुरः भगवान् आदिल 🖩 🛊 । इन्ह आदि

वृद्धिसे आग तत्त्वत्त होता है कहा आपने प्रथमक परसन होता है। स्थान करनेवाले लोगोंके सिन्दे स्थान-कम और स्थेश प्रश् करनेवारे इच्छाने आरायन करनेवाले स्थान शिन्दे हैं मोशास्त्रकम है। सम, मुहूर्त, स्था, सार, पन्, अपन, संबद्धार तथा युगको स्थान सूर्वकरायनके स्थान स्थान

रंपता इन्होंसे उत्पन्न हुए 🖟 देखकाओं तथा 🚃 सम्पूर्ण

🔤 इन्होंका है। आर्थिने 🕸 🛗 आधुरिः सूर्वकारकारको 🛍 अस्य होती है। इस्ट्रिके आदित्यसे ही नहीं amm 🛗 है।

है। काल-नियमके जिना अभिनोगदि कर्म नहीं से सकते। ऋषु-विष्यमके विना पुष्प-कल तथा मूलकी उत्पति ....... है। न रहनेसे जनत्के सम्पूर्ण व्यवहार ही के वाते हैं। सूर्वकाशकको साधन्य हृदस नाम इस है—कादित्स, सर्वत्व, सूर्व, स्थित, अर्थ, प्रशापन, पार्वच्ड, चनका, चानु, चित्रपानु, दिखाकर और दिन। विच्यु, चार्ट्ड, चय, चून, नित्र, इन्द्र, वस्त्य, कार्यमा, विवस्तान, अंशुमान, स्वष्टा पर्वाच—मे इन्द्रस है। चैत्रमें विच्यु, के अर्दित्य हि। चैत्रमें विच्यु,

पर्यन्तः, शहराहरे काम, अस्थितमे इन्द्रः, व्यक्तः, शहराहरू, व्यक्तः, व्यकः, व्यक्तः, व्यकः, व्यक्तः, व्यकः, व्यक्तः, व्यकः, व

दिश्यासको 🔤 निरंश-वृद्धि घटने लगती है। इस 🚥 कुर्व-मिलने 🔤 व्यास्त्री प्रकृत 🔤 है। जैसे

रुविक वोर्थको यह वार्थकर व्यवस्था

है, 🔤 🚃 📻 सूर्वकरायम् हो प्रका, विश्वा तथा शिव

📰 अनेक रूप 🚃 📟 🗓 इस्रांतिये इनली ही प्रति

📖 व्यक्ति । इस प्रवार 🔠 सुर्वन्यप्रणको 📹 🕏 वह

हैग **माम भावेसे सीम ही मुक्त हो जाता है।**पाणी पुरुषकी सूर्यनसम्बद्धित प्रति **माम नहीं होती।**इसिको स्वस्त ! धुन धूर्यनसम्बद्धी आर्ध्यन करो, जिससे तुम इस वर्षकर व्यक्ति पुक्त होकर सभी कामनाओंको **माम** सोगे।
(अस्माप ७५—७८)

410000000

## भगवान् सूर्यंका परिवार

नारकानि कहा—सम्भ ! कावन् स्वैज्यायकानि को और निश्चा नामभी हो परिवर्ष हैं। इनमेरे व्यक्ति ब्रि अर्थात् समें और निश्चाको पृथ्वी की कहा जात है। का सुझ सहायी सिथिको होके साथ और प्राय कृष्णपक्षि सहाये विकित्ते निश्चा (पृथ्वी) के बाथ सूर्यक्रायकाय संयोग होता है। कि राजी—ग्रीमे बाव और निश्चाक न्यूब्वीके का स्वायक करवाज़ोर स्थि अनेक कारका स्वयक्ति अर्था होती हैं। प्रश्च (अस) को देखकर अस्थार प्रत्यकाने बहुत्व हवस करने हैं। काहाकार सथा स्वयक्ति देखकरों और पिकरोजी वृत्ति होती है। विकास स्थार राजी अर्थ हो करवे हुई और ये क्यांका पृत्वी है तथा हनकी को संसाये हुई करवा हम वर्णन करते हैं, हमें आप सुने—

साम्य । महाने पुत्र मर्गायः, सर्गायके कार्यम्, कार्यके हिरम्पननीत्, हिरम्पनवीत् महान्यः, महान्यः विक्रंपन् नाम्यः पुत्र हुम्य । विशेषनवी विक्रंपन् विक्रंपन् विक्रंपनिक विक्रंपनिक विक्रंपनिक साम्यः पुत्र । विशेषनवी विक्रंपनिक विक्र

संकर्ने उत्तव हुई, विद्यु सूर्यनगायणके तेजसे व्याकुल होकर व्या अपने पिताके पर कर्मी गयी और हजारों वर्षतक वहाँ करें। जब पिताने संज्ञाले पतिके घर वानेके लिये अनेक ब्या कहा, तम व्या अध्य कुरुदेशको चली गयी। वहाँ यह ब्याह्मी सम्बद्धाः करके तृत्य आदि ब्याह्मी हुई समय

सुर्वयमञ्चले समीप संज्ञाके रूपये द्वाराधे छाधा विधास करती थी। सूर्व 🔣 संद्र्ध ही समझते थे। इससे दो एक हुए और एक कन्य हुई । शुरूवधा तथा जुलकर्या — ये दो एव और करकत सुन्दर तमती तमको कन्य आवास संताने है। नुकारण से कार्यार्थ पतुके नामसे प्रसिद्ध होता और श्रुतकारणि क्रीकर जनसे 🚃 आह की। संद्रा जिस स्वक्रसे अपनी रंकाचेसे केंद्र करती थी, बैस्त केंद्र ख्रायाने नहीं दिश्य । इस अवन्यानको मोलके 🖮 पुत्र स्थवर्णि मुनुने हो सहन कर रिन्य, मिन् इनके 🚾 पुर क्या (धर्मराज) सहन नहीं कर रने । सन्तरे जब बहुत ही हेटा देना सुरू किया, तब हो बनें अकर करनव क्षेत्र कर्म जनस्मा बाह्य उनीने अपनी विकास कामानी परर्शन की और उसे आफ्रेंस किये अपना पैर ····· यह देकात कृद विष्यता **साधा**ने उन्हें कडोर शाप दे दिना—'दुह ! तुम अपनी मोध्ये पैराने महानेके लिये उद्यत हो रहे हो, इसमिन्ये गुन्धरा यह पैर टूटबर गिर जाय।' झत्याके अवसे विक्राल होकर पम अपने विक्रके पास गये और उन्हें सक्य कृष्टान्त 🚃 सुन्तकः। पुत्रको बाते सुनकर सूर्यक्रशकाने कंको--- 'पुत्र ! एको कुछ विशेष कारण होगा, क्योंकि अस्पन्त पर्याच्य तुक्त-वैसे पुत्रके उत्पर मानाको क्रोध आया है। सभी 📟 वे निवन है, बिल पताक द्वार कभी अन्यथा नहीं हो सकता। पर मैं सुन्हारे उत्पर अधिक क्रेसके कारण एक उचन कहता है। यदि सुन्हारे पैरके मांसको लेकर कृति पुनिषर बले वार्य के इससे माताक श्रम भी सत्य होगा और कुरूरे कैरकी रक्षा भी हो जापनी ।"

सुमन्द्र पुनिने कहा—एकन् ! इस माम पुत्रको आधारन देकर सूर्यकारकण इस्त्रको समीप आकर केलि— अने ! तुम इनसे छोड़ क्यों नहीं करती हो ? माताके किये जो सभी संवर्त मामा ही होनी कहिये।' यह सुनकर

स्मपने बोर्स उत्तर नहीं दिया, जिससे सूर्वनरामक्को होच आ गमा और वे इत्रप देनेके रिप्ये स्थान हैं। गये । श्रामा भगवान् सुर्वको कृद्ध देशकर प्रथमेश हो नवी और उसने अनुना सम्पूर्ण कुसाना बतस्य दिया । तब सूर्व अपने ससूर विकासकी 📖 गपे। अपने बानाता सूर्यको कुद्ध देसकर विकास उनका पूजन किया तथा मधुर क्वजेसे शत्य किया 📶 कहा—'देव । मेरी पूर्व संक्षा आपके आगन्त रेजको सहन व कर सक्तेके कारण करको चरने गर्थ है और वह अवने उत्तम रूपके लिये वहाँपर महान् तपस्य कर रही है। सहक्ष्यीने मुझे आहा दी है कि यदि उनकी अधिकवि हो तो तुम संसारके करनामके रिप्पे सुर्वको तराज्ञकः उत्तव रूप क्याओ ।' विश्ववर्गाक 📰 वचन सुर्वजरायको 🛤 📰 📨 💻 तम विकासना प्राथकोपमे सूर्वेतरायकाचे भ्राम (सराट) क पद्मानर उनके प्रयम्भ तेतको नाउट भ्रास्त्र, जिससे उनका रूप बहुत 📺 मीच दन गया। मुर्फकारकाने 🖹 जरने कार्यकर इस बतको जानकारी हो हा समूर्व कार्यका अवराय समारी करी संज्ञा असिनीके कपको कारण करके उत्तर-कुरुमें निवास कर रही है। अतः सूर्व को स्वयं अवका रूप बारण करके उसके पास अकर विसे । फरान: आधिनीसे देवताओंके वैदा बुदर्ज अकिनीकुमारोका क्रम हुआ। इनके नाम है नासत्य तथा राज । इसके पक्षात् सुर्वनश्चमाने अपना कालांतक रूप धारक किया । उस रूपको देखागर संशा आयन्त प्रीतिसे प्रसम हुई और वह उनके समीध

गर्ने । बरमान् संक्रमे रिक्न' भागका पुत्र उत्पन्न हुआ, जो

इस स्था पनु, वस, चनुना, पनि, तस्ती, दे) अभिनेषुत्रपर, चनकात मनु और रेचना—वे सम सुर्वभएनकाची संताने हुई। काकी भीगने यसी चनुना नदी बनकर प्रकारित हुई। सार्चार्ण आठवे मनु होंगे। सार्वार्ण मनु

व्यक्तमा है। इस कदाय जान करनल बहुत हा पुण्य आने हाता है। सम्मा नकेसे व्यक्तिया संगम और प्रमूप नदीसे वैक्स्सम्बद्ध —थमुख्यम सम्मा क्रेसा है। सम्मा अधिनोकुस्सर

देवताओंक केव हैं, जिनकी किवासे ही बैद्याना भूकियर अपना व्यानिवास करते हैं। सूर्वनाहरणने अपने समान संपक्षके रेकन नक्क पूजको अखेका स्वामी बनाया। यो मानव अपने नक्का व्यापि किये रेकनको पूजा करके प्रस्थान स्वाम है, उसे व्यापि केटा नहीं होता। विकासमंकि हाए सुर्वनाहरणको

करादगर बढ़ाकर को नेज प्रहण किया गया, उससे उन्होंने भगवान् मुर्वकी हुन करनेके रिको विकास का विकास में क्या विकास सुर्वकरावणकी संतानेक्यतिकी हुन करावले

मुक्ता अवधा हाहा है, यह सभी पानेसे मुक्त होनर सुर्वक्षेत्रमें डीर्वकरत्मक रहनेके पक्षान् पृथ्वीपर पान्यती रामा क्षेत्रा है। (अध्याय ७९)

# सूर्वधनवान्त्रते नमस्कार एवं प्रदक्षिणा करनेका फरण

## और विजवा-सप्तमी-व्रतकी

नारतने कहा — सम्य ! अव में आपको भगवान् सूर्वनशायको पूजन, उनके नियत दिने गये दान तथा उनको व्या गये प्रणाम एवं प्रदक्षिणको फलके किकमें दिन्ही और ब्रह्माचीका संवाद सुना व्या हूँ, आप व्यानको सुने — ब्रह्माची बोरोडे----दिव्हिन् ! सूर्व ध्यावनका व्या

अनुसार बारकानावान्त्र : सूच नगवान्त्र हाता. अनकी सुति, जप, प्रदक्षिण तथा वपकास आदि क्या अभीष्ठ फलकी प्राप्ति होती है। सूचनग्रथनको ना हेक्स

करनेके लिये भूमिया जैसे ही सिरक्ट स्पर्श होता है,

कैसे **ा** उत्कारक सभी **व्यास्त नष्ट वा जाते हैं** । जो मनुष्य प्रक्रिपूर्वक सूर्यनगणकारी प्रदक्षिण करता है, उसे सहद्वीपा कसूपतीकी प्रदक्षिणका पत्त जात है जाता है और वह समस्त ■■■ मुक्त होकर अन्त समयमें सुर्यक्षेतको प्राप्त ■■ है,

मुक्त हाकर अन्त समयम सूचलका प्राप्त साम ह,
 किंतु प्रदक्तिमाने पवित्रताका ध्यान स्थल अध्यक्षक है।
 अवस्य साम स्थल कर्मी करनी

चाहिये। जो प्रमुख बृता या सहार्क पहनकर सूर्य-मन्दिरमें प्रयोग करता है, यह असिया-का नामक भोर नरकमें जाता

अधिकाय दिलो भूमी नगरवास्तर्क के सामान्य व्यक्ति क्या निर्माण ।

है। यो प्राणी पड़ी का सामनिके दिन एकबार अवना उनक्स रसकर मित्तपूर्वक सूर्वनागामका पूजन बाला है, यह सूर्वक्षेत्रमे शायल करता है। कुळा पक्षकी सामीको रक पूजोपहारों से और पूछा पक्षकी सामीको केत कमलपूज तथा मोदक आदि उपकारों से मगलन् सूर्वनावनका पूजन बाला पाहिये। ऐसा करवेसे बती सम्पूर्ण पानों से बाला से सूर्वक्षकों बाह करता है।

दिन्तिय् । जया, कियमा, प्राप्ता, अवस्थितः, प्राप्तायः, नव्य तथा पदा नामकी ये सात प्रकारकी प्राप्तीयाँ वाही वर्ण है। प्राप्त विश्व किया की तो उसे विश्व प्राप्त करते हैं। प्राप्त दिन किया गया करते, दान, होय, जनकार, पूजन आदि सत्कर्ण महागासकाँका कियारा करता है। इस कियान सहसी-कर्ण क्या किया दिनमें एक भूक रहे, जनकार करें और सहसीकों पूर्ण उपवास करें, सदस्य करें। इस विश्वित दिन क्या दान, इसने, देवता क्या दिनसे पूजन असम

(अध्याप ८०-८१)

## ह्मद्दर रविकारोका वर्णन और नन्दाहित्व-व्रसकी 📟

अवस्थानीये पूका—स्वान् ! मि अनुमा आदित्यधरके दिन सक्का-मिक्से सूच्टिक्का स्वान-दानादि का पूजन करते हैं, उनको कौन-मा फल जल होता है ? और किस वारके संयोगसे सत्तमी तिथि निवास माहात्यका आप पुनः कर्णन करें।

सद्भाविते कहा — दिन्दित् । के क्युन्त व्यक्तिकार्ता श्राद करते हैं, ने सत क्यानक नेपेश रहते हैं क्या को काल-प्रत एवं आदित्यहदयका पद करते हैं, ने केचने मुक्त हो कार्त हैं और सूर्पलोकों निकास करते हैं। उपकास क्यान्त व्यक्ति मनावा । जन करते हैं, वि क्यान्तिकार क्यान्ति अस् करते हैं। आदित्यकारके दिन महाचेशा-क्या तथा व्यव्यक्त-क्या 'क्रानोत्त्वाच स्ववद्या' का वच करते हैं निःस्टेड सूर्पलीकार्य प्राप्ती होती हैं।

सूर्यकाषणके द्वादश कर इस प्रकार है—कर, कर सीम्य, कामद, पुत्रद, अब, कामन, विजय, कादिशाधिपुर, वदयः, रोगकः एवं महासेता-विध । माध सुझानशासी बहोत्ती स्वतंत्रकः हैं । उस दिन नक-सब करके पृत्तते सूर्यनारमणको स्वान करका व्यक्ति तथा सेत कर्यन, अगरपको पुत्र, गुग्युल-कृत अर्थदिले पुत्रन करके अपूर्व विद्या निकेश समर्पित करना व्यक्ति । व्यक्तिको अपूर्व विद्या स्वाम और मौत ध्वरण कर सेकार करना व्यक्ति । रेत्रिक अग्रथः स्वयंत पूर्वमे सृत वृक्षा व्यक्ति का शक्तः निरम्भकः अपूर्व क्याना व्यक्ति और उसीवर सूर्यनारमणको निक्कित कर व्यक्ति प्रदेश प्रदेश हुए

आदित्यवेजसोरकां राजीकरविनिर्धितम्। सम्बद्धाः सम्बद्धाः अतिकायुवानुस्तरम् ॥

सहारको कर किया है देन स्वाप्ति ।

(स्थापनं ८१।१८)

साहाय केवेदा हाता कर हे, तदकतर इस वैवेदाको निम्न सभा पहले हुए पुकारको दे—

🚃 सुस्रदं वर्ण 🚃 पुत्रदं तथा।

यह स्तेत वर्तमान उपस्था भविष्यपूर्वभये प्रार नहीं होता. इसमे बा इसका क्रिया हाता हतेय होता है। नारस्कृतनमें उपस्था भविष्यपूर्वभये सूची भी वर्तमानों उपस्था पविषयपुर्वभये नहीं निक्तो । शास्त्रास्त्र पूर्वभीक अधीन कर व यह अनेके हाता हाता एका इसस्था नहीं से हाता, परंतु अपः सभी हा सोज-संप्रदेशी का 'अवदित्याहय-अतेत' अंगृत्तेत है। वास्त्रीकीय शास्त्रास्त्र अपस्थापृत्तिक 'अवदित्याहय-स्तेत' अग्रिक्त है। वास्त्रीकीय शास्त्रास्त्र अग्रिक्त है।

१-विकायुरायके नामसे प्राप्त होनेकारे व्यक्ति 'बीकारिकाइक-स्तेष'क कार्याका जातर है और इसकी प्रीप्तिक वार्याय करको में व्यक्ति भी कि पार्थी परासने सूर्यकी नाम जातर्थन के कि प्राप्ति परासने सूर्यकी नाम जात्र के कि प्राप्ति कार्याय के कि पार्थी परासने के कि प्राप्ति कार्याय कार्याय के कि प्राप्ति कार्याय कार्याय के कि प्राप्ति कार्याय कार्य कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्य कार्याय कार्य कार्य कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्याय कार्

२- महाबेल-सन्द 'क्यमें-नन्द'न हो अप, पूर्वन प्रतेन होता है।

## ते प्रतीकृषि वन्त्रकं न्यक्तिवय्॥ (27155 PRINT)

**1** 

उपर्युक्त दोनों मन्त्र महत्र करने और समर्पित करनेके क्षिये हैं। कदवारका यह विकास कर-कवकारी है। जो इस विधिमे सूर्यदेवको पूजा करता है, उसे सूर्यलेकको 📖 📰 है। वसकी संवरिका कभी 📖 🔤 आर्थात् उसकी

कुल-प्रान्स। पृष्णीयर चलती रहती है तथा उसके वंशमें व्यक्तिक एवं रोग भी नहीं होते। सूर्यलोक प्रका करनेके पश्चल कुर्मान क्षेत्रेस 📰 पृथ्वीका राजा होता है। इस प्रवन-विकासको पहले अकता श्रवण कालेसे भी कल्याण होता है 📰 🔤 अवस्य सन्दर्भानी जाति होती है।

(अध्याय ८२)

# भक्तदित्व, सौम्बादित्व और कामकदित्वकार- त्रतीकी विभिक्ता निकारण

**प्रक्राणी कोले**—दिन्दिन् ! पहलद पासके शुरू प्रकारी वहीं विभिन्नों जो बार हो इसका कम यह है। इस दिन जो मनुष्य नकवत और द्यवास करत है, वह इंसवृक्त 📖 बैठकर सूर्यरनेकाने जाता है। उस दिन क्षेत्र कन्द्रन, माससी-पुष्प, विकय-धूप तथा 📰 नैतेत्वारे पर्याद्वाधारूचे सूर्यनगरप्रकास पूरान करके काराज्यको पोजन यभावतित दक्षिया देनी बाहिये।

दिप्यम् । यदि रोडिएवे नशास्त्रे युक्त सम्बद्धान्त्रम् हे हे **ा** सीम्पनार कहा जाता है। इस दिन किये **जानेवा**रे कान, दान, जप, होम, मिल्-देश्वदि तर्पण तथा पुजन आदि कृत्य अरक्षम 📗 है ।

कर्रक्रीके रहा पक्षम वहाँ विकिन्ने को यह हो, यह व्यवस्थात वक्तवस्था है। यह बार भगवान् सूर्वको अस्यन्त प्रिय है। इस दिन जो भक्ति 🚟 इद्यारे सूर्यनएमणनी पूजा करता है, 🕶 सभी चतन्त्रमें विमृत्त डोकर सूर्यलोकमें निवास करता है। इस महत्त्वे 🚟 📟 🐃 पुरेषपुष्पे पुर, वनवीको 🚃 और आरोपको 🚃 🚃 अरोपको प्राप्ति 🔤 है। 📰 क्यार क्श्मद्रशास-जातसे और 🚥 सभी कमार्थ पूर्व हो बाते हैं, ब्राह्मीते बाता जान बाता है। (अध्याप ८६ —८५)

इस 🚃 पूजा करनेवर सूर्धवारायण 🚞 🖹 पत्र

क्टान करते 🐉 🚃 प्रकार उपवासपूर्वक ब्रांचके कर्रनीर

कर-कर्म, सुकर्म, सुक्त-आग्रेग्य तथा सुर्यालेक भी प्राप्त होता

है. किन् विशेषकपरे पुत्र-आविश्व ही फल 📗 इसीसे इस

हो, यह जमकर बहा जल है। इस दिन किया गया उपवास.

नकार, सार-धन तथा जप भगवान् सूर्यमें सौगुरी प्रीति

बक्रनेव्यस्य होता है। अतः सूर्यमें सौगुनी प्रीति बद्दानेवारे इस

नक-वर्तादको अवस्य 📖 चारिये।

अक्राणीने कहा —दिखिन् ! दक्षिणायनके दिन जो का

पुनर, जय, जयनसंद्रक आदिवयार-प्रतीकी विधि

बारको पुत्रद कहते है।

**ब्रह्माची चोले—दिन्दिन् । 📰 आदित्यवाको इस** नश्रम हो उसे पुरुद (आदित्य) बाद कहा जाता है। 💷 दिव उपवास करना चाहिये और 📶 करने 🚃 विचायन प्रश्न करना चाहिये। यून, पहल्च, दिव्य नन्ध 🛲 नन अकारके उपचारिसे सुर्वनारामणका मूजन का अञ्चलेता-प्रश्नको अपते हुए साधकको सूर्यनारावणके 🕬 🛊 प्रापन 🚃 चाहिये। प्रातःकारुमें ही उद्धवन सहये अहिंदेरे निवस 📗 सूर्यभगवानुको अर्घ्य देना चाहिये । रतस-चन्द्रन तथा करवीरके पुष्पीसे पूजा करनी चाहिये। तत्त्रशान् परिव सहस्योको ब्रह्मकर उनमेरी दो महायोको मग-संदक्ष तथा तोन महायोको भीमसंहरू बाला विधिपूर्वक पर्यण-बाद करन बाहुंगा श्राद्धके सपाप्त होनेपर मध्यम् पिष्यको भगवान् सुर्वक सामने निर्मालिका मन्त्रसे प्रसण करन चरिये—

स एवं 🔤 देवेदा नोउधीक्तक प्रयंक्त ।

पद्यते तुष्यं तेव | इंडालिक्केन् ॥

(म्ब्यूम्प्सं ८६ ( १०)

🗮 🚃 दिन रविकार हो वो उसे 🚃 कारते है। इस दिन परावान् सूर्व स्तान-दातादि कर्म 🚃 पुरून करनेकलोंको इजार गुना फल प्रदान करते हैं। इस दिन उपकास करके पूरा, दूध तथा इक्षुरससे सूर्यनारायणको कार करकर कुंक्यक विलेक 📖 चहिये और पुगुलका कुर देकर फोटकका नैवेछ समर्पित करना चाहिये । इस 📖

मगवान् सूर्यनरावणका पूजन करके तिस्त्रते इवन करना अन्त्रस्थ (पूर्व) 📰 पोजन कराना चाहिये। बाहिये। तदनसर यदासकि ब्रह्मलेके मोटक, रिल तब

(अध्वाय ८६-८७)

## विजय, आदित्वपिमुख तथा इदयवार-व्रतीकी

ह्याची बोले-दिन्दिन ! २५६ १५में वेदियां नवको कुक्त सहस्री तिथिको विजय-संज्ञक आदित्यकार कहते हैं। 🚃 सम्पूर्ण पापो और मधीको नष्ट कर देख है। उस दिन सम्बद्ध किये गये पुण्यकर्म कोटिगुना कल ज्वान करते हैं।

दिष्टिन् । याच मासके कृत्य पक्की सक्ष्योंको जो दिन हो हते आदिलावियस कहते है। उस दिन प्रतःबदल 🔣 📖 शर गन्ध-पुरुष्टि अपव्यक्तिके सूर्यक्रम्यनको पुरुष चाहिये। तदकत्तर रत्तकावनके काहरी को हर 📟 क्षात्रम हेन्यर सुर्वदेशको और मुखबर महाकेल-मन जनते हुए सार्थकालतक स्था रहना चाहिये। तदकार महानको भीजन कराकर 🚃 ऐसी च्यारिये। तस्त्रकृत् और 🚃 शबरे भी पीजन धरना चलिये। जो वनुष्य प्रस विभिन्निक पालन करते हैं, 🔤 भगवान् सूर्वज्ञरूकका

सन्बद्ध 🚃 होता है।

दिन्दिन् ! संक्रानिको दिन चर्दि एकिकर हो तो उसका 🖚 इदक्कर होता है। 📰 आदित्यके इदयको अत्यन्त प्रिय 🛊 । उस 📰 🚃 करके पॉन्डरने मूर्वनापपणके अभिनुस एक 📶 आह 🔤 🔤 पाउ करना कहिये अथवा धानेकासरकः कार्यान् स्ट्वेका इदयमे काल करना वाहिये। मुर्वास होनेके बहुत वर आकर यचाराति बहुरणको पोजन करूपे राज्य चौरपूर्वक 📰 📰 📰 घोडा घोडार करके सुर्वेदेकका स्वरंग 📟 हुए जूकिका ही शयन और । इस प्रकार 🔳 इस दिन 📖 रहकर श्राद्धाः प्रक्रियो सुर्वनारायणको दुवा करता है, उसके प्रत्यात आपीष्ट सिद्ध 🖩 जाते हैं और 📖 यगन्तर् सुर्वतः 🚃 📳 तेन-कार्यतः तथा पहलो प्रक्र **=== है। (अध्याम ८८ — १+)** 

## तेगहा एवं महम्बेतकार-प्रतकी 🚃

अध्यानी चोले—शिक्त्। यद व्यवस्थान उत्तरापाल्युनी नशात पढ़े तो 👭 रोगकावार करते 🕏 । यह सन्पूर्ण ग्रेपों एवं भवीको दूर करनेवाला है । इस दिन को नव्य, पुष्प आदि उपकारोंसे भगवान् सूर्वनशायकाः पुत्रन काना 🕏 वह सभी रोगोंसे मुक हो जाता है तथा सुर्यल्येकको जात होता है। मन्दारके पत्रोक्त दोना बनाबार उसीमें असीके भूरत रखका एक भगवान् सूर्यनारायको सामने रहा देश स्त्रीये तथा प्रातःकारः उनकर उनहीं फुलोरी उनका पुनन करना चाहिने। तदनन्तर सीरका भोजन करके कतका समाप्ति करनी चाहिये ।

दिष्टिन्। यदि सूर्यप्रकालके दिन रविकार हो तो उसे महाखेतवार कहते हैं, वह भगवान् सूर्यको बहुत विश्व है। उस **एन उपवास करके पविश्वसके साथ गन्ध-पुरुषाँद उपवाधेशे** भक्तिपूर्वक सूर्यनारायणका पूजन करके महालेख-मन्त्रका जय करे । तर्भनार महामोदाकी पूजा करके सूर्वज्यवनकी 🚃 करनेका विधान है। महायेताकी 🚃 करके एक-एक आदिसे उनका पूजन करे तथा उन्हेंके सम्पूल एक 📖

सूर्वनग्रमकाचे स्थापना कर उनको पूजा आदि करे । तरपश्चात् कान करके पुरासकेत तिल्लेका हवन करे। ब्रह्मके समय व्यवस्थान-वन्त्रका अप करता रहे और प्रहणके समाप्त होनेके प्यास पुनः स्वन 🔤 महाबेता तथा प्रदाधिपति भगवान् क्षेक पूजन को । सहाजोसे पुराण सुनक्षर उन्हें भोजन कराये तचा यचाञ्चकि दक्षिण है। उसके बाद स्वयं मीन श्रेकर क्षेत्रन करे । इस दिन किये हुए खान, दान, जप, होप आदि कर्न 🚃 पर देते हैं।

दिन्दिन् ! सम्पूर्ण पापी और भयोभी धूर भरनेवाले भूषंत्रश्रवणके इन हादश वारोका मैंने जो वर्णन किया है, इसे भो पनुष्य पहला 🖁 🚃 सुनता है, 🚃 मरावान् सुर्वका प्रिय से जता है और जो इन बसेंको नियमपूर्वक करता है, यह र्च्या, अर्थ, काम और चन्द्रमाके समान कारित, सूर्यके समान जना, इन्हरू 🚃 परक्रम तथा स्थापी लक्ष्मीको प्राप्त 🚃 है, क्टनचर अन्तर्वे वह शिवलोकको चला जातः है।

(अध्याय ९१-९२)

## सूर्यदेवकी पूजाने विविध उपकार और करन आदि

## निवेदन करनेका !

अञ्चाली भोरो-दिवित् । जो प्राची भगवान् सूर्यनगरणके निभिन्त सभी धर्मकार्य करते हैं, उनके कुरूमें रोगी और दांखी उत्पन्न नहीं होते। को व्यक्त भगवान् सुविक मन्दिरमें भक्तिपूर्वक खेबरसे सेवन करता है, बढ़ सकल सबी पापेंसे मुक 🖩 📰 है। बेत-रक अवक पैली मिट्टीसे जो मन्दिरमें लेप करता है, यह अनेवाञ्चित फल कर करवा है। जो व्यक्ति उपवासपूर्वक अनेक प्रकारके सुर्वाध्यक्ष कृत्येसे सूर्वनारायणका पूजन करता है, वह समझ अपीष्ट करतेको श्रप्त कराव है। युव व्य निरू-तैलमे मन्दिरमें दोषक क्रम्बरिक करनेवाला सूर्यलेकको तथा सूर्यनगरकको 📖 चेळो. त्तेर्यं, देवालगारिमे दोवक सन्यस्य व्यापाल क्याना रायको आह करता है। परित्यायसे सर्यान्यत होका जिस मनुष्यके द्वारा सूर्यके 🔤 क्षेत्रक 🔤 🖶 🐛 चह अपनी अभीत् कामनाओको बात कर देखलोकाको प्राप्त ...... है। जो करन, अगर, बुंग्यूम, चल्ह तथा चल्हा बाल मिस्त्रकार तैयार किये गये उपटनसे सूर्यनायकके अग्रेतक रेपन करता है, यह करोड़ों 🚟 स्वर्गने विकास कर पनः पुध्यीपर सभी इच्छाओं में संतुत बहता है और सथस 🚟 पुरुष बरकर पहलाती एका होता है। पन्दन और जलसे पुर्लोक ग्रुप सूर्यको अर्थ्य प्रदान व्याप्त पृथ, पीत, क्लंब्स्स्ट वर्गलेको पूज्य होता है। सुपन्धित पदार्थ तथा भूभीते बुक्त अरुके द्वारा सुर्वको अर्घ्य देकर क्यूका देकरकेको बहुत समयतक रहकर पुनः पृच्चीया राजा होता है। स्वनात युक्त जल अथवा लाल वर्षक जलमे अर्थ्य देनेपा कड़ेड़ी वर्षसक स्वर्गलोकमें पृष्टित होता है । कमरुपूचको सुर्वेची कुळ करके मनुष्य स्वर्गको जन्न करता है। अद्भा-प्रतिकृतीक सुर्पनायक्यको मृत्युक्त तथा बुतन्तिवित वृप देनेसे तत्वरक 🛊 सभी पापोसे मुक्ति मिल जाती है।

जो मनुष्य पूर्वहर्में भक्ति और श्रद्धारे सूर्वदेवका पूजन करता है, उसे सैकड़ों कपिला गोदान करनेका फल मिलवा है। मध्याह-कालमें जो जितेन्द्रिय होकर उनकी पूजा करता है। उसे भूमिदान और सी गोदानका फल बात होता है। उन्मीय (पन्नही) करन करके पगकान् मास्करकी पूजा करता है, उसे हकार मौओंके दानका फल आह होता है।

जो मनुष्य अर्थशिये मिलापूर्वक प्रमान सूर्यकी पूजा स्थान है, उसे जाविस्मरता ब्या होती है और उसके कुलमें जो मनुष्य प्रमान सुर्यक्रिय पूजा करता है, यह लागंलीकारे अध्यय-प्रमान सुर्यक्रिय पूजा करता है। प्रमानकालमें मिल-पूर्वक सूर्यक्रिय पूजा करनेपर देवलोकार्य मानि होती है। इस क्यार साथे ब्याया अध्या जिस किसी भी समय जो मनुष्य बात प्रमान प्रमान प्रमान सुर्यक्री पूजा करता है, यह क्यार सुर्यक्री प्रमान प्रमान प्रमान सुर्यक्री स्थान होता । जो निहास अध्यान सुर्यक्री सुर्यक्रिय पूजा करता है। यहण आदि स्थानक्रियर पूजा करनेपालम किसार नहीं होता । जो निहास प्रमान सुर्यक्री सुर्यक्रिय प्रमान करता है, उसे प्रसान होकर प्रमान सुर्यक्री सुर्यक्रिय प्रमान करता है, उसे प्रसान होकर प्रमान सुर्यक्री सुर्यक्रिय प्रमान करता है, उसे प्रसान होकर प्रमान सुर्यक्री सुर्यक्रिय प्रमान करता है, उसे प्रसान होकर प्रमान सुर्यक्री सुर्यक्रिय प्रमान करता है, उसे प्रसान होकर प्रमान सुर्यक्री सुर्यक्रिय सुर्यक्री सु

उरमाज्यमें सूर्यदेशको मात्र एक दिन सदि शहसे उन्नन कर 📟 जब से एक लाख गोदानका फल प्राप्त होता है। **ावित दशहार साम कर्यन्से एक्ट्रॉक-व्ह्रकः** फार विस्ता है। इन्हरससे साथ कार्यनेपर अधानेच-यञ्चके फलका साथ होता है। चमजान् सुबंधि किये पहली बार बजायी हुई सुपुष्ट गी गया प्रस्त प्रदान करनेवाली पुर्व्यक्ति को 🛍 करता है, 📺 अचल लक्ष्मिको प्राप्त कर पुनः सूर्यलोकको चल्प्र जाता है और चैके अग्रेसमें जितने रोपें होने हैं, उतने ही करोड़ वर्षतक वह सूर्यत्येकमें पृत्रित होता है। यो मनुष्य भगवान् सूर्यके मिनिश मेरी, शंक, बेजू आदि 🚃 दान करते हैं, वे सूर्वलोकको जाते 📳 जो मनुष्य मक्तिमायसे सूर्यनग्रदणकी पूजा करके उन्हें सज, प्याजा, पताका, वितान, चापर तथा सुवर्णदृष्ट आदि समर्पित करता है, वह दिव्य छोटी-छोटी विमानके द्वारा सुर्वलोकमें वाकर आनन्दित होता है और चिरकारतीक वहाँ ग्रहकर पुनः मनुष्य-नभ ऋष कर सबी एकाओंके द्वारा ऑपविन्दत एक होता है ।

जो मनुष्य विविध सुगन्धित पूर्वो 📖 प्रोहेरे सुर्विही अर्चना करता 🛘 और व्यक्ति स्टेकोसे सुर्वका संस्तवन-यान आदि करता है, 📰 उन्होंके लोकको प्रश्न होता है। 🖥 पठक और चारणगण सदा ऋतन्त्रक सुर्वसम्बन्धे प्रकाशे 🐯 विविध स्वेजेंक उपयान करते हैं, वे सभी सर्गग्राची होते हैं। जो भक्तम अओसे वृक्त, सुवर्ण, स्वत क बॉलजीटत सन्दर रव अथवा दारुवय रच सूर्यनारायणको समर्पित काला 🕏 🗯 सुर्यके वर्णके सम्बन् विर्वकणी-जारकारकारे समान्त्रिक 📖 बैठकर सुर्यलोकको ताल काला है।

यो लोग वर्षभर या छः भूक नित्य क्राची त्यावाच करते. हैं, से उस परमाशिको आह करते हैं, जिसे प्रकृती, बोगी तथा सुपैभक्तिके अनुपामी बेह वन प्राप्त करते है। 🖩 बनुष्ट भौतिभाग-सम्बन्धत होकर मगवान् सूर्वक स्थको साम्रत 📱 🛦 बार-बार जन्म सेनेपर भी नीरोग तथा दांदावाको रहित होसे हैं। जो मनुष्य भारतारहेकको रभवात्र कार्त है, ये कुपैरनेकको प्राप्तकर व्याप्तका अन्तर अल करते हैं, चीत् के मोह अथवा होधवज्ञ रक्षणक्षवे बाबा ठारत 🚟 🐧 🧘 पाय-कार्य कार्यन्ताले पेटेड जनक राधास हो स्वयुक्त व्यक्ति । सुर्वभगवानुके किये धन-धान्य-दिरक्य अधवा विद्विध मन्त्राके वक्रीका दान करनेवाले परमणीतकी प्रक्ष होते हैं । ग्री पैस अथवा हाथी या सुन्दर चेहिना दल करनेकारे त्येन अक्षय अभिस्तवाओको पूर्व कानेक्से अक्ष्मेक बक्रेड फलको बार करते 🛮 और उन्हें उस दक्तरे हमार गुना पुण्य-लाभ होता है। जो सूर्यज्ञरायणके क्रिये 🚾 करने बोच्य सुन्दर उपजाक भूमि-दान देख है, वह अपनी खेतीसे पहलेके दस कुल और पश्चादके दल कुलको श्वर देश है उधा एक विमानसे सूर्यरमेकको चला जाता है। जो बुद्धियन् पन्नव भगवान् सूर्यके लिये व्यक्तिपूर्वक व्यव-दान करता 🐛 🐗 सूर्यके समान वर्णवाले विमानमे आरूव होयन परभवतिको प्राप्त होता है। भक्तिपूर्वक जो होय फल-चुन व्यक्ति परिपूर्व

उद्यानका दान सूर्वज्ञतकाके किये देते 🖟 वे परमगतिको अक्ष होते हैं। मनसा-वाका-कर्मण जो भी दुष्कृत होता है, वह सम नकान सुर्वको कुप्पसे यह हो 🚃 🕏 । यह आर्द हो या केंगी हो अकवा टॉटर च दुःस्त्री हो, 🚾 वह मुगवान् आदित्यकी प्रत्यमें आ जाता है से उसके सम्पूर्ण कर दूर हो जाते हैं। एक दिनकी सूर्व-पूजा कदनेसे जो फार प्रका होता है, 🚃 अनेक इष्ट्राप्तीकी अवेक्षा केंद्र है।

वं भगवन् सुर्वेद 🚃 सामने भागवन् सुर्वेदरे 🚃 📰 🚛 🐛 उसे सची अपीष्ट कापनाओंको विद्या कानेकले यजस्य-यहका फल 🚃 होता है। गच्चकित ! जो मनून्य सुर्यदेकके लिये महाभारत प्रश्वका दान करता है, यह सबी 🛗 विमुक्त होकर विकालोकने पुजित 💴 🛊 : 📉 पुस्तक टेकर मनुष्य वाजपेय-यहके 🚃 🕳 कर सूर्वलोकको प्राप्त करता 🛭 । सूर्वभगवान्हेर अधिकानुग्रं स्थान सम्बद्धानको पुस्तकता सन् 🛲 सनव राज्युव तवा अवनेव-वह करनेका फल प्राप्त 🚃 📗 अपने सभी सन कामनाओको प्राप्त कर भुवंत्रीकाने 📰 📰 है और नहीं 🚃 🚃 सुकर स्कारकेकने जाता है। **स्ता** सी स्वाताल सहकर पूनः वर्षे पृथ्वीपर राजा होता है। को अभूष्य सूर्य-व्यक्तिये कुओं तथा तालाम मनवाता है, यह मनुष्य आनन्द्रमय दिव्य त्येकाचे आह करत है। को अनुव्य सुर्वमन्दिरमें औतकारूमें अनुव्योक्ते औत-निकालक योग्य कम्बल आदिका धून काता है, वह अधनेध-व्यक्ति फल बार करता है। वो सनुबद सूर्यमध्दिरमें शिल्प प्रविद्र पुरावक, विकास तथा पूर्वभाग्ना बायन करता है, इस अस परकारे का करता है, जो किय हजारों अध्योपययको करनेसे भी अत नहीं होता। अतः सूर्यके मन्दिरमें प्रमत्रपूर्वक पवित्र पुरुक, इक्किस क्या पुरुषका कावन 📖 वाहिये। भगवान् **ाता** पुरुष आस्पान-कथारे सदा संतुष्ट होते हैं।

एक बैरव तथा ब्रह्मणको कथा, सूर्यमन्दिरमे पुराण-वासन एवं भगवान् सूर्यको जानादि करानेका फल

🛮 बोले — दिण्डन् ! मैं अपनने ज़ितमा और अधनक तथा कल्यानकरी है। एक 📖 सभी छोकोंके कुमार 📉 एक आक्यान सुना रहा है, जो पुण्यदासक, 🗆 रजविता वितायक सुरक्षपूर्वक बैठे थे, उसके पास श्रद्धा-प्रक्रिन-

(अध्याव ९३)

समन्त्रित हो काल्कियने **सामा प्रणाम गर्मा और वदा**-वियो ! आज में दिवासर मणवान् मु**ंदि**का दर्जन

करनेके रिज्ये नामा था। प्रदक्षिणा करके मैंने उनकी मुख्य की तथा मरमभरित और अज्ञाने मसाक क्षत्रकार उन्हें प्रमाण

किया और वहीं बैठ गया। वहाँ मैंने एक महान् आक्षयंकी बात देशी—सर्गजटित कोटी-छोटी चंटिकोरे जुक तेह वैद्यंदि व्याची एवं मुख्यजोरी सुरोपित विशेषत्र विकासो व्याधनके यह एक पुरुषको देखकर भगवान् दिकावर सहस्थ काकाके व्याहने हुए। उन्होंने सामने आवे हुए देश पुरुषको अपने पाहिने हुए। उन्होंने सामने आवे हुए देश पुरुषको अपने पाहिने हुए । उन्होंने सामने कावे हुए देश पुरुषको वैदे पुरुषको मुख्य देश देशका पुरुष क्या—

सम्बर्ग एक हेड विकास स्थान दूसरा पूरव आया : उसका भी सूर्वभगवान्ते उसी प्रकार अदर किया और उसे भी विकास भावने नहीं मैडाया : देवशाईल : फावान् मूकी क्या मा गयी का दोनीकी पूजा देवकर मा करने कहा बीतुहरू उत्पाद हो गया, आहे मने भगवान् भारतस्य पूछ- देव ! क्राले जो यह मनुष्य आयके पास आया है और जिसे आपने मा

मंतुष्ट किया है, इसने वरित-सा ऐसा पुन्यवर्ध किया है, जो इसकी आफ्ने रूपे ही पूजा की है ? इस विश्ववर्ध रेखन प्रि इटबर्म विशेषरूपसे कीशुंहल उत्पन्न हो उत्पा है । उसी प्रकारसे

आपने दूसरे प्रमुख्यकी 📕 पूजा 📰 है। ये दोनी सब सबस्तरे पुण्यकर्म करनेवाले उत्तम अनोमें भी बेह प्रमुख हैं। अपन से सक्त ब्रह्म, किया तथा शिव आदि देवताओंके कुछ भी

अर्थित, पूजित होते हैं, फिर आपके द्वारा ये दोनो किस कारण पूजित हुए ? देवेश ! मुझे आप इसका रहत्य कारणे हं

भगवान् **सूर्यने कहा** — महामते ! आपने इनके **कार्य** विषयमें बहुत अच्छी बात पूछो है, जिस कारणसे ने मेरे पास आये हैं, उसे आप अवण करे — पृथ्वीतलपा अध्येष्ण सम्बद्धी

एक प्रसिद्ध नगरी है, जो भेरे अंक्षमे **व्या**क राजाओहारा अभिरक्षित है। उस अयोधक नामक क्यरीने यनकार व्याक

सुर्वजन्दिर बनकामा और बहुत-से 📰 बाहाजीको ब्रह्मकर उनकी पुत्रा को। इतिहास-पुराणके पावकाका विजेवरूपसे पुष्प की और उससे पुराण-शयण करानेकी प्रार्थना की तथा कहा—दिकोद । इस भाँदरमें का करों वर्णीक समृह पुरुष-अञ्च करनेका इष्युक्त है, अतः अस्य पुराणश्रवण कराने, जिससे धगवान् सूर्व केंद्र लिये आत यथातक कर टेनेवाल हो। आप एक पर्यक्रक मेरी दो हुई बृतिको सहज को । उन्होंने वैदन बरसक्तके आज्ञको खोकार कर किया : परंतु कः पासने हैं। केवन धनपाल कालधर्मको आहे है। गया । हे कुम्बर ! बढ़ी यह बैहन है । मैंने इसीको स्मनेके लिये कियान केला 🐿 । एक्न अवस्थानको कहने या स्त्नेसे जो फल एवं कुट जार होती है, यह उत्संबद धतर है। गुन्ध-पूथादि उपन्यक्ति पूजन करनेकर मेरे श्वदयमें बैसी प्रमानता उत्पन्न नहीं केली जैसी पुराण सुननेसे होती है ( कुम्बर ! गी. सुनर्ज सथा सर्वेमटित बस्ते, सन्ते तथा नगरेका दान देनेसे मुद्दे इतनी प्रस्ताता अहें होती, कितनी प्रस्ताता इतिहास-प्राण स्वते-स्कारमे होती है। 🎆 अनेक साध-पदार्थीहर विके 👊 ब्रान्द्रोते 👯 प्रसानत नहीं होती, जैसी पुराण-धावनसे सेती है। सुरतेश ! इससे अधिक और क्या कहे ! इस रहरवपुक्त परित्र आक्यानके कामनो विना मुद्दे अन्य कुछ भी

🚃 🔚 🚃 चाला था। उस पुरीमें उसने एक दिन्ध

नरेक्य 1 यह को दूसरा ब्राइण यहाँ आया है, यह भी देवी हैं। अनोध्या नगरीमें अक्तम कुसका ब्राइण था। एक का यह परम बद्धा-पंक्तिले क्यां होकर धर्मकी उत्तम क्यांकी सुननेक रिन्मे गया था। वहाँ पर उसने परित्रपूर्वक व्यांकी सुननेक रिन्मे गया था। वहाँ पर उसने परित्रपूर्वक व्यांकानको सुनकर उन क्यां वायकको व्यांकानको सुनकर उन क्यां वायकको व्यांकानको एक पाला वार्ष देन देकर परम उननिद्रत हुआ। यही इसका पुष्प है। जो यह मेरे द्वारा सम्मानित हुआ है यह उसी पुष्पकर्मका परियाम है। श्रद्धा-भक्तिसमन्तित जो व्यक्ति व्यांकानकी पूजा करता है, उसीररे में भी पूजित हो करता है।

क्षिप वर्ति है।

मनुष्य अच्छे-से-अच्छे भोज्य पदार्थीक द्वारा
 कच्चक्को परिवृत्त करता है, उस्तिसे मेरी भी संतृष्टि हो जाती है।

मेरी संतानें —यम, यमी, अनि, मनु तथा तकती यूहे उतने क्षित नहीं हैं, जिलना मुझे कथावाचक प्रिय हैं । सबस्य संसूह क्षेनेपर सभी देवता प्रसम्भ हो जाते हैं, इसमें 🖏 संदेह नहीं । क्वेंकि हे देवसेनाफो ! सबसे कहरे संसारके द्वारा पून्य को मेरा मुख था, उसी मुक्तसे संस्कृतक कल्फन करनेके निम्ता सभी इतिहास-पुराणादि सन्ध प्रकट हुए। यहामने ! यहाँ पुराण वेदोंसे भी अधिक विव हैं। वो ब्रह्मानको जिल इन्हें सुनते 🛘 और पायकको पुनि प्रदान करते 🕇 वे परस्पद प्राप्त करते है। सुरत ! धर्म-अर्थ-काम तथा मोश्च--पुरुवर्धकार्धकार्ध उत्तम व्यक्तिक रिज्ये 👫 दे इतिहास-पूर्ण कराये हैं। वेदीका मर्प अल्ला युक्ति है। अल्ला बहानते ! प्रतको जननेके रिवरं 🛗 मैंने इतिहास-पुरानोको रक्तम 🔣 🛊 । 👈 मनुष्य 📖 पुराण-शयणका उत्तम 📰 फायाता है, 🕸 सुप्रिक्से क्रम बाह्यार प्राप्यक्को प्राप्त करका है। क्रांकाको में 🚃 देता है, यह सूर्यदेशक शोधको 🚃 🚃 है। हे साजेश । इसमें सामार्थ ज्या है ? जैसे देखकातीने इन्ह्र केंद्र हैं, पारतेंने कर केंद्र है और जैसे नेजानकोंने स्वाह नवियोंने सागर श्रेष्ठ माना राजा है, वेशे से शब्दे स्वकृत्योंने

इतिहास पुराण कावक ब्राह्मण होता है। यो मनुष्य परिम्पूर्वक पुराण कावकार पूजा काता है, उसके उस पुण्यकर्मद्वार। सम्पूर्ण जगत् पूजार हो काता है।

ब्रह्मानीये पुतः श्रद्धाः—दिन्धित् ! देवदेवेका पगवान् सुनिक मन्दिरमें को पतुन्त धर्मका प्रवण करता है या करता है, उसके कुन्यसे का स्थानित स्थानित स्थानित है।

वो पुरुष भगवान् सूर्यको तल वार प्रदक्षिण
भूमियर बावन सूर्यकर सूर्यकराथनको प्रकार करता है, यह
अध्य गरिको प्राप्त होता है। यो मनुष्य जूना पहलकर सरिदारों
प्रवेश कराव है, यह सारिका नायक भवेकर नरकों जाता है।

वो सूर्यक्रिको बावको वृत, दूध, प्रथु, इश्हरत अध्या गन्नारि

क्रिके बावको वृत, दूध, प्रथु, इश्हरत अध्या गन्नारि

क्रिकेट बावको है। वे सम्पूर्ण क्रम्यक्रीको

क्रिकेट बावको है। अध्यानय-पहला प्रकार

क्रिकेट बावको है। अध्यानय-पहला प्रकार

क्रिकेट बावको वे दिलाकोको व्यक्त स्थान क्रिकेट अध्यान स्थान

क्रिकेट बावको व्यक्त व्यक्ति विवासको व्यक्ति व व्यक्ति व्यक्ति स्थान

क्रिकेट बावको व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व व्यक्ति व व्यक्ति स्थान

## जन्म-साम्पी-प्रतका वर्णन

दिप्योमे बाहा—बहुन् । अवके मुक्ते थे 
सार्थियोका धर्णन किया है, उसमे जो पहली साठवे है, इसके
विषयमें तो आपने विस्तारपूर्वक वर्णन किया, कियु होव हः
सार्थियोक विषयमें कुछ नहीं बाहा। अतः अन्य 
सार्थियोका भी आप वर्णन करें, विक्रमें उपवास बार्क मैं
पूर्वलेकाने प्राप्त बाह हा सकूँ।

म्बानी बोले—दिष्टत् ! भूक प्रस्ति है। उस दिन समर्गिको हल नक्षत्र हो, उसे 'जया' समर्गी करते हैं। उस दिन किया गया दान, हकन, जप, तर्पण ब्ला देव-पूजन ब्ला सूर्यदेवका पूजन सौगुना रूपभाद होता है। वह भगवान् भासकारो ब्ला जिस है। वह प्रपन्नविक्तो, बेह यह देनेवाली, पुत्र प्रक्ता करानेवाली, आगीह हच्छा और वे पूर्ण भरतेवाली और रूस्मोको ब्ला करानेवाली है। प्रस्तित करानेव इसी तिथिको यगवान् सूर्यन ब्ला इसरिने हमें शुक्त सहयों यो करते हैं। अपने दोनों हाथों में क्यार विश्व श्री शुक्त सहयों यो करते हैं। अपने दोनों हाथों में क्यार विश्व विश्व व्याप्त स्वाप्त प्राप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्या

🚃 मैंबेध तथा विजय-मूप देनी नहीं(वे। बहुक्योंको भोजन कराकर स्वयं भी वैसा ही फोजन करना चाहिये। 'रिवर्षे प्रीवनाम्'--'स्पेटेव ! मूहम्स प्रसन हो'--ऐसः। कंडते हुए 🚃 स्तितको सकड़ेसे ...... करम चारिये।

ग्रीसरी पारवाचे अगस्ति-पृथ्यसे चनवान् पारवस्था पृजन करना चाहिये। इस प्रतमे भगवान् सूर्यको श्रीतन्त्व, कृत्युम्, सिद्धक-धूप देने चाहिए, कोईक ने प्रगणनको आयुक् प्रिय है।

'विक्तनेते 🖟 जीवसम्'—'धगवान् निकर्तन-सूर्व

🚃 🚃 हो — ऐसी प्रार्थन करते हुए कुशोदकका प्राप्तन करना चाहिने तथा बेरबी दासून करनी चाहिये। वस्के अन्तमे भगवान् सुर्वको गम्ब-कृप तथा नैनेकादि उपचारीसे विधिवत् पूजा करनी चाहिये, अनकार उन्होंक 🚃 अवस्थित होकार श्रम 🚃 प्रजनम् कवन 🚃 वाहिये।

📰 ! इस विधिसे 📕 कुल इस सहन्दे-तिधिका वत काता है, उसके खानादिक समस्य ब्रह्म कार्य सौगुना 🚃 देनेक्सने हो बरते हैं। इस सहधीके बतको करनेवाला 🚃 वर, 📖 सन्य, मुचर्च, पुत्र, आपू, बल तथा लक्ष्यीकरे प्राप 🛲 सूर्वलेकमे 📖 है। (अध्याय १६)

#### जयानी-समुबीका विधान और फल

प्रक्रमणी मोले—प्रिलोचन । याच प्रश्नम सुद्ध प्रश्नम भारती तिथि जयली-सहसी 🔛 🔤 🗓 धह कुरवदारियी, पार्थमनामेनी तथा पार्थमानामा है। इस विकियर जिल विधिसे स्पासना कानी चाहिये, उसे अवश सूने । पण्डितीने इस कामें चार पारणाओंका उल्लेख किया है। पहाची शिक्षि एकभूक, पहाँमें मस्त्रात और महर्माने उपवास करके अञ्चलि परना करने कहिये। माम, प्रात्मुन तथा केंद्र पासमे क्य जयकी-सप्तयोका 📠 किया जाय क्या कारकान् सूर्वको मकुरुके सुन्दर पूज पहाने वाहिये तथा कृतुलबह निर्देशक करना च्यहिये, मोदकोश्य नैवेश और पुरस्क जूब देख व्यक्ति । पश्चगंद्य-प्रदान करके पांचतीकरण करता श्वतिये । जहालोकी मोदक पश्चवारिक किलाना पहिन्ये तथा 🚟 जनक वासलकः। भारतः भी देता व्यक्तिये । इसः इतः हा समूखः लेकपूज्य भगवान् भारतस्त्री पूजा करता 🗓 🚌 इस अक्षरी सभी परणाओं अवस्था एवं राजसूब-बद्धार पदः 🖦 niam 8 i

दितीय पारणार्थे सूर्वभगवानुकी पूजा करके राजसूत-महत्त्व परू प्राप्त होता है। वैशास, ज्येष्ठ और अनुबद्ध समूचे सुर्यदेवकी पूजा करनेके लिये इतिहरू कमल तक केत उन्हत

और गुणुलके भूपका विधान कहा गया है। इसमें गुड़के बने हुए अपूरका वैवेदा आर्पेत करना साहिये और योगयका प्राप्तन करक कार्डिये : कार्डालेको मुहारे यने तुम् अपूर्वीका भीजन करान अच्छा पान गया है। यह पारण पापनहित्त्व है।

एतीय करकावये विश्वि इस प्रकार है--आकर्ण, भाइपद और आधिन मासमे रसा चन्द्रन, मारलोके पुष्प और विजय कारक भूग्यक पूजनमें प्रयोग भारता चाहिये । यूहमें बाताये यूपे अपूर्वका नेवेदा निवेदित करना शाहिये । आहागीको भीजन सी उसी मुलके अपूर्वेसे करायेका विधान है । प्राप्तको परम पश्चित्र कानेकले कानेटकका पन करना व्यक्तिये। यह तुनीय पारणा पर्योक्त कर करनेकाली कही गयी है।

अब बीधी फरना बता रहा है, इसे सुने—कार्तिक, भार्यदर्शित तथा श्रीय सारती सूर्यपुत्रनको पारणा करनेसे अनगर कुम्बफल आह होते हैं। इस पारवापे कनेरके लाल पूजा, रक्षकट्न देने व्यक्तिये । अनुसर् मामका कृप, पाणसका श्रेष्ठ नैकेश निकेदित करना चाहिये। केत गायके महेकर प्राप्तत करोका विधान है।

चरो परमाओंने हमातः 'विजयानुः जीवताव्', 'धानुः 'आदितः त्रीवराष्ट्र' भेक्स्स् (, तम 10000

१-अफ्ड कर्टर पुत्र विद्वकं अपूर्ण तथा।स्थापनीत्

कांग्यीर व्यक्तम्बद्धे ।

क्षण्ठ, भन्दन, मोध्य, स्याप्तक (एक कम-एका) और विकट् (स्रोठ, पीचर, विनी)को समयान लेकर को पुर कराया जाता है, उसे अधूरा-पुर कडते हैं।

श्रीवतान् — ऐसा क्यारण करना व्यक्ति । इस स्थान मनुष्य विश्वयम् भगवान् सूर्यनगरकाकि वृत्व करता है, यह प्रश्न प्रश्ने अप होता है। इस अकर सक्ती-अस करनेपर अनकर्ताको सभी कापीष्ट कामनाओको प्रश्नि है जातो है। पुत्रावीं पुत्र क्या कर्ताचीं पर स्थानका है और केपी क्युप्त

रेगोसे मुक हो **।।।।।** है क्या अन्तमें वह निवान करणाण प्रक्त ।।।।। है।

है, बह साथ स्थान होता है तथा सभी पानेसे मुक्त होकर स्थानिकार सुर्वरनेकको स्थानस्य है। (अध्याद ९७)

## अपराजिता-समुची 📷 पक्तजबा-समुची-वरका वर्णन

अञ्चलको कोले----गण्डीपर । भारत्य 📟 👚 पश्चकी सहायी तिथि अपराधिता-सत्तयी नामसे विरुवात है। यह महापातकोका नाम करती है। इस प्रश्नमें क्ष्मुंबी प्रितिकरे एक भूतः और पञ्चमी तिथिने नत्त्वतः कार्यका विद्यान है । बह्रो विधिको उपकास करके सहयी मिन्दिन करका करकेक विधान है। 🚃 १समें भी 🚃 पारणाएँ बळाची है। सुक्केक्का पूजा करकीर-पूज, 🚃 गुजुरुको 🗏 हुए थुन, गुड़ते वने अपूर्ण करनी चाहिये। भक्तपर 📖 📰 📖 पुन्न, श्रेत बन्दन, युवका धूप 🚃 पायलके 😘को सुर्वदेशका पुरान करना चाहिये । नार्गतको आदि तीन 🎟 🖼 अगस्य-पूज, कुंकुमका विसेक्त, निवाक-पूज, वार्तिक-यानरुके नैयेश आदिसे पूजा 📖 स्थ्रिये । परन्तुन 🚐 तीन मासीमें रक्त कमरुके पूर्व, अगव, कदन, अनक 📖 भूप, प्रार्थिय या मिश्रीक्षण्यसं अने हुए अस्पूर्वक वैनेहाई मुर्वदेशको पुना करनी चाहिये। विद्वारोने जेश आहिके महोनोमें सुर्यदेवको पूजा करनेक रिज्ये इस्ते विशिवको कहा है। भारी पारणाओंमें 🚃ः भगवान् सुम्बेदक्के 📖 इस प्रकार है—सुधोश, अर्थम, 🔛 और विद्यालयः। 📟

परणाओं ने तस्ताः 'सुबोस्: डीयसाम्' इत्यदि करे । गोस्व, माना, पृत, कल दृष--वे प्रतके व्याः व्याः है ।

कं धनुष्य इस विधियं इस श्रामी-प्रश्नेष्यं करता है, यह युक्तमें इत्युक्तेसं पर्याकत नहीं होता । यह दावृष्टे जीतकर धर्म, अर्थ तथा करम—इस विधानि परकारे भी निःसंदेह मात्र कर केवा है। विधानिक प्रश्न यह सूर्य-त्येकको प्राप्त होता है।

प्रकार करा प्रथमपूर्णक सम्मी-महत्त्रके करता है, वह शहुको पहाला करके सूर्यलेकको प्रश्न करता है और देन अहाँसे मुक एवं स्वर्णिय ध्वान-महत्त्रको सम्मीयत प्रमाण हारा भगवान् करगादेकके समीयमें कावार क्ष्मका प्रिय हो।

व्यासनी कोले — सुन्नपश्चा समयो निधिये सब सूर्य स्थानक करते वि तक वस सामये व्यास्थ्य अद्दर्शती है, जो चनवान् भारतस्थो अस्त्रभ प्रिय है। इस अवस्यय क्रिये गये वाल, तान, अप, होन और पितृ-देव-पूचन कर्य सब अस्यं व्या-गुल कर वि है — ऐसा चनवान् भारतस्ते व्याव्याः है। (अध्याव ९८-९९)

#### नन्दा-समुधी तक भग्न-समुधी-प्रतका विधान

ज्ञामानी चोले—हे चेद | मार्गकोर्च कारमे कुरू प्रकार जो सहयी होती है, वह जन्दा कारकारी है। वह सञ्चेको आर्थन्द्रत करनेवालो तथा करन्याकारीको है। इस कारमे प्रकृती तिकिको एकपुक्त और पही तिकिमें नकारत ब्या मनीबीलोग सहयी विकिस्ते उपवास बसलाते है। इस कारमें विद्वानीन सीन पारणाओंके बननेका उपदेश किया है। इसके पूजामें पारणोंके पुत्र, सुगन्ध, बन्दन, कर्पूर और अगस्ते विद्वार पूजाम प्रचीम करना चाहिये। खाँडुके साम्स दही-पारका नैवेदा मगळान् पारकरको प्रिय है। उसी खाँडुमिशित दर्ध-मानका कोजर काहाजोंको करवाना चाहिये। तरस्कात्

१-क्षेत्रण्यं अन्तिसरितमपुरः निवासं स्था। कृता स्थेत्रं पृतेश्च प्रर्थतः कृतते त्रावत् ॥ इत्येत पृतेऽस्तात् स्थिते देशस्त्रतः।

**१८।१-**१०)

श्रीसप्द, अगर, सिम्रुक, नगरमेश्व, प्र**ियमर्गि, इन्हरूव सम्ब** इ**र्थन विद्याल तो पुर करना करा है,** उसे अनन नायक पूर करा गर्य है ।

स्वयं भी उसी भोजनको 📖 चाहिये। भगवान् पासनस्को 🚃 देनेके 🔤 प्रथम 🚃 विधि इस अवसर है— पलाराके पुरु, पक्षक भूप अचन वचसामर्थी को भी पुर हो सके, उसी चुपसे पूजा करनी चाहिये। द्वितीय परणाने प्रयोप' पूर, सर्वनसम्बन्धे 📖 पुरका नैवेश सूर्वनारायणको अर्थित करनेका विच्या है। सर्विपितित भोजनसे जाराजीको भोजन भी कराना चाहिते। निम्ब-पत्रका प्रशासन प्रशासन व्यवस्था अधिकार च्यारिये । हतीय पारकमें प्रकान पारकाको प्रसन 🚃 🚃 नीरू 🔳 धेत 🚃 और मृगुरुकं 📉 🚃 🚃 अर्थित करना चाहिये । अञ्चनमें तथा क्रिकेन्समें 🔣 बन्दनके ठपकेएकी विधि कड़ी गयी है। मनुष्योको सदा परित्र करनेवासे भगवान् सुर्वन्त्रपायकोः गामीको भी सूर्ग—विष्यु, मग 🚃 कला वे 🔤 📖 🕻 : प्रत्येक पारणाने 🚃 'विका: प्रीयक्रम्' 📶 स्वास्त्र 🚃 चाहिये । पुस विधिसे जो मनुष्य 🏬 📖 धनवान् भारतस्था पूजा होता है, 📺 इस लोकने अपनी कारकाओंको पूर्ण करके अनन्तकालतक 🚃 📆 है। वस्थान्

भारतस्थी पूजा minu है, mi इस लोकने अपनी कम्माओंको है, यह अश्वमंक्यकों प्रश्नमें प्राप्त करनेके पश्चाद परायद— पूर्ण करके अनत्तकालतक minus है। उरस्थात् योकको कम होता है। सूर्यलोकमें माका वह वहीं mi आनन्दको प्राप्त करता है। (अध्याय १००-१०१)

#### तिभियों और नक्षश्रोके देखता तथा उनके पूजनका फल

सुवन्तु बुनि कोले—राजन् ! यहाँक मगकन् सूर्यको सभी तिथयाँ प्रिय हैं, किन् वालां लोग किनेव लाग है। सतानीकने पूछा—जब भगवान् सूर्यको सभी विकियाँ प्रिय हैं तो सामीमें ही पत्र, दान उनके विक्रोनकपसे को अनुहित होते हैं ?

सुमन्तु मुनिने कहा—एक्ट् ! क्रजैन कालमें इस

और सहाजीने कैया कारणया ■, उसे मैं आपकी बतागा हूं अपन अवन करें— असाकी धोरों —विको ! विकासको समय प्रतिपद

निकार कारवान विकान स्थानिक अध्यानी से जो प्रश्न किये थे

**व्यापकी बोले—२३३ पहाने सरामी दिधिको 💷** हस्त

अक्षत्र हो तो वह भारा-सहन्री कही जाती है। इस दिन मणवान्

सुर्वेदवर्थने पहले पीसे, अनसर दुधसे तरअहत् इक्ष्रससे 🚥

कराकर बन्दनका रोप करना चाहिये । तत्क्रशत् उन्हें गुणुलका

🚃 दिकार्य । बतुर्वे तिथिको एकभुक्त तथा पश्चमी निथिको

· विकास है। वही तिकियों अवादित सहकर

लामा तिर्विको उपकास रक्षमा श्रेष्ठ कहा गया है। सतमी-क्षत्रक पालन स्थापना मनुष्यको च्यक्तिये कि यह उस असके

प्रमुख्के, सल्क्ष्मीसे दृश करनेवाले, विकाल-वृद्यिका

🚃 करनेकरं सनुष्योते 🖫 हि । बुद्धिमान् व्यक्ति

क्यानेनात्व करण करते हुए दिनमें द्वायन न करे। इस

नो मनुष्य इस 🚟 इर्जालयुर्वारे भद्र (कृपभ) बनाकर

सुर्वदेशको सम्बन्धि काला है, उसको यह पुत्र पाह होता है और

में 🚃 ऑक्सूबॅक सामी-करपकी हाएभसे सुनता

बार औरपन-पर्यम् आर्योच्या रहता है।

सभी विधियाँ **व्या**टिवकाओंको तथा ससभी भगवान् सुर्यको प्रदार **व्या**टिव को विधि दी गयी, यह

१-वर्ष्ट्री प्रस्तते मुख्यमानः विद्याने तथा। - सम्बन्धि कृष्ट्री प्रोत कृष्ट्राने मुख्यते तथा।वर्षत्तानी स्था स्थिति एवं स्थानः वर्णते॥

(मारार्च २०० | ६-७)

कर्म्, कन्द्रन, कुछ (कुटको), अगर, निकुक, अंधिकर्ग, कासूचे, कुनुम, कुछन तथा शरीतानिक मेलसे प्रश्नक धूप काता है। २-कमागरः सितं केले बाला एको राधाः

चन्द्रने सगरे) पुरस् उमोन्सर्मनन्तियाः। (स्वापनं १००१८-५)

कृत्वारत, 📰 कारत, सुराज्यात, कार्तृते, 🎟 🕬 🖚 📟 🚾 🚾 नित्यवर अनेव 📺 वस्ता है।

उसका ही खानी कड़ालका। कहा अपने दिनगर ही अपने मनांसे पूर्व जानेक ये देवता अलीह प्रदान करते हैं।

सूर्वने अधिकारे प्रक्रिक्टा, स्वाचको दिशीना, काराज क्नेरको तुनीया और गणेतको चतुर्वी लिकि ही है। नामस्वको पद्ममी, 🚃 🚾 बहा, अवने क्रिके स्तामी और स्ट्राकी अहमी 📰 प्रदान 🔣 है। दुर्गदिकेको नवनी, अनने कुछ पमराजको दलको, विकेदेवपानीको एकादली विधि दी गाँवे हैं। विकास हारती, सम्बदेशको क्योदाती, उत्कारको पहुँकी कवा बन्द्रवाको पूर्णियाको विधि दी है । सुब्धि श्रक विवर्धको परिता, पुण्यप्रकृतिनी अञ्चलका दिवि दी गयी है। ये बढ़ी गयी पेडा तिथियाँ चन्द्रमान्ये हैं। कुला प्रसाने देवतर इन सन्दे शिक्तिमें श्री: श्री: चनुकारप्रश्रीका कर का रेजे हैं। 🖥 📆 चक्री पुन: पोरन्यूची जासके साथ हरित होती है। यह जरेसके वेदगी करन सदैव असम एउटी है। उसमें साम्रान् सुर्वका 📟 🚌 🖫 । इस जनस्य निविधीना 🚃 👯 पृष्टु अस्य सूर्यनाराचना हो महोते हैं। असः वै सहके साची को साते है। व्यानमान्तरे 🖟 सुन्देव अवन 🔤 ऋत्य 📟 🛊 । दूसरे देवता भी जिस प्रकार विकासका अभीड़ पालन पूर्व

करते हैं, उसे में संकेशने बावता है, अन्य पूर्वे— प्रतिपदा विभिन्ने अफ्रिकेकार्य पूजा कर्यक अनुस्तरूपी युक्तका स्थान बार्ट तो उस इतियो समस्त आरम और अवस्थित धनको प्राप्ति होती है। हितीबाको अञ्चलको कुळ करके अञ्चलकी भारतमारी पीजन करानेने वसूच्य सच्छे विकालोंने पारताम हो 🚃 है । तृतीया 🚟 चनके न्यान कुनेस्का 🚃 📖 भनुष्य निश्चित ही विपुष्ट भनवान् अने साक्ष 🖥 तथा प्रत्य-विक्रयदि व्यवपारिक व्यवसारमें उसे अन्यविक राज्य होता है। पत्थीं तिथिने भगवान् गर्गकास पुरुत करक च्यक्ति । इसस सभी विक्रोका नहां हो जाता है, इसमें संदेह नहीं। प्रकृति तिथिमें नागोंकी पूजा करनेसे किनका कन नहीं रहता. की और पुत्र प्राप्त होते हैं और लेड़ रुक्त्मों भी बात होती है। मुझै तिथिमे कर्तिकेनको 🚃 📟 मनुष 🔛 📟 रूप-सम्पन्न, दीर्घायु और कीर्तिको क्यानेकास्य हो 🚥 है। सप्तमी तिथिको चित्रभात नामकारो करावान सूर्यनारायकार पुजन करना चाहिये, ये सम्बंध स्थानी एवं १४७६ है। अहमी

र्तिचक्रे क्वमसे स्थामित भगवन् सदक्षिकडे पूजा करने

व्यक्ति, ने प्रकृत आर तथा अल्प्रीक्ष कारित प्रदान करते हैं : क्याबन् इतुर पुरुष्काण करनेवाले, इस देनेवाले और कक्क्युक बजनेवाले हैं। उक्की शिविमें तुर्गाकी पूजा करके बनुष्य इच्छापूर्वक संवदर-सागरको पार कर रेजा 🖁 तथा 📰 और रवेकव्यवस्थाने वह सदा 📰 प्राप्त करता है। दलनी शिविको कानवै पूजा करनी चाहिये, वे निवित ही सधी 📟 रह करनेकले और नरक तक मृत्युरे मानक्का हत्हार करकारी है। एकर्स्स विकित्रे निवेदेगोकी 📰 प्रकारसे पूजा करनी चावित्रे । 🖹 यसको संस्था, धन-बान्ध और पृथ्वी प्रदान करते हैं । हादशी विभिन्ने परावान् विष्णुकी पूजा करके बनुष्य तातु 📟 होकर सरकत त्येकमें 🔣 ही पृष्य हो कात 🖥 केले विल्लाबारके चलवान् सूर्व पूर्व है। प्रवेदप्रतिने 🚃 📆 करनेसे मनुष्य 🚃 स्थापन् हो अन्तः 🕽 🛲 क्यान्य क्यान व्यक्त व्यक्त 🖈 तथा उसकी सभी कामको पूर्व हो बाती है। चतुर्देशी विधिने भगवान् रकरकर महारिककी पूजा करके मन्त्र समस्त देशकी समन्त्रित हो बाल है तथा बहुत-से पूर्वे एवं प्रमृत धनसे सन्तर 🖥 अस्य 🖟 पैर्नामानी 📖 जो श्रीतमान् 🚃 कनुरमध्ये पूजा 🖦 🐧 🖦 सन्पूर्ण संसारपर अपना आधिपरन 📱 जला है और 📰 📟 📰 📆 होता । विक्रिया । 🔤 🚟 अर्थात् असम्बारयामे पितृगण पुणित क्षेत्रेपर स्टीव ...... होकर प्रवाद्दि, यन-रक्त, आ<u>यु (mi</u> बल-प्रदेख 🚃 💹 है। उपवासके 🛅 भी ये विद्यारा इक फलको देनेबले होते हैं। अतः मानको चाहिने कि व्यक्तिपूर्वक पुरुषे द्वार सदा प्रशंभ रहे। पुरुष्पण, जान-संबद्धतंत्र और ओहा मन्त्रोसे कामरुके मध्यमे शिक्षिके स्वामी देवताओकी विविध उपवासेंसे व्यक्तिपूर्वक क्वाविधि पूजा करनी चाहिये तथा जप-होमादि कर्त सन्पन्न करने चाहिये । इसके प्रमायसे सानव 📺 लोकमें और परलेकमें भद्र) सुखी रहता है। अन-अन देवेंकि 🎟 📟 पक्त करता है और मनुष्य उस देवताके अनुरूप हो जाता है। 🚃 📈 औरट यह हो बावे हैं तथा 📰 🚃 रूपवान, धार्मिक, अधुकोंका नाश करनेवास्त्र साथ होता है। इसी क्वार सभी नक्षत्र-देवता जो नक्षत्रीमें ही व्यवस्थित

👯 वे पुष्पित होनेपर समस्त अभीष्ट कामनाओको प्रदान करते

ाँ, अब मैं उनके विकास है। व्यक्ति स्वाप्त है। व्यक्ति स्वाप्त क्षित्रीकुमारोकी व्यक्ति मुख्य दर्शकं कु व्यक्ति सुद्ध पुर्णे व्यक्ति व्

-

करते हैं।

तेमस्यी 📖 है।

पुरुषेषु नशामी अधितिको पूजा बरुचे पाहिले। पूजाने संतुत होकर वे 📖 सदृश स्था 📰 है। 🚃 स्थाकी उसके 🔚 नृहस्यवि अपनी पूजारे करण 🔚 अनुर सर्विद प्रदान करते हैं। आपरेन्स शकाने 🚃 पूज करमेंसे मामदेव निर्वय 🚃 देते ै, 🚃 💹 । मध्य 🚃 हरूप-करूपके द्वारा पूर्व गये 📰 वितृत्तन कर, काय, पुरक, पुत्र तथा पत्तु त्रवान भारते हैं। पूर्वाप्तरपुत्ते त्रवाओं पूजकी पूजा करनेपर विश्वय 📠 हो जाती 🖁 और उक्कप्राल्यूनी नकारने भग नामक स्वीरकको पुष्पादिके पूक 📰 🗎 किजय, कत्याको अभीचित्र पति और प्रश्वको अचीह पत्नी अदान करते हैं तथा उन्हें 🚃 🔣 इ.व्य-सम्बदासे 🚃 कहा देते हैं। इस बस्ताने भगवान् सूर्य गन्ध-पुन्धदिसे धुनिक होनेपर सभी प्रकारको चन-सन्पत्तिको प्रदान करते हैं। विका नक्षत्रमें पूजे गये चगवान् त्वहः इत्युपीत 🚃 📖 🕻 । 📖 नश्तरमें वायुदेव पुणित होनेक संतुह 🖥 क्राश्तरिक प्रदान करते हैं। विद्याला नक्ष्मणे सास पुन्तेसे इन्यक्रिक पूजन करके मनुष्य इस रहेकमें यन-प्रत्य प्रश्न कर 📖

अनुस्था नक्षत्रमें स्त्रस्य पुण्डेसे भगवान् विश्वदेशकी परित्यूर्वक विधियत् पूजा करनेसे स्थापीकी **व्या**केसी है और यह क्षास्त्रमें **व्या**क्षता विश्वस्था देशका इन्हरी कृष जिल्ला मनुष्य पृष्टि त्रात करता है तथा
पुनिष, धनमें एवं करिंग सबसे अंश हो करता है। मूल नश्रवमें
सबी देशकाओं जिल्ला करता है और पूर्वोक्त फलोंको
व्या करता है। पूर्वाक्त नश्रकों अप्-देशता (जल) की पूजा और करता है। पूर्वाक्त नश्रकों अप्-देशता (जल) की पूजा और करता करके मनुष्य प्रारोधिक तथा मानसिक संतापोंसे मुख हो जाता है। उत्तककाम नस्तवमें विश्वदेशों और पण्यान् विश्वेकाको पुन्यदिक्तरा पूजा करनेसे मनुष्य सबी कुछ जा। कर

स्वाच नवाकरे केत. ■ और गील कर्गक पृथ्वेद्वार स्वाच्यावर परावान् विक्युमी पृथा कर सनुष्य उत्तम लक्ष्मी और विक्युमी कर करात्र है। व्याच्या नक्ष्मणे मध्य-पृथ्यदिने क्युमीक पृथ्वाके समुष्य बहुत कई प्रथाने में मुक्त हो जाता है। उसे कर्म कुछ भी सब नहीं रहता। शासीया नक्ष्मणे क्युमी पृथ्व करात्र कृष्य व्याध्यक्षि मुक्त हो जाता है और व्याद्ध प्रथीक पृथि, क्षाक्य और देवार्थक मान करात्र है। पूर्वाच्यापक व्याप्ये पृथ्व करनेते उत्तम भक्ति और विचय मान केती है। व्याप्या वश्चमणे अविवृद्धानको पृथा करनेते करा क्याच्या प्रशि होती है। देवारी मानमंग केते पृथ्वेद पृथे व्याप्या प्रथान करात्र महत्व करते हैं और अवल पृथ्व तथा विचय के देते हैं। व्याप्ये स्वयंपकि समुक्त प्रदान करते हैं और अवल

अपनी सावच्चिक अनुसार चीताले किये गये पूजनहै थे अदा चल देनेवाले होते हैं। याता वननेकी इच्छा में जनका किसी कार्यको प्रशंभ करनेकी इच्छा हो तो चवाला देवलाकी पूजा आदि करके हो वह सब कार्य करना उचित है। असर करनेकर सावज तथा जिल्ला होती कै—वेशा अन्य अनकान शुर्वने करता है।

ज्ञानानि चाहा—मधुसूदन ! जान परित्पूर्वक सूर्यकी ज्ञारकात करें, क्लेकि भगवान् सूर्यकी नित्य पूजा, नमलार, सेवा-सत, उपवास, हजानद्व तथा व्याच्या प्रकारसे खाइग्योको कृत करनेसे मनुष्य प्रकारित होकर सूर्यलोकाने प्रक्ष करता है। (अध्याय १०२)

#### सूर्व-पूजाका माहत्य

ti im \$?

इस्तुमधी बोले—मयुस्दन ! ये मनुष्य भविनूर्वक सुप्रदेशका मन्दिर व्यक्ताता है, वह अपनी सात चोदियोंको दिक्य सूर्यक्षेक प्राप्त करा देता है। सूर्यदेकके चन्द्रिये जिक्ने वर्षपर्यन्त भगवान् सूर्वको 🚃 होती 🛊, उतने एकर 🚃 वह सुर्यलेकमें आसद् 📖 करता है। व्यक्ति 🔤 अर्थ्य, पुष्प, चन्दन, नैकेश आदिके 🚃 मगुकार् सूर्वकी विकिन्नीक आवधना होती है, 📖 पाने 🚃 हो 🗯 निम्मयन, 🚃 सूर्यकी साम्पता प्राप्त कर लेता है। चलवान् सूर्की अपने मनको लगकर जो व्यक्ति अस्पन्त मुचन्दित वनेकारै पूज, विजय संबं अनुसारि 📖 पूर, असर्वाचन सुर्वाचन कर्पुर्वादेके विलेक्सक तेप, केपदान, 🔚 💹 उनकर भगवान् सूर्वनायकको प्रात्स्य अर्थन वशक्ष है, 🕸 अर्कन अभीत हुन्स पाप कर रोता है। यहाविषकी परावान पारकर पहोंसे भी प्रसन्न होते हैं, मिन्तू 🚃 🚃 🚾 मनुष्य ही बद्दा-से संस्ताधनों और 📖 📖 सर्वे भुक्त एवं विज्ञान (अधनेष तथा राजसूचाँदे) यह सम्पन्न का पाने हैं, इसकिये यदि मनुष्य भगवान सुर्वको धरिकधानको वृत्रीकृरों से भी पूजा करते 🖥 तो जुनीय उन्हें 🕫 भागी पात्रीक कर्ममें प्राप्त होनेकारें। अति दुर्लय करकड़े क्टान कर देते हैं।

सूर्यदेवको आर्थन करने चेन्य पुन्न, भोज्य-च्छार्थ—
वैदेश, पूप, गम्भ और दारीरमें लग्यनेश्वलः अनुलेख-घटार्थ,
भूक्य और लाल वस्त्र में मी उपहार तक बाल कर है, वह
सब सूर्यदेको अनुलय होना बाहिये: उर बाह्यल्य
यहपुत्रवर्धा आप यथाइतिह आराधमा करें। चंगवान् सूर्यके मिन्दर्मि जो सित्रमानु भगवान् दिवाकरको तीर्वके पवित्र करः,
गम्भ, मयु, मृत और दूधसे ठान कराता है, वह सर्गर्लकेको
वास्त्रको बात कर लेता है। अनेक विदेहवंदतिय बाता कम्मी
प्रकार पाता और हैहमकंदी नृपतिगन भगवान् सूर्यको
आग्रावनसे अमरत्वको द्वाह हो गये है। इस्तिनो आप भी
विधिष्ट्रवंक उमरासको साह हो गये है। इस्तिनो आप भी

विष्णुने पूछा—ऋशन् ! मगवान् सूर्य उपवाससे कैसे संबुष्ट होते हैं ? •••••• करनेवाले प्रक्रके इक ••••

हुए मणवान् सूर्यं ज्ञान्ति प्रकान करते है।

आरायना 🔤 प्रकार 🔳 जाव ? इसे आव वताये।

इक्कानीने अञ्चा—अब खेगपराचय व्यक्ति भी धूप, पूज आदि उपचारीरी चगवान् सूर्यकी तत्त्वसतापूर्वक आराधना कर करकाण प्राप्त कर तेला है तो फिर उपवास-पराचण व्यक्ति आराधना करता ■ ■ उसके करवाओं विवयमें

सिक्युने पुत्रस—सियो । बाइरण, सक्रिय, वैश्य, प्रह् तथा को बिक्का सभी सांस्करिक पश्चमें फैसे हुए हैं, उन्हें सुगति बिक्का का बिक्का ?

📟 उस 🕮 📖 🖚 सेना है।

उपासना करता है, यह वृष्णां पंगवान् मुर्वत

सहस्रवीन कहा — प्रमुख निकायट-भावसे तिरियहर स्थायम् स्थाया स्वाति प्राप्त कर स्थायत् है। से व्यक्ति विषयोगे अग्रस्त है तथा भगवान् सूर्यमे मन नहीं समावा ऐसा जय-कर्म करनेवाला मनुष्य सहति कैसे प्राप्त कर सक्या ? इ.स.चे प्रीवित व्यक्ति सहति साम करना करना है से अस स्प्रेक्यून्य सर्वेश्वर भगवान् प्रस्तिपति स्वात प्रथा करनेविद्यार उपकारेसे उपवास-परापण होकर अग्रयथमा करे। यदि संसारसे विरक्त होकर सहति प्राप्त करनेविद्यार उपकारेसे उपवास-परापण होकर अग्रयथमा करे। यदि संसारसे विरक्त होकर सहति प्राप्त करनेविद्यार उपकारेसे स्वात आग्रयमा करे। यदि उनकी आग्रयमा हो तो करनेके स्वात्र सूर्यदेवकी आग्रयमा करे। यदि उनकी आग्रयमा हो तो करनेके स्वात्र सूर्यदेवकी आग्रयमा करे। यदि उनकी आग्रयमा हो तो करनेके स्वात्र सूर्यदेवकी आग्रयमा हो है। अग्रयमा स्वात्र प्रमुख्य प्रयास सह अग्रयमी है। अग्रयोगे स्वायव्यक्ति अग्रयमा स्वायव्यक्ति प्रमुख्य प्रयास सह अग्रयमी संवृद्धि प्राप्त कर सकता है। सूर्यदेवके स्थि विधिवत् एक बार संवृद्धि प्राप्त कर सकता है। सूर्यदेवके स्थि विधिवत् एक बार

■ किया पथा प्रकास ■ अञ्चलेष-क्यांक कहार होता है।
■ अञ्चलेष-क्यांक करनेवारत चनुष्य कार-बार ■ सेवा
है, किंतु सूर्यदेवको प्रकास ■ व्यापना पुनः संस्कारों ■
नहीं लेता \* ।

प्रकार चित्रपूर्णक विस्तारे व्या विधि-विधानसे भगवान् सूर्यकी उपासना की जाती है, यह व्या व्या करहे हैं। उन्होंकी व्याप्त करके व्या संस्थर-पूज्य इस महत्वको बात किया है। अनको भी पहले उन्हों सूर्यहेंकरो अपनी क्षणीष्ट इच्छाओंको प्राप्त किया। चनकान् प्रमुख भी उन्होंकी आराधनासे स्वाहतकारी मुख्य हुए।

विकास अस्ति क्षेत्र क

मान्या व्याप्ति, इसलिये भगवान् सूर्यके असिरिक अन्य मि पूजनीय नहीं है। सहावारीको लाल देवोंकी अपेक्षा अपने बेड गुरु भगवान् भास्त्रस्त्री ही अस्त्रधना करनी चहिये, क्योंकि के यत्र-पूज्य विवस्त्रम् भगवान् सूर्य सर्वदा पूज्य है। स्विथेकि सिन्धे परितके असिरिक विभावस् भगवान् सूर्यदेव मि पूज्य हैं। गृहस्य-चलिके लिये भी गोपति अंशुमान् ही पूजने बोल्य है। वैश्वयोको सि समोनाशक सूर्यदेवकी पूजा करनी प्राणिने। संन्यासिकोके लिये भी सदेव विभावस्तु ही व्याप्त करनी प्राणिने। संन्यासिकोके लिये भी सदेव विभावस्तु ही व्याप्त करने बोल्य है।

इस स्थान सभी दभी तथा सभी आश्रमीके रिप्ये विकासम् वर्णवान् सूर्पनाययण ही उत्तरस है। उनकी अस्यवानके स्थानि साम से साली है।

(अध्याय १०३)

## विवर्ग-स्त्रामीकी महिला

प्रक्रामी बीले—क्यो !

रेकार अथवा निकास होका भगवान् सूर्यकारकारे **। । ।** वर्तेको नगरे न्यांक सर्वावाधिका फल आ। करता है, आव आप १४९७न उपवास-सुरोके निकास सूर्य ।

हेस हेस कृपालुस्कमगरीन्तं गतिकेतः। संसारक्ष्येयमञ्जलो जता जल विकास ।

'हे प्रामहंस-स्वरूप भगवान् सूर्य ! अस्य द्रवान्तु है. गरिप्तीनोको सद्दि प्रदान **स्थानाः है.** संस्तर-स्वश्रस्य निमन्न and the spil.

इस प्रकार एक्प्राचिक्त होकर क्रम्यास **व्या** हुए भगवान् सूर्वेक्प्राचकका पूजन क्षाण वाहिये। पूर्वेक्प्राचनो व्याचन सूर्वेदेकका पूजन करे, तरपकात् 'ईस ईस-' इस इस्तेकका क्ष्म को और जनकान् सूर्वके करणीर्थ व्या वार जस्त्रभार। अर्थित करे।

इसी प्रकार भी, वैद्याक और ओह मालमें मी भगवान् मृष्टिकाक पूजन करते कुए मनुष्य मृत्युकोकाने ही ग्रेष्ठ गाँतको आ। यस लेका है और अनामें सुर्वलोकाको प्राप्त करता है। अन्याद, प्राप्तण, प्राप्तक और अविध्य मासमें भी इसी विधिसे अन्याद स्वेचन कुनेस्टवेकाको प्राप्त करता है। संसारके सामी अन्याद सेकन कुनेस्टवेकाको प्राप्त करता है। संसारके सामी अन्याद अन्यादक्षण मगवाद सूर्वजारावणको आरामना एवं अन्यादको कार्याद्व सूर्वका समस्य करतेले सूर्यकोकाको आस होती है। कार्यिक आदि यह महीनोंने दूसका प्राप्तन करता चाहिने। इन महीनोंने 'कार्याद नामले मगवाद सूर्यका पूजन राजा जब करना चाहिने। ऐसा करनेवर क्यांक भगवाद सूर्यका

(at the part of

प्रमोदि क्षित्र सुकृतः प्रधानी वज्ञाकोन्ययम्भेत कृत्यः । दक्षाकीनी पूर्वतेत जन्म हिल्लानानी न पूर्णवाप त
(स्थाननी १०३ १४५)

त्मेकको आप होता है। अस्पेक पासमें ब्रह्मलेको क्यापित्सेका दान देना चाहिये। चातुर्भसको सम्प्रतिका पूरण-कावन कदन चाहिये और क्येत्नका आयोजन करना चाहिये। विद्वानीको चाहिये कि कथानाककार्य पूजा करके ब्राह्मको को, स्वोधिः

ल्लि पालपूजा आदि पानजोद्वारा कवावाचक या ब्राह्मणके साम्बेगसे किया गया वयोजित शाद्ध भगवान् सूर्यनारायणको अमीह है। यह विधि अभीह धर्म, अर्थ वथा काम—५स विवर्णको सदैव देनेवाली है। (अच्छाय १०४)

### कामद्रा एवं पावनाहिनी-समूगी-प्रत-वर्णन

महान्त्री कोले—विन्ते । पारमून प्रसमे सुझ प्रथमो ससमीको स्थाला करके धगवान् सूर्यकारकार्क विधिवत् पूजा करने चाहिए। तत्त्रधात् दृसरे दिन आहर्यको छठः स्थाल समाहिसे निवृत्त हो श्रीक्रपूर्वक सूर्यक्षका सम्बद्ध पूजन करके सहाकोको दक्षिण देनी पाहिए। सारमूर्वक धगवान् सूर्यके निवित्त आहुर्तिको प्रदान हा प्रथमन् सारमारको सामा कर इस सामा प्रार्थन हाई प्रसाद

यमाराध्य पूर्व देवी सम्बद्धाः क्यास्त्र्य वैश्व स ये शत्तु देवेदाः सर्वान् काम्यम् विश्वस्त्रतुः ॥ यमाराध्यतिकाः माहा सर्वान् काम्यम् वर्वेतिकारम् ॥ स वदानविकारम् काम्यम् अस्त्रते ये विकारतीः ॥ श्वासानश्च देवेत्वे धनस्त्रत्वे विकारतीः । काम्यम् सम्बद्धस्त्राम् व्यास्त्राम् ॥ से वर्वे अस्त्राम् ॥

'प्राचीन समयमें देवी साकियोंने अवनी अधीर-विनिद्धके लिये जिन आराज्यदेवकी असरायन की थी, वही मेरे आराध्य भगवान सूर्य मेरी सची कामनाओंको स्टान की । देखी अदिक्षिते जिनकी आराधना करके अपने सची अचीर मंगीरवीको प्राप्त कर किया था, वही दिवस्त्रति भगवान् चलका साम होकर मेरी सची अधिरायकोंको पूर्ण करें। (दुर्वासा मुनिके दहरके कारण) राजपदरी च्यून देवनाज उन्हरें जिनकी अर्थना करके अपनी सभी कामनाओंको साम कर किया सा, वेही दिवस्त्रति मेरी कामना पूर्ण करें।'

हे स्वाच्याता ! इस क्यार भगवान् सूर्वको प्रार्थना का पूजा सम्पन्न करे । अनकार संगत होकार हविष्यात्रका भोजन करे । कारणुन, चैत्र, चैत्रासा और ज्याह—इन चार मासोने इस विकास सरको धारणा करनेका विकास है। प्रतिस्पूर्वक करवांटके कुन्वेसे भारे कहीने सूर्वकी कुना करनी चाहिये। कुन्य अवस्था पून् जरकती चाहिये और यो-शृह्यका जरू वासन करना चाहिये तथा स्वीद-विभिन्न प्रकासका नैवेच देवार वासन्वेको संस्थान कराना चाहिये।

अववर अवर्द कातुर्वासमें पारणको क्रिया इस प्रकार है—इन कर्हनोचे नकेश्वेक पृष्य, गृग्युलका भूप, कृषेका कल और धायतके नैतंदाका विधान है। IIII भी उसी पायसके नैतेत्वको क्रांज करना चाहिये।

व्यक्ति अतंद चातुर्वास्ते योगुअसे शरीर-शोधन करना चार्वि । दश्यमें - वृष, रक्ष अध्यक तथा कसारका मेवेश धनवान सूर्वेको विकेदन व्यक्ति वारका महीनेने धनवान सूर्वेको विकेदन व्यक्ति वारका महीनेने सूर्वेकछरावको प्रस्ता व्यक्ति प्रयास सरका चाहिये और स्थानकि स्वित धनको क्षेत्र चलका चाहिये। विकशावयता (क्ष्म्यकी) न करे। च्यक्ति सन्दावसे पूजा बरनेपर तथा दान अविको क्ष्म पोद्रोसे ह्या रथपर अध्यक्त होनेबाले धनवान् सूर्व असभ होने हैं। चरकाके अन्तमे चस्तातिक जल आदिसे व्यक्ति चलेका पूजा करनेपर मगवान सूर्व प्रसम्भ हो निर्वाधकपसे चलेकाविकत फल प्रदान करते हैं। यह सम्मी पुल्यद्विक, व्यक्ति अधिस्त्रवार्थ होती है, वैसे ही फल प्रस्त होते हैं। इस सन्दर्व करनेवाला व्यक्ति सूर्यके स्थान ही तेजसी बनका स्वर्वम्य विकातपर आस्वद्व ही सूर्यकोकको प्राप्त करता

(बाह्यसर्व १०५। १५-१६)

६- कर्ष्ट्री जन्दने मुखाकार्य तमरे नन्द्र। उत्तम min कृष्णं मृद्रभ निवृत्यं तथा ॥ दशाक्षेत्रमं मृत्ये पुरु विभी देशस मानेशना

वर्ष्ण, सन्दर, भारतेचा, आह, बार, अला, सार्थी, दानवंदी, कार्य रच सृपय-उने, समकामें मिलाका दशाह पामक पूर साराव दाता है। यह पूर भारता, पुरंदकार पर्वत दिव है।

हैं 📖 वर्त असती अधिको प्राप्त करता है। व्यक्ति कुरः पृथ्लेपर 📰 रेकर 📰 गोवति सूर्वपग्रककृति 🛗 कृत्रसे भरतभी समा होता है।

इसी प्रकार अध्यानपाके सूची रहा पक्षाने भाग, उन्हेंगा,

सूर्व 📰 नक्तांके पहनेपर दान-फारसे पगवान सूर्वकी 🗫 बर अन्दे प्रश्ना करना चाहिने । इससे सम्पूर्ण 🚥 नष्ट हो करे हैं। इसे फरवरिजी स्क्रमी करा जाता है।

(अञ्चल २०६-२०६)

#### सुर्वपदञ्जव-ऋत, सर्वाप्ति-प्रप्रापी एवं वार्तव्य-सप्तपीकी विधि

ब्रह्माची चोले—धर्मत्र ! हात मैं वनकता देवदेवेवर भगवान् सूर्वस्थयनके पदाहर-महास्थान कर्मन 📖 है, 📰 🚃 सर्ने ।

अंत्रुवाली सूर्वदेवने संस्कृति कल्पानकी ........ अपने दोनों प्रदोकों 📺 प्रदर्भतन्त 🚃 है। तनके कमपादको ............ भीर राधिनपादको प्रक्रिककनके रूपने चाहिये। सभी हन्द्र आहे देवगण इनके परन्ता क्टन करते रहते हैं। हम और आप सुर्वेदको दक्षिणक्टको अर्थमा स्थाने हैं। विच्यु तथा सकुर सद्धापूर्वक उसके बानपादकी पूजा करते हैं। सो मानव प्रत्येक साम्पीको प्रमुखन् सुर्पदेशको निर्मेशन् अस्तराज्य करक है, इसपर में सक संपूर रहते हैं।

भगवाद् विष्युने पुरान-ग्रेटरेक-वार्थ सूर्य-नापपण्यो आराधना 🚟 प्रसार की सकी है ? 📖 🚃 कर्णत करें।

म्बराची चीले—अस्टम्ब IIIII हेरेके दिन IIII करके ब्राह्मी मनसे पृत-दृष्य हमादै पदायोके द्वारा परावान् सूर्यको सान अराज वाहिये। सुन्दर वक्केफ्कर, कुल-धूप तथा अनुलेपनादिसे उनकी विधियन् पूजा कर अञ्चलीको चोजन और दक्षिणादिसे संतृष्ट करना चाहिये । उसके बाद सुर्वचनिन-परायण व्यक्तिको उनके पराइय-जतका विध्यन प्रकृत करना चाहिये । सदनन्तर स्थान करके 'चित्रमान' दिवाकरकी कदना करनी चाहिये। साते-चरव्तं, सोते-चायते, प्रणाम काते, इयन और पूजन करते समय भगवान् विष्णानुका हो का करते हुए प्रतिदिन उनके नाम-कोर्तनका ही तमतक का करना चाहिने, अबराक्ष दक्षिणायनकः समय न आ जाय । उनको प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिये---

परमात्ममर्थ ह्या विकास्य पुरस्को यमने संस्थितिक स वे व्यानुः वरा गतिः ॥

विकासन् करमाञ्चनस् परम् बहा है, जिनका अन्तकालमें 🖹 पत्त्रीवर्षित स्थल वर्जन्य, 🎟 दे 🖹 सूर्यनगरून पेरो प्रकार भागा है हैं

इस प्रकार सुद्धि करके चर्म्यासक प्रमान सुर्वके जाता क्याक करना चाहिने, क्याक्त इतिमाधन पूर्व क्यारे न आ व्यव । 💴 पद्धात् यथार्श्वतः 🔤 📰 योजन कराकर कारका कार्यक्रके सामने पुण्य-कथा और आक्यानका पाठ 🚃 भक्रिये । चकिपूर्वक प्रयासिक 🚃 और लेक्सका 🚃 भी करना व्यक्ति । इस प्रवार को यनुष्य यह जब करता 🕯, उसको इसी जनको सभी पायेसे मुक्ति विक् 🐠 🕴 वदि इस कः सरकंद बीको हो मानेकी भूत्यु हो जाती है तो तसे पूर्ण उपकारका परंत का होता है। इसके आतिरिक्त को परावाद सुकेनरायको बरसहय-पुजनका फल भी 🎟 🕏 ।

🚃 🚾 पुनः कोले — पूर्व वासके कृष्ण पक्षकी 🚃 संबंधि-समये चक्ने 🕯 । इस 🔤 संबंध अप्येत्सित क्यान्तर्रं पूर्ण हो जाती है । इस प्रक्रमे पादायी: अतदि दुरावहीयोंसे कर्तात्क्रप न करे और एकाम-मनसे विनय क्षेत्रर उन्हों मधवान्। सर्वक पत्रन करे।

क्षण अस्ति कः नारोजें प्रत्येक संस्थितको पारणा नानी 📰 है । तदकार पाय आदि छः मासोने झम्भाः 'मातेष्ट', क', 'वित्रकान', 'विभावस्', 'धर्म' और 'ईस'—मे 📰 🕶 को रहे हैं। पूरे कः मसोमें पृत-दृष्पादि 🚃 क्याचीको साम और प्राप्तको लिये प्रशास एवं पापनाशक मान क्या है।

इस बतमें डेल और सार पदार्थ बहुण न करे, रात्रिये करे। संस्तरमें सम कुछ देनेवाली यह तिथि। सर्व्यक्ष्मेवर्धाः नारमीके नामसे विकास है। हे 📖 ! अब मैं 🚃 🚾 मार्चण्यः मार्चण्यः सप्तमीयत्र वर्णन 🚃 🥫 ।

🖚 तर्व और महस्के जुड़ पहकी सप्तमीको किया 🚃 है। इसके सम्बक् अनुहानसे अभीष्ट फरानी 📖 होती है।

इस दिन वत प्रमासन् सूर्वका 'सर्वक' नामसे पूजन एवं निरसर करना चाहिये। अस्तानको पर्व मित्तसे पूजा विकिये। इस व्याप्तिको अनुसार महसीपे करके प्रस्के मासपे क्रिये। इसे प्रस्के

उपकारपूर्वक वक्षाप्रतिः सूर्यग्रह्मको निमित् भी आदिका दन देनेहे कवे सम्बात् यगमान् मार्गमको लोकको प्रश्न करता है। इस मार्गम्य नामक सामिकी नक्षप्रगण उपस्थन करके ही मूलोकने सम्बाध होते हुए स्था सामिक दृष्ट स्थिति। (अध्यय १४७—१०९)

### अनन्त-सप्तथी 🚃 अन्तवृत्त्वस्थानेका विधान

इस्मानीने करहा— अन्युतः ! भारत्यः पासने हुन्न पक्षणी सहामी तिर्वित्तने विकेन्द्रियः विकासकार मण्यान् आदित्यको प्रयास विकास पुष्प- कृप आदि सामाधिको श्रवतः पूजन शरमा पाहिये । पासन्ता सामा दृष्णारियोशे व्यास वरण पाहिये । इस विधानसे वैद्यो- वरलो, प्रत्यान करते और पिरते-पहनेको स्वितिने प्रयोक समाध आदित्य नामाध सामा उन्नारण करते हुए सामाध श्रद्धा पास्तक हम और समादन्तः पास्तान् सूर्यका पूजन व्यास्तिको । स्वितिको सामा करे, इससे पृष्ठित्यथ होता है । इस स्वासी

शासक जासकी शुक्त सक्षणीकी अल्लान्-उत्तकी करा MM है। इस दिन सहाधकाहन भगवान् सूर्वकी पूज-जूजिरी पूज करे। पार्काणकोशे पार्क म परे, निवशास्त्र होकर रहे।
व्यक्तपको दक्षिण देकर सौन हो राजिमें पोजन करे। प्रतिकर्ष

क्रिक्ट उन्हें निवेदिन करें। अन्यस्-समर्थनके ।

क्रिक्ट व्यक्तपने पाहिसे। ब्राह्मणहोग वेद
क्रिक्ट करें। जिस प्रकार ।

क्रिक्ट करें। अन्यस्त्र ।

क्रिक्ट करें। अन्यस्त्र ।

क्रिक्ट करें। अन्यस्त्र ।

क्रिक्ट करें। अन्यस्त्र ।

इस प्रवार हारास व्याप्त इस प्रतानो नहें। अपने प्राप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त श्राप्त होताल व्याप्त व्याप्त व्याप्त है, यह भगनान् व्याप्त स्वित्य व्याप्त दिव्यक्तेकार्य व्याप्त है, यह भगनान् व्याप्त स्वित्यके यात्र दिव्यक्तेकार्य व्याप्त होता है।

(अञ्चाम ११०-१११)

## सूर्पयूजामे भाव-शुद्धिको आवश्यकता एवं तिकादि।-सहमी-ज्ञत

सहारती बोलि— एवडकाव : चितापूर्वक गुद्ध इरकारे आग जलार्वणहाए के सूर्वभगवान्त्री पूर्व करनेक दुर्वभ कलकी आपि बाती है। शुग-द्रेशदिसे स्वेश इंदर, काला आदिसे असूर्वित कार्य और विसावजित कर्य— वे कार्याप् प्रश्तरकी असुर्वन के हेह तीन प्रकल है। रामदि विवाद दूर्वित इद्यमें विभिन्नियासक सूर्वन्तराक्त्रको विश्वकोका सम्दन भी नहीं होता, फिर उनके नियसकी कार्यन करें ! सहितक विवाद तो भगवान् सूर्वक हारा संस्करकुके नियश

जिस समार चन्द्रपानी करम अन्यकारको दूर करनेने सर्वया स्टब्स्ट नहीं होतो, उसी प्रकार विसादिसे दुवित काणि प्रभावनात पूर्व साम्राम् स्वाप्त कर्म स्वयंत्रा प्राप्त पूर्व स्वयंत्रा प्राप्त पूर्व केर्स साम्राप्त प्राप्त के सम्बद्ध के स्वयंत्रा प्राप्त के सम्बद्ध के स्वयंत्रा क्ष्म क्ष्म के स्वयंत्रा क्ष्म क्

किन्तुने कहा — अपने मताया कि भारतर हमारे लिये पूजनिय हैं, अतः उनकी सम्पूर्ण आराधना-विधि 💷 पुहे

१-विकायुर्वाची क्रांस नार-वार अस्त है। 📰 सुरुवे क्या है, 🛗 वोजय स्कूतको स्थि 🛗 🛗 विवास है।

नतार्थे ( अहान् ) होड़ कुरूमें जन्म, स्वतंत्रमा और दुर्सभ कनकी अभिवृद्धि---ये तीनो जिसके क्षण प्रका होते हैं, उस विवास-असको भी क्षमें भूताये (

महार्थि कोले---मान ससमें कृत्य पहारी सामिके
दिन व्या नक्षणका योग एक्नेकर व्या कि का
जनकार। सुर्यदेवकी सुनन्ध, पूर, पता को उधार अवदि
पूर्वन-सामिक्षिके हारा पूजा करे। शृहस्य पुरुष पुरुषि हारा पानादि-युक्त पूजा कर्षप्रकेत सम्बद्ध करे और क्या (काक्य), तिल, वीरि, मन, सुनर्ण, मन, क्या कर, ओस्प (ओलेका पानी), उजनह, क्या और मुद्दक्षे को पदार्थ,

अस्तरहाँदिके किये सूर्यनसम्पन्न पूजा करके प्रतिमास प्राप्त, गोपुत, जल, पून, दूर्वा, दिव, मान्य, तिल, वय, सूर्योक्तरमोशे क्षण हुउम जल, कमलगृहा और दूपका प्राप्तन - करना चाहिये। स्वाप्ति परिपूर्ण, लक्ष्मीयुक्त तथा समस्त दुन्तीसे कीत होता है और बेह कुलमें जन्म लेकर विशेषित्य, स्वाप्ति प्राप्ति होता है और बेह कुलमें जन्म लेकर विशेषित्य, स्वाप्ति प्रमुख कर समस्त्रमंत्रि सम्पूर्ण करमो प्राप्त करें।

(अध्याच ११२)

# सूर्वमन्दिर-निर्माणका ..... यमराजका अवने दूर्तोको सूर्वभक्तीसे दूर क्लेका आदेश, पुत नवा दूससे अधिवेकका कल

**व्यक्ति । को प्रमुख कि** रामको अथवा परवरते भगवान् शुक्तिः मन्दिरका लिएन मध्यात है, यह प्रतिदिन किये गये नकके फराको प्रका करता है। पगवान् सूर्वकरायणका 🚟 स्थापना कर 🚾 कुलको 🗐 आगे और सी 🚃 पीपृत्येको सूर्यलेक 🗯 करा देता है। सुर्वेदाके मन्दिरक निर्माण-कार्व प्रधान करते ही सारा वन्योंने विकास गया को चोदा समात करते पान है, 🚃 बह हो 🔤 है। मन्दिरमें सूर्वको मूर्तको साल्या कर मकुष कुरुकुरूप हो जारा है और उसे दोन-फरुको ऋषि नहीं होती तथा अपने आगे और पीढ़ेके कुट्रोका उद्धार 🔤 🔤 है। इस विश्वमें प्रकाशीयों अनुदार्शना करनेवाले काने प्रशासको भुक्त अपने मिक्कोसे पहले ही कहा है कि 'की इस अदिशका पर्योक्ति पालन करते हुए तुमलोग संसारने विकरन 📖, कोई भी पान्ने तुमलोगोको आहाका उत्त्वज्ञन नहीं कर सकेता । संस्कृतके भूरतभूत भगवान् सूर्यकी राज्यका कानेकरे स्त्रेपोको तुमलोग कोड देश, क्वेंकि उनके सिन्ने व्यक्ति स्थान महीं है। संसारमें 🕅 सूर्वपक्त है और जिल्हा इदन 📆 लगा हुआ है, ऐसे लोग जो सूर्यको सदा पूजा फिया करते हैं, वर्षे दूरले ही छोड़ देना। बैठते-सेते, करने-उठते और गिरते-पड्ते जे मनुष्य भगवान् सुब्दिकका अल-संबोर्धन करता है, वह भी हमारे रिज़्ने बहुत दूरते ही त्यान्य है। जो

करवान् पारावके रिल्वे निराव-वैशिक्तिक वह करते हैं, उन्हें
नुमरलेक दृष्टि उद्यावन की मत देवाना ! मदि तुमरलेक देवी
करोते को तुमरलेकोंको जात कर व्यावनी ! जो पुन्त-कृप-सुम्बंध और मुन्दर-पुन्दर विकास इस्स व्यावनी ! जो पुन्त-कृप-सुम्बंध और मुन्दर-पुन्दर विकास इस्स विकास दृष्टा विकास है । व्यावनाय है ! सूर्वन्यप्रकाले मन्दिरने वसलेका तथा सपर्या करनेकारे जो लोग है, उनके भी कुलको तीन पीड़ियोको कोड़ देवा ! विकास कृप-व्याद्धका विकास करावा है, उसके कुलमें उनका बुक्त कृष्टा भी सुमरलेकोत द्वारा बुद्ध पुष्टियो देवाने योग्य व्याव है । व्यावनायकोने मेरे विकासी सुन्दर अर्थना की है, उन प्रमुख्योको तथा व्यावनायो पुरस्तो भी तुम सद्य पुरसे ही स्वाव देवा !

महत्वक कर्नराव महत्वे हाथ देशा आदेश दिये जानेपर पी एक बार (पूरासे) यान विकार उनके आदेशका उरस्पृत्ता सामाजित्के पास मार्थे। परंतु उस सूर्यपका सामाजित्के तेजसे वे सभी व्यक्षेत्र सेवक मूर्विकत होकर पूर्विक व्यक्ति है। इस व्यक्ति सेवक प्रतिविद्या परंति पर्वतप्तरी पूर्विक किर पहला है। इस व्यक्ति जो व्यक्ति पर्वतप्तरी परिस्ता निर्माण करता-कराता है, यह समस्ता पर्वेको सम्पन्न कर लेख है, क्वेंकि करवान् सूर्व स्वयं ही सम्पूर्ण वहामय है। रुपन ब्याबा है, ब्या अपनी सभी कामनाओंको प्रश्न कर लेखा है। कृष्णपश्चित अष्टमीके दिन सूर्यभगवानको जो भीने काम करावा है, उसे सभी पाणेंसे सुरुवस्य क्रम ब्याबा है। ब्याबा अथवा शहीके दिन सूर्यनारामणको गाणके जीने जान करानेते सभी ब्याबा हो जाते हैं। संस्थानकालने ब्याबा तो कास-अवास सम्पूर्ण ब्याद्ध हो जाते हैं। सूर्य-ब्याबा सर्व-ब्याबा सम्पूर्ण ब्याद्ध हो जाते हैं। सूर्य-ब्याबा सर्व-ब्याबा होनेका ब्याबावात क्रमुण ब्यादा हो काते है, इस्तिको ब्यादीका ब्याबावात क्रमुण ब्यादा क्रमुण मुखी, बेपर्वरेश और रूपमान् होता | और असमें दिव्यस्थेकमें निकास करता है। मिने दूध सक्का होता है और वेपादिसे पूर्विक देनेकाल है, वैसे ही दूधसे स्वान करानेपर अक्का स्टब्बर निर्माण प्रान क्षेत्र होता है। दूधके स्मानसे पाप्यान् सूर्वकरायण प्रसान होकर सभी आहेको अनुकूल करते है तथा सभी लोगोंको पुष्टि और प्रति प्रदान करते हैं। पी और दूधसे विभिन्निकालक देवेज सुर्वदेशको ||||| करानेपर स्मानी दूधियान पहले से पहला सकका किय हो जाता है। (सामान १९१-१९४)

# कौसरका और गौतकोक संबाद-कवर्षे कवकाव् सूर्वका प्रशास्त्र-निकारक तथा चवकाव् सूर्वक 🔤 यत-पुरत्रविका वर्णन

महायो केले—जनरंग : रेक्लेक्ये खेलके व्या गरेसरपाका सुर्वेत विषयमें एक पूराल संबद अधिक है। एक बार गीतको महायोगे सर्वो अपने परित्रो स्थव अधिकार रमणीय करेसरपाको रेक्कर साम्यावाल अधि पूछा— 'कौसरचं : कार्येने निकास करनेवारे सैक्को रेक्क, अभेक रेक्स्युवार्य हैं, इस अवस्य विद्यालय और उनकी परिवर्ध आदि भी हैं, सिसु उनमें न ऐसी गर्था है, न ऐसी कार्यत हैं, न हिंहा क्य है। भरण किये दुए क्या तथा आधुक्त भी हिंहा हैं। सुरोवित से रहे हैं, जैसे कि आप दोनों को-पूक्केंक से सि हैं। आप दोनोंने सीम-सर देख तथ, दान अभक्त सेमान्यों किया है, विस्तव यह प्रस्त है। अपन दक्का वर्णन करें।

स्रोतक्या औली—मैंगयो । इय रोगेने गोधा सम्बाग् सूर्वती अञ्चल्येक सरक्या है। सुर्गाणा कर्ष्य मलोसे तथा पृतसे उन्हें सान कराया है। उन्होंकी कृतसे हमने सर्ग, निर्मेल आणि, अस्तरता, सैन्यक और सुक्त प्रकाणिया है। इमलोगोंके पास को भी आपूर्णण, क्यार कर आहे दिय पत्तुर्थ है, उन्हें समयान् सूर्वको अर्थण करनेके कर है इस धारण करते हैं। सर्गामित्यों अधिरत्यक्षसे हम क्षेत्रोंने अग्यान् सूर्यको आग्रथांने की थी और उस अस्त्यक्षको प्रकालकथा ही इमलोग सर्गाक सुक्ष चीन क्षेत्र है। को निष्काम-क्यासे धारणेथांति सूर्यको उपस्ता करता है। को निष्काम-क्यासे धारणेथांति सूर्यको उपस्ता करता है। को निष्काम-क्यासे धारणेथांति सूर्यको उपस्ता करता है। को निष्काम सूर्य मुक्ति प्रदान करते हैं। त्रिलोकके सृष्टिकर्का स्वीवक्रणी द्विते ही सम

केले---विको ! असंबद्ध चंगवान् सूर्वको 🚃 🖷 🕩 अचीर चरमकारोको प्राप्त 📖 है. 📗 रहनेवाली है। वस्तु, रंका उजीरसे को पगवान सुर्वको अनुस्ता करता है, प्रसार क्रिकेट चरम्बान् सूर्व क्रिकेट सम्बद्धाः सद्दान **व्यक्ति** है । स्वारेजनक (काल कर्न), कुम्म (एक गर्भ-हम्म), रक्तवन्त्रम, गर्भ, विकासकृत तथा और वो को अपनेत्रों हुई पदार्थ हैं। उन्हें भवन्यम् सूर्वको विकेदित करना काहिये । मालती, मलिएका, मुद्री, अविश्वास, पारक, काबीर, अन्न, बेन्द्रम, सगर, वर्णिक, स्वातक केनक (केनक), कुन्द, अप्रोक, तिरुक, होश, कमरू, अंगरित, परवाह आदिके पूज भगवान् सूर्य-देवको 📖 🛲 है। बिल्क्या, इत्येपा, भूतराज-यत्र, 🚃 📰 भगवान् सूर्यको गिथ है। आतः उन्हें अर्पन करण च्यापेने। कृष्ण शुरूरी, नेतानीके पुष्प और पत्र गया रकारान्यके अर्थन करनेसे भगवान सुर्थ सकः प्रसन सीते हैं। निरम्बल, केल्कनल और अनेक समन्ति एम मगवार सूर्वको स्कृते सहिते, सित् पुरुष, 🚃 और गमाहित पूर्ण सूर्वको नहीं बढ़ाने बाहिके, इन्हें बढ़ानेसे दहरिएक, बय क्वैर रोक्को प्राप्त 🔤 है। 🚃 🐃 न हो 🛚 हो क्य मगळकुळे चक्को चहिने। उत्तम पूर, मुद, चल, कपूर, करू, 🚃 नवा दूसरे सुन्दर पटाधींसे भगवान वनमालीकी सर्वन करने करिये । विविध रेजमी तथा करतसहार निर्मित 🚃 💹 क्ल 🚃 के अपनेको भी प्रिय 🖥 पेसा दका

सूर्वभगवान्को चढ़ाना चाहिये। कल तब्ब नैवेदादि भी जो अपनेको प्रिय हो उन्हें देना शाहिये । सुवर्ण, चौदी, धाँच और भुका आदि जो अपनेको प्रिय हो, उन्हें भी माधीन सुर्वहो

निवेदित करना साहिये । अपनेको भारतरके रूपमें मानकर सारी बड़-क्रिकर्ष अञ्चलकार पगवान् सूर्वको निवेदित करनी खरिये<sup>र</sup>। (सम्बन्ध ११५)

## सूर्य-भक्त सभाजित्वरी

प्रकारणी जोले -- रिक्नो । प्रकार कालमें प्रकार क्यातिके कुरुमें समाजित् नायक एक प्रतायी चोजार्थी राजा हुए थे। वे अस्यन्त प्रधानपात्तरे, तेत्रवर्धे, वर्धानाम्, श्वमानान्, गुजनान् तथा बरुत्तरात्वे तथा ये वना भीरता, पाणीरता एवं बदासे सम्पन्न थे। उनके विकामें प्राच्येता खेल एक गाधा माते हैं — शहरवातु सर्वाधिक्षे इस कृष्टीयर राज्य करते हुए बहारी सूर्व उदित होने और 📰 अवा क्रेने ै

जितनेमें प्रमण करते 🗓 वह सन्दर्ग 📰 अवर्यवत-केन <del>बाहराता है'। राजा सम्बद्धित् सन्पूर्ण सम्बद्ध</del> परिपूर्ण माद्वीपवर्ता वृथ्वीकः वर्वपूर्वक राज्य विशेष थे। वे शुर्वदेशके

परम भक्त थे। अन्य देशकंको देखकर सभी लोगोको का आधार्य होता या। उनके दुल्यमें अभी व्यक्ति वर्मानुवायी है। क्या महाजित्के बार कही है, ये सब अवस्थित सामध्येवाले

और एजाके स्वाप्यविक पक्त थे। भगवान् सूर्वके इति उन्हों नरकत सद्ध भी और करण सामर्थको देखका व केवल क्यमी प्रमानके आक्षर्य होता था, बरिका स्वयं क्रमा भी अपने

देशमंपर आश्रार्यचिकत थे। एक बार उनके मनमें आया कि अगले क्योंमें भी मेरा ऐसा ही देवने केसे क्या रहे। सोमकर उन्हेंने जाक और पर्गके शलको कारोक्स

भारागोको मुलाकर उनकी सम्बोधित श्रीतन्त्रवंश पूजा 📰 उनी आसमपर विकास और उनसे क्या-'धनवर ! यह आपरतेगोको मुहापर कृषा है तो मेरी जिल्हासको प्राप्त करे 🗀

ग्राह्मजोंने बहा--'महराज ! अन अपना संदेश हमस्त्रेगोके सम्पुक प्रस्तुत करें। अवपने 🚃 पहला-चेकन किया है और सभी प्रकारते फोजन 🚃 न संबुह रका है। विद्वान् आक्षणका तो कर्तना ही है कि वह करिंड संदेशको दूर

🚃 त्रिविकम-जनकी विचि

करे, अधर्मसे निवृत्त करे और मारुवानकार उपदेशको

चरविचरित सम्बाधि<sup>र</sup> । आप अपनी इच्छाके अनुसार जो पूकना क्यें पूछें / वर्ष 📖 महरानी विमरुवारीने 🖷 राजासे निवेदन किया कि 'महत्वम । मेरा भी एक संदेह है, आप कारकाओं वे पूजकर निवृत्त करा है। मैं से अपा:पूर्व ही

करते हैं। अनः नेवे प्रार्थना है कि आप प्रथम मेरा ही संदेह निकृत 🚃 🔾 🚃 आयोः संरोहकी निवासिके अनेक - Re

शस्त्र समाजित्वे कहा—'विदे । वस शूला जहती हो, कहले में दुष्पाय ही संदेह पूर्वना (

विवासकारीचे कहा—'बहाएव ! की आहेश राज्यकोके पाला और देशपैको सुना है, जिल्ल आपके समान देखर्व अन्य त्येगोवरं सुरूभ नहीं है, यह किस कर्मका फुरू है ? मैंने बोन-स्व शतन 🔤 🚟 धा, 🚟 फुलमहरूप

पुढे अक्की रावे होनेका सीधाना प्रकार हुआ ? पूर्वजनमें हम 📟 और-स पुरस्कर्ण किया है? इस विवसमें आप पुरिक्षेत्रे पूर्व 🕆

समाजित् कोरो- देव । तुनने से मेरे मनको बात का 🕅 है। शुन्तिकेसी भागे सारव है, यही पुरुवाही अर्थाहिली होती है । ऐसी कोई बात नहीं है जो इन महामुनियोसे कियी हो ( इन कारकओं से में भी मही 🗺 बहुता का। महाराजने महाराजनेसे पूज-मानवात् ! मै पूर्वजनामे कौन या, मैंने कोन-से पुरुष कर्म किये 🖥 🛭 इस सर्वाधनस्टरी मेरी फर्केंद्रे कीन-से उत्तय कर्म सम्पन्न किये थे, जिससे 🚰 ऐसी दुर्छन रुक्ष्मी 📹 र्ख्य है। हमरुनेगोमे परस्पर अतिदाय श्रीदि

🛮 । सभी राजा मेरे अबीन है, 🔛 पास असीय ब्रव्य है और

निकेटकेट ॥

**THREE** 

राज्यों के व्यक्तको कृत्य कर्ने सुन्दरिको ॥ यावसमूर्य जीति 💷 पालमा प्रवितिहाति। नार्वाजने न् कसाचे ऐक्विमान्यविक्वीको ॥ ३-सेन्द्रो अवस्थितविकासाहा वर्णसङ्ख्या कोस्टान्य कोस्टान्य कोस्टान्य कोस्टान्य कार्यस्था

🔳 का पुरु 🖈 ५—

(बहुएर्च ११५।३७)

(माहापार्व ११६।९-१०)

(भारतमर्थे ११६।२५)।

१-आवाने भारकरे भवा यहं तस्मै निवेदवेत्। उत्तर-कारकाम्यान्

का रेंगे।

अस्यन्त बलद्वाली हूँ। मेरा प्रारंत को तीरोग है। मेरी फाडिक सम्बन्ध संस्करमें कोई को नहीं है। सकी मेरे असीम तेजावी सहन करनेमें असमर्थ है। महामुने ! आवलोश शिकास्त्या है। आप मेरी जिज्ञासाको प्रवत्त करें।' राजाके इस ब्रव्धर पूर्णक उन आहारोंने सूर्यदेवके परम कर प्रावस्तुने व्यर्थन को कि अगर हैं। इनके संदेहको निवृत्त कों। वर्षण व्यवस्तिने सम्बन्धि पर्णकारों की सम्बन्धि प्रवासिक सम्बन्धि व्यवस्ति प्रावस्त्री की कानकारी प्रवासक सभी कार्योंकी व्यवस्तारी प्रवासक स्तासक स्तासक

करून अस्टब्स निम्ह---पराभस् चोले---महरूक ! अप पूर्वजन्ते 📆 मिर्वेची, विसक तथा कठोर प्रदर्भा रहा थे, पुरु-रेशनी पेड्रिक थे। सुन्दर नेजेवाली ये भक्तशर्मी इस करूव के आवली हो पार्या थीं । ये ऐसी पतिवता थीं कि उनके हुए **पंदित हो**नेपर भी आपनी सेनामे निरक्तर संख्या 📖 🗷 क्रेन् 🛲 अतिहास सुरातके कारण अवके कन्-कान्य अवके अरुक है। गये और अपने भी अपने पूर्वजोद्धात संवेक्त करने पह कर कारण । कारणार आपने कृति-कार्य प्रारम्भ वित्या, 🎹 देनेन्क्रासे वह भी व्यर्थ हो गया। आय आयन रीन-होन होन्दर दुसरोको स्थित्। योजन-यापन करने रुने । अपनी सामी क्षेत्रनेका कहत प्रकार पेताल 🞹 🔤 आरका साथ नहीं क्षेत्र । इसके कर अन देने कन्यकुरक देशमें चले गये और भाषान् सुर्यक बन्दियों सेना भाने शने । वर्श प्रतिदेश मध्यक पार्थन, रेपन, प्रोक्क (यरू विक्रमात्र) अवदि कार्य बद्धे प्रतिस्थायले काले हो । मण्डिले पुरुषको बाक्य होती थी। ४६५ दोनीने स्थापक चरित्रकीय श्रवण मित्रा । कमा-प्रकल करनेके बाद जावबरी प्रजीने विकास पास जैगुडीको कथाने कहा दिया। आको मनने स्टामी यही विकार रहती थी कि वह मन्दिर कैसे शक्क खेउ बाव

इस प्रकार आप दोनों निकाय-प्रकार प्रपादन् सूर्वकी सेका करते और जो कुछ मिलता, उसीसे निर्वाह करते थे। गोपरि भगवान् सूर्यका साल निव्य किन्तम करते थे, अतः आपके सभी पाप समाप्त हो गये।

दीनी महत्र दिनोतक वर्षा रहे । मणवानुके सेवकनी मोगवाणि

अवक्रम सन सहित्र लगा करा 🚃

🚃 समय अपनी विकास सेनाके 🚃

जनका एक राजा वहाँ आया। उसकी अपार सम्पत्ति और इसकी ओह रान्स्विको देशकर आय सम्बद्धाः चाराना-स्ती करोन्द्री चाचा हुई ३ कुछ ही समदमे आपका देहाला हो गया। स्विकिको बद्धा-परिवर्षक को गयी सेवा तथा पुरण-चाची अवको चाचा राजा हुए और आपको सी रानी ■

तथा अस्य **विका**र को अधीम देश प्रस हुआ है, व्यास भी कारण जुनिये— जब परिदार दोवक नेट तथा बालिक अधावमें शुक्ती

लगता था, तथा साथ अपने परेक्सके दिन्ये रखे तेलसे शर्मे कृति बनते थे स्थि अववाद सनी अपनी साझ प्रस्कृत उससे क्षी व्यापन करवारी थी। श्रवण् । घरि अपन प्राप्त साम स्थापन करवारी से अपना प्राप्त है तो प्रश्नाम सुर्वकी असाध्य कर्मा करें। प्रश्ना पूर्वकी अस्त साथ प्राप्त से असाध्य साम स्थापन सुर्वकी अर्थण करें। उनके विद्या से, स्थापन असर साम स्थापन स्थ

च्याने राज्या द्वेयत इत्यते सेवामे रूपे हों। संसुद्ध होकर धनवान् शूर्व अन्तिष्ट पाल देते हैं। वे पूजा, नैकेद, रस, सुवर्ण व्यास उत्यव कारत नहीं होते, वित्तना ने मंतिभावसे प्रसार कि है। वदि चौताभावपूर्वक सुर्वेकी असराधना और जिविध

उनकोरेरे पुरान करेंगे तो हन्द्रहे भी आधिक 🚾 🛗

स्त्रण स्वाधिक्षे कहा — पगवन् ! इन्हरूक्षे प्राप्ति या अवस्थानी महिसे को अनन्द होता है, 100 अवन्द आपकी इस क्वाबेको सुनकर मुझे प्राप्त हुआ । अञ्चनकर्षी अन्यकारके दिनो अवस्थी वह कानी प्रदीप दीवकोर समान है । सन्धिको सम्बद्धिक सम्बद्धिक प्राप्त काकुरू थे । आपने सम्पति-100 दिनो मूल 1000 आज उपदेश दिना है । इससे वह दिन्हें को गया कि मुझे यह सारी सम्बद्धी पूर्वजनके

भगवान् सूर्वको जलत कर सकत है, किंदु एक ऐधर्यशासी भगवान् कोनेपर का अनुषद नहीं प्राप्त कर

सुनुबन्धके हो चललका 📖 हुई है। प्रक्रियान् दरिद्र भी

सकतः। भगवन् ! आप मुझे सूर्यमणकान्को काराधनके उस मार्गको सूचित करें, जिससे 🛗 🗎 📖 अनुष्क प्रत 🖩 सके।

परावस् बोले—राज्य् । कार्तिक स्वसंने जनिर्देश मगरान् सूर्यका पूजन कर बाहालको केवन करना व्यक्ति और स्वा स्व अवस्था करना स्वाचित्र और स्व स्व अवस्था करना स्वाचित्र अस्पानसं वास्पानसंग्रामें किने गने ज्ञान-अञ्चल समी सुरकारा मिल स्व है। स्वाच्चित्र पूजेंक देशिने स्व करनेवाले की-पुरुवकी, सहस्वने मरकार व्यक्ति हार करनेके मीहालस्थाने किने भने पांचीने मुक्ति हो जाती है। चीन व्यक्ते पूजेंक चिकित अनुसार एकपुल स्व अञ्चलक सूर्यको वाले है।

भोजकोकी अपति 📖 उनके लक्षणोका वर्णन

किसका पुत्र है ? बार्ग ऐसा कीन-स्थ बार्ग किया है, कारण सहाण अदि क्योंको छोड़कर आपका क्या इतन अनुमह दुआ ? बार्ग कृपाकर सम मुद्रो बताये। आदिस्य बोस्टे—महामति कैस्तेय ! तुम्मे प्रमुद्ध सुन्दर हो है। इसके उत्तरमें में यो कहता है, उसे तुम सावप्यत होकर सुनो। अपनी पुत्रके निमन्द ही मैंने अपने बार्ग भेजकांकी उत्पत्ति की है। ये क्यांतः बादान है और मेरी पुत्रके सियो अनुमानमें तत्पर सहते है। ये भोजक मुद्रो अवि

अल्लामे पुरा-पगवन्! यह घोत्रक चौत्र है?

प्राचीन कारम्ये शास्त्रद्वीपके स्वापी राज विकास पुत्रने विमानके संधान एक **व्या**स्त्र्यं-मन्दिर कनकाव और उसमें चलक इसके द्वारा नष्ट हो जाते हैं। इस सर्वपायहर्ग करको अधिकाय-कर कहा काल है।

स्थानिक्ति बद्धा—भगवन् ( ततकः विधान स्थानिक्तिः पर्वति स्थान स्थानिक्तिः पर्वति स्थानिक्तिः पर्वति स्थानिक्तिः स्थानिकतिः स्यानिकतिः स्थानिकतिः स्था

चरा**वस् कोरो--पैदा**निक सिद्धानको भोजन **पास्** ाह्य प्रसंको अध्यक्तो सूचीयने को निर्देश दिखा था, व्या मैं अवको सामा है—

किसी सम्बा अस्ताने अनातान् सूर्यके पूरा—'पास्तान । सीन-बरेट पुन्द, वैकेद, बचा अहिद अस्ताने दिय है और क्षित्र साहाजको भोजन करानेसे आए सेहुट होते हैं ?' इसे अहम कुमाकर बचाने।

प्रशासन् सूर्यने व्यक्त — सरुण ! वार्यात्मे पूज, राज्य व्यक्त, गुन्तुरुवन पूज, व्यक्ति और मेदक आदि नैतेश मुझे कि है। येरे व्यक्ति पीराणिक अस्त्राणको दान सेकर कि उसके वस्त्राता गीत, व्यक्ति और पूजन व्यक्ति नहीं होती। मै पूजन आदिक व्यक्त-अध्यक्ति असिराय प्रस्ता होता है। प्रीतक्ति-पुरावके धावक तथा सेरी पूजा करनेवाल भीजक — ये दोनो मुझे विशेष तिम्म है। इस्तील्ये पीराणिकाल पूजन परे और इतिकास आदिको सुने। (अध्याम ११६)

कियों करनेके रिस्पे सभी शुभ तक्षणोंसे सम्पन्न सोनेकी एक दिक्ष्य सूर्वको प्रतिमा भी बनवायी। तस्य राजाकी वह विशा होने तमी कि परिट्र तथा प्रतिमानी प्रतिश्चा कीन कराये ? उन्हें कोई योग्य क्यकि नहीं दिकावी दिया। अतः यह राजा मेरी अस्पन्ने आया। अपने पत्तको विश्वासत्त देखकर 🌃 उसे अस्पन्न दर्शन दिया और पृक्षा— 'जल्म! तुम क्या विश्वार कर रहे के, तुम क्यों व्यक्तित हो, शीम ही अपनी विश्वाका करण क्याओं। पुण दुःसी मत होओ, मैं तुम्हारे आस्पन्त दुष्कर क्योंको भी सम्पन्न कर दूंगा।' इसपर राजाने प्रसम् होकर कहा— 'प्रयो! मैंने बड़ी 🛗 एवं अद्याने इस होपने अस्पन्न 🎹 विश्वारू मन्दिर बनवाया है तथा एक दिव्य सूर्य-प्रतिमा 🌃 बनवायी है, पुन्ने यह विश्वा सता रही है कि

प्रतिहा-कार्य वैस्ते सम्बन्न हो ?' राजके इन वण्डोंको सुकार मैंने कहा---'राजर् ! मैं अपने केजसे अवनी कृषा करनेके लिये मगसंत्रक **बहाजीकी सृद्धि करता है।** मेरे ऐसा **बहते ही** चन्द्रमाके सम्बन शेतवर्गकारे अब्द कलकारी पूरुव में। शरीरसे सल्ला हो भवे। में सभी कावाय क्या चाँहने हुए थे, सम्बंधे पिटारी और कमलके कुम रिव्ये हर वे तथा साहोक्क बारों नेदों और उपनिषदीका पाठ कर रहे थे। इनमेंसे दो प्राप लस्त्रहरे, दो बश्च:स्थलसे, दो चल्चोंसे तथा दो चाड़ेसे उत्तत्र हुए।' 🔤 महाकाओंने पुढ़े 📖 मानते 🞅 हाथ ओड़कर मुक्तरे क्या—'हे दिखा।दे स्तेकताच । इस अवके पुत्र है। आपने किसारिये हमें करना किया है ? हमें सामा दीजिये। हम सब अतपके कादेवाका पालन करेंगे।' पृक्षेका ऐसा बचन सुरकर मैंने कहा—'तुन सब इस ठवाको का तुने 🚟 🖣 जैसा करें बेसा ही करों / प्लॉसे देख कहनेक कर की सकत महा—'राजन् । 🖥 मेरे पूत्र है, स्वतानीमें केंद्र है तथा प्रार्थक कुम्प है। मेर्द प्रशिक्ष नशानेक लिये ये कर्वना योग्न है। इससे प्रतिश्री करवा स्त्रे । मन्दिरको प्रतिश्रा कराकर मन्दिर इन्हें समर्पित कर दो। ये सदा मेरा पुरूत किया करेंगे, पांत देकर 🏬 इनमें हरण मत करना । 🔣 विकित को कुछ धन-धान्य, गृह, क्षेत्र, व्याप, प्राप, गान, माने अपेर औरराने 🚟 कने, उन सबके त्यापी ने पोजक ही हिंग । जैसे विसके हरूपक अधिकारी उसका पत्र होता है, बैसे ही मेरे वनके ऑफकारी ये भोजक ही है।' मेरी आज क्यत उस राजने बसस हो वैसा ही किया और जोजबोद्यार प्रतिहा करका यह बन्दि। उन्हेंके

भरूण ! इस प्रकार अपनी पूजाने लिया मेंने आपने इस्सिके तेजारे भोजकोंको उत्पन्न किया । वे की अनुकारकार है। मेरी प्रीतिके रूके जो कुछ भी देना हो वह मोजकाने देख चाहिये। परंतु घोजकाने दिया हुआ पन कथी कपम नहीं रूना चाहिये। भोजक हमारे सम्पूर्ण ब्याब्य स्वामी है।

अपित 📖 दिया ।

भेजकमें ये रामाण होने साहिये— यह पहले वेदाण्याना कर किर गृहस्वजीवनमें प्रवेश करे। जिला विकास साल की, दिन-गृतियें प्रश्नकृत्यों र द्वारा मेरा पूजन करे। चेट, अहरण और ..

देवताओंको कची निन्दा न करे। नित्य हमारे सम्पुरा राष्ट्रा-व्या वरे। 
व्यासिन पुरान सुननेसे जैसी प्रशमता मुझे होती विस्ति व्यासिक्ता एक बर राष्ट्रा-ध्यनि श्रवण करनेसे ||

व्यक्षी है। इसलिये घोजकको एजनमें नित्य शङ्क सजाना व्यक्षिये। वे अध्योज्य चढार्च घळ्ळा नहीं करते हैं, इसलिये

मोजक बजरवारे हैं और नित्य हमको भोजन कराते 🗓, इस्तिको भी मोजक कहत्वने हैं। वे 📖 📖 प्यान करते 🔤 है, 🚃 मगण कहें 🔤 है। केवक परम सुद्धिकर

अवस्था प्रतास कर साथ है। क्षेत्रक परंग तुन्ध्यार अवस्था परंग स्था कर सेटी पूजा करता है, उसकी संतास वहीं होती उसे मेरी समझता भी उसे साथ नहीं होती।

महरूपर रहना चाहिये, विस्तृ स्था अवस्य महित्रे । स्थापित स्था शहियो नतस्यतः पर स्थापित स्थापति स्थापति

भीति-सद्धापूर्वक मौग होन्छ मेरा पूक्त करे। होय ॥ करे। स्मार नैनेद्र पक्षण करे। वह नैनेद्र स्मार्थक हुआ क्या, पूक्त क्रकानुकल असेट्र स्मार्थक स्थाप क्रमे गुरु

विश्वीरण (किसर्जनके क्या क्या करतु) क्या अभिका उत्त्यपुर्ण व करे । सदा क्या रहे, एक क्या भोजन करे और स्रोण, अस्मूल-क्यान तथा अङ्गुभ कर्म्बको त्याग दे । अस्म ! इस अकारके लक्ष्मचेवाला भोजक मुझे बहुत

स्थान भोजक भी मुझे बहुत जिम है। म्बास्ट्रस क्रान्स भोती--- राजन् ! इस प्रकार अरुसकी

उपरेक्ष देकर सूर्वजारायम आकारामें काल करने अगे और अस्थ भी यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ।

स्थारकी कोरो--- महापुर्ति परावसुके मुकसे यह कथा सुक्कर कथा सम्रावित् और उसकी रानी विकास बहुत प्रसार कुर्। उन्होंने पृथ्वीयर जहाँ-जहाँ भगवान् सूर्यके मन्दिर थे, व्यास्त्रमें प्राजीन और उपलेक्ट कराया। सब मन्दिरोमें कथा बद्दोके लिये पीराणिकोको नियुक्त व्यास और बहुत-सी

MII है। पोलबन्ध सदा संस्कृत करना चाहिने। तृष्क्री ही

<sup>&</sup>lt;sup>#</sup> दृष्या, अभिगमन, उपरांत, स्वास्थ्यय और नेग---ने प्रीम स्वासनके **Ⅲ ऐ, Ⅲ** प्रीम्य-न्यून, संस्थ-सर्गन, Ⅲ - मूकन, स्वान, Ⅲ Ⅲ सुन्देर **ⅢⅢ** Ⅲ **Ⅲ** ऐ।

दक्षिणा देकर उन्हें संतुष्ट किया। वे **व्या** अन्तमें अन्तमें अन्तमें अन्तमें अंदि क्रक कर करण गति प्राप्त की। भक्तिपूर्वक नित्य सूर्यदेककी पूज-करकान करने रूगे <u>और</u> (अध्याय ११७)

### जाह्मणकी कथा एवं कार्तिक मसमें सूर्य-पन्दिरमें दीपदानका फल

प्राचीन कालमें भारियाती नामको एक सुद्धर नागकर्या नामका एक स्थान पा। पण्यान् सूर्वको भगवताने उसके सी पुत्र हुए। सबसे स्थान जान था। पह्र। पर सभी भारतीने अरकत विपक्षण जान्य था। वह भगवान् सूर्वके मन्दिरने निश्न दीपक अरकता काता स्थान

ा उसके भावजेते उससे वहे उत्तरको पूळा—'भद्ध ! इमलोग देवते वे कि तुम भगवान् सूर्यको न वि कभी पूछा, भूग, स्थित आदि अर्थण करते ही और न कभी ब्रह्मण-चेत्रल करते हो, केवल दिन-रात मन्दिरमें अच्छा दीय करतते रहते हो, इसमें क्या कारण है ? तुम हमें बात्रओं।' अनने कहतोची वा सूनकर यह कोरम— सहागत । इस विकास अक्टोन

एक आकरान सुनै—

कालमें एका इक्ष्ममुक्ते पुरीक्षेत्र पहिले श्रीक्ष थै। उन्होंने साम इक्ष्ममुक्ते पुरीक्षित पहिले श्रीक्ष कर्म स्थित सामाना ने कहाँ निस्स गन्ध-पुन्थार उन्होंकों भित्तिपुर्वक भगनाम् सुर्वकों पूजा करते और दोसक सामाना करते थे। तम मैं भी अनेक सुन स्थार ऐनोस्ते पीकृत सामाने मिन्द्रकों सभीप पद्म सामा और जो कुछ विस्स करता, उसीसे अपना पेट मरता। वहकि निकासी पूजे स्थान और पीकृत सीन-होन जनकर मुझे मोजन दे देते थे। एक दिन मुझमें यह मुसिस्त विचार सामान कि मैं सामा अन्यक्तरमें इस सिम्पन्यक विचार सामान कि मैं सामा अन्यक्तरमें इस सिम्पन्यक पे उन मोजनकेकी निहाकों अनीका करने स्था। जन मैं मोजक सो पने, तम मैं पीरे-पीर मन्दिरमें गया और वहाँ देसा कि दोपक सुन चुका चुका है। तम मैंने अकि जलकार दोपक देसा कि दोपक सुन चुका चुका है। तम मैंने अकि जलकार दोपक

प्रत्यरित 🔤 और 🔤 पृत 🚃 प्रतिपासे आनुसन

स्वारं स्वारं, उसी स्थान ने देवपुत्र मोजक जग भन्ने और मुझे संबर्ग देवक किया देवकर एकड़ किया। मैं मवसीत हो विकासकर उनके करवीकर ■ पड़ा। देववजा उन्होंने मुझे कोड़ दिया, कियु वहाँ पूर्वत हुए राजपुरुवीने मुझे किर बाल अधि में मुझसे पूर्वने क्यों—'ओ दुष्ट! तुम दीवक सम्बर्ग नेकर पन्दिरमें ■ कर रहे ने ? जन्दी बताओ', मैं अस्वारं वस्पीत हो गया। उन राजपुरुवीके भगसे तथा रोगसे अध्यान होनेके करण वन्दिरमें ही मेरे प्राप्त निकल गये। उसी समय सूर्वभगवानके गया मुझे विध्वानमें बैहावस सूर्वकोक ■ स्था अधि विभ एक करवाक वहाँ सुख मोगा और किर उसम कुलमें क्या नेकर उसम सबका भाई बना। बन्युओ | यह बर्जीक सासमें भगवान् सूर्वके मन्दिरमें देवक उस्तानका एक है। बरावि मैंने दुहसुद्धिकों आयुवन बुराविको दृष्टिसे मन्दिरमें दीवक कलाया का सम्बर्ध च्या बुराविको दृष्टिसे मन्दिरमें दीवक कलाया का सम्बर्ध च्या करवाकार इस उसम

श्री पूर्व पूर्व क्यांक ल्यां हुई । इस प्रकार उत्तम फल क्यां का दुआ । दूहबृद्धिक भी मीवार दीयक अलानेका ऐसा कि कल देशलार में अब नित्य माम्बान् सूर्यक पन्दिरमें दीवल स्थापित स्थापन स्थापन श्री स्थापन मासमें स्थापन स्य

स्वती स्व कृतकर व्यक्ती बोले—विन्नो ! दीवक स्वानेक स्व १६३ अपने भारचीको ब्रह्मपा। जो पुरुष सूर्वक स्व है, अस्पेष्य, पन-सम्प्रीत, बृद्धि, उत्तम संजन और क्विस्मरत्वको है। बही और सहमी स्वान स्व प्रमानुर्वक सूर्वमन्दिरमें दीपदान स्व है, स्वास्थ्य स्वान सुर्वके मन्दिरमें पत्तिपूर्वक दीप प्रमालित करना स्वान । इन्योलत दीपको न तो बुहाम्ये और । एसका हरण करे। दीका इस्म करनेवाल पुरुष अन्यपूर्वक होता है। इस

नहीं। (अध्यक्ष ११८)

#### यमदूत और नारकीय जीवोंके संवादके प्रसंत्रमें सूर्व-मन्दिरमें दीपदान करने एवं दीप चुरानेके पुरुष-पायोंका परिणाम

लगानी बोले—विको । 📖 🖛 📰 🚾 🗱 🗱 हुए भूके, आर्त-दु:सी और विस्तृत करते हुए जीवोंसे क्वडूटने करा—पुरूषनो ! अस अधिक जिल्ह्य करनेसे 📰 📰 होगा, स्वयने अञ्चलके उपेश्व 🕳 🔤 । पहले 🚃 🔤 यह 📖 नहीं विका के १० कार्रीक फल आगे भोगना पहेचा। 📰 ऋषेर केंद्रे हो दिनेतक रहनेवास्त्र 🕽, विषय भी नाजवान् हैं, यह कीन 🔤 जानता 🗈 हजारी जन्मेक 🚃 एक 🖿 मनुष्य-जन्म 🚃 🤾 🚃 🔤 मुक्कम भोगोको और दौहते हैं। 🛮 पुत, की, गृह, 📟 अवदिके किये प्रयक्तवील एवटे 🛮 अर्था प्रयमे अवस्था 📟

🚃 मनुष्यमे शुध और अञ्चय क्योंको देखने रहते 🖥 अर्थात भाशीमृत 🖫 म केवल एक 📖 अस्ति 🊃 📟 पुत्र, 🔤 आदिके लिये जो-जो 🔡 🔤 🚃 जल 🛊, उमे 🚃

अमेक दुष्कर्म 📟 🗓 🛘 मृहकर 🚃 📰 📰 📶, वे

शरहको ये जानते रहते हैं। बोहब्दी यह महिन्छ 🖩 🚃 🧮 मरकमें भी कार्क बंगी रहती है। इस बाल परिचानने बाल हारा अल्ड्ड चित्रकले ब्यूब्वेकी खुँड क्टबर्थ-

तत्त्वकी और नहीं होती । विद्वादाश पणकर सुर्वका कम लेनेने भौभ-भा 📰 🛮 ? मन्दिरमें दीन जलानेमें 🔳 अधिक 📰

भहीं महता, परंतु यदि मनुष्यसे हतना भी नहीं हो सकता ती

🚃 रोटन और जिल्ला करकेरे 🚃 रहम है ? र जैसा कर्म 🚃 🚃 📹 चया। इस्रोहन्ये पायकांन्ये कभी भी महि

🚃 🚃 व्यक्ति । 📉 बोई अञ्चानसे पापकर्म हो जाय 📕 सर्वजगन्त्रस्य आराधन को, 📖 सन पर 📰 हो क्यों है।

**लक्ष्मकी ओल्डे**— यसदूतके ऐसे क्वानेंबदे सुनकर क्षम भूकते व्यक्तल, प्याससे सुखे कप्यूक्तले, दृःससे पीवित वे काधीय 🔤 उतारे कहने लगे—'साधी ! इमने ऐसा कीन-🚃 कर्य किया, जिससे 🚟 इस 🚃 नरकमें बास करना पड़ा।' सम्बद्धाने सङ्घ — पूर्वजनको जैवनके उत्पादसे उत्पादित् 🚌 🚟 अपने श्रीयमे धनवान् सुर्वके वन्दिसे दीप 🚃 च । 🔣 📖 🚃 चेर मरको सुन 🚃 दुःस धीरा

इब्बुक्तको कोले — अव्युत ! 🔣 सूर्वके मन्दिरमें दीपदान करनेके पुरूष तथा दीय-हरण करनेके दुव्यविशानीका वर्णन श्रिया । दोपदान 🚟 📕 सर्वत्र ही उत्तम फरू है, परंत् सुर्वनवरककं प्रान्तरमें विद्रोत 📖 🕯 । जगहमें को-जो अंध, कुछ, समित, विकेशनदेव, निन्दा व्यक्ति दिशासी पहते हैं, इन 📟 साम्प्रकोद्धार 🔛 🎟 विमे हर दीवीको सुर्वकारामको मन्दिसे इस्त क्षिया है।

(अध्यव ११९)

# वैक्खनके लक्षण और स्वीतरायणकी महिमा

विष्णुभगवान्ने अञ्चाजीसे पूछा—अञ्चन् । संसार्वे मनुष्य विष, रोग, पह और अनेक प्रकारके उपद्रखेशे पीहित रहते हैं, 📖 किन कमेंका फल 🎚 , कुप्तकर अस्य कोई ऐसा 🚃 बतायें, जिससे 🚃 रेप आदिको बाधा 🗈 हो । **ब्रह्माचीने कहा.—चिन्हों**ने पूर्वजन्ममें ब्रत-इंग्लास

आदिके द्वारा भगवान् सूर्वकरे 🚃 नहीं किया, वे पन्तव 📖

ज्या, ऋ, रोग आदिके धारी होते 🖥 और वो सूर्वनग्रयणकी च्या करते हैं, उन्हें आधि-व्याधियों नहीं सतातीं। पूर्वजनमे मगवान् सूर्वकी आराधनाते इस जनमें आरोग्य, परम बद्धि और ओ-ओ भी मनमें इच्छा करता है, निःसंदेह उसे ···· कर रेजा है : अतथि-क्वाधियोसे पीड़ित नहीं होता है और 🛘 किन एवं दृष्ट प्रहेके बन्धनमें 📗 पैसाता है तथा कुरवा

१-अहे मोरम् बाह्यां प्रान्ते उस्तेव्यदि। इस्त्ये वासं सने प्रीकृत्यानोऽपि करवावृत् ॥ विकार नाम्युवर्वकी ( कृषां मा आपने वर्षेष्ट्र प्रशासकीयकोशिको ॥ Particular and Particular तथा च निकासके 🚃 📹 🖦 हो है 📹 स्थेतीके विद्याल, बहेस्टीकी स वर्तितीले प्रत्यपूर्ण 🔳 पद्धर्मिनीयने पूरता असे में करते 🚃 कार्यक्रमा वर्षण् सद्ध 🛭

(ब्राह्मपर्व ११९ । १० — १३)

भगवान् विश्वाने भूश्य--- व्यान् ! व्याने व्याने भगवान् सूर्वकी आवकत नहीं 🎞 और रोग-व्याधिते दुःवी 🗷 गये हैं, वे 💷 📺 छां भागोंसे कैसे मुक्त हो, कृतकर भगवे । इस भी अंकियूर्वक भगवान् सूर्वकी व्यानक व्यान भागों है।

महास्त्री कोले — नगन्त् यह अस्य भगवान् सूर्ववी आरामना करना चारते हैं तो आप पहले कैनक्स (सूर्ववाध) बने, स्पेतिक विना विधिपूर्वक सीरी दीक्सके उनकी उपसन्त पूरी नहीं हो सकती। जब मनुष्योक पाप औप होने लगते हैं तब भगवान् सूर्व और बाह्यणोने उनकी नैदिको अञ्च-भति। होती है। इस संस्तर-चलने अस्य बाह्यों दूर अधिपयोक दिन्य भगवान् सूर्वको प्रसन्न करना एकमात्र करनावास निम्बान्त्य स्ता

विष्णुभगभावने पूछा—सहस् ! कारकार वर्ष स्थान है और उन्हें क्या करना महिले ? यह अस्य कहारे ।

ब्राह्मकी बोले—वैबस्तत वादे हैं जो घणवान् सूर्वका परम धक्त हो तथा मन, कभी एवं कर्मसे कभी जीवहिता न करें। बाह्मण, देवता और पोस्काको नित्य प्रणाम करें, दूसोके परमा हरण ≡ करें, सभी देवताओं एवं संसारको धरमान् सूर्वका हो स्वस्थ समझे और उनसे अपनेको अधित समहो ।
देवता, मनुष्य, पश्च-पश्ची, विवेदितका, वृक्ष, पायाण, काह,
धूषि, बह, बावास तका दिशा—सर्वत्र मगवान् सूर्यको
व्याह बावो साथ ही स्वयंको भी सूर्यसे धित न समझे । जो
विक्री भी अधीने दुष्ट-पाय नहीं बावा वही वैद्यस्त सुर्वेपस्थक है। जो पुरुष असर्विकरीका होक्स निष्यम-भावसे
व्यावस्थक करवान् सूर्यके निमित कियार प्रधा है, वह
वैद्यस्त वक्ष्यत्व में । जिस्सा न से कोई हातु हो और म कोई
विव हो क्या न उनके धर-पुदि हो, सबको बरावर देवसा हो,
देख पुरुष वैद्यस्त कहलाता है । किस अध्य गतिको वैद्यस्त
पुत्र प्रस्न करके है, वह प्रीमी और बहै-यह त्यस्तियोंके सिमे

हि प्रधान्तिक सारावा करनेसे ही सूर्यवान्त्रस्त

अनुम्बः सम इंता है।

स्वास्त्री पुनः सोरो-मी भी स्वास दक्षिण निरमसे
उत्तर पुन्त हैं और उन्होंने क्या मिरमसे मगनान् दिन सम स्थः स्थलने उत्तर कर्मन क्या महत्य है।

इन्होंने अन्य पृक्षिण पालन क्या प्रमुख संस्था नरते है। इसी
अवस कर, इन्द्र, चन्द्र, परंग, परंग, पानु, स्वास अहिद सम देवता
स्वित्यसे ही सद्दर्भत हुए हैं और उन्होंने आहित अनुसार
अवने-अवने कर्मीन सन्द्र से से हैं। इसिटने भारतम् । अवन

स्वीक्त्यस्त्री स्वास से हैं। इसिटने भारतम् । अवन

व्यास्त्र स्थानक एवं निष्णुधनकान्ते इस संवादको जी व्याक्ष्यक अथन अस्ता है, यह क्लोक्सिक फरवेंको व्या ■ अन्तर्ने सुक्कि विकारने वैठकर सूर्यकोकको जाता है।

(अच्चाय १२०)

१-वर्ताप्रकारियोज्ञां विकास विकास कर्मा स्थाप कर्मा स्थाप कर्मा स्थाप कर्मा स्थाप कर्मा स्थाप कर्मा क

#### • पुरुषं पर्स्त पुरुषं 🔤 सर्वहरीहरूपुः •

# धगवान् सूर्यनारावणके सौम्य समकी कथा, उसकी स्तृति और परिवार तथा देवताओंका वर्णन

राजा शतानीकने कहा-मुने ! मध्यन् सुर्वकी कवा सुनते-सुनते मुझे तृति नहीं होती, 📖 आप पुनः उपर्विक नृत्यों और 📉 💌 को ।

सुलन्तु सुनि बोले—एकर् । कृष्कालमे बह्नाधीने भगवान् सूर्यको जो पवित्र कथा ऋषिकोको सुनत्के थी, उसे पै आपको सुनाता है। का काबा क्योंको नह करनेकरी है---

एक समय पगवान् सुर्वक प्रकट तेजले 🚃 📳 व्हरियोने ब्रह्मकीसे पूछा—'ब्रह्मन् !अस्ताराने 🚃 यह आप्रिके तुल्य 📖 करनेपाला सेवःपुत्र कीन है ?"

स्थाप-प्रमुख जगत् नह हो गया, उस समय सर्वत अन्यवार-ही-अन्धवसर काम था। इस 🚃 सर्वप्रवाद वृद्धि उत्तक हुई, बुद्धिने आहेकार तथा विकृतारम ज्ञानसम्बद्ध प्रकारमध्येकी उरवीत हुई और उनसे एक अध्य उरका हुआ, जिसमें साव लोक और सात समुद्रोसहित पृथ्वी स्थित है। उसी अन्यत्रे 🔚 बड़ा सथा विष्णु और 📖 थी 📖 थे। अञ्चवस्ते 🚾 व्यक्तिल थे। 🚃 📹 परमेश्वरका 🚃 करने लगे । ध्यान करनेसे अन्यकारको इरण करनेकला एक नेव-पुत्र man दुआ। उसे देशका का सची उसकी इस प्रकार **मा**ग सहि बरने लगे-

आविदेशेशीर वैवासमीकामां समीकाः। सुरात्मं देवदेव स्टब्स्ट ॥ आस्टिक्टररिक सर्वसत्त्वानं वेजन्यनं सहस्रम् । वर्वकोरगर्नक्षणम् ॥ **जुनिकिश्वरिक्श**नां ले बहुत स्वे महादेवसर्थ विकासके प्रशासी: । अपुरिनक्ष लेप्स विवशान् करणकाम ॥ लं कालः 🚃 च इतो ऋक प्रश्रुकश्च ।

सरिवः 💳ः 🕻सा 🚾 च । अस्यः प्रणानीय व्यवस्थाः स्थातनः । र्ववासकारे 🔤 विद्यापाः 🚃ः दिस्यः । विकालकारे सर्वतः वर्गनवस्तानं सर्वतेऽदिवित्रोपुरः। रक्षानंत्रस्य तु 🕍 प्रमुखनिकानस्याः ।। मुगरिपूर्वकाल ह - यार्जनसञ्ज्ञाता । प्रदेश स्थितिकां पूर्वलेक्स्यासक्त् । कुमिरिक्षकं सुरेप्यानमं वसूर्य समय से गर्मः ॥ सुर्गियक्षणेन्द्रेष्टं पृष्पविकृतस्तियः । क्षुणे परवासकार्य क्षुष्ट्री तस्त्र है। प्रमः ॥ पञ्चनीजरेकां वहें हर्गकावत एवं मा। अर्थकरम्पीकम्ब विका समूर्यकक्ते । क्षाने क्षाना है कि प्रशास स्वतिवास ।। निकारीकाको व विकासस्याधीतम्। ■ पहुर्व सक्त से नवः ॥ को श्राप्तको हेकार्या स्वेकारको विश्वः। कुरिकामेरी यः च्याना वर्षपरात् ( परमानेति विकास यहां तक है गयः । अधिकेक्लीकर्म हा आयात्रपात्रमञ्जूषा । अन्तरिक्षितिकार्य देशे व्यक्ति सद्य मे सम् ॥ क्यो कर: कारकदारकाय करे वत: पारकियाहवास । क्यो क्यो विकास क्यो क्यो रोगविनतस्माय ।। नको अनः सर्वकरम्बान नन्ते नमः सर्वकरप्रदाय ( नमो <del>नमो प्रान्तियो सदैव नमो नमः पश्चवतात्पकाव<sup>र</sup> ॥</del> (ब्ब्ब्यूपर्य १२३ । ११—२४) इस 🚃 इन्हरी सुविसे इसन 📕 🖩 तैजस-रूप

१-स्क्रिक 📰 हर 🚃 🖫

है स्थान देवदेव । अब ही सम्बन्ध स्थान अभिनेति स्था हात को स्थान ईतर बात अवस्थित है। देवक, पानवी, स्वयूस, पूरि, विकार, सिद्ध, 📖 तथा तिर्वक् वेरियोकि 📖 🖟 📟 🗱 🗱 🕏 । आर 📆 🚾 विष्णु, तिव्य, 🖼 📖 👊 , व्यक्त 📖 📖 🛊 एवं जगत्के सहा, संहर्क, पारम्मकर्ता और सबके 📖 🖹 📖 हो है। 🖛 हो सम्बर, नदी, फोट, विसूत, 📖 इस्परि 📖 कुछ है। बराय, 📖 व्यक्त एवं अव्यक्त भी आप ही है। ईसाओं को विका, विकास को दिना बचा दिनकों परसर सक्त प्रत्यदेश हैं। 🛮 परमान्यन ! आपके पानि, पार, असि, सिर, मुख सर्वत—चतुर्वेक् 📖 है । अवस्थे देवीनकान 🎹 🛗 सब और न्याय है । मू., मूक, आ, म्या, बक, तथ तथ सस्य

करणायकारी देव मधुर वाणीमें बोरं — 'देवगण ! आप वया बाहते हैं ?' तब हमने बाहा — 'प्रभी ! आपके इस प्रचल्द तह कपकी देवलेंगे कोई भी समर्थ नहीं है। अबः संस्तरके करणायके रिप्पे आप सौध्य स्था पारण को ।' देवताओंकी ऐसी प्रार्थना सुनकर उन्होंने 'एकमहा' बाहकर सर्वाची सुका देनेवारम उत्तम रूप भारण कर किया।

सुक्तु युनिने केश--राजर्! संक्रकोगना सहण करनेवाले स्था अर्थर तथा केशकी अधिकार राजनेवाले पुरुष इनका ही जान करने हैं। इनके स्थानने वर्ष-का पात गर हो जाने हैं। आधिकार केदकर और प्रकृत हिमानों पुरुष कर भी भगवान सूर्वकी स्थान सेरावली कालों तुल्य से कल्टाकर नहीं हैं। ये सम्बद्ध में सोर्थ, मसूर्वकी भी प्रमृत्य और परियोकों भी परित्र करनेवाले हैं। ये इनकी आराधना करने हैं, हैं सभी क्योंसे मुख होकर सूर्थ-स्थान आदिके हारा किस प्रकार सुरुष हैं। सभी क्योंसे प्रकार हैं। सभी क्योंसे मुख होकर सूर्थ-स्थान आदिके हारा किस प्रकार सुरुष हैं। सभी क्योंसे स्थान हैं। सभी क्यांसे स्थान हैं।

राजा पातानीकाने पूछा — पुने । देवता क्षण व्यास्ति का किस प्रकार चंगवान् सूर्यका सुन्दर रूप व्यास्ति का अन्य कार्ये ।

सुषण्य सुनि बोलं — एकन् । एक समय स्थिपोने महालेकने जाकर महावर्णने प्रार्थक को कि 'सहान् ! अदितक पुन सूर्यगरायक आकारामें अदि प्रकार तेतक तथ है । जिस प्रकार अदीका विभाग सूर्य का है, कि ही असिल जगत् विभागकों बाह हो रहा है, हम सब को सात पीड़ित हैं और आवका आसन कमल-पुन्य को सूर्य रहा है, तीनों लोकोंने कोई सून्ती नहीं है, असः आव ऐसा उपन करें, जिससे यह तेज शहल हो बाह्य

**ब्रह्मजीने कहा**—मुनेशर्थ ! सभी देवशालोके साथ

आप और हा स्विनाययको शरणमें वाये, उसोमें समको करूपान है। बह्याजीको आहा प्रकर महा, दिव्या तथा संकर समी देवता और बहिनना समय शरणमें गये और उनोंने प्रक्रियाकपूर्वक नक होकर अनेक प्रकारसे उनकी स्तृति हा देवताओंको स्तृतिसे सूर्वनायक प्रसन्न हो गये।

सर्वजन्ताम् केले-आवलेन 📰 मॉगिये। उस

समय देवताओंने यहे वर मांगा कि 'त्रभो ! आवंध तेजवंध प्राचन मार्थ देती आव मार्थ करें।' इन्होंने प्राचन मार्थ कर तो। तब विश्वकानि उनके तिक्या उत्तर मार्थ कम किया। इसी नेजसे भगवान् विश्वका यह और अन्य देवताओंके सुल, इसी, गदा, वज्र, बाग, बनुष, दुर्च आदि देवियोंके आयुवन तक दिविका (पालकी), परम् आदि अववृध करावर विश्वकानि इन्हे देवताओंको दिवा।

भगवान् शूर्वका 📰 सीम्य 📳 जानेसे तथा क्राम-क्राम राजपुर्व प्रद 📰 🔛 📖 प्रसप्त 🟢 और उन्होंने पुनः राजपुर्व कर स्थानित को ।

अनेक वर उर्ध प्रदान किये। अनुनार देवताओंने प्रस्थर विचार किया कि देखाना का पाकर अस्यना अधिकारी हो गये है। वे अवक्ष्य भाग्यान सूर्यको हरण करनेका प्रयक्त करेंगे। व्यक्तिये का सम्बन्धे रह करनेके हिन्ये तथा इनकी रक्षाके हिन्ये हमें चहित्ये कि इम इनके चारी और चाई ही जाये, जिससे ये देख सूर्यको देखा न सके। ऐसा विचारकर स्कन्द दम्पनायकका व्यक्तिया भाग्यान सूर्यके व्यक्ति कोर हो गये। भग्यान सूर्यने दखनायककारे शुभाशुभ धार्मीको कियानेका निर्देश दिया। दखका निर्मय करने हथा विचारककार निर्मय करने हथा।

विचाराय, 🎟 🗷 वर्षा, पञ्चदशक्तम, अन्त्रिके दिन्ने बेह्र कारता 💷 सन्त्री प्रकारके बार देनेवाले 🛚 आपको सद्ध बार-बार नगरकार है ।

सूर्वभगवान्त्वी दाहिनी और स्वित हुए। इसी प्रधान व्याप्त स्वर्थने दो अधिनीकृत्वर स्वित हुए। वे अधिकानं अध्य होनेके कारण अधिनीकृत्वर कहत्वनं । व्याप्त व्याप्त व्याप्त अधि वीच इत्ये और दो इतपाल हुए। व्याप्त व्याप्त विश्व वीच इत्ये अध्याप्त कहे गये हैं। सोकान्त्व विश्व दे इतपाल व्याप्त और अधिक क्यों प्रधान इतपार रहते वै । दुसरे इतपार व्याप्त और प्रधी ये दो इतपाल रहते हैं। इनमेंसे व्याप्त व्याप्त क्या वै और पक्षी ये दो इतपाल रहते हैं। इनमेंसे व्याप्त विश्व हैं । हैं और पक्षी नक्यकान हैं। ये दोने दक्षिण दिक्कों क्या है।

कुकर और विज्ञानक क्रमरमें तथा दिन्दी और रेवन्त पूर्व दिस्तमें स्थित है। दिन्दी स्टब्स्य है और रेवन्त भगवान् सूर्यके पुत्र हैं। के सब देवता देखके ब्यास्त सियं सूर्यनारायणके ब्याधित क्रीस है और सुन्दर स्थवारे, विस्तर, सन्दरूप और कामरूप है ब्याधित क्रमरूप अस्त्रम् स्थाधित क्रिये हैं। चारों वेद, मी ब्याधित क्रमरूप नवकन् सूर्यके चारों और स्थित है। (श्राध्याय १२१----१२४)

#### 44年7年の日本

## श्रीसूर्वेनारायलके आयुध--म्प्रेमका लक्षण और माहत्य

समन्तु मुन्दिने कहा—स्वन् ! उद्या वगतन् सुनीत मुक्त आयुष क्योमका लक्षण कहता 🖞 उसे अस्य सुनै। भगवान् सूर्यका आनुध ब्लीन सन्दिवनय 🗒 वह 🔤 भूतिसे युक्त है तथा सुवर्णना कम दुआ है। 🔤 🚃 परणका पात्रा, 🚃 पूंचर, विल्लुक बार, जानकारा विद्युत्त सच्च इत्रका आयुध 🚃 है, 📟 क्रका 🊃 सुर्वका आयुष 📰 है। उस 🔤 प्याद का, व्यक्त आदित्व, तम विश्वदेव हैं, आर्थ वसूनम तक दो आंक्रमें-कुमार—ये समी अपनी-अपनी कलाओंक साथ मियत है। हर, दार्व, प्यत्यक, वृष्णकारि, सान्तु, कर्क्स, रेकन, 🛲 📖 ईश्वर, महिर्मुचन्द्र और भूमन (भूम) ये महरह रह है। ह्या भर, सोम, अनिल, अनल, अय, प्रतुष और प्रयास—ये आड वस् है। भारत्य और दस-ने दो अधिनीक्षार है। क्रयु, दश, पंसु, सस्य, कारु, काम, धृति, शृङ, प्रीकृतक संया वामन-- पै इस विश्वेदेव हैं । इसी प्रवश्न शब्दा, तुनित, प्रव्य, आदि देवता है। इनमें आदित्य और परस् कड़कके कु है। विश्वेदेव, कस् और साध्य—ये धर्मक पृत्र हैं । धर्मकर 📟 पुत्र जसु (सोम) 🖁 और बहाजीका पुत्र धर्म है ध

सायण्या, सारोजिय, उत्तम, तामस, रेक्ट और पश्चा—ये कः मनु तो व्यतीत हो गये हैं, वर्तमानमें साम वैवस्थत मनु है। अर्कसावर्णि, महासावर्णि, व्यवसावर्णि, धर्मसावर्णि, दशसावर्णि, रीज्य और चीन्य---ये सब मनु आगे होंगे। इन चीदहों मन्यन्तरोंने इन्होंके साम इस प्रकार

है—विकायक, विद्यारि, विष्यु, प्रथा, ज़िली सका यक्रेजन -- ने छः इन्द्र कासीत हो गये हैं। ओजसी नामक इन्द्र वर्तमानमं है। बांस, अनुत, बिदिव, सुरवन्तिक, कीर्ति, उक्कापन तक दिवस्पति—ये 📖 📺 आगे होंगे। 📖 अदि, पर्या, धरहाज, गीनम, 🎟 और जमटीम—ये मार्की है। 1000, अन्यार, शहर, संबंध, विवाह, निवाह और परिचार -- वे व्यास वास्त्र है। (प्राचेकार्वे सात-सात मस्दर्भकेश समूर 🖲 । 🖩 इनकास मध्य आकार्याने पुष्पक्-पुष्पक् मार्गमे चलते हैं। सुर्वाहिका ताथ शृष्टि, वैयुत आंत्रिका राज पालक और अर्राण-मन्धनसे उत्पन्न आंत्रिका साथ क्क्यल है। वे सेव अधियाँ हैं। अधियंकि पुत्र-पीत उनवास 🖥 🔤 सक्त् भी उनचास ही है। संवत्तर, परिवत्तर, इहत्तर (इग्रायतार), अनवत्सा और वत्सर—ये वांच संवत्सर है— वे ब्लाइक्रेके पुत्र हैं । लीम्प, महिंच्यू और अग्निच्यात्त — पे तीन वितर हैं। सूर्व, सोम, चौम, 🚃, गुरु, सूक्त, शनि, राह और केन्—ने नव शह है। ये सदा जगतका भाष-अभाव सृषित अपने हैं। उनमें सूर्य और चन्द्र मण्डलम्ह, चौमादि पाँच पुत्र हैं, सोम क्रमेंके, सुख चन्द्रके, गुरु और शुक्र प्रजायति गुकुते, अनि स्टिक, यह सिहिकाके और केतु ऋगजीके पन्न है। पृथ्वीको भूलोक कहते हैं। भूलोकके खामी ऑह,

 साम सभी पुरानोंने विशेष्टेकोची साम कही दस, कहीं कहा, कहीं केट कारको नहीं है। विशेष कनकरीके सिथे 'करपाय' विशेषक्ष 'देशसङ्क' देखना शास्त्रिके। पुनलॉकके वायु और सालंबके स्था सूर्य है। संस्ट्रनन पुनलॉकके रहते हैं और स्द्र, अधि-वेकुम्बर, अहंदिल, कसुनन तथा देवगण स्वलॉकके निवास करते हैं। जीवा महल्लेक हैं, जिसमें प्रजापतियोंसहित करणकारी रहते हैं। प्रविशे जनलोकके भूमिटान करनेवाले तथा छंडे त्योलोकके कृप्, सनस्कुमार तथा वैदान आदि हानि रहते हैं। सत्तने सामलोकके वे पुरुष रहते हैं, जो जन्म-मरणसे मुक्ति चा आहे हैं। इतिहास-पुरागके वक्ता तथा क्षेता में उस स्वेकको प्रश्न करते हैं। इसे महालोक भी कहा गया है, इसमें न

देव, दानव, राज्यसं, यसं, राज्यसं, अग, पुल और विद्याधार—ये आठ देवयोतियां है। इस प्रकार इस क्योममें सातों स्त्रोक स्थित है। यसत् ब्याः, अर्थतः व्याः और ब्याः देवयोतियां तथा मृतं और अपूर्व सब देवस्य इसी क्योममें विश्वत है। इसलिये जी धांति और ब्राह्म क्योमका पूजन ब्याः है, उसे ब्या देवसाओंके पूजनका पाल ब्याः है जाता है ज्या वह सूर्वलोकको जाता है। अतः अवने कल्याको लिये सदा क्योमका पूजने करना पाहिये।

महीपते ! काकावा, क, दिक्, क्लेम, अन्तर्भं, गक, अम्बर, पुकर, गगन, मेर, विपूछ, किल, अक्लेक्ट, कुण, तमस, रेदली—क्येमके इस्ते गम कहे गये हैं। रूक्क, और, दिव, मृत, ममु, इस्तू तथा सुरुष्ट् (अल्ड्याल्य)—के साण समुद्र हैं। हिमवान, डेमक्ट, निपप, नैंस, केत, मृत्याल्य—के संदर्भ हैं। इनके प्रथम महाराजत मानक पर्वन हैं। माहेन्द्री, आजेपी, याच्या, नैईहती, वारुक्त, व्यवन्त, लेक्स रुक्क एवंग हैं। माहेन्द्री, आजेपी, याच्या, नैईहती, वारुक्त, व्यवन्त, लेक्स रुक्कालेक पर्वन हैं। अनुन्तर मानकाव, इम्प्रेम के आहे, वायु, आकारा आदि धृत कहें गये हैं। इसमें के महान् अहंकार, अहंकारसे के प्रकृति, प्रवृत्तिसे के पूर्ण और इस पुरुष्ते परे ईसर है, जिससे यह सम्बूर्ण कम्मू अवन्त है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे वह जनने करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे कर जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे कर जनन् करंकाल है। धमवान् भासार ही ईसर है, उनसे कर जनने करंकाल है।

तपोलोक और सत्वलोक—ये सात लोक कहे गये हैं। **भूमिक नीचे जो सात** लोक है, वे इस प्रकार है— तल, सुतल, पाताल, बलातल, असल, विवल और रसातल। काञ्चन मेरु वर्णत भूमच्हलके मध्यमे फेला हुआ चल रमणीय शृहींसे कुल तथा सिद्ध-गन्थवींसे सुसेवित है। इसकी कैंबई चौरासी 📖 बोबन है। यह सोनह हजार योजन मुमिमें नीचे प्रविष्ट है : इस प्रकार 🚃 विश्लाकर एक त्यास योजन नेरुपर्वतका पान है। **बार्क्स स्टेमनस कारका प्रथम शुद्ध सुवर्णका** है, नामक 🔛 📉 प्रयूपण अधिका है। विज चतुर्व सङ्घ गर्वदंका है। यहंच नामक प्रथम सौसनस सुङ्गपर भगवान् मुर्फात उटम होता है, सुपंदियांत्र ही मब लोग देखते है, असः उपका नाम उदयायक है। उत्तरायम होनेपर सीमनस क्रुप्तं और 🔤 हंनेया ज्येतिक स्क्रुप्तं भगवान् सूर्य 📟 होते हैं । 🎮 और मुख्य-संबद्धानवीचे वध्यके दो छुट्टीचे सुर्वेक्स उदय होना है। इस पर्वतके ईज्ञानकोणमें ईज्ञ और करत् तथा जन्मके लाकात् तहम्, यह एवं नक्षत्र विधत है। इसे कोध काले हैं। कोक्ये सुर्वपनवान् साथे विवास करते हैं, अनः यह क्योस सर्वदेवमय और सर्वतंत्रकामय है। राज्य ( पूर्वकोत्रमें स्थित हानुषा हात है, तूसरे हानुपर हेरिका (वर्षन), नोस्तरंपर कुनेट, बीधे शुक्रपर सोम है। मध्यमे बहा, किन्यू और 🔤 🕬 है। पूर्वोत्तर शहरूपर पितृगण और न्वेकपुर्वित गरेपति भाषदेव निवास करते हैं। पूर्विपय श्राह्मर आक्रिक्य निवास करते है। अनकर महातेवाली हेलियुव यम चनते हैं। कैईएयकोणके शुक्रमें प्रहाथलकाली विकास किया करते हैं। उसके बाद बरुप स्थित है, देखेके नमस्कार्य वायच्य सहाया आवस्याकर नरवाहन कृतेर निकास काले हैं, मध्यमें बहुए, नीचे अनना, उपेन्द्र और शंकर अवस्थित हैं। इस्रोको मेरु, व्योग और पर्म मी कहा जाता है। क कोवलरूप पेर केदमय जमसे प्रसिद्ध है । वारी शृह करी वेटलरूप है। (अध्याप १२५-१२६)

# पगकन् सूर्यकी आराधना, कुन्नवेगसे मुक्ति स्वर्यसायका

भगवान् सूर्यको स्थापका स्थापक

कथा पृक्षी है। इसका मैं विस्तारने कर्नन करता है, इसके

सुनीसे सभी 📖 दूर हो जाते हैं। कस्दर्भके द्वारा सुर्व-

सुलन्तु हुनिने कहा—राजन् ! आपने बहुत तकन

मानवान्तर मानवय सुनकर साम्बने अवने किया जीकृत्य-चन्नके बात जाकर विजयपूर्वक प्रार्थन की—'धनकर् ! वि अन्यन्त पान्या रोगसे प्रसा हूँ । वैद्योतका सहस अवनिवर्णका सेवन करनेपर भी मुझे स्वर्णि नहीं बात है । वि आज्ञा दें कि मैं बनमें जाकर तपस्ताहरण अपने इस सेवमें सुदकारा पास करें।' पूर्वक बात सुनकर क्रिके श्रीकृत्याने आज्ञा दे दी और सम्ब अपने विकास अनुसार सिन्धके उनस्में बन्द्रभागा विकास करने स्वर्णे । के उपवास करते हुए सूर्वकी अवस्थानको तस्तर विच्या है । इन्होंने श्रीक करों। तम किया कि ननका अधिकवाद विकास व्यवस्थान के प्रतिदिन इस गूंच स्नोत्रसे दिन्य, बात विकास करने स्वर्णे—

प्रभागति परमान्यन् ! आप तीनी विकास नेव-सान्य है, सम्पूर्ण प्राणियोके आदि है, जलः आदित्य नामसे विकास है। आप हा। पण्डलमें महान् पुरुष-रूपमें देवीच्यमान हो हो है। आप ही अधिलय-सारूप विकास और पितानक सहत है। सह महेन्द्र, सरुण, आसाडा, पृथ्वी, जल, शांषु, चन्द्र, मेच, कुमैर,

विभावत्, काके रूपमें इस मच्छलमें देदीप्यमान पुरुषके 쨰 अप 🖥 अधिक है। यह आपका साक्षत् महादेवपम कुछ अञ्चले समान है। आप बाल एवं उत्पत्तिसक्य है। आपके बन्दरके रोजरी सन्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त हो रही है। आप मुख्यको वृष्टिसे सभी मान्यियेंको परिपृष्ट करते हैं। किपायस्ते । 🚃 🖫 अन्यक्त्य परेन्यक्रमानीय एवं पत्-पर्शनिक्र वीनिमें ल्लि अन्तियोको रक्षा करते है । परित्र कुछ आदि रोगोसे प्रस्त तमा अन्य और मांपरिको भी आप ही रोगमुक्त करते हैं। वेक्स अन्य अल्बन्सा १६०६ है। संसार-चक-प्रवासिय निमार निर्मन, अल्पाय व्यक्तियोको भी सर्वेदा अरूप रक्षा करते 🖁 । अस्य प्रत्यक्ष दिस्तायो देते 🖁 । आस्य आधनी स्त्रीस्त्रायात्रके ही सम्बद्ध उद्धार कर देते हैं। आहे और ऐगसे पीमित मैं जुर्तिकोर्के द्वार अनुवर्ध जुनि करनेने असमर्थ है। आप सी ब्बार, निष्णु और पोल अब्दिसे सदा सूत होते रहते हैं। महेन्द्र, विन्द्र, गन्दर्व, अप्सर, गृहक आदि स्तुनियोंके हारा अन्तरको सदा अन्ययना करते रहते हैं। जब ऋक यज् और क्वमकेद औरों आपके मकालमें ही स्थित है से दूसरी कौन-सी चरित्र अन्य स्तुति अवचेक गुणोक्त पार पा सकती है ? अवप केनेवाससे सम्पन्न आप हिल्ल अविन्त, अक्तेम्ब, व्यक्तिक और मिकाल है । जगाएको ! इस स्लेजमें को कुछ भी मैंने कहा 🖟 इसके हारा आध मेरी भारत तथा दु:समय परिवेशत (कुछ रीमधने बाद)को जल है। और 🔤 🚃 दूर करेंग 🛭 सूर्वभाषकान्ते भन्ना — सम्भवतीपुत्र ! 📗 तुप्तारी

<sup>\*</sup> प्रार्थित हि भूगानावरित्य हो। विकार । विशेषकाश्चीका सामा । विभागित । विशेषकाश्चीका समा । विभागित । विभा

स्तुतिसे **व्याप हैं,** करन । मुझसे के तुम **व्याप** से कर कही । साम्बन्दे कहा — भगवन् ! अनके क्रावेशे की हा सो, यही वर **व्याप** हैं।

सूर्यमगवान्ते कहा— ऐसा 🖬 होगा ! वै वृपसे 🊃 संबुह है, सुबत ! डिक्रीय वर माँगो ।

स्त्राच्यने कहा — मगनन् ! मेरे प्राणित्ये खन्नेकस्य वह मल---कुछ आपकी कृत्यसे दूर हो ज्याय, गोपदे ! मेरा प्राणित सर्वमा सुद्ध निर्माल हो ज्याय ।

भगवान् सूर्यने कहा — ऐसा ही होगा।

भगवान् सूर्वके ऐसा कहते ही सारकके सरीवसे कुछ चेन वैसे ही पूर हो गया वैधे सर्वके स्थीरसे केंग्रुल । वह दिवर कपसम्पन्न ही भया । साम्य भगवान् सूर्वको सारावकः [[]] सम्पुल कहे हो गये ।

सूर्यक्रियमे व्यक्ता — सम्य | प्रत्यत क्षेत्रत में और भी वर् देता हूं। अजन्मे मेच यह स्थान तुम्बर्ध नामले व्यक्ति तुम्बर्ध जामले लोकाने तुम्बर्धी अश्चय कीर्ति होगी। को व्यक्ति तुम्बर्ध जामले मेच स्थान बनायेगा, उसे प्रमानन लोक जान होगा। इस बन्द्रभागा नदीके तटपर मेरी स्थापना करो। मैं तुझे सालवे एक्षेन देता रहूँगा। इतना करूबार सूर्यभगवान् प्रत्यक्ष दर्शन देवर अन्तर्यान हो गये।

शंस साम्बक्त सोप्रको तो व्यक्ति विकाशक है। नप्रशंभे पहला है, अध्या सात दिनोमें एक भी हवीस यह यह और हचन करता है तो राज्यको नप्रका करनेवास्त्र राज्य, धनको सामना करनेवास्त्र धन जात कर तेता है और रोगसे पीमित व्यक्ति वैसे ही रोगमुक्त से जाता है, जैसे स्वव्य कूश-रोगसे मृक्त हो सर्थ। सुचनुष्ट्रिन कोले—एकन् ! तपस्यके समय रोगसे टुक्त शास्त्र सूर्यकी सुदि अनेक सहस्तनामसे की थी। उसे टुक्ती देखकर लागों पानवान् सूर्यने साम्यसे कडा— 'समय !महस्त्रक्रमसे पेरी सुदित करनेकी आवश्यकता नहीं है। वै अपने अविजय योगनीय, पवित्र और इसीस सुभ नामोंको बताना हूँ। प्रयानपूर्वक उन्हें काण करे, उनके पाठ करनेसे सहस्त्रक्रमके पाठकर करु जात होगा। मेरे इसीस नाम इस

(१) विकर्षन (विपतियोको काटने मा नष्ट करनेकले), (२) विवरणम् (प्रवरस-स्प), (३) मार्तपर (फिल्मेन अव्यमें सहुत मा माम विजया), (४) धास्तर, (६) माम (६) लोकस्वरहरूक, (७) श्रीधान, (३) विकर्षपथ, (१) स्वैधर, (१०) लोकसाधी, (११) विकर्षपथ, (१२) वर्सा, (१३) हर्ता, (१४) विकर्षपथ, (१२) वर्सा, (१३) हर्ता, (१४) व्यक्तिकता (सम्बद्धानो इस करनेकले), (१६) व्यव, (१६) स्वयन, (१७) सुनि (प्रवित्रहरून), (१८) स्वयन्त्रहरून, (१९) गुम्बिस्टर्स (किस्में ही जिनके स्वयन्त्रकप हैं),(२०) स्वस्त्र और (११) सर्वदेवनमञ्जून। (१

क्षेत्र के इस्तेत जान नुझे आहितान निम है। यह क्षित्र के। यह सावकर क्षित्र मेरीम क्षित्र के। यह सावकर क्षित्र है एवं तीनों लोकोंने विकासन है। महत्त्रकरों | इन क्षानेसे उदय और असा दोनों संस्थाओंक समय प्रमत होकर को मेरी सुनि करता है, वह सभी पानेसे भूक हो जाता है। मानसिक, काविक और उद्योगिक को भी दुष्कृत है, वे सभी एक बार मेरे सम्मुख इसका जान करनेसे विनाह से जाते है। पड़ी मेरे किये जपने

प्रश्नास्तर्भे तो देव सन्दर्शस त्रीतन्त्र। या है स्वीतः वर्णः संस्कृतसंत्रः स्वानीहरः । स्वृत्यो तो सदा देवितंत्रीयमृत्रावाद्योगः । मोनुतिद्धान्त्रवर्षस्यतेषः समुद्धाः ॥ सुवितः ॥ परितेषां ॥ देव समीतिः ॥॥ ते सम्बन्धाः ॥॥ स्वान्तरस्य । स्वानितं तो परे १४१-१ शेक्षद्वारं व वेतित्रवृत् । सन्दर्भकावत्वोच्यो स्वानित्रस्य । ॥॥ व्यक्तः ॥॥ सोदेवित्रस्यातः पतिः । आति पतिः व विद्यातः ॥॥ स्वान्तरित्रः

\* वैकर्तने प्राप्ताः व्यक्तिः व्यक्तिः । लोकास्त्राहः शोकतानी विश्ववेकतः वर्ताः इति इतिस्ताः। तनस्यावसीय गामीतानसो स्थापः सर्वोद्यनसम्बद्धः। deleteraphy: 1

(ब्राह्मपर्व ११७ । १० — २६)

(अक्रमें (२८।५-७)

योग्य तथा हवन एवं संख्योपासना है। बरिजमान, अर्थ्यमान, गूपमान इत्यादि भी वही है। अन्नप्रशान, कान, नमस्त्रार, प्रदक्षिणामें वह महामान प्रतिष्ठित लेकर सभी प्राचेका हरण करनेवारम और सुध करनेवारम है। बार स्वास्त्र जनस्वति भगवान् भारत्य कृष्णपुत्र साम्बको उपदेश देकर वहीं अनार्धान के गर्व। साम्ब भी ह्या सावराजसे सामान्या भाष्यास्को स्पृष्टि कर बीरोग, जीधान् और उस भयंकर शारीरिक वेक्से सर्वाचा मुक्त को गर्थ। (आध्याय १२७-१२८)

# साम्बद्धे सूर्य-प्रतिपाकी |

सुयम् भूति स्रोते—राजन्। इस प्रकार 📖 सुर्पनाधावणसे कर प्राप्त 🕶 बलावा प्रसम्ब 🙉 🕮 वर-अक्षयं मानते हुए अन्य तर्पात्मवेक साथ 📟 स्वितं चन्द्रचारा। नदीचे सान करनेके किये गये। वहाँ 🗎 स्नानकर सद्धाके साथ अपने इदयमे वन्यत्तकार भगवान् सुर्यको भावना कर मनमे यह सोचने समे कि 'सूर्व-कार्यनाको 🔤 प्रतिमा हो और उसे फिस प्रकार कहाँ स्थापन करों 🖰 इस प्रकार विचार कर ही रहे ये कि उन्होंने देखा --- बन्द्र करन नदीके ऊपरसे एक अरवन्त देवीप्यमान प्रतिमा बहती हुई बन्ती अत एडी है। प्रतिमा देखकर कान्यक यह निश्चम हो गया कि अपन्यान् सुर्वको वो मूर्ति है। जैसी स्वर्ण अद्या दी थी; 📖 यह सूर्य-प्रतिमा है, इसमें किसी प्रकारक संदेह नहीं : यह सोचकर नदीसे उस 🔤 📨 🥫 पूर्विको निकासकार अनीने मित्रवन (मूल्यान) में 🌉 स्थानकर तपरिवर्षोके साथ विधिपूर्वक उसकी स्वापना की। एक दिन सामाने सूर्य-प्रतिमान्ये प्रणामका पूछा — 'सम्ब ! अवस्थि सह प्रतिमा किसने बनायी 🖲 इसकी आकृति बड़ी सुन्दर है 🖒 आप कृपाकर बताये ।

विकास कोरबी—साम्ब ! पूर्वकारको विध सप 🚥 नेबोक्य चा। उससे व्यक्त होस्त संबी देवताओंने प्रार्थना की कि 'आप अपना रूप रामी प्राणियोंके सहन करनेके योग्य 🔤 नहीं से मधी लोग वस जायेंगे हैं मैंने महातपस्वी विश्वकर्मको अन्देश दिया कि मेरे नेजको कम कर मेरा निर्माण कने । मेरा अवदेश प्राप्त कर उन्हेंने उत्तकद्वीपमें चलनदे प्रमानत मेर केमबंद सराद दिया। उसी विश्वकानि कल्पवृक्षके काहरी या येरी सुरूभाव्य प्रतिया 📖 है। तृष्ट्राय उद्धार करनेके निन्ने नेर्छ अवत्रके अनुसार विश्वकर्मीन 🖩 सिद्धसंबित विमानकार इसे निर्मनका बन्द्रभाग नदीवें प्रवर्ततन कर दिया है : काम ! बह स्थान कहा शुध है, स्पन्त है : वहाँ सदा मेरा मॉनिश्य रहेल । यनः यमुख्याल इस चन्द्रभागाकं तहपर मेरा प्राच्या प्रत्य करेगे । पश्चाहमें काररांप्रवर्ण (काल्योप) और अनन्तर यहाँ प्रतिदेन मेरा एडीन 🚃 कोरी । पूर्वाहरी बह्या, क्ष्मकाचे कियु और 🗯 🚟 सदा पूजा करेंगे। कारकारो । इस प्रकार भगवान सुर्वक ऐसा कहनेपर साम्ब अन्यन्त प्रसप्त हुए और चगवान् सूर्व 🗏 अन्तर्धात हो गये ( (अध्याय १३५)

# 

#### प्रतिमाओंके ज्ञानका निकमण

राजा समानीकने पूछा— पूने ! स्वयंते पणकन् सूर्वकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा किस प्रकार की ? किसके कथनानुसक हैं। भगवान् आदिस्को समाहका निर्माण कहना ।

सूपम् मुनि बोले—चन्द्रपामा नदीसे प्रतिमा क्रम करनेके ह्या सम्बन्ने देवर्षि ह्याला स्मरण किया। समज करने ही वे वहाँ दपस्थित हो गये। सम्बन्ने कियानम् उनका पूजन-सरकार आदि करके उनसे पूजा-- महाग्रज! धरावान्के सन्दिरको जो बनवाता है तथा प्रतिमानके जो प्रतिहा करता है, उन दोनोका क्या फरन है?

नारद्वीने कहा-नरक्षद्रंह ! जे राज्यंव स्थानमें

सुर्व-मन्दिरका निर्माण कराता है, यह व्यक्ति सूर्यकोकने जाता है, इसमें संदेश नहीं।

साम्बने पूजा—सूर्य-पटिएका निर्माण किस प्रस्था तथा किस म्थानक कराना व्यक्तिये ? आप इसे वक्तमें।

अध्य ओरहे — वहाँ जलग्रीम निरन्तर विश्वमान रहे, वहाँ पन्दिर व्यक्ति आर्थान् सर्वप्रयम एक विद्याल जिल्ला कराना काहिये। व्यक्ति धर्मकी अभिकृदिके सिने वहाँ देवमन्दिरका निर्माण व्यक्तिये। असके उद्यान एवं पुण्यबदिका भी ललग्राने चाहिये। व्यक्ति अस्ति वर्णोके सिने केसी भूमि वास्तुरक्ष्मकी दृष्टिसे सूर्यनारायका मन्दिर पूर्णीकपुता व्याक्षा चाहिये, पूर्वियो और प्रार रक्तनेक स्वान न वि के प्रतिमाधिपुता काराये। परंतु मुख्य पूर्वीवियुता ही है। स्वान्त्ये इस क्वारके करवन करे कि मुख्य पर्विवयुता ही है। स्वान्त्ये इस क्वारके करवन करे कि मुख्य पर्विदास दिवायको ओर वज्ञातात्व्य हो। संगवान् सूर्विय और मातृकाका पर्निर उत्तराधिपुता, स्वावया प्रतिम विश्वया पर्वित विश्वया कार्ये प्रार्थिय स्वावया पर्वित विश्वया तथा वार्ये प्रार्थिय स्वावया करवा वार्यिय। सूर्वेनारायको दिश्वयानायके सिव्यत्व स्वावया करवे वार्यिय। सूर्वेनारायको दिश्वयानायके सिव्यत्व स्वावया करवे वार्यिय। स्वाव्यत्व स्वावया करवे वार्यिय। स्वाव्यत्व द्वार क्वार्य कार्ये वार्यिय। स्वाव्यत्व द्वार्य कार्ये का

उक्तर स्थान हो सहिपर उनकी स्थापना करे । दाहिनी एवं कार्यी 📖 अर्थ ब्रह्म क्रानेके किये हो मण्डल बनवाये। उदयके समय दक्षिण मण्डलमें और अस्तके समय जम मण्डलमें मगवानुको अर्ध्व दे। चत्रप्रकार पीठके करर कानगृहमें 📰 कल्प्स्रोंसे मनवार सर्वर्वर प्रतिपायत्रे सर्विप 📖 कराये। स्क्रमके 📖 अङ्क 📰 पहुल्ह कहा बजाने चाहिये। तीसरे मन्द्रतमे सूर्वनाराकारके कृता करे । सूर्वनाराकाके सामने दिव्योक्त स्थानक (अधी हुई) प्रतिमा स्थापित करनी चाहिये। सुर्वकरायको सन्त्रक समीववे हो सर्वदेवनय व्योवको रचना करनी फाँडने। मध्यक्रके सक्रम वहाँ सूर्यको अर्घ्य देना च्छिने अच्छ मण्डपूर्वे अर्च्य देनेके लिये चन्द्र नामक तृतीय मण्डलकार्याके प्रथम जान कराका बादमें श्रामं है । भगवान् सुर्वेक 🔤 📕 📰 स्थानकर पुरानकर चाड करनेके लिये 🚃 📹 च्यापि । 🚃 देवताओंके स्थापनक विधास 🕏 । नुक्रक 🐙 वर्षलेषह--- ये हो प्रास्तद सुर्वज्ञाययगर्के मविश्वम हिन्द है।

(अध्याय १३०)

# सात अकारकी अतिया **क्षे का**ष्ट्र-अवि<del>याके</del>

निर्माणोपयोगी बुक्तके लक्षण

नारहणी बीको—सम्ब । अन्य वि निरुश्तरेक सम्ब मीतमा-निर्माणका विधान व्यवस्था है। विशेष व्यवस्था अधिकृतिको रित्मे पर्नवान् सूर्वको व्यवस्था काल प्रकारका बनायो वा समाती है। सोना, वर्षि, ताल, प्रकार, मृतिका, बनाइ व्यवस्थित । इनमें बरहकी प्रतिकाके निर्माणका विधान इसं प्रकार है-—

महरूसरणपूर्वक काह-अरुण कारका एक काल अरुर महरूसरणपूर्वक काह-अरुण कारका एक काल अरुर प्रतिमोध्योगी कृशका कान करना महिने। दूधवारे वृक्ष, कानजोर वृक्ष, चौराहे, देवस्थान, करूबीक, उपकान, चैरन जालक आदिमें रूगे हुए वृक्ष तथा पुरुष वृक्ष—किरुको किसी मिना पुत्रकारे कारिको पुत्रके रूपमें सामा है अवका बारु वृक्ष, जिसमें बहुत कोटर हो, अनेक पक्षी रहते हो, तका, कानु, अरिम, विजली तथा हाथी आदिसे दूबित वृक्ष, एक-दो साकावारे वृक्ष, जिनका अपनाग सूक्ष गया हो ऐसे वृक्ष प्रतिमाके योग्य नहीं होते। महश्चा, देवदाक, वृक्षका चन्दर, विरुक्त, विकास, विकास, श्रीवर्ण (श्रीप्रमध्य), पंतर (करहरू), सररू, अर्जुन और रत्तकन्त्र— ये वृक्ष प्रतिमाने विकास है। याचे विकास रिज्ये विकासिक प्रकास महाप्रेका विकास है।

अधिकान वृक्षके पास कावर वृक्षकी पूजा करनी शाहिये।
प्राचन स्थान, एकावर, केल-अनुसर्ह्म, पूर्व और उत्तरकों
ओर रिकर, लोगोंको कहा न देनेशाला, विस्तृत सुन्दर
जनकों तथा प्रतेसे समृद्ध, सीधा, जनहम्य तथा रावधानाला
वृधा सुन्न होता है। सार्व गिरे हुए मा हामीसे गिरामे गये, शुक्क
होतार या अधिकों जरने हुए और प्राचियोंसे रहित वृक्षिकः
जनवानावाली उपयोग वृद्ध करना चाहिये। मयुमकसीके
करनेवारक वृश्व भी सक्त नहीं है। किल्य पन-समन्दित, पुष्पित
तथा प्रस्तित वृश्वके कर्नाकः
आठ मासोने उत्तम पुहुर्त
देककर उपयास रहकर अधिवासन-कर्म करना चाहिये।
वृद्धके कीचे करों और स्वेपकर गन्म, पुष्पास्था, धूप आईरसे
व्यवक्रिये वृद्धकों पूजा करे। अनन्तर गायक्रीमन्त्रसे अभिमन्त्रित

अरुक्षे प्रोक्षण करे। दो उञ्चल वस धारण का पृथकी गन्ध-मारपसे पूजा जिल्हा तथा जिल्हा समने कुदासनपर बैठका देकदासकी समिषासे जिल्हा अनुसार्थ है, अवस्थार करे। के प्रमासने सारसाहाय किये भेहान्सराह्य सारावसाहाय ।

सांनिकामरित् कुरु क्षेत्र कुछे

**पूर्वाको वच्छान्याविकेलके अ**थः ॥

(मार्क्स १६१ (३६)

दे वृक्षके नित्व स्थान है। वेहाक्तरस्य [ संपरायस्य [ देव ] इस वृक्षके अस्य संनिध्य करें। सूर्यकृत-सम्बद्ध इसमें स्थाद हो। अस्यको नमस्याद है।

इस बाबा पृथानी पूजा कर जाना सानवात देते हैं। करें — 'कृशता ! संसारके मानवालके हिन्दे काव स्वाहतालें बारें । देश ! आप वहाँ केदन और सापसे रहित होका दिवस रहेंगे । समस्यद हुए बाबा प्रशासकर कुन्वेके हात बाबा आपकी पूजा करेगा ।'

वृक्षके मूर्क्य भूप-मास्य आदिने कुळाका पूजन कर इसका था। पूर्वकी और **व्यक्ति** सावधानीने स्थापित विते। अभवस्य नोदक, भीर आदि क्या हुका तथा सूर्यन्यत पूज. पूप, ■ विश्वास वृक्षको तथा देवता, पितर, शक्षस, पिशाव, बण, मुरगण, जिनस्क आदिको पूजा करके राजिमें वृक्षका स्पर्श कर वह कहे—'देवदेव ! काप पूजामें देवेकि द्वारा परिवर्तिपत. । वृद्धगण ! आपको ममस्कर है। यह विश्विवत् ■ गयो पूजा काण करण करें। ओ-यो प्राणी यहाँ निवास करते हैं, उनको भी यह नमस्कर हैं'।'

प्रेम कर देवल देवर विशेषां के ब्या स्वित्वावन-पूर्वक वृक्षक सेदन करें। पूर्व-ईशन और उत्तरकों ओर पृक्ष कर करके निरं तो अच्छा है। प्रावाओंके इन दिशाओंने निरंग्स ही पृक्षक केदन करें अन्यान वहीं। पृक्षक नैतिस्त, असेद और दक्षिण दिशाओंने पिरना शुध नहीं है एवं व्यापन विश्वके क्या का पृक्षकों महत्वने वार्च औरकों शक्काओंके करनी कर पृक्षकों महत्वने । पृक्षके प्रावाद के नहीं से उत्तर है। असेद विश्वके दसका परिचान कर दे। इन केसूद हम, थी, असेद विश्वके दसका परिचान कर दे। इन

(अध्याप १३१)

# सूर्व-प्रतिमाकी निर्माण-विधि

नारक्षीं कहा — बदुवाद्त ! विशेष देवेली
प्रतिमाका लगण विशेषकपमें अवित्यकों अंतिमाका लगण कहता हूँ। एक हाथ, दो हाण, तीन हाण अथवा साने सीन हाथ लगी या देवालमके हारके प्रयानके अनुसार पणकार सूर्यकी प्रतिमाका निर्माण कराना आहिये। एक दानकी अंतिमा सीम्य होती है, दो हामकी यन-मान्य देवे है, तीन हामकी प्रतिमासे सभी कार्य सिद्ध होते हैं, साने तीन व्यापनी प्रतिमासे सभी कार्य सिद्ध होते हैं, साने तीन व्यापनी प्रतिमासे हैं। प्रतिमाके अप्रभाग, स्थापना और पूलामाने सीम्य होनेपर उसको गान्थमी प्रतिमा कारते हैं। यह धन-यान्य प्रदान करती है। देवालम्यके द्वारका जितना विस्तार हो, उसके अहते अंत्रके समान प्रतिमा कन्यन्ये चाहिये।

वनवान् सूर्वकी प्रतिमा विद्याल नेत्र, कामलके समान पुत्र, रक्तवर्गके विज्यके समान सुद्धर ओठ, स्ववरित मुमुद्रके असंकृत परस्क, पश्चि-कृत्वल, कटक, अंगद, हार आदि अनंकारोस मुझ्लेचित अस्त्रकृ चारण क्रिके हुए, हाथोमें अपुरिस्तत कमल और सुक्तवित मास्त्र रिस्के हुए अतिशय सुद्धर मध्ये हुण लक्षकोसे समन्त्रित बनवानी चाहिये।

इस प्रकारकी जीतमा कालेवार्स्स, अस्योग्य-प्रकारक तथा ज्यान्य प्रदान कालेवार्स्स होती है। इति या कम अञ्चलने प्रकार अनिष्टकारक होती है। उत्तः प्रतिमा सोची और सुकोल करवारी चाहिये।

संसामीकी पूर्वि हाक्यें कम्ब्बस्टु बारण किये कमरकपरका ष्यक्रिये। कार्तिककार्ध व्यास्त्र कुम्हर-स्वरूप, हायमें इक्ति लियं, अतिक्रम सुन्दर व्यास्त्र व्यक्तिये। इक्की व्यास्त्र मधुर-मण्डित होनी चत्रीये।

इन्द्रभी प्रविम्म कर दाँतीसे मुक्त सकेद दाँतीकारे ऐतका गक्यर उद्युक्त क्या हायमे क्या धारण किये हुए कावानी वाहिये। इस प्रकार देवीकी प्रविम्म मुख स्थानीसे युक्त और सुन्दर बनवानी बाहिये।

पताका कार्याका इद्यानकारणयं जात तारक, परस्तक, पुरस्तका, पताका कार्यामे विपूर्णन कर किर आधिकारमाके रिश्वे प्रकारका निर्माण करवामा जातिये। श्राहकी मूर्ति औ, कियार, वरू, स्थान आयु और धन जदान करती है, मिहीकी जातना प्रकारक करवाय करती है। प्रविचयी जरिता करवाय और सुविध प्रदान करती है, सुवर्षकी जातना पुष्टि, करवार जून क्षीति, त्याकी मूर्ति प्रकार्वीं तथा प्रकारकी प्रतिमा निपुत्व पूर्वि राज्य कराती है। सोहे, श्रीके एवं सीविध प्रतिमा निपुत्व पूर्वि राज्य

है, इसलिये इस धातुओंको स्था नहीं कन्यानीतार्वको सामाने पुद्धा---नारहणी । धताबन् सूर्व स्वयंत्रका को गये है, यह उनका सर्वदेकप्रयक्त केला है ? उसे कृत्यका बतालको ।

नारकानि सहा--शान्त ! कुले वही अच्छी बार पूर्व

पणवान् विकास विकास करारुमें मुहस्पति, करुमें व्याप कर, दक्षिमें नवान और महोका निवास है : वर्ग और अधर्म, जिद्दामें सर्वशासमध्ये महादेखें सरकारी निवस हैं। कर्णींने दिशाई और विदिशाएँ, तारुदेशमें कर्म इन्द्र निवस है। इसी प्रकार पूर्णकामें कारही आदिस्य, रोमकृत्येमें विकास है। इसी प्रकार पूर्णकामें कारही आदिस्य,

है। अन मैं यह सन 🖿 एश हूँ। इसे ध्यानरे सुने—

प्रकान सूर्व सर्वदेवनय हैं, उनके नेत्रोमें बुध और सीम,

नवर्ष, रिक्रण, दानक और राजसगण विराजमान है। भूकाओं जोट्यां, काहोंचे कुछ, पीठके बध्यमे मेर, दोनो सामेके स्थानी पहुल और नामियण्डलमें धर्मदानक निवास है। सामारका पूर्णा आदि, किसूने सृष्टि, जानुओंचे

भीव-वेषुम्बर, उत्तरकेरे पर्वत, नकेंद्र मध्य सातो पाताल, बरलेके सीच IIII और समूहतकेत भूमव्यत तथा दत्ताकरेंगे

कारबंधि रह क्रिक्स है। इस प्रकार भगवान् सूर्य सर्वदेवस्थ रूप सच्चे प्रकारवार्थं अवस्था है। मेर्न बाबुसे स्थित क्या है,

के से परावर जगत् इतमे परित्यात है, क्योंक बायु भी भगवान सुर्वित प्रतिक अर्थान हो तथात रहता है। ऐसे य

भागवान् सूनक प्राथक अञ्चल हा त्यात रहता है। एस य भागवान् सूर्व सम्पूर्ण प्राणियोगर अनुग्रह करनेके तिथे गिरनार

🚃 को 🗱

(अध्यम १६२-१६६)

# सूर्य-प्रतिक्वका युक्तं और 🕬 वनानेका विधान

नारक्षी बोले—साम । मगलन् सूर्यको स्वास्त्रको तथा प्रतिपदा, द्वितीमा, चतुर्थी, प्रवासी, दस्सी, व्यवेदको तथा पूर्णिमा—ये तिथियाँ प्रक्रास मानी गयो है। चन्द्रमा, बुध, गुक्त और सुक्त—इन महोके उदित एवं अनुकूल होनेका चनकान् सूर्यको प्रतिपक्षी हाता करती वाहिये। सूर्यको स्वास्त्रको तिर्वेती अधिनी, ऐतिकी, एका, पुनर्यम्, पुन्य, जीते परणी—ये हाता प्रकास है। प्रतिहाके किये पर्वपूर्णि पूर्वी, राख, केश आदिसे संहत एवं सुद्ध होनी चाहिये। उसमें बाल्, कंकड़ एवं क्षेत्रके न हो। दस हाथ लंबा-चौड़ा हाता चनकाना चाहिये। उसमें चसो ओर कृत, उसान, उपवन अहिंद होने चाहिये। उस सम्बद्धाने चल हाता, उपवन अहिंद होने चाहिये। उस सम्बद्धाने चल हाता

माना कर् माना वहाँ विद्वापे । भलीभाँत भव्यपको गोवर मान्सि उपरिमा को, पूर्व दिशामें चतुरक, दक्षिण दिशामें अर्थकड़, प्रतिम दिशामें वर्तुलक्ता और उत्तर दिशामें माना आकारकले सात कृष्णिका निर्माण करे । वट, पीपल, गूलर, केल, परमान, श्रमी साता चन्द्रमके द्वारा पाँच-पाँच हाथके साव सम्बन्ध । सूक्त साता पुरमसस्य, कुका आदिके सात प्रत्येक

मण्डपके मध्यमे अलंकृत वेदीके उत्पर कुश निष्ठाकर पृष्पेसे आन्धादित करे या स्थान प्रतिमान्त्रे रखे। मण्डपके स्थानि दिशाओंने स्थान पीठ, रक्त, कृष्ण, अञ्चनके स्थान नील, खेत, कृष्ण, हमेंत और निश्चर्यकी आठ पत्तकाएँ आठ दिक्यस्थिती जसप्रताके लिये लगाये। सपेद्र और लग्न वृर्णसे वेदीके कार कारलंकी अकृति बनावे। 'बंद्धा बेदि:-' (यजुः १९।१७) इस मन्त्रमे वेदीका स्पर्ध बरेश 'बोने बोनेकि' (यजुः ११।१४) - इस मन्त्रसे उसरर पूर्वाच और उसका कुरतेको मिक्सो। वहाँ उतम विकादन और दे विकास

शासकारि, सूर्वकर योजक अच्छा अन्य प्राक्रमोके साथ

मण्डलके ईजानकोणमें एक दाथ रूप-चौदा और कैंप

भक्तपीत स्थापित कर देख-अतिनाको प्रास्तदाने साथे 🐙

प्रविकालो उस पीठपर स्वापित करे । सार्गमे 'भई क्रावेडिय:-'

एक इच्या एवं विविध घश्य पदार्थीको मण्डपमें रखे। एक उनम बेत छद वहाँ स्थापित यह विविध दीरमालाने प्रधालको अस्मृत को :

(अध्याप १३४)

#### साम्बेपासकाके इसंगये सूर्वकी अधिवेक-विधि

.-17

नारक्षती चोले—सम्ब । अन मैं परावत् सूर्वके पक्षत् तित्र सन्त्रेते प्रतिवासः अधिकेत करे— कपनको विधि मतास है। केरपार्टी, पवित्र आकारीन्द्र, "देवनेद्व । बहुत, विकर, द्वित आदि देवत

देशकेष्ठ । सहस्र, विक्यु, दिवा आदि देवगाण आकाश-लाको परिपूर्ण अस्तारा आवका अधिकेक करें । दिवसको । परिप्रमण् अस्त्राम नेकालको परिपूर्ण द्वितीय कालको आदिका अधिकेक करें । सुकेला ! विद्याश्य अस्त्रामीक अस्त्रे सिपूर्ण सुकेल कालको छात्र आवका अधिकेक करें । देवलेष्ठ ! इत्य अस्त्रि कोकासस्मान समुद्रके कालके परिपूर्ण कर्नुर्थ काल्यासे अस्त्रिक अधिकेक करें । जानाना कालको परागाने सुनान्यत अस्त्रिक वाह्य काल्याले आवका अधिकेक करें । सम्बद्ध एवं सुक्त्रीकारकार्यात सुनेत आदि पर्यक्ताण दक्षिण-परिपूर्ण स्वाप्त कालको अस्त्रिक आदिका अधिकेक करें । अस्त्राक्षकार्य स्वाप्तिमान कालको आवका अधिकेक करें । अस्त्र अस्त्राके परिपूर्ण संत्रम करके द्वारा सावका अधिकेक करें । अस्त्र अस्त्रके मञ्जूकते समीनात अद्यम कालको बसुन्य अस्त्रिक अधिकेक करें । हे देशदेव । आवको भ्रमान्यत है । ।

इसी अध्या एक तासके पात्रमें प्रशासन बनाकर कार करने । बैदिक पर्योगे गोमून, गोमय, दूध, दही, कुलोदक रेकर तसके पात्रम बचन पहारक्य बनाकर सूर्यनारायकको सान कहरे । धनाके गन्धपुक्त बक्को कार्य कराये, अनकार सुर्वोदक-कार्य कराये तथा एक बच्च एवं अलंकारसे अलंकृत कर इस प्रकार आवाहन करे—

अगरि मानुशिका मन्त्रीकी ध्याँन होतां रहे तक व्याँत-ध्याँतिक व्याध्य वयतं रहें। अनुसार सायुद्ध, राष्ट्रा, राष्ट्रा, व्याध्य, सरकारी, वाद्यमारा, सिन्यु, पुकार आदि वीधाँ, सरी, सरोबर, व्यादीव व्याध्य सार्थ्य प्राध्याम संग्रेष्ठ कार्य्यक्षेत्र कार्यः व्याध्य अगरि अगर पोध्यक सोनेक कार्य्यक्षेत्र कार्यः व्याध्य प्राध्येत्र प्राध्याम संग्रेष्ठ कार्यक्षेत्र कार्

१-लेक्स-साधीपविज्ञान मार्थिक्युरिक्यटकः । कोवन्युक्युक्तेः। पक्तकामितिहरू भारतस्य रिकापने । नेकारेना क्रिकेन स्थर कालेल पुर्वेश क्यारोम सुरेतन : विद्यालयाँ विद्यालय सारका अधिकान् लोकानाः श्रुपेतनाः । सारकेदकपूर्वेन परिपृत्तिन पर्यागुक्तान्त्रव । प्रतानेश्वविद्यान् विमक्देमकुळचा श्रीचीवहण्ड भाषसः । नैक्किएकपूर्णेन सर्वतीर्थाम्बुपूर्णन क्योत्सर्वकतः। सर्वेशविकस् वसवर्शां पश्चिम् क्लकेन्याकेर वै । अ**ल्पानस**्थेन रेवरेव

क्रांतिम सुवेतन्त्र स् द्वित्रकारस्तेतः युव कृतिकारस्तेतः युव कर्युक्तरस्तेतः युव वर्षात्त्वं करस्तेतः युव स्रोत करस्तेतः स्व

ष्ट्रीय करातेल तु॥ इच्छाः सन्त्र खेळ्याः ॥ त्रेषदेश सम्बद्धाः ते॥ प्रवेदि भगवन् भाने स्तेकस्तुत्वकारकः। बहुष्यार्गं गृहायः स्वयक्तियः क्वेड्स् वे ॥ 'भगवन्! संकानुष्क्षकारक क्वते । अवय अस्ते, इस यहभागको प्रकृप करें, भगवान् सुर्वदेवः! अस्त्रको नकारकः है।'

सदनकार सुक्रणेपालके ब्राह्म स्वृतिकको अर्थ प्रदान ब्राह्म पहले मिट्टीके कलासरे, ब्राह्म क्षय-कारामां वित्र श्वान-कलासे और अक्तमें सुक्रणेक कारामां मन्त्रीद्वरा आंग्रिक करे। सम्पूर्ण तीमीदक और सर्वीक्षियों युक्त स्वृत्यों सुर्विद्यके मराकार ब्राह्म कराये और इसके जलमें कान ब्राह्म अनसार कुछ और धूम देखा कल, दूध, पून, काद और इस्टरसारे कान कराये।

इस प्रकारसे स्परिकको साम कानिकाल पुरुष आँग्रहोत. ज्योतिहोस, वाजपेत, राजसूच और अक्ष्मेय-वजके परमको  करता है। वो सानके समय स्विरंशका शिक्षपूर्वक दर्शन मनता है, यह भी पूर्वोक फल प्राप्त करता है। ऐसे स्थानमें लान करान स्थान वहाँ सानके सामा कोई लाइन न सा सके सि सामा नल, दारी, दूकको कुला, कीआ आदि निवित्त भीत सामा न कर सके।

■ प्रकारके कार्याविकं सम्बद्धके लिये जिस प्रकारके ■ और ■ सम्बद्धक होते 🗓 व्यक्त स्कृत्य स्नो—

म्बाद्यां विकासम् अर्थात् सूमिक्य अञ्चयास्य न हो। वेकांट-क्रक्कोचर काल, सुन्दर, कुरुवेन और आर्यावर्त देशमें रूपम हो। गुरुधक, निर्वेश्वर, तस्त्रवेशा और सूर्यसम्बन्धे स्थान हो। देसे केन्न साह्यमध्ये स्थान और जीतहा स्थान स्थान (३००)

# धनवान् सूर्वकी 🌃 अधिवासन और

#### अभिक्राका ब्राह्म तथा पाल

नारक्वी केले—सम्ब ! अन 🖣 🗷 कहता है। पाँचत्र भूमिको लीपकर चाँच रंगोने बतुरस सुन्दर मन्द्रसंभी रचना भरे । पतान्य, जान, तोरण, क्या, पृथ्यमाना आदिसे इसे अलंकत कर मण्डलमें कुछ किवाने और सुबंदिवाकी मूर्ति 🚃 को । भगवान् सूर्वका जावाहार कर रुद्दे अर्थ्य है, पशुरके तथा बका, व्यक्तेपकेट आदिने पूजन करे और अध्यक्त अर्थन करे। जिल्हा रूपार रेपार्क्सिक परिवास अर्पन किया जाता है, वैसे ही प्रतिकर्प शायन नासने दर्शन अध्यक्षभूते स्वनाकः सूर्वनारायकको सर्वार्यन करण चाहिये । इत्त्वय यह परिजक है । त्यीन अध्यक्षके समर्पणके समय बाह्यजीको योजन करावे । भगवान्त्री प्रतिभानी सुगन्धित 👫 📨 🖿 पुण्याता पहाचे क्या 📺 आदि दिसाये। 'नवः सम्मक्तनः' (यनः १६।४१) 📰 मन्त्रसे भगवानुकी प्रतिमाको अध्याने उत्तर अन्तर कराने । सम्पूर्ण कापनाओकी पृष्टिक रिप्टे इस प्रकार चाँच दिन, दीन दिन अवस्य एक ही शति प्रतिमाका अधिकारन करें।

देवालको (शानकोणमें असर स्थानके **व्या**त्रे कुछ विस्तरकर वर्त्त शुरू वर्त्तासे मुसक्तित सम्या रहे। अञ्चलक जिल्लान पूर्वम्क रका काय। उसी शब्दापर भगकान् सूर्वकी व्यक्तिमान्ये प्रापन कराये : उनके दाहिने मारामें निश्चभा, नाम भागमे 🔚 🚟 🚟 🚃 🚃 तथा निवासको क्यक्रित करे । इस स्विमें सर्वकरायको सर्वेत जागरण धरे, क्की-बारमसे शही, कृत्व, गीत आहे. इत्सम कराये । प्रभार केरे ही ऋषेदके विकास हो 🚃 उद्दीपन करे और स्वदेशकारानपूर्वक भगवानुको पूजा कर संदर्भ गधा · अपने विकास घोडन करणे **। अ**न्हें दक्षिण देकर 🚃 को । अवसर मन्दिरके गर्चभूमि पिष्क्रिकाके क्रमर 🚃 अधीरे युक्त सुवर्णका १६ स्थानन कर सुर्वज्ञयपणको अध्ये देकर यहाल कालेके साथ अलब्धरा मेराये । फिर उत्तम मुहर्त और विवर रुखमें प्रतिमानने स्थापना करे। 🎟 🕶 मुख **क्षे-उत्पर का अक्ल-काल, तिराह्म न हो, करन सीधा और** सम् रहे। प्रमुखन् सूर्यमी प्रतिमाने दक्षिण-भागने और कम्भावमे प्रक्रमाः निम्नुस्य उदैर राष्ट्रीको प्रतिमा स्थापित करे । अन्तर घेटक, ऋक्त्री, पावस, कुदम आदिसे इन्हादि 📰 दिक्यालोका आकारत तथा पूजन 📖 उन्हें बरिर संगरित करे । इसके स्वित्ये तथा 📰 उपचारीते सुम्दिक्क पूजनकर ऋग्रणों और भोजकोको भोजन कार्यन और उन्हें दक्षिणा दे। इस 🚃 भरतेष्ट्रांग प्रतिपूर्वक प्रतिमार्क्स स्थापना किये जानेवर, का उनकी राजी ...... करपाण, महाल और सुक्ष-समृद्धिकी सृद्धि साला है और उसमें भगवान् भूर्वका किय सांजिध्य रहता है । सूर्वकी श्वापना करनेवास्त्र व्यक्ति मोश प्राप्त करता है और उसे सात अन्योतक आपि-स्वाधियाँ यी नहीं 🚃 🔛 दिनेशक प्रतिक्रुके उत्सवींचे सम्पिलत रहनेवाला व्यक्ति सूर्यत्मेकको 📖 है। सूर्वनारायककी प्रशिक्तकी स्वाहना करनेसे दस क्रियान स्वा सौ कारपेय-वर्ताका करू जात होता है। परिदर्की हैट जवाब पूर्ण नहीं हो जाती, तनतन अन्दिर कारकोकान पुरुष लाग-

स्क मोगल है। सूर्व-मन्दिके जीलेंद्वार कानेका पुरुष इससे भी 🎟 है। जो पूरुप मन्दिरका निर्माण करकर प्राणियोंकी एकि. ल्ला एवं प्रस्तवके देतुमूत सुरतेष्ठ भगवान् सूर्वकी प्रदेश स्वापित करता है, वह संसारके सब स्रवीको भोगकर सी कल्पेतक सूर्वरवेकमे निकास करता है। भन्दिमे इतिहास-पुरानका पाठ भी करना चाहिये।

श्राप्त अन्य देवत्त्रजोसी प्रतिन्त्रओवा पी प्रव्यक्तिकार क्षेत्र उद्योकन करे तथा शुप पुरुतेने बन भौत्यक्रीको मध्यस्थान विविद्यक्षक स्थापित कर पुरान की ।

(अस्माम १३६-१३७)

#### श्रामारोपणका । 🚃 और पत

नारक्ष्मी बोले—सम्ब । अब वै व्यवस्था ध्यवारोपणको निधि बनल्यका है। पूर्वकारको देवता और असुरीमें को भीषण युद्ध हुआ, इसमें देवताओंने अपने-अपने रमीपर जिल-जिल विक्रीकी बालात की, ने की उनके प्यास भाइतमधे । उत्तरप्र तामका इस प्रध्यर है — भाजना दुन्छ सीना, व्रणाहित और प्रासादके व्यासके प्रकृष रूपा होना व्यक्तिय अथवा रहर, आहे, इस, सोलब या क्षेत्र हाथ लेख होना चाहिये। भ्यानाया दण्ड गीम हाचये आधिक राजा न हो और सम पर्वोचारक हो । उसकी गोरकई पार अमुरू होनी पाहिने ।

ध्यानेके कपर देवताको सुचित कानेकाला चित्र धनकान धाहिये । भगवान् विध्युके ब्यवपर गरुत, दिश्ववीकी ध्वावपर वृत्त, अह्याजीको ध्वनापर क्या, सुर्वदेककी ध्वनापर क्येक् सोमको पताकापर नर, क्लदेककी बामदेशकी पताकापर मकरच्या, इन्हरूने ....... इती, दर्गाको ध्वलापर सिंह, उम्मदेवीकी (min) योख, रेक्तकी अस्य, वरुणकी स्थापन सम्बद्धाः स्थापन हरिया, अग्रिकी व्यक्तापर मेच, गणपरिवादे व्यक्तपर मुख्याना तया महार्षियोको 📖 कुरावन 🌉 कन्तन पाहिने । जिस देवताका 🗏 🚃 हो, 📖 प्याचनर 🗏 अहित रक्षता है।

विष्णुकी बार्बा दण्ड सोनेका और बार्बा पेतनर्गकी होनी चाहिये, 🚃 करपुके सम्मेष रखनी चाहिये । जिवजीका

स्थापन को । 🚃 व्यक्तपट 📖 और पदावर्णकी 🚃 📰 स्त्रीय एके: मुर्पनारायकका 🖫 शूक्कीका और क्योक्क मोचे पैदांगी पताका होनी चाहिये. 🚃 🚃 🖘 🗏 एवं पुर्ममालाओंने संपुक्त हो । इन्द्रका ध्वाज्यम् 🚟 और इस्तीके समीव अनेक वर्णकी पक्षक होनी चारिये । यसका ध्वासपड लोहेका और महिक्के समीव कृष्णवर्णकी प्रसम्ब एकती चाहिये । कृषेत्वर ध्वामद्रव्यः विभाग और मनुष्य-पादके समीच रक्त शर्मकी पताका रहे। करनेकार ध्वकरण्ड 🗯 और सरख्याके गीचे प्रसादा जात्व चाहिये। कामदेवका शिलीह (स्वेप्त, भाँदी और सुन्धि-मित्रित) कर कौर मधरके समीय रहावर्णकी पहारत स्वापित करने चाहिये (कार्तिकेशक) ध्यक्टन्ड विलोहकः और मयुरोः 📖 विज्ञवर्णकी पताकः 📹 🎟 🚾 धानटण्ड ताप्रका अथवा इतिद्रसका एवं मुख्यके समीप इक्षुकर्णकी धनावत और मातुकाओंके व्यवस्थ्य अनेक रूपोके तथा अनेक वर्णोकी अनेक प्रतावपएँ होनी चाहिये। रेक्सकी 🚃 अञ्चले समीप लालवर्णकी, चमुष्टाका व्यक्तव्ह लीतक और मुख्डमालके समीप नीले 🚃 🚃 होनी चहिये । गीरीका ध्वयदण्ड 🚃 और इन्द्रमेष (बोरबहर्ट सोट) 🖩 🚃 अतिहास रतन्त्रणीकी कता होनी चाहिते । अप्रिका क्वजदब्द सुवर्णका और मेथके अनेक वर्णकी पताका होनी पातिके। वाजुका रजेहका और हरिजके समीप कृष्णवर्णको पताका होनी पाहिके। भगवतीका ध्वायदण्ड सर्वकातुमक, साम अपर सिहके समीप तीन रंगकी पताका होनी चाहिके।

इस प्रकार व्याप्त पहिले निर्माणकर उसका अधिकासन करें। रुक्षणके अनुसार वेदीकर विकार को, स्वापना व्याप्त सभी उपकारोंसे अक्की पूजा करें और उसे पूजानारम पहिनाये, दिकारोंको वांत देकर एक क्राप्ता अधिकासन करें। दूसरे दिन पोकन काकर शुम पुरुष्ति व्यक्तिकाकन करोंदे सङ्गल-कृत्य सम्पन्न कर प्रकारको परिसके व्यक्तिकाकन करोंदे सङ्गल-कृत्य सम्पन्न करोंदे करोंदे कार्यका करोंदे-वालेकी सम्पन्तिकी प्रदा पृद्धि होती सहस्ते विकार करोंदे कार्यका करोंदे कार्यकार करारों करोंदे कार्यकार करारों करोंदे कार्यकार करारोंदिक कर है, अतः ध्वज्यद्वित मन्दर नहीं रखना चाहिये। ध्वजारोहणके समय इन मन्त्रोंको ध्वजा चाहिये—

वगवन् देव देवजान वै संगं॥ श्रीकाः अभिवासम् वय वैवोक्तोपितः। भ्योक्षस्य व्याप्य धर्मातस्य व वै गतेः॥ स्वित्यं कृत् क्वोद्रास्य सामी ॥ धृतसं ॥॥ । वृद्धि सरा वर्षः असादस्यकेतस्य ॥।

क्ष्मे क्ष्मित्रकाष्ट्र-वार्ष्णनुसारिक्षित्रकास्य स्वयुक्तिस्य सम्बद्धित्रके कृष्ट् व्यक्तिको स्वयुक्ति स्वयुक्ति स्वयं स्वर्णन्ताः स्वयस्यम् ॥ (स्वयुक्ते १३८। ७१---७१)

स्वतः द्वापे स्थान प्रतिहर स्थान स्थान दर्शन करे । १४१ प्रकार अस्तिपूर्णक को स्थान ध्वारोपण करत है, यह तेत्र चीपीकी चीपकर सुपंत्येकको स्थान

(अध्याप १३८)

#### साम्बोपारुपानमें मगोका वर्णन

नारद्वती बोल्डे—साम्य १ इस कार्यकर वर्षे भी व्यवस्थ स्थीकार नहीं भरेगा, क्योंक देवकुता अर्थान् देवकानी अस्त्रा निर्वाद करनेवाले बाह्य देवलक कहे बाँधे हैं। ही त्येग लोमवहा देवका और बाह्य-कार्यके बहुन करते हैं, के मरकों जोते हैं, अतः कोई भी बाह्य देवताका पूजक वहीं करना बाहता। तुम भगवान् सूर्यकी इस्त्रामें जाओं और उन्होंसे पूछे कि कीन उनका विभि-क्रियानमें पूजन करेगा ? अथवा एवा उग्रसेनके पुरोधितसे कहो, सम्बन्ध है कि वे इस कार्यको स्थीकार कर ले।

नरदर्जीवरी ■ बाकको सुनवर जान्यवरीपुत्र सान्य ठमसेनके पुरोहित गौरपुरको प्राच गणे और उनके उने सारद प्रणायकर कहा—'महाराज! पैंगे सूर्यचनवानुकर ■ विश्वाल यन्दिर बनवाया है, उसमें संगल परिवास तका परिकारों एवं पश्चिमोस्सिहत उनकी प्रतिका स्वाधित की ■ और अपने 🔤 वहाँ एक 📖 भी बसाबा है। आपसे 📖 🚃

गौरयुक्तने स्वया — सान्त ! हिं ह्या है और आप है। अवसे द्वार हिंग गर्ने इस मीतमहत्त्वे सेनेपर नेता स्वयान यह है अस्पन्त । तान हिंग साहित्ये । आप यह दल किसी हिंग सहित्य सुर्वित्यको पुत्राको अधिकारी है ।

स्थानमें कुछ — महत्त्वज ! मग भीत है ? अहाँ रहते है ? किसके पुत्र है ? इनका tim minit है ? आप कृषाकर कहारों ।

चौरचुका कोले— सम धमवान् सूर्य (अप्रि) ■

विद्युपके पुत्र हैं : पूर्वकममें निकृषा महर्षि प्रिम्बिको
अल्पन्त सुन्दर पुत्री ची । एक बार उससे अप्रिका उल्लाहुन 
बारा फल्प्सकम माम्बान् सूर्य (ऑप्रस्कल्प) यह हो गये ।
बारमें ऑप्रिका माम्बान् सूर्यके ■ निकृषाका को पुत्र हुआ,
वारी सम कबरमाना सम्बान् सूर्यके बारवानसे ये 
अप्रिकंप्रमें उत्पन्न अल्यहुक्को बारवा करनेवाले माम सूर्यके परम

हुन् और सूर्यको पुत्राके लियो निमृत्त हुए । भगवान्

सुर्वकी पूजा करनेवाले मण ऋकवीपने निकास करते हैं, 🚃 पगवान् सूर्यके एजकके रूपने उन्हें 🚃 📟 🗯 प्रकारीय अर्थे ।

🚃 सम्बने द्वारक जन्म अपने 🥅 गगवन् श्रीकृष्णको एक समाचार सुनाता । विशे वे **प्रका** हाई। प्रतकर एकड्पर समार हो सीचा ही सामग्रीप पहुँच गर्ने । नहीं अर्थने अतिक्षय तेजाचे 🚃 🚃 सूर्य-पगवानकी आराधनार्थे संस्त्र देखा। सम्बन् उन्हें 🚃 प्रणासकर उनकी प्रश्नीका की।

सम्बद्धे कहा — आवलेल धन्य है । अस्य सम्बद्ध दर्जन सबके लिये कल्यागवारी 📕 आप लोग सदा चमचान् शुर्वको अस्यक्ष्ममें लगे हुए हैं। 🖥 धराबान् औष्ट्रमध्य पूर्व 👸 वेस नम साम्य 🖥 । जैने चप्रचामा नटीके तरफा सूर्वटकारी सूर्विकी स्थापना 🖩 🛊 । उनमर्थ आञ्चले अनुसार उनकी विशेषकर आराधनाके निमित्त प्राकाद्वीयमे जन्मुद्वीयमे 🗏 🔣

रिव्ये 📕 अल्पको 📟 उपस्थित सुक्ष्य हैं। 🛅 सचिनय प्रार्थना है कि उपपरनेश कुरशकर अम्मृद्वीपमें प्रधारे और मगवान् सर्वको एक करें।

मन्त्रीने कहा — 'सम्ब । इस कारकी जानकारी भगवान् सुबी इमें पहले ही दे दी है।"

🚃 सुनकर साम्य बहुत प्रसाव हुए और गरुवपर उन्हें 🚃 🚃 (पुरस्थान—पुरसान) से आये। सूर्वजनकम् 📰 बार्वे उर्वस्थत देखकर बहुत प्रसन् हुए 🜃 📖 बंके—'सम्ब ! अस तुम विका छोड़ दो, ये गग मेरी विश्विपत्त पूजा सन्त्रक करेंगे।"

इस प्रकार व्यक्ति इक्क्ष्मीयसे अध्यक्ष व्यक्त करनेवाले गण्डा गण्डा धन-चान्यते परिपूर्ण इस साध्यपुरको इन्हें कार्यित 🚃 दिवतः 🖩 🗪 मनावान् सूर्यको संश्वामं नागर हो। गये और परमा 🔣 मृष्टिय एवं मार्गेको प्रभावतः आनन्द-वित्तमे प्रस्क 🔚 आगे। (अध्याप १३९—१४१)

# -X4C#X+

### अत्यापुष्पा लक्षण और उत्पन्न

एक बार सामाने महर्ति ज्यासके मनोद्वारा धारण किये भागेताले अध्यक्षके विकामी 🚃 की ।

क्यासमीचे कहा — साम ! में तुन्हें अन्यतुन्हे निवनने बताता है, उसे मुन्दे । देवता, अबि, भाग, गन्धर्व, अप्सत, कस और 🚃 अनु-क्रमंसे यगवान् सूर्यके रचके त्याच गहने हैं। यह रथ वास्कि नामक अगसे बैंक रहता है। किसी समय वासुकि नागका केनुक (केनुक) उत्तरकर गिर पड़ा। वास्तुविको इसीरसे aimi उस निर्मोद (केंचुरू) को भगवान् सुपी, सुवर्ण और रखोंने अर्लकृतकर अपने लगा यागमें धारण कर रिन्म । इसीलिये भगवान् सुमीक मक अपने देवको प्रसम्बद्धके लिये अल्ब्यून धारण करते हैं। इसके पारण करनेसे भोजक पविष 📕 जाते हैं और उसका सूर्वभगवानुका अनुका भी होता है।

इस अध्यक्षको सर्पक केपुलको तरह पष्टमे 📺 अर्थत् काली रक्षना चहिये। यह एक वर्णका होना चहिये।

क्यासके मृतने यत लाहा 🖟 सौ अञ्चलका उत्तम, एक सौ बीराका मध्यम और एक 🔣 📖 अञ्चलका करिए होती है, असः इससे 📺 नहीं होना चाहिये। यज्ञोपयोत्तको 🚃 अवदर्शे कांग्रे अव्यक्त धारण करना चारिये। भीअवदेशे लिये यह यूख्य संस्थात है। इसके धारण करनेसे यह सभी क्षित्राओकः अधिकारी होता है। 🎹 अब्बङ्ग सर्वदेवमय, सर्वकेटचय, सर्वल्येकमय और सर्वभूतमय है। इसके मुलगे किन्, बच्चमे अस्य और अन्तमे दादाहुनौति पगवान् शिव निवास करते हैं। इसी शरह ऋषेट, यज्वेद और सामवेद हरमञः मृष्ट, सच्य और अञ्चलममे सहते हैं, अधर्यवेद प्रन्थिमें स्थित रहता है। पूर्णी, 💷, तेज, वायु, अकादा और पुलोक, प्वालोक तथा सालोक आदि सातो लोक अञ्चासी निकस कारो है। सूर्यमात केवकको सभी समय अध्यक्त श्वरण कर जनवान् सूर्वकी उपासना करनी चाहिये।

(अध्याव १४२)

# साम्बोपाखानमें चनवान् सूर्वको अर्ध्य हाता करने और भूप दिखानेकी पहिषा

सुमन् मुनि बोले—एकर् ! १२० प्रवर्श व्यासकीते द्वारा अञ्चलके विषयमें जानकारी प्राप्त कर सामेने निरद्जीके बाध वापस स्प्रैट आये और उन्होंने उनसे बाध कुलान करावार पूछा—'देवर्षे ! पोजकोको भगवान् सूर्वको स्थान, अर्थ्य, आयमन, पूप आदि बाध बाध व्यास व्यास निर्मे ?' इसका आप कृपाकर वर्णन करे।

नारवानी जीतो—स्त्रम ! संबंध्यं में ब्या विश्व होन्यर आवारण वीतर सुने । सर्वव्यम जीवारिस निवृत्य होन्यर आवारण वार्य नदीने या जरवरण आदिने कान ब्या विश्व । अन्यस्य सर्वदान कर तीन बार अववाय को । जुड व्या यहनकर व्यवज्ञ धारणकर पूर्विव्यमुख वा जनस्वित्युख हो अववाय करेगा वाहिने । करवन्तर हो बार मार्वन और तीन बार अञ्चलक करेगा वाहिने । करवन्तर हो बार मार्वन और तीन बार अञ्चलक वारो । अनवायनक विना वाहिने । वाहिने । बार वाहिने । वाहिने । वाहिने । वाहिने वाहिने अनवायन वाहिने । वाहिने हो वाहिने करवेने वाहिने होने हो वाहिने वाहिने

रक्तप्रस्त, IIII, कासीर, कृषुम IIIIII स्टब्से विस्तकार सामके पापने चगवान भूगवेच अर्थ देश स्वक्रिकेत अर्थ्यक्रको सभने स्थान थगवान् सूर्यका आवाहन करे तथा दीनो बानुओपा बैठका पणवान् सूर्यका अपने स्टवमें स्थान कार्त हुए बीचे लिस्से मनासे अर्ध्य प्रदान करे —

अनुष्यक्षे के वे कृत्या गृहशास्त्रे दिवासर ॥ अनुष्यक्षे के वे कृत्या गृहशास्त्रे दिवासर ॥ करमका इस प्रकार प्रार्थन करे— अधितरके स्वाकृत्यका ग्रह्मा सम्बद्धा विकासस्त्रे ।

वेरीनाम्ब्राधिकारि काम पार्विकारिक 🚃 है ॥

(साहापर्व १४३ (४७)

अस्यक्षण करता विशिष्ट हम सकार जो अगवान् सूर्यको अस्यक्षण करता विशिष्ट पूर्व है, तह अध्येष-पहला करन कल करता है और उसे कर, पुत्र तका अव्योक्षणी भी अस्रि हो जानी है एवं अन्तर्थ कर भगवान् सूर्यमें स्त्रेन हो जाता है। उसम कुलेक नरत ही सूर्यको समर्थित करे। यदि यह भी य हो सके से अन्तर्भ हो दरे। अन्तर्भ करतेथे अस्यय्ये ही हो अन्तर्थ कृता करे। यह विशि हम्मके अभावमें करनी चाहिये, अस्ति कुलेक सुर्वभगवान्त्री पूजा देखनेकारेको भी अध्येष-भावा कर निरुत्य है। भूव-प्रमुक्त समय सूर्यका हार्यन करनेपर उसमें भी अध्येष-कृत-प्रमुक्त समय सूर्यका हार्यन करनेपर उसमें भी आहे

## सूर्वमञ्चलस्य पुरुषका वर्णन

सुमन्तु मुनि कोले — रंजन् ! एक भर रुवसकी स्वान् वक्त-गदाभागी नारायण भगवान् ओक्नाके दर्शकोः विक्रि हारका आये । अवस्था ओक्नाके पात्र, अपने, आक्रान आदिसे अवस्था पूजन वक्त आस्त्रकार उन्हें बैठाना और प्रकार कर साम्बद्धार रुवने गये बोजकोको पाँठमा नथा उनको सूर्यभक्तिको विक्यमें जिल्लास प्रकार की ।

भगवान् वेदव्यास बोले—श्रेषक भगवान् सूर्वक अनन्य उपासक है और असमें ये भगवान् मूर्वको हिन्छ तेजस्त्री कारामें प्रविष्ठ होते हैं। भगवान् मास्करको तेल कारामें है। सूर्यक्रम्यक्रमंदि प्रमण करन अधिमें स्थित है, उससे सभी स्थित है। दीसरी करन सूर्यमण्डलमें है। स्वितहरेकका मान्यस्य अपन इसे स्थान है। स्वितहरेकका मान्यस्य अपन इसे स्थान है। स्वितहरेकका स्थान स्थान करने स्थान है। स्वितहरेकका स्थान स्थान करने स्थान है। यह पूर्व स्थान-अध्ययक्रमं है, इसको महासूर्य कहते है। इसके निकल्य और सकत दो भेद है। तस्केक साथ सभी भूतीये अवस्थित स्थान सकत स्थान स्थान होनेपर स्थान । कुर्म, मुल्म, स्था, सुस्त, सिंह, कुर्म, हाथी, पश्ची, देवता, सिद्ध, मनुष्य, जल-जन्मु आदि सम्मेको अन्तरसम्बंधि यह ध्याप्त है। जस वह परमत्या दूसरी करवने स्वित होता है, तथ वृष्टि आदि करता है। तीसरी तैजार करवने स्थित होवन अपने भक्तोंको मोश्च देता है, **स्था** मेश्चपदको प्रक्रमण कर परम शासि प्राप्त करता है।

🚃 परमात्म ओकारत्वरूप है, ओकारकी 📷 📟

मान्नई हैं, इनमें अर्धमाना महत्त्वका जो ध्यान करता है, उसकी सरकारणाय अने होता है। सूर्यनारायणका रूप मकार है, मानारका अनुन करनेसे ही ये मन कहे जाते हैं। धूप, माल्य आदिसे सूर्यनारायणका कूमर कर वे स्थिता परायोंका पोजन करते हैं, अतः उनकी चेनक संज्ञा है।

(अध्याय १४४)

#### मनवान् व्यवसम्बद्धाः थोग-ऋनकः वर्णन

भगवाम् **शीकुमाने सहा—शह**तुरे ! कृतकार सार भौजवर्गक सभी ज्ञानीको उपलोकका कर्मन करे ।

क्यासजीने कहा — यह उसीर अस्थियों कर शि प्राप्त है। जायुओं से नैया, फारहेसे इका एवं राह-नाससे उपस्थि है। सल-सूत्र अस्टि दुर्गया-नुष्त पदानीये कर है। यह सम्बद्ध ऐसोका पर है और इसमें (भीतर) मुद्धान्यका क्रिके हैं। यह क्रिके हैं, यो अपने-अपने सम्बद्ध करह होते रहते हैं। यह व्यक्ति एवीमुंग आदि गुजीसे पर है, क्रिके हैं। यह इसमें भूतसंगीका अस्यस क्रिके हैं। यह इसमें व्यक्ति सर्वात

वृक्षेकि नीने निवास करता, चैत्रकोर दिन्धे शिक्षीका भिन्नोगात्र रक्षता, स्वच्यरण क्या पहनता और विक्तिसे सहस्रका न लेना तथा सभी व्यक्तियोंने सम्बद्ध रक्षता— वही सीवायुक्त प्रकार सक्षण है।

जैसे तिलमें तैल, गायमें दूध, माहमें अधि विश्वा है, की में प्रश्तिम संगत्त प्राणियोंने विवत हैं। ऐसा समझकर जिल्हा प्रतिका उपाय करना चाहिये। प्रथम प्रमधन सम्बन्धक संग्रह

बक्क मनको प्रयासमूर्वक बक्को कर बहुँह और इन्द्रिकेंग्रे 🔤 🖩 केवल चाहिने जैसे विजेटी चीतचेकी रेका जाता है। इन संपन्न इन्द्रिकोड हारा इस स्थापनी अमृतको आएके समान नुर्वति होन्से 👫 । बान्यायानस्ये उसरीरिक दोन, धारणासे पूर्वजन्मवित तथा वर्तमानतकके साम पाप, प्रत्यकारसे गुर्वेको पात करना व्यक्तिये। 🖼 आगर्क तापमे रस्तिरी कदानोंके क्षेत्र दान हो जाते हैं, वैसे ही जनानामके द्वार सामको इन्द्रिकारित 📰 रूप हो जाते हैं । वैसे एक हाथसे दूसरे हायको दूरका कता है, कैसे ही क्या पुद्ध सुदिके क्रम मनको एवं जिलको शुद्ध कर पनित्र प्राथनाओंके हारा पुर्वातकोको इक्सभार धन-मुद्धिको कारका पवित्र कर रेजा पाहिये । अलः विस्तवी सुद्धिके क्रिये प्रयास करना पाहिये । किलाने सुद्धि होनेसे सुध और असूध कर्मोका कन होता है। क्षप और अञ्चल कराँसे सुरकार आह कर साथक विश्वित. निर्मेश, निर्माणक और निर्माणक क्षेत्रम मोक्षणों प्राप्त कर den die

१-ऑस्करपूर्ण सामुक्ता जासम्बोनगरसंकरम् । पार्वकरद्वः दुन्तिकपूर्ण सूरापुरस्योः ॥ अग्रतोकसम्बन्धिः क्रिक्समम्बद्धान् । स्वतंत्रसम्बन्धिः स मुख्यसम्बन्धः सर्वत् ॥

२-तिले नैलं परि 🚻 कहे पाणकांत्रकि । उन्हरं विकानेत्रस्य 🛗 पीरः 🛗 । प्रमाधि च 🛗 ाः संस्था पहलम् । मुद्दिन्द्राति 🛗 समुद्रातिक वंशो ।

३-संत्रकेतिकार्वेद्धी अञ्चलित तृष्यते । सामान्युक्ततेय अवर्षन व्यक्तते । प्राच्यकारेतिहरूनेवन् करणाणिक विशेषकत् । प्राच्यक्ति संवर्षन् व्यक्तिकारम् नृष्यम् । व्यवकारस्य दश्यो व्यक्ते दश्य व्यक्तित । प्राचित्रकृत्य रोक रश्यो करणीयकृत् । विश्व विकास प्राप्ति व्यक्ते व्यक्ति रोक्षित् । स्वस्तु व्यक्ति स्वेष्ट्रे पृद्धाः वृ प्रोक्षित् । विश्वस्तिकारकेत् व्यक्ति वर्ण सुध्यसुक्त्यम् । सुध्यसुक्तिविद्यो विक्रिते निर्वाचित्रः ॥ निर्वाचे निर्वाचनकाते वर्णः व्यक्ति वर्णः व्यक्ति ॥ (स्थापनी १४५) १-५)

(अवस्थित १४५ (६-६)

सूर्यका पूर्वाइमें रस्तवर्ण, ख्रानेद-स्वस्य तथा क्रमास्य सेता है। मध्यप्रामे पृह्यवर्ण, क्रमुनेद-स्वस्य एवं स्वतिष्य करा सेता है। सार्यकाशमें कृष्णवर्ण, स्वापनेद्रस्वस्य क्षण तामस्यय होता है। इन सीनोसे पित्र न्योतिःस्वस्य, सून्य निरक्षनस्यस्य चतुर्थ स्वस्य है। क्षण्यस्यो बैठकर नही-पार्गमें चित्रको स्विर कर प्रणयसे पूर्व, कृष्णक और रेक्क-स्य व्यापने सेत्रक स्वर्थक्त अपन्यस्य सेत्रक मस्यक्ष्यम्य करे। अस्तिक, हर्यमें

और पसावर्षे अग्निज्ञकाका 📖 अला चाहिये। इन सकते

•••• सूर्वमञ्ज्ञालका •••• करे—वह चतुर्य स्थान है, इस स्थानको •••• इन्हा करनेवाले पुरुवको अवस्य जानना

1 व्यक्तिक सूर्वभगवान्के इसी तुरीय स्थानमें पनको श्रीकार युक्त हो काते हैं। — भी इसी — व्यान कर

पानी होते हैं। 📆 जानको सुनकर भगवान् वेदव्यास अंग्रेस करूं गर्ने :

(ঞান্তাম १४५)

# काम एवं अवम भोजकोके लक्षण

राजा रामानीकने पूक्त-मुदे ! भगवान् सूर्वक पूज करनेवाले भोजक दिव्य, उनके उत्तक एवं उन्हें आदश्च क्रिय हैं। इस्रोतिये वे पूर्थ हुए किंदु ≣ अयोज्य कैसे कड़रको हैं,

इस आप बततार्थं || सुमन्तु पुनिषे बाबा—एउन् ! मै इस क्रिक्टो चगकार् वासुदेव सथा कृतवार्थके द्वारा हुए क्रिक्ट अस्तवार्थ समा रहा हूँ । क्रिक्ट समय नारद और फर्कर—ये दोनो |||

सम्मपुर गर्थे। विद्यानिय भोजनीके प्राप्त पुर्वे विद्यानिय भोजनीके प्राप्त पुर्वे विद्यानिय भोजनीके प्राप्त पुर्वे विद्यानिय भोजनीक अन्न आवाद्य हैं, पिर नरद तथा पर्वेश—इन देनिन उनका अन्न केंग्रे प्रश्ने किया ? इसपर कानुदेवने कृतवर्गाने कारा—जो मोजन अन्यद्व धारण नहीं करते विद्या अन्य केंग्रे वहण किया ? इसपर कानुदेवने कृतवर्गाने कारा—जो मोजन अन्यद्व धारण नहीं करते विद्यानिय क्रिक्त कार्य करते हैं तथा देवाचीक कार्य करते हैं तथा देवाचीक वार्य करते हैं, जिनके कार्यानीद संस्थार नहीं हुए है, सम्बु धारण नहीं करते, मुख्यात नहीं हुओं—के पोजनीये अन्य हैं। ऐसे घोजनाइक किये गये देवाचीन हवन, जान, तर्पण, वान तथा कहाज-पोजन क्रिक्त करण वे अन्योन्य कहे गये हैं। इसीसे अनुवि होनेक कारण वे अन्योन्य कहे गये हैं। इसीसे अनुवि होनेक कारण वे अन्योन्य कहे गये हैं। धारणान् सूर्यके नैवेश, निर्मालय, कुंजूब्य आदि सुर्हेक हाथ बेबनेवाहे, परावान् सूर्यके कारण वे अन्योन्य कहे

भोजक उन्हें प्रिय नहीं हैं संध्य के भोजकोंने अध्यक्ष हैं। बो भोजक भगवान्कों भोग लगाये किना भोजन हात रहेते हैं, उनका वह पोजन उन्हें नरक प्राप्त करानेवास्त्र कर जाता है। हात: भगवान् सूर्यकों अर्थण करके ही नैवेदा भावन करना **ा हरते छिल्छ सुद्ध होते है।** 

वासुदेवने पुनः वतस्त्रया—कृतवर्षम् ! योजकोर्धः विकासे विकासे धगवान् सूची अञ्चलो जो वतलाया, उसे अवर सूने—

को भीक्षण पर-को तथा पर-धनका हरण करते हैं, रेक्काओं क्या केटोंक निष्टक हैं, वे मुझे अग्निय हैं। उनके हारा की गयी पूजा तथा घटान किये गये अध्येकी में महण नहीं कराव । वें मरकारी महाबेशका क्यान नहीं करने एवं सूर्य-मुख्यओंको नहीं जानते तथा मेरे पार्यदोका नाम नहीं जानते, वे

🔤 पूजा करनेके आध्यार 🛗 🛭 और न मेरे प्रिय है ।

करते हैं, एक पुक्त क्षेत्रर सूर्यपूका करते हैं तथा संवरतरिक, पर्वण, एकोहिट अविदे आद्ध सम्बन्ध करते हैं और एक विकित्त्रीय दान देते हैं, वे पोक्क पुढ़े अस्थल क्षित्र हैं तथा जो भोकक पान पासकी स्थानीको करकीर-पुक्त, रत्तवन्दन, मोदकका नैवेश, गुम्बुल पूप, दूष, श्लादि कारा-पानि, पत्तका तथा क्षत्रदिसे मेरी पूजा करते हैं, पृतकी आहुति देकर करते हैं तथा पुरुषकायक अद्धानीकी पूजा करते हैं, वे

मुक्ते क्रिय है। इतना कहकर पगवान सुबंदेव सुबेर गिरियर

और बढ़ गये।

सुमन् मुनि बोले—तवन् ! अधिक कहतेते 🚃 राम, क्वोंकि जैसे वेदसे 🔣 अन्व कोई शहर नहीं, यहारेड कोर्र नहीं नहीं, अध्योकने 🚃 📰 📸 💝-

व्यक्ति सम्बन कोई सुस नहीं, मासके समान कोई आश्रय नहीं और कनवान् सुर्वके सम्बन 🞹 देवता नहीं, 🔣 ही केवकोकेरकका भागान् सुर्वेक अन्य कोई विश्व नहीं है।: (अध्यक्षय १४६-१४७)

# भगवान् सूर्यके कालातानः च्याना वर्णन

सुक्त पुनि बोले—एकर् । एक वर भारतेत्रस्थ सामाने अपने पिता भगवान् बीकुम्लके हाक्ये न्यारम-पारप्रऑसे प्रदीप्त सुदर्शनचक्रको देखकर पूक्क-'देव ! आपके हाथमें के यह सूर्वके समान चढ़ दिसालायी दे रहा है, यह आपको कैसे प्राप्त हुआ तथा भगवान् सूर्वेड 🛗 🚃 हराम 🔤 🛮 नयी है ? इसे अपर सम्बंध ।

भगवान् श्रीकृष्य श्रीले—महत्वले ! तुसरे शिकी बात पूर्वी है, इसे मैं संबोधनें नतता तह है। मैंने अल्बन स्रद्धापूर्वक दिव्य हजार वर्षोतक भगवान् सूर्वकी अस्तरभक्त कर च्यान्ये प्राप्त व्यक्त है। भगवान् भारतर अवद्यक्रमें करते एसे हैं, जिनके रथ-प्रार्थि नार्वियक्तरणे करा आदि मह अवस्थित है। जिल्ली हादल अवस्थित बनलाके गये है, पुरुषे आदि तत्व मार्गमें पहनेवाले तत्व है, इन तत्वेसे यह कलामक बाह बाह है। भगवान् सुपी अपने इस व्यक्ति

समान ही दूसरा च्या शुहे क्यान किया है। इस कमलक्य पहले बददल हो यः ऋतुरे हैं । कमलके मध्यमें जो पुरुष अधिहित हैं, वे ही भगवान् सूर्य है। 🗷 भूत, 🏬 तथा वर्तमान तीन काल कहे गये 👢 थे सक्की 📖

सामाने मुझा-भगवन् । मगवन् सुर्वेद स्थातन और उसमें नियर प्रथम किलने किलाएंने किया प्रथम निर्माण करना व्यक्तिये तथा नेमि, अर और नामिका विकास किस 🚃 करना चाहिये।

भवनात् श्रीकृष्ण केले सम्ब ! 🚃 🚃 अञ्चलका और नेमि काल अञ्चलकी कामने कहिने । नाविका विस्तार भी अन्द अमूराका होना चाहिये और का शांकात तीन गुना अर्थात् चौबीस अञ्चलका होना चाहिने । समाराजे नापि, कर्णिका और केसर थे 📟 व्यक्तिये। नामिसे कमलकी देंगई अधिक होनी चाहिने। व्हर्णिए हास्के कोव्हर्णे

है। 🖮 महीने जरे तथा 📖 🛼 है, नेमियाँ विकास के बार है ...... है, नक्षत्र, यह तथा भीग अबदि भी इसी चाहनों 🚃 📆 है। ह्यूल और सुश्यके भेटते 🚃 🚃 📰 स्था है।

इटोक्स एका करनेके किसे मैंने इस पहलबे आराधनाके हारा भगवान् सुर्वसे बार किया है । इसलिये प्रही 💹 तत्त्वीसे 🚃 🚃 च्यानमे 🖟 🚞 पुरत करता रहता 📢 और 🚃 विश्वत भगवान् सूर्वको भौतापुर्वक पुत्रा करता है, 🚌 भगवान् सूर्वके समान 📕 📺 🐧 प्राप्तीको 📕 कार्यन् सूर्वका एकः अधिक 📖 उनको 🚃 📑 करबीर-🌉, कुंकुम, राज 🚃, पूर, 📑, 📖, चानर, 🚃 📮 🖛 🚃 पूजा करता 🖥 तथा विविध नैवेडोंबर योग लक्क है, कुम्प कथाओका 🚃 🛍 है, 📺 अपनी सम्पूर्ण 🔤 😅 📰 होता है। 🔛 📖 से 🚃 तथा 🚃 अविने 🚃 पुरा करता 👢 उसके BBB सभी वह असम हो जाते हैं, वह सम्पूर्ण होये और दुः कोसे 🚃 से जाता 🖥 तथा समस्त देशमीसे भक्त होक्ट **विकार** है। (अध्यक्ष १४८)

# सर्वेषक्रका 🔤 और सूर्व-शिक्षकी विकि

कमरा-पुरुषे मुक्तमी कार्यना साली शाहिए। बद्दा, विक्रा, निष्य और इन्हर्के रिप्ते 🚃 📻 करणना करनी चाहिये। क्ष्मेंच्ये क्ष्मनेके स्थान सहय आहे स्थानका उनके नम-मन्त्रोसे व्यक्तपूर्वक आवाहन कर पूजन करना साहिये (

अर्क-पण्डलको पृष्ठके 📟 इस बङ्ग-क्रियके अनुरूप देन्दित होन्ड काहिने, भगवान् सुपनि इसे मृहासे पूर्वकालमें

🚃 पूक्क — भगवन् ! सूर्यच्यक-यङ्गके सिये देवताओंने किन मन्त्रेंको कहा है ? 📖 यहके सराप और **अ**पन्ते भी अन्य वक्तनेको कृपा करें।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले—सीम ! स्वंतरायकं स्वस्ते कारत बनकर पूर्वको भाँत इदयमे स्थित भगवान् सूर्वका 'सबोरका' नामसे कारताये कार्यका-द्रवंदि आपवान-पूर्वक चतुर्थ्यत विभक्ति और क्षित्रा स्वपति कृष्ट 'काः' सम्बद्ध अस्त्र-यास एवं इदयदि न्यस तथा पूजन करना बारिये । सूचन करते समय नामके असमें 'सब्बंद' इस्ट्या प्रयोग करना चाहिये । यथा—'स्थ साबोरकार्य कावा ।''स्थ साबोरकार्य व्यक्ति विभक्ति । संत्रः सूर्यः प्रयोगकार्यः हा विकास सावकार्यः सूर्यकार्यकार्यः यथा व्यक्ति करना चाहिये, अन्यथा कार्यका स्व

सामाने पूका—भगवन् ! अवितव-मण्डलने सामाः वित्त कार्यके रिज्ये और केली गोशा केली गारिये ? इसे सामोज

एवं भरावाम् सूर्वको अस्त्या द्विष 🗐, इम्रास्टिव प्रकारपूर्वक

मन्द्रों 🚃 और सर्वती विधिन्ते 🚃 चहिने। इससे

अभीह मनोगय सिख होता है।

भगवान् श्रीकृष्ण केले—स्टब्स, श्रीका, 🔤 📟 कुरवेन शह, पुरुष अभवा की भी सूर्व-सम्बद्धकर्य 🚃 अधिकारी है। सूर्वशासके सामान्यम सरकारो, सूचि, वेदवेसा बाह्यणको यह बनाना च्यांत्रये और भोसावुकेक उन्हें प्रणाम करना प्राप्तिमे । यही विकिसे पुर्मेक विकित अनुसार अग्नि-स्थापन कर विविध्यक्ते सूर्य तथा आजना पुरत कर्नक हका करना चाहिये। तदनका गृह परिव शिष्यको कृती 🚟 अक्षतिक द्वारा उसके प्रत्येक अक्षूमें स्केटी चानक कर उनका स्पूर्ण करे । शिष्य वध्यादिसे अलंकृत होकर पृथ्य, अक्षत, नक आदिसे भगवान सूर्यमधे पुत्रा करे तथा बन्ति भी है। आदित्य वरूप, अप्रि आदिका अपने शरपमें ध्यान करे। यो, गृह, दक्षि, दुव, बावल आदि रसका तीन कर असमे आंत्रको सिवितकर अफ्रिमे पृतः ।ध्यन क्ष्रे । उसके कद क्ष्र विक्रानकर-····· कियको दातून दे । कर दातून दुषकाले वृषका के और उसकी लंभाई बारह उस्तुल होनी चाहिये। टातून करनेके पश्चात् उसे पूर्व-दिशामें फैक देन कहिने, उस दिशाने देशे नहीं। पूर्व, पश्चिम और ईझान कोषको ओर एक काके दातुर करमा सुम होता है और अन्य दिशाओं वे वातून करना असूब माना गया है।

विन्दित दिशमें दत्तवाबनमें जो दोप लगता है, उसकी प्राणिके रिप्ते कृतन-अर्धन करना चाहिने । एतः गृह शिष्यके अञ्चलक स्पर्ध करे । सूर्वपायकोका जयपूर्वक उसके अवेसीका रवर्त को। इन्द्रियसंक्ष्मके किये शियमे संकल्प कराये। नदक्तर जानाबाद देवन उसे ज्ञावन करनेकी आज्ञ दे। दूसरे **विने आकारकार पूर्वको प्रशःभारत नगरामगर का अग्नि-स्थापन** करे और हमन करे। स्वाधी कोई शुध संवाद सुने अधवा ल्ला वर्द **पर** अञ्चय **न्यान दिसान्ते यहे तो सूर्यन**हायणको क्य को अञ्चल दे। क्यामें वदि देवपन्दिर, अपि, नदी, सुन्दर क्यान, उपकर, पत्र, पुष्प, फल, कमल, 📰 आदि और केदकेल 🚃 सीर्यमन्त्रस तथा, चनाव्य शरीय, सेमार्ने 🌬 कृत्येन सुर, नव्यको सार्वनताल, सुन्दर भावण 🤃 अवस्य इसन कहनपर सवार, यन्, रम आदिकी **व्यो**, कहन, तान, काम आदि उपकरण अथवा समृद्धिकी अर्थेंद्र काल्पे दिखायों दे तो इस क्लाको शुभ मानतः हिंदी । सूच कर्न दिन्सवी पहे तो सब कार्य शुध ही होते हैं । **ार्क सह दिस्सा पहुनेत सहयेको सुपैपक्र** · स्विटकार्यः कृतः करनी श्राहिषे । जाश्चाणी तथा गृक्षके वरता वर्त्तव । अदिवयस्थल परिच और संधीको चुनिः प्रदान करनेचारम है । इस्रतिये अपने मनमे ही आदिस्पन भवातका प्रका 🖿 📻 सौ आसूति 🔣 चाहिये। इस क्रमते 🚾 और प्रमुक्त अनुसरण करते शुर् वर्षाट्रेल्यनपद्रलयर पूज्याश्रीतः प्रदान करे । इससे व्यक्तिके कुलका उद्धार हो आता है। सुपैक्षेक पुराजादिका अवाग करना व्यक्ति । पुजनके बाद विसर्जन को । सुवैका दर्शन कानेके प्यान्त् ही पोजन करना पाहिये। प्रतिमान्त्रे प्रायाका और न ही मा-नक्षण-चेण और 🚃 लक्ष्म करक चाहिये। धूर्य अचन, ऋतू, पक्ष, दिन, काल, संवत्सर आदि समीके अधिपति है और वे सचीके पूज्य तथा नवरवा। करने योग है। सूर्वभी स्तृति, क्ष्यम और पूजा सदा करने काहिये। 📖 🚃 और कर्मले देवकाओंकी निन्द्रका परिस्का 🚃 च्चित्रे । साथ-पाँच भोकर, सामी परकारके शोकको स्थापकर सुद्ध अन्तःकरणसे सूर्यको नमस्कार करना चाहिये । इस प्रकार संखेपरे की सुर्व-द्यक्षकी विधिको कहा है, जो सुरक्षमीय और मुक्तिको प्रदान स्थितिको है। (अध्याय १४९)

## भगवान् आदित्यकी सप्तावरण-पूजन-विधि

धगवान् श्रीकृष्य कोले--- वस ! 📖 वै 📖 भगवान् सूर्यज्ञरावणकी कृता-विधि बक्तवता है। एक वेदीक अष्ट्रदल-कमलवृक्त मण्डल क्या असवे काल-काको करपना करनी चाहिये। उसे बारह अरोही यक होना चाहिये। 🛮 🕊 धर्माता, सभी देवराओंमें बेह, रूपकल 🚟 🚃 संबोरक ब्राइट मनवान् सुन्दिव है। इसमें ३७० 📖 युक्त चतुर्वातु भगवान् सूर्ववर्ष कृषा करनी शाहिये। इनके पश्चिममें अरुन, दक्षिणमें मिसून्त देखी, दक्षिणमें ही रेक्स स्था इत्तरमें 🚟 पूजा करनी चाहिये और 🚟 🔤 👊 वृत्रा अरबी चाहिये। अधिकोणमें लेक्स्कर्ध, 🚃 ईसामकोपने सोकरावाचे देवी प्रमुख्यो पुत्र करने चाहिने । हितीम आवरणमे पूर्वमे अस्वादाको, र्याक्रमणे देखेको, पश्चिममें गणककी और उत्तरनें 🚃 देववतकी 🚃 दुव शेले हैं।।क्रांक्रकोनमें हेर्डल, विकास बहेरल, विकास और विकासकोगांवे विकासकोगांवे पूजा पर्वत पार्वके । तुर्वाच्यवरणमें पूर्वमें सुक्त, पश्चिममें 📖, उत्तरके मुक्तवीह, र्रेसलमें 🖮 और मण्डलके 🚃

करने चाहित । नैक्स्कालने ग्रह तथा वायव्यक्तीयने बेक्की पूजा करनी व्यक्तिये। चीचे आवरणमें लेकक, श्वनिक्रलीपुत्र, वय, विक्यास, वरुन, व्ययुद्ध, ईशान 🚥 कुनेर अवस्थि उन-उनकी दिशाओं में एक 📖 बाहिये। 📟 अवस्थाने पूर्वाद समसे महाकेता, जी, ऋदि, विभूति, बुर्ग, उर्जान, पुर्व्या तथा शहाबरीति आदि देवियोकी पूजा करनी 🔚 स्था इन्हें, विश्वा, अर्थमा, चर्म, वर्धन्य, विकस्तान, अर्थ, लाहा अर्थेद सदया आदित्योंकी पूजा प्रते आकारामें कस्बी चाहिये । सिर, नेव, अरब-सरबासे चुक्त रथसहित सुर्यकी व्याप्त व्याप्त करणे कहिये। एक, गावर्थ, व्यवस्थानिक तथा संचारक अवदिको 📕 पूजा करानी चाहिये । श्यके कद चएकम् पास्करका पूच्य, गन्य आदिसे विविधूर्वक पुजनकर---' 🖎 सामोत्याचा वधः'इस मृत मन्त्रसे अपने अहोत्य सर्व अर्थात् हटकटिन्यात बारते हुए पूजन करना वाहिये। यो व्यक्ता वाहिन्सुर्वक इस विविश्ते सूर्वकी निस्त अवस्य क्षेत्रे प्रयोगी समग्रीके दिन एकन करता है, वह परपदको प्रश्न 📰 रेखा है।

(अध्यास १५०)

# सीरधर्मका वर्णन

भागतिकाने पूजा — मुने । परावन् सूर्यका माहत्त्व सीर्तिवर्धक और सभी प्रयोक्त नवृत्व है। की भगवान् सूर्यनारायको शाला लोकने मिली अन्य टेक्सको नहीं देखा। जो भरण-पोषण और सहस् भी करनेवाले हैं वे भगवान् सूर्य किस प्रकार प्रसन्न होते हैं, इस पर्मको अप अपने तरह जानते हैं। मैंने वैकाय, तीव, प्रेसिक स्था भगवान् सूर्य किया है। अब है सीरपर्मको स्था पहला है। इसे स्था मुझे बनाये।

सुमन्तु मुनि कोले—एकर्।अभ आप सीरकनिः निवयमें सुने।

्यह सीरधर्म सभी यमेंनि जेह और उत्तन है। किसी समय बार्च भगवान् सूर्यन अपने बार्च अस्मसे हुने बार्च था। सीरधर्म अन्यकाररूपी दोवको दुरका अभिनोको है। को न्यांक इस्तांकत होका पूर्वको पांकपूर्वक पूरा करता है, वह सुध और कर-धानको परिपूर्ण हो आसा है। प्रातः, नव्यक्त और सार्थ—विकाल अथवा एक सा समय पूर्वकी साम्युवंक अर्थन, पूजन और सारण करता है, वह साम नव्यक्ति किसे गये साथी प्रकारके प्रयोगे पुक्त हो जाता है। सा प्रकार पूर्वको सदा सुद्धी, प्रार्थका और आग्रथना करते है, वे साम्युवंक साथ सुद्धी, प्रार्थका और आग्रथना करते है, वे साम्युवंक साथ सुद्धी करता हो हैं। कोहशाक पूजन-व्यक्ति साथ पूर्वकाणको कहा है, सामा करके भत्तिपूर्वक सहस्य, पूजन, अर्थकालिकर सूर्यको प्रयास करके भत्तिपूर्वक सहस्य, पान, वीपस्य अदिको पूजा करनी चाहिये। प्रतिपूर्वक इतिहास - पूर्वका अववा और आहाणोंको वेदाव्यास सामाव्यक्ति । सबसे प्रेम करना नाहिये। सामाव्यक्ति स्थानकर खोगोको पुराणादि प्रन्योकी ........ स्वानी साहिये। मेरा निरव-प्रति करना चाहिये। इस प्रकारके उच्चारोने जो अर्थन-पुजन-विधि बतापी गयी है, वह सपी प्रवस्के सोगोंके सिवे 🚃 है। जो कोई इस बकारसे धॉलपूर्वक 📰 📺 करता है, 📰 पुनि, श्रीमान, 📖 और अच्छे कुलमे उत्पन्न है। को कोई पत्र, पुरुष, कल, कल 🚃 🛗 🗷 उपलब्द 🕍 उससे मेरी पुत्रा करता 🖥 उसके लिने 🛮 मैं उन्हारन है और न वह मेरे सिवे अदुस्य है। मुझे जो ब्यक्ति जिस व्यवनाथे देखता है, 🖥 भी उसे उसी रूपने 🚃 पदात है। यहाँ 🗓

स्थित है, वहीं भेरा भक्त भी रियत होता है। जो मुझ सर्वव्यक्तिको पर्वत्र और सम्पूर्ण प्राणियोपे स्थित देखता 📗 उसके क्रिये 🛮 उसके इटचमें 📖 🖲 और यह मेरे इदयमें 🚃 🖥 । जुर्वको 🚃 करनेवास्त्र व्यक्ति बहे-बहे राजाओंपर 🚃 अब 🖛 लेक है। जो व्यक्ति मनसे मेरा निरंतर ध्यान बनका शहका है, उसकी जिन्ता यहरे बराबर करी रहती है कि व्या उसे कोई दःवा न होने पाये । येव भक्त मुहको आयक्त 📰 है। प्रकार 🚃 निका हो 📖 बर्गीका सार है। (अध्याय १५१)

**ार्जिक विकाशोद्धारा भगवान् सूर्वकी सुन्नि एवं बर-प्राप्ति** 

सुक्कु कृति कोले-एकर्। प्रथम कार भगवार् सुर्वेक महत्त्वेच रेसके विवयमें सुर्वे । फल्पके आरमभे बहादि देवका अहंक्सके चल्लेका हो गये। समस्यो मोहने हन्हें अवने हिर्मि कर लिया । एसी क्लब प्रानेक असंबादको दुव कानेके रिप्ने एक महत्रीय नेज प्रकट सुआ, जिससे यह सम्पूर्ण 🚃 च्या हो एक। अस्थवर-नहाक तथा ही योजन निस्तारपुरत यह नेज:पुड़ आकारते 🚃 कर एह था। इसका प्रकार पृथ्वेपर कमलको धर्मिकानी पानि दिवालापी दै रहा 🖘 । यह देख बहर्साई देवगण परस्पर इस प्रकार निवार काने लने -- हमलोगोका राजा 🚃 अल्ला कानेके रिन्ने की यह तेन प्रदुर्भत हुआ है। यह तेन कहाँसे प्रदुर्भत हुआ, इस विषयमें ये कुछ न जान सके और इस रेजने सभी टेबनचेको आधर्मककित कर दिया । सेजापिपति उनी दिसायी 🏙 नहीं पहे । 🎹 देवनाओंन उनमे पूछा—देव ! 📖 कीन है, कार्य है, यह तेकारी कैसी शक्ति है ? 📖 सभी लोग अस्पवन दर्जन भरत। बाहते हैं। उनकी प्रार्थनांसे प्रसम्ब हो भगवान् सुर्वकरूवण अपने विराट रूपमें प्रकट हो गये। उस मानीय देश:करूप कावान् काकावी देवामा पृथक्-पृथक् क्टब कर्ल लगे ह

**काराजीवनै प्रातिका भाव इस प्रकार है<sup>5</sup>—हे टेक्ट्वेज**ा ! आप सहस्रो किरलेंसे प्रकाशमान है। स्रोणवरस्थ्य ! आप संस्कृष्ट रिज्ये दोपक हैं, आपको नमस्तार है। असरिक्षमें

सुकतु सुवि भोले—उक्त् ! अक्ताव् सूर्वकी पति, पुरा और उनके लिये दान करना तक 🚃 🚃 🚃 वरान्त्री बात नहीं 🛘 तथा 📖 चीत और 📖 🚃 हरस्स अध्यस 🚥 भी 🗪 हुर्लम है। फिर के 🔤 📷 स्मरणसे इसे अन्न किथा जा सकता है। सूर्व-वन्द्रियों सूर्वकी मदक्षिणा करनेसे के सन्त प्रसम्भ वहते हैं। शुक्रिका कार्या पुजन एवं सुर्पेशारायणका स्तोत-पाठ कालेकाला व्यक्ति 📖 फल एव पुण्य तथा विश्ववीका परित्यालका प्रमाण सुर्वते अपने काको 📼 देनेकाला करूब निर्मोक होवल 🚃 निश्रात पति प्राप्त कर लेखा है।

राजा प्रातानीकाने युक्त-हिजनेह । यूके प्रमुख्य स्पंत्री पुश्रन-विधि स्लोकी शही ही अधिरताल है। मैं अपके ही मुक्सरे स्तन्य चाहता है। क्रमाकर कहिये कि सर्ववर प्रतिका स्थापित करनेसे फीन-सा पूज्य और फल आप होता है तथा सम्मार्जन करने और गन्ध आदिके लेक्नसे किस प्रथमी प्राप्ति होती है। आरती, नृत्य, सङ्गल-गीत अहरि कृत्येकि कानेने कौन-सः पुण्य 📖 होता है। अर्काद्यन, जल एर्र प्रशासक आदिसे स्नान, कुश, रक्त पुण, सुवर्ण, गम, गम, सन्दर, कपूर आदिके द्वारा पूजन, गन्छटि-विलेदन, पूजन-जवन एवं वासर, अव्यक्ष-दान और व्योपरूपमे भगवान सुर्व तथा अरुणकी पूजा करनेसे जो फल ब्राप्त होना है, वह बतलानेकी कृषा करें।

> सार्वाक्यकेम्बर-लेक्ट्रेन क्यकेम्य क्यां संबद्धान्तम्॥ भारतस्य समें पिया सर्वात्स्यतः समे सह । विस्ति । व्यारकार्यः स्टेस्क्यांसरोजसे त

🔤 होकर सम्पूर्व 🔤 प्रकटीक 🚃 भगवान् पास्कर, विष्यु, कारूचक, अधित नेजरके, संख्य, कारू, इन्ह्र, क्सु, ऑप्र, राग, स्नेक्सच तथा एकच्छानारं स्वसं युक्त--ऐसे नामेंबाले अवस्त्रे नगरकार है। आप 📖 रिवासी एवं संसारके कल्यान तथा महरूकारक ै, आवका सुन्दर रूप अन्यकारको नष्ट करनेवास्त्र है, जान राजधी निधि है, आपन्ये नमस्त्रर है। 📖 क्यंदि चतुर्वगस्त्रर है तथा अपित केवाली हैं, त्रवेष-त्रवेषसे रहित हैं, संस्तरक 🚟 कारण है, आप पूछ एवं प्रमुखन्तरूप है तथा जून हवं पश्चलके प्रदात हैं अप पत्म शामानकप है तथा सहाज एवं अध्यक्ष है, ऐसे हे पराव्या करनाव्या करनावो ! अपन मेरे क्रपर प्रस्ता होद्वये, उत्तरको 🚃 🕏 🗵 बहुतकोके बार दिलकीने पहानेताको सूर्व-सर्वणको

विश्वादी रिव्यक्तिके कारण-स्थापन पानकान स्वर्णिक ! श्रापकी 🚃 हो । अजेव, इंस, दिवासर, महान्यह, भूकर, गोबर, भाव, साग, स्तेक्क्क्क्क्केप, जगरकी, बागू, 📖 अनुसा, संबास्तर सथा शुरुवान ! अल्पनी जप हो । कहनाने अवन्यवर्धन, अविवेदन्त्र, सक्रथन्त्रहन, स्तेता, अञ्चनकान्त्रे बुद कारनेवाले, प्रातेके कार्यो, शक्तिक, बालेक, संकार, धर्मादे बतुर्वर्गके स्वामी । आपकी रूप हो । वेशसूक्या, प्रकृष, सरवकर, सूक्रप, अरेक्टिक विभाजन,

SE LICITION

प्रवासकार उनकी स्तुनि की--

बस्तान-पश्चिकप तत्त्व व्यवस्थ ! अपन्ते 📰 हो। प्रयो | 🚃 विकरूप, विकर्ममां, ऑक्स, क्वट्कर, त्याहाकार 🚃 राज्यस्य है और 📖 ही अधमेधरूप, अपि एवं अर्वभारूप है, संस्करणी सागरने धीक दिल्लनेवाले हे जगराते। यै संस्थर-स्थापरचे हुन 🖿 🐧 मुहे अपने हायका 🚃 🚃 देशिके, उसरको जब हो ।

मगन्त्रम् विष्णुने सूर्वनस्थयनको सन्त्रः और शक्तिपूर्वक क्यान कर उनकी खुलि को, भाग इस प्रकार है—

भूतभागन देशदेशेत ! आप दिवासर, रानि, भागू, कर्मच्य, परस्कर, थग, इन्द्र, किय्मु, हरी, हेस, अर्क-इन क्योंने प्रसिद्ध हैं, अवस्था क्यूबार है। सीकार्य ! अवस निष्, 🔛 📉 , प्रथमक्तक, प्राक्तक, विमूर्ति, विगति है, 🚥 🙃 पुरु, 🚟 बंद तथा बारह हाचबाले हैं, 🚃 समञ्ज लाग तथा प्रतिपर्यके अधिकति है, देवताओं तथा वर्गेकि की अस्य हो अधियति है, अतुकते नमस्त्रार है। जनस्वानिन् ! आच ही हत्या, रहा, प्रजानति, श्लोम, आदित्य, ओकार, कुरत्यके, कुंब, सूक्त, अग्रिर, परग, करण, है, देवक, असूर तथा जानव आदि सची अवपसे ही उत्पन्न हैं, ः कम्प्यके अस्त्यम् संस्थारकी तत्सीत, पालन एवं नेकारके रिप्ते सदात, विच्यु एवं हिरण करवार हुए हैं, आक्रमे क्यान्तर है। प्रयो ! अस्य ही बेद-कप, दिवसस्तकप,

विकास विकास के विकास का अपने के अपने कि अपने का अ वलकताव वर्षेत्रविक्रोत्रकं : सेव्हरू सोधुरूपुरः मुर्वतः स् उसे दर्गः ह स्रोधार्यभविक्रीयम् नोस्कातं निर्माधीयते । जुलान प्रत्यक्तम् शुक्कातं शुक्काते । अभिनेत्र प्रकारकार प्राप्तनेत्रसम् वै २०. । स्वयो स्थानकार स्थानका स्थानका स्थान सहादेवान सहस्रपान सहसे पायतको। अंदर्भ व समद वै कुर देश उन्तरहो । (क्रांस्क्वी १५३ । ५० — ५७) १-वय पार प्रकारित कर हैन दिस्तार का उनके सहस्रको सन् गोल प्रकार या लेकार्यका वस भारे वक्तो।वस व्यवस्थान कु कड़कान्टवर्धन (त्रवेश रूप परेश रूप मोत्र का कालीय का बार्वा उत्तर । अर्थकांक क्षेत्र वेद्यक्रमध्य अध्यक्षम् वै नदश्यस्यय स्टब्स्यम स्टब्स्य स्थान विधानेपविश्वासम् स्थानादास्य के जन। बहुनावर्गस्यानास् विकास विकासकार विकासकीय में जन। प्राथिता स्वयुक्त स्वयुक्त अधिक प्रकृतिक वशासंभ्यास्त्र TI DEPT TOTAL देव अन्तरको । इसकाराञ्चलो देव का जो गेवरे इस्तुत ॥ संस्क<del>ारणीय</del>मास्य

**्रम्**त्रं क्योंको क्योंक लोक्स्का एक्स्कारका प्र

(क्रायपर्व १५३।६०—६८)

यह एवं हानरूप है। किरणोक्कार ! भूतेत ! चेक्ते ! संस्करमें निमप्त हुए समन्द अस्य प्रस्का होहचे, अस्य वेदाना कृते प्रशासकार मार्टि, अस्पार्ट का हो, अस्पार्ट निरम नमस्तार है<sup>1</sup>।

सहादि देवताओंकी सुतिसे भगवान् सूर्व बहुत ही प्रसात और उन्होंने हात. विच्यु तथा महादेवको अपनी पक्ति तथा बाला अनुमह प्राप्त करनेका कर बाल करते हुए कहा—हे विच्यो ! आप देव, दानव, वक्त, व्यक्ति मध्ये आदि सभीपर विजय बाल कर अजेच रहेंग । सम्पूर्व बाल पालन करते हुए आपकी बाल अचल बाल कर रहेगी । सहा बाल व्यक्ति सुदि बाल समर्थ होंगे और देरे महादिसे संबद भी इस संसादका संबद कर क्रांके, इसमें कोई संदेह नहीं हैं। मेरी पूजाका पहलाकाय आपकोन

भगवान् सूर्यके इन स्वास्त्र सुन्तर स्वास्त्र केहे — भगवन् । हमलोग स्वास्त्र परम पूजनंद पूर्वि हो दिकाची की दे रही है, बेक्स अववश्य आकृति और यात्र तेन हो स्वास्त्र पढ़ रहा है, यह तेन आकार-विकेत स्वास्त्र करण स्वास्त्र पढ़ रहा है, यह तेन आकार-विकेत स्वास्त्र करण स्वास्त्र रहा है। यह तेन आकार-विकेत स्वास्त्र करण स्वास्त्र विवय-वस्त्रुचे नहीं रूपहा, स्वास्त्र विक्ती में स्वाह्मको मीत स्वास्त्र स्वास्त्र स्वाह्म स्  श्वासिक्ये बाज स्वकार-स्वयमें प्रकट हो, जिससे कि
 इमलोच उस सावकर-स्वयक पूजन-अर्थन कर सिद्धिको बाज करनेमें समर्थ हो जाने।

प्रमाणान् सूर्यने बाह्य-पहादेवजी ! ऑपने बही अच्छा चात पूछी है— आप दातचित होकर सुने। इस अगत्में केंद्रे कर ब्याब्य महिंची है जो सन्पूर्ण संसारको व्यवस्थित करकी हुई सुजर, श्वलन, पोषण तथा 🚃 आदिमें प्रत्येक क्रकर जंदक रहती हैं। मेरो प्रचय मूर्ति राजधी मूर्ति है, जो महाते प्रतिकंत नाममे प्रतिन्द है, यह करपके आदिमें संसारकी सुद्धि करती है। द्वितंत्र सारिकारे पूर्ति विक्युसारुपियी है, जो स्वातका सारान हैंसी पुट्टेका किवारा करती है। तृतीय पूर्ति 🚃 है, जो चनकान् अंकरके नामसे विस्तात है, यह हायमें विकृत करन किने करनके अन्तमें विश्व-शृष्टिका वंडोर् करती है। मेरी कर्त्य पूर्वि सरकाद गुणीसे असीत तथा उत्तम है, वह रिश्त वर्त हुए थे। दिलाची नहीं बहुबीब उस अनुस्य असिके क्षण का स्थापन संस्तार विश्वासकी जात पृथ्वा है। अंत्रेकार ही मेरा कारण है। यह कारण संधा निकाल और सामार एवं 🚃 क्षेत्रं क्योथे 🖟 । यह सम्पर्ध शंक्षाये व्यक्त रहते हुए इस्तारक कर्म-फलोसे स्था नहीं रहती, क्यांने परायवकी 🔤 अस्ति रहते हैं । यह प्रवादा आयलेगोंके अक्रवको दूर करने 🚌 संस्कृतने प्रकार करनेके दिन्ने उत्पन्न हुआ है। अवपत्येग केंद्रे इस अस्तुह (गिरिन्स) रूपकी आरोक्ना कींद्र । करुके असमें मेरे आकारकारणे सभी देवताओवर तम 🖥 कल है। इस समय 🚃 आकादाक्य 🖥 एउटा

्नासी। टेक्टेकेसे पूरास्त्रकारमञ्जू । दिख्या मेंचे बादु आर्थ्य खासरे धारत् ॥

हर्त निर्मा हरी हंसाओं नोकाम निरम् दिख्या । विर्मेश स्थान कर्त विष्णु । विरम् कर्त कर्त विष्णु । विष्णु कर्त विष्णु कर्त विष्णु कर्त विष्णु । विष्णु कर्त विष्णु कर्त विष्णु कर्त विष्णु । विष्णु कर्त विष्णु कर्त विष्णु । विष्णु कर्त विष्णु कर्त

हैं। पुनः पुरस्ते ही अध्यदि देवगण तथा चरावर उत्पन्न होते हैं। 🛮 त्रिलोधन ! मैं सम्पूर्ण जगत्त्रो क्या है। इसकिये हैं। व्योगस्थकी आराधना आपसहित अद्धाः विका माँ को । विलोचन । 📖 गन्धनादनकर दिव्य भक्तम 🎫 नकता करके परम ज्ञूभ कड़न्न-सिद्धिको जात करे । जनाईर ! 🖮 मेरे क्लेमरूपकी हुए। और धीरूपूर्वक 🚃 कलपञ्चमधे निवास कर को । जगरकी सक्षा 🖫 अन्तरिक्रमे जकर लोकपायन पुरवस्ति देंगे मेरी अवस्थान को । इस प्रदार आयवना करनेके पश्चाम् कट्यके समान केलाकर, रहिममालसे युक्त मेरी मूर्तिका आवल्बेन इईन करेंगे।

इस प्रकार सुर्वनारायकके 🚃 शनका चारका विष्णुने उन्हें प्रजाम कर कहा—देव ! हम सम्बं त्रिण उत्तम सिद्धि जा करोनी सिथे आयो परम तेजनी स्वोधकपान पृष्णन-अर्थनकर किस्त विविधे अस्याचन करे। चरनचुनित १ कुरक्या 📉 📉 🚟 🚃 🚎 🖼 दिवपर दय क्रीक्षिये, व्यालव इयलोगीको याथ विरोह 📾 रीनेमें कोई जिल्लामा न पर्श्व करे र

भगवान् सूर्य बोले—देवलओं के कतुंच्य ! अस्य रक्षणित होकर सन्धि। अतयका 🕬 🎟 👭 🛊 । 🛗 अनुषम क्योमकपकी आपलीग कार्यक्र करे। 🚾 एक मध्याक्रमालमें चाँतल्यंक सर्वय करनेसे इच्चित आंतलो प्राप्त ते अति है। परवान् सुक्ते इस कक्को सुकार खाडी: देवलाओंने प्रणामकर कहा—'देव ! साथ भन्द है. हमस्त्रेपोको आपने अपने तेशके अखदित किया है, इनलोन शुरामुख्य हो गये । आपके दर्शनपालसे हो 📰 श्वेनोधी 🚁 माप्त हुआ 🖟 📖 तम, मोह, तन्द्रा आदि सन्ते संग्यन्तामें ही कु 👭 गये हैं। हमलीग कापके ही वेजके अक्करो उत्पति, पालन और संदार करते हैं। अब आप क्योपके पुजन-विकित्तो बतानेकी कुछ करें ('

चगवान् आदित्यने कहा-अवस्तेग संख ही कह

रहे हैं, जो में है बही आयरनेग भी है, अर्थात् आपर्शनोंके रवरूपमे में हो रिवत हूँ। अईकारी, विसूत, असरप, कलहसे 🖚 स्पेगोके करूवालके सिथे 📖 आपस्त्रेगोके अन्यकार अर्थात् तम-मोहादिको निवृत्तिके किये मैंने तेजोपन स्वरूप क्रम्य, इस्रोहन्ये आवेषार, मान, दुर्ग आदिका परिस्थाप शक्क-भक्तिमुर्वक निरक्त आयलोग मेरी आराधना करे। 🌃 मेरे स्थाल-विकास अस्य स्थापका दर्जन प्राप्त होगा और मेरे दर्जनमे सभी सिद्धियाँ आह हो आयेगी । इतना कहकर सहर्वाकरण पणवान् सूर्य देवलओंके देवते-देवते अन्तर्धान हो नवे। धनवान् 🚃 तेज्ञाने रूपका दर्शनका स्था, विका 🚟 दिन्ह संभी सार्वार्थचिका होकर 🚃 कहने रूने — 'वे तो अदिवि-पुत्र सूर्यनसम्पर्क है। ये महातेजसी रक्का प्रकारक करनेवाले सुर्पनारायण है, क्लॉन हम सभी लोकोको महत्त् अन्यवस्थानको तकसे निवृत्त वित्य है। इम प्रकारने क्यें सिद्धि 🚃 हो सके (

🚃 🔤 श्राह्म-प्रतिपूर्वक पूजन 📖 हिन्दे 🚃 पुरुषाचेत्रमे, यहवान् विष्णु शास्त्रवाममे 🚉 वृषध्यप इंका गन्धपट्न पर्वतपर क्ले गरे। वहाँ मान, दर्प तथा व्यक्तारक परिताम कर बहाजी कर कोगसे पुतः ज्योगकी, यक्कान् विका काल्ये अञ्चल कोलको और हिल आहिक्यो तेवारे अभिन्त कोममुसको सदा प्रीतपूर्वक पूजा करने लगे । अक्टबरे देवला गरंब, अंद्रेख गृत्व, गीरा आदिले दिव्य मर्चेक मूर्वकायनको पुकार अवसे अवल गीतः और प्रस्कास-प्राप्तिके 🔤 उत्तम स्वरूपमें 📭 हो एवे ।

**स्यन्त मूनि कोले**—महराज । देवताओंके पुजरते प्रसान हो ये एक रूपमें बहुतके पास, एक रूपसे इंजियके पास एक रूपसे किन्तुके पास गये एवं अपने चतुर्थ रूपसे रभावद के काकारमें स्थित रहे। परावाद सुपने अपने बोपनलसे पुरस्-पुरस् उन्हें दर्श दिशा दिया 🚃

१-अन्य पुरुषो तथा संस्था, केवामा आदि वर्शनीके अञ्चार जावनकाम मनरावको, नगक आंक्राको और आंक्रा महत्-सरावे, महतराकर अञ्चल-तलाने 🌃 🚃 अन्य सन्-तलाने रूप होता है, को संकारप-निकारको जुन्य होता है और पुनः मृहिके सन्ध्य सन्-तलाने कारायके साथ अस्पत्तः, महाव, 📖, अहंकारके 🚃 अववदात्त्वदे कर्त्वतः होती है ।

२-बेगरवरिक्वमे 🚃 📰 🖁 अन्तर्गत रिश्व व्यवस्त प्रदु-कोव-उच्यान (द्वार-उच्यवक्त)मा निर्देश है और प्रस्नसूत्रके 'अभ्यत्स्वरित्तन्नुत् इस सुत्रने 🚃 अध्यत्न वर्ष 🚃 गा। 📹 🗓 ।

आरुष स्परिको अपने अस्त योगधरको देख कि चतुर्पुक नदामी कमलमुक-क्षेपको पृज्यो अस्तव ब्रह्म-व्यक्ति स्थान है। सा देखकर व्यक्तिमा भगधार् सुन्दिको कहा—'सुरनेष्ठ ! देखो, हैं वर देवेके क्षित्रे दर्धाकत हैं।' हा

कहा—'सुरभेश ! देखों, हैं कर देनेके किये उपस्थित हैं।' हा सुरकर अंधाजी हर्कने प्रमुक्तिका हो उठे और हाथ जोड़कर उनके समलमुक्तको देखका अति किया-प्रकरो प्रमुख कर आर्थन करने हमो—

च्या करनेकी कोई बात नहीं है। बाव कारण-कपसे डि. प्रथम व्यक्ति करके उसके हो। अब अब्द कर महिन्दे, में डा देनेके दिनों ही अब्दा है।

व्यापनिने कहा—भगवन् । 🌃 शत्य 🗐 इत्तर अतक हैं, सो मुझे करण वर दें, जिससे में शृक्ष 📼 सक्री ।

भगवान् आदित्यने कहा — जगत्त्रति चतुर्मुस ह्याः । आपको 🌃 वसादमे तिहि 📖 🖠 🚟 🛍 अत्र इस् वगत्त्रो सृष्टिकर्मा होगे।

महार्यीने कहा—जनसर्व | || || || ||

स्थानकः होगाः। सगमान् सूर्णं कोले — विस शास्ताः मेरा सहद्-व्योक-पृष्ठं शुंगले मुक्त उत्तम साम रहेगाः, स्थि शहरम-कपने अस्य विकारिका विरोत्ता । वर्षे विवादो साम अधिकोत्तारे सामितारेका

नित्य नियस रहेंगे। पूर्व दिवास्य इन्द्र, अधिक्येणसे इवन्यिक्ष्मेतृतः अग्रीत, वर्षास्यमे यस, नैर्न्यस्थानेश्वासे निव्यास, प्रित्याने करण्य और वायव्यव्योगस्य सामु सभा उत्तर दिश्याने कुनेरकः विव्यास रहेगा। ईश्वतंत्रकोणसे सामा और अवस्था साम स्थाने विव्यास्थ निवास सोराम।

स्थाननीने स्थान—देव ! आश्र में कृतकृत्व ■ क्या, यो कुछ भी मुझे स्वतिये, यह 1881 मान हो गया।

सुष्यम् भूमि बोले—उजन्! इस प्रकार प्रगासन् आदित्य अस्त्रजीको कर मदानकर उनके साथ गम्बस्मदन पर्यवस्य गये, यहाँ उन्होंने देखा—भत-भावन जिल्ला तील

नवस्य गया, जहां अक्षा एका — मून अवन एका का नवस्यमें संस्कृत हैं। ये तेजसे युक्त महेनाका पूजन कर गहे हैं। स्था सम्बद्धार पुजन-अर्थनको देखकर जनका प्रास्तर

तिबद्धार पूका-अर्थनको देसकर करवान् पार
 ते गरे।

मं∘ ≡ 😍 मं∘ ६—

सूर्यभगवान्ते कहा — भीव । 📕 तुमले अति प्रसन्न हूँ । कल ! कर माँगे । मैं 🖿 देनेके 🛗 स्मान्यत हूँ । इसपर मान्द्रेकर्मीने साहास स्मान्य कर स्तुति 🔣 और कहा — देव ।

आन माना कृष्य करें। मान जगराति है। संसारका उद्यार माना है। मैं आपके अंशमें आपके पुत्रके रूपमें माना कुआ है, मान वहीं कों को एक स्थल अपने पुत्रके रिज्ये करता है। मानवन सुनकर प्रमुखन सुर्व बोले — 'संबार ! जो तुम

ात के हो. कि बार्डि के संदेश नहीं है। मेरे लखाटसे तुम कुर-स्पर्ध अला हुए हो। यो तुन्हरे मनमें हो 📺 📰 प्रीची।'

म्बानेक्सीने क्रांक्स—प्रगंकत् ! वरि व्याः मेरे कपर व्याः डि मुझे अवस्थे व्याः पक्ति प्रदान करें, जिससे पहाः व्याः, देव, दानव आदिकः डि व्याः प्राः व्याः सस्कै और

पुर्वके अपने प्रयास होता । सर्वः । हा । हा उत्तर स्थान प्रयान करे । अगवन् सूर्यने 'ऐसा हो होगा' व्यवका व्यव कि

पाम्बन् विन्तुको 🔤 🔛 सारकाम (मुक्तिमाध-संघ) गर्थे। 📖 🔛 देका 🔛 🎚 कृत्यमधिन धरणकर श्रास्तवित हो परण उत्पृष्ट स्थ कर रहे 🖟 और हदयमे पाम्बन् सुर्वका ध्यान

कर रहे 🕼 चणवान् पास्करने 📰 प्रसप्त होकर कहा—

'विक्लो । विकास गर्का है, सुने देशो (' भगवान् विक्लृते उन्हें रिक्त सुन्दाकर सन्वन व्याप्त और कहा — 'कगवाद । व्याप्त विक्लिक करें । विकास व्याप्त विकास विकास विकास विकास विकास

अपने पूजार जैसी कृमादृष्टि रकता है, इसी **व्या** भी भी क्या-दृष्टि कसने रखें।' क्यान्त्रम् सूर्ण बोले— मक्साको । जै पूजारी क्रां

••••••• संयुष्ट को ब्लाम है। जो कुक भी क्लाम हो, माँग हो। मै का क्लाम करनेके रिको ही आपा है।

विष्णु सगवान्ते दक्का—धगवन् ! व वाव कृतकृत्य व गवा । मेरे समान कोई भी बाव नहीं है, क्वेंकि बाव संतुष्ट

होकर **व्यक्ति स्था** कर देने आ गमे । आप अपनी **स्थान** और अनुस्थे पर्याचन करनेको **स्था** मुझे प्रदान **स्था** तथा जैसे ब संस्थापन प्रस्तन कर सक्षे देखा कर स्थान करे । मुझे इस

श्वास्थ्य स्थान दें विससे 🔡 🖁 सभी 🔤 यशस्य, बस्तु

वीर्य, यस और मुक्तसे सम्पन्न हो सक्रै।

भगवान् तुर्वं बोले—'नथल' न्यूक्को ! तुर बहाके छोटे और जिसके बड़े जाता हो, कुछे सभी देवता नमस्त्रार करेंगे। तुम मेरे परम चर्च और परम 🎮 हो, इस्र्रालये तुष्हारी मुझ्ये अधार महिः खेली । जिल ख्येपकप्रका तुमने अर्थन किया है, यह ग्लोप ही कुछरे किये च्याक्यमें जसन्तरसम्बद्धाः कर्षे वरेषः। यह सभी अवयुक्तेने तराज 👯 रहोंका विन्तरक है। समझ लेक इसे अवस्था करते हैं।

सुषम् मुन्नि बोले-एकन्। इस क्रमार मनवान् भारतर भगवान् विकासो वर प्रदानकर अपने स्वेतको करे गये और सहा, किन्तु तथा संबक्ते भगवान् सूर्वकारणाधी पुराकर शृहि, 📖 और संहार करनेको प्रतिह प्रक्र की । कह

अवस्थान आदि चाँवच, एवय और सभी प्रकारके पायोका

🚃 है। यह 🥅 देखेंक उपाधवान है और सैन देखता इस 📖 पूजित हैं । यह 🔛 स्तेज़ोंने भुक्त 🛍 धर्म, अर्थ और

बरमका साधन है। यह कर्म, सर्ग, आरोग्य, बन-फायको प्रदान करनेकरण है। यो व्यक्ति इस आरक्षानको प्रतिदिन

🚃 है अन्त्रव जो 📰 तीन 🎞 📟 करता है, यह आरोप विकास काम होकर भगवान् सुर्वक परमपदकी

का 💷 रेका 🖥 । पुत्रहोन पुत्र, निर्धन चन, 🌃 🚾 विका 🚃

कर देखने सुर्वके 🚃, प्रयामें उनके किरलेकि समान 📗 alian है और अवस्थानरायक सुद्धा क्षेत्र कर द्वानिवेदि इताय

त्यक्ते 🚃 🚃 👣

(अध्याप १५२---१५६)

प्रतानीकने पूजा—स्वान् ! 📖 तेत्रको चगवान् सूर्यनाद्यमणने 🚃 📰 वर अदल मिन्दा, 📟 🚟 पृथ्वीको तरक किया, जो कार्तर एकसम्बद्ध पर्यासा नवनेवाले तथा समस्य जनस्य पालक, महामुखेर्स्टर बीट्ड रोक्षेक आहा, प्राणीमें तेजकपसे स्थान वर्ष प्राणीकी आहक है तथा अरीमों रूप्ये स्थित है, जिनके सहकों किए, महकों नेव तथा सहस्रो करण है, जिनके मुक्तसे लोकविकानक प्रकार वसःस्थलने भगवान् विच्यु और ललाटमे साधान् भगवान् रिय 🚃 🛗 है, जो 🚃 🚃 एवं अध्यक्त-

गांतक, लोककी लानिके किये जो आंत्र, बेटि, ब्लाइ, ब्रुब्ब, मोनानी, सत आदिको उत्पन्न कर इनके प्राट इक्य-पान पहल करते हैं, से युगके अनुस्थ 🚃 🚃 तथा कर,

कारत, काह, मुहर्त, तिकि, मास, 📖, संवतार, १६३, कारुपोग, व्याप्त प्रमाण और आयुक्ते उरवादक राजा

विनाशक है एवं परमञ्जीत और परम तपकी है, जो अच्छा तथा परमात्मके अमसे अने जते हैं, ये ही कार्नि यहाँ पुत्रके रूपमें कैसे अवतरित हुए ?

नहादि जिनकी उपस्था करते हैं तथा बेट-वेजाओं से और देवताओंने प्रभु विच्नु है, जो सी-वॉमें सीन्व और

अप्रिमें तेज:सकम हैं, मनुष्योंमें मन-कपसे तथा तपरिवर्तने तप-रूपसे 🚃 है, जो विक्रहोंने विक्रह हैं, को देवकाओं

और मनुष्ये-सरित समक्ष लोकॉक्ट उत्कार कालेक्ट 👯 🖷

सौर-धर्य-निकम्पणये सुर्वावतारका कवन

रेखेकि देव कावण् सूर्व किसारिये आदितिके गर्वते सर्प लामा हुए ? सहस् । इस स्थितमा मुझे महत्त् का**हर्य** हो का है, भगवान् सूर्वको उत्पत्तिसे आक्षर्वचकित होकर हो **बैरे अपने उनके आक्वानके पूछ है। महामुर्ते । भगवान्** सुर्वेक बल-बोर्च, पराहरू, पश्च और उल्लाहित रेकका आप सर्वेश करें।

मृति कोले—सबन्। आपने पगवान् में 🔤 स्थमचीके अनुस्तर कह रहा है। आप उसे शका-व्यक्तिपूर्वक सुने ।

को मनकान् सूर्व सहलों नेबोबाले, सहलो किरलेसे पुक्त 🛲 सहस्रों मिर तथा सहस्रों हाथवाले हैं, सहस्रों मुकुटोसे मुक्षीपित तथा सक्सी मुकाओंसे युक्त एवं अव्यय है, जो लोकॉक करकाण एवं सभी लोकॉको प्रकारित करनेके

रिज्ये अनेक 📟 📟 होते हैं, वही पगवान् सूर्य कर्मक्क्य केव्हरूक गर्मसे पुत्र-क्रपमें उत्पन्न हुए । 🚃 📗 कदक्य और अदिक्षिये जो-जो पुत्र उत्पन्न होते थे, वे उसी क्षण

कर जाते थे। इस पत्र-विनाशको देशकर पत्र-शीकरो दश्की

📖 अदिति व्यक्तर हो अपने पति महर्षि कश्यपके 📖 क्यों। अदिविने देखा कि क्हार्वि कड़का अग्निके समान

नेक्सी, दन्ड करन किये कृष्य मृगवर्मपर 📰 तथा

करकरू करण 🔤 हुए भगवान् भारकरके सदस देदीयकान

हो रहे हैं। इस प्रकारने उन्हें लिया देखावा आदितिने प्रार्थना करते हुए कहा — देख! आप इस तरक निक्रिना होका को हैं ? मेरे पुत्र उस्ता होते हैं। मृत्युको हा होते हा रहे हैं। अदितिक इस कानको सुनकर ऋषिकों हैं। काइयपानी सहारतेक गये और उन्होंने आदिविकों हा साहारतीको कारकार्यो।

अव्याजीने कहा---पुत्र ! इमें परवान् भारतके पत्र दुर्लम स्थानक चरुना खडिये । यह कहाना 📖 कहाना 📟 अदितिके साथ विमानपर 🚃 होकर सृद्धिको 🚃 गये । उस समय सुर्वलोकको सध्यये कही केट-कान को हते यो. कहीं यह हो रहा था। बहाया केदनदे जिल्हा दे दहे थे। अक्सर पुरानेके जता, विद्याविकार, मैम्बेनक, वैद्याविक, वेदानकिंद्, लेक्सप्रीतक आदि सभी सुर्वेदर उपसन्तके लगे हुए थे। विद्यम् सहाण जप, तप, क्रमा आदिने संलक्ष थे। अस समाने दीवनाली भगवान् विकासको 🚟 कार्यक आदिने देखा। राज्याच्या पुर कुरत्योः, असूरोके गुरु गुरुवार्य आदि भी बहीपर भगवान् सूर्वको उपकार का सं वे । दश, प्रचेता, पुलह, मरीचि, भूगू, अदी, चनिक्क, गीलम्, नारव, अन्तरिक्ष, तेज, पृच्ची, हुन्हर, सार्ज, रूप, रस, गन्ध, प्रकृति, विकृति, अञ्च-उपज्ञोप्तदित पारो के: 🎹 🚃 ऋतु. रंकरण, 📠 आदि बहुतसे मूर्टिबन् 🛅 भगवाद मारकरकी स्तृति-उपासना कर रहे थे। अर्थ, भूमें, बारा, बोध, देव, हर्व, मोह, मत्सर, सन, बैक्स्ब, म्होबर, और, काल, किशकर्मा तथा अधिनीकृत्यर अवदि सुन्दर-सुन्दर कार्यक्रेके भगवान् सूर्वकः गुणगान कर रहे थे।

विद्यानीने परावान् महकारसे निवेदन किया— चंक्यन् । आप देवमाता अदितिके गर्भसे उत्पन्न क्षेत्रम् स्टेब्स्य करणाण कीविये । इस वैस्त्रेक्यको अपने तेवसे प्रकारिका क्षित्रमे । देवसाओको द्वारण दीविये । असुरोका विज्ञास एवं अदिति-प्रतिकी रक्षा कीविये ।

भगवान् सूर्यने सहा—अस्य वैसा 📖 से है, 🚟 ही क्षेत्र। प्रसन्न होकर महर्षि 🚃 देवी अस्टिकिं साथ स्था अञ्चली चर्छ आने और **स्था** अपने **स्था** वसे गर्ने।

सुमन्तु मुनि बोले—महाराज । कारशक्तरमें मगनान् सूर्व अदिशिके वर्षसे राजन हुए, जिससे तीनी लोकोने सुक सा कर और विकास से गया देवताओंकी वृद्धि हुई और राजके कथापने सभी लोगोने बाब आनन्द करार हो गया ।

इस प्रकार देवनाता अदितिके गर्मसे भगवान् सूर्यके व्यक्त व्यक्त स्थान अध्यानाये दुन्द्रीयाँ करने रूगी, गण्यांचा वान करने रूगे। इदस्ताता भगवान् सूर्यको सभी देवनाय, प्रति-वद्धि त्यस दस्त प्रवादित अपीर स्तुति करने रूगे। उस समय एकादस रह, अधिनीपुर्वार, आदी वसु, व्यक्ति कर्य अपीर प्रवाद व्यक्ति त्यस अप व्यक्ति कर्य अप व्यक्ति क्या अपीर व्यक्ति क्या अपीर व्यक्ति क्या व्यक्ति क्या होत्यस व्यक्ति क्या व्यक्ति क्या होत्यस व्यक्ति क्या व्यक्ति क्या होत्यस व्यक्ति क्या व्यक्ति क

केटोक्स नेव लगा १९६६ बारह नागीसे युक्त भगकान् सूर्वको पुत्र-कथमें बारकार महावि काश्यय आदितिक साथ परम संतुष्ट को यसे एक साथ विश्व इर्वको साथ्य हो गया तथा सभी साधार भयभीत हो गये।

म्मान सुनि कोरो---एकन् । इस स्था मगवान् मस्तरको स्थास करके सहाज्यीने सूष्टि करनेका वर प्राप्त स्थाय और काववस्तुनिने स्था मगवान् मास्तरको प्रसम कर उन्हें पुरस्तरमें प्रसा सा स्थिता । (अध्याय १५७---१५९)

## महादि देवताओं हारा सुर्वकि विराद-सरका दर्शन

महाराज स्थानीकने कहा — पूरे ! आको काळान् सूर्यके अनुत घरित्रका वर्णन किया है, विनका कूका व्या आदि देशक प्रतिदिन विधिषूर्वक करते छुठे हैं तथा जिस सहकी महा), किया, विव्यु, विव और सको देवता अस्यवधा करते छते हैं, उसे आप करायें।

सुमणु सुनि बोले—राजन् ! एक बार पगवान् तिन्तु और महाजी हिमाबराभर गवे । वहाँ उन्होंने देशा कि भगवान् आप अर्थवन्द्र धारण किये पगवान् विवासकन्त्री पृष्ठा बार हिं हैं । बार्डा और विव्युक्त उनकी पृष्ठा की तथा उनसे कहा—'भगवान् ! आपरानेगीन पगवान् सूर्वको अस्ताधना बार उनके किस स्वापना दर्शन किया है । मुझे बार्डी परा। अस्ताध जानेकी बार्डी ही अर्थिरकाम है, इसे आप कार्यों !

इसकर वे होनों बोले—इसलोगोंने भी उस करन क्यांके करको है। इसे उस करन असूत करको अस्तावकके करको एककि संख्या उसकार सोने कि स्था उसकार होने कि स्था करको अस्तावकके उसकार होने कि स्था करको स्था करको स्था करकार होने कि स्था करको दिव्य कर्कत करको विव्यक्त करको निवर हो, उसर हान करके विलोधन मनवान् प्रसूत और सिर मेचे करके प्रसाणिक लेके करके प्रसाणिक सेवन करते हुए सम्बान् स्था सुर्वेदकता दर्शन कर सिवर करके उसकार होने करके प्रसाणिक सिवर करके हुए सम्बान् स्था सुर्वेदकता दर्शन कर सिवर करके उसकार स्था करके स्था कर स्था करके स्था कर स्था कर स्थ कर स्था कर स्थ

उन्होंने कहा—गोपते ! हमलोग आपके दर्शनके कृत-कृत्य हो गये हैं। पहले ही अवस्थी अवस्था करके हमलोगोंने शूप कॉको प्राप्त कर लिया है। आपकी दश्वसे कृपलोगोंने उत्पत्ति, स्वतात और विचादा करनेने समर्थ है, इसमें किसी प्रकारका संद्राय नहीं है, किस् देवदेवेश ! इमलोग अवस्थे बाद दुर्लग कपका दर्शन करना चहते हैं। उनके बचनोको सुनका स्त्रेकपूजित सगवान् सूर्वने उन्हें अपना परम दुर्लय तिश्रको उन्हात विराट्-रूप दिस्त्या। इनके अनेक दिस तथा अनेक मुख है, सभी देव तथा सभी लोक उसमें विवत हैं। पृथ्वी पैर, सर्ग सिर, आंध्र नेत्र, पैरकी अंगुलिय विराहण, हायको अंगुलियाँ गुहक, विश्वदेव जंधा, यह पृथ्वि, अपसागण केहा तथा तारागण ही इनके रोम-रूपमें हैं। दस्ते दिखाएँ इनके कम और दिक्तालगण इनकी भुजाएँ हैं। वायु नामिक, प्रसाद ही श्राम तथा पर्म ही मन हैं। सत्य क्या क्या, एक सरश्यती जिद्या, मीवा महादेवी अदिति और सार्य केविया एक है। सर्गका हम नामि, केवानर अग्नि मुख, गणवान् कहा। ह्या और उदर महार्थे क्या है, पीठ आठों यसु क्या सभी संक्यि परन्ददेव हैं। समस्त क्या होंत एवे गोरिका विराहण प्रथा हैं। महादेव स्त्र प्राण, कुनियाँ समुद्र हैं। इनके उदरमें गणवाँ सिर नाम है। लक्ष्मों, मैथा, धृति, काणि

सुन्यम् सून्ये भीते — एकन् । सबदेवसय भगवान् सुन्ये इस विराद् क्ष्मको देखका सहा, दिव और भगवान् विन्तु परम विभिन्न हो गये। उन्होंने बाह्य श्रद्धको भगवान् सुन्ये क्षमा सामान

🔳 परकारकका परमण्य है। दो सान, दो कृषित और चार 🔣

🛮 अबर से इन्हें 📺 है।

भनवान् सूर्विषे कहा—देवो । आप सबकी करिन उपस्कारी क्षेत्रत्र होकर अप सबके करूबाणके रिन्धे में केलिकोके हारा सम्मधि-गण्य अपने इस विश्वद् कर्यको दिसलाया है। इसपर वे बोले — पंगवन् । आपने को अहा है, उनको कोई में संदेह नहीं है। इस विश्वद् कर्यका दर्शन पाना बेलिकोके रिप्पे में दुर्लम है। असपकी आराधना करने तथा आपका दर्शन करनेपर कुछ प्राच्या नहीं है। आपके समान इस स्थेकमें दूसरा कोई देव नहीं है।

राजन् ! लहादि देवता परम अकृष्ट इस रूपका दर्शन कर हरित हो गये और उन्होंने पगवान् सूर्यका यूकन-आराधन कर परम सिद्धि प्रमा की । (अञ्चल १६०)



## स्वींपासनावध फल

सतानीकाने कुछा—मुदे ! शाधने कहवान् सुनिक् विवायमें जो कहा, यह साथ ही है, संस्वरके मूल कहान तथा परम दैवत भगवान् सूर्य ही है, सम्बेको कही देश प्रदान करते हैं। भगवान् सूर्यनारायकके पूजनमें जो कहा प्रता होता है, अस्य उसे कारकोकी कुछा करे।

सुनन् मृति बोसे—- राजन् । जो व्यक्ति सरिरायय पर्णान् सूर्यको प्रांतश्च कर पूजन करता है, यह अक्ताब तथा भगवान् सूर्यको सहयोग्य प्राप्त कर तेता है। जो व्यक्ति धरावान् सूर्यका तिराकार कर सभी देवताओका पूजन करता है, उस क्षित्रके साथ भावाग करनेवाला कर्वता भी राज्यान के व्यक्ति भी राज्यान के व्यक्ति क्षेत्र भावा भावाग करनेवाला कर्वता भी राज्यान के व्यक्ति क्षेत्र भावा भावाग करनेवाला कर्वता भी राज्यान करता है, उसे यह, ..., तोर्थ-व्यक्त क्षेत्र करता है, उसे यह, ..., तोर्थ-व्यक्त क्षेत्र करता है, उसे यह, ..., तोर्थ-व्यक्त क्षेत्र करता है, उसे यह, ..., तोर्थ-व्यक्ति क्षेत्र उसके सम्बन्धक, पितृकृत एवं कीक्ष्मक—- इन तीर्थका इस्त्र हो बाता है और बाद इसके अव्यक्ति वृत्ति क्षेत्र वृत्ति क्षेत्र क्षेत्

का कर लिए है।

जो व्यक्ति भगवान् सुबीर विष्ट्रमय व्योपकी रचनाकर गम, वृप, कुम, बाल, बन्दन, फल आदि उपचारीसे पूजा करता है, यह सम अयोधे मुक्त हो कथा है और ओई हेटा नहीं पन्न । वह चनवान् स्वर्वेक समान प्रकारपूर्ण हो अव्यय प्रदक्ते 🖚 📖 है। अपनी प्रतिक्रें अनुसार परिवर्षक पगवान् सुर्वका परिदर निर्माण करनेव्यस्य सर्वमय |||||||| आरम्ब होकर चनकान सुर्वके साथ विद्यार करता है। यदि साधन-सम्बद्ध होनेवर की बाह्य-विकास पून्य होकर वन्दिर आदिका निर्माण करता है तो उसे कोई फरू नहीं होता । इसिक्से अपने करका होन परान करना च्याहिये, उसलेसे दो भाग धर्म तथा अधीयर्गनमें साथ यहें और एक थागरे जीवनवादन वहै। 🖛 सम्बद्धित भागम रहनेपर 🖫 वदि कोई विना प्रतिके अपना मर्वाल मरम्बान् सुर्वके लिये अर्पण कर है, तब भी बह 🚃 📖 💹 होता. प्रवृत्त इसमे भारतको 🖫 🚃 है<sup>९</sup> : पानव Mille ए: म और प्रोक्तरे काशुरू होपर **mill** है. जा परवान सुर्वको पूजा नहीं 🚃 जारक **जारक भगवान सुबंक अधिरिक्त और** कीर ऐसा देवता 🛘 जो कामभन्ने क्राह्मक दिला सके। (अध्याय १६१-१६२)

# विभिन्न पृथोश्चरा सूर्य-पूजनका कल

सुमन्तु भृति बोरी—एजन् ! अमिन तेजस्ती भगवान् सूर्यसे बार्डिये बार्डिये स्वाद्धित कार्टीका उसारण करना व्यक्तिये बार्डिये हात्तु. भेरी आदिके द्वारा महरूर-ध्यति करनी व्यक्तिये । तीनी संध्याओमे बेटिक ध्यतियोसे तेष्ठ फर्ट होता है । उस्सू अस्टि मम्बुनिक्क व्यक्तिके सहरो नीराजन करना चाहिये । जितने सर्व्यक्ति व्यक्त नीराजन कार्डिये प्रमाणन करने बार्डिये । विक्रमे सर्व्यक्ति व्यक्ति होना है । भगवान् सूर्यको बार्डिये गोरिक प्रश्चमञ्चले और पन्त्रपूर्व कुरायुक्त जरुसे कान करानेको सहस्त्रान करते हैं । वर्षमे एक स्वर्यक्षेकमें प्रतिद्वित होता है । ा पिनरोके उदेश्यले दवितल जलसे भगवान् सूर्यको स्थान व्याम है. उसके चितर मरकोसे मुक्त होकर सर्ग वले जले है। विद्वीके कलशानी अपेक्षा ताम-कलशासे स्थान कलमा भी मुख बेह होता है। इसी प्रकार चंदी आदिके कलशान्य स्थान करानेसे और अधिक फल प्राप्त होता है। घगवान् सूर्यके दर्शनसे स्पर्श करना होत है और स्पर्शसे पूछा है है और स्पर्शसे पूछा है है और स्पर्शसे पूछा है है और स्पर्शसे पूछा होनेवाले वापेके प्रश्न प्राप्तान् सूर्यको यूक्सान करानेसे नह हो अते हैं।

🚃 सौ ५७ (त्व्यमन छः कित्ने 📖 ग्राम) प्रमाणसे

(जल, पद्मापत आदिसे) स्वतं करून 'स्वत' कहत्सल है। पवीस पल (लगपग हेव किलो) से सान कराना 'अध्यह-कान' कहरवात है और दो हवाह कर (स्थानक एक सी बीबीस किलो) से कान अधनेको 'महास्वत' कहते हैं।

जो मानव भगवान् सूर्वको पुष्प-करुको कृत आर्थ बहुत करता है, वह सभी लोकोंने पृष्टित होता है और सर्गलंकाने अर्जन्दत होता है। 🖫 जहानु अर्थ—अल, एक क्लाब आप्रधान, भी, दही, मधु, लाल कनेल्बा कुल क्या त्यल चन्दन—कामकर भगवान् सूर्वको विकास कारत है, 📰 दस इमार अर्थतक सूर्वलोकमें विकास करता है । यह अञ्चाह अर्थ पान्तान् सूर्वको अत्यन्त प्रिय है<sup>1</sup>।

वॉसके पात्रसे अर्थ-दान करकेरे सी गूना चल निर्हाके पारते होता है, निकृषि पारते सी कुल पारत तालके पारते होता है और पत्नवा एवं कमलके पत्नेये अर्थ देवक कार पालक फल प्राप्त केला है। रक्तपालके हारा अर्थ करान करना लाम गुना कर देता है। सुवर्णकाके द्वार दिन्क गन्क अर्थ नेपेट गुना फल विकास होता है। इसी प्रवास बाला 🐃 नैवेश, युप आदिका समाप्तः विशेषक प्रात्तेची विद्यालयके उत्तरोत्तर श्रेष्ठ फल एक हेना है।

भ्रमिक ना द्वित दोनोको समान हो पाल मिलना है, बिह्न जो भगवान् सुर्वेक प्रति भक्ति-भावनाने सम्पन्न स्ट्रमा है, इसे अधिक फल मिलता है। बैभव सार्ववर को बोहवस को पूर्व विधि-विधानके साम पुत्रन आदि नहीं करता, वह क्षेत्रपति अस्तरण-चित्र होनेके कारण उसका फल नहीं प्रश्न कर पता : इसलिये पन्त, फल, जल तथा अन्दर आदिसे विकित्तंकः सूर्पकी पूजा करनी चाहिये। इससे वह अनन प्रश्नको का करता है। इस अनक कल-प्रक्रिये चर्क ही मुक्य हेतू है। भक्तिपूर्वक पूजा करनेसे वह सौ दिव्य कोटि वर्ष सूर्व-डोक्टो प्रतिहित होता है।

**एकन् ! सूर्वको पश्चिम्**वीक **स्थापित** पंका समर्पित करनेकश्य दस हजार वर्षतक सूर्यत्येकने निवास करता है। मकूर-पंस्तका सुन्दर पंस्ता सुर्वको समर्पित करनेवास्त्र सौ कोटि क्केंग्क सूर्वरकेकमें निकास करता है।

नाजेड ! इन्कर्त पुष्पोसे कनेरका पुष्प श्रेष्ठ है, इन्करों 🚃 🏥 एक कमरू-पूर्व क्षेत्र 🟗 हवारी कमरू-पूर्वीसे 😎 अगस्य-एवा केंद्र है, इन्हरों अगस्य-एवोंसे एक में गर-पूज बंध है, सहस्र कुशाओंसे राजीपन श्रेष्ठ है तथा क्ष्मर रूपने-पांचेने पारत्यका 🚜 है। सन्त पुर्वीने नेत्वकारत ही सेह है। त्वल बनेत्के द्वारा जो अभवाद सूर्वकी पुरू करता है, 🚃 अकत करतीतक सूर्यत्येकमें सूर्यके समान श्रीकम् तथा पदासम्बे होकर कियान करता है । कोरसे, गुरुवा, विकर, बेर मदार तथा 📖 बेर पूजा भी 💹 माने गये हैं। नाग-कन्मक, सद्भक्तर-कृष, मृहर (बीगरा) में सब समान 📕 को 🗯 हैं। कथपुरः किन् अपनित्र पुर्वोको देवताओपर 🏬 प्रकृत्व पर्यक्षये । गञ्चाईन होते हुए भी प्रवित्र कुलादिकांको प्रकल करना चाहिये। पवित्र पुन्न साव्यिक पुन्न 🕏 🔤 अववित्र पूज तामसी है । शक्ति जीगरा और वस्थापन पूज व्याप्त व्यक्तिये । अन्य निव्य पुरुषेक्षे दिवसे ही समर्पित करक पर्यार्थ । अभीतरे पूज तथा अपक प्रतार्थ भगवान् सुर्वको नहीं कहाने स्वारंत । कलोकं न विलवेक कुछ, कुछ न विकारण पत्र और इंक्के अचावमें तुग, गुरूप और औषध भी सम्बर्धित किये जा सकते हैं। इन सकके अधावने मात्र 📟 पूर्वक पुत्रर-आवधरमे भगवान् प्रयत्न हो जाते हैं। जो माध मारके कुल्ल पक्षमे सुर्गाधित मूला-पुर्णोद्वारा सुर्वकी पूजा करन है, उसे अनन्त फल जार होता है। इतकार-पृथ्वीसे पूजा करनेवारम सभी पापेसे ग्रहत ही मुर्वरक्षेक्मे प्रतिद्वित होता है।

अगस्यके पूजोंसे जो एक बार भी भक्तिपूर्वक मुर्वकी 🚃 🚛 है, वह दस त्यस गोदानका फल प्राप्त करता है और उसे स्वर्ग क्रम होता है।

मनजी, रक्तमाल, चनेली, पुंचम, 📖, अशोक, केत 🚃 कव्यवर, अंबुक, करवीर, कल्हार, दामी, तगर,

१-असः 🔣 कुरसम्बन्धि पूर्व द्विष राज्य अस्। स्तुत्रीने करवेवनि राज्य 🛲 स स्वयुक्ता अक्टाक् एवं अर्थों वे 🚃 परिकोर्निकः । सार्थः 🛗 व्यवस्था

कतेर, केसर, अगस्त्व, बक तथा कमल-पूर्णोद्ध्या भगवान् सूर्यकी पूजा करनेवालः काँटे सूर्वके देदीन्यमान विमानसे शूर्यलोकको प्रथा सामा । अथवा पूजी  जलमे उरका पुर्वेद्वारा श्रद्धापूर्वक पूजन करनेवाला सूर्वलोकने प्रविद्यंत होता है।

(अभ्याय १६३)

# सूर्वच्छी-क्राकी महिमा

सुमन्तु सुनि बोले---राजन् ! अब आग मनवान् सूर्वको अस्पन्त 🔣 सूर्ववद्यो-जनके विकास सूर्वे । सूर्यपद्वी-अत् करनेव्यलेको जिलेन्तिक एवं क्रोक्सहत होकर अविधित-त्रतका पालम करते हुए धगनान् सूर्वको पुजाने संपर रहना चाहिये। बतीको अलग और सावियक-भोजी तथा रक्षिपोजी होना चाहिये। कान एकं आँत्रकार्य करते रहने चाहिए 🛅 अधःस्त्रवी क्षेत्र) धाहिये। यस्त्रकृषे देवलाओहारा, पूर्वाह्रमे ऋषियोद्दारा, अन्तरहामे विक्तेत्रारा 🕮 संस्थाने महत्त्वेद्वारा योजन किया जला है। असः १२ सर्थः कार्लेका अस्तिकारणकार सुर्वत्रतीके भोजनकर समय खाँ। ही माना गया है। मार्गदार्थि मासके कृष्ण पश्चकी च्हाके वह अस आरम्भ करना यक्तिये। इस दिन भगवान् शृर्वकी 'अञ्चलक्' मामसे पूजा करनी भाष्ट्रिये तथा गरियों ग्रेस्ट्राका प्राप्तनकर निराहार हो विकास करना चाहिये। देशा करनेकारक व्यक्ति अतिराय-पहल्क पाल प्राप्त कारता है। इस्के प्रकार चैक्के मराबान् स्टेंबरे 'सहस्रांच्' नामरे पूजा को तथा प्रकार प्राचान करे, इसमें वहजपैययक्तम करा 🚃 📖 है। मात्र मासमे कृष्ण प्रकार पहुंचा साम गोर्का-पान करे । सूर्यकी एक 'दिवाकर' जामसे करे, इससे म्हान् यक बार होता है। फाल्युन समामें 'मार्तव्य' अन्यते चुनावर, गोद्रायका पान कारोसे अन्तत कालतक सर्वलोकाने अविदेश होता है। सैप्र मासमें भारकरकी 'विकलान' नामसे भारतल्लीक पुजाकर इविच्य-मोजन करनेवास्त्र सुर्यन्त्रेकमे अस्तराज्यक रमय अस्तर पार करता है। वैशास मासमें 'चव्हकिरण' नामसे सुर्वको पूजा करनेसे दस हजार क्वोतक सुर्वस्त्रेकमें आकर पाप करता है। इसमें पर्केकती होकर रहना नाहिये।

न्येत मासमें चगकान् मात्रभावरे 'दिशस्ति' अभवे पूजा कर गो-मूनका जल-चन करन चाहिये। ऐसा करनेसे कोटि गोडनका करन करा होता है। आवाद मासके कृष्ण पक्षकी करनेसे सूर्वस्थानको प्राप्ति होती है। आवाण मासमें 'अर्चमा' गमसे सूर्वस्था पूजाकर दुन्य-चान करे, ऐसा करनेवाला सूर्वलोक्सो दस हवार वर्षोत्तक आकद्यूर्वक रहता है। भारपद व्याप्ति मात्रका' जनसे सूर्वकी पूजाकर प्रक्राण्य-माद्यम करे, इससे सभी वर्शोका करने आत होता है। आधिन मात्रके कृष्ण व्याप्ति प्राप्ति चान करनेसे स्थानेस पूजाकर पराप्ति हो। है। व्याप्ति प्राप्ति क्रमा वर्षोत्ति पूजाकर पराप्ति हो। है। व्याप्ति प्रमुख करनेसे स्थानेस प्राप्ति प्रमुख पराप्ति है। व्याप्ति प्रमुख करनेसे स्थानेस प्राप्ति क्रमारे सूर्वकी पूजाकर दुर्वाहुल्का एक कर नोवान करनेसे राजसूच पहला करन जान होता है।

वर्षक असमें सूर्य-परित्यसम्य बाह्यजीको बाहुसंयुक्त करमका क्षेत्रन कराये तथा प्रवाहाति स्वयं और बसादि समर्थित को । भगवान् सूर्यके तिन्ये करके रंगको दूध देनेत्राकी क्या देनी बाहुन्ये। को इस असम्ब एक वर्षतक निर्त्यर विधिपूर्वक सम्बद्धन करता है, वह सभी धार्पेमे विभिन्नेता हो बच्च है एवं सभी करमनाओंसे पूर्व होकर राज्या करत्यक सूर्यक्षेक्यों असमिदत रहता है।

सुमन् युनि कोले—रुप्पर् । इस कृथ्य-वही-जतको यनका सुनि अरुपसे कहा या । यह इस सभी पांधेका ग्रहा करनेवाला है। पिकापूर्वक मगवान् मास्त्राकी पूजा करनेवाला मनुष्य अभित तेवली मगवान् भारतको अभित स्थानको प्राप्त करवा है। (अध्यास ६६४)

## उभयसप्तमी-व्रतका वर्णन

सुमन्तु मुन्ति कहा—एवन् ! अव मै आपको वर्ग, अर्थ, काम, मोख इस चतुर्वर्गको प्रती करनेवाले मनवान् सुर्विक उत्तम अरुको कारणात है। चीव मासके उपस्यकानो

साविक्येको को जाति (कान), गेहँके आटेसे बने प्रकार तथा पूजका कविने कोकन करता है और किलेन्डिय रहता है, सस्य कोलवा है तथा दिनभर उपकार करता है, तीने संध्याओंने भगवान् सूर्य तथा जात्रका उपासमा करता है, सभी कोग-पदार्थीका परिस्थाग कर भूमियर दायन करता है, साम सीमनेपर स्तानीको भूतादिके द्वारा भगवान् सूर्यको कान करता है तथा उनकी पूजा करता है, नैपेदामे मोटक, क्या दूध उच्चा पहाल निपेदित करता है, आह अद्यानीको भोजन कराता है और भगवान्को केपिसा मान निपेदित करता है, यह कोर्ट सूर्वीके समान देदीस्थामा उत्तम विमानमें उपाल्या होकर भगवान् अंतुमालीके परम स्थानको आह करता है। क्यिसर नीके तथा संस्तियोंके दारीरमें किसने रोम है, उतने

एउन् । इस क्यार मैंने आपको इस संस्थर-समुद्रते कर इतारनेकले सौरफर्मने मोश-इत्यके 🛍 वाल्यके । 📖

कुरुनेके साथ वह यथेका 📖 उपनेपकर अवने 🚃

योगका समाध्यक्ष कर मुक्त हो जाता है।

विद्वानोके रिज्ये समाध्यकारिय है।

इसी जवार अन्य महिनोपे (म्हण्से मार्गर्शर्यतक) निर्देष्ट निवर्मेका चारून कारते हुए इत और धगवान् सूर्यकी पूजा करनेसे विद्याल कामनाओंकी पूर्ति होती है काल सूर्य-कोककी प्राप्त होती है। कुक्रनदन ! अहिसा, सरव-चचन, अस्तेय, साचि, साच,

क्ष्मुक, तीनों कारोंने बात बात हवन, पृथ्वी-दायन, रुक्तिकेशन—इनका पारन सभी प्रतोंने करना चाडिये। इन पृथ्विक अक्षयक्षकर बात प्रतास स्वास्त्रक करनेकाले बाति सभी प्रतासीर बात नह हो जाते हैं एवं ग्रेगोका नाइ। हो काल है और सभी कामनाओंके अनुक्रम पारकी प्रति होती है। इस प्रकारका सूर्य-वाती व्यक्ति अधित हेजाबी होकर सूर्य-लेकाको सह बात है।

(अध्याप १६५)

# निश्चभाके-सप्तमी तथा निश्चभाके-बतुङ्ग्य-प्रत-प्रकारम-बर्णन

सुरुष्ट्र मुनि कोले—राजप् । जो 📟 उत्तर पुरुष्ट आकाङ्का रकती है, इसे निश्चभक्तं नावका का भारत चाहिये । पह जत 🛍 एवं प्रथमें परस्क श्रीतिकर्धक, 🚟 🚟 और वर्ग, अर्थ 🚃 🚃 सामा साधक है। 🚃 स्थान 🚃 महानी, जारिय या एक्टबर्क दिन करना चाहिये। सुर्मिक सहित उनको पानी महादेवी निजुप्ताको छी-कपने खेळा. रवत तथा सर्पेक्षे सुन्दर प्रतिमा बनवाये । उसे पुतारिके कान गन्ध-मार्त्यादे दश्च वहाँसे अलंकृत करे । 📺 प्रतिमत स्थापित किये इस कितान और कामे लेहिया काको सिरपर रसकर पगवान् सूर्वके वन्टिरमे से आव। इस प्रतिमाको एक वेदीयर स्वाप्त वर्षे और प्रदक्षिणपूर्वक उसे नमस्कार कर क्षमा-भावन को एवं उच्छास सकर हविके द्वारा हवन करे। फिर सुर्थ-पक्त ब्राह्मणोको हुन्न वक पहनाका मोजन कराये। इस जिल्ला करनेवारत व्यक्ति देवीकामन महायानसे सूर्यलोकमें सूर्यभक्तोंके साथ आनन्द 📰 करता 🤾 फिर वह अनन्त क्वॉतक विष्णुत्वेकने अञ्चलका 🚃

सुम्बद्ध सुनि कोले—एक्ट्! यो को सीधानको

व्यतीत करता है।

स-चतुर्वि जित-सम्मरम्य-चर्णम् अवस्यात्मे संपर्वित होकः वही व्याप्त सहसीको दृशः वर्षकः विश्वपा व्याप्त विश्वपा व्याप्त विश्वपा व्याप्त क्रियार्थः व्याप्त वर्षकः क्रियार्थः व्याप्त वर्षकः क्रियार्थः व्याप्त वर्षकः क्रियार्थः वर्षकः वर्षकः क्रियार्थः वर्षकः वर्याः वर्षकः वर्यवर्यकः वर्षकः वर्षकः वर्षकः वर्षकः वर्षकः वर्यवरः वर्षकः वर्यवरः वर्षकः वर्षकः वर्षकः वर्यवरः वर्यवरः वर्षकः वर्यवरः वर्यवरः वर्षकः वर्षकः वर्षकः वर्यवरः वर्यवरः वर्यवरः वर्यवरः वर्यवरः वर्यवरः वर्षकः वर्यवरः वर्यवर

स्वाको परिवरको प्राप्त व्या है।

इसी व्याप को कई कृष्ण पश्ची सहमीको उपवास कर

विश्व करके पीत रंगकी मारवासे और पीत व्याप करके पीत रंगकी मारवासे और पीत विश्व है, व्याप करके पीत रंगकी मारवासे और पीत विश्व है, व्याप करके स्वाव करियाले पराध्यावसे सातों स्वेकोंने प्रमुख्या के सातों स्वेकोंने प्रमुख्या है।

इसकी-दांकके स्वाव करियाले पराध्यावसे सातों स्वेकोंने प्रमुख्या है।

स्वेकोंने भोगोंका उपयोगकार क्रमणः इस स्वेकोंने क्या अपविद्यात धन-धान्य-स्वावित मनोऽनुकृत प्रतिको प्राप्त करती हैं।

को दुववती करें 🚃 पासके कृत्य प्रस्की सहमीको

सभी भोगोंका परित्वाग 🖿 एक वर्षतक 🚃 स्त्रामिको **ा अन्त** करती और **आज अन्तमे गन्धरि पदार्थ** विश्व**णर्थको** निवेदित करती 📕 तथा मगभ्ये मिल्वोंको चोजन करती 👢 🖚 गन्पर्वसे स्पोर्डमक विचित्र दिव्य महावानद्वारा सुर्वहोक्यो सभी भोगोंका उपभोग कर इस स्तेकमे उक्तेका उज्जाके पति-रूपमें करण 🚃 है।

एकन् । जो सी पान और मचका नात करनेवाले 🚃

सुमन्तु मुनि बोले—सम्बर् । जो की 📟 📟

रोगों पहोंची गाँ। 🔛 🚃 अग. 🚃 🚃

नियमेंका 🚃 कर, 🚃 📰 🔛 एक एक रहती 🚃

रुपकास 📰 🛘 और गुढ़-धीसे एक उनकि-अस 🚃

निवृक्तकं-जरुको करती है, यह परमध्द प्राप्त करती है। एक क्षेत्रक परम अञ्चले साथ इस व्यक्ति सम्पन्न कर वर्षात्तर्ने भोजक-रम्परिको केवन 🔤 और गन्ध-पास्प, सन्दर वक्ष 🚃 पूजा करे। 🚃 पात्रमें हरिसे अलंकृत निवृद्धकेकी स्वर्कश्ये प्रतिमा जेजक-दम्पतिको निवेदित को । देखी निवास प्रोजकी हैं और अर्फ सोजक है । अरः उन 🎟 विभिन्नत् ब्रह्मपूर्वक 🚃 करनी नाहिये।

(अध्यक्त १६६-१६७)

## कामजर सी-प्रतका वर्णन

और उपकासका सम्बन ही फल होता है। श्रमा, सत्य, दय, दान, जोच, इन्द्रिकनमह, सर्वपुक, अप्रि-हचन, संतीय ११वा अर्थार्थका — के इस 📰 🔙 किये सामान्य (मायरक्क) 🕮 (सङ्ग) है।

쨰 🚾 करंगीर्व कादि यातीर्वे निर्देश निवर्गेका पासन करते हुए सुर्वकी पूजा करनेसे आधुरपकी प्रति होती है, साथ हो रहाओं समातक सुर्यक्रेकमा सुक्र मोगकर 📰 📰 अन्तर्भ राजपाने प्राथमि है।

को 👫 🖩 एउन वा 🐯 अधना गर्नसक प्रतिसूचिक भक्तकन् सूर्वको क्रमासम्। करते 🕯 वे स्तमी अपने मनोउनुकुरु फल बार करते हैं। (अध्याप १६८)

# साथ पाप्रथम् सुर्वको अर्थित 🚟 🕯 🚃 🚃 💬 भीर पुरुषे 🚥 गुणुल निकेदत 📟 🐧 🖷 🔛 🗰

समान सार्वकारिक 📟 वैद्यार दक्ष समान वर्षीका मुर्पलोक्तमे आक्रप्यम् भीवन कार्तात 🚃 है। 🔤 🚾 भोगवत क्रमचाः इस 🚃 🚃 जन्द १००० 🚃

तथा अभीपित पतिको प्राप्त करती है। इस साथा वर्गकरके सभी जतीको विधि सम्बन कही गयी है। एक 📖 प्रोकर

# भगवान् सुर्वके निमित्त नृष्ट हुनं रच आदिके दानका हुना

सुरुषु सुनि कोसै—राजन्। अपने विको 🚃 मिही, रूकड़ी, परवर तथा पके हुए ईटोसे 📰 यह या नुस्का **ार्जि कर उसे सभी उपधारणोसे युक्त धरके चगुधान् सुवीह** रिज्ये सम्पर्धित करता 🖁 सह सन्त्री कम्पनाओको 🚃 📖 होता है । माम मामामें नदारहित होकर एक-भूतकत 💹 और 📖 अन्तमे एक रथका 🔤 को जो विनित्र वससे स्टोर्निया. चार खेत असोंसे अलंकत, क्षेत्र म्बल, ...... एवं स्था, सागर, दर्गमारे मुक्त हो। 🚃 🚃 📹 📕 सामान्ये चूर्णसे सूर्यंकी प्रतिमाका निर्माण कर उसे संक्रा देखेंके साथ

रभके निहले जायमें (जहाँ रथी 🔤 है) स्वापित बंद रह्य, केंद्रे 📖 व्यक्तिके साथ रहिमें राजपार्गने उस रथको कुरम्बा प्रकार की-पीर सूर्व-परिदर्भ है अप। वर्धा जागरन एवं पूजा करे तथा दीपक एवं दर्पण आदिसे आलंकृत का स्त्री व्यक्तीय करे। शक्त मधु, शीर और प्रवसे दस व्यक्तिको सार करकर दीन, सन्य एवं अनावीको अपनी इक्टिके अनुसार चेकन करफर दक्षिण दे और संवाहनसे कुक 📰 भगवान् कारकरको निवेदित 🔣 तथा अपने क्युओंके साथ भोजन करे।

व्यक्तिपायमें 🚃 कुछ अंदा 🗪 है, किसे हेप्पाईके आधारण वर्ष दिया 🗷 सह है—

जो नहीं 🚃 🚟 संबोधित 🎮 सहयोगे निरुद्ध कर रखती है और जिसकी क्षिणकर्षे सुवर्णकी है देसे खेरीके क्यरणके, विद्याप 🚃 निर्माणकर उसकी फेटपर सर्वापन कर क्वांनले ....... यन करती है, उसके मधी पाप वह हो जाते हैं। होन पुरूप पुरुष पुरुष स्थिपसे ही करना खाहिये। इससे वह पुरवरूपसे सभी सैराई, 📟 अन्य काले कुर पुन्योलोकों अस्यार कृतीन तथा क्लानका बहुआती एजाको परितरकों प्राप्त काली है।

मन और धर्मसे समन्तित अपने मनो वर्तोमें हेत सूर्यरय-वर्त समस्त श्रीपनाओं अवस्ति वर्तोके पतः है। प्राप्ति पुरुष और सभी वर्तोके पतः का है। वो कावन् सूर्यके का एक सकता है दन करता है, वह क्षिताली वसुकाके दानका कस का करता है। (अध्यक्ष १६९-१७०)

सबसे जेह है. इसरिश्वे सभी कियाओं में क्षय भारत करना

व्यक्तिये। 📖 केन, तप एवं वज्र-दातादि सरिक्रयार्प होची

व्यक्तिके तिये व्यर्थ 📕 जती हैं, इसिटिये हरेधका परित्यम

बार देना चर्काचे : I बाजी मर्ग, सारव, बान III

इट्याने सर्थनेकारी होती है, इस्रोटिये आहिय वाणीका कभी

## सौरधर्ममें सदाचरणका वर्णन

सुमन्तु सुनि कोले—ठकर् ! 🚥 🖩 सीरवर्गसे सम्बद्ध सदावारीका संक्षेपमें वर्णन करतः है । सूर्व-उपस्थानके भूले-प्यासे, दीन-दुःसी, बके हुए, मसिन तथा हेगी व्यक्तिका अपनी प्रक्रिके अनुसार पालन और रखन करना चाहिये, इसमें सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण हो जाती है। परित्र, नीच कथ और पंधी आदि सभी व्यक्तिको अपनी प्रतिके अनुसार में गयी चोड़ी भी बहु कारणके फार्फ दिये जानेते अक्षय-फल प्रदान करती है, असः सभी प्रात्निकेयर दया करती चाहिये। जो सभर वाला बोलसा है, उसे इस लाग नवा परलोकमें सभी सुब आह होते हैं। अस्पूर प्रकारित कारेकाली हरू बाल बादनके स्वापित समान औरता होती है। बांधी मुला भाषी बोरमीधालेको अनुस्य सुक्रको आहे। होती है। दे किन वाकी सर्वाका अवल सोपान है, इसकी तलनाने दान, पूजन, आध्यापन अवदि सम व्यर्थ हैं। अविधिके अनेपर प्रदार अवदे कुपाल-प्रथ करना चाहिये और कार्यन स्थान अधिका वर्ण भारतम्य ही, आपको सभी कार्यके सामक सुन 📖 🚃 हों ---ऐसा कहना चाहिये। 📰 समय ऐसे आद्मेर्बाट्यक्ट अवन बोलने स्वीर्थे। नमस्वरतनक चनक्ये 'स्वीत', महरू-वचन तथा सभी कमेंचि 'आवका निता करकाम हो', ऐसा कहना चाहिये। इस प्रकारके आवरलेका अनुहान करके मन्यूर्ण पापोसे मृक्त होका सुर्वलोकमे जीविहत है। मनुष्योको जैसी चरित मराबान् सुर्वमें हो 🚾 ही चरित सूर्वभाग्नेके मीत भी रखनी चाहिये। किसीके द्वार ज्यानेक करने 📰 📰 होनेपर जो न असबोज करता है, न सहन करता 🖟 🚃 📉 होनेके करका ऐसा धनकी हुए हुने शान्त 📟 सदा दुःससे रहित होता है । सभी तीवेंनि 🚥

प्रयोग नहीं करन काहिये। समा, दाय, तेजरिक्ता, सस्य, श्रंथ, अहिस्स — वे स्था परकार पूर्वकी कृतासे हि प्राप्त होते हैं। मुखि पूरः कोही— कहराय ! स्था स्थान स्थान स्थान पूर्व होते। यह सीट मार्ग पाय-काल, परकार सूर्वकी प्रिय तथा परम प्रीप्त है। यह सार्गी कही तथाय पूजा-अर्था होती देखे हो यह समझना चाहिये कि स्था स्थान स्थान काहिये का प्रयोग स्थानकार करके की चहारि अपने काम चाहिये। देश-पर्य, उत्सव, साह तथा पुरुष दिनीने विवाद स्थान स्थान स्थान करके ही कही है। प्रश्वान स्थान

वार्था होनेकर विःसंदेह सभी mm हो जाते हैं। सौर-अमेंकें अनुहानसे आन कार होता है तथा उससे मैराग्य । साम और

वैक्रमाने सम्पन्न व्यक्तिको सुर्वधोएमे अनुति होती है। सुर्वके

थेगमे कर सर्वत्र एवं परिपूर्ण हो जाता है तथा जपनी आधार्ष

अवस्थित होकर सुबीत समान स्वर्गने अवनन्द-साथ करता है।

बहावर्य, तम, मीन, क्षमा तबा अस्पाहर---ये तपीसबोके पाँच विकिष्ट गुल है। भाष्य था अन्य विकिष्ट मार्निसे बाब न्यायपूर्वक बाब धन गुलकान् व्यक्तिको देता ही दान है। हजारों सस्य-एडिस्कोको उत्पन्न करनेवास्त्री जल-मुक्त कर्मरा भूष्यका दान भूष्यदान कहा जाता है। सभी दोवोसे रहित,

१-२ हिंदुक् सर्वाच्यास्य प्रचा स्टेंड क्रिके क्रक । इहस्तून ह्या विकास समूत ध्रमेत्॥ अमृतस्यन्ति व्यो क्रन्टसस्यानिकसम् । क्यांनिविक्योगुरूकः स्थलकसम्बद्धकत् । (बाहस्यां १७१ । ३८-३९)

२-सर्वेष्यमेन सीर्यामी व्यक्तिः परामृतिकः।तरमापूर्वे प्रयोगः **वर्षाः सार्थः हिल्लश्च** से ॥ - क्रान्त्र्येगायमे परा प्रावन्त्रमें स्वीतन्त्रः।क्रोतनस्य कृता सम्बद्धः स्वत्यम् सीर्यः विकलित् ॥ (स्वत्यमं १७९ । ४०-४८)

(अध्याव १७१-१७२)

क्लीन, अलंकता कन्या निर्धन विद्यान् दिकको देश कन्यादान कक्ष जात है। मध्यम या उत्तम नवीन कक्षकर दान कक्षदान क्या आता है। एक मासमें दो सी खालेश प्रस्केवरी पहल करना चान्द्रायम<sup>ी</sup>-तत् कहत्वता है। स**न्द्रे प्रकारि** जाता तथा तपस्तापरामण जितेन्द्रिय ऋषियों 📰 देखेले लेखित जल-स्थान तीर्य कहा जाता है। सूर्यसम्बन्धे स्थानेको प्रथमकेत कहा जाता है। उन सूर्वसम्बनी 🔤 मानेवारक माहित सूर्व-सायुष्यको 📰 करता है । तीयोपि दान-देनेसे, उद्यान समाने क्ये देवालय, पर्मशास्त्र आदि 🚟 📹 🖦 🖼 🔛

है। श्रम्ब एवं निःस्कृतः, दया, भ्रस्त, द्यन, जीरु, तप तथा अध्ययन—इन अहर ब्यूब्रेसे युक्त व्यक्ति श्रेष्ठ पात्र कहा जाता है। वक्कन् सुकी चकि, कुन, सत्यः दसी इन्द्रियोका विनिज्ञह तथा सम्बोके इदि मैडीयाव रसना सौर-धर्म है।

जो मिलपूर्वक चिक्यपूर्वण सिक्यवाता है, 🚃 सी कोटि 🚃 🚃 सुर्वलंकमं 🚃 होता है। जो सुर्करन्दिका

· अस्माक है, उसे अक्त स्थानको प्राप्ति होती है।

सौर-धर्मकी महिमाका कर्णन,

# सूर्य-स्तृति

राजा क्रांसमीकने कहा-अध्ययकेष्ट ! अस्य सीर-धर्मका पूनः विस्तारसे वर्णन कार्रिको ।

सुमन्तु पुनि कोले-पहामको ! तुम पन्य हो, इस लोकमें सीप-धर्मका 📟 तुन्हारे समान अन्य विद्य 🕸 राजा नहीं है। इस मध्यभागे में आकर्ष प्राचीन करताने १६% एवं अरुपके बीच हुए संवादको पुनः प्रस्तुत कर रहा है। उत्तप इसे ध्यानपूर्वक भूते।

अरुपाने बहा-नगर्वतः । यह सी-पर्ग अञ्चन-निमान समझा अभिनेत्रच उद्धार कानेव्यका है। पंत्रियंत्र ! जो रवेग भारतभावसे अगव्यन् सर्वेद्य कार्य-कीर्तम और भारत करते हैं, वे सम्पन्नको कर होते हैं। समाधिय । जिसने इस एकेक्से जन्म प्रकारत इन देवेडा भगवान् मास्करकी उपासना 📰 की, यह संस्करके 📆 🐯 निमप्र रहता है। अनुन्ध-जीवन पर्यय दुर्लम है, इसे प्राप्त कर जिसने भगवान सूर्वका पुजन किया, उसीका जन्म लेना सफन है। जो श्रद्धा-भक्तिसे मगवान् सूर्यवद स्वरूप करना है, वह

विन्हें महान् भोगोंके भून-प्रतीको कामन है हवा 🛊

कमी किसी प्रकारके दःखबा भागी नहीं होता।

🚃 🚾 चाहते है अथवा सार्गीय बीधान्य-प्रतिके रुक्तक है एवं जिल्हें अहरत कारित, योग, त्याग, यज्ञ, ग्री, मीन्दर्भ, अवस्थि क्यारि, क्येनि और धर्म आदिको अभिकाषा है, 🔚 सूर्वकी भक्ति करने काहिये।

को परव अळ-भावसे परम्बन् सुर्पकी आराजना करता है, वह सभी प्रापेश मुक्त हो बाता है। विविध आकारवाली इस्किनियाँ, विकास और एक्स अधक क्षेत्रं मी इसे कुछ भी पीड़ा नहीं दे सकते । इनके आखिरिता कोई भी जीव उसे नहीं सता सकते । मुपंकी उपासना करनेवाले पनुष्पके शहराण नष्ट के जाते है और उन्हें भाजपाने विजय पात होती है। और । 🚃 क्षेत्रंग क्षेत्रव है। अववस्थितं उसका स्पर्धतक नहीं कर पार्ती। मुखेनसक मनुष्यको छन, आयु, यदा, विद्या और संची क्रमाके करभग-व्यालको अधिवृद्धि होती 📖 🗒 उसके सभी पनोरच पूर्व हो जाते हैं।

अप्राचीने मगवान् सूर्वको आराधना 📰 बाह्य-पट्की प्राणि 📰 यो । देखेके दिश भगवान विकास विकास-पदको सुर्वेक अर्जनसे के प्रता किया है। मगवान शंकर भी मगवान सूर्वकी अनगुपनारी ही जननाथ कहे जाते हैं तथा उनके

दिन्य करता है। 📖 प्रकार तीस 📟 🕏 सी चार्यस जान हो 📖 है।

१-द्राह पक्षमें प्रतिदेश एक-एक 📟 वृद्धि 📟 🔛 एक-एक करावी न्युव्यके निकाश करान शरीने दो से 📟 सस एक मासमें होते हैं।

२-भागुप्रशासे सुरा 🔤 चेद 🖟 मान-सन्ध, 🔛 🖦 और शिल्ल-मानप्रशास । वर-मानमें 🚃 पहाली प्रतिपदाने 📖 🖦 **पूर्णिको एक करले रेकर क्रमरः पटले हुए क्रमानको सम्बा 💷 दिया 🕮 । 🎞 📆 पूर्णिको प्राप्त 🎟 कृष्ण एको समा**राः हक-एक प्रास पटाने हुए अनुकारको अध्यक्ष 📟 🔛 🎁 🚾 📰 📖 🛊 📰 तिलु 🖿 सावान्य पानावानी प्रतिदेन 🚥 🚥

प्रसादसे ही उन्हें महादेवस्थ-पद प्राप्त 🖫 🛊 🙌 उनको हो आरायनासे एक सहस्र नेज़ेवाले इन्द्रने भी इन्द्रताको जात 🔤 है। मातुषर्ग, देवगण, गम्बर्ग, 📖, उरम, तक्षस और सभी सुरेके कामक भगवान सुर्वकी सदा पृथ्व किया करते हैं। यह समस्त जगत् भगवान् सूर्वने ही नित्न प्रतिहिद है। जो मनुष्य अश्वकारनाशक परावत् सूर्वको 📺 🛤 करता, वह धर्म, आर्थ, करूप और मोध्यक अधिकारी नहीं है : पक्षिक्षेष्ठ । अवप्रतिग्रका होनेकर भी मनवान् सूर्वको पूजा सरा 🚃 है। 🖩 मनुष्य भगव्यन् सूर्यको कृत 📆 🚃 असका जीवन कार्य है। प्रत्येक व्यक्तिको देखाँधरेन बनकान सुर्वेन्द्री पूजा-दपासना 🚟 📕 चोजन करना चाहिये। जो सूर्यभक्त है, वे समझ इन्होंके महन करनेवाले, 📖 नीति-विधि-शुक्षप्रेयस, पर्यपन्यस्परायम तथा मुख्यो 📖 अनुरक्त रहते हैं। वे अमाने, मुख्यिमन, अधक, अन्यर्थक्रके, निःस्पृत, शाना, सारक्ष्मन्द, भद्र और निरुद्ध 📖 🛗 🕏। भूर्यमक अल्पमाची, शुर, शासकादेश, प्रसाद्यानकः,

प्रीकाकासम्बन और साधिकपवृक्त होते हैं। सूर्यके भक्त दर्भ, मत्सरता, ठूम्मा एवं कोपसे वर्धित तुआ करते हैं। ते राठ और कुरिसत नहीं होते। जिस प्रकार कमरूका का जलसे निर्देश रहता है, उसी प्रकार कृषेशक मनुष्य विषयोगे कथी लिए नहीं होते। सामाना इन्द्रियोगी प्रशिक्त को को होती, तकतक प्रत्यान् सूर्वकी आराधना सम्पन्न कर लेगा चाहिये; ाविक्र आपनाम आरामर्थ होनेपर इसे वात है। भगवान् सूर्वकी पूक्षके समान इस जगत्मी अन्य कोई भी वर्णका कार्य नहीं है। अतः देकदेकेस प्रमान्त सूर्वका पूजन को। जो मानव भीतिपूर्वक उत्तरत, अज, प्रभु, देकदेकेस सूर्वकी पूजा विक्रा करते हैं, वे इस लोकमी सुक्त प्राप्त करके पराम पदको प्राप्त को जोते हैं। सर्वप्रथम बाहाजीने अपने परम प्राप्त अस्तरतको चनवान् सूर्वकी पूजा कर अञ्चलि वॉध कर के कोडा कि कह था, उसका भाग प्रस्ता है—

'वर्डवर्यसम्बद्ध, शाक-वित्तसे युक्त, देवंकि मार्ग-प्रयोक्ता

स्मिनंदेव श्रीक्षणमान् सुर्यक्षे में सदा प्रकाम करता हूँ। स्मिन्द्र देवदेवंक सामान, दरेकन, शुद्ध, दिवरवर्ति, वित्रधानु, दिव्यकर और उंत्रके भी देश हैं, उनको में स्माप्त करता हूँ। समझा दु:कंके हतां, प्रकामकरन, उत्तम्मक्त, वरके स्थान, वर-प्रदाता, करद उच्च करेका धामवान् विचाधकुको में प्रणाम करता हूँ। असे, अर्थक, इन्द्र, विच्नु, ईश्व, दिवाकर, देवंबर, देवरत और विश्ववान् नामधाने धामवान् सुर्वको में प्रणाम करता हूँ।' इस स्कृतिका जो निस्य अवन करता है, वह परम क्षेत्रिको व्यक्तर सुर्वस्थेकरको आव सामा है।

(अध्यव १७३-१७४)

# सीर-धर्मने प्रात्मिक कर्म एवं अधिनेक-विधि

गरकारीये पूजा-अस्य ! जो आणि-अधिकां चीहत एवं येगी, वृष्ट मह तथा राष्ट्र आदिसे उत्पंदिक और विश्वयक्तो गृक्षित हैं, उन्हें अपने व्यवस्था किये व्यवस्था करना ? अस्य इसे बतलानेकी कृष्य करें!

बोले—विविध रेगेसे पेंड्न, सहुओसे संतर व्यक्तियोंके लिये भगवान् सूर्यको अध्ययनके अंतरिक अन्य कोई भी कल्पाणकारी होता नहीं हैं, अतः प्रहेंक पाट

कोर उपस्थानक असम्बर, सभी रोगी एवं राज-उपस्थानके समान करनेकाले मनवान् सुर्मको समामास करनी चाहिये।

गरकारीने पूजा—हिनकेड ! अहमादिनोके शापसे मैं पंचित्रहोन हो पत्न हैं, आप मेरे इन अज़ीको देखें। मेरे लिने अन कॉन-सा पहले उपयुक्त हैं ? जिससे मैं पुनः पंचायुक्त हो जाई।

अस्मानी कोरें — गस्द । तुम शुद्ध-विश्वते अन्यवारके

- चमनसं सार्वाकरम्बन्धः । स्थितः । स्थापः । स्थ

(क्यानवं १७६ । १६ —४०)

इस - सर्व-मन्दिकं आंत्रकोषये गोरम्बसं दूर करनेवाले जगनाय भगवान् पास्त्रस्थी पूजा वर्ष इवसामोग मुनिको स्त्रिकार अभिन्नी स्थापना को और सर्वप्रयम क्त्यजीने कहा—में विकरमह 🔤 🚃 सर्वकी पुजा एवं अग्निकार्यं करनेमें असमर्थं 🗐 । इसक्रिके 🔤 🗯 दिनक्तोको अस्ति 📖 को 🖰 लिये ब्राम्स कार्य अस्य सम्बद्धित करे : चनतेष्ठ । इस 🚥 विविष्ट्रीक मासुरीयाँ अदान 🚃 अन्तर '४६ पूर्णुकः साम्रा' इसके 🚃 सम् हवनका अस्याची श्रीहे — विश्वतन्त्र । यहारवधिके 🚃 संस्थातन करे। और-महाहोगमें 📆 लिए कही गयी है। होनेके पहल्य एवं इसके सम्पदकों समर्थ 📰 हो. अहः 🛮 कारान करवाले अंदरवरे इस आंध्रकार्यको करे। यह सभी वृष्यारे रोगकी प्रान्तिके रिको **व्याप्ता** (अञ्चित) सबीया । सन्दे प्रकारको शामिके छिने उपकेषी है। यह लग-होम सर्था पनें, 🔤 उन्ह व्यक्तिकेक स्थात काले अन्यार प्राप्तिके किये निर्देश मधीक पाठ महायुष्पकारकः, 🌃 प्रदान कार्नेपतितः, अध्यक्षम्-निकारकः, महान् सुभव्यते तथा विजय प्रदान करनेवाला है। यह सधी कर्त हर विकास करना बाह्य । ज्यान अहंकि अधिनति नगवन् दर्व 🚃 सेम्बर्र आंधे 🚃 🚾 परे । देवीको हुपी अद्भाग करनेवाला तथा परावान् सूर्वको ....... त्रिय है। रक कमरके 🚃 नेजेवले, जन्मकरणेयले, सात रै- अक्रान्देशकार राज्यान स्थाने । सर्वान क्रान्तिका 'शबोनुस्ता बेरान सारा'—शर्म कात स्वाही है। पहर्मका प्रसार प्रकारमध्य प्रश्नपूर्वा केवन कार्यपूर्वात 'क्रमंत्रका मान'—धर्म छिन् स्राहे है। हेक्क्जीय हेहरू वेद्यानगरमा य 1.1.1. रेपारिका 🔤 विकास 🚃 प 'क्षेत्रका साह'—इससे कृषेत्र आहेर 🗔 वैज्ञान विकास व्यवस्थानम् व अस्तिकनोदान कार कांटकर दोक्साक्रमक का 'कुम्बानरथरण स्थात'--- इससे चौची आही। है। THE RESERVE OF THE PERSON NAMED IN नील-नेपुरस्कारिक Name Statement den Generalier an 'बील्बीनमुकाय स्वयुर'—इससे 📖 📰 देश graffageiten auswarpgen wirderente dur mit dent beite beite 'स्वताय स्वक्'—इस मन्दरे 🔣 अर्थात दे । गुद्राहरूक्षा सुर्थन विकास क्यान न व महोद्द्रा अस्ता आहारियाची आहा 'उत्तरिकृताय महत्वित्रिकाय स्वत्र'—इसले व्यक्ति अवृति दे। धेराव केतनभीय विकासन महान्त्रो । अन्यान विशेषकार्याति । 'ईश्वनपियुकायेशस्य स्वक्र'—इससे अञ्चल अवहीर दे । (माहानार्थ १७५। १८--१२) [ नहं दवा रिकारर-होन प्रतीत होता है, विद्यु पाठकी नवुकाहेंसे जावेच सन्त विद्युपकोचकी आहरियोक्त संतात जनसंह है ] २-दान्तर्वं **व्या**क्षा स्तः द**ान्यन्य**नेत् । तिन्दुवरमात्रस्यः THE PERSON NAMED IN देशः । अस्मित्यस्थ सारिक-स्थापुर्वतः । करोतु 🖟 🚃 🕶 प्रकृतिकानिकारिकान् । विकास स्वयंत्रास्त्र 📰 📰 पु हेव अप्रेथकानुस्त्रातः । प्रतिपश्चित्रकारः - 1 धारपरिवारको परः । सोमः सीम्पेन पर्यन कापीतं स्वयोद्धय् ॥ मध्येत्रासस्योगाः । अञ्चलकंत्रीयस्यूके परिवासः । पीतपस्थानसभी मुख्यः पीदी वस्त्रीतम् ॥ रेशेन

युक्त रथमर अस्तव, सिन्द्रके सम्बन रक आधावते. सभी देवताओंद्रास नमस्त्रत परावस् सुर्व 🚃 🚃 करनेवाली महाशानित आपको प्रदान को । सहस्य 📖 युक्त, अमुक्तकत, अक्रिके पुत्र चन्द्रदेव सीवयमध्ये आपकी तहपीडा दूर करें । पद्मरागके 🚃 वर्गकले, मक्के 🚃 पिक्रल नेववाले, ऑप्रिस्ट्रस अक्रुस्क, चूनिवृद चैन 🚃 महत्त्वा दूर करे। पूजरानके सम्बन्ध आधारुक, 🚃 वर्गक्ते, पेत पारच तथा क्या करू करनेक्ट कुप आध्यी पीड़ा दूर करें। 📖 🌃 समान अवस्त्रक, सर्वकास-विचारद, देवसओंके गुरु कृत्यांत 🚃 🚃 दूर कर आपको शान्ति प्रधान करें। हिम, कृष्यपुर्ण तथा कारणके समान रक्क वर्णवाले, देला तथा सम्बोधे पृथित, सुर्वार्थनमें तावर रहनेवाले, 📟 निवस्कर्ते 🚃 प्रक्रकर्व आपको प्रष्टवीका 🚃 करें । विकिय क्योंको व्यवस करनेवारे, अविद्यात-गति-पुक्त, सूर्यपुत्र रामेश्वर, स्थित दिस्मकेशके केन् एवं एवं आपनी पीमा दर करें। सर्वद्ध करफान्यों दृष्टिये देशनेकाले तथा भगवान् सूर्यन्त्री निस्थ अर्थन्त्र 🚟 शन्दा ये

📰 ऋ प्रसन्न होकर आपको स्त्रान्त प्रदान करें।' क्टबन्सर अक्षा, विष्णु तथा महेल-इन त्रिदेवॉसे इस च्या अस्तिको **प्रकृ**त करे<sup>र</sup>---्रेष-गन्धरीते पृथितः सभी सभी स्वयं , सूर्वार्वनमें तथा चतुर्वस, दिन्य पात सन्दर्भ सुर्शेतियत महत्त्वी आएको सावित अदान करें । पोक्रम्बर फरन करनेवाले, प्रक्लू, चक्र, पदा तथा पदा भारत प्राचित पहुर्वक, इयागवर्णकले, यञ्चासकप, अवस्था पान वक्त सुविध ध्यानमें सल्लीन माधव मधुसुरन विष्णु आक्को नित्य प्रतीत प्रदान करें । कन्द्रमा एवं सुरूदपुरूके सम्बन् उरुप्यरू 🚃 सर्पोद निवाद आगरणीसे अलंकत, व्यक्तिवर्क, व्यवकार अधीवन् धारण करनेवाले, कानेकारे, कार्या, कार्याका पुरा सम्पूत, बादानी, उथा भाग करण करनेकाले महेश्वर आक्नो शानित ফ্ৰকৰ 📰 1

Seine Carles : Seine Land of the gerier) तार विकासकां के अर्थन्यक्रमात्रः कः राष्ट्रकेत केवल होत्रते केव पुरस्कारितः अ अर्थेको विविदेश सरीपू रूप स्थानकम् सूर्वार्थनको निर्म अरकार्यकारम पू ॥ रेत्व्यानकार्यकः । कोश्वासको चीवान् व्यापीते व्यापीतः । **Approxyments** पुरः पुरस्कारकः विकासको निर्म प्रार्थकः वर्णास्य । भुवर्षिकारी निर्म अधिकारायरिक्ष यः । नेत्रप्रिकारिको अमाक्ष्यकरो उक्सक नेदपर्वकिर्वर्तन ॥ एकपूर्ण दिव्हाव विक्रिकः पहलूकाः । महस्रोतकात्रः वार्वेद्वरित अवस्थितिकारमञ्जूष्ट । अनेवरिकारः केवः स वे चैक व्यक्तिहा सर्वपृत्रोजीतपुत्रकाः सूर्ववेदन्य: अस्त । प्रतिभे कृषेत् व व्यक्त स्रोत्स्य विदेशनाः । को प्रस्त प्रकारकः

(HIRPE THE ISLANDO

१-वर्गालः परार्थः परायमिनेकः । यस्पातुन्तः संस्त् देवक्यांपूर्णः । स्कृतेस्यो देवन्तिः सूर्वाचेत्रयः सराः। सुरुपेश्चे मालोगः सर्वानेकस्थानिः (माणान्ते स्थितः साम स्थितं करेतृ ते ॥ पीत्रवर्णाः सेव आनेनीयीयः सराः। स्थापात्रवर्णाः स्थापात्रवर्णाः स्थापात्रवर्णाः । स्वतिः सर्वे देव आनेनीयीयः सराः। स्थापात्रवर्णाः वस्तुन्तिः ॥ सूर्वपत्रस्थितो नित्तं विविधिविधान्तः । सूर्वपत्रवर्णाः विविधः स्थितं करेतृ ते ॥ स्वतिः सर्वे विविधः सराः। सूर्वपत्रवर्णाः पुरुप्तिः व्यानेकः पूर्वपत्रवर्णाः ॥ स्वतिः भागाः। विविधः सराः। नोनीयिविधान्तवर्णाः च स्वतुन्तिः ॥ सर्वे वरेष्यो नस्तिः देवदेनो योगाः। आदिकदेशसम्बद्धः स ने प्राप्ति करेतृ वे ॥ **100** 3

'पदारागके समान आयानात्री, .......... एवं कम्पकत् धरण करनेवाली, आदिस्वकी उपराधिको तथा देनेने तत्पर, सीम्यवदनवाली बकानी जलन क्षेत्रन वर्ले 🔤 प्रदान करें । हैम, कुन्द-एक तथा चन्द्रकोट सम्बन वर्णवासी, महाक्ष्यपद आल्य, शांधने विज्ञात काल करनेकली, अप्रविकास 🚟 विद्युत, चतुर्वक, चतुर्वक तथ विनेत्रभारिको पाप्रेका नाम करनेकार्य, मुक्कान क्रिकान कानको प्राप्ति क्षरान करे । विकारके कारान सामा विकारकारी, जारिकामारी, केंद्र सामान आरम्ब, विकार, प्राप्त, पात कार

श्रूषी अलेक्सरेसे विश्वासत, हाथने ज्ञाति करण करनेवाली, **धर्वको अर्थको** कर्पर, महान परक्रमकारिनी, परदागिनी, मक्त्वांको देवी कौमरी आपको सान्ति 🚃 करें। 🚃 एवं व्यानने "व्यान कानेकाले, वेतानकाधारिके, सूर्यार्थनमे 🔤 तत्व क्रमेकारी, अस्त्वार्धनी, देवकाओंके द्वारा पृत्रित चतुर्वृक्त देवी वैक्कपी अववन्ते नित्य आसि प्रदान करें। केत्रपालका अवस्था, 📰 कर करण करनेवाली, सिद्ध-गम्बनीये सेवित, समी अलंक्सोरे विपूर्वतः, व्यास्त्राच्या अस्त्रवर्णवास्त्रे, सर्वत्रस्थेवन्त्र देखे अर्थनाचे शरर, म्हानेत नामने विकास अर्थरत्वर्धनां सहानी 🔛 📟 प्रदान करें । चराहके समान

mingeleigen i prefessengenen den delen der p in a अध्यानी जीवाकारण अवदित्यकारणो राजा आणि करेलू युक्तिक अन्दर्शकीरका पाल स महारोतिक विकास साहित्यानिक स्था । विकासकेन्द्रसन्त्रा साहनुस्थानीकी । frigegentere flegenere unt auffen unten frem menten : पुरस्तानीयाः स्थाने अतिकः भोत् । the transferring transferring represent authoritiebles of पूर्वपात राज्येची प्रचिवाल कर बिला पर मा प्रविचाल करेंचू है। न्द्राकारक प्रकार वीतामारका सार । पार्तुक के ता देवे केनावे सुरहेता । grabbere Det giberreren ille ubg b III rebgereite u देशकारम्बाक्याः कारकाः स्थानकः । सर्वेतकोत्त्रमः 🔤 वर्णतः वर्णातकः स सर्वतेत्रसम्बद्धाः । प्रतानि से स्वा 🖽 स्वतित्रसम् वर्तेषु से स विकासम्बन्धिकाः क्षा व्यापार करिये । स्थापार वर्षे 🔣 प्रश्चिम स्थाप । Name and Post of वेसपर्वति निरित्य पुरस्ती 📰 वीन्। कारी कार्य हेर्स 📰 🕮 मध्या मै । अधिवेता बदेशान निर्मा प्राप्ताचन। वस्त्राचन 🔠 सहस्रोहरू सर्वे र क्षा सहस्रकार्यात्वे । स्थाप विकास स्वयंत्राहेका । Benevotek : **गैक्सल** भएना क्यान्त्रेण क्या स्वर्णि करोड् ते s क्ष्मकृष्ट्रातः) हेर्थः कृष्टेहरूलः **व्या**स्त्रात्ति । अवस्थानारो देशनाधाना लेखकार: । पूराने पूजा: सर्वकारमा: विक्**र**ाह: ॥ पृद्धिकादेषु पुरुष्ते काल् 🔤 वर्गिकि । यो काले 🔤 🔛 पालुकाराय 🗈 रिकारी तु कार्या क व विकासी (इसेक्स्यू रिकार्या: प्रति ने रिकारत: s सर्वे महामहरेकः सनुष व्यवस्थानः। मन्द्रवान प्रोक्षान्ते बीनसन्त महेदयः॥ प्रार्थित कृतिम् ता निरम्बाहित्यक्को स्ताः । जानेन चेत्रता प्रार्थेक प्रार्थेन सम्पर्धे सम्पर्धे सम्पर्धे स् सर्वातरकानुकोन पर्याप व सुराधान्तः। वैश्वतरकार्यात्रकोष्येन विश्वकर्णेन स्रोपन ॥ क्ट्रेसर्थकार्थः। विकासकाः देवे कार्याची सम्बद्धित क्य भीनकत्वानं प्रोपः गुक्तसम्बद्धम्। क्यक्यक्रेयुकः क्या देखे वरस्यः। सक्तादागर करेल उक्तेजनिकोत्रातः। उत्तरि चरेत् हे बीतः अवदित्यात्राने स्व ब साम नदि-प्रदेशकार्थ, विकासमावदिको, कारार-नदमा, तर्मा तर्मार, वंदा, सद्धान और वरमुख धारण करनेवारथ, जूर, रास्त-मीले नेवोकार्थ, गणकांध्वादिको, गोशुलाभरणा, वेतस्थानमे व्याप-मृत्युके कारार व्याप्त परंतु विकासकार्य, व्याप्त प्रको वाद्याप्त कार्यकार व्याप्त वाद्याप्त कार्यकार व्याप्त वाद्याप्त कार्यकार वाद्याप्त वाद्य वाद्याप्त वाद्य वाद्य

अवधारमञ्जूनवर्षे, त्येचन्यतुनवरे । जन्य त्येचन्यानुवर्षे, पूर्वस्थानुवर्षे, पूर्वस्थानुवर्षे, अस्य वितृ-सद्धाने विवसी पूजा । विश्वसिक्षानुवर्षे, व्याप्त प्रकार, पूजाप्रमाता—पे मातृ-मातृकर्षे, व्याप्त । विश्वसिक्षानुवर्षे । वृद्धस् अञ्चन्यानुवर्षे अस्याप्त विश्वसिक्षानुवर्षे । वृद्धस् अञ्चन्यानुवर्षे अस्याप्त विश्वसिक्षानुवर्षे । वृद्धस् अञ्चन्यानुवर्षेक्षे अस्याप्तवर्षे अस्याप्त विश्वसिक्षानुवर्षेक्षे अस्याप्तवर्षे अस्यापत्तवर्षे अस्यापत्तवर्षे अस्यापत्तवर्षे अस्यापत्तवर्षे अस्यापत्तवर्षे अस्यापत्तवर्षे

वस्त्रुवासी तथा सुन्दर काँट-प्रदेशनासी, पीत एवं ज्यान वर्णकारी, विषय आपावासी, तिस्काने सुशोपित स्वस्टवासी, अर्थकारोका बारण करनेवासी, सभी व्यवस्थाने विभूतित किन-विधित्र वक्त बारण करनेवासी, सभी क्षीरवासीने गुण और सम्पत्तिकी कारण सर्वजेत सोनाकारी, व्यवस्थाने आराजनामें सरस्य, केवस व्यवस्थानों संतुष्ट होनेवासी करदारियी भगवती उमारेकी अपने अधित तेजकी हैं। प्राचन-क्रयंते प्रस्कत प्रकट होकर वस्त्र विश्वस्थाने इसीस अदान करें।

व्यक्तियः, वन्येश्वरं, विवायकः, भगवान् प्रेकरं, व्यक्तिः, चन्येश्वरं, ऐस्त्रे अवदि दिस्तरे, दिस्तर्वाः अधिवर्तिः, वन्यव्यक्तिः वगरियां, सभी देवता, देवी सरावती तथा भगवती अवद्यवितासे इस प्रकार स्वित्तर्वः करे

ह्यात्म भारत निम्ने हुए, प्रश्तिसे पुता, मयूरवाहन, वृतिका और बनावन् बहसे उन्तृत, समस्त देवताओंसे अर्थित अर्थितको कर-द्वार भगवान् कार्तिका अपने

१-वे कार विश्वपन्तार् करो गर्न है। **स्थापना के अपना के अपना के अरम** के परवर्त के विश्वपना का गर्न है। २० असर्थे वरस्योत प्रकृतिक्षीयम्बरः । 🛗 🚃 वेशीवरिक अस्तिर्वरः ॥ पुर्वतारमध्य स्टूल महोत्रक स्थापित स्थापित । मार्गित । teleft actig it mile are the mile at the con-जारिये कारकार् केम अपनेन्त्रं हा कार्याचन (केरणकारकेकारकांक: अस्पन्यकारकाः) पुरस्को सहस्रको अर्थको सम्बद्धितः । स्था परेषु ने स्था को व स्थापुरसम् । freedom speedig rades more BURNING STREET, H एक्ट्रेब्रेक्को देवे वक्कको 🚃 । सर्वार्थसम्बद्धाने नगरमधी परहरः । ा होते सम्बद्धित स्थापित । स्थापु ते स्थापु विकास सम्बद्धितार । चैतानुसम्बद्धेकाः । स्वक्रमारशः 🚃 कृत्यक्षे ज्ञानुसनः प <u>ज्यानेक</u>तिभस्मको पाय समेदाना (समस्या) गराम्बरणः । पानेषु वे **व्यास्त्रा** सेवः सेवेद केवत्ते । कार्याच्यापृथिकः। विद्वाराते । 🔤 पूर्णाः सोवन्यसम्बद्धाः । अस्तिकवारकार प्राप्ति करेतु है 🚃 🚃 प्राप्ति प्राप्तित ॥ विकासक्ष्मिन प्राचीनवर्ति । स्थापना स्थापने प्राचीने स क्षेत **ब्हर्स च पराच**य अवित्वाचे क्रांस्कोधाराको पृत्तिवित्रीकृत्। सर्पातको सम्बेक्तकस्थानः । सूर्वपविद्यते निर्म 🔠 हे सम्बन्धात् 🛭 महत्त्वरा स्वयंत्रः । ज्ञान्य गनरी-वेजी चन्द्रचन्द्रते नित्तं अन्द्रत्यांकानुनः । स्त्रस्थि करेतु 🖥 निरुक्तिरसारको एकः।करेतु 🔳 🚃 🚃 चर्चान्य परिचनन् ॥

अवपको बरू, सीक्य एवं इतिस प्रदान करे । हाक्ये जुल क्ये शेत बड़ा बारण किये हुए, रार्ण-आग्राम्क, पगवान सर्वाचे कारकार करनेवाले. सेन नेत्रोंबले उन्दीवर आवसे कारी उत्तम मुद्धि, आरोध्य ५वं प्राप्ति प्रदान करे। जिन्ही असूनके क्तान अवपासुक, महोदर तथा पदावान जिल्हे अन्यक आयोग्य प्रदान करें। कवा व्ययुक्तीसे शियुन्ति काको व्योक्तीके रुपये घरण किये हुए, सपक्ष व्यवस्था उद्धारक, एकर्न, उत्पर-कार्य, नकारक, म्हानसङ्क्ष्मी, नवीकि अध्यक्ष, घर-प्रदास, धनवान सुर्वेगरे अर्थक्ये तस्त्र, प्रांतरपुत्र विभावक अवक्रो महाक्रांति हाता करें । इन्हर्करके समाम आभावारे, जिन्हाकी, ज्यीस विकृत करण करनेकरे, नापीले विपूर्वत, व्यक्ति पूर करनेक्टो क्या आस्कृत कृपवाले, महोके ब्राह्म प्रकार संबद ब्राह्म विको मस्रकृति प्रदान करे। नाना 📰 🚃 🚃 सूच्य वक्तेंको करण करनेकरणे, देवलाओको कंग्नी, 🛗 संस्करणे नमकृत, समस्त विद्यापेको प्रदर्शको, । एकम्बर स्थान भागमात भागमते 🚾 📖 📖 छन्।

करें। सिक्क इमामल वर्णकाली, प्रतुव-चक्र, सामृत तथा पश्चिम अनुषोको 🚃 📕 हुई, सर्पा उपहर्वोका 🚃 करनेकर्ल, ब्राह्म बहुओवार्स, महामहित-मर्दिनी भगवती 🚃 दर्भ अनको स्रन्ति स्टान करे। 🚃 सश्म, अधिकोधी, क्षेत्र नेत्रीकले, महावीर, सुर्वधक भूगिरिटि अक्रका विस्त करकान की । विज्ञास क्यूट तथा स्टाध-माला विशे हुए, बहुकलादि उत्सट प्रचेका नाम कानेवाले. प्रचलकार्गीक सेकार्यतः, व्यावस्था अस्यापनामे सस्य महाचेपी क्लेक्ट अध्यक्षे जानि एवं कल्याम प्रदान करें। दिन्य अस्तरम-महत्त्वारं, अन्य देव-मातुकारं, देवताओहार पुरस्त मानुस्पर्य को संस्थारको न्यान सरके अस्त्रीधात है और सुर्वार्थनमें शरक रहती हैं, में आएको जानित प्रदान करें । रीह क्रिकेट तथा ग्रैड म्बानमें निवास करनेवाले बहुगण. वर्ष्य समझा गम्बर्धियः, दिशाओं तथा विदिशाओंने 🖫 निकारपरी अवस्थित रहते हैं, वे सभी इसस्थित होकार मेरे क्रक हो रहते इस बाहि (नैक्स) को प्रष्ट्रण करें। ये आपको निरंप निर्देश प्रदान करें 🔤 आधनी प्रयोगे एका करें।

### अक्टाप्रकारे देखकका देखातः ।

कुर्वित्तरम् देशोः प्रमान्त्रसम्य सम्बोधकः । इत्योव कृतेषु हे त्रित्ते स्वतः सुरवृत्तितः ॥ वै स्तर्म वैद्यानाने वैद्यानानेत्रतीयः । स्वत्ते स्वत्त्रसम्बद्धः स्वत्रानीयकः वे स्व विद्यानुकालयः स्वत्ते स्वित्रीत्त्वं सम्बोधकः ।

सर्वे के सेक्कार अंतर्कृत के सीव्या विदेश कृतियु के तिर्ध कर्षण वर्ष कर्ष क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष्म क्

निविद्यालया में यु सामी एक्यानस्य । स्विद्यालयास्य अ अस्यान्यू से संदेश । ऐत्राम्य स्थितस्य में तु त्राप्तवः अनुस्थालयः (कामोद्वालिकोदाः) मीलकाम्य सिर्विद्यालः । दिस्तान्यतिया भीवतः कामान्यत्यानिकः । कृतिमृत्यालयः निवतं पृत्यीकामेष्ट्रपतिन्यः । स्वतः सुर्वेत्रपत्रामे सोकामतिः स्वतिकाः । अस्यान्यु में निवतं श्री अध्यान्यु पृत्यितः ॥ अस्यानति पृति सन्द पृत्यीको नामानिकाः । विद्यालयान्यतियाः । स्वत्यान्यत्यात्रिकाः ।

तत्र देवपतिः श्रीमान् वास्त्राणिनीतावादः । गोप्याणीतावातेण श्रीमानोन शोपपीन शोपपी ॥ ऐत्यारणपात्रका गीरमाणी सामद्वीतः । देवेग्दः स्वता श्रूषः आदित्यावाणी रातः ॥ पूर्वशानिकसमः पूर्वणीतास्त्राणीयाः । सूर्वत्यापः प्राप्तं श्रापि केश्य सम्बद्धात् ॥ आदेपदिविकाणी तु सुन्ने तेवस्त्रती श्रुषः । सम्बद्धानावालीणी सामस्त्रीका ॥ तत्र व्यारमानावीणी दीव्यास्त्रामानुकि । पुरुषे द्वानो देवो स्वस्तः प्रभावत्वतः ॥ हाथींमें ब्या लिये हुए, महाबलकारी, सकेद, नीले, काले ब्या लग्न वर्णवाले, पृथ्वी, अवनका, प्रवास तथा अन्तरिक्षमें रहनेवाले ऐन्हराण निरन्तर ब्या वर्णवाले विद्यामें रहनेवाले विद्यामें रहनेवाले व्यावस्था करें और शामि प्रदान करें। आवेशी दिवामें रहनेवाले व्यावसीत वर्णवाले, हावमें ब्या वर्णवाले ब्या वर्णवाले स्था वर्णवाले वर

भाभाकि समान प्रकारप्रमान है, जूर्वको आरुधनाने शरद संबंध निका प्रमान-विकार

विकिन देवनकोरी व्याप्त, भारत-भारतके रहेरी सोमित, असिकोणमें उन्हरिक्त तेवसकी नामको पर्छ है, उसमें रिक्त बल्बे 🚃 🚟 🚃 प्रकाशकाले, ज्वालमालकासे ब्बाइ, बिस्तर ब्बलर एवं दहनतील, प्रथमसक, आदित्सकी अवस्थाने उत्पर अपिटेन अस्पेक प्रतीका सर्वभा नाम नरें एवं · · · · · · व्याप्त करें । दशिल दिलायें संकारतीयरी रियरी है, यह 🚃 📰 सुत्रोपित 🔡 सैचको भुरापुरेसे ज्यार है, उसमें स्वकेक्टरे इरिय-विकृत कार्या महामहिन्दर अवस्य, कृतम क्या क्यं पारंगरे विक्रित, सूर्वकी असरधनार्थे साम व्यक्तिसम्बं करण्य कारको होन इसे आहेल्य पदान करें। वैक्षेत्रकोष्ट्रवे विश्व कृत्या राजकी पूर्व है, को महान् रहोगान, तेत क्या विकास अहियो ब्याह है, उसमें रहनेवारे रक्त नारव 🔙 बक्रोंसे सुत्रोपित कार्यमें ललकार लिये, कराराज्यम, कुर्वको अवस्थानको तरक सक्तरोके अधिकार निर्मारको पालि 🚃 वन-भाग 🚃 करें। पश्चिम दिलाये सुजावती नामकी **बार्ट है का उन्हेंब जिल्होंने वेकिए तथा लेगियांने स्था**त 🛊। 🚃 इस्ति तथा विवृत्त भनीक नेत्रवाले यसमध्य

प्रसार 🔤 अववर्षे प्राप्ति प्रदान करें । ईशान-कोजने 🔤

अविद्रारम्भागानाः र प्राप्तिः वर्णेषु ते विद्यालाः करणीयाना स frement ich ein Gefen merete engegenende क्ष कृतेपुरान्यको प्रतिकृतकोत्तकः। न्यानकेन्यकः अन्तर्गात्रम् व्यक्तियाः सूर्ववर्णकानमः । व्यक्तिवर्णकानमः क्षेत्रके १८०६ देवंदि स्टिक्स्परे त् पूर्व कुर्णिक विकास स्वारकोजनाजीवरिक्ताकोकराकुरस ता कृष्टीको देखे एकसम्बद्धकाः । सङ्क्रामिकोञ्ज बाली निलंपहरित्याहरूमें उद्यानक्षेत्र में त्या 🔤 को कर्न क्षत्रकृत प्रक्रिये हु दिल्ले आपे पूर्व सुद्धानी सदा। जनवीरिकामधीर्थ कुनोन्द्रसंस्रको । इस्तिवृहत्तनेककः । प्राति करेतु में और १४१तः प्रतित चेतरस । महोत्सनी परी एक बेहरू है दिख्यानिया। कुल्यक्तव्यक्तवः । तेक प्रवस्तवनैतः - अवैत्रक संदेशकात ह क कुनेपुर्वास्त्राक्ष्मको विकृतिः । प्राप्तकारक समाप्तकारकः।(जन पाने रेक 📖 सर्वे अपवाद् । भूरतेके तु पुत्ररहेके निवस्तीय य वे स्टब्स्ट्रा म्हार्लीक **मांग**ा के 10 समें कृतिक केवर करिये कृतियु से कार्य सरकारी श्रवंत्रका व्यक्ति विज्ञानम् हे । वा सरोवकरवस्त्रवा। कृतिकरवर्ताता देखे विकृति ने अवस्थत्॥ पुरिनिकोतः प्राथनसम्बद्धाः अपयोगतः पूर्वपातः करेतु हैरको 📖

इसके अवसर सर्लाह्स बसतो, नेबार इसका पश्चिमें, सर्वाचित्रे, प्रतासकीयमी, ऋषियों, सिखों, विकाशमें, देखेओं तथा अह कमेंसे ऋस्तिकी प्रार्थन करे<sup>क</sup> ।

परकोड कृष्टिया, व्या सेविजी, भृगीसर, आई, पूर्वासु, कृष व्या आरहोत्र्या (पूर्व दिसामे १६नेवार्स्स) ये अक्षा-मानुवारी सूर्यार्थनमे रह वे और प्रधा-भारतसे विकृतित हैं। अस्त, व्या अस्ति असराधालानी, हस्त, विका, स्वाती, विश्वत्या—ये दक्षिण व्या पहण व्या मानवार सूर्वती पूजा करते व्या हैं। आवारामें उदित व्याप्ता से मानव-मानुवारी आवाती स्वाति प्रदान करें। व्याप्त दिसामें रहनेवारी अनुवादा, जोता, मूल, पूर्वावादा

पर्यक्रती नामकी अनुषय पूर्वमें स्वतेषारं क्रिकेशकी
स्वाध-मारमधारी परमदेव ईवान (चनकन् वीक्षी)
निक्षा पार्टिम करून करें। यू:, मुक्त, मान, क्षे कन आहें,
रहेन्द्रीने रहनेषारं प्रसार्विक देवता आक्रो करित करून करें।

सूर्वभवात सरसाती आपकर जानि जान करें।

क्रम्स्य ध्वरण करनेवास्त्री तथा सुन्दर सार्थ-सिंग्स्यस्यस्य

अवस्थित, सूर्वकी सामा सारम्य प्रमाणी महाराज्ये

अवस्थित, सूर्वकी सुन्दर इस सम्माणीयाः

करनेवासी सूर्वकार प्रमाणी अध्यापिक आपको

करनेवासी सूर्वकार प्रमाणी अध्यापिक आपको

त्वता सर्वपृत्तेत्वा पूर्व केत मु परान्तृते । स्वतं व्यवस्थात्वा द्वितं विद्यानित्तेः ।।
अर्थर्तित स्वतं देवस्तितं सूर्युक्तात् । स्वतं ११वितः वेदः पृत्तेषु सर्वितः ।
अत्याव स्वतं प्रेष्टा सूर्यं पृत्तिकात् । स्वतं स्वतं व्यवस्थाः ।
अतिर्वित्तात्व २१वा कार्यं म व्यवस्थाः । स्वतं व्यवस्थाः व्यवस्थाः स्वतं व्यवस्थाः ।
अतिर्वित्तात्व २१वा कार्यं प्रवास्तितः । स्वतं पृत्तिकातः ।
अतिर्वाद्यान्तिः स्वतं व्यवस्थाः । स्वतं पृत्तिकातः ।
अतिर्वाद्यान्तिः स्वतं व्यवस्थाः ।
अतिर्वाद्यान्तिः स्वतं व्यवस्थाः ।
अतिर्वाद्यान्तिः स्वतं व्यवस्थाः ।
अतिर्वाद्यान्तिः स्वतं व्यवस्थाः ।
अतिर्वाद्यानितः स्वतं व्यवस्थाः ।

अस्य भारते व्यक्ति । व्यक्ति । व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्तिक विकार । विकासी कामान्य । प्राप्ति कृतेन् व्याप्ति वेश्वीते व नार्विकान् ॥ नेते मुनारिक् प्रको बनुस्तिका याः । कृते पालकारेते स्वेतेताक मुनाः ॥ क्रांच कृतिहारी निर्म प्रसार पूर्वप्राच्यो । पृथः क्या च क्या सामाजी पुरिवार ॥ क्षी रक्षिणको सु कुरावीत क्षी गया प्राप्त प्राप्त निर्म प्राप्ति सुर्वाचु है सर । विश्वर्ते च तुरुष कृत्यः प्रदेशये च अवसीनकाः । अवस्थेतः सर्वाच्यानस्थितः सद्यावस्थानस्थ हार्गत कुर्वम् ते निर्म क्राकेन्यक्रमानामः । सम्बन्धिकपुर्वानां मे स्कृत सर्वा पुर्वः ॥ कुरकः मह विकास पुंचला परवेण्यस्य । स्वयुक्तवाद् सामाः अभि पूर्वणु ते स्ट । कारचे गालके गार्चे विकारिको चार्लुकः। कृष्टिको वरिकास वर्गनकः पुरस्तः सन्द्रः॥ करते प्रमुक्तिये बाद्धायक्ष नै वृतिः। सम्बन्धिः क्षेत्रिको कृत्यः अध्यान्येश्व पुर्वातुः । प्रातंत्राचन प्रतेने जुल्केक म्हालक:। मूर्वन्यनेकारक: जानि पूर्वन् ने सन्तः। परिकारक व्यक्तमात्र प्रतिकारक कुम्बरिकाः । गूर्वविकास विशेष प्रतिके कुर्वेषु से सारा । रिकाः समुक्रायको ने कने ने कारकः।विकास स्थानको गरदश स्था साथ अहिलकाम होते अहिलकामे एकः। विदे ते सम्मानमम् भागीर्वदनकामः ॥ क्युविर्देश्याकेतः प्रोतुकाने प्राप्तकः । म्यानकोत्रः विकासो देशः पराजीवंत्रम् । प्रमुक्तिगरा देवसा निर्म पुर्वाधारमकः। मध्ये ग्रीतं च वे मुक्तिमतेनं च सुनन्तु है।। महाराते को इसकेट अहार: अन्यन्तिक: (अतिनुत्तो अहन् देश: असन्तिर्वेदानसः () क्षे) देखा **भक्तम**् सूर्वकानेन स्वविकः।वृष्टि बार्ट सम्बद्धानेन सम्बन्धन् सूरातः।।

कृतिका पाता विकास प्रतिकार के अनुस्ति । अनुस्तिकार पाता अनुस्तिकार । वृत्तिकार प्रतिकार विकास विकास । अनुस्तिकार । वृत्तिकार विकास विकास । वृत्तिकार । वृत्तिकार

तथा उत्तरपादा, अधिकत् एवं श्रवण---वे वश्वव-स्वतृकार्ष् तिरत्तर भगवान् पारकाकं पूजा करती श्वती हैं, वे अधिको वर्धनकील ऐश्वर्य एवं शासि प्रदान करें। उत्तर स्वाधाः अवस्थित थनिष्ठा, सर्वाधाः, पूर्व स्वाधा उत्तरपादावद, रेकार्षः, अधिनी एवं भरणी नामको नश्वय-स्वतृकार्षः निरम सूर्वक्षी पूजा करती रहती हैं, ये आपको निरम सर्थनक्षील ऐक्को एक शासिक प्रदान करें।

पूर्वदिरागे अवश्वित तथा करवात् सुर्वके करणकारको भौतापूर्वक आग्रेमना करनेकाली हेग, सिंग तथा कन् राजियाँ अग्रेममे निरंप दास्ति प्रदान करे। कालुण विकास रिवा रहनेकाली, भगवान् सुर्वकी आर्थन करनेकाली कृत, कन्या तथा सकर राजियाँ पराम भौतिके स्वय आवको दर्वक करान करे। परित्य दिलाई निरंप एवं निरंपर ज्यानका बगवान् आरित्यकी आग्रेममा करनेकाली जिल्ला, तृहस कथा कृत्य परित्यों आपको निरंप दास्ति स्वान करे। (कर्य, वृक्तिक तथा मीम राजियाँ को उत्तर दिवानों क्रिस्त राजी है तथा मनवान् सुर्वकी भत्ति कराते हैं, आपको दानित प्रदान करे।)

भगवान् सूर्वकं अनुष्ठसे सन्तर भव-

स्वतंत्रक्षके स्मृतियम आपको स्मृति प्रदान करे। मारम्य, मारम, गार्म्य, विवादित, दक्ष, विराष्ट्र, मार्क्यमेय, कृतु, नारद, पृण्, आरोप, व्याद्ध्या कारमिक, कौतिक, व्यास्य, एक्कस्य, पुर्वाषु व्याद्ध्य अस्मृतियम् अस्मृते स्वतंत्र प्रदान करे। सर्वाय अस्पायनाचे सारम्य स्वतंत्र मृतियम्बर्ध, को निरम्य आरोप्यंद प्रदान करनेने सारम् स्वतं है, अस्मृत्यो निर्म्य विद्धि

पश्चान् रह्मेंको प्रकार तरपर देवसायेन्द्र समुचि,
स्वान्यती सङ्क्ष्मार्ग, परामानी पहानाय— ये सामी आपके तिये
बाद, नीर्य हर्ष आग्रेपको ध्राहिके दियो शिरकर कामान करे।
स्वान् सम्मानिकाली ह्यानिय, व्यान्य प्रकाराको प्रहार,
स्वान्यक्ष, कार्यकोग—ये सामी सूर्यको अग्राक्षण कार्यकाले
देव आपको []], यह और आग्रेप्य प्रहान करें। वैग्रेप्य,
हिरम्बान, कुर्वम्, सुर्यक्षमा, मुक्युन्द, मुक्य []]
देवसका—ये सामी सुर्वभाव, आपको पुनि प्रहान करें।
देवसकान्य, देवसकान्याई तथा देवसकुमार—ये सामी आपको
प्रशिक्ते क्षित्री कार्यसा करें।

विरुक्तश्रामुक्त भूग्वेका (मूक्कुम्य) मुकुन्दक रेग्वे वैद्यानसम्बद्धाः मारोग 🚟 प्राची करने क्षेत्र (स्वका न 🏣 पूर्व कृतेन ने करा ( रेरामाओं महानाम रेराम्य कानक: जुल (कुन्स II स केनक IIII) दुर्मण है करा ह PROPERTY PROPERTY SAFETY SPECIFICAL IN अरुपी अगर्पमा अधिकारको सा। निरुक्तद्रोत्तरमञ्ज्ञ । वेशवः व्यक्तिकेतः कृत्यानिरुक्तरमञ्जनः (। रोहेन नीर्गपद तसक. औमान् जंगकोट्या नलन्ति । कोत् के मर्बद्रोपरिवाधीसम् ॥ अक्षेत्रकारेन वर्गेन स्पृतिस्तिकारकः । संस्कृतेस्वान्येतेन चेत्वं इन्युक्तेकाः ॥ क्योंटको पारकारे विकर्णकार्याका । विकासकारियाको इस्स अस्ति करेलु है ॥ - पुरस्त्वकार्यक्ष्म् । स्थातः पद्मे सहस्रमे देखे कारापुरस्यः । स 🗓 अस्ति पूर्व प्रोक्रमक्त क्षणक्तात् अवनेतः । देवप्रोक चौपत्कमत्त्रहोचनः ॥ विषद्भेवलोकाते प्रोक्तमे देख्यान्तिक ( प्राप्तकानिक सूर्ववद्यावस्थानः ॥ पहारियं गरतेशं हत्य 📰 चरेन् ते। 🚟 देशेन चञ्चर्यकत्रशेकाः ॥ दीवको कृताकेपस्यत्रक्रमार्वकः। कुरिको सप समेनो निन्धं सूर्वपायकः। अवहरू विश्व धेरै बहेबु तब स्वविद्यम् (। असरियं च ये क्या ये नामः कर्नव्येक्टनः । विकेक्टरपूर्वेषु वे क्या चूनि वेरिकाः ॥ प्रकारि में स्थित नामः सर्वे का समाधितः। सूर्वकार्वकारकः अन्ति कृर्वन्तु ते स्टा (। नक्तियो नामकन्त्रका तथा भगनुस्थानकः । सूर्यमञ्जः सूपरसः ऋति कुर्यन्तु ते सह ॥ य इदं जनसंस्थाने कोनिक्कृत्वात् तथा । य श वर्षा विदेशिय व किर्व प्रमाने सद्य ॥

मागरमेत्र अनन, अत्यन्त पीले प्रवित्वले, वित्ववित फ्रथ्याले, स्वरितक-चिक्कसे युक्त तथा 🚃 🚃 तमराम तसक, अस्पत्त कृष्ण 📟 , कण्डमे 📟 रेक्सओंसे मुक्त, पर्वकर अनुवरूपी देहने विकास विषये दर्पसे व्यास्त्र महाराग कर्पाटक, 🔤 समान महानाग पच, इवासवर्णकाले, सुदूर बहरूक समान देशकले, विवरूपी दर्पसे उत्पन्न तथा प्रीवामें तीन देखावाले हो बाहान्या संस्थात, अस्यन 🔳 इतियाले, चन्द्रप्रेकत-वैक्स, सुन्दर 📟 युक्त माधेन कुरिक्त (और 🚃 वास्ति। सूर्वेकी आध्यक करवेवाले—वे सची महानिक्को नदा सर्वत आपको निर्तार समाप नहारहरिक मरान करे । अन्तरिक, सर्ग, व्विरेकन्द्रक्तओं, दुवीं तन्त्र चूनि **एवं** पातारूमें रहनेवारे, भगवान् सूर्वके अर्थनने **व्या**क्ष सभी प्रसम्बन्ध 📖 आपको 🚃 📖 प्रदान करे 🗀 वो इस नाग-प्रतिपद्ध 📖 यः 🌉 करता 🐛 🔠

aged 1

सर्वनम् कवी भी नहीं कारते और **माना** भी उत्पर **ा** पहलाः

ग्रहाँद पुष्प विदेशों, यक्षेत्रों, पर्वतों, स्वगरों, प्राची केंद्रों, विद्वारों, अवस्त्रदादि वर्ते, मनी देवताओं तथा जनवान् सूर्वते स्वतिकों कामनके किने इस प्रवास प्राचीन काली पादियों ---

'आविश्वति भगवान् सूर्वकी विद्या करनेवाली पुण्यतेका कृति विद्या विद्या करेते, निर्मा करेते, स्थान्य क्रिका, निरम्ब क्रिका क्रिका

१-वहा पुरस पहारेचे पहार 🔤 नदेशनीत ची 🔤 🚥 वेदेश स्था ह भविकापि देशे संबंध्य संबद्धान्यकः। पुरानीतः सदा त्राः सूर्वेतव्यवक्रमध्यः स्थापितः पूर्वतेषु 🗓 💷 सूर्वेदवर्गसम्बद्धाः स हैं कुछन पूर्व को लेक्स्सूबर कारण: किस्सूबर स पान कर किस्सूबर है के एत्राबाच्या वर्ष 🎹 रिकामरिकोरः स्थानेकात यह पूर्वेण का प्रतिकान् ह underen bis min miller i ermidbeben warde beriegen in शुक्रेक्शको । । । वृक्तकोक्ष्यकः पूर्वकार भावतः । NUMBER OF STREET धनेक्षेत्र होत्य सन्दर्शीय दन्ती। चीरकीय सम्बद्धानिः वरिवारित्रविकाः । सूर्वार्थनात्रकारः व्यक्ति तथः प्राधिकान्त्रस सुविधी त्याः प्रशेन्ते व्यक्तिकारमञ्जूषा । सम्बद्धे स्थानिक विद्याले ह क्षेत्रिक्षाः । वृद्धिको 🚃 कोह स अभिन्यः । बहुन कसमा परिणों परिका का कोष: कालाकाकप्रकाशिक । कुनुदेश विकित कहातारिकोत सु यक्तवेदिकानिक । कृतिकेत्वः श्रीका करेत् स्व प्रातिकात्। HEAT CHILD पुरावको पारतेमा नामकाविकः का । रिकारकः कुरारकाने महिलाकानपुरिकः ॥ तुर्वपृत्वपराचनः । तृर्ववस्तरसम्बनः चनेत् स्व सर्विचनत् ।। विकास करें के बेरावार महिल्ला कार्य के विकास कर है । सुर्वपुरुष्याची पातः 🚃 कहार्सनियः। हेकस्प्रदेशकांकातः कहेतु तक प्रवित्रक्षेत्रः अन्तरिक्षणता नक्षा वे 🚃 🚃 । जन्मकन्त्रसा नक्षः पूर्वनका 🚃ः (( त्रहरूक्त्रहरूर्वभारतः सूर्ववृक्तरम् स्थानिक पूर्ववृत्ति हरूः व्यक्तिकस्थाः स

पगवान् सूर्यंतरे आगयन कलेकले 📰 वर्षत् 📰 प्रदान करनेवाले कुछ, सन्त 🚃 तथा 📖 📖 रहाति प्रदान करे। पृथ्वी, अस्तरिक्ष, वर्ग तका प्रतासमें निवास करनेवाले एवं मगवान सुर्वेकी आक्रमण करनेवाले महाम्लदाली और नामक्य सभी 🚃 वेद, 🚃 🖷 सभी दिशाओं में अवस्थित जन्म कर नवा 📟 आवको भित्य शान्ति प्रदान करे।

बिन कारान् सुर्वेक दक्षिण कार्ये विष्णु, कार कार्ये शंकर और लखारमें सदा सदा स्थित वाते 🕏 वे सथी देखता रून भगवान् सुर्वेक तेजने भन्यत्र होन्स आकरो उर्वोच प्रदान परे 📖 चौर**पर्यको** कालोकाले 🚃 देवगान 🚟 पूर्वपर्वते 📉 🚾 🚟 🚾 महे ।

अञ्चल पूर प्राप्तका स्था का प्रकृत प्राप्तका निवस्तान् भगवान् प्राकारमधे कदा जय हो । ऋतेने उत्तव तथा करन्यान करनेवारे, कारराची निकास करनेवारे नगवान् अधिकारीते (शीध-व्यक्ति) विधेन के वाते हैं। इसरिजी इस

क्षेत्री अब हो, इत्यसकप भगवान् सूर्य ! आपको नमस्तार है। क्रान्ति एवं दक्षिक विश्वत करनेवाले, तमेहत्या भगवान्। व्यक्ति ! व्यक्ति क्वल्य है, व्यक्ति क्य हो। सहस-किल्बेन्क्स्ट, वेडिस्स्ट्य, संस्टले निर्माता आरको बार-बार नगावार है, अवन्त्रों क्या हो। गायधीत्वरूपवाले, पृथ्वीको करण प्रस्तान् सुवीय । 🚃 कर-कर करावार है, आवसी जब हो।'

कुरुक् कुनै कोले—शुभ्द | इस विधानने अस्तर्यक क्रम कैलोव नक्को करवाओं हिन्दे शांतन-विधान करते हैं। 🛮 बन्दर 🚟 प्रयन्तित 🖹 गये। ये तेजने बुध्के समान 🚃 और बहाने विष्णुके समान 🖩 गवे। राजन् 🛭 एक्ट स्ट्रींस प्रस्तरसे सुरुपेक 🔤 🚃 पूर्वमत् से को।

राजन् । 📰 प्रचल अन्य रेगावता 🎟 नामना इस

मनिवनी विविधानस्थानक विवासकार । वास्त्राच्या १ वास्त्राच्या । सूर्वन्यवस्थानस्थानः ॥ साचि सम्बद्धां केने कर करकानुसम्बद्धानिक क्या सम्बद्धा निर्दे व गुरस्कीका । पर्वतः पर्वतः प्रमे नृष्कावेत नार्वदेश्यः। भूतेत्रक यदा सर्वे शर्वतः कृतेतु हे सुद्ध । समापः समीतः समें गुजरान्यति कृत्यातः । सुर्वेत्यक्तरं तत्त्व पूर्वेत्य वर्गः व्यक्तिसम् ॥ हरूमाः प्रतिः प्रति केतान्त्रः नेहारतः । सारम्य क्षात्रः वे तु अस्तिहरूक्ताः वे ह पातरं एकता ने मू निर्म सूर्यानी एक: । अनित कुर्यमु ते नार्ने देखाव निरम्दीविक: स तेकाः वेत्राच्याः सर्वे वे वेत्राः सर्वतेषुक्याः वर्णनीत्वातः वे तेवा वे वेत्रा अवस्थानाः स अन्तरिक्षे च ने निकारण से वर्णाव्यक्तितः। पात्रके चूटले व्यक्ति के वेकः स्वरूपनीताः स एकपार के का वालु देने कुन्यक त्रेक्ट का देवता आहे कृति है सह ह में पिताना महामेची कृतिकारों न्यानस्ताः (नामानसम्बद्धः समें दशी च गुन्तकारः स अंतरिके विकास ये जारे ने व पहांचकः। कालंक मूंत्रों से स स्कूतक सरोवकः । ननाडे मार्गानीर नाम तरे कुरू तर्यातीनामा तक देशन आणि कुर्वन् केन्नासाथ जपलारकाः तमें तमें कां। न्यासः । ने व समीरकाः तमें कृत्या ने प्रक्रेतकः ॥ मुख्य में च ने क्रलः सर्वते एकः । दक्ति विवने क्रल सुर्वतः च विवते प्रतिः । हरों नरम सरा कमें रुटबरे सहाम: विकास निकास तथा हैकल अभि कुर्वेचु है रूप ह ही। देकरपः सर्वे सूर्वन्त्रविष्यवितः।कृतेषु समाः 📖 सूर्वकोषु सर्वद्रः॥ सम सूर्यन रेकन क्योर्न ब्यास्ट स्थानका पूर्वन कंत्रका स्थानह है ह प्रहोताका 📖 का बारणान्याचित्रश्चन व्यक्तिकाका कृतकाक है प्रश्न ह मर 🚃 वर्ग प्रशिक्षणिने । क्रोक्स 🚃 अभिक्रम नवे कः 🛚 क्यमें 📖 देशेय स्वामीयकेम्बरः। सर विभिन्नोब्स्सक्वीरक्ष्य को स्थात प्रकारिक्षण्यम् सर्वितीरिक्षणः स । प्रकारम् सूर्वतः मान्यस्य नावे स्थः ॥

प्रशिष्ध, सभी उत्पादांगी तथा अन्तवृष्टि आदिनें

होससमन्त्रित सौरमुक्तसे वस्तवृर्वक पूजन कर मां मानवन्त्रित हो भी, मानु, तिस्त जय एवं मानुके सामव प्रमास हिन्द एवं प्राचित करे और सम्बाधन हो बस्ति (नैवेच)

प्रदान करे। ऐसा करनेसे देवलागम पनुष्योके कर्माणी

कामना करते हैं एवं उनके सिन्दे सम्बाधन कृष्टि करते हैं। यो

मानुष्य भगवान् दिवाकरणा माना मान्त्रित करते हैं। यो

सम्बाधन भगवान् दिवाकरणा माना मानवन्त्रित हो मानवन्त्रित मानवन्त्रित है। यह पूजन क्रिकें मानवन्त्रित मानवन्त्रित हो। वह पूजन क्रिकें मानवन्त्रित हो। वह पूजन क्रिकें मानवन्त्रित हो। यह पूजन क्रिकें समावन्त्रित हो। यह पूजन क्रिकें क्रिकें क्रिकें हो। यह पूजन क्रिकें हो। यह पूजन क्रिकें हो। यह प्रमुक्ति हो। यह पूजन क्रिकें क्रिकें क्रिकें हो। यह पूजन क्रिकें हो। यह पूजन क्रिकें हो। यह पूजन हो। यह प्रमुक्ति हो। य

न तो सर्वेक देशमे कृत् होती है और न अकारूमें मृत्यु होती है। उसके उत्तेषों विकास प्रभाव भी नहीं होता एवं जड़ता. सम्मल, मृक्ता भी नहीं होती। उसकि-भय नहीं रहता और म विकास उसका, महाविवेश सर्व आदि सभी इसके जन्मसे उपन में जां है। हानी अकार तीचीका भी विशेष फल है, उसका कई मृत्य करू इस शांतिकामध्याध्येष अवन्यसे प्राप्त होता है। इसे सुरुवेकाला भी कर्मक व्यक्तिया परू भी उसे मिलता है। इसे सुरुवेकाला भी क्षांतक व्यक्तिया के विश्व मेंचा किसाती व्यक्तिके साथ बात कर्मकाला, दीन, आर्त, विश्व मेंचा विश्वासी व्यक्तिके साथ बात कर्मकाला, दीन, आर्त, विश्व मेंचा विश्वासी व्यक्तिके साथ बात कर्मकाला, दूह, पायाचारी, विश्वपत्ता सथा व्यक्तिके साथ बात कर्मकाला, दूह, पायाचारी, विश्वपत्ता सथा व्यक्तिके साथ बात कर्मकाला दिल्लेट पायावूल हो जाते है। बातावा स्थान कर्मकाला स्थान प्रमुख क्षेत्र स्थान हो।

# विविध स्पृति-धर्मी 🛭

---

राजर क्लामीकने बाहा—सहन् ! यांच प्रकारके जो ल्ला आदि धर्म है, उन्हें जाननेकी मूहे बही हो आंधरतक है। कुरामुर्वक आप उनका वर्णन करें।

सुमं**नुधी क्षेत्रे**—महायात ! मगजान् कारकारी अंको सार्गाध अठणसे जिन पाँच प्रकारके यामीको कारकाल था, पै क्षाच वर्णन थार रहा है, आप उन्हें स्में :

भगवान् सूर्यने ब्रह्म— गरुवानन ! स्मृतिजेक धर्मका मूल समातम वेद ही है। पूर्वानुमृत ब्रह्मी स्थान करना ही स्मृति है। स्मृत्वदि धर्म पाँच प्रकारक होने हैं। हा क्योंका पारून करने हाता और पोधवाँ प्रति होती है। प्रकार केद धर्म है। दूसरा है अध्यय-धर्म अधि होती है। प्रकार केद धर्म है। दूसरा है अध्यय-धर्म अधित होती है। प्रकार केद धर्म है। दूसरा है अध्यय-धर्म अधित होती है। प्रकार केद पाँचा होतिय, वैद्यन और दूसरा है क्योंका है मुख्यमें और पाँचा है निश्चिक धर्म— मे ही स्मृत्यदि चीच प्रकारक पर्य कहे गये हैं। वर्ग और अध्ययक्ति व्यवस्था करने धर्म कर्मका निर्वाह करते हुए क्योंको सम्पादित करना है। वर्गाक्षम और आध्यक्षम है। विस्त वर्गाका प्रकार

# 🛮 संस्कारीका वर्णन

नियंत्र और विधि-कार्य हा है। स्वारके हिंदि स्वारकों की प्रकारकों हैं—वृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति, अदृष्ट-स्वृति। सभी स्वारकोग्न, प्रकारकेश, आर्थाको तथा प्रकार आर्थि देश है। सरकारों और दृष्टाती (कुरुकोग्ने दिवाण प्रीपायके एक नदी) इन हो विध्यापति का का के देश है वह देश-निर्मित देश अध्यक्ते समसे कहा कात है। हिमायक और विश्यपर्यतके बोचके देशकों जो कुरुकोग्ने पूर्व और प्रयापके पंक्षिपमें स्थित है हिमायक उत्तर देश का कात है। पूर्व-स्कृद तथा पहिमा-समुद्र, हिमायक रूप का विश्वयक्त पर्यतके बीचके देशकों आर्थाकर्त देश का है। कहाँ कुरुकार स्वृत्त तथा पहिमा-समुद्र, हिमायक करते हैं और सम्प्रवतः नियास करते हैं, यह यहिम देश है। इनके विश्वयक्त देश के जा देश मरोपक-देश है जो

📖 आरिके योग्य नहीं हैं। द्वित्वतियोको व्यक्तिये 🔣 विकापूर्वक इन देशोंने निवास करें।

मनवान् आदिसमे दुनः कक्क-कम्प्रद ! 📖 🛊 आक्षमधर्म चतरत्र एत् 📋। अक्षुचर्यासम्-धर्म, गृहस्यसम्-वर्ष, वानप्रस्थक्षम-वर्ग और सेन्युरहज्ञय-वर्ग- क्रमसे इन वार प्रकारसे जीवनवादन करनेको आवाजकर्म कहा जाता है। एक ही धर्म 🚃 प्रकारते विशवत हो 🚃 है। 🚃 गायमीकी उपासना करनी चाहिये । गृहस्थाके व्यासना और शक्तांत, देव आदिकी पूजा कानी च्योप्रिये। देवास-धर्मका और संन्यासीको नैक्षिक कर्मका प्रस्ता करना चाहिये। इन चारो आजनोके वर्ग नेदम्हरू है। गृहरूको बुहुम्भरूमे पश्चपूर्वक गर्याचल-संस्कृत करना चाहिने । वक्षते पुंतवर तथा कड़े अधवा सतवे मुख्ये 🛲 🛒 संस्कार करना चाहिये । जन्मके १४५६ आवस्य नेकाल करना पाहिये। जातक (शिक्षु) को संग्, यो, समुख्य सम्बोद्धार प्रचान कराना शाहिये । जन्ममे दसके, न्यारको सा साहाने हैंदन शुभ नुसूर्व, तिथि, नक्ता, योग आहे, क्यांक कारकरक-संस्कार करना व्यक्तिये। वहकानुस्वर क्रंडे कारने अलकारक करना चाहिये। सभी द्विजाति जाराज्येका पुरस्थान-संस्थात मर्थ अथवा तीसरे वर्गने ima चाहिये । त्यापन-

व्यक्तमें कर्षि क्योक्कीत-संस्कार करना उत्तम होता है। गुरुसे क्यांकेको स्थेल कहन कर वेदाध्ययन करना चाहिये। विकारकारके प्राप्त् गुरुको अस्त्र प्राप्तकर गुरुक्षश्रममे प्रवेश करना चारिये और मुख्यो प्रयोष्ट सुवानीदि देकर प्रसान करना **व्यक्तिः गृहत्वकाने प्रवेश कर अपने समान वर्णवाली उत्त**म कुलेंसे युक्त कन्यारी विकास करना आहितेन को कन्या पाता-**ार्ज कुराये सक पीढ़ीतवार्ज ≡ हो और समान गोंक्सी** म 📕 देशी अपने वर्णको कन्याने 🎟 🖛 करना पाहिये। नाम मान्यम् । 📖 और पैशापः। 🛍 और **ावार गुप-दोवको परशेपति परक्षमेक बाद हो विवाह** करन करिये । कन्कर्ष समस्या-नेदसे बार प्रवस्तानी होती हैं नम इस प्रकार है—गीरी, गीमक, देवकस्था तथा

वेदिन्ये । सारा वर्षको कान्या गीरी, दश कर्षको भीरका, ......

इससे आयुव्य क्रमा येडियी

(रक्तरका) अवस्थति है। किया कन्यकोंने विवाह नहीं

करण पार्विये : श्रिकारियोंको ज्योतके साध्यमे विवाह करना

च्यक्ति । स्थी-पुरुषके परस्यर मधुर 🚟 🚃 सम्बन्धीसे धर्म,

🔤 🔤 माना 🔤 होतो है और 💹 भोधक कारण

🚃 १८१-१८१)

# शासके बिल्ला भेद सभा भैतारेग-कर्पकी प्रक्रिय

मनकर् कृषे 🕮 (अञ्च) हे कहा—अञ्च । दिकमात्रको विधिवृर्वक पद्म-महायङ—भूगकः, विवृधकः, millio दैवयत्र और मनुष्ययत्र min पादिने । बरिन्नैक्टेक करना मृतयह, 🚟 बहना विवृद्ध, बेटका 📖 🛗 अध्यापन करना अद्यापक, इत्यन 🚃 देवरात तथा शरफ आवे हुए अविधिको सरकारपूर्वक चोका 🛲 सङ्ख्य मनुष्ययम् कहा 🚃 है।

बरमका अस्ते 🔤 🛗 व्यक्ते 🛍 🚃

आद बार्ड प्रकारके होते है—निस्त-सद्ध, नैनिरिक-📖 काय-प्राद, वृद्धि-श्राद, स्थियन-प्राद, वर्षक-📖 गेह-श्राद, सुदि-श्राद, कर्मह-श्राद, देवेक श्राद, औपचारिक 🚃 🗰 संकलारिक 🚃 हिल्. 🕮 (भाग), जल, दूध, फल, मूल, 🚃 आदिसे 🚃

राष्ट्रिके रिजे 📟 सद काल करिये। यो 📖 अविदिन 🔤 🖦 है, यह 📟 आहे हैं। एसोरिट सद्दानो नेपिएक-साथ अवते हैं। इस स्वयंको विविध्येक क्षण्य कर अनुष्य (विका संक्षा) ऋद्वानीको घोजन करून नवीने। यो सद्ध करनवारक किया जात है, नक्य-साद्ध है। इसे पार्वज-आदुको विविधे करन व्यक्ति । वृद्धिके रिप्ते 📕 🚃 किया जाता है, उसे वृद्धि-🚥 कहते हैं। 🗎 सभी अब्दुकर्ग पूर्वाह्न-कारुमें उपनीती क्षेत्रर करने चाहिये। समिव्यन-प्राद्धमें कार पात बनाने च्छिने । उनमें गन्ध, बल और तिल स्नेहम चाहिये । प्रेत-पत्रका 🚃 पितृ-पत्रमें क्षेत्रे । इसके रिव्ये 😘 समानः 💕 (वक् १९१४५-४६) मजेबा पठ 🚃 बहिये।

🚃 भी एकोरिष्ट आद्ध करना चाहिये। अन्यकस्य स्था किसी पर्वपर जो जाद किया जाता है, उसे पर्वण-पाद काते है। गौओंके रिव्ये किया जानेकाल श्राद्ध-कर्म गोल-साद्ध 📖 जाता है। पितरोंको तृतिके किये, 📖 और स्वरूपी प्राप्ति-हेत् तथा विद्वानोकी संसुष्टिके 🚃 🖷 🚃 भोजन करावा जाता है, यह सहस्रार्थ-बाह्य है। नर्वाधन, सीमकोप्रयम तथा प्रेसका-संकारोके समय किया गया 🚃 कर्मान-बाद्ध है। पाना आदिके दिन देखतके उदेश्वके पीके द्वरा किया गया हवनदि कार्य देविक श्राद्ध करतका है। प्रारीरको पुर्वेद, 📟 📰 अध्यक्षके निवत 📟 गया 🚃 औपचारिक श्राद्ध कहलात है। सभी श्राद्धेमें संबादारिक श्राह्म श्रमके हेता है। इसे एक व्यक्तिकी विकिन्त करना चाहिये। यो क्यांकि आंवश्यरिक ब्राह्म नहीं करता, उसकी पूजा न मैं बहल करता है, न विका, बहुत, वह वर्ष अन्य देवपण ही प्रकृष करते हैं। इसलिये प्रयमपूर्वक ऋषेक 💹 मृत 🚃 🚃 🚃 🚃 🚾 अत्र अत्र अत्र अत्र अदिये । 🎹 व्यक्ति माता-पिताका बार्विक आह. नहीं करता, वह केर तामिक मामक नरकाको प्राप्त करता है और अन्यमें सुकर-भौतिमें उत्तक होता है।

असमाने पूजा — मगवन् ! जिल्हा । मृत्युको तिथि, मास और पश्चको नहीं सकता, उस जिल्हा किस दिन श्राद्ध करना चाहिये ? जिससे वह सरक्ष्यमी न हे ?

वेद-विक्तवहर और क्यां प्रश्न किया का धन विक्रवार्थ और देव-पूजकांदर्भ नहीं स्थान पाहिये। वेधदेव क्यां की और प्रण्यान आदिस्तक पूजनसे धन वेदवंचा क्यां की नित्र समझना वाहिये। में वैधदेव किये विना है भिक्त कर लेख है वह मूर्च स्थानचे पास करता है, उसका अव-वाद कार्य है। प्रिय हो पा असिय, मूर्च हो या विद्वान् केदिय कार्यक सामव आचा हुआ कार्यक स्थान सेता है और वह अविकि कार्यक सोवाकस्य होता है। में विना विभिन्न विक्ता किये हैं। कार्यक है जो अतिथि कार्यते हैं। वैधदेव-वर्मक स्थान से व सो पहले कभी आया है और ये ही उसके पून: अस्तिकी सम्भावना हो सो इस क्यांसको अधिक अन्या व्यक्ति (असे स्थान विक्तिको सम्भव हो समझना व्यक्ति ।

# यातु-शासूमार्थ संक्षिप्त विविध

भारतान् आदित्यने सङ्ग्रा—अरुन ! राजिने साद नहीं करना पाहिये। राजिने किया गया त्राद्ध राजसी लाढ स्थल जाता है। दोनों संस्थाओं से और सूर्यके अस्त होनेपर भी साह साहा निविद्ध है।

अरुपाने पूजा — भगवन् ! ब्लाह्म सादः किस अवस्य ब्लाह्म अरिय और माता किन्दे साता गया है ? नान्धेपुक-पितरोका पूजा ब्लाह्म असार करना चाहिये, इन्हें पुत्रे क्यानेकी कृपा करें।

भगवान् आदित्वने सङ्ग-सन्तार्थुल ! मैं मातृ-श्राद्धकी विधि ==== रहा है, उसे सुनिवे।

मतुशाद्धमें पूर्वाह-कालमें आठ विद्यम् व्यक्तनीयो

(अञ्चल १८५)

वो भी माताएँ हों, उन्हें आदरपूर्वक निमन्त्रित करना चाहिये । इस प्रकार महराओंको उदिष्ट कर 🗈 📖 बनकर पुत्रन 🚃 पाहिने। क्यांपुरस्को उदिह कर 🔤 उत्तर सहस्रोको पाँच पितरेके रूपमें भोजन कराना ब्यहिये । नान्दीम्बा-ब्राह्मरे जाहाणीको विधिवत योजन करावस उनको 🚃 बार्ल चारिये।

मरापरी ! आहारे दीहित अर्थात् अती, मृत्य वेस्त (एक

बर्व दिनका समय) और तिल--वे तीन पवित्र माने गये 🖥 तथा तीर प्रजंस-बोन्च कहे गये हैं--- सृद्धि, अक्रोच और इक्रेस्ट न 🚃 एक 📰 करण 🚾 देव-पूजन और विवर्षेके कर्म नहीं करने प्लक्षिये : विन्य उत्तरीय यक्त धारण किये जिल्ह, देवला और मनुष्योंका पुत्रव, अर्थन 📖 घोजन 🚃 🖘 🔤 📖 होता है।

## सौरवर्षये ऋदि-प्रकारक

भगवाम् भाषास्ये ब्यान्-सगरितः । स्वान्तेके नित्य पवित्र तथा मध्यपाची 🔤 📖 उन्हें 🚃 स्वनादिसे 🔤 हो कदनादि सुवन्धित 📖 🚃 देवताओका पूजन 🔤 करना चाहिये । मुर्कचो निक्रकोदान **मही देशमा चाहिये औ**र नम्न 🔤 यो नहीं 🔤 चाहिये : मैधुनसे दूर रहना चाहिये । 🚟 भूत तथा विश्वास्त्र परिवाप 🔤 करना चाहिये। प्राचीक नियमोके अनुसार 🚟 करने चाहिषे । शास-वर्णित कर्मानुहानके 🚃 🛍 👊 🚃 नहीं 🔤 चाहिये (

क्याधियते । अध्यय-चक्रम सभी 🚃 रिप्ये 🚃 🕽 । इक्कारी सुद्धि होनेपर ही कर्मकी 🚃 📆 है अन्यका मारिसे संदाय है बना रहता है। व्यक्ति दह, कियासे दृह, कालमे दृह, संसर्गसे दृह, आश्रवसे 📰 तका सहर्त्तंत्र्य (काभावतः निन्दित एवं आभवत) पदार्थने अभाव युवित इदयके एवं क्यारी ध्यतिको स्टब्क्ये परिवर्तन 🗯 होता । एउट्टान, पाजर, पाज, कुक्काएस, बैनन (सपेट) तया मृत्ये (रंगल) आदि जात्या दृष्टित है : दुनका simil नहीं करन चाहिये। जो करत क्रियके 🚃 दुवित हो गयी हो अधवा प्रतिक्षेके संसर्गरे दुवित हो गयी हो, ....... करे । अधिक समयतक 📖 📖 पदार्थ कालद्वित कहरूला है, 📉 📰 होता है, पर देशे तक प्रमू आदि क्यार्थ कारुद्दित नहीं होते। सुरा, रुद्धसून 🚃 🚃 दिनके अंदर न्याबी 📗 गायके दूषसे युक्त पदार्थ और कृतेद्वारा लाई किये गमे पदार्थ संसर्ग-दृष्ट कहे जाते हैं। इन पदावाँका परित्याग 🚃 चाहिये। शहरो 📺 विकलाह आदिसे सह चटार्च

आश्रय-दृष्टित 📰 जाता है। जिस वसूनेर 📖 करवेने

🚃 🚃 पुण्य उत्पन्न हो कही है, वैसे पुरीप (विद्या) के असि 🚃 प्रमुख करून होती है—उसे 📹 नहीं कान च्यारिये । 📰 सहरुकेन दोवपुक पदार्थ कहा गया है । को, 🚃 🚃 थक्षण शतकोक 🚃 अनुसार ही स्था स्थापिते ।

🚃 दस दिन, 🧰 दिन 🚃 पंद्रह दिन और

एक किल्म प्रेश-शब्द के बात है। सुरुवाधीय सक क्रमात्रीयमें दश दिनके भीतर किसी व्यक्तिके पहाँ भीजन नहीं करक काहिने । दशायाम एवं एकप्रदशासके बीच जानेपर नारहरें दिन कान लिल्ली रहिंद्र हो लिल्ली है : शक्तमर पूर्ण हो व्यमेपर · श्रीदा हो जाते है। स्तिप्क्रिये जन्म और मृत्यू होनेक अञ्चीय सकता है। धीर आनेतकके बारकको मृत्यु हो क्रनेपर सदः खुद्ध हो कती है । बुडाकरणके पहले बालकजी कुलु हो आनेपर एक दिन-ग्रतको अशुद्धि होती 🖥 तथा युक्तकरणके आद और वज्ञोपकीत लेनेके पहले मृत्यु होनेपर अञ्चिद्ध होती है और इसके अनन्तर दशग्रकों अञ्चिद्ध होती है। मर्थ-स्तव हो जानेपर तीन राष्ट्रिक पहात् जरूसे स्नान करनेके 🚃 शुद्धि होती है। 🌃 (एवं सगोदी)-की पूर्व होनेका तीर अहोएलके बाद शुद्धि होती है। यदि केवल क्रव - क्रब करू 🖣 तो कारुक्तमे सुद्धि हो जाती है। इक्करो रहिंद आयमें तकते. विद्री और जलसे बोने

क्या यक इटाने, प्रधाकन करने, सार्श और प्रोक्षण करनेसे केवी है। इच्च-ख़दिकं पश्चात् जान करनेसे शृद्धि होती है। श्रतःकारम्बा स्वान नित्य-स्वान है, प्रहणार्वे **स्था** करना काम्य-स्तान है तथा और उदेर श्रीयादिके पहाल जो ज्ञान किया जाता है वह नैमिक्कि साम है, इससे पापादिको निवृत्ति होती है। (अध्याय १८६)

## बद्धाकी महिमा, ललोल्क-मन्त्रका महत्व्य तथा गौकी महिमा

असमने पुष्टा— मगवन् अधिश्वदेव ! मनुष्य किस पृष्यकर्मका सम्पदन कर कर्म जाते हैं ? कर्मका, तकेका, स्वाच्यावयत, ध्यानवत और ज्ञानवत— इन प्रिष्ट क्षेत्रेच, सर्वोत्तम क्षा करेन हैं ? इन क्षा पर है और इनसे करेन के इससे करेन-सी क्षा प्राप्त होती है ? धर्म और अध्यक्ति कितने चेद करे गये हैं ? उनके साधन क्या है और उनसे करेन-सी वित तोती है। नरकी पुरुषित पुरु पृष्टीकर आनेकर घोणले जेव कर्मिक करेन-करेनसे विद्व तत्त्वका हाते हैं ? इस

जात होती है ? इसे बाल बनत्यनेको पूर्ण करे।

सगवान् सूर्यं बोलं — अरुव ? स्वर्गं — (मेश) के परमंत्रे देनेवालं तथा नवकारी समुद्रमे पर कर्यनं आले, पापहारी एवं पुण्याद — सूने । समीत पूर्वने तथा सम्प्रमें और असके अनामें बारा असवस्था हैं। स्वर्थं क्यां समीतित होता है, सार पर्व असामृत्यं हों। बेद- वन्योंक अर्थ मिला गृहताय है । उनमें प्रधान पृथा परमेक्ट अधिहित है, अतः हमें श्राह्मंक अस्त्रेयमें हो सहय किया का समान है । ये इस साम पश्चे आहें में देने जाते । स्वर्थं का प्रधान है । से समीतित प्राह्मंक स्वर्थं कहें ने जाते । स्वर्थं का स्वर्यं का स्वर्थं का स्वर्थं का स्वर्थं का स्वर्थं क

है संगत्रेष्ठ | अब मेर मण्डलके विकास मुन्ते । वेस कल्याणमय मण्डल सस्त्रेलक नामसे विकास है । वह स्था देवीं एवं तीनों गुणोसे परे एवं सर्वत्र है । यह सर्वत्रक्रियन है । '35' इस एकासर मन्त्रमें हा मण्डल अवस्थित है । वैसे चेर संसार-सामा अनादि है मैसे ही साझोल्क भी अनादि और क्रिके है मैसे ही यह संसार-सामरके किये ओविष है। मीस कालेवालोके किये मुख्यिक साधन और सभी अधीका साधक है। संबंधितक नामका यह मेरा मना सदा उचारण एवं मारण काने मोन्य है। जिसके इदक्षमें यह '३७ नमः साझोलकाम' काम नियम है, उसीने सम कुछ एका है, सुना है और सम कुछ अनुद्धित साम है-—ऐसा समझना चाहिये।

धनीवियोंने इस सकोएकको मार्गव्यके नामसे 🚃 है। काले जी प्रजासक होनेपर एवप प्राप्त होता है और अभाइम्से क्रमान्त्रम होता है। सुर्थ-सम्बन्धी वयनको कहनवाले गुरुकी सुर्वेक सम्बन् पूर्वा करने अहिने 🖂 गुरु प्रवासगरमें निवास क्वीक्ट उद्धा कर देता है। भी धर्मक्रमी जीतल जलके दारा 💷 अञ्चलकारी विद्वारी संतर वनुष्यको प्रतान करता है, 📖 सम्बन पुर कर्ने होता ? को चारोको आपराची अध्यासे अवस्थित काले हैं, धन्न उनको कौन पूजा नहीं करेगा । स्वर्ग 🐙 रूपवर्ग (मोबा)की प्रतीके लिये देखाधिदेश सुर्वके प्रारा जो करन कहे गये हैं, वे अतिहास करन्यभक्तरी हैं ( राग, हेस. अक्षा, इतेष, कार्य, तुम्लका अनुसरण करनेवाले व्यास 📖 हुआ व्यक्त व्यक्तवर साधन होनेसे दर्शनित कहा जाता है । संसारके क्षेत्र-साधक मुद्दल अनुस्तरवाले संस्कृत भावपारे 👊 🚃 त्याच 📕 ? जिस माचनके स्वतीसे शुग-देव अव्यक्ति काल एवं पुष्प 🚃 होता है, वह कठोर पायब भी महिराय जोधानमक है। स्मृतियाँ, महाभारत, बेट, महान् प्रकार 🕶 धर्म-साधक न जन सके तो इनका कार्यक्रमान अवनी अवनुके व्यक्तित करनेके रिच्ये ही है। सहस्रों वर्षकी अब्द बात करनेकर भी प्रात्मक अन्त नहीं मिरुता। 🕮: सभी अंद्रकर 🚃 तत्त्वत्र (परमात्म) 🗯 ज्ञान कर परलेकके अनुरूप 🚃 करता चहिये। मनुष्येके समर्थ

त्रायपुर्वः सन्त प्रमेः श्रद्धमञ्चानसंभितः । त्रद्धमञ्जानस्म पर्वः स्था कार्यस्ति ।
 भूतिमञ्जातः मृत्यः प्रध्यस्योगाः । त्रद्धानसंभ मृत्यते ॥ पंत्र प प्रश्नुत ।
 व्यवंतरीनं बहुनिनं पैकार्यम र्शातां । पर्व स्थापनं मृत्यः श्रद्धातीः सुद्धित ।
 पर्वः परः सुरमः स्था प्रक्रपूरं तपः । त्रद्धा पंत्रसः स्था स्था स्था कात् ।
 सर्वस स्था तर्वेत रक्षारश्चात्रः ॥ व । त्राव्यम् स परं विर्तेत्व सम्यागुद्धात्रो कात् । (स्थापनं १८७ । ९ — १३)

शरीरते भी क्या स्वम 🖁 भो पारखेकिक पूरण-पारकी खान अवदर-सक्त्य विदेशकार व्यक्तको छिन्ने पोन्य एवं प्रियदर्शन करनेमें असमर्थ है। जो सीरहानके महारूवको उद्यापन करनेमें स्वन्धित गुण्ल उत्पन्न हुआ है। जगतुके सभी बीज भीरसे असमर्थ है, 📖 शक्तिसम्बन और परिवत होते हर 🛍 मुर्वा उत्तव हुए है। कामजबरे सिद्धिके छिये सभी माङ्गल्य करत् है। इसलिये जो सौर-जानके सन्त्रकारी पहिलाने तरक कथा है, बंही पश्चित, समर्थ, 📖 और जिलेन्द्रिय है। यो 🚃 गुरुको सम्पूर्ण पृष्टिची, घन और सुकर्ग उसदि देखर भी 📰 अन्यायपूर्वक सौर-जानकी जिल्लामा करता है अर्थात् **ब्लाहरू** करते हर पूछता है तो उसे पडधार-मन्त्रम उपदेश गुरुवये नहीं देश चाहिये। यो पगवान् सुर्वेक 🚃 न्यस्पूर्वक विनय भावसे सुनता है और काला है, कर उचित्र सन्तरको प्राप्त सहस्र है, अस्पाधा उसके विकरित नहस्रको काल है। जे भगवाम् सूर्वन बद्धशर-अधने नियानपूर्वक केट्न-प्रारं सूर्यको पूजा करता है यह वनुष्योधे 🚟 है । रेजस्टीहरू करता 🖥 वह इस ओक्टर सची बहुमशाओंको प्राप्तका अपने 🚃 करनेपर बीरसम्परसे सम्रो 📖 मानुस्वरूप 📰 पीर्व 🚥 हार्ड—नचा, सुभन्न, सूर्वच, स्वयन 🚥 क्षेपनायती । गीर्व तेकने सुर्वेष समान है । व सम्पूर्व सहस्रका ····· करनेके रिप्ते एवं देवताओओं दृशिके रिप्ते और मूक्ते स्तान करानेके रिज्ये जनात हुई है। ये मेद 🖫 📟 👬 स्थित है। गीओंक सभी अनु पणित है। उनमें सुद्धों रूप विदेश हैं। पायके गोवर, सुत्र, गोरीअन, दुध, दही तथा कृत---वे छः पदार्थ पान पवित्र 🛮 तथा सबी मिदिहरोको देनेवाले 🗞 सूर्यका परम किय जिल्लामुख गोपक्से ही उतका हुउड है, उस पुश्रमर कमलहरता लक्ष्में विश्वभाग रहती है, अह: पह

दर्जेस उत्पन्न सम्बर्धे । देखेला अस्तिपाय 📰 अपूर्व बृतसे उन्तम है, अतः मं, दूध, दहोसे भगवान् सूर्यको जान कराना च्छिये। जनकर उच्च यह और क्यायमे स्रपन कराना व्यक्ति । किर संतल उसमें 📖 करावर गोरोचनका लेपन को विस्कार, कमल और गीतकमत्त्रो पुत्रन करना चाहिये। क्रकेरावृक्त मृत्युरुक्ते भगवान् सूर्यको अर्थ्य प्रदान करे । दूध, दक्षे, भार, मच्के साथ अर्कत एवं विविध भक्ष्य पदार्थीकी निवेदिन करे । इसके 🚃 मनवान् मास्करकी प्रदक्षिण कर 

कुलको इसोध पेदियोको लागेने हे जाता 🖁 📖 उन्हें वहाँ क्याप्रेस का राज क्याप्रेस का स्थानको प्राप्त स्था है। भगवान् भारकारकं पुजानं पत्र, पूचा, घरत, जात जो भी अस्ति। केला है यह सम तथा सुर्थ-कव्यन्धी और भी सुर्यहरेकको जार हैं, इसमें मंदेर नहीं है। देश, काल 🚃 🎆

📺 🎟 🛋 कं दिनपति भगवान् भानुको पहनू-पृजा

अनुस्य अञ्चलकं नुसरको दिया गया अस्य भी दान शक्षय 📰 है । है 🔣 ! 📟 अर्थपरिमाणनाम सत्याचनो दिया अद्धार्कक दान सभी कामनाओको पूर्ण कानेवाला है।

जिसने अध्यनकी जलके जान कर किया 🛮 और जीएकपी करूमे 🚟 🗗 सुद्ध 📟 🔤 है, वह सभी प्रत्रोमें उत्तम भाषक बाल भवा है। जब, इन्द्रियदमन और संबंध मनुष्यकी संसार-साथरमे पर उत्तारनेवाले साचन है।

(अध्येष १८७)

# **ार्च्या एवं अतिथि-माहरूय-वर्णन, लौर-धर्ममें दानकी पहला** और 🚃 निर्णय 🚃 पश्च सहापातक

सारम्बाइन (भगशान् सूर्य) ने कहा—हे के। जो आणी सूर्य, अप्रि, गुरु तथा कहाचको निवेदन किये किया स्वयं जो कुछ भी मक्षण करता 🛮 वह प्राप-मञ्जूल करता 🕏 :

भीवृक्ष करा आवा है। गोथपसे पहु उत्तर होता है और उससे

कंमल 📖 हुए हैं। गोरोचन परम महरूमन, परित्र और

सभी कामनाओंको पूर्ण कानेवाला है। ग्रेशुप्रके सभी देखेंका

नुस्य मनुष्येके कृषिकार्यमे, वाणिकारे, क्रोध और असत्य अस्तिके आकरणसे तथा स्वासुना दोवसे पाप होते हैं। सूर्य, एक, ऑक्स और अर्थतीय आदिके सेवारूप पश्चमहायहाँसे ये

१-फोजन प्रसानेका स्थान (पूराक), उनदा आदि 🎟 स्थान (भाटे आदि), सम्बन्ध आदि कुटने पीरानेका 📖 (लेक्), सिरुक्ट आदि), बस्द रसनेका सम्बाहतस्य साम साह देनेका काम---इतमें अस्तानों वे विकास सामान एतमे हैं : अतः गृहासकी दिनो इसे ही पहासूत-देख करा एवा है।

पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी बावा अन्य प्रापेसे भी यह रिमा नहीं होता, अतः इनकी निस्य पूजा करनी खड़िये। टेकाविदेश दिकाकरके प्रति जो इस प्रकार भक्ति करता है, वह अकी पिसर्टिको सभी पापोंसे विस्तृत IIII स्वर्ग है जाता है।

हे 🚃 ! भगवान् सूची दर्शनशत्त्वते हि चङ्गा-स्वरूप

 तथा सभी फ्लेसे मुक्ति मिल्ड जाती है। संख्य-समयमें सूर्यंची सेवा करनेवारत सूर्यंत्येकने व्यास्त्र है। इंक्ट-समयमें

बार भी भगवान् सूर्यकी आराधना करनेसे हाताः विज्यु, महेल, पितृपण तथा सभी देवशण एक ही सान्य पूजित एवं संतुष्ट हो जाते हैं।

भार है। ब्राह्ममें भगवान् सूर्यकी पूजा करने क्या सीर-फालेको मोजन करानेसे पितृतान तृत हो जाने हैं। पुरानकेसको असी हुए देशकर सभी ओवांचर्या यह बहुबन असन्दर्श कुल स्था

लगती है कि आज हमें अक्षय कार्य क्षेत्र होता । विकृत्य हैं। देवगण अतिक्रिके क्ष्यमें स्तेत्रके अनुवाह होंसे अञ्चले परिवारण के रिन्ने आते हैं, उत्तर विकासी अन्य हुआ देवाकर

मा नोक्सर मार्च सम्बुक जान चाहिये मार स्थानत. आसन, पाठ, अर्च्य, साम, मार्च आविद्वार सामा सम

करने चाहिए। शक्तिय कप-सम्पन्न है वा कुरूप, व्यक्तिय प्रदेशारी है अभवा लच्छ प्रश्नाचरी इसपर विद्वार पुरुषको

विचार नहीं भारता चाहिये; उसका सथेक स्वारत करना चाहिये।

अरुण 1 दार परपात्रको 👭 देश चाहिके, 🛗 काले मिहीके पात्रमें रका हुआ इय—वरु स्था पदार्च ग्रह से जाता है, जैसे ऊपर-भूमियें बोधा पथा बीज और परमणे हवार

मार्थ क्षा पदार्थ निकल हो जाता है 🚻 ही अपनको दिया गया दान 🕶 निकल हो जाता है।

समक्षेष्ठ ! जो दान करणापूर्वक अञ्चके साथ सम्बद्धाः दिया जाता है, वह सभी कमेंमि उत्तम है। होन, अन्य, कृषण, बाल, वृद्ध तथा आंतुरको दिये गये दानका कर अनन्त होता है। साथु पुरुष दक्षिके दानको अपने स्वार्गका उद्देश ॥ हरायम् पञ्चन करते हैं। इससे दाताका उपकार होता है। कोई अर्च्ड व्हंद घरमर उन्नचे तो करेन ऐसा व्यक्ति है जो उसका सामा नहीं करेका: सामान पायना करनेवारण पायक पूजा

हिला। कीन दाक है और कौन हाला हिला मेद देने और रुनेवारेके क्षापसे ही सुचित हो जाता है। जो दाता व्यक्ति

मानकस्थे **माना हुआ देखकर दान देनेकी अ**पेशा उसकी पाकाकर विकास करता है, जो सभी कमीको करता हुआ भी स्थापन कहीं है। संस्करने यदि सामा न हो तो

दानवर्ष कैसे होगा ? इसकिये विकास है, स्वागत हैं —यह ब्लिक्ट्र दान देन चाहिये।

अन्यक्तो प्रेमपूर्णक आचा च्या भी दिया जाव तो वह
 है, किनु विन प्रेमक दिया हुआ बहुत-मा दान भी व्यर्थ

ऐसा वनीविधेने बस्त है। इसकिये अनल कर बाहनेवाले
 सम्बद्धिक दान देना बाहिये। इससे मरनेवर अन्यक्षिक दान देना बाहिये। इससे मरनेवर अन्यक्षिक दान देना बाहिये। इससे मरनेवर अन्यक्षिक स्थानिक क्षित्र अन्यक्षिक स्थानिक स्थ

गया दान विकास है, किंदु कडोरताने असरकारपूर्वक दिला वान पुरत वा नहीं है। विकास कुद्ध होकर

क्षा दान देनेसे न देना अच्छा है। प्रथम शीरा दान म वर्ष है, न भन है, न सीति है। दान, प्रदान, नियम, सह, ध्यान,

क्ष्यन और तप—ये **व्यक्ति सोवके** साथ करनेपर निकाल हो। **व्यक्ति** है<sup>र</sup> ।

स्था साथ आदरपूर्वक महीताका अर्थन मा दान देनेकरे तथा कथा एवं आदरपूर्वक दान भ्रष्टण करनेवाले— दोनों सार्ग प्रशा करते हैं। इसके विपरीत देना और लेमा चे दोनों अरक-प्राप्तिक कारण बन जाते हैं। उदारता, खागत, मैग्री, अनुकरण, अमस्सर—इन पणि प्रकारोंसे दिया गया दान महान फरड देनेकरन होता है।

१- न त्यानगरावारपारवानशिकीकृतम् । वरं ॥ दर्जार्वीचाः न सङ्गतं न च असिनं चर्णः स्थापनाः । दनवदानीसम्बन्धानाः

संकुद्धेनाचयमानः ॥ इतं तथः ।

और मुनियोंसे 🚃 स्थान पुरुवकोत बढ़े को है। सुर्फर्गन्दरसे युक्त स्थानीमें छनेवालेको दिवा कवा बोह्य मो 📺 धेतके प्रधानसे अनन्त फलक्द केता है। सूर्यक्रम् चन्द्रप्रहण, उत्तरायण, विकृत, व्यतीयार, संप्रवीत—के सन पुण्यकाल कहे गये हैं। इसमें दान देनेसे कुक्को कृदि 📰 है। पंक्तिपाय, परमधीते, धर्म, धर्मभक्त्य तथा प्रतिपात—ये 🚃 श्रद्धके 📖 🛊 । श्रद्धापूर्वक विधानके साथ सुवारको दिया 📹 📖 एवं 📖 फ्लब्द क्या 📖 है, 📖 **ावार पुण्याची इच्छासे ऋदापूर्वक राम देना जा**हिये। इसके निपरीत दिया गया 📖 धारसक्य 📕 है। ३४७, 📖 📟 गुजबन्त्रो शहके साथ धोका थी 🔤 क्या दन 📟 इडक्याओका पूर्व और सम्में 💹 🚃 🖦 कार्यकारण होता है। मनीविपोने अञ्चल्हा 🔡 धन माना है। अद्धा 🔡 धन, सब्दा ही परंप तप तथा सब्दा है। 🕶 और सब्दा 📗 🚃 उपवास 🕯 । अहिस्स, श्रम्ब, सत्त्व, नवता, श्रद्धा, 🏥 🚃 तुन, पहा, तप तथा ध्यान—ये दश 📟 सम्बन 🕼

पर-को तथा अधेश पर-को तथा कु, आती, अस्तर, विदेशमें गर्थ हुए तथा प्रकुश परकृत क्येंग्रिको श्रद देनेवारन परकर्मा कहा कि है। ऐसे क्येंग्रिको परिचाम श्रद देख चाहिये, सिद्ध इसकी धार्य कि

#### पालक, उपयान्य, वयमार्ग एवं वयमाननाका वर्णन

समाधानिकामा भगवान् सूर्यने कहा—सन्तेष्ट ! माम्बरिका, व्यक्तिक तथा कार्यक-भेट्से क्राय अनेक अध्याचे होते हैं, जो नरक-मासिके कारण है, उन्हें में संबोधने बंदतथ क्रा हूं—

गौओंके पार्गि, वक्से, नगरमें और असमें आग समाना आदि सुवपानके क्या महत्पासक माने हैं। पूरुव, ही, हाथीं एवं योड्रोका क्या करना क्या केवरकृष्णि उत्का फसरनेको नष्ट करना, कर्दन, अगर, कर्मू, करन्तुं, रेजमी वस्र आदिको चोरी करना और क्येहर (थानी) वस्तुका अपहरण करना—ये सभी सुवर्णसंकेको सने पवे हैं। क्या अपहरण, पुत्र एवं क्या कि तथा परिमीके प्रति दुराकरण, कुमरी क्या और अन्तवनकी खोके साथ सहवास, सवर्णिक साथ गयन—वे सभी पुर-प्रकारर प्रथम (पुरुपकी-गमन)के सम्बद बहुनकाक को गने हैं।

एवं पुत्रका अच्यान नहीं करना चाहिये । उनका अवयान करना पूर्वतन्त्रके समान पतक माना गया है। बाह्मपको मारनेवाला, स्य-पन करनेपाल, सर्व-पोर, गुरुको प्रस्थापर प्रथन करने-चला एवं इनके साथ सम्पर्क रसनेवाल —ये पाँच महापातकी कड़े करे हैं। यो अंध्य, हेम, भय एवं त्येशमे अञ्चलका अपनान 🚃 है, वह सहस्रकार कहा गया है। जो 🚃 कारनेकालेको और स्वाह्मको भूतकार भेरे पास 🚃 नहीं हैं: एसा करफर किया करा दिने सीटा देवा 🕯. 📖 वाच्यासके है। देव, दिया और गैंके लिये पूर्वप्रदल भूमिका जो 🚃 🕶 करता है, 🚃 स्थापना है। जो मुर्च सौरक्रानको .....वर उसका परिस्थान कर देता है अर्थात् तदनुकुल *जावरन* न्हीं अरक्ष, उसे सूर-चन करनेक्क्षेक समान करनत चाहिये। 🚃 चीरकाने, यात 🗰 📖 वरिस्तानी, मुकारीके रवाकी, विकास प्राप्त पूर्व-प्रत्येके अधियको और पश्चमहोके करनेवाले, अपश्य-सङ्गण करनेवाले तथा निरंपराध नहीं होती। व्यवस्थात् भागुमी अस्तरभागो अस्त्रालेखका आधिपाय प्रका केमा है । असः मेक्षकामीको चेत्रको 🚾 🚾 परिस्पार का देना पाहिने । को बिएस हैं, शहराविस हैं, के सुनैसम्बन्धी 

स्वयुक्तको अर्थ देनेका स्था देकर नहीं देनेवाले, सद्यक्तिको प्रक्षेका परित्याग करनेवाले, साधु, बन्धु एवं तपरित्यकेका स्थाग करनेवाले, गी, चूचि, सुदार्वको प्रयत्नपूर्वक पुरानेवाले, बगवजरसमेको स्थास्त करनेवाले, धन, धान्य, स्था पञ्च स्थास कोरी करनेवाले स्था अपूर्णोकी पूजा

नियोकी रहा न करना, श्रमियोको हा न देग, देवता, अधि, सायु, साध्यी, भी तथा ब्राह्मणकी निन्दा हा पितर एवं देवताओंका उत्योद, अपने कर्तव्य-कर्मका परित्याम, दु:सीलता, महिनकता, पहुके हा आदि हा कहे गये है।

करनेक्टरे—वे सभी ......... है।

को भी, अञ्चल, सरक-सम्पद्धा, तपासी और साधुओंके कुल्य हैं, के नरकतानी हैं। परिजयसे तपस्या करनेवालेका

क्रिप्रान्वेकण करनेवाला, पर्वत, गोलाला, अग्नि, बारु, बुध्रोकी छाया, उद्यान तथा देखायतन्त्री *भर*-मूक्तक परिस्थान करनेकल, काम, अनेध संधा मदले उम्बीष्ट पराने दोवेंके अन्तेषणमे तत्त्वर, पार्लाक्योका अनुमानी, मार्ग रेकनेकार, दुसरेकी सीमाका अपहरण करनेवाला, 📖 🐖 करनेवाला, भुरवेक प्रत अतिकार निर्देक, पशुओक दमन करनेकाल, इसरोकी पुत्र कारोको कान सम्बन्धर सुबनेकारक, चौको कारो भक्क उसे कर-बार श्रम देनेकल, दुर्बेलको सहयता न करमेबाला. असिवाय पारसे 🚃 🚃 और असमर्थ एतुको केलनेवात्य—वे 💵 पताल 🖷 नवे 🛊 तथा नरकवानी होते हैं । जो परेक्षणे निजी प्रकार भी नरसोंके करकर निम्तीका 🚃 कुपता है, 🚃 निश्चित हो 🚟 जाना है। ऐसे पारियोको मृत्युके स्वयन्त 🚟 🚃 प्राचित्रको अस्ति होती है। ययभद्र अवज्ञाने चन्यदत उसे चन्यत्रेकाने ले जाते हैं और वहाँ उसे बहुत दृश्या देते हैं। अवर्ष्य करनेवाले पासरा धर्मका को स्थि है। इस विशेष पर-व्योत्तानी हैं, चोरी करने हैं, विश्लेष मध्य अन्यायपूर्ण क्यकहार करते हैं हो इस संस्थान राज्य उन्हें दक्त देखा है। परंत्र **क्षिपका पाप कानेवालोको धर्मराज राज्य देते हैं।** अतः **व्या** 🕶 पालेका अमंभित करना मारिये । अनेक प्रकारक प्रकार करित प्रापक्षितीक हारा पालक यह हो जाते हैं। अर्थिती, मनमें और वाणीसे किये गये पाप किया भोगे अन्य किसी क्लारमे कोटि करपीने भी नह 🐯 होते। 🗎 व्यक्ति कार्य अच्छा कर्म करता है, कराता है या उत्तक्षा अनुवेदन करता है, यह असम स्थ 📖 🛍 🕯 ।

समाधानितमा भगवत् सूची धुनः वाह---हे समाधः ! पाप करनेवालीको विश्वी पापके निर्मात कोर संवास भीगना पहला है। गर्भस्थ, नायमान, कलक, क्रम्न, मध्यम, पृद्ध, की, पुरुष, नपुंतक सभी सरीरपारियोग्ये क्यलीको अपने किये गये सुम और अञ्चाभ फलेको धोनना पहला है। वहाँ सरपवादी विष्णुत आदि धर्मतव्यको जो भी शुन्द और अशुभ कर्न बतलाते हैं, उन कर्मोका कल बाद प्राण्यको अवद्य ही घोगना पहला है। को सौम्ब-इदय, दव्य-सम्बन्धत एवं सुपकर्म करनेवाले हैं, वे सौम्ब-इदय, दव्य-सम्बन्धत पूर्व फलेवाले एवं प्राप्तकालमें विश्वी है, वे पोए

टबिक-मार्गसे बाह सहत करते हुए यमपुरिने जाते हैं। वैक्सकपूरी क्रियाली हजार आहती योजनमें है। द्वाम कर्म कलेकले व्यक्तिकेको यह वर्षपूरी समीप ही प्रतीत होती है और रीडफर्नमें व्यक्तिक परियोको 🚃 दूर । परमुरीका मार्ग अरक्त चरकर है, बाह्य 🚾 मिले हैं और कहीं कतु-हो-कट् है, कहीं वटकारकी चारके समान है, कही नुपोले पर्वत है, कहाँ अपका कही कुन है, कहाँ साहर्य और कहीं रुकेकी अपने हैं। कहीं चन्नों रूपा पर्वतीये निराम पास हरत यह बावे बारित देखेले युक्त भागी सुवित हो बाज कारत है। वहाँ कमकुरसम्बद्ध, वहाँ केनगोरे और कहाँ 📰 कर्त्यक्रक मार्गेसे करूना पहला है। कहीं अन्यकाराक्रक क्यंपन क्युक्त नार्गरी विना किसी आधार्यक साना पहला है। बाह्री औपसे परिज्यात मार्गले, कहीं दावाधिसे परिपूर्व मार्गसे, 📑 तत चर्चनके, 🔚 🚃 मार्गसे भीर कहीं 🚃 📰 कुमरना पहला है। इस मार्गमें 📖 सिंह, व्यक्त, यहाँ कार्टकाल प्रकार और, मही प्रयंत्र क्रेंक, 🔤 अजगर, कहीं परंकर महिकाएँ, कहीं विक क्रमंत **व्यक्तिक वर्ष, कर्व विश्वाल क्लोप्पत प्रमादी गणसमूह, कर्दी** 🚃 विष्कुः 📖 बढे-बढं शृंगीवाले महित, रीष्ट्र **ाव्यान्य, कार्यन क्यांच तत्त्र महान पर्यकर व्यक्तियों उसे** वैद्यात करते हैं, बन्हें भोगता हुआ खरी ज्यस्ति यममार्गमें कता है। उसपर कभी क्यानकी वृद्धि होती है, पाना विकास 📟 है तथा क्षणे व्यक्ते इंजाबारोंने वह उल्लाम जात है अपैर कहाँ अंगारोको कृष्टि होती है। ऐसे भवंकर मार्गीसे पायकरण करनेकाने भूका-प्याससे व्याकृत सुद्र पारीको काद्त कालोकको और ले बाते हैं।

च्चार चय होहकर पुण्य-कर्मका आवरण करना चाहिये। पुण्यसे देवस्य माम होता है और प्राप्त नरककी मानि दें। के क्षेत्र च्चाना दिन्यं भी समसे पण्यान् सूर्यकी पूजा करता है, वह कभी भी समपूरी नहीं जाता। जो इस पुण्यांकर सभी मकारसं भणवान् भारतस्वा पूजा करते हैं, व प्राप्त वैसे के स्थित नहीं होते, जैसे कमरूपत्र जरूसे रिव्स नहीं होता। इसस्तिने सभी त्रकारसे भुवन-भगकरकी भक्तिपूर्वक अग्राधना करनी व्यक्तिये।

(अश्याय १९०--१९२)

#### सप्तमी-व्रतमें इन्तयायन-विधि-वर्णन

भगवान् सुकी बहा-निनतनदन अस्य ! अपनकार, विद्वकार, 🚃 तक ऋजकारणे सन धगवान् सूर्वकी 🚃 करनी चाहिने । सक्रमेने से 📺 करका उनकी पूजा करनी चाहिये। सहस्थियाँ सात प्रकारको कही कथी है—अर्कसम्पृटिक-सामी, मोचि-सामी, निम्न-सामी, प्रत्यक्षमी, अन्तेद्व-सहसी, व्यवस्थान तथा पराव क्विका-स्थापी। यात्र यास या वर्गदर्शि महाने हुद्ध प्राची सप्तमीको उपनास जलन पहल चाहिये । अर्थ व्यक्तिके स्थिते मास और पश्चक निवम नहीं है। यह बोरनेमें कर आब बाद पीय रहे. तम दलभावन करना वादिये। सङ्ख्या दल्लाको दसमाधन करनेवर पुत्र-वामि, वैगरैकाने दःस्वयान, 🚃 (बेर) और बुबली (मटकटैया) से 🛗 🖩 रोगमुक्ति, निरुपसे ऐश्वर्य-प्राप्ति, 📖 धन-संच्या, कद्युव्यके 🚃 🙀 अतिमुक्तमसे अर्थप्राति, आटक्यम (अवृत्स) से गुरक्त 📰 होती है। पीपरुगेत दातुनसे 📖 और 🕮 प्रधानक 🚃 मार्ग्यादरी कामक परिवास कर हैता है, उसमें संदेश नहीं । शिवेनको बाहुनके निपुत्त लक्ष्मी और क्रियंगुके बाहुनके परम

सीयाचन्द्री 🎹 होती है।

अर्थको विस्तिके स्वाप्त्र्यक बैठकर अथम करके निष्ट विश्वित मन्त्रसे श्राप्त्रके वृक्षकी सर्वेत कर हुए करे—

निर्देश स्थान से स्थान स्थान करें से शासको । विर्देश स्थान से स्थान स्थान करें उस्त है ॥ (नाहको १९२ (१३)

ंचनको ! साथ स्ति वस्त्रकारोको प्रदान करनेवाले हैं, ■ सल्वेच्याँत कानता है। हे दलकात ! मुहे सिद्धि प्राप्त ■ अवस्था नगरवर है।

इस स्थापन सीच साथ वस्त वस्त वस्त वस्त वस्त वस्त व्यक्ति ।

तूको दिन परित्र क्षेत्रर नगकार् सूर्यको प्रणान कर परित्र क्ष्म को । सक्कार अग्निमें स्थल की । अपराक्-क्ष्मरूमें निष्टी, गोवा और जलसे कानकर विधिष्ट्रक निष्मके साथ सूहर कक्ष धारण कर चीवत हो, देखधिदेश दिखन्तरको भौगापूर्वक विकित्तर पूजा और पायतीकर क्य करे। (अध्याम १९६)

## स्ता-करू-वर्णन शका स्वाप-स्तापी-स्ता

सुकार केना है। अपने प्रतिक्षे प्रंप्यालन तथा विदेशकार देखनेते देखने प्रता केता है। नातन, सुप्त वका, अन्त, मर्गु, चर्चान तथा और विद्यालय अनुतंत्रम प्रतिक्राण भागा गया है। साथ क रच्या आवान कार देखना शीन है स्तारण पर्ने आगानका सुवार है। उनका तिर और भुजार देखनेपर पर्ने जिए गुन्त है। वेद्यालयन देखना और है। देश, विश्व और गुन्त करें उसे साथ ही जानका चरित्रों। इनका दर्शन एकं अगरीवर्ष जिल्ला है। कर्य, अन्त, सिंह, वैश्व और हामीवर विशिष्ट क्याला है। कर्य, अन्त, सिंह, वैश्व और हामीवर विशिष्ट क्याला है। क्याला प्रति केता है। अन्त, तथा, पूर्वका जो स्त्रमें परिवर्तन करता है, उसे महान् देखने क्याला है और पर्ववक्षा उन्यूतन करता है, उसे पृथ्वीपति होनेका संकेत विराह है। शरीवर्त अतिका निकारका, समुद्र

एवं निर्देशीका पान करना ऐसर्थ-प्रशिक्ष सूचक है। वो स्वापे समुद्रको एवं नदीको साइसके व्याप्त प्रशिक्ष प्रश्ना प्रश्ना पुत्र होता है। यदि व्याप्त प्रश्निक्ष प्रश्ना प्रश्ना रेक्ता है, तो उसे आर्थकी प्रश्नि होनी है। सुन्दर अञ्चीको लाग है। सङ्गलकारी बस्तुओंसे होनेपर अग्रोक्ष और भनको प्रश्नी हेती है, इससे कोई सेटेड प्रश्नाम अग्रास्थ्यकारको दूरकर अपनी अग्रास प्रश्नाम प्रस्ते हैं, हि विकार्षक प्रमा

वित्र सुरक्षकर तनो प्रयाप कर प्रदक्षिण करनी चाहिये।

विव्यवन् व्यवकरको पूजा करता है, 

करता विव्यवने

करके व्यवेट पन्नोकर ।

दिन व्यवकन् सूर्यकरण्यका विविद्यक्षक पूजन करनेके

करके व्यवेट पन्नोकर ।

दिन व्यवकन् सूर्यकरण्यका विविद्यक्षक पूजन ।

विव्यवक्ष्मक्षक व्यवस्थान

करक विवर वर्ष

करकसम्भी

करकसम्भी

करके है, वा सर्वेच सुक रेनेकरने है।

(स्ववाय १९४—१९७)

-------

# सूर्यनारायणकी महिया, 🚃 📖 करनेका फल तका आदित्व-यूक्नकी विधियाँ

सुम्बनुजी कोले—एकन् ! मैं इस कार्या धनवान् वेत्रव्यास और व्यासकार्या इस संबद्धों का रहा हूँ जो सभी पायोका नाम क्रिकेट तथा सुक्त प्रदार करवेवाल है, उसे आप सने ।

एक प्रमय गुप्तके किनारे केरणासकी कैहे [10] वै । वि अपिके समान वाज्यस्थ्यमन, तेजमें अदित्यके संभान, सामान् नाराणमुख्य दिखायों दे रहे थे । मंगधान् सेरणास महाव्यक्तके सर्वा तथा केरके अविको प्रकारित करनेवाले हैं और [10] तथा राजकियोंके आवार्य है, कुठवेतके बाहा है, साथ [1] मेरे परम्पूर्य है । इस केरणासकीके पास कुठवेश महातिकाकी भीकाबी आये और उन्हें प्रणाम कर कहने छने ।

भीकावितासहते पूछा—हे महामते व्यक्तावानः आफो सम्पूर्ण वाज्यपदि व्यक्ता मुससे की है, किंतु भूतो भगवान् पास्करके सम्बन्धाने संदर्भ उत्पन्न हो गवा है। सर्वज्ञयद् भगवान् आदिस्तको व्यक्तार करतेके पश्चान् है अन्य देवताओंको नमस्कर किया जता है। इसमें क्या कारण है? वे भगवान् पास्कर कीन है? वहाँसे उत्पन्न हुए हैं? हे दिकांकः! इस लोकके करूवानके लिये उस परंप सक्ताने कहिये। व्यवस्थाने व्यवस्था । अस्य अवस्था है विकास कर्म है । स्था है । स्

वीव्यक्तिसम्बद्धे मूल-प्यवस्तान्त्र सहितं व्यक्ति ।

विशेषां भगवान् सूर्वकार्यकार्यः इतनः अधिक प्रमान है सो भातः,

भगवाः और सर्वकारः — इन हीनों कारोमें एकसादि कैसे इन्हें संतरा करते हैं तथा भगवान् अदित्य दिल कैसे कारवत् पूमते वाते हैं ? हे दिजीतम ! यह अन्हें कैसे मस्तिम करता है ?

ज्यासकीने साह--वित्तव, सर्व, सकिनी, दानव आदि वो कोषसे उत्पत्त के पाववन् सूर्वनायकपर आक्रमण करते हैं, पाववन् सूर्वनायक्य उन्हें प्रवादित करते हैं। 📰 पुत्रविद कारण्यक्य पाववन् सूर्वका ही प्रधाव है। संसारमें स्त्र प्रकाश पाववन् सूर्वका अध्यार केवल प्रवर्तित होता है। ब्रह्मदि देवता सूर्वकादकी रिथत रहते हैं। भगवान् सूर्वनाग्यकाचे नमस्त्रार

# = 4. % a—

करनेमात्रसे ही सभी देवताओंको नमस्कार जार हो जाव है। तीनों कालोंने संख्या करनेवाले बाह्यकाल भगवान् आदिलाको ही प्रणाम करते हैं । भगवान् भारकरके 📟 नीचे तह निकत है। अपृत्की हच्छा करनेवाला यह विचानस्य अपृत-४२से योक्स भी अमृत करकलेकर उस अमृतको प्राप्त करनेके और की जब विमानके अपि सैनिकट पहुँचरत है तो ऐसा प्रतीत होता है कि गहने सुर्यनारायकको बसित कर लिख है, उसे ही प्रहण कहा जाता है। कारका भगवानको सह प्रस्ता 📖 🖛 सकता, क्योंकि ये ही इस करकर जगत्का विकास जिल्लाले है। दिन, राति, मुहर्त आदि सब आदित्य चलवान्त्रे ही प्रवासने वध्यक्ति। 📖 है। दिन, राति, धर्म, अवर्ण जो 🚌 🔣 इस संस्थरमें इंडिगोक्ट हो एवं है, उन सकते भगवान अवदेश है एनक करते हैं । वे ही इसका विकास भी करते हैं । जो कार्यक क्लाका ज्ञान्त्रका भौतर्का पूजा करता है, इस व्यक्ति भगवान् आदित्य क्षेत्र ही संतुष्ट होन्दर कर प्रदान 📟 🛚 तथा करा. शीर्थ, विश्वीत, और्थाव, धम-काव, शुक्रमं, अव, सीधान्य, आरोप्प, पात, क्षेत्री, पूर, चीकारे और केस आरो कर 🔐 अदान करते हैं, इसमें संदेह नहीं है। भीषाने बाह्य-पहालाम् । अस्य अस्य पहाले सीरवानिक करण विधि राज्यसाता परावर्गन ज्यान भगवन आवित्यको पुराकर मनुष्य सभी प्रव्यक्तक खेलेके हुटकार का कर लेला 🗓 ।

विभि कारत रहा है, जो सभी प्रकारके पालेको 🚃 📟 📰

है। सर्वप्रयम पवित्र स्थानमें मुसिका प्रदूल को, कदनकर उस

पुलिकाको सरीरमें लगाये । फिर जलको अभिनानिक कर कान

करे । एता, तुरही आदिसे ध्यान करते इप सूर्वनश्चनका **ा पारि**ये। भगवान् सूर्वके **'क्रां हाँ** सः' इसं मन्त्रप्रकरे आध्यम कला चहिये। किर देवताओं 📰 प्राक्तियोका तर्पय और सुरीत काली चाहिने । कायराव्य होका पितरीच्य तर्पण करे । अनुसार संख्या-कटन करे । उसके कट पगवान् भारकाको अञ्चलिसे बस देश चाहिने 🚃 कानेके नाम रूपकराजान 'हो 🖥 सः' 🚃 💻 'ललोस्काय नगः' का जन 📖 चाहिने । जिल मनककारे

पूर्वने 🚃 है उस 🚃 🛒 इट्यार न्यस करना चाहिने।

मञ्जूको इदयान कर चनवान् सूर्यनारायणको आर्थ 🚃 🚃 चाहिने : 🚃 कारफार्ये गम्प, स्पष्ट चन्दन आदिसे सूर्व-मण्डल बनकर उसमें करवीर (कनेर) आदिके कर बुटनेको मोह 🚃 सहा-पानको उदाकर सिरसे लगाये 🔳 चित्रकृषेक 📦 🐒 सः' इस यन्त्रकसे भगवान सर्वकारकारो अर्थ प्रदान करे। यो व्यक्ति इस विधिसे वनकान् आदित्यको अर्थ्य निवेदन करता है, 📖 सभी पापीसे कुछ हो जास है। इज्यों संस्थितयों, इजरों अनुस्तरणों, इजरों गोदानी सच्च पुजर एवं कुरुक्तेत आदि 🚃 अतः करतेसे 油 कर का होता है, वह कर केवल सूर्यनारायणको अर्थ्य प्रकार करनेते हो आहे हो जाता है । सौर-दोशा-विद्यार करीत 📠 चरि यमकान अवदेशको अवस्थारकोमा अर्थ्य प्रदान करता है हैं। 📆 को को फल जार होता है, इसमें कोई सदी नहीं है। फिर टीसको प्रतन कर जो बिध्यपूर्वक अर्थ्य प्रदान करता

🖢 🐗 🚃 इस संस्तर-सागरको पालक पानकन् भानतमे 🚃 🗒 स्टब्स्ट 🕯 । ध्वेष्यमे सहा-सहस्र । आयो पाय-इटन सरनेवाली को इन्ह हैं, अन्य कृताकर हैं पूजा-निधि 🔤 , 🔤 🛮 भगवान् सुर्यको पुता 📾 साई ।

विकि कह रहा है, आप सुने। आदित्यपुरक्कको चाहिपे कि सामादिये चीवा होकर मिली शुद्ध एकाम स्थापने 🚃 🚃 व्यवस्था पुत्रा करे। 📷 वेश सुन्दर आसनपर क्वीक्ट्स बैठे । सूर्व-क्वोंसे करन्यस एवं इदबाद-न्यस को। इस कास असमञ्जूद्विकर व्यक्तान मगवान् सूर्यकी

अपनेने सावना को । अपनेको भारतर समझकर स्थप्टिलपर

प्राकृती स्थापना काले विधिवत् पूजा करे । टक्षिण-पार्श्वपै

कुलबी टोकरी एवं वाम पार्की वालसे परिपूर्ण 🚃 स्वापित बारे । यूकाके स्थित उपकारियत सभी प्रश्नीका अर्थ्यक्रके जरुसे होत्रण 📟 पत्रन करे, अनक्र भन्नवेत्रा एकप्राचित होकर सुर्वमन्त्रीका जय करे। **भीवाने व्हा--** मगवन् । 🚃 आप मगवान् सुर्वकी

🚾 अर्च-विधि बतलायें।

**ध्वासमी चोले--चेन** ! अप इस सम्बन्धे सुरुवेष्ठ

महा। तथा विष्णुके मध्य हुए संवादको सुने। एक बार बहाओं नेरुपर्वतपर स्थित अपनी पनोयको नामको सम्बन्धे सुरूपूर्वक बैठे हुए थे। उसी समय विष्णुभगवान्ते प्रचान पर उनसे सहा:—'महान्! आप भगवान् विष्णुभगवान्ते प्रचान वर उनसे सहाये और सम्बद्धस्य मणवान् सूर्वनस्थानको पूजा विष्णुभगवान्ते प्रचान

ब्रह्माने कहा—पद्मबाहो ! अस्पे बहुत काम बात पूछी है, आप एकावरित च्या भगवान् व्यास्त्रा पूका-विधि सुनिये।

सर्वप्रथम जाबोक्त जिल्हां धूनिका विधिवद् जोधनकर

वेतार आदि गम्पोसे शात आकरणोमे युक्त कर्णिकारव्यक्तित एक अष्टदलकात कार्य । उसमें दीता आदि सूर्वनी विशा बाद शक्तियोंको पूर्वादि-कमसे (साम्बनेकाक स्थापन करे । बादमें सर्पतेमुकी देवीको स्थापना करे । दीता सुक्ष्य, अस्त

परः), विज्ञित, विभास्य, अभोजा, विज्ञुल और सर्वतोजुली — चे नी सूर्वदासित्वों है। 📰 विशिष्टी 🚃 वस्ता व्यक्ति। असर वरमान् धारमको 🚃 वस्ता व्यक्ति।

'ख्यु व्या जातनेवर्तर' (अनु०७।४१) व्या 'असी कृति' (चनु॰ २१।१७) —ये क्या अववाहत और उपस्थानके को गये हैं। 'आ कृत्यीय कावान' (अनु॰ ३३।४५) तथा 'हा' सः श्रुविकर्' (अनु॰ १०।२४) इन वन्त्रीये चनकर् सूर्वती पूना नवनी काहिये। 'अवदी तारकं-' क्यारे दीतादेवीकी चूना

करें। 'अकुशनस्य मेसबी-' (सनु- ८१४०) 📟

स्थानदेवीकी, 'सरिवर्षिक्वाकी' (सन्- ३३।३६) से अपानी, 'प्रत्यक्तेवाना' इस मनाने चंद्रकी, 'सेना वावक क्रथाता' (सन्- १३।६२) इस मनाने विष्कृतिकी, 'विद्यापिकि' इस मनाने विमन्त्रदेवीकी पूज करना कहिने। इसी प्रकारने अमोद्या, विद्या तथा सर्वतोग्या देविकोकी भी

पूजा करनी चाहिये। अनन्तर वैदिक मन्त्रोसे साहकाण-पूजन-पूर्वक मध्यमें मगवान् सूर्यकी पूजा करे। मगवान् सूर्य एक कहाबाले रक्षपर बैठकर खेत कमलपर स्थित है। उनका स्थल वर्ण है। वे सर्वापरणपूषित तथा सभी लक्षणोंसे सर्वान्त्रत

और महातेजस्त्री है। उनका बिम्ब वर्तुत्ककार है। ये अपने हाथोंने ब्राह्म और धनुष लिये है। ऐसे उनके स्वरूपका ध्यानकर निस्प अद्धा-प्रतिस्पूर्वक उनकी पृष्ट करनी चाहिये। व्यवसम् विन्युने कहा—हे सुरशेष्ठ ! मध्यसस्य यगवान् वास्तरकी वित्यसम्पर्ने स्था प्रकारते पूजा वर्ष जाय, उसे अप करत्वनेकी कृत्य कहें।

व्यक्ताची कोले—हे सुतत ! आप एकावचित-मनसे व्यक्ति-पूका-विभिन्नो सुनिये। 'को त्यो-' (पत्रु- १ । १)

ाति सम्बर्ध पूथ्य करने चाहिये। 'अग्न व्या चाहि॰' ('म॰ ६। १६। १०) इस मन्त्रसे सूर्यचगवान्के दीधे करनोंके पूज करने चाहिये। 'आ विवा-' (यजु• ८। ४२)

इस मन्त्रसे पूज्यसम्ब स्थाननं सामा बाहिये। 'संगो स्रोगेः' (क्यु-११।१४) ह्या प्रकार पुजाज्ञांत देनी कहिये। 'ससुद्र क्यु-' (क्यु- ६१२१) अथा 'हम वे स्ट्रोन' (ऋ-

१०।७५।५) तका 'समुक्तवेद्धाः' (ऋ॰७।४९।१) इट

१२ । ११२) इस अन्यसे दुग्य-सान, 'स्टॉन्स्साम्मोर' (यजुर २३ (३२) इस मन्यसे दविकान, 'मेद्योऽसि सुक्रर' (यजुर २२ । १) इस मन्यसे युत-सान सभा 'या ओवर्योऽर' (यजुर

१२ । ७५) 📖 कलाइट ऑवजि-कान कराये । इसके बाद 'ब्रिक्ड॰' (ककु- २६ । ३४) 📷 कलाते भगवान्तर दर्शन करे । किर 'का कसोबील' (ककु- १६ । १६) इस मन्तरे मुनः

कार कार्य। 'विकास रहता' (यजुः ५१२१) इस मनासे गर्भ तथा करूमे कार कार्य। 'वार्ड बार्गः' (यजुः

१८।५०) इस क्यारे प्रस्त देन चाहिये। **इदं निच्छार्ने स्थाने**' (यकु-६।१६) इस मजसे अर्च्य प्रदान करन स्थानिने। क्रेकेडिंसर' (यकु-२।२६) इस मजसे यज्ञोपनीत

और 'कुइस्की॰' (कड्- २६ | २६) 📺 मजसे वका-उपत्रका आदि मगवान् सूर्वको कड्मना कहिये। इसके 🚃

पुलमास्य वक्षये। 'कृतीः कृषं-' (यहु- १ । ८) इस मन्त्रसे पुलुक्तमहित कृष दिस्तना चहित्रे। 'समिको-' (यहु-

५८१६) 📧 कबसु दुबसा छनातुः **,दीवांसीस-**, निर्माणकत् तीत् ।दसस्य त्राध्याः साम**णाः** (नर्वेः

(वनु•१२।१००) इस मन्यसे जाताम (आलता) रूपये। 'काकसीवी' (यनु• ३१।१) इस मन्यसे धगवान् सूर्यके मार्गा भूवन करन जाहिये।'संबाद्यक' इस मन्त्रसे दोने

नेत्री और 'निवासकार्य' (यत्- १७।१९) इस मन्त्रसे

भगकन् सूर्यके सम्पूर्ण शरीरका स्पर्ध करना चाहिये। 'श्रीक्षाः हुए विधिवृर्वकः चनवान् सूर्यनायवणका अद्या-परित्पूर्वक • लक्षमिकः' (बकुः ११।२२) इस मनवान क्षाताः करते <u>पू</u>तनः अर्चन करना चाहिये। (आध्याय १९८—२०२)

## मनवान् भारकरके व्योग-कुननकी 🚃 तथा आदिवा-साहास्य

विष्णु भगवान् पूडा—हे सुरबेह प्युक्त ! अव आप भगवान् अदिस्के क्योप-पूजनके विधि वस्त्ववे। अष्ट-पूजनुक क्योपस्तकप भगवान् व्याप्तिक व्याप्त

सद्वाजीने बहा — पहलाहो ! स्वर्ण, बाँध, तहा हाल लोहा आदि अह चतुओरो हा अह भूमपा कोन हाला उसकी पूजा किया चाहिये। सर्वप्रयम उसके मध्यमे परावान् भारतस्यो पूजा करती चाहिये। 'स्विक्तांत' इस मध्यके औरक प्रथमके पुजीको बहाना चाहिये। 'स्वव्यक्तिंत' (कपु-१०।५०) हाल 'स्वीप्ताक्तांत्र' (कपु- १९।४९) हाला विद्या मजीसे शुक्रोंकी तथा 'स्वोप्ताह सर्वेच्छे-' (कपु-१३।६) इस मजसे कोमबीठको हाल चरता चाहिये। ओ बाला प्रहेंके साथ सब पार्थको दूर करतेन्त्रके कोम-पीठका भगवान् सूर्पको नमस्त्रक कर उनका पूजन करता है, हाला मजी कामगारी पूर्व हो जिला हि इससे विद्या क्रिया है।

परावान् पास्तवारी पूजा करके गुरुको सुन्दर वका, जूल, सुकर्गकी अगुठी, गंध, पुरु, अनेक प्रकारक धक्षण पटावें निवेदित करने चाहिये। यो काति इस विधिक्त उपवास रक्षकर धनवान् सूर्यको पूजा-अर्थन करता है, यह खुल पुरुक्त धनवान् और कीतिकान् हो जाता है। वानवान् सूर्यके उत्तरायण तथा दक्षिणायन होनेपर उपवास रक्षकर को व्यक्त उन्तरी पूजा करता है, उसे अध्योध-यह करनेका फर, विद्या, वर्गति और बहुनसे पूजाकी चाहि होती है। चन्द्रश्रदण और सूर्यप्रहणके बाह्य विश्व अपित उपवास रक्षकर मनवान् सूर्यप्रहणके बाह्य विश्व अपित उपवास रक्षकर मनवान्

इसी प्रकार भगवान भारतरके 🚃 📖 प्रविका

अपने प्रदार और वैदिक भन्नेसे विविध उपच्छेद्वारा उसकी पूजा को । पूजको अनुसर ऋषेदको पाँच ऋषाओंसे पणवान् आदिलको परस्तुति को । इसके बाद परस्कायो अध्यक् निवेदित को । अनन्तर भणवान् सूर्यको दोता, सूक्ता, जया, पदा, विप्तृति, विषरत, अयोधा, विद्युता क्या सर्वकोपुती क्यावरते नौ दिव्य इस्तियोका पूजन करे ।

इस विकिते स्थापन सूर्यको स्थापकात है, यह इस स्थाप स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन है। कुछ व्यक्तिकरेशने दूर क्षण बन व्यक्तिकरेशने क्षण प्राप्त हो। स्थापन है। कार्यकरिये क्षण्य और वेदाविके केद सार हो जाता है। स्थापन स्थापन स्थापन सूर्यको पूजा करता है, उसे स्थापन स्थापन हो। स्थापन स्थापन स्थापन हो।

प्रमाणि पुनः प्रमा— हे मीना ! अस आव ध्यान करने स्थान करें। धनकान सूर्यका वर्ण अधाकुसुमके सामा स्थरत है। वे प्यानेकाची केत सामा नियत है। सभी तथाणींने सम्बन्धि है। सभी अस्त्रकारोते विभूतित है। उनके एक मुख है, दो पुनाई है। एक वस धारण किये हुए वे प्रहोके मध्यमे दिक्ता है। से व्यक्ति दीनों समय एकार्याचल होकर उनके हम क्याब ध्यान करना है, सो शीन से इस लोकने धन-धान्य प्रमा कर लेखा है और सभी पागीसे सुद्धकर तेमस्त्री तथा वस्त्रमन् को सामा से वेत वर्णक पुन्न, रस्त वर्णके पंगल, रक्त तथा दक्ति समान क्षेत्र वर्णके सुक्त, अञ्चनके समान कृत्य वर्णके समान क्षेत्र वर्णके सुक्त, अञ्चनके समान कृत्य वर्णके स्थान क्षेत्र वर्णके सुक्त, अञ्चनके समान कृत्य वर्णके स्थान क्षेत्र वर्णके समान नील कर्णके सहु और वेतु करने गये हैं। इन क्षानेक समान नील कर्णक सहु और

रेप्राणित कराते व्यक्ति कराते व्यक्ति व्यक्

सूर्यग्रायणका को व्यक्ति भ्यान एवं पूका करता है, उसे सीध ही महासिद्धि जार हो करते हैं, सभी देशता प्रश्नत हो करते हैं तथा महादेवलाओं आहि हो जाती है।

प्रमानिक्य प्राप्त का स्थान है।

सूर्य स्वाप्त कोई मित देनेवार है। सूर्य के स्थान न से सहा है और

समान कोई मित देनेवार है। सूर्य के स्थान न से सहा है और

समान कोई मन। सूर्य के अतिरिक्त कोई कम् बात है और म उनके
समान कोई मन। सूर्य के अतिरिक्त कोई कम् बात है अतिर म

कोई सूर्य विकास ही है। सूर्य के समान को कोई बात है। और

स उनके समान कोई प्राप्त से है। बात कोई बात है और

स उनके समान कोई प्राप्त से है। बात है, उनके है स्थान कोई बात कि स्थान है और

स उनके समान कोई प्राप्त से बात है। बात है उनके है से अतिराम स्थान कोई बात कोई बात है है और

स्थान प्राप्त प्राप्त स्थान स्थान स्थान है। अतिराम स्थान स्थान है। अतिराम स्थान स्थान है। अतिराम स्थान स्थान

रविवारके दिन श्रद्धा-भारतपूर्वक भगवान् सूर्वनाटकपद्धः पूजाबर 📖 वस बदनेवास्त्र 🎟 🏥 🕮 🕬 प्राच बनाव 🕏 ।

सप्त-शतमा 🚃 क्रदल भाग-सत्त्वी-प्रतोका वर्णन

anne fe e

प्रशासीकाने बाह्या—मूने । भगवान् व्याप्ताः प्रियं जिन अर्थकाम्युटिका आदि आदे स्टब्से-लडीकी अस्ते पूर्वमें बाबों की है, उन्हें बक्लानेको कृता कने ।

सुम्बनुजी बोले--- महामते ! मैं साथ सार्वम्बेकः स्वान कर रहा है, उन्हें सुनिये । पहली साम्मी अर्वन्मपुटिकः स्वानी है । दूसरी परिचसम्बी, तीसरी साम्मान, प्राची करनसम्बी पाँचवीं अनोदनासमधी, एकी किनयसमबी तक सात्वीं कर्मिकः नामकी सहमी है । इनकी संवित्ता निधि इस प्रकार है---

मगमम् मार्तम्बन्धे ब्रोतिक क्रियं के संप्राणिमे विधिपूर्वक आह् करता है, कर सुर्वलंबको प्राप्त होता है। जो व्यक्ति भारतको प्रितिक क्रिये उपकार रहकर पहो का सप्तमीके दिन

विविवद बाद करता है, यह सभी दोवीले निवृत्त केवा सुवैत्येयन्त्री 🚃 📖 खंडा है। यो 🚃 सहमीके दिन

अथवा प्रहणके दिन परितपूर्वक भगवान् चन्करको पूजा करता है, उसकी सभी मनःकामनाएँ पूर्ण हो है। प्रहणके दिन भगवान् भारकरका पूजन करना उन्हें

है। चगवान् आंदरत परपदेव हैं और सभी देवलाओं में पूर्व है। उनको पूजा | व्यक्ति झंचझा फरफो बाह कर तेता है। धन चहनेवालेको धन, पुत्र चहिन्दालेको पुत्र तथा मेंक्शवीको कोस बाह हो जता है और | असर हो

सुष्यपुर्वीचे सद्दा—एकन् ! भीष्यके गैसा शहरार वेदन्यसम्बं अपने स्थानको चलं गये और भीष्यने भी सद्दा-चरित्रपूर्वक भगवान् सूर्यनारायणको विधि-विधानको पूजा की । राजन् ! अपने की पर्यान् भारकरकी पूजा करे, इससे अनुको सामा स्थान प्राप्त होगा । (अस्प्राय २०६ — २०७)

स-स्मृत्या-प्रतास्त्रम् बाज्यन् सरिनमं दृश्यो जाम्यो तथा निष्यपत्रसे तीसरी सहस्ये कानीत करे । प्रत्यस्त्रमीमं फलोका यक्षण करन बाहिये । अनीदना-स्त्रमीके दिन अस संस्था न करके उपवास करे । विजय-सम्बोके स्त्र व्यय भागा कर उपवास करे । व्यक्तिका-सम्बोको स्त्र इतिका भोजनका प्रथाविधि सम्बद्धाः

मृर्कन्येकन्ते क्या को लेला है।
 अर्कसम्बुटिका-करसे क्या पीदीसक अवल सम्पत्ति बनी
 है। परिच-सहयोके अनुहानसे प्रिय पुत्रदिका साथ हन।

चकिये । जो मनुष्य परिवर्षक हम सहसी-अंशोधी धरशा है,

कक है। निम्बस्तमधिक पालनसे सभी रोग नष्ट हो जाते हैं, इसमें कोई शंक्षय नहीं है और फल-समयी-मतक करनेसे बती अनेक चुन-चीकदिसे क्क हो ≡≡ है। अनोदना-सम्मीक

कतमे घन-चान्य, पञ्ज, सुवर्ण, आरोन्य तथा सून्त स्टा सुन्ध्य सन्ते हैं। विजय-साममेका वत करनेसे शबुगण नष्ट हो जाते हैं। स्वाधिका-साममेका विधियत् अनुष्टान करनेसे पुत्रको करनेवास्त्र पुत्र, अर्थकी कामना करनेवास्त्र अधी, किहा-प्रांतिको कामना करनेवास्त्र किहा और राज्यकी कामना करनेवास्त्र राज्य आह करता है। पुरुष हो या को हा। उत्तको विधिनुर्वक सम्पन्न कर करमातिको प्रश्न का लेते हैं। उनके लिये तीनों लोकोंने हा। भी दुर्लभ नहीं है। उनके कुन्दमें न कोई अंधा होता है, न कुछी, न नपुंतक और ॥ केंद्रे किकरकड़ तथा ॥ निर्मत । लोभका, प्रमादकान या अञ्चनका और सत-भङ्ग हो । । विधि दिनसक घोष्ठन न करे और धुक्त

सूमणुजीने बाहा—एकत् ! चैकाँद बाह्य काहेन्द्र भूक सत्रमियोगे गोमच, याकक, सूक्षे वर्ग, दृध अथवा भिक्षात भक्षण कर बाह्य दृष्टभूक रहका उस्तर करना चाहिये। प्रमानन् सूर्यक्तं पृत्रा कमल-पुत्र, बात प्रकारकं कम, बन्दर, गृग्युक्त भूव आहि बिल्कामी भी पृत्रा कर उन्हें चाहियं तथा इन्हें उक्कारोसं हिंह बिल्कामी भी पृत्रा कर उन्हें बात देकर संसुष्ट करना चाहियं। इससे अदीको बात देकियाककं बात्रेका कल बाह होता है और वह सूर्यकोकमें पृत्रित होता है। वैद्यदि करह महीनोमें पृत्रित होनेवाले बात्रकमें अर्थमा, ज्यापे विकल्पन, आवादमें दिवाकर, बात्रकमें कर्यमा, ज्यापे विकल्पन, आवादमें दिवाकर, बात्रकमें कर्यम, बाद्रपटमें वहण, अविक्रमें पार्तक, कार्तिकमें भार्तक, मार्गद्रपति विक्र, वैद्यमें पूर्व, माद्रमें भन्न तथा परस्कृती

(अच्याय २०८-२०५)

# अर्थसम्पृटिका-सम्पोतन-विधि, सम्बो-अस-मञ्जूलयमें भौशुमिका

- Personal Property lives

सुमन्तुजी बोकि—रजन् ! फाल्नुन कारके शुक्र गक्षणी समर्गाको अर्थसमयो कारते हैं । इसमें व्यक्तिको उपण्यस सम्बद्धाः स्तान करके गत्थः, पूज्यः, भृष्युः , अर्थः-पूजः, केन करवीर एवं कन्द्रभादिके सम्बद्धाः दिक्तकरकी हुन् स्तान वाहिते । एकियी प्रमानको लिये नैनेद्यंते गृहोत्यः स्थानी शरं । इस प्रमार दिनमें धानुको पूजा करके कार्य निहार्ताका क्रेसर उनके गन्धका हुन करें।

शतानीकाने पूजा—पूने । पापवान् सूर्वका विच मन्त्र भौत-सा है ? उसे बालों और धूप-डीकार से निर्देश की जिससे उस पाणका जप करता हुआ में दिवाकश्की हुआ कर सके।

सुभक्तुनीने बद्धा-ं है भारतनेह ! मै इस विकित सेवेल सेवेल का हो हैं। वतीको चाहिये कि एकार्ज्यात सेवेल वह सर-स्थान जय, होम तथा पूजा आदि संभी कर्ज सम्मादित करें। सर्वप्रथम स्थान्तिक व्ययत्ने-क्यान व्यव्यत्व सेवेल करना चाहिये। सीवी गम्बती-क्या इस बच्चा है—'के क्यान विकित स्वयापियं बीवित । तथः कृषः प्रचारतात् ।' इसे भारतात् सूर्यनं स्थान नयः हैं। यह सीवी गायत्रो-क्या प्रथम के हैं। इसका अव्यक्तिक स्थान वर्ष करने हैं। इसका अव्यक्तिक स्थान वर्ष करने हैं। इसका अव्यक्तिक हैं। इसका प्रकार करने से हो कान्य परिवा हो जाता है, इसकी स्थान जा को सीवी। सामांक दिन

असिष्यंक कालावकी हुए करे। राजन् । सथावासि बटापूर्वक हुए कालाविके थोजन कार्यः। हुए केल्सी न करें। हिं पूर्विके प्रति अद्धा-सम्पत्त हुए हैं, उन्हें थोजन नहीं हुए कार्या करिये। काल्योदन, बूग, अपूप, गुक्रमें ध्ये पूर, दूध तथा दर्शिक केल्स करान चाहिये। इससे थाकार तृत होते है। योजनके कर्या पदार्थ इस प्रकार है — कुल्स्की, समूर, सेम नक कही। उद्दर अस्ति, कह्ना हुए दुर्गम्यपुक्त प्रतार्थ भी

अर्थन्यको 'के काकोत्कास नयः' से पृत्रा कर अर्थन्यकाको जात्र करे। पित सामकर अर्थ-पुन्नसे रविकी पृत्रा करके काह्यको भीजन कराये और 'अर्था मे प्रीयमाम' स्वित्व पृत्रपर असंघ हो, ऐसा कहे। अटकरार देवताके सम्बुध आ अर्थन्य स्वर्थ सर्वा किये किया निर्माणिया प्रचासे अर्थनाम्हरूको प्रार्थन करते हुए करके साथ पृत्रीपमुख होकर अर्थनुट निर्माण करते ।

अर्थन्तम्बद्धः पर्वतं सुप्ताः मेशसु व सदाः । मणावि कुळ व्यतं व प्रतानस् विवतो अवः ॥ (वायवर्व २६० १७३)

इस पन्यका 💷 करते हुए को अर्थका ध्यान 💷 है तथा अर्थकाप्युटका 💷 🚾 है, यह श्रेष्ठ गाँतको छा। होना है। दाँतसे स्पर्श न किये जानेके कारण अर्कपृट अर्थनसमूट कारणा है। जो इस विधिने वर्षनर सुर्वनसम्बद्धी प्रसारताके अद्भापकि समितिक अस्य तथा अवल हो जाता है। मनुष्यका धन व्या पेदीतक अस्य तथा अवल हो जाता है। हे राजन्! इस करके अनुहारने स्वापका कारनेकारे व्याप कीयूमि कुछरोगसे मुक्त हो गये तथा सिद्धि प्रसा की। साथ ही कुछद्वरूक, व्या जनक, विश्व व्यापका स्थर कृष्णपृत्त सामा—इन व्याप थी भगवान् सूर्वकी पूजा कार्य और इस इतके अनुहारले उनकी व्यापका प्रसा कर गरी। यह अर्थन सहस्यी पवित्र, व्यापका, पुन्तकर तथा क्या है। अपने करन्यकर स्थित इसका विधिन्तक अनुहान करना साहिते।

हालाबीकाने पूजा — मुने ! कावा अवस्थि कावान् सूर्वेची पूजा करके किया प्रकार सिक्षि कार की, उसे तो मैंने बहुआ सूना है, किया ब्रिंग किया क्यांक्रियों किया ब्राह्म क्यांक्रिय आराधना कर सिक्षि कार मि और के केसे पूजा-वेशकों मुक्त हुए, शतका मुझे ज्ञान नहीं है। वे क्येज्रिय किया के, उन्हें कैसे कुछ हुआ ? हे हिजातेख ! किस प्रकार उन्हेंने देवाकिटेच दिवाकाइकी आराधना मि ? इन विम्न क्यांक्र क्योंने संकोधने सन्तर्थ ।

िवासी घर आये। दुःससी व्याकुर्लवस हो उन्होंने अपने विवास करत--- 'क्स ! मैं पवित्र सीधों और अनेक देवाध्योंमें गया, किंतु इस क्षेत्र बहात्तरकसे मुक्त नहीं हो सका। प्रायक्षित्त करनेकर भी पुत्रो इससे कुटकस्य नहीं मिल्प है। अब मैं क्या कर्के ? कहाँ कर्क ? केंसे हैं रेगसे मुक्ति हाता ? हे अनम ! व्याक्तिया-साध्य हाता कर्मक बरनेसे हात बहाइस्थारूपी होते कुटकस्य मिले, क्षा क्यूक्सेस आप शीव बसार्य

हिरम्पनाधने स्वयः—पुत्र ! पृथ्वीमें भूमते तुए तुमने जो क्षेत्र क्रम किया है. उसे मैं पहत्रभाति जानता हूं । तुम अनेक लेकीने गये और प्राथक्षित थी किये, एरेतु ब्रह्महत्यासे मुक्ति न मिली, अन मैं एक उत्तम बताता हूँ, उस उपायसे तुम अन्यक्रम हैं स्वयः स्वर्था मृत्य हो आसीने।

मेर मामा करें हैं

व्यतिष्यिके सहस—विशो ! मैं सहादि देवोंने किसकी उत्तरकत करूँ ? मैं तो प्रदेशों भी विकल हैं, अतः साम सामा वधावत सन्दादक युक्तों सम्बद्ध वहीं है, किर साम सामा से देवलको संस्कृत कर सर्वत्य ।

विरायक्ता कहा — बहा, विक्तु, महादेव, वहण अवेट रिवार्टिंगी विरायक्ति धर्मालेका धर्मात्रको पूरा वि है और इसी बडाव के स्वर्गलेकार आविष्ट्रत हो रहे हैं। हे पूर्व | वि सबी बडाव्य ओको देनेकाले और माता-पिना मधा सभीके पान्य है, इसमें कोई संदेह नहीं है। इस्स्टिचे तुम उनके धनावध वय करते कुए तथा आपदोदके मजोंका गान करते हुए धरिक्य पुरुष आधी आपधना करते और उनसे सम्बन्धित सिक्य पुरुष अवेदका बचल करते, इससे तुन्हें शीध ही देनसे पुरुष मिलेगी वि तुम भोजा अस कर लोगे।

सुवन्धुवीने कहा-स्थानित हैं अपने फिलाइस निर्देष्ट कीचुमिने जहा-स्थानित हैं अपने फिलाइस निर्देष्ट सुकेंग्रस्तवर्थ विधिसे कीसपूर्वक पणवान् सुर्वकी हिलाइस की। पणवान् पास्तवर्थी कृत्यसे महर्षि कीधुमि दिल्य मूर्तिमान् को नवे और उन्होंने भणवान् भारतको दिल्य मण्डलमे प्रवेश किया<sup>र</sup>। (अध्यान २९०-२९९)

१-महर्ष भौजून एक वैदेक स्थान जान है। सम्मेद-संक्षित्रकों कोजूने साथ स्थान कीएड है और इस समा को सा है। साथ इस कृति करी है। वे साथ भी साथ है। जीनसंग करणमून-काली स्थान एक एकर साथ ओंकी विश्वत वर्षा है।

#### परिच-स्क्रमी-क्रत-कर्णन

सुयन्तुजीने क्ष्मा—हे चीर ! मैंने तुमको अर्कसन्दरिका-क्रकी संविध विधि बतस्मयो । एक मस्चि-महायोका वर्णन कर रहा हैं, इसमें मरिचका भक्षण किया जाता है। की मासके 🚃 📖 पट्टी तिथिको उपकार स्टूबन सोरवर्गको व्यवसा अनुसार प्रतिन्दर्यक प्रमुवान् प्रास्करकी पूछा करनो चाहिये। '४० वं कर्' यह महत्रबस्त्रज्ञाली यन स्तक्ष्मा सुवेस्काप हो है। इसका बारेबार स्थरण एवं जब करनेसे मानव एक वर्षने 📕 देवेद्वा भगवान् भागकरका दहाँन प्राप्त कर हेन्स 🏗 और अन्तर्भे व्यक्ति 📖 मृत्युरो मुक्त हो सूर्यलोकको का करता है। बती अवत्यदाक्रमध्यं मरिष-सप्तमीके दिन स्वैर-मन्त्री एवं मुद्राओं से स्ट्यारि असुन्यस 📰 स्थानम धर्मर करे। प्रमाणकृषे अर्थ प्रदान करे । विक्रिय कुर्यको अर्थित करे । काम कराये, नैयेख अर्थित करे । संचय होका सूर्यक्रवेश्य प्रथ करे । क्योममूख्य विकासार महर्षिका करे, तका को और इक्ष्मकुर्यसे भगवानुका विसर्जन करे । भगवानुक पूजन 🚃 कमीर्थ तत्तर् मुहाओको दिकावे । मुहाओके राम इस 📖 है—विश्वविकारित वर्षाया, अस्त्रा, प्रतिकृति, अस्त्रिक्ति, अस्त्रिक्ति, अस्त्रिक्ति, अस्त्रिक्ति, अस्त्रिक्ति, तेजनी, गभीसानी, प्रोक्षिमी, मुनेक्क्स, महज्जीकरक, उटना, मध्यम्, जिल्लाना, मारिनी, तर्वनी तथा कुम्पन्छ । उन मुहाओंके साथ जो भगवान सुर्पको पूजा फारत है, उससे के -

प्रसद हो आते हैं। इस विधिए सहाने चलवान् सुर्यको पूजा 🔳 📕 । रुवन् ! तुन 🛡 🚃 विभिन्ने भारकस्की पूजा करी । इस 📰 जो सद्ध 📟 👚 करता 🛴 🖛 पगवान सुर्वेदको 📰 धानको 🚃 🚃 छेता है। तुप । इस विभिन्ने देवेहाको एक कर बचाइतिः सहारको विधिपूर्वक क्रेंजन ....... सहाधीके दिन मन्त्रकृष्टिक सूर्वकर स्मरण करते हुर 🎬 होकर थोजन 🔤 और सोमनसे पहले मरिकसी इस **三 前 中**一 🗈 कार्योत्पाल राज्य । स्थानि विवससूची धर्म 🚃 ॥ व्या करनेसे प्रतिको विष 🚃 🚃 हरते 🚃 बार हें क्रम है। यह मनिय-मामी विवसंगमदायिक और कुलको प्रदान करनेकाली तथा व्यानकारिकी पूर्ति कारनेवाली 🛊 । एक वर्षतक इस साम्मे-सतका चालन करवेसे पुरादिकोंसे कियोग नहीं होता । इसिन्धे व्यवसही। इस नियदापिनी म्बर्जको तुम भी करे। देवसम् 📷 📹 मरिश-सहमीको चर 🚃 🚃 🚃 लिया या। 🚃 🖂 एक बलने भी इस जनान 🚃 🗀 🚃 🚾 प्रतिकाशिक 🗐 श्रीरामने भी इस सहनीके 🖼

#### निष्य-समुची तथा फलसप्तमी-जतका वर्णन

सुर्वणुर्वीये सद्धाः—हे सेर ! अभ में तृशीय निध्य-सामधी (वैद्रस्य पुद्धा-समग्रीको निधि बतरण स्वा है, आप सुने । इसमें निम्ब-प्रस्य सेवन किया जाता है। जा नहाने सभी तराने व्याधियोको इस्तेवाली है। इस दिन इसमें उन्हें बहुत, सह, जात और गदा घारण किये हुए भगवान् सूर्यवा च्यान कर उनकी पूजा करनी चाहिये। भगवान् सूर्यका मूल चन्न है—'ॐ सरसोरकाय नयः'। 'ॐ आदित्याय निमाहे विद्यावालाय सीमाहे। बास सूर्यः प्रकोदयान्।' यह सुर्यका गरानो-सन्त है।

पूजामें सर्वप्रयम सम्बद्धित-किया होका प्रथमपूर्वक मन्त्रपूत जलमे पूजाके उपचारीका प्रोक्तम करे। अपनेमें भगवान् सूर्वको भावना करके उनका स्थान करते हुए सन्वकित् इदय आदि अञ्जीमें सन्त्रका विनकस करे। सम्बर्धनी सुद्रको विकाशीका प्रतिबंधित करें । भूतोकन करना श्रीविधे । पूजाकी वर्षा विकि समीके रिक्षे अभीष्ट फल देनेकारी है ।

(अध्याप २१२---२१४)

**ावाचा का चन्यवरी सीलाओ असे निरंपा थी।** 

पवित्र त्यानमें कर्णिकस्पृक्त एक आहरत-कमाल बनाये, उसमें अववित्ती मुद्रके क्रम मगवान् सूर्यका कावाना करें। वहांपा मनोहर-कालप लालोटक पगवान् सूर्यको स्थान करावे। मन्त्रमूर्ति संस्थान् सूर्यको स्थापना और लाग आदि कर्म मनोद्रमा करने चाहिये। आसेय दिशाने भगवान् सूर्यके हदवको, ईशानकोव्यमें सिरकी, नैक्टिक्कोगारे स्थापना एवं पूर्वदिश्वमें दोनो नेकोवी स्थापना करें। इसके अनगर ईशानकोव्यमें संग, पूर्व दिशाने पंगल, आरेयमें बुध, दक्षिणमें मृहत्यकि, नैकिय दिशाने शुक्त, प्रक्रिममें शनि, वापव्यमें केतु और उत्तरों क्ष्मुधी स्थापना बते। स्थापनी दिसीय कक्षामें पगवान् सूर्यके तेजसे 📖 द्वादश आदिखें—पग, सुर्वे, अर्थमा, मित्र, वरुण, सविदा, भारत, विवस्तान, त्यक्त, पुण, क्ष्य 📖 विष्णुको स्थापित भ्रोत पूर्वचे इन्द्र, 🚃 📖 पश्चिममें करण, उत्तरमें कुमेर, ईश्वनमें ईश्वर, अधिकोणमें अग्निदेवक, नैर्म्हरूमें चित्रदेव, कावव्यमें काव् 📖 📖 विकया, जयारी, अपराकिता, रोब, व्यस्ति, रेक्ती, विकादक, महाबोता, राज्ञी, सूनर्वस्त्र आदि 📖 अन्य देवनाओंके समुक्को सभारपान 🚃 बन्स्य चाहिये। सिद्धि, गुडि, स्पृति, जनस्वातस्य तथा हो इनको अपने दक्तिन 📖 स्थापित करना चाहिये। प्रशासनी, निमा, शरीता, सृद्धि, महिन् विसृष्टि, पौर्णमासी तथा विभावती 📟 देव-प्रांतत्वीको अपने 🚃 प्रगणन् सुर्वतः सर्वतः स्थानः 📖 प्रातिने ।

इस प्रकार भगवान कुर्व तक क्रमेंब भरिकारें एवं देव-प्रतित्वीकी स्थापना कारोकी अञ्चल कार्यकीय पूर्व, दीन, वैकेश, अलंकर, बका, पूर्ण जादि उपकरोंको मगळन सूर्य तक दंगके अनुपामी देवींको प्रदान करे । इस विविध्से को धानकरकी सता अर्थमा करता है, यह समि काममध्येको पूर्व ५० सुर्वेद्येक्ट्रो जात काला है। निवादिर्वेदश वन्त्रहार विन्यपूर्व भ्रार्थनकर उसे मगवानुको निवेदित करके प्राप्तन करे-

रवं निर्मा काकुकारमाहिः अतिकृतिराज्यकात् । सर्वरीयहरः प्रान्ती 🗯 में 📖 रुख 🛚

प्रे निम्ब <sup>१</sup> तुम धनवान् सूर्वके **स्थापनाः** हो । तुप कट व्ययक्तवाले हो, तुन्हारे हातन करनेसे मेरे सभी रोग सदके किये यह हो जाये और तम मेरे किये शासासक्ष्य हो आसो (

इस मन्त्रमे निभक्त प्रशान कर पंगवान सुर्वके समक्ष पुर्ध्वापर बैठकर मूर्वपन्तका 📖 करे । इसके 🚃 वधारांक्ति ब्यक्रवेंको कोजन करका दक्षिणा दे । अननार संधत-वाक् हो राजनार्वाजेत मध्य भोजन करे। इस क्लार एक वर्वतक इस निवन-सामग्रेकः हतः करनेकाला व्यक्तिः सभी ग्रेगीसे मुक्त 🖥 सुर्वलेकको 🚃 🛊 ।

सुमन्त्रजीने सद्धा---राजन् ! न्यान्यः मासके शुहर पश्चमी स्तानो लिथियाँ उपकास कर भगवान् सूर्येकी सीर-🚃 पुता ४०१मी पाहिये। पुनः अष्टमीको कानकर विकासको पूजा कर बाहाजीको कत्र्, मारिवार, माहुरह्व (विजेर) तथा अक्रके फलेंको भगवानके सम्पन्न रचना 🚃 🚾 'यामेख: हीधरक्य' देशा करकर इन्हें सहायोक्ये मारावल कर दे । यह करू-समयो महरूती है । 'स**र्वे अव**स्तु रायात्म वय कारणः सम्बन्धतः ।' देशा कारकर लागे भी उन्हीं 📟 भक्षण 🔛 । इस फल-सामीका एक वर्षतक 📹 भक्ति-पूर्वक सत करनेसे एव-पौजेंकी प्रशी होती हैं । (अध्याव २१५)

# ब्राह्मपर्व-अवक्का महात्य, पुराण-अवक्की विधि, पुराको सभा पुराजनाबक स्थातको महिया

सदरपर्वत सुन्तेसे मान्य सम्पूर्ण क्योले पुरू हो सता है तक 📖 अध्योध, वाज्येव एवं एकसूब बज़ो, 🛍 अर्थ-पात्राओं, वेदान्यास तथा पृथ्वीदान करनेका करन प्रक्र कर

भूम**मुर्वाने कहा — तबन् । पविष्यप्**राणके इस प्रचान - लेला है । इतिहास-प्राणके जावनके आंतरिक ऐसा कोई साधन 📆 है, जो सम्पूर्ण पानोसे मृतः कर सके। पूराण-अवनका जो पन्न बतलाया गया है, बही फल प्राप्तके पाठसे भी होता है, इसमें कोई संदेह नहीं ।

१-पार्व परिवनपुरानक पर पुरु पुरित सर्वत होता है। सार आयो-प्रवेदिन अवस्था अनेदन, विजय तथा कार्मिस संस्थित हट परे हैं। क्युचेन-क्रिक्स (क्रेम्स) के बरावको क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स करन अस्य है। वैज्ञाब पुरूत सामा अनेदन-सामी, मान सुद्धा स्वामी विकास-स्वामी तथा मालपुर सुद्धार सामने सामिका-सामने माही नामे हैं । विकास-सामने सुर्वस्तर सहस भी पद्धा गया है । हससे लगत है कि हेम्ब्रेटे यस व्यक्तिकृतकों अवस्थित एवं पूर्व ग्रह और मुख्या में। पुरुलेको स्वेशको ही इस समयको प्रतिये यह अंत साम्बन हो गया है।

२-इतिहासमुख्यामां न सम्बद् 📖 ३००५। नेतं सरकातीय मृत्यते सर्वितरियोः 🛭 क्रिक्र व विकासी ह (स्वार्य २१६ । ३४-३५)

शंतानीकने पूछर— मगवन् । पहाधरत्, रामावन् हवं पुराणेका अवग राधा पठन हिंदी हिंदी करना चाहिते ? पुराण-वाकरके हात लक्षण हैं ? अववान् कालेस्काका कवा सक्तम हैं ? बावककी विधिवत् पूजा करनेते क्या फल होता है । पर्वकी समाहितर वाक्षोको क्या देना चाहिते ? हवे आप बस्तोकी कृषा चरें।

सुपयुजी कोले—राज्यः ! अको इतिहासः पुरुषके सम्बन्धे अच्छी जिज्ञामा को है। महावाजो ! इस सम्बन्धे पूर्वकारुपे देवगुर बृहस्पति तथा महाव्यके बात को हाता हुआ था, उसे आप अक्टा को !

भाषक विशेष परित्रपूर्वक इतिहास और पुरुषक 🚃 कर महाहत्यादि सभी प्रापेशे पुक्त 🗏 माला है। परिवा क्रीका अतः, सार्थ तथा राजिने जो प्राचनन शकन करना है, उस न्यतिको महत्र, विच्यु तथा ब्लेक संतुष्ट हो जाते हैं । पारत्यकरः भगवान् बद्धाः, सार्वकाल जिल्लु और राजिने महारोज प्रसार होते। हैं। राजन् । अन् व्यापक्षक विकासको सुनिये । परित्र कर्म पहनकर भुद्ध होकर प्रदक्षिणाकृष्य तथ बाक्क ध्रायकार बैठना है तो वह देवलकप हो जाता है । अवसन व बहुठ ऊँचा हो, न बहुत नीया । यायकके आसनको मदा कदन की सनी भारिये । वाश्वभंके आसम्बद्धे भारतयेठ कहा जाता है । पीठकं गुरुकः। अस्तर समझना चाहिये । वाचकके आसरका स्वते-वालेक्ये कभी भी 📰 बैहना चाहिये। देवलओकी अर्चन करके मित्रेयरूपसे आग्रामकी पुत्रा करकी चारिये। सभी समागत व्यक्तियोको माध्ये लेका प्राच-प्रन्थ व्यक्तके किये प्रदान यहे । उस प्रन्थको स्तामसन्द्र हो 🚃 को । 🖚 भारतियस होकर अवध्य करे।

अन्यका सूत्र (भागा) वासुकि कहा यस है। जनका पत्र भगवान् बहा, उसके अक्षर जनहीन, सूत्र शंकर तक पंकिता सभी देखता है। सूत्रके मध्यमें अधि और सूर्व स्थित एहते है। इनके आगे सभी प्रह तथा दिवाएँ अवस्थित रहती है। अंबुक्ते मेक कहा गया है। रिक्तस्थानको आकाश कहा गया है। इन्यक असर कथा मेंचे सुनेवाले हो बाहफलक सावा-पृथिकोरूपने सूर्व और बन्द्रात है। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रन्थ देकपन है और देवताओंद्राय पूजित है। इसलिये अपने कल्यानको कामको इतिहास-पूरामार्ट श्रेष्ट प्रन्थोको अपने पाले रावाच चाहिये, अने नमस्कार करना चाहिये तथा अनकी पूजा करनी प्राहिते?।

त्यन्। पायक प्रभावे प्रथमे प्रश्न कर सहा, व्यस, प्रसंबंधि, विष्णु, जिस, अर्थिको अर्थिको अस्तिवृत्ये अस्तिव्य करके बद्धारामन्त्रिय क्षेत्रस्य अस्तिव्य अस्तिव्य स्थानक करने हुए तथा स्वस स्वरंसे पुक्त यचासमय वचीचित्र स्थानको मुखले कि क्षेत्रा निषमकः अद्धानुर्वक हील्डास-पुराण और सम्बद्धिकारं सुरक्ष है, वह सभी प्रस्तेवये प्राप्त कर सभी रंगोने मुक्त हो स्था है और विष्णुल पुण्यको प्राप्त कर मामकान्त्रे रुक्त और सद्युक्त स्थानको प्राप्त करना है।

व्यवस्था प्रयास करके स्था सम्पूष स्था स्था और व्यवस्था संस्था कर सुसमाहित हो वाकस्था करोको सुने।
स्थानको ! व्यवस्थानस्य वाकस्था न्याना अस्तिपं संप्रयके स्था अन्य कृष्ण भी नहीं बोलना बाहिये। कथा-सम्बद्धा धार्मिक होका वा विद्यासा उत्पन्न होनेपर वाधकारे भागाकृष्टिक पूछना चाहिये, क्षेत्रिक व्यवस्थानस्य वस्त्र उस्त्यान पूठ स्था वर्मकायु है। वाकस्थाने भी भागीभाति उसे समझाना व्यक्ति, क्षेत्रिक वक्ष एक है, इस्तितिने मानपर अनुमह करना

उसका धर्म है। उसके अनक्तर 'तुष्यय करकाण हो' यह करकार पृदः आवेकी कथा सुन्तनी षाहिये। व्यास्त्र अपनी निकास रक्षण पहिये। जायत साह्यकों ही होना व्यक्ति । प्रत्येक मासमें प्रत्य करें तथा कायकारी पूजा करें, करीनके पूर्व होनेकर व्यक्तको सार्व प्रदान करें।

२- इतिहासपुराचीन जुल्या मानामा विजेकाः । मुक्को सर्वकरोणी मानामाधीनिर्विणी । सस्य प्रतासन्तर्था ा पुरिवर्ष्ट्रण पुण्येति वः । अस्य विश्वपुराध्या स्थाप कुमती अंधारस्यकः ॥ प्रत्युवे मानाम् स्थाप दिनामो तुम्यते इति । मानदेशसम्या सर्वे मुक्कते तुमसे विष्यु

(क्वयर्व २१६।४३--४५)

र-इस्के देवनमं क्रीतन् पूराके देववृत्रितम्। त्यस्य पूरावेणं म 📄 📼 विमूच्यं त

(नागपर्व २१६। ५८)

पर्यक्षे समाप्तिपर गन्य, मारत, व्यक्ति वदा आहेरोः व्यक्ति पूज व्यक्ति पाहिषे । सर्ग, राजा, पान, व्यक्ति

दोतन-थांत्र स्वादि वाक्यनको प्रदान कार कार्यान्याकामा पहन प्राप्त करना वाक्षिये। वाक्यको कद्मका दान देने केन्य सुवाय और स्वेद्दें नहीं है, स्वाद्धां दसको निकाके आप्रकारकर सच्छे शाक्षा स्वाद्धां रहते हैं। यो बद्धारकोट स्वितासी केन्स

मार्थ है, उसके पितर सी वर्षतक दूस रहते है। **मार्थ** 

देवोपें सूर्व लेश है कैसे ही सहाजेंदे चलक नेह है। बहक

ज्यसः कहा कका है। किस देश, अगर, गाँवमें ऐसा व्यास निकास करन है वह बोज बेह माना कात है। वहकि निकासी कम है, कृतार्थ है, इसमें संदेह नहीं। व्यावकाओ प्रणासकरनेसे किस फरानमें क्या बोली है, उस फरानमें क्रांति अन्य कमोंसे क्रिंग्लोकेन

भैसे कुनबोतके समान बोई धूसरा तीर्थ नहीं, ग्रह्मके व्याप कोई नदी नहीं, फालनारे लेख कोई देवता नहीं, रूपकोचके समान बोई यह नहीं, पुत-क्याके तुल्य सुख नहीं,

केते 🗐 पुराजवाकक व्यक्तके सामा कोई बाहण नहीं हो सामा । देवकर्य, विक्रवार्य सची करोनि यह परम पवित्र हैं ।

करन् ! हा जनसः हिं पुरानश्चनको विश्वि तथा वश्यको माहारकको कारकका हिंदी अनुसार हिं पुरानदिका हिंदी पढ़ करना वाहिये। कान, दान, वप, होम, पिकृ-पुजन हा देशपुक्तः हिंदी सभी बेह कमें विधि-पूर्वक अनुहोत होनेक हैं हा करन सदान करते हैं।

(अध्यात ११६)

# ।। भविष्यपुराणानानीत प्रश्नावर्ष प्राणूनी ॥



१-कुरुवेक्समें र्डार्थ म द्वितीय प्रथमों । २ वर्ड महत्त्व कृत्य म देवी साम्ब्यहरू ॥ निकासकार्य पुरुष २ वर्ष प्रधानसम्बर्ध प्रमुख्यमधूर्वीयहरू २ दुर्श विको प्रथम तथा तथा स्वतस्त्राचे विको न स्वतित् हामको नुसार हो क्यांग

# मध्यमपर्व

#### (प्रवय परग)

## गृहरकाराय क्षे 🚟 पर्दिमा

जयति भुक्तवीयो भारतये खेळकार्यः जयति च जितियेदः कार्युश्यकः मुख्यः । जयति च जातिर्यस्ति स्थानामधियोधी

**स्थानकोतिनकोतुन्तविक्रमानुः** अ

'संसारकी सृष्टि कार्यकाले जुननक दीवकारक मगजान् भारतरकी ■ हो । उसाथ दार्गरनाले उस्तृं कर्यकी सगजान् मुगरिकी जब हो । समाकार व्याच्या वारत्य ■ हुए भगजान् रहकी कर हो । सभीके मुकुरमाँग तेजीका बगजान् विकासन् (सूर्य) को ■ हो ।'

एक यार पौराणिक्येमें होता ग्रेमहर्कन सूत्रजीसे सूनिक्येने प्रणानपूर्वक पुराण संहिताके कियममें पूरत । मूनजो पृत्रिक्येके वयन सूनकर अपने पूर सरम्बनी-पूर महाने केटकासके स्वक्रपको धारण करनेकाले धानकात हरिको क्रमांक्य स्वाप्त सर्वधा कहा अस्त्रेवाली पूर्णाक्ये दिका स्वाप्त कराय है, स्वाप्त सुननेसे सभी पापकर्य हा हो जाने हैं असे स्वाप्त प्रशास है। द्विजाण ! धारबान् विक्युके हारा कहा पत्त धारब्यपुरुष अस्पन प्रवेश एवं आयुक्तह है। असे मैं उनके प्रकाप पर्वका वर्णन कराता है, जिससे देव-असिक्का उनके इस्तुर्ण-क्ष्मीका वर्णन है। उसे स्वाप्त

इस मध्यमकार्थ धर्म तथा सहम्मदिकी अध्यक्ष, आपञ्चमंत्रा निरूपण, विद्या-माहत्त्व, प्रतिमा-निर्माण, प्रतिमा-स्वापना, प्रतिमान्य राज्यण, कार्य-कार्यण, सर्ग-प्रतिसर्ग आदि पुराणका राज्यण, धृगंत्रका स्वाप्त, विधिकोका निरूपण, श्राद्ध, संकल्प, मन्वलंद, मृतृष्ठं, पराणसमके कर्म, श्रानका माहारूय, धृत, प्रविष्ण, धृग-वर्णानुकार्यण, उद्य-विच-निर्णय, प्रायक्तित आदि विषयोका को सम्बन्धेन है।

मृतियोः ! तीनों आक्रमोंका मूल एवं उत्परिमध स्वान गृहस्थात्रम ही है । अन्य स्वास इसीसे जैनिक रहते हैं, अवः गृहस्यात्रम सबसे ब्रेड है : गाईस्फ-जीवन ही कर्कनुडाधित

जीवन है । धर्मरीक होनेपर अर्थ और माथ उसका परिस्था कर देते हैं । धर्मसे 🖩 अर्थ और भक्ष उत्पन्न होते हैं, मोश पी धर्मसे ही 🗯 का होता है, जल: भर्मका ही आजपन करना चाहिये । वर्ष, अर्थ और काम वही क्रियर्ग हैं। प्रकारा-सरसे ये क्रमदाः विग्रम अर्थात् सन्त, राज और तमोगुणात्मक है। सान्तिक अधवा पार्थिक व्यक्ति ही 📰 उर्मात विश्वी है, राजस मध्य स्थानको 📟 啸 है। उपन्यानुन अर्थान् नामस व्यवहारकले निप्न भूमिको क्रम करते हैं । जिस पुरुषमें पर्मसे समन्तित अर्थ और 🚃 क्वर्षान्थन 🔣 है, वे इस क्वेक्सें सुख मोगकर मरनेके 🚃 कर धर्मका 🚃 प्रहण करे । ब्रह्मकादवीने कहा है 🌃 भवेरे 🗷 तब कुछ जह हो जाता है। स्थवर-अक्टूम अचीत् सन्तुनै बनवा विकास धर्म ही बारण करता है। धर्ममें 🚃 🚟 🗏 प्रांतर है, यह 🚃 शांस्त है, यह 🚃 🖭 🖈 कर्म 📰 जनमे धर्म ग्राप्त होता है—इसमें मेरान व्यक्ति व्याः प्रानपूर्वक कर्मधेतकः आभाग करना चारिये । प्रकृतिमृत्यक और निवृत्तिमृत्यको भेदसे वैदिक कर्न दो अवसके है। अन्यूर्वक त्याग संन्यास है, संन्यासियों एवं 🎟 🚾 कर्म निवृत्तिपरक 🛮 और गृहस्थोंके केन्-शास्त्रनुकुल कर्म प्रकृतिकाक है। असः प्रकृतिक सिद्ध से आनेपा मोक्काचीको निवृत्तिका आश्रम तेना चाहिये, नहीं तो कुर-पुन: संसारमें आना पहला है। शम, दम, वा, दान, अस्त्रेप, विवर्शक हाता, प्रश्तता या निङ्क्षलता , निक्कोध, अनस्या, तीर्चयात्रा, सत्य, संतीय, आस्तिकता, इन्द्रियनिवर, देक्युबन, विशेषरूपसे बाह्मणपुत्रा, अहिसा, सत्त्ववित्तः निन्दाका परिस्ताग, शुधानुहान, शौधाधार, व्यक्तियं ए दक्-यं हेत् आवरण सभी वर्णके किये सहस्राय रूपने कड़े गये हैं। श्रद्धापुलक कर्म ही धर्म कहे गये हैं, धर्म अव्हाभावमें ही स्थित है, अद्धा ही निष्ठा है, बद्धा ही प्रतिष्ठा है और 🚃 ही धर्मकी वह है। विधिपूर्वक गृहस्यधर्मका

45 1

करनेवाले बाह्मणेको प्रजापतिलोकः अत्रिकेको पूर्वक जीवन कार्यत करनेवाले शूर्वोको गर्व्यवलोककी प्राप्ति इन्हरनेक, वैदयोको अनुसरकेक और सन्ते विकास परिवर्धन विकास है। (अध्यय १)

# सुष्टि 🚃 🚃 कर्म्य एवं सात 🚃 खेक्प्रेका वर्णन

स्क्रिके पूर्व यह 📰 परम अध्यक्तर-निगत 🔣 📟 था। उस समय करने कारण, व्यापक एकम्बर 📰 ही अर्थास्थर ये । सर्वेज्याच्या भगवान्ते आवस्त्रक्ष्मं रियत होका सर्वप्रयम युनको सृष्टि की। विस असंबाधनी सुर्वत की। उसमें राज्य, स्पर्धा, कन्, रस सका गन्य रामक पहरामाना तथा प्रहमहाभूलेको 📰 की। इन्मेरी म्युरित हैं (अर्थात् दूसरेको क्रांस करवात्रात्री है)— प्रकृति, युद्धि, अहंकार, कप, रस, गुन्ध, इच्ट और स्वांब्ये तन्त्राप्तर्रे । पनि महाभूत, योष श्रामेश्रर्थ, योध वर्त्नीयुर्ध और मन--- ये ओरुह इनकी विद्योदयाँ है। ये किसीकी की प्रदर्शन नहीं है, क्येंकि इनसे किसीकी उत्पत्ति नहीं होतो । उत्पद्ध, स्पर्श, हम, रस और गण-मे पाँच जानेनियोके विकय है। सम्बद्ध राम्य, राज्यसः सार्थ, प्रभूता रूप, 🚃 🕬 📖 गन्ध है। प्राण, अचान, समाम, उदान और व्यापक पदन वायुक्ते पाँच प्रकार हैं । सत्त्व, रक्ष और तम---वे तीन पूरा बढ़े गर्व है। मनुद्रीत जिल्लासंस्था है और उससे उत्तर अन्य बरावर विश्व भी विजुपात्मक है। उस भगवान् वासुटेकके तेमसे बहात, विष्णु और राष्ण्यत आधिर्धाय हुआ है । वास्त्रेय अदारीये, अजन्मा तथा अवोदिन है। उनमें भी कुछ भी नहीं 🗓 । चे प्रत्येक करूपमें जगत् और 🚃 🛒 मुहि 📷 उपसंहार भी करते हैं।

बहतर बुगेंका एक मन्त्रनर हाता चौदह मन्त्रनस्थ एक करण होता है। यह करण बहानक एक दिन और एत है। भूखोंक, भूवलोंक, खलोंक, कनलोक, क्येत्लेक, सरक्लेक और बहालोक—में सात लोक कई गये हैं। प्रताल, किनल, अतल, तल, तलजल, सुनल और स्थातल—में सात प्रवाल हैं। इनके आदि, पच्च और अन्त्रमें कह खते हैं। महेबार लिखके लिये संसारकों उत्पन्न करते हैं और संहार भी करते है। बहायतिको इच्छा करनेवालेको कर्भगति कहाँ गयी है। कृषि सर्वदर्शी (परमारक) ने सर्वप्रधम प्रकृतिकी सृष्टि की । उस प्रकृतिके विकासि साथ अक्षा उरका हुए । द्विकतेती ! इरके कद बढिसे कैनिक्की सृष्टि उत्पन्न हुई। इस सृष्टिकममें क्षकन्त्र काले सर्वप्रकम कालनेको कपन किए। अननार सांत्रप, पैरुप तक जुड़की सुद्धि की ! पृष्टी, अन्तरिक्ष और हैदनक्षेत्र्य कल्पन 🔣 । 🎆 🛒 🚉 होती, नदियी, सागरी, 📖, देक्कानी, केकार्जनी, इन्द्रधनुषी, इत्कारपाती, केतुओ तथा विकृत् अवदिक्षे इत्यन किया । यदाक्षमय ये सभी उसी परक्कामें स्वेन हो जाते हैं । भूकते क्रपर एक करोड़ योजन विस्तृत न्यारनेक है। अञ्चल-श्रेष्ठ 📰 करवासमर्थस रहते है। महर्त्वेकने इतर से करोड़ 📖 विजृत बनलेक है, बर्ह 🚃 पुत्र 🚃 एक्ते है। जनलेक्स्से कुप्र 🖛 कांग्रह क्यान्यका उत्पा छः करेड पंजन निल्लंत सहमलेक है, जहाँ भृगु, बरिक्क, अति, दश, वर्धांच आदि प्रकारतियोक निवास है । कार्य समस्कृत्यार आदि सिद्ध, योगियाम निकास करते हैं, कह बहारचेक कहा कता है। बात लोकमें विश्वास्त्र विश्वतोगुरा गुरु 🚃 रहते 🕯 । अवस्थिक अञ्चलदी, यतिगयः, योगी, तापस, निद्ध 🖦 अन्य उन शरभेष्ठी ब्रह्मानीश्री ग्रह्माना गान इस 🚃 करते है--- 'परमक्दकी 🔤 इच्छा करनेवाले नोनियोग्य 📖 गरी 🚃 लोक है। वहाँ अकर 🚃 प्रकारका 🔚 नहीं होता। वहाँ जानेशांता किया एवं प्रेकनसम्बद्धाः हे बाल है । करोद्द्री सुर्वके 🚃 देदीप्यमान यह स्थान बढ़े कहते 📖 होता है। ज्यालामालाओंसे परिव्याप्त इस प्रका वर्णन नहीं किया जा सकता।' इस बहाआपमें करुक्कस्य 🖷 भवन है। मावा-सहस्य परात्पर श्रीमान् हरि क्यों स्टबन करते हैं। इसे ही पुनरावृक्तिये रहित विष्णुरवेक भी कहा जाता है। यहाँ आनेकर कोई भी खेटकर नहीं आता।

भक्तकार्के अपन प्रवासामा ही अभार्यनको प्राप्त करते हैं।

·····ं कर्ण परम रुवेतिर्मय शुभ स्थान है। उसके अपर

द्विजनको ! पृथ्विक IIII महातल आदि प्रतालकोक है। यहातल जामक पासल आर्थयथ तथा सभी अनेकि आर्थकृत है। यह विविध असादों और जुन देखलकोंने सर्वन्वद है। वार्तपर घणवान् अनल, वृद्धिमान् मुनुकृत्य तथा बाँठ भी
प्राथत करते है। घणवान् शंकरसे सुरोतंपत रसातर शैरमय
है। सुरुर पोनवर्ण और वितर पूँगंकी कालिवार है। वितर केत और तस कुन्मवर्ण है। वहाँ वासुकि रहते हैं। कालनेमि, कैसोब, नमृति, रसुकर्ण तथा विविध हात है। कहाँ निवास करते हैं। इनके सैने वैस्व आदि अनेकों नरक हैं, उनमें व्यविधे विदाय। बाता है। पातालोके सैने शेष नामक अगवान् विव्य हाता अगवान् अगवान् विव्य स्थाता अगवान् व्यवस्था रहे। (अव्यवस्था रूप)

मिल्क्कर्क और 🚃 वे नेत पर्वतके दक्षिणमें हैं। उत्तरमें

अस्य, 📖 तथा उत्तरकृत्वर्ष है। ये 📖

भारतकर्वक समान हो है। इनमेरी प्रत्येकका विस्तृर नी सहक

योजन है, इनके मध्यमे इत्यक्तकर्व है और उसके मध्यमें उन्नत

#### ——no-are— भुगोरः एवं ज्योतिश्वकका वर्णन

श्रीसुराजी बीले—पुनियो । अस में मूल्लेका हरू करता है। पूर्वोक्पों जम्बू, प्रश्न, फारमारि, कुछ, हरेड, सक्क और पुष्कर नामके सात महाद्वीप हैं, 🗏 सात समूहोंसे 🚃 है। एक हिंपमें दूसरे हींप हम्म-हम्प्रेले हम्में दूने-दूने आवश एवं जिल्लास्थाले है और एक सामस्य दूसरे स्थार भी दूने मार्थमरके हैं। बीरोट, इस्तुरसोट, समोट, प्रसेट, रच्छेट, शीरसरिक तथा जलेर---वे सात महासागर है। या पृथ्वी प्रकार करोड़ केवन बिस्तुन,समूहरी करों ओरले किए हुई तथा स्तत क्षेत्रीये सम्बन्धित है। अनुसूधिय सन्त्री क्षेत्रीये स्वयूनी स्वतिभित्र हो 📷 है। उसके मध्यमे कोनेकी कारिकारण महामेर पर्यत है। इसकी कैयाई चौरासी हजार योजन है। यह महापेर पर्यंत नीपेको और सोलह हुआर योजन पृथीने अधिह है और रूपरे भएको इसका विस्तार बर्लास हजार योजन है। नीचे (तरफटी)में इसका विस्तार सोल्य हवार योजन है। इस प्रकार 📖 पर्वत पृथ्वीरूप कन्नरूकी कर्णिका (कोन)के समान है। इस 🔣 पर्वतके दक्षिणमें दिमकान, दिमकुट और 🔤 🚾 है। 🚾 नैल, बेर तथा श्रृणी नागके वर्ष-पर्वतः 🛮 । मध्यमें लक्षयोजन प्रमानवाले हो (निवयः और नैल) पर्वत हैं। उनसे दूसरे-दूसरे 📖-दस हजार केलन कम है। (अर्थात् हेमकुट और बेत नन्ने हजर केवन 📟 हिमकन् और रांगी अस्ती-अस्ती हजर योकनक 🚾 ਦ है।) ये सभी दो-दो हजर केजन लेके और इतने ही चीड़े हैं। 🔤 ! मेरके दक्षिण भाग्ने भारतको है, असन्तर

📟 📰 है। 📟 को और नी सहस्र योजन विस्तुत इत्लब्दल्बर्व है। यहात्वाम 1 इसके बारों और बार पर्वत है। पे करों क्वंत नेक्की कोले हैं, जो इस सहस्र योजन परिमाणमें केंच्ये हैं। इनकेंसे कुर्वने सन्दर्, दक्षिणमें गुन्धमादन, पश्चिममें मिपुरः और उत्तरमें सुवाई है। इनकर कर्दम, अन्यू, पीपरः 📖 कट-बुक्त है। यहविंगल ! जन्मद्वीप नाम होनेका कारण नक्षात्रम् 🕬 🛗 वहाँ है, उसके कल महान् गजराजके समान कड़े 🚟 है। जब वे पर्यक्तपर गिरते हैं तो फटकर सब ओर फैल करे है। असेके रससे अन्य नामकी प्रसिद्ध नदी वहाँ बहती है, जिसका जल वहकि रहनेवाले पेते हैं। इस भदीके करका 🚃 करनेसे वहाँक निवासियोको पसीना, दर्गन्थ, 🚃 और इन्द्रिय-कृष नहीं होता। वहकि 🏬 📺 इदम्ब्यके होते हैं। इस नदीके किनोकी पिष्टी इस रससे भिरत्यर क्यान्य कर्के का मुखाये जनेवर 'जम्मृतद' करक सुवर्ण कर काले हैं, जो लिद्ध पुरुषेका पूरण है। मेरके 🚃 (पूर्वमें) महास्ववं और पश्चिममें केकुक्तवर्ष है। 📰 छे 🚃 मध्यमें इत्प्रकृतवर्ष है। विकरित ! मेरके उत्पर सहाका उत्तम स्थान है। उसके उत्पर

इ⊝का स्थाद है और उसके ऊपर संकरका स्थान है। उसके

📖 वैष्मवस्त्रेक 📰 उससे 📰 दुर्जलके 🖥 । इसके 📖 सुवर्णमध्, निरम्बार दिव्य ज्योतिर्मेश स्थान है। उसके 🔣 उत्पर पर्रहेका स्थान 📕 वर्ह्य पणवान् सूर्य राज्ये हैं। वे पर्रवेशक भगवान् सूर्य ज्योतिर्यय सक्तके मध्यमे निवास कपसे 📖 है। वे मेरके उत्पर राजिनकर्ने 📖 करते है। पान्यन् सुनैका रथ-चक्र मेर पर्वतको 🚃 एत-दिन वायुके 🚃 🚃 कराया जाता हुआ धुक्का अश्रय लेकर 🚃 📑 📭 सादि तथा वह वहाँ दक्षिणसे काल मार्पकी ओर प्रक्रियार चलते रहते हैं। साम और मुद्धिके क्रम्पने र्यक्के हात क्य

चन्द्रमास लक्कित होता है, तब उसे मलमास कहा जाता है<sup>र</sup> । सूर्व, सोम, मुम, 📖 और सुक्र स्त्रीधनामी मह है। ट्रॉक्टनका अर्थते सूर्य पतिमान् होनेपर समी प्रहाँके नीचे बलते हैं। व्याप्त मन्द्रल 📰 उसके उत्पर 📖 गतिशील खळा है। सम्पूर्व श्वाप्तमध्यक सोमसे क्रमर मालता है। नवार्केंक उत्तर बुध और बुधले उत्तर मुक्त, 'स्क्रुले उत्तर मंगरु उन्हर्भात तथा बृहस्पति कपर इति, इतिके क्रमर स्क्रुविकवास और व्यापन क्रमर हुन नियत है। (अध्याप ४)

#### महानोकी महिना तथा हम्मीस दोपीका धर्णन

श्रीसूत्रकी चोले---हे हियोगम ! 🛗 🛗 सहज जनमें प्रभु है। इस्त्र और करूर शतका स्वाह स्वाह तपस्पाके द्वारा स्वद्याणको प्रकम सृष्टि को भयो है। देवकन इन्होंके मुखाने हका और पितृपक करना स्वीकार करने हैं। अतः इनसे 🚾 सौन हो सकता है। जाइक जनसं 🖫 केह हैं और सभीसे पुजनीय है । जिसके राजीका अबंद अहरासांक **भारता** प्राथमिक्ते सन्दर्भ होते हैं, वहाँ अ**न्य स**हस्य है। द्विभवने पुजाकर देवगण कर्मपरः भोगनेका त्यभ प्राप्त 🚃 है। अन्य मनुष्य भी जाइराको पुजाबत देवत्वको प्राप्त 🌃 हैं। जिसका ब्राह्मण प्रसम्भ होते हैं, उसका अल्बान् किन्यू काल हो जाते हैं। केर भी सन्दर्शके मुख्ये स्थितिक रहते हैं। सन्त विषयीका क्रान होनेके कारण बाह्यण ही देवलाओंकी पुत्रक पितृकार्यं, 📖, विचाह, बीह्रकार्यं, इसन्तिकर्मं, श्वस्त्ववः। आदिके सम्पादनमें प्रशस्त्र है। जलकार्क विका देखकार्व, पितृकार्य तथा यज्ञ-कर्मीमें दान, होय और बरिंड में सभी निकाल होते हैं।

ब्राह्मणको देशका श्रद्धापूर्वक अधिकदन करना चाहिये, उसके 📺 कहे गये 'दीवांचुर्चक' शब्दसे मनुख चिरतीयी होता है : द्विजनेह ! माहाजकी पृज्यसे आयु, कीरी, 🚃 और धनकी कृद्धि होती है। जहाँ जलके विजेका कद-प्रश्रासन

नहीं किया आता, बेद-प्राचीका उद्यारण नहीं होता और जहाँ स्वक, साथा और स्थानिकारी स्थानि नहीं 💹 ऐस्य गृह प्रमाणको समाग है<sup>7</sup>।

नरकन्त्रमी मनुष्यंकि 📉 दोव करालये है, जिन्हें स्कारकार सुद्धातापूर्वक ल्यान करना चाहिये-(१) अच्च, (२) विषय, (३) पत्नु, (४) पित्रुह, (६) कुम्बन, (६) पाणिह, (७) नह, (४) यह, (९) दुह, (१+) पृष्ट, (११) दष्ट, (१२) काण, (१३) अन्य, (१४) **शम्ध**, (१५) **चम्ब**, (१६) कुन्न, (१७) दता-(१८) क्ला, (११) कर्च, (२०) বৃদ্ধ, (२१) नीय, (२२) घाछ, (२३) वाचाल, (२४) वंपल, (२५) बलीवस तथा (२६) सोबी।

उपर्युक्त स्वयोस दोवीके भी अनेक भेद-प्रभेद जतस्त्रये 🔤 है । विकेद, ! इस (सम्बीस) दोवीका विवस्थ संबेपमें इस mar t-

१. कुर तथा देवलके संस्कृत भूग और mini mini कर क्रोक्टं, गुरुके सम्पुरः 📰 आसनपर बैडनेवालं, यानपर वर्षात्र तोर्ध-थान करनेवाले तथा सीर्थमे 🚃 पर्मका अन्तरण करनेवाले— वे सभी अधम-संत्रक दोवयुक्त व्यक्ति कहे क्ये हैं। ए, प्रकटमें जिय और मध्य क्यी बोलनेवाले पर

१-रविषा त्याको परकारः व्यापे सीरम्पूरः । हारावालं 🕳 २०)

काराम्बरमे 📺 प्रयोक ज्येतिकके "संस्थानिकीयो अस्ये भागभार ३६३३: ।' 💹 📟 प्रयास 🕬 🛊 ।

न वेद्रप्रकारकीरचर्निकनि । स्वास्तरकारकीश्चरिकनि एसप्रकारकृत्वनि गृहार्वेत कनि ॥

🚃 🚃 🚃 कड़े अले हैं। ११. जो निगम (बेद),

हदयमें हालहरू 🎟 शहर करनेवाले, कहते कुछ और है 📖 आवरण कुछ और ही करते हैं--- वे ट्रोने विका-संक्रक दोषयुक्त स्थक्ति कहे जाते हैं। इ. लेक्की जिला क्रोड़कर सांसारिक विकाओं जन करनेवाले, हरिकी सेवास रहित, प्रकाम रहते हुए भी अन्यत्र 🚃 करनेवाले, प्रत्यक देवको छोड़कर अदृष्टकी सेवा करनेवाले 🚃 ऋस्क्रेंक सह-गतको न जाननेवाले—थे सभी पशु-संक्रक खेलकुक **का**ल है। ४. बतसे अपना छल-छरासे या निश्वा प्रेमक प्रदर्शन कर ठगनेवाले व्यक्तिको पितृहा दोवयुक्त कहा गया है। ५, देव-सम्बन्धी और पितृ-सम्बन्धी क्योंनि पद्मर 🚃 व्यवस्थ रहते हुए में म्लबन और लिया अलब्दा चोजन करानेकाला पुर्विक मानव कृत्य है, अभे न तो कर्ग विकास है और न मोस 🖫 । जो अञ्चलक कमसे प्रतिसन बस्तुबर द्वान करता एवं अवेचके साथ देवता आदिकी पूजा करता है, यह सभी प्रामेश व्यक्ति कृतका कहा जाना है। निर्देश स्ति हुए भी सुभवन करावान तथा शुभ दारीरका निकाय कालेखाला कृपण कहराता है। ६, माता-पिता और गुरुका स्थान कालेकाल, परिवासका-रहेत, जिलके संभूक निःसंकोप धोजन करनेकला, बंबा विता-माराका व्याप्त करनेकाला, व्याप्त को से सेता न कानेकाला तथा होन-महादिका लोक कानेकाला 🚃 कहरूरता है। ७. साथ् आकरणका परिस्कार का हुई। सेकहा प्रदर्शन करनेवाले, बेड्याकारी, टेक-धनके द्वारा जीवन-वापन करनेवाल, भागकि व्यक्तिमाहार का बनसे 🗯 करनेवाले 🔳 कन्याको 🔤 🚃 ग्रीके धनमे स्थेयन-क्यून करनेवाले---थे सब नष्ट-श्रीष्टक व्यक्ति है---वे सर्व एवं मोसके अधिकारी नहीं है। ८ विसका पन सदा 🚓 🕻 रहक है, अपनी हॉनता देखका जो ओध करता है, किसकी मीरे कृटिल है तथा जो कृद्ध और यह सम्मावकारक है—ऐसे वे पाँच प्रकारके व्यक्ति रह कहे गये हैं। ९. अवसर्वमें च निन्दित आचारमें ही जीवन व्यतीत करनेकला, वर्षकारी जीवर, निवाल, दुर्व्यसनमें कारतक, महत्वाचे, की-सेबी, सदैव दुलेके

आगम (तन्त्र) का अध्यक्त नहीं करता है और 🛮 इन्हें सकता 🕯 है, वह पायल्य इष्ट कहा जाता है। १२-१३, बुति और लुति ब्यहरूपेके के दी नेत्र हैं। एकसे रहित व्यक्ति काना और 📟 होन अस्थ कहा 🚃 है<sup>र</sup>ा १४. अपने सहोदरसे विकाद करनेवाला, माता-विकाके क्रिये अप्रिय बदन बेरन्नेवरन कच्छ कहा जाता है। १५, शासकी निन्दा करनेकला, कुरकारोर, राजगानी, सुद्रसेक्क, शुद्रको प्रजीसे अनाकाण कानेकला, पृह्नके करार एके हुए अनको एक बार भी सम्बद्धा व सुरके भाषा पाँच दिनोतक निवास कारेकाल कारित चन्द्र दोवकाल कहा जाता है। १६, आठ क्वरके क्वोमे सर्गान्यत, विकृती, शास्त्रवे निन्दित क्वीकवीके साथ व्याप्त कांनेकान अध्य न्यति बृह-दोपपुक कहा काल है। १७. 🔤 समान प्रमण करनेवाला, कृतिसत-📖 बुक व्यवस करनेवाल दसायहारक कहा गया है। १८. कुम्बीबार 🌉 अञ्चली 🛗 हुए भी वर्षका उपदेश देनेकारत 🚥 है। १९, पुरुवनोंको बृतिको हाण करनेकी · । तम्ब पर्या-निवासी स्वतिः यदि अन्ति दिन · क्रिकार अन्यत्र विवास करना है, वह कटचें (केन्द्रस) 🕯 । २०. 🎟 क्रोपका प्रदर्शन करनेवास्त्र तथा रामा न होते हर भी तथा-विभाग करनेपाला व्यक्ति 📖 (करण्ड) भेदा पास है। २१ माझग, राजा और देव-सम्बन्धे भारका इतन कर, उस धारते आन्य देवता या संस्कृ धरनेकास या उस क्या बोजन या असकी देनेकला व्यक्ति सरके 📖 नीच है, जो अक्तर-अध्यासमें तरपर 🎟 केवल पहला 🖫 किलू समझता नहीं, न्यकरण-प्राक्तकृष न्यक्ति पञ्च है, यो गृह और 🎆 आगे वक्क कुछ है और करता कुछ और है, अनावारी-दरावारी है वह जीव बका जाना है। २२, एएवान एवं सजनोंमें जो देक्का अन्वेकन करता 🖁 का व्यक्ति साथ कहत्यता है। २३. कन्यान व्यक्तिसे परिवसमूक वचन बोलनेवाल तथा 🚃 🌃 साथ निर्लन्य होकर वार्तात्वप करनेवाला 🚃 बद्धा व्यक्ष है। २४, पश्चिमोके पालनेमें तत्पर, मिल्लीके द्वारा अनीत परक्को बॉटनेके बहाने 🚃 📰 सार्व भक्षण १-धृतिः स्त्रीया निवानां रूपने हे विभिन्ति। एवेन 🔤 🚃 अमेरिक: व (प्राथमपर्व, १ । ५ । ५०)

साय वार्तालम् करनेवाल-ऐसे सार प्रकरके न्यार 😎

कहे गये हैं। १०. अकेले ही मधुर-मिहला नक्षण करनेवाले,

वक्क, सञ्जनोके निन्दक, शुकरके समस्य वृक्तिकरें—ने 🚃

करनेवाल, व्यर्थमे तृषका हेस्क, निष्टीक हेस्ट्रेफो विदेश भेदन करनेवाल, मांस पक्रम करनेवाल और अन्ववर्ध कीयें आसल रहनेवाला व्यक्ति व्यक्ति है। २५ कैल, आदि न लगानेवाला, मध्य और चन्द्रको सुन्द, निस्वकर्मको न करनेवाला व्यक्ति मर्स्वमस्य विश् २६, अन्वायसे अन्यके वर से देनेवाला अन्यायसे कमानेवाला, इतका-निष्टिह

विश्व शिर्मका इसम करनेवाला स्तेषी (चोर) कहा आता है। स्वय हो देव-विश्वन तथा करनेवाल म करनेवाले हा स्वय करनेवाले और स्वय करनेवाले हा सम्मुचित व्यवहार न करनेवाले ह्व सम्मुचित व्यवहार न करनेवाले ह्व

## पाला, निका एवं गुरुकी महिना

बीस्ताजी कोरो--हिकांड ! को कांक्र रूप कर हो सबसे बढ़ा राजन सहायक है। जिसके सम्बन राज्य 🚟 अपन्य बन्धु नहीं है, वेसा बेटोबर कवन है। व्यवस्था 📰 मुरु—ये तीनी पश्चप्रदर्शक हैं, पर इनमें काल से सम्बंधि है। भवाधीमें भी समयाः बडे हैं, वे समानसम्बर्ध ही वियोध अवदर्ध पात्र है। 📰 हारही, अस्मानस्य 📖 🎟 🚾 मणियुक्त वक्ष दक्षिणके अवने देश पार्थके. दक्षिणायन और उत्तरायगर्भे, विकृष जिल्लामा तक कट-मुर्थ-प्रहणके समय स्थाननीत इन्हें भोजन कराना चाहिने। अनक्त इन मनोसे<sup>र</sup> इनकी बरण-करन 📟 व्यक्ति वर्गिक विधिपूर्वक यादन करनेके ही सभी खेळेका फल प्रक हो जाता है। सार्ग और अभवर्ग-कपी फलबंदे प्रदान करनेकले एक आद्य प्रमुखकम पिताको में उनस्कार करता है। जिनकी असमाता से संस्थर सुन्दर कपने दिशानी देख है, ३२ जिल्ह्या में तिरायुक्त जरासे तर्पण करता है। पिता ही जन्म देता है, जिला ही पालन करता है, निवृत्तन ब्रह्मातकम है, उन्हें नित्न पुन:- पुन:

नमस्कार है। हे चितः ! अवपके अनुप्रकृते स्त्रेकायमं प्रवर्तित 💹 है, अन्य स्थानात् 🚃 🎉 आपन्ते नपस्थार है। को अपने उदरक्षी निवरमें कांका साथ उसकी प्रापी 🚃 🚃 करती है, 🚃 परा प्रकृतिकरूपा जननीदेवीको नवस्थार है। वातः ! अवपने को कहारी मुद्दे अपने उदर-· किया, अवस्थे अनुस्करों मुझे यह संसार 🚃 📖 , अरुपको 🚃 नगरकार है । पृथिकीयर विजने 🌃 🛗 🚃 📖 🐧 इन संपन्नी शास्त्रपृत अवन्ये अपने कल्यान-प्रतिके लिये में नथरावर करता है। 🚾 गुरुदेखके प्रस्तद्रसे मैंने प्रचारकरी 🎟 प्राप्त की 🗓 एन प्रवसक्तके सेत्-स्काप दिश्यकप गृहदेशको मेरा नमस्त्रार है । असम्बन्धन् ! बेट् और बेटासू-शाब्दोंके तत्व आयमे प्रतिष्ठित है : आप सभी प्राणियोकि आधार हैं, आपको मेरा नमस्कार है । व्यक्तन सम्पूर्ण संसारके चलते-फिरते परम पावन तीर्थरकरूप है। अतः है किष्णुरूपी भूदेव । 📖 मेरा पाप नष्ट करें, आपनो मेरा फालक है।

ए-सर्वाधराविकामध्ये अवस्थान्ये वितरे जन्मीर ग्रांने जन्मू प्रत्यति प्रमुक्त सं सर्वनाः परितरितिर्तित्ते ॥

निर्माण कारणीय विकास स्थापित कारणीय कारणीय

दिजो ! जैसे पिता श्रेष्ठ है, उसी प्रकार पिताके बाँड़-सांटे भाई और अपने बाँड़ भाई भी पिताके समान की मान्य एवं पूर्ण है । आचार्य सहात्वर, पिता प्रभावतिका, माता पूर्णांको और भाई अपनी ही मूर्ति हैं। पिता मेक्स्कृत्य एवं व्यक्ति-स्वकृत्य सनावन पर्यमूर्ति हैं। वे ही प्रस्वक देवता है, अतः इकार्य

आक्रमा फरून करना कहिये। इसी प्रकार पितामह एवं पितामा (द्वार-शरी) के भी पूजन-करन, रक्षण, पासन और सेवरको अस्तन महिमा है। इनकी सेवाके पुण्योकी तुरुवामें कोई नहीं है, क्वोंकि वे माता-पिताके भी परम पूज्य है। (अध्याव ६)

## पुराज-सवणकी 🚃 📖 पुराज-सवककी पहिला

श्रीसूनजी बोले—आहाजे ! पूर्ववास्त्रमें पहलेकाचे इंद्राजीने पुराण-स्रवाजकी किस विकास मुक्ति हास क, इसे मैं आफ्को सुना रहा है, उत्तप सुने ।

हरिस्तर-पुरणीके परित्पूर्वक सून्त्रेसे सावहरण जाए सभी पापीसे मुक्ति हो जाती है, को आत:-सार्थ तथा रहिने परित्र होकर पुरणीक्ष अवन धरता है, करावर बांक, विच्यु और संकर संतुष्ठ हो जाते हैं। साव:करण इसके पहले और पूलनेशिरिसे महाजी असल होते हैं हचा आध्यक्तरूमें परावान् विच्यु और रातांने भगवान् संवाद संतुष्ट होते हैं। पूराव-श्रवक करनेशिको सूत्र बारा धरता कर कृष्ण-मृगवकं तथा कुछके आसनपर मैदना चाहिये। असल न अधिक होना हो और न अधिक नेदन। पहले देवता और कृष्णी तीन क्रतंशक धरे, तदनकर दिक्यारिको आधान करे। किर ओकार्य अधिवीत देवताओं में नमस्कार करे एवं अध्यत

श्रीताका भूक दक्षिण दिश्येको और और ब्रोक्सका युक्त उत्तरको और हो। पुराण और ब्राक्तक क्ष्मको यही विकि कही गयी है। हरिजेश, उपस्थण और धर्मक्षको ज्ञालको इससे क्षिपरित विधि कही गयी है। ब्राह्म विदेश विधियो सुनवा या पदना चाहिये। देवस्थय या ब्राह्म इतिहास-पुराणके वासनके समय सर्वप्रधम अस स्थान और ब्राह्म विधिये माहात्स्यक वर्णन करना चाहिये। अनन्तर पुरुष्णदिका ब्राह्म करना चाहिये। माहात्स्यके श्रवणसे गोदानका पर्न्य मिन्न्स है। गुरुकी आज्ञासे प्रणा-पित्रका अभिगदन करना चहिन्ये। ये नेदके समान, सर्वधर्ममय तथा सर्वश्रमम्प है। अतः द्विजश्रेष्ठ ! माला-पित्रकारी सेनासे ब्रह्मकी श्राहि सेन्द्री है। प्राणादि पुस्तकवेका हरण करनेवाला समाने प्राप्त होता है। वेटादि सन्त्रों समा सन्तिक सन्त्रोंको सार्थ किसकार उनका स्वकार न करे। वायकवेको नाहियं सा वेटसन्त्रोंका विकरीत अर्थ न करना और न वेटसन्त्रोंका असूद्ध पाठ करे। वयोकि वे दोनों अस्वका पाँचा है, ऐसा करनेपर उन्हें पावसानी स्ववकार्य से कर अप करना कहिये। पुराणादिक प्रारम्भ, पानी और अवस्थानमें सा मनाने सामान करना कहिये।

प्रतक्तां विदेव-सक्त्य समझक्त गर्थ-प्रवादितं ज्ञानव पृता च्यानिकः स्वाद्यः व्यादितं स्वतिक्रारं एकान्त्र स्वति व्याद्यः वास्तिकः स्वाद्यं समझन व्यादिते । इनका समझन न करनेपरं द्वेष द्वेता है । अतः ससका कभी भी परितकत नहीं करक स्वादिते । प्रत्यके च्यापान् च्याने अक्ष्मेकं प्रवादतं अक्ष्मेनं रूगी मात्राओको अन्याप क्याने व्यादितं ।

पूराण-वायकको चाहिये कि पूराण-संहिताओं वे परिवर्णिक साथे काल, वैमिनि आदि महर्षिये तथा शंकर, विष्णु बिला टेक्क ओवने आदि, मध्य और अवसानमें ब्राह्म के । इनका स्माण कर परिशास्त्रार्थवेता विभक्ते पुराणिक एक परिशास्त्रार्थवेता विभक्ते पुराणिक एक वस्त्रा चाहिये। वायकको स्माण्याचे उपारण करते हुए सुन्दर ध्वनिमें सभी प्रवरणों के वालिक अध्येके स्पष्ट धतालाना चाहिये। पुराणिक आध्येके स्पष्ट धतालाना चाहिये। पुराणिक प्रवर्णिक अध्येके स्पष्ट धतालाना चाहिये। पुराणिक प्रवर्णिक स्पर्णिक स्पर्

१-इतिहासपुरावर्षि । व्याप्त क्रिकेसमाः । पृथ्यते । स्थाप्त क्रिकेसमाः । पृथ्यते । स्थाप्त क्रिकेसमाः । पृथ्यते । सार्थः प्रत्यक्षया राज्ञे अभिन्तृत्वा पृथ्यति य । तस्य विष्णुत्यस्य स्थापः पृथ्यते प्रशुक्तकशाः । (पश्चास्तवर्धः, १ (७ । १ ०४)

होकर बहुत-से पुण्योकी प्राप्ति कर लेखे हैं।

जो पायक एका सम्पूर्ण अन्यके अर्थ एवं तास्वर्गको सम्बक् रूपसे जानता है, वही उपदेश करनेके योग्य है और वही वित्र कास कहा, आता है। ऐसे वानक वित्र जिस्स नगर या असमें रहते हैं, वह पुरुषकोत्र कहा जाता है। वहकि निवासी पत्य सभा समस्य-आत्या है, कृताओं है वर्ष उनके समस्य मनोरथ पूर्ण हो जाते है।

पैसे सूर्यरहित दिन, सन्त्रज्ञून्य र्राव, कारान्येसे पूजा पृष्ठ तथा सूर्यक किना प्रशेषके प्रोधा नहीं होती, व्यक्ति ही क्यासके रहित सभाको ■ प्रोधा नहीं होती।

अवस्था अपने साथ रेकर पर जाना जाएन है, किंतु अमिनकारी व्यक्तिको किया नहीं देनी पार्डिये । विद्या कहती हैं कि मुझे 'बर्नियोन, दुर्वन तथा दुरात्मा व्यक्तिको प्रदान मत करे, पुले स्थान, व्यक्ति, सार्थक तथा स्थान कर्म है तो दाला और प्रक्रमकर्ता—इन दोनोमेंसे एक स्थान स्थान है तो दाला और प्रक्रमकर्ता—इन दोनोमेंसे एक स्थान स्थान कर्म क्षान कर अस्त्राम हो । मार्गियक्तिको वाहिये कि पर साम्यानक, बीट्क, अस्त्रीक्तिक व्यक्ति पदानेवालेको स्थान कर्म क्षान कर अस्त्राम हो । मार्गियक्तिको अस्त्राम व्यक्तिकारको नहीं साम पाहिये । मार्गियक्तिको कर्मित स्थान क्षाने हैं और को स्थानकेत्राम क्षानित हैं, उनका कभी स्थान क्षाने हैं और को स्थानकेत्राम क्षानित हैं, उनका कभी स्थान क्षाने हैं स्थान क्षान हैं, स्थान देनेवाल पिता एवं पुर-स्थान है स्था देने इनकारकार हो एवं स्थानित होता है । (अध्यक्त कन्द)

आदिके अनिरिक्त का व्यक्तिको भी 🔤 देनी चाहिये।

#### 

सूरकीने क्या — स्वहणे ! यूग्यकमे हैं स्था हम्स अस्तिह और बहिनेदिनों बात कारकने हैं, व्या हम्स और व्यक्तियुगके किये अस्तित क्या मानी हैं। हैं। हैं वर्ण ज्ञानसभ्य है, वसे अस्तिविक्य बहुत है। टेबराको स्थापना और पूज बहिनेदि (पूर्ण) क्यों है। वह बहिनेदि-कर्ण से सामानिक हैं — कुआ, पोकरा, रास्त्रम हिंस सुरुक्त हैं। भारतिक स्थापना हैं — कुआ, पोकरा, रास्त्रम हिंस सुरुक्त हैं।

निष्यासमावपूर्वक किये गये कर्म साम व्यवसंपूर्वक किया गया हरिस्मरणारि श्रेष्ठ कर्म अन्तर्वेदै-कर्मक अन्तर्गत अन्तर्गत आते हैं, इनके अतिरिक्त अन्य कर्म बहिलेंद्र-कर्म करकारे हैं। धर्मका कारण राजा होता है, इनकिये क्याको धर्मका पासन साम चाहिये और राजाका अक्षय सेवन साम बहिलें। ये तो बहिलेंद्रि (पूर्त) कर्मका पासन साम कहिले। ये तो बहिलेंद्रि (पूर्त) कर्म सतासी प्रकारके कर्ष्ट गये हैं, फिर के इनमे तीन साम हैं—देवनका स्थापन, प्रसाद और सहाग साम

निर्माण । इसके अतिरिक्त गुरुवर्गकी प्**वापूर्वक पितृष्**वा,

देवलाओंका अधिकासन 🎆 🎆 प्रतिद्धा, देवला-प्रतिमा-

देशकार्यको विदेश उसम, मध्यम तथा वानिश-भेदसे विश्व वर्ष कथा है। सिन दिनोदे सभ्यत्र होनेवाले विश्व वर्ष कथान है। सेन दिनोदे सभ्यत्र होनेवाले विश्वा-विष्यनोदे अञ्चास देवताओको पूज स्था जापकरूपने सोस्या व्याप्त रक्षकर प्रतिश्च कराने वाहिने। मिराहाको यह तथा विश्व करी पत्री है। ऐसा करनेसे अश्वमेषयञ्चन परा प्राप्त होता है। करवम प्रतिश्च-विद्यामें स्थान करनेवाले चार विद्यान् व्याप्त संथा देहंस देवता होते है। इसमे नवमह, दिक्पाल, वरूप, पृथ्वी, फिर आदि देवताओंको एक दिनमें ही पूजा वरूप कर देवताको प्रतिश्च व्याप्त है। वो ब्या प्रवासि, वर्ष देवताको प्रतिश्च व्याप्त है। वो ब्या प्रवासि, वर्ष देवताकों प्रतिश्च व्याप्त है। वो ब्या प्रवासि, वर्ष देवताकों व्याप्त वर्ष है। व्याप्त देवताकोंको भी व्याप्त कर प्रवासित वर्ष है। व्याप्त देवताकोंको भी व्याप्त कर प्रवास वर्ष कर्म हम्बद क्षीर वर्ष प्रतिश्च क्यादिका निर्माण 📰 संस्कार-कार्यके क्रिके यमेरबाँद-देक्कुबन 🚃 हवर्गाद कार्य करने चाहिये। बहुनक्तर उनमे कार्य, पुन्तरियी (नदी) व्यक्ति परित्र परः तथा महापरः करन्त स्वदिने ।

एकसठ हाथका असद उत्तम तथा इससे आये प्रमाणक मध्यम और इसके आपे प्रचानने निर्मित प्रकार करिष्ठ सामा अस्ता है। ऐसर्वको १५वस कर्नेकारेको देवसाओको प्रतिमाने मानसे प्रसारका निर्माण करना पानिने। न्त्रन क्यांच्य निर्माण करकेवाला अन्यव वीर्ण प्राप्ता प्राप्त रूपने निर्माण करनेवास्त्र प्याप्त अपने सम्पूर्ण कृतका उद्धार कर स्वर्गलेकमें प्रतिक्षित होता है। क्यो, कुम, प्राप्ता बरीचा तथा करुके दिर्गम-स्थानको को ब्यांक कर-कर 🚃 या शिक्षात करता है, यह मुक्तिकय इसके कर प्राप्त करता है। वहाँ किये एवं देवता ओका निकार हो, इनके वच्यकों स्थानने वाचे, सरकार आदिका निर्माण मानवोको करण चाहिये। नदीके तटपर और उमस्त्रमके मधीप उनका निर्माण व करे । को मनुष्य 🔚 . 🔛 🚞 नहीं करता, 🔛 📖 अप होता 🖁 तथा 🕶 प्रत्यक्त भागी 🖼 होता 🕇 : अतः जनसंक्तः गविके 🚃 🧰 कलकः, मन्दर, 🚃 आरिष्य पर पादिये । उनके प्रश्नमेप विभिन्ने प्रतिक्षित 🚃 उद्या परः पार 📰 है। जलएक प्रयमपूर्वक प्रमुख न्यायेजवित काले शुभ मुक्तांने शांतिको अनुसार अञ्चलके प्रवाही करे। भगवान्त्रे काँग्य, मध्यम् 🖿 क्षेत्र मन्दिरको कालेकाल व्यक्ति विक्तुलोकको अप्त केल 🖩 और अधिक व्हरिक्षी आह करक है। को व्यक्ति पिरे क्यू वा पिर को अवर्धत् और्व मन्दिसक रक्षण बदला है, यह संग्यत १७वीका फरू अस काला है। जो व्यक्ति किन्तु, जिला, सूर्यं, बहुत, दुर्गा तका लक्ष्मीनाराथक आदिके मन्दिरेका निर्माण कराता है, यह अपने करूका उद्धार बर कोट बरम्बाक सर्गहोक्ये निवास करता है। उसके मद बहाँसे पृत्युत्वेकमे आकर राजा या पृत्यक्षम पनी होता है। को मनवर्ष विकास-दर्गके भन्दिमें अनेक देवताओंको स्थापना करता है, वह सम्पूर्ण विश्वमें स्वरणीय हो जाता है और सर्गतनेकमे सवा पूजित होता है। बतको भहिमा अपरम्पर है। परोपकार का देख-कार्यमें एक दिन भी किया गया जलका हरूको मानुक, चितुक्त, कर्यकृत 📖 आपार्वकृतको अनेक चेदियोको सार देशा 🕏 । असका 📟 🔛 📖 हो बात है। अधिकृत दुशालेक व्यक्ति देवार्थन करनेसे अपना उद्यार होता है तथा अपने पित-मानु आदि कुलोब्से भी यह तार देख है। जलके क्रवर तथा ...... (देवारूम) के ऊपर रहनेके रिन्ने कर 💹 🚃 कहिये । प्रतिद्वित 🚃 अप्रतिद्वित कर्म कर्म हा चारिये । 📑 🚃 🚃 🚃 पूर्वतः देववृक्षेत्रमे ज्यारण नहीं करण व्यक्ति का कारण कामार कारण गैरव नरवाकी आहि। होती है, पांसु बदि नगर या अध उन्नद गये हो, अपना स्थान 🚃 🚃 जेइन्स पहें या विद्युव पत्ना हो तो 🚃 पुतः

ज्ञुन कुल्लीके अध्यानमें देवन्त्रीचर तथा देववृत्त आदि रुवपित अही काने चाहिये। बाहारे इन्हें हटानेयर बहाहत्याका देश रूपला है। टेक्कअर्थेक महिराके सामने प्रकारणी आदि क्षाने च्यक्ति । पृथ्वरियो वननेत्रास्त्र अनन्त फल प्राप्तकार क्यारनेक्से पुतः गेथे नहीं अस्त (

अविका किया विकारके करणी प्रतिये।

(अध्याम ९)

## -GRO-10--

## 🚃 अदिके निर्वाणमें यूमि-परीक्षण 📖 वृक्षरोपणकी महिना

सुतभी बोले—बदलो ! देवमन्दिर, तदाग 🚟 🔤 करनेमें सबसे पहले प्रभावनुसार प्रतित की 🥅 भूमिका संत्रोधन कर दस हाथ अथवा 📰 इत्यके 🚃 बैलोसे उसे जुतवाना कार्राये। देवमान्दरके 📰 नुईक पुषिको सफेद बैलोसे तात कृप, बपीचे आदिके लिये काले बैलोसे जुतवाये। यदि कह भूमि 🚌-बागके रिजे हो क्षे उसे जुतवानेकी आवश्यकता नहीं, मात्र उसे साम्छ कर रेना स्वद्भिये । उस पूर्वेक स्थानको सिन दिन मुतकाना चाहिये । फिर हराने चीव प्रकारके 🚃 बोने चाहिये। देवपक्षणे तथा क्कानके दिल्ले सहत प्रकारके चान्य समन 📰 चाहिये। मृंग्, उद्भद, बान, निरु, साँवा—ये वाच मोहिनम है। मसुर और महर व्य क्या मिरकोसे सहत होहिएल होते हैं। (यदि ये बीज केंग्, पाँच क साथ रातीमें अपूर्वरत हो जाते हैं तो उनके फल इस 📖 जनने वाहिये—वीन सतकारी पृथि उत्तम, पाँच

204

एतवास्त्रे भूमि मध्यम तथा सात एतवाली चूरि कॉवह है। कमित कृषिको सर्वमा त्याग देना चाहिये ।) केत, रातन, 📟 और काली—इन 📰 क्लीक्ला-पृथ्व 🚃 🚃 करों 🚃 रिज्ये प्रजासन मन्त्रे राज्ये है। प्रसाद स्थापन पहले भूमिकी परीक्षा कर रेडडे चाहिने। उसकी एक 🔤 पुर प्रवार है—अंद्रीयको (संस्कृत एक 🚃 संसा) विरुक्तकक्षको कारह अंगुरुके ग्रेपे प्रकृतर, उसके पृथिको क्यरवारे भागमें भारी कोर भार क्लाइबॉ सन्दानर उन्हें क्षमधे रुपेटकर हेरासे पियी से । इन्हें बार 🌃 🕬 कर्ज दीवकवर्ष भारत प्रव्यक्तित करे । पूर्व तथा पश्चिकवर्ष अंतः 📖 जलती 📕 तो सूच तथा द्वारिक एवं इतरको 🗎 स्वा रहे से असूभ मान एवा है। यदि शरों बसियां कुर 📟 📟 नन्त हो जायें तो विपतिनशरक हैं । इस प्रकार सम्बद्ध-स्पर्ध भूमिकी परीकाकर उस भूमिको सुक्ते अलेक्ट्र तथा 📟 **पर धारत्**व 🚃 को । स्वयंका कार्युक्त देवर धूनि बोदनेकहे 🚟 थे एक को। करहरे रध्यने एक हायके पैसानेमें मुक्तियों थी, प्रमू ........... जल तथा 📰 जलमे ईजानाधिकुक तेकर लोध रे, विश्व चौदते समय 'आ प्रहारू रे' इस 🚃 उद्यान 🗷 - 📮

अतः प्रासाद, आराम, उद्यान, असनुस्य, गृहन्त्रिकीय पहले जाल्हेकामा विविद्धीक दूसन 🕮 चारिने । कर्त सम्बन्धि अववस्थवता हो वहाँ सार्य, सँग, 📖, वेज्यर 📟 📖 बकुरः--- इन पुत्रोंसे निर्मित पूर कॉन्डक्से प्रशस्त वर्ण गये हैं। यदि खापी, कुप आदिका विकितीन संसन एवं उत्तर आदि वक्षीका विधितीन रोपन करे, तो उसे फल भी फल क्रम नहीं होता, अधित् नेवल अधोगति ही किन्त्रनी है। नदीके किनरि, १४३४न तमा अपने भरसे दक्षिणकी और मुख्योकसका

वास्तुदेवताक्ष किम पूजन किमे अस्तर, तहर 🚟 🚾

निर्माण करता है, कम्पान उसका अवस्य पुरुष नष्ट कर देने हैं।

वेचन न करे, अन्यथा यम-बातना धोगनी पहले है। 🎟 पूर्वक बृक्षेचा रेकन अस्पेसे उसके पत्र, पूर्व तथा फलके (अ-रेपुओ आदिका समानम इसके पितर्वेको प्रतिदिन तस काता है।

कं व्यक्ति सामा, पूरू और पारू देनेवाले वृक्षीमा रोपण करत है क कार्नि तथा देवालयमें वृक्षोको लगाता है, वह अपने विक्तेको बहे-बहे पानीसे तारता है और चेपणकर्ता इस मनुष्य-लोकमें पहले कीर्ति 📖 शुध परिणायको प्राप्त करता अमेरा और समागत विकास स्वर्गमें जाकर भी तारता है 🚃 है। अदः दिवागा । यह समाज अत्यन दाप-राजक है। जिसको एवं नहीं है, उसके लिये बुधा ही पत्र है, वृक्षकेषणकारिक जीविक-नारखेषिक कर्म वृक्ष हो करते 🔤 है तथा सार्ग प्रदान कार्त है। 🚾 कोई अध्यक्ष वृक्षका 🚟 🍱 करना 🖥 में बार्स शब्देश क्लिय एक न्यान प्रशिवे 💐 धनुष्य है। असम्ब अपनी महास्त्रेत नियो कम-मे कम एक या हो या और अक्षाय-शुक्त कराया हो चाहिये । इका, स्वक्त, करोड़ 🖏 🖎 पुलिके सामा 📗 उनमें एक अधरय-कृत कार्यको बरावरी नहीं बन सकते ।

अवशेष-वृक्ष लगानेसे कभी श्रीक नहीं होता, प्रश्त (चकड़) कुल उत्तम स्त्री प्रदान करकात है, शानभंपी फारु भी रेश है। भारतवृक्ष दोर्च आसूच्य 🚃 पुरस्य है। प्रापृत्यत वृक्ष पन देख है, नेंद्रका कृत कुन्तवृद्धि कराता है। प्राप्तिन (अन्तर) यर कृक्ष की-मूख प्राप्त कराता है। बक्रात 🚃 📆 । খন্ত (নিনিহা) ৰজ-মৃত্যিক है। খানকী (क्य) व्यर्ग प्रदान करता है। करवृक्त मोकास्ट, आसवृक्त अमीर व्याप्ताता और गुवाल (सुपरी) 🖿 वृक्ष सिद्धिक्र है। 🗪 स्वरूप (महुआ) नथा अर्जुन-वृक्ष सब प्रकारका 📺 ज्यान 🚃 है। कटन्य-वृक्षसे विप्त रुक्ष्मीकी शाहि होती है। | (इमली) का वक्ष धर्मदक्क मान गया है।

१-भृष्टि-परिश्त, कासू-विकान तका समाम आर्थको 🌉 🚃 एक्सून विकार अध्यक्ष्मचन्त्रकार, कासूक्ष्मकरूक, सुरासरीता, जिल्लास, गुडरकपूरण आदि क्योंने हुआ है। मरस, आदि तथा विव्युक्तीयरकृतको में इसकी वर्षा आही है। इस विवादा सीक्षा उत्होबा हासेट, इसका म्बार्क, श्रीतसूची एवं वनुस्तृति a । ८९ आहेरे भी है । कर्जुनेवहके पूर्व 🚥 एक इस्त निवृत्वर्ग और वह 🚥 है ।

२-आ वहन् व्यक्तके व्यक्तकेयो व्यक्तक एहे हाता. एर उपलेखिकाको प्रत्यके दशा 📖 केनुवेदानकुकारकु सक्तैः पूर्वकर्षन किया स्थेताः समेवो पुजरत प्रकारता गीरो जायता निवासे-निवासे क पर्वत्यो वर्षत् करावाचे व ओक्कर, प्रकारते योगलेको नः करावाच् ॥

सभी-तृश रोग-नासक है। केदारसे समुख्येक कियान होता है। केत वट धनप्रदाता, पनस (कटहरू) पृथा कर बुद्धिकारक है। मर्कटी (केवाक) व्यादन-वृश्यके विकास संतरिका सभ्य होता है।

सीराय, अर्जुन, जयप्ती, करवीर, बेरु तथा परवस-वृशीके आरोपयसे सर्गयमे प्राप्त होता है। विश्वपृत्तक वृश्वका रोपण करनेसे सर्ग-सूल प्राप्त व्याप्त करनेकार रोपण करनेवारक वर्णोक प्राप्त नह हो असे हैं। सी पृत्तका रोपण करनेवारक वर्णोक प्राप्त वृश्वोक रोपण करनेवारक विष्णुक्य कर वर्णा है। वृत्तक आरोपयमें वैज्ञास व्याप्त वेह एवं प्रमेह अश्वम है। आवाद, व्याप्त व्याप्त के के केंद्र है। आसिन, व्याप्त वृश्व राज्योक व्याप्त के के केंद्र है। ज्ञासिन, व्याप्त वृश्व राज्योक व्याप्त व्याप्त के के केंद्र है। ज्ञासिन, व्याप्त वृश्व राज्योक व्याप्त व्याप्त के केंद्र है। ज्ञासिन व्याप्त वृश्व राज्योक व्याप्त विश्वका सीवनेसे अग्रोकाको तथा सहित्यको करने एवं प्रस्त-करने सीवनेसे अग्रोकाको तथा सहित्यको करने एवं प्रस्त-करने सीवनेसे अग्रोकाको तथा सहित्यको करने एवं प्रस्त-करने दस हाच चाचे ओरका चेत्र पवित्र पुरुषोत्तम **व्या** माना गया है और उसकी कावा जहाँकर पहुँचती है तथा अश्वत्य-पुरुषो **व्याप्त** वाल जहाँकर पहुँचता है, वह क्षेत्र ग्राहके समान पवित्र शस्त्र भवा है।

सुननी पुनः कोले—विकास ! तानिक पदाित अनुकार सभी प्रतिक्रित स्वर्धित पुनः सभी प्रतिक्रित स्वर्धित पुनः स्थि प्रतिक्रित । कुल्लीक उद्यानमें पुन्नि । सार्व्यक प्रतिक्रित । सुरुप्ती-कनमें कोई काल की करना प्रतिक्रित । सार्व्यक प्रतिक्रित । स्वर्धित । सार्व्यक प्रतिक्रित । स्वर्धित । स्वर्धित । स्वर्धित । स्वर्धित । स्वर्धित प्रतिक्रित । स्वर्धित । स्वर्या

#### देव-प्रतिया-निर्याण-विधि

सूनवी बोरी-नाहाको ! अब में जानका प्रावसमान रूथम करता है। उसम रूथमेंसे गीर प्रविकास पूजन नहीं करना चाहिये। पाचम, करह, मूनिका, रूप, क्रम एवं अन्य धातु—इनमेंसे किसीकी भी प्रतिमा करावी जा समाती हैं। इनके पूजनते सभी अमेष आप धात होते हैं। पन्दिलेंक मांपके अनुसार हुए रूथमेंसे अभाव जीवा मूर्तिका पूजन नहीं करना चाहिये। देवारूपके प्रत्यों के केवई हो को आठ भागोंने विभक्त कर तीन प्रमुख महन्ते महिका दवा दो मांगके मांपने देव-प्रतिमा बनामें। चीरामी अमुरू (साई तीन हाय) की प्रतिमा पृद्धि करनेवारणी होती है। प्रतिमाके मुक्तनी लेक्यां व्याप्त अनुष्य क्षेत्री चाहिये। मुक्के लेल भागके व्याप्तये विश्वंक, रास्त्रद लक्षा नासिका हाले चाहिये। चित्रके क्षात्रके काव्य ही कान और ग्रीका व्याप्ती चाहिये। नेत्र ही अनुष्य-प्राप्तको काव्य व्याप्तिये। नेत्रके आनके तीसरे भागमें व्याप्तिये व्याप्तिये व्याप्तिये। सारिकाके तृतीय चायमें सुद्य दृष्टि काव्यो चाहिये। सारिका विस्तार कर्ताम अनुष्य वीचा — ये व्याप्तिये। वासिका, मुक्त और जीकाले व्याप्तिये व्याप्तिये। व्याप्तिये विद्याप्ति कीवाई हो उसके आखेमें कारी-प्रदेश काव्यक चाहिये। दोनो चाहु, व्याप्तिये वासिका अनुष्ये तीन

र्मवर्ग एकते 🔤 तथी स्तरण वर्ष । प्रीती द्रवन्ती 📟

विकासम्बन्धाः क **व्यक्तिः तमारकुरकार्यः । रेक्क्न** प्रप्रस्ते॥(२५८।२०-२१)

सुवर्ण, चौदी, सीधा, राम, प्रत्यम, देशवाम, सोवा-मोना, चैनाठ और बर्वता नैवांशव अथवा शुध वाश्चेवर क्यी हुई देशवासय प्रशास मानो गर्दी है ।

१-मत्त्रपुरामं कीम-निर्माणेः 🔤 🔛 व्यक्तिके 🕬 शहरूक है—

अञ्चलके ही और उसका विस्तार कः अञ्चलकः हो। अंगूठके बरबर ही कर्वनी होनी साहिबे । दोव अनुस्तियों क्रमफः होटी 🕅 तथा सभी अनुस्तियों नसायुक्त नवाये । पैरको संबर्ध चौदह अङ्गरूने बन्हरी पहिले । अधर, ओष्ठ, वश्च स्थरू, शू., शरहर, तथ करोल भरे-व्हें मुझैल सुन्दर एक गंकल कराने चारिये, जिससे प्रतिक देखनेथे सुन्दर वास्त्व हो। के

विशाल, फैले हुए 📖 स्त्रांत्रमा सिने हुए नमाने चाहिने । 🚃 प्रकारके सूच रुक्षणीने 🚃 प्रतिच सूच 🔚 पूज्य मानी 🔤 है। जीतमाने 🊃 मुकुट, 📖 😥 बाहुओं में कटक और अंगद पहलते करिये। यूर्ति सर्वाहु-शुन्दर, अलर्भक तथा तसत् अहोंके अन्यूक्नोरे **प्रां**क होनी चाहिये। भगव्यकृत्ये 🚟 🗗 देवकलाओक अक्रका

होनेपर धरमहातिमा प्रारंकामा अपनी और करवत 🚃 का रेमो है और अमीत बंबाबर राज्य करती है। जिसका मुख्यमञ्जल दिन्द प्रश्वमे कामान रहा हो,

कारोमें किन-विकित्र विकास सुन्दर 🚃 तथा 📖 क्त्यक-मारावर्षे 📖 महाकार सुन्दर 📰 सुत्रवेशित हो, 🏢

# कुन्य-निर्माण एवं काके संस्थातको 🚟 और सह-सामिका वाह्यान

🔤 🚟 संस्कारको संकित्। 🚾 ब्लाक एक है। कुन्द दस मनारके होते हैं—(६) चीलोर, (३) जून, (६) चय, (४) अमेक्ट्र, (५) मेरिकी अनुविका, (६) हासा

(७) पक्कोण, (८) सहकोण (९) अङ्कोण (१०) 🕏 कोणोबाला ।

सबसे पहले भूमिन्द्र संजोधन कर भूनिक 🌉 हुए तुम् केटा आदि इटा देने चाहिये। 🎹 उस भूनिकः 🛍 और अंगरे युगकर भूमि-सुद्धि करचे कहिने, उदकता उस भूमियर जल-सिंचनकर बीजारोपन करे और सता दिनके कर कुष्क-निर्माणके रिज्ये कानन करना साहिये : तरपावद आयोह उपर्युक्त 🖿 कुम्बोमेंसे किसीवड निर्माण करना चाहिये। कुष्य-निर्माणार्थ विधिवत् नाप-जोकके रिप्ने 🚃 उपयोग करे। कामना-भेदसे कुम्छ भी 🚃 आकारके होते है। कुण्डके अनुस्थ ही मेक्स भी बक्को जाते है। 🚃 आहुवियोकी संस्थाका भी अलग-अलग विधान है। ब्रिपि-

**पालको वर देनेवारने, स्रेडसे परिपूर्व, पगवतीकी सीम्ब** बैद्धेनी प्रतिकास्य स्थित करावे । यगवती विचिपूर्वक अर्चन कानेका प्रसान होती है और उपसन्त्रोके मनोरखेंको पूर्ण

🔤 करू (सक्के चर द्वाद) भी विष्युकी प्रतिमा भनवानी चाहिये। सीन तासमधे वासुदेवमधे, पाँच तासमधे वृत्तिक तथा क्ष्मविकती, 📖 तलकी बारायणकी, पाँच च्छेजनमें, का 🚃 दुर्गकी, तीन-तीन **ाता** रूपने और सरकारोको क्षमा साथ **गाउँ** भगवान् कुर्वची 🚟 काम्युनेका विकास है।

पगवान्त्र्ये पूर्विको स्वापना तीर्थ, पर्वत, तालाम आदिके समीप 📖 चाहिये सम्बन्ध तगरके मध्यभागमे च जहाँ **व्यक्तिका** समूह हो, वर्षा कारने कहिये । इतमे थी अनिमृतः असीर निरम्भ बोबोंने परिश्वा करनेकालेके पूर्वापर अनुपर गुरलेका 🚃 हो 🚃 है। व्यक्तियुगरे चन्द्रम, अगरु, विल्य, स्वरूप तथ रहता 🔠 🚃 🚐 मुख्यमी मूर्त क्रमाने स्थित (अध्याम ६३)

क्रमानके अनुसार अवहति देनी चाहिये । मानरहित हचन कर्मसे बोर्के फल नहीं भिलल । जलः बुद्धियान् मनुष्यको मानका पूर्ण ज्ञान ४९१वम् ही मुल्कास विकितम् निर्माण कर यहानुहान 🚥 प्यक्तिये ।

निसः यहकः जिल्ला मान होता है, उसी मानकी 📑 श्रेतक करने भाषिये। प्रयास कार्युतियोका मान सामाना 👢 इसके बाद औ, हजार, अपूत, लक्ष और क्येंटि होम भी होते है। बढ़े-बढ़े 📺 सम्बंधि रहनेपर हो सकते 🛘 वा रामा-भारतस्य 📖 सकते हैं। यतुम्य अपने-अपने 🚃 कर्मके अनुस्कर सुस्त-दुःस्तका उपभोग करता है तथा ञुक्कञुक-करु क्रोके अनुसार भोगवा है। अतः शासि-पृष्टि-कर्मने बहोको 🚃 प्रपत्नपूर्वक पहन 🚃 कहनी चाहिये। दिवय, अन्तरिक्ष और पुनिवी-सम्बन्धे बडे-वडे अबहरू 📰 🚾 होनेपर सूमासूम 🚃 देनेवाली मह-शान्ति करनी चक्किये। इन अवसरोपर अवृत होय करना चाहिये। कान-कर्म 🔳 प्रान्ति-पुष्टिके शिवे प्रहोका भक्तिपूर्वक 🔣

पुजन एवं हवन करना चाहिये। करियों अहेकि किये राख एवं 🔤 होमका 💴 है। मुहस्थको 📟 🖼 को नही करना चाहिये।

कुष्योका प्रावानुसार संस्थार करना चारिये। विना संस्कार किये होम करनेपर अर्थ-हानि केती है। जतः 📺 करके होमादि कियाएँ 📰 चाहिये ।

कुम्बोके 🚃 ऑक्स्ट्र्वक स्वेत्रम, कुन्नके 🚟 प्रोक्षण, विश्वलीकरण तथा सूत्रसे आवेदीस करना, क्षीरिय करना, अभिनिश्चामी 🚃 करना एवं 🚃 🚃 मंत्रकार होने हैं। चुहके कासे आंध्र IIII न तको। 🚃 📖 भी अप्रि नहीं मैगकरी पाहिने। सुद्ध एवं पांका न्यतिहास उन्नार प्रदेश कारण कारण कार्यिय । 🚃 🚃 मंत्रकार कोर और हमें 📖 अधिकुका रहे । 🚃 (१) और विमा-बीच (प्री) से काला प्रोक्रम करे और विमा-प्रतिका च्यान करे. इससे अभीत 🚃 📫 🚃 🛊 । इसके बाद व्यपुक्त सक्तरे 📖 🚃 वरे । देखी भगवतीका और भगवत्का अर्थ्य, पाठ,

'वित्रविकृत स्तु 📺 प्रथा 📖 सर्वेद्धान्त्रम् 📖 यहदतम्बिने 📟 🔛 कालाने 🖫 हिरण्या, करका तथा कृष्णा<sup>र</sup> । सनिधा-भेदसे जिन विद्या-भेदोंका कर्मन है, उनका उन्होंने किन्त्वेन काम खाहिने : बहुक्षण, अतिकाम और सारिकार--इका योग-कर्मने विनियोग होता है। आज्यहोममें हिरम्बा, क्रिक्यू (दूध, 📖 और मध्—इन ब्याब्य समाहरः) से इक्ट कटोक्ट कॉर्क्स,

पूर्वत वर्षे । अपि-पूजरमें 📰 🚃 उपयोग को---

पुरुष्क्रियमें बहुरूक, 🛲 और पायससे हवन करनेमें कृष्णा, इस्क्रोक्ने कारणा, पश्चक्रीयमें सुवर्णा और लेतिक, किरकावसे 🚃 करनेपर केना, जिल-होममें धूमिनी, काष्ठ 🚃 कतरिका, वित्रहोमने स्वेदितास्त, देवहोमने मनोजवा 🚃 🚃 नवी है। विन-जिन समिधाओसे क्षण किया आता है, उन-उम समिकाओं 'कैशाना' नामक विकार रहते हैं। व्यक्तिके मुक्तमें क्राकेकराजपूर्वक आहुनि पद्दनेपर आहि देवता सभी प्रकारका अभ्यूदय करते हैं । मुसके असिरिक्त होय

शुद्ध क्षीरसे इका श्रद्धकेवर रसंत्र, नैस्थिक 🗯 प्रधा,

अव्यक्ति देनेसे अनिष्ट फल होता है। व्याप्तिये हिरामा एवं अन्यन्य आहरीयोथे गलक, काव, कुलकमा, सुप्रमा, कहरूल तथा अति-रूपिका जीवद है। कुम्बले उद्दर्ग अर्थत् मध्यमे आहुतियाँ 🕶 🚃 इवर-ठवर 🔛 📰 चहिने । चन्द्रम, अग्रह, कारू, भारतम तथा भूभिका (जुड़ी) के समान भारिये आहुर्युत मेल है। 📺 🚉 ज्याल किन-इत-क्यमें 🚃 हो 🗓

मृत्युभक होता है जिए धनक क्षत्र होता है। असी बुद्ध जाने तक 🚃 ५३मी हेनेवर भी पहलू अधिह होता है। ऐसी निवन्तिमें क्वाक्रिय करना चाहिये। पहले अञ्चर्तस आहरियाँ देकर 🚃 चेकन कराना चाहिये । अनन्तर चीसे मुख मनाहरः पर्यास अक्षुतिथाँ देनी व्यक्तिये। तीनी व्यक्तिये **व्यक्ति को राज प्रदा-मंति-पूर्वक मातान विकास एक** सरे। (अम्बल १३---१५)

#### अप्रि-पूजन-विधि

सुराजी बोले—सङ्ग्रेणे । नित्र-वैधिक बच्चदिनी समाप्तिमें हक्षत हो जानेपर पणकान् अधिदेवकी चेहज उपकारीसे पूजा करनी चाहिये। 🌃 वायुद्धार 🛗 🚃 🚃 देवताओंको पूजा 📰 हाधमें स्वरू पूज है निश्च 🖮

पढ्कर 🚃 करे-

इट्टं स्तित्विकामधीरियुके(विद्विधिकंत्वनं करानम् । देपाकरचे प्रकारकं विनेत्रं कार्यकृतिहाँ बर्जुपैरिंड कराणिः ॥ (मनमप्त्री १ । १६ १३)

'मनकम् व्यापना । साधीमे उत्तर 🖭 (महपात्र), इकि, त्वसिक और अधन-पूरा चारण किमे हैं, देवीप्यमान सुवर्ष-सद्भा करका लक्ष्य है, कमलके कपर विराजमान है, 📖 नेत्र है सभा के बटाओं और मुक्टसे सुशोधित हैं।'

मन्द्रपके पूर्व 🔤 हारदेशोमें कामदेव, इन्द्र, 🚃 तथा अव्यक्ति कर स्वाधित करे । तदकत्तर आसन, पर्यः, अर्थ्यः, अन्तमनीय 📖 गम्बादि इपचारीसे पुत्रन कर 📖 

है। है होने नमें 📖 🚟 🚟 अपन अर्थनार 🖼 ।

Meter-taken git mit ein geographische Mittellen wird absprace a

है कि । अपने करन क्रिया अने के निकार का है कि है। अनुने के के क्रिया है। में है कि है कि क्रिया कि क महाम और ।

क्षेत्र कर्य -- विर्माण में प्राप्त के जोबीक (स्वाप्ता : कृष्य हों । हेरेक अपूर्ण कर्य, अरेपू : ll रेकेस । अन्य के सहा, निरम् करन Million पति है Million के हैंबर हैं । अन्य इस कुमको सहस्य करें, विस्तरे साथ संसार कुमकारों

संस्थित हैं सार ।

हरू क्या—देवाली विद्रापे य पूर्वाचे काळाल्। युद्रोशी केव्हेरेक पूर्वाचे ने काईन ह

है देवरेचेत 🚃 । जन देवताओं और निराधि जुक का करनेने एकका समार 🚃 है। आप मेरे क्रा बहुत इस पूर्वार वहन करें। वीय-राज-स्थितः सर्वेपूरोत् राजारेतु कोतु च emmi marce प्रदेशः प्रदेशकास्य a

परमानत् । अस्य समूर्य 🚃 📰 📰 🐩 । अन्त्री अनुति परम् 🚎 है। 🚃 📑 📰 विश्व कर्ण जोऽस्यु स्वयूक्तवे प्रचले व्यानेदारे । व्यानकार्यः व्यानिवासम् ॥ ं हे च्यापी जिल्ला । अन अस्तिकारी है तथा भागा संस्ताना करनेवाने हैं, जानवों नेट सरसार है। मेरे हुए। प्रदा इस निवासे

क्या पहल को । परम असलकर मन्द्र के नैनेकके काले निनेदिक को तथा पहलूत भी अधित हो। आयो समक्ष कर्म प्रमानन् असिदेवके निनेदित 喉表 हुतासः अस्तुन्यं अस्ते स्वत्यवहरः। होकन्या नारतेत्रह् काले वार्यन्ते ॥

ी हुतक्षारेय । आस्मो नगरका है, स्वयमान संस्थान ! नामो सामा है, हे नामेद ! नामो परावत है, सामा है।

#### 🚃 🚃 अधिके अन 🚃 होम-प्रकॉका वर्णन

स्तजी बोले—अञ्चले ! 📖 🛮 अध्यस्यात-विविधे अनुसार किये गये विविध बड़ोमें अग्रिके नामीक वर्णन करता हैं। यसर्थ-होममें पाँच सी संस्थातकर्या आहर्तवारं 🚃 अभिन्ने कार्यव 🚃 गया है। 💹 प्रवास आज्य-केवने विष्णु, तिल-साम्मे वनस्यति, स्ट्रास-करमे अयुत-वागमें हरे, लग्न-होमने वर्षे, कोट-होमने हत्वाम, शान्तिक कमोपि वरूण, मारण-कर्ममें अरूण, नित्य-होनमे अपरू, प्राथकितमें दुताहान तथा अस-खूले 🎹 नय सहा गया है। देवप्रतिद्वामे 🔤 , कातुवाग, अवहप 📾 पराक-वागमे प्रजायति, प्रया-भागमे नाग, महाराजने हरियोक्, गोदानमें अर. कन्यादानमें खेजक 📰 तुला-पूरव-काओ भारतकपरी अधिकोष स्थित रहते 🜓 📰 प्रवार कृषेत्राकी। अभिका सूर्य, वैश्वदेव-कामि पाकक, दीवा-महत्रमे जनाईन, उत्पोद्धनमें काल, प्राचयको लाल, पर्यक्रको कर, अस्तिकारको विश्वविका, गर्माचनमें मञ्जू, सीमन्तमें प्रजूल, पुंसकको इन्द्र, नामकरणमें पार्थिक, निकामकमें इटक, प्रशासने अनि, मुद्धानरणमे बद्धानन, प्रतोषदेशके समुद्धात, उपनयनमें वीतिहोत्रः, सम्मवर्तनमे धनक्षकः, उदस्ये 🚃 समुद्रमे 🚃 🐖 विष्टु तथा 📖 इन्होंने संपेतृत का

है। अधारिका प्रन्यर, स्वाधिका जातवेदस्, गजातिका मन्दर, सूर्वतिका विच्या, लेखविका वरुण, बाह्यणविका हविर्पृक्, बाह्यपद्भिक्त व्यवस्थित स्वयं कहा जाता है। बाह्यपद्भिक्त भरणीयति, वृक्षाधिका भरणीयति, वृक्षाधिका भरण

मृतिकारिका तथा राज्या है।

विन हम्मोंका होनारें उपयोग किया जाता है, उनका

क्रिया प्रमाण होता है। प्रमाणके क्या क्या ज्या हमाका
होग परम्याका नहीं होता। अतः शासके अनुसार प्रमाणका
वरिक्रम कर होना व्यक्ति । यो, दूध, ध्रमाणक, हिंद, मध्,
हाका, गुढ़, हैंक, एठ-पुंच, मुकरी, समिद्य, बीके, बेटएकेंं
स्वय प्रमाणक और केसर, कसर, जीवनी, सामुसुन (विजीध विष्).

अति अनेक होग-हथा कहे भने हैं। धूर्वपत्र,
श्रमी क्या समिद्या प्रदेशमानके हम व्यक्ति । विरुव्ध तीन
कामुक, विन् तिमानिक नहीं होना व्यक्ति । हमने साम-

(अध्याम १७-१८)

# यज्ञ-पालेका रूरूम और पूर्णाहरिकी विधि

विकास (Miller होने पाहिने)

स्तानी नीति—अवानी! जिल्ला उपनेपने आनेवाली स्वाने निर्माण निर्मण निर्माण निर्माण निर्माण निर्माण निर्माण निर्माण निर्माण निर्मण निर्माण निर्मा

भारिये। दर्वी अर्थात् करपुरस्का निर्माण कर्ण य तथिये किया क्या सहिये। यदि काइसे करपुरः बनानी हो तो गंभाये वृथ्, तेटुका कृथा उत्तर दुखवाले वृद्धके काइसे थाएंड अनुस्तकी कामी शाहिये। उत्तरक सैयेक्ड प्रकार दो अनुस्तको होता काहिये। यह-साध्यमें यह उपयोगी है। तथियी करपुरः काहीस तोले, क्याः आका किलोकी होती है और उसका म्याल पाँच अंगुलका तथा लंकाई उन्नड ह्यायकी होती है। यही दर्वी (करपुरः) प्रथम-निर्माणमें उपयोगी है। अन्य-सोकको लिये दस सोलेकी काममंत्री करपुरः होती है। इसके काहियों काहियों सोलेड अनुस्तके मार्थमें दर्वी (अरमुलः) काव्ये। अन्य-स्वाली तथिकी या मिट्टीकी भी हो सक्ती है।

सूत्रजी कोले - सहत्यो ! . . । पूर्णाहुतिको विधि

बतला रहा है, इसके अनुष्टानसे यह पूर्व होता है। आवएव पूर्णाहरि विधिपूर्वक करनी चाहिये। पूर्व्यक्रीके कद यहने आवाहित किये गये देवताओंको अर्घ्य देना चाहिये।

यदि मह अपूर्व रहे तो रुक्तान प्राप्तान है जाता 🛭 और यज्ञ पूर्ण फलप्रद नहीं होता । सुरक्षणे यह रक्तका चणका, सूर्यको अर्घ्य देना चाहिये। यह सम्पन्न हो जानेक सहस्रोको पोजन कराना चाहिये। ठट्टल्ल कड़कान वाचे ज्लेख कर कुल-देवताओको प्रार्थन करे । प्रतिहा-काम्मे पूर्वहरिके सकत 'सप्त तेन' (यकु १७१७९), 'हेहि केन' (सकु ३१५०), 'पूर्वा होंचे' (वयु: ३।४९) तक 'कुम्सू-' (यस्-१९ । ६९) इन मन्त्रीका पाठ करे तथा निरय-नैविशिक वापने 'पुरुष्तु:' 'पूर्वा दक्षि'', 'सह ते॰' तक 'देई वे' — का पाउ बरे । विद्वानीको इसमें अपने कुल-परम्पाका थी विद्यार करना व्यक्तिये। पूर्णापृथि भाषा होकर सम्बद्धा करना व्यक्तिये, व्यक्ति नहीं। बहहोस तथा एतहोसमें एक पूर्वहरू देने व्यक्ति। महत्त्रपागमें दो, अपूत-क्षेत्रमें 🖦 सहस्र कुल्हेम्प्रे 📺 मृद् पूर्ण-होममें एक, इस इक्ष्-द्रोधने हो, गर्चाकन, अस्त्रहरूक, सीवन्त्रेप्रयन संस्करीये और धायक्रिक्ट कर 🚃 🚃 वैश्वदेश-व्यापये एक पृष्टेकृति देनेका विधान है।

यनीवारणमें ऋषि-भन्द, विविधीनारिका 🚃 व्यक्तिमे । यदि इनका प्रयोग 🛮 🎆 अब हो 🚃 🚃 न्यूनता होती है। 'सह के' 📖 ऋद्यान-सम्बद्ध नविष्यत्व जानि, अगरी सन्द और अति देवता है। 'स्ट्री के-' इस मनके प्रजानति 🐠 अनुहुद् सन्द और प्रजानति देवता है । 'पूर्णा दुर्वि-' इस मञ्जूके प्रात्माना ऋषि, अनुहार हत्य एवं अपि देवता है। 'पुरुष्' इस मन्त्रके प्रवन ऋषि, अगरी कुद 🚃 देवस 📰 है ।

इस रोतिसे वदा-वद मन्त्रोंके उच्चारणके समय ऋषि, सन्द एवं देवतका स्माप्त करना चाहिये। जप-कालमें मन्त्रोकी अवत्रय पूर्व करने खहिये। निर्देष्ट संख्याके बिना 🚃 🚃 🚃 🔛 होता । अयुत्त-होम, रूक्ष-होम और कोटि-होक्के जिन ऋतिक साहकोश्रा करण किया जाय, वे प्राप्त 🌃 वस्त-अरेधाहित हो । ऋतियोको संख्या अभीष्ट होमानुसार करनी चाहिये। प्रयमपर्यक उनकी प्रशासर एवं दक्षिण काल कर उन्हें संतुष्ट करना पाहिये। इस प्रकार विविज्ञांक कम-कर्म करनेवाला व्यक्ति वसु, आदित्य और मन्द्रक्रकोके द्वारा दिखल्केकमे पुजित होता है तथा 📖

📟 कामको विन्त अर्चात् निकास-मावपूर्वक विदार्यण-बुद्धिसे लगा-होन बच्छा 🗓 वह अपने अभीहको बाह कर परावपट प्राप्त कर लेखा है । युवाधों पुत्र, धनाधी धन, भागांधी कर्ज और कुमारी सूच चरिको प्राप्त करही है। एउपश्रह एउप क्या स्थापन 🚃 📰 अतुरु ऐक्स प्राप्त स्थाप है। जो व्यक्ति निवासमध्यपूर्वक कोटि-होम करता है, वह

अर्थ निकास कर अन्तर्मे योक 📖 करता है। जो

The second secon कोट-संग्य राज्य-केयारे 👎 पुत्रा सेन्न है। अस्तिय बाहाणीके 🚃 अध्यर्थ भी होता यन समता है : आसनोमें कुशासन

ा प्राप्त गया है।

देवता प्रकारमञ्जर स्थित रहते हैं और बास 🗎 करते हैं. अवः पद्मासनस्य क्षेत्रस्य है अर्थना करनी चाहिये। देवो धाला केव्यन् करेवा' इस न्यापके अनुसार पद्मासनस्य देवलाओस्य अर्थन प्रधानस्थ होकर हो करना बाहिये : यदि ऐसा न किया नाव को सम्पूर्ण 🚃 📰 हरण 📺 लेती है।

(49年4月 (4年)

--OPO---

।। जन्मन भाग सम्पूर्ण ॥



# मध्यमपर्व (क्रिरीय भाग)

# क्सादि कमेकि मण्डल-निर्धाणका विधान तथा क्रीमूमदि परिधाने दर्शनका फल

सूर्विन कहा — कहानाण ! अन मैं आपलोगेंसे पुराणोमें संगित मण्डल-तियांजने विकाय सहिता नहें । पित्र उसे तयत सण्डलमा पान निकास नहें । पित्र उसे तयत सण्डलमा पान निकास नहें । पित्र उसे तयत सण्डलमा पान निकास नहें । पित्र उसे तयता सोने विधि-विहित त्यता अति के निकास प्रदर्शित नहें । पानमु, गींधे, स्था पान और कृष्ण अविदेश अनुक्रमारे निर्देश करें । पित्र सीमा-रेनाको एक अनुत्र के जा उन-उन अर्थ-भागोंसे युक्त करें । पित्र सीमा-रेनाको एक अनुत्र के जा उन-उन अर्थ-भागोंसे युक्त करें । पित्र सीमा-रेनाको एक अनुत्र के जा उन-उन अर्थ-भागोंसे युक्त करें । पित्र सीमा-रेनाको एक अनुत्र के जा उन-उन अर्थ-भागोंसे युक्त करें । पित्र सीमा-रेनाको प्रदेश करें । प्रतिवाम सीमा प्रतिवाम करें । प्रतिवाम सम्पर्धन और प्रतिवाम सिर्म प्रतिवाम सिर्म प्रतिवाम सिर्म प्रतिवाम सिर्म प्रतिवाम सिर्म प्रतिवाम सीमा प्रतिवाम है । यह स्था (पानी-विकास) । प्रतिवाम सीमा और गोपनीय है । यह स्था (पानी-विकास) । प्रतिवीम सीमा सीमा और विमान निवास के लिए सिर्म सीमा-भेदने तीर प्रवास का

करत है। एसका दर्शन सेकड़ों जनोंने किये क्ये प्रयोगने नष्ट करत है। मकूर, कृषण, सिंह, क्रील और व्यक्ति सरमंत्र क्ये, ऐसा और कृषणर मृत्यने की देख से तो उसको कारकार क्ये, ऐसा करनेतं दर्शकरे सेकड़ो कृषण्यकातित पाप नष्ट तो आते हैं। उनके केवलांत कीर्ति विस्तर्ता लेकर दर्शनसे चन तथा जायु की । क्या कारका, कृषण सदारिक्वत, सिंह दुर्गाका, कींक नरावकात, आध तिपुस्तुन्दरी-स्वस्तीका स्त्रण है। असे दर्शविदेन कृषण दर्शन क्या जाय तो पहरोग किर असे दर्शित सर्वतिक्षा स्वस्त्र की प्रकारको पुष्टि प्रदान करता है। सर्वातिकव्यम् इंध्राने साधावीके विस्ते तियो उसकार प्रकारा है। सर्वातिकव्यम् इंध्राने साधावीके विस्ते तियो उसकार प्रकारा है। सर्वातिकव्यम् इंध्राने साधावीके विस्ते तियो उसकार प्रकारा की स्वातिकव्यम् इंध्राने साधावीके विस्ते की उसकार प्रकारा की स्वातिकव्यम् इंध्राने साधावीके विस्ते की स्वातिवात्र स्वातिक तियो उसकार प्रकारा कीर्य क्या है और स्वान्तिवात्र स्थानीके तत्त्वन्ति स्थानीके तत्त्वन्ति स्थानीके तत्त्वन्तत्त्व

(अप्याम १-१)

### पतादि कर्ममें दक्षिणाका भाषात्व, विधिन्न कर्मोंने पारित्रपिक और कलात-स्थापनका वर्णन

सुतवी बोले—प्रकृषो ! वर्ष धीक्षणातीहर एवं परिवाणिकारेन व्यक्ति कहाँ करना प्राहिते । ऐसा यह कभी सफल व्यक्ति होता । जिस प्रकृष्ट को व्यक्तिये । संस्कृष्टित यह करनेकाले क्यंतिः नरकारे जाते हैं । क्यंक्ष्म, होता, क्या तका जितने को सहयोगी हो, वे सभी विधिता हैं ।

अस्ती वर्धरों (क्षीकृषों) का एक पण होता है। सोलह पणीका एक पुरण बात जाता है, सत्त पुरणोकी एक स्वर्धपुंड तथा भाउ एकस्पृत्रभोकी एक सर्वमुद्ध कही नहीं है, जो यह आदिमें दक्षिणा दी जाती है। यह उच्च-वेको प्रतिका-कको दो सर्वमुद्धार्थ, कूपोस्सर्वमें आधी सर्वमुद्ध (निक्क), बुलसी एवं आमल्डकी-यागमें एक सर्वमुद्ध (निक्क) दक्षिणा-कको है। एक-होममें यह सर्व-मुद्ध, कोटि-होग.  भूमि-दान भी विहित है। अन्यान्य दानों एकं बड़ोमें दक्षिणा एकं इटलेंकर अस्त्रम-अस्त्रम विद्यान है। विद्यालय अनुसार विद्यान देनेमें असमर्थ होनेपर वड़-कार्यकी मिर्द्यिक दिन्ये देव-प्रतिमा, पुस्तक, रहा, गाय, भान्य, तिस्त, ब्राह्मा फरा एवं पुष्प आदि भी दिये जा सकते हैं। सूतकी पुनः कोरो— बहुनों । अस मैं पूर्णपालक सकत्य कारकता है। उसे सुने। काम्य-होनमें हा। मुहिकं पूर्णपालक काम्य-वत्तकता है। अस मुद्रो अस्तर्य एक मुक्तिका करते हैं। ब्राह्मा पूर्णपालक कर पुर्वा प्रतिमा पुरा प्रतिमा करे।

कुम्ब और कुद्धमलेके निर्माणके व्यक्तिक इस इस्ता ₿—प्रौकोर पुरुषके IIII तैप्तांद, सर्वलेपहरूकके लिये छ रीपा, महासिक्षासम्बद्धे लिये लिये हेप्य, सहस्वत्र नवा संस्पृष्ट-कुम्बके लिये एक बैल तथा चार रीमा, महाकुम्बके निर्माणने दिगुणित सर्गायद, वृतकृष्यके रित्ने एक रीधा, पद्मकृष्यके 🔤 कृषभ, अर्थवान-कृष्णि शिथे एक देख, चेनिकृष्णके निर्माणने 🚃 बेसु तथा चार मान्य कर्ण, रीयकाने सक रदायनमें एक 🚃 सर्ग, इड्रियम्बन्स्यने 🚃 रहे 🚃 परिजयिक देन चाहिये। सम्बन्धम्ब-(अर्थ गोरमका:-) निर्माताको दस क्याट (एक क्याट क्याक्ट असमे कीडी), इसके म्ब कृष्यके निर्माणने एक क्षात्रम्म (महोकः चौच्यां नाग), स्वत हाशके कृष्य-निर्माणमे एक पण, बृहत्कृषके निर्माणने अरिदिन दो पण, गृष्ठ-निर्भाणने औरदिन एक रही सोना, बोह बनवाना हो हो आधा पन, रंगसे रेशनेने एक पन, नृत्योंक र्वेपणमें 🚃 डेड पण पारिश्रमिक देना खड़िये। इसी तरह पुषक क्रमान अनेक रीतिसे पारिक्रिकतार क्रिका किया क्रमा है। यदि नापित सिरसे मुख्यन करे तो उसे दस काफिको देने। प्राष्ट्रिये । कियोंके नवा आदिके रक्षणे क्रिये 📰 साथ पण भी देता चाहिये। भागके रोपणमे एक दिसका एक पण 

पारित्रामिक होता है। रैस्ट और शारसं प्रणित यसकी पुरवर्गि सिन्दे हुन क्षा क्षा कि देन प्राहित । इसमें ससकी रंगाकि अनुसार कुक कृष्टि में में मा सकती है। मिट्टीके चोरनेमें, कुरास्त पर्यानेमें, इश्चु-देव्यके निर्धादन तथा सहस्र पुष्प-प्रधानमें दस-दम काकियों, पारित्रामिक देना चाहिते। चोटी पारम कसनेमें एक काकियों, बड़ी पारम मनानेमें दो चाहिते। पार्टित । इन दोनोके अध्यक्ते निर्दाबत थी आधार प्रनामा सामाना है।

क्षुत्रकी पुषः बोले---आहचो । जब मैं करव्हीके विकास विकास कर कार्य करता है, जिसका उपयोग करनेसे नकुरू केल है और जबमें सिद्धि बात होती है। कराएमें स्वत सङ्घ अञ्चल पाँच स्वतः होते हैं । करणहार्थे केवाल करू भरतेसे ही रिकट नक केले, इसमें अकत और पृष्टोंने देवताओंका अस्याहन कर उनका पुजन भी करना चाहिये ---ऐसा न करनेसे - विकास मि जाता है। यह, सम्बद्ध धन-मुक्त और विरुच-कुश्चेर **व्यवस्थित करणा**चे क्रायर रहे<sup>2</sup>। करणा स्रोता, 🚃 तीव या पुरेस्काके बनाये जाते 🛊 । कलदाका निर्माण अनुभार करें। समाध अभेद, भिरिकार, नकी।, सुन्दर एवं कराने पृरित होना बाहिये। कराजके निर्माणके विषयमें भी निश्चित प्रमाण बतरूम् 📖 है। 🔤 चनके 📖 हुआ बत्तका उपमृतः नहीं मानः गया है। जहाँ देवताओंका आवाहन-पुत्रम किया जाय, उन्होंको श्रीनिधर्म कंत्रप्राकी कार्या करनी चाहिये । व्यक्तिकम करनेपर फरावा अपहरूप राजार कर लेते हैं। 📖 बनावर 📖 उत्पर निर्देश वरुमादि देवताअंत्रेका आसार करके उत्तर पूजन करना चाहिये।

(अञ्चाव ३—५)

१-भविष्णपुरम्भः 🖿 अस्तान हिन्दा प्रदेश को कारावा है। देवल कौदित्य अर्थलाक और सुप्रविधित 🖥 🛗 पूर्वा पूर्व प्रदेश एवं प्रतिक्रियक परा बराता है। माना 🛗 पुरस्क कोदि हामा कोदि 🛗 🛗 स्वय है। मोनाविधि प्रकारित स्वर्धावर और रामराक्रा पुरस्क प्रदेश किया है। मोनाविधि प्रकारित स्वर्धावर और रामराक्रा पुरस्क प्रदेश के अपूर्ण के स्वर्ध है।

२-प्रथमित सम्माने अप, मेचल, 📖 📰 📰 अपूर्ण (बृत्स)—ये 🚃 को हो है।

स्कर्म बोले-न्यहानो ! बन मै (विन्य प्रवस्के) मासीका वर्णन करता हैं। मास चार प्रकारके होते हैं— चान्द्र, सीर, सायन तथा नाक्षत्र । साम जीतपदासे लेकन ((())) तकका मारा चान्द्र-भारा कहा जाता है। सूर्वकी एक संवधनियो दूसरी संख्यन्तिमें प्रवेश करनेका समय और-कार कहलाता है। पुरे तीस दिनोंकर सत्वन-मास दोखा है। अधिनीसे 📰 रेवतीपर्यंत्र सक्षत्र-मास होता है । सुवेदिक्से दूसरे सुवेदव्यक जी दिन होता है, उसे सावन-दिन बहते हैं। एक लिकिये यन्त्रमा जिल्ला मोग करता है, यह चन्द्र-दिवस कहत्त्रला है। राधिके तीसमें भागको सौर-दिन करते है। दिन-राजको विकासर अहोराज होता है। बिजरी भी विभिन्नो हेकर तीय दिन 📺 स्त्रमेकासी विधितकामा 🚃 मानग-मास होता है। अप्रश्नात तथा मनोक्सनमें, त्याके कर-म्हणने. न्यवहारमें, 💹 🚃 🎆 गणन 🚟 स्वयन-वास प्राद्य 🕯 । सीर-मास विवाहादि-संकार, यक्त-तर 🌉 🚚 📖 सामदिने पदा है। सारान्यस 🚾, 🚃 🚃 🚃 बार्वे आदिके रित्ये उपकृतः है । 🚾 आहे. मारोमें विधिको रेमार को नार्य विधित है, वे बाहर-भारते करने बाविये। सोच या विद्यालीके कार्य अपन्य पूर्णिन होती है, इससे उपलिश्त जास केंद्र कहा जात है। केंद्र आदि जो बाह्य चानू-याम है, ने तद्य-तत् नश्चाके चेनके तत्-तत् भागमाठे हेते है।

क्रिल मधीनेमें चूर्निकार कोन न हो, वह प्रधा, परा आदिके रिज्ये अहितकर होता है । सुर्व और चन्द्रमा दोनों निरय रिविका योग करने हैं। जिन तीस दिनोंमें एंक्रमण न हो, वह महिन्स्त, मसमारा या अधिक 📖 (पुरुवोत्तम मास) कारणन है, 🔤 पूर्वकी कोई 📟 नहीं होती। ≕ अवर्ह 🚟 (क्लेस 🌉 के बाद 📺 मास आता है। 🚃 महोनेने राजी व्याप्त प्रेष-क्रियाई 📖 सचिव्यन-विरुपई की का संस्कृति है। 📺 पत्र, निस्कृतदि स्वर्ध भहीं होते। इसमें देव-दर्शन, आदि, सीमसोनपन, क्युकारित, पंतवन और पुर 📰 मान्य मुख-दर्शन किया जा राज्यका है। इसी तरह शुक्रमकाये भी ये क्षित्याएँ की उन व्यवस 🌃 राज्यपिकेस ची पलम्बसमें 📕 सकता है। अतास्थ 🚃 प्रकर्ण, उपनयन, मन्त्रेपसना, कुल-मुद्द-निर्माण, मुद्द-स्थेता, मी अवस्थानस्य प्रवेश, सीर्थ-पात्र, अधिकेन-कर्म, क्वोत्सर्ग, विस्तानम्य तथा यत्र-पागति---इन सक्का मरुमेश्वने 📟 है। 🔛 तरह इक्रमरा एवं 🔤 वार्थकर और कारणकार्थ 🖫 प्रत्यक अनेक है। गुरुक आहा एवं सुर्वक सिंह र्जांजने रिश्वत होनेपर ऑक्स मासमे जो निविद्ध कर्म हैं, उन्हें 🌉 करक 🐃 📹 छोड़ने सुर्वके आनेपर भगवान् प्रयान करते है 🔤 🔤 तृत्वारमिन्ने आनेपर निरामा स्थान करते हैं। (अध्यान ६)

# काल-विभाग, तिथि-निर्मंथ एवं वर्गधरके 🔤

पर्यो तक विकियोंके पुण्यप्रद कृत्व

काल अमूर्तकपर्ने एक तथा **व्यास्त्रित है।** अन्यतम सरकप हैं तथापि उद्योषयोक भेदने वह टीर्व, सब्दु आदि अनेक रूपोर्ने विभक्त है। तिथि, नवात, वस उच्च राजिक सम्बन्ध आदि यो कुछ है, वे सभी कालके ही अनु है और पव, पास आदि रूपसे वर्षांगरोंने भी आते-आते रहते हैं तथा वे ही सब कर्मोंक साधन है। सम्बद्ध किना कोई भी रवत-अरूपसे कर्म अस्त्रेले सक्त नहीं। धर्म या अधर्मका मुख्य द्वार काल ही है। आप आदि काल-विशेषेने निविद्ध और विहित्त कर्म बताये गये हैं। विहित्त कर्मोंका फलन करनेकाला स्वर्ग प्राप्त करता है और विहित्तका साधार निविद्ध कर्म करनेसे अस्तेपति प्राप्त करता है। पूर्वाहरूपयिने साधी वैदिक कियाएँ करने चाहिये। एकोट्टि अट मध्यक्ष्यक्षिमी तिथिमें और पार्वण-श्राद्ध अस्तरह-व्यक्तिने साधी करना चाहिये। विद्याद्ध आदि

मातःवस्त्रमं करने चाहिये। बहाजाने देवताओंके लिये तिथियोकि 📖 पूर्वक्रमाल दिश्व 🛮 और विश्ववेको 🚃 । पर्वाहरी देवताओका अर्चन करना व्यक्ति ।

तिनियाँ तीन प्रकारकी होती हैं — खर्जा, दर्ज और विका। लंबित होनेवाली कर्या, निविद्यदि हर्प रूथ तिविद्यप्ति हिंखा कही आर्थ है । इतमें कर्जा और दर्ज आनेकी लेनी चाहिये और हिस्स (अप-रिषि) पूर्वमें लेनी च्यांत्रिये : शुक्त पश्चमें वह सेनी

चाहिये और कृष्ण पश्चमें पूर्ण । यनकार सुर्थ फिस विकास प्राप्त कर उदिभ होते हैं, यह लिपि सान-दान आदि कुरवेंने उत्था है : यदि अल-समयमें मनकन् सुर्व दस घटोपर्वक रहते हैं से कह

📖 उत-दिन समझनी चाहिये । शुक्त 🛍 पाला कुल्ल पक्षमें सर्वा क दर्ज लिक्कि अस्तपर्वन्त सूर्व से तो विज्ञवार्वने बड़ी लिपि पादा है । दो दिनमें मध्यद्वकारनम्बदिनी लिपि होनेकर

असार्यन कुल्याल प्रथम लिपि पाद व्यवस विका है।

दितीया हुनीयासे तथा चतुर्थी प्रकृतीसे बुक्त हों के ये लिक्नि पुरवास्त साथ गयो में और इसके जिल्होंस होनेक पुरवास करत करती है। यही पहामीने एवं अहमी असमीने किन्द्र हो उच्छ दक्तनी

से एकदाती, प्रकेरातीसे कर्तृती और कर्तृतीसे अवस्थान बिद्ध हो तो उनमें उपचात लेंगी करन चाहिये, अन्यना का

कलत्र और धनका श्राप्त होशा है। यूत-क्वांदिने रहित क्वांत-🖿 गर्शने अधिकार नहीं है । 🚾 🚟 📖 📖 🛒 होते हैं, यह तिथि काल, अध्ययन और राज्येर रिक्ने 🎹

सम्बन्धे चाहिये । कृत्य पक्षमें किस तिर्विके सूर्व अस्त होते हैं, बढ़ कान, दान अवदि कार्योमे विरादेके हिन्दे उत्तव भागी जाती है ।

पुरुषी क्यूने है—अनुरुषे ( min ill myselige) भारताची गयी बेहा निविधीका कर्णन करता है। आखिन, कार्तिक, माथ और 📰 इन महीनोमें कान, दान और मगवान

विक स्था विकास पूजन हात पूज हाताला होता है। अतिसदा अप्रिदेवका 🚃 और 🚃 करनेसे 🚃 🚃 वान्य और ईप्सित धन 💷 होते हैं। और प्रकृत पक्रमें दिवीना

तिथि बृहस्पतिकासे युक्त 🎚 तो उस निकिये विकिन्नीक भगवान् अभिदेवका पूजन और नत्त्वाद करनेसे हाँचात देवर्ष

🚃 होता है। निधुन (आबाइ) और वर्क (शायन) 🚃 सूर्यमे जो 🔚 अन्ये, उसमे उपचर करके चनकन् विष्णुका पूजन करनेवाली की कभी विषया नहीं होती।

अञ्चन्द्र-क्षयन द्वितीया (अञ्चन पासके कृतम पक्षयर द्वितीया विकि)को जन्म, कुल, 🚃 तक विविध नैवेधोसे मगवान् तक्ष्मीनराज्यको एक करनी कहिये। (इस वतसे पति-

कार्कक चरनार विच्छेन नहीं होता () वैज्ञास पृक्त पक्षकी तक्षीकार्ये राजानीर्थे स्थान करनेकारण सम्ब क्योंसे मुक्त हो जाता

है। कैशास 📖 उत्तेष साती नवत और मानको तृतीया वेक्कियोज्या हो सन्त आधिन-तुलीया मुक्लदिस्से युक्त हो 🖩 अपने को 📕 दान दिना चाना है, 📖 अन्तर्भ होता है।

विक्रोपरूपसे इनमें सम्बन्ध हैं। मोहक देनेसे अधिक रूप

केल है रूपा पुढ़ और कर्तृरते युक्त बाल्यान करनेवालेकी विद्वार पुरुष अधिक प्रशंक काले हैं, वह प्रमुख बहान्त्रेकते पुर्वित होता है। वर्षित मुख्यार और सम्बन्धे मुक्त तुलीक हो हो

काची बक्रकपुरू कर्मानी कादेवलाडी उपासना करनेसे सन्दर्भ पावस मुक्ति मिलता है। प्रश्लपदार्थ सुद्धा चतुर्थी जिल्लाको पुरस्त है। कार्तिक और यह प्रस्तेक प्रत्योगे

🔤 🔤 😇 उपकल करनेसे अनन्त कल 🚥 होता है।

📠, बच, तप, 📖, उपबास और ऋड, धरमेरी अमन्त पाल मिन्द्र है। चतुर्वनि सम्पूर्ण विकर्ण 🚃 तथा 🚃 पूर्विक लिये भागवान् क्लेक्स्बी पृक्ष बीटम आदिसे महिन्द्र्येक

कारणी व्यक्तिये ।

**व्यास समस्ये सुन पदार्थी पहार्थिने हार-देशके दोनो** और गोमको अलोको स्थानकर ५७, दक्षे, सिंदर, चन्दर, गुक्तकर 🕶 मुख्यिक अमोसे नाग्रेका पूजन तरना चाहिये।

नामेका पूजन करनेकरनेके कुरूमें निर्मयक रहती है एवं प्राचीकी रका 🔣 होती है। बावण कृष्ण पश्चमीको धरके अधिको अधिक परोसे men देवीकी पूजा करनेसे कथी सर्वजन नहीं होता । महत्त्वदक्षी बहीमें ब्रान, दान आदि करनेसे अनन्त पूरूप होता है। विवासनो ! मान्य और कार्तिककी पष्टीमें

🚃 🚃 इहरनेक और फ्रत्सेकमें असीन 🔛 प्राप्त होती है। शुक्र पक्रको सहस्रोमें बदि संहतान्ति यहे तो उसका 📰

वक्रमण व स्वैतिक होती है। भद्रपदकी सहस्री अपराजिता है। 🚃 व कुम्म पक्की वही 🔳 सहमी रविकासी युक्त हो

🗎 का व्यवस्था पानमा विश्वि एक-पैकेकी मृद्धि करनेवारने और महान् पुरुषदानिको है।

व्यक्ति एवं कर्तिक पासके 🚃 पराकी अष्टमीमें

अहादरामुख्यक पूजन करना व्यक्तिये। 🚃 इसी प्रमण मसके रहर पश्ची अहंगीने चण्डिकादेखेका प्रतःकार साम करके अस्पना भक्तिभूर्वक पुजर कर स्वित्रे अधिकेक साम वाहिये। चैत्र मासके स्ता पहली आहमीने आहोक-कृषको मुज्यको भगवती देवीका अर्थन करको समूर्ण क्षेश्व निवृत्त हो जारी है। धारण मासमें अनवा सिंह-संक्रालिये खेडिकीक्ट शहमी हो तो उसकी अस्पन्त प्रशंका की नही है। प्रक्रिकालकी नवर्गामें 🚃 करने चहिने। 🗫 📖 पश्चमी दसमीको सुद्ध आकरपूर्वक स्ट्रोक्टरे स्क्रालेको सक्ते है। क्येंड मासके दुक्क पश्चकी दक्षणी क्यूब्टरकर क्याराजी है। व्याप्त हक्षण विकास और व्याप्त महापुरुषा कवलाती है।

एकारपरि-मार कार्यको सम्बद्ध था। शह को उनके हैं। इस अतमे दशमीको विवास 📖 एक 🛊 का 🔤 करन पादिये । दूसरे दिन एक्क्ट्रावेने उनकार कर कुट्लोने फाला करने चाहिये। हादशी सिधि हादक क्लेक हरन करते है। बैह मारके पुता पश्चमी स्थोदयोगे अनेक कृष्णी, सम्बद्धिकेरे कामदेवकी पूजा करे। हमें अन्तर-प्रयोदको पहा 🚃 🕼 🞹 मांशके कृष्ण पक्षपी अष्ट्रपी प्रतिकार या 🚃 नश्चमे पुरा हो से पहाने कान करनेने सैकड़ो सुनंतरपूरत कर बार होता है। इसे मासके कृष्ण व्यक्ति प्रचेदती चीद शनिकार या प्रात्तिकाले कुछ को तो 👊 महाभारकी-कर्व कटरलता है। इसमें किया गया कार्य, यून एवं बाद, अध्यय होता है। केन पासके रहत पथाओं कर्त्रहरू राज्यभेकिन पास जाती है। इस दिन धतुरेकी आधी व्यवदेशका अर्थन करता वाहिये, इससे उत्तम स्थान अब होता है। अनुसा-वर्षकीका अत सम्पूर्ण पार्वोका नाम करनेवारम है। इसे पतिस्कृषेक

🚃 मनुष्य अभन्त सूच 🚃 बतवा है। प्रेत-चतुर्दरहै (का-कहर्दशी) को तकसी बहापोको पोजन और दान देनेसे यकुण यमकोकमे नहीं अतः । परलपुर मासके कृष्ण पश्चकी कहरूँची कमसे अंद वह सम्दर्ग व्यक्ति करनेकाली है। इस दिन करो पहरोमें बान बरके चीत्रमूर्वक दिक्षणीकी जाराकत करनी पातिये। केंद्र कारकी पूर्विक विका ग्रहक तक गुरुवारसे वृक्त हो तो वह मार्थियो कही कही है। यह अनल एक प्रदान करनेवाली है। इसी जन्मर विश्वपर्याद नक्षणमें पुरू वैश्वाची, महाज्येही आदि बाद पूर्विकर्ष होते हैं। इसमें 🔤 गये कान, दान, उप, निषम आहे. मरवर्ण 🚃 📰 🖥 और प्राप्तेके पितन संसुप्त · विम्मुलेकको सम करते हैं। संद्रारमें 🚃 🚾 🔛 विदेश पुरुष प्रदान करता 🕯 । 📖 प्रकार एक्टबार-क्षेत्रचे महत्त्वेत्री, पुरुषेत्रच-क्षेत्रमे महत्त्वेत्री, स्क्राप्त-क्षेत्रमें महत्त्वको, बेस्ट्रापी महास्त्रवाणी, बर्टीका क्षेत्रमें नक्षांच्यां, पुच्चर 📖 करचकुम्बले सहस्वतिकी, अधीधनने तच्च महत्येथे, मचनमें महत्यार्थ तथा प्राच्यालाको पुर्विका लिखा कल देनेवाली है। हत 🚃 🔳 🗷 भूष्यञ्चल कर्म किये जाते हैं, ये अक्षम हो 🖚 है। 📟 पूर्णन कौनुद्री 📖 🚾 है, इसमें क्योदन-करने विविद्यंत हाता पुत्र करनी वाहिये। प्रत्येक जामकामाओं तर्पण और आद्धार्थ्य अवस्थ भरतः व्यक्ति । व्यक्ति कराने कृत्या पश्चारी अधायस्ताने प्रदोक्ते 🚃 संबर्धांचर समिति पूजन 🚃 🔤 ब्रोतिके रिजे करन काहिये एवं नदीतीर, पर्वत, गोह, वृक्षमूर्व, वीवक, अपने वर्ग और चरवरने धेरीको समान वाहिने। (अभाग ७-८)

## गोत्र-प्रका आदिके अनकी

सुराजी काहते हैं—अक्टूबरे । गोत-जनस्की परम्बदको - पौकुन्त, कास, कारकबन, अगस्थ आदि अनेक पोत्रप्रवर्तक जानना अस्वन्त आवत्रयक होता है, इसरिंग्मे अपने-अपने चोक अही है। चोडोमें एक, दो, तीन, पाँच आदि प्रका होते हैं। मा प्रवरको पिता, आचार्य राजा प्रास्तद्वारा चानक काहिने । 🚃 गोत्रये विकासीर सम्बन्धीक निवेच है । अपने गोत-प्रवरको जले बिना किया गया कर्म विक्तित करुदावी - बोत-प्रकादिका क्रम दक्काकरोसे कर देना काहिये।<sup>5</sup> होता है। कत्रयम, जीसह, | अधिकार, आहेरस, प्रकार,

कसक्ते देख कव तो सारा वगत् महामृति कर्यपसे

१-गोव- विकासका निवास करण किया किया किया है। परस्कृतको अध्यक्ष १९५-२०५ सकते विकास वा विषय 🚛 है 📖 सन्दर्शको महेका कर 🔛 🚃 भी प्रकार 📖 है।

है, उन्हें अपने पिक्कवीसे ऋत कर केन्स चाहिये। यदि उन्हें - तमकार ऋकानुस्कर कर्य करना चाहिये। (अध्याय ९)

असम हुआ है। अतः जिन्हे अपने योग और प्रथमका प्राप्त नहीं । मासून्य न हो तो सरकंको काश्यप पोजीय मानकर उनका प्रयर

# वास्तु-पण्डलके निर्माण एवं वास्तु-पूजनकी संक्षित्र विकि?

स्तापी काही है—बाहाने ! अब मै वासु-पन्यतका संकित वर्णन कर च्या है। पहले धूमियर अञ्चलेक स्वा करके भूमिकी परीक्षा कर है। हट्यका उक्तम मूमिक मध्यमें वास्-मण्डलका निर्माण को । अस्-मण्डलके देवता पैतासीस है, उनके नाथ इस 🚃 है—(१) शिको, (२) पर्वन्य, (१) जयन्त, (४) कुकियानुष, (६) सुर्थ, (६) सत्थ, (৬) কুল, (৫) জাকাল, (**१) কনু,** (২০) কুল, (११) फिलम, (१२) युक्त, (१३) यम, (१४) यमार्थ, (१५) मृगराज, (१६) मृग, (१७) विज्ञान (६८) चैवारिक, (६५) सुर्वेच, (२+) पूज्यस्त, (२१) वश्या, (२२) मसूर, (२३) पत्तु, (२४) पत्त, (२५) रोग, (२६) आहे. (२७) मोश, (२८) धरनाह, (२६) सोम, (३०) सर्प, (३१) अधिक, (३२) दिवि; (३३) अप्, (३४) साचित्र, (३५) वाप, (३६) वह, (३७) अर्थम, (३८) समित्र, (३९) विकासन्, (४०) विमुधारिय, (४९) विम, (४२)

(४३) पृथ्वीधर, (४८) 🚃 📹 (४५) सहस्र

इन दिवताओंके साथ ही वास्तु-मण्डलके बाहर ईसानकोको करकी, अधिकोको विदास, नैर्मस्यकोको पुतना क्ष्मा वायव्यक्षेत्रमें व्यवपन्नतीकी स्थापना करनी चाहिये। क्ष्मारको पूर्व दिसाने सहन्द, दक्षिणमे अर्थना, पश्चिमने कृपक 🚃 🌃 विकिषक्ति 🚃 करनी चाहिये । इस क्यार वास्तु-सन्दर्भने 🚃 देखे-देवताओंकी स्वापना होती है। इन 📟 अरुग-अरुग क्योंसे पुत्रन करना चाहिये। मन्द्रतन्त्रे स्थान ही पूर्वादि 📰 विशाओं में दस दिक्पाल देवसाओं—इन्द्र, आति, यस, निर्द्रति, वहण, क्यु, सुनेर, ईकान, बद्धा तथा 🚃 भी प्रभाववान पूजा पर उन्हें बांति (केवेक) स्थिदित 🔤 शाहिषे। वास्तु-मण्डलको ऐसाएँ तथा व्यवस्थ कलल त्यल वर्णमे अनुराहत करना पारिये । जिल्ही अस्टि पैत्यलीम देवताओंके क्रोहकोको एलाहि **ार्था** अनुरक्षिण करना चाहिये । गृह, देशपन्दिर, महाकृप अवदिके निर्माणके तथा देव-प्रक्रिष्ठा आदिने वास्त्-नपद्धकता निर्माणकर बारतुमानालस्य देवताओकः आवाहनकर उनका पूजन असरि करना चाहिये। पवित्र स्थानपर लियो-पूर्ती देव

१-राम्के लिपे एकमा अस्ता है फान्यान्यपूर्व क्षेत्र-हैन है 🔠 कानकार सुबीर कर्म के प्रत्यक्षण संस्थान फान्य, नीवराज-- रूपा तथा प्राथमिक करते, विस्त वर्ष-- प्राथके करते प्राप्त व्यवस्थित प्राप्त को है। प्रार्शने प्राप्त कीए संन्यासी अपनेको अंगुल - गोरीम ही मानते हैं। अनीन परंगको अनुसार मेदानामाने बैदिक प्रमात, सून, सही, गोव और प्रमातन प्राप आसारका म । यह जिसम आकारपन मुहसूको हो विदेश है।

र-किस पुनियर समुख्यदि करी निवास 🛗 है, उसे बाबू बाब बाक है। इसके दूस वैशंकासद, बाब, बास, दूर, दूरी आहे; 📖 घेट 🕯 । इंसरर कानुरक्कारका, समाज्ञाकानुरका, कुलबेदिक विस्त्यता, कुलकपुत्ता, हुक्कारकाहा, तथा वर्षिल-वाकुल अंदि कुलोंने पूर्व विचार किया गया है। प्राणीम मत्त्व, अपि तथा विक्युपानेकपुराको भी यह स्वत्वपुर्व किया अन्य है। 'कत्याक' के टेकाइकुमे भी जात्-पानादिके विषयमें सामये संस्तित्त की पर्य है। कालूके व्यक्तिर्वको विषयमें महत्वपुरस्ते काल है कि आवत्यसमुक्ते काले समय मानवन् प्रांत्रहेत लाहाइसे को ओर्डिन्दु गिरे उनसे एक अनंबर आकृतिकार 📷 बाद हुन्छ । यह 🐯 विकेशक प्रकृत करनेके रिप्से उद्यस हुआ, सब दीवर उत्तरि देवताओंने उसे पृथ्वीया मुसावत असुदेवता (कार्युक्त) के काले प्रतिक्षित विका और उसके इसीटों सभी देवताओंने बाम किया । इसीटिये का करहेरेका सामान । विकासी रहे पूर्वित हेर्नेका था के अंद्रेन केंद्रेस । कार्युदेककरी पूजके रिजे वासुपतिका तथा वासुकार अवस्थ 📖 है। बार्म्फ 📖 ४९ में रेकर एक करक करका होता है। किम-किम अवक्रोपर क्रिस-क्रिस वास्त्रप्रदेश दिलीयकर उनमें देवताओंका अवाहत, स्वयन एवं पूजन किया जाता है। भीसठ पटायक तथ इकाली पदासक कालुपाओं पूजनकी परच्या विशेषकासी प्रचलित है। १५ सभी कालुकाको भेदोंने पायः इन्हादि दस दिक्कालेके काम जिससे उर्जाद बैकालेस देखताओंका पुरान किया जाता है उन्ज उन्हें कावासत बांछ प्रदान की वाली है। कार्यकार हमें कार्युकार (कारोलींंं) की पूजकर उसी 🛗 विश्व हमें क्रांच एवं करवालां वार्यन की वाली है। र्सन भन्य अने ८---

तामके प्रमाणकी मूर्णियर पूर्वसे पश्चिम तथा उत्तरसे दक्षिण दस-दस रेकाएँ सीचे। इससे (१०००) व्यक्ति कास्तुव्य-विर्माण होगा। इसी (१०००) १-९ रेकाई भीचनेसे चौसठ पदका वास्तुवक बनता है।

वासुमण्डलमें विन देवताओंका उस्सेका किया गया है, उनका ध्यान और कूपन अलग-अलग मनके किया जाया है। उस्सियत देवताओंकी तृष्टिके लिये विकिक्त अनुसार सामान तथा पूजा करके हया-कार्य सम्बन्न करना चाहिये सामाना प्राह्मोंको सुवर्ण आदि दक्षिणा देवर संतुष्ट करना चाहिये।

सान्-अवादिये एक विस्तृत स्वाद्यके असर्गत वेति श्रीकारकारों समान्यत एक ह्या तथा वातु-वेदीका विधिके अनुसार निर्माण करना वादिये। स्वाद्यकोः इस्तरकारणमें करूक ह्या कर हिल्लामा एक कुन्धकेः सध्यमें विष्णु, ह्या और व्याप स्वदिका तल्द हिल्लामा पूजन करना व्यक्तिये। हाजायांच करके पूजनुद्धि करे। तदनकार वातुपुरुवका ध्यान हा अकार करे — करकुरेकता केत

हाशमें पुरतक, स्वास्तात, काद एवं आध्य-मुद्ध धारत विशे हुए हैं। पितरे और वैधानाते युक्त हैं सात कुदिल बूते सुरोपित हैं। उनका मुख अथवार है। हाथ अनुवर्धक होने हैं। ऐसे कासुर्क्षका विधिके अनुसार पूजाका उन्हें सात कार्ये। 'कासोधाने-' यह धासुदेवसके पूजाका पूका करा

है<sup>7</sup>। पूनाको जितनी सामधी है, उसे बोधनाहारा सुद्ध कर है। आसनको दृद्धि कर गणेश, सूर्य, इन्द्र और आधारशक्तिस्य

पुर्वा 🚃 ब्रह्माका पुत्रन भने। तदनकर 🚃 🚃

१-वेते चतुर्वेते 🔛 कृष्णकावैत्रकेत्राम्

कर्त्वनुक 🔤 पूर्व्य लेकर किन्युक्तप वास्तुनुस्वका स्थान कर उन्हें अवसन, चार्च, अर्च्य, मणुपर्क आदि 🚃 करे और ===== उन्ह्यांग्रेसे ===== पूजा वर्ष ।

विद्यान् व्यक्तकाने वाहिये कि कृष्य और वास्तुनेदीके मध्यमें कलकारी ...... करे । कलकारें पर्यतके शिखर, नवासाला, क्ल्बीक, नदीसंगय, राजद्वार, चौराहे 📖 कुराके कुलको — यह सारा 🚃 विद्यो छोड़े। 🚃 🗎 उसमें (चरिकत), विक्तुशस्त (कृत्य प्रसुप्तके), अपूर्व (आयरम्पी), क्यून (शींत), मारम्ती, चेपक 🚥 उत्पांतकः (कारहो)—हम भगवाधियोको क्रोहे। करियह (मैप)के 🔤 कल्लाके 🚃 परिवेहन की और कराजके मुख्ये प्रध्यकारकपमें प्रह्मपरस्थीकी ज्यापक करे। 🚟 उत्पर विकल, केवपूर, करवारी, दाविम, धारी 🚃 कन्यतः 🔤 । कलास्ये सुकर्णादं प्रस्तान संग्रे । गम्थ-पुरवर्षि पक्रेक्करेरे कलक्का पूजन करे। कल्हामें वरणका अक्टब्र करे । कलक्टबर स्थर्ज करते हुए उसमें समस्त धार्ती, तीची, 🚃 नोर्च का प्रवित्र जरमञ्जूषी आदिक प्रवित्र क्लानी बाज कर, बाज बाज करे। कल्पा-स्वापनके 

व्यक्तिक्षां व्यक्तु-होस करें : वास्तु-हक्तके समय मास्तु-विकाशिको क्ष्मसङ्ग्रह, कुडाराम आदि पृथक्-पृथक् झम्पाः विकाशिको क्ष्मसङ्ग्रह, कुडाराम आदि पृथक्-पृथक् झम्पाः विकाशिको करें । सची देवताओको उन्होंके अनुस्प परस्काः ■ तदान करें । अपनी सामच्यक अनुसार भगा-वन और

कार्युक्तभारतका 🖮 को <sup>३</sup>। भगवान् इंकाले भगवान्

१-वेरी पतुर्पेन 🔤 मुक्ताराजीतर्गम् । पुस्तक प्रधानाम् 🛍 शतान्त्रकारं परम् ॥ विद्यविकारवेरेक पुरित्यपुरतोजीतरम् । वर्षाराज्याने चैता सम्बन्धानसम्बद्धम् (स्थानपूर्व २ । ११ । ११ । ११ ।

१-पूर) भन इस प्रकार है— करोमारे प्रदे वर्गकामन् स्थानेको अन्मीको प्रकार १ पत् स्थाने प्रदे स्थि स्थान प्रदे से स्थानको स्थानको स्थानको

है कार्त्रिय । इस स्वयंक तमें काराय है, इसमा अप पूर्व विद्यास को और इसमें कृति-क्रार्वकारोंने सुनार इस सभी उत्तरकारीके आधि-क्यांक्युक कर दें और भी इस अपने पन-देखांची काराय करते हैं. उत्तर इसे वी व्यंपूर्व कर दें, उत्तर ही इस कार्युक्त का गृज्यें विद्यास कार्यकारी इसके भी-पुक्ति-परिवार-विद्यालेके दिनों कार्यकारकार हो उस्त इसके अधीनक भी, असूबिद सभी बहुबाद स्वीतकेक की कार्यकार करें।

१-मन्यम् स्थानि एव स्थानि महानाज स्थानि सेन्दु-स्तृति एव काल है— निव्युर्विकृषिकृषिकं अधिकं स्थानकः स्थानि अत्रे केन्द्रिकति कृतस्य त स्वोतः पुन्यवेतस्यः कृत्यः सूर्वः कृतिकः अतिरोत्ते स्थानकं स्थानेत्रते स्वीतः व

विष्णुस्तरूपं वास्तोकानिको इस स्तुतिको कहा है। इसका को प्रयम्पूर्वक निरसर बात करता है, उसे बाता प्राप्त में काले है और जो इस्तामरुके मध्य निवास करनेकारे प्रमुखन् अध्युत-विष्णुका घ्यान बाता है, वह कैणको निर्देश करा करा। है। यहकर्मकी पूर्वकर्म आधार्यको प्राप्ता को कथा सुखनं दक्षिणामें दे, अन्य संबाध्योको भी सुकर्ण प्रदम करे। प्राप्तामय और स्विष्ट्रकृत् इक्त करे। आधार्य और बाता कि स्वस्था प्रमुखन्य सरकारको जसको अधिके बाद क्ष्मी हिस्स्वर प्रमुखन्य सुर्वको अध्य प्रदान करे। सहाव्योको बाता रोका व्यास्था वर्ष प्रवेश करे, अनकार ब्राह्मण-भोजन कहारी। चैन, अन्य 5ी कृषणीका असनी प्रक्रिके अनुसार साम्याय वर्ष। पित अपने कथु-कम्पर्वोके साथ साथ प्रोडन करे। उस

■ विशेष्ट पराणींक रुपयोग = करे। इतस्यम, मृत्ये, क्टाइल, अव्या वर्षेक रुपयोग = करे। इतस्यम, मृत्ये, कटाइल, अव्या वपु, भी, गुड़, तेंचा व्यवको साथ वातुलुङ्ग (विश्वीय वींचु), करवेकल, कामिकल एवं तिल और मरिय अवित्ते को पराण को व्याप प्रति ।

(अस्थाम to---१३)

#### कुशक्षिका-विधान 🚃

🚃 🛍 तीन कुछाओंको तर्जनी तथा अनुदेशे प्रध्यक्त

ईशानकोणसे लेकर दक्षिण होते हुए ईफानकोणसक

वलभाकृतिमें मुंबाये तथा उनसे पृतिका वर्माय छो । 📰

# मप्रि-विद्वारतोंके नाम

परिवरतुक-किया है। 'सा बस्तीके:-' (यक्- १६ । १६) इस क्के द्वारा गोमयसे पुणिका इस्तेन्द्रम करे । सदशकार (बीरवी) क्ष्मकोरे को स्थाके हारा) देखाकाक धरे । भूताने परिनादी अंद तीन रेकार्य स्थित। पहली रेका दक्षिणकी अंदेर असलार उत्तरको 💵 नदे । इसके विपर्देश करनेकर अमहाल होता है । इसके कर अबुद्ध क्या अनिकास उन तीनो रेकाओसे निद्दी 📟, इसे उद्धारण कहा 🚃 है। इस समूध 'निकायक्रकार्था' (पञ्' ७ । २३) इत्यदि वजीका mili करे । बाराया कुरायुष्पीयक अथवा पञ्चनक 🛍 पञ्चरतीयक अवन्य प्रकारत्त्वांक जल्ले 🚃 (अधिकार) करे। अवन्तर कर्मसाधनभूत ल्याच्या लार्त अध्या बौतानिका स्थानकर करे 🚟 अपने स्थाने स्थापिश करे । इस क्रियामें 📽 नुकृष्टि ' इस मन्द्रका पाठ करे । 'सत्त्वाद्रवारि ' (पत्र-३५। १९) इस भन्तका उचारण करते हुए लाबी गयी अभिनेते पुर जाग स्वयंत्र 🚃 और पेन्स दे, यह 'सम्बद्धाकि' कही पत्री है। सम्बद्धादिकत प्रहण न करे। 'संसरक्ष-' इस पन्त्रसे दश अधिका आवाहन 💹 । 🚃

परनार्थं वर्गकेतो एक इम्बेटरे हो: । विकार विकार केरो कार विकार है। विकार विकार कार विकार है। विकार कार विकार है। विकार है। विकार है। विकार है पर्याप्त है। विकार है पर्याप्त है। विकार है

रकालको प्र**पृत्विकारिका है जांस रिवेट पर्व्य स** वैकालिक ह

(क्वाक्का २।१२।१५६—१६६)

'बैबानल' (वजु॰ २६।७) इस मन्त्रसे कुण्ड आदिमे अप्ति-स्वापन करे । 'बश्चारिक' इस मन्त्रसे अक्षिकी प्रदर्शका करे तथा अफ़िट्कको नमस्कार करे। अफ़िके टक्षिकमें करण किये गये बहाको कुरुके आसम्बर 'बहुन् कुट व्यक्तिकान्य' भक्षकः बैठावे। उस समय 'ब्रह्म ब्रह्मके-' (क्यू- १३।३) तवा 'क्रेग्डी मेनुल' इन दो मध्येक 📖 करे। 🚃 उत्तरभागमे ज्ञणीता-राजको स्थापित को। 'पूर्व के कार्क-' (यज् २१ । १) इस मन्त्रमे प्रणीत-राज्यो जतसे भा दे। इसके अनुपार कुष्पके जारों और कुदा-परिकारण को और काह (समिष्य), वीहि, अस, शिल, अपूर, मृहसाद, कल, दती, द्य, पनस, मरिकेल, योदक आदि यहा-सम्बन्धी प्रयोग्य पदार्थीको कमात्वार स्थापित करे । विकासमध्याने सम्बद्धीसे बनी सूचा तथा शर्मा, उत्मीरज, चक्कारके आदि भी स्थापित करे । प्रयोक्त-पात्रका स्पर्ध होय-कारको नहीं काना पाहिले । काम-पुरम्भको पञ्चपर्यन्त निवर रसना चाहिने । प्रयोजनको से पविकास क्यांका क्षेत्रकारियाको स्थापन वर्षे । प्रजीतन-पाको जलसे प्रोक्षणी-मात्रमें तीन बार बात हाले। प्रोक्षणी-चवको बावें द्वापाने रक्षका मध्यक तथा अञ्चलके प्रविक्रक करून का 'परिर्म तेन' (ऋ॰ ९ । ८३ । १) इस मनासे तीन का अल हिडके, स्थापित पदार्थीका श्रीकण करे और श्रीकणी-पत्रको प्रणीता-पावके दक्षिण-भागमें प्रधानमान एक है। प्रदेशकाओ-अनार्य 📉 एके। 🚾 📹 क्येक्ट अपूर्णाका निरसन को । इसके बाद पर्वतिकारण को । एक अल्पी हुए आगके अंग्रारेको लेका अञ्चलकारी और 'यहरमालीके कपर प्रमण कराने। इस समय 'कुटाक्रिके' (मकु॰ १४ । २) इस मञ्जूष पात करे । अनगर सुव्यको दाये

इक्नमें अहल कर अद्वीरपर तथाये। सम्पार्जन-कुन्सओसे क्वाको मुससे अक्टपानको ओर सम्मर्थित करे। इसके 📰 प्रचीतके जलसे क्षेत्र बार प्रोक्षण करे । युन: स्थाको उद्यगपर नवने और प्रोक्तमीके उत्तरको ओर 🖿 दे। आज्यपत्रको सामने 📖 है । चर्चवर्षिते 🔤 चीन बार 🚃 कर है । इंग्रनसे प्राप्त दक्षिणवर्त होते हुए ईपानपर्यस वर्ष्यान वरे । क्याक्ट अप्रिदेवका इस प्रवदर ध्यान भरे---'अर्था देवलांका रक्त वर्ण है, उनके भीन मृत्य है, वे अपने वापे क्रवमें कमन्दरनु तथा दाहिने हायमें सूचा प्रहण किये हुए हैं।' प्रक्रमें अक्तर सूच तेकर हवर करे।

इस प्रकार लागुहोक विकिक्त हारा लक्षा तथा प्रारंकार्वेका करण करक प्राहित्वे । कुञ्चकरिक्षकः कर्म करके अधिका पूजर करे । अक्यर, अतन्ययाग, यहाव्याहति, प्रायक्षितं, प्रायापस्य तका किल्कुन् हका करे। अक्रपति और इन्हर्क निवित्त दी 📖 अवहांतर्या अवकारसंद्रक है । अन्नि और सोमके निनित्त 🖩 अस्तिका अस्तिका व्याप्तिका व्याप्ति है। 'श्रृष्ट्रीयः क:'— ये तीन व्यवस्तातीयाँ हैं। 'अधावातेर' इत्यदि परि यमा अर्थाक्षन-मंत्रक हैं। एक प्रावासका अनुति तथा एक न्विट्युन्त् असन्ति --- इस प्रयास **मार्गः चौ**दह अस्तिर्मा · इस प्रकार चलुईहा अस्ट्रालामक हचन कर धर्म-निविश्तक देवताको औद्द्रवका प्रधान हवन मार्ग चाहिने । अंडीक्सी सहत निवारी कही गयी है, जिसके नाम इस प्रकार है—(१) हिरम्पा, (२) फनमा, (३) रसा, (४) आरका, (५) सुभन्म, (६) अहरूपा तथा (७) सती। 📰 विका<sup>2</sup>ेंपिकोके च्यान करनेसे शम्पूर्ण फलकी प्राप्ति होती है । (अध्याम १४--१६)

# अधिवासनकर्म इवं यज्ञकर्ममें उपयोज्य उत्तम ऋकुण 📖 धर्मदेवसाका 🚃

**पुत्रजी अस्ते है-**-अस्तुओं । देव-अस्तुओं पहले दिन देवताओंक अधिवासन 🚃 च्हिंचे और 🚃 अनुसार अधिवासनके पदार्थ—धन्य आदिकी प्रतिहासन 🚃 📖 भी 🚃 कर लेना चारिये। कलप्रके उत्पर भनेप्रामीधी स्थापनः 📖 दिश्यासः और बहोकः पूजन 📖 चहिने । 🚃 तथा उद्यानकी प्रतिष्ठामें प्रधानकपरे बहुतको, राजिन-वागमे प्रपायागमें वरुपकी, शैव-अतिहामें शिवकी और सोम,

सूर्व तथा किया एवं अन्य देवलओका भी प्राप्त-अर्ध्य आदिसे अर्थन करन करिये । 'हुक्तरिक' (थन्- २०।२०) हस मजले पहले प्रतिमानने स्वान कराये। स्नानके अनन्तर मञ्जेद्वरा गम्भ, फूल, फल, दुर्वा, सिंदूर, चन्द्रन, सुगन्धित वैस्त, पुष्प, खूप, दीप, असत, 📖 आदि उपचारीसे पुजर करे। पण्डमके अंदर 🚃 देवताका 🚃 करे और अध्यासन करे। सुरक्त-कर्मिनेद्वारा इस स्थानको

क्षुरका करवाये। तदनन्तर आचार्य, 🚃 📰 ऋषिक् पद्मर पदार्थीका योजन करे। जिला आधिकसन-वर्ध सम्बद्ध किये देवप्रसिद्धान्य कोई फल नहीं होता। निस्त, वैभितिक भाग भाग करोटि विधिके उत्तरक कुन्य-कुन्युक्ती (चनकर हवर-कार्य 📖 व्यक्तिये ।

बाह्मणो ! यहकार्यमें अनुवानके क्रमणते अवट होता, आड द्वारपार और आड कारक सहस्य होने पहिये । ये अधी मृद, पवित्र तथा उत्तम लक्षणीके सन्तर केट्यपोने प्रस्कृत होने चाहिये। एक अन् करनेव्यले व्यवस्था की प्रस् करना चारिये। बाहागोकी गम, करना, क्या तथा दक्षिणा अवदिके द्वारा विविक्ते उत्तरप्तर पूजा करने पार्टिके । जनम सर्वक्रमणसम्बन्ध तथा बिद्वान् सक्तम न निरुपेगर विन्ने गर्व पञ्चम उत्तम फल प्राप्त नहीं होता । स्वाप्तक करकते, सक्त बोध और नामका निर्देश करे। तृत्वपुरुषके शनमे, कर्ण-पर्यक्रके धारमें, क्वोत्सर्गर्ने एवं कन्यादानमें रोजके साथ प्रकारम की क्षारण करना करिये। मृत पार्याकारण, कुरण, सुरके करने नियास करनेवाला, बीचा, कुरलीयाँत, काबुद्धिक, गुज्येखे, संदेशी, होनाजु, आधिकालु, पाप्रदश्त, दर्शनक, प्रतिकाली, कुरुको, व्यक्तिकारी, कृती, निरास्तु, कारानी, अस्त्रीकृत, महाराणी, अनुब तथा केवल अपन 🛊 चरण-खेवल करनेवालः—ये 📖 यहके पत्र नहीं है । अञ्चलके 📖 हर्व पुत्रतके मधीके पात इस प्रकार है— अवस्थित ! ..... महानवे भूति है। इस संसारते 📰 🚃 को : गूरो ! 🚟 असादसे ही 📖 सङ्ग करनेका सुअवसर सुझे प्रथ ६३। 🖁 । 🔤 मेरी 🔤 🔤 रहे । अग्रथ मुहम्पर 📖 🚟 जिससे 🛮 यह कार्य सिद्ध 📖 सक्नै । 📖 सन 📹 🚾

आप आषार्य है। आप प्रश्नुवेदशक्ष्य है, आपको नगरकार है। ऋतिवासको ! 🚃 📺 वेदोंके 🚃 है, आप समारे लिये योग्रावद हों। ययासमें प्रवेश करके उन ऋद्वानीको अवने-अवने स्थानीयर क्रमञ्ज श्राहरसे बैठाये । वेटीके पश्चिम पागर्थ आचार्यको बैठाये, कृष्यके अध-पागर्थे बहुतको बैठावे । होता, इस्फल अर्ह्यको भी यधास्थान आसन् हे । उन अध्वार्य आदिको सम्बोधित कर प्रार्थना करे कि 🚃 सन् 🚃 🐉 है। भेरे बहुको सकल बनावे। क्यूकेंटके एक्क्च अक्नेसरी बहरूप आसर्प। आपके प्रचान है : अपन सम्पूर्ण यहावतीक साक्षीपुत है । मध्येदार्थको 🚃 📰 इन्द्रमध्य अञ्चल ( अवस्थि नमस्यार है। 📷 कार्काकी विविद्धके देखे अन्तरको ध्यालपूर्ति धगवान् 🚃 🛊 : 📉 सर्च हिलाओं-विदिशाओंचे हस ा करें ( **व्यास्त्र अस्ति कार्या है** ) 🚃 🚃 तथा 🚃 कर्म संकरपूर्वक करने 🚃 कर संकल्पपुरुक और यह संकल्पसम्भूत है। अवस्था किया को पर्याचरण करता है, इस पोर्टी परत गर्ही भार धर सकता। गङ्गा, सूर्य, कब, धौ, गूमि, योष, दिन, सुर्व, स्रोप, का, काल, पहा महाभूत—वे सम सुभागुध-कर्मके सामी है<sup>र</sup>। असर्थ विचारवान् मन्त्रमधे अश्वा कारोंने जिला के नार्वक आपरण करना कहिये। वर्षट्रेय सूध अर्थरपारं एवं श्रेतवास भाग काते हैं। स्वासकार में शादिव अपने दोनो क्षाबोमें बस्ट और अभय-मूहा धारण किये हैं। ये अभिन्योंको स्था देते है और सळावेंके रिप्टे एममात्र च्छा कारण है ∤ इस कवारके सरुपवाले भगवान् चमदिव

### प्रतिहा-मुहर्त एवं जलाशय आदिकी प्रतिहा-विधि

कों । (अध्याप १७-१८)

सुरुवी कहते हैं--- महाओ ! ऋषियोंने देवता आदिवी प्रतिहासे माप, फाल्गुन आदि 🗈 चस नियत किये हैं।

है, संसाररूपी समूत्रसे पर करानेवाले हैं। ऋनकपी अनुलोह

जनतक भगवान् विच्यु शपन नहीं करते, 🚃 प्रतिष्ठा आदि कार्य करने चाहिये। शुक्र, गुरु, मुच, स्रोम—ये 📖 वार शुभ

सन्तर्भके रिन्ने करणानकार हो तथा सदा समग्री रक्षा

सुर्वः 🔤 🔤 कालो महापूर्वाने 🖿 🕶 ११ऐते. जुन्मकुशस्यः, धर्मनी 🖚 साहितः 🛭

र-पर्मः शुक्रकपुः सिकान्यपरः कार्योज्यिको कृषे स्टाप्यमात्राम् यो म स्थाने कर्प यो द्यास्त् । सर्वज्ञानिस्त्याक्तः कृत्यीयवं कोलैक्ट्रेनः सन्द सोडबं यद्य कारिय सैव स्वतं वयत सर्व प्रत्ये । (भव्यवर्ग २ । १८ । ४३-४४)

**। मध्यमपर्य २ । १८** । ४६)

१-गहा चदिलकड़ी व धीर्युने इतिकारी ह

है। जिस रूपमें जूप 🚃 स्थित हो एवं जूप 📖 पृष्टि पहली हो, उस एकमे पाला 📟 पाक्रिये। विकिकोरी मुलाय, तुलेवा, पहामी, सहमी, 🏬 🗯 अवेदकी तथा पूर्विक तिथियाँ उत्तेम है। प्राय-प्रतिहा एवं जलाक्ष आदि नार्य प्रशास शुभ मुहुर्तमें ही करने चाहिये। देववसिद्धा और बहे यागोंमें सोलह हायका एवं चर हारेंसे युक्त बच्छका निर्माण रिशा-विदेशकोर्थे सुत्र व्यव्यक् पहरानी चाहिये। पाकड, गुरुर, पीपरः तथा करनदके होरण 📟 हारोपर पूर्वीय क्रमल बनाये। मन्त्रपको मालाओ क्रास्त्र अलेक्स करे । दिक्कारोकी परावको इनके क्वीक अनुसार बल्हाला चाहिये । पश्चमें जीलवर्णकी यहाबा लगायी चाहिये । क्यक-दम्ब यदि इस हाक्या हो तो बहुवन याँच हाक्या बनवानी वाहिये। सम्बन्धे 🚃 बदर्श-सम्भ रकान चाहिये तथा मञ्जूपको सुराधित काना चाहिये। यध्यम् प्रवे क्रीलीम् वेदियोव्ये त्यन्य करनी क्राहिते । 📖 📺 मेक्स-मॉक्स कृष्यक 🚃 🎫 सर्वतेषाः-पालः निर्माण करना चाहिये। कुम्बके ईक्टन-बाल्ये कलकार्यः

मजमान प्रसदेव एवं प्रतिश्वर सर्पायनको समानका का
प्रतिश्वा आदि कियानक संकरण करके सहायोध पुत्र अवक अनुस्त्र प्राप्त करे—'वे इस पुण्य देशमे स्वाध्यानकालको अल्लास्य आदिको प्रतिश्वा कर्कणः। अस्य सभी मुझे इसके लिये साम्रा प्रदान करे।' ऐसा क्षमका मञ्च-भादः एवं वृद्धि-भाद्ध सम्पन्न करे। विषे आदिके महारूपण क्षापिक सम्ब मन्यानि नेविक्तस्तर हिने श्वाद हो स्वयं सभा होते हो।' अदि मन्य रिज्ये एवं इन्द्रादि दिक्ताल देवताओं शक्त अनके आवृत्यों आदिका भी युवास्थान क्षित्रण करे। यिहा आवार्य और समानकाल करण करे। वरणके अनकार आवार्य सम्बन्ध स्वयं प्रवासनकाल करण करे। अनकार सम्बन्धि व्यवस्थानको समानकाल 'आयो वि हार्व' (सन्वः ११।५०) इस सम्बद्धान बहुत, प्रतिवक्त आदि कार करवें। वस्त, बोक्न्स,

स्थापना नह रुसे बारत निहरण अस्पूर्ण करण प्राहेने।

बीकर, 📖, 📖, शारित, प्रियंगु और व्यंति---ये अवठ 🚃 📰 📰 है। आवार्यादेहरू अनुहास सपर्वाक वननार 🚃 🚃 🚾 चन्द्रन इसदि 🚃 पुरोहितको अभिकर महारा-धोषके स्वयं प्रा-चौजादिसहित पश्चिमद्वारसे नक्त-मन्द्रपमें प्रवेश करे । वहाँ वेदीको प्रदक्षिण कर नमस्कर करे । 🚃 अञ्चलके अनुसार चक्रपान निश्चित आसनपर 📆 । अञ्चलकोन अवस्थितकान करे । जनसर यजमान परिव देवीचा पुत्रन को । विस्त सरसी आदिसे विस्तरती पूर्तीका अपसर्वन करावे । कवायान अपने बैहानेके आसनका पूज-क्यान अर्थन करे। अनकार भूतिका हाधसे स्पर्तकर इस मकार करे--- 'कुमीनाता । तुनने रहेक्टेंको चारण किया है 🏬 तुन्हें निज्युने चारण किया है। तुम मुझे घारण करने और 🚃 🚃 करे । चुटयकमानमें 🚃 देवताका को । 🚾 दिशामें कल्लाके 🚃 **ाला** ननेहासेको नृत्य, कृत, कुल तथा स्थान हाला 🚃 🚃 स्वरू (ध्यु २३ ) १९) मानसे पूजन करे । · 'an (मकु २२1२२) इस मलसे व्यक्तिको: 'स्ट्रीको: ' (यन्- ६ । ५) इस मणसे पगवान् विष्णुकी पुरू को । पिन 🎹 📑 और सभी देवलाओंको सा-सा स्थानक स्थानित कर उनका पूजन करे। इसके बाद 'क्याविकास प्रस्कृत' इस समारे मृत्रदि 📰 📰 प्रवासनगर विश्वसम्बन, सुद्धरस्टिक तथा शङ्क, कृत् एवं इन्द्रके समान क्रम्बाल वर्ग, किरीट-कुम्बलकरी, चेत क्रमल, क्षेत्र केत क्लाने अलंकत, केत गन्धसे अनुवित्त, हाक्ये पात 📰 हुए, सिद्ध, गक्यों तथा देवताओंसे क्षुकान, नागरनेकानी होप्यरूप, मकर, ब्राह्म कुर्म आदि 📖 क्लक्वेंसे अकृत, जलकायी मनवान् वस्पदेवका प्यान को। व्यक्तके अस्तर पहानुत्यास को। अर्थस्थापन कर मुख्यन्त्रकः वर को 📖 इस जलसे आसन्, यज्ञ-सामाध 🚃 प्रेक्न को । 🏬 मनवान् सुर्यको अर्घ्य है । अनन्तर ईसानकोष्ये प्रमुखन् कोह्, अधिकोगमें गुरुषद्का तथा

र-पृथ्वि तस्य पूत्र लोका टीव से विष्युत्त पृथा । सं च वस्य ये तिलं प्रीक्रमसम् कृतः।

अन्य देवताओका 📖 पूजन करे। क्वहरूके मध्यमे मुला, सागर, अनन्त, पृथ्वो, आकरशक्ति, कुर्म, सुनेव तथा मन्दर और पश्चतत्वीका साङ्गोपास पूजन करे। पूर्व दिस्की कलदाके ऊपर चेत अभूत और पूज लेकर जानकर् वस्त्रदेवका 📹 को । वस्त्रको आउ मुख दिवाने । गायतीरे 🚃 कार्य तथा पदा, अन्त्रं, पुण्डवरि 🚃 उपकारींसे कल्पना पूजन करे। अही, स्त्रेककार्त, दश दिववालों तथा पीठपर बहुत, दिला, गर्नेक और पृथ्वीका गर्मा, क्यून आदिसे पूजा करे। 🌃 ईप्राकृति क्यूनि क्यूनि अध्यक्त, विश्ववर्ग, सरस्ती तथ पूर्वीद क्रोंने उनकर पश्चणीका पुत्रन करे। पीठके बाहर विश्वान, कहारा, पूत् व्यक्त प्राप्तक कृष्य करे। करणास्य सूचीर कराव्येक अस्ताहर एवं ध्यानकर पात्र, अस्त्री, रूप, असल, पूप, 🔚 एवं वर्षित अविद्यान प्राम्युर्वन स्टब्स पूर्व 🗷 और 🕬 प्रतास्त्रम् उन्हें निर्मारेश करे । विशेषपूर्वक सन्त्रे देवलक्ष्मेया कुलकर शतकी,कार पाठ करना कांक्रिये । इसन करनेके **ाता पारमसूत्रा, ग्रोबस्ता, गेहस्ता, ध्यायमस्ता, कुरबस्ता,** इक्समुक्त, ऑप्रमुक्त, सीरमुक्त, न्येइकान, कान्द्रेनसम्ब रक्षणस्याम तथा रक्षेत्र 🔤 सुकोचर 🚃 🚃 चाहित्रे 🛚 अपने मुद्रोक्त-विधिने कुन्होंने और 🛗 📟 इतन करन बाहिये : निवर देवका 🚃 होता है अध्यक्त निवर 🔤 प्रतिक्षा हो क्षेत्रे क्ष्मा आहरियाँ देवी व्यक्ति । अन्यस् वितः, अस्प, पावस, पा, पुण, अवस सम समिक स्वरिते समा देवलक्षेकि मनोसे उन्हें अव्यक्तियाँ देवी वाहिये।

पद्मदिवसात्रक प्रतिष्ठापागमे **मामा विश्व कोणा** शायात्रम एवं स्थापन करना चाहिये। दूसरे दिन पूजन और एकन, तीरारे दिन वांकि-प्रदान, बीचे दिन चतुर्वीकर्म और पाँचवे दिन नीराकर करना चाहिये। निरम्कर्भ करनेके जनकर में नैमितिक स्था करने चाहिये। इसीसे कर्मफलको पाईव केसी है।

दूसरे दिन **व्यास्तात्रा सर्वत्रक्य प्रतिहास्य देवतस्य** सर्वोविधिमित्रित जरको **सहस्योद्धाः वेदक्योके स्वत्यूर्वक** महास्त्रान तथा मन्त्राभिवेक कराये, तदनका करन आदिसे उसे

अमुरिका धरे। तत्सवात् आकार्य आदिको पुष्पकर उन्हें अलंबात कर गोदान करे। फिर पहल-पोक्पूर्वक तालाममें अस स्रोहनेके सिर्व 🎟 करे । इसके 🗪 उस तालानके क्रमें बगवुक वरून, प्रकार, क्ष्म्यन आदिकी अलेकुत व्यक्तिको स्रोहे । वरुपदेवको विजेक्क्यमे एका कर उन्हें अर्घ्य 🚃 को । पनः उसी सामाके जल, सप्तमृतिका-विश्वत बल, रीर्थ-बल, स्वापुत, कुसोटक तथा पुनवल आदिसे ······· कार करकर गम, पुनर, कूर, दीप, नैवेश आदि क्टान करे । सन्ति देवलाओंको बॉल प्रदान को । भारतकोवके 🚃 🕉 तुसन् बन्द प्रदक्षिणः सरे । एक वेदीपर भगवान् करून 🚃 पृष्टारं जीदेवीकी संबादासिः आर्ग 🚃 🚃 वसावर नगरक वरमञ्जूषा बात देवी पुर्वारोगीका विश्वाह करावत 🔤 करणदेवके रिप्ये निवेदित 🖿 दे । एक 🚃 यून को क्षात्रकारो स्थिति काला हो, स्था आतंत्रत त्या सरावति ईक्षक दिश्रामें मनस्वर्षक गावकर रियर कर है। प्रासादक (अन्योको, प्रथमे दक्षिण भागमे तथा आवासके मध्यमें - प्रकार करिये । इसके अगस्य **विकार करिया** करे । व्यक्तिका भाषा एक दक्तिया प्रदान करे ।

उस तद्यानके जरुके सध्यमें 'सरावाद्याको समः' ऐस क्ष्मार आन्याद्याकोचा क्ष्मा और माद्वाकोची प्रार्थना क्ष्मा व्याप्त देविको । तेने क्ष्मा क्ष्मा है, व्याप्त क्ष्मा क्ष्मा है क्ष्मा क्षमा है, व्याप्त आन्याद्याक हो । इस करुपानको आपलेग शा विक्षा, क्ष्मा क्षमानुद्राई दिशाये । अन्याद क्षमानुद्राई दिशाये । क्ष्मानोको क्ष्मा अरुपानको अरुपान करे । इस्ते भी दस्त क्ष्मानोको क्ष्मा अरुपानको अरुपान करे । इस्ते भी दस्त क्ष्मानोको क्षमान्याद अर्पान करे । व्याप्त प्राप्त क्ष्मानोको क्षमान्याद अरुपान करे । व्याप्त प्राप्त क्ष्मानोको क्षमान्याद अरुपान करे । व्याप्त प्राप्त अरुपान करे । व्याप्त करे । व्याप्त क्ष्मान करे । व्याप्त क

कुमारिकाओको भोजन **सामा** संदुष्ट को 💷 पगवान्

सुर्वेको अर्घ्य प्रदान करे। (अध्याय १९---२१)

॥ मामानवर्व, द्वितीय भाग सम्पूर्ण ॥

# (वृतीय माग)

#### स्थान-प्रतिहा-विधि

स्ताजी बंदलो हैं—बदान्ते । उत्तान आदिनी प्रीत्तानें नो कुछ निरोप विधि है, अब वसे बता रहा है, आपलेन सुने । सर्वप्रथम 📖 🏬 करि प्रवास्त्र रक्क घर उसका अपूर्ण कमल करवे। मञ्जलके ईर्ज्जकोनमें करशाबी स्थापनावार उक्षपर भगवान् गुजनाय और वरुवदेवकी पुजा को । शहभक्तर मध्यम करूवामें मुचीदे प्रक्रोका पुरान करे । फिर पश्चिमादि 🚃 📷 बद्धा और अवन्त 📖 पच्चमें वरुपकी पूजा करे। जलपूरित कलको जनकर ....... आवाहन काले हुए कहे—'कालदेव ! 🖩 आवका आवाहन · इं। विश्वे : · इमें तर्ग प्रदान को i' सदस्ता पूर्वभागमें 🚃 स्थापना कर तीरणका पुत्रा करे और अधिका-देशमें बगकार कस्टेकका पुक्रा की । भगवान् धार्थ्येव सुद्ध निवटको सद्भा है। 🛡 ज्ञान कर हाथोंने प्रक्ल, चल, गदा और पद पारम किने हुए हैं। उनके वशःस्थलपर श्रीवल-पिद्ध और कौल्पनक मुझेनित 🖥 तका मसाक सुन्दर मुक्टरो अलंक्ज़ है। उनके दक्षिण बनके भगवती कमला, जाम भागमे पृष्टियो विमानवान है। सूर, असूर, सिज्ञ, निवर, यथ आदि उनमी सुरी भारते है। 'विक्ती ररारः' (मञ्- ५.१२१) 🚃 मन्त्रसे पनवन् विष्णुकी पूजा करे। उनके 📰 संवर्धकार-अन्न और आदि प्रतिन्योवरे पूप, दीप आदि उपचारोंसे अर्थनः कर प्रार्थना करे। उनके साधने पीका दीव जनलवे और गुग्गुरुका भूप प्रदान कर मुतनितिक स्वीत्का नैनेवा राजाने । कर्णिकाके दक्षिणको और कमरूके रूपर विपन सोपान पान करे । उनका वर्ण शुक्त है, वे ऋष्य-स्वरूप है, वे अपने क्रवोपें वरद और अभग-मूहा खरण किने है एवं केन्द्रब्दी खरण करनेके जनसा जासमा प्रोपित है। 'इब देखा' (सक् ९ । ४०) इस मन्त्रसे इनकी पूजा कर इन्हें मुत्रनिक्रिया पाराचा नैवेदा अर्पण करे। पूर्व आदि दिखाओं इन्द्र, जवन्त्र, अकारा, करण, अप्रि, ईश्चन, तत्पूरण तथा वासूची पूजा करे। क्यिंकाके वाम भागमें इक्क वर्णकारे महादेवका

अपन कर किया अपने क्षेत्र के स्थान कर किया आदि प्रदान करें : सरावान् वासुदेवके सिन्दे स्थित्वसे आठ, स्केतके अपनुर्वस तथा जिसके सिन्दे हो स्रोतको अपनुरियं है । अपने एक अपनुरित है । अपने एक वस्त्रको सिन्दे एक-एक अपनुरित और सिन्दे हैं । अपने एक वस्त्रको सिन्दे

विकास कराती, भूगती, श्रेष, संबोध्य, वर्णक्या, अस्तिका और एग्रायकारे 🖷 मनोमे मृत 📢 मार्चिक्तिम एकिन्यक्षरा एक-एक आहति प्रदान करे । इसी कवार आहे. 🕮, इन्हें, पृथ्वी और अन्तरिक्षके विधित समू 🔤 और-पुक वजेसे एक-एक आसुरियाँ प्रदान करे। फिर गन्ध-पृथ्वदिके हरू पृथ्व-पृथ्वक पृथ्व करके स्ट्रमूल तथा बीरकुरतकः जन् भरे । अभागार कुरको चर्माचारित काम कराकाः और 📖 नर्जनकर 📆 उद्यानके नध्य पागमें यह दे। कुनके जन-जनमें सोय तक कारतीरके रिप्ये धाजाओंको राज्य है। 'को:सम्बद्धकार' (सन्- ७।४८) इस मनासे क्योक्ट कर्मवेश संस्कार करे । एक तीकी सुर्देश वृक्षके दक्षिण तथा कम भागके से पत्तेक केदन को । नवज्ञतीको तृहिके लिये समु अवदेशक योग सम्बर्ध तथा धालक और कुमारिवीको यालपुर्भा किलाने । 📰 सुन्नेसे उद्यानके वृक्तोंको आवेष्टित करे। उन पृथ्वीयरे 🚃 🚃 प्राप्त कराये और यह प्रकार-मन्त्र परे---

पूक्तकार् मिक्सिके आतेत्वत् परितस्य थे। मरणे करित महे व्या कर्ता प्रार्थन रिज्यते ॥ (प्रकारतं ३।१।३१)

करार्य यह कि विविध्यूर्वक स्थान आदिमें लगावे गये कृषकि क्रयरसे बदि कोई गिर जाय, गिरकर पर जाय या आस्य टूट जाय के दल पानक मानी वृष्ण लगानेवाला नहीं होता।

त्रावनके निमित्त पूजा आदि कर्म करानेकाले आकार्यको सर्व्यः 📖 चार क्या दक्षिणा प्रदान कर उनकी प्रदक्षिणा को । ऋतिकृत्वे भी सर्व्यः, राजत आदि दक्षिणामे दे । ब्रह्माको भी दक्षिण देकर संतृष्ट करे एवं अन्य सदावाँको भी जसम करे। स्थापित अधिकरूपके बरुसे 🚃 करे । सूर्वात्तसे पूर्व ही पूर्णहित समान करे । सन्पूर्ण कार्य पूर्णकर अपने घर जान और विश्वेके हारा वहाँ करू, कान, हमपीय, नाक्य, पुरुषोत्तम, वास्ट्रेय, क्याच्यव और नारायण—इन सबका विधिवत् स्मरत् वर पुजन बनाये और पञ्चगव्यपित्रित् राधि-मातका नैवेदा समर्थित को ।

वरु आदि देवनाओकी पूजा करनेके प्रवान दक्षिणकी ओर 'स्पोना पृष्टिची॰' (पनु॰ ३५।२१) इस 📟 पृथ्वितीका पुत्रन करे । मध्यितिक कक्काका विकास भौरे । पृथ्वीदेवी सुद्ध काश्चन वर्णको अस्पाने पृष्ठ है । सम्बन्धे वरद और अञ्चयमुद्रा फरण किये हुए हैं। सम्पूर्ण आरंकारोंसे अलंका है। पर्यंत्र नाम 🚟 विक्रमाना यजन को। 'विश्वकार्यन्' (श्रुप्त १० (८१) १) यह मान हरके पुरस्की विनियुक्त है। भगवान् 🚃 🚃 🚃 समान है, 🖣 सुरू और उंचको पार्क प्रान्तिक 🕏 ठ४३ भारतकरूप है। इसे मधु और विष्टकर्मी बरित है। अनकर कीप्याप्यस्क तथा पुरुषस्तामा पाट करे । इसी पृष्णी-होग-

कर्मने क्यू और क्यस-पूक्त ह्विय्वते आठ आहर्तियाँ दे तथा अन्य देवलओको एक-एक आहति दे।

क्कानके चार्चे उत्तेर अधका बीच-बीचमें उद्यानकी रक्षाके लिने मेड्डोंका निर्माण करें, मिन्हें बर्मसेतु कहा जाता है। उक्तरको दुवतको रिप्टे विदेश प्रवास को । वर्षसेतुका निर्माण 🚃 इनसे इस 🚃 प्रार्चना करे—

च उत्पादनगुर्वणतः ॥ अविद्विते कर्पनेती क्यों 🛮 📷 प्रतासन् । के बाब प्राक्षितः सचित रक्षां कुर्वनित सेत्रवः। केद्वानकेन काकुन्वं मध्य 🔣 समर्थिनम् ॥ (व्यवस्था ३ । १ । ४४ – ४६)

**ा पर कि परि कोई व्यक्ति इस धर्मरेलु (मेड़)** पर करने राज्य पिर जाय, पितारः जाय तो इक पर्यतेतुके निर्माणका कोई कर पूर्व न लगे। क्योंकि इस धर्मसेल्का 🚃 के 🔤 अभिवृद्धिक क्रिके ही किया है। पुरु स्वाच्यर आनेकले जानकाच्य ये वर्णसेतु हका बारते हैं। वेदान्यका आदिमें जो पूज्य प्राप्त होता है, वह पूज्य इस वर्स-संतुके निर्माण करनेक्ट प्राप्त होता है। (अध्याय १)

# गोचर-भूमिके कसर्ग 📖 📖 ज्यानेकी प्रसिद्धा-विधि

( मारतमें पहले सभी अम-नगरोबी सभी 🚃 📹 दुशंक ग्रेबर-पूर्ण स्वेती थी। अपने गर्व खब्कद-रूपने बरती भी और वह भूमि सर्वस्थमानको भी पुगरे-विदरेके 🚟 🖼 🕬 🔛 📖 🛍 उसमें स्रोहा करते थे । यह प्रथा अभी कुछ देखें पहलेतक भी, पर अब यह सर्वश्व शुप्त हो गयी है, इससे मो-धनको बड़ी हानि हुई है। जिसका फल बक्ती: अन्यकृष्टि, श्रीकन महर्वता (महीवी), दुव्यक्तको निवति, पुरुष्य, 🚃 और सर्वत्र निर्दोव सोगीवी श्रवाके रूपमें परोक्ष तथा प्रत्यक्ष-कपसे दे रही है। इसकी निवृत्तिका एकपक सम्बन्धन है 🚃 पुरायोक्त सदाकर, यो-सेवा और आंतिकतापूर्ण भाष्याधिक दृष्टिका पुरः अनुसंकान और अनुसरण क्षाणा जानकी दशारी, जाई किसीको भी स्था भी स्थितिये स्था भी स्था नहीं है, इससे स्था और स्थान को स्था है ! स्था दृष्टिसे यह अध्याप विशेष महत्त्वका है और सभी फुटकोंको अत्यन प्रथमपूर्वक अपने-अपने क्राय-स्पर्दक चतुर्दिक योकस्वर वा गी-प्रचार-भूमिका उत्सर्ग गो-संरक्षणमें हाथ बैटाना काविने (—सम्बद्धकः)

सुतजी कहते हैं--आधानो ! जब 🛮 गोबर-चुनिके विषयमें 🚃 रहा हैं, आप सुने । गोचर-भूमिके उत्सर्ग-कामि एर्यप्रथम हर्श्यके साथ भगवान् विष्युको विविके अनुसार पूजा करनी चाहिये। इसी तरह बहुत, छह, कहाँहरका, बहुह, सोप, सूर्य और महादेकजीका क्रमदाः विकिय उपकारीसे पूजन करे । हवन-कर्यमें लक्ष्मीनारायकको क्षेत्र-चीन अवक्रीतवाँ चीसे

दे। क्षेत्रकलेको मध्यिकित एक-एक लाजाहति दे। मोकरभूपिका उत्सर्ग करके विद्यानके अनुसार युपकी स्थापना को कथा 🚃 अर्चन करे । यह क्य तीन 🚃 ऊँचा और नापरचेसे एक होना चहिये। उसे 🚃 हायसे मुम्कि सप्यमे **बढ़क चहिने। अनन्तर 'विश्वेषान' (३**० ५०।२।६) हस क्यका उच्चरन करे और 'नागाविकाले नगः', 'अक्याम

नमः' तथा 'चौमाच नमः' वसकार कुवके रिज्ये रखना निवेदित करे। 'व्योप गुद्धानकः' (क्वल १३।१)इस 📰 रहमूर्ति-स्वरूप तस कुम्बी पक्क्षेपनए-पूजा करे। अञ्चर्करी अम, 🚥 और दक्षिणा दे तथा होता एवं अन्य ऋत्विक्रेके भी अभीष्ट दक्षिणा दे। दसके बाब उस क्षेत्ररपृष्टि सा केंडकर इस मन्त्रको पढ़ते हुए गोन्सपूर्विका उसमा कर टे— विकासेकाका पानः स्वीत्वस्विताः ॥

गोच्य एक प्रका सुनिः सन्तर्गत पुनाधित । (मध्यमणी ३ (२ (१३-१३)

'दिल्लोकसरूप यह गोजरधूपि, गोलंक क्ष्म गीर्ड् सभी देवताओडार प्रवित हैं, इसलिये कल्यानके कावाके मैंने यह भूमि मौओंके 🔤 प्रदान 📼 🗗 है 🖟

इस क्यार को सम्बद्धित-चित्र होग्स्ट गीओंसे दिन्हे गोक्स्पृपि समर्पित करना है, यह सभी पापोसे सक क्रेकर विष्णुरकेकमें पुजित होवा है। गोचरपुर्विमें विगर्क संस्थान तुन, गुल्म उपते हैं, इतने इन्हरों नर्गतक यह स्वर्गलेक्ट्रमें

🚃 सेवा है। गोभरपुरिनर्ध सीमा 🖩 विशेश 🚃

भारिये । यस मुनिकी रक्षाके किये पूर्वते कृक्षीक रोचन करे । दक्षिणमें सेत् (मेड) बनाये । पश्चिममें केंद्रीले वृक्ष सम्बद्ध और उत्तरमें कृतका निर्माण करे। ऐसा करकेले 🛗 🖩 गोकाभूमिकी सीमाका स्वाप नहीं यह सकेगा। ३८ जुनिकी जलकार और बाससे परिपूर्ण करे । तथा वा आयंके दक्षिक दिशाने गोषरभूति क्रीहरी शाहिते। जो व्यक्ति किसी अन्य अयोजनसे गोचरभूमिको जेतता, 🚃 या नह काता है, यह

अपने कुलोको पतानी बातवा है और अनेक सहा-कुक्ताओरी

जो भरतेभाति ज्यानाम साथ मेक्दं-सूधिका कन करता है, यह उस पुनिमें जितने तुल है, उतने सम्पन्नक स्वर्ग

और विष्णुलोकसे च्युत नहीं होता। गाँचर-भूमि 📺 🚞 🚃 बाह्मणीको संतुष्ट करे । क्वोत्सर्गमें 📕 भूमि-दान काता है 🚃

प्रेतमोनिको प्राप्त नहीं होता । गोजर-भूभिके उत्सर्गके समय जो मण्डप बनाया जाता है, उसमें भगवान् वास्ट्रेव और सूर्वका

पूजन क्या तिल, गृहकी आठ-आठ आहतियोंसे हवन करना चर्किये। 🗺 के॰' (वयल ३।५०) इस मनासे मण्डपके

क्रमर स्था प्रकृत 🔤 स्थापित करे । अनन्तर सीर-सूक्त उत्तर कैन्नव-कुतन्त्र चंड को। 🚃 बटप्त्रीपर आउ दिक्पाल देवकओंक बित्र क ब्यान बात्रक उन्हें पूर्वीद आठ

🚃 स्थापन को और पूर्वीदे दिशाओंके अधिपतियों — इन्द्र, अप्रि, क्य, निर्देशी आदिसे मोचरण्यिकी रक्षके रिज्ये प्रार्थन करे । प्रार्थकके कद चारों बन्तक, मूग एवं पश्चिमीकी

🚃 🔛 विदेशस्यमे भगवान् बासुदेशको प्रसप्तके 🔤 गांचरपृथिक इत्सर्वन 🚃 चाहिये । गोचरपृथिके नष्ट-

सह को करेकर, कासके जीने ही कानेपर तथा एनः पास उन्होंके रिक्ते पूर्ववत् प्ररिद्धा करने कहिये, 🔤 गोचरभूमि अक्षय 📶 हि । प्रतिकृतकार्यके निमित्त चुनिके कोटने आदिये

कोई जीव-वन्तु मर 🚃 📓 उससे मुझे पाप 🗈 रूगे, प्रत्युत 🕶 हो हो और इस गोचाप्प्रीमंत्र 🏬 करनेवाल मनुष्ये, वञ्च-व्यक्तिके, जोव-जन्मश्रीका आयके अनुश्रहते निरमार

करण्यान हो ऐसी भगवान्से प्रार्थना करनी चाहिये। अनन्तर केक्ट्रभूतिको जिल्लीका परिवा ध्योराहार सात बार आवेहित कर है। अविष्टनके क्ष्म 'सुलवाचे पृक्तिबीः'

१+ (६३ (१+) इस प्राथमा पाठ करे (अनकार आवार्यक) वे । सम्बद्धि काहाणीक्ष्रे भीक्षम कराये । दीन, डान्ध

एवं कृपनोको संसूह करे। इसके बाद सङ्गल-व्यक्तिके साथ अच्चे करने प्रचेश करे। इसी प्रचार तालाब, कुआँ, भूप आदियो 🖪 अतिहा कानी चाहिये, विशेषरूपरी उसमें

वस्पदेकको और जागोकी पुत्रा करना बाहिये । अवस्था ! अन में छोटे एवं साध्यरण उद्यानीकी प्रतिहासे विकास 📖 रहा 🜓 इसमें मण्डल नहीं 🚃 वाहिये।

व्यक्ति राम स्थानमे हो द्वाधके स्थिपकार करावा स्थापित च्या चहित्रे । उसका भगवान किया और सोमकी अर्चना

📖 चदिये । केवल आवार्यका वरण करे । सुत्रसे वृक्षीको अवेटित 📰 कुम-मालाओंसे असेक्ज करे। 🚃 जलपायसे वृक्षांको सीचे। पाँच अक्राणीको पोञ्चन कराये।

१-गर्वा इति भृष्योको एव विद्यालयन्तितः । नद्शोकर्णेन विरुद्धाते 🚛 सर्वाकपाहरूम् ॥

विस गोचर-भूमिमें सी गार्व और एक बैल त्यतना रूपमें विकास काते हो, यह पूजि घेडार्च-पूजि कारतार्ग है। ऐसी भूमिका दान करतेसे सभी प्रमेका कहा होता है। अन्य मुख्यानि, कुटवारीन, फाकान आदि म्युनिवेदि काले प्राय: ३,००० दान राजी-वीही प्रक्रिय येका रोजर्य है।

वृक्षीका कर्णवेश संस्था करे और संस्थापपूर्वक स्था स्थापित कर दे। मध्य देशमे यूप स्थापित को और दिशा-विदिशाओं तथा मध्य देशमें कदस्त्री-वृक्षका रोपण स्था और विभानपूर्वक भीसे होग सरे। किर स्थितकृत् स्थान स्था पूर्णकृति है। वृक्षके मूरुने धर्म, पृथ्वी, दिशा, दिवनार और क्ष्मको पूजा करें उत्तक आकार्यको संतुष्ट करें। दक्षिणामें गाय दे। सब कार्य विकानके अनुसार परिपूर्ण कर मगवान् सूर्यको अर्ज्य प्रदान करें। (अध्याक २-३)

### अञ्चल, पुकारीणी तथा जरपञ्चको प्रतिहाकी साम

स्तर्यों बोले—बाहाणों! अधारत-वृक्षयी विद्या करती हो तो उसकी वहके यह विद्या स्थानी-चौड़ी एक वेदीका निर्माण कर उन्देन आदिशे श्रीकृत करे। उसकर कमरूबरी एक्स कर अर्थ्य प्रदान करे। प्रकार दिनकी विद्या 'तहिंकको:" (पण्" १।५) इस मन्यद्या व्यापनात्र्या कर राज्य, कन्दन, दूर्वा तथा अक्षत संबर्धन करे। कन्दन-दिन्न वेत सूत्रोंसे करवलोंको अर्थिहित करे। प्रचम करवलके उनस गणेलाओका, दूसरे करवलपर बहानीका पूजन करे। दिखाओंने दिक्सार और वृक्षके मूलमें नवज्ञोंका पूजन-अर्थन करे: वृक्षके मूलमें विच्या, मध्यमे शंकर तथा आणे बहानकी पूजा कर हजन करे। पिष्टकान-विन्त है। आवर्षकों दिक्स देवर वृक्षको जलभारांने सीचे, उसकी प्रदक्षित्या करे और बनकान् सूर्यको अर्थ्य निवेदित कर यह अर्थ क्षावन

बायली अर्वाटको प्रतिहानि प्रयम कृतसुद्धि करके सूर्वको आर्च्य प्रदान करे। तदनकर गणेदा, गुरुक्यपुरुष, क्रक और भएका समाहित होकर पूजन करे । मध्यालके मध्याने आधार-इक्ति, अनल तथा कुर्मको पूजा करे । कहा सूर्व आदिका ची मण्डलमें पुअन करें । दूसरे पात्रमें पुजारि उपकारेंसे भगवान् धरणका पुरान करे। कमलके पूर्वीट धर्वीने इन्हारि दिक्पालीकी, उनके आयुधीकी सथा मध्यमे ज्ञानकी पूजा करे । 'सूर्युव: स्व:' इन तस्वोको भी पूज करे । मन्द्रक्तके उत्तर भागमें नागरूप अनक्तरी पूजा करे। इसके बाद हवन करे। आहृति वरुणदेवको दे थिए दिक्सलो, कराकन, तिल, दुर्गा, भगेदा, प्रहों और महाको 🚃 को । विक्कृत हवन करके बलि प्रदान करे। एक अष्टदल कमलके उत्तर 🚃 रजत-प्रतिमा स्वापित करे और पृष्करियों (कावली) की प्रतिमा सर्पकी बनाये और 🚃 पुजनबर बरुप्रायमे छोड दे । जल्लकायके मध्यमे नौका आरोधन को । जल्लक्सके मीचमे ऋतिक होम करे। शेवनागकी मूर्वि भी उल्लाहकों

कोड़ दे। सम्पूर्ण कार्योंको सम्पन्न कर साहार्गोको दक्षिणा दे। अस्थालको भवत, जोह, भीन, कुर्म एवं अन्य अस्पार आधी तथा कमान, जैवान आदि भी छोड़े। अनगर अस्पारायकी स्थान करे। स्वया और सीपी भी छोड़े। दूचकी धारा भी दे। पूजारिकीको चारो ओरसे रस्त्यूत्रसे आवेदित करे। देनोको संस्तुत कर चली स्वेश करे।

व्यक्ति ! अव मैं निक्ती (निस तालावर्गे कागल हो), वापी तथा हर (नहरे करावान्त्र) की प्रतिप्राको सामान्य विधि कारण रहा है। इन अवको प्रतिष्ठा आरोक पहरे दिन प्राच्यान् कर्ण्यदेक्की स्वृत्तं-प्रतिष्या (अवका अवका करे, अनवा करे, अनवा कर सी कागल-पूर्वासे प्रतिप्राक्त पूर्वाधिवास करे। तत्वका व्यक्ताली अवका पूर्वाधिवास करे। तत्वका व्यक्ताली आवस पूर्वपूर्व देह और कल्कामर प्रवेदा, करण, प्रवेद अवका प्रवेद पूर्व करे। वरणके लिए को और कर्णका अवद्वीत दे। अन्य देवताओंको स्वृत्वका क्रिक्त अवका अवद्वीत प्रदान कर प्रापस-वर्ति है। किर वर्त्वका आद्वीत प्रदान कर प्रापस-वर्ति है। किर वर्त्वका करे। तदनका प्रदान कर प्रापस-वर्ति है। क्रिस वर्त्वका करे। तदनकर प्रदान है और दक्षिण प्रदान करे। पूर्वकी क्राव्य करे। प्रवेदी क्राव्य करे।

हिंदी ? अस मैं वृत्तीके प्रतिहा-विधानका वर्णन करता है। वृक्षकी स्थापना कर सूचने परिवेष्टित करे, फिर उसके पिल्ल पानमें कलका-स्वापना करे। कलकाने तहा, सोम, विज्ञु और कार्यातिका पूजन करे। अनकार तिल और यवसे अवड-अवड अब्बुदियाँ दे। कटरनी-वृक्ष तथा यूपका उसकीन करे, फिर स्वापने क्ये वृक्षके पूलने धर्म, पृथ्वी, दिला, विज्ञा क्ये पक्षकी पूजा करे तथा आचार्यको संतुष्ट करे। आवार्यको पोटान दे, दक्षिणा प्रदान करे। वृक्ष-पूजनके बाद मणवान् सूर्यको अर्थ्य प्रदान करे। (अध्याय ४—४)

### वट, किन्त तथा पूरीफल आदि वृक्ष-पुक्त उद्यानकी प्रतिष्ठा-विधि

सूतकी कहते हैं — महालो ! वट-कुशकर विकार दिवाण दिवाणे उसकी बढ़के पास तीन हाकको एक वेदी बनाये और उसपर तीन कलाइ। स्वाकित को । उन कलाईपर प्रभाशः गणेशः, हो बाद विष्णुकी पृतः हा बक्से होस करे । वट-कुशको विश्वित को । विष्णुकी पृतः हा बक्से होस करे । वट-कुशको विश्वित ता सुत्रोसे आवेदिन को । विकार प्रवास करे और कुशको आवेदिन को । वद-कुशको पृत्यों वस, नाग, गन्धर्य, सिक्से और कर्युक्तिको सुत्रास पृत्ये वसे । हा प्रकार सम्पूर्ण क्रिकार विकार समुक्ति करे ।

विरुव्यक्षिकी प्रतिश्वासे पहले दिन कृतका स्थापकार करें। 'स्थापकार' (यक् ३।६०) इस मन्त्रसे कृतको पर्वाप स्थापका कर 'सुक्तवार' (यक् २१।७) इस मन्त्रसे कृतको कर 'सुक्तवार' (यक् २१।७) इस मन्त्रसे कर्वादकार इसे स्थापकार करावे। 'से पूर्वापक' इस मन्त्रसे कृतकर अवस्त बद्वाचे। स्थापका स्वापका (यक् २७) इस मन्त्रसे भूप, बद्धा तथा साल्य कर्वाचे। स्वापकार रह, विष्णु, दुर्गा और धनेशर—कुनेश्वा पूजन करे। दूसी दिन प्रतिःकाल उठकर शाकानुकर निर्वापकार विरुव्ध होता सहस्त्र स्वापका स्वापका करावे। स्थापकार परिवार साल्य स्वापका स्वापका

विस्तवंक प्रस्कादेशने हो साधकी वर्तृस्त्रकार वेदीका निर्माण को । उसको गेर तथा सुन्दर पूज-कृणीदिसे रिज़तकर उसपर अहदस्य-क्रमलकी रचना करे । वृक्षको लाल सुन्नमे पाँध, सात । तै । वेदित करे । वृक्ष-मूलमें उत्तराध्मिपुस होकर नीहि । तथा दिख, किन्यु, । विकास ग्रंगेश, शेम, अनन्त, उन्द्र, क्रमस्य, सोम, सूर्य तथा पृथ्यी—इनकर क्रमशः पूजन करे । तिस्य और अवस्ति । । विकास पी पूर्व पासका मिन्हे दे । पाँधि दिल्ये उद्देद और पातका पीण लगाये । महोक्ये तृष्टिके जिन्दे पातक प्रदान करे । यूचका आरोपण करे, पृक्षका कर्मकंप-मंस्कार करे और भगकन सूर्यका अस्त्री प्रदान करे ।

ति स्थवने संवाई-चैड़ाइंका साम हो, विसर्धे मुक्की था साम अदिके फलदायक वृक्ष संगे हो तो ऐसे प्रक्रावदे ऑस्क्राने वास्त्रवन्यस्वति स्वनावस् वास्तु अर्थादे देशकार्योक्य पूजन करके प्रज्ञन-कर्म करे । विशेषकायसे विच्यु एवं प्रज्ञाति आदि देवसाओंका पूजन करे । इक्क्षे अन्तर्थे

(अध्यप ९—११)

## मण्डप, महायूप और पौसले आदिवरी प्रतिहा-विधि

सूतजी कालो है—- मिजापो ! 

विभिन्न निर्मित होनेकाले सम्बद्धोकी प्रतिहा-किथि बनलाता है।

वह पण्डप जिल्लास्य हो या कालस्य अध्यक्ष कृत-पण्डिसे

विभिन्न हो। ऐसी स्थितिने अधिवासनके आरम्पो श्रृप-स्वतमृह्तीने घट-स्थापन करे। उस कललापर शृबे, सोम उति

विभ्युकी अर्थना करे। 'आयो है हा॰' (यकु॰ ११।५०) इस

पलद्वारा कुलोदकसे तथा 'आयावक्षक॰' (यकु॰ १२।१९४)

इस सम्बद्धारा सुगन्य-जलसे प्रोक्षण करे। 'अध्यक्षरा॰'
(श्रीसूक १) इस आयासे पन्दन, सिन्दुर, आस्तता और अखन
समर्पण करे। यित दूसरे दिन जतः कृदि-आदः करे। सुप

रुक्षणकाले मण्डपमे दिक्पालोकी स्थापन करे। मध्यमें वेदीके
कपर मण्डर विक्रित करे। उसमें सुर्ग, स्थेप, विष्णुकी नथा
करकापर गणेल, नवपह आदिकी पूक्त करे। सुर्गक रिज्य

१०८ वार परसम-होग करे। विष्णु और सोपका उद्देश्य कर

ाधि अस्ट्रीनर्ण एवं पायस-वित्त है । वस्तु-देवताका पूजन करे और उनको अर्थ्य देवत विधिवत् आसूति प्रदान करे, फिर उस सम्बद्धको सकत्वपूर्वक योग्य बाह्मणके रिव्ये अर्थ्य प्रदान हो । उसे विधिवत् दक्षिणा दे और सूर्यके रिव्ये अर्थ्य प्रदान को । तृष्य-पण्डपमे विज्ञेपरूपसे वासुदेवके साथ भगवान् सूर्यकी पूजा करे । एक घटके व्या करडोपक पण्यान् स्वोद्य क्रीकी पूजा कर विसर्जन करे । इंजानकोणमें व्या स्यापित कर मानो दिश्यकोचे प्रजा प्रस्तुग्ये ।

प्रभावने निर्मत महावृषको एवं पीसस्य तथा कुर्य आदिको प्रभावने निर्मत महावृषको एवं पीसस्य तथा कुर्य आदिको प्रमावन-विर्मा बतस्य रहा हूँ। इनवर्ष प्रतिष्ठाने गर्ग-विरात पश् बद्धम कहिये। पीससेके पश्चिम प्रागमें क्षेत कुम्मपर परावान् बहुनको स्वर्गित कर 'स्थापत्री' मन्त्र तथा 'आपो है हा॰' (स्वपु- ११।५०) इन मन्त्रोसे उन्हें सहन कराना पाहिये। उसके व्याप्त तेल, पुष्प और धूप आदिसे मनपूर्णक उनकी अर्थन कर उन्हें क्या, नैकेड, दोद व्याप्त करन आदि निवेदित करना चाहिये। प्रतिष्ठाके अन्तमें करा कर वक् प्राह्मण-दम्पतिको धोकन कराना चाहिये। व्याप्त सम्बद्ध वक् मण्डण व्याप्त उसमें करनावदि व्याप्त कर्ने। उसका नारायमके व्याप्त वरमा, दिख, पृथ्वी व्याप्त त्वन् कर् मन्त्रोते पूजन करे, व्याप्त वद स्थार्लियक-विकासके इसमके स्थि कुरावदिकास करे। भगवान् वरम्बद्ध व्याप्त कर्म सुवकार उन्हें 'करमास्त्र' (पञ्च-४। ३६) इस्वाद क्योंसे दस उसकी

दे। उस्ती बाद विष्ट्यून् इयन करे और अपिकी सहिन्द्राओं के नाको करना इयन करे। तदनकर सभीको विष्यं और बाँछ प्रदान करे। इसके प्रधान संकरण-कावय काकर कृतका उत्सान कर दे। बाहाजोंको प्रविका गाय एवं बाँड कृतको प्रतिका करनी तो तो गांचा तथा करणदेवताको कल्प्यके उत्यर विधिवत् पूजा करनी बाँडिन स्वरण स्वर्थित व्यवस्था प्रधान संकरणपूर्वक कृतका उत्सानि व्यवस्था विधिवत् सम्बान्द्रिक करना स्वर्थित करना स्वर्थित व्यवस्था व्यवस्था स्वर्थित व्यवस्था व्यवस्था स्वर्थित व्यवस्था व्यवस्था स्वर्थित करना स्वर्थित व्यवस्था व्यवस्था स्वर्थित व्यवस्था व्यवस्था स्वर्थित स्वर्थित व्यवस्था स्वर्थित व्यवस्था स्वर्थित व्यवस्था स्वर्थित व्यवस्था स्वर्थित व्यवस्था स्वर्थित स्वर्येत स्वर्थित स्वर्थित स्वर्थित स्वर्थित स्वर्येत स्वर्येत स्वर्थित स्वर्येत स्वर्थित स्वर्थित स्वर्येत स्वर्येत स्वर्थित स्वर्येत स्वर्येत स्वर्थित स्वर्येत स्वर्येत स्वर्येत स्वर्ये

### पुष्पवादिका 🚃 तुलसीकी प्रतिक्वा-विक्रि

सुराजी करहते हैं — स्वयंत्वे ! पुन्तवर्धकारी स्थानन स्वरं । पुनाधिवाससे एक स्वरं व्यवंत्व स्वरं । पुनाधिवाससे एक पूर्व स्वयंत स्वरं । पुनाधिवाससे एक पूर्व स्वयंत स्वरं । कालदासर राजेश, सूर्व, केंग्र, स्वरं केंग्

तुरुसीकी प्रतिष्ठा ज्येष्ठ और आवाद विल्लं व्यिक्षिक भरती प्रतिष्ठे । प्रतिष्ठके दिन्ये ज्ञान दिन अवका एकदरी विधि होनी वाहिये। प्रतिष्ठके दिन्ये ज्ञान कर विल्लं दिन्यं, सिंध, अद्वेत तथा इन्द्रका पूजन करे। क्रायति-सन्त्र तथा पूजीक देवताओंके मन्त्रीहारा उन्हें बाल करके। 'अध्या निवाल' (सक्षु २७।३९) बाल सन्त्रसे क्राया 'अक्षु क्रायति' (सक्षु २०।३९) बाल सन्त्रसे क्राया 'त्राव कर्याति' (सक्षु २०।२७) इस सन्त्रसे बाल 'त्राव कर्याति' (सक्षु १६।१६) अविध मन्त्रीसे क्राय, 'जीवा तेन' (सक्षु ३६।२२) तक्ष 'विवर्षकी' (सक्षु १९।४४) इस मन्त्रसे दर्पण और 'वाः क्राविनीयां-' (सक्षु १९।८९) इस मन्त्रसे क्राय और 'वाः क्राविनीयां-' (क्रायुक्त १९।८९) इस मन्त्रसे क्राय और 'वाः क्राविनीयां-' (क्रायुक्त १९।८९) इस मन्त्रसे क्राय और 'वाः क्राविनीयां-' (क्रायुक्त १९।८९) इस मन्त्रसे क्राय अर्थण करे तथा 'स्रविन्द्रोन'

(यम्- २६ ( १) 📰 भनाते आहत् लगाये । तुलकार्यः पीले 🚃 अवेदित 🖿 🚟 करी और दूध और जलकी बार दे । कलक बन्न धूलसंबंधे कमारे पर्यापति आफादित कर क्त = क्य ( दुसरे दिन 'तक्किको: ( धनु- ६ । ५) इस 🚃 🚃 क्रिकेट्स्य महत्त-गानपूर्वक 💹 कान करके। यानु-पुजापूर्वक मृद्धि-शाद करे। 🐃 🎮 पदानीहरू बिल्ला होता और ब्रह्म अदिष्ट शरण करे। दस क्षानीक मन्त्रपूर्व गोरमकार केंद्रीका निर्माण करे और छहाँ पंगकन् अध्यक्तका कुछन को । स्कूटिंग कुछ घड, लोकपाट, भूगं और महद्वानोको पूजा करे। करवाके बार्च ओर हह और वसुओका पूजन को । कुछ-कविकार करके, तिल-यक्से हमन करे। विष्णुको उदिह कर १०८ आहीतमाँ दे। अन्य देशताओको पत्राज्ञरित आहुति प्रदान करे । पूप स्थापित 🛍 कर्मा विक दे । काईर्टिक् कदली-साम्य स्थापित कर ध्यानाएँ च्ह्रप्रये। दक्षिमाने 📖, हिल-धान्य एवं पर्यासनी भाष प्रदान करे । तुलसीको औरभाउ दे ।

कुछ देसे भी वृत्त हैं, किनकी प्रतिश्चा नहीं होती। वैसे—जबन्दी, सोक्कुश, सोमक्ट, पनस (कटहरू), कटक, नित्क, कनकचटरा, शास्त्रार्फ, निव्यक, विव्य, असोक अर्थित इनके अतिरिक्त भएक, शमीकोण, चंद्रातक, करू तथा सर्विद अर्थिद वृत्योकी प्रतिद्धा तो करनी चाहिये, किंतु इनका कर्णवेश-संस्कार नहीं करना चाहिये।

(अध्यय १४---१७)

### एकाह-प्रतिष्ठा 🚥 कास्त्रै अतदि देवियोकी प्रतिष्ठा-विधि

सुरुपीने कहा-भाइको ! काँख्यूको अस्य सामर्थवान् व्यक्ति देवता आदिकी प्रशिक्त एक दिन्हें 💵 कर सकता है। जिस दिन परिद्धा करनी हो उसी दिन विद्धान बाहान भुताधिकास कराये । जन सूर्व भगवान् उत्तरकाले हो 🚃 प्रतिहादि कार्य करने चाहिये। पसल अतुमे यहका आरम्भ करन व्यक्तिये। नारायम आदि मृतियोके बताल चेट है। गामन्त्र अहि देखकानेकी प्रताह विक्रिय कारूमें हो करने फरिये। ब्रॉडमान् मनून जिय-क्रिकामे निवृत्त होकर आध्युक्तिक कर्म करे। अनका प्राप्तमंत्र्ये मोजन कराये । 📰 यह-मुख्ये प्रवेश करे । 📟 प्रत्येक कुम्पके इत्या भरत्वन् गर्वज्ञ, नवाक राज दिवकलेखा विधिवत् पूजन करे। वेटीक्र मण्डल् विच्नु और उनके धरिकारका पृथ्य करे । सर्वप्रयान प्रत्यान विकास 📟 तीर्थ, समुद्र, नदियों 🚟 जल, प्रक्रमृत, प्रक्रमन, सह-मृतिकामिकित जल, 🗯 तेल, कक्क-इक्ट 🕍 कुमोदनारी आभ कार्य । तुरुती, आस, रामी, कार्यन समा करतीरके पत्र-पृथ्वीसे उनकी पूजा करे। इसके कर मुस्लि क्रेण-मिता सम्बन्ध करे। तत्पक्षात् निर्वपूर्वक हवा क्ये। महिलोंको एकिमाइय सेतृहकर पूर्वद्वति प्रदान करे।

वाह्मणो । अब मैं न्यार्टी जादि स्वापतिक्रोंको प्रतिका एवं अधिकारक्ष्मको संवित्त विधि कारण रहा है। प्रतिकाके 🌃 दिन देशीको प्रतिमान्य अधिवासन वर अध्युद्धिक श्राद्ध को। सर्वप्रका भगवतीको प्रतिमानके कारलक्ष्म अस्ति।

दिष्य, भीम एवं अपरिक्रवाण । सुराजी :::: है—सहजे ! :::: । ::::: प्रकारे

अपसमुनी, उत्पात एवं उनके फलोका वर्णन हा रहा है। आपलोग हाताम होकर सुनै। जिस व्यक्तिकी लग्न-कुन्हली अयवा गोचरमें पाप-महोका योग हो है हिल्ला ज्ञानि कार्यन व्यक्ति। दिव्य, अन्तरिक्ष और भीम—ये हम प्रकारक उत्पाद होते हैं। यह, पक्षा आदिसे जो अनिहली उनसंका होतो है कह दिव्य उत्पाद कहलाता है। उत्साकत, दिश्वजीका दहह पद्मकारमे 🔤 बनाये । कुम्भके उत्पर भगवती दुर्गको 🔤 को । तदमका पूर्तिको प्राय-प्रतिश्वा को । विरुध-पत्र

 शिल्व-करोसे से अधुनियं दे। दक्षिणामें सुवर्ण प्रदान करें। क्यक्ती कालिक और तहरकी प्रतिमाओंक अलग-

करना अर्जन करे। पगवतीको नाना प्रकारके सुगन्धित इन्होंसे सैन दिनसक सार करावे और वैवेदा अर्पण करे। स्वीकेंद्र करुद्वार सैन दिनसक सार:कारको देवीको अर्पन करे

किर कन्याओंक्षण सुर्थान्यत अससे भगवातीको समन कराये । अवस्ये दिव भी स्वित्ये विक्रेय पूजन करे एवं पायस-होम करे । अनुमंकि अमुसार शिवालिक्षणके प्रतिद्वार्थे आ

क्षेत्रन कराने और विशेषकपति भगवान्त्रे सामान्य क्षेत्रकाल कर्षः निरम-क्षिमा करके आध्युद्धिक कर्षः दूसरे दिन हातः अवसर्यका करण करे । विभिक्षे क्षात्र करे । विभिन्नेक सिलमपी या सर्वमयी अध्या साक्षात् क्षेत्र दान क्षा । इथलमी सामान्यिक सुद्ध मृतसे वसुधारा मदान करे । इसी सरह सूर्य, गर्भश, सहस्र क्षात्रे स्वामानी सामान्य करे । इसी सरह सूर्य, गर्भश, सहस्र क्षात्रे सहामाना, अध्यक्षत्र,

परकर्षाः 🚃 तथा 🚃 आदि महाहारिकपीकी

भी विधिपर्वक स्थापियं और

रहि-आगरन कर भारत् 🚃 करना चाहिये। 🚃

अतिहासे कुमारी-पूजन भी करना वातिये।

(अध्याय १८-१९)

### शासिके 📖 '

(मण्डलेका उटण, सूर्य-चन्द्रके वर्द-गिर्द पहुनेशाले विकासी देन), अकाशमें गम्बर्यनगरका दर्शन, सम्बद्धि, अन्यवृद्धि व्यक्ति असरिश्राजन्य व्यक्ति है। अस्यक्रमें, वृक्षी, पर्वती तथा पृथ्वीसे प्रकट होनेवाले पृथ्वन्य आदि उत्पात चीम उत्पन्न करकत करकाते हैं। अन्तरिक्ष एवं दिव्य उत्पातीका प्रमाय एक समाहतक एइता है। इसकी शास्त्रिके क्रिये गत्काल उपाय परना चाहिये अन्यया के बहुत कालतक

१-इन स्टब्स्टेंक IIII इनकी विवास विवास क्रिकेट क्र

प्रभावी सुर है। देवताओंका हैसन, स्वीस-स्वत होना, अकरपात विकली 📷 काका गिरना, हिसा और निर्देशताका बहुना, 🚃 आरोहन करन-न्ये सम देव द्वित्व है। मेमरे उत्पन्न कृष्टि केमरू दिस्तातरूपर ही गिरे के एक स्थापके अंदर उत्पन्न प्राणी नष्ट हो जाते हैं। एक खंदापर दर्शन, बंबल और सूर्य—मे 📖 स्थित हो जाने और नृत्यो 🚃 पुर्देशे कार्य दीको हो 🔤 जनसंदारको 🚃 💼 🛊 । **ा प्रस्ति अपने एतिका अविधार** को और प्रति **पा**ई स्थित व हो तो राज्य-वह विक्या सन्वयका रहती है। की सूर्व 📺 समयतक न विकासी है और दिवाओंने दृह होने रहे। क्यतेल दिकारी दे और बार-बार मुख्या होना हो तथा स्थाने जन-दिनमें इन्द्रबनुष दिखायी रहे ही बह्र उसके 🛗 📖 हुनिभिन्त है। प्राथमा आंधी-तुमान आ गान, महामा सामान पुद्ध दिवासाची है, तीन महीनेने ही दूसरा उदान क्षण कर अथवा इल्प्राचान हो, जानाथा और चुनियर बेहन खेहने रूपो, 🚃 🚃 वृद्धि हो, प्रवर्तने 📖 🚞 अस्त्रीते व्याप्ता पहे 🖥 तहारे सुर्पता 🚟 

मृहिणी छः स्थान अंदर नष्ट हो अशी है। स्थार स वृक्षपर विवासी कार्यक्रकार मिले और आगवी ज्यारवर्षे दिसामी देनेपर महान् अस्ता होता है। इन सम्बद्धे स्थानिक

देवताओंकी मूर्तियाँ हैसरी हो, मूर्तियोने पताण क्षेत्र पढ़े स्वर

पहेंमें अथवा परने सर्व और पन्युक्तक प्रसव हो जन से उस

करे । किन एवं प्राचसन् सूर्वको प्रसारता-हेतु उनकी पूजा करे । किन एवं प्राचसकी दस हजार आहुतियाँ प्रदान करे । गो-दान करे और साहाजीको दक्षिणा है । इससे स्टा

🌃 है। अध्यक्ष ध्यक्ष, खन्म, एक तथा सिंहासनसे

तक्द और जैसी हेरीयाँ सहसा तृत हो जारी, यही, पूथ, ■ जिर्म प्रकारोंने संबद दिखरमधी पड़े, एकाएक वार्ने आग-वैसा लगन दिखाने हे, बिना कदराके ही बिसारी पामको राने, वरके सभी पह तथा समुख्य रूप्य-मे दिखानी पड़ें, तो पहल करने जाना उरकार समझने चाहिये। इनसे राना, असरक तथा जिल्ला प्रमुख्य विसादा होता है। ऐसे भवंकर आजिता देखकर पहलाको प्रतिकास रिस्ट दही, पथु, पीसे पूछा कीर और मूल्लाको सामको राज्ये दही चाहिये। विस्त ३।१२) इस प्रकार दक्ष स्वार आकृतियाँ देनी चाहिये। विस्त

व्यक्ति । इससे ऋति होती है।

वैदे यद करने पूर्व कामान समें दौरने लगे और कुते तथा मुक्तर करनर करने लगे तो उस वरनी विद्योको कीवण केमा उन्हांको असी है। गुरुखामीका पूर्णतः विद्यावादी केमा उन्हा कामक काद-विद्यादने कैसन, वरने मौओंका किस्तकत, पूर्णाका हिल्ला, वरने मेहक तथा साँपका जन्म केमा ने सभी उसकत मुक्तकत्वन है। इस उस्पातीकी प्रवक्तिके

सोने च तमिनी मनुस्तानी प्रतिमा main दानमें देने

िर्म मुक्तवारके दिन सुध महके उदेश्यमे दाहे, असु, धी तथा अपनार्गकी समिषा एवं चक्ते 'सञ्जाकक' (क्षुक १५।५४) इस मनद्वारा दस हजार असुनिर्ध देवी कालि ह मुक्तवी सुवर्णकी प्रतिमा तथा प्रवश्निकी मान ज्यानको दानी देनी चाहिये।

पर्युश्नीका अवस्थान आहान और उनके व्याप्त संतरियोकी स्थापित भी, जिल्ले अवस्था स्वाप्त सुन के जाना, गृहस्तामका सकता सूरका स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त सकता सूरका स्वाप्त क्षेत्रका सकता सूरका कार्य करून, ये सभी देख वहाँ दिवापी हैं, वहाँ कः वहाँ के प्राप्त करून, ये सभी देख वहाँ दिवापी हैं, वहाँ कः वहाँ के या कुटुकार्य करून होता है — वर्ष क्षिण सर जाता है या कुटुकार्य करून होता है तथा अनेक ब्यापियों उत्तर होती है। विस्त्र स्वाप्त होता है वा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त करून होता है । विस्त्र स्वाप्त स्वाप्त करून होता है । विस्त्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त होता है । विस्त्र स्वाप्त स्

राश्वसक्तरा वर्षेत्रा जल पीनेवर काला हेना; विह, वार्थर, विल, वार्थर, वार्थर वार्थ वार्थर, वार्थर, काला वार्थ्य वार्थर वार्थर, वार्थर,

मन्दिरकी जमीन गाँद रक्त वर्णकी अवस्था पुण्या दिकलभयी दे को वहाँ भी उत्पातको सन्त्रका **। ।** साकाशमें जलती हुई **। । दिकामी दे । वर्श-पृथ्योगी । ।** 

शामीपत्रसे हवन को तथा दो सफेट क्या, प्रवस्कित केन गी.

और स्वर्णकी शुक्रकी प्रतिमान्य दान करता चाहिने ।

और सहये विकास सम्बद्धना होती है। सभी ओवॉमवॉ और सरव रसकितन हो जार्य: इत्यी, ओई, मतवारे होकर हिसक

 कर्षः सम्बद्धः स्थिते नगर तथा गाँवमें सभी सन् हो आर्थः
 गौ, चरित्र अबदि पञ्च अन्यपास उत्पात मचाने लगें; घरके इरक्कोंने चोड और अस्तिनी प्रयोग करे तो असम समझना

च्चित्रेः इससे छन-प्रेक्न और चन-सनि होती है। ये उत्पन्न अनिकार्यनेत समझने चाहिये। व्याप्तिक रिज्ये सम्बोत्तिक व्याप्तिक समझने चाहिये।

(क्यू॰ १६ । १२) इस क्यारे दस इचार अस्तुनियाँ देनी व्यक्ति और वक्से थी इचन करना चाहिये। मीरने सकसा व्यक्ति गय, दो वचा, धोना, वांदी, सन्तिये सनिमा व्यक्ति

चित्रकोर विकास देश कहिये। बदरकोर गरवे विवा काल-चेली विकासपृष्टिका स्वतरकार देश, काल इक्स मुख्य हिल्ला-दुला विद्यालका देश, इक्स व काल इक्स मुख्य किया, दिल्ली विचारीका तथा चीत्री अल्कास हैन, इस बैलाय दुसर बैसके स्वाहरूस देश

ातार रिकार, ऐसे दोन होनेका देशमें पाधारी मुद्धि हैं। तथा काम रुप्त एवं विक्री प्रमुख हैं। वाचा है। वि और विक्रिया व्याप इन्द्र क्या पाका है, वादन पाका है विक्री है। वाचा अव्यापने कार्यार्थ संस्था दिवालायी पड़े तो सहसे महास्

त्रेष्णक होता है। ब्राह्मण वास्तां हुई अगा दिवासायी दे और सिर अध्यक्ष स्थारपर विवासी गिर जाप तो इसका जीवन दुर्वभ हो जाता है। दरकारोंकि विभागत अवदा साम्वयर अदि ब्राह्मण भूग दिवासायों दे हो पृत्युक्ष थय होता है। आवदामें

क्यान्तर, अधिनके ज्यात्मके पंचय युआं, नगरके प्रध्य किसी अन्तर्के पटनाक दिस्तराची देवा, राज से जाते समय अस् प्रथमक उठकर केंद्र काना; क्यांपित सिमूका गमन करना; मूकन, अभिने मुकान, सामान्या होना; विना समय वृक्षेणे

कर-पूरू रूपन — वे सभी ==== वहुबन्य हैं। इनकी इक्टिके === दरी, शबु, भी, दूब, जबता आदिसे प्यापा विकार (अकु २७। १९) इस मन्यद्वारा रविवासी दिन दस

श्रम्बर राजुरियाँ स्कुके लिये दे, चरसे 🚮 साम करे। पर्यास्त्री करिता गी, अतसी, तिल, शंस और युग्मसभ्र स्थानको कर्ता दे। करणहोग 🖩 करे। इससे सारे दोश-पाप

नक से बार्ड है।

यस्यवर्ण, सुरीय 📖 🕽 🕒 दिखा, चीव

यदि अनुष्य, गृथ, सीय अस्टि चीवन वाले काहे हो रूप 📟 उस 📰 हे 🛮 उन्तुकी उन्होंने 🔛 🐛 🚃 📗 आगके समार कृतकेतुका 🚃 🚃 क्ष्मीनक विकासन मासून होना — देखी विकास एक विदेश होता है, राज्यमें अस्ताल पहला है तथा अनेक प्रकारके अनिह होते हैं। इनकी एक्टिके निम्ने अर्लकानुक स्वय फेड़ेसे मुक मुर्वमञ्जूष करकार सहायको दान को । मिल्लव्ह धी है, ऐसू भवारे इतन गरे । 🜃 अन्यत्मान् प्रातः, धारः, धारः, धारः,

कारत अपेट पाके अंदर ही उतका ही से ने राजी नेतृतहरूका होन है। हरको स्वधिके दिले 'सम्बद्धाः' (पानू- ६। ६०) इस मन्त्रसे रही, मभू, पृत्रके राज राजर अवस्थित दे तथा पर को 🚃 करे । 🚟 भवतः 🚃 🕬 , भक्ष, वेजुक्ते

क्या स्थार स्थापनं का करे। र्राक्षण दिसाने अपने स्थाद 📖 पैरोड एकाम 📟

30 जान और क्षापने के का चौर कि विकास में है जानक किम-निवर कपाने किस दिवारकार्ध है तो देवलेकारिकी स्वापनी चीवर ही पुरसुक्त अवसंख्य होती है। सीउप, निरस्ते, खेळ

तथा 📰 में मैचून दिवलको दे तो ये धुनिक गहुक्य क्रमात है। इनको इसन्तिक लिये इसन्यार्क दिन सनिके निर्मात दम इसक् आहरियाँ देनी चाहिये। अर्थ-पुष्परं जनिर्धा पृष्ट बरे एक बरने सी बर आहुने दे : बाप और देवियके अगसे 🔤 ब्यू, हैं। तथा अवैदाने सम्दन हो के इससे मृत्युका पर्य 🔤 है। चड मोनाश्चारिक दुनिनत्त है। पुरवक, पहोपर्वत, क्त 📰 हुन्-बोक्ने अल्प रूप 📰 🖥 🐃 सूर्यक्रक युक्तिका है। 🕮 स्वतिके रिन्ने सुर्वक विभिन्न विश्वयुक्त क्षेत्रके कुकेने अवहरियाँ देने 🚃 । किर वहीका दुर्गिनिस दिश्वत्वची हे, इसकी 📰 विशे 📰 सभा उसके

अधिका विश्वपूर्वक पुरुष-कृष्ट-कृष्ट्य- 🚃 🚃 बाह्या प्राप्टिये । 🚃

अपूर्वत 📟 १ वर्षके देव 🔤 🛊 📟 🖡 🚃 क्रमान्यक्री स्थानेक निष्यक्षे समुद्रात हो बरने पहिचे ।

इसके प्राप्ति पात होती है और सम्बंधिय करूपाल-बहुत्त होता

(अध्यय ६०)



a स्थानकर्त, कृतेच 📖 सन्तृति अ

।। पविष्यपुरानासारीत सम्बन्धर्थ सम्पूर्ण ॥

#### 📰 बीवस्थाले 🕶

# **प्रतिसर्गपर्व**

(प्रथम खण्ड)

्यासको भविष्णपुरायके व्याप स्थाप प्रतिक्ष प्रतिक्षित प्रतिक्षित हैं। वेशानुवर्धित सभी पुरार्थक सुमार स्थाप है— 'वंशानुवर्धित क्षेत्र प्रतिक्ष प्रतिक्ष स्थाप सभी पुरार्थ क्ष्म स्थाप सभी प्रतिक्ष सभी प्रतिक्ष स्थाप सभी प्रतिक्ष स्थाप सभी प्रतिक्ष स्थाप सभी स्थाप स्थाप सभी स्थाप स्याप स्थाप स्थ

### सामपुर्गके राजकंतका धर्मन

पारायको प्रमानका को सैन क्रीकारम् । स्मानकार्यः स्थान को अन्युक्तिकेत् ।।

'धारमान् नर-करायकांक अवसारमानाम धारमान् श्रीकृत्यः एवं उनके समा कानेष्ठ अर्थुन, व्याप्तः व्याप्तिक वर्षन करनेपारी धारमाने सरकाते ह्या उनके परितेका वर्षन करनेपारे नेपायकां नकावतः धर अञ्चलक पुरन, ह्याप्ति और महाभारत ह्या जन नकते व्यापीतः प्रभोका कावतः अरहत पातिके।'

महायुनि आत्वासं इतिकासीने युक्त---वृते ! स्वासी आयुक्त दसरावेने स्वासी करके महाकरको स्था स्थि सिसरे दिन नैयकत स्थास करकारके अञ्चलको सम्बद्धको वृति--कीन शर्मा हुए ? अन अनके चरित्र स्था स्थानकारकार

स्वाती बोले—बेतबायावरूपं स्वादं ब्या डीस्से दिव स्वातं मुहुर्विक प्रतम्भ डीनेक पदास्थ बैकसल पन् असम बुद् अपित सरप् नदीके सरपर दिव्य सौ क्योलक तपस्य की और अस्त्री श्रीक्षो उनके पुरुष्णि एक इक्यापुरुष सन्द हुआ।

**व्यक्ति वर्णनो इन्हेंने दिवन अन्तरी अहे को ।** राजा भागकम् विष्युके परम पक्त थे। उभीकी सुमाने 🚃 📰 इक्ट क्वेंटक राज्य दिखा । 📰 🖛 निकृष्टि हर, 🔤 🚾 इश्वाहरो से 🗎 का अर्थात् 🚟 🚃 मैं 🛮 🚟 एक 📟 ने 🚟 प्रश्न गर्म । 🔤 🖷 रियुक्त 🚃 और 🚃 नो 📖 विकृतिको सौ वर्ग क्रम স্বৰ্যন্ উঠক 🚃 📖 দী ক্টাক্ত ক্ৰম ক্ৰিম। চপ্ট পুচ क्यून्ट्रेंग पूर् । 🚟 🌃 प्रस्त 🛍 🖥 🚟 एन्ट् किया। उनके पुत्र 🚟 हुए, उन्होंने पैबीन हम्बर कः सी प्राप्त विस्था । अनेनाके पुत्र कृष् नामसे व्याप्त हुए । 🚃 🔤 इन्हर 🔤 🖩 वशीतक राज्य 📖 और 🔤 पुर 🚃 🚃 📰 🚃 🕳 वर्गेतक राज्य किया। उनके पूर्व असे हर, उन्होंने 🔤 सका गीन सी क्या किया । उनके पुत्र भारता शुरू, किन्होंने 🔤 हमार हो 🔣 क्वेडिक दान्य फिक्स । 📖 पहासके पुत्र कुल्लास हर, 🔤 🔤 एक सी 🔤 📹 । उसके पुत्र अवस्त्र हुए। (इन्हेंने सामार्थ नामको नामरे 📟 भी 🖟 उस 📖 सन्वपूर्ण 📖 परस्किमे धर्म अपने तप,

श्रीच रथा तथा करा वारी करवेशे विद्यान था। इन सकी इश्वापुर्वासी स्वापनी अध्यापत्तको अश्वापत्तकोच सन्पूर्व पृथ्वीपर मीति एवं वर्वपूर्वक स्टब्स क्षित्र । न्यापित आधाने पैतीस हजार विश्वाप स्टब्स विद्या । इनके कृत वृह्यक तुर, उन्होंने वीतीय हजार से विश्वापता तथा व्यापनी

महाराज पुजरंग्याको पुत्र दृष्ठाचं हुए हिंदि हान महाराज पुजरंग्याको पुत्र दृष्ठाचं हुए हिंदि हान महाराज को कम आर्थन् तैयोग हान हान महिला हो को क्योंक हान हान हो को क्योंक हान हान हो को क्योंक हान हिंदि हान हो हिंदि हान हान हिंदि हान हान हिंदि हान हान हिंदि हान हिंदी है।

असर् 🖟 व्यास्त्री सामा विरुप । उनके पूर व्यास्त्री कृत, अवस्ति

अपने 🚃 एक 🛮 🕊 कम अर्चन् 🚾 🚃 नक औ

त्रवर्षने स्था । स्था विकास । प्राप्त । स्था विकास । स्य

हर्षन्त्रकारे एक हुए स्थाप वास प्रत्यक्षे एक हवार वर्ष क्षा अर्थात् योग हतार वर्षेत्रच क्रम स्थाप स्थाप पुर वसुम्बर् हुए, उन्होंने उत्तरे एक हवार स्थाप का अर्थात् का हवार वर्षेत्रक राज्य स्थाप । तटकार स्थाप स्थाप काका

क्षेत्रक राज्य कर्त्वः असम्बे चितृत्वेकको पत्ते गर्व । अस्पत्तर

पुत्र पुत्रके, उसने आपने विद्याने एक इन्यर III IIII आर्थन् प्रेन IIIIII पर्नेटक श्रम्भ विज्या । उन्यक्त IIIIIII स्वय-पुरस्क दिलीय IIII शन्तक क्षेत्र रूपा ।

मझरूप व्याप्त हुए, वे सकते व्याप्त एक स्थार व्याप्त अर्थात् दो 🚃 व्याप्त करके सार्व करे गरे। उनके पुत्र विशंकु हुए और उन्होंने यह एक स्वार वर्ष एउन किया। एकके करना एक जिल्हा संस्थान प्रम किया। इनके पुत्र ऐतिया हुए, इन्होंने और इसर सर्वेतक एका किया। इनके पुत्र ऐतिया हुए, इन्होंने और इसर सर्वेतक एका किया। इनके पुत्र का सार्थी था। सार्थ विश्व भी विश्वके क्यान में देवियारताक एका किया। सार्थ पुत्र केषु पुत्र विश्वक हुए। इन्होंने भी विश्वके दुवन सर्वेतक एका किया। उनके पुत्र कर हुए उन्होंने भी विश्वके दुवन सर्वेतक एका क्या किया। ये इनके क्या विश्वकृतक में एवं इनकी केम सहुत सार्थ सार्थ में इनके एका विश्वकार में एवं इनकी केम सहुत सार्थ स्थान स्थान का स्थान की। उस साथ सरस्युगास पूर्व को विश्वकार का।

सार्वकृति पृष्ठिय परस्के क्यां एवा क्यां प्र प्राचित स्था हुए। वि विकास तथा सर्वाद-सम्बद्ध थे। प्राचित हुए। कृतियोग तीत प्रवार कर्तेत्व क्यां एक-सरक्ष प्राचित हुए। कृतियोग तीत प्रवार कर्तेत्व क्यां एक-सरक्ष प्राचित क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां पुत्र पुत्र थे। व्यक्ते पुत्र श्रीकृत्व हुए। क्यां विराधित क्यां विराधित पुत्र क्यांश्म हुए, विराधि क्यां प्रवासित राज्यो गुत्र । स्वत्यय संपत्नी असमे क्यां आहे पूर्व । वर्गारकोर पुत्र कुत्रतेत हुए। स्वत्यय संपत्नी असमे क्यां क्यां प्रवासित्वा विवास स्थान क्यां व्यक्ति स्थान स्थानित्वा व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति स्थाने स्थानित्वा व्यक्ति स्थानित स्थानित व्यक्ति स्थाने स्थानुकार व्यक्ति व्यक्ति स्थानित व्यक्ति व्यक्ति स्थाने

सरकारों कहाँ वरणी महाराज अन्यविके पूर विश्वादिक हुए, उनके पुत्र अवुरुष्ण, अनुस्तरके पुत्र अनुस्तर्थ, उनके पुर व्यक्ति तथा विक्री पुत्र व्यक्ति अनुस्तरके वरणायको पुत्र अञ्चल (सीहार) ज्यावस पुत्र प्राप्त हुआ। वीहाकारको वे वात एका बैकान कहे गरे है। गुरुके हारको सीहाको अनुस्तिकी अनन्द प्रमूर्ण क्रम गुरुको सार्गरित कर दिया। योकर्ण सिम्नु-एक रीव प्रमा करा है। श्रम पुत इरिक्रमां सामुओं पूजक ये। उनके पुर दशास (अध्या) पुर, पुत हैरलिए (अध्या) हुए, उनके पुत विकास हुए, अध्यान कराया । अध्यान अध्यान कराया । अध्यान हुई, विससी । विनह के अध्यान सरोपर पहर्मि सीरहर्ग । विनह के अध्यान सरायहर्ग साम कर मुक्ति । उनके पुत्र विकास सुद्रारंग हुई। यहामानि सुदर्शनो क्या पुत्रके पुत्र उन्होंने । यहामानि सुदर्शनो क्या पुत्रके विवास । देवीके अस्तार्थ हुआओं । अर्थकुर्वक सरपूर्ण करायाहरूर

हैंद श्वामें महावारोंने छवा सुदर्शनसे नथा—

1 कुन अपने स्थाप महार्थ अदिशे

हार्यवार होनार हैंग्यररपार स्थार स्थार स्था; द्वीप

प्रमान हों अदि स्थार स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप हों स्थाप स्थाप स्थाप हों स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्थाप

# साकुम्ब सूर्व एवं 📟

स्तानी चोले—स्वस्ते । वेशान करके सुर निर्माण करके सुर निर्माण करके स्वाप्त अर्थ । स्वयंत्र स्वयंत्र प्राप्त अर्थ । स्वयंत्र स्वयंत्र मिक्सेक्से व्याप्त स्वयंत्र प्राप्त प्राप्त स्वयंत्र मिक्सेक्से व्याप्त स्वयंत्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्वयंत्र मिक्सेक्से व्याप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्वयंत्र स्वयंत्र स्वयंत्र मिक्सेक्से व्याप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्वयंत्र स्वयंत्र । स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स्

कुर आर्थित, व्यास्त्रा निरम, व्यास्त्रा पुर मर्गा बुर, मो 🚃 परम 📖 थे। 🚃 📺 मन, भगरे पुत्र पुष्परेष, प्राप्त पुत्र शेलवन्ता, श्रेमधन्त्रके विकास और देखनीयके कुत्र अवस्थित एक अवस्थित पुत्र कुत्र हुए। हन्हेंने 🔤 🛮 🚾 मैललक कुरवेर वस्पा। कुरके पुर चरिका, व्यक्त धरात्मात, मरनमरुके पुत्र उपन, अनेक काराणि, वारायणिके पुत्र सञ्जानाथि और बनके अपूर्वनाथि कुर्। व्यूत्वतानिके कुत्र विश्वयतः, 🚟 स्वर्गतापि और सर्वजनिके कु कुमोन हुए। कुमोनके कुर शुवसन्ति तथ बुक्तक्रिके पुत्र सरवर्ण हुए। अवस्थित पुत्र श्रीस्थवा, जीवानको पुर 🔤 🔚 उनके पुर अधुक्षा हुए। प्रमुक्तके कुत सुर्वीय हुए। उन्होंने वृष्णीके एक झोरसे दूसरे क्रेस्टक कम्प किया। इनके पुत्र अमर्पण हुए। उन्होंने पिताके समार राज्य 🔤 । 🚟 कुा महाथ, महाध्येत कु। 🊃 और इसके पुत्र मुक्टेकन हुन्। कुटरेक्सनके पुर मुक्केप, उनके माराज्यतः और उनके पुत्र कलाव्यूतः हुए । वसाव्यूतके पुत्र राज्य

वर्णन

🛲 🏥 कुन्नमे दस हका क्वेंशक राज्य 🔤 । कुन्नके

१-तम पुरर्शनके मिन्द्रा कथा ऐसंभागमध्य तृत्रीक विवासी प्रकृतिकी है।

२-वे नक क्यानोके की आराव भएक महस्त सामे 🕮 है।

नेत्रपुर्णके हुर्वीय करणके अध्यक्ते व्यक्तात ३४ मधी : देवराज १७६२ रोडिणी-पति चन्द्रभावते पृच्छीपर मेळा। चन्द्रकाने शैर्थरमः 🚃 अपनी राजधानी करूपा । वे शपकान् विष्णु तथा भगकान् 🌃 अस्ताधनामे तत्त्वर रहे। 🚃 महामाधकी प्रसारतको लिए उन्होंने ही यह किये 📖 अञ्चमह हवार वर्षीतक राज्यकर वे पुन. सर्गत्वेक वक्ते गये : क्षत्रकोते 🔚 कुम हुए। 🊃 📰 १००४ 🚥 निर्मिष्ट हुन्य, जिल्ली पुरस्ताको सरका हुई। राज पुरुष्यने चैदंव क्या व्यक्तिक पृथ्वीपर प्रकार क्रिक। अस्ते भगवान् विश्वनुधी सम्प्रधानमे वत्तर रहनेवाला सामु चानक **१५६ धर्मतम पुत्र उत्पन्न पुत्रब**ः महत्त्वम आनु क्रतील हमार क्वीतमः व्याप्या गन्धर्यस्त्रेयको प्रश्न करके पूर सर्वार्थ देकको 🚃 आनद भोग को है। आयुक्ते पुत्र हुए स्कुन, मिन्देरि अपने 📖 मनत्त्र हो धर्मपूर्वस पूर्णानः सम निमा । तदनपर उन्होंने इन्द्राश्यां अञ्चल की विवासी अपने अपीन कर रिज्या । फिर बाटने नहाँ दुर्वकके रहक्ते पंजा नहुन अकगर हो गये। इतके पुत्र कवाति हुए। कवातिके

पुत्र हुए, विक्रिने सैन पुत्र महेन्द्र देशीके सासक हो नवं<sup>ते</sup>। सेन को पुत्रेने स्थापन स्थापन क्या पद् लोह ने और पुरु करिष्ठ। उन्होंने सर्वेग्यल तथा भगवाद विकारि प्रस्करने स्थापन से वैक्रुप्ट नके नवं।

न्दुके पुत्र सोट्टने सात हमार वर्षीतक राज्य किया। स्टेड्डेंचे पुत्र वृत्तिका हुए, क्वॉले 🔤 इसार 🔤 वृध्योधा उज्यन निरम्प : **व्यक्ति स्वाहार्यन नामका 📺 📰 हुआ** । दनके एर 🔤 🜉 और 🔤 🚃 🕵। अर्थन्दको 'जन्द्रविकारण अवस् काका पुर 📖 हुआ। 📖 🚃 🎆 🌃 इस 📖 📕 हुम । सके 📗 अन्तिक 🎆 तथ **प्रविद्यानके पुत्र कारतिसु सूर** । उनके पुत्र 🚃 हुए, 🕍 अवस्य 📖 पुत्र इस्तत हुआ । स्वयंस्के पुर 🔤 दूर। 🔤 सथ 🗪 पुर 🗪 दुश । उसके पुन पुरितकेण पुन् । पुरितकेको पानासमें निकास करनेवारी पुर विकास पुरेश होता. विकास पुरेशका व्यास 📖 कुरत । 🔤 पुत्र व्यवस्थित कुर, जो देखेक पतः थे । उन्होंने क्यानेक **प्रीक्षानपुर (ब्रिक्ट) 📱 💷 🚃 फ्राॅरि**क्य ग्रह्म 🚾 🚾 अर्ग विकार गर्ग । 🚾 🚃 करभेजः (पथम) पुर और स्थल) पुर प्रक्रियम् हुआ। प्रीप्रकार्यः 🚃 🔤 हुर र 🔤 पुर 📖 हुर, नभावके 🙀 भारत 🚞 अने 🚃 🚃 🛮 🚆 । सुकृते 🖫 स्कृतः, 하는 것이 1000 시간 1000 원 1000 원 100 भाग्यदेखे कुत हेम्बर, उसके 🔤 🔤 और रचीनरहे पूर **भूगण कुर । मूलफांक पुत्र 🚃 सूर, फिन्होंने** विमालक ज्योतन्त 🚃 📰 📰 सी स्पेतिक भवस्य कारोपर करकार् सूकी 🛲 📖 🚃 क्रम्याहे हताह भिष्य कर दिया। संतुष्ट क्रेक्स राजा 🚃 धूर्यलेक चले न्त्रे। 🚃 🚃 प्रचानमे प्रैतायुगका अना समय जनीयन के 🚃 🚃 चरो समुद्र उसक अपेर अलक्का **दृश्य उपनेका हो गया। दो अर्थे**नक पृथ्ही

१ - अन्य सभी पूर्णिने पूर्विकार परिषय वर्षत है। पूर्णिके अनुकार पर देविपुरे som tilles प्राची विकास प्राचन का छे हैं, विक III पूर्णिक अनुकार स्विकार करीन पूर्व अर्थिक हुता है, जो अन्य करियुक्तक वर्षण अर्था है।

र-नेवरण्या 🚟 ने व्यवस्था आणि दशको अस्तर 🔡 हो ।

३-इनक पूर विकास मारम्यको 📟 अन्यकोष 💼 अन्य है।

प्रवितेसहित समुद्रमें विस्तिन हो । हंपान्यतेनैः प्रथानो समुद्रः सन्ता हो नवी । धगवान् सुर्वदेशकी सहक्रसे हातान संवदन सूचा गया, फिर महर्षि अगलको तेमले भूमि रचलीकृत होन्यर रीसने लगे और चीप 🎹 अंदर पृथ्वी कृष, दूर्व अवदिसे

म्बाराची राज्यी, भार्मी चरित्र और रोजों सन्मेकि सोमीन साथ पुरः पृथ्वीपर III गर्ने । (अध्यक्ष २)

### द्वपर युक्के कन्त्रवेशीय 📉 🚾 वृत्ताना

न्यान प्रोतकमे पुल—संस्कृतकः : 🚃 🚃 बताइये कि महाराज संबरण<sup>९</sup> किस समय कृष्णिक आये सह उन्होंने 🎹 समकाक राज्य किया 💷 द्वाधाने बीन-बीन रण पुर, 🚃 सम 🔣 बताने ।

कूल्बी खेले—महर्षे । महाश्व सम्बन्ध पहल्ले कृतन पश्चमी प्रचेदारी विधियो शुक्रमार्थे दिन मुनिवेर्ड साथ प्रीप्राप्तपुर (श्रुँसी) में आये। विकासी कार्र एक प्रस विवास मसरका निर्मण किया, जो डेक्स्नों अक्ष्म कोस क केन् विरुक्तात्राची रागभग था। महाराज कंपरूपने याँच केवल या बीस कोसके केको प्रविद्यानपुरको अवस्य सुद्धाता एवं सम्बन्धिक वसवा। एक ही समझ्ये (प्राप्ता पुः) वृक्ते बंदले उत्ता प्रसेन और पहुंच्येन एक समस्य जूनेन मध्य (मध्य) 🖥 🚃 कुर् । 🌃 🚾 अञ्चिक (दाड़ी रक्तनेवाल) मध्येस (अस्य, 🎹 🚟 ईएक) 🕸 शासक हुए । प्रमाधः प्रवाशीके साथ बनाओकी संक्या बहुती गयी । 📖 संबर्धने दस इक्टर क्येंड्स द्वन्त किया । इन्हें कर उनके 🔤 अर्थात हुए, 🔤 भी दश हरता 🗯 🚃 भिन्न । 💹 पुत्र सूर्वकार्यने निर्मात प्रशासकारको आचे सम्बद्धाः 💳 🚾 पुत्र की(व्याप्य)पन सूर्वपत्र कृपः उनके कृत कादिशकार्यन, कादिलकार्यनके कृत इप्राथमा और 📟 📰 🔤 हुए। इन्हेंदे 🖥 अन्द अपने पितासे कुछ कम ही दिनीतक बच्च विरक्त। दिवाकरके कुर क्या के किया के क्या है। भारतदारमके पुत्र विकासका, उनके पुत्र इतिरक्षकी और उनके पुत्र वैकर्तन हुए। 🎟 🖷 पुत्र अनेशियन, इस्ते 🔣 मार्तप्रकासल और मार्तप्रकासलके कुत विक्रियमें तथा उनके अरुपयेवण हुए। अरुपयेवलके कुत्र सुमनि, सुमनिके कुत तर्पणयत्र और 🔤 पुत्र वैतिहेचर्यन 🊃 नैतिहेचर्यनके पुत्र पित्रमानुर्वेक, उनके 🚟 और वैशेषको 🚃 (सम्बन्धे

कूर। 🎮 कुन केटमर्गन, 📖 पुन 📖 और इनके पुत्र करकल हुए। करकलके पुत्र महेन्कहरता,

मोन्याकृतको अञ्चलकोन, हनोः धर्मकल और वर्गकलो पुर स्थापक पूर् 📟 📰 स्थोरियर्थन, 🔤 पुर भवनवर्षाकः हर 🔤 🚟 🚃 🚃 पुरु

परनेहीके पुत्र हैरन्यवर्धन, 🔤 वातुष्यकी, उनके विभागपुरुक 🎟 🔤 📕 इतिकादु हुए। इतिकातुके पूर्व केर्रका, 🚟 🧰 कागरकसन 🔤 कागरकसनके पुर

क्रान्त्व कुर् । जिल्लामा पुत्र शाहरोत और उनके पितृपर्यन, उनके खेमरत और सोमदतके पुत्र खेनदी। हुए। सँमदतिके

कुत स्त्रेयकर्थन, जनके अवसंक, अवसंक्रके पुत्र प्रशेष और 📟 पुर 📖 हुन्। परायंत्रके पुर अपर्वात, उनके पुर

🚃 🚟 📰 अनुसंस्थ 🔤 अनुसंस्थाः कुत्र अधिसंस्य बूर्। 🎟 अधिकांस, उनके 📰 सन्तर्भस, इनके रास 🔤 🔤 📗 गुम्मस हुए।

न्यायन पुजनाची 🛗 शकुनात्मके भरत नामके पुत हुए, 📶 प्रदा क्षेत्रिकारी पृथ्ववे तत्त्व एको थे। महाराज न्यतने नक्का भगनतोनी कृषके समूर्ण पृथ्वीपर क्रांप्तर इन्कर क्योतक व्याजनी सक्तर्य अपने राज्य किया और अनेद कु महत्त्वतः हुए। महत्त्वरुके कुत्र करहात हुए। मध्यातके पुत मनुष्यम् दृष्, निवासः अञ्चलः क्ष्मीतकः पृत्तीयर सासन 🔤 । उनके पूर कृशका, अनेत पूर सुक्षेत्र और सुक्षेत्रके 🏢 पुर, 🔤 देश इसर 🚃 रूप फिया।

🎟 🔛 पुर पान्देश, पश्चिमके 🛍 शास्त्रीय हुए। इन्द्रेयने इसक होकर इन्हें स्वर्ग 🚃 किया। 🚃 🚃 🚃 📆 क्रानेन्द्र 🚃 📺 हुए, उन्होंने दस

हमार क्वेंटक चारतपर ज्ञातन किया । इनके पुत्र मच्चारीक हुए। मन्त्रसम्बद्धेक पुत्र विजयेन्द्र, बिजयेन्द्रके 🏢 सनुर्दीत हुए।

मक्किन स्टब्सेन इन्हरूनी व्यक्तसे मृत्यूचीके साम पुनः

मृतस्पर आहे और उन्हेंने तन बनुर्देशको जैतकर कृष्णिन 🚃 विन्द्र । इसन्तेयके पृत्रचेते 🔛 क्यव 💹 अन्य हुआ। इसनि ऐत्यत इश्वीकं 🚃 📺 होकर अपने नामसे हरितना 🚃 २७३७० 🚃 📖 । यह 🚃 योजन विस्तृत है तक सर्वपृत्ये तटपर 📟 🕏 । वर्ष क्रमेरि दस 🚃 🌃 निवस्तर 📖 विका । महरान 🚃 अवसीत, अवसीयके पुत्र स्थापन, स्थापनके पुत्र सुसम्पर्व और उनके 🏢 🌉 हुए। इनके 🔤 🖼 स्रोह 🚃 🚟 को।

🔤 समय मयुक्ते सार्था-नेतरी कृष्य 🚃 🧰 महासक्ती 📖 हुए। उन्हेंने मनकन् किन्तुके नरहको 🛗 प्रमार 🔤 राष्ट्रणं 🔤 असने अधीन 📼 राग कृष्णिकं पुत्र विराज्ञीत हुए, निराज्ञीतंक पुत्र दरकरे, 📟 पुत्र विवादन और विवादको 🔛 🚃 और 📖 पुर विवृत्ति हुर्। विश्वविके पुर चीवरण, 🔤 कुर 📖 🕮 नवरणे श्रीता 📺 । राजे पुत्र समुद्री, 🔤 🚌 🚟 प्रयूप्ति पुर देवरण हुए। देवरणंद पुर रेक्केंग, 🎟 पुर 📖 और मचुके पुत्र 🚃 🚟 छाने पुत्रनका बूर्। इन 🚟 📟 अयो-अपने विश्वके तुरूर 🚃 उन्य 📖 कुरूपसके पुर अनुस्य, 🔤 पृथ्येत 🔠 पृथ्येतके पुर 🚃 📖 इनके सामान्यम् और 🔤 🏢 🚃 👯 पुर बिब्द्रथ, इसके सुरभक्त 🔤 सूरभक्तके सुराय पुर । 🔄 सनीने अयो-असे 🔤 🚃 ज्या राज 🚾 । सुरानी पुर शरीबीय, रुग्ने क्यपनुष, 🔤 🚃 और 🚟 देवपेश्व हुए। इन सर्थने अपने-अपने 🌃 🊃 🌃 राज्य किया। देवनेकाके कुत शुरुवार हुए।

प्रकारके तृतीय करणके सन्तत 🔤 देवकम इन्हर्क श्राह्मसे आयी सुकेशी समग्री अप्सारके स<del>मग्री 🌉 📖 🌉</del> इन्होंने कुरुक्षेत्रका मैर्मान 🎟 🗷 भीत केवन किहा ै। विद्वार्गने 🔤 पुरवक्तेत 📖 है। व्यक्तम कुम्ने काई हतार 🚃 रूम किया। इस्ते 📺 जह, अबुधे सूर्ध 📟

सुवकं पुत्र विदूरण हुए। विदूरमके पुत्र सर्वाधीन, इनके 🚃 🔣 उसके पुत्र सर्मन हुए। 🚃 🖂 प्राप्तन-केन करों समुद्रतक का और इन्हेंने अपने विचके 🊃 व्यक्ति राज किया। मर्गको पुर अपूरापु हुए, विक्रोरे दक्ष प्रमा क्वेंडक राज्य किया। अधुरापुरे पुत्र अस्टेशन, उनके ऋश, उनके पुत्र स्वैसरोन 🚟 चौधरोनके पुत्र दिलीय पुरुत इत 📖 एकाओंने अपने-अपने पिताके पुरुष क्याताः राज्य व्यव्यः। दरसम्बद्धाः पुत्र प्रतीप हुए, हर्पनि पर्वेष इक्का क्वेंक्ट प्रकार किया। प्रक्रेपके पुर ज्ञानतु हुए और जानि एवं प्राप्त विकास साथ विकास करें विकास जनका पुर शरभ पुत्रक, जिल्होंने दो सी कर्वेतक राज्य किया । ज़रू कुर कुनु हुए, ज़क्का क्षेत्र से महत्त्व राज्य किया, कर्त्व पुत्र मुनिहर हुए, क्लॉन प्रचार भवेतक राज्य किया। मुकेकर (दुकेंकर) 🛘 साठ 🚃 एकर 📖 और ganipali (glodicis 🔣 dinite)is gar little 100 př. s

in and the particle of the last 👊 । 🛮 🛊 📖 💹 इन्तर्के राज्यों पुरः पृत्तेकों 📟 हुए। दुर्वेशको विद्वार विकास वारत परिवास वारूपा इन्हर्क प्रत्यमें गर्क, एक धगवान् श्रीवरिका अवतार पुरत्र । सीरे बहुदेवके इन्द्र देवनोके गर्नाते अन्ति अनदार रिन्ता ( 🖩 एक सी पेर्कत वर्गतिक पुत्रवेश सहकर उसके कर 📟 🔤 गर्व १ मान्यान् स्रीकृष्णका अवसार हायरके बतुर्व करणके क्षा हुन्य या

इसके कर इतिकानुस्ये अभिनानुके दुध परिवर्तने राज्य 🚃 पर्विकर्तके राज्य करनेके 🚃 उनके पुत्र जनमेतकने राज्य किया। उद्भारतः 🛲 🕎 🚃 स्तामा सरामीक पृथ्वीके भ्रमक हुर । इनमें पुत्र पहतत (सहकानेक) हुए। उनके पुत निवाल' (निकल्पु) हुए। उसके पुत्र बङ्ग (कल)पाल हुए। ननके पुत्र विकास और विज्ञाधके पुत्र धृतिनकन् और उनके पुत्र मुकेन हुए, सुवेशके पुत्र सूत्रीय, 📖 मसपाल, उनके बस्

<sup>्-</sup>विकित पुरावेंने नामक् वेतृत्वार विकास करते हैं। विकास करते का क्षेत्र हैं, विकास करतार, व्यापन संसंदर, विन्युहरूप इस स्थानिकांदुरण की वर्गदेशियों के साथ विद्युष्ट किया के हैं। विकास करतेल क्षाप किया को की की स्थित हैं।

२-इनके प्राप्तकारको हो पहेर होत्रावपूर्ण 🚃 📟 🚃 🖟 पर्न र स्थः 🚃 🚃 🚃 व्यक्ति 🚃 **भेगर परित्र थी। (निजुनुस्तर** ४।२१)

और मश्रुके पुत्र सुकारण (सुकारक) हुए। सुकारको पुत्र पर्यक्षित हुए। व्यक्तिको पुत्र सुनाय, सुनाको पुत्र नेकार्य, इनके शृहका और उनके पुत्र मृतु हुए। सृतुके पुत्र विकारकोट, उनके शृहका और उनके पुत्र महाद्यान हुए। इनके पुत्र अक्षतीय हुए, उनके पुत्र करवन, करकार्यक अक्षता, अक्षताके विकास करव

निर्माणकं कुत्र केवकं हुए। महाराज सेमक राज्य सोक्कार करणस्थान चारे गर्ने। स्थानि मृत्यु मोन्कांके हारी हुई। कार्यका कराति एवं कार्यकारी स्थानि एक कुत्र हुआ, विराध का प्रदेश हुआ। राज्य प्रदेशने मोन्या-यह किया, विराध मोन्यांका कियान हुआ। (अध्याप १)

### समा गोवा-माना मान्य प्रमूप परिवार

भीतको सूत्र---वैद्यासक स्वापुरे हे उस 🔤 व्याप-पद्म किया २ शुद्धे 🚃 💷 स्वापुरे हे

बीसूरपीचे कहा—पहलूने । 🔤 🚃 🚃 पुर 🔤 प्रतिकानुत्री विकासने थे। 🗪 सामा कार्य 👐 अन्ते । इत्यो देशका इत्या हो एक महोको विकित्त् उनको पूक्त को। सुक्तपूर्वक बैठे पूर् गुनिने राख स्थारको wit—rejumple in the day has been the परी गर्न हैं। पोप्य-पहले प्रधानी प्रवर्ध संपन्ने हुनि होने और उन्हें नार्वीय गति जन्म होगी। जातः शुभ मी<del>च्या या</del> नर्थ।' का सुनका एका उन्होतको अधि होको साल हो गर्ने। मा बिल्ल नेदा क्रिक्ट प्राप्त पुरस्कान क्षेत्र-पहले ह्यात स्थल कर दिन । 🚃 🚃 बहुन्केन यह-कुन्द्रस्थ निकास विकास सम्बद्धाना क्त राजने मोनबोनर इनन विकार 🚃 विकार दक्षिण देखर अभिनेत कराय । इस यहके प्रधानी उनके विश्व 🏬 व्यक्ति पर्वत प्रश्नी । प्रश्नी प्रश्ना व्यक्ति व्यक्ति प्रश्नी प्रश्नीत म्लेक्क्यूना (मोन्क्रोको क्लेक्क्रो) 🔤 प्रीव्ह हो गो । 🚃 पुत्र नेदकर् नमते 🏬 हुआ ।

प्रतेषक्रको व्या करिने ही राज विका था। व्या व्यान पर्वित कर कार्यन क्रायको पुरुष्ठ दिन वृद्धि स्तुनिरे कर होकर स्थान क्राय है गये। व्यक्ति करो क्रा—'हे ज्ञान। व्या केरकार्य दिन क्रायेने मेर स्थानक क्रायको है क्रार मेरे पिन प्रतेषको क्रायत दिन है। धराबार्य क्राय करो व्या पूर्वित अनेका दुन होड़ हो। अनेक क्रायेने क्रायकर में पूर्वित क्रायको पूर्व करोगा। अवहन क्राया व्या (होका) व्यावकार क्राया क्रायक्ष क्रायको क्रायको क्रायक्ष 🔤 वरीव्युक्तके इसको व्यूत अक्टर दुश्य । इसके पीतरक्त च्यानी अकट कुक दिलेखक विकास स्मृत

स्था नेटक्स्ने सुन्द कामा पुर दुश्व और दिन संबंधित से पर मृत्यों सार दुश्व (इसके और आसीमा देश सार कीन से गया व्यक्ति और मोन्योंका कर सहने १९० ( व्यक्ति को गया व्यक्ति केला स्थापन्त्री क्षेत्रकार व्यक्ति को व्यक्ति केला प्रमान् किल्क्ने व्यक्तिकार संबंधी व्यक्ति को ।

**कुरकी पूर: कक्-**मुने । द्वार मुन्ने सेराद इसर वर्ष केर कराने 🚃 एएक पूर्व अनेक वर्डनिक्त कार्यन्त र्ता; या इसने सम्बन्धे बच्ची शुर और बच्ची बर्नसंबर एका बी हुए। अब इन्बर से भी से वर्ग क्रम चुनके हेन सह स्वरंतर 📟 🏴 🎟 देशके स्वारोधि प्रवासी असे स्थापनी । न्त्रकार्य स्था 🚃 अंदन, उसमी भी इम्पनते (प्रैय) देने हिरोदा स्थान व्यान्त्र्यम यहे है। हिरो प्रदान रूको पूर्वकाने का केतकल एक एकोर महकाब ल्याने स्थापन करवृक्ते 🖼 कार क्रीतपुत सर्ववय करनकर क्रीकंट कर अन्य । इस पूर्त चरिन्ने क्रीकरो भोवन 🔤 गूनर्यंत्र कोणे सर्पटका दुवित बायुपुत करा का कार दिया, निवाने विल्लुमी अद्या पंत हो तथी। इससी अनेक पुत 🚃 में 🔤 📟 कालने। 🚃 🚟 सब सर्ग न्त्र राजा के जिल्ला निर्मा पुरुष् विश्वको एक सौ काल कर्षको आनु वर्त्तर गयी है। उसका पुर अपूर 🚃 जिला 🔤 जात. पुरु कर 🛊 को फ़ास किया। उक्का पुत्र परिवाह पद् जिसमें पिरावहके सकत राज्य कियाँ बहरतार काना इतका पुत्र हुंछ, परावा पुत्र मानार हुआ । तक्को बिरद नामक पुत्र धुआ और अपने राजसे गगर 

क्षान पर अपने जन्मकाता क्षान प्रकृतिकाः म्लेक्क**वर्णसायम्** वह सङ्ग्रदेश सर्ग वटन कथा । इसमे हिस्सेने आचार-विचारका पाइन किया और देववृक्ष भी की, विद्य भी 📟 🚟 📟 श्रीत्व 🛭 📹 एकः पुनिवेदिः हार विन्तुपरित, अदेश्या, अदिसा, तस्तव और इंटिक्ट्यन—ये खेल्डोके वर्ष कड़े गये हैं। इन्हरूब पुत्र महोन्दरस हुआ। ज्ञाच्या पुत्र रहेन्छ हुआ, अन्तर्ने ज्ञाने जाने का विकास करमचर कारण गृह समय पुर हुआ, गुहुने सीन, प्रम और पर—रे की कु हर्। कु सामानाका स्थ विष्णुभक्त था। मिनो समय उसने सकते विष्णुका एक्टन का वित्त और **बाल श्रां**स कहा~ं कहा । सने, बाह्य माताने दिन प्रतन्त होगा । हे मतालेख ( गून जाने स्टेनोर्नेट स्वान व्यक्ति असे स्थान स्थान क्षेत्र हुन कहा क्रिकेशन व्यक्ति कर काओने । धनकानुत्री बाह्य अन्यक्त इसने 📺 सुदुद्द भीवरका निर्माण कराया, यो क्षेत्र स्टी हाथ सम्बद्ध ····· सभ कीई और संश कर देखें के और सभै संबेके व्यास्त्र थे। रिप्युरे असमें साह क्षेत्र कुल हुन हुन वंशयंकि साथ कर नायर यह गयन हुए क्रिक हुन्होंको कर्तास विकेत्य राज्यार वेचेचे पुसरच्या वृद्ध करावे। सम्पूर्व बात बिल्ल्ब करूने क्रीका हो पन्ना करे करूर 🌃 गरे, पृथ्वे हुन गरी, पर विकास परिता कारी-केट प्रवेशे क्रमा ही शह. वह भई 🚃 🚃 🚃 न्यानारी मुनिगन, अपने दिल्लीचे अन्य 🚟 विक्र और मुर्गिका रहे । 🚌 ची 📟 मैकाके स्था 🔛 🚃 गर्ने । संसारके रोज सभी 📟 विका 🖥 गर्ने । 📟 काल मुनियंने विष्युक्तकारी शुद्धि की ।

पुनियोंने बाहा — 'महावारनेको व्याप्त है, बाहा देनकीको नामकार है, निज्जाको पहारक्कोको, एकोरकेको और रेको, पुनवको एक स्वयुक्ता नामकार है। कामको, बाह्य और बाह्यको नामकार है। वाह्यकपुक्ते प्रकारको नेवोकि भगवर सन्दर्भ एनं स्वा जलानी बाह्यको एका पर उरणा हो गया है। मैर्स्स | दूस इस मयसे इस स्विक्टोको १६० करें।' व्याप्त प्रमार जलानी वृद्धको हुरत प्रकार कर दिया। विभावनको जन्मको तिथिका नामको धूमि एक वर्षये जनके इट व्यक्तिर स्थलके व्यक्ति दोक्ते रहती। न्युह अपने जनकोड सम्ब इस कुलिया अस्ट निकास करने रहता।

क्षेत्रकाने क्या — पुनेशर ! अन्यके कर १६ स्थार वि पुरु गर्मका है, ३वे अन्यके दिव्य दृष्टिके वक्षको जनकर कारको ।

कुरू केरे-परेन्द्र हुए क्या पूर्वपर्वेट भोगक राज मणकर् विष्णुको चाँछने त्येन रहने सरह, इससे पराकर विलाने प्रसार होकर काले पंत्रको पृद्धि की। उसने 📟 📰 संस्कृतके सहित्रंत योग्या-पायका 🖫 मान कर बहुता पृद्धिक रिन्ने सही<sup>क</sup> पायको अवस्थानको चना कराचा और उसने अपने दीन पुत्रे— 🌉 📰 रूप कर्म प्रमान प्रमान 🔤 प्रमान 🕬 🖮 🔤 क्यूनके 🚥 पुत्र कुर्-सुत्र, सब्द्रा, सर्द्र, कुकर, कुरलोग, 🚃 🚃 क्रेक्टर 🚃 शायकर अस्ता-अस्ता देश चौरद पूर्। कुछे 🚃 पुर हुए। 🚃 🚃 🔚 देश अभिद्ध हुए। यूक्कवे अलग-अलग संताने हरवेश, करत्वेश, 📟 और हुळ-इन बार क्रावेशे प्रसिद्ध हुई 📖 ज्योर 🔤 🗷 अलग-अलग् देश करे। म्यूकंट पुर प्रमा (प्रमा) में कर पुत बढ़े गये है—कुछ, निया, कृता, कामओं । पूर्णीर मध्यक्ष भी देश प्रतिष्ठ हैं । महाले कः कुत्र **११.—नवा, इमोल, सर्वत, उरागर, समारा**धा और महाबंदने निकास । इन्ली भी करूर, तिल, रोस्ट, अबंद, मुख्या सथित । गर्वे।

के आर्थियों विशिष्तंत्रके पूर्व कार का है। यस पूर्वाद इरको सर्व सीवह होयर प्रथमन् विवाह समयों कृतियों तिया (१९८०) समये अन्यों विश्वीयों क्षित्री परित्रों कार्योंकों क्षित्र की स्थापन विश्वास की स्थापन की क्षत्रीय है।

रक हुआ, उसने दो सी सैतीस वर्षीकर राज्य किया। उसके जून नामक पुत्र हुआ, विश्वके संदर्भ ही उतने राज्य किया। पुत्र महर हमा, उसमें 🔫 🗏 साउ किया । हे राजप् ! अमेक राजुओका भी उसने विकास किया गहून्य 🚃 क्षेद्ध धुन्ध, विसर्थ समार उसने 🚃 🔤 ठरके अविशय, नहर और सरन—वे III का हरू।

हे चुने । इस 📟 👫 नवकार हो 🚟 📟 वंत्रीक वर्णन किया। अस्त्रातीक प्राप्ते 🖥 राज ग्रेन्स-पाय-चर्म है गर्म और आसर्प अध्य 📰 हरू। अरिव्यूपर्व कृतवा कृतवा व्यक्ता व्यक्त वृत्त हो, व्यक्त की रंखेरमें ही इन केरिया वर्णन किया। बंग्यूट चया धरतवर्णने है किसे कर को सी<sup>1</sup>। अन क्वेंने मेन्क कर है अवस्य देनेकाले हाई ह

क्षाची कु: केसे—बर्गकाल मानुने केन्द्र ( तेन शरफ वर्ष करिन्तुनके मीच अनेका अवसी नतरीने उद्धा भागक एक एका हुआ और म्हेन्स देशने शबोचा करा करा कता का स्वात अध्यक्तिक सरूप भूते । हे स्वात 📟 करियुगरेत चीर अमेरर जोग्यासमध्ये अधिक पृष्टि हो और विश्वति अधिकांता भागानी भूति मोत्यानको हो 📟 📖 पाँच-पाँग्रेके मत २११ एके । स्वरस्थाना वट महामर्थ-देव 🖥 सुद्ध क्या का गुरु कारका व्यक्ति परेक्सेका आवार्य और पूर्व-पुरुष पान हकते अपने बद्धा सारे संसारमे फैरक्या। कांकपुरके अनेके प्रकार देवपुरा और बेदपान प्रायः 📰 📑 १९६ । चारुमें औ और-धीर प्रकृत और म्हेन्स-भाषासः प्रकार करून हुन : सामाना और महत्ताही--ये प्राकृतके पुरुष केंद्र हैं। कार्या और पूर्वांकार (अंतियो) म्हेन्स 🚃 पूर्व केंद्र है। इन प्रकाशिक 🚾 🖩 पार 🚃 नुवह पेट है। कहतमें धनीयको धनी 🌃 बुधुक्रको पुरा कक्क कार्य है । इसी मराजे प्लेक्क प्राथमि विश्वको पैतर-पादर और प्राप्तको कहर-महर कहते हैं। इसी प्रकार आहुनिको ज्ञान, अनुष्ये जैनु, राजधारको संहे, फारणुरको परावधी और **ार्का प्राप्तात प्राप्त है। प्राप्तमें अधेश्या, मश्रुत, काही** 🚟 पाँक सार पूरियाँ 🗓 उनमें भी अन्य दिया होने राग गयी है। सकु, 🚃 किल स्था मूर्व 🚃 थे अवस्ति and the state of the second **ार्काल सुक्रमें को है। यह ब्रोल्ड्स्मेर विस्त्रात है।** धारत और इसके क्षेत्रोंने प्लेक्क्रोका राज्य रहेगा, ऐसा सम्बाज्य हे युनिनेस ( अवस्तान इरिका सकत करे । (अध्याव ४-५)

# बाह्यको स्वाब्याय, देशिश आदि 🚃 पुर्वोका नामोल्लेख, मनधके राज्यंत और जैद राजाओंका 📖 जीइन और परमार आदि राजवंशीका वर्णन

**ग्रीनकशीने पुरा —** स्वरूपन । स्वरूपनि<sup>र</sup> स्टेन्क्यन 🔤 नहीं 🖿 सके, इसका करून कराने :

**पुत्रकी बोटो-**-पूर्व । **व्यास्त्री** प्रकारते के राज वर्षा पति 📰 सके । वहाँ कारकर करके एक 📖 एको 🖥 । वे वर्षिको 🚃 🔛 बोरानेका देवताओको आक्रमे 🔤 📟 महत्ववर्तने आये । उत्तरहः पर्य-पर्यापः 📖 📰 अवर्थवरी । उससे बाइकके 📰 पुत्र 📰 हुए, 📰 📰 इस इकार

\$---त्रक्रपार, चेरिका, फडक, सुह, मिल, ऑस्ट्रिजी, द्विपेटी, क्रिकेटी, स्टब्स्स तथा चतुर्वेदी। ये अपने नम्पके अनुकार मुख्याके थे। उसके पिता बरायाय, को संधी अनीसे न्यास्था और सम्पूर्ण केडोक ज्ञाला थे, उनके बीच खकर ठनों 📨 🔡 रहते थे : बस्त्रकाने कारणीयों जाकर कारकारणी स्पतानीको राजपुर्वा, अस्तर, वृप, धैव, नैरोता 📖 कुरुवारिके 🚃 संतुर किया। देवीकी खुरी करते हुए

१-पहरे 🚃 कर्न 🚟 उस था। 🚃 अस में इसस पूर बार 🖁 उस मुक्त 🚌 अपने अदिने पुर अपने 🚃 and है । क्षेत्रिके, इक्षेत्रीरमा, क्षात्रिका 🔤 कोली की <u>बाला</u> कहूंच अपने कांच 💷 । 🔤 केन्द्रुवर्धी बहुत प्रतेशन हुई, पर अर्थन, अस्त्र 🔤 हो 👣 है। व्यक्तिक 🛲 अंतरिक 📰 अंतरिक 📰 पुरुष 📰 का है। कुल्की गोध-धार संस्कृतने 🚃 🐃 थी। 📰 साथ प्रमुखंदि काम्युर्वोस्त संस्कृति व्यवस्थास सहय सामा है । वेतिकारितिकार क्या एउट्सिने अपने-अपने कोलोने इनके अनेक अनुस संस्था - 1 to

६-अवस्थां कुरस्तानों 🚃 उसरे 📖 है, 🖺 विक्रांति 🔤 🚃 🖳 🖼 🖼 🚾 🚾 🖫

स्वश्यमं सहा— मातः ! अस्य स्वरं म्युक्ता अस्यकी करूणा क्यों नहीं होती ? देखि ! अस्य स्वरं मंस्करकी माता है, फिर मुक्ते क्यान्ती बाहर क्यों मानती है ? देखि ! देखनाओंकि स्विधे धर्महोतिकों जान क्यों नहीं मारती है ? स्विधे धर्महोतिकों जान क्यों नहीं मारती है ? स्वरं धर्महोति क्येंजिये और उत्तम संस्कृत स्वरं । अस्य अनेक है, कुम्बरस्थमा है, आपने धृत्रस्थमाकों स्वरं है। दुर्महम्बर्धे आपने देखोंको अस्यक्त उपात्में सूक्त करान किया है। सातः । स्वरं देखे पुलेख स्वरं प्रवेश स्वरं है। सातः । स्वरं देखे पुलेख स्वरं प्रवेश स्वरं सुलेख करान किया है। सातः । स्वरं कीर पुलेख स्वरं प्रवेश स्वरं ।

इस स्तुतिसे प्रस्ता क्षेत्रत सरकावेदेवीने उन काञ्चन मुनिके क्या निवासका ३-डे सन ब्रद्धम क्रिया । वे मृति 🚥 देशमें बर्छ गये और उन्होंने कई म्लेक्क्रेक 🚟 का 🎮 द्विजन्मा क्या लिया । मरकातीके अनुसद्धरे इन लोगोके साथ सदा मृतिवृत्तिमें तत्पर मृतिश्रेष्ठ काइकको अवस्तिको 🚟 किया। तन आयोकी देखेंके कररानमें कहत 🚃 हुई। कारमय मुलिका राज्यकार एक सी पार पक्कि रहा। राज्यपुत्र नामक देशमें आह उकार युद्ध हुन् । उनके राजा अवर्ष पुषु हुए । उनमे ही मागधकी उत्पत्ति हुई । मागध आक्के पुरुष अभिवेककर पृथु चले गये। यह सुनक्त मृतुबेह प्रकेक कार्र ऋषि प्रसान हो गये । फिर वे फैश्रिक सुराको उपलब्ध कर विष्णुके प्यानमें शरपर हो गये। चार वर्षतक ध्वानमें सहका वे ठडे और नित्य-नैमितिक क्रियाओं के सम्बन्ध कर पून: सुकारिक पास गये और बोले—'लोमहर्वजनी ! अब अहप व्यक्त एमाओवर सर्पन नरें । किन मानानेने नरीनवृत्ये सुन्य क्रिया, है स्थासदिस्य ! अन्य हमें यह बताने हैं

स्ताजीने कहा — मगध-प्रदेशमें कारकपट्टा भागको पितासे IIII राज्यका भार वहन किया। उन्होंने उक्कीदासको अलग कर दिया। पश्चाल (पंजाब) से पूर्वका देश मगध<sup>र</sup> देश IIIII जाता है। नगमको आहेक दिशामें करिन्स

(खडीस), दक्षिकरें अवन्दिश, नैर्वहत्वमें आनर्त (गुजरात), च्छिक्ये सिम्ब्देश, चन्ना दिशमें कैकव देश, उत्तरमें महदेश और ईज्ञानों कुरिन्द देज है। इस प्रकार आयदेशका उन्होंने पेद व्यवस्था इस देशका नामकरण नवारना मागधके पुत्रने किया था। अस्तर राजने यहके द्वरा बटरामधीको प्रसन्न 🚃 इसके फलकरूव बरुधाईके अंदाये दिख्नागका जन्म **१३६, उसने 💹 वर्षसंक राज्य किया । उसे काकवर्मा नामका** पुत हुआ, उसने क्लो वर्षतक राज्य किया। उसे सेमधर्मा 🚃 पूत्र हुआ, उसने असरी वर्ष राज्य किया। 🚃 पूत्र 📖 हुआ, 🖏 सत्तर वर्षतक राज्य किया। उसके बेट्डिश नक्क पुर हुआ, उसने साह वर्षतक दासन किया । हते समातिषु (अधारकाषु) कामक पुत्र हुआ, इसने प्रचास क्या एक क्रिया । उसका पुत्र दर्बन हुआ, उसने चालीस क्षेत्रक राज्य किया । उसे उदयक्ष' नामका पुत हुआ, उसरे तील वर्गतक प्राप्तन विक्ता । क्रमका पुत्र बन्दलक्षेत्र दृश्ता, उसने बीम सर्वातक प्राप्तक किया । मन्द्रवर्षकर पुत्र कद हुआ, उसने विकले मुल्य क्वेंक्क एउप किया । मन्दके प्रमन्द हुअन, जिसने दस 📰 क्या विस्था। 🔤 प्रकृतन्त्र हुन्स्, हर्स्स अपने 🎟 नुल्य क्वीनक ही एव्य क्षिता। उससे समानद दुआ, असने औस अर्थ राज्य किया । उससे नियानना हुअा, उससे 🖩 **ा स्था**न वर्गीतक राज्य क्रिया : उसका पुत्र देवानन कुन्तः, उसने 🍕 🕬 🕬 समान छन्त्र किया। देवानन्द्रका पुत्र यहाँमेग कुमा, उसने अपने पिताके आधे क्वेंतिक (दस वर्ष) राज्य किया। उसका पुत्र चौर्वानन्द और उसका पुत्र महानन्द हुआ। दोनीने अपने-अपने पिनाके समान वर्गतक

इसी समय करिने हरीका स्मरण किया। अनकार प्रसिद्ध गौतम नामक देवलाकी काक्ष्मपते अत्यति हुई। उसने बौद्धवर्णको संस्कृतकार पहुण सगर (क्षिण्डवस्तु) में प्रचार किया और दस वर्षतक राज्य किया। उससे शावसमुनिका हुआ, उसने भी हिंदी वर्षतक राज्य किया। उससे

१-वहसि लेकर आगे उद्यावतक प्रशासे 🚃 🚾 🐧 🚃 अवस्था में ।

२-इसीने राजगृहसे हटायर राजधानी भारते विकास कारणी और उसका mm चटनिस्तुत के पटना mm। इसके आगेके समाराण पटनासे ही परनकर mmm करते थे।

३-यहरि आगे 🚥 🎟 वन्त्रवेदारा वर्गन है, निवादी सामानी वर्गनासु सी।

शुद्धोदन नामक पुत्र क्ष्मा, उसने 📰 वर्षतक प्रायस विज्ञा : उससे शक्यसिंहका चन्न हुआ। कल्पियुगके दो हुनार 🖛 व्यक्तीत हो जानेके बाद अतादिये उसने असन किया। व्यक्तिके प्रथम चरणमें वेदमार्गको उसने विनष्ट कर दिया और साठ वर्षसक इसने राज्य किया। इस समय प्राप्त सभी बीद हो भये । विष्णुखरूप उसके राजा होनेपर जैसा राजा 48, वैसी ही प्रभा हो गयी, वर्गोक विक्कृती ऋषिक अनुसार 🛊 क्याने धर्मकी प्रवृत्ति होती है। जो म्हलूब्द महत्वपति हरियाँ द्वारणमें जाते हैं, में उनकी कुराके प्रभावते खेलके भागी के जाते हैं। इक्यसिंहका पुत्र मुद्धसिंह हुआ, उसने क्षेत्र को राज्य किया। उसका पुत्र (जिल्प) फ्लापुत्र<sup>।</sup> हुआ, विसले फासीटेजके एक स्तुव (सेल्कुसस) 🔻 पुत्रकं साथ 📭 📰 📧 🚃 बीज्ञधर्मका प्रचल किया । उसने साठ वर्षतक सामन

🔤 i कडपूरका पूर्व किन्द्रसार (किनासार) हुआ । उसने भी निकार समान राज्य किया । इसका पुत्र अञ्चोक हुआ । उसी समय अञ्चलका देशका एक स्थापन आयु पर्यक्रपर चला गया और वर्जा उसने विभिन्नविक अनुसोध सम्पन्न किया । वेदमानीके इपायसे व्यक्तपासे 🚃 स्विकेंको उत्पत्ति १ई-- प्रमर--क्रमर (समबंद), उपहान-चेहान (कृष्णयतुर्वेदी) विकेदी—गहरकर (सुद्ध चन्हेंदी) और परिवारक (अधर्मक्दी) 🚃 थे। वे सब ऐतवत-कुलमें 🚃 प्रकार सारम् हेर्न थे। 📰 विभिन्न अञ्चेकके येशओंको अपने अनीन कर भारतवर्षक सभी बौद्धोंको नष्ट कर दिया। अन्यनमं प्रयत्-- परवार हाना हुआ । उसने पार फेजन

विकास अवकारणे कामक एरीवे नियस होकर श्वापूर्वक जीवन 📰 विद्याः (सप्यापः ६)

### पहाराज विक्रमादिकके परित्रका उपस्य

सुराजी बोले — इंक्स्प ! विश्वपृत्र वर्गनके आस-पासके श्रेष (प्रायः आयके पूरे कुचेलकम्ब 💖 क्येलकम्ब) 🕅 र्परहार नामका एक राज्य हुआ । 📷 स्त्रजेय करियम नजर्म रहचर अपने पराक्रममें नीशोंको ह्यांतर कर की जॉल्हा का को। एकप्रानिक क्षेत्र (दिल्ली नगर)में चनक्रिन चौक्रत गमक राजा हुआ। उसने 🔤 सुन्दर 📖 नगरमे रहका मुक्तपूर्वक राज्य किया । उसके शज्यने वारो 🚟 विश्वत के । आनर्त (गुजरात) देशमें शुक्त नामक राजा ६३६, उसने श्रारकप्रका राजधानी 🚃 📉

शीनकवीने क्या-ते पराचन ! अग्रिवंशी राजाओका वर्णन करें।

स्तमी बोले-महरूने । इस समय 🖟 प्राप्तक 📖 हो गण है। 📖 आवस्त्रेय भी भगवानुका स्थल करे। अब मैं चोड़ा विश्वाम करूँमा। यह सुनवर मृतिगण भगवान् विष्युक्तं ध्यानमें लीन हो गवे । तम्बे अन्तराहके कद ध्यानमें उठकर सुतजी प्नः बोले—महासूने ! कॉलक्नके **मेरी**स सी 🚃 वर्ष स्थतीत होनेपर प्रमा जमक राजाने राज्य करना प्रशास

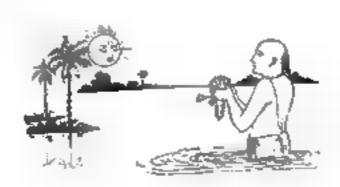
किन्य । उन्हें बहायद (मुहम्बद) नामक पुत्र हुआ, जिसमे 🌃 प्राप्तन-वालके अस्पे समयतक राज्य किया। 🔣 🚃 📖 पुत्र ६४१, उसने ची 🕬 🖬 तुल्य वर्षीतक राज्य किया । उसे देखदूत नायक पुत्र हुआ, उसके गन्धर्मसेन कारक पूर्व हुआ, जिसमें प्रकार वर्षनक राज्य किया। 🕸 अपने का प्रक्राका ऑफ्केट कर वन करन गया। प्रक्रुने तीस क्वंतक रूक्का संभारत । उसी समय देवराज इन्द्रने बीरमधी अवक एक देख्यानुसाको पृथ्यीपर भेजा। प्रश्नाने औरमतीसे गन्धर्वतंत्र 🚃 पुत्रसम्बद्धे ज्ञात किया । पुत्रके जन्म-समयमे आकारको पुरवर्षात् 📕 और देवताओंने दंदची बजायी। सुस्कार औरतन-सन्द कयु बहुने रूपी। 🞮 सन्त अपने जिल्लीमहित जिल्लाहि नामके एक सहस्या स्पर्धाके रिप्ये 🔤 📺 और फ़िलकी उक्कानसे ने फ़िलकरूप हो भये।

तीन हजार वर्ष पूर्ण होनेपर जन कॉल्युगका आगमन हुआ, तब प्रावर्धिक विजाल और आर्यधर्मकी अधिवृद्धिके रिज्ये वं 🖥 जिक्द्रश्च मुद्धवदेकी निवासभूमि कैरवससे मगवान् नुष्यांकर व्यापन नामसे प्रसिद्ध

१ - अब 🊃 फिर पार्टरिक्ट्रके एक्क्सबर कर्वन प्राप्त 🚃 और बर भट्टक्त से मैनिक्सब प्रस्त राम 📰 । किसने पारतके 🚃 अन्य देशीयर ऑपकार किया था, किन्हें क्ट्रिये अओकर बीद देश कर पूजा। 📰 दिने ने मर्चे देश 📖 ही उपनिवेश थे। 🚃 पहाँ आपे कर्मन है। चन्द्रमुपने ही संस्कृतसम्बद्धे पूर्वास 📰 को च्छे ।

हुए ! वे अपने माता-पिताको आनन्द देनेवाले वे । वे व्यवस्ती ही महस्त् मुद्धिमान् ये । बुद्धिविदासद विक्रमादित्व चाँच वर्षकी ही महस्त्रवस्त्रामें तप करने वनमें चले गये । कहा वर्षेक प्रयमपूर्वक तपस्त्रा कर वे ऐडर्च-सम्बद्ध हो गये । उन्होंने अस्त्रवति सम्बद्धाः अस्तिकित सम्बद्ध और हिम्मा समिता, मगवान् किवड्डार अस्तिकित सम्बद्ध और हिम्मा सिहासनको सुशोधित किया । मगवती वर्षकीके द्वारा विका एक वैताल उनकी रक्षाये सदा तापर रहता था । दस बीम एकाने महाकारेकारमें अवस्त देवाविदेव वहारेकाके पूजा की और अनेक व्यूनीने परिपूर्ण वर्ष-सम्बद्ध निर्मा किया । विसमें विविध प्रक्रियोर विष्कृतित अनेक पातुओं के स्तम्म थे। श्रीनकार्य ! उसने अनेक लावओंसे पूर्ण, पुष्पान्तित स्थानपर अपने दिव्य विद्यासम्बो स्थापित किया। उसने वेद-वेदास्-परंगत पुष्प प्रदान्तिको बुलाकर विधिवत् उनकी पूष्पकर उनके अनेक वर्ध-पावादै पूर्णी। इसी समय वैताल नागक देवता प्रदानका क्य वारण कर 'आपकी जय हो', इस प्रकार काला हुआ बार्ड अवना और उनका अधिवादन कर आसनपर वैठ गया। उस वैतालने राजसे कहा— 'राजन्! यदि आपको सुनोको हुआ हो से वै आपको इतिहासरे परिपूर्ण एक रोकक अध्यातन सुनाता है', इसे आप सुने। (अध्याय ७)

### ॥ अभिनर्गावर्व, समाग साम्य सम्पूर्ण ॥



१-भागकार्थ विक्रमंदिता अन्यत्त क्षेत्रद दारी, प्रोपकारी और तार्थक्ष-स्टाबाई दाव क्षु है। साद आहे पुरानी, कृतकार्थ और इतिम्हानीकार, प्रमाणकार्थीयी, कथानीतकार, कृत-कोड़ा व्यक्ति सामि इत्या वरित वर्षित है। उस इस्त कैम्बाईन इतिहासके दूसरे भागने इत्या प्रीप आधा है। तेने व्यक्त और विक्रमण्ड आदिन अनेक कैस्टाबादितोकी वर्षा की है, पर वे प्रमाणक विक्रमदित उज्जीवरीके एका है और कांत्रकार, अन्यत्वर, क्षाइतिका, वेस्ताव प्रकारित प्रदेश आदि कवार्य अनेकी से राजस्थाने दिस विद्वार प्रदेश किया था। आर्थ-पीट पीड़े देशमा नहीं है। यात्रा भोजमें तेनक कट्याक अक्तरका क्षणीन अन्यी कमाने वैसे से न्यस्थीने अलेक्स प्राणित प्रदेश किया था।

## अस्तिसर्गपर्व प्रतिसर्गपर्व (द्विवीय खण्ड)

### खापी एवं सेशककी परस्पर भक्तिका आदर्श "

(राज्य क्यरीय राधा

सूतवी बोले—महानुने ! एक 🔤 स्थाप सर्वप्रथम प्रणवान् शंकरका ध्यान स्थित और फिर पहारका विक्रमहित्यसे इस 📖 कहना प्रश्य किया—

राजन् ! प्राप्त एक मनोहर प्राप्त मुद्दे । अपीन कारामें सर्वसमृद्धिपूर्ण वर्षमान प्राप्त नगरमें रूपसेन नामक एक धर्माचा राजा राजा था । उसकी प्राप्ता प्राप्त नगरम नाम विश्वभाग था । एक दिन श्वाके दरकारमें पीएक नगरक एक धर्मिय गुणी कार्या अपनी प्राप्त कारामें दरकारमें पीएक नगरक मृतिके लिये उपस्थित हुआ । राजाने उसकी विनवपूर्ण कार्योक सुनकर प्राप्त काराम एक सहस्र स्वामें इसकी विवृत्ति स्वामें प्राप्त काराम तो आपने गुणावर्षिके का प्राप्त का तो अपने गुणावर्षिक कर वा प्राप्त काराम साम् , माहावर एक अन्याक्ति विवरित कर प्राप्त अपने परिवर्तिक प्राप्त कर वा है । इसके असन व्याप्त अपने परिवर्तिक वर वा ।

एक दिन व्या आयी रातमे मूसस्तायार पृष्टि, वादलोकी
गर्ज, व्यान एवं इंडान्सतसे व्यान व्यानविक्य
सीम पर कर रहे थी, उसी समय श्वास्ति किसी नारेकी
करणक्रन्दन-व्यति राजके कानीमें पड़ि। राजने मिंबडास्पर
उपस्थित वीरवरसे इस स्दन-व्यत्निक पत्र लगानेके व्यान कहा। व्यानविक्य पत्र लगानेके व्यानकि अध्यक्षे अश्वेका तथा उसके सहस्रोगके लिये एक तलकार सेकर गुप्तस्थासे लग्न उसके बोडे लग्न गया। वीरकले स्मरात्ममें पहुँचकर एक स्वीको वहाँ रोगे देखा और उससे अध्यक्षे स्मरात्ममें पहुँचकर एक स्वीको वहाँ रोगे देखा और उससे अध्यक्ष सक्ती—सङ्ख्या हूँ—इसी मासके अनमें एक रूपसेनकी कृतु 🏿 अवनी। एककी मृत्यु 🖥 जानेपर मैं अवन्य होकर बार्ड बार्डमें —इसी जिन्हासे में से रही हूँ।

व्यानकात करवात ठानकं दीर्वायु होनेका उससे छाना
प्रसार यह देशी बोली—'शर्ट तुम अपने पुत्रकी विल प्रांककादेवीकं रूपने दे सकते तो राजांकं आयुक्ती रक्षा हो आतं है।' किर बात या, बोरबर उसटे पाँच यर लीट आया और अवनी कही, पुत्र तथा लड़कीकं जगरकर उनकी सम्पति रोतक उनके बात विकायकं मिटाने का पहुँका। बात भी गुजकपसे उसके पीछे-पीछे बात बलता रहा। धीरतारे प्रांकि कर अपने स्वानकि आयु बदानेकं लिये अपने पुत्रकी बात कर अपने स्वानकि आयु बदानेकं लिये अपने पुत्रकी बात कर अपने स्वानको करा मिर देखकर दुःखसे उसकी बहुनका इदय निर्दार्ण हो गया— वह मर गयी और इसी

क्या विकास यह सम दिया था। उसने देवीकी सभी कर अपने मोजनको ध्यर्थ बताते ध्रुए अपना लिए करनेके दिवी ने प्रकट के तो ता ता करनेके दिवी ने प्रकट के ता उसका साथ पर्कड़ लिया और बोली---'राअन्। मैं तुम्बा बहुत प्रसंध है, तुम्हारी आधु हो सुरक्षित हो है गयी, जुम अपनी इच्छानुसार वर भीग लो।' समाने देवी से किसानेकी मार्थना वह 'रायाव देवी से किसानेकी मार्थना वह 'रायाव देवी से कहकर देवी अन्तर्वान हो गयी। सभी प्रसंध होकर चुपके-से कहकर देवी अन्तर्वान हो गयी। सभी प्रसंध होकर चुपके-से कहकर देवी अन्तर्वान हो गयी। सभी प्रसंध होकर चुपके-से व्याप व्यवस्थ अपने महत्वमें आकर लेट गया। इचर वीरवर भी चिकत होता हुआ और देवीकी कृपा हुआ अपने पुरावित परिवरको हो से केवन समान्यर्थ सिंहहारपर

भारतकोर्थे अपनेन सारको 'वैज्ञान-व्यक्तिकार' क 'वैज्ञान-विश्वे'को कथाई में विज्ञान-विद्याल-संवादके व्यक्तिका अनका प्रसिद्ध है, उसका मूल 'विकाश्यक व्यक्तिक हैने कि वे कथाई की कुछवेद अवविद्या को अभिनेत अनकांको सर्वादक होने कुछ की लोक-व्यक्तिक दें विश्वे कि क्षेत्रक उनकां के क्ष्या को जा हो है।

गया ।

सम्बन-पुनी

बैतालने बाह्य-एक्ष्म् । जन्मना जनके प्रत्या चन्द्रवंतमें इत्यत्र महत्वल नामने विकास अत्यत्त चृद्धियन् तथा केदादि-रमकोका ज्ञात एक एक एक 🕶 🚃 उसका स्विमित्रक इतिहास जाकता एक एवं था। पन्ने भतिनकता साथु पुरुषेको सेवाने करण 📰 थे। परितमालको सभी विद्यालीने परंगत कमलके सका · अर्थन क्यानी एक · विशे हुई, उसके 🖚 या महादेवी। एक दिन महादेवीने अपने मिता हरियासमे कहा-'तात । अस्य मुद्रो ऐसे मोन्य पुरुषको श्रीविनेगा, के क्लोंने मुक्तरे भी सम्बद्ध हो, अन्य किसीको नहीं ।' अपनी पुर्विको भाग सुनक्त धरियास कहा प्रसान हुउस और 'ऐस्ट ही होता'---क्रक्त हरिदास शुजराधने अवस और उसने प्रयास्य अधिनन्दन किया। तदनका संगते कहा---'हरिदास । तुम मेरे ससूर तैलंग देशके एका बरिवानके 'करा क्रमें और 📖 करात-स्माचार कनकर सीव है को बताओं।' बाह्य आह्य प्रकर राज हरिक्काके पास गण और उसने उन्हें अपने स्वामी महाबरकात कुरान समाचार बतलक्याः 📖 कृताल-सम्बन्धाः व्यन्त्यन राजा क्रीक्यः अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने इतिहाससे पूछा—'त्रणे । आप विद्वान है, मुझे यह बताये कि करियार आगमर हो जना, यह कैसे मालूम होगा ?

इरिक्सने कहा—शबर् ! वस बेडोबी मर्नादर्श न्ह

क्रमा बोरो—सर्वाच समीने अपने-अपने वर्तव्यका अनुम आदर्श क्यस्थित किया, फिर भी मामा सेह है सकसे प्रतीत होता है, क्योंक वीरकर एजसेवक था, उसे अपनी सेवाक प्रतिकलमें सर्वामुद्राई मिलती थीं, मान उसने अर्वाचारितको दृष्टिमें मामा कर्त्सने किया, वीरवरकी थी, धर्मकेली मी, इसस्यिय क्रमने अपने प्राणीका वा, मामान्य सम्बद्धाः सिम्पा, मिन ये एक सम्बद्धाः सिम्पा, मिन ये एक सम्बद्धाः सिम्पा, मिन ये एक

स्थानक स्था हरिवाद स्था हुआ और उसने उसे स्थान रेकर अपने पहलमें स्था राजा महानालके स्थान स्थान रेकर अपने पहलमें स्था उसी समय स्था और स्था उसी समय स्थानक मुद्धियान् सहला वहाँ आया और उसने अपनी विकित्त विद्याओंका इस्टिसको सामने प्रदर्शन किया— उस सहानने मना जनकर देवीको आराधना स्था और एक महान् आस्वर्यजनक शीधग नामक विमान प्रबन्धक हरिएमाओ दिसालाया । 📟 विद्याओंसे मुख्य क्षेत्रहरू अस्तिहरू असे अपनी कन्याके योग्य समझका उसका करण कर रिन्या।

हरिदासका पुत्र का मुक्तद । का विद्यापनवनके लिये अपने पुरुके वहाँ गया था, जब यह अपने मुक्से विद्यारकेंद्रो पद चुका तो कुरदक्षिणको सिये प्रार्थन करने सम्ब । कुने उससे कहा—'ओ पुकुन्द ! सुनो, हुम मुख्यक्रिकके कपने अपनी बहिन सहारेवी भेरे देखा का पीमानको सर्वार्थन कर दो।' 'ठीक है' — ऐसा कहन्यर मुकुन्द अपने घर आ गया।

इधर हरियासको 📰 पतिभारतमे हरियोरचा समा नामक एक ज्याना 🖫 राज्यवेधी कल परसाम कुराल 📢 शकविद्याका जाता था, उसकी विद्यारी प्रधानिक होकर अधनी भन्याके लिये दक्षिण, सम्बूल आदिके द्वारा पृथित चर उसका करण कर लिया।

समय आनेपर पिता, पुत्र तथा मात्राह्मर, बरण विन्ये गर्ने तीनी गुणवान् अञ्चल अवस्थिते जावनासी ३० शतकारे साम करनेके रिपरे हरियासके यहाँ आ वर्षेचे । हमी बीच एक राजस अपनी मापासे उस कन्या महादेवीचा हरण कर विकास कर चला गया। यह समाचार जनकर ये केनी करवार्थी दृष्टी होकर रोने लगे। जब उनमेसे गुरुपुत धीवान् जनक देवत विद्वान् साक्षणसे व्यास्त्र एता पूछा गया तो उसने 🚃 कि के कन्द्र विश्वपर्यतास वश्रमक्रय रूप कर ले 📰 गयी है। स्टबन्स उस सम्बन्धि प्रतिके स्थि दिसीय

बुद्धिकर्केक्ट नामक बाह्यभाने अपने द्वारा बनाये गये अवकाराचादे विचानपर 📖 दोनों विज्ञोंको बैठाबर विन्यापर्वतपर पर्विकासः। तम शब्दसंबी आणीको बस्तानेमे निवृत्त काला ब्रह्मक तीस्से ब्रह्मकने धनुक्दर सरक्का संचान किया और बागसे उम राशसको कर उस्ता। वे तीनों कन्या महादेवको प्राप्त कर उसी जिनामने बैठकर उर्जावनीये वापस अक्रके त

वहाँ व्यक्तिकार सीजें बाह्मण अपने-अपने कार्यका महत्त्व काले हर कन्यकं कार्याकक जावकात होनेके लिये परस्परमें करने लगे, यह निर्णय नहीं हो सक्य कि करणका विकार विकास सभ हो।

**ालन तमा विकाससे पूछा**—राजन् ) कार अधिकारी कीन || ?

राज्य ज्याना कहा—जिस विद्यान युक्के पुर विश्वपानंत्रक वर्रवाचे वर्ष है, इस वाह्म क्रमके रिस्थे विकृत्स्य है और जिस दूसरे बाह्यण बृद्धिकंत्रियने अपने क्ष्मकाहर का विकास विकास नामके कामको पहाँ पहुँचाया, यह आईके समान है, किंदु जिस बामन नामक म्बद्धन पुण्यको शन्दर्वची बांगोंसे राभसके साथ पुद्ध कर उसे बार निराम, 🛒 की सक्रम इस कन्याको माना करनेका कंग्य अधिकारी है।

### समान-वर्णमें विवाह-सम्बन्धका औषित्व (विलोकसूररीकी कवा)

वैताल पुनः बोला—गजर् ! अस नै एक दूसरी कथ सुनातः हैं । चण्यापुरी (भागलपुर) 🚃 📻 प्रमिद्ध कारी थी, वहाँ सम्पर्कश नामका एक बलधान् और धनुर्वाते राजा रहता था। उसको सनोका नाम चा मुलोकना। उसके जिलोक-सुन्दरी नामकी एक कन्या उत्पन्न हुई । उत्पक्त मुख कन्द्रमाके समान, भौंडें धनुकारी प्रत्यक्रके समान, केंद्र मुगके समान कथा शब्द क्षेक्लिके समान थे। राजप् ! उस बालामे देवता भी विवाह करना चाएते थे, अन्य पनुष्यंकी तो वात ही नवा ? उसके खयंबरमें लोकविश्वत सभी एका तथा देवतव इन्द्र,

mm. कुकेर, भवंताय और कम आदि देवता भी मनुष्यका शबेर पारन करके अपने । उनमेंसे इन्हाइसने कन्याके पिता राजा चम्पक्रमे कल्ल-'एवर् ! मैं सभी सम्बोमें कुराल है, रूपकान् एवं वनोरम हैं. 📖 🚛 अपनी पुत्रीको मुद्रो सम्बद्धि कर दे। दूसरे धर्मदक्ते कहा—'राजन्। मैं धनुर्विद्याचे कुलाल एवं मनोरम 🐧 आप अपनी कन्या मुझे समर्पित करे 🖒 सीसरेने कहा — 'राजन् ! मेर 📖 धनपाल है, मैं सर्वा प्राणियोंकी पाचा जानता है, मैं गुणवान् और रूपवान् भी है। आप अपनी कत्या मुहे समर्पित कर सुखी होहये।"

चौधेरे नहा— 'राजन् । मैं सर्गणता-विशाद है, चौधेद्र अपने उद्योगने पाँच पर चन्द्र करता है, उन्नेसे कुम्बंद है। एक एक एक हा, होनके दिन्दे हिल्ला एक, व्यापी दिन्दे हिल्ला एक, प्राधिक दिन्दे व्युर्व एक तथा होना अभिन्न एक चौचानके व्याप अन्तर है। अराः अस्य विशाद व्याप अभिन्न हम चौचानके व्याप अन्तर है। अराः अस्य विशादको व्याप अभिन्न हम

पह सुनवर क्या जाकरेंदे ह्या गया कि स्था है। है। यह कुछ हिंसी नहीं कर क्या। स्थिति क्राने ह्या स्था करायों स्था है। यह क्या हिल्केसमुद्रित सम्बद्धाः योग-सा पर अपोट है, पर क्या हिल्केसमुद्रित सम्बद्धाः युक भी क्या भई हिंदा। केवाराने पूका—स्वत् । स्था क्या कराने कि उस कन्यके कंपा का इसमेरी और शा ?

स्था बेला—काकिन्स । यह ब्याब व्याव किलेक-कृटी कांद्रको बेला है; ब्याब इन्द्रस्य केन्द्रि सामोका प्राय विकास कांग्रेस स्था कांग्रेस व्याव कांग्रेस कांग्रेस पृथित व्यावकात्र कांग्रेस व्याव कांग्रेस पृथित व्यावकात्र है और ब्याब कांग्रेस केंद्रि हैं, अतः अनुसंद-प्रावणी को निपुण कांद्रस है, ब्याब व्याव कोंग्रेस कांग्रेस कांग्रिये।

#### विकारी राज्य राज्यके विज्ञासका कारण कारण है। (राज्य कारण और कभी संस्थानशासकी कारण)

वैदाराने पुन: सकाने श्राह्म—एसन् ! आर्थन काराने राजीव पुन्तुर (पुण) व्यक्ति वर्गन्तुर मान्या एक एक राजा तरण था। उसका त्या सरकारणा था। त्यावा सीवा तम वा नावती। एक वन एक वर्गन्तुराजे कारोने वहा—'त्रीतवा ! आर्ज्य किन्ने केंद्र हैं ? व्यक्ति वहा—'त्रीतवा ! आर्ज्य किन्ने केंद्र हैं ? व्यक्ति वहा—'त्रीतवा ! आर्ज्य किन्ने केंद्र हैं ? व्यक्ति (१) अस्थानीवाना व्यक्ति हैं । व्यक्ति हैं । (१) गुरुवानात्रका विभावत्य वाला है । (३) व्यक्ति वर्गाया समावा | (४) व्यक्ति है । व्यक्ति व्यक्ति वर्गाया है । व्यक्ति व्यक्ति वर्गन्तुर (व्यक्ति वर्गन्तुर (वर्गन्तुर (वर्गन्तुर

वह सुनवर राज अपने अपुन्त वर्षभ्यका वर्ष प्रका करनेके रित्रे व्या वर्ष । तम इसमे अपने क्या व्या व्या — में भारत को वर्ष की देवें / त्य मुख्या करते विकाद देवेंके गया। पर जब कहीं की इसे राजके केथा की नहीं मिली के वह सिन्धु देशके अववर समुद्रकी किए वहा। को तोकीय केस सिन्धुको देशकर का मध्य कुल्या कर्षा सरकावरसने समुद्रके स्थ का अर्थन की— 'वर्ष क्या क्या मध्य सम्बद्धकों समुद्रके स्थान्त्र । अर्थन की— 'वर्ष क्या क्या मध्य सम्बद्धकों समुद्रके स्थान्त्र । अर्थन की— 'वर्ष क्या क्या सम्बद्धकों । मैं स्थानी स्तरणों अवधा है, जून अवदे गोरवेंद्र जाती प्रत्यपीत है विकास करें। यदे देख अस्य नहीं परिण है है अपने अस्य क्षित दे देख में स्थिति क्ष्मा क्ष्मा सुरुष्ट प्रत्या है एने और व्यास विद्वार परिणात, कुष्टान्य परिणात हक कृष्टार्थ दिवार है क्ष्मा क्ष्मा है स्थान हक्ष्मा है देखी यह क्ष्मा देखा है । .... हुस्सा है स्थान क्ष्मा है देखी यह व्यास वृक्षातीय कुल स्थान हैं स्थान स्थान

ा देखावर अस्तित्त्व अध्यानंत्रीतत् होन्द्रा गर्भा सहर-प्राच्या कृत्या । पुरः व्या समुद्रांत विन्तरं आहे । व्या धी प्राच्या सुवार्ता । पुरः व्या समुद्रांत विन्तरं आहे । व्या धी प्राच्या व्या व्या व्याप्ता व्याप्ता विद्या विकास व्याप्ता व्याप

रासाने सद्धा—काश्मे : विद्यारे दिन्ने वर्त व्या वृं स्वत्यर्थ विश्वापने सुते कात करे। असने हैशकर कार— पृत्योग्न ! कर कृष्य स्वाच्या कतुर्दश्चे स्था असेन्द्रे, का मैं देखे-व्याद्दर्भे अस्तर दुन्ते सिद्द्रियों !' ग्राचा लीट काता और पुत्र कृष्य कदुर्दश्चेक्षे दिन इस्तमे काता लेकर स्था पास करने लगा—'अरे ह्या ! तुस्तरे क्रव दिये व्या अप अप अप अप है। इससिये तुम्हें अक्षतस्यका पाप लगेगा।' व्या व्या अरेर उसने अपनी उपलाके क्रवायमें

वृंदिः संन्यासी सुपुरितः या और निश्वः योगने **व्याप्ताः** था, साहायके **व्याप्ताः** स्थापति देव-स्थाप

अतः अविधिधर्मसः यसम् करन 📖 कुल-वर्गक 🚃

है बाब उसने कहासे खीर बनावर संचासीको निवेदित किया;
वेसेने वह कैसे बाहारवाला भागी बन सकता है ? यदि वह
बाहारवाला अपनान भी बहाइत्याके स्थान ही है । बाहारवाके स्थान ही संचारी ।
वैकि अपने किये गये सुधाराम कर्ममा पान अवस्य मोगना
है । असः वह संन्यासी अपने किसी बनावारीय
बाहारवाला अस्यान स्थान स्थान क्यान अस्यो मृत्यु
स्थानिक सम्बन्धे है हुई । इसमें विस्तायन दोष नहीं । पायसमय
भोजन करना हो बावेमें केवल निवेद्यानक हो था । बाहारवाला क्यान हो बावेसे ।

## जीवन-स्टानका आहर्र (वीन्हाकक और स्कूच्यकी 📰

स्वतिकार व्यक्ति का स्वाप्ति करू-महराज १ कान्यपुरमा (कार्मेज)मे हानवाल, सरवयास एव देवी-पूजनमें तत्वर एक आहाण रहता या । यह प्रतिकासे प्रत्य 🚃 दान 🔤 देता था। एक 📖 सारदीय नवदुर्गका वर आया । उसे दानमें कुछ भी हत्य प्राप्त 📶 🗒 सका, सक वह बहुत विक्तित हो गया, सोचने लगा, कीन-मा अवस करी, जिससे मुझे प्रकार जाना हो। की दुर्ग-दुवाने व्यापना निमिन्नत विस्था है, अब उन्हें कैसे भीजन कराऊँगा। वह इसी 🔙 निपार 🖫 📰 🗷 देवीकी कुवारी उसे असकार थाँच मुद्राई प्राप्त हो **गया** और उसीसे उसने वस सम्मानिकान उसने भी दिनोतक निराहार इत किया था। उस हरके प्रभावसे 🚃 उसने देवस्वरूपको ऋप्त किया। प्रस्तकः 📫 विकासका स्वामी जीमूतकेतु हुआ। यह दिमासन वर्षतके रस्य स्थानमे रहता था। यहाँ यह भतिन्तुर्वक करणकृक्षकी पूजा भी करता था। उस वृक्षके प्रचावसे उसे सभी कलाओंने कुराल जीपुतकारन नामका 📰 पुर 📖 हुआ ।

पूर्वजनमें यह जीमूतवाहन मध्यदेशका शुरसेन व्यवक राजा था। किसी समय यह राजा शुरसेन आखेटके लिये महर्षि कस्मीविकी निवासमूमि उत्पतानर्श नामक **व्या** आया। **वहाँ**  का स्थानक सैन्युक्तकाने व्या करववृत्तकी स्वापूर्वका को में। एक वर्षक कीवर ही प्रस्ता होकर का कृतने कससे कर स्थान क्षान सैन्युक्तकानने कहा — 'पहावृत्त । नगर कार्या कृत्यसे स्थानकात्रका हो व्याम करववृत्तको नगरको पृथ्वीचे सर्वजेह कर दिया। वहाँ कोई स्थान ऐसा विहा स्थान करववृत्तके प्रकारते राजके समान न हो गया हो। अस्तर विविध्य और पुत्र दोनों सपस्ताके सियो वनमें वसे गये और अविदान राज्योव मस्यावस्तर करोर तपस्ता करने समे।

राजन् ! एक दिन राजा विकास पुत्री कमस्तादी पूजारे विकास विकास साथ शिव-मन्दिरमें आयी । उसी समय जीमृतवाहन भी पूजारे शिये मन्दिरमें पहुँचा । साथी असंस्थारेंसे असंकृत दिव्य शंजवन्याको देखकर उसे प्राच करनेची इच्छा चीमृतवाहनको जापत् हुई तथा इसके लिये उसने प्रार्थना भी भी । अन्तमें कत्वाके विदा प्रशासकानी श्रीमृतवाहनसे उसका विवाह कहा दिया ।

राज्य मराध्यक्षका पुत्र विकासम् एक दिन अपने बहुनेई वीन्द्रव्याहनके सत्त्व गन्यनादन पर्यक्रम गन्य। वहाँ उसरे नर-नारक्क्को प्रकार स्थित। उसी निरक्षका प्रकार विष्णुक पातुन गठइ आया । उस समय सञ्चापुर जनकी माता, जहाँ जीमृतवाहन या वहाँ विस्ताप कर रही थी। स्रोके भक्तकन्दनको सुनकर दीनवरसल जीन्सकान दुःखी क्षेत्रर रीय वी वहाँ पहुँचा। कुद्धाको अवश्वासन देकर उत्तने पुरत्त---'तुम 🔤 वे वो है ? तुन्ने का कह है ?' यह बेली— देव ! अञ्च पेत पुत्र गरक्का पक्ष करेता, उसके विद्योगके काश कुससे मामुल 🏬 मैं वे की 🛊 (' का सुनका क्रम औमूतवाहन मस्यु-सिरासपर तथा। 🚃 उसे 🚃 न्यून **ावारा प्रमानक अन्यश्में से एक : केन्स्रकारको पाने** कारकता अकाराये गठको रहत भवत किये उसते हुए अधी परिच्ये देखकर दुःखसे रोने लगी। प्रांतु विश्व कटके काने वाते उस जीमृतकारको अनव-कपने देखका 🚃 उर 📖 और भीमृतवाहरूसे कहने लग्छ—'तुन की 🕬 🔤 📥 गमे ?' इसपर वसने कहा—'मञ्जूचूद कामने चल 📑 दुःची थी, उसके पुरारी रखके लिने मैं तुम्को पास आप। जन यह घटन 🚃 रागको मालून हुई तो धुःश्री होचर या 📰 📱 गवरके पार आया और सहते लग---'कुरबस्तागर । अनुगरे भोजन्ये 🔛 📕 📰 🐮 महामते ! इस 🔤 मनुष्यको कोङ्गकर मुक्ते अरमा 🚃 क्तामे ।' जीमृतवाहनकी महानता और परोपकारकी 🚃

देखकर मेरक अस्तन प्रसन्न हो गया और उसने विद्यापर चीपूनवहनको ब्रिंग कर दिये। 'अस मैं अस्तिरे कमी राष्ट्रपृष्ठके बंदाबोको नहीं खाऊँगा। ब्रेड चीपूनवहन ! तुम विद्यापरीको कारीमें ब्रेड राज्य प्राप्त करोगे और एक सासा वर्षक असन्दर्भ उपयोग बार बैकुन्छ प्राप्त करोगे।' इतना क्यान गवड अपार्टित हो गया और चीपूनवहनने पितासे राज्य प्राप्त स्था अपनी पत्नी कमलासीके साथ क्या-पृक्ष मोनकर असमें वह चैकुन्छलोकको बला गया। बैतारको ब्रिंग पूजा—भूगते। अस ब्रांग नाहाये

कि स्मृत्य तथा सेम्बर्धन—इन 📟 📟 महान्

कल ज्ञाल कुछ और दोनेंगे कीन व्यक्ति की अक्षान् कल क्रमा जोता—वैक्रमा । स्मृत्यूक्षे हैं। अक्षान् कल क्रमा कुमा; क्योंक उपकार करना तो संस्थान लगाव ही होता है। एक वीम्त्याहरने सम्बद्धि हैंग्य प्राप्ति अपना जीवन क्रमा काम होकर उसे राज्य एवं बेबुल्ड-अस्मिक्ष कर ज्ञाल क्रमा हका होने जीम्त्याहरका जीवन-दान (ज्याहा रक्ष करना) व्यक्तिकार आ जाता है। अतः उसका स्थान समुक्ति क्या एवं संस्थाने सामने महस्त्यूणे वह असेन होता, करन् समुक्ति मिर्चम होता अपने सह राज्याको अन्य सरीर समर्पित कर एक महस्त् धर्मात्वा सम्बन्धे वह केरा केरा केरा प्रमुक्ति वह एक महस्त् धर्मात्वा सम्बन्धे वह केरा केरा स्थान स्थान स्थान कर एक महस्त् धर्मात्वा सम्बन्धे वह केरा केरा केरा है। केरान एकके व्यक्ति कर संस्था

### साथनार्थे मनोधोणकी गहता (गुनाकस्की कथा)

वैतालने पुनः कहा—एकन् ! उजकिनेने महस्तेन ह्या एका था । उसके एक्को देवसर्ग नामक ह्या ह्या था । देवसर्माका गुजकर ह्या ह्या ह्या था, भो पुत, मद्य आदिका व्यसनी था । ह्या पुनाकरने विकास ह्या पन सूत आदिने ह्या ह्या दिया । उसके क्युओने उसका

मन सूत्र आदम 🔤 मा दिया। उसके क्युओन इसका मार्थि मा दिया। वह पृथ्वीपर इसर-उसर पटकने 🕮

देववीगसे गुष्पकर 🚃 सिद्धके आलमने आख, कई कर्न्डी

नमके एक बोगीने उसे कुछ दक्षनेको दिया, विद्व भूकारी विदिश्व होते तुर को उसने उस अजको विसास आदिसे दुवित स्थान को किया। हाला का योगीने उसके सिने एक पहिलोको बुकाया। योक्नीने हाला दुव्यकरका अतिका-स्थानस किया। हावल्यार कह बैद्यास-रिम्बरपर कही गयी। उसके वियोगसे विद्वास होकर गुणाकर

पुनः योगीके पास अस्या । योगीने यक्षिणीको आकृष्ट करनेवाली

विद्या गुणकरको प्रदान को और कहा— 'बत्स ! तून चालीस और परलोकमें अधिक फलाब्द होता है। मन और रागिकें दिनतक जलमें स्थित रहका आधी ततने इस शुध मन्त्रका अध 🚃 किया नवा कर्म दूसरे जन्ममें सिद्धि प्रदान करता है; परंतु करो । ऐसा करनेपर पदि तुम मना सिद्ध कर स्त्रेगे को मन्त्रकी मा. 📰 और राग्निस्ट हम सेनोकी समयतासे सम्पादित शक्तिके प्रमानसे का वर्षाणी हुन्हें माना 🐺 जानगी। 🔤 इस बन्धने 📗 🔤 पल ४८० 🚃 📗 और अन्तमें गुजकरने वैसा ही किया, विज्ञु वह वर्धक्रमेको प्राप्त नहीं कर मोश्रा 🔣 प्रदान करता है। उत्तः सामकको कोई भी भार्य अस्यत्य मनोयोगमे 🚃 प्राहिये । आया । उसने अपने माता-पिराको नगर्भात कर 🖦 📟 गुज्यकारे 📟 हो 📖 यहे सहपूर्वक सम्बद्ध 📟 मितायी । दूसरे दिन प्रतः यह गुण्यकर संन्यांसर्वोके एक बठने कियः 🚃 देन्ते 🛮 🗰 धायनमे पनीयोगको कमी छौ । गया और वहाँ किया-रूपमें रहने लगा। 🚃 चेतर तचा प्रकाधि-सेवन आदिमें शरीयका योग 🚃 नियत होकर उसने 🔤 हो 🚃 प्राप्त प्राप्त पर्याप और 🚃 वर भी होता 🚃 किंदु गुलाकाका मन मन्त्रमें क्ष्मकार बताये गये मनका पुनः तम कृता प्रत्य किया, न 🚃 निवासि लगा हुआ था। इसी 🚃 🖷 मन्तु-पर पश्चिमी फिर भी नहीं आयी, जिससे उसे बड़ा कर हुआ। माना विकास माना है से स्वाप्त के लिए अपेर क्षेत्र 🚃 🔀 वैतालने ज्ञानविज्ञास्य स्थाले पुरत-पालका 📸 🚃 🔣 🕬 मोग न रहनेके कारण गुप्तकर पश्चिमीको गुजाकर अधनी विधा पश्चिमीको क्यों नहीं प्राप्त कर सकत ?" 🚃 न कर 🚃 चिनु 📶 ते 🖼 📖 🛮 धा, फलतः राजा बीरमा---सर्विकर । सायकारी सिद्धिके रिजे 🚃 वह यह दृश्य और 🚃 होकर पश्चिमीको प्राप्त तीन आवस्पक गुण होने चाहिने—यन, बाजी तक सरीश्रव किरव । इससे यह सिद्ध हुआ कि 🛗 मी कार्यकी पूर्ण ऐकारहर । 📖 और 📰 📰 अध्या 🕬 📰 🚃 🚾 मन, 🔤 और शरेर---इन रीन्डेक ही 🔤 परलेकमें सुखप्रद होता है। कावे और सर्वरते 📖 📖 अवस्था 📳 इनमें भी भागत चीच वरण आवश्यक 🕼

संतानमें समान-माथ रही (यहारे पुरुषी सधा) वैदालने पुन: बद्धा—उक्न्। विक्टूटने कव्दतः (समा पहानी

नमका एक विकास राजा रहता था। एक दिन वह एक मुगका पीठा चित्त हुए एक कमने अपन है जाना चुनाहरू बालमें यह एक सर्थमरके पास पर्तुचा और वहाँ उसने अपनी स्थापि साथ कमल-पुनोका बाल चलता हुई एक सुन्दर मुनि-कन्यको देखा। उसके बा क्याको देखकर राजाने उसे अपनी राजी बनानेका निहास किया। यह कन्या भी स्थापि देखकर प्रसान पुर्व। दोनों परस्मा भीतिपूर्वक एक दुनोको देखने लगे। उसकी सखीसे राजाने जम उस कन्यका पता पूछा, तब उसने कहा कि यह एक मुनिकी वर्षपुरी है। बाल समय बाव कन्यकी पिता वहाँ बाव पहुँचे। मुनिको देखकर राजाने विनायपूर्वक उनसे पूछा—'मुने। उसमा बाव क्या है?'

कार्य सुन्दर बोता है। यह इस बन्धने आंशिक 🚃 🔣 🛊

न-मार्थ रही
की कथा)
स्मय महामनीचे मुने जेले—'स्वन् ! असहाच्या पासनकेवल, जरनागरावर श्वा और इस करना यही मुख्य धर्म है।
मवजीवको अन्वभावन देनेके समार स्मि दान नहीं है।
स्वाचेको द्वाव देना व्यहिये। पृत्यवनीको पूजा करनी चाहिये।
हिं भारतको नित्य असंस्थात रक्षना चाहिये। सा
देनेने संपन्न-पान रक्षना चाहिये, वक्षना नहीं करना
चाहिये। देवकाकी पृत्रामे कल-छद्म एवं कपटको छोड़कर
ब्रह्म-पित-कचे सरकत असंध्य महण करना चाहिये। गुरु
हिं वनीको पृत्योग इन्द्रिय-निप्तह एवं सम्बद्धितिकत्ताका
विकेष च्यान सहना चाहिये। दान स्मि समय मृद्रुताका आञ्चय
करना चाहिये। बोई-से मी हुए निन्छ कर्मको बहुत

सम्बाजन सर्वच उससे विश्व रहना चाहिए<sup>ह</sup>ा

22 mm

लेक्द्र सची राजसके पास पहुँचे । ज्यों 📕 बलिदानका 📖

🚃 🛗 से वह अद्यानका बालक पहले हैंसा और पित

बैक्स्पने पुत्रा — एवन् ! बताओ 🔣 मृत्युके समय 📰 **अक्रम-करन्य 🔤 को हैसा और ब्यटमें** फिर को रोमा ?

राज्यने कहा —वैकल ! 🚃 पुत्र पिकको 📟 होता 🖥 और 🔤 पत्र माताको किय होता है। इसलिये माता-पिराभी

🚟 🔛 जनकर और 📖 कोई 📖 न देसकर

🚃 अवस्त्रासे मध्यम पुत्रने 📰 सरण पहल की, परंतु अपनी प्रशेक प्रिय चाहनेकले 🚃 निर्देशी राजा रूपदतके

🚃 कृतुकर्णी सहन्त्रार देखाचन दस बाह्मणमुज्यारको पहले

🚃 🌬 🞮 और फिर 🔤 यह उत्तन शरीर अधन राशमको

क्य होता. 📰 सोकार 🔤 ्राडी 🔚 उच्च न्यासे रोता

🚃 🚃 करने राज । वैतारा एकके इस अवस्ते बहुत

करनेके कारण तुकारे इत्यका नाग हुन्य।' यह मुनधर उसने

ऐसा उस मुनिने अपनी 📟 विकास रामकुमारके साम कर दिया। रामा उसे लेकर जानी राजधानीकी और चला। मार्गने उसने एक बटवुक्को सेने विकास किया। उसी पाता समाम समाम का अनेके हता एक राक्षस वहाँ आया और कहने लगा कि 'तून दोबोने वेद स्थान अपनित्र सार दिया है, जतः मैं तुमलोगीको स्था जाठेगा।' राजके क्या मॉगनेपर उसने पुनः कहा--- 'बाँद हुस किसी सात वर्षके प्रदान-बालकको 📰 📰 दिन्दे प्रसूत करों तो में तुन्ते होड़ देगा।' एका राधसको क्यन देखन अपनी

दुसरे दिन राजने प्रनियोक्ते सक सम्बद्ध का सुनवा। अन्तियोक परामर्शयर राजने हता कदानको एक एक सर्ग-मुद्राई देकर 📶 पच्चम पुरुषे रक्षसके 📖 🚟 लिये क्या कर लिया। इस अञ्चलपुरने 🗷 विकास लिए अपना व्यक्तियान देता स्थीनास कर लिखा। यथासम्बर्ध उसे

पक्षीके स्त्रय महत्तमें चला अवका।

# क्ये कम, समझे ज्यादा وبوبه الدائوي التنا

wan igan i

जयपुर्वे वर्षमान कारका एक राजा था। इतके 📟 वेदवेदासुपारंगत विष्णुत्वामी नामकः एक सक्षण विकास कारा। था। यह राभा-कृष्णका चला था। उसके 🚌 📆 🔻 विधित्र व्यसनोर्धे लगे रहते थे : वे वैसा विधित वर्ध करते थे, वैसा हो उपका नाम भी 🎆 📕 🖥 रूप । पहला 🙌 पुरस्तां पा, दूसरा व्यक्तिकारे, वीसरा विश्वी और बीचा नारितक था। संयोगसे दुर्यान्यवता वे सभी निर्पन हो को। एक बार वे सभी अपने निता विन्युहार्मीके पास भवे। उन लोगॉने विनयपूर्वक उन्हें नारकार किया और कहा— 'पिकाबी ! हमलोगोंकी लक्ष्मी कैसे नष्ट हो नमी ?' 📟 कहा—'युरकार्ग ! युरकार्ग प्रमध्ये यह कर देख है। यह मूल है। पुतकामें काभिका, कैर्व और निर्देशका

आदि उत्पन्न होते हैं। यह महान् हुम्मरेगाश्वक्षये है। स्वतंत्र्य

सुरुवार्थ करता

द्वायद्वादां पृशेकतं

बैतालवे समाने पुनः अक्षर—स्वन्। राज्येन

कक्क--- 'पितृष्टम ! आव 🏬 कृपया धन-प्रातिका सही कर्व कराने।' विकाने कहा--'तीर्थ और वर्गके प्रभावसे तुम्बरे पाप 📠 हो बार्वेगे । 🚃 अपने माल-पिलकी बांधीपर 📖 दो, उनका कहना मानो ।' ठदनन्तर पिताने द्वितीय पुत्रसे कार--- 'पूत्र ! शूल व्यक्तिकारी हो । नेश्यानक संग नदा आशुप है। कुर इस अञ्चय 📰 स्थानकर ब्रह्मचर्मपूर्वक म्बारपायम् हो । म्बारपर्यक्षतः धारण 🚟 ।' हतीय पुत्र विवयीसे <del>प्याः - 'चारा और यदिए सदा पापकी वृद्धिके भक्षाण है,</del> इनके 🚃 🚃 चौर्य-कर्य 🔤 और करकगामी होगे, इसकिये कुन देवर्पसम्बद्ध जगत्वति, सर्वेत्स्य भगवान् विष्णुके निमिश्व इंब्लेको सम्बर्धित कर भौन होकर भीजन करें।

और अपने नाविक पुत्रसे कहा--- 'तुम देवनिन्दा आदि भवितक-पाकको छोदका 📺 आस्तिक-पार्गका अवस्त्रभन पनेत्। मिलल भौतिने मिला समझ द्रव्यानिको ।। कृत्वने । बृद्ध (प्रक्रिसर्गवर्ग २ । १९ । ५-७)

करो, 🚃 शुद्ध-बुद्ध एवं नित्य है और 🚃 🚃 महाराक्ति है। सभी प्राणियोंके इदय-नुहाने स्थित देवसागण परमानके अह है। 🚃 🚃 प्रकार परकी स्विके

लिये उनकी पूजा करो।'

यह सुनकर ने करों पुत्र अपने 🚃 😘 निर्देश साधनींमें प्रवृत्त हो गये 🔤 सुन्दर ऋक्की 🚃 सिने

स्वेदर दिवस्त्र अस्यधनः भी 📰 लगे । धनवान् 🔤

वर्षपरमें 🔛 संबोधनी 🔛 प्रदान कर दी। वे 陆 🚾 प्राप्त कर 🚃 🔤 आये और वर्ड 🚾 🕶 🖦

अस्थियोक्त 🚃 🚃 करने सन् । प्रकट पुत्रने परे 🧰

व्यक्तको अस्थियोको एका धरके उसका 🚃 🚃 विकास । इस मन्त्रेर 🚃 🛮 अधिकर्ध ५३६-कर 📗

गर्मो । दूसरे व्यक्तिकरी पुतने 🚃 मन्त्रक कल केव्यक " जिसके प्रमाणने 🚃 🔤 मांस और वधिरने 🚃 🖥 गया । विषयी पुराने उसके 📖 अधिकन्तिक ऋत विषया।

कलकारण लाग और प्राप 🚟 🛲 गये। 🛗 🌉 🔤 न्यतंत्रे 💹 नारिकः पुत्ते जल विक्रमाः। 🚟

प्रभावने 🚃 होनेपर उस न्यामने ३५ सनीया 🚃 कर लिया।

वैतालने राजासे पुरत—एकर् । 📖 अन्य 🚟 🔄 क्ष भारोंने सबसे बढ़ा मुखे भीत भा ?

चोले—विसने नरे इदं क्या विकास,

हो गया।

वैकालने चुनः राजासे कहा— राजा विक्रमादित्य ।

पगवान् संकरकी अञ्चल ही मैं सुन्हारे पास आया था। अनेक

🚃 🙀 🔭 🚉 कुलारी परीका 🖽 और तुमने 🚃 बुद्धमतापूर्व 🚃 दिया। इससे मैं बहुत प्रसाप है, हमार्थ पुजाओंने पेट निवास रहेगा, जिससे 🚃 पृथ्वीके

राष्ट्रकोको जीव लोगे। दल्कोंके इए समी पुरिर्ण, 🚃 क्षेत्र, नकर अबाँद नह कर दिये गर्ने हैं। इसलिये

व्याप्त व्याप्त विकास अवस्थार पुतः उनकी रचना

और न्यायपूर्वक पृथ्वीका शहरन करो। तुमारे 📖 कुः 🔤 स्थापना होगी।

সূত্ৰ কিবা<sup>†</sup>।

इतन करका 📰 बैसल 🎹 आएधनका 🛗

देकर 🌃 अन्तर्कित 🖥 गया । एका विकासदिस्त्रने मुनियोंकी

🚟 अधनेष-वड़ 🔤 और वह 🚟 🚥 हुआ।

वर्षपर्वक शुरूप 🔚 📰 अन्तमें 📖 विक्रमाहित्यमें

🚃 🚃 बहा पूर्वा है। 🚃 उत्तरसे वैताल अस्वन्त प्रस्ता

कार्गनभावते कानार सीनकारे ्राच्या लोमकर्पण सुरुवी महत्त्वको पुनः इतिहास एवं

पुरुतको पुरुवको अध्यक्षोका सक्त विका और किर 🚃 🧱 हुए वे राजी अवने-अवने 🚃 और

क्ते गवे। (सम्बद्धाः १—२६)



[भारतवर्षमें सरपार्थकावत-कथा अस्पत्त 💹 🏥 और असा-वार्यको इसका 📉 सर्वाधिक 🖠 । पारतीय 🚃 परम्पराने 🚃 🗷 मानुस्थिक कार्यका आरण 🚃 गण्यतिके पूजनसे एवं उस वार्यकी पूर्वता भगवान् सरकारायकारी कुमा-प्रकारते 🚃 🔠 है। व्यक्तिन समक्ते थनवान् सरकाराकारकी प्रचलित कथा सन्दर्भयको नामसे प्रसिद्ध है, को चीन का ताल 📉 कार्ने उपलब्ध है। धविष्यपुरायके प्रतिसर्गधर्वमें 🗏 धगवान् सरवनस्थानात-कथाका उल्लेख विस्तात 📱 🗃 🕾 🚃 📰 छन है। यह कथा सन्दर्भागकी कथासे विसती-कुलती होनेकर भी विशेष रोकक एवं श्रेष्ठ 🚃 होती है। सहस्रकारकारत-कथारी प्रविद्येक 🚃 अनेक संबद-समाधान भी ४सपर होते रहते हैं तथा लोग वह भी पूछते हैं कि सामु बनिवह, कहाविकेस, शतानद व्यक्तन, उल्लामुख, तुंगध्वत आदि रामध्येन कौन-सी कथायें सुनी भी और ने कवायें कहाँ नमी तथा इस कथाका प्रकर कवासे हुआ ? 🚃 सम्बन्धने नहीं करना चाहिये कि कथाके मध्यमंत्रे मूल सत्-तत्व परमत्वाध्य ही इसमें निरूपन हुन्य है, जिसके शिवे 🚟 'नासकी विवादे भागो नामान्ये मिक्को सत:' अर्थंद राज्योपे यह स्वष्ट किया गया है कि इस माजायन दुःखन संस्तरको काशकिक सता ही नहीं है। परमेश्वर ही तिकारतकावित सरप है और एकमात 🔤 क्रेप, 🛗 एवं उपास्त है। अन-वैतन्त्र और 🚃 पतिनके अध नहीं साकारकार बारोके योग्य है। 🚃 (१०१२।२६)में 🗎 🚃 🚾 है---स्त्राच्यां क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा व स्त्रो ह महर्ष भी सरकार और व्यवस्थाता विकास 🚃 विश्वस्थान प्रत्यानको 🛣 है। इसी 🕬 📟 princit ... रत्यप्रविद्यान सम्बन्धेय क्रास्त्रवर्धने सुन्धानि सन्त । असम्बद्धकार्यक्रिकारेण सभी पुन्ने से बिह्यू वर्षित समार ।। (श्रेपता: १० । १४ । १४) —संसरमें मनीविधोद्वार संस्थ-भावनी श्रोजनी कर 🎹 🖩 विसे प्राप्तकर वशुष्प सर्वन्त कृतार्थ हो 🚥 है और सची अस्तुवन्तरी उसीयें पर्ववसित होती है। निवास-उपस्तानने सामाना नएकावरी आणि हो जारी है। अतः श्राहा-परित-पूर्वतः कृतनः, काथ-अपन 🍱 🚃 आदिके 🚃 इतः अत्यासकारः परावतः 🛍 धार्मान् श्तयन्तरायमधी उपस्थाने 🚃 🚃 महिने। —स्टब्स्स्ट 🕽

### 9-74E-17

कासजी बोले—एक संभवनी वार्य है, जैनिवरणमें शौनवारि विशिष्टक श्रीसुत्रजीसे किनयपूर्वक पूछा— 'भगवन्! संसारके करवाणके लिये आप यह करश्मीची कृषा करें कि चारों मुगोंमें जर्मन पूजनीय और ब्रोन सेक्टीब है तथा बर्गन सकते अचीष्ट फ्लोरखेको पूर्ण करनेकरक है? मानव व्याप्टक श्रीस्टिंग अपनी महालमधी अपनाको प्राप्त कर संकता है? आग्रन्! अप ऐसे साव उपायको करलामें जो महाव्योको व्यक्तिको कदानेकरण हो। शौनकारि श्राप्तिकार इस ब्याप्ट पूढी क्रिकेट श्रीपूर्वी भगवान् सरवारायकारी प्रार्थन क्रिकेट लगे— व्यानीयने राजीतिकां व्यानीयन्तिकां वास्तावम्। व्यानायम् स्थि स्था सावसरायमं सीचि देशम्॥ (प्रतिसर्वतर्व २।२४।४)

भागुरिस्ततः व्याप्त कम्मलके स्थाप नेत्रवासे, मनवती लक्ष्मिके प्रतिद्वारम, चतुर्युत, सुवर्णकारिके सम्बन्ध सुन्दर भागितको संस्त्राची स्थाप करनेके प्रकारण सम्बन्धारम साम

(औस्कृतीने प्रार्थन करते 📰 कहा--)

भरीस्थाले, संस्करकी रक्षा करनेके एकमात्र मूल कारण तथा सनुव्यक्ति सिथे भूतकेनुस्करूप मगवान् सत्वनारायणदेवकी 🖩 सुति करता हूँ।' श्रीराणं सहराहमणं सकरणं सीतान्ति स्थानिकः वैदेशियुक्तपालुक्यमपुरं चौतानकंत्रसम्। सन्दे कन्तपदानुतं सुरवरं सक्षमुक्तमाकरं

शाहोत स्टूच्या च शतोन्सरेन्सि स्वयम् । (प्रोत्सर्वर्ग २।२४।५)

'जो परावान् करुपाके निका है, व्याप्त करुपाल करुपाल

स्वादीने कहा—व्यक्ति । वि अवन्ते । रामाओकि सम्बद्ध व्यक्ति वर्णन करण है इसे आवलींग व्यक्त करि वह स्वाद्ध वर्णन करण है सम्पूर्ण स्वाद्ध विचारा करनेकला, स्वाद्धनीय पूर्ण करनेकला, देवताओंग्रास अवनिवत, व्यक्तिको प्रवादित, विद्यानीको आविद्दाः करनेकला श्रेषा स्वाद्ध क्यारे सर्वात्मको व्यक्तिकम् है<sup>र</sup>।

अन्तराक्तिसम्पन हैं, आदि, मध्य और अक्तरे 🔤 है, ऐसे

महान् आरम् निर्मृतसम्बद्धः आर्थः परमात्मको 🔛 हारासाः है। सभीके आदिपुरुष लोकोक्कारपद्यवन, सर्वत्र व्याप्त, तमेमूर्तिः सार्वाः सार्वाः स्थापः है।'

व्यक्ति सुनेकर प्रयान् विकृ कौरो--देवर्षे ! व्यक्ति करणसे वर्षे आये हैं ? आयके कौर-सी किस्त हैं ? महाचारा । व्यक्ति करी को कारो । वै व्यक्ति करीया ।

नारस्वाने कहा — प्रथी ! सोवहेंगे क्या करता हुआ मैं मृत्यूनोकारे गया था, वहाँ मैंने देखा कि संस्तरके सभी असे शनक क्यानके क्लेश-तापोरे दु:सी हैं। अनेक रोगोरे अस है। उनकी बैसी हुईशा देखकर मेरे मन्धे बढ़ा कह हुआ और मैं सोवने राजा कि किस उपायके इन दु:सी अधिपरिका उद्धार होगा ? पणवन् ! उनके करवाणके लिये आप कोई केड हुई सुमार क्याच व्याचना कृता करें। नारदकीक इन व्याचन सुमार क्याचन् नारपणने सामु-साधु राज्योते व्याचन क्याचन कीर कहा — 'नारदजी! किस विवयमें पह ही है, बिला कीर कहा — 'नारदजी! किस विवयमें करवाण है।'

भगवान् सारावा सरवापुग और वेरहपुगमें विन्युक्तकपरें का प्रत्यक करते हैं और हापाने अनेक स्ता धारणकर फल देते हैं, परंतु करियपुगमें सर्वाच्यपक बनवान् सरवनारायण प्राच्या करत देते हैं, क्योंकि वर्गक चर पाद हैं— सरव, शीच, तब और दान। इसमें सरव ही प्रधान धर्म है। सरवार ही लोकका व्यवक्रम दिका है और सरवामें ही महा प्रतिहित है, इसियों स्वाच्या प्राप्त प्रस्त है।

नास्त्वीने पुनः पुता—पगवन् । सस्यगणमणकी

ात्रा क्या परल 
अरि इसकी क्या विकि है ? देव !
कृष्यस्वयर ! सभी कर्ते अनुवादपूर्वक सुद्रो कराये ।

श्रीकगणना कोरो—नरद !

च्या एवं **व्याप्त प्रमुख जारा भी क**तलानेने समर्थ नहीं है, **व्या**प्त संकेटने में उसका परन तथा विधि काला रहा है,

१-वरिकस्तुर्वकारं कार्यविकासम् सुरमापुरावातं पृष्ट्रेण **स्थानः** विकुधसुनिकासं सामुक्तविकोषं कृतिकरचीतं को सुक्तविकासम्। (विकार्यकर् १/२४/६)

अप सुने —

सस्यनगरायको अतः एवं पूजासे विकास कर्म पूजाने व्यक्ति पुत्रविन व्यक्ति पुत्रविन क्रिक दृष्टिसम्बद्ध विकास क्षेत्र कर लेखा है, दृष्टिकीन व्यक्ति दृष्टिसम्बद्ध हो जाता है, वेदी व्यवनपुत्त हो व्यक्त है और प्रवर्श व्यक्ति निर्धेन हैं। जाता है। आविक क्या ? व्यक्ति विस-विमा क्युच्धी हवा। करता है, उसे यह सम्बद्धा हो जाती है। इस्विन्ये पुने ! सनुष्य-व्यवमें प्रतिप्रकृति साम्बद्धा करता क्या प्रतिप्रकृति साम्बद्धा क्या अवने अभिन्तिक वसुच्छे निर्धिक होता है। अवन क्या लेखा है।

इस स्टब्नासम्बन्धको करनेवाले व्यक्ति व्यक्ति । वह प्राप्तः दश्यक्तरपूर्वक कानकर परित्र हो ज्यव । हावने तुलसी-मंत्ररीको लेकर सावने स्टब्स्स धनवान् स्टब्स्स हस प्रकार ध्यान करे—

(आस्त्राच्य २ । २४ । २६-१७) 'सबन मेमके समान अस्त्राच निर्मल, बहुर्गुज, अति बेह पीरी क्याको बाला करनेवाले, प्रसावसूचा, नवीन कम्सके

समान नेत्रकाले, सनक-सनव्यनदिशे व्यवस्था मगकन् नारायणका मैं भारत विश्वन करता है। देव ! वि अवके सरायणकामें कारणकर सार्यकालमें आकर्ष कृत कर्मणा।

आपके सर्वीय **व्या**स्त्र सुरक्त असके प्रसाद अर्थाद् आपकी प्रसारकका में सेवन करिया है

इस प्रकार मनमें **विकास सर्वकालमें विकिन्न्य** भगवान् सर्वनाराध्यमकी पूजा बतनी चाहिये। पूजाने प्रीय करंगल रखने चाहिये। कदली-साम और बंदनवार रूपने चाहिये। सर्वमध्या भगवान् सारामामको पुरुषपूक (सकु ३१।१-१६) द्वारा प्रशान्त आदिसे पतीपति साम पदन पतिस्था पतिस्थित उनकी अर्थन। काले पतिथे। अस्ता भगवन्त्ये नित्र

क्ये भवको निर्म प्रस्तदेवाच बीमहि। च्यु-च्युक्तेको स स्थानुका नयो नयः॥ (प्रक्रमांको २।२४।३०)

क्या व्याप्त कार्यान् स्वयदेकारे नमस्त्रार है, मैं आस्त्रा स्था व्याप करता है। आर वर्ग, आर्य, काम और मोस— इस क्युकिंव पुरूषकी काम करनेवाले हैं, आकारे वार-कर कार्यान है।

इस सम्बद्ध वचारकि जयकर १०८ वार हवन वरे। इसके दर्शक्ते वर्षण व्याप्त दर्शकों मार्गन व्याप्त पाण्यक्षे हि। भाग्यक्षी इस कथाने सत्य-वर्षकी ही मुक्तता है। क्ष्य-व्यक्षे अनुद्ध पाण्यक्षे स्तारको चार भागीन विकासकर है। व्याप्त व्याप्त वर्षण करे। व्याप्त पाण्यक्षि है, व्याप्त व्याप्त अपने कुटुन्तको, हुनीय पाण्यक्षिकोंको और चतुर्थ वाण अपने दिन्ने रहे। स्ताप्त पाण्यक्षिकोंको और चतुर्थ वाण अपने दिन्ने रहे। साम्राम्

देवने ! इस व्यक्ति व्यक्तिस्य पूजा व्यक्ति चाहिये । सन्दो-पनिवर्णक सत्यक्तरमणकी पूजा अन्तेवाला मंत्री सभी व्यक्तिसम्बद्धित इस वन्तमे प्राप्त कर स्ता है।

व्यक्ति क्षेत्रन कराये एवं साथे भी और होकर भोजन करें।

ग्रे पुष्पकलके दूसरे जनमें भीगा जाता है और दूसरे जनमें स्था गर्म स्था क्या मेंगाना कर है। अक्षपूर्वक स्था गर्म सरक्ताप्यक्ता स्था सभी व्यास्थानिक स्था करनेकाला होता है।

करदानि कहा—मगदन् । जान ही जामकी आक्रसे पुरस्कराने इस सरपदेव-असको में स्थान करने मरो गये और

मनकान् नामननदेव अन्तर्यान हो काशीपुरीने चले आहे। (अध्याय २४)

#### सत्वनारायण्यत-कथामें शतान-द ब्राह्मणकी कथा

सूक्तवी बोले—ऋषियो ! जगवान् वरायजने व्या कृत्वपूर्वक देवर्षि करदबोद्वारा जिस क्वस्र इस व्याप्त किया, अब मैं उस कथाको बाला हैं, अवपतोग सूने—

लोकप्रसिद्ध काशी नगरीयें एक श्रेष्ठ विद्यम् सहस्य खरी थे, जो विच्यु-सरप्रतयय थे, वे गृहस्य थे, बे दश्य बी-पुत्रवान् थे। वे विश्वा-वृतिसे स्वयम जीवन-कपन करते थे। क्या नाम शताभर था। क्या सम्यम थे विश्वा मीकंके लिये जा ही थे। उन विनीत एवं अतिशय राज्य सम्यम्प्यो प्राणित एक वृद्ध साहाय दिखायी दिये, जो सम्बाद हरे ही थे। उन वृद्ध साहाय दिखायी दिये, जो सम्बाद हरे ही थे। उन वृद्ध साहायचेषधारी श्रीद्विते साहाय शतानपदसे पूज-विज्ञात । आप किस नियवसे विज्ञात । श्रीय विभाव विश्वास हरे ही थे। विज्ञात । श्रीय विभाव नियवसे विज्ञात । श्रीय विभाव विभाव

नारायपाने वाहा — हिथ ! वसन जन्म रीर्पवालसे पिका-पृति विक्र है, इकसे निवृतिके सिके सरपनारायपासत करियुगरों कि उपन है। इससिये के कारनके अनुभार आप विक्र भरवान् विक्र विक्र करियों के करपोकी रारण-शहण करे, इससे शरित्य, लोक कि सितायोंका विनान होता है।

करणापूर्ति भगवान्के इन क्या क्या स्वयं रातानन्दने पूज---'ये सस्पन्नसम्बर्ग स्टेन है ?'

व्याद्वायसम्बद्धारी जगन्नम् नोले — अभाग्य व्याद्वायस्य स्वाद्वारं स्वाद्वारं

ाती पूजा, आरावना साथ व्यान करते हुए तुम इस वतको अवस्त्रों साओ ।

विवस्थायारी मगळन्ते ऐसा कहते ही उस स्वानन्दने विवस स्वान मीलवर्ण, सुन्दर कर सुनाओंने स्वाह, बाह, गड़ तथा पदा रिक्षे हुए और पीतामार धारण किये हुए, नवीन विवस्थात कमलके समान नेत्रकले तथा मन्द-मन्द सबुर मुस्त्यानवाले, कामालायुक्त और पीरिके हारा बुध्यत करण-कमलवाले पुरुषोक्तम मगळान् नारायणके साधाद दर्शन किये।

धनकर्षं क्यां सुन्ने और इनका प्रतक्ष दर्शन करनेसे इस विवक्ते सभी व्यक्त पुरुषित्व हो उठे, आंखोंने प्रेमाशु भर अवते । उसने भूनियर निरकर समक्तन्त्रो सहाङ्ग प्रणाम किया और सहद क्यांसे वह उनकी इस प्रकार सुन्ति करने लगा—

स्वाप्त स्वाप्त, जगल्के कारणके पी कारण, अनावेकि
 क्ष्म, कारणन-पहुलाके देनेकाले, साम देनेकाले, पुण्यकप,
 अध्यक तथा कारक होनेकाले और आधिर्यंतिक,
 अध्यक तथा कारक होनेकाले और आधिर्यंतिक,

प्रतास व्यापन् सरवनायकको मै प्रणाप करता हूँ।
 इस संस्करके व्यापन सरवनायकटेकको नगलार है। विश्वके अल-चेकक करनेवाल है।
 इस स्वापन करनेवाल हाउँ सरवककरको नगलार है तथा

**व्यक्तिकाले कारल महाकालकार को नमस्त्रार** 

है। सन्पूर्ण व्याप्त समुद्रत करनेवाले आत्मपूर्णित्वरूप है कंगवन् । आक्नो क्याप्त्यर है। काम में धन्य ही गया, पुल्लान् हो गया, आज मेरा जन्म होना श्रयहा हो गया, को व्याप्तिकार्ण आगान-अगोवर आपका मुझे प्रस्तव दर्शन

कुका । मैं अपने भागवत कम सरहता कहें । ह जाने मेरे किस पुरुषकर्मक यह कहा का, जो मुझे आपके दर्शन हुए । अभी ! आपने हिस्सी इस मन्द-वृद्धिके शरीरको हाला हा

दिवा<sup>रे</sup>। स्थेकश्रक्ष ! रमारते ! किस विविसे मगवान् सत्य-

१-दु:कोर्वाकीन्यानां अभिकारणे हो: । पुरस्ताः सार्गं चर्चाः नेतरे विकारणेवाः ॥ (अभिकार्णनां २ । २५ । १०)

२-प्रमासीर व्याप्त स्थापना स्थापना । व्यापना विश्व स्थापना प्राप्त । स्थापन

ः सरकारकारकारम् 🗷 📉 🛒 🛒 । 🚃 🚾 निकार 🗏 काले बारान्युरसम्पर्धे ॥

नापरणका पूजन करना चाहिये, विश्वे ! कृपाका उसे भी आप बतायें। संसारको मोडित करनेक्स्ने प्रशासन् नक्कन प्रयूर वाणीमें बोले—'क्येन्द्र ! मेरी फूक्में बहुत क्रिक्स 📖 क नहीं, जनस्वा के वन प्राप्त हो कर, 🚟

ब्रह्मपूर्वक मेरा कान करना 🚟 । विस प्रकार मेरी सुवित्रों, स्रुतिसे प्राह-प्रस्त गजेन्द्र, अन्यनिस संस्कटसे 🚃 हो नये, इसी प्रकार इस अक्षके आञ्चवसे मनूब्य तत्काल क्लेजनुक हो

🚃 है। इस बतनरे 📖 सुरे—

अपीष्ट स्थाननकी सिद्धिके लिये क्**याची** 📖 एकाकर विधिपूर्वक भगवान् हिल्लाम् पूजा कार्यः चाहिये । सवा 🔤 लगभग ग्रेजून-भूमेंने दूच और शकर मिलकार, उस चुर्णको कुराते युराकार स्थापी निकास्त कारक भारिये, यह मगम्बन्ध्ये अल्पन क्रिय है। प्रक्रमुक्के छन् पगवान् रालयमको कान करकार गर्भ, कुछ, 📹 छैद, नैवेद सम्बद्धार सम्बद्धार अर्थन करनी ब्लाइमा अनेक निर्दाय तथा पश्च-भोज्य पदार्थी एवं ऋतुकालोन्द्रत विविध फलो तथा फुलोने चौक-पूर्वक एक करनी फाहिये। फिर अक्षाओं दश्का कराजीके साथ मेरी कथा, राजा (तुनुध्यक) के इनिहास, विश्वार्थ 🔤

क्रमाने ज्ञात भक्तिपूर्वक सरबदेवको प्रवाधकर प्रवादक वितरण करना च्यापि । तदनभर भोशन करना चाहिने । नेरी प्रसम्बद्ध इक्कदिसे नहीं, अपित् ब्राट्स-पवित्से ही होती है।

विभिन्न (भाषु) की कथाको आररपूर्वक प्रकम करना स्वदिने ।

विभेक्त । 🚃 प्रकार को विधिपूर्वक पूजा करते 🕏 वे पुत्र-पीत्र तथा धन-सम्पत्तिसे क्ष्क होकर बेह चोवॉका उपयोग करते 📕 और अन्तमें मेरा सांनिच्य प्रान्त कर 💹 स्वय असनन्दपूर्वक रहते हैं। यहीं को-को कान्स्य करता है, यह उसे

अवस्य हो प्राप्त हो जाती है।

इतना करकर मगवान् अन्तर्धान हो गये और वे ऋहाग

🔳 अस्वन्त प्रसद्ध 📕 गये । मन-ही-सम् उन्हें 🚃 बह् 🖥 मिक्के स्थि 📰 और चले गये और उन्होंने मनमें 📰 निश्चम मिन्य 🔣 📖 विश्वमें जो यन मुझे प्राप्त होगा, मैं

**ार्ड नगरान् संस्कृतसम्बद्धी पृत्रा कर्तन्ता।**'

उस दिन अनुबास किय 🔤 🖟 उन्हे प्रबुर बन प्राप्त 🖥 गन्ता। ये व्यक्षर्वचित्रत हो अपने पर आये। उन्होंने सारा

🚃 🔤 विकासको वदाया । उसने 🔣 सरवनारायणके क्ल-क्ष्मका अनुबोदन किया : यह प्रतिकी आज्ञाने सद्धापूर्वक

**ार्जा** पुश्चकी सची सामक्रियोंको ले आपी और अपने कम्-कम्बे तथा पहेसिकेशे भगवान् सरकारामणकी

पूर्वनें 🚃 होनेके सिथे चुला ले आयी। 🚃 प्रतिस्तृतिक मगनान्त्री 🚃 मी । मार्थिक क्षेत्र क्षेत्र कामनाअवेको पूर्व कानेके

क्षेत्रको पत्तन्तत्तल धगवान् सत्यम्ययगदेव वयद हो गये। करका प्रकारको साहार राजानको प्रमाणको इस लोकमें तथा भारतेकने सुख तक परार्गातको यक्ता की और कहा—'हे

वकान् ! अत्रव मुझे अवना दास बना लें।' धनवान् धी 'तकाल' कहकर अकार्धन हो गये । यह देखकर कवार्य आये

🚃 🔤 अञ्चल विकास हो गये और ब्राह्मण भी कृतकृत्य 🖩 गकः। वे सची चगव्यकृत्ये दव्यवत् प्रणासकर आदरपूर्वकः मस्य महत्त्वक 'का सहात प्रत्य है, यन्य है' इस प्रकार

करते 🚃 अन्ने-अन्ने धर चले गये। 🚃 🚃 यह

क्रमार हो हता कि परसान् सरमाग्रामणका जत अभीष्ट क्कानाओंकी सिद्धि प्रदान करनेकाला, क्लेशनाहाक और

चेन-बेक्को प्रदान करनेकला ै। (अध्याय २५)

## [ स्राप्यायक्ताक-स्राप्यायः द्वीतीन अन्तर्भन ]

### सत्यनारायणक्षत-कथाचे राजा चन्द्रचुकाः आख्यान

स्वाजी बोले — ऋषियो ! अधीन कलमे केटारसाकके असकस्था राजा रहते थे । वे अध्यक्त काना-स्वयाद,

मणिपृश्क नामक नगरमें बन्दवृह 🚃 🚃 🚾 ठथा मृदुषाची, चीर-प्रकृति 📖 भगवान् नारायक्के 🚃 थे।

क्रमोऽस्थ्य कृतो क्रमो क्रमोडक सक्ती का व्यक्तिकोको देश कि कविष्या न को कल व परस्य(क्रियानिस करून (मरिलर्गवर्ष २ । २६ । १५ — १५) विश्यदेशके प्लेक्स्मण उनके श्रुष्ट गये । उस सम्बन्ध 📖 म्रेफोरे अप-शक्तेश्वर प्रयक्ति बुद्ध हुआ। अस बुद्धमे राजा चन्त्रचुकारी विशास चतुरमिली सेना अधिक नष्ट हुई, र्षित् कृट-कुट्टमे निवृत् प्लान्ताल 🔤 🚃 🚃 हाँ । युद्धाने दर्भा क्लेक्स्रोरी परस्त क्षेत्रर राजा कहाकूर असन 🚃 स्रोहकर अफेले ही कार्ने चले गये : तोर्चाटकर 📟 इषर-उषर भूमते हुए ये काशीकृषि पहुँचे । यहाँ उन्होंने 🚟 कि पर-पर सस्यनग्रयणको एवा 🖫 📶 🛮 और वह 🔤 नगरी अस्त्रको समान हो 📖 🔣 समुद्धिरक्तो हो नवी है । वर्हकी समृद्धि देखकर चन्त्रच्छ विस्मित हो गये 📶

वर्षोने (शतनन्द) महरूके 📰 📰 सरवनारामण-पूजाकी 🚟 थी सूनो, 🛗 अनुसरणारे सभी शील एवं वर्णसे समृद्ध 🖩 गये थे। 📖 कन्त्रकृष पण्यान् सरपन्धापणको पुत्र वेल्पिक्त अञ्चल सङ्करः (शासनद) 📱 पास गये और उनके चल्लेक 🎟 🚟 संस्थातस्य - प्राची किथि पूछी तथा अपने राज्यप्रह क्या भी कालामें और कहा—'महान् | लक्ष्मेवर्ध भयका जनाईन जिस जतसे प्रसन्न होते हैं, ब्लाइ नाह कलेकले उस

स्वानन्त (इसानन्द)ने कहा---एवन् ! भगव्यन्त्वो प्रसन् कर्नेवाला सरपन्यायम नक्ष्य 🚃 💹 वत है, जो समक्षा दृश्ध-रोज्यदिका क्षत्राक्षा यन-क्षत्रका

बतको कालाकर आव केंग्र उद्धार करें।"

त्रवर्षक, सीपान्य और संतर्विका प्रदात 📖 सर्वत विजय-प्रदायक है। राजन् 🏻 जिस किसी भी दिन प्रदोक्कालमें इनके एउन आदिका उनयोधन करना चाहिये। कदलीदलके रक्षणीसे पर्वाद्य, केरणीसे अलेकत एक मण्डपकी स्थानका उसमें पांच करारोकी स्थापना करनी चाहिये और पाँच प्यकारी 📕 लक्षती चाहिये। क्रडेको चाहिये कि उस पण्डपके पध्यमें 🚃 इत एक स्मर्केय वेदिकाकी रचना करवाये । 🚃 क्रमर समस्य मन्द्रित शिक्षाकर परावान् नाययम (शासनाम) को क्यापित कर प्रेम-भक्तिपूर्वक कर्न, पून्य आदि उपचारीसे उनकी पूजा करे। भगवानुका ध्यान करते हुए भूमियर राजकार साथ रही। व्यक्तीत करे।

💻 🚃 चलुबने 🚃 हो मगवान् करक्कगुच्याको 🚟 📕 पूजा की। प्रस्ता होकर ग्रतिमे भगवान्ते एकाको एक काल सक्तवार प्रदान की। शहुओंको नक्ष करनेकाली अल्पार प्राप्त कर एका स्वयूनकोड सरानदाने कर अपने नगर्षे = गरे तथा कः हवार प्लेक्ड दानुओंको मारकर उनके अपार धन प्राप्त किया और नर्मदाके मनेकर 🚃 पुतः मगवान् 🎆 पुत्रा वर्धे । वे राजा ऋषक बारमा पूर्णनाको 🔣 और भतिन्तूर्यक विधि-विधानसै चगवान् अध्यदेशको पूजा करने लगे । उस जतके प्रभावसे वे लाखें अमेरिक अधिपति हो गये और साठ वर्षतक राज्य करते हुए अन्तरी उन्हेंने विक्तुलोकको राज्य किया । (अध्याप २६)

### सत्यनारायण-प्रतके प्रसंपधे लक्ष्यकारीकी 📖

भूतजी बोले---व्यक्ति ! अब इस सम्बन्धने सरक-नारायण-प्रसादे आकरणसे कृतकृत्य हुए विस्त्योकी कथा आहे। 🚃 समयकी बात है, कुछ निषद्गन करसे लकदियाँ काटकर नगरमें लाकर भेचा करते थे। उनमेंसे कुछ 🌉 कार्रापुरीमें सकड़ी 📰 अस्पे । उन्होंमेंसे एक पहल पास्त ा क्या विष्णुदास (शतसन्द) के आश्रममें सका। वहाँ उसने जल पिया और देखा कि सदानशोग पगवानुकी कुला कर रहे 🖟। पिसूक शतानन्दका वैधव देखकर वह चरित्र हो गया और सोचने समा—'इतने दरिंद्र कहरूके 🚃 📖 अपूर वैभव कहाँसे 🖿 एक 🤈 इसे तो आजतक 🗐 **मारम्या से** देख्य का। अपने यह इतना महान् यनी कैसे हो नवा ?' इसपर उसने पूक्त—'महाराज ! आपको यह ऐश्वर्य कैसे अन्य हुउन और उत्पन्ने निर्मनतासे मुक्ति कैसे मिली ? यह बक्तनेवन कर करें, मैं सुनना चाहता है।'

इक्कान-दुने कहा — भाई ! यह सब सरवनायमणकी अक्टुधन्यक चल है, 📟 अग्रधनसे क्या 🥅 होता। मनवान् सत्यवाप्रकारी अनुकन्यके जिना किसित् भी 📺 क्रम्य नहीं होता।

निवादने उनसे पूछा—महाराव ! सरका मयवानुबन क्या महरात्य है ? इस ज़राकी विक्रि क्या है ? आप उनकी पूजाके सभी उपच्यानेका कर्मन करे, काँग्रेंक उपचार-क्षान संत-महातम अपने हृदयमें सबके लिए सम्बन भाग रखते हैं, किसीसे कोई स्थानकार पत और हिस्सो<sup>र</sup>।

शतानन्द बोले — एक स्वास्ति वात है, केटर केटे मणिपूरक नगरमें रहनेवाले तथा कड़कूड मेरे अवसमये असे और उन्होंने मुझसे भगवान् सस्यमग्रयक अस-कव्यके विधानको पूछा। है निवारपुत्र ! इसपर मा को मा

सकाम पायसे 🚃 निकासभावते किसी वी 🚃 भगवान्त्री पुत्रका मनमें संकल्पका उनको पूजा 🚃 परियो । सथा सेर गोपूनके कुर्वको मधु तथा मुगन्धित कृतके संस्कृतकार 📟 अपने भगवानुको अर्थन करना चाहिने । भगवान् सरवनाराका (शालक्रम्) 📕 प्रक्रमुक्ते 🚃 कराकर चन्द्रन आदि उपचारोंसे उनकी पूजा हिंदी काहिये। पापंत, अपूप, संवाय, दक्षि, दक्ष, खुकुकल, एक, धुव, देव समा नैनेच आदिसे भौतर्यके पर्यकर्ती पूजा करनी चाहिये । यदि वैभव रहे तो और अधिक उत्साह एवं समावेशने पूजा करनी चाहिये। पगवान् भक्तिसे निस्तनः प्रसन्न होते 🕏 उतना निपुल इन्पोसे प्रसन्न नहीं होते । भगव्यम् अन्यूनं विक्रके आही एवं आपानस्य हैं, उन्हें किसी करहरी क्रास्त्रा नहीं, केमल चरानेक 🚃 बादासे अर्पित की हुई बस्पुक्ते 🖩 महण करते हैं। इसीलिये दुवीधनके हुए। की अनेकारी राजपुरवको स्रोहकर भगवान्ने तिदुरकीके अवसम्मे अस्तर रतक-भाशी और पुत्राको प्रकृत किया। सुद्धाको तम्बुल-कगको स्वीकार कर पगवान्ते तमे प्रमुक्तके सिके सर्वेथा दुर्लभ सम्प्रतियाँ प्रदान 🖮 दौं। मगवान् केवल मेंतिपूर्वक **व्यास्त्र व्या** अरे**श करते हैं**। गोप, गृघ, विवक्, व्याप, इनुकन्, मिमीधमके अतिरिक्त अन्य वृक्षसुर आदि दैत्य वी क्रायक्षके संगिष्यको व्या कर उनके अनुस्रहसे शाय व्या आनन्दपूर्वक रह रहे हैं<sup>7</sup>।

निवादपुर । विकास सुनकर का राजा चन्द्रपूर्व पूक-सार्वाप्रयोको एकजितकर आदरपूर्वक पणवान्को व्या चन्द्रस्थाप के अपना पष्ट हुआ द्रव्य प्राप्तकर आज भी स्मर्जाचन हो रहे हैं। इसलिये तुम भी भक्तिये सरम्बाधयणको व्या इससे तुम इस लोक्ष्ये सुवाको प्राप्त कर पणवान् विकास सामित्य व्या करोगे।

📖 सुरकर वह निकाद कुरतकृत्य हो गया। विप्रशेष्ट राज्यक्तमे 🚃 बर 📶 पर अकर उसने अपने 🚃 📰 हार लेक्क्स 🚃 बताया। उन सबने पी व्यक्तवर्ष हो बद्धापूर्वक यह प्रतिहा 👯 कि व्यव काशको बेक्कम इयलोगीको जिल्ला धन प्राप्त होगा, उससे अपने सधी कम्-कम्बोकि साम अक्षा एवं विधिवृर्वक अप साय-नतपनको पुज्र करेंगे । उस दिन इन्हें काह 📖 पहलेकी अधेकः चौपुना का मिला। यर कावत 📺 सबने सारी बात विकास कार केर किर सकते विलयस आदरपूर्वक भगवान् सर्वकारकाची पूज 🗃 और 🚌 अवन किया 🚌 भौतापूर्वक परावास्त्रा जाता समाने कारतार सर्व भी महत्त्व क्रिया । पूजके मधावसे पुत्र, पाने आदिसे समन्तित **व्यक्तिका पृथ्वीपर इच्य और श्रेष्ठ अन-दृष्टिको प्राप्त** भिन्छ । क्षेत्रलेख । उस स्थाने यायेष्ट भोगीका उपभोग किया और अन्तमें 🛘 सची 📉 📉 भी इलीप बैन्नवयानको जाता हुए। (अध्याय २७)

[ लाकस्थकारान-काराका करूर्व 📖 ]

१-समूर्वं सर्वपकानुस्थासम् सरम्। न 🔤 🖼 विवस्तविकारिकासम् व

(अविकार्गकों २ । २७ । ८)

२-व वृत्तेष्ट्रास्थ्यान्तरिकेतम् केनलम् कम् । यक्ष्यम् वरिकः पूर्णे व स्त्रो पृतुकेत् वर्णावत् ॥ दुर्वेष्यमृत्ये स्वातः राजपूर्णः स्वादेशः । विद्युत्तकारे स्वातास्थाः स्वयुः विद्युः ॥ सुरुप्तत्यद्वपुरुष्टान् सामकः मानुष्यदुर्शायः । स्वयोग्रह्मातिः श्रीतः वर्षाव्यवस्यवस्य ॥ स्वरूप्ताविकः स्वयः संदर्शनातिः सुरुकः ।

(मिसर्गानी २ । २७ । १५--१९)

### सत्यनारायण-प्रतके प्रसंगर्थे साथु व्यक्तिक एवं जानाताना कवा

सूत्रकी बोले—श्रमियो ! अन्य मै एक साथु विश्वकृत्री क्या कहता हूँ । एक बार मगावन् सत्कारक्ष्यका पान पणिपूरक नगरका लागी महावराली क्या पण्डपूर अन्ती प्रमाओंके साथ सतपूर्वक सरमाराक्ष्य भगवान्त्रा पूजा कर वा, उसी बावा रजपुर (रजसारपुर) निकासी पहावनी साथु वर्णिक् अन्ती जैकाको कनसे परिपूर्व बार नदी-तरसे

🚃 🚃 📷 = पर्वच । 📰 🔤 अनेक

भागवामियोसहित यांग-मुलासे निर्मित तक 
विपूर्णित पूजन-स्वापको देखा, गीव-का 
विपूर्णित पूजन-स्वापको देखा, गीव-का 
विपूर्णित यो वहाँ उसे सुजनी पही । 
विपूर्णित यो वहाँ उसे सुजनी पही । 
विपूर्णित साथु विभान । 
विपूर्णित साथुक्त साथुक्त विभान । 
विपूर्णित साथुक्त साथु

विज्ञान सोगोरे ब्राह्म प्राप्त व्या और वह सरकादका पंगवस्त्र कथा-पंचारमें ब्राह्म तथा वहाँ उसने उन समीरे पूछा—'महाराथ ! आवलोग यह चीन-सा पुण्यकार्य कर हो है ?' इसपर उन सोगोन कहा—'इमसोग ब्राह्म

राजाके 🔤 भाषान् स्टब्स्यासम्बद्धाः पूजा-कन्यमः 🌃

पुश्रा है। भगवान् सरवनसम्बन्धाः कृतसः व्यापः कामकाराः इत्य-लाम, पुत्रको व्यापनायास्त्र उत्तम पुत्र, अस्तिः वार्तामाला ज्ञान-दृष्टि व्यापः करता है और भगवुर सनुवा

सर्वधा निर्भय हो जाता है। इनको पूजासे कनुष्य अपनी सभी कामनाओंको प्राप्त कर लेता है।

यह सुनकर उसने गलेमें कवाको कई बर लवेटकर भगवान् सरकारायकको दशकर, प्रवास कर सम्प्रकटोको की

सादर मणाम किया और क्षक्ष---'मगवन् । मै संततिकीन है, मेरा साय ऐसर्थ तथा ...... सम्म सम्म है, है

कृपासागर । अपने कृपासे पुत्र का अपने

उसने भगवान् सरकारायण एवं सम्प्रसद्येको पुनः =====

१-अस्तर्गः प्रवेदावैदे ज्यानां च सेहिनी॥

प्रसाद पहल किया और इदयसे भगवान्ता विकास करता हुआ वह सामु विकार समके साथ अपने पर गया। पर

क्योगर महरिक्क इन्बेसे स्थान उत्तर यथोगित स्थान किया। साथु व्यक्ति असिराय अस्ययोक साथ महरूपय अवान्त्रये गया। उसकी परिवास पत्ती सीरावसीने भी उसकी

कावम् सत्यावकाको कृषारे समय
 कावेक कपु-कावकोको कृष्णि करवेवाली तक कारलके
 समान नेत्रोंकाली उसे एक कावा अवक हुई। इससे सामु

समान नाववाला वस एक कन्या वसमा हु। । इसस सामु समिक् व्यास्ता अवनायित हुआ और उस समय असे पर्यापा समास दम साम । वेदम सामगोको मुलाकर उसने कन्यके

कारकर्व क्रिन्द पश्चलकृत्य सम्पन्न किये। ३११ क्रिक्स जनकृत्यको करकार दसका गाम कलावसे रखा। कलाविध क्रिक्स समाग कह क्रिक्स निरंप करूने लगी।

कार क्या कि (अर्थात) बारह वर्षकी वारित्रक प्रीका

ा रहता। -

था। यह कुलीन, रूपवान, सम्परिशाली, शील और उदारता आदे शुलेसे सम्पत्त था। अपनी मुस्के योग्य उस वरको देखकर लागु विकट्ने शंखकीका वरण भर लिया और शुभ रक्तमें क्षानिक उपकारके क्षान अपिके संनिध्यमें वेट् क्षान क्षानिकेंद्र साथ क्षाना क्रमा उसे प्रदान

कर दी, साथ ही भागि, मोती, मूँगा, बसाभूवण आदि भी उस प्राच्या परिष्ट्ने महत्तके लिये अपनी पुत्री एवं जामातको भदान व्यापन साथ वरिष्कु अपने दामादको अपने परने रखकर उसे

ज्यान सामु विकड़ अपने दामादको अपने घरमे रखकर ठरो पुत्रके सम्प्रन व्यक्ता व्य और वह भी विकाके सम्प्रन साधु विकड़का अस्टर करता व्य । इस ककर बहुत क्यांस कीत

गमा । 📺 विश्वाने भगवान् सरवनाराभवकी पूजा करनेका पहले कः 📖 🛤 था 🗷 'संसान प्राप्त होनेपर मैं

दरावर्षा कोत् सत्या स्तः **। । स्वतासः । (प्रीकार्यन** २ । २८ । २५-२२)

चगरवान् सत्वनारायभवते पूजा कर्कनां 📰 वह इस 🚃 भूल ही एवा। उसने फूंब की की।

कुछ दिनेकि बाद वह अपने जामकके साथ न्यान्य निमित्त सुदर नर्मदाके दक्षिण सटपर गर्वा और वहाँ व्यापार्यनेस्ट होकर बहुत दिनोतक उत्तर रहा। पर बहाँ भी उसने सरक्रेककी कारा प्रकार भी उपासना नहीं की और परिश्रमस्वरूप भगवान्के प्रकोपका भाषन बनकर वह अनेक संकटोंने मह हो भग्न । एक समय कुछ 🚃 एक निस्तव्य स्टिने क्हरिक राजमहरूसे कहत-स्त एक लाग विस्तान करनको पुरा दिन्छ । एकाने कोरीको बात 🚃 होनेकर करने राजकुरनोकी कुरायक बहुत फटकार और कहां 🔣 'बदि तुमलोगोंने 🌃 🚃 लगन्नर सार्व धन वर्षा है स्थान उपलब्ध पर क्या 🗷 हरती असववानीके लिये तुन्हें मृत्यु-दश्व दिया स्वयम ( इसपर राजपुरुपोने सर्वत्र व्यापक समान्यान को, परंतु <u>सा</u>रत प्रयत्न करनेपर भी वे दन कोरोंका पता नहीं साम सके विविध सभी प्रकारत होकर विकार करने सने—'शको । 📶 🔫 🚃 है, चोर तो मिला नहीं, यन 🗏 नहीं मिला, जन क्या हमलोगोंको व्यक्ति साथ मार दालेगा । प्रेत-मोनि प्राप्त होती। इसलिये अब तो पड़ी बेपल्बर है 📧 'तुमलोग पवित्र नर्मदा नदीमें हुक्कर मर व्यर्ध । क्वेंकि नर्मधके प्रधानसे 📻 राजराज्यम् 🚟 होगी।' वे सभी राजपुरव अवसामें ऐसा निवासकर करीत नदीके तटपर गये। वहाँ उन्होंने उस साथ वरिष्युको देखा और उसके कन्छमें मोतीकी माला भी देखी। अमेंने उस सामु चिनक्तो ही चोर समझ लिया और वे बाबे प्रसम होकर उन दोनों (साधु व्यंपक् और उसके बाबार) को कमाहित क्षक्रकर राजके पास से आये। चनकर् सरक्षकायन 🖫 चूना करकेरे कारकाम आश्रय लेनेके बारण विभाने प्रतिकृत हो गये थे। इसी कारण हवाने भी विकार किने किना ही अपने सेवकोंको आदेश दिया कि इक्को सारी सम्बंध कक कर सम्बन्धे अमा कर दो और हन्दे हन्यक्षी सन्तकार जेलाने हाल दो। सेनकॉन धनाहाका चलन किया। व्यक्तिको बाह्यस किसीने कुछ में ध्वन नहीं दिया। अपने कामराके साथ या वर्णक् अस्पन दुनीयत 🚃 और विश्वाप करने लगा—'क्र पुत्र ! मेरा घन अब कर्डा चरव प्रमा, मेरी पूर्व और 🔤 हिरा है? 📟 प्रतिकृत्यक से देखो । हम दु:स-सागरमे निमन्न हो गये । इस संकटमे हमें 🔚 यर करेगा ? मैंने वर्ष एवं धगकन्ते विरुद्ध आवरण किया। 🐃 🚟 बर्मीका प्रयान है।' इस प्रवास विरुक्त करते कुर के समूर और आवास 📆 दिनोसक केल्बे चीवन संख्याका अनुसब करते रहे । (अध्याप १८)

#### ( mercen-se-sense spr (mm) ) ---

**明明**)

# साय-पर्गके अप्राथमे 🚃 🚃

(स्पेलक्षी एवं

सुरुवीने कहा — प्रविधे ! अध्यक्तिक, अधिदेविक तथा आधिभौतिक—१२ तीनी अधीको शत्म कानेमाले मगवान् विष्णुके महत्त्वस्य चरित्रको जो सुनते हैं, वे सन्ध ध्रितिके 🔛 निवास करते 🖟 मिन्तु जो 🚃 🚃 नहीं प्रहण करते—उन्हें विस्तृत कर देते 🗓 उन्हे 🚃 नरक जाप्त होता है। धगवान विष्युकी पत्नीका नाम कमला (लक्ष्मी) है। इनके 📖 पुत्र है—पर्म, बन्न, एका और घोर। ये सभी लक्ष्मी-प्रिय है अर्थात् ये लक्ष्मीकी इच्छा करते हैं।

ब्राह्मणों और अतिथियोंको जो दान 📖 💷 है, 📺 📰 🚃 जाता है, उसके लिये यनकी आध्यम्बदना है। स्वाह और खबाके द्वारा जो देवपत्र और वितृक्त किया जाता है, का

🚃 बद्धा करता है, उसमें 🛗 बनकी उस्पेक्षा होती है। भर्म और बड़की 📖 करनेकाला एजा कहलाता है, इसलिये क्रमको भी लक्ष्मी—बन्बरी अपेक्षा साती है। धर्म और नक्षको नष्ट करनेकाला चोर कड्टकता है, 🚃 मी घतकी इन्ह्राले 🔤 करता है। इस्स्त्रिये ये 🔤 किसी-न-किसी क्यमे लक्ष्मोके 📖 है । परंतु जहाँ 🗪 रहता है, वर्षी भर्मे 🚃 है 🔚 📰 🚾 भी स्विर-रूपमें रहती है।

📺 विक्क सत्त-धर्मसे च्युत 📗 गया था (उसने 🚃 🚾 व 📰 प्रतिहा-र्थन 📕 थी) इसीसिये

🚃 उस चिक्किक घरसे 📕 सारा घर 📖 करका शिया और परमें चेरी भी 🖥 गयो । बेचारी 🚃 पनी लीलावती

र्व पुत्री कलावतीके साथ अपने वसा-आयूक्त उसा मध्यन वेकक जैसे-वैसे जीवन-साथन करने साथि।

एक दिन उसकी कन्या कलायती भूकमे व्यक्तन होकर विस्ती बाह्यनके पर [111] और यहाँ उसने सहावको मगनान् सत्यनारायणको एक करते शुर देखा। मगनान् सन्वदेककी प्रार्थन करते हुए देखकर उसने भी पगनान्ते [111] की—'ते सरकारायणदेव! मेरे पिता और वर्ध पदि अपर आ आमेंगे तो में [111] आपनी पूजा करीयी।' उसकी करा सुनकर बाह्यनोने कहा—'ऐसा ही होगा।' हम बाहर बाह्यमेंसे आवासनपुक्त आशीर्वाद प्राप्त कर बहु अपने पर वापस आ गयी। समिने देशने लौटनेके बाहल वालने उससे [111] हुए पूजा कि 'बेटी। इतनी सत्ताक तुम कर्या गरी?' इसपर उसने उसे प्रसाद देते हुए हिल्लाक्यनको पूजा-मृत्रायणको बाह्यम और बाह्य—'माँ! मैंने बाह्य हुन्न कि सगवान् वाह्यमा करते हुन्न मुन्ने अहम प्रदान करते। मेरे विका और

स्वामी अपने पर अर जाने, नहीं नेरी कानक है।'

रागमें ऐसा मंतरें स्थान पतः स्थान है। स्थान एक विम्हन स्थान पतः स्थान प्रतिपति नामक एक विम्हन स्थान पतः स्थान पतः प्रतिपति हस्ताने गयी और उसने कहा—'कन्यों! केहा कर दें जिससे में भगवान् सरकारायणकार्य पूजा स्थान सक्ते।' का सुनकर सीलवालने उसे पत्रि अस्थानकार पुत्र स्थान केहा कर कहा है हमें है। वापस कर रहा है, इसे देकर आज मैं उक्ता हो क्या।' क्या कहार सीलवाल गया-ती धीमें आह करने कहा भया। कन्याने अपनी माँ लीलवालोंक साथ उस इंग्लिस कहान में साथ। इससे सरकारायण प्रत्यान सीलवालों हो। यो। इससे सरकारायण प्रार्थान सीलवालों हो। यो। इससे सरकारायण प्रार्थान सीलवालों हो। यो।

नर्मदा-तटकारी राज अपने गुजनाहरूमें हो हा।

वा। अतिका अहरमें अद्यान-वेनकारी पानवान्
सरवनग्रमणने स्कामें उससे कहा—'गुजन्! तुम उठका उन निर्देश पणिवनेको कन्यनमुक्त का थे। वे कोने किना अपराचके ही बंदी बना रिस्में गये हैं। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे हो सुनहरू। करुपाण नहीं होना।' इतना स्वास्त वे

अन्तर्हित 📕 गये। यजा निवासे सहसा चल उठा। यह परमारकका स्मरण करने लगा । प्रातःकाल राजा अपनी सभामे आक्र और उसने अपने मन्त्रीसे देखे, गये खप्रका फल पूछा। नक्रमन्त्रीने के एकासे कहा—'राजन् ! बढ़े आक्षर्यकी 🚥 है, कुछे भी अस्य ऐसा ही स्था दिखलायी पहा । अतः 📖 🚃 🎮 उसके जायतको बुलाकर भलीभाँति पूछ-ताछ भर सेनी चाहिये।' राजने उन दोनोंको बंदी-गृहसे ब्रसमाया और पुरत— 'तुम दोनों कहाँ रहते हो और तुम कीन 📕 ?' 🚃 साधु वांगक्ने कहा—'राजन् ! 🖟 राजपुरका निवासी एक व्यथक है। मैं ब्यापर करनेके लिये वहाँ आवा था। पर दैकारा अवको सेवकोंने हमें बोर समझकर पकड़ लिया। 🚃 📻 मेर जम्बल है। 🔤 अपरायके 📆 इमें मान-मुक्काने केरी लगी है। 🌃 🛒 ! इन दोनों बोर नहीं है। आप असीआर्थि विकार कर से हैं उसकी बातें मूनकर राजाको बढ़ा प्रक्राचन 🚃 : उन्होंने उन्हें बन्धनमूक्त कर दिया । अनेक जनारने उन्हें आरंकृत कर भोजन कराया और हक, आधुवन उनका सम्बद्ध क्रिया । साथ विषक्ते कहा---'छनन् ! 🔤 📟 अनेक 🚃 🔤 है, 🚃 मैं अपने 🚃 जना चलता है, आप मुझे आहा दें।' इसपर राजाने नाप्यक्तरे साथु श्राणिक्त्ये लेका रही न्त्रदिसे परिपूर्ण करका है। पित्र कह साथु वर्गिक् अपने क्यक्तके साथ एजाइए। सम्बन्धि हो हिम्मित धन लेकर राजुराती और बंदब (

स्तुष्ट विकास अपने स्वया स्त्र प्रस्थान किया, पर भगवान् सरवन्त्रप्रवचन पूजन वेद तस समय भी मूल गया। प्रशंका का करमकर वहाँ अकर उससे पूछा—'साथी। पुछारी इस मौकमे क्या है?' इसपर साथु विश्वने उत्तर दिक—'अपनो देनेके लिये कुछ भी का मेरे पास नहीं है। स्थाने केवल कुछ स्त्राकंकि पर्द परे पहें हैं।' साथु विश्वकंके ऐसा कहनेपर उपलिने कहा—'ऐसा है होगा।' इसना प्राच्या गयानी अस्त्रपान हो गये। उनके ऐसा कहते ही नौकाने भनके स्त्रान वकित एवं विकास हो गया, उसे पूछा-सी आ गयी। वह अनेक प्रकारने विस्त्रप करने लगा।

यह साम्य होकर सम्बन्ध लगा कि मै लगा क्या कर्क ? कहाँ वार्ते ? मेरा पन वहाँ चला गया ? बायाकके सन्हाने-<del>बुक्रानेपर इसे तपर्श्वका साथ सम्बाधनर यह पुनः 🚃</del> तपसीकी रारणमें 🚃 और गरेमें करका ल्येटकर उस तपस्तीको प्रणाम कर कहा--'म्बारमाग ! जान कौन है ? कोई गन्धर्व है या देवता है या साम्रात् परमाला है ? प्रची ! मैं आपकी महिनाओं लेशनक भी नहीं जनका। अप मेरे अपराधीको शन्त कर दे और मेरी नीकाके प्रकार कर वर्षका कर दें।' इसपर तपली-रूप पगवान् सत्वकारणको कहा कि तुमने चन्त्रचुढ राज्यके सरवनाराज्यके 🚃 'संतरिके प्राप्त 🚃 भगवान् सत्वदेकको 🊃 कर्ममा' — ऐसे 🚃 🗏 थी। तुन्हें करना 🚥 हुई, 🚃 विवाह 🖩 तुनने किया, न्यापारसे 🖿 भी पाना किया, बंदी-गृहसे कुन मुख्य 🖼 🗒 गये, पर तुमने भगवान् सरवनातवजनी वृक्ष कर्षा नहीं की। इससे निध्याभाषण, प्रतिक्रालेष और 🚟 अच्छा 🚟 अनेक दोव हुए, तुम मगवानुका 🛲 🕮 💹 करते । इसी कारण है कुछ । तुम 📖 भीग रहें हो । सल्याकाशय-भगवान् सर्वव्यापे हैं, वे सभी फरवेंको 📰 🖫 है। उनक अगादरं कर 📰 कैसे सुख 🚃 कर 🔤 हो। तुम भगवान्त्रवे यह वर्गे, उनका स्वरण क्ये।' इसका साथु विक्रिक्तो धरावान् अस्वनारायकाश लाक्षा हो जाना 🞹 वह प्रवासाय भागे समा । उसके देखते-ही-देखते वहाँ वे 📰 भगवान् सत्यनारायणकपने 📰 🔛 🔛 📨 🖚 📖 इस प्रकार स्तृति करने शाव — 'सत्यक्षरूप, सरवसंग, क्यान्यक्षर वगवान् इरिको

······ है : जिस सरपसे नगल्के **मा**त्रा है, उस **शास्त्रा** आपको भार-बार नमस्तर है। मनकम् ! कापकी माधके मोहित होनेके कारण पनुष्य अवन्ते स्वरूपको जान नहीं पाछ और इस दृ:खरूपी संसार-समुद्रको 🚃 🚃 उसीने दिनक रहता है । धनके गर्वसे मैं मृद होकर मदान्धकारसे कर्तका और

🏢 अपने चल्चेक 🚃 बना लें, जिससे मुझे आपके चरण-कमस्त्रोका जिल्हा 📰 होता 🔡 🖒 इस 🚃 🧰 🕳 दस साथ वरिवहने एक 🚃 मुद्राने पूर्वेदिकके द्वारा घर आकर सरपनाश्रयणकी पूजा करनेके 📰 📰 को। इसपर भगवानने प्रसम होकर कहा— 'कक ! कुकरी 🚃 पूर्व होगी, तुम पुत्र-पौत्रसे समस्वित पोराकर मेरे करोगे 🛄 मेरे साथ अकस्य कारा करोंगे।' यह कहकर भगवान्। Millionian अन्तरीत को गये और सामुने पुनः अपनी पात्र सम्बद्धिक मन्त्रवान्त्री रचित्र हो यह साथु विनात् एक सम्बद्धमें नगरके 📰 प्रांच गया और 📰 अपने अलागनका समाचार देनेके रिपने करपर 📺 पेसा । इतने घर आका साथु कोनकुमी 🔠 लोलकरीसे बद्धा—'जानासके 🚃 जनसम्बद्धिय सामु वर्षिक् आ रहे हैं।' 📰 साम्ब्री सरकादका प्राम्बन्से 🔤 कर 🏬 🕬 । 📟 अवन्यनको सुरुका उसने पुत्रा वर्ष्टेपर होह 🖒 और 🚃 🔚 📖 📖 फूरिके सीपकर 📖 नीवरके 📉 🗃 अस्पी । इचर 📖 धी 🚃 🚃 साथ सत्वनारायकको जैसे-तैसे पूजा सम्बन्धकर निका प्रभाद 🜃 हो अपने परिश्वी देखनेके लिये उठायती हो जैकाकी उनेर 📖 गयी। पगवन् व्याप्त अपवानसे जामाता-स्थित 📺 विष्युक्त नीम उत्तके मध्य अत्वरित हो गयी। यह 🚃 सबी दुःखमें निमन्न हो गये। साथु वर्णिक भी मुर्चित 📕 गया। मरमधरी 🔣 बहु देखकर मुर्चित हो पुर्व्यापर गिर कही और 🚃 🚃 ऋदिर अदिश्लोंसे चींग

अकर्तन्त्रवर्धे दृष्टिसं सुन्य 📗 📖 । मैं अपने कल्पाणको भी

नहीं सन्दर्भ पर रहा है। मेरे दौरहय-भावके 🔤 आप क्षम

📰 : हे 🚟 🗐 ! अवश्यो नगस्तर है : कुशस्तरह ! आप

१-सलकर्प सलकर्प सलकर्पक इतिह। बतारकोत क्षयको सर्व तो व्यवसूत्। लप्पननेहितलाने न कार्यास्य सुनन्। ट्रुक्यनोचे का नव ट्रुपो च सुक्रमीनः । क्यानीकृतरोगाः । र सारे प्रकारः होतं कर्ण राज्यीः वृत्तवीः ॥ ध्यस 📰 वैरतन तनेक्को हो 📖 । अञ्चलकाटला ने केर वे कर्ला हते ॥ (प्रक्रियमिक्स २ । २५ । ४८ — ५१)

(अंध्याव २९)

गवा। 🖿 हवाके बेगसे हिलते हुए केलेके प्रतेक समहत 📟 लगी । स नाव ! हा कान्त ! सहका 📟 स्त्री लगी और करने समी—'हे शिषाता ! आपने 🍿 परिके वियुक्त कर मेरी ध्यशा तोड़ हो : परिके क्या कीका जीवन अपूरा एवं निकास है।' कसावती जार्नुकार्ये प्रमुखर सत्यनगपणसे बोली—'हे सत्यस्थितः हे पणवान् सस्यनायका ! मैं अपने पतिके विश्लेपमें जलमें हुबनेवाली हैं, अंध मेरे अपरायोको समा बहे । 🚟 प्रकट का के प्राणीकी रक्षा करें।' (इस प्रकार 🚃 का उनके 🚃

प्रतिसर्गवर्व, द्वितीय 📖 ]

पादुकाओंको लेकर जलमें प्रचेश करनेवाली ही थी। 📶 समय अस्त्रशामाणी हुई—'हे साप्ते ! तुन्हर्य पृष्ठेने 🐺 प्रशासका अस्मान किया है। यदि वह पुरः धरं सकार

ब्रद्धापूर्वक बसादको प्रकृष कर से हो उसकर पति नैकारकीत यहाँ सामा देवेगा, विका का करे। इसका समाजाता हो करकवरीने वैसा ही किया और उसे उसका पति पनः अचनी नीकासांहर दोखने लगा । फिर बना घा ? समी परस्पर

आक्टो मिले और पर आकर साथ विषक्ते एक लाख मुख्यज्ञेते बढ़े समारोहपूर्वक पगवान् सत्यदेवकी पूजा की और

असन्दर्भ रहने लाल । पुनः कभी भगवान् सत्यदेवकी उपेक्षा नहीं 📫 । 🚃 🚟 इत्यवसे पुत्र-पीत्रसमन्वित् अनेक

🚃 उपयोग 🚃 🚃 सभी सर्गलीक चले गये। इस 📭 🚾 पुरुष चित्रपूर्वक सुरता है, 📖 भी विक्षुका अरुक्त विव 📗 📖 है : 🔛 🔛 📆 प्राप्त

表 明 和

सुक्रमी कोले — ऋषितनो ! मैंने सभी वर्तामें बेह 📖 सरकारक्य-असको काला कहानके मुखारे निकला हुआ

नह तत व्यक्तिकालमें अविदाय पुण्यक्त 🛊 🖯

[ व्योगायक का का का व्यापा |

# (सरकारका-सा-का समूर्व)

# पितुरार्जा और उनके वंशव-न्यावि, पाविति और वरस्वि आदिकी 📖

महिष्योपे कहा---पगवन् । 🛗 दःक्षेकि विभाश

कालेकाले क्योंने सर्वश्रेष्ट सरवन्यवायन-व्यक्ते हमानेगीने स्ना, 📖 अरपसे शुधरवेश अद्वाचर्यका परस्य 🚃

चाहते हैं। सूत्रभी भोले--- ऋषियो ! कांतपुग्ने विद्यान्यं आवतः

एक ब्रेड महाम 🔳 । वह वेदवेदावृत्तिः तत्त्वीको काननेवाला या और पपकर्मोरी 📖 रहता या। वर्जनपुरके 🚃 समयको देखकर यह कहत चिन्तित हुआ। इसने लोक कि

किस आसमके हारा मेरा कत्वाज होगा. क्योंक .................. संन्यास-मार्ग दक्त और पासन्छके द्वारा स्वन्यत हैं। एक है,

वानप्रस्य तो समाप्त-सा ही 📕 बंश, बन्दी-कही ब्रह्मकर्व रह 📖 है, किंतु गाईस्थ-अवनका कर्म सभी कमेंने बेह पता

१-वमः प्रकृति सर्वार्ध वैध्यनको उसे 📖 । तिपुरीकास्तरको पूर्वको उसे उसः 🛭

प्रशासकार्यः 👚 प्रमुख्यः 📰 🖚 । आव्यक्तवस्थाः

पुराम्पार्के सुद्धाने जाने पार्माने उत्तर विकास सुद्धारको सहस्रो अस्तर होतीन ह नमें मतर्गमक्रमें 📰 सुद्धी नके का । कार्य समाज्ञीमूली करें 📰 🕬 🙃 विषे शृहरकोपूर्वे स्वर्धलोककारित। उसे स्वरतकोपूर्वे दुर्गये च नमें नमः ३ (श्रीसार्वर्ध २ । ३० । १०—१४)

क्या है। असः इस चेर कलियुगमे मुझे गुहरूथ-धर्मका पालन करोके 🞹 विवाह करना चाहिये। यदि चानको अपनी

तम मेरा समा सफल एवं करवानकरी हो जावगा । इस प्रकार विकार करते हुए पितृरामनि तत्तम पूर्वी प्राप्त करनेके शिचे **विकास अन्यतिको प्रमान अहिसे प्रमान**र स्तृति

मनेपूर्वके अनुसार आपरण करनेवाली भी मिल जाती है.

- 18 mm रिकृतमंत्री सुति सुनवत देवी प्रस्ता हो गयी और

उन्होंने कहा—'हे दिक्तोत ! मैंने तुन्हारी स्रोके रूपमें विज्युवसः 🚃 सङ्ग्लको सन्दाको निर्देह 🚃 है।' वदनकर विकृतमाँ उस देवी **अक्र**वारिणीसे विवास करके मनुष्ये 📟 काते हुए गृहस्य-धर्मानुसार जीवन-यापन

करने समा। 🞹 🐃 जन्मेवाले उसे 🕸 प्रा उत्पन्न हुए। जिनके नाम ये—ऋक्, क्यूब, सम्म तक अकर्याः प्रकृते पुत्र व्यक्ति ये, जो न्याय-सम्बन्धिसस्य वेश वजुनके पुत्र लोकविश्वत मीमांस हुए। सम्बद्ध पुत्र पाणिन हुए जो व्यक्तरम-सासमें पारंगत ने और अपनकि पुत

थरकीय हुए। एक सम्बा ने भागें विद्यानिक स्वाप नगय देशके अभिपति राज चन्द्रस्तको सभाने एवे । अतिकार सम्बन्धकी

राजाने 📖 लोगोंका पूक्तकार पूक्त—'द्विकाला । कौक-सा बहावर्यवर क्षेत्र है ?' शस्त्रर व्यक्तिने कहा—'यहाराज ! 📓 व्यक्ति उस परभ पुरुषदेककी न्यावपूर्वक उदराजनाने उत्तक 🚃

है, वह जेह बहाचारी है।' मीमांसने बहा—'राधन् ! ओ लेह व्यक्ति यहमें हात आदि देवताओंका यक्त करता है 🚟

रोचना आदिसे उत्तर अर्थन एवं तर्पण आदि काता है तथा

स्वरित त्वरोसे या परा-नक्त्यती, मध्यका 🚃 🚃

भगवान्के प्रसादको प्रहण करक्ष है, 📠 ब्याबारी है।' 🐯 सुरकर पाणिनिके कहा--- 'यजन् । कटल, अनुदात 📶

महर्षि जपितिका इतिकृत ब्रावियोंने पुता—भगवन् । सभी तीथों, दानो 🚃

धर्मसायनोमे उत्तम साधन का है, 🗪 🚃 लेकर

मनुष्य क्लेश-सागरको पर कर आप और शुक्ति प्राप्त कर ले ?

सुराजी खेले — प्राचीन करतमें समन्दे एक 🔣 पुत्र थे, विनक्ष क्षप्त पाणिनि था। कलाइके बेह 🚃 शिकांके 📗

पराजित एवं लिंजत होकर व्यवस्था 🚾 📖 गर्वे । 🚃 सभी नीचोंमें सान तथा देवता-पितरोका दर्पण अवते हुए वे केदार-बोजका 🚃 पानकर भगवान् शिक्के ध्वानमें तरक हो

गये। पत्तीके अवहासपर एउटो हुए ये सप्तावतन्त्रमें जल ऋण करते थे। पिन्न उन्होंने दस दिनतक बल ही 🚃 🚃

स्वदर्वे 🖥 🖿 दिनोतक केवल वायुके 🖩 आहारपर खकर भगवान् शिवका ध्यान कला रहे। इस प्रकार जब अपूर्णस

दिन 🚃 हो गये हो भगवान् मिकने उकट होकर इससे कर हिर्देशियं । सन्देशसम्बद स्तिङ्ग, पातु एवं गणोसे स्वापाठाँसे 

🚃 प्राप्त करता है।' यह सुनकर वरशीको कहा—'हे पगवाचिपते ! को व्यक्ति उपनीत होकर गुरुकुलमें निकास 🚃 हुआ दण्ड, केश और 🚃 भिक्षार्थी वेदाध्ययनमें

क्लर 📰 हुए नुरुषी आक्षके अनुसार सुरुके गृहमें निवास करक है, 🚌 कायारी यहा गया है।' इनके प्रकार सुनकर पितृज्ञमनि कहा कि 'जे गृहस्य-

करिंद रहता हुआ विक्रों, देवताओं और असिवियोधा सम्मान भारतः है और इन्द्रिय-नंद्रमपूर्वक ऋतुकालमें 🕏 पार्यका उपनयस करता है, यही मुख्य बद्धावारी है।' यह सुनवर

📲 कहा—'स्थानित् ! कॉलकालके लिये आपक्र 📗 कबन उवित, सुराम और उत्तम धर्म है, यही येत भी मत है।" क्य करूका वह **साथ फि**तुरार्जका **राज्य** हो गया और

🚃 अन्तर्ने सर्गलोकको प्राप्त किया । दितृशम् भौ भगवान् व्यास्त्री स्था करते हुए दिकालय पर्वतपर जाकर चेगच्यान-च्यान्त 📗 गया । (अध्याद ३०)

र्याननेकरे कहा। भगवान् शिक्की इस अमृतक्य सामीको

अन्तेने भवर **व्याप** सर्वेश, सर्वेशकुंश, निर्मेश्वनत्तन इतमें इस 📖 सुति की—

'महान् स्टब्से नमस्त्रात है । सबैधर सर्वहितकारी धगवान् किक्को कस्त्रक्र है। अभव एवं विद्या प्रदान शतनेवाले, नन्दी-व्यान नगवानुको नगरकार है। पापका विनाश करनेवाले तथा सम्प्रत 🚟 🚾 एवं सपसा भावाकपी दृःस्रोकः हरण

🕯 🗥 देवेश ! यदि अस्य प्रसम् है तो मुक्के मूल विद्या एवं परम रक्त-क्रम 📖 करनेकी कृता भरे । मुलगी कोले-पर शुनकर महादेवजीने क्लन होकर

**ावार्यः** तेथःसम्प्यं अननसमृति प्रमुखान् संकरको न<del>पानकर</del>

ंश 🛊 व ण्ं अवदि मङ्गलम्बरी सर्ववर्णमय सुत्रोको उन्हें प्रदान **ाव अ**नस्त्री सरोवरके सत्यरूपी जलसे **जे राग-ट्रेक्क**पी भलका करनेवाला है, उस प्राप्त अस्तेवार

पेपसे । स्पो मान्य देखार नमधे - स्पेकरंकर ॥ (जीतसर्गपर्व २ , ३१ (७-८) अर्थात् उस व्याप्त विशेषाः प्रशासन्त वसनेपर सभी तोषींकाः प्रशासना विशेषाः व

तिस्तृत्वा क्या स्वाचन निर्माण विश्वणि अन्य क्रियोण क्रयोण क्रियोण क्रियोण क्रियोण क्रियोण क्रियोण क्रियोण क्रियोण क्रयोण क्रियोण क्रिय

### --

### कोपदेवके करित-असंगर्ने जीमदागयत-माहरूव

सुराजी कोले—महत्र्युने शीनक ! **व्या**र्थित क्षेपदेव नायके 🚃 रहते थे। 🛮 कृष्णकाः श्रीर वेद-बेद्यकुपारंगत थे। उन्होंने गोप-केपियोंने ........ वृष्ट्रवन्-तीर्थमे व्यक्त देवाधिदेव जनाईनको अस्त्रपण 🔣 । एक वर्ष बाद भगवान् औद्यति प्रसन्न होकर उन्हें 🚟 🚟 इतन जदान निरंपा। उसी आनके हार उनके हरको भागवती कचाका 🚃 हुआ। जिस 🚃 श्रीस्टबरेवजीने चुनिस्बद परीक्षित्को सुगया था, उस सनला मोध-कारक कथाका बोपदेवने हरि-लीलाइत समाते पून: केली किया ह कथाको समाध्यपर जनार्दन धगवान् विच्यु प्रकट हुए और बोले 'महामते ! कर माँगो ।' बोक्टेकने अतिराय बोहमधी क्रणीमें कहा---'भगवन् | आवको नमस्पर है। 📖 सन्पूर्ण संसाधक अनुवार करनेवाले हैं। आपने देव, यनुवा, कश-कवी मणी निर्मित हुए हैं। नरकसे दःखी जानी भी इस करिन्युक्ते आपके 🗏 नामसे कृतार्थ होते है। यहाँ केटकहरार्टकत धीमन्द्रागनतका ज्ञान तो आपने भुझे प्रदान किया है, पुनः 📶 📖 बर प्रदान ताला भारते हैं तो उस भारतसम्बर भारतम्ब मुहस्से कर्ने (

शीधगतान् सोले—सेप्टेंग ! हात समय मगवान् शंकर पार्वतीके साथ दश्य और पास्त्रप्रसे युक्त थेळीके राज्य प्राप्त होनेपर काशीमें उत्तम पूर्ण देखका वर्ध दिवत हो क्ये । भगवान् शंकरने आनन्दपूर्वक हाता करते हा कहा—'हे सक्तिदानद ! है विको ! हे बगत्हों आक्ट कहा श्रीमदारगयस-माहारण व्याप्त । व्याप्त व्याप्त हो (' इस प्रकारकी वाणी सुनकर

प्रशंदीने भगवान् शिवासा पूछा---'भगवन् ! आपके ब्राह्म पूजार अन्य देखता कीन है जिसे असपने प्रणाम किया।' इसपर परवान् शिवाने कहा---'महादेवि ! ब्राह्म करते परंथ पंचित्र हैता है, ब्राह्म ब्राह्म करते केल है। यह मनाम करते केल है। वहाँ ब्राह्म सम्बद्ध-यह (भागवत-सम्बाह-यह)

कर्मण ।' अन्य श्रह-स्थानको स्थान दिनमे भगवान् शंकाने प्राचीतः, गर्नेतः, स्थान स्थान गुद्धकोको स्थापित निस्स और

क्षि कि 'तुमने कितनी कवा भुनी (' इन्होंने कहा —
 'देव ! क्षि अनुता- सन्धनपर्यक्त विक्युक्तिका अथग किया ('
 इसी कवाको वहीं वृक्षके कोटरमें स्थित शुक्तकपी शुक्तदेव सुन

धारको कथ कहा है। आउचे दिन पर्वतीको सोते देखकर

■ वे : अपृत-कवाके जवनसे वे असर ■ गर्व : ■ इस अवस्ते ■ गुक सावाद् गुक्तरे इदयमें स्थित ■ : मोपरेव ! तुमने इस दुर्लय भागवत-मासस्ववने मेरे झरा प्राप्त किया है :

कृत का राजा विकासके विका गर्भवंतेनको नर्मदाके
 इसे सुन्ताको । इरि-माहात्मका दान करना सभी दानोमें

उत्तम दान है : 🛅 निष्णुपक्त चुद्धिनान् सत्यात्रको 🖟 सुन्नना चाहिये । पृक्षेको अग्र-दान करना भी इसके समान दान नहीं है : यह बद्धकर चम्मान् भीहरि असर्वित हो गये और बोपदेव

🚃 🚃 हो गने।

(अध्यय ६२)

१-स्ट्राबरे कट्वर मन्दर तके था। रिज़र्म् वा कृत्य में निर्वाचनकार्यः

(17)-17 (34 (5 PPPODE)

### बीदुर्गासन्तश्रतीके आदिवरित्रका महात्व्य (व्यवकर्णकी कवा)

लगे। वहाँ भी ने दोनों अपने निरिद्धा आवरणको होन्द्र न सके और इन्हों हुरे स्मान्त धन-संबद्ध करने लगे। ज्यापकर्मा चौर्य-कर्ममें प्रमृत है गया। ऐसे ही भ्रमन करते हुए देवयोगसे एक दिन वह व्यायकर्मा देवीके मन्दिरमें खुँख। वहाँ एक हिन अस्त्रण औदुर्गासपरस्तीका चल कर ही ने। दुर्गाकरके

हाता ने दोनों माता-पुत्र (कारिनी और न्याधकर्मा) पूर्वपरिषत निवारके पास कले विषे और वहीं निवास विशे

आदिषरित (प्रयम षरित) के विशेषत् प्रदम्पको है । उसकी बुहबुद्धि धर्मनव हो गयी, फलतः धर्मबुद्धि-सम्पन्न उस

अन्य सार पन उन्हें दे दिया। गुरुवी आजासे उसने देवीके पन्तका तथा किया। विकास गये। तीन वर्षतक इस प्रकार पन्तकपूर कृतिके कपने निकल गये। तीन वर्षतक इस प्रकार पन करते हुए वह निकल बेड दिज हो गया। इसी प्रकार पना-वप क्रिके कपने वर्षतक पाठ करते हुए उसे कपन वर्ष क्षेत्र क्षेत्र वरिक्त पाठ करते हुए उसे कपन वर्ष क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्रका पाठ करते हुए उसे कपन वर्ष क्षेत्र क्षेत्रका क्षेत्र कार्यों पता आया। पूर्व वर्ष देवीके पृथित महादेवी अन्यपूर्णका उसने वेकादि उपकारिक क्षेत्र पूजन किया और उनकी इस प्रकार सुनि की---

निव्यान्त्रकारी प्रशासकारी सीन्द्रवेशकासरी निर्व्यानीकारकाव्यावनकारी कालीकुराधीकारी। जन्मकोकाकारी व्याध्यकारी विकासरी सुन्दरी

विक्रों केंद्रि कृष्णकराज्यसभागी जातालकृष्टियों<sup>ह</sup> ।) (श्रीतार्गको २ | ११ | १९)

इस सुविक्त 🔤 स्टै 🛤 धर प्रयक्त ध्यानमें 🔤 वह 🔛 सो गया। नवने उसके सम्मुख असपूर्ण असर इसे सुनेदका 🔤 प्रदान कर

एक विक्रमदिलके यञ्चक आवार्य हुआ। यहके
 वेग करन कर विक्रम क्रम गया।

असर्वित 🖟 विशेष 🔠 यह मुदिनान् 🚃 🔛 📟

 श्री : श्री अवस्थितीको देवीके पुरस्तम आदि-परिकृष सङ्ग्रहकाने अवस्थाय, जिसके प्रधानके उस क्रांड

व्यापाल व्यापाल स्थापाल सिक्सिके अपने कर

(अञ्चल ३३)

जीतुर्गास**प्राप्ताके मध्यमकरिशका मा**हरस्य

(कारकपन क्या मगरको क्या कामन्त्रकी कथा)

सूत्रजी कोले—रीनक ! जा जा जा जा जा एवं अवर्णकरणके करण मर्थकर विसाधरायण मद्य-मंस-पद्यो पीमकर्मा समस्य श्रामिक शहरा जा जा जा हो गया और मुखबस्थाने 📑 जा मृत्यु हो

१- के भारतिपृत्तिके व्यक्ति अवपृत्तिकते । अस्य व्यक्तिकति वित्र अनुकोने अन्य व्यक्तिकति है व्यक्ति और सीट्र के और समस्य व्यक्ति यह बाद परित्र कर देनेकाले हैं। के कुटरी ! अन्य समूर्य व्यक्ति व्यक्ति व्यक्तिकति हुए सहस्रकाले, विकास परण-पोत्रम कानेकाली व्यक्ति व्यक्ति अस्तुव्यक्ति के विकास अस्तुव्यक्ति हैं। विकास अस्ति व्यक्ति व्यक्ति

गर्यो। संयोगवहा उसने कभी 📉 🔛 माः पुष्पके प्रथमते इतन निकृष्ट कर्य जी 🚟 🔣 गवा। इसरे जनमें वही राजनीतिपरायन यगयका विकास राजा महानन्द हुआ और उसे अपने पूर्वजन्मकी पूरी स्मृति भी। अतिशय समर्थं बुद्धिनार् कारकवन (कार्राक्) का वह तिला हुआ। देवी महालक्ष्मीके बीकसहित मध्यम चरित्रक सम्ब महानदको उपदेश देकर कस्तावन सर्व विश्ववर्णातस लेकि-उपासनके लिये चले गये । इयर राजा भी प्रतिदिन

कार्यं, करून आदेशे एक कर औदर्जनसराहोके मध्यर

चरितका पात करने सामा । चरह वर्ग व्यक्तित होनेपर शक्तिकी उपस्य 🚃 🚃 अपने शिष्य महानदके पार 🔤 🚾 📆 रहा रहा विविद्वेक लक्ष्वप्रीपाठ कारवाकः। कारासक्यः सन्तरानी 🚃 महास्तर्थनी प्रकट हर्षे और ठकाको कर्र, वार्च, कस्पसहित योख 🔣 दे दिया। इस 🚃 🚃 महानदने 🌉 समान अमीष्ट फलीका कार्यन कर अन्तर्वे देवलओसे नवसूर्य 📗 परम लोकको प्राप्त मिला।

(अध्याम १४)

# सीवुगांसच्यश्वीके

# योगाचार्य महर्षि पतहारितका चरित्र

🚃 पर्वतपर महाविद्यन् द्वप्रध्याय पर्वतप्रतिस्कृते 🔤 थे । ये वेद-वेदानु-सत्त्रप्त एवं गीता-साम्ब-परायम ये । ये विज्युके थक्त. सरकाका एवं न्याकरण महाभागके रवनिता 🔣 🔣 गर्थे हैं। एक समय ने 🊃 अन्य क्षेत्रीने गर्थे। 🊃 उनका देवीभक्त कारधकाले 📖 रहकार्य हुन्छ। एक गर्गतक रहवार्च भरता रहा, अन्तमे परावर्गत 🚟 🕍 गर्व । इससे 🗯 📉 🚃 हस ऋस

सुलकी बोले---अनेक कहुओंके हुए विशिद्ध विशि

नमो 🔣 महासूर्वं सर्वसूर्वं 🔤 स्थः । रिमाने सर्वमञ्जूष्ये विकासने 🗷 वे वरः । लानेव अञ्चा बुद्धिस्त्वं येचा 🔤 शिलंकरी ।

शानिकांनी ना को का म

(प्रतिसर्वको २ । ३५० ५५६) 'महामृति 📖 नगरुहर है। सर्वपृतिकारनिर्वाधे

🔤 है। सर्वमासस्तरूपा विकारेकीये पाताल है। हे विम्पूपाये । तुन्हें नगरमा है। हे विकास ! सुन्ना कुछा: बुद्धि, मेचा, 🎟 तथा कल्यानकारेणी हो। क्वाँ कारित हो,

-- 4E-04-

📕 महिमाके प्रसंगमें

📑 📼 हे, हुन्हें कर-कर 📖 है।' इस स्कृतिसे 🚃 होकर चगवले 🚃 👊

क्यांचे कहा—'विश्लोह ! हम एकार्याच्या होकर मेरे iiim करा का को। 🔚 🛗 तुम 📖 ही हानको क्रम्य करोगे । पराक्रले । परायायन शुमले परास्त हो पार्येगे ते

इस प्राचन पराइतिने विश्ववासिनीदेवीके क्या कर स्टब्स अध्यय में और वे करत हो गर्थों । इससे उन्होंने पूनः शाकाशीने कारणवनको पराधित कर

दिया, 🚟 🖼 पृथ्य-शथ और चीरके प्रचारमें कुरसीयस्य स्थापन में तहस्य बहाया। मगवती विष्कृतकारी कृत्यते वे चेपप्रवार्ष अस्वन विरतीनी हो गये ।

मुनियो । इस 📖 दुर्गासभारतीके उत्तर चरित्रकी महिन्द निक्रित हुई। जब आगे आफ्लोग क्या सुनना चाहरे 👢 🗷 बतावें । सभीका बरुधान हो, बोर्स भी दु:ख प्राप्त 🛭

करे । मध्यापात, पुष्परीकाल मगवान विच्यु मञ्जलभव है। करका, विम्यु महत्त्वपूर्त है। 💹 📟 🕬 होका 🚃

इतिहास-समृद्यायको 🎹 सुनत्त्व है, वह परमगतिको 🚃 होता है। (मध्यान ३५)

अ प्रतिसर्ववर्षे **व्या** 

# प्रतिसर्गपर्व (ततीय खण्ड)

[ पविष्यपुरायके प्रतासर्ववर्धका सीमस बाजा आहे. कृष्णांस अर्थात् बाजा और कदल (उदयसिंह) के बाजा अपकार एवं वृष्यीयम चौरानकी चीर-पाणाओं से परिवृष्य है। इसर बाजा पाउरवित आस्त्राका वीरकाव्य बहुत प्रचलित है। इसके मुदेशसामां, धोषपुरी आहे बाजा है, बाजा बाजा के स्थाप चेर है। बाजा कथाओंका मूल बाजा प्रतासामिक के से कि कि होना है। बाजा बाजा के अनुसार अतिसम्मोतिकपूर्ण-सी प्रतीस बाजा है, विश्व वेरिकाविक पूरिये प्रकार के है। बाजा बाजा प्रसास प्रमास क्रिया विश्व प्रमास है। नाम बाजा प्रमास क्रिया प्रमास है। नाम बाजा प्रमास प्रमास के स्थाप प्रमास है। नाम बाजा विश्व प्रमास क्रिया प्रमास है। नाम बाजा विश्व प्रमास है। नाम बाजा विश्व प्रमास क्रिया प्रमास है। नाम बाजा विश्व प्रमास है। नाम विश्व प्रम हो। नाम विश्व प्रमास है। नाम विश्व प्रमास है। नाम विश्व प्रमास हो। नाम विश्व प्रमास है। नाम विश्व प्रमास हो। नाम विश्व प्रमास हो। नाम विश्व प्रमास हो। नाम विश्व प्रमास हो। नाम विश्व प्रमास ह

#### आल्या-कान्य | आल्या-काल्यकी काना) या उपसान

अहियाँने पूछा — सूरको महराज ! अपने महराज विक्रमादिस्यके इतिहासका वर्षन किया । हाना मुगके समन उनका शासन, धर्म एवं न्यायपूर्ण का और संखे समन्द्रक इस पृथ्वीपर एहा । महराह्मण | इस समय धारवान् श्रीकृष्णने विक्रम लीलाई की थीं । आप उन लीलाओंका इन्स्रोगोंके क्रमेन कीलाई, व्यक्ति व्यक्ति स्थान सर्वत्र हैं।

श्रीस्त्राचीने सङ्गल-स्वरच्युक्तेक कहा— नाराचर्या पमस्कृत्य तरे वैच क्योक्कर् । व्या सरस्करी स्थानं तसी सन्त्रपूर्णनेत् स

B 0. DE03

'शगवान् तर-माग्यव्यकं अवतारस्थान्य नगवान् जीवृत्यः एवं उनके सच्चा नरश्चेष्ठ अर्जुन, उनकी लीलाओको प्रकट अग्यवती सरस्वती तथा व्यक्ति वर्णन करनेवाले नेदव्यासको नमसंबर कर अष्टादश पुराग, रामकण और महाभारत आदि यस नामसे क्यादिष्ट बन्योका क्यान करना चाहिये।'

मुनिगणो । मधिष्य स्थान महाकरणोः वैकास्य सन्वत्तरके अहाईसमें हापर युगके अत्तमें कुरुरोजक स्थान महायुद्ध हुआ । उसमें युद्ध कर दुर्शकक्षणी सभी स्थान प्रपटवॉने अदमहर्षे दिन पूर्ण विकय स्थानकी । अधिन दिन मगवान् अधिकाने कारणार्थ दुर्गीतको स्थानक बोजकभी सनातन जिस्कानिय समसे इस प्रकार सुनी की—

प्राणस्थरणी, सब भूतेके स्थानी, कमर्टी, बारस्कर्त, अगदर्शा, पाप-विकासक रहा में उत्पक्ती कर-कर स्थान करता है। परावन् ! आप मेरे पक्त पाक्कोको रक्षा कीविये ! इस स्कृतिको स्थान भगवान् उत्कर अध्येष आवक को सक्तो विश्वतः रेको स्थानिक विश्वयको स्थाने दिन्ये स्थानिक प्रशासना स्थान स्थानको आवको भगवान् संस्थान प्रवित्वपुर स्था स्थान सरकारिक विनारे व्यक्ते थे ।

**व्यक्तिकार्यः, चैक** (कृतसर्यः) कुरुवार्य--- वे सीनो पाव्यय-वित्रवित्ये पास आमे और उन्होंने भगके भगकान् **काभी <u>पति</u> कर उन्हें प्रमान कर लिया । इस**मेर मगवान् शंकरने उन्हें पाध्यत्-शिविपमें प्रवेश जिल्ला आहा है द्यै । बलबान् अध्यक्षमाने पणवान् शंकरद्वारः प्राप्त तलवारसे बृहसुर आदि बोरोको हत्या कर दी, फिर यह कृतकार्य और कुलक्कि स्त्रम काका करूर गया । वहाँ ५कमात्र पार्वद सूत ही बच्च रहा, उसने इस कनसंहरको सुकता पाण्यशोको दी। 📟 अबंदि पान्युओरि इसे शिक्षणीयतः 🖩 कृत्य समझा; वे क्रोपसे शिलक्तिला कर्वे और अपने आयुधीसे देवाबिदेव विनाविसे युद्ध करदे लगे। भीन आदिद्वारा प्रमुक्त अल-शक्त शिवजीके शरीको सम्बद्धित हो गये : इसपर मगवान् शिवने कहा कि तुम श्रीकृष्णके उपासक हो अतः हमारे द्वारा तुपलोग रक्षित हो, अन्यक तुक्लोप वचके केम्ब वे । इस अपराधका फल तुन्हें करितकुममें अन्य लेकर भोगना पहेगा । ऐसा कहकर वे अंदृश्य हो करे और कबाद बहुत दु:सी हुए। वे अपरायसे मुक्त होनेके तिये पगवान् क्रीकृत्यकी रात्ममें आये। निःशस्य पाण्डवीन अक्रमके साथ एकाव पनसे लेकरजीको स्तृति की। हमपर भगवान् संकरने प्रत्यक्ष प्रकट होकर उनसे का माँगनेको कहा ।

मनवार् श्रीकृष्ण बोले—देव !

रामास आपके शरीरमें लाग ही यथे हैं, उन्हें पश्चावीची

प्रतिसर्ववर्वं, सुरीय 📖 }

बारस कर 📖 और इन्हें शहरते की मुक्त कर दोजिने।

श्रीशिक्योंने कहा — बीकुम्बक्द ! मैं अरको प्रकर करता हूँ। उस समय मैं अक्की मायसे मोदित हो गया था। उस मायके अभीन होकर मैंने यह साथ दे दिखा। अवि मेव

वचन तो मिथ्या नहीं होगा तकांधि वे प्राच्छा तचा वजैरव अपने अंतोंसे कलियुगरें उत्तत्र होकर अंततः अपने पायेका .....

भोगकर मुक्त हो जायेंगे।

पृथिहिर स्वात्ताता पुत्र होगा, उसका नम महस्तानि
(महस्तान) होगा, जब रिसीप प्रात्ताता अधिनति होगा।
भीमका नाथ भीरण होगा और यह बनरसका रुख्य होगा।
अधुनके काराने जो जन्म लेगा, जब महान् मुद्धिमन् और केम होगा।
अधुनके काराने जो जन्म लेगा, जब महान् मुद्धिमन् और केम होगा।
अस्तान्य। जन्मका जन्म परिवासके यहाँ होगा और कम होगा।
सहानन्य। जन्मका सम्में होगा और नम होगा स्वात्ता । सहदेश

प्रताहक आहे होगा और उसका नाम होगा देवसिंह।
प्रताहक अंशने अवसेलें पृष्टीराव बात लेगा और दीपदी
पृष्टीरावकी कन्कके कपमें बेरत नामले प्रसिद्ध होगी।
महादानी कर्म करक नामले जन्म लेगा। उस समय रक्तवीजके
कम्में पृष्टीपर मेरा भी अवसार होगा। कीरव मामा-बुद्धने
मामान होंगे। और प्रम्यु-प्रसाद पोद्ध धार्मिक और
प्रसादक्ती होंगे।

स्वाची चोले—व्हियों ! यह व्या सुनकर क्षेत्रमा मुक्तरये व्या कहा में भी अपनी शिक्त-विशेषसे व्या लेकर पाण्यतेकी सहायता करूँगा । मक्कदेवीहार विभिन्न पहायती नामकी पुणि देशराकके पुत-कपने मेरा अंगा उत्पात होगा, जो उदयसिंह (उदल) कहत्वकेल, यह स्वाची गर्भने हत्या होगा | मेरे वैश्वप्ट-व्यावक अंश काह्यद भागने बच्च लेगा, यह मेरा गुढ़ होगा । अधिकेशने उत्पन्न रामाओंका विनाह कर में (अंगुम्बा— उदयसिंह) व्या स्थापना कर्मणा ।' अध्यक्ती यह व्या सुनकर व्या अवस्थित हो गरे ।

सूरपीले सम्रा-मण्डि । पुरसेक्ते पीवृत सभी अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति अस्ति सम्बाध्य और अस्ति सम्बाध्य अस्ति । सम्बाध्य । समिति । सम्बाध्य । समिति । सम्बाध्य । समिति । समि

स्त्रीस वर्षतक राज्य किया और अन्तर्भे वे सार्ग 🔤 नवे। करिनवर्षकी युद्धि होनेपर वे 🖫 अपने अंतरसे उत्पन्न होंगे।

ज्या काम सम मुनियान अपने-अपने स्थानको प्रथरि । मैं योगनिहाके वसीभूत हो रहा है, उसा मैं सम्बद्धिता होकर गुण्यतीय परमहाका काम करोगा । यह सुनवर नैमियार व्यवसाधि मुनियान सीमिक शिक्षाला अवस्थान कर आस्त्रसाधिको स्थित हो गये । टीप्येकास व्यतीत होनेपर सीनवादियुनि ब्यानको उटकर पुनः सुत्रभीके प्रस्त पहुँचे ।

मुक्तियोने पूका—सूतवी महाराज है किल्पाक्यानका तथा द्वापस्ये शिक्की आहारे **व्यक्ति** व्यक्तियो । चले विकास व्यक्ति व्यक्ति पृति विकास स्थानसे विकास सिम्यु नदीतक, इतस्य वदित्येतसे दक्षिणमें सिम्यु नदीतक, इतस्य वदित्येतसे दक्षिणमें सिम्यु नदीतक, इतस्य वदित्येतसे दक्षिणमें सिम्यु नदीतक, कार्या है—इन्ह्रमस्थ, पावास, कुरुवेत, विकास, अवस्थि, इत, अवस्थि, महध्य (मारवाद), गुर्वा (गुर्वाच्य), वहाराह, इतिह (विकास), वंग, गौह, व्याच्य तथा कीतस्य । इन राज्योपर अस्या-अस्या राज्योपर अस्या-अस्या राज्योपर व्यक्ति और समय-सम्यवस् विवित्र धर्म-प्रवासक भी हुए। एक सी वर्ष व्यक्ति ही वालेग्द धर्मक विवास सुनकर शक व्यक्ति विदेशी एका अनेक स्रोगीक साथ सिम्यु नदीको पायक अस्वित्यो व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति स्थान स्थान स्थान सिम्यु नदीको पायक अस्याद व्यक्ति विदेशी एका अनेक स्रोगीक साथ सिम्यु नदीको पायक अस्याद व्यक्ति विदेशी एका अनेक स्रोगीक साथ सिम्यु नदीको पायक अस्याद व्यक्ति विदेशी एका अनेक स्रोगीक साथ सिम्यु नदीको पायक अस्याद विवास स्थान स्थान

अपने। उन्होंने उक्केंको जीतकर उनका पन सुर लिया और

अपने देशमें लौट नवे । इसी समय विक्रमटिखका पीत राजा

[ संक्रिप्त परि**ज्युराजा**ह

शासियाहन पितके सिंहस्सनपर काला हुआ। उसने हाला चीन आदि देशोंकी सेनापर निजय पायी। बाह्रीक, कालका, तेम तथा खुर देशमें उसका सुद दुरोंको हरकाना उसे कठोर दण्ड दिया और उनका सात विश्व जीन लिया। उसने स्रोकों बार आयोकी अलग-अलग देश-वर्षात विश्वति किया भी। सिन्यु- प्रदेशको अवयोक बार्मा स्थान निवर्णित किया और म्लेकोंके लिये सिन्धुके उस बार्मा प्रदेश निवतांका

हिम्मिरक्षरपर गया। असने हुन हराना अध्य स्थान प्रकार एक सुन्दर पुरुषको देखा। असना राधिर गोध का और का केंद्र स्थानको पूर्ण — 'अप कीन हैं ?' असने कहा — 'ने ईरापुत हैं और कुमाधिक गर्मके कराना हुना है। में प्रकार कराना प्रवारक और सरव-असने क्या है।' उनको पूर्ण — 'अवना कीन-सा धर्म है ?'

हैराधुक्ते बाह्या---नहरूपतः । सरकार विनास हे स्वतंत्रर प्रवीदार्गातः कोच्क-अदेशमें मैं मसीह कावतः अन्य 🎟

### राजा भीव और महामदकी .....

स्वार्थीन साम — श्राणियो । स्वरंगान प्रस्ते विका और स्वरंगासी सुर । तदनवर भूगणाल्यर वर्ण-वर्णय सुर । तदनवर भूगणाल्यर वर्ण-वर्णय सुर । तदनवर भूगणाल्यर वर्ण-वर्णय सुर । तत्व्यर वंदाणे अभिका दसने राज व्यार्थ सुर । उन्होंने देशकी नर्णाय सीन होती देश दिन्धानको लिये प्रस्ता किया । उनकी सेना दस इन्हार वी और उनके साम कालियास एवं अन्य विद्यान सहाय और व्यार्थिको प्रस्ते करने सम्बद्ध कीर व्यार्थिको प्रस्ते करने सम्बद्ध कीर व्यार्थिको प्रस्ते विद्यान स्वरंग अभ्यार्थ एवं दिन्यानकालको साम प्रदेशक महायद नामका कालि न्यस्थित कुला । राज्य मोजने महस्यलमें विद्यानन महादेशकीया दर्शन व्यार्थ व्यार्थ व्यार्थ व्यार्थ करने व्यार्थ वर्ण वर्णन वर्ण

भोजएकने कहा-हे मक्तरात्वे ।

🚃 स्तुति की।

दरपुर्वेके प्रथम प्रयंकर (सामसी नामसे एक सामा उत्पन्न हुई। सामा सम्बद्धी स्था कर मैंने मसीहरू प्राप्त किया। मैंदे स्लेक्ड्रॉम जिल्ला क्यापना को है, उसे सुनिये—

'सबसे पहले महस और टेहिक मलके विकालकर शरीरको पूर्वतः क्रिक्स कर लेख चाहिये। फिर इट देवताका करना चाहिये। सत्य कली बोलनी चाहिये, न्यायसे चलना चाहिये और मनको एकाव कर सूर्यस्थालमें रियत परमात्मानी पूछ करनी चाहिये, बचीक हंबर और सूर्यमें समानता है। परमाना भी सन्यत्न हैं और सूर्य भी अचल है। सूर्य अतिस्य पूर्विक सारका चाल सिंह्स आकर्मन करते हैं। हैं भूपल ! ऐसे कृतको का मतीका विलोग हो गयी। पर मेरे हदयमें नित्य विसुद्ध करवाककरीली हंश-मूर्ति अत्य हुई है। इस्तरिये मेरा नाम सिंहाह करवाककरीली हंश-मूर्ति अत्य हुई है। इस्तरिये मेरा

स्था सुभार व्या सारित्यहरने कर प्रोच्छ-पूर्णको प्रकृष विद्या होते होते द्वारण प्रोच्छ-स्थानमें प्रतिहित किया तथा अपने राज्यमें आकर उस राज्यमें अध्योध पत्र किया और स्था विद्या करें।

क्या विकास गुरा ह्या सम्बद्धान्य स्वक्रपवाले गिरियाको । अस्य त्रिपुरासुरके व्यवस्था तथा नामविष स्वयागीतको प्रवर्तक है। ये अस्पर्ध शरणमें अस्या है, आप मुझे अपना प्रश्न सम्बद्धा। ये ज्यानको नामकार करता है। इस सुनिको सुनकर भगवान् त्रिको स्थासे कहा—

है कोजराज ! तुन्हें व्यवस्तिकार-तीर्थने काना करिये । वह व्यक्ति कानके पृथि है ■ ■ विकास से दूविश हो गयी है । इस द्वारण विकास अर्थ-धर्म है ■ नहीं । महामामाची कियुवसुर बड़ी दैल्लाज करिकास हेकित किया गया है । मेरे द्वारा करदान प्राप्त कर वह दैला-समुदायको कहा गर्छ है । वह अर्थिनिय है । उसका नाम महामाद है । सकन् । तुन्हें इस सामा देशने वह काना चाहिये । मेरी कृत्यसे तुम विश्वद्ध हो । नामकान् शिक्के इन श्वानोंको सुनकर समा भीत्र सेनाके बाह्य अर्थने देशने वापस करता अर्था ।

राज योजने द्विजकांकि सिये संस्कृत वाणीका प्रकार अंग शुद्रोंकि सिये प्रकृत याचा चलावी। उन्होंने प्रवास वर्षक 📰 किया और अन्तमें सर्गलोक 📰 किया । विश्वसमके मध्यमें 🔛 पुण्यपूर्ण है, यहाँ आर्यलोग उन्होंने देश-मर्यादका 📟 किया । विश्वपिति और खुते हैं।

# देशराज एवं वत्सराभ आदि राजाओंका ..........

**पुलजीने कहा** — मेजराजके लगरिहणके पहान् उनके वेसमें सात 📖 हुए, पर वे समी अस्त्रम्, कन्द-बृद्धि और अरपतेजस्वी हुए तथा क्षेत्र भी वर्षके पीतर ही पर गये । उनके राज्यकालमें पृथ्वीपर सोटे-सोटे अनेक क्या हुए। संस्थित नामके स्ततवे राजके वंशये तीन राजा 🚃 जो दो सी पनि भीतर हो यर गये । दसकों जो प्रातंत्रह नामक 📖 हाता, इसने करपक्षेत्रमें पर्मपूर्वक अपना राज्य करवाय । अन्तर्वेद्देने कान्यकृत्यपर राजा जनकपुरस्य शासन् था । सेन्यलेशसे उरस्त अन्तर्कार इन्द्रप्रकाश एका चा। इस नाहरी भीव और राष्ट्रवे (जनपदी) में बहुतसे राजा हुए। अधियंशकर विकार बहुत हुस्स और 📟 नतृतसे 🚃 📟 हुर। 🎆 मार्गालाम्म (प्रमुखगर), पश्चिम्प्रे बाह्यीक, उक्तवे चीन देश और दक्षिणमें सेतुबन्ध-इनके बीचमें साठ तक्क पूजल 📖 🖺 जो महान् बरावान् वे । इनके राज्यमे — प्रवादे अप्रिहोत्र करनेकाली, गी-स्वयुक्तकर 🔣 🚃 🚾 तथा क्षपर पुगके समान वर्ध-कार्य करनेमें नियुन वॉ । सर्वत्र क्षपर पुण ही मालूम पहला चा। पर-परमें प्रकृत कर तथा <del>का-करमें</del> वर्ग विकास हा। प्रत्येक गाँवमें देवताओंके व्यक्त थे। देश-देशमें यह होते थे। ग्लेक्ट भी आर्थ-भर्यका राजी तरहते। करते थे। प्रपरके 🚃 ऐसा वर्णकरण 🚃 करिने प्रयमीत होकर प्लेखको साथ नीतायल प्रयंतपर शरण ली। वहाँ उसने बद्ध की। इस ध्यानयोगात्मक तच्याचीने उसे धगवान् श्रीकृष्णकात्रका दर्शन कृत्य । यथाके साथ वक्तकन् सीकृष्णका दर्शन पत्रका उसने पनसे उनकी 📰 की ह

व्यक्ति व्यक्ति — हे मगदन् ! आप मेरे साहात् द्यावात् क्रमान प्रकार करें । विश्व रक्षा विविधे । हे कृतियों ! में अवस्थि कारणें अवस्थ हूं । आप अधी प्राप्तेका विवास करते है । सभी कारणेंका निर्माण करनेवाले अस्य ही हैं । संस्पनुगरें क्षमा (व्यक्तिपुण) में आप कृत्य-कार्यक हैं ! मेरे पुति-स्तेवक होनेवर व्यक्ति सूत्र, मख, वर्ष, व्यक्तिकार किया विवास कर क्षमा वर्षत् आधिकारों पैदा हुए स्विधिन क्षमा विवास कर वर्षा के । हे जनाईन ! में अस्यके व्यक्त-कारणेंको स्ताम है । क्षित्वमान व्यक्ति । में अस्यके व्यक्त-कारणेंको स्ताम है । क्षित्वमान व्यक्ति । में अस्यके व्यक्त-कारणेंको स्ताम है ।

'वरियाम ! में तुम्बादी रहाके हरने अंशकपने अवस्तिन होतेना, यह मेरा अंदा पूर्विम आवार उन महत्त्वती विकास करेगा और स्राच्यांकाच एकाओंको बारका करेगा !' यह महत्त्वत पराव्यान् अनुक्रम हो गर्ने और परेन्याको साथ वह करित असम हो गया ।

असन हा गया।

असने बरावन इसी प्रवार सम्पूर्ण बटनाएँ बर्टित हुई।

अस्त्री पृत्वीदार चौकानने बीएमी बांचा की तथा सहोद्दीन

(मोहन्नदरोति) अपने दास बुतुकोद्दीनको पहाँका
प्रवास व्यक्ति ब्युट-सा व्यक्ति अपने देश

484C3484

n अतिसर्ववर्ग, तृतीय राज्य समूर्ण स

\*\*\*\*

<sup>\*</sup> स्थापना पट्टर्न कन्द्र परित्युक्तने स्थापन के र

# उत्तरपर्व

## महाराज सुविहिरके पास व्यक्तादि महर्वियोका आवयन हर्ष उनसे उपदेश करनेके सिये युविश्विरकी प्रार्थना

गणकीर्विकातुरे 🔤	वृष्टित्ते विकास का ना
शेरोपायपं व्यास प्रथमितुं सक्षां विकासी ।	'भगवन् ! 📖 हसादसे मैंने वह महान् राज्य मान
्वः व्यवस्थात्त्रिक्यम्बद्धाः वास्यक्रकेत्रे	💷 तब दुर्वेकनदिको चहल किया। मिनु जैसे 🞹
सेनैक जनति प्रसिद्धियगम्बद्धेनेक्क्यम्बितीः॥	मुख बस होनेपर 🖩 वह सुक्त उसके लिये सुक्तकर नहीं होता,
क्षक्षपुच्यद्विरण्यगर्भरसमासिक्षकानाध्यातिनी	वैसे 🖫 अपने बन्धु-वान्यवेको नात्त्वर यह राज्य-सुक्त मुझे
रेल्वं व्यास्त्रात्वा विकास्तु क्रेचारिक भूगांतिक याः ।	किन नहीं रून रहा है। जो आनन्द बनमें निकास करते हुए
प्रशास कार्यायका है ज्य स्टब्सेस ना विस्त्रोतिकाः	कन्द-कृत तथा धलीके प्रधानमें प्रशा होता है, वह सुक
सम्बद्धसूचान्त्रविर्वयसम्बद्धसूच्यं केलीः ॥	अनुम्बेको जीतकर मन्पूर्व पृथ्वीका राज्य आप्त करनेपर भी नहीं
(कारली १) १-२)	होता । 🔳 पोर्च्यानतामह हमारे गुर, बन्यू, रक्तक, 🚃
'वित्रकी प्रसक्तके विना सहस्र भी एक सुद्रकर्मका	💹 कम्बासका थे, उन्हें 🗏 सुन-जैसे पार्यने राज्यके
	लोजसे मार काला। मैंने बहुत लिवेकजून्य नार्य किया है। मेरा
आश्रम रेजेंसे 🐃 भाग नगर उठा तथा 🔛 असन्द	मन पाप-पञ्चने 🗺 हो राजा है। मगबन् । आप कृपाकर
राजलक्ष्मीकी आहि हो गयी, वे मगवाम् राज्यतिदेव आप-	अपने क्रान्स्य जलमे मेरे अक्रय तथा पार-पहुन्ये धेनार
लेगीका कट्याण करें। वो 🚃 विद्याप-पापक 🚃	सर्वना निर्मल क्य 🚟 और अपने प्रहारूमी दौरकसे नेरा
	📰 🌃 प्रकल क्षेत्रिये । धर्मक 📖 ये मुनिगण
प्रकाशित होमर शम्यमध्यम संपुर विविध	हुन्सा नहीं असे हुए हैं। न्यूक्त कार पीथपिसपहसे
नृत्य करता है, वे मान्स्ती सरसकी आप सम्बद्ध 🕬 .	मी अर्थातक, धर्मदाक और मोक्षरतकार विस्तारो अवग
<b>ा</b>	(8) है। इन इस्तुपुत्र भीधके लालिक चले जानेपर
भगवान् शंकरका ध्वान सर, धगवान् (विष्णु) कृष्णकी	अस बीकृष्ण और आप ही मैंडी एवं बन्धुताके कारण मेरे
स्तृति कर और ब्रह्माचीको नम्पकार 📰 📟 सूर्यदेव एव	मार्गेदर्शक है।"
अग्निदेवको स्थान कर इस प्रभावन स्थान करना करिने ।	व्यासनी बोलेएवन् ! आक्नो करने बोध संबी

क्याकर्ती चोले---एकर् ! आक्यो करने मेध्य संधी **बार मा, विस्तायक भीवाने, महावि मार्काओन, सेव्या** और एक 📖 धर्मके पुत्र धर्मकेला 🚃 वृध्यिएको महत्वृति लोकाने बता दी है। 📖 प्रमंत्र, गुणी, मेधावी तथा क्षेत्रम् पुरुषेकि 📖 🗒 धर्म और अधर्मक निश्वयमें सोई भी कत अल्पको अञ्चल नहीं है। इचीकेश भगवान् श्रीकृत्यके बड़ों तपरिवत रहते हुए वर्णका उपदेश करनेका माहस कौन कर करना है ? क्वेंकि ये ही संसारको सृष्टि, स्पिति तथा 📰 📕 सिहासनसे 🚃 चगकन् क्रेकुम्य 🚃 पालन करते है एवं प्रत्यक्षदर्शी हैं । अतः ये ही आपको उपदेश पुरेहित पौष्यको आगे 📉 🚃 🚃 📫 करेंगे। इतना करकर तथा 📉 पूजा महणकर आचमन एवं पाद्यादिसे 🎹 पुजनन 🚃 ऋज किया। बाटरायण श्यासनी तपीयन यहे गये।

(अध्याम १)

देवानेके रिप्ये व्यास, मार्काण्येय, माण्यात्म, आण्डारय, गाँउव,

प्रातावप, परापर, 🚃 प्रोतक, प्रतावप, प्रताह समा देवर्षि

देशकर मक्तिमान् 📖 वृधिष्ठिरने अपने महायोक 📖

तपस्थियोंके बैठनेपर विस्पत्ते अध्यक्ष हो

वन प्रकृत तपानी एवं वेदवेदानुष्यांका 📰 📰

नारद 🚃 📰 ऋषिगम प्रको ।

### पुक्रनकोशका संक्रिय वर्णन

च्या कृतिहिरने पुत्रा—भगवन् । पर अगत् 📖 प्रतिष्ठित है ? कहाँसे उत्पन्न होता है ? इसका किसमें रूप होता है ! इस विश्वका हेतु बचा है ? पृष्कीपर कितने होंप,

सपुर 📖 कुलाबल है? एक्किका कितन प्रयान 🛙 ?

किराने पुका है ? इन सबका जान वर्णन करे ।

है, वह 🖿 पुराणका जिल्ला 🖁 किंतु संस्कार्धे कृपते 🐙 पैने वैसा भूना और जो अनुषय किया है, उनका संबोधने में कर्पन करतः है । सर्ग, प्रतिसर्ग, यस, व्याप्तः और वरामुखरितः—

पणि छक्षणोसे ===== पुराण कहा जात ई<sup>1</sup>। अनुष । (सृष्टि) - के 📰 ही निजेनकपरी सम्बद्ध है, इसरिन्ने इसका

मैं संक्षेत्रमें 🔤 其 । अव्यक्त-प्रकृतिसे वहत्त्व-वृद्धि अवक ह्यं ।

त्रिगुणांक्यक आहेकार उत्तम हुआ, आहेकारसे पश्चक्यका, प्रवतन्त्रकाओंसे 🔤 महाभूत 🚾 🚃 भूतेंसे वरावर-काल् उरपण हुआ है। स्थायर-जन्नमध्यक अर्थात् वराधर जगत्ये नह होनेपर जलमृतिभय विष्णु रह सती है अर्थान् अर्थक अल परिन्याह रहता है, उससे भूगतनक पान उत्पन हुन्छ । कुछ

समयके बाद उस अध्यक्ते दो भाग हो गये। उसमें एक सम्ब पुषियों और दूसरा चाम आकरत पूजा। उसमें जाएको नेक आदि पर्वत हुए । नादियोंसे नदी आदि हुई । येक पर्वत स्केलन हजार योजन भूमिके अंदर प्रमिष्ट है और भौरासी हचार विविध

भूमिके ऊपर है, बतीस हजार योजन मेक्के शिकरका विकास है। ब्याप्तास्त पूर्वनारे कशिका मेर है। 📺 अपहरे आदिदेवता आदित्य उत्पन्न हुए 💖 जनःकारम्मे सहा, मध्यक्रमे किल्नु और सार्वकालमें उद्गवनसे अवस्थित पहेरे हैं।

एक आदित्व ही तीन कमोको भारत करते हैं। महाको महिचि, अति, अमीरा, पुरुस्य, पुरुष, मानु, पुनु, 📖 और क्रास्य—ये नौ मानस-पुत्र कारण हुए। पुरुषोने इन्हें बहापुत

कहा गया है। 🎹 दक्ति अंगुरेसे दश्व उत्का हुए और

🕶 अंगुठेसे ऋति काला हो। दोनो दग्पति अंगुठेसे 🖩 उल्ला हुए। उन दोनोसे उल्ला हुर्वच आदि पुत्रोंको देवर्षि बस्दने मुहिके किये कात होनेपर भी सहिसे विरत कर दिया। प्रकार्यत दक्षने अपने पुत्र हर्पक्षेको सृष्टिसे विमुख देखकर

अर्थाद अनवाली साठ कन्याओंको उत्पन्न किया और उन्होंने दक्ष धर्मको, तेरह कञ्चपको, सल्होंस

करूकको, 🖫 अहपूत्रको, दो क्राइकको, चार अरिष्टनेमिको, 🤏 चुनुको और एक कन्या संकाको प्रदान किया। फिर इनसे कराकर-जगत् उतका इश्य । मेठ 🎞 वीन श्रूलेवर 🚃

निष्णु 🚟 मुख्या अवसः वैराज, वेकुप्ट 🚥 वैदलास चेन प्रीय है। पूर्व आदि दिखाओंने एक आदि **ार्थित कारी है। विस्तवान, वेमक्ट, निका, मेठ, बीठ, जा** और न्यून्यम्---चे सत्त जन्मुहैयमें कुल-पर्वत है।

क्युह्मेंय लक्ष केवन करणवाला है। इसमें मैं वर्ष है। जम्मू, प्रमद, **(१९९, १९९५), प्रश्ना**क, गोनेद<sup>क</sup> तथा पुष्पर--- में सात क्रैप 🕯 । ये सालों क्रैप सात समुहों से परिवेरित हैं । शह, दुग्ध,

इक्ट्रम, सुध, द्रवि, युत और स्वादिष्ट कलके सात समुद्र है। 🔤 🚃 🚾 🚅 द्वेप 🚃 अवेक्षा एक द्विगुण है। मूर्तिक, मुक्तिक, स्वर्तिक, म्हर्तिक, जनलेक, सबैरनेक

🕶 🕯 — अतल, यहतल, धृम्तिल, सुतल, 📼 . रस्वदल क्या तरवतरः । इनमें हिरम्बान आदि दानव और कार्योक आदि जग निकास करते हैं । हे बुधिहर । सिद्ध और

और सत्प्रत्येक—ये देवताओंके निकस-स्थान है। स्वत

🚃 मी इनमें 🚃 कार्त है। स्वायम्भूव, स्वारंपिय, शक्तर, कावस, रेकत और **काकूव---** में का मनु व्यक्तित हो गये है, इस समय वैकल्पत मनु वर्तमान है। उन्हेंकि पुत्र और 🚃 पद पृथिबी परिज्यात है। बरह आदित्य, आठ वस्,

🗝 📻 और दो अधिनीकृत्वर—ये तैतीस देवता वैक्रस्त-मन्वनामें कहे गये है। विक्रवितिसे देखाण और किरण्यको दानवरम उत्पन हुए है।

🎆 और समुद्रोंने समन्त्रित चृत्रिका प्रमाण प्रचास कोटि

१-सर्गत 🚃 🛒 सम्बद्धानि मा नेपानुगनि मैन पुर्व महत्वानम् । (कारवर्ष २ १ ११)

<sup>🗷</sup> अन्य 📖 🔛 राजे पुराजेके हुएका गेनेट अराजे हैं, वर्ष इस करक 🛤 度 🚥 है।

योजन है। नीकाको तरह यह पूर्वि 🚃 है। इसके चारी और खेकाखेक-पर्वत है। नैमिकिक, प्रमुख, 🔤 📉 और निस्य—ये चार प्रकारके प्रस्त्य है। जिससे इस संस्कृत्ये उत्पत्ति होती है। प्रशन्तके समय बसीमें इसका 📖 🗒 🚃 है । जिस 📖 शतुके अनुकूल वृक्षेके पूर्ण, 📖 और पूरू 🚃 होते हैं, इसी प्रकार संसार 🖩 अपने 🚟 🗷 उला होता 🛮 और अपने समयसे स्पेन होता 🖥 । सम्पूर्ण विद्याने, सीन होनेके कद महेकर केद-इक्टोंके द्वारा पून: इसका 🚃 करने है। हिम, अहिम, मृद्, हर, धर्म, अवर्य, 📖 असरा आदि 🔤 अनेक 🚃 इस 📖 प्रकृ

हैं। चूनि बरुसे, उस्र देवारे, तेज वायुसे, वायु आकाशसे बेटिव है। अल्ला अहंकारसे, अहंकार महतत्त्वसे, महत्तत्व क्कृतिसे और क्कृति दस अविनाजी पुरुषसे परिवास है। इस 📟 इन्बरो अन्द उत्पन्न 📰 🖁 और नह होते हैं। सुर, न्य, किसर, नाग, पक्ष तथा सिद्ध आदिसे समन्वित वरावर-कपत् नरायकार्धः कृतिभी अवस्थितः है। निर्मल-बुद्धिः तथा 🧰 अन्तःकरणकाले पुनिगय इसके 🚃 और आध्यनार-अभाग जाने and the

(अध्याय २)

### मत्त्रवीयमे विष्णु-पायका दर्शन

**मा पुनिहरने पूज-**मगनन्। यह नि<del>ण</del>्-भगवान्त्र्यं मापा किस प्रवाहको है है जो इस पहानर-जगहनो अवस्थितिक करती है।

यगवान् श्रीकृष्यने कहा—महत्त्व ! स्थितं सन्त नारदापुनि क्षेत्रद्वीपमे नारायणका दर्शन करनेक रिज्ये गये । वहाँ बीनारायणका दर्जन कर और उन्हें प्रस्तव-कुटमें देखका हुन्स जिल्लाक की । चाप्यम् । अन्यक्षी शामा बैतरी है ? बर्का सामे 🖁 ? कृपाकर उसका 📖 मुहे दिवाचे :

क्या करोगे ? इसके असिटिक को कुछ प्रकृते हो का भागी ।

दिपार्थे, अन्य 🔤 📖 अधिरूपमा 🚞 🛊 । 🔤 नर-वार आग्रह किया।

भारायकाने सन्धा-अध्यत् अध्य हमारी याचा देशे। यह 🚃 नास्त्रकी कैगुली 🚃 चेल्हीयसे बले । कर्गन 🚃 पण्यान्ते एक 🚃 प्राप्तनका कप प्राप्त 📖 रिल्या । शिका, बजोपबीत, कमण्डल, मृगवर्गको धारम 📖 कुरवयो परिवरी हाथोंने पहलकर वेद-पाठ करने लगे और अपन नाम क्लोंने पश्चामां रस रिन्धा। इस 🚃 📖 📖 नारदके माथ जम्बुद्वीपमें अस्ये। वे सुन्त बेजवर्ती नदीके कटकर स्थित विदिशा भागक नगरीमें गये। अस धन-धान्वसे समृद्ध उद्यमी, गाय, मैस, क्की 📖 पञ्ज-पारुनमें तत्पर, कृषिकार्यको मलीपाति करनेवाला सीरण्ड

कारक 🚃 🔚 🚟 करता था। 🖣 दोनों सर्वप्रयम क्रेडीके कर गर्प । उसने १५ विश्वय अञ्चलकेक आसन, अर्थ्य अविसे अवदर-सत्पक्ष 🔤 । दिन्द पूछा--- 'यदि आप उचित 📰 के 📰 🚟 अनुसार मेरे यहाँ अनुस्त भोजन करे।' यह मुनकर कुद्ध महानाजनका भगवानुने हैंसकर प्राप्त — 'सूनको अनेक पुत्र-पीत हो और सची आपार एवं 📖 नन्पर रहे । तुन्हरचे बोली और पशु-बनवर्ष निरंप मुद्धि हों — यह मेर 🚃 🗱 🖫 इतना 🚃 वे दोनों वहसि वर्षि को । प्रार्थि पहले तरपर देविका वर्षि प्रार्थि फोलाबी कारका एक दक्षि बाहाल एहता था, वे दोनों उसके पास पर्देचे । यह अपनी केतीको विकासे छना या । मनवान्ते उससे कहा-'क्रम कहत दूरते जाये हैं, अब हम तुन्हारे अमिषि है, हम पूर्व हैं, हमें मोजन कराओं।' उन दोनीकों सामने तेनर वह बाह्यन अपने क्या आया । उसने दोनेंको कान-कोकन आदि कराया, अनकार सुक्रपूर्वक उत्तम राज्यापर प्रयम आदिकी व्यवस्था की। प्रातः उत्पन्नः भगवान्ते अञ्चलको कहा---'हम तुम्हारे भरमें सुन्तपूर्वक रहे, अमे जा रहे हैं । करनेकर करे कि कुकारी केली निकाल हो, तुन्हाये संततिकाँ हा हो'—इसना कहकर में वहाँसे चले गये। वार्यके नाम्हर्मीने पुरा — भगवन् ! वैदयने आपकी

🚃 भी सेवा नहीं की, किंतु उसको उत्तपने उत्तम वर दिया। इस व्यक्तपने प्रदासे अवस्त्री बहुत सेवा की, किंतु उसको

अपने अपनीर्वदके रूपमें राज ही दिया-ऐसा अपने

क्यों किया ?

भगवान्ते कहा-नरद । वर्गमर महस्यै प्रवानेधे जितना पाप होता है, उतना ही एक दिन इस बोतनेसे होता है । कर सीरमद बैहर अपने पुत्र-वैज्ञेंक साथ इस्ट भूकि-कर्जन लगा हुआ है, 📰 नरकमें जायगा, अवः इमने न तो उसके बरमें विश्वास विस्था और न चेवल ही किया है 📺 बाह्यलंके भरमें पोजन और विकास 🚃 इस 🚃 ऐसा आसीर्वाद दिया कि मुक्तिको जाम करे।

देशके समीप पाँचे : वहाँ उन्होंने एक 🚃 🚃 🚃 देखा । उस 🚟 जोभा देखकर ने बहुत जस्स 🚃 धननान्ते बद्धा-नरर । या 🚃 🌃 🕏 । इसमें कान करना चाहिये, जिस ब्राह्मि ब्राह्मि करेंगे इतन 🚃 भगवान् इस सर्गक्षे जान कर शील ही कहर

इस 📖 मार्गमें बतबीत करते हुए वे देनों कान्स्कृत

आ गये। रावणपुर पारवानी भी साम करनेके रिप्ते सरोकाने प्रवित हुए। ब्रान सम्पन्न कर क्या के बहुद निकले, तम उन्होंने अपनेको दिव्य कन्यके क्यांने देखा । उस कन्यके विद्याल नेत वे । चन्द्रमाके समान एक था, वह सर्वाह-सुन्दर्ध कन्छ दिन्ह गुमलक्षणेसे सम्पन्न थी। 🚃 सुन्दरतसे 👯 व्यामेहित कर रही थी। विस्थ प्रथम संमुद्धसे सन्पूर्ण कंपकी निधान संबंदी निकरी भी, उसी प्रकार संबंदासे स्वापके बाद कार्यनी जीके रूपमें निकारे । पगवान् अन्तर्वान हो गर्ने । वह की भी अपने सुंबसे शह अकेरने इरिजेकी तरह भवशीत होमत इथर-उधर क्रांस लगी। इसी समय अपनी सेनाओंके 🚃 🚃 🚃 वहाँ आप और उस सुन्दरेसे देसकर

🚃 🚾 📭 पर्ने पेर्ट देवकी 🛡 🗷 अध्यात ? सिरा बोला—'बाले | तुम कौन हो, कहिंसे अपनी हो ?' उस कन्यने कहा—'मैं मता-पितासे रहित और निराजय है। केब विवाह भी नहीं हुआ है, 📖 आपकी ही शरणमें है।' हुक्स सुनते ही 📉 हो 🚃 उसे चेहेफ

· वरुप्ताली बारफ थे, उसने उनको पुरक्**यमें ओ**ड

दिन्त, कुछ दिन बाद पुत्र और पैत्रोको कुल वृद्धि हो गयी। वे पहल आंकरों, सरस्य पराची गर हत्या करना माजार वे । अन्तर राज्येक शोधने कीवा और पाणकोकी

चर्चा और विविध्वर्वक उससे विवाह कर लिया । वेससे 🔤

का 📟 हुई । समय पूर्व होनेपर उससे एक हुंबी (रहेकी)

**ा हुई जिसमें पन्नस सोटे-होटे दिव्य ऋग्रिका**ले **युद्ध**में

क्या परस्य पुदा करके समुद्राकी सक्षरीकी भाँति राज्यते हुए से सभी वह हो गये। यह को अपने पहला इस प्रकार सहस

पुरावर करते चंद्रकर करव्यपूर्वक विरुद्ध करते हुई मुच्छित हो पृथ्वीयर गिर पद्मै । एका भी स्टेक्को पीडिल हो रोने रूमा । 🐖 प्रत्य सहस्या 📖 बारमार भगवान विका

क्षेत्रोंके साथ वर्षी आपे 🔤 एका तथा 🚃 उपदेश देने लगे—'का विकास काम है। तुशकीन व्यर्थ ही से रहे हो। समूर्ण व्यानकार अपने वही रिवरि होती है। विकासका ही

देशों है कि उसके हुए। सैकड़ों चलवती और हजारों हुन्द्र इसी 🚃 नष्ट कर दिवे 👫 🕈 जैसे 🚃 स्वयंक्ष बायु 🌉 कर 📰 है। अनुसको सुकानेके 🔤 मृथिको पीसकर पूर्ण

पर प्रकृति हुन पुरुष पुरुष स्थाप सामर्थ रक्षकेवाले पुरुष भी कालके कराल मुक्तमें वर्ल भये हैं। विकृत

विकास दुर्ग था, अनुह विकास चाहे थी, ऐसी टेब्स एकाको थी, स्थानगण क्रिक्त का थे, सभी 🚃 और विदेशी जानेवाले शुक्राचर्य शिसके लिये मनावा

के, कुमेरके धनको भी निसने जीत किया था, ऐसा क्कन M दैक्तर नह हो गना<sup>र</sup> । युद्धमें, परमें, पर्वतपर,

नक्ति, गुक्तमे नक्ता समूहने वहा 🖫 🖷 जाय, 🚃 🚃 🚃 नहीं क्य सकता। श्रेमी होसद ही एहती है।

क्रवरूने 🚃 इन्हरनेक्ये जन, येर पर्वतपर बढ़ जाम, पन्त, औषप, प्रयूप 🎟 🗎 विजनी भी अपनी रक्षा करे, कित्

💹 🎮 👯 है, वह होता हो है—इसमें किसी प्राप्त

संदेह नहीं है। मनुष्येंक पाम्यनुराम जो भी श्रुप और अश्रम

📟 है, यह अवश्य ही होता है। हजारों उपाय करनेपर भी

१-तुर्विक्षकुटः 📖 समुद्रो 📰 नेपा 🚥 विद्या।

च वस्त्रीकास प्रमेशे स 🔤 हैक्स्मार 📖 । (स्वरण ४। १३)

(4 PPPR)

भाषी किसी भी प्रकार नहीं दल सकती<sup>र</sup> । स्थित-विद्वास होकर औसू दमकाता है, कोई पेता है की प्रस्तातासे नाचता है, स्था मनोहर गीव गता है, कोई घनके लिये अनेक तपाय स्था है, इस तरह अनेक प्रकारके जलकी रचन

रहता है, अवः यह संसार एक नाटक है और **व्या** दस नाटकके पात्र हैं।' उपदेश देकर धरावान्ते **व्या** 

राजाने की अपने क्यारी और पुरेशियोंके साथ देखा कि

स्थानाय पुनिश्चितने पूजा — मनक्त् ! या पनि किस अनुस्तर वेदित कर्मसे देवता, मनुष्य और पञ्च स्थाद व्यक्तियोगे अस्त होता और स्थात

कर्मसे देवता, मतुष्य और पशु आदि चॉमचीन उश्या देखा है ? वालभावमें बैदरे पुष्ट होता है और विदर कर्मसे युक्त होता है ? किस कर्मके फलनकरण स्थापन स्थाप देखा गुर्भकासका कह सहत करता है ? गर्भवे क्या करता है ? स्था

कर्मसे रूपकान, धनवान, पण्डित, पुत्रवान, स्थारी और कुश्रीन श्रीता है ? स्थिति कर्मसे रोगरहित जीवन क्यांके कराव है ? कैसे सुक्ष्मुकंक मरता है ? श्रुप और अशुध फलवन चीग कैसे अरक्ष है ? हे किस्सुब्दरे ! ये सभी विकास मुझे बहुत ही

गहन मालूम 📰 है ? भगवान् औकुम्मने स्क्रम—महाराज ! उत्तम 🚃

देवपोनि, विश्वकर्मके सनुष्ययोगि और पाप-कर्मोने पशु 🔤

ाति । प्राप्त है। विशेष अवस्थि निवासमें कृति ही प्रमाण है। प्राप्त पापधीन और पुरुषसे पुरुषसेनि प्रश् केरी विशे

अनुकारको समय दोवर्डित कुछ वाबुसे साथ स्टेके रक्तके साथ मिलकर एक हो जाता है। शुक्रके साथ ही कर्मीके स्टब्बरी, यहाँपर्यातकारी, दण्ड-कमण्डलु लिये, वीगा घारण किने हुए, सद्धाडीके उत्पर समय एक तेजस्वी पृति हैं, यह मेरी जिले हैं। उसी समय मण्डान् नारदका हाथ परवक्तर अस्टबरा-मार्गसे सम्बद्धाने केत्रहीप आ गये।

धनकान्ते जारहरी कहा—देवर्षि नश्दजी ! आपने

नेश पाना देश हो। नरपके देशते-देशते पेस प्राप्त परावन् विच्यु अन्तर्वित हो गये। देशवें नरप्ताने भी इंसकर अने प्राप्ता पाना और परावान्त्री जाता अस पर सिंग लोकोंने भूमदे लगे। स्थान ! स्विष्युपायाका इमने

पुत्र, को, 🚃 न्वदिने 🚃 📕 हेते-गारे हुए अनेक

---- t:

अनुसार वेरेत विकास प्रवेश होता है। एक दिनमें सुक्र और विकास विकास करूक बाता है। प्रवेश रावमें वा बद्धका हुद्धुद को बाता है। बात देखाँ बुद्धुद मांसपेशी वन बाता है। बीदक दिनोमें वह मांसपेशी भांस और रुपिएसे जात बाता है। बाता है। बाता दिनोमें उसमें अनुस् निकल्से

है। एक बहानमें इन असुन्येक पाँच-पाँच माग— प्रीमा, सिर, क्षेत्रे, पृष्टवंज्ञा सक्ष उदर हैं। जाते हैं। जा मासमें कड़ी असुन्येका क्षा अनुन्ये कर जाता है। याँच महीनेमें मुक, व्यक्तिक क्षार कार कार्य है। क्षा महीनेमें दक्तपंकियाँ, नक्स

 और वर्षि बनसे हैं, संविध्य उत्पन्न होती है और अनुमें संबोध भी होता है। आठवें महीनेमें अनु-प्रत्यन सम पूर्ण हो
 हैं और सिसमें बेदा भी आ बाते हैं। माताके फोजनका

बीर करनके किंद्र संगते हैं। शतको महीनेमें गुदा, रिन्ह अधका

रस क्रिक्ट क्रिक्ट बारुकके ऋग्निमें पहुँचता रहता है, उसीसे असका पोषण होता है। तब गर्पमें स्पित जीव सब सुबा-पु:स क्रिक्ट है और यह विचार बरता है कि 'मैंने अनेक बोलियोमें

हे और यह शिवार करता है कि मन अनक बालबाम
 कौर बारेकर पृत्युके अधीन हुआ और अब जन्म

१-कत्रकमधितम् सम् स्रोपरकोणमधीत् विकासमधीत् स्रोधम् । मर्जीविधासस्योता करोत् रक्षां कार्याव स्टब्स्टि नाम विकासिकोतीसः ।

२-शुर्विरतकात्रोति विशेषीयुक्तां समेत्। अञ्चले अभीवर्वपृथितवेन्त्रीत् वान्ते ।

प्रमुखं श्रुतिका कर्मकविशिक्तो।याः 🚾 कुनं कुनेतः 🚾 (उत्पर्शं४।६-४)

अतिराय दुःसी रहता है। पर्वतके नीचे दब जानेसे जिल्हा हेटा **ार्ज होता है, स्थान के जएक्से बेटित अर्चात् कर्पने क्रिक** है। समुद्रमें इननेमें जो दृश्य होता है, वही दृश्य नर्गक जराने भी इस्त है. 🔤 🌃 सम्मेसे चौदनेने जेवादे जे हेटर होता है वही गर्पने जठरातिक सापसे होता है। तकवी हुई सुहवोसे वेथनेपर 🖷 व्यथा होती है, उससे आठ पुन ऑफ्क गर्पने · कह होना है। जीवोंके दिखे गर्मकारने अधिक कोई 🚃 नहीं है। उससे भी 🚟 मून द:स क्या स्ता सनद होता है, 📖 दुःबसे पूच्छी भी आ जाती है। प्रवस प्रस्ट-व्यक्ती केलाने जीव शर्वके बहुत शिवस्ता है। 📖 🚃 कोल्हुमें पीक्षन करनेसे दिल निस्तार हो जाते 🖥 🚟 प्रकार प्रतिर मी योजियको क्रिक्त लिल्ल हो यक है। युक्तक जिसका द्वार है, दोनो ओह कवट है, संबी इन्द्रिक्ट कवक अर्थात् प्रतेको है, द्वीत, विद्या, गरम, बात, दिन, बाम, बार, शोक, माथ, हरीय, तुष्या, राग, हेव आदि जिसमें उपकारन है, पेसे इस देह-कप अनित्य गृहमें नित्य आव्यापा निवास-प्रवाध है। रहक-शोगितके संयोगने प्रतिर उत्पन्न क्षेत्र है और निरुद ही मुत्र, विश्वा कादिसे भरा रहता है। इसलिये यह आरक्स अपवित्र है। 📰 प्रकार 🚟 भरा हुआ पर बाह्य क्षेत्रेके पूछ नहीं होता, इसी अन्तर यह देश में पहल व्यक्ति 🚃 🔤 नहीं हो सकता । हाराव्या 🕮 पवित्र पदार्थ भी इसके संसर्गसे अवित्र हो बाते हैं। इससे अर्थका 🛗 📫 अपवित्र पदार्थ होगा । उत्तम भोजन, पन अबरि देखके संवर्षके महरूप हो आहे हैं, फिर देहकी अवधिकालक क्या वर्णन करें र देसको माधरसे कितना भी सुद्ध करें, भीतर तो कक, मून, निहा अबदि परे ही रहेंगे । सुगन्धित तेल देहमें भरूदे वहें, परंतु काबी इस देहकी मरिनता कम नहीं होती । 📉 आक्षर्य है कि मनून्य अपने देशका दुर्गमा सुँपकर, 📖 अपना मरू-मूत्र देशका और नासिकाका 🚃 🚃 भी इस देहने किस्क नहीं

होते ही फिर संस्थानके बन्धनको बात करोन्या । इस प्रकार

गर्भने विकारता और मोधका त्याय सम्बद्ध हुआ 🐃

····· | 📰 सरोरके दोष और दर्गन्थ देख-सुभकर भी इससे 📟 📰 होती । 📰 प्रारीर स्वपनाथरः अपवित्र है । यह केलेके वृक्षमी चर्चित केवल त्वक् आदिसे अववृत और निस्सार दै । 🚃 💹 📕 बाहरको कावुके स्पर्शने पूर्वजन्मीका स्नान नष्ट 🛮 💶 🛊 और पुरः 📖 व्यक्तारमें 🚃 🛮 अनेक टुकामी रह 🖫 भारत 🖁 और अपनेको तथा परमेश्वरको मुख 🚃 है। 📰 रहते हुए भी नहीं देश पाता, बृद्धि रहते हुए चले-क्रेक निर्णय नहीं कर पाता। राग तथा लोभ आदिके वर्तीपून होकर 🚃 संस्थरमें दुःक प्राप्त करता रहता है। सुक्षे मानी 🖩 🖺 📟 ै , यह स्था मोहबर्र 🗎 महिमा है। दिव्यदर्शी महर्विपॉने इस गर्पक वृतान विस्तृत रूपसे वर्णन 🔚 है। 🖫 सुस्कर 🕸 मनुष्यको 🔤 🚃 होता 🚃 🔤 करण्याच्या मार्ग 🚃 क्षेत्रवा—पड वक्ष श्री amaró è i भी केवल दुःस 🛮 है। 🚃 🚃 🚃 भी नहीं 🚃 सकता 🚟 यो चाहता 🗓 वह नहीं 📰 फल, वह समस्पर्ध रहता है। इससे नित्य व्यक्ति रहता 🛊 र 🔤 🚟 समय बालक शहर हेटा थोगल 🛮 और भारत-भारतके रोग तथा हाताला तसे सताते रहते हैं। वह कुष्ण-तृष्ण्यमे पैद्धित होता एता है, मोहमे विहा आदिका ची प्रथम करने रुपाल है। कुमाराकाकाने कर्य-केचके समय दु:क 🛅 है। अक्टरम्मके समय गुरुसे 🔣 बढ़ा 🖥 भय शिक्ष है। प्रात-पिता ठाउन करते है। युक्तमस्थाने 🔣 🚃 नहीं है। अनेक प्रकारकी दियाँ मनने उपनती 🖥 । मनुष्य मोहमें लीन 🖥 📖 है । 📖 आदिये अवस्य होनेके कारण द:स होता है, संत्रिको 🥅 नहीं आही और काको किरको दिनमें भी चैन नहीं पहला। सी-संसर्गमें कोई सुका नहीं। कुछी व्यक्तिके कोछमें कोछे पह जानेपर 📕 जुनस्कट क्षेत्री है, 🔣 जुनस्त्रनेमें जितना आनन्द होता है, उससे अधिक 📖 व्यक्तिको स्तेसे सुख नहीं मिलता।

केवा और उसे देहसे फुछ उत्पन्न नहीं होती। यह मोहका ही

१-मानकेनियक्तिकर् व्या दुन्नं पानुसः। इत्यानि न व्याप्त वर्तृ व्याप्त वर्त्ता वर्ता वर्त्ता वर्ता वर्ता वर्त्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्ता वर्त्ता वर्ता व

इस तरह क्वितर करनेपर पार्ट्स होता है कि सीचें सोई सुखा नहीं है।

स्मा और संयोग-वियोगके व्या प्रश्न है, तो किर निर्मित्रद सुन कहाँ ? यो सैकाके कारण की-पुल्लेक सारण परावर प्रिय कारों हैं, यही वार्यकाके कारण पृण्यि क्यांत होते हैं। वृद्ध विने, प्रशिक्षे व्या और व्या अध्योक कर्या एवं स्मानक हो जानेपर व्या संयोको अधि प्रियक्त क्यांत होते हैं। युवाधस्थ्योत बाद वार्यकाचे अपनेने पारी परिवर्तन और व्या प्रशिक्षीनवाको देखकर व्यक्त वृद्ध होता—कर्ष व्या भगवान्त्रों और प्रमुख नहीं होता, उसके क्यांतर भूष और स्मान

मुहारोमें कम पुत-पीत, कार्यम, दुरावारी कैयर अवदि अवहा--- उपेशा करते हैं, तम अत्याद दु:म होता है। मुहारेग् वह मार्ग, अर्थ, काम तथा मेश्च-सम्बद्धी कार्योको सम्बद्ध करतेमें असमर्थ एवता है। इसमें साम पित विकास विवयताने अर्थात् -पूनता-अधिकाता स्थिते विकास विवस्ति रोग होते रहते हैं। इसकिये वह इसीर रोगोका पर है। ये दु:सा प्रायः सभीको समय-सम्बद्धार अनुभूत होते ही है, विज्ञ उसमें विद्या वश्चनिकी समय-सम्बद्धार अनुभूत होते ही है, विज्ञ उसमें

वास्त्रको प्रश्निक सेन्स् है, विस्त्रको स्वाह है। वास्त्रको प्रश्निक सेन्स् है, विस्त्रको स्वाह है। वास्त्रको स्वाह है, दूसरे बात अले-क्रिकेटले बात अलिक स्वाह है। अले-क्रिकेटले अलिक स्वाहिकेटल भी जाती है, परंतु काल—प्रमुक्त कोई उपाय नहीं है। वेत्त अलिक सामित्रकों है। वेत्त अलिक सामित्रकों है। वेत्त अलिक सामित्रकों के सामित्रकों का सामित्रकों के सामित्रकों का सामि

पुरुवको 🚃 सी 🚃 🚾 🚾 है, परंतु चोई 🚃 कों जीता 🖥 फोई सतर 🔤 । अन्य लोग अधिक-से-अधिक 🚃 🚟 🎉 बीते 🛮 और बहुत-से तो इससे पहले ही मर वाते 🛮 । पूर्वकर्मानुसार वनुष्यको जिल्ली आय 📟 🐮 उसका 🚃 💼 से की है सेनेमें ६८ हेवी है। बीस वर्ष करण और बुद्धांकेरे व्यर्क बले जाते हैं। युवा-अवस्थामें अनेक स्थापन और कामकी साथ रहती है। इसलिये व्ह 🚃 भी निर्श्वक 🖁 🚃 📖 🖥 । इस प्रकार 📰 आयु सम्बन्ध 📕 📟 है 🚟 कृत्यु 📟 पहुँचलो है। यरभके समय 🍱 🚃 🚾 है, उसकी कोई रुपमा नहीं ( 🖁 मातः ) हे विक: ! के कारत ! आदि 📉 🚃 📰 🖛 मृत्यु वैसे 📗 🚃 🛚 📖 🛊 , 🖿 विकास सर्व प्रकृत 📖 है । व्यापिसे 🚃 🚟 कटन्स पहा इथर-३थर हाय-पैर पटकला गहेता 🛮 🛗 स्वीत रेखा प्रका है। कभी बाटसे भूमियर और कभी भूमिके 🚃 💼 है, परंतु 🚒 चैन 🌉 मिलता । सन्दर्भे परे-परे सन्द 💹 लगता है। धुक्र 🚃 📰 🛭 । शरीर सूत्र, 🔤 🚟 🛤 है अति है। 📖 स्वयंपर 📖 📺 पत्री र्माच्या है, 🔣 दिवा हुआ पानी भी फण्डराभ 📓 📺 आरह है । 📟 🚾 🖥 📖 👂 पदा-पदा विका भगता रहता 🖥 विर भैरे 🛲 र वस केरल ? 🔣 कुट्यको रहा कीर करेगा 🛭 इस क्ख अनेक प्रकारको चातक चोपता हुआ मनुष्य मरता है और भीन 🚃 🎆 🚟 📳 🚟 सरह दुसरे शरीरमें प्रशिष्ट 1 mm \$1 पृत्युक्ते भी 🚃 पुत्रा 🚃 पुत्रवेको याचना अर्थात् 🚃 📰 है। पुरुषे से 🚃 दुःस होता है, किंतु क्यक्रमें से निरस्त 📕 दृःस होता है। देखिये, भगवान विका

है। कृत्ये से हिन्द दुःश होता है, विश् क्यानमें से निरम्त हुःश होता है। देखिये, मगवान विष्णु क्यानमें से निरम्त हुःश होता है। देखिये, मगवान विष्णु और दूसरा है ही कौन जिसकी हिन्द पालनासे न पटे। आहि, सच्च और अन्तर्भ दुःशकी ही परम्पा है। अञ्चलका मनुष्य दुःश्लेको होस्त्य दुःश कि आलंद नहीं क्यान सुव नहीं है। शुख क ग्रेनिंग प्रमूस है और यह आवश्यी सेवनके योगी देखे कि शन्त हो बाती है, परंतु अर्थ भी कि सुकान सम्मन नहीं है। प्रतः दक्तो है मृत्र, विहा क्यान सम्मन नहीं है। प्रतः दक्तो है मृत्र, भरनेपर कायकी व्यक्त होती है। राजिको निद्धा दुःस देती है। क्रमके सम्पादनमें दःस, ब्राह्मा पनको रक्ष करनेमें दःस, फिर उसके व्यय 📟 अविसय दुःव 🚾 🛊 । 🚃 📟 भी सुबादायक नहीं है। चोर, जल, अति, एवा और सम्बासि भी धनवालीको अधिक पय छवा है। मांसको अक्सको फेंकनेपर पत्नी, चूपिपर कुते आदि जीव और जरामें वकानी आदि का जाते हैं, इसी प्रकार धनवानको ची सर्वत वही 📟 होती है। सम्पत्तिके अर्जन करनेमें दःस, सम्पत्तिको 🚃 बाद मोहरूपी एक और नाम 🖁 बानेपर के जल्पन एक होता ही है, इसलिये किसी भी कालमें कन सुकाव साकन नहीं है। भून आदिकी कामनाएँ हो दःकका परत कारक है, इसके विपरीत कामनाओंसे निःस्पृष्ठ पाना परम सूचाना भूस 🗗 । हेमक बहुने दक्षिका दृश्या, बीक्यमें दावन सावका दृश्या और 🔤 प्रातुमें इंज्यानात तथा 🚟 🐉 🐉 है। इस्रोक्ति काल 🔣 सुकाराक्त नहीं है। 🖼 💥 कुका 🚟 🔤 विदेश-गमस्ये कृता, 🗷 गर्मक्ती के 🚾 कृता, प्रसमके समय दु:स, सर्वामी दल, नेत महत्त्वी पेक्से दुःसः। इस प्रश्नप्रः को यो स्राप्तः व्यक्तिक रहतो है । कुटुनिक्केको यह विश्वा रहते है कि मी नह हो भयो, बेली कुछ क्यो, जैकर

मक, घरमें येहमान आया है, सीके अभी संतान हुई है, इसके दिये रसोई कीन कनावेगा, कन्यके ज्वाल आदिकी विका—इस प्रकार की विकाई कुटुनियोंके कारण को विकास उनके सील, शुद्ध बुद्धि और सम्पूर्ण गुण नष्ट को है, विका तरह को घोट्टी यल विकास पटके साथ तरह यह विकास है. किता गुणेस्त्रीश कुटुम्बी मनुष्यक देह दक्ष हो कार है। राज्य के सुकाको साथन की है। जहाँ किय सन्दि-

भय है। किस जनतर एक मांस-कुलोको प्रश्य भय है, वैसे पी स्थान मुंबी नहीं है। ऐसा कोई एमा नहीं जो सबको कीरका सुकार्क का करे, स्थान दूसोसे स्थान है।

📟 मन 🚃 🐧 🚟 🚃 लेश भी 🚟 🜓 📟

च्या सोनुम्बयमस्य हो पुतः च्या कि 'सहापण | यह च्या छाईर व्या हेन्यर अस्तवक दुःखं में हैं। जो पुरुष व्यापक व्यापक क्या आदिये सरवर रहते हैं, व च्या सुनी व्यापि है।'

(अध्याप ४)

### 

भगवान् श्रीकृष्यने बाह्य—महत्यतः। अथव वार्यस्य पोरं नरवाने गिरते हैं और अनेक जवानी धारामाई भोगते हैं। उस अथम व्याप्त वेद व्याप्त महत्ते बाहते हैं। चित्रकृषिके मेदरे अवर्यम्य केद व्याप्त व्यक्ति। स्थान, सूक्ष्म, अतिस्थान व्याप्त व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति हैं। परंतु वहाँ मैं केवल को-बड़े पालेकर संखेकने कर्नत बारता है—परश्चीका चित्रका, दुसरेका अनिष्ट-चित्रका और अवसर्य (बुलार्म) में ऑगिनिकेक—ये तीन प्रकारके प्रकार पूर्व विच्न अनिवन्तित व्यक्तिया, अधिव, व्यक्ति, प्रकारके प्रकार पूर्व विच्न और

वीर परणा-इरन-न्ये चार वशिक्ष पर है। इन व्यास करोंके विश्वी नरकारी व्यास है। व्यास परी केंद्र क्षेत्रे हैं। यो पुरुष करवारणा सागरसे उद्धार करोंकरे पहादेव व्यास घणकन् विष्णुसे हेंच व्यास है, व वरकार्थे पहादे हैं। वहस्तुरका, सुरुषान, सुवर्णको जेरी और गुद-पार्थे नरकार्थे दे होतारका है। व्यापसार्थे करों-क्षात्रेक सम्पर्की सुनेकारक मनुष्य प्राप्तां महापारकी गिना

भक्तक, क्रिका, 📟 कामारेवन (आसंबांगत जीवन व्यक्तित

(कारार्व ४ । १११—१२५)

🚃 है। ये सभी उरकरों 🎫 है।

अब मै उपगतकोका कर्णन करता है। सहाचको 👊 पदार्थ देनेकी प्रतिक्ष करके किर नहीं देना, सहरकका धन कुरू करन, असना अहेन्यर, अस्तियेष, दर्शनकार, कृतवार, कृतमात, व्याप्त अस्तिताय अध्यक्ति, अध्ये पुरुषेसे हेप, परबीहरण, कुम्बरीगमन, भी, पुत्र आदिको बेचना, बी-बनसे करना, सीम्बी रका न करना, प्राण लेकर न क्यान: देवता, अति, स्तम्, गी, क्यान्य राजा और परिवासको निन्दा करत आदि उपपालक हैं। इन चापेंको बरनेवाले प्रश्लेका ओ संसर्ग करते 🛡 वे 🕶 कारक क्षेत्रे हैं। इस कार कार करनेवाले मनुष्येको वृक्ष्मे कर वसराव सरकमे हे करे हैं। भी मूलमे पाप करते हैं, उनको पुरुवन्त्रेकी आध्वके अनुसार क्रवित करना चाहिने : 🔣 मन, क्यन, क्यांत्रे पद करते हैं एवं सूमरोते स्थान 🛡 अध्यक्ष चन करते हुए पूर्णोक अनुमोदन करते हैं, में सभी नरकरों जते हैं और जो उत्तम कर्ज करते हैं, वे कार्ग्ये सुक्रमें अनन्य भोगते हैं। अञ्चय कार्येक अञ्चय करा और शुभ 🚃 शुभ करा होता है।

करी-करी परिचर, सर्प, बृक्षिक आदि दुष्ट बन्तु भूमते करे हैं। करीपर व्यक्ति अभिनी, स्मि और को कूर स्वास दुःस देते रहते हैं। उस मार्गमें व कर्ती क्रमा है और र बरू । इस प्रकारके भयेकर मार्गसे कमदुर पाणियोको स्वास्त श्राहको

बॉफ्कर पतीरते हर है जाते हैं। उस समय अपने कप

रहती हैं। उस मार्गि कहीं अपि, कहीं सिंह, कहीं क्यार और

अमदिसे रहित वे प्राणी अपने कम्बैको सोचते हुए रोने रहते हैं। मूल और प्यासके मारे उनके कम्ब, तालु और ओह .....

है। स्थान वसट्ट उन्हें बार-बार क्या बनते हैं और
 जबना व्या संकल्से बांचकर सींचते हुए ले जाते
 है। इस क्या द: ज प्रेगते-धोगते में ममलोकर्ने पहुँचते |

और **ब्रिंग** अनेक पालकर्ष घोणते हैं। पुष्प ब्रिंग उत्तर मार्गते शुक्रपूर्वक पहुँचकर सीम्य-सक्तम धर्मसम्बद्ध दुर्जन करते **ब्रिंग** जे उत्तरन महुत आदर

करते हैं, 🖩 करते हैं कि महात्याओं ! आगलोग घन्य हैं, दुसरोका उपकर क्रिक्ट हैं। आपने 🎹 सुकारी प्राप्तिके 🌃 बहुत पुरुष क्रिक्ट हैं। क्रिक्ट इस उत्तम विमानपर

क्यूका स्वर्गको 📶 । ह्याक्का प्रमराज्ञको प्रसम्भित अपने विकासी 📶 देकते हैं, परंतु 🔝 स्त्रेग क्रफे भ्रषातक कपने देकते हैं। क्युकाके समीप 📴 क्याक्का समान क्रुस कृष्ण-

वर्ग मृत्युरेन विकास दाते हैं और स्थास अवंतर प्रतिस्थी तथा विक्रियों क्या भारत किये सन्पूर्ण रोग वर्धी हैंडे स्थास देते हैं । कृत्युर्वकी स्थास समुद्रत अस्त्रे सुर्वों

क्रीक, कुछ, असुरा, पारा, साथ कहाग, बाब, साथ स्था क्रमा काम किसे हुए साथ सहते हैं। पानी साथ प्रमाणको इस कामी विवह देवते हैं और समस्यको समीप बैठे हर

श्री क्या क्या है तुम्मे क्या क्या अवहरण क्या है, क्या गर्वस पर-क्रियोक्त सम्पर्क क्रिया है, और क्या अनेक क्याओं क्याक्तास्त्रात्वा तुम्में क्रिये हैं। अब दम क्याँका

फल केमो । 🚃 💹 तुन्हारी १७६ 🚃 🚃 🚃 इस

विकास 🚟 कर्मा करके 🚃 🛮 📾 🚟 । सुनने ऐसे

स्वक्रीयः तर्जनकर चित्रतृत्तं यसदृतको आहा देते
 स्वक्री ले लाला नरकोको अस्तिमें लाल दो।
 स्वक्री प्रदारको लाला अन्यकरके लाला स्वक्रम

यक्तूत वहाँ अनको कैसे वृष्टिकी इसकाओंमें टींग देते हैं और सैकड़ों पन लोग उनके कैसेने बॉक देते हैं। उस बोझसे उनका उन्हेंस टूटने लगता है और वे अपने अञ्चय कमीको सदकर केसे और विस्तानने हैं। उन्हों हुए हिस्सी युक्त स्वैह-दण्डसे

अपूर्वत करोड़ 💳 📕 🔤 🚾 वासना 💳 है।

अनुवासे वसदूत उन्हें सामा करते हैं और अन्य हैं। सा उनके देहोंने सा हो जाता है तब

उनमें नमक रूपाये हैं। कभी उनको 🚃 सीराते 😎 वेलमें बालते हैं, वहाँसे निकातका 🚃 क्रको उनके हुबोते हैं, जिनमें कीहे कार-कारकर 🌃 🐧 🏬 गेर, अधिर, पूर्व आदिके कुन्होंने उनको बकेल देते हैं। नहीं लोकेकी चोषपाले 📖 और शाम आदि जीव उत्का 📺 नेच-नेच 📰 बाते हैं। कमी उनको तीक्ष्य शुरुवेंने 🛗 है। अपन्य-पद्मण और मिध्य ध्यान 🚾 💮 बहुत 🚃 📖 है। यो पुरुष भाग, 🖼 और मुख्यो कठोर यक्त बोलते हैं, अनेक युक्तमें जलते हुए अंगारे 📰 🔤 जाते हैं और पालेंथे 📖 📖 बीतर 🊃 💹 पाल दिया 🕬 है। जो अतिथियो अध-जल 🔡 विन्य उत्तरेह सम्पुक्त 🔣 रूपरे भोजन बरते 🕏 🛍 १५५०२ 📖 कोस्हुने 🔣 जाते हैं 📖 वे अस्तिताल अन राजक रतकमें जाते हैं। इस 🚃 🗯 हिश भोगरी रहनेपर 🖫 🔤 🚃 निकारते । 🔣 परवारीके साथ 🛍 किया हो, फाइत 💹 नारीसे आलिक्ष्य कावते हैं और पर-प्रवासीयके वर्गिको ता। 🚟 पुरुवसे स्थिपटाचे 🕯 और 🖼 🛚 कि 'हुई 🖰 जिस प्रकार त्यने अपने 🚃 🚃 🚾 वर पर-कारकः आरिज्ञूप किया, उसी प्रकारसे इस लीइ-पूरवर्ध 🖩 आलिब्रुन करो।' भो पुरुष देवालय, बाग, बागी, बुग, बाठ आदिको नष्ट करते 🖥 और वर्षा रहका मैथन 📟 🚟 प्रकारके पाप करते हैं, यमदूत उनको 🚟 📟 🚾 धनोंसे 🚃 📰 है और वे जनतक चन्त्र-सूर्य है, तनतक नरकवी अप्रिमें पढ़े करूने रहते हैं। जो पुरुष्टे निन्दा सबल 🎹 है, उनके कानोको दन्द 📖 है। इस प्रकार 🔤 इन्द्रियोसे भनुष्य श्रय करते हैं, 🖩 इन्द्रियों कह चली है। इस प्रकारको अनेक धोर बातना पापी पूरत सभी 🚃 📖 है। इनका सी वर्षेमें भी वर्षन नहीं हो सकता। बीम 📖

नहीं निकलते। इससे ■ अधिक दावन शक्तार्थ है, मृद्धीयत कुल अनको सुनकर ही दहरूने रूपते हैं। पुत्र, मित्र, को आदिके रूपये प्राणी अनेक ■■■ प्या करता है, परंतु उस ■■

अनेक प्रवस्तवी 🚃 व्यव्य मोगते 🌉 🕏 बंह् 📖 🕬

कोई सहस्रका नहीं 🚃 केवल एकाकी हो यह दुःश 🚃 है और ऋज्यपर्वत्त 🚃 पद्म 🚃 है। 🚃 🧰 सिद्धान्त है कि क्वन्त किया 🚃 📷 घोगना पश्चा है। इस्रक्ति बुद्धकर् प्रमुख ऋरीरको 🚃 🚃 लेशमात्र भी चन 🔳 करे, फरमें 🚃 ही 🚃 मोगना पहला है। पापका करु कुल 🛮 और 🔤 📆 📆 🚾 दुःस कहीं नहीं है । चयी मनुष्य नामकासके अनुसार फिर पृथ्वीपर जन्म लेते हैं। 🚃 अर्वेद अनेक प्रकारकी 🚃 🚟 वे जन्म प्रहण 📰 है और 🔤 कह 🔤 है। अनन्तर बीट, परेंग, चर्ता, पशु उदारे 🚟 🚟 🚟 अन्य 🛗 🚃 🖼 दुर्लभ मक्ष-क्ष्म पते 🞚 । सर्ग एवं मोश देनेवाले मनुष्य-जन्मधी 🕶र देसा 🔤 🚃 चाहिये, जिससे 🚃 न देसना पढ़े । का पनुष्प-कोने देवताओं तथा असुर्वेक लिये भी दुर्लम है। 📟 🖥 🚃 जन्म 🚌 है। सनुगर-जन 🚃 💹 🚃 वृद्धि करनी चाहिये। जो जपने करणानके 🕮 कर्मक 📖 नहीं करता है, उसके 🚃 पूर्व 🌃 होगा ? का देश 🚃 📖 🚛 है। बहुत पुरुषसे प्राणीका

स्थान करिर स्था है, स्थान को स्था पुण्य बन सके वह कर कि व्यक्ति। बदमें कुछ भी नहीं हो सकता। दिन-एकके बद्धने नित्य कामुके ही अंदा सम्बद्धा हो रहे हैं। फिर कि मनुष्योको कि को होता कि एक दिन मृत्यु आ पहुँचेको। यह तो किसीको भी निवास नहीं है कि किसकी क्षात्र किस सनस्थारें होगी, फिर मनुष्यको क्षाेंकर भैसे और सुक्त

क्य 🚃 💹 है। इस देशने क्या धकर को अपने

🔤 🚾 पुष्यं करता है, यही बुद्धियान् है। जिसने

ऐसा 📰 विक्रा, संसर्ग अपने आत्मके साथ बंदाना की।

निरस्ता है 5 पह जानते हुए कि एक दिन ा सभी सामग्रियोंको कोड़कर अकेटो परे विकास किर अपने हाथसे हैं अपनी विकास सर्वाची क्यों नहीं बॉट देते ? मनुष्यके लिये दान ही अर्थात् रास्तेके लिये फोजन है। जो दान करते हैं, हैं

सुस्तपूर्वक जाते हैं। दान्हीन 🔤 अनेक दुःश पाते 🗓 पूजे मारो जाते हैं। इन 📉 📉 पुण्य ही 🚃 चाहिये, पापसे 🚃 🚃 सहिये । पुरुष क्योंसे देशल प्रक् होता 🛮 और पाप करनेसे नरकको प्रति होती है। ज्ये सन्पूरन 🛮 शास्त्रमे 🔛 🐧 🗎 🚃

स्थित जरूको तरह चापेसे लिस नहीं होते। इसलिये इन्द्रसे कुटकर **च्छिन्**कंक (शरकी अध्यक्ता करनी चाहिये **व्या** सभी 🛮 📟 भिल्तर क्यमा चाहिये। (अध्याय ५-६)

### प्रत्रेपनासकी महिमार्गे प्रकटकाकी कवा

धगवान् श्रीकृष्ण बोले----महराव ! मैंने के 📖 नरकोका विस्तारसे वर्णन किया है, उन्हें नीकासे मनुष्य पार कर सकता है। प्राचीको 🛲 दर्शक मनुष्य-जन्म पाकर ऐसा कर्म करना वाहिये, जिससे प्रशासन न करना पत्रे और यह जन्म भी व्यर्थ न अन्य और फिर जन्म 🔳 २ केन्द्र पहे । जिस सनुष्यको कोर्सि, राम, इत, उपकास आदिकी परम्पा करी है, यह धरलेको उन्हें कार्येक हाल सुक भोगता है। इत तथा स्वध्याय न करनेकरेजी कहीं भी गृहि नहीं है। इसके विपर्धत इस, स्वाध्यय करनेवाले पुरुष सदा सुधी होते हैं। इन्होंनने वत-स्थानाय ....... करने चारिये।

राजन् । यहाँ एक प्राचीन इतिहासका वर्णन करतः 🦫 प्रेपको सिद्ध किया हुआ एक सिद्ध अति भवेकर किवत अव धारण कर पृथ्वीपर विश्वरूप करता था। इसके संबे ओड़, टूटें दाँत, पिक्रफ नेव, करटे कान, फटा मुक्त, रोब्ब पेट, देवे पैर और सम्पूर्ण अब कुरूप थे। 🐺 मुख्यारिक नामके एक ऋष्रणने देशा और उससे पुरू कि आप सर्गसे का 🚟 और 🔤 प्रयोजनसे यहाँ जाएका 🖦 १ 📟 आपने देवताओंके जिल्ला मोहित करनेकरी और स्वर्गकी अलेकार-सक्रपियी स्थाओं देखा है 7 अब आप सर्वाचे कवे तो रम्पासे करें कि अवस्तिपूरीका निवास सदान पुजार कुदारः पुरुषा या । बाह्मपका क्यम सुरुका सिद्धने व्यक्ति हो पूछा कि 'बाइरण ! सुमने मुझे कैसे पहचाना ?' तम सहायने कहा कि 'महारच ! कुरूप पुरुषके एक-यो मह विकुल होते हैं, पर आपके सभी अन्न टेड़े और विकृत है। इसार 💹 अनुसान किया कि इतना रूप गृह किये केई सर्गेक निकासी सिद्ध ही है। ब्रह्मचन्त्र क्यन सुनते ही व्य क्रीड़ कहाँसे असावान हो एका और वर्ग दिनेके बाद पुतः **ब्यापके सुबीव आया और ब्याप लगा—'प्राहरण** ! हम स्वर्गी को और इन्हरूरी संपाने जब दृख हो चुका, उसके बाद मी क्यानमें रव्यक्ते तुन्हारा संदेश भक्ष, परंतु रम्भाने यह बद्धा कि में उस प्रदानको नहीं बावती । यहाँ तो उसीका नाम क्रमते है जो निर्नेत बिह्म, चैरन, दान, तप, यह अधना मत क्यान पुरु केल है। उसका नाम क्यानील विस्तारसक हिन्द रहता है।' रम्पाचन सिक्षके मुखसी यह मधन सुनकर अक्रुपने 🚃 🗷 एव 🔤 📖 नियम्मे करते 🕏 🚃 रुक्ते 🚃 देखिये। यह सुनते ही 📖 दिन अन्तर्यांन हो क्या है साम कार्य अपने एनाई सहाजका संदेश कहा 🚞 🖛 उसने उसके गुल कर्पन विश्वे तब रामा प्रसन्न श्रीकर 📖 हमी — फिद्ध महाबदल 1 में बनके निवासी इस समाद बहुम्बरीको अनुद्रो है। दर्शनसे, सम्भावगरी, एका निवासरे और उपकार करनेसे मनुष्योका परस्कर और होता है, परंतु मुहे हरा सहराजा दर्शन-सम्बद्धण आहे. कुछ भी नहीं सुआ। केवल नाम-संबंधने इतन 📰 हो गया है।' सिद्धने दतना क्यूबर रच्या इन्हरूके संबंध गयी और ब्राह्मणके बत्त आदि बाने रुख अपने उत्पर अनुरक्त होनेका वर्णन किया। इन्हर्न भी प्रसन्न हो राज्यसे पूजकर उस उसम बाहारको वकाभूगण अवदिये अरुकृत कर 🎹 विमानमें बैठाकर लागि बुरसया और 🎮 सम्बारपूर्वक स्वर्गके 📭 🔤 उसे प्रदान क्रिक । अञ्चल किरकारकार वहीं दिव्य जोगः घोगता रहा । जर ऋथळ-अतमा महक्राय हमने संखेपने वर्णन किया है। युवतती पुरुषे क्रिये एउक्क्ष्ये, वैकुण्डलेक, मनोवान्तित 📖 अबंदि दर्राप पदार्व 📕 बपर्स्ने सुरूप है। इसकिये 🚥 सत्तवका प्रकारे प्रतमें संस्था गृहना चाहिने। (अध्यय ७)



## तिरवक्तातके पद्मान्यमें चित्रलेखाका चरित्र

### [ संवत्सर-प्रतिषद्धाः कृत्य ]

भगवान् श्रीकृता केले—महस्यः ! के महस्य श्रह पक्षको 🖷 प्रतिपदा होती है, उस दिन को अकना फुल नदी, तालाम या परपर जान कर देवता और रिलवेका तर्पक करे। पिर पर आकर आहेको पुरुषकार संकरकारको 🎹 कावकर बन्दर, पुष्प, यूप, दीप, 🚾 न्यात उपवर्तनो 📟 🚃 को। यतु तथा पासीका उत्तरम करते हुए पूका तक प्रयास कर बिकास कि कि और—'बोकसरोजींग परिवासरोऽसीतावसरोऽसीक्कसरोऽसिः वासरोऽनिः ( कारावो कल्पनामामामा भागपत्तापृत्तवाले कावनाः<u>।</u> तंत्रकारले कावनान्। केव पूर्व 🖩 बाह्य प्र व सारवः। सुक्लीकारिः क्या देवाचा प्रतिसंबर् हुवः 🔤 (('१२५-१७ (४५) जी नव प्रतिमान्त्रे 💹 को । 🚃 परः, एव, गोदक आदि 🔤 व्याकर 🚃 वेदकर 🚃 करे—'भगवन् । आएके अनुवन्धरे मेर वर्ष सुक्रपूर्वक व्यतीत हो<sup>र</sup>।' 📻 🚃 मचाप्रतिः **क्यानको र्यक्ति दे** 

अञ्जेककत्त्रत् सभा करवीरततकः।

भगवान् श्रीकृष्यमे वस्त — महस्तव ! क्रांकिन मासकी सुद्ध प्रतिपदाको गन्य, पुण, सुव, दीव, स्थायानको तथा परुठ, नारिकेट, अनार, रुद्धु काट अनेक व्याप्त मनोरम परुठकोसे युक्त कालेक वृक्तक पूजन करनेसे कोट नहीं होता । अशोक वृक्तकी निवस्तिकार पन्तसे

और उसी दिनसे आरम्भ कर क्रिकेट नित्य करानसे

अंशंकृत करें। इस 🗯 🖫 या पुरुष इस सम्बेह 🚟

प्रार्थना करे और उसे अर्घ्य प्रदान करे—

विद्वप्रात्वक्षिश्रश्रस्याको तथैल भा

उत्तन कल बात करते हैं। भूत, प्रेरा, पिराम, माल काकिनी और समु उसके मस्त्रकों जिलक देखते ही धाम करे होते हैं। इस सम्बन्धों में एक इसकार करता है—पूर्व कालमें स्ट्रामन कमके एक राजा थे और विवरतेन्द्रा जामकी सरकत सारकारण उनकी कर्म भी। उसीने सर्वप्रथम बाह्यजोंसे संबद्धपर्युक्त इस जलको बहुन किया था। इसके प्रमावसे स्थान अवस्था स्थित स्थान किया था। इसके प्रमावसे

अन्द अह हुआ। वह रानी सदा संवरस्थात आ और निल ही महाक्रमें दिलक लगाती। वो साम देश मिला हु महाक्रमें उसके आ आहा, वह इसके तिलक्ष्में देशकर पराशृत-स्त हो जाता। कुछ सम्पन्ने बाद एक्ष्मों उन्याद इस्पेने मह झाला और उनका बातक पी

वर्गराजके व्याप्त (यमदूर) उन्हें लेनेके लिये आये। उन्हेंने देखा कि मुस्ता क्या विकरणा रान्ते व्याप्त की है। विकरों ही वे उत्तरे सीट गये। यमदूरीके वर्ल आनेपर व्याप्त अपने पुत्रके अप काथ हो गया और पूर्वकर्मानुसार शुभ योगोका उपयोग्द करने रूपा। महाराज | इस परम उत्तम

त्रतका पूर्वकारको भगवान् शंकाने भुते उपरेश किया था और इसने स्थान सुमान । स्थानिकायतः समात दुःगोको इसनेकारक है। इस स्थान स्थानकपूर्वक स्थान है, स्था विस्तारकपर्वतः संसारका सुमा भोगकर अन्तमे सहारोकको

प्रकृतिक है। (अध्यक्ष ८)

क्रिक्कमचे व्यक्ति नः कुले ॥ (कार्ल र १४)

'अञ्चोककृष ! साम मेरे कुलमें पिता, भाई, परि, सास सम्बद्ध समार करें।'

वक्षते अञ्चेक-वृक्षको 🔤 कर पत्तकओसे अर्लकृत करे । इस करको चर्द 🕶 भक्तपूर्वक करे तो वह दमधनी,

विद्यात और सतीनी <mark>असि अपने परिवर्ध करि प्रिय हो</mark>

जाती है। यनगमनके समय सीताने भी मार्गमें अक्षेक कुमका अस्तिपूर्वक गन्य, पूर्व, धूव, दीव, नैवेच, सार्च, 🚃 आदिसे पूजन किया और प्रदक्षिण कर बनको गर्ने। 🖫 📰

तिल, असत, गेहैं, सर्वप आदिसे अपोकका पूजन कर मन्त्रसे करना और प्रदक्षिणा कर बाहरूको दक्किन देती है, वह

शोकम्सः होकर अयमे सुर्वोका उपयोगका अनामे भौते-लोकमे स्थाल करा 🛊 । यह अशोकदात सब प्रकारके प्रकेष और रोपको हरनेवाला है।

महाराज । इसी जनस्य क्येष्ठ प्रास्तमी स्टब्स जॉरास्टाको सुर्वेदियके समय अस्त्यन मनोहर 🎹 📰 हर करवीर-वृक्तका पुजन करे। 📖 सूत्रसे वृक्तको 🚃 कर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैनेश, सत्रप्रान्य, व्यक्तिक, व्यक्ति और भॉति-भॉतिके फलेसे पूजन 📰 इस समाने 🚟 धार्थना करे-

सरवीर विवासका नवको पानुकारकः।

#### ----को किरशासका

राजा मुसिद्धिरने पुरुष— मन्त्रन्त् । 📖 🕬 🕬 कुलीन विकित्स अपने पतिके स्तथ परस्य विश्वन्त हेन 📖 रहे. हमे अवप कतलक्ष्मे ।

भगवान् जीकृतम् कोले--- महाराज । यमुक्तके स्टबर मधुर नामक एक सुन्दर नगरी है। वहाँ औरमनवन्द्रवीने असमे भाई शहासको 🚟 पदपर अतिहित किया था। 🖼 रानीका नाम कीर्तिकरूप था। 📰 कहे 📟 🐠 📟 दिन अपने कुरुपुर, चौराहमुनिसे प्रचानकर पुरा—'पुनिशेष्ठ ! 📖 पुरो कोई ऐसा 📖 कराने, 📖 मेरे असप्त सीमाणकी वृद्धि हो (

वसिष्ठजीने कहा---वीर्तियारे ! करकन कारिनी 📰 आवाद भारतमे पूर्णिकको सार्वकाल वह संबद्धन को 🔣 'शावण मासमर निस्प-स्नान, रात्रि-पोजन और मुधि-ऋपर करोगी तथा बहाबर्वसे रहेगी और खणियोंक दख करीयों।' प्रतः उठकर सब सामधी लेकर नदी, तालाव अस्टिकर बाव । यहाँ दल्तधावन 💷 सुगन्धित इच्च, तिल और ऑक्लेबर

उमदन लगाये और विधिसे स्थल करे। इस प्रकार 🚃

जनको 👚 केजकेशमोः ॥ चेरिक्कासम्बद्धाः (उसस्पर्व १० (४)

'भगवान् विष्णु और इंकरके पुकुटपर रजके रूपमें सुक्षेत्रित, भगवान् सुर्वक अस्यन्त विच तथा विचके आवास करबीर (जहर कनेर) ! उन्नयको बार-बार नगरहार है।" इसी तदा 🔤 बुल्केन स्वस्त वर्तनानी निवेशपत्रमुखे

🔤 व ( हिरक्केन श्लीका स्थेन हेरो 🔤 मुक्तानि क्रकर् ॥ (क्ष्यू- ३३।४३)' इस मनारे प्रार्थना कर माञ्चलको द्वित्या दे एवं वृक्तको प्रदक्तिया कर परको 🚥 मुन्दिक्को प्रसन्धको सिन्ने इस बतको अरूकती, सानिती, सरमधी, पत्रको, 🊃 दमवसी, अनसूक और सरप्रधान **ा प्रकार का अन्य क्रियोने भी स्था** है। इस

करवीरमञ्जूषे को प्रतिस्तृतिक 🚃 है, यह अनेक प्रकारके

सुवा भोग कर अन्तमे सुर्यत्येकको जाता है। (अभवाग ९-१०)

### 🖷 और महास्य

विकास कार को । अनगर क्वीनविक्षेत्रक उपटन लाहकर बाह दिवाक कान करे । तेन दिनोंने ककार उपहन मलकर कार करे । क्ट्रक्कर सूर्यभगवानुका ध्यान करे । इसके बाद रिक्त 🔚 🚃 इससे कोफिल्ड 🚃 मूर्ति बनाये। ······· चन्त्रके पूज, पत्र, युप, दोप, वैवेदा, तिल, चानल, तूर्व 🚃 🚃 पूजनकर 📰 मन्क्से प्रार्थना करे— विरूपियो विरूपियो ।

(क्वारणी १६ (१४)) फिलमारे क्षेत्रिका देवि ! अपन क्षित्रके ......

सीमान्यान्यपुर्वता हेहि ने व्यक्तित नगः॥

कुम्बर्गवाली है। अध्यक्षे विरुत्ते हुए। अस होता 🛙 तथा अक्से तर जाता 🔣 है। आप मुत्रे सीमाय, सम्पत्ति क्या पुत्र प्रदान करें। जिल्ली नगरकार है।"

—हस प्रकट पुत्रन कर कामें आकर कोशन अहण करें। इस 🚃 📺 पास वतकर बन्तमें तिल्लिक्की क्वेंकिला बनाकर उसमें रावके नेत्र और सुक्रमीक पंचा लगाकर साम्रपायमें

को। दक्षिणसहित का, धन्य और गृह ससूर,

दैवप्र, पुरेशित अथवा किसी सद्भाजको द्वान करे ।

विधिसे जो नारी कोकित्सकत करती है, pp सात जनतक सीमान्यवती रहती 🖁 और अन्तने हता 🔚 बैदकर गौरीलोकको 📰 है। वसिक्वको अवका 📰

सुनकर क्वेतिमालने इंसी 🚃 ब्वेजिलखतका अनुहान

वृहत्त्रपोत्रतका विवान और करा 🔤 🚃 कर 📗 उसकी पुजाकर विधिपूर्वक हमने

मनवान् औकृष्ण कोले—महरूव ! उस मैं सभी पर्योक्त नाइक 🚥 सुर, असुर और मुस्लिके 🔤 पी 🚃 पूर्तम बुवसरोग्रसका विभाग बारका 🐧 📖 स्तें—आधिन यसकी पूर्णियके दिन अध्यक्तिकृति दपवासकर रातने भृतिर्वितत पायसका भोजन करना च्यहिते। ट्सरे दिन प्रातः उठकर परित्र हो आजमनकर विरुक्तक वजासे दलपान को। 🚃 ३४ क्यमें 🚃 🚟 कानी चारिये-

अहं वेपालस्थि सार्वित्यक्षानि रुवाक्षमा महादेव 📧 NO. II (VLES) TRANS

'अहादेव । मैं 🚃 🚃 🚃 कृतक्षेत्रत करन 🚃 है। जिस प्रकार नेत वह 📰 🚟 पूर्व 🛭 🚃

**ा वैसी क्या करे** ('

नियमपूर्वक सोल्ह वर्वपर्वत प्रतिकट्का ३० करत चाहिये। फिर आगैशीर्व 🚃 प्रतिपद्मको उत्तक्ता 🚃 गुरुवनोसे आदेश जात भरके महादेशका समान 🔤 📺 भक्तिपूर्वक दिवका पूजन 🚃 चाहिने और राजने दीका जलाकर शिवको निवेदित करना चाहिने। व्यापनाः समानेक सोलत् ऋष्वणोक्ये निवन्तित कर बन्धा, आपूरण आदिसे पूजन भोजन कराये पा उस्तर दन्यतिको कोजन कश्रये। यदि प्रतिक न हो तो एक 📕 दम्परियम पूजन करे। 🊃 🚃 करके राजमें भूमियर पायन करना चाहिये। स्वॉटन होनेकर करके सभी सामधियोंको लेकर दिवाबीका व्यर्तन एवं पद्मगञ्जसे स्थान 🚃 साहिये। अनगाः पद्मगुरु, तिसमिश्रित 🚃 और गर्म जरूसे 🚃 🚃 व्यक्तिये ।

स्त्रानके अनुसार कर्पूर, क्ट्न आदिका लेक्कर 🚃 🚃 उत्तम पुट्य चड्राने चाहिने । कहा, प्रशास्त्र, मिठान, कूप, दीप,

धारा एवं भारत-भारतके नेवेश महादेवनाको समर्थित कर

किया । उससे उन्हें अक्षण्ड सीचान्य, पुत्र, सुक्ष-समृद्धि और ऋक्रामोको कृषा एवं 🔣 यह छुँ । अन्य भी जो क्रियाँ इस वतको परित्पूर्वक काती 🛮 उन्हें 🔳 सुन, सीमाप्य आदिकी

(अध्याप ११)

करत 🚟 👚 🚃 🚾 मान्यपं अवद्यिको योजन कराकर अपने सची कम्ओक साथ मीन 📟 योजन 🚃 🛲 । एक सर्व, 🛌 अबंद देकर **ार्था** स्था की। धनकान् व्यक्ति श्रद्धापूर्वक साहोपाङ्ग 🚃 🚟 पुत्रन भरे 🕎 यदि कोई 🚃 निर्धन हो 🖥 बह सद्धार्कक जल, एक आदिसे पूज करे। इसमे ततके सन्तर्क 🚃 🚃 है। बद्धके साथ कार्रिककी प्रतिकार को व्यक्ति प्रतिकार 📺 निर्मिक्षे तत 🚥 प्रतिके । 🚃 🚃 कामे चाहिये । सोएको 🚟 पारणांके दिन पुन्न कर 💹 💹 जुर और घण्डा, विकार पार्ट का उत्तम गाय महादेवनीके निर्मित रिकायक व्यवस्थिको देनी भाष्टिये । अनगर ओल्ड माहायोका पष्पाति वस, आयुक्त आदिसे पुरानकाः 🚃 पद्मश्रीका भोजन कराना महिने । मधारातिः व्यक्तभ-योजन करहकर दक्षिण है। होती, 📖, अनाथी 🚟 🔣 चोकन 🚃 क्षत्र देश पहिने। यह कुरुक्तेलन स्वयुक्तक-जैसे पानेका हरण और तीने लेखेंनेने अनेक प्रकारके उत्तम भोगोको प्रदान करनेवास्त्र है। चारी क्लोंके 📖 🚃 सर्वको सोही है। यन प्रकर भी जो इस 🔤 🔛 करता, बह मुद-बुद्धि है। 🚃 🔣 वदि इसे करती 📗 तो अस्का परिसे वियोग 🔝 होता और वियया 🚃 🗃 चकिन्त्रमें वैषयम् न प्राप्त हो, इसल्टिमे उसे 🚃 ज़रू करण चाहिये । 📷 कराके अनुद्वानसे घन, आयु, रूप, सीपाण 🚃 📻 होती है। सभी सी-पुरुष इस वतको 🚃 📰 है। स्रोतन्ह 🚃 🚃 बृहत्तपोळतका पत्तिपूर्वक अनुक्रम कर असे सूर्यमकलका भेदनकर दिवाजीके चरणोंको मान करता है। (अध्वाय (२)

# जातिसर<sup>्</sup>ष्णक्रकका फल और विकास तथा

### त्वर्णहीवीकी

महाराज सुविवितने पूका—मगवन्! अपने पूर्व-यन्त्रीयर अन होता बहुत काठन है। तथा यह काठने वि अधियोंके कादान, देवकाओंकी अध्ययना या खेर्च, सान, होस, जय, तथ, तत आदिके विशेषी पूर्वजन्मका अन मात हो सम्बद्धाः वा गहीं? बदि ऐसा कोई अत है, विशेषी विशेषी पूर्वजन्मका स्मरण हो सकता है तो आप उसका कर्वन भेरे। भगवान् औष्ट्राञ्चने कहा—स्वयन् एक हो 'मार्गशीर्व, परस्पृत, ज्येह एके विशेषी कमारः वा पर पूर्वजन्मका स्मरण हो जाता है। इस विश्वनने एक आवसार है, इसे आप सूने—

मानीमं काराने वशुराके कियारे मुख्येयन जमाना क्र वैदय रहता था। यह इस मानको कारा यान व्यवस्थानको वह पृत्युको हात हुआ और मारके प्रधानको यह दूसरे जन्मने राजा संस्थाक पुत-कथाने सामा पुत्रा, उसका नाम था स्थानको उसे पूर्वजनका कारान था। युक्त दिने बाद केरीने हैंसे बार इसका और नारव्योके प्रधानको यह श्रीविश को गाना। इस असके प्रधानके अपने इस सामा मुख्याकोको यह स्थानक

राजाने पूंडा---उसका सर्वतीयी सब केने का ? और चोरीने इसे की गार कारत है तथा किस उनकी का स्थान ए.स., इसका विस्तारपूर्वक धर्मन करें ?

भागान् श्रीकृष्याने कहा—श्राप्ता था। एक दिन नामको नगरीमें संजय स्थाप स्थाप राजा था। एक दिन नास्ट और पर्वत नामके दो मृति क्याके पास आगे। वे दोनों एकके विशे थे। एकाने अर्थ्य-एक, अस्मादि स्थाप उनका पूजन तथा सरकार किया। उसी सम्था एकाको अस्मान सुन्दरी एअकन्य वहाँ आयो। पर्वतमृतिने उसे देसकर केंद्रिय हो एकारे पूछा—'एजन्! यह पुक्को कीन है ?' एकाने कहा— 'मुने ! या मेरी कत्या है !' नरदाकी कहा—
'स्वस् ! ■ अपनी इस कत्याको मुद्दे दे ॥ और आप जो
दुर्कंप कर पॉक्स खहते हो, ■ मुद्दारे मॉग हो ! सकते
हस्त ब्यान- 'देक्टें ! ■ मुद्दे एक ऐसा च दे यो
विसा स्वान्ते मूश-पूरीव ■ ■ (धूक, बाबार) का
चो, या ■ असम सुवर्व ■ बाव !' ■ वोलेचेता चो होगा !

भापूनको अर्रकृतकर अस्त्योहे उसका विवाह 📖 दिया।

इस 📖 देशकर वर्गलगुनके ओढ 🚃

च्युकाने रहने, अपेंचे काल विकास की विकास की स्थाप की किया कार पूर्व मेरे च्यादर ! तुमने इसके स्थथ काल काल रिकास कार पूर्व मेरे काल करने किया स्थितिक काल दिया है, काल पूर्व की कोरेडाय

म्बद्ध व्याप्ता । व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता । तुम वर्षको साने विका शुक्ते इत्तम दे व्याप्ते । व्याप्ता है, इसमर व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता है है,

है, ह्यापा तुल हा सामित हा वा सबनेने। हात संजयके पुरुषे चेटेंक्ट कर करूं जानेयर भी हैं हा वमलेकसे के सब्देगा।

हम जन्मर परसर स्वय देकर और एवा संवयके 100

च्या होकर देने भूति अपने-अपने आश्रमकी ओर चले को । करनकर सकते व्यक्तिये एकको ह्या करपस मुआ । व्यक्तियो समान असिक्स कपकान् और पूर्वजन्मोका असा चा। करद्वीके करहानसे जिस स्वानपर ह्या मूत्र-पुरीष आदिका चरित्राण करता, वहाँ ह्या सुवर्ण हो जाता, इसलिये कराने उसका ह्या स्वर्णहीयी रका। यह राजपुत्र सभी

बहुत चन प्राप्तकर राजसूच आदि यहोका विधिन्तक सम्बद्धन किया । उसने अनेक कृष, सरोकर, देखलको आदिका निर्माण

कारम । फुक्की रक्षाके लिये निवस्त सेना भी निपुक्त कर दी।

क्वांद्वीयोके प्रभावसे राज संक्रके वहाँ स्वर्गकी

सारी राजियाँ एकत्र हो गर्यो । कुछ समक्के कद उनकुरू अस्यन क्रांत्र सुनकर खोपलस मदोद्धत केरीने सर्वहीयीका

अस्यन्त्र व्याप्ति सुनकर राज्यकास प्रदेशक करन सम्बद्धानामा इरण कर रित्या, परंतु कव उसके शरीरमें कहीं भी सोना नहीं

देखा, तथ चोरोने दल मास्कर जंगरामें फेक दिया। व्यास्ता पुत्रके मारे आनेपर राजा बहुत दुःबी हो विस्तान करने राजा।

उस समय नारदवी वहाँ पुतः पच्चरे । नास्त्रकीने अनेक प्राचीन एक्सओको गाथाएँ सुनकर राजके स्थापना दूर किया जिल

एकाओको नाथाएँ सुनावर राजाके विकास दूर किया विश यसकोकमें बाधर ने राजपुत्रको से आये । पुत्रको कारकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने नारवजीसे पूजा—'नारायन !

क्षिस कार्यके प्रभावसे यह मेरा पुत्र कार्यक्रियो हुआ और किस कार्यके प्रभावसे इसको पूर्वजन्मक स्थरण है ?' कार्यके

कहा---'राजन् । इसमे 'नह' नामक तराको विकिन्नीक कार बार किया है। 📰 उसीका प्रकल है।' इसमा कारकर कारकी

अपने आध्यको पटे गये। भगवान् श्रीकृष्ण चोले—म्बाराज । इस सामा

कारोसे वर्ताका उत्तम कुरूमें जन्म होता है 📶 वह क्ष्म्बन् तथा पूर्वजनका 📖 एवं दीवाँथु होता है। अब अब्ब इस

तथा पूर्वजनस्था 🔤 एवं दावासु स्था है। सम्ब आग इस हिं। वार्गदर्भिय पहल, काल्युसमें दूसरा, स्पेहमें तीसक 🚟

भारपदमे चौचा पाद होता है। आगंदिन शुक्त आदि कीन कर्त 'विक्युपद' नामक पाद सभी क्योंका साधक है। पारणुन शुक्त आदि तीन मास 'तिपुर्वार' सामा चालन है और यह तर

अग्रेस अग्रेस अस्ति अस्ति

बहुत विद्या देनेवाला है । सभी की-पुरुषेको इस च्या-बर्का करना चाहिये ।

राज्य सुविक्षिरने पूक्षा—जगरको ! इन पर्छेका 🎟

त्राचा सुप्ताहरन पूछा—जनस्य : इन मह व्याप्त विस्तारपूर्वक कहें।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले—महातन । इष्ट गुरु विभानको मैंने किसीसे नहीं बदा है, आपको मैं सुनना अस्य कार्या होकर सुनें—

व्यक्तिये क्या सुद्ध पक्षकी प्रशिक्षक चार विविधी

म्बर्ग स्था है। ये तिकर्ण है—हितीया, तृतीया, क्युमी और प्राप्ती। वर्तको प्रतिपदाके दिन विवेदित्य होकर

एकपुक्त व्यक्ति । प्रतन्त्रारूमें द्वितीय

विकास के संबंधित के सम्बद्धित स्वापित स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्व

लगकर लग करना चाहिये। इन मन्त्रीके
 कर्व है, किनु वर्णमंक्त्रीको इनका अधिकार

नहीं है क्रिक्स कि बहि सदाकारसम्पन ही तो वह भी इस क्रिक्सिशियों है। समया की अपने प्रतिको आहासे यह

सर प्रथम करे। इसीरचें निद्यी-लेपन करनेका सन्त्र इस इकार है—

म्बर्ग स्था देवैः समर्थितवासियः॥ स्थानसम्बद्धाः स्थानो विमर्थः क्रुष्टः॥

(कारार्थ १५ । ६५-६६) 'मृतिके ! व्यक्तिक व्यक्तिक देवताओंके

पुरा अस्य व्यक्ति है, मैं भी चतित्वकृषेक आवनी वन्दना करता है, पुढ़ों भी अन्य पावन बना दें।"

अनन्तर करूके अम्युक्त कावर सकेद शरसी, कृष्ण तिल,

विकास पहने चाहिये—
 स्वयादिः
 स्वयादिः
 स्वयादिः
 स्वयादिः

मुक्ता चार्च प्रशास काने नमः । न्यूक्तकरतं शेषं वैकारं नार्थः तथा। व्यक्तं चार्च ॥ संनिधाननिकृतन् वै॥

व्यक्ते व्यक्तिकाननिवासम् में (( (शास्त्रवं १३ (६८-६९)

के भाग क्यांना कानकर सुना वस पहन, संच्या और तर्पण करे। किए को अस्वय नियमपूर्वक रहे और चन्होदय-श्रांक

इसी असर आदि तिथियोमें कृष्ण, अच्युत, अनुस्त और इच्छेक्स—इन नामेंसे पत्तिपूर्वक मगवान्त्य

को । पहले दिन भगवान्के चरणातिन्दोका, दूसरे दिन वापका, तीसरे दिन कक्ष:स्वरूका और चौचे दिन भागवणके

मसायामा विशिष्कृर्वक उत्तम पुग्प, पूप, दीप, नैवेध आदिसे पूचन करे और व्यक्ति व्यक्तिस्य हो, व्या दिना, चन्त्र, राससू तथा इन्दु—इन नामेंसे क्रमपः चन्द्रन, अगर, कर्पूर, दक्षि, दूर्वा, असत तथा सनेक रखे, पुणी एवं पत्त्वे आदिसे चन्द्रमाको अर्घ्य दे। प्रत्येक दिन जैसे-जैसे चन्द्रमको वृद्धि से वैसे-जैसे अर्घ्यमें भी वृद्धि करनी चाहिये। अर्घ्य इस मन्त्रसे देना चाहिये—

नवी नवोऽसि वास्त्रमे व्यवस्थाः कुः कुः । विरक्षित्रमधेनाम् वै देशानस्थायके पृतिः ॥ शरानाकृषासदीय कुम्माधिकारकेदाव । सामाहितविशाणीय रचानुक क्योऽस्तु वे ॥ (सामाहितविशाणीय रचानुक क्योऽस्तु वे ॥

'हे रमम्ब ! आर प्रतेष करने असने स्वीन-स्वीन ह्यारे अविश्वंत विकास है। विकास सम्बन्ध देवताओंको अद्य हैं इतिकांत हुत अप्याधित करने हैं। आपको उत्पत्ति सीरसायरके मन्धनसे हुई है। आरकी आपको ही दिशा-बिदिहार्य आयामिक होती है। गणनकरी विकास अव सरसकरी हेवीयमान दीवार है। अवस्थे समस्तर हैं

श्रामुमाको अर्थ्य निवेदित कर वह अर्थ्य सहागानो है दे । अनुस्तर चौन होकर भूमियर व्यास विकास को । इस्लाम या अद्योकने प्रतिद्वात पाना भूमि या विकास की श्रीधन कर इस सन्दर्भ भूमिको आर्थन करनी चाहिये—

ात्री योजुन्नसमोद्धं देवि सर्वस्तरेताने ॥ मानुष्याय सुरक्षारं सुर्वस्तरमृतीयसम्

शास्त्र १६। १०-११) 'सम्पूर्ण मार्गिकाली हे मृत्यो देखि ! अस्पर्क

आक्रमये में घोजन करना 🚃 है। मुहत्पर अनुन्द 🚃

भगवान् हीकृष्ण बोसे— एवन् ! व्यास्त मासके गुरू पक्षणी दितीया तिकियो समुनाने अपने वर अपने व्यासको मोजन कराया और पमकोकमें सद्या उत्तव हुन्छ, इसिक्ये इस विविकत नाम पम्बद्धितीया है। अतः इस दिन भाईको अपने घर मोजन न कर बहिनके पर बाकर प्रेमपूर्वक उसके झधका बना हुट्या पोजन करना चाहिये। उससे बस्ट और पृष्टिकी पृद्धि होती है। इसके बदले बहिनको

सर्जालकार, वस तथा द्रवर आदिसे संतृष्ट करून चालि।

क्रिये अन्य 🔤 अञ्चलके सम्भाग उत्तम स्वयपुक्त वर्षा है।"

अस्तर इस्के तथा प्रकारका योजन करे। योजनके बाद अस्तरम को और असुरेका स्पर्श कर कदमाका साम करते हुए भूमिपर ही साला करे। द्वितीयके स्था यह एवं स्थानवित हरिक्यका योजन करना कहिने। वृतीयको नीवार (तिसी) तथा कर्नुकीयो सामि दृष्टि को साम प्रदार्थिको साम करना कहिये। प्रकारित पृक्तुला कृतराम (सिन्द्रि)) अस्त करना कहिये। इस महावत्ये स्वर्ता, वावल, गामका कृत क्या अन्य भवा पदार्थ एवं अस्तिका अस बन्य पाल प्रकार क्यो को है। अस्तर प्रतःकाल कारकर पितरोका स्थार किए साम क्योंको। स्था पृत्य एवं मन्युकनेकि साम

इस प्रकार सैन-सीन महोनेंसक कार पत-वर्तीका सी कांकांक श्रीत्वपूर्वक प्रपादरहित होतर अवधरण करता है, उसे कन्नदेश काल की भी, विजय आदि प्रदान करते हैं। जो कन्क इस प्रवासका अनुहान करती है, वह सुप्त परिको मात करती है। दुर्चना की शुभाग एवं स्थान्ते हो जाती है तथा नित्य कारती है। दुर्चना की शुभाग एवं स्थान्ते हो जाती है तथा नित्य कुलने किवाह होता है। एन पाइनक्ति वर्शनेस सर्वया उत्तम कुलने किवाह होता है तथा यह उत्तम सच्या, अस, यान, अवसन कारते हुन पदार्थीको सात करती है तथा पुरुष चन, पुत्र, स्वीके स्थान ही पूर्वजन्यके सानको भी सात कर तैसा है। (अन्ध्याय १३)

यमश्रितीया 🚃 अञ्चून्यसंधन-क्रान्की 🚃

परि अपनी सामि न हो तो जिल्हा करता, मानको पुने, जिल्हा वृक्षको बेटी—मे मी बहिनके वृक्षको बेटिनके सामको बोनन करे। जिल्हा स्मारितीयको बहिनके सामको भोजन साम जिल्हा है। यह, सामुख्य, धर्म, अर्थ जिल्हा अपनियंत सुकाको प्राप्ति होती है। गुजा बुधिहिरने पूजर—भगवन् ! आपने बताया जिल्हा

🚃 बर्केक सावन गृहस्वक्षम है, यह गृहस्वक्षम स्त्री और

पुरुषसे ही प्रतिष्ठित होता है। प्रशोहीन पुरुष और पुरुषहीन नहीं। धर्म आदि साधन सध्यत्र करनेने समर्थ नहीं होते, इसिएने आप कोई ऐसा 📰 बताये जिसके अनुद्वारसे दान्यतका वियोगन हो।

भगवान् श्रीकृत्या चेले---महरावः! तका 📖 कृष्ण पश्चमी 🚃 अञ्चलका नामक तर 📆 है। इसके करनेसे की विश्वक नहीं होती और पूछन क्योसे हीन नहीं होता। इस तिथिको 🌉 भगवान् विम्युका प्रध्यापर अनेक उपचारोद्धरा कुम्न 🚃 च्योवे । 🗱 🛒 उपवास, नक्तवत अचना अक्षरित-वत करना व्यक्ति । व्यक्ते दिन दरी, असत, कद-पूर, फल, पूर्ण, बल आदि सुवर्गक टेन चाहिये --

हुव्यक्तिप्रकानोद्धने । The party of व्यवस्थानिकाचेच स्थानुत नमेऽस्तु हे॥ (क्लापर्व १५) १८)

इस विवासके साथ जो व्यक्ति चार मासतक वत करती है, उसको कभी भी भी-वियोग प्राप्त नहीं होता एवं उसे सभी 🚃 🚾 ऐक्वर्ग प्राप्त क्षेत्र 🕻 । जो 📰 भ्रतिव्यूर्वक इस मतको 📖 🐈 बह रोग जनका विषया और दुर्पगा-नहीं होती। 🚃 अञ्चन-दिर्शाणका 🖿 सभी कामनाओं और उत्तम

🚃 देनेकस्य थे, 🚃 इसे 🚃 🗪 व्यक्ति थे। (अध्यक्ष १४-१५)

पत्रमें रक्तकर निव्यवस्था पहले हुए स्टब्सको 🔤 ध्यक्षत्रतीया एवं व्यासी सुरीया-प्रत

सुविद्वित्वे युक्त---चनकर्। शक्क-वृक्तक अस्तर प्रहण करनेवारी मगवान् व्यास्त्र पार्थः व्यास शैर्धक लक्ष्मी, सरमाती अवदि देवियोनि किस कारणसे अर्थना की, हमे अवप असाये।

भगवान् श्रीकृष्ण केले-प्राचन 📖 सन्तर-मन्यनसे मधुक-वृक्ष हिमा । सीभाष्य प्राप्त विकास तथा सभी विकास दूर करनेवाले इस वृक्तको पूर्णकवासियने पूर्वकोका स्थापित विस्ता । अवस्था अहरि स्वीक्रमेस्टित वर्णन्ती 🚃 प्रकृतिस्था सुन्दर वृक्षका अवश्रय आहा 🛗 देखका

देवताओंने अपनी अभीष्ट इच्छाओंची पुर्वित्तु 📟 अनेप उपचारोंसे पूजा की। सार्व राज्यी, सरस्की, स्वन्त्री, गहुर, रेहिणी, रम्भा तथा अरूथती आदिने भी किनकपूर्वक पूजा की । भगवती पौरीने प्रसन्न होबल उन्हें आधियत करू प्रदान बीवान पर्रात्मान मासके शुक्ष पश्चकी तृतीया तिथिको इनकी उपसन्त हाँ थी। इसलिये कारणुलके दक्क प्रकारी तृहीया शिक्तिको · स्थापनमें अकर मसूक कृशके नीचे सहस्रकी

स्थित, जटामुकुटसे युद्रोधीयत, तपस्यात तथा गोपाके 📖 आकृद, प्राप्त प्राप्त पर्वतीको प्रतिमान करते हुए गन्ध, पुष्प, दीप, त्याल क्न्द्रन, केझर, मधुर हुब्ब, स्वर्ण, माणिवय आदिसे पुजानत देवीसे इस प्रकार असल्य

िरियो प्रार्थन को 🕶 🔤 पुरित्त देवपूर्ध 🗷 पुरित्या सरिता 🚥

नीरी सीमान्धं ने प्रवसन्तुः।। कैथीयं वे इत्यन्तु सुप्रसानगः सद्। अर्थभावे पूर्ण पान व्यास्थानगरि ॥ (ancel 14 (1-4)

'श्रकेश्वरता है 🎹 🔛 🖟 अवस्था नाम लांकता तथा इन्ह है। 🚃 देवलाओको अवस्थानसम्बद्धाः एवं सभीको अपूरित सरायल 🛮 और 📖 आधुरित है। आप मुझे सैपान्य प्रदान करें। साथ मेरे दौर्यान्यका सत्तन करें। दूसरे क्लावे भी येव सीमान्य अल्लीकत रहे । आप सर्वदा मुक्तमर कारक रहे हैं अन्तर कुल, बीक, लक्ज, गृह, बी, मुख्यमालकी,

कुंकुम, गम, अगर, कदन एवं सिद्द आदि तथा वर्षोसे और अनेक देखोलन अंजनोरी, पूजा, तिल और तम्बुल, पुरुपृतित मोदक हरकार प्राथमित मधुक-वृक्षकी पूजा करे। उसकी प्रदक्षिण कर सहालोको दक्षिणा दे। जो कन्या इस इक्न तृतीयक्वको काती 🖁 यह तीनो 🔙 दुमाप्य पगवान् विष्णुके समान पति जात करती है। राजन् ! मेरे द्वारा

🚃 यह का विस्कारतक प्रसिद्ध रहेगा। इस वतको स्थितकोके सम्बद्ध प्रथम महर्मि कहरायने कहा था। जो सी इस वतका आचरण करेगी, वह नीरोग सुन्दर दृष्टिसन्यव तका अमृ-प्रत्यमुरेसे शोषायुक्त होकर सी वर्षोतक प्रीवित रहेगो। **व्याप्त विश्वकारिक सन्दोसे व्याप्त इसकार्स उद्दर्शकार्यः** प्राप्त करेगी। वहाँ अनेक वर्षेत्रक अपने परिके साथ दिव्य भोगोको प्राप्त कर जाठो सिद्धियोसे समन्वित होगी।

चुपिहिस्ने पूछा—भगवन् ! मेशवर्श-तत कम और कैसे अनुद्रित होता है, इसका क्या फल है तक नेकवली लग कैसी होती है ? इसे चतलानेको कुश करे ।

भगवान् जीकृष्य बोले—आंधन पाउप कृष्य-तृतीय तिथिको भक्तिपूर्वक कियो अथवा पूर्णको सद्धर्मकी जातिके रिव्ये केन्यरकेको सारामा (क्य गोषूय, बान, तिल, कंगु, ........... (सार्व) तवा चना) और अंकृरित गोव्यके साथ अन्यत तिल-उन्युक्तके विक्टोहरू अर्थ्य प्रदान काल चाहिये । मेनचली सम्बुलने सम्बन पत्ती-वाली, मंबरीयुक्त एक लाल लता है, यह धारियाओंने, सम्ब मार्गमें होती है तथा पर्वतीयर करू होती है। व्याप्तरते जिल्ला विज्ञानेवाले वैद्ययम् वान्य, तेल, गृह, कुंक्न, रूर्ल, तथा पद (जुता, छता, कपदा, अगुठी, कमजाल, आसन, अर्तन और पोज्य करत्) आदिसे इसकी पूजा करते हैं। मेघपालीके · अने अनुबाने को भी प्रय होते है वे नष्ट हो जाते 🕯 । बेह किथेकी शुप्त देश या स्थानमें उत्पन्न मेनपालीकी कल, गम, पूच, असत, नर्रकेल, सजुर, अन्तर, बलेर, 🊃 दोव, दही और नवे अंकृतवाले कान्य-समृहसे पूजा करनी 📖 वर्ष रक्त 쨰 उसे आफादित कर और समीरसे विष्युवित कर अर्ध्य देना चाहिये । 📖 आर्थ्य विद्वान् बाह्यणको स्पर्वन 🚾 देश चलिये। इस प्रकार 📟 📟 पुना 🚃 📰 को क पुरुष परम ऐसर्पको प्राप्त करते 🖩 तथा सुक-लेजायसे स्थापन है हैं। स्थाप पर्यक्तेकमें जीवित रहते हैं। अंशने विद्यानक अस्त्य हो विज्युल्वेसको प्राप्त करते हैं और अपने सात कुलोंको निःसंदेष्ट नरफर्स 🕮 पहुँचा देते 🕯 । 🖫 💹 अपने फरमदिसे समन्दित अर्घ्य नेपपालीको कड़न बतक है, 🚟 📨 🖦 🖼 🗷 यह 🗈 वाले हैं<sup>1</sup> कैसे शुकीर प्राप्त अञ्चलका नष्ट हो ज्याता है। (अस्याम १६-१७)

# पञ्चाप्रिसाधन नामक रम्ब-दुर्तीया 📖

### ग्तेच्यर्-तृतीयाञ्चत

युधियोको पूजा—भगवन् ! इस मृत्यूलोकारे ह्यात प्रतके द्वारा जिलेका गुरुसाक्षय मुख्य-रूपसे पहें और उन्हें पतिकाँ भी भीति आम हो, उसे सतदाये।

धगवान् औकृष्यने बहुर-एक समय 📺 लताओंसे आच्छम, विविध पूर्वोसे मुत्रोपित, मृति 🛅 किजरोसे सेवित नदा गान और नुन्यसे परिपूर्ण स्थलीन कैलास-दिवस्पर मुनियो और टेवलओमे अम्बन म 📟 और मगवान् शिव बैठे हुए ये। उस समय मणवान् अवश्ने पार्वतीसे पुष्टा—'सुन्दरि ! तुपने कीन-सा ऐसा उत्तम इत किया 🔳 जिससे आज तुम मेरी वामानुष्टिक रूपमे उन्हरून प्रिय 🚃 एवी हो ?"

धार्वतीजी बोर्ली — नाथ ! मैंने बारफ-कारफी रम्बाका किया था, उसीके फलस्करप आप मुझे पविरूपने प्राप्त हुए है

🊃 वे रहते विक्रेश 🚃 तथा 🚃 अर्थापुर्व भी 🚃 गमी है।

चनवान् इंस्करने पुटा-- धहे ! मधीको सौतय प्रदान कर्तनेकान्य शह राजावन केसे किया जाता है है पिताके यहाँ इसे कुपने किया 🚃 अनुधित किया था ? उसे बताओं ।

**बोली**—देव ! एक **बा**र्व में बाल्यकालये अपने विकास पर विकास मध्ये मेठी थी. उस समय मेरे विका हिम्बरन् तथा माता मेनाने मुझसे बहा—'पृत्रि ! हम सुन्दर तथा स्वीपान्यवर्षक 📖 अनुद्यान करो, उसके आरम्भ करने हो तुन्हें भीषान्य, एंसर्व 📖 महस्टेवी-पदकी प्राप्ति हो जानको । पुत्रि ! ज्येष्ट 🔤 🚃 🚃 तृतीकाको सान कर इस बनका नियम प्रारण करे और अपने चार्च और पश्चापि क्रम्बन्तित करे अर्कत् पहुँपस्यप्ति, दक्षिणस्ति, आहवनीय तथा

१-इसमें कारवास्त्रा देशक मानवर असकी पूजाको किरीन वाहन 🚥 🚾 📑 है । विशेषकर अन्तर्केट 📖 उसके सुर्वेदे ऐसे 💹 अकरण अपने हैं । ओपविवर्ष देवता 🖩 🗓 विवरते होग, कुन्ना, प्राप-प्राप्तके मान्य-प्रकृष व्यर्थकीय विदेह 🛍 होती है ।

प्रमो ! मैंने माताके द्वारा कारणायी गाँव व्यास्त्र विकास वि

भगवान् श्रीकृष्ण पुनः कोले—कोनेव ! लेक्कुले भी इस रम्भातरके आवरणसे वहस्ति अगस्यको प्रश्न और वे संसारमें पूजित हुई । जो कोई की-पुरुष इस रम्भावनको करेगा, उसके कुलको पृद्धि होगी । उसे उत्तम संवति सभा सम्पत्ति । विश्वीको अवस्था सीधान्यको स्था सम्पूर्ण व्यवनाओंको सिद्ध करकेवले क्षेष्ठ गाईस्थ-सुवाकी प्राप्ति । असे स्थानको स्था सम्पूर्ण व्यवनाओंको सिद्ध करकेवले क्षेष्ठ गाईस्थ-सुवाकी प्राप्ति । असे स्थानको स्था स्थानको स्था

इस वरावा संविध विचान इस धनार है—वर्तीको एक सुन्दर वन्यान करावर मान्य-पुनादिसे सुनासित तथा असंकृत कराव चारिये। तदनकर मन्यायमे महादेवी कार्यांकी प्रवाहित सर्वादिये विभिंत प्रतिया क्यांका करावी करिये और गम्य, पुन, भूग, दीप तथा अनेक प्रकारके निवेदीसे उनकी पूजा व्यक्तिये। स्था 'सम्युक्त सीधानाहक—और, समुद्रेह, अपूच, पूल, पविश्व निव्याव (सेथ), नवक, स्था तथा हा निवेदित करना करिये। नवकन सन्याद्य सूर्यस्ततक देवीके सम्युक्त बैठा रहे। अनन्तर स्टालीको प्रवाह कर यह मन्त्र करे—

वेदेषु सर्वाताचोषु दिवि सूची वरातले । वृक्षः सूचक व्यक्तः = क्ष्मंचा रवितः क्षिणः ।। त्ये शक्तिस्यं सामा स्वकृत स्व स्ववित्री सरस्वती । पति देक्षि गृहं देवि === देवि नमोऽस्यु ते ।। (अस्पर्व १८ । २३-१४)

'सम्पूर्ण वेदादि वहसोमें, स्वर्गमें तथा पूज्ये आदिने कहीं

भी यह कभी नहीं सुना गया है और न ऐसा देखा ही गया है कि जिल शक्तिरे टॉक्ट हैं। हे पार्वती ! आप ही शक्ति है, आप ही हिंदि सामा पार्ट्स सावित्री और सरस्वती हैं। आप मुझे पति, आप गृह तथा थन प्रदान करें, आपको नमस्त्रर है।' इस प्रकार पुन:-पुन: अन्हें प्रभाग करके देखेंसे श्रमा-

करे । अनुसार स्वयमिक दशसी माह्यणानी सभी

करें । अनुसार स्वयमिक दशसी माह्यणानी सभी

करें । अनुसार करके दान देना चाहिये । सुवासिनी सिम्मेंको

केंग्रेस अनुसार प्रदान करक चाहिये । सुव स्वयम् सभी कार्य

करका कर चाप-वाह्यके हिन्दे श्राय-श्रावंता करे । अगरे दिन

चतुर्वीको साह्यल-दान्दरियोको प्रकृत रहतेसे समन्तित श्रोजन

मान्ति सम्बार चाहिये ।

विश्व । बहुबह महस्ये क्या पहायी दृतिया तथा क्युथीं दिविको प्रतिवर्ग ग्रेम्ब्ट्-सम्बद्ध सर करना चाहिये। स्था अध्या पूजा प्रचम कामसे निवृध होकर अध्यत और पूजागाला, पूप, बहुब, स्था (पीठी) स्था प्रचम पूजा करे। उसके नृप कर दे। क्या तस्य और लवक स्थाद शार बालुओंसे रहित को अधिके द्वारा निवद न किया प्रचा हो उसका चीकन करे। बनकी स्था तथा स्था प्रोक्तिको उनकी शुरुके लिये प्रस्त दे और उन्हें निक्ष प्रचाने अध्ये प्रदान करे—

वाता सहयां होता 🚃 ससादिश्वमञ्जूतस्य गापिः ।

स्थानिकृति कराव का गामनागानदिति विशेष्ट ।।

(地) とりものもりもある

च्या विश्व सरकते गीवी प्रार्थना करे---श्राप्ती में अन्यतः सन्तु मत्त्रो विश्व पृक्षतः । स्वापी विश्व सन्तु गर्मा सम्बे व्यवस्थाः।। (उत्तरका (९ । ७)

पहानीको अनेपारीहर होकर गायक दुध, यही, जानसम्ब पीता, फल उधा दाकका भीवन को । राषि सेयत होकर विकास को । अतःकाल बचादाति स्वर्णीटिसे निर्मित मोष्पद (गायका सुर) माम गुक्से निर्मित गोर्वाम पर्वतकी पूजा कर बाह्यको 'नोबिन्दः अस्वताम्' ऐसा कहकर दान को ।

इस ब्रह्मकं धिक्तपूर्वक करनेवास्त्र व्रती सीपान्य,

रमवण्य, धन, धान्य, यदा, उत्तम संशान आदि सभी पदाचीको भारत करता है । उसका घर, भी और कछकोरी परिपूर्ण रहता है । मृत्युके व्यक् वह दिव्य स्वकार धारणका दिव्यातंत्रकातेसे विज्ञवित हो वियानमें बैठकर सर्वलंक्षक जाता है एवं कानि

दिव्य सी क्योतक निवासकर फिर विष्णुलोकमें जावा है। इस गोष्पद विरायक्षकक कर्ता यौ तथा गोकिन्दकी पूजा करनेवास्त्र और फेरस अवदिका फेजन करते हुए जीवनयापन करनेवाला उत्तम चेल्वेकको ज्ञान करता है। (अध्यक्ष १८-१९)

### हरकाशीवत-कवा

राजाः युधिद्विरने पूजा— मगवन् ! मगवती हरश्चासी-देवी कौन है ? 🚃 पूजन करनेसे स्थिनेक्षे क्या फल 📖 होता 🖁 ? इसका आप वर्णन करे ?

भगवान् अधिकवर कोले—पहायतः ! दव ....... एक कन्यका 📰 धा काली। उनका वर्ष को जेलकमानक समान काला था । उनका विवाद भगवान् शंकरके सरवाहश्रातः विधारके बाद भगवान् शंकर भगवतो सालांक साथ व्यापान पूर्वक रहने लगे । एक समय मगमान् प्रोक्त भगमान् विक्युंक काथ अधने सुरूप मन्द्रपर्ने विराजनात थे। उस समय विस्तर शिवजीने भगवती कालीको बुरुवया और कना- 'डिप्टे ! गौरि । यहाँ आओ ( जिल्लानिक यह अध्यास्य सुनकर भारतसीकी बाहुत हो थे आया और वे यह बखबर कदन बंदने लगी कि 'दिक्जिने मेर्स कृष्णवर्ण टेक्कर परिहास किया है और मुझे गीरी कता है, जल: अप मैं अपनी इस देएको अद्यक्ति प्रकाशिक भार हुँगी।' भगवान् इत्यन्ते उन्हें 🔣 क्लेक करमेरी रोकनेका प्रयक्त किया, परंतु देवीने अपनी देवनी हरित्तवर्णकी कान्ति हरी दुर्वा आदि पासमें स्थापकर 🚃 देहको अग्निमे १९४२ कर दिया और उन्होंने पुनः हिम्सानककी पुत्री-रूपमे भीरी भागसे प्रार्ट्भृत 🚟 जिनकोके कामकृषे निवास किया। इसी दिनसे जगरपुरक श्रीपरावरीका सम 'हरकारकी' हुआ।

महाराज ! माइपर भारके दक्क पक्षकी नृतीया विकित्रो सम प्रकारक नयं चान्य एकप्रकर उनपर अक्तित 💌 चारसं निर्मित भगवारी हरकालीकी मूर्ति स्वापित करे और गन्द, पुरूष, धृप, रीप, मोदक आदि नैजेस हात भाँति-भाँतिक उपकारीके देवीका पुत्रन करे । राष्ट्रिये गीत-नृत्य आदि इत्सनकर जानरण को और देवी राजालीको इस मन्त्रसे प्रकास करे--

हर**कर्प**समूरको । लकरपे डामिये । व्यं अञ्चोत्तरम् यूर्विस्ते अक्तर्येऽस्य वयो नयः॥

(क्रमसर्व २० (२०)

'चमकान् इंत्यरकं कृत्यते उत्पन्न 🖥 अंकरप्रिये ! आप भरत्वम् इत्यरके इत्तरमे लगात करनेवाली है, भगवान् इंकरको भृतिने रिक्त राजेवाली है, मै आपकी जरण है, आप मेरी रक्त करें। आवको बार-बार प्रजान है।

इस प्रकार देवीका पुजनकर प्रातःकारः सुवासिनी किमी बढ़े उत्कारणे मान-मुख्यांट करते तुए, प्रतिमाक्ये परिच जलाञ्चलके समीप के कार्य और इस मन्त्रको पत्रते 🏢 विकारिक करे.—

अविनादित यथा प्रकाश गाव देवि शुरातस्यम् । तियो प्रति पुत्ररागमनाय

(समस्पर्ध २०।१२)

👸 शरकारको देवि ! स्मि प्रांक्तपूर्वक अस्पानी पूजा की है, हं भीर ! आप पुनः आगयनके लिये इस समय देवलोकको धारमान् सरी ।

इस विधिन्ने प्रतिवर्ष, जो भी अधका पुरुष वत करता है, क्द अवंत्रय, दीर्चपृष्य, सीधान्य, एत. पीत, धन, बल, ऐश्वर्य अर्बाट क्रम करता है और सौ वर्षतक संसारका सुख भौगकर क्रिवलंक प्राप्त करता है। सहादेवके अनुप्राहसे वहाँ वीरफर, मरकान्य, प्रातंत्राम विनायक आदि दिविधीके गण 📖 आह्ममें सहते हैं। 📰 भी स्त्री भक्तिपूर्वक यह हरकाली-वत करता है और र्यात्रके समय गीत-वादा-नृत्यसे कानावा कर उत्सव पनातो है, वह अपने पतिको अति प्रिय होती है।

(अरध्याय २०)



## लिकाकुतीया-इतकी विधि

राजा सुधिहिरने कहा—भगवन् ! अब अस्य हादश मासीमें किये उपनेवाले सर्वोक्त वर्णन करे. श्रिमके Ⅷ 🖤 उत्तम फल बार होते हैं. 📖 ही इत्येक मास-वर्गक विश्वन भी बतानेकी कृषा करे।

मगवान् स्रीकृष्ण बोलं—महाराज ! 🚃 🚃 📗 एक प्राचीन कुलान सुनाता 🖠 🚃 सुने—

एक समय देवता, गम्भर्व, यक्ष, किन्नर, सिद्ध, कपली, अदिसे पृथित भगवान् विस्तरमुख्य करवाकात्रातः विराजपान थे । उस समय ...... उपाने विनयपूर्वक भक्तान् सदाविस्थाने प्रार्थना की कि महाराज ! अहर मुझे उत्तम तृतीया-इतके विषयमें बतानेकी कृषा करें, जिसके करनेसे मारीको सीपाच्य, पत, सुक, पूत्र, रूप, सक्ती, दोर्पाच् तथा आरोग्य पात होता है और सर्वको भी प्रती होती है। 📟 यह बात सुनकर भगवान् दिखने इसने हुए कहा -- किये ! सेनी लोकोमें 🌉 कौर-सा पदार्थ है 🏗 तुन्हें दुरूंच है तका जिसको प्रक्रिके लिये इतको विश्वमा कर 🔣 🖥 🖰

पार्वतीयी बोलीं — महरूव ! 🚃 कमन 🚃 🗳 है। आपन्ते कृताने तीये लिखने सभी उत्तम पदार्थ मुहे सुलय है, विश्व संसारमें अनेक कियाँ विविध कामकानेकी प्राप्तिके रिप्ते तथा अम्मूल्टोकी निवृत्तिके रिप्ते चरित्रपूर्वक मेरी आराधना करती है तथा मेरी प्रारण आही है। अलः ऐसर को बत बताइये, जिससे वे अन्त्रयास अपना आपीट प्राप्त 🚃 सकें।

भगवान् दिखने कहा---उमे ! काली इन्तरंगाले की संयमपूर्वक माधर्त्वा मृतीयाको अतः ३८कर निरक्कर्य सम्पन्नकर करके नियमको अनुग को । मध्यक्रके समय किरण और अध्यालकामिश्रित पश्चित्र कराने जान कर गुद्ध कथा करण करे राचा गन्ध, पुष्प, दीप, समूर, कुंकुम एवं विकिय नैवेकोंसे भक्तिपूर्वक पक्तिपर वास्तरूपमाव रक्तनेवासी तुन्हारी (पर्वतीकी) प्रक्रिपावसे पूज करे। अनगर 🚾 🚃 तुम्हरः। च्यान करते हुए समिके भहेमें जल, असत तथा सुवर्ण रक्तार सीधान्यदिको कामनासे संकल्कपूर्वक वह घट

क्कानको **थ**न दे है। ब्रह्मण उस घटस्य जरूसे वतकशीकः अधिकेक करे । अननार वह कुरहेदकमा आध्यमन कर रात्रिके समय भगवर्ष उम्मदेवीका ध्वान काते हुए भूमियर कुनाकी प्रका विकास सोये । दूसरे दिन प्रातः उठकर आनसे निवृत्त हो, विधिपूर्वक जनवारका पुत्रन करे और यथाशकि कारणेको भोजन करावे तथा साथ भी मौन होकर भोजन करे। इस कारत पारवसीका प्रयम कारामें ईशानी नामसे, **्राप्त वाक्रमे पर्वती जनते, तुतीय माराये क्षेत्रतीयण नामसे,** चतुर्व मासमे भक्तो नामसे, चाँचने मासमे सन्दर्भाता नामसे, कदे पाल दकदृष्टिता नामसे, स्वास्त्रे पाली मैनाकी नामसे, आठवे मासने करवायनी नामने, नवें कासने हिमाहिजा नामसे. टक्ष्वे 🚟 सीधाणदाचिनी नामसे, प्यारको मासमें उमा कुमले 🚃 ऑन्तम कारहवें मासमें पीएँ नामसे पुजन करें। 📰 📰 प्रमान क्रिकेटक, दुग्ध, पृत, भेषूत्र, गोमय, करू, किय-पर, 🔛 🎞 बोर्ग्गेटक, दही, प्रक्रमध्य और अधिक स्ट्रीस

इन प्रकल करत कारतक बसकर ब्रह्मधूर्वक भगवर्तकी 🚃 🜃 मिर्ट ऋतक मासमे माहायोको दान दे। अतको सम्बद्धिया वेदशस्त्री आधुन्तको यहीके साथ बुलाकर दोनोंने दिल-कर्वतीकी कृद्धि रक्षकर शब्ध-पृथ्यदिसे उनकी पूजा करे और 🍱 भरितपूर्वक योजन कराये 📖 आधूवण, अस. ट्यान्य 🌃 टेका उन्हें संबुष्ट करे । ब्रह्मानको दो पृक्त वस गया बहुर्स्मको हो एक 📷 प्रदान भरे । जो की इस वतको भक्तिपूर्वक करही है, ब्यूब अपने प्रतिके साथ दिव्यलेकमें अकर दस ५७वर वर्षोतक उत्तम भोगोवत भोग करती है । पुनः मनुष्य-लोकमें अपनेके बाद वे दोनों रायशि ही होते हैं और अहरोग्य, कन, संतरन उसदि सभी उत्तम पदार्थ उन्हें प्राप्त होते है। इस अवस्था पारून करनेवारने स्वीका पति सदा उसके अधीन प्रता है और उसे अधने प्राप्तेंसे भी अधिक मानता है। जन्मन्त्रमे जुतकर्शी की राजपती होकर राज्य-सुराका उपमोग करते हैं।

### अवियोगगुरीया-प्रत

राजा **युधिहिरने कहा—** प्रशान ! जिस तक्षके करनेसे पत्नी परिसे विकुक्त न हो और अन्तमें जिवलोकमें निवास को तथा जन्मसरमें भी विषया न हो ऐसे वतका आप वर्णन करें।

भक्तान् श्रीकृष्ण बोले—महाएव ! इसे विकासो मगवती पार्वक्रीओने मगवान् जियसे और अरुवातीने महर्गि वसिष्ठवीरी 🚃 च । उन स्टेगोने को पद्मा, नही उसकते सुनाता है।

मार्गशीर्व मानके स्था पश्चा विशेषको 📖 चरिश्वाली की राजिने पामस मक्का कर ज़िल और पानीतीको द्व्यवत् प्रमाम करे । तृतीया त्रिकिने कतः मृतरकी दातीयते इन्त्रभावन 📟 📟 करे। एकट प्रावस्था पुरा पार्वतीको प्रतिया कराये । सम्बं एक उत्तव पाउमे 🛲 कर विविज्ञांक उनका पूजन करे। 🚟 🚃 का किय-कीर्तन करती हुई भूमिस तकन करे। चतुर्वीको प्रतः तरकर दक्षिणके साथ दस 📟 🛶 वर्ष समर्पित कर जिल्लाका जाहरूकेको उत्तम 🔚 बदकार संस्कृत करे । ब्राह्मण दम्पतिकी भी विकासति पूजा करे ।

इस प्रकार प्रतिमास कर एवं पृत्रन करना चाहिने। करन भगोनोंमें सम्पन्नः शिव-पर्यक्षेपी हम अलोगे एक 🛲 और फर्बती जमसे, मध्ये पन और भवानी करसे, फरणूसी महादेव और उम्ब नामसे, पैक्ने इंकर और लॉल्स्ट कमसे, वैशासमें स्वाप और होस्तेज कारो, ज्येहने परिवर और एकवीरा नामसे, आक्तुमें त्रिलोकन पशुपति और 📺 कपरो, क्षावकरे औकप्ड और सूता नामसे, माइपटमें भीम और ........... कमसे, व्यक्तिमंगे क्षिय और दर्गा तमसे तथा 🚃 🍱 इंतर 🚾 इत्या रामसे पूजा 🔤 चाहिये।

पही-देंगे पनवान दिख एवं पार्वतीको प्रसम्रक्तके किये हमाञ्च:----र्मल कमल, कनेर, बिरवपन, परमस, कुम्ब, व्यक्तिका, 🚃 केत कमत, 🚃 तगर, होण 📹 वास्त्रो—इन कुनोसे कुन करन चाहिये। इस उनार मार्गक्रीकी वह अस्मिक्त कार्विकमें बहका उद्यापन करना च्यारिये । व्यापनी स्वर्ण, कमरु, दो वस्त, व्याज, व्यापन 💹 📖 नेकेट ज़िक्को 🔤 📟 आरती करनी चाहिये और 🚃 ब्यारमप्पासका 🚃 पुत्रनकर सूवर्णसय क्रिय-पार्वतीको मुनि बनवाका उन्हें तुमापात्रमें स्थापित कर उसी चामने चौसड मोती, चौसड मूँगा, चौसड पुमराज श्वामर उस प्रकार बकारे उक्कर आवार्यको समर्थित करण चारिये । अवस्थानीय जनपूर्ण करण्य, काता, जुता और सुवर्ण 🚃 चाहिने । 🚟 🔣 🗷 इस दिन निपदा नहीं जाने देख 🔤 । 🔃 🚃 इस्टिन न हो तो 🚃 कम करे, विज्ञा विराज्यात्व न करे । इस बलके करनेसे क्या, भीभाग्य, धन, अल्, पुत्र और फिक्लोकमी मारि होती है तथा इक्टमनीसे कथी लिखन नहीं होता । इस इतके क्लेक्स परिवर्ता की कभी 🔳 परि-पुत्र, सीधान्य और धनसे विमुक्त नहीं होती और जिल्लोकमें निकास करती है।

(अध्याय २२)

### उम्बम्बेक्श-अवकी विकि

महाराज मुविश्विको कहा—नगवन् ! विक कर्ल करनेसे कियोंको अनेक गुजबन् धुन-पीत्र, सूवर्ण, कम और सीपान्यकी अपि होती 🖥 🚥 पति-प्रशीमा परसर 🔤 🔠 होत्ह. उस 🚃 वर्णन करें।

भगवान ब्रीकृष्ण केले—महाएव ! संबी अवेदि 🔚 एक 🚃 है, जो उपामहेक्ट-वर 🚃 है, इस सबस्धे

🚃 सियोंको अनेक संतान, द्वास, दासी, आयुरूप, 🚃 और सीमान्यकी प्राप्ति होती है। इस शतको अन्यत, ..........

नैकार्य, ज्ञानकन्य, सीख, क्रान्य, वेतियो, दममची, क्रा क्या अनस्य अदि सर्थने क्रिया **या औ**र अन्य **IIII** उत्तम विवर्ष के इस असमें भरती है। प्राप्यती पर्वतीने सौभाष्य 🚃 आरोप्प प्रदान करनेवाले और दरिवत 🚃 व्यक्तिका बात करनेवाले इस 🚃 दुर्घमा और कुम्प्पा तथा निर्धन क्रिके दिवसे दृष्टिसे मनुष्यत्मेकने प्रचार किया।

📉 इस ब्रह्में मार्गदर्श क्वीमा विकिको निकापूर्वक उपनास करे । प्राप्तः उद्यक्त 📖

गम् आदि नदिवोंमें स्वार कर सिय-प्यवंतीका ध्वान करती हुई यह मन्त्र पढ़े और भगवान् संकरकी अर्थामिनी अर्थानिक श्रीस्त्रीकाकी पूजा करे—

-

गमो नमलो देवेज इम्ब्येझर्णकारकः। महत्वेजि नगरसेऽस्तु इस्कारकर्णकारितिः॥

किलाको २३ । १२३

'भगवती उनाको अपने आधे भागमे धारण करनेवारे है देवदेवेश्वर भगवान् शंकर ! आपको मारण्यार नयसका है। महादेवि ! भगवती पार्वती । अपने भगवान् शंकरके आधे शरीरमें निवास करनेवार्त्य हैं, अवस्थे नमस्यत है।'

पुनः घर आकर प्रसिवनी पृद्धिके लिये प्रवागका-कान करे और प्रतिमाके दक्षिण मांगमें मंगवान् क्षेत्रर की बाव प्रागमें भगवती पार्वतीकी भावना कर गरूर, पुन्न, गुलुल, पून, दीप और पीमें प्रकार गये निवसित प्रतिपूर्वक काल पूना करे र इसी प्रकार करड महर्गितक पूजनकर प्रशाविक के अनका उद्यापन करे। प्रमुक्त इंक्ट्रकी चौटीकी क्षेत्रक प्रमुक्त पर्वतीकी सुकर्गकी मृति बनककर दोनीको चारिके कुनम्पर स्थापित कर बक्ताभूवणीसे अस्तेन्त्रत करे। अस्तरूप अन्तर, क्ष्र पुष्प, क्षेत्र कहा आदिसे पणवान् संकरकी और कुंकुम, रक्त पष्प: सत्त पुष्प आदिसे पणवती पार्वतीको पूजा करनी पाहिन्ये । फिर स्थिपक वेदकडी, सामाधिक हादाणीको भीजन करना कहिने । सभीको दक्षिक देकर उनकी प्रदक्षिणा करके भूद मना पहला पाहिने—

ज्ञानकेश के श्रीकेष्यकामा । इमेनके सुमित्रे परेता सर्व सर्वका । (कार्य १६/११)

'सभी लेकोके विकासक पगवान् रिज्ञ एवं पार्वती मेरे इस अवके अनुकानते मुक्तम सदा प्रसन्न खें।'

इस बाज पर्धन जिन्दांत सहाजको सभी देवर करको सभाग करे। इस नतको जो भी विकास करती है। तदनकर मनुष्य-लोको उत्तम कुलमे जन्म तक्कार करा, पीचन, पूत्र आदि सभी पदार्थको प्राप्त कर बहुष दिनेतक अपने पतिके साथ सांसारिक सुष्योको प्राप्त कर के, उसका अपने पतिसे कभी वियोग नहीं होता और अक्तमें वह दिख-सायुज्य बात करती है। (अध्याय २३)

### रम्भावृतीया-असमाः माह्यस्य

मगावाम् सीवृत्यम् कोरोः— २००५ । अतः व वाणे भागेक नाशमः, पुत्र एकं भीषात्मपदः सभी व्यवस्थितः उपणानकः, पुत्र्य तथा सीवयः वाणा करनेत्रारे राज्यकृतीयः-नतका वर्णन् भारता है। वाणा वर्णा करनेत्रारे उरका केरकः वाणा तथा ऐश्वर्यको प्रदान करनेत्रारमः है। मगावान् शकाने देवी पार्वतीकी प्रसन्तारके रिन्मे इस सक्त्यी को विश्वि बडरकको भी, उसे ही मैं कहता है।

श्रास्तु सी मार्गातीनं महसके ह्या पदानी सूचीक विभिन्ने प्रातः उठकर दश्यक्षका कादिसे निकृत हो व्यक्तिपूर्वक उपवासका ह्या प्रहण करे। यह सर्वश्रका अश-वहन करनेके किये देवीसे ह्या प्रकार कार्यना करे---

संबद्धारं वासकृतियायामुखेतिकः।

करियामि करवं अपरेजनि। तक्षीयनेन ये वन् असादम् ॥ वर्षीते ॥

(अक्रपर्क सदा ५)

'देखि ! मैं पूरे एक वर्षतक इस सूरीया-आरम्भ आवरण और पूर्वरे दिन करना कर्नगी । आप ऐसी कृषा की, निससे इसके की किए ॥ सबस हो !'

प्रसार को ■ पुरुष सतका संकरण करे और मनमें
परमें करें। व्याप्त देवी पार्थतीका पुरुष व्याप्त विदेश
पुरुषे करें। व्याप्त देवी पार्थतीका पुरुष व्याप्त विदेश
पुरुषे व्याप्त विदेश
पुरुषे विदेश
पुरुषे एवं व्याप्त विदेश
पुरुषे पुरुषे विदेश
पुरुषे एवं व्याप्त विदेश
पुरुषे पुरुषे विदेश
पुरुषे पुरुषे विदेश

शबन् १ केन पासका सुनीवामें इसी विधिसे उपवास एवं पूजनकर राजिये गोमूनका प्राप्तन कर प्रधातकरूपे अस्त्रणोको चोजन कराये और दक्तिकके कपमें उन्हें अपनी शक्तिके अनुसार सोना तथा औरक दे। इससे धानपेन तथा माना पहोचा पहल प्राप्त होता है और यह करपपर्यन इन्हरूनेकमें निकासकर अन्तमे दिवालोकको प्राप्त काता है।

मासकी शुक्त तृतीपाको 'सुदेवी' अध्यते व्यावती पार्वतीका पूजन कर राजिने गोमयका प्रदान कर अकेले हो सोये। प्रातः स्टब्स व्यक्त अनुसार केसर तथा सोना सक्ष्मोंको दानमें दे। इससे वतोको क्रिक्टरका विकारकेको निवास करनेके पक्षात् चनकन् प्रकारके साधुव्य (मोह्य) 🔣 मानि बोखी है।

फरल्युन नासके सुद्ध पक्षको तुरीकाको 'मीर्ड' नामके देशी पार्वतीका पूजन कर रातिये ........ दूध वीवे । प्रायः विद्यान् विषयको समा सुरवस्ति स्थापी योजन कराकर 📟 सथ कपूर्वुड देकर किहा करे। इससे 📖 तथा अस्थित यहाँका फल प्राप्त होता है।

बैत मासके शुक्त पंचारी तृतीयाने धरितपूर्वक प्रान्ता पर्वतीका विद्यालको गामसे पूजन कर रहिने दहिक जाहर करे और प्रकः कुंकुमके 🚃 📰 व्यक्ति स्टब्स भरे । निवास्त्रशीके 🌃 🛗 📆 निवास महत् सीवाम 🕬 मोक्स है।

वैशास असके रहत प्रथमी तृतीयको मनवर्ती कर्वतीया 'श्रीमुकी' अभरे पूजन करे। राजिये मुशका प्रधान करे और एकाकी ही रायन करे। 🕮 रिकामक स्वाहनोधी समाजी मोजम कराकर तामपुरः तथा रूकन प्रदान कर प्रमानपूर्वक विक सरे। इस विविसे पुसन करनेवर सुन्दर पुरोकी असे होती है।

आचाद मामने शुक्र पावची तृतीचादो भीरी-पार्वकीची 'माधवी' नामसे धुनां करे। तित्वेदकका 🚃 करे। प्रतःकाल विजीवने मोजन करावे और दक्षिणाने गुड़ see स्वेन। दे। इससे उसे जुभ लोकाई प्राप्त होती है।

🚃 मसके 🌉 📖 इतीकाने देवी पर्वाधिक औरेवी अमसे प्रातका पायके संगवन सार्व साथ करु पीये । तिरापक्तोको योजन करकर सोना और पाल दक्षिणके रूपमें दे। इससे **वर्ता सर्वलोनेकर होकर सभी आ**क्राकोको श्रप्त करता है।

महरूद भासके 🚃 पसकी तृतीपाको 🐃 · इरकसी' जमसे पूजन 🐠 । महिपीका दूध पीये । इसमें अनुरू सीपान्य पार होता है और इस रहेकमें वह सुक पोनकर अन्तर्ने क्रिक्लेक्टको प्रश्न करता है।

मासके शुह पक्षको तृतीयाको देवी पर्वतीका 'निर्देशको' समस्ते पुजनकर तत्पुरू-निर्देश अरुका प्रारान करे और दूसरे दिन बाल 📆 📆 पूजन 📰 चन्दनपुक्त सुकर्ण दक्षिको दे। इससे सभी श्लोक फल जार होता है और वह नौर्यरकेकने असरित होता है।

कराके 🚃 🚃 तृष्ठीयाको देशी पार्वतीका 'प्योक्तक' 🔤 कृतन 🔤 🚃 प्राप्त करे 🚃 व्यापक करे । प्रभावकारुमें व्यापकारि 🔤 🌃 चेवन कराये 🔤 सत्य, नक तथा अलंकारीसे उन दिलामक 🔤 📆 पुनन करे। कुमारिकेंको 🖫 चेका कामे :

इस जनक वर्षभा अंद करनेके पक्षाम् इदायन करना च्यक्ति । क्याप्रतिक स्थल्या जना-महेश्वरको प्रतिन्त शतानार अर्थे एक सुन्दर, अरंग्यूत विधानमुक्त मन्यपर्वे स्थापित बद मुनन्ति इष्यः यहः पूष्यः प्रतः प्रतःपक-नैवेदः, दीपमाश्तः अर्थतः अरियनः, द्वारिमः, बीजपुरकः, जीरकः, लगणः, कुर्मुभः, कुंकुम २५० मेंटकसुरा साम्रपायसे देवदेवेदाकी विधियस् 🚃 अस्ति समा-वर्षत्र 🧱 रोक 📖 वर्धानी प्राप्ति मार्थिक स्थापिक ह

मनकर् सीवृत्क केरे—एकर् । १३३ 📖 🖷 **ाव्या** पुराव करनेपर **या** फल प्रात होता है, उसका फल वर्णन करनेमें में भी समर्थ नहीं हैं। यह पूर्वोक्त सभी फलोको बार करता है, सभी देवलाओंके द्वारा पूजित होता है तथा सी करेड़ करचेंतक सभी कामगाओका उपयोग करता हुआ कत्त्वे जिल-सब्दुन्य प्रश्न करता है, इसमें 📆 संदेह नहीं। बह सर करते राजके द्वारा किया गया था, इसकिये वह रम्बारा बहरूका है।

(अध्याम २४)



#### सौपाम्यक्रयन-व्रतकी |

भगवान् श्रीकृष्ण बोले—महाराष ! ॥॥ वै सर्वा भागनाओको पूर्ण करनेवाले सीमान्यरायन-सरका वर्णन करता हूँ। जब प्रस्थके पूर्वकालमे—'पूर्वृद्धः सः' आदि सधी लोक दन्य हो गये, तब सभी प्राणियोका सीमान्य एका होकर वैकुल्डमे भगवान् विष्कृके वसःस्वरूपें स्वित हो ॥॥॥ पुनः स्थ सृष्टि हुई, ॥। आसा सीमान्य सहस्रवेके पुत्र दश प्रमाणीने ॥॥ स्थित, श्रीक्षा उनका क्य-स्वरूप, बरु श्री

अधिक हो गया। सेन आने सीमान्यसे हम्, स्वास्त्रः निन्त्रत (सेम), यविचान्य (सांति च अन्त्रनो), स्वास्त्रः उसका विकार, कुर्तुभ-पुन्त (केसर), कुंबुध्व तथा लवन — वे आठ पदार्थ उत्पन्न हम् (इनका सम्प सीमान्यकृष्ट वे<sup>र</sup> ।

दश प्रभावति पूर्वकालमें जिस सीमाणका पर किया. दशके सती नामकी एक कन्या दारण हुई। सभी लोकोचे दस कन्याका सीन्दर्व शाविक था, इसोसे इसका नाम सती पूर्व कममें आंदियाय विकास विकास प्रमाण विकास प्रेशिक्य-सुन्दर्ध इस कम्याका विवास प्रमाणन् विकास साम हुआ। व्यास्त्र स्वरूपका क्रिकेट प्रमाणन् विकास स्वर्णका भूति, व्यास्त्र

भगवान् सीकृष्ण बोले—महस्तव । वैत मासके ह्या पक्षकी दृतीयाको स्तित्वदिवीका चगवान् संकरके ह्या विवाद हुआ । इस दिन पूर्वाहमें तिस्तिमित्रत जसमे कान करे । प्रधापव्य क्या कन्दनिवित्रत बसके द्वारा गीरी हिंदि भगवान् चन्द्रशेकरकी प्रतिनाको स्थान कराकत चूप, दीप, नैवेश तथा नाना प्रकारके फल्पोहार अन दीनोकी पूजा करे । इसके बाद इस

'ॐ पाटलायै नमः, **म्म सम्बद्धे तकः'** ऐसा **मार्था** पार्यती और शम्पुके करणेको, 'तिसुगायै कमः, ॐ दिश्वाय नमः' से दोनोके गुल्फोकी; 'दिक्काचै नमः, ॐ स्ट्रोस्टराम नमः' से दोनोके जनुओको, 'ॐ ईसानी नमः, ■ इस्कियान प्रमारं से करि-प्रदेशकी, '३० कोश्मी नया, ३० ह्यांच सुनिने नया' से कुलियोकी, '३० प्रमुख्य प्रमार, ३० ह्यांच नया' से उदस्की, '३० डमकी नया, ब्राह्म प्रमाप नमा' से कुलावकी, '३० डमकाडी नया, ३० शिकुमाय नमा' से विक्री व्यास करायी । '३० व्यास नमा, ३० प्रमाप नमा' से व्यास करायी, '३० भीतें नया, उठ हयाव नमा' से दोनोंके मुक्तमें तथा '३० लिखायी नमा, ३० सर्वाचने नमा' से दोनोंक मुख्यमी पूजा करे।

अवन विकित् पूजनार दिन-प्रावंतिक सम्पुत्त सीचानाहरू व्याप्त कर 'स्मामहेचाँ सीचेताम्' भंडकर वर्ष स्थाप वर्ष करे । उस व्याप्त मेन्पोदयस्य व्याप्त प्रावस वर्ष वर्षिते । वर्ष हिज-वर्ष कर्ण-पास वर्ष प्रावस सूचांतिर्वित निव कर्ण परकान् संकारक वर्षा साथ ह्या सीचान्याहक 'स्मीचा श्रीचाना' ऐसा क्रायर सहाजीको है है ।

इस संबार एक वर्षतक क्रिक्ट सारावी हृतीयाको पूजा करनी व्यक्ति । वैत्र आदि करही मासोने हानासः गीके सींगका वार, गोमन, मन्दर-पुन्न, विश्ववना, दही, कुरावेदक, व्य पुन, गोमून, कृत्वन क्रिक्ट की सारावी स्थान करना क्रिक्ट संदेशका, विश्ववा, पहन, भवानी, पुनुदा, हिला, व्यक्ति, गीरी, क्रिक्ट कमला, क्रिक्ट समय 'प्रीवसाय' कावत उक्षरण की । परिस्तार, आरोक, कमल, बदाब, उत्पर्क, परस्ती, कुन्मल, करवीर, बाग (कथनार या काश), विश्वव हुआ पुन्न, कुन्मल, करवीर, बाग (कथनार या काश), विश्वव हुआ पुन्न, कुन्मल और सिट्यार—वे बारह पहीनोंगी पूजके रिज्ये अस्तरः पुन्न करें गये हैं। क्राव्युत्सुन, कुन्नुन, अस्त्री ताम कुन्दके पुन्न प्रशस्त पाने गये हैं। करवीरका पुन्न प्रावतीको मदा हो क्रिक्ट

इस **बार्डा** एक वर्षतक वय करके सभी सामप्रियोंसे युक्त उत्तम झम्बापर सुवर्णकी उमा-महेबारकी तथा सुवर्णनिर्मित में उत्तम वृषयकी प्रतिमा स्थापित कर उनकी

<sup>· ।</sup> इसके स्वकार च निवास विकासकार्।

विकारवाद गोशीर कुरमुखे 🚃 क्या । तस्ये 🚃 क्या औष्यानककुणते ॥ (उत्तरकी २६ । ९)

पुण्डकर सहाकको दे।

इस करनेसे सभी कम्मार का है जोर निकाममावसे करनेपर निरापद जा होता है। कि.

परितृपूर्वक करते 🖥 वे 🚃 अनुस्ताने व्यक्ती कामनाओंची

ब्रह्म कर रेजे हैं। जो इस व्यक्त महारूप अवण करते हैं, वे दिका अर्थर ब्रह्म कर सर्वमें जाते हैं। इस अरको कामदेव, कदम, कुनेर व्यक्त और व्यक्त देवकाओंने किया है। व्यक्त सबको व्यक्त करना व्यक्ति।

(अध्यय २५)

### अनन्त-सुतीया तथा रसम्बन्धानिनी तृतीया-व्रत

शक्त बुर्वेक्कियने कहा — मान्यन् ! क्या अत्य सीमान्य एवं आरोग्य-प्रकारक, प्राकृतिकराक तथा भूतिक-मूर्विक-प्रवासक कोई का स्वरुक्तये।

चगवान् इतिवृत्ताः केले — महरावः ! व्यान्ताः व्यान्ताः है, असूर-संस्थाः चगवान् वीवाने अनेक व्यानां चगवान् वीवाने अनेक व्यानां चगवानं चगवानं चगवानं व्यानां व्य

पापीका क्या करनेवास्य तथा व्यक्तिक स्थि क्या काम है. इसे आप शावधान सेकर सूने---

वैतरामा, यहापद अथवा मार्गरीय मार्गके पुरू प्रकर्ण तृतीयको केत सरकोचा अध्या लगकार कार करे। गोरोका, मोधा, गोसूत, रही, गोसय और कदर—१२ व्यक्ति व्यक्ति

आरोज्यको देनेजाला है सथा व्यक्ति लटिन्सको व्यक्ति है। प्रत्येक मासके सुद्ध प्रकार पृत्रियको सीधानकसी व

विश्वता गेर आदिसे रैगा वस और कुमारी सुद्ध वस पूजा भेरे । पंगमती स्थापना अवस्थ केवल दुष्पसे स्थाप करकर मधु और कदन-पूजीपतित

जलको आम कराना पातियो । सानके अनुसर केर पूर्ण, उन्नेक प्रकारके फल, धनिया, धेरा जीरा, नमक, गुड़, ह्या राजा खेळा नेवेड अर्थणकर होता अञ्चल तथा सिलके रुख्यिको

अर्थना करे। प्रत्येक प्राप्त प्रत्येच प्रत्येच प्रत्येच प्रत्येच

प्रत्येक सुद्धाः पक्षमं तृष्टीमा विकास देवीकी भूकिक करणसे लेकर मस्तकपर्यन्त पूजन विकास इस प्रकार है—'करकर दोनों स्थान' करकर दोनों स्थानेकी, व्याप्त करकर करकर दोनों स्थानेकी, 'अञ्चोकत्तवे क्याः' सहकर व्याप्त

प्राचीति वयः' कहकर पेटकी, 'सहमानि वयः' कहकर प्रशःस्थलकी, 'हर्गमान्यवासिकी वयः' कहकर हाथोकी, 'स्रीक्रमुस्तविकी नगः' कहकर

क्युओसी, 'कम्परंकारिको नवः' धहनत मुक्तकी, 'पार्कती इतः' कहनत मुस्तकश्रमको, 'सीवी क्यः' ध्रमकर व्यक्तिनाकी, 'सुनेकको क्यः' कवनत नेजेकी, 'सुहको नवः' करूनत

त्तरपटची, 'बारसावची वयः' कतका ठनके मसावची पूजा को । तटकार 'मीर्व वयः', 'बुवर्व नयः', 'बारकी नयः',

'सेको करः', 'रामाचे करः', 'स्वरिताये करः' तथा 'बाब्युकेचे करः' बक्कर व्यास करवेने व्यास्ता नगलगर

करे । इसे क्या विधिपूर्वक पूजाकर सूर्विक आगे कुंबुसारे वर्विकासीय इस्टा-राज्युक कमल बनाये । उसके

पूर्वभागमें गीरी, आंक्रिकेशमें अपनं, दक्षिणमें भवाती, वैर्क्षकमें स्थानी, प्रक्षिममें सीच्या, जनवळाने मदनवासिती,

क्कारें पाटला तथा ईशानकोजने उपाधी स्थापना करे। मध्यमें

लक्ष्ये, स्वाह, क्या वृष्टि, महत्त्व, क्या सती तथा स्थापन कर कल्पकोंके क्रम्प भगवती व्यक्तिसमें

रकारण करे । सरकार्त् गीत और महारिक्क वाद्योका आयोजन

कर क्षेत्र पुष्प एवं अस्तत्त्वे अर्थना कर उन्हें नगस्तार करे। फिर लाल कस, मा पुष्पोको माला और लाल अञ्चलगते

सुवाहिती क्रियोकः पूजन 📰 💷 उनके स्ति (माँग) में सिद्ध और केसर समाने, 🔤 सिद्ध और केसर सर्वदिवीको

सदा अपोष्ट है।

क्यापद मासमे उत्तर (नीराकमरू) से, आसिनमें क्याचीय (गुरुदुपहरिया) से, ब्राह्मीय कमरूसे, मार्गशीर्थमें कुट-कुमरे, फैक्नो कुंकुमसे, मामने सिंदुतार (निगुरी) से, पारकुमें माराजीसे, कैसी ब्राह्मीय तथा असोकमे, कैशकों क्याचरण (गुरुव) से, ब्रोहमें कमरू और

क्-दारसे, अक्टूमें क्यक और कम्प्रसे तथा श्रावणमें क्यन

और मारुर्तके पूर्णसे उमादेशंकी पूर्ण मार्च पाहिते। मारुपदसे लेकर मार्गा आदि बरह पहीलेंगे क्रमकः गोन्त्र, गोनप, दूप, दही, भी, कुलोरक, विरुप्तय, सदर-पुण, गोन्युरोहक, प्रमुख्य और बेलका निवा अर्थन करे।

प्रत्येक प्रस्की तृतिक्षी साहाय-दायिको सामाना कर उनमें जिल-पार्वतीको प्रकार कर पोजन कराने तथा करा, मारु, कदन आदिसे उनकी पूजा करे। पुरुषको हो पीजाकर तथा सीको पीली साहियाँ प्रदान करे। विस्त साहायी पोलो सीमान्याहक-पदार्च तथा साहायको प्रता और सुक्योंनिर्मेश काम् देकर पुरा प्रकार सर्वना करे—

चया न **व्यक्तिस्तरम् भरितस्य प्रयक्ति ।** तथा मां सम्परितस्य प्रतिर्वाचन प्रयक्ति । (अस्तर्ग २९ । ५०)

'देषि । जिस प्रकार देखाविदेव धगवान् नहादेव श्रातको होङ्कर अन्यत कहीं नहीं जाते, इसी प्रकार की भी परिदेव मुझे कोक्सर कहीं न जाने !'

पुनः कुलुम्म विभारत, अन्तरा, पायानी, सुन्यः, विभान, राशिता, वामरात, गीरी, असी, राजा और पार्शती—इन नामेका स्थारण करके प्राचीन करे कि अस्य स्थानकः स्थापना असी, स्थानीने प्रस्ता हो।

जतवर समाप्तिये सुक्योत्सम्ब स्थानका क्रांसका कोर और बौकीस अवता कारत हिन-दान्तियोगी पूज को। प्रत्येक मासमें सहाज-दान्तियोगी स्था विधिपूर्णक को। अपने पूजा गुरुदेवकी हैं। पूजा करे।

वो इस अनल तृतीया-सत्तव्य विधिपूर्वक करून करता है, वह सौ कर्त्योसे भी अधिक सम्पन्नक रिजन्तेकने प्रतिश्चित होता है। निर्धन पुरुष भी बदि तीन क्वीतक उपव्यस कर पुष्प और मन्त्र आदिके इस्त इस वतका अनुक्रम करता है तो उसे भी यही फरू बात होता है। सच्चा की, विध्वस अवध्य कुमारी जो कोई भी इस सतका फरून करता है, वह भी गौरीकी कुमारो उस फरूको बात ब्या देखी है। जो इस जरके महारूपको पहला बावा कुमार है, ब्या विद्या रहेकोंको बात करता है।

भगवान् सीकृष्ण बोले—महरान ! 💷 एक का और 💷 📰 है, उसका नाम है—स्सकल्याणनी तृतीय । पक्षको सुर्वाकको किया जाता है। उस दिन प्रात:अग्रह गो-दुष्प और जिल-विभिन्न बाल्से बान करे। फिर देवीकी मूर्तिको मधु और क्लेके रससे स्वान कठचे तथा करी-पूजी एवं कुंकुमसे 🚃 वरे । 🚃 पहले दक्षिणकृती पूज 🗏 🚃 कार्यक्रमे । अञ्च पूर्वा इस प्रकार करे—'लारेन्समे नगः' बहुबर होतें करणे तथा होते हवानेकी, 'सबी नथ:' कहनर और पुरनोद्यो, 'शिक्ष क्यः' कहकर उन्तरओकी, 'कारकार्य का:' कार्य करि-प्रदेशकी, 'प्रकृति नमः' व्यापन व्यापन 'प्रकृतकारितकी वयः' बाहकर दोनों सानोकी, 'कुनुस्ते काः' सामा अध्यक्ते, 'बावके श्वः' साम कुषाओंको समा पुराके आवपारको, 'कामलकै नमः' व्यक्तर उपलब्धे, 'बक्षको थकः' कहकर पू और सरस्यको, **ा हामार प्रत्योगे, 'विश्ववासिये नवः'** मुक्टवरे, 'काली नमः' कड़का केसपायको, 'बहुक्ककारिको काः' सङ्ग्रह नेत्रोको, 'बहुको नमः' पराचन पुरस्की, "क्रावानिकाने चयः" प्रकृतन कप्यून्यो "अनन्त्राचे समः" इन्बर दोने क्षेत्रक 'राजाचे नवा' सामा कनवाहकी, 'क्रिकेक्टके प्रक:' कहनर दक्षिण बाहुकी, 'सन्धानसिकी कर्ष केल कर्म करें, के ब्राह्म कर्म **व्याप्त अने का-का नमस्ता को** । प्रस 🚃 प्राचेन कर आहाग-रम्पतिको 🚃 क्यूनक्योद्रमे पुरु कर सर्वकमात्मसहित जलपूर्ण घट प्रदान करे । इसी विधियों अलोक मासमें धूमन करे और माम नगदि व्यक्ति समाप्तः समाप्तः गह, तेल, गई, मधु, प्रतक (एक प्रवासका केव पदार्थ का शामाल), जीव, दुव, दही, भी, शाक, **पाण औ**र प्रकारका स्वाप को । पूर्वकवित पदार्थीको

तन-तम प्रासेन्द्रे नहीं साथ सहिये। प्रत्येक मारामे ततकी

सम्बद्धियाः करवेके उत्पर सफेट कावल, गोहित्या, मध्, पृ0,

भेकर (सेक्ड्र), मन्द्रक (निष्टक), दूध, शाक, यही, छः

क्रकारको कान्। भिन्नी तथा इतकारतिक रक्षकर बाह्यणको दान

करना चाहिये। कम कारमें एकके अन्तमें 'कुमुद्ध प्रीवताम्'

🦔 🚃 च्हिने। 🔛 🚃 प्राल्पन आदि महीनोने

'मानवी, बीरे, रम्ब, भद्रा, बक, शिवा, उमा, सबी, सबी,

महत्त्व तया रविलालसां का नाम लेकर 'क्रीधताम्' ऐसा

वह पर्योक्त 📖 करनेवाला है। यह इस मध्य मासके सुख

कहे । सभी मासेके वतमें प्रशासकका प्रशास को और उपयास करे । तदनत्तर माम मास आनेपर करकवामके उपर प्रशासके युक्त अनुष्ठमानकी प्रवंतीकी सम्मिनिर्मित पूर्तिकी स्थापन करे । यस, आधूरण और आर्कवारते मा सुत्रोतिमा मा एक वैस और माम 'सवानी जीवनक्त' वह प्रदान करे । इस मिथिके अनुसार वत करवेवाला सम्मूर्ण पापोसे उसी माम मुक्त हो माम है और इसार सिम्मी दुःवी होता । जा जसके करनेसे हवारों अग्निष्टीम-यहका जा प्रश्न जिल्हें है । कुमारी, जाना विकास का दुर्गम को भी हो, जा बहके करनेपर मैरीक्लेकने पृक्ति होती है । इस विकासको सुनने का इस जाना जिल्हें को कोरोंको उपदेश देनेसे भी जाना जाना हुस्सारा विस्ता है और जा कार्यतीके

(अध्याम २६)

### अलईन्द्रकरी तृतीयतल

चगवान् सीवृत्या बोले—अक्टब ! अव 🖣 🔣 लेकोमे परित्र, आनन्द प्रदान करनेकाले, 🔤 📨 करनेवाले आईन्यकरी हतीयवस्था वर्णन 📖 📢 वय किसी भी महीनेमें पुत्र 🔤 तृत्रिकाने पूर्वाच्या, उत्तरका क्षथक 🔤 😑 मृगदिन्छ नश्चन 🖥 तो उस 🔛 🕶 का करना चाहिये। यस 🕮 🊃 और गम्बेटकरी व्यन्तर 🔤 श्रेत मारह और धेत 🚃 पारणकर 🚃 🚟 दिवर-पार्वतीकी प्रतिया स्थापित करे । सुरान्यित 🔚 पुन्ध, धन्दन आदिसे उनकी 🚃 की। 'बास्क्रेकी कर: नांकरक नमः' से गीरी-प्रांकरके दोनों करणीकी, 'कोकाविन्तरिक्रके मय:-आनन्त्रय नमः' हे व्यक्तिका 'राजाने ननः-नीतनान मनः' से उत्तर्वरे, 'आदिले नगः-स्कृतनामचे कनः' से क्टिको, 'बाधको समः-प्रकास नगः' से जानिकी, 'आनवकारिकी का:-इन्ह्रवारिकी वव:' 🛮 दोने अनेकी, 'इस्क्रीफ्रिके सम:-मीलकारतय का:'से कन्छके, 'क्रपराधारिक्यै नयः-सङ्ग्य नमः' से 🕮 'पहिलामक नय:-नुस्पतीलाय थ्यः' से दोने मुख्यसंबी, 'विस्तरिक्ष नमः-वृषेद्रस्य 📖 ' से मुख्यो, 'सलस्यीत्सर्थ दम:-सिक्काशस्य नम:' से मुसकानगरे, 'ब्यूश्वासिकी नम:-क्रिक्सको नवः' से नेजेकी, 'रक्षिक्रकार्य 🚥

पर्वती-परमेशरकी प्रार्थन करे— विश्वकायी विश्वपुरने विश्वपादक विश्वपी । प्रस्तावदनी करों पर्वतीयरमेक ॥

सामानेसाम नगः' से पुर्वतम, 'इन्सामी नगः-क्रमानाम

त्रयः' से रुरुप्रदर्भ तथा 'सम्बद्धके क्यः-प्रमुक्तराज क्यः' अञ्चल मुकुरुकी पूजा करे। तदनका 🛅 रिक्ते 🚃

(कार्ला २०।१३)

क्षित्र मिनका शहर है, जिस्सा मुख, बार और इस्तरकाण तथा क्षित्र है, जिस्सा मुक्तर ज्या है, इन फर्वती और प्रतिशत्त्री में पदना करता है।'

(कारणे २०।१६) 'गीरी नित्य सुक्रक प्रसम हों, भ्यून्स मेरे पायेका विनादा करें। स्वरित्य सुक्के सीपान्य प्रदान करें और भवानी मुक्के सब मिदिकों प्रदान करें।'

र्श्वन्यन्त्रकाम् अस्तिकः अवतनी सर्वसिद्धने ॥

ायक अनुस्ते राज्यम् तथा युक्ते परिपूर्ण घट, नेतपह, सन्दर, दो क्षेत्र कका, ईस और विधिन्न फलेके साथ सुवर्णकी दिल-पर्वादीकी व्यास विधान महाराजको दे और 'गौरी मे जीवासम्' ऐसा कहे। संस्थादान भी बहे। इस अहर्यन्यकरो तृतीबाका जत करनेसे पुरुष

दिलकोकमें निवास करता है और इस लोकमें भी वर्ग, आगु, आहेच्य, ऐश्वर्य और सुक्तको का। बाला है। इस ब्रिक्ट करनेकलोको कभी दोक नहीं होता। दोनों पश्चीमें विधिवत् कुतनकोति इस करवी करना कहिये। ब्रिक्ट करनेसे स्वापिक लोककी प्राप्ति 🔚 है। 🗷 💴 इस 🔣 सुक्ता और सुनाता है, 📖 गन्धवीसे पूजित होता हुआ इन्हलेकने 📖 मनता है। जो कोई सी इस जलको करती है, वह 📖

सकी सुखोको भोजकर अन्तमें अपने पविके साथ पीरीके लोकमें निकास करती है।

(अच्चाय २७)

# चैत्र, पाइपद और याय 🚃 तृतीया-अतका विधान और फल

धनवान श्रीकृष्य बोले---महरूव ! अन अप चैत्र, भाइपद तथा मार्थके सुद्ध तुनीचा-बतोके निक्को सूने । इन वतीक्षे अप, सीधाम्य तथा उत्तर पुरुषी 🔤 होती है। 🚃 विकामें जान एक वृत्ताना सुने —

यगवती पार्वतीकी जब और विकय नक्ष्मी दो संक्रियाँ थीं : किसी समय मुनि-कन्याओंने उन दोनीसे पूछा 🌃 आप दोनों तो चरावती पार्वतीके साथ सदा निकास करती है। जाता सब यह बतायें कि किस दिन, किन उपकरी और मन्बेसे चुक करनेसे 📟 🔛 असम सर्व 🛊 ।

इसपर अधा बोटरे — मैं सभी स्थमनाओंको 🔤 सप्ते-

🚃 🚃 वर्णन कारती है। 🚟 🚃 🚃 प्रकृती तृत्वेपाको अस्तरमा बटकर एक्स्पालन 📖 📼 निवास होकर प्रस अतके नियमको प्रकृत करे । कुकुम, सिंदूर, एक 🚃 सामाल आदि सीधानके 🚃 व्यानकार भवित्युर्वक देवीकी पूजा करे। अध्य विकास शुक्र एक प्रवास भन्ताकर इसके मध्यमें एक मनोहर भौगश्रटित केटीकी रकत करे। एक इस प्रमाणक कुन्द करने, स्थापन स्थान कर उत्तम बच्च परणकर देवताओं और 🚟 🚃 कर देवीके मध्यपमे जान और पार्वती, ल्लीला, गीरी, नान्वती, वांकरी, जिला, उमा और सती—इन आठ नामेसे मिनावान पूजा करे । कुंकुम, कपूर, अगक, धन्दन आदिका लेका करे । अनेक प्रकारके सुपन्धित पूज सक्तार पूप, ध्रीप आहे. उपन्यर अर्थण करे। लगु, अनेक प्रकारके अनून 🚥 विभिन्न प्रकारके पुरापक नैयेश, औरक, कुंकुम, 🚃 ईस और ईसका 📖 इल्दी, नारिकेस, अध्यतक, 🚃 कृत्यक,

कर्कटी, न्हांपी, कटहल, विजेश सींगू आदि 🚃 🚃

सिल, सुप, टोकरी आदि तथा पारीरको असंकृत करनेकी

सामधियाँ भी निवेदिव करे। एखा, तुर्व, मृदङ्ग आदिके सम्द और 📖 गीतोंके साथ महोरस्य करे । 📰 प्रकार परिवर्ज़क अक्षे ऋष्टिके अनुस्तर 🚟 पूजा करके कुमारी कन्याई सीधानवार अधिकायासे प्रदेशके समय नये कलशीये 🚃 राज्या उससे सान को । पुनः पूर्वोक विधिसे भगवतीकी कृत करे । असेक प्रकृत्ये कृता और मृतसमन्तित तिस्प्रेसे इवन को । पणवक्षेके सम्बुक प्रकासन समासर यत्रि-जागरण करे । जुलको भगवान् शंकर, गीतको भगवती 🕬 और मतिको राची देवला प्रसार होते हैं। सम्बूल, कुंबुन्य और उत्तम-उत्तम कुछ सुरवसिनी सीच्ये अर्थित सरे।

का:-कारके अक्टा विकास प्राप्त राज्य । कुंकुर, कर्जू, अलब, करून आदि इस्पेसे वधायकि प्राप्ता करे और 🔤 क्षम-पार्चना करे। आक्रमी तथा सुव्यक्तिको विकास चोधन कराये । नैनेशका विकास करे । इससे उसका कर्म सकल हो क्रांत है।

कारकर 🔤 शहर पश्चर्य तृतीयाको भी वैत्र-कुर्वकारी 📰 📧 स्थ पुजन 🚥 चाहिये। पुराने महाधान्त्रेसे एक सूचने उमानी भूति बनाकर पूना करती व्यक्तिये तथा गोमूल-प्राप्तन 🚃 वाहिये। यह 🚃 उतम सैन्दर्व-प्रदानक है।

मान नासके शुद्ध पक्षको तृतीयाको कैत-कृतिकारी भवित पूर्वोक्त क्रियाओको 🔤 पशास् कुन्द-पूर्णोसे कुलादान 🔣 🚃 चतुर्थीको गणेशजीका भी पुका को।

इस विधिन्ने को की कर और तूलादान करती है, यह बस्को परिके साथ इन्ह्रत्येकमें निवास कर बहारतेकमें और कारी शिवलोकमें जाती है। इस लोकमें भी 📺 रूप, सीपान्य, संसान, पन आदि असे पत्ता है। उसके बंदाने ट्र्यंगा कन्या और दुर्विजीत पुत्र कभी भी उत्पन्न नहीं होता। परमें द्वरिद्व, ग्रेग, चोक आदि नहीं होते। जो बन्या इस क्कुको करती है तथा बाह्यणकी पूजा करती है, यह अभीट वर प्रक्र कर संस्थाका सूख भोगती है। (अध्याय २८)

### आन्यसर्व-तृतीयातत

पहाराज युधिहिस्ने कहा—भगवन् । असने श्राह पहाले अनेक तृतीय-व्रवेको स्थापना अस्य स्था व्यक्तपर्य-स्थापना स्थलप मतलाये।

सत्तवान् अविकृत्य कोलें— महत्तव ! विकृ और महेवाने देवताओको बतस्यका है कि का अवश्यक्ति। साम्या पुढ़ा है, किर भी में जावन इस प्रकार कर्नन करता है। इस बतावर आरम्ब मार्गकी नासके पुढ़ा पक्षकी कृतिको करना काहिये। हितीयको दिन रातमें मसकर वृत्तिकारो उपकास करे। गाम, पुका आदिशे उपादेवीका पूजनकर कर्कर क्रिया पूर्वका नेवेश समर्थित करें। क्रिया करान क्रिया पूर्वका नेवेश समर्थित करें। क्रिया करान क्रिया प्रकार करें। क्रियावामा क्रियाय प्रकार क्रिया क्रिया क्रिया भोजन कराने। इस विधियो को की क्रिया करती है, कर सम्पूर्ण स्थानिय-पहले फराको प्रकार क्रिया

सार्गातीयं सांस्थे कृष्ण पश्चा स्थापते स्थापते चण्याने साराव्ययनीकं पूजामं नारिकेष्ठ सम्पर्धित 📧 पूजाक प्राप्तान भूते । काय-क्रोध्यय त्यागकर 🔤 उत्तर करे 📆 🔤 उठकर बाह्मण-प्राप्तिका पूजा करे । ऐसा 🖼 अनेक यहाँका 🚥 प्राप्त होता है ।

पीय मासके शृह पश्चमी तृतीयको उपस्थानक मेरीका पूजन करे, लडूका मिनी निवेदित को और कृतक म्यानकर सम्बद्ध करे। मानः उठकर मिलता है। इस्के प्रकार पीकनी कृत्य-तृतीयाको भगवती पार्वतीको पूजा करे और नैवेश अर्थन करे, रातने पूरी और गोममका प्रकार करना करिने। अर्थन करे, रातने पूरी और गोममका प्रकार करना करिने। प्रकार पर मान्यको प्रकार करे। इससे अक्षमेध-प्रकार पर प्राप्त होता है।

मान पासके शुक्त पश्चको तृतीनको मनवती कर्णकीकः 'सुरनायिका' नामसे पूजनकर काँद्र और विकास नैवेच समर्पित करे। कुरारेदकका प्रारान कर विलेक्ट्रिय हो, भूनियर प्रापन व्या । काल्यन-दम्पतिको क्षेत्रन कराये। इससे सुवर्णदानका करू मिरुला है। इसी जनक स्वय-कृत्यन्तिको प्रीतिको प्रवित्र होकर 'आयो' नामसे प्रवर्शका प्रापन-दम्पतिका प्राप्त करे, दूसरे दिन प्रक्रिपूर्वक आवण-दम्पतिका आगे रामन करे, दूसरे दिन प्रक्रिपूर्वक आवण-दम्पतिका

पुनन करे । इससे का**न्येय-पहन**। फल मिलला **है** ।

प्रात्मुन स्वसंके मुक्त प्रकारी तृतीयको परित्र होकर प्रात्म को और M पर्वतीका 'महा' नामसे पुजनकर प्रात्मका नैवेश निवेदित करे । सर्वतका जानन कर राजिने स्वसं को प्रतान्तक संस्थाक स्वहानको पोजन कराये । इससे को प्रतान्तक प्रत्याक स्वरावको पोजन कराये । इससे को प्रतिक्ष 'विद्यालकश्ची' नामसे भगवती पार्वतीका पूजन कर पूछेका पोण लगाये । यह सभा प्राप्त निवेदित भर भूगिक स्वराव करे । स्वरान्तक स्वरावक निवेदित भर भूगिक स्वराव करे । स्वरान्तक स्वरावक स्वरावक में पोजन कराये । इससे अभिनोत्त-पञ्चक करा प्राप्त होता है । वैद्यासको प्राप्त प्रश्नाने वर्ताको विदेशिय और प्रविद्य

क्याना करे । प्रस्ताति विकास 'विकास' नामसे पूर्व कर संपूर्ण विश्वास करे । व्याना सपतीक नाइकार्य पूजा करे । इससे कनाइकारतमा परल व्यान है । ऐसे ही कृष्ण तृतीपाको विवासम होकर ठपधास करे । देवीकी 'बारताति' व्यान ग्रम, पूज, धूज, दीप कादिसे पूजा करे । वी तथा और्क आदेसे बन्द नैक्स निवेदित करे । विरुक्त प्रश्नन कर राजिये इससे अतिकृष्णकरका परल मात होता है ।

न्येष्ठ पासके सुद्ध पश्चकी तृतीवाको उपनासकत पूजा 'तृत्वा' नामसे बति तथा व्याचना नैनेया निवेदित को एवं आँवहेका प्राप्तन क्या गीरीका ध्यान व्याच हुए सुक्षपूर्वक सोने। प्रायःकाल समाजीक ब्राह्मको भोकन कत्वे । इससे हीर्यवाज्यका ...... आह ...... है । ...... ज्यार ज्येश्व कृष्ण तृतीयको सुर्वासनी की उपवास करे । 'स्कन्दमार्वा' ही पूजा का चीम राजावे । .............सन .................. देवीके सामने दस्या करे । जल-कास कारण-दन्यक्रिये

को । इससे कन्यादनका फल प्रशा होता है।

अवसद् मासके मुद्ध प्रस्ति वृत्तीकको सक्षेका पृथ्य कर दक्षिका नैवेस समर्पित करे। गोश्राह-जल्म्ब स्वस्त कर स्वया करे। प्रातः बाह्मण-दश्यतिका पृथ्य करे, इससे प्रमाणका पाल आह होता है। पृतः आवाई धासके कृत्य प्रशास दृष्टिकमें कृत्याव्योकाः पृथ्य कर ह्या और भृतके साथ सत्त्वक नैवेस अपित करे। कृत्रोदकार पासन कर ह्यास करे। प्रसावका बाह्मण-दल्यतिकी पृथा करे। इससे गोसहका-दानको करा प्रसा होता है।

श्रावण गासके तृष्ट प्रकार गृतीपाके क्रावणकर कहा-प्रशास पूजन करे। शृतका (कुलकी) को केन्द्र-कार्य प्रमाणित कर पुण्नेद्रकार अश्रम कर जानन करे, कार्यक्त साधण-दायतिका पूजन करे। वेसा श्रम्येची अश्रमदानका करू का होता है। इसी प्रकार शासकारी कृष्ण-गृतीयाको क्रावणे गामसे प्राचीतिक पूजन कर शास कार्यकारी क्रावणे-साधिकारक पूजन करे, इससे श्रमपूर्ण-प्रकार करू का होता है।

भारतय प्रस्ते हुए प्रश्ने तृतिको हिम्सीत्व नमसे पार्वतीका पूजन कर पोधूनक नैकेट स्थिति धने। सेत करन तथा गम्बेदकका प्रधान कर प्रधान को। प्रक: किस्सी सहायक पूजन करे, इससे सैकड़ो उद्धान राम्बन्ध कर अह होता है। धारपट कृष्ण-तृतीयाको दुर्गको पूजा करे। गुक्रपुण पिष्ट और परस्का नैकेस समर्थित करे, पोधूनका करना कर शासन करे। प्रकार किसा सम्बन्धि कुम को। इससे सरावतीका कर प्रमा होता है।

ज्ञानाम् उपवासकर 'ज्ञानामी' नामसे प्रकार पूपनकर प्रकारका पद्ध समर्थित करे। एतः वन्द्रनकर प्रकार कर राजिमें स्थान करे। प्रतः सहाम-द्रम्थिका पूजन करे। इससे अभिनेत-यहका प्रश्न होता है। साय श्वरकोदन केवारी करे। युक्तुंचके बीजोका प्राशन व्यक्ति विस्तान करे। प्रातःकाल समझीक बाह्यजको भीवन करते। इससे एकहिक (अस्थ, बाब आदिसे दिनपर गो-सेवा करते) कर बाब प्रश्न होता है।

भारते प्राप्त है। पहाकी तृतीयाओं 'स्वार्ड' नामसे प्राप्तकर पृथ, ब्रोड और बीरका नैवेच समर्पित करें। कुंगुल, केसरका चारत कर शका करें और असे: ब्राह्मण-देग्यतिकों पृथ्व करें। इससे एकपुक्त-मताचा पाठ आह होता है। कार्तिकाची कृत्या-तृतीयाको 'स्वाच्च' नामसे पार्वतीया प्राप्तकर पृथ्वी कियादीका नैवेच समर्पित करे और पीका ब्राह्मकर रात्ती सम्बन्धका करें। असः स्पर्धक ब्राह्मका पूजन करें। इससे नाजकाकम करू ब्राह्म होता है।

इस क्रम्बर वर्षभर स्थित मास एवं पश्चमी तृतीयाको करनेसे जाते सन्पूर्ण पायेग्रे पुरा और प्रवेष हो भारत है। इस पूर्ण का उद्यापन इस प्रकार करना चाहिये— वार्गालीकं प्रकार क्रम पश्चमी हुनीयाकी उपनासकर

प्राच-देशिये एक च्याप क्यापर सुवर्गको शिव-प्रावेतीको प्रतिमा चनवाये । उन चतिसाअवेके नेत्रोमे मोलो और मीलम लक्ष्ये । 📰 पृंता और क्षानेचे राज्युम्बल पहनाये । क्यान् रोकाको 🚟 🛗 🚟 इरहे अलेकृत कर 🚃 🔚 और रक्त 🚃 पहनाये : चतुःसम (एक गम-द्रव्य के करत्ये, चचन, कुंगुरन 🔳 कपूके सम्बन-मानके बेनले मनदा 📆 से सुशोधित करें । तदनकर गम, पुण, 📰 आदि उपचारेले मण्डलमे पुजनकर 📟 इवन बने। इसमें अवर्धनिता भगवर्गाकी अर्थना करे। पुरित्रकार प्राप्त 📟 🔤 🗪 करे । गीत, नृत्य आदि उत्सव को । सुर्वेदश्यर्थन जय को । जतः उत्तम मण्डल बन्द्रस्य प्रस्कृतमें अध्यापर ज़िल-धर्मतीको प्रतिमा स्थापित बहे । विवास, 🚃 बहुल, किकिली, दर्पण आदिसे सम्बक्तो सुरोबित करे, अनस्य दिल-पर्वतीको पूजा करे । सपलीक बाह्यलको भोजनादिसे संदुष्ट करे । तल निवेदित कर प्रार्थना करे 🎮 के भएकान् दिख-पर्वती । आप दोनों मुहापर प्रसन्ध होते 🖹 इसके बाद अधिक्रम स्थानको पवित्र कर छै । तत्पवात् स्वर्णसे प्रण्डित 🔤 तथा चाँदीसे पश्चित सुरवास्त्री, कांस्त-देशनकारी कृत, त्यल क्यारी आव्यादित, क्षण्टा आदि

दक्षिणाके साथ जूता, सदाउँ, ब्या एवं अनेक प्रकारके पश्च पदार्च गुरुको समर्पित करे। पुनः शिव-पर्वतीको प्रचान कर गुरुके चरणोंने भी प्रणाम कर सम्म मनि। इस प्रकार इस आनन्तर्व-प्रताको समाप्ति करे। जो को वा पुन्न इस समर्था करता है, यह दिव्य विमानमे बैठकर गम्पर्वत्तेक, क्यारोक, देवसीक तथा विश्वपुर्वेकने ब्या है। स्मा स्कृत सम्बद्धक उत्तम मोगोंको चोगकर विमानकेकको प्रशासना है और

आपरणोंसे यक्त पर्यासनी हम्रह रंगकी मौकी प्रदक्षिण कर

## अक्षाय-पुतीयाप्रसमेः प्रसंगमें धर्म कविष्युका वरित्र समसार् सीकृत्य कोले—महस्य । अन अन भी, किंतु का अक्षय हर्तकारे सम्बद्ध ही दान करता था।

वैज्ञान भारके राष्ट्र पश्चकी अन्दर-तृतीककी कथा 🕎 त्यन दिन सान, दान, जप, होम, साध्याय, तर्पन स्वदि ओ भी कर्प ख्या जाते हैं, वे सब अक्षण हो जाते हैं<sup>4</sup> । सल्पम्पका अक्षण भी इसी तिथिको हुआ या, इसलिये इसे कृतपुरादि तृतीया भी करते है। यह सम्पूर्ण 📖 नात करावार 📆 🖼 सक्तोंको अदान करनेवाली है। इस सन्धन्यों एक अवस्थान 🚃 है, 🚃 उसे शुरे— प्राक्तल नगरमें जिल और स**श्याल**टे, **एका** और बाह्यचीका पूजक धर्म जनक एक धर्मका भ्रीतक रहता था। इसने 🚃 दिन कम्बप्रसंगमें सुन्त 📶 🚾 वैज्याक पुरुष्णी तुर्वीया विक्रमा 🚃 एवं मूचवारते युक्त हो तो उस दिनक दिया हुआ दान असूच हो जाता है। यह सुनकर उसने 📟 त्तीपाके दिन गक्तमें अपने पितपेका वर्षण व्यक्त और का आकर जरू और अलसे पूर्ण पट, सत्तु, दही, चना, गेहैं, गुरू, इंस, स्वीद और मुक्त सदापूर्वक स्थालीको दन दिया। कुट्मामें आसक्त रहनेवाली उसकी की उसे बर-कर 📖

अध्यादः, विष्णुकं साथ लक्ष्मी, बद्याके साथ विश्व विश्वकान द्वारो है, स्था प्रकार हा नहीं भी जया-जयमे अपने परिचेद साथ समा स्था है। इस वहाओं करनेवारी

पर्यक्त जन्म 🔤 🚃 चक्रवर्ती 🚃 होता है। वत

कानेक्स उसकी सी 📖 पटचनी होती है। जिस प्रकार

तिकारोके साथ पार्वते, इन्द्रके साथ प्राची, वसिहके साथ

अको परिके साथ सुका 🔤 है। इस जतको करनेवाकी कर्ष 🔤 विकुक नहीं होती तथा पुत्र, पौत्र आदि सभी कस्तुओको 🔤 करती है। (अक्याय २९)

उसका बात कुरस्कती (दारक) विकास हुआ और वह प्रमुख्य तथा बना। दानके प्रयादको उसके ऐश्वर्य और प्रस्की कोई सीमा न थी। उसने पुनः बढ़ी-बड़ी दक्षिणकाले यह विको । बह बह्मलोको गी, धूमि, सुवर्ण आदि देख रहता और

दीन-द्वांक्योंको भी संशुष्ट करता, किंतु उसके धनका कभी

ga नहीं होता। यह उसके पूर्वजन्ममें अक्षय मुहीयाके दिन

🚃 समयके बाद उसका देहाना हो गया। अगले कन्पमें

दान देनेका घरण था। महाराज । इस तृतीयाका फर्ट अक्षय है। अब इस बतात विचान सुने—इसी रस, अब, सहदे, अलसे भरे बढ़े, तरह-तरहके फरू, बूता आदि तथा मीका अनुने उपयुक्त सम्बद्धी, अब, मी, भूमि, सुवर्ण, बक्ष जो पदार्थ

 अस्तिसय रहस्वकी कत येने आपकी बतलायी । इस दिनियों
 स्वानियों कर्मका क्षय नहीं होता, इसीरिज्ये मुनियोंने इसका नाम अक्रय-सुतीया रक्षा है ।

अपनेको क्रिय और उत्तम लगे, उन्हें महापोको देना चाहिये :

(अध्याप ६०—६६)



१-मत्त्रसूरामके अध्याम ५५ में इसके विश्वको एक दूसरी कथा **मार्थ है, सामा** क्या पत्र है कि 'इस दिन अस्तरके पणवान् निव्युकी पूज करनेसे में विशेष **मार्थ** होते हैं और उसकी संसदि भी अनुम कनी दहने हैं—

अस्य वेतरिकाय तथा सुव्यवस्थाम्।असर्वः पुरुषः विमुद्धाः स्वयम् स्ट्यः।

अवस्थित हा कि किन्द्रिय हा स्थापन । (मस्त्यपुर्ण ६५.१४) अक्सारे का विल्ह्नुसम् क्षित्री है, को केवल इस किन्द्रास्त्री उनकी क्षा में करों है। अन्यव अवस्थित स्थानस संपर

तिसम्बद्धाः विद्यान है।)

#### क्रान्तिका

मनवान् सीकृत्य बोले—महर्ग्य ! अव में न्यांने करपने सारितासका वर्णन करता हूँ । इसके करनेसे गृहत्योंको एव प्रकारकी शांचि प्राप्त होती है । कार्निक मासके सुक्स प्रस्तकी प्रश्नमिने लेका । स्थानिक प्रश्नमिन खड़े प्रकारीका भोजन न करे । नराजत । सेक्नानके उत्पर । ध्यापन् विष्णुका पूजन । और निम्नासिकित मन्त्रोंने इनके अञ्चीको प्रमुक्त पूजन । और निम्नासिकित मन्त्रोंने इनके अञ्चीको

'३० अनवाम काः वादी पूजवामि'से धगवान् विजुके दोनों पैरोकी, '३० व्यक्तिम काः व्यक्तिमासे वादि-प्रदेशकी, '३० व्यक्तिमास काः व्यक्तिमासे उद्दरदेशकी, '३० व्यक्तिमास काः काः पूजवामि'से इदयकी, '३० व्यक्तिमास काः काः व्यक्तिमासे '35 व्यक्तवाय काः होतुंगं पुत्रवाधि'से दोनों पुत्राओकी,
'45 व्यक्तवाय काः वसः पूज्याधि'से वक्षःस्थलकी तथा
'45 कृतिकाय काः दिराः पूज्याधि' से उनके मस्तककी
पूज्य करे। सदनकर मीन हैं पग्यान् विष्कृते दूधसे हात्र करवे, दिन दुन्य और सिलास इवन करे। वर्ष पूच होनेपर हात्रवण तथा संक्तायकी सुवर्णप्रतिमा बनवाकर उनका पूजन कर सहभाकी दून दे, साथ ही उसे सवस्ता यी, पायससे पूर्ण कांत्रवण, दो क्या और प्रधानकि सुवर्ण भी जतान करे। सरकात् सहल-मोजन करवा से समान्त करे। जो व्यक्ति इस करवो भतिन्त्रवंक करता है, यह निश्च सामित प्राप्त करता है और उसे नामेका करवा सी कोई यम नहीं रहता।

### सरस्वतिकात्मा विकास और पास

शामा मुमिष्टियमे पूजा — पनम्पः । किस सतके करनेसे बाजी सपूर होती है ? ब्रिक्टी सीपान्य करा कि है ? विश्वार अस्तिवीयात क्रम बेसा है ?, पति-पानेका और बाकुशनेका कभी विवोध नहीं होता सभा कि बाक्टिका होता है ? वसे आर बसलायें।

भगवान् वीकृष्य वोले—एकन् । अवने कृतं उत्तर वतं पूर्वं है। इन फलोको देनेवाले संरक्षण्यका विकान आप सुने। इस वतके कीर्तनमाप्रसे में पायको सरकार्त अस्तर हो जाती है। इस वतको कतस्यरम्भमें केन मासके सुकल पश्चेत पश्चिको आदित्यवाससे करण करना कहिये। इस दिन पश्चिकृष्यक बाह्यपके दृश्य स्वीताव्यक कराकर पत्य, केव माला, सुकल अस्तर और वेत बाह्य उपवारोंने, केल, अक्षमाला, कमण्डल् तथा पुस्तक करण की हा सभी अलंकारोंसे अलंकृत भगवती गमधीका पूजन करे। बाह्य बेहकर इन कनोंसे आर्थन करे—

यशा तु देवि भगवान् स्वात स्वेकनियानाः ।

परित्रम्य ने तिहेन् स्वा स्वा परम्य स्व वेदलाखाणि सर्वाच नृत्यगोतादिकं स कत्। वाहितं यत् रूपा देवि नवा मे सन्तु सिन्हकः ॥ स्वकृतिसंधा वस रिक्टिवीरीः स्वा प्रमा कविः । क्तांप: पात्रि सङ्गीनकांपनां सरानीतः॥ (हत्तरमं ३५/७—५)

भेड़िका अस्तर स्तेकियतामा सहा आपका अस्तर आप हमें भी असने परिवारके लोगोंसे कियोग न हो है देखि। केदादि सम्पूर्ण ब्याब तथा कृत्य-गीतादि को भी विकार्य है, वे सभी आपके अधिवानमें ही सभी है, है सभी मुझे प्राप्त हो। हे भगवती सरस्वती देखि। अस्य असकी—सम्बंधि, मेंका, भंदा, रिटि, गीरी, हो, प्रमा तथा मिरि—इन आठ मुस्लियोंक हो। मेरी रहा करे।

इस विभिन्ने प्रार्थनाकर भीन होकर भीजन करे। अलेक मानके सुनात पहली पहलीको सुवासिनी किस्पेका भी पूजन करे और उन्हें जिल तथा बावल, मृतपात्र, दुग्ध तथा सुवर्ण भाग करे और देते समय 'बावजी प्रीक्ताम' ऐसा बावजा करे। सार्थकाल कीन रहे। इस तरह वर्षभर तत करे। जतकी सम्बद्धका बहुत्यको कोअनके तिन्ये पूर्णकामे वावल भरकर अदान करे। साथ ही दो केत बच्च, स्वयस्त की, चन्दन आदि की दे। देवीको निवेदित किये गये वितान, पच्टा, जब उन्नदि पदार्थ की बाहुत्यको दान कर दे। पून्य गुरुका भी वस्त, मास्य तथा बन-बानको पूजन करे। इस विधिक्ते जो पुरुष सारकात व्रत 🚃 है, वह विद्यान, धनवान और मधुर कम्प्डकस्य होता । हो आता है। 🚾 भी 🔛 इस 🚃 परलन करे तो उसे भी है। मगवती सहस्त्रीको कृपासे वह वेदावासके समान कवि । पूर्वोक्त फल प्राप्त होता है। (अध्याप ३५-३६)

## श्रीपश्चमीत्रत-कथा

एक पुषिष्ठिरने पुष्टर—पगवन् । सेनों लोकोने लक्ष्मी दर्लभ है; पर बत, होम, रूप, जब, उनस्कर 🔚 किस कम्कि करनेसे स्वर लक्ष्मी प्राप्त क्षेत्री है ? अन्य 📖 कुछ जाननेकले हैं, कुपतकर उसकर वर्णन करें।

भगवान् श्रीकृष्य सेले—न्यापन्। सून वातः है कि अचीन चालमें भूगमुनिको 🚃 🛗 सक्षीका आविर्धान हुआ। पुरुषे विष्युक्तकान्हे साव लक्ष्मीका विवाह कर दिया। लक्ष्मी भी संसारके पति मनवान् क्षिणुको वरके कपये प्राप्तकर अपनेको कृतार्थ पानकर अपने कुष्पकटाकारे सम्पूर्ण अगनुको अधनन्ति करने लगी । उन्हरिक प्रजाओंमें केम और सुमिख होने लगा । सभी उरतम सकत के भवे । अञ्चल अपन करने लगे, देवगण इतिका-चोकन 🚥 करने लगे और राजा समामान्त्रीक वार्व विवास रथा करने लगे। इस प्रकार देवगणीको अतीव अनुनद्दे नियम देखका विदेशन आदि दैत्यनम लक्ष्मीया विद्यालया वर्ष मज-मागदि करने लगे । वे सम भीनसमार्थ और व्यक्ति हो गये । किर देखेंके परक्रमसे सारा संसार अक्रान्त हो १९७ ।

कुछ समय बाद देवताओंको लक्ष्मीका मद हो गया, उन लोगोंक औष, परिवरत, भरवत और सभी उत्तम आचर नह होने लगे। देवताओंको सस्य आदि शील तका पविश्वकारी रहित देखका लक्ष्ये देखेंके पास बली गर्फ और देवरल श्रीविद्यान हो गये । देखाँको भी सक्तीकी प्राप्त होते है बहुत गर्व हो गया और दैतवगण परस्पर कहने लगे कि 'मै ही देवता है, मैं ही यह है, मैं ही सहाम है, सम्पूर्ण जगद मेरा ही लक्ष्य है, 🚃 विष्णु, इन्द्र, चन्द्र आदि सब मैं हो हैं।' इस प्रवस अविराय अर्हकारपुक्त हो वे अनेक ऋकरक अनर्च काने लगे। आहंकारमति दैल्पोको भी यह दशा देखका व्यक्तल हो मृत्यन्य पायदी सक्ष्मी सीरमागरमे अविष्ट हो नवी। श्रीरसागरमे लक्ष्मीके अवेश करनेसे 🔤 लोक 🚃

देवराज इन्हरे अपने गुरु बुइस्पनिसे पुरुत-

होकर अस्यन्त निस्तेष-से ही गये।

पदाराज ! कोई ऐसा तर बताये, ....... अनुहार करनेसे पुरः 📰 लक्ष्मेकी प्राप्ति 🖥 अयः

केवनुरु बृहस्कति बोले—देवेन्द्र : मैं इस सम्बन्धमें अपन्ते - विभान नगरमा हैं। इसके करदेशे आवश्य 🚟 सिद्ध होगा। ऐसा करकर देवपुर मुहलांतने देवराज इन्ह्रको औथक्षमी-वतको साम्रोपम्ह विकि व्यक्तावी : सद्भूकार कृद्धने उसका विकिशत् आकरण किन ( इन्द्रको वह 🌃 देखकर किन्तु आदि सभी देवता, देख, क्रमन: राज्यों, क्रम, राज्यां, सिक्क, विवासधर, नाग, 🚃 ऋषिणम् तथा सम्बगम् भी यह वह करने लगे । कुरु **ारका अनुसर अंध अध्ययकार उत्तन वल और तेज पांकर** सको जिलार किया कि समुहलो भाषकर लक्ष्मी और अमुहलो प्रकृष करना व्यक्ति । 📰 विकास्कर देवारा और 🚃 अन्दरपर्वतको 📟 🏙 चसुविज्ञानको रस्ती अनाकर समुद्र-पञ्चन करने समे। कलानकम सर्वप्रथम शीतल **ारिकार अ**दि कारक चन्द्रमा प्रकट हुए, फिर देवी **ल्ल्याचा अनुवांत कृत्या । लक्ष्मीके कृत्यकाशको प्रकार समी** देवता और देख परम आनन्दित हो गये। भगवती सक्ष्मीने चगवन् विक्के वशःस्वतकः ..... प्रत्य किया, भगवान् विष्युने इस अरको किया था, पालस्वकप लक्ष्यीने इनका वरण किया । इन्होंने एकस-प्यवसे इस किया था, इसलिये उन्होंने क्षिपुक्तका राज्य अस्य किया । दैलांनि सम्पत्त-भावसे वर्व किया ब्ह, इसलिये ऐक्षर्य पावन भी वे ऐक्षपंहीन हो गये। महम्पज I इस प्रवास इस वर्लक प्रचावसे श्रीविद्यान सम्पूर्ण जगत् फिरसे श्रीमुक्त हो गया।

पदाराज वृधिहिरने पुता--पर्युक्त ! यह श्रीपद्यमी-🔤 विरक्ष विकिसे 🔤 जाता है, कबसे 📰 घरण्य होता 📗 और इसको फरण 🚃 होती है ? 🚃 इसे बतानेकी कम करें।

क्रमचान् श्रीकृष्य चोले—महराज ! यह वत मार्ग-शोर्व मासके शुक्ल प्रकृषी पक्षमीको 🚃 पाहिये। प्राटः क्रवार शीष, दसभावन आदिसे निवृध है। वेदंश निवनम धारण करे । फिर नदीमें आचवा परपर की स्तान करे । दी च्या चा देवता और **विशेष प्**यान**ार्यण कर** घर आकर लक्ष्मीका पूकर करे। शुक्जं, चाँदी, तम, आस्कृट, सहका अववा विकार में प्राप्ता संस्थीको देशे 🔤 क्षावे जो कमलपर विराजकन हो, प्राथमें कमल-पूज करन किये हो, सभी आधुक्तीसे अलंहन हो, 🔤 सोचन कमलके समान 🖩 और भिन्ने कर 🗎 📰 सुक्कि कराशोकि 📟 📟 छ हो। इस फकान्द्री प्रशासी लक्ष्मीकी - जन-क्रजेंसे जुलुकारनेद्रत पुर्णोद्यस्य सङ्ग्रह्मा करे-'क्षेत्र कालाये पतः, यादै कुरकार्ति', 'क्षेत्र कक्रकारी नवः, बालुरी पुरुवानिः, 🚟 शामकातिन्ते परः, 🔤 पुरावादि', 'के 🚃 पराः, गर्मि पुरावामि', 'के यक्तकारियो स्थः, ससी पुरुवर्तनं, 🔛 🚃 का पुजार्थ पुजारि', 'के जवनिकार्थ काः, कार्थ पुरावाति", "के 📟 नवः, मुख्यमक्तो पुरावाति" तथा

शेशर सिरावक पूजा करे। इस प्रकार अस्त्रीकी प्रतिस्पूर्वक पूजाबंद अंकुरिश विकिध भाग अस्ति प्रवासी साल प्रवास देवीको निवेदिश करे। सदस्यर स्था और मुंजुन अस्टिसे सुव्यस्ति निवर्णका पूजा कर की भजूत प्रोजन कराम और प्रवास कर किए करे। एक प्रस्थ (सेरकर)

'क्ष 🔤 प्यः, हिरः कुल्लामि' आदि जनकारी पैसी

सन्तीववान्' इस प्रकार कड़कर कर्षना करे । इस तब पूका

विश्वेक-च्यी-स्त

राजा सुधिकिते कहा—जनाईन ! आपके अध्युक्तो पहारी-असीका विधान सुनकर कहुत असमक हुई । अस असप पहीरातीका विधान करासाये । पैने सुना है कि पहीको कर्यकन् सूर्वकी पूजा करनेसे साथ कावियां सामा है स्था है और साथी कावनाई पूर्व हो जाती है ।

धगवान् श्रीकृष्ण खेले—महाराज ! सर्वताका से विशोक-वडी-ज़तका खाला हूँ। उपवास करनेसे मनुष्यको कथी शोक नहीं होता । याच मासके कर चीन हो चोना करे। व्यास व्यास करे और श्री, लागी, व्यास सम्पत्, एस, संदर्भी, पदा, श्रीर, स्विति, व्यास सम्पत्, एस, संदर्भी, पदा, श्रीर, स्विति, व्यास सम्पत् सम्पत् कर कर न्यास कमराः वारह न्यास वान्यस सम्पत्नी पूजा वार और पूजनके अभागी विवास (एस) उन्तरण करे। वारहणे महीनेकी पद्मानेको व्यास उत्तर वान्यस वान्यस गण-पुन्यस्ति उसे अलंकुतकर उत्तर करे। वारहणे सम्पत्नी सम्पत्नी स्वर्थीकी मृति वार्यस करे। वारह घोडी, नेत्रपष्ट, सप्त-वान्य, खड़ाकै, पूल, अनेक व्यासके पत्र और वारसन वहाँ उपस्थापित करे।

कदनकर हिम्मा पूजन कर वेदनेका और सदाकारसम्पन सकता पौसरिक का सब कल्पा प्रदान करे। प्रकारक विक्रमणी योजन कारकर उने दक्षिण है। असमें प्रणाली सकतोंने क्वित्रकों कामनासे इस प्रकार प्रार्थन करे.—

क्षेत्रविकायमेखाः विकासिक्षःस्थलान्ये ।

🚃 🚾 🚃 न्हेश्यू है।।

(क्रास्त्वे १७ । ५४) है सि । अस्य श्रीरकार्यके सन्त्रमारे उस्तृत हैं, भगवान् सम्बद्धाः सहस्त्रमा स्वयंत्रा अधिकृत हैं, साम सभी सम्बद्धाः प्रदेश करोगालों हैं, अतः मुद्दे भी आप सहित् प्रदर्श करें, अवस्त्रे नमस्त्रम्त हैं।'

■ इस विकिसे औरख्यांका व्या करता है, 100 अपने इसल कुलाँक त्याच लक्ष्योत्सेकाने निकास करता है। को सीकान्यकारी की इस महत्वते करती है, यह सीकाम्य, रूप, 1000 और करते सन्यत्त हो आही है तथा पतिको अस्यन्त निव 1000 है। (अध्याय ३७)

कुल-सरा रुक्त प्रकारी प्रकारको प्रधानकारको उठकर दश्यकान करे, कृष्ण किलोसे कान क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त क्षाप्त (क्षित्रकी) का चोधन करे, शतिमें सहावर्षपूर्वक यो। दूसरे दिन पहीको प्रकारकारको उठकर स्वान आदिसे प्रकार हो जाय। सुवर्णका समाचे, उसे सूर्यनायमका स्वरूप मानकर

व्याप्ताच्याः राजकावीर-पुष्पः और राजवर्गके दो वस्त, सूप, इन्हें नैके⊇ आदिसे उनका सूक्त करे। उदनक्तर हाय ओड़कर

दय पन्तरो प्रार्थन को---

🚃 विशेष धवन सर्ववादित सर्वछ। तथा ब्याच्या ये सात् त्याकिर्शनभवति ॥

(BUCF \$6 (V)

हे आदिरपटेव ! वैसे अपने अपना स्वार स्वेषके सीव क्यान्य है, वैसे ही नेरा भी भवन सदा रहेक्सील हो क्या जन-जनमें मेरी आपमें भीक करे से (

इस व्यक्ति पुजनसर पहीन्त्रे सहाल-भोजन करवे। गोव्हाका प्रारम्भ करे । फिर पृष्ठ, अस, उत्तम दो 🗪 🔤 सवर्ण ब्राह्मणको प्रदान चरे । सप्तमाको चीन होकर केल और लवणरहित चोकन करे और पुराण भी अवल करे। इस प्रकर एक वर्षपर्यक्त दोनों पक्षोकी पद्मीका कार्का अन्तमे सुकत

सन्दर्भको सुवर्ण-कमलवुक कलरा, बेह सामप्रियोसे पुक्त उत्तम राज्या और पर्यास्त्रनी 🎟 📕 प्राह्मकको दान करे। इस विविधे कृतवात क्षेत्रकर जो इस 🔤 करता है, 🖿 करोब्द्री वच्चेरे। 🔚 🚃 🚃 शोक, रोग, दुर्गीत 🚃 रहता है। यदि 🔤 सामग्रस् 🔤 📰 विस्थ 📨 📗 🚃 🚃 अवस्य पूर्व होती 🛮 और 🔙 विकास 📖 तर 🖾 वे उसे पोधानी 📖 होती है। स्रो इस स्टेब्ट-विकासिनी विशोध-पारीका एक बर मी 📟 करण है, यह कभी दुःसी नहीं होता और इन्हरोकमें निवास करता है।

## कमलब्दी-(फलब्दी-) इत

भगवान् श्रीकृष्य कोले—वज्रत् । अव मै कम्पा-पही नामक 🚟 कतलाता 🖥 विश्वये उपलब्ध 📟 🗯 पायमुक्त होकर 🚟 प्राप्त 🚃 है। वर्गोर्सर्व 🚟 🚃 पश्चमी पश्चमीको हिल्ला होकर हिल्ला चरे । कृष्य सन्तर्भाको सुवर्णकास, सुवर्णका तथा हाश्चणको प्रदान करे । इसी 🚟 🚌 वर्कपर्यन 🛗 📟 प्रत्येक व्यक्तिको उपनास करे। पान्, उनके, उनि, अद्वा, सूर्य, रहर, 🔛 शिव, औधन्, विभावन्, खटा 📖 वरण—१८ बारह नामोंसे 🚃 🚃 यहीनींथे कुलन करे 🔤 'चलूनें प्रीयसम्प्, 'अवर्ते ये जीवताम्' इस बाला वरिकास संधानिके 🚃 और बही-पूर्वन आदिके समय 🚃 को । सक्के अन्तर्ने ऋद्याय-दम्पतिकी पृत्राकर क्या-आपूर्वन, राजिकपूर्व करूरा और सुवर्ग-कमल तथा सर्गक्श सक्तमके देकर

निवरियक्तित मन्त्र प्रकृतन वस पूर्व करे---प्रत्यक्षके मानावासकार्य स्था स्थे। and the second second

(tuesd syrist)

(अध्यय ३८)

है सुन्दित ! जिस साम आपने व्यापन लिने यह थात-अस परच्छाची होता है, **🔠 प्र**थम सुहे भी जन्म-जनमें 🚃 📰 अपि होती यहे।'

इस 🚃 फल देनेवाली परल-वातै-अलको जो करता 🕏, बढ भुरावन्द्रदे सभी क्लोंसे पुरू हो सूर्वलोकमे सम्पानित केल है और अपने आगे-पेकेको इसीस पीक्रियोका उजार 🚃 है। 🔣 इकार पाहरूर अवन 🚃 है, 📹 भी करणाच्या पार्थ 📰 है।<sup>५</sup>।

(अध्यान ३९)

मन्दारवाही-क्रत

धगवान् श्रीकृष्ण केले—एकन्। वन मै 📰 पाणेको दूर करनेवाले ह्या समस्य करूपसम्बोको पूर्ण करनेवाले अन्दर्श्यक्री नामक वरतक विषयन करतकता है। उसी माब मासके सुकल एककी पश्चमी विकिको सरफ चेकन कर नियमपूर्वक रहे और बहीको उपवास करे। स्थानीक 🚃

को तथा अन्दारका पुष्प पक्षण कर छीउँमें रायन करे। पहीको हातः उठका सामादि वरे तथा सारकामें काले तिलोंसे एक अहदल कवल बन्हरे। उसपर हरवर्षे कवल लिये भगवान् सुर्वेकी सुकर्वको प्रक्रिया स्वापित यते। 🚥 सोनेके अर्कप्रवर्धेसे तथा नन्मदि उपयाग्रेसे अहदल-कमलके दलींमें

सुवर्ण अब्दि अञ्चलको प्रदान करे और दान करते समय वह मन्य पढ़े---

क्ये क्यानाम्य प्रदासकाय छ। सं च वै वास्त्रसम्बद्धात् संस्थरकर्दमत्॥

्(तत्तपर्व Y⊢ ११)

ो मन्द्ररपका, मन्द्ररताथ भगवान् सूर्य ! अहप हम्मानेनोका इस संसरकारी पहुले उत्हार कर दें, आपको नमान्त्रस है।'

इस विकिस को मन्दर-व्यक्ति वह सभी व्यक्ते पुत्र क्षेत्रर एक करवंत्रक सुख्यपूर्वक स्वर्गने निवास करता है और को इस विवासको पहला है अपना सुनता है, वह की सभी व्यक्ते पुत्र हो जाता है<sup>1</sup>। (अस्माप ≡०)

#### ००६००६०० ल्हिल्हाच्छी-सरकी ।

भगवान् औकृत्यन कोले— गयन् ! भवत्यः वास्तः सृपता प्रवाने गरीनमें यह तत होता है। यह दिन काम कंप, सीभाग्य और संतानको इच्छावाली जीको पानिये कि वह मदीये आनं को और एक विचे सिहते जिस्से कल् लेका वह आये। पिर प्रवाको प्रवाद बनावर उसमें दीन प्रश्विता वहे। वह सिंध कल्कापय प्रवाद वस्ते कर सिंध वह सिंध कल्कापय प्रवाद कर सिंध वाल्यामयो, त्रपोकन-निवासिनी स्वाद्धिक लेकाम हो, अदनवार वस्ते करवीर, अशोक, मालसी, नैस्तेस्पत, केनकी वस्त सगर-पुष्प—इनमेंसे अस्तेक्ष्मी १०८ वा २८ कुक्कालि अस्तिके स्वादित सम्बन्धे दे—

सरिक्षे अस्ति 🎹 सँग्रामरी भागवासिकः

सीमान्यसम्बद्धाः वसी देवी क्यो तथः ॥

(अगरणी ४१ । ८)

इस प्रकारते पूजन करनेके चळात् तरह-तरहके खेदना,

कुमारक्ही-अतकी।

भगवान् श्रीकृष्य बोले— भवस्तम महस्त्रन पृषिष्ठिर ! मार्गशीर्व मासके शुक्त पक्तको कही लिकि समस्त पापनशिनो, धन-भान्य तथा शान्ति-प्रदायिनो एवं अति- केरक क्रिक्स कर प्रकार, क्रमण, क्रमण, विस्त, करेला, क्रिक्स, क्रमण, क्रमण, क्रमण, क्रमण, क्रिक्स करें। इस लिपियं प्रकार क्रिक्स करें। इस लिपियं प्रकार क्रिक्स करें। इस लिपियं प्रकार क्रिक्स करें। इस लिपियं करें। इस लिपियं करें। इस लिपियं करें। क्रिक्स करें। क्रमण करें क्रिक्स करें। क्रमण करें क्रमण करें क्रिक्स करें। क्रमण करें क्रिक्स करें। क्रमण करें क्रमण क

बरण्यकारियो है। उसी दिन कार्तिकेयने व्याकासुरका नथ विश्व था, इसलिये यह बही तिथि स्वामिकार्तिकेयको बहुत किय है। इस दिन किया हुआ जान-दान आदि कर्म अध्य

१-मारापुराको अध्याप ७९ में धन्दरस्थानी जनसे इसी mosts 🔠 हुआ है।

सं॰ मन् पु॰ अं॰ ११—

होता है। दक्षिण देशमें स्थान कार्यक्रिक्य में इस स्थान दर्शन करता है, का निःसंदेह ब्रह्मस्त्यादि फ्योसे मुक्त हो जाता है, इसलिये इस तिथिये कुम्मरस्क्रकीयों सोने, चर्टि अथवा मिट्टीयर मूर्ति बनवाकर पूजा करनी पाहिये। अथवापने जान तथा आवारनकर, पद्मासन समाकर बैठ जान और स्थान कुमारका एकापनियाने प्यान करे। इस दिन उपवासपूर्वक निर्माणिका मन्त्र बहुदे हुए इसके मक्याकर

क्षण्यसम्बद्धानां भवाषुत्रिकीतीताः। स्थानम्बद्धानां करेणं भीताः स्थानम्बद्धानां

कलहासे अधिनेक करे—

(2000) 13:10)

हरा प्रकार अधिकेक कर मनवान् सूर्वका कुरूर करे. गम्ब, पुंच, धून, व्या कि उपक्रतेग्रस कृतिकाकुः निम्न मन्त्रको पूना करे—

्राध्यक्ष सम्बद्ध स्थापना वर्णकार । सुध्यक्ष पुत्र वर्षाम्यक समोद्यम् से स (अस्तर्ग ४३ वर्ष)

दक्षिण-देशोराच अस, ब्राह्म और महान करन हैं।
चन्नी (इसके सद साधिकारिकाके परवित्र करने, कुन्न,
करापपुत्त पन्न साध उनकी मारा भगवारी करेती — इनका
प्रतक्ष पूजा हैं।
चन्नी सुंबर्गकी अस्ति काम करने हैं।
नाम-मन्त्रीमें आव्यपुत्त किसीसे इक्न करे, स्वाप्त करने
भक्षा कर पृतिका दुस्तकी सध्यप्त सन्न करे। सनकः
वाद्य पहिनोपे नारिक्ष, मानुसून (विजीप नीन्), करेक, करस
(करहरा), सन्नीर (एक अध्यक्ष क्षिण), दक्षिण,

महान करें। वे परंग उपलब्ध न हों तो इस कालमें उपलब्ध सेवन करें। अंश्रिकाल सामि बने क्षण अथवा कुश्चटको 'होबानी श्रीकालम्' ऐसा वेककर महानकों दें। बारह महोच, कार्विकेत, कश्मी, मलपहाप्रणी, कमाप्रिय, शक्तियर तथा हर—हन स्वास कार्विकेत्रका पूजन स्वास्त्र नामेकि अवस्त्र 'होबालम्' यह पर चोजित करें। यथा—'सेनामी श्रीकालम्' इस्त्रारे। इसके पश्चाम् माहायोको भोजन कार्यकर स्वास्त्र स्वास्त्र पोजन करें। स्वास्त्र होनेपर कार्तिक श्रीके ह्याल प्रवस्त्र पहुंचने कहा, आधूवण स्वास्त्रिक व्यक्तिकाल पूजन एवं हमन करें और सथ शामकी माहायकी

उत्तर प्रतीको ज्ञास । इन्हलोकमे निवास करते हैं, अतः ! स्थान प्रकार प्र

इस विरोधने 🖟 पूरण सम्बद्ध भी इस अक्सो करते हैं, वे

(सम्बद्धाः ४२)

### विजनसम्बद्धानी-इत

चुचिहिरने चूक्का—देव ! विकया समगी-वतमें किसमी पूजा की जाती है, उसका क्या कियान है और क्या फल है ? इसे आप कालानेकी कृता करें।

चनवान् श्रीकृष्य बोले—इक्ष्य् ! सुक्त काणी स्रातानी विधिको पदि आदिलकर हो वो उसे विकास सम्बन्धी कहते हैं। वह सभी पाठकोका विकास करनेकारी है। उस दिन विश्व हुआ सान, दान, वप, होम तथा उपवास आदि कर्म अस्य प्रत्यक्षक होता है। यो उस दिन परत, पुष्प आदि सेकर प्रमावन् सूर्वकी प्रदक्षिण साता है, वह सर्वगुणसम्पम उत्तय पुरस्के प्राप्त साता है। पहली प्रदक्षिणा मारिक्ल-परलोसे, दूसरी स्वन्तगरसे, साली विजीध नीवृते, वीधी बदलीयताने, पाँचमाँ जेह कुम्माक्से, क्रडी पर्के हुए

🚟 में सुख भोगसर पृथ्वेचर जन्म प्रमुख करता 🚃

च्यानमी रूपाया सेरापरि होता है।

तेतृके फलोसे और साम्या वृत्ताक-फलोसे का जावक अहोत्तरशत प्रदेशिका करें। मेती, साम्या, जीतक, प्रमा, केतक, प्रमा, केतक, होर और वैदूर्व आदिसे भी प्रदर्शका करें कवा अखरेट, केर, साम, करीटा, साम, स्थान (अक्सा), वामून आदि वो भी तस साम केवलें केठे वहीं, न किसीको स्पर्त करें। प्रविध्या करते समय केवलें केठे वहीं, न किसीको स्पर्त करें और न किसीसे कात करें। एकालियाके समीधार भी दें। किसीकालियाक स्थान करें। एकालियाक करों स्थान करें किसीसे भी दें। किसीकालियाक करें। एकालियाक करें। एकालियाक करों। एकालियाक करों। एकालियाक करों। एकालियाक करों। एकालियाक करों। किसीकालियाक करों केवा करायक करों। किसीकालियाक करों। किसीकालियाक करों। किसीकालियाक करों करायक करों। किसीकालियाक करों करायक करों। किसीकालियाक करों करायक करों। किसीकालियाक करों करायक करों करायक करों करायक करों करायक करों करायक करों। किसीकालियाक करों करायक करायक

(कारणे ४६ - १४) इस इतमें उपयास, नतमात अथवा श्रमणित-सत गरे । इस विजया-संश्मीका नियमपूर्णक सत करनेसे रोगी रोजारे मुक्त ही जाता है, दक्षित लक्ष्मी क्षणा करता है, युक्तिन पुर प्रथम करता है तथा विचार्थी निका प्राप्त करता है। सुक्ता प्रश्नारी आदिरमकारपुक्त सात संश्मीकोंने नकारत कर मुख्या

आरोज्यमानुभिज्ञनं पुतं हेंहैं। क्लेड्स हे स

पोजन करना पाहिना पृतिपर पराशके पर्तीपर शयन करना
पातिने । इस प्रकार अतकी सम्माध्यक सूर्वभगवान्छ पृत्रनकर
(पायकिकान करः) से अहोत्तरस्त स्थन करे ।
सुर्व्यकाने सूर्वविका स्वतित कर रक्तवस, गी और दक्षिणा
इस मनवस पाति पर्वाच करते । पादक्यको प्रदान करे—
के पात्र स्वतिकार्वको प्रवाच करा।
(प्रवचन प्रवच स्वतिकार्वको प्रवच स्वते ।
स्वत्व स्वतिकार्वको प्रवच स्वते ।
स्वत्व स्वतिकार्वको प्रवच स्वते स्वतः ।
स्वत्व स्वतं स्वतं स्वतं स्वतः ।
स्वतं प्रवच स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं ।
स्वतं प्रवच स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं स्वतं ।
स्वतं प्रवच्ये स्वतं स्

राने, जेती, विद्यान, रीर्जपु, नेरोग, सुखी और झपी, भीड़े तथा स्थान स्थान पदा का कि है। यदि की इस बतको की से का पुण्यभागिन कियर उत्तम कर्ताको प्राप्त है। राजपु ! इसमें आवको विश्वित् भी संदेह नहीं करना स्थिते। (सामा ४६)

है, ......... लोकमें वह विजयसप्तनीके बामसे विश्ता है। इस

ताको पारिकाल पुरुष प्रतिस्थि प्रकास सुर्खोको भीगकर सुर्वस्तोकने निकास करण है और फिर पृज्यीचर जन्म प्रदुषकर

### आदित्य-यण्यालदान-विशेष

सगवान् श्रीकृष्ण बोले—महाराज ! अव मै सकत अतुर्वेक निवारण करनेवाले जेपल्य आदित्य-क्वारणे दानका वर्णन करता है। वो अध्यक्ष गोधूम्के कृति नुद्र गोके पृतमे व्यवस्थात प्रश्नक सूर्वत्वक्रके समान एक अति शुन्दा अपूर्व बन्तये और किर सूर्व-प्रगवन्त्व पूजनकर उनके आगे रत्तवन्त्रका क्वार अधिताकर अवके उत्पर वह सूर्वमण्डलातक मन्द्रक (एक प्रवारका विहक) एके। आग्नुगको सादर आमन्त्रित का रक्त क्या तवा दक्षिणसहित वह स्थापको प्रश्ने पहते स्थापको

अवस्तिकोअसोनको राजाने विकित्तिर्विक्यः।

स्व वि अतिगुद्धेस्तुवनम् ॥ (अत्यवि ४४ । ६) स्वाप्त वि अस्तवि प्रति स्व वेशि— स्वाप्ति वर्ग वर्ग पुत्र सुर्वार तत्त । स्वादिक्योति दर्श विवास स्वाप्ति ॥ (स्वरूप्ति ४४ । ६)

इस ब्याब विजय-सर्क्तांको मण्डकक व्या करे और सम्पर्क होनेपर सूर्वपगवान्त्री व्यावम लिये शुद्धभावसे निस्य ही पण्डक प्रदान करे। इस विविसे जो मण्डकक दान करता है, वह पगवान् सूर्वक अनुबद्धसे ब्या होता है और स्वर्गस्तीकों भभवान् सूर्वकी ठरह सुरोगित होता है।

(अध्याय ४४)

। संविद्ध चविष्यपुराणाङ्क

#### कर्जस्त्रापी-प्रव

वृधिक्षिरने कहा—भगवन् ! घन, सीका तथा समस्त मनेवान्सित कामकानेको कटन सन्दर्भावतका अप वर्णन करें।

धरायान् श्रीकृष्य बोले — एउन् ! उत्तरकाके नाति।

ा अनेपर भुक्त पक्षमे पुरुषकाची नक्ष्ममे स्थानकाची सप्तमी-सिधि-अस प्रमुष करे । यान, सिल, जी, क्षा मूँग,गेई, मधु, स्था भोजन, मैजुन, कांस्क्रकाचे कोचन, सिल्क्यम्, अंचन और ज़िल्मकर पीसी हुई करतु—इन सम्बंध यही प्रयोग न करें ! प्रदर्शका यहीके दिन परित्यण कर प्रमान वनाका क्रेश में और देवल, सूनि तथा पितर—इन प्रमान वर्षणकर क्राकन् प्रमान करें । वृत्यपुक्त तिल और जीका प्रमान सूर्यका प्रयान प्रमान हुआ सूनियर प्रमान करें । इस प्रमान स्वर्थका प्रयान करता है, अपने सभी

# कुळूट-वर्कटी-जलकवा (मुक्ताधरण सवामीजत-कवा)

वर्गकान् श्रीकृत्या बोले-महाराज पृथिकर !

एक क्ष्म महर्षि लोगरा मधुर अस्यै क्ष्म क्ष्में मेरे क्षणपिता—देवकी-वस्त्रेचने उनकी कही कठाये क्ष्मक्ष्मान्य हैं।

एक क्ष्में के प्रेमसे बैठकर अनेक क्ष्मात्मी कथाएँ कहने
लगे। उन्होंने उसी प्रसंगमें मेरे क्ष्मानी कथा— देवकी !
कंसने तुन्तरे क्ष्मुतने पुत्रेकरे कर हात्म है, अवः तुन कृतकता
एवं दुःक्षभागिनी वन गयी हो। इस्ते प्रकारके क्ष्मीन कलाने
अन्द्रमुखी नामकी एक सुलवाका एनी की व्यवस्था हैंग दुन्ती
हो गयी थी। परंतु उसने एक ऐसे ब्राज्य अनुहान किया .

प्रभावसे वह जीवन्त्रम हैं गयी। इसलिये देवकी !
तुम भी उस लिया अनुहानके प्रचानसे क्षित्र के काओगी,

भारत देवबरीये कनले युक्त — महरवन ! वह पन्त्रमुखी यूनी कौन वो ? कसने सीमान्य और विश्वनक पूजा करनेवाला कौन-सा कर किया वा ? विश्वक करण उसकी संसान जीवित हो गयी। आप मुझे भी यह कर करनानेकी कृपा करें।

स्प्रेमसम्बुनि बोस्ते—अधीन कासमे स्वीपक्षे त्रुव नामके एक असिद्ध एमा है, उन्होंकी महाराज्यको जन कर्मुखी तान एजाके पुरोहितकी पत्नी मानमान्तिकारो उनी कर्मुखीकी बहुत अति सी। एक दिन वे दोनों संविध्य स्वान करनेके लिये सरपू-तरपर गर्मी। उस समय नगरकी और भी बहुत-सी सियाँ वहाँ कान करने अपने दुई भी। उन सम क्रियोंने सामकर हा

भौतिमुर्वक बनाविधि अनवी पूजा की : अननार उन्हें प्रणासकर 🕶 📗 📖 बर जनेको 🚃 हुई, 🚃 महरपनी क्युम्बी 📖 पुरोहितको 💹 मानपनिकाने 💹 पूरा-🚃 । तुमलोगीन यह 🚃 और मिल टोहरपसे पूजा 🔤 🖁 ?' कुसकर के कहने स्थरीं — 'हमलोगोने भगमान् रित्य एवं कार्या स्थाप 🚃 🔛 🗎 🌃 उनके 🔤 आस-स्तर्पण का का मूचर्णकृत्यन 📖 भी शब्दों 📖 किया है। इस 🚃 🚃 🗯 भारत 🛗 होत्री 💹 दिला-पार्वतीका पूजन भी मिला करेंगी।' यह 🚃 इन दोनोंने 🖩 यह इस बस्तेवर निश्चय किया और वे अपने पर ब्यू गर्वी तथा नियमसे बत करने लगीं। पांतु कुछ समय बाद राजी बन्द्रमुखी अबदवरा वत करना मूल गर्मी और सूत्र ची २ वर्षित सम्बद्ध । 🚃 कारण मर्हनेके अनन्तर वह जानरी हाँ, पुरेक्टिकारी शांका भी सत-पञ्ज हो गया, इसरिनये मरसार मा पुसूरी हुई। उन 🚃 👚 उसकी 🚃 🚃 पूर्वज्ञथारे स्पृतियाँ वर्ग रहीं। 🖚 कारके अनका देशेंकी मृत् हो गयी। 🔣 उर्न

क्यूपुर्वो 🛮 🚃 देशके पृथ्वीनाच नामक रजाकी 🌉

रानी 🎹 पुरेशित अभिनीलानी भी मानमानिका उसी राजके

पुरेक्षितको सभी हुई। सनीका उस्प (करी और पुरेक्षितको

स्रीकः कम पूरण था। भूकपत्रके अपने पूर्वक**णोकः श**न **या**।

उसके बाद उत्तम पुत्र हुए। परंतु राजी ईबरीको कहुत समयके

बाद एक पुत्र करका हुआ, वह रोगयस रहता का। इस कारण

चेद्रे ही समय कद (जने वर्ष) उसकी मृत्यु हो गयी। तम

कुरते 🔳 पूर्वक अपने 🔤 यती ईक्सीको 🚥 🕏 देने

वनके पास आयी। पूजवाके ज्युनसे पुत्रोंको देखका किकि मनमें हैंको उरका हो गयी, फलनकरण उसी ईकिंगे पीर-वीर पूजाके सभी पुत्र मरका लिए, परंतु कावान् शंकरके अनुप्रहारे में मरकार भी पुनः भीकित हो उदे। तब ईकिंगे पूजाको उपने यहाँ बुलकाना और उससे पूजा—'स्वित ! तुमने देसा कौन-सा पूज्यकर्म किया है, जिसके कारण तुम्हरे मरे हुए भी पुत्र लिखा हो लिखा है जिसके कारण तुम्हरे मरे हुए भी पुत्र लिखा हो लिखा है जिसके कारण तुम्हरे विरंजीयी पुत्र उरकार हुए हैं, मुख्य आदि आकूकोरे लिखानी

चूकारको चाहा--स्तीत ! मुतरापरण विलयाम माहरूप है। भाइपर बासके शुक्कः सप्तामीको किथे जनिवासे इस बाहमें

आस-निवेदित सूत्र (दोरक) 🌃 प्राथमे 🚃 🛗 📖

बनाकर उसमें शिल-पार्वतीका 🚃 🔣 📰

उपकास भरे। कारमें सामा समा करे। उपायको दिन दिन-पार्वतीका समास्त्रों दूधन कर का निर्मा समास्त्री रसामार बाह्यपको दे हैं साम समास्त्रीक समाध-जेवन स

कराये। इस अर्थक करनेसे सभी पदार्थ mm होते है। सकी ! mmm मासके सुक्त पकारी mmm

तुसने और 🛅 साथ 🔣 इस मतुष्ट निष्म ऋण 📖 था,

अधिकृष्य कोले — महाराज । (मेरी पाताको मेर-जैसा पुत्र पैदा — और मेरी इतनी आनु कही तक पंत्र आदि सुद्दोंने — की गया।) यह मसंस्थारा मेंने इस मतका — है, अन्य में की

भिषेण नहीं होता और व्यक्ति 🔤 वित्यलेकाने 🚃 मरेक्<sup>र</sup>। (अध्यक्त ४५)

#### रुपण-सपार्थका

भगवान् श्रीकृष्ण वोले — महाराज ! अन में समामी-करावन वर्णन करता है। आप इसे प्रीतिपूर्णक कृते। माय व्यवस्थान कर्णन करें। अष्टमीके दिन तिल, पिट, ह्यां और औदन कदावनिये चोजन कराने, ऐसा करनेसे अधिकेंग सङ्ख्या फल जाना होता है। फल्गुन कुक्ला भगवान् सूर्यका पूजन करनेसे कार्यन यहाना फल क्रम्य है। केंत्र कुक्ला सम्बन्धि

१-इसी बाज बाज है हिन्दार के स्थाप क्षेत्र के स्थाप का प्रकार क्षेत्र किया क्षेत्र का अस्ति पुस्तकार स्थापिक का गया है और उसके स्थाप प्रतिकार प्रतिकार क्षेत्र का बाज का है कि साथ है कि साथ है कि साथ का प्रतिकार का का प्रतिकार का प्रति

मासमें शृथि जन्मसे सूर्वका पूजन 📰 🖩 बुलापुरन कनका फल 🚃 होता है। आधिन सुक्ता संख्यांको 🚃 🧰 करनेसे 🚃 पोदानका 🚃 मिसला है। कार्तिक 🚃 सप्तमीने सप्तवाहन दिनेसकी पूजा 🚟 पुष्परीक-वागक पाल प्राप्त होता है। मार्गरीर्थ 📖 सुमल पश्चको 📖 पानुको एवा करनेसे दस राजसून-क्योका फल **....** श्रीतः है। पीप मासमें सुचल पक्की सन्दर्गान्ये भागात्मी पुत्रा करनेसे अनेक 🔤 😑 मिलल 🛊 । इसी 📟 प्रत्येक प्रातके कृष्य १४की 🚃 वी उत्त-उन 🚃 पूजा करनी चाहिये।

महाराज ! इस 📖 🚃 वर्गतक वंड और पूजन का करे। 🔤 भूमिनर 🚃 झय, 🖥 हाय 📟 📟 हाथ हाथ 🚃 🚃 🚾 🚟

सुर्वमञ्जल कराये । 🚃 📖 रक्तपुर्व्ये, 🚃 पृथ्ये

嘿 आदिसे निर्मित पूर तथा अनेक प्रकारके नैयेचॉसे पनवान् सूर्वका पूजन करे । अन्न तथा स्वर्गसे भरे कलागीको उनके सामने लागित को । फिर कमिसंस्कर कर तिल, पृत, कु और व्यवस्था समिकाओंसे 'आ कृष्णेनः' (यकुः

११ ( Y3) इस कनसे एक समार अक्ति दे । अनकर **प्रदरा** 🚃 📆 (कपस्, एक-एक 🚃 मी, स्वरी, पूरा, 🚃 📰 केवर देकर क्या-पार्वन करे। बादमें सर्व भी 🔤 📰 शोजर करे।

१स 📖 🖹 📟 🖦 🖦 नेरोग, 🚃 पता, सम्बद्ध और दीर्चमु होता है। यो मुख प्रकार हिं। उनकर कर मनवान् सूर्यका दर्शन करता है, **थह सभी पायेशे मुक होकर सूर्यलोकने निवास करता है। यह** उनक-सत्तरीतक सन्दर्भ असुध्येको हु। यर आरोग्य और

कुर्वलोक प्राप्त कारनेकरण है, ऐस्स देवले कारवरा कहना है। (MINDE No.)

# याल्याच्यसपायी-प्रातको 📟

महराज चुनिविष्ठले स्वयः—पानन् । वरि इस संसार-सागरसे पार 📰 📰 📰 वर्ग, आवेग्य एवं सुद्धानदायक कोई क्षा हो तो ठले अप कदल्यनेकी हुन्य करें ।

भगवान् श्रीकृष्यः वोले---रावन्! 📰 🐲 शक्तमेन्द्रे अहेदरकार हो, 🔣 विकय-सक्ती थे। ध्रायक-सन्तमी कहते है। 🦏 तिथि वहापुरवनके है। इस 🐺 प्रातःकाल गोद्रायमुक्त जलसे स्वत्नार सुधल क्या धारण कर अक्षतीरे और मृत्य एक कर्णिकरपुरः अस्ट्रासकारः वन्त्रवे 🚃 पूर्विद आठो दलोंने समराः 🔣 दिसले 'ঽ नवसव

श्रथः,' अस्तिकोण्ये '🖎 मार्गकाच क्यः', 🚃 दिसाने 'को विकाससम्ब नकः', नैर्वात्मकोनमें 'को विकासे करः', पश्चिम दिशामें 'के स्थातात प्रवः', कामकानेकमें 'के

भारतराय 📖 ', उत्तर 🔤 'ॐ विकारीका कः' कन

प्रकारसम्बी-अलकी

धराबान् श्रीकृष्ण कोले—धर्मस्य ! अन में सधी भूपोको नह 🚃 तम्ब उद्यु, असोम्ब और अस्त्व ऐकर्न प्रदान करनेवाले शर्कपसन्तन्त्र-वरमः 📟 🚥 👯

'a' साथे नवा'---इस प्रकारमे नाम-सन्बोहरा क्रिकाओंने सब्बे करवायेंसे पूजन करे। शुक्त क्या, फल, क्षा क्टबं, भूव, पुरस्कला, पुरू और लक्षमसे नगलमान

इन जल-मन्त्रेसे केटीके कथर पूथा करे । इसके बाद व्यवती-🚃 🚃 🚾 व्यक्तिकालेका अरावे । गुरुको सुवर्गसहित विलयत-दान को । दूसी दिन 🚃 🚃 नित्य-क्रिपासे निवृत्त हो अञ्चलिक साम पूरा वृत्त पायससे बने प्रथानीका 🚃 📰 । इस प्रकार एक वर्गतक भगवान् सूर्यका पूजन एवं

अतकत उद्यक्त करे। 🖏 कलता, मृतपात्र, सुकर्ग, क्या. अवपूरण और सकता में अवस्थाने दे । इतनी चरित न हो से गोदान करे । जो इस अस्वानसन्तर्गा-प्रतको 🚃 🖟 असमा

व्यक्तम्बद्धे पढ़त वा सुनदा है, हह सब्दे प्रयोसे मुक्त होकर सुर्वलोकमे 📟 💼 ध (अन्याप ४८)

🚃 मासके जुबल पश्चमी सन्तरमेको 💹 तिलीसे भुक्त असमे 🚃 व्यक्तिको 🚃 बहे तथा 📖 कपर कुंकुमधे वर्षिकासहित अङ्गदल-कमलकी रकत 🗐 और 'सचित्रे नयः' इस नाम-मन्त्रसे गन्य-पूज्य अदिसे सूर्वजी पूळा करें। जसपूर्ण कराराके उत्पर उत्पारते भट पूर्णका स्थापित करें। उस कराराके रक्त बका, क्षेत्र पास्त्र आदिते आलंकृत करें, साथ ही वहाँ एक सुवर्ण-निर्मित अन्त्र भी स्थापित करें। सर्वात्तर भगवान् सूर्वका कार्याक्त्यर इस मन्त्रके अन्त्रक पूजन करे---

विकेदेशमधी करणाद् शेवारा**देशि** मेदासी स त्यवेषामृत्यार्थासम्याः साद्धि सम्बतन्तः। (स्थारार्थे ४९ १ ५-६)

हैं भगवान् सुनिव । यह सारा विश्व एवं सभी देवक आयोर है अध्यय है, इस कारण आपको ही केंद्रीका तत्का एवं समुत्रसर्वाच कहा गया है। हे सकाश्रवेष । and केंद्री एक करें।

वदगन्तर सीरकुरम्मा<sup>र</sup> कर 📶 अभ्यक्ष सीरपुरा<del>वकरे ।</del> सक्य करे। अञ्चलीको जतः उठकर साम आहि सम्बद्धान

भगवान् सूर्वका पूक्त करे । उत्पक्तत् कार्य स्वयंत्री

व्यान करने देकर रार्कन, मृत और प्रायससे यथानांक व्यान करने । स्वर मा सैन होकर तेल और स्वानक्षित केलन करे । इस विविध्से प्रतिन्यस यत करके वर्ष पृत्र होनेवर प्रावन्ति उत्तर राजा, तृप देनेवाली गया, नार्कन्तु वट, गृहरूके उत्करलोंसे युक्त मकान तथा अपनी सम्बन्धि व्यान व्यान हुआ एक व्यान व्यान तथा अपनी सम्बन्धि व्यान व्यान हुआ एक व्यान व्यान कर से व्यान व्य

#### क्रपलसपायी-का <sup>भ</sup>

सम्बान् श्रीकृतम् वीती—नकारकः। अत्य वै क्यारप्रमानगी-जातकः वर्णनः व्याः है। व्याः व्यानुने सुन्तः है धगवान् सूर्य असत् को वि है। व्याः व्यानुने सुन्तः पक्षको सप्यानके अस्तः व्यान्तः व्याने सुन्तनं क्याः। अवव करे। एक पात्रमें सिल स्वान्तः स्वाने सुन्तनं क्याः। अववार स्वापितं करे और उसमें भगवान् सुर्वको प्रकान कर से क्योंके आवृत करे तथा गण-पुष्पादि स्वच्यांने व्यान्तः निक्तिविक्य स्त्योकसे प्रार्थना करे—

नमसे स्थापना क्या स्थापनारिये ।। विकास नमञ्जूषा प्रणानंत क्योज्य से । (स्थापन ५० (३०४)

हदनका कहा, पाला तक अलंकावेले सुमन्दित उद्य

(अध्यय ४९)

(अभाग ५०)

<sup>्</sup> अनेदरे 🚃 वयस्य ५०वं 🚃 सूर्वत् य सीरहर 📖 ह

२-सेरपुरावसे हुन्या सरवर्षे 🖟 वर्षण्यपुराव और सम्बद्धान । आस्वरत सीरपुरावके काले 📧 🗷 वो सूर्यपुराव हैं, घारावर्षे वे पीयपुराव है सीर नहीं ।

१-भीन्यपुरुषम् 📰 अस्तान भी मत्त्रपुरुष्टे 🔤 ८० 🛘 अन्य इती स्वर्णे 📟 🔛 ै ।

Y-वर्ष ज्ञा-निकार्ध एवं पुरुषोपे इते हैं 📰 🚾 🖹 🚃 🚥 है।

### शुभरत्ववी-व्रतकी विवि

सगवान् सीकृष्ण केले — कर्म ! त्या में एक दूसरी

इसमें उपवासमार व्यक्ति होग, गोक तथा दुःखोंसे मुक हो
वाता है। इस पुण्याद वतमें आधिन मासमें (शुक्त कवाते
सखागी तिथिको) कान करके कवा विश्वासमानिको
स्वतित्वाका कराये। वदनसम् मन्य, मास्य गया अनुतोपवादिको
पतित्वाका कराये। वदनसम् मन्यानिकाल कराये।
स्वतिकाल कराये। वदनसम् स्वतिकाल कराये।
स्वतिकाल कराये।
स्वतिकाल कराये।
स्वतिकाल कराये।
स्वतिकाल कराये।
स्वतिकाल करायको
स्वतिकाल करायको
स्वतिकाल करायको
स्वतिकाल करायको

तरपश्चान् तामपात्रमें हात 🛗 🛗 स्वाचन उनका वृषधमंत्र स्वर्ण-प्रतिमा म्बापित मने और उसम्बं वस्त, मारण, युद्ध आदिते पूजा सरे। सामेक्सलमें 'अर्थका क्रीकालम्' 🖂

सप्तमी-सपनातः और 🚃 |

महाराज पुणिश्चिरने पुष्टा— हथी ! मनुष्यको अपने भगमें उसूत उद्देग मा खेद-किश्च और किश्व और मा निवृत्तिके लिये अञ्चल'-शास्त्रिके निमित्त कीश-सा पर्य-कृत्य करना चाहिये ? मृतकत्सा स्थिको (किसके बच्चे पैदा होकर मर जाते हैं) अपनी शत्तिको शक्त और दुःस्कादिको मा

धगवान् श्रीकृष्ण घोले — एवन् । पूर्वकण्ये पर इस जनमें ग्रेग, दुर्गत तथा इष्टक्नेकी मृत्युके कपने परिता इस है। उनके विनासके लिये में कल्याणकारी सप्तानी-कपन नामक प्रतका वर्णन कर रहा है, यह सोगोंकी पीड़का विनास करनेवाला है। यहाँ दुधमुंहे शिक्तुओं, कुळे, अनुसे और नवपुत्रकोंकी आकरिंगक मृत्यु होती देखी कार्त है, वहाँ उसकी सालिके लिये इस 'मृतकासामिकेक' को सामा हम है। सन सम्बद्धी चरित्रपूर्वक अञ्चलको निवेदित करे।
 पद्धानामा अञ्चल धरे तथा प्रसिपर हो मालार्थरिकत

होकर रूपन करे। ::: पिक्यूर्वक बाह्यगोंको पूजा आदिसे संकुट करे। ::: मसमें : वक, :::: वृषध और गी :::: पुक्रपूर्वक दल करे। संवत्स्रको अवसे (ख, गुड़,

का, 📰 आसन, पद्य, तकिया आदिसे समन्त्रित शब्दा,

पूर्व विकास विकास है और देवस्तेकमें पूर्वित तथा अक्षयभ्येषा गुजानिक व्यक्ति है। व्यक्तिके व्यक्ति वह पृथ्वेषर व्यक्ति व्यक्तिक व्यक्ति व्यक्ति सम्बद्ध क्षेत्रा है। व्यक्तिकारी गुज-सन्दर्भ व्यक्ति व्यक्तिकारी स्टेक्स्ट्रे भूगहत्या आदि

नाम कि है। हा शुल-स्थानके माहात्वको जो हाल है अथका सम्बद्ध भी सुनता है, यह हाल सुरनेपर सम्बद्ध होता है।

(अव्यक्ति ५१)

📰 समस्य असूत वस्थती, 🔤 और विश्व-प्रामीक 🖫

••••• है। ••••--करपके वैक्सक मन्त्रपति सत्त्वपुगर्ने हैहवर्वदक्षिय

कुलको स्रोधा बहानेकात्व कृतवीर्थ नामक एक 
 क्या व्या उसने संतहका हमार वर्षतक धर्म और नीतिपूर्वक
 क्या क्या क्या प्राप्त प्राप्त क्या क्या क्या की प्राप्त के व्या

क्यानमृतिके आपसे दन्ध हो गये 🔤 समाने भगवान् सूर्यकी विधिपूर्वक उपसन्त आस्थ 🔤 कृतवीर्यके उपवास-तह,

और खोजोंसे संतुष्ट होकर मगवान् सूर्यने उसे अपना दर्शन व्यव और कहा--- 'कृतलीर्थ ! तुम्हें (कार्तवीर्थ नामक)

एक सुन्दर एवं विरुक्त पुत्र उसन होगा, किंतु तुन्हें अपने पूर्वकृत प्रयोग्धे विनष्ट करनेके सिन्धे स्वयन-सरतमी नामक हत करना प्रोगा । तुन्हरी मुशकस्त्रा प्रमीक कम पुत्र असन हो जान तो

१-पविषयुक्तकः 🖿 अध्यय कारमुक्त (अध्यय ८०) में इसे करने ऋष केत है।

२-साववेदीय 'अस्तुवाहाय' २६) तथा 🚾 (७२) वे अस्तुव-सामिता 🚾 उत्संत्र है।

सात महीनेपर बालकके जन्म नशक्की 🚃 छोड़कर 🧰 दिनमें प्रह एवं तारमलको देखकर सहाजोहार व्यक्ति-वाका व्यक्तिये। इसी प्रकार कड, रोगी 🚃 अन्य लेगोंके लिये किये जानेवाले इस वर्क्य बच्च-कांत्रका परिस्थान कर देना वाहिये । योद्रायके साथ छाल अनक्रमीके कवरतेसे ह्व्यान प्रकार मातृकाओं, भनवन् सूर्व 🌉 🚃 तुष्टिके 📰 अर्थन करना चाहिने और 🛍 कन्कन् सुर्येक नामके अधिने 🔤 📟 अनुसंतर्भ प्रयान 📟 चाहिये। फिर करने स्तरमुक्तमे ची अधूनियाँ देनी चाहिये। 🚃 आहुतिमें 🚃 एवं पलाराकी समित्राई अनुक 🚾 चाहिये तथा हवा-कार्यने बाल शिल, हैं। एवं पीकी एक सी आह अमृतियाँ प्रदान करनी चाविये। इसको बाद शीवल गहामससे कान करत चाहिये। बदनता कार्यो 🗫 हर बेदत प्राह्मणहास चारों कोजॉमें चार सुन्दर कराश 📟 कराये : पुन: उसके 🛲 📖 प्रीक्षण बलकः सरे। उसे दही-अकृतसे निमुच्ति करके सूर्वसभावी सक प्राचाओंसे अधिपन्तित कर है। फिर उसे तीर्थ-जलारे परंबर असमें एक भा सुकर्ण भारत है। पूछा प्रसार राज्य परिवासी सर्वीचित्र, पञ्चनान्य, पञ्चनात, फाल और पूर्व कालकर रुप्ते वक्तेंसे परिवेशित 📖 रे । 📰 हाचीसार, पुढ़शाल, निवीर, नहींके संगम, तालक, गोरक्त 💹 धनपुर-पून 🚃 धारहोंसे शुद्ध मृतिका सकत ३२ अभी करलहोंने दाल दे। तदनका माद्राण रामपर्थित चार्चे कलालेक भवनो विवास पविषे कलक्को इथमे लेका सुर्व-मन्त्रेचा पाउ 📰 तथा सार सुराक्षण कियोद्यय जो पुष्प-घरन और वश्रानुबन्धिक पुणित हो, ब्राह्मको 🚃 🚃 पहेके जलसे कृतकान्न ब्रीकः व्यक्ति कराये। (अभिनेतने समय 📰 प्रकार करे—) पर बालक टीर्बाय और यह बडे जीवरपुत्र 🔠 पुरवाली) 🐺। सुर्व, कहें और नकत-समुद्रोसकीय वनस्य, इन्द्रसहित लोकपालगण, ब्रह्म, किन्तु, महेकर इनके अधिरिक्त

कलको 🚃 इसके मता-पितको कहीं भी कह 🗈 व्हिनार्वे 🖟 अधिकेको प्रशास वह स्त्री 💹 📖 घारण करके 🚃 👊 और परिके साम उन सातों कियोकी भक्तिपूर्वक कुछ करे । पुनः पुरुषी पूजा करके धर्मराजकी सर्गमयी प्रतिमा ताराज्यको उत्पर स्वाधित करके गुरुको निवेदित कर दे। उसी **ा कृत्यात क्षेत्रका अन्य बहाजोमा भी वस, सुवर्ण,** रामानुद्र आदिसे पूजन 🔤 उन्हें 🛮 और चौरसहित भक्ष पदार्थीक चोजन करूचे। भोजनोपएक गुरुदेकको बालककी रक्षाके 🔤 इन पन्नोका उच्चारण करना चाहिये— यह 🚃 🎮 🛊 🔛 सौ वर्गोतक सुराका उपभीग करे। इसके 🗃 कुछ पाप था, 🔛 🔤 बार्की बाल दिया गया। 🚃 🚃 कमुनाग, सरन्द, विच्यु, एन्द्र और अर्थे।—ये संगी 랐 🚟 💷 स्था 🖷 और सदा इसके लिये बरदायक हों ।' इस अवदर्क करवाता उच्चरण करनेवाले गुरदेशक क्षक्रमा पुजन करे । अपन्ये सांसिके अनुसार अन्ते एक कपिता 📰 प्रदान 🛅 🔤 📖 प्रमाण करके 🔤 धरे । तरपश्चात कुरुक्त 🔣 पुत्रको नोदने 🔣 सुबंदेव और भागान 📖 🚃 को और इक्सरे वर्षे 🔛 हम्पानको 'सुन्दिकको जनस्कार है'—यह श्रद्धकर स्त्रा काम। यह जन 🚃 🚾 इ:सामरिने 🖣 क्लान माना गया है। इस प्रकार कराकि जन्मदिनके नक्षत्रको छोड्कर शामि-

प्राचिक हेतु सुक्त 📖 सन्तरी 🕬 सदा (सूर्य और

संकरका) पूजन करना चाहिये, विवास इस करावा अनुकार कालेकाला कची कहने नहीं पहला। जो भनुष्य इस विधानके

अनुस्कर इस असम्ब सम्ब अनुक्रम करता है, वह दोर्बायु होत

है। (इसी करके अध्यक्षर) कार्तवीर्थने इस हजार वर्षेतक इस

पृत्तीयर सासन किया था। शंजन् ! इस 📖 सुपरिय इस

अन्यान्य दे<del>व समृह</del> इस कुम्हरकी सदा रक्षा करें । सूर्य, शनि,

अधि अभवा अन्यान जो कोई बालगह हो, वे सभी इस

हित लोकपालगण, ब्रह्म, किन्तु, महेकर इनके अधिरिकः पुन्यस्त, परम प्रमान और आयुवर्षक संपंतिकपन-प्रतक्त १-रोगीपुरलु कलोऽवं जीकपुर क नावित्री । महिलकस्त्रकार्ण कान्यस्त्रकारम् । स्रक्षः व्याध्यस्त्रतं वे क्षात्र किन्तुनिक्दः । एवे काने न वै देकः क्ष्म्य क्ष्मु कृत्यस्त्रम् । स्रा शिक्षां स सुवपुर पा व कराम्यः क्ष्मीस्त् । वैद्यो कृतेन् करास्त का क्ष्मुक्षमाना वै ॥ (जारको ५२ । २६—२८) २-दीवीपुरस्तु करोऽवं कान्यस्तितं सुकी । विविद्यस्ताः व्याध्यस्ति करामपुर्वे । क्ष्मा स्रो किन्तु करोऽवः क्ष्मु व्याप्तः व्याध्यस्ति व्याध्यस्ति व्याध्यस्ति व्याध्यस्ति (जारको ५२ । ३१-११)

बड़े-बड़े 🚃 विनासक, बल-वृद्धिकारक तथा 🚃

📰 📑 भे प्रमुख 📰 होबार 📰 प्रत-विध्यनको

सुनवा है, उसे 🔳 🔤 ऋह होती है<sup>न</sup>। (अध्याम ५२)

🊃 जबर 🚃 निर्दिन्त—उद्दीत 📖 सोचर्त-

्राप्त विकास महर्षि वसिष्ठके अध्यममें गयी विकास कहने लगी—

**वैदे 🛮 🔡 कवी कोई 📖 दिया, न जय, तय, 📖** उपनास

विधान बतासकर वर्षी अन्तर्हित 📗 मने । यनुष्यको सुर्वसे नेरोपता, अप्रिसे बन, ईक्स (शिवनी) 📗 🚃 और प्रमुखन जनार्दनसे मोध्यमें अभिरामा 📖 च्याँध्ये । 📖 प्रत अव्यक्तासम्बनी र-इत-कथा तथा वत-विधि राजा सुधिद्विरने पुता—मगवन् । आपने सभी काल फल्बेंको देनेवाले भागकानका<sup>र</sup> विचान कारकवा चा, पांतु को प्रताकाल जान करनेमें समर्थ न हो तो जब क्या करें ? कियाँ अदि सकुमारी 🔤 है, ये किस प्रकार मानवातका कह संबन कर सकती हैं ? इसलिये आप बद्ध देश उनाम बताने कि चोडेसे परिश्रमसे भी नारेकेको एक, सीधान, संकार और अनल पुरुष प्राप्त हो करण। भागान् श्रीकृष्य चेले—महत्त्व : 🛮 स्वत्तः सन उत्तम पत्ने सन्त 📑 📹 है। इस सम्बन्धे आप 🚃 🚃 सूर्वे— माथ देशमे पता रूपमा रूपमा प्रकार पर रहती थी। एक दिन वह वेक्या असःग्रहल केटो-केटी संस्थानी अनुवर्तेश्रति (नक्षरता)कः इत क्वल व्यक्त लगी—देखी । यह विवयक्षी संसद-सरह कैस 📟 🕏 निसमें कृती पूर्व और जन्म-शृत्यु-कर जिल्ला क्या जल-जलुकोंसे पेदित होते हुए थी किसी बच्चर पार कर नहीं पति। अध्यक्षेके द्वरा 📟 यह अधिरसमुख्य अपने 📟 गमें कर्मकर्पी ईकाने एवं नालकर्प अधिसे दाध कर 📖 व्यक्ता है। प्राणियोकि जो पर्यं, अर्थं, कामने रहित दिन व्यक्तिय होते हैं. 🔤 वे कहाँ क्यास आते हैं ? विसादित कार, दार,

🚃 🚃 🧰 फिया और न शिय, विन्तु आदि आराजना की, अब 🛮 🔛 धर्मकर संसारसे चनकेत होकर 📟 एरण 빼 है, 📖 मुहे भीई ऐसा क्रत कारकने, जिसमें केर उत्पर 🗏 जान ।' कोले — 'बरानने । तुम अब मासके 🚃 🚃 कर करे, 📉 🚌 सौधाम और स्तरि 🚟 📟 🛍 प्राप्त होते 🖥 । 🔤 दिन एक 📟 एसे नदीतर अथवा व्याप्त रोपटन और सम को, विसके बलको 🚃 🚃 व हो, 📖 मलको प्रश्नातित बार 🔤 है। 🚃 यद्माशांकि दान भी करे। इससे तुन्हार क्रिया ( रिमा स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप 🏬 📟 क्ष्म्यत लीट आयो 💹 🔤 हारा कतायी गयी अहे क्योंके सपक विकार संपादिक सामके प्रधानने बहुत दिनोतक सोसारिक मुख्येक उक्केन कार्य हुई यह देह-त्वामके पक्षात् देवसक इन्ह्यारी 🔤 अवस्थाओंचे इन्हान अधिकाके परापर अधिक्रिय हाँ। यह अवस्त्रसन्तमी सम्पूर्व प्रयोक्त प्रशासन करनेव्यसी श्या सुक्ष-सीधानको सुद्धि करनेवाली है। **ाः वृत्रिदिएने पूक्त-- भगवन् । अवलासप्तर्गका** महारूप 📕 आपने 🚃 कुराकर 🛍 सानका 🛭 व्यक्तिरकोन्कवर्तकत् ॥ (सहस्यवं ५२ । ६५)

१-श्रयोचे पालस्तरिकोद्धानिकोद्धानस्त्रम् । संस्थानकनिकोत् १-वदिकानुसम्बद्धाः 🎟 अस्त्रस्य सम्बद्धाः (अ-५८) 🖥 📖 🛗 है।

तथ, होए, स्ताध्यक्षय, वितृत्यंगः हमार्च सत्यमं नहीं किया व्यतः,

वह दिन कर्च है। पुत्र, सी, मर, सेप्र तथा यन आदिकी

दबोधती है।

3-यह सकती पूर्णोंसे १४, सूर्य, हुन्ना स**र्थ, मार्थ, पूरा**सक**े आदि और विका** विकास है। विकास विकास सिंहिट हैं, दिससे प्रथी **विकास पूर्व कि** है।

४-पुरानोका परस्तः 🔤 सम्बन्ध है। सम्बन्धानको निवर्तन 🎮 पानुस्त्रको व्यवसाय एवं बाबुह्यको 💷 होती है। इतमे यही सुन्दर इतं 📰 कवाई है।

(अध्याप ५३)

ची बतलावे ।

ध्यान करे-

भगवान् श्रीकृष्ण मोले—महाराग ! श्रीके दिन एकपुक्त होकर सूर्पनायवणका पूचन करे।

प्रातःकास हो उठकर गाँउ व सकता प्राप्त अक्षोदय आदि वेलामें बहुत सबेरे ही सान करनेकी चेटा करे । सक्यों, चरि अथवा काले प्रतमें कुसून्यकी गेंगे हुई बती और तिलका तेल अलबर दोक्य प्रकालित करे। उस द्युपक्रमा सिरपर रक्षकर इदकरें कालान् सुनंब्द इस कार

100 PER 1 म्बर्गात करते हुए स्थाप क्ये अपूर्ण है स **ावारा को को का करते स्था**त तन्त्रे येगे च स्टेकं च ककरी 🚃 स्टब्सी ।। क्रमी सर्वपूरामां समाने समानीयोः। traferielle für mein allerente is CHILD SEED

सदान्तर प्रीप्थाको जलके क्रमर सैच दे किर कारकर देवता और पितरोंका तर्पण करे और कदनसे कर्णिकासीका अष्टवल-कमल बन्धे । उस प्रमाण मध्यमे सामान्याता श्वापनावर प्रणय-वन्त्रसे पृथा को और पृत्तीर आ*ठ रासेन* 

धुधारुकीहर-कथा तथा कार्क्स

🚃 समाच्या को ।

भगवान् श्रीकृष्ण केले-व्यक्ताः अन वै भूषाष्ट्रपीक्षतम् । विधान बतलाता है, जिसे करनेकाल कभी नरकार पुद्ध नहीं देशका। इस विकाम आप एक अवकान सुने । सरवयुगके प्रारम्पने पनुके पुत्र राज्य (स<sup>र</sup> हुए । वे अनेक मित्रों तथा भृत्योसे 📰 रहते थे । एक दिन वे मुगवके प्रसंपसे एक प्राप्त पीला करते हुए शिक्तलय 🚃 🚃 अंगलमें पहुँच गये। उस जनमें प्रवेश करते 📕 वे सहसा सी-स्थ्यमें परिशत 📕 गये । वह 📠 विकास और मध्य पार्वसीबीका विहार-क्षेत्र या । वहाँ शिवनीकी पत 🕬 🕬 कि 'जो परव इस वनमें प्रवेश करेगा, वह तस्थव हो को हो जायगा (' इस 🚃 एक 🚃 भी स्त्री हे गये । अब वे 🌉

च्या चान्, राथ, विकासकन, भासका, समिता, अर्क, 🚃 📆 क्या सर्वात्मका पूजन करे । 📰 नापेकि आदिमें 'ॐ'बार, तथा अन्तमें 'कमः' पर लगाये। यथा---'ॐ चन्नो नमः', 'के स्वने ननः' इत्वदि।

इस प्रकार पूजा, जूप, दीप, नैवेच तथा क्या आदि

विविद्र्यंक पगवान् सुर्वेची पूजाकर 🐭 क्रमान् क क्रमार विसर्भित कर दे। बादमें ताम अवना विद्वीके चत्रमें पूज् 🎬 वृतसीक तिलपूर्व 🚃 सुवर्णका तस-रक्षकर एक भश्रमक आधृषण बनावर प्रतिमें स्वा दे। अनन्तर रक्तवस्थाने उसे बैककर पुष्प-भूपदिसे पूजन करे और क्ष प्राप्त दीवांच्य तथा दृःस्त्रोके विनाशको वश्यक्तसे व्यवस्था दे दे। अवसर 'समुख्यसुधुनाम वेडवर्डेडवं प्रीयताम्' पुत्र, यतु, पृत्य-सम्बन्धितः 🖩 उत्पर भगनाम् सूर्य प्रसम 🖡 **भवं — देशो प्रश्नेना करे । फिर मुख्यो वक्ष, तिल, गी और** 

🏬 पूरुष इस विविधे अचलासप्तर्गको स्थान करता है, 📰 शब्दूर्व 📉 🚃 प्राप्त होता है। जो इस अंक्रिके 🜃 च सुनेगा 🚥 लोगोको इसका क्वदेश करेगा, वह उठन 🛗 अनस्य प्राप्त करेगा।

रहेक्या देखर तथा वधारतीय अन्य स्वरूपोनी पोयन कराकर

क्यको करमें विकास करने लगे। वे शह नहीं सनका सके कि मै कहाँ का गया है। इसी समय चन्द्रमाने पुत्र कुमार मुक्तसी टीट उत्पर पढ़ी। उसके उत्तम कपपर आकृष्ट हो मुधने उसे अपनी सी बना रेगमा। इसामे एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम पुरस्का वा । पुरस्काले 🖪 बन्दर्वसका प्रारम्भ सुआ । जिस दिन जुपने इस्तमे विवाद किया, उस दिन अष्टमी

🕅 👊 इसरिश्ये 📰 मुचाहमी जगत्मे पूर्व हुई। यह बुबाहुओ सम्पूर्ण प्रयोक्त प्रशासन तक उपहलेका नारा कानेकारी है।

राजन् ! 📖 🖣 अरक्को 빼 इसरी क्रम्य सुना रहा है— विदेह कुळाउडेकी नगरी निविद्याचे निवि नामके एक राजा थे।

१-इतका 🚃 कम मुक्का था, किंदु 🚃 🚃 पुर्वकरणे उत्था 🚃 🚃 'हता' और कारमें पुरुव-करणे 🚟 हे जानेपर 'इस' कुल 📷 । 🔤 कुल प्रक सभी पुरुषे 🚃 🚃 🚟 🗎 🛗 🛊 ।

क्यो बना लिया।

🖁 राष्ट्रऑद्वारा सदाकि मैदानमें सह 🔤 गये । 📖 स्वेदम नम था र्जर्मेला। र्जर्मेला जन राज्य-च्युट एवं 🚃 🚾 हो इष(-इध्रा पाने लगी, 🖿 अपने क्रालम और कन्यान्धे लेकर 🚃 अवस्ति देश 📖 📰 और वहाँ एक ब्यानके व्यर्थकर 🚃 निर्मात करने सभी । 📉 🚾 💮 थी, गेर्डे पीसते समय वह चोड़ेसे गेर्ड मुख्यर रख 🔤 🚟 इसीसे सुमासे पीवित अपने 📟 पतन करते। कुछ समय बाद दर्गिलाका देशका थे 🗪 । विवेदका पुर 📺 🖩 गया, यह अवन्तिसे मिथित्व 🚃 और नितके 📖 पुनः प्राप्तकर शासन करने ....... 🚃 बहुन ........... विकेश-योग्य 📕 गर्मी थी। शह शरवण 🚃 🛍 थे। अवन्तिरेतके

एक दिन चर्मराजने अवनी क्रिया रूपमर्चने बद्धा-'वैदेहिन्दिन् ! तुम और सभी 🚃 हो करन, भरे। के सात संपान जिनमें 🔤 🕍 🖟 इनमें 🚎 कभी 🚥 जाना 🕻 स्थानलाने 'बहुत अच्छा' 🚃 🚃 वत 🚃 कंतु 🚃 📻 कृत्हल 📖 स्त्र ।

एका वसके उत्तम क्षमी 🚾 🚃 उसे 🚃

एक 🌃 🔤 वर्गराज असने 📖 🐃 व्यक्त को, 📟 श्यापलाने एक मकानका ताला खोलबन वर्ड देखा 🔣 उनकी माता उमिलाको असि पर्यका संपद्ध 📟 तन्त 📟 क्षप्राहमें स्थापन स्था रहे हैं। स्थापन संबद्धने का कमरा बंद कर दिवा, फिर दूसरा नास्त्र 🖼 ते देखा 🖼 वहाँ भी उसकी माताको समदुत शिलाके ऊपर सक्रकर 📰 रहे 📕 और भारत चिल्ला रही 🗐 । इसी 🎟 असने तीसी कमरेको खोलका देखा 🔣 बमदूत उमकी 🚃 माराकमें लोहेकी कील ठोक रहे हैं, इसी तरह चौथेने असे 📟 🖼 उसका भक्षण 📰 रहे हैं, पौजवेंमें लोहेके संदेशसे उसे 🎟 कार रहे हैं। इन्टेमें कोल्हुके 🔤 🚟 सम्मन पेरी 🕿 स्वी है और सातवे स्थानपर ताला 🚃 💹 💹 🗷 उसकी न्यताको इजारो कृति ...... स रहे हैं और वह ..... आदिसे सथपथ हो रही है।

यह देखकर स्वायलाने विचार किया कि मेरी माराने बेसा कौन-सा पाप किया, जिससे वह इस दुर्गकिके 📖 हुई। 🖚 फ़ोजकर इसने सारा क्लान्त अपने पति धर्मराजको बहलाया ।

वर्षताच चोरने -- 'प्रिमे ! मैंने इसीलिये कहा था कि ये सार क्षमें अधी न खोलना, नहीं तो तुन्हें वहीं प्रशासन होगा । कुरती वासने संस्थान 📖 जाराजके गेहँ चुराये थे, स्था तुन इस करको नहीं जनती हो जो तुन मुझसे पूछ रही हो 🖟 यह सम उसी कर्मका फल है। बहुतनका धन जेहसे भी 🚃 को से 🐿 सात कुल 💆 🚾 प्राप्त होते हैं और चुराकर खाने हो कारक बन्हामा और तहे हैं, तबतक नरकसे उद्धार नहीं होता : 🔠 गेहें इसने फ्राये थे, वे ही भूडी बनकर हारा प्रश्नेत कर से हैं।

इच्यामलाने कहा — यहरूत । 💹 मताने जो पुरु 🖣 पहले किया, यह सब मैं जानते ही है, फिर 🔣 अब आप कोई 🎹 अवाय बालाये, बिस्स येरी माताबा मरकसे ठदार हो कर । 🚃 कर्मरकरे कुक समय विकास विकास और कराने लके—'विके ! अहनारे सात अन्य पूर्व तुप सहस्यो थी। उस शब्द भूपने अपनी सर्वसर्पकि साथ यो मुपाइमीका वस किया 👊 🚟 उसक्य करन कुन संसरप्यपूर्वक अपनी पाताको दे दो तो इस संबद्धते उसकी मुक्ति हो ऋचगी।' यह सुनते ही **व्यापार विशेष सरका प्रमानत संसरपप्रीय** मारको हिन्दै दान कर दिया । सामि मालके प्रमायसे उसकी प्रकार भी उसी कुल दिश्य देश धारणकर विमानमें बैठकर अपने क्षित से गरी।

क्यन् ! 🚃 इस ब्रह्मे विकानको भी आप सावधान क्षेत्रतः भूने---जन-जन सुक्त पक्षकी आहमीको नुभवार पढ़े से उस दिन एकपुरू-वत करना चाहिये । पूर्वाक्षमें नदी आदिने खान करे और कहाँसे जलसे मत नवीन कलश लाकर महर्ने स्वाधित कर दे, उसमे सोना छोड़ दे और बॉसके पात्रमें पक्वास भी रहो । अबद ब्रुवाष्ट्रनियोका जुत करे और आरोमि क्रमसे ये आउ परवात—मोदक, फेनी, फीका अपूप, कटक, शेर वस्त्रासे 📰 पदार्थ, सोहासक (खाँडवृक्त अशोकवर्तिका) और फल, कुप तथा फेमी 🔙 अनेक पदार्थ बुधको निवेदित कर कहने 🔤 भी 📖 हुष्ट-पित्रोंके साथ भोजन को । साम हो मुक्तक्रपीकी 📖 मी सुने । विना कथा सुने **मोजन न करे । बुक्की एक माले (८ रसी-एक मारा)** या आये मारोकी सुवर्णमधी प्रतिम्य बनाकर गन्य, पुण, नैकेड, पीत वक्ष तथा दक्षिण आदिसे उसका हुन्य करे। पूजनके मन्य इस प्रकार है—

'ॐ बुधाय नयः, ■ ■ च्याः नयः, ■ वृद्धिकारमात्र नयः, ■ सुत्रुक्तिकारम नयः, ■ सारायासाय वरः, ■ स्वैत्यनसम्बद्धाः वर्षः वर्षः ■ सर्वाधीकारसम्बद्धाः वरः ।'

तदनन्तर व्यवस्थाता क्षेत्र पहुंचर वृक्षण सामन्त्रण यह मोक्य-सामग्री तथा अन्य पदार्थ श्रहाकारो द्वार चर दे— ३५ वृक्षीर्थ प्रतिपृद्धातु प्राणस्थोऽयं वृष्णः स्थवत् । दीवते वृक्षरायाच तृष्णतां च श्रुणो वय ॥

(अवस्थि ५४। ५१) ब्राह्मण की मूर्ति काहि बहुत्सकर क्या क्या वर्षे —

प्रतिविदने सदा—अन्यतः । 📖 📖

कुषः सीम्बसारकेषे इत्वयतिः। भुग्यते वः पुत्रत्वसः विता ॥ सुर्विकोकद्वीतां वस्तियावकोर्युवः।

(क्यानमें ५४ । ५२-५२) इस विकास क्षेत्रक वस करण है, ब्राह्म सारा बन्मतक अधिकार क्षेत्रक है। धन, धन्म, पुत्र, पीत्र, दीर्थ अस्युव्य और देखर्थ आदि संस्तरके सकी पदार्थोंको आस कर अस्य सम्याधे अस्य करता हुआ तीर्थ-स्थानमें प्रत्य स्थान करता है ब्राह्म व्यापकार स्थान करता है। औ इस विकास सुनक्षा है, यह भी अस्तरकारि प्रार्थोंने मुक्त हो साम है।

(अभाग ५४)

# 41000000

# श्रीकृष्य-जन्महर्मातामी सांध एवं विधि

(अपने जन्म-दिन)
कृष्ण करें।

प्रमाणान् अविकृष्ण कोले — एकर् १ वर्ष मनुष्णि केस
नार गया, इस समय माता व्याप्त अपने गोर में लेकर
रोने लगीं। व्याप्त वस्तुदेवकी की मुझे तथा व्याप्त मेर क्या
अपनिमृत कर गहरवामीसे विज्ञा लगे—'अस्त मेर क्या
स्थल कुआ, जो मै अपने दोनों कुरोंकरे कुरालसे देख रहा है।
सीमान्यसे आज हम भगी एकत व्याप्त मेर व्याप्त एक्टा
साता-पिताको अति हर्षित देखकर च्युतमे लोग व्याप्त प्रमा

त्य मैंने प्रकृतिकासी करोंकी जन्महर्गाहरका 
बारशाथ और कहा — 'पुरव्यसियो | आक्टोन' मेरे अन्धदिनको व्याहरीको नामसे प्रसारित करें | प्रत्येक
व्यक्तिको जन्महर्मीका वत अवश्य करना चाहिये |
समय व्यक्तिको अन्यहर्मीका वत अवश्य करना चाहिये |
समय व्यक्तिको अन्यहर्मीका वत अवश्य करना चाहिये |

१-मारापुरावमे मुक्ता सक्ता इस प्रकार कारकक राज है—

काम किया, जो इस युष्ट केसको करा। धन सभी इससे कहत

पेक्कान्सम्बद्धः वर्गिकरतानुष्टि । क्यूनर्यान्यानीयः सिक्नो वस्त्रे गुप्तः ॥ (९४ । ४)

चेले राज्ये कुकारत और यस करन करते हैं। उनके अध्यक्षण कोले पुन-स्तीती है। वे कर्ष सर्वोमें अपराः सामा करा पत्त और करावा आप किने क्षते हैं तथ सिक्स समा होते हैं।

२-हेम्बद्दे, ब्रह्मान तथा वर्षास्कारसञ्जून आदि निकासकार्वेदे भी चौक्रकेस्त्युक्तको समाते मुख्यानोका दिया गया है, पर पाठ-पेद अधिक है। ब्रह्माको सुकति पुरुषको तथा करके उत्तारकारी विशेष भी चौक्कोचायुक्तके समाते दी गयी है। इस कमाने बुद्धि, शुक्ति और विमर्श-सातिका भी पार्वण समितान चौकार है। रोहिणी नसप्तमें मेरा अन्य हुआ । बसुदेवजीके प्रक नाम देवकांके गर्पसे मैंने जन्म सिन्ध । वह दिन संसारमे बन्नाहमी नामसे विस्त्रमत होग्र । प्रथम वह वत ममुख्ये प्रस्कि हुआ और ब्यूट्में सभी लोकोंने इसकी फ्रीसींड, को गयी : इस अवके करनेसे संस्करमें सान्ति होगी, सुख प्राप्त होया और ऋषिकर्ग रोगरहित होगा ।'

महारका सुमिहिरने कहा— नगमन् ! अन आप इस वर्तका विवास केत्रहार्थे, **विवास विवास अ**त्य असन विवास ।

मगवान् ब्रीकृष्ण बोले—महरूव ! इस एक है इतके कर 🔤 सह जनके 📖 🗷 🛡 गाँउ 🗱 🕬

पाले दिन दलवायन 📖 करके 🚃 नियम प्रदर्भ की।

📖 दिव मध्याप्रणे सानकर कता भगवती 🚃 🚃 सृक्षिका-गृह बनाचे । उसे पदारागमानि और सन्दरशः अवदिसे

सुरहेभित करे । गोकुलको चाँति गोंच, भोजी, यन्छ, कुरहा, शह और बाह्यत्य-कलए अदिसे समन्तित तथा असंस्था

मुतिका-गृहके द्वारपर श्लाके लिये बहु, कृष्ण करन, मुसल आदि रखे । दीवालीपर स्वस्तिक आदि काहरिक विक का

दे। बहीदेवीकी भी नैकेश 🚟 साथ स्थापन करे। इस प्रकार यथाशकि उस श्रीतकानुको विश्वविनका 🛗

पर्वक्रके उत्पर गुलसहित अर्चसृष्यवस्थाकली, वधीकने व्यक्त देशकीकी प्रतिया स्थापित करे । प्रतियापै अंग्रेड अकारकी होती

है—सर्ग, चाँदी, तार, पीतल, मृतिका, काइकी, 📟 🖼 तथा विक्रमधी। इनमेरे किसी भी धालुकी सर्वलक्षणसम्बन अतिमा बनायत् स्वापित करे । माता देववर्णमा सानसान 📟

हुई 🚃 🚾 प्रतिमा उनके 🔤 प्रतिमक्षे 📷

स्वकृत करे। एक कन्यके साम माता यहाँदाकी प्रतिस्थ 🔣 वर्ह्य स्थापित 📰 जाय । सृतिका-मन्यपके कन्यकी वितिकोंने

देकता, प्रह, ताम तथा विधाधर 📰 पूर्तियाँ क्रायोंसे प्या-वर्षा करते हुए कम्म्ये । वस्टेक्केको 🖷 सुरिवस्त्रक्रेक

बाहर साह और दाल चारण किये विक्रित करना चाहिये।

वसदेवजी महर्षि करपक्के 🚃 है और देवकी महत

गराने जलदावसे । पारित १-सिल्प्रकारो **कृत्तरिर्वाभवे** करे

२-अवस्तुर्वाको ऋतु-पृथोको काल और कारका, 🚃 अन्दि 🚃 🚃 🚃 🚃 पुरुषोत्तविभिन्न 🛗 पुरुषोत्ती करकते 🕏

अदिक्रियो । बलदेकरी शेवनायके 🚃 है, 🚃 दक्षप्रवासिके, क्लोदा दितिकी और गर्गमुनि बदार्थिके अक्तार हैं । बंदर कारलेमिका अकतार है । केसके पहरेदारीको

सुरिकागुरुके आस-पास निहायस्थाने चित्रित करना चाहिये। 🛍 🔤 आदि तथा नहचती-माती हुई अपसर्शओं और

🚃 🚾 भी कदावे। एक अरोर कारियय नामको क्यमंत्रं 🚃 📖 गरे ।

प्रमाद अत्यन्त रमनीय नवसृतिका-गृहमें देवी चरिको गम, पुण, असत, धूप,

न्तरियम, दाहिम, कवव्ही, क्षेत्रपुर, सुखरो, 🔤 🚥 🚃 📕 केश देश देशमें 🚃 समय प्राप्त हों, इन सबसे

मधंग करे—

मार्गीतः विकासीः सतापरिकृतः वेतुनीपानिगरी-चुंबरस्वर्शकुरुक्तवरस्वरूपक्षरैः सेव्ययात्र पुनीनैः।

क्को सामार्थे सा मुहिततरमनः पुरिशी सन्द्रगारी 🕫 🔛 देवनात सर्वति सुनद्ना देवनी 📖 🕕

Cathon 44 (AS)

🚃 चर्चे और फिलर 🏬 अपने समीमें वेणु भवा 🚃 🔛 🌃 इत्तर स्तुति-गान बार एडे 🖣 और जी अभिनेक-भात्र, आदर्श, महालमय कलक तथा भैदर दार्थीम रिश्वे हेतु भूटिरानोद्वारा 🚟 है 🚃 यो कृष्ण-जनने

📰 🛍 हुए प्रतेगधा 📆 🐧 उन कपनीय विकास अदिन-सरुपा देवी देवनीकी

三 单子 उत्पालनम् भाः स्थान मारे कि कारतासमा लक्ष्मी देवस्थिके

चरक दक्षा को हो । उन **पन्न** सब्दोकी—'उस्से दे<del>नी</del> महत्वे<del>नी</del> विकास सकत नयः (" इस मनासे पूजा करे ( इसके नाद "4% केलके सक्त, 🗈 बसुबेक्स एकः, के बलम्बरूप नमः, के

क्षीकृत्यक अथः, को सुच्छानै नगः, को नन्त्रम अथः 📖 **ाः मानेकवे स्थः' — इन नाम-मन्त्रोते समकः अलग-अलग** 

पुक्त करे ।

क्रायंत्रकेत्रकेत्रके । क्यूक्ट अनुसर्व (उसरावें ५५। १४)

धनगरम, ब्राह्म और कैनवसी परस नदा गय है।

कुछ 📰 चन्द्रमाने 🚃 🛮 जनेपर क्द्रपाको अर्था प्रदान कर वरिका ध्वरून 🚃 है, उन्हें निप्तरिप्रकाश मध्योंसे हरिका घ्यन करना चारिये—

अतर्थ बामने स्त्रीरि बेक्कचे पुरुषेसमय्। रमधीने प्रतिकर्ण यावार्षः अनुसूक्तम् ॥ कराई पुरवरीकाई पुरिदे प्राक्षणीयम् । वेद्यानं प्रवद्यासम्बद्धाः रामेक्र क्यून्डनं कृष्णकरकारविकाः । गोविज्यान्त्रते - वन्त्रीयं - सन्तिकरकारणम् ॥ अवोक्षयं असादिनियारं विष्णुं वैत्येयपेशं विविधानम्। चतुर्वादे स्थापकारकारम् ॥ जलदर्द water of the party **पीतान्यर** थरे Perch शीकरातुः जगरतेतुं शीकरं शीवनि हरिन् ॥

(कारणी ५५) ४६ - ५०)

—पुन मन्त्रोंने मनकर् श्रीहरिक प्यान करके 'धेनेवरस्य धेनस्रकाल केन्य्रको चेक्निका को काः'-इस मन्त्रमे प्रतिमानो कान कराना कार्टिये : अन्तरस 'योधराव प्रात्मभवाव व्यापाचे भौतिकान गर्क गरः'-इस मनासे अनुलेपन, आर्च, थ्य, दीप 🔤 🚟 करे। तदनका 'विकास स्वयुक्त विकास स्वयुक्त पोक्रियाप नवी नव:।' इस मन्यसे वैवेट विवेदित करे। अर्थन करनेका मन इस प्रकार है—'व्योधात्व क्रीकाचे प्रमेशकाच्या गोविकाच नाते कर ।"

इस प्रकर केंद्रिके उत्तर रोहियों-सहित चाह्रक, कहुरेब, देवकी, सन्द, बहोदा और बरन्देकबीका एकर करे, इससे सभी पानोंसे मुक्ति हो जती है। चन्होदयके समय 🛍 मन्त्रसे क्युनको अर्थ प्रदान को-

जविनेत्रसमुख्य । श्रीवेदार्जवसम्बन मूलकर्त राज्योंने वेरिका 🚃 सर ॥ (कारको ५५ ( ५४)

쨰 रक्को पुर और पीसे बसोर्घाएको आहुति देकर व्यक्तिको एक को । उसी क्या जनकाय आदि संस्कार भी कहरे नहींथे। सम्बंधेक दिन प्रात्नकता 👯 ही समान यगवरीका यो उत्सव करना शाहिये । इसके अनन्तर बाह्यकोठी **ाह्य के प्रेम्प्स के प्रोम्पसम्** करूबर वशासकि **विका** 

है। बाहिने और यह मन भी पहल बाहिये-📕 🔛 हेनी वस्त्रेवास्त्रीयगर् । भीक्त 🚃 गुजी 🔤 महारूपे 🕬 ।। (अन्तरको ५५ । ६०)

हरते 📰 विकास 📟 🔲 और सहस्र को---'इसचिएल देखे पास्तु ('

धर्मनद्व । इस प्रकार 🖫 📰 📖 पुरुष अभाग नार्प 🔤 🔤 इस यहेम्स्यम् प्रतिवर्ग 🚃 है, 🖂 पुर, 🚃 🤁 अयोष्य, बन-पान्य, सदग्रह, दीवे आयुष्य और 🚃

📖 भूची बनोरओंको प्राप्त बतता है। जिस देशमें यह उसक

किया बाला है, वहाँ जन्म-महन, आन्यागमनमी नवधि, असृष्टि तन्त्र होते-चीतं कादिका कथी जय नहीं शहशा । मेन समयपर वर्ष कर है। कबुर्व । व्या परने का देवकी-प्रत किया जाबा है, वहाँ कामलकुलु नहीं होती और न गर्भगत होता है तक बैकन, दीनांना एवं कराइ नहीं होता। से एक बार भी इस भवनो करत है, वह विक्तुलोकको 📖 होता है। इस

करनेवल संवारक सभी सुस्रोको पोगकर अन्तमें विज्ञानेकमें निवास करते हैं।

(সাধ্যাদ ৭५)

# द्वांकी एवं दुर्वाहमीतराकः

भगवान् प्रीकृष्य कोले—यहारक ! मद्रपद पहले शुक्त पक्षकी अष्टमी सिविक जलक पद्म दुर्वाट्यीका होता है। जो पुरुष इस पुष्प दुर्बाष्ट्रफेका अञ्चापूर्वक तर करता है, उसके वंशका सप नहीं होता। दूर्जके अञ्चलेकी करा उसके कुलकी वृद्धि होवी रहवी है।

**व्याप्त पुषिश्चितने युक्त—लोकनव** ! यह दुर्वा

कहरि। उत्पन्न हुई ? बैस्ते चिरायु हुई तथा यह क्यों परित्र मानी ल्के और लोकमें करत तक पूज्य कैसे हुई ? इसे भी बतानेकी 🚃 करे।

भगवान् श्रीकृष्ण कोले —देवताओंके 📰 अपृतकी 🚃 🌃 श्रीर-सागरके मचे जलेस भगवान् विष्णुने

🚃 बंबक्ट हाबसे क्वाअत मन्द्राक्तको 🚃 किया

(अस्माम ५६)

पा। यन्द्रश्चलके वेगसे व्याप्त समुद्रमें गिरे ये, पूरः समुद्रमें लिए भगवान्त को रोग व्याप्त समुद्रमें गिरे ये, पूरः समुद्रमें लहरों प्रग उसले गये वे ही रोग हरित वर्णके सुन्दर हमे सुन दूर्विक रूपमें उत्तम हुए। उसी दूर्वाप देवशाओंने मन्यामी उत्तम अमृतक कुन्य रखा, उससे जो अमृतके निन्दु जिरे, उनके स्परीसे वह दूर्वा अजर-अपर हो गयी। वह देवताओंकि लिये प्रथित बात वन्य हुई। देवताओंने व्याप्त देवताओंकि सुन्दा अस्पत्त प्रथा, पूर्व, वृद्ध, वैकेड, सार्च्द, आदिकेस, हाथा, कवित्य, नारंग, आड, बीवर्क्ट, दक्षिम आदि कर्लो तथा दही, अक्षत, व्याप्त विवस्त व्याप्त किया-

वि वृत्रें अनुराज्यभारित वर्तेष्यतः वा सुरास्तुरैः । इत्रेच्याच्ये व्याप्ता वृत्रसः विवासी व्याप्ता श्री याता राज्यस्यात्रस्यक्षां विवित्तस्याति व्यक्तिस्ये ।

#### चपाचि संसानं देखि त्यपत्रसमरे॥ (कारपर्व ५६ । १२ - १३)

देवकाओंके साथ ही उनकी प्रतियाँ तथा अपराओंने भी उसका पूजन किया। मर्स्टलंकमें बेदकती, सीता, दमयशी अहर सामाण हारा पर सीमाम्बद्धानी यह दूर्वा पृजित (वन्दित) हुई और समीने अपना-अपना अभीष्ट प्रान्त किया। वो भी नारी ब्रह्मकर शुद्ध क्या भरणकर दूर्वका पूजन कर किलायि, गोणून व्या सरायान्य सामाण दानकर माहाणकरे विवास करती है और बद्धाने इस पुण्य तथा संतानकरक दूर्वकृषी-करको करती है वह पुन, सीमान्य— यन आदि सभी पदार्थकों प्राप्तकर बहुत बालावक संसार्थ सुखा भोगकर अन्तिन अपने पहिलावित लागिने जाती है और प्रत्यमपर्यंत्र वहाँ विवास करती है हमा देवताओंके हास आविद्यात होती है।

हात है। केंद्र **व्यासी कृष्या**हवीमें स्वानु मानसे विस्ववध

पुजनकर करका जिल्ला ब्लाही अश्वमेच पहुंका फल मिलता

# मासिक कृष्णाष्ट्रपी<sup>२</sup>-ज्ञतेकी विधि

भगवान् औष्प्रका बीले-पर्ण ! अव आव समस्ट भवी 📖 पर्वेकि नासक, वर्वप्रद और मान्यन् संकरके मार्गरार्थि मासको कृष्णाहर्योको उपनासके नियम प्रकृषकः जितेन्द्रिय और स्वेचरहित हो गुरुको उद्यक्तमुख्य उपलब्ध करे । मध्याहके अनगर नदी आदिमें सानकर गन्ध, उत्तम कुप, गुग्गुल धूप, 📰 अनेक प्रकारके नेवेश तथा सम्बूल काहि उपचारोंसे शिवरिव्यक्त पुजनकर करने तिलीसे एका करे। इस मासमें लंकरबीका पूजन 📰 और गोमूक-पानकर रक्षिणे भूमियर शयन करे, इससे अतिशत-न्यक्रक प्रस्त ज्ञापा होता है। पीप मासकी कुरमाष्ट्रमीको राज्य नामसे महेकाका पुजनकर पुत प्राप्तन करनेसे वाजपेय यहका फल प्राप्त होता है। सक भारकी कृष्णाष्ट्रभीको महेका नामके पराचन् शंकाका पुजनकर गोदुष्य जानान करनेसे अनेक बज़ोका करा जाना होता है। फाल्युन सासकी कुम्बाहमीने महादेव नामसे उनका पुणनकर तिल भक्षण करतेसे आठ राजसून क्लोका फल प्राप्त

विश्वास मनवर्ष कृत्याहर्णने शिव गामसे इनका पूर्णनंतर कि कुत्योदक पान करनेसे दस पुरुषिय प्रतिक करने है। क्षेत्र मासकी कृत्याहर्णने प्रमुखीर पानका गीरानंका करने विरास है। आवाद मासकी कृत्याहर्णने मासकी मासकी कृत्याहर्णने मासकी कृत्याहर्णने मासकी मासकी कृत्याहर्णने मासकी कृत्याहर्णीय मासकी कृत्याहर्णने मासकी कृत्याहर्णीय मासकी मासकी मासकी कृत्याहर्णीय मासकी मासकी कृत्याहर्णीय मासकी मासकी मासकी कृत्याहर्णीय मासकी मासक

१-वर अंदिक्तानाहरीके जिस विकोधकारका एक हुए हैं। इसके दिन अनुहान विधिक्त कर्मन पहरप्राण, ५६, नाटपुरण, सीरपुरण १४ । १-३६, सन-करण्डुत किया हुए हिल्ला है। किया किया किया करें की देशन वाहिये। व्यक्तियहकी और पुरानेकि अनुसार अरुपी विकास करनी दिन है। अदः करनी दान बहुईसोबी उनकी सामा विकास करने हैं।

- सरकारी लागी 🚃 🚃 📟 -

कार्तिक व्यसकी कृष्णाष्ट्रमीने कह जमसे मानवन् संबदस्य भक्तिसे पूजकर राजिने दक्षीका सामा करनेसे अधिष्टीम बजनव साम प्राप्त केसा है।

इस प्रकार महीने पूजा पूजा मा अपनी शिवपक्त बाहाजोंको पूज, सर्करायुक प्रकार केवन करेवे तथा यथाशकि सुवर्ण, मा आदि उनको देकर मान करेवे अतले तिलसे पूर्ण करह कलका, करता, जून तथा कर्म सहाजोंको देकर दूच देनेवाली सकता एक कृष्ण मान उत्तम देशवी प्राप्त करता है और सी वर्षपर्यस संसारके जानन्त्रीका उपयोग करता है। इसी जातक अनुष्ठान कर इन्द्र, कन्द्र, जाता तथा किया आदि देवताओं ने उत्तम-असम पर्दोको प्राप्त किया है। जो-पुरुष इस वतको मिलपूर्वक करते हैं वे उत्तम कियानी बैठकर सम्बद्धका होते हुए जाते हैं और मगवान् संकरके ऐकर्पसे सम्पन्न हो जो है। बार्च आठ कल्पपर्यस निवास जो प्राप्त ने इस इसके प्रकारको सुनवा है, जिसी प्राप्तेस मुक्त जि

(अध्याप ५७)

### अन्याष्ट्रपी-क्रावडी 🚃 एवं 🚃

- t-

भगवान् सीयुष्याने कहा — महाराज ! व्यक्त करन्ये वहंत्रजीके पहारोजकी अति पुरस्ताने असम बुद् । अभिने भार्याका नाम था अनस्या, यह महान् वहंत्रजीकी एवं पिताला थी । कुछ करनके कर उनके करानेक्या पुत्र के पूर्व करने पहारोजकी पुत्र के पूर्व करने पहारोजकी पुत्र के । कुछ करने कराने वहंद्रजी उत्पन्न हुए थे । वहंत्र महान् प्राप्त नाम वा अनय । इनके आउ पुत्र थे । वहं विक्यु-रूपमें में साथ अनय । इनके आउ पुत्र थे । देश विक्यु-रूपमें में साथ कराने वहंद्रजी कराने भार्य महीन कराने कराने वहंद्रजी साथ विक्यु रूपमें प्राप्त कराने वहंद्रजी कराने भारत देशके साथ वी असे उनके साथ वहंद्रजी इनकी साथ वहंद्रजी इनकी साथ वहंद्रजी इनकी साथ वहंद्रजी वहंद्रजी कराने भीगनलसे अपने आअसमें रहा दिवस और कहा — 'आपलोप निर्माण तथा विक्यु असे असमें आपले आअसमें रहा दिवस और कहा — 'आपलोप निर्माण तथा विक्यु कराने आअसमें रहा दिवस और कहा — 'आपलोप निर्माण तथा विक्यु कराने आअसमें रहा दिवस और कहा — 'आपलोप निर्माण तथा विक्यु कराने आअसमें रहा दिवस और कहा — 'आपलोप निर्माण तथा विक्यु कराने आअसमें रहा दिवस और कहा — 'आपलोप निर्माण तथा विक्यु कराने अस्ताल कराने आअसमें रहा दिवस और कहा — 'आपलोप निर्माण तथा विक्यु कराने असमें असमें कराने कराने असमें कराने आया विक्यु कराने आया वहां रहा है । ' देवन कराने असमें आया विक्यु कराने आया वहां रहा है । ' देवन कराने असमें आया विक्यु कराने असमें असमें असमें कराने असमें असमें

दैत्य-समुद्राय भी देवताओंको कोको कोको हती आश्रमण आ पहुँचा। वे ह्रोथपूर्वक ललकात्तर करने लगे—'इस पुनिको पत्नीको पक्ता हो और यह साठ आश्रम ठवाइ डालो।' बा कहते हुए दैत्याना अध्ययमें पुस गये और उनकी पत्नीको उठाकर अपने बाला बाला पहे। लक्ष्मीको सिरणर उठाते ही साबी दैत्य औरनि बाला और

📕 📰 और 🛮 वहीं रहने लगे।

पहिना में सभी देख भागते और नह होने लगे।

पिता भी उन्हें नाता मात्म कर दिया। निशेष्ट सैकर
दैत्यक स्वाप्त करने लगे। दक्ष्मुनिक प्रभावसे वहाँ प्रलय
नव गया। स्था देखकाओंने सभी अधुरोको स्था
और फिर में स्था अपने-अपने लोक बले गये तथा
पृष्ठिक अंतर्दर्श हाने लगे। देवताओंने उन पगवान्

प्रस्ता कर विशेष स्थापक रिप्पे कर्णवाह होकर
प्रस्ता कर विशेष स्थापक राज्य रिपरे
प्रसा-सम्बंधिन विश्व हो गये। इसी प्रकार स्थाधिन उन्हें तीन
हंगर विश्व करने स्थाप एक दिन पाहिष्मतीक राजा
हैक्याधिनित कार्ववीर्थार्जुन उनके पास आया और रात-दिन
उनकी सेवा करने लगा। दल उनकी सेवासे अस्यना प्रसन्न हो
गये और विश्व विश्व विश्व विश्व हो वार्य, दूसरे वासे सारी
पृष्किक अव्यक्ति कर वा इयार हाथ हो वार्य, दूसरे वासे सारी
पृष्किक अव्यक्ति करसे सहार्यक मैदानमें किसीसे पर्याज्य न होना
वाच चीचे वरसे कार्यान् विश्वके हाचों पृत्यु होना।
कीन्तेय। कोगावासमें सीन उन दस्तिनिन

कार्रवीयांक्नको अष्टरिसिंदगोंने समन्तित चक्रवार्ध-पदवाले

राज्यको प्रदान किन्छ। कार्तकीर्पार्वनने भी सप्तदीपा

१-वह अनेक सम्बद्धित का है। इसका 🔤 🚾 ॥ १८ । १२, 🚾 ३ । ६ । १०, वस्तुः ९७ । १०३, 🚥 ४७ । ७२ और विक्युः ४ । ६ । १४ 🛅 पुरुषोरी 📖 है। इसे इसने वक्क ब्यू. अक 🚃 का कम कंपनेट भी है।

वसुमतीको धर्मपूर्वक अपने अधीन कर शिला। यह स्व उसके वाहुओंकर प्रधाय था। प्रशासकार भारता था। उसके प्रभावसे संपी प्रधाय श्रम श्रम कर सेता था। उसके प्रभावसे संपी प्रधाय श्रम श्रम निरस्त था। उसके प्रभावसे संपी प्रधाय श्रम निरस्त था। उसके प्रमाय दिवता, प्रभाव तथा अपस्मार्थ थे। विमानमें वैद्यक्त सभी देवता, गम्भवं तथा अपसम्पर्ध प्रभाव सम्बद्ध सोधा प्रमाय स्वता था— कर्मविक्ष

वाल, स्थान क्षा भनुष-मागवाल है। व्यव व्यव अन्य पश्ची करने अपने समीप हैं समझते हैं, व्यव व्यव लोग दूरने ही इससे मय व्यव हैं। व्यव व्यव कर्ण नह नहीं होती, इसके राज्यमें न व्यव सोक व्यवक्र प्रकृत

📰 📰 चलरा 🛮 🌬 संस्थाका कोई थे 📖 उसके 🚃

यह, दान 📖 📰 नहीं कर सक्छ । 📰 📟 📟

न नोर्द नरप्रण हो। यह अपने प्रचानके पृत्योक्त कर्यपूर्वक प्रचारनीका पालन करता है।' सगवान् सीकृतका पुरः कोले—नग्रकिप ( क्रिकेस

इस पृथ्वितर एकासी हजार वर्षभक (1988) शासन करता रहा। यह अपने योगवलसे पर्दाश्मीय प्रत्यक तथा (1988) भी (1981) समयानुस्तर पेप बनकर बृष्टि भी करता था। यनुकारी प्रत्यक्षाके आवारको करोहर स्वयानुक अपनी संदर्शी

भुकाओहर यह सूर्यक समान उन्होंनेल होता है। उसने अपनी हाता मुजाओंक बलसे समुद्रको हाता है। नामलोकों ककोटक आदि नामेको मेराकर कहाँ हैं। अपनी नगरी हाता ली। असकी मुजाओहरए समुद्रके उद्देशिक हाता

पातालकासी महान् असुर 🔣 निश्चेष्ट 📕 करे थे। कहे-कहे नाग उसके परश्रभको देखकर सिर नीच कर लेवे थे। सभी धनुपरिको उसने जीत सिन्धा। अपने परश्रमको 🚟 🔣

१-असे देश अस्तु ने को निवृत्तिकाने।पृत्तिकाः इरं किनुर्वे कामे तेश के दर्श कर्म्। सनूद्धानार वीत पद वि कामे किनुर्वेश सदस्यः। सर्वे किनोः गुरुवि पत्ता पत्ते सद्योग प्रच्यो। इत्या

विष्योः सम्मीन प्रस्ततः पत्ते स्थाने प्रस्तो । इत्यान् तद् विष्योः पत्ते पदं स्था प्रस्तीन सूरकः । दिसीन तद् विस्ताने नियन्त्रनो स्थाननेतः स्वित्यते । निर्मार्कतः उसने अपनी माहिजाबी नगरोपे लाकर बंदी बना रखा था, विसे पुरसरव अभिने बुधुअस्य । एक बार भूसो-प्यासे चित्रभानु (अभिटेव) को बाबा कर्जवीर्वार्जुनने सबसा सप्ताहीय वसुन्यसको दनने दे दिया । इस प्रकार यह कर्जवीर्यार्जुन बड़ा

च्या एवं गुम्बान् राज्य हुआ था। वोश्यासर्व भगवान् अनय (दस्तरेष) ■ वर प्राप्तकर कर्तवीर्षार्थुको पृष्णिकोन इस अनगाहरी-सरको प्रथिति च्या अनको पाप कदा करत है हह ■ च्याकान होता ६—स्थितक, व्यक्तिक और व्यक्तिक। यह अनगाहरी विविध

पर्योको नह करनेपाली है, इससियो इसे अन्तन कहते हैं। इस प्रियं (अधिना, महिना, प्राप्त, स्थान स्थान, हिंगल, स्थान तथा सर्वकामानस्थिता) प्राप्त स्थानिक प्राप्ते क्रिकेट सि है।

व्यक्तारमः पुनिश्चितने पूजा—पुन्वरीयभ्यः । व्यक्तांनीयांत्र्वन्ते द्वारा निवस्ता वह अनव्यक्तांनात विका क्षांनीयांत्र्वन्ते द्वारा निवस्ता वह अनव्यक्तांनात विका क्षांनीय द्वारा करें।

भागवाम् सीयुन्तको वया—एकन् ! इस 🔤 विधि

इस स्थार है—- व्यारिशिष्ट भारती कृत्य पश्चार आह्मीको कुत्रतीर श्री-पुरुषकी स्थार स्थापित करती स्थार स्थापित करती (द्यारेप) की स्थापित करती (१९६वी) स्थापित करती स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित करती

च्यानम् पूजाने पाल, कन, शृंगास्त्री सामग्री, वेर, विविध चन्य,विविध पुज्यस करनेश ==== चाहिये। दीपक जलान ===== तथा ===== एवं वशु-वाश्यक्ते भोजन

इस प्रवार पूज करनेवाल सम्पूर्ण प्रपीते मुक्त हो जात है, कश्मी क्या है तथा नगवान् विज्ञु उससर प्रसन हो जाते हैं। (अध्यान ५८)

सम् वागीः । चेतुरे । वर्षीः वरम् । कृषः सम्बद्धः

पर्ला परम् ॥ (**प्राप्तेर** ११३२ । १६—२**१**)

### सोपाष्ट्रपी-क्रत-विधान

चगवान् श्रीकृष्य केले—महाराज ! 📖 मै एक दूसरा अत् 🚃 📰 🐧 जो सर्वसम्पत, करवान्त्रद 🔚 হাক্ত্ৰিক-সাহক है। 🚃 হৰ্মাই নিচুম্বৰ 📭 📭 स्रोमवार हो तो उस दिन उपासहित मगवान् सन्द्रवृहका पूजन करे। इसके लिये एक ऐसी अविकासी स्वाचना करती चाहिये, क्रिसका दक्षिण भाग शिक्सकम और वामधान उमा-सक्त्य हो। अनुकर विधिपूर्वक उसे पहास्कृतसे स्थान करकर उसके दक्षिणधाणमं कर्युरक्त 🚃 उपलेका करे। भेत तथा रक्त पुष्प चढ़ाये 🚟 चुतमे 🐃 पुर नैवेचका योग लावये । एथीस प्रश्नासिक देवकोसे उपासीक भगवान् चन्द्रचुवको आरती करे। उस दिन निमहार सकर दूसरे दिन जात: इसी प्रकार पुजन सम्पन्न कर जिल तथा कैसे हवन कर ब्रह्माजीको भीतन कराये। बाह्याणको पूजा करे और 🖼 🕮 🗐 अर्थन्द करे । 🚃 वर्षराक्ष इस प्रकार अन क्षेत्रक एक विकोल तथा दूसरा चर्भकीण (चीकोर) क्यार कर्नावे । विकास व्यास पुष्ता तक चौकोर मण्डपमें पणकन् शंकरको स्थापित को । तदनन्तर पूर्वोक्त व्यक्ति अनुस्तर पार्वती एवं इंच्यन्वरे पूजा करके होत एवं पीत शक्तके दी विशान, पश्चक, पण्टा, पूरदानी, दीपमाला आदि पुजले उपकरण संदानको सम्बद्धिः

करे 💹 एकर्सक बहाय-भेजन भी कराये। बहाय-दम्बक्तिस्य वस्य, अवसूचन, फोजन अस्टिसे पूजनकर पंचीस प्रमारिक दीपकोसे चीर-चीर नीठजन करे। इस प्रकार चंकपूर्वक 🔤 🔤 वा एक 📟 ही वर करनेसे वती **ार्काल शिवस्त्रेकमें निवास कर व्यक्तन पद अप्त काल** है। जो पूरव आजीवन इस जतको करता है, वह तो आशाद क्रिक्ट्र हो हे जात है। उसके समीप आपत्ति, शोक, 🗪 🔤 💹 नहीं उससे । इसमा 🗪 कहकर मंगवान् श्रीकृष्ण कुः बेले—महाराज ! हती प्रकार रविवार-युक्त अष्टमीका भी का 🚾 🖁 । उस दिन एक प्रतिक्षके दक्षिण जागरें शिव और काम चानमें पार्वतीको पूजा को । दिन्य प्रचरामे भगवान् इंकरको और सुवर्णके पार्वतीको अलंकुत करे । यदि लोको लुक्कि न 🛱 👯 तो सुवर्ग ही चढ़ाये। चन्दनसे भगवान् हिल्लारे और कुंकुमसे देवी पार्वतीको अनुस्थित करे । भगवती कुर्वसूत्री स्थाल बाब और स्थाल भारत तथा भगवान् प्रोकरको एताश्च निवेदित कर निवेद्यमे युगएका बदार्थ निवेदित करे । होन कार) विश्वान पूर्ववत् कर फारण गच्य-पदार्थीसे करे । उत्प्रपन पूर्वदेश्य करन चाहिये । इस ब्रह्मके एक वर्ष अस्यमा समातार योग को करनेवाल सूर्य आदि लोगोंने उत्तन भोगको प्राप्तन 📟 परमयदावे आ। कारत है। (अध्याय ५९)

# -0-40-0-

#### श्रीवृक्ष्नवमी-प्रत-क्रभा

पूर साम पाला जाती जाती जाती जाती जिल्लाश्वासकी जाती

करे—-क्रीनिकार गणकेऽस्तु सीमृश शिकारतथः। साम्रोक्तकीर्थः कृतकः सर्वीकारहरे सम्राः।

इस विविक्ते पूजा कर श्रीवृक्षकी सात प्रदक्षिणा कर उसे प्रवास करें। अनसर बाहरणपोजन कराकर 'बीदेवी प्रीधताम्' ऐसा कहकर क्रवंता करें। तदनसर बार्य पी तेल और नेमकसे

अधिक अधिक संबोधन वैयार किया गया पोजन, दही, पुष्प, कल आदिको मिट्टीके कारमें रखकर मीन हो प्रहण करें। इस प्रकार परिवर्णक जो पुरुष या की जीवृक्षका पूजन करते हैं, वे असरण की सामी

(সম্মান ६०)

#### व्यवस्थितात-कवा

भगवान् श्रीकृष्य केले—स्वत्तव ! चणवते रुपांद्वरा महिवासुरके यथ किये अनेवर दैत्वीने पूर्व-कैरका सम्राण कर देवताओंक साथ अनेक संचार किने । ............. भी धर्मको रक्षके लिये अनेक रूप धरण कर दैत्येका संहार किया । महिषासुके पुत्र रतसमुरने पहल सम्बे समकाक कोर तपस्या कर ब्रह्माओको प्रसन्त किया और ब्रह्माओने प्रसन्त होकर उसे होनों लोक्प्रेक्ट राज्य दे दिया । उसने बर ऋपकर देखेंकी एकवित किया 📖 इन्हर्क साथ युद्ध करनेके दिखे व्यवस्थातम् आक्रमण कर दिया । दैला-सेना पुरक्षे रिली का रही है, 📖 ने भी एवजीत 🎹 देवराज इन्हर्का अध्यक्षतामें युवके सिन्धे आ इटे । मोर युव प्राप्त हो गया । राज्योने इतना पर्यकर नुद्ध किया कि देवगण रण होदम्बर 🚥 गये। देख रहससूर 🚾 🚟 अपने अधीन कर राज्य करने शता। देवरान वहाँने चारकर काश्रवापुरीये गये, वहाँ 📰 करात्मा दुर्गा निवास 📰 🛊 । चामका भी नक्तुमीक साथ वहाँ विशवनान रहती है। वहाँ देवाइजॉन महालस्ती, उन्हा, केमकर, शिक्ट्रती, महसन्दा, भागरी, चन्त्रसङ्ख्या, रेक्सी और इस्पिटिस—इन में दुर्शकोची धीकपूर्वक स्तुति करते हुए कहा—'मगबति । इस 🔙 संकटने आप हमारी १क्षा करें, इन्होरे लिये अब दूसरा कोई भी नहीं है।'

देवताओकी यह वाणी सुनवर बीस मुख्योंने आवृध धारण किये सिंहाकवा नक्दुली साथ कुम्यी-स्वरूपा पगवती प्रकट हो गयीं। वदनस्था परम विद्या स्वरूपाण भी वहाँ आये, जिनमें इन्द्रमारी, गुरुकेकी, प्रस्त्य, सरक, कुछ, पुलोम्ब, सरम, सम्बर, दुन्द्रीय, इस्कल, न्यूचि, मीम, वातापि, श्रेनुक, करिंस, मानाकृत, कराकप्, कैटप, साराजित, सहु, पौष्कु आदि देख मुख्य थे। वे प्रस्त्रातिक अप्रिके समान तेवसी, जिन्नु बाहुनोपर आक्रम अनेक प्रस्तरके शक्त, अस्म और ध्वामकोको धारण किये हुए थे। उनके आगे पणव, भेरी, ग्रीमुख, सञ्ज, इसक, विविद्या आदि साने कन रहे थे। दैस्पेंगे युद्ध आरम्भ मा दिया और भगवतीयर रार, रूट्ट, परिच, पहिला, राकि, तोमर, कुन्त, राक्तरे, गद्ध, मुद्दर आदि अनेक आयुर्वादेशे वृष्टि करने संगे। भगवती भी कोचसे प्रम्यस्थित हो दैस्पेक्ट संहार करने सम्में। उनके प्याप आदि विद्योंको वसपूर्वक प्रोनकर देवगणीको सीप दिया। भगभारे ही उन्होंने अनन्त दैस्पेक्ट मा दिया। स्वास्त्रके कारहको प्रकारकर पृथ्वेपर माना विद्या। स्वास्त्रक कारहको प्रकारकर पृथ्वेपर माना विद्या आदिया। स्वास्त्रक प्रम्य निकले। इस प्रकार देवीको कृत्यासे देवताओंने विद्या प्रम्यक्रित कारहकपुर्वर आकर भगवतीका विशेष उस्तव प्रमान। प्रमार सिर्मा और प्यापाओंसे अस्त्रक विशेष उस्तव प्रमान। कार सिर्मा और प्यापाओंसे अस्त्रक व्यापानीका वस्तव करहा माना सिर्मा क्रियाको उपवासकर प्रमावतीका वस्तव

महाराज है जान इसे जानान निर्मिश सुनिये। पीच मासके मुख्य पहाडी नक्सी तिथिको कानकर पूजाके लिये पूर्व अधने इस्मिश केंद्र असे अवस्थान कुमारी भगवतीका पूजन करे साथ हैं कि प्राथमिको चगवतीके सम्मुख स्थापित करे और सालती-पुष्ट, भूग, दीप, नैवेश, गम्भ, कर्दन, विविध प्रस्त, घासा, शका, दीव एवं बिना अधिको सिन्द विविध अध्य

का प्राथमी कृष्ण को नक्षत्रपालिनीय्। त्रकारेश्चे किया गति सर्वत्रपुर्वकरीय्॥

— फिर कुमारियों और देवीयक माइश्लोको भीजन कवाये, सम्प्र-प्रार्थना करे, उपवास करे या पितपूर्वक एकपुक्त क्षेत्र इस अकारसे जो पुरुष नवमीको तपवास करता है और प्राथाओं से प्राथानीयों जलंकृत कर उनकी पूजा करता है, उसे कोर, आंत्र, कल, राजा, शबु आदिका भय नहीं रहता। इस नवाये तिकिको प्रमावतीने कियाय प्राप्त की थी, व्याः यह नवाये इन्हें बहुठ प्रिय है। जो नवसीको प्रतिपूर्वक व्याप्त कर इन्हें व्याखारेपण करता है, वह सभी प्रकारके सुखोको प्राप्त कन्त्रमें कोरलोकको प्राप्त होता है। (अध्याम ६१)

#### उत्पा:-नवमी-व्रतका विधान और पास

घगवान् श्रीकृष्ण बोले---फाठन ! अन 📖 उल्का-नवमी-वतके विषयमें सुने। आधिन मासके ज्ञानत अर्थनः को। अन्तर गण, 🏢 जून, 📟 📟 भैरव-प्रिया चानुकादेवीको एक को, क्यान्तर इस मन्त्रसे हाय जोड़कर लुति करे-

महिपप्रि महानाचे पातुन्ते मुख्यासिक्षि । एक्पमारोप्यक्रियमें 💹 🔚 क्लेडस्ट्र से 🛭

(क्यारम् ६३ । ६) इसके बाद विकास सार, 📰 व क्या कुम्बरीको भोजन कराकर उन्हें नीत्स कंत्रुक, आधुक्त, कहा एवं 📟 आदि देशर संशुष्ट करे। बद्धाने मानवती ...... 🛗 👣 अनन्तर पूरिका अध्युक्षण को । सरकतर प्राप्तक 🕬 लगायत आसनसर वैद साथ। स्टापने पता रहायत, जो भी

भोजन जन हो साथ परोस ले, फिर एक मुट्टी हुन और सुखे प्रकार प्रकार प्रकार कर जितने समयत्क प्रकार 🛷 उतने समयमें हो चोजन सम्पन्न कर से। अधिके शास होते 🎹 चेजन करना बंद कर अस्वयन करे। बायुच्याका इदयने म्यानकर प्रत्यक्षपूर्वक भाकर कार्य करे । इस प्रकार प्रतिन्तात सम्बन्ध होनेज कुमारी-पुत्रा करे तथा उन्हें वका, ातुकाः केवन **मार्ग** देशर इससे **व्यास्तास्त्र स**रे। सहायको सुक्रमं एवं पौका दान करे । हे पार्थ ! इस प्रकार जो पूजा उत्का-नवर्णका प्रत करता है, उसे शत्, अपि, गुजा, केंग, पूर्व, प्रेट, विकास आदिका पर्य नहीं होता एवं मुद्ध उसक्त प्राप्त हिम्सा, परस्था स्थिति १५४ पहल 🛊 । इस उरम्बा-नवन्त्रे-जासको करनेवाले पुरूष और को उर-कार्य संदर्भ तेवाओं हो जाते हैं। (अध्याप ६२)

# दाराजकार-अत-कथा, विद्यास और काल

धार्थान् श्रीकृष्यः 🔤 🕯—एवन् ! सत्तकृतेः प्रारम्पमे पुरु 🔤 🌉 💹 📆 थे। 🚾 🚾 दिन्या अस्यन्त परिवास 🔳 । वे आक्रमणी शोषा वी 🛅 निस्थार गृहकार्यमें सेलप्र रहती थीं। वे वहर्षि मृगुल्दे अवहायः करन करती थीं। भूगुमी भी 🔤 🚌 प्रसन्न 🚾 थे ह

🔤 समय देवासूर-संग्रामने चगवान् विष्णुके 🕬 अपूर्णेको महान् कम उपनिवस कुमा । तम वे सभी असूर महार्थे भृगुकी शरकमें 🔤 । महर्मि भृगु 🚃 🚃 अस्टि कर्म अपनी पार्याको सीएकर स्वयं संबोधनी-विकास अन्य कानेके लिये हिमालवके उत्तर भागमें 🚃 📖 करने लगे। वे मगवान् शंकरकरे 🚃 कर संबोधनी-विद्यापने 🚃 🚃 दैसराज बहिन्से सदा लक्क करना करने थे। 🌉 सनव गंभापर चवकर मगवान् विष्णु वहाँ 🔠 और देखेंका 🚥 करने लगे। शणभरमें ही उन्होंने दैखोंका संहार 🚥 दिया : भुगुकी 🐖 दिवस भगवानुको साम देनेके लिने उत्पाद हो गर्यो । उनके मुखसे राहप निकरना ही कहना था कि भनवन् विष्णुने कालो उनका सिर काट दिया। इतनेने पुगुषुनि पी

संबोधनके-विकासके सामान वहाँ का गये। उन्होंने देखा कि सके देख नह भये 🖁 🚟 सकती भी मार दो गयी है। क्रोबान्य हो भुगुने भगवान् विव्युको रहम दे विवा कि 'तुन दस का बनुकलोकमें 🚃 लोगे 🖰

मराकार् सीकृत्यने वाक्षान्त्रभावतः । पृत्ते स्थाने जग्यक्ती रक्षाके रिल्मे में कर-कर अवतार प्रदल करता है। जो 🐖 चरित्रपूर्वक नेरी अर्चना शरो 🕻 🖩 📖 अर्पनामी ân to

**ार्था पुलिशिये सदा**—धगवन् । अप अपने दशक्ता-ततमा विधान वाहिये ।

चनकार् अक्टिका कोले-महाराज ! भारपट गासके इसमान्त्रे संबतिक्ष्य हो नदी कादिये ...... वर्षण प्राप्ता करे तथा हा अवकर तीन अनुसारित क्कानका पूर्व लेकर पुराने पकाचे। इस प्रकार दस 📖

वहे । प्रतिवर्ण पूर्व, घेकर, कसार, मोदक, स्वेहरतक, कव्यवेहक, ब्रोबरस, अपूप, बर्णवेह तथा

····· — ये पनवात उस चुर्जरे बनाये और उसे पगवानुको

नैवेशके रूपमें समर्पित करे। प्रत्येक दराहरको दस केंद्रे दस सक्षणोको दे। नैवेशका आचा पाण पाणकन्के सम्परे रख दे, चौचाई सहायको दे और चौचाई पाण परित्र जलाराकार खकर बादमें राज्यं भी प्रहण करे। गल्म, पुण, पूप, दीन आदि उपवारोंसे मन्त्रपूर्वक दराहरकारोंका पूजन करे। पाणकन्के दश अवतारोंके नाम इस सम्पर्ध हैं — (१) पराव, (२) पूर्ण, (६) परश्रास, (४) वृद्धित, (५) स्थितमा, (९) पुज, तथा

अनुसर प्रार्थन करे-

(६०) मरिक।

गतोऽसिंग सरमं देशे हरि जासको प्रजुन्। जनतोऽसिंग व्यास्त्री स मे विक्यु: जनीवह स

### आरमान्यमान्यत-क्षत्रा एवं अत-विधान

क्षीय दिखा है।"

दममनीने निहासे उठकर देखा तो नलको न प्रकर कह उस भोर करने इस्तावसर करते पुर गेने लगी। प्रकृत दुःख और शोकसे संताय होकर कह नलके प्रस्तावी इन्छासे इन्छ-उकर भटकने लगी। इसी प्रकार कई दिन बीत गये और भटकते हुए वह प्रकार पहुँची। वहाँ वह प्रकार हमें एते है। किसी दिन संतुष्णेसे मिरी हुई उसे केंद्रिकेट एकावी प्रकाने देखा। उस क्रियम् वैकासी कार्थः भवत्या व्यवस्थः । नक्ष्यकार्थनभागः विनिवेदितः ॥ (स्वरूपं ६३ । २४-२५)

क्ष्म व्यवस्था करन करनेवाले सर्वव्यापी, सम्पूर्ण संस्थाके स्वाची है नरायण हरे ! मैं स्वापकी शरणमें अवस हूँ । है देव ! आव कुलवर प्रस्ता हों । वनहर्दन ! आप परिस्ताय प्रस्ता होते हैं । आव अवसी वैकानी भावको निवारित करें, क्ष्मों आर अवने कानों ले कहाँ । की अवनेको आपके लिये

इस जनार जो इस करनी करता है, यह परावस्के अनुस्तरों जन्म-मरणसे कुटबार आप्त कर लेता है और सदा विन्युक्तोंकों निकास करता है। (अध्याप ६६)

समय दमयनो कदमानाँ रेखाने समान मूमिपर पड़ी क्रूँ भी : 🚃 पुरुष्यक्त 🔤 वा। राजमाताने 🔣 समने क्कानो ह्याला पूर्ण — 'क्वानो । तुम 🕮 🖩 ?' इसपर दमक्तीने लिया है। हम कहा—'में सैरमी है। मैं न विजयेके परण थोती हैं और न विजयेका उरिवाह पदाण स्थाती हैं। वहाँ रहते हुए कोई मुझे प्राप्त करेगा तो वह अवस्के हारा एक्टनेय होगा। देवि । इस प्रतिक्रके साथ मैं वहाँ रह सकती है। 🔙 🚾 क्ल--'डोक है ऐसा 📕 देश।' तब द्यक्षणीने वर्दा रहन्। श्रीकार किया और 🎆 प्रकार 🚃 समय करोत इका और किर एक ब्रह्मण दमयशीको उसके मक-विक्रके पर ते अस्य : पर मजा-विक्र तक प्रवर्षिक केंद्र चनेपर भी 🚟 📟 वह अत्यन्त द:खी रहती थी। एक 🔤 दमकतीने एक नेष्ठ अञ्चलको बुलकर उससे पुरा 📑 🖚 🕶 क्या को है ऐसा दान एवं सब बक्रकारे, 🔤 🔳 📺 मुझे प्राप्त 📗 जाये ।' इसपर उस बुटियन सक्ताने बसा—'धो । दूस मनेवासिक 📖 **ा अपन्य मानादरायी मतको करो।**' तम दनवतीने पुरावकेक उस 🚃 🚃 मुरेहित ब्राह्मणके द्वारा ऐसा कहे व्यनेपर आर्श्वदरुग्धे-शतका अनुहान किया। उस 📟

प्रधानको दमकलीने अपने परिन्धी पुनः प्रपत किया।

१-दशकारोंने दो पक पक क्षेत्रे 🖟 🌉 करवन् कृषको पूर्वतन करवन् करवर 🚾 स्था पण है 🚾 🚥 उन्हें दश

युवितिहरने पूछा — हे गोमिन्द ! यह आरावदराणी जत किस प्रकार और कैसे किया 📖 है, जार सर्वत है, जान इसे बतलाये ।

धगवान् श्रीकृष्ण घोले—हे करन्! इस वराके प्रश्नमसे राजपुत 🚃 राज्य, कृशक सेरी, जनिन्ह 🚃 साथ, पुतार्थी पुत तथा मानव वर्ग, अर्थ एवं स्वयन्धे सिर्देश

प्राप्त करते हैं। करना नेवा वर प्राप्त करते हैं, नवान निर्मित यह सम्पन्न कर होज है, 🜃 वेगले 🚃 🛍 🚃 है और

परिके पिर-प्रवास हो जनेपर भी उसे शीम ही सन्त कर शेरी है। हिल्लोक दक्तजनित पेड्रामें की इस बताने फेड़ा पूर हो जाते

है और कह नहीं होता। इसी प्रकार अन्य करवेंकी सिकिके

लिये इस आराहरानी-मानवे 🚃 चाहिये। 🖚 🖫 🚟 किसीको 🛗 🚃 पहे, 🔤 शतुर्वको 🔤 इस 🚃 च्याचि ।

यह आरादरानी-अर विस्ते भी समन्दे सुमार प्रकृषी दसमीको किया 🚃 है। इस दिन प्रकश्मक कान 📖

देवताओंको पूजा कर रहिने पूज, अलक तथा करन आदिले दस आरहदेक्यिके पूजा करने पादिने । पहने आंकनो जैसे अवना विद्वारक्ते पूर्वीद दलें

प्रतिमाओको छन्के बहन तथा 🛶 🚾 सुराभित 🕮 तने ही ऐसी आदि दिशा-देविचोंक रूपमें महस्मर पूजन करन पाहिने । समको मृतपूर्व नैनेस, पुष्पक्-पुष्पक् द्वीपा तथा

minus आदि समर्पित करना चाहिने । इसके अनरात अपने कार्यको सिन्दिके शिषे इस अवस्य कर्यन 🔤 च्यादिने---

**ार्कार स्ट्राइट स्ट्राइट से अवेश्याः ।** 

सारकदाव्यक्तिके प्रसंत्रमे राजा कुलक्ककरी 🚃 🚃 इस-विभाग

महाराज युविद्विरने कहा—भगवन् ! 🛮 🚃 🚃

पराकी है। भीषा, होन आदि महारक्षकांका की 📖 किया। आप कुराकर कोई ऐसा ...... नताये, जिनसे मैं इस वध्यक्ती

पारसमृद्धने सुरकार पा सकै।

भगवान् अक्रिका केले--- पहराव ! 📖 कलमें

विदर्भ देशमें एक 🚃 🔤 🚃 🚾 कुछ 🔳 । किसी दिन 📖 मृगयके लिये वनमें स्था। वहाँ उसने

मुगके 🔤 📹 तरस्य बहानको कन्मो 🚃 दिया।

**असदेन राज मरनागमिरवरि ॥** (कारपर्व ६४ (२५)

हे जल्हेदेवने । नेरी आरार्षे 🚃 🚃 हो, मेरे गाउँ पूर्व 🔣 व्यवसोगोंके अनुमहसे मेर सदा

करकार हो।" इस 🚃 विधिवत् 🚃 कर मञ्जूपको दक्षिणा

प्रकृतकार 🚃 🚃 २६०० श्राहिये । इसी क्रमसे प्रत्येक क्षको इस अल्बे करन चहिने । क्याक अनन मनोरभ पूर्ण न 🛢 जून, सम्बद्धा इस 🚃 पानन चाहिने। सनसार

**ार्का** करना चारीले । उत्साधनमें आर्श्वदेवियोच्ये सीने, चाँदी अवन्य विद्यालको प्रतिक बनकर करके आँगनमें उनकी पूजा

करके देखी, आदेखी, पान्या, नैप्रति, बादनि, पानन्या, सीन्या, रेलाने, ..... मधी—हन दस आरबदेनियों (विशा-

से अपीक्ष परस्पाओंको स्थित्के रिप्ये प्रार्थमा 🚃 चाहिने, साम 📕 नक्षणे, महो, तस्त्रमहो, नशान-महत्त्वकरो, मूल-देश-विकायकोसे 🗷 अभीव-सिद्धिके 📟

🚃 📰 चाहिने । एक, फल, घूप, गन्द, 📰 आदिसे क्ला पुरा 🔤 चाहिये। सुहारीओ 🔤 पुरा-गीन

स्कृतको सब कुछ पुनित पदार्थ सम्बद्धा भर देना चाहिये और रुपे अवाय कर सम्बन्धानम् करने चाहिये। अनन्तर कम्-कम्बर्वे एवं निर्धेक साथ असम-नतसे भोजन करन

च्योते । हे चर्च ! 🖫 इस आसदरानी-असके श्रद्धापूर्णक करता है, उसके सभी मनोरच पूर्ण हो जाते हैं। यह अस 🚃 🚾 📰 केरसार है। (अध्यय ६४)

----

मरनेके 🚃 उस 🔤 उसे भर्मकर रीरव 🚃 🛍 हुई ।

🚃 🚃 दिसेतक नरककी यातनको घोगका भवेकर 📰 📰 सर्व-चेनिने 🖩 उसने 📰 किया। 🛍

बारण 🌃 सिंह-बोनि प्रान्त 🔣 । इस 📖 उसने वर्द निन्छ **ार्जिक अन्य दिवस और स्थापन योगिमें पाप-कर्म क**रता

रहा। 📰 क**र्वेक्क**कसे उसे 🚃 घोगना पढ़ता था। चैकि 📰 पूर्वजन्मने सारमञ्जूदरीका त्रत किया या, अतः 📰

📰 प्रश्वमधे इन पाप-म्बेनियोसे 📰 परुदी-परुदी 🚃 होता

गया । अन्तमे पुरः 🛌 विदर्भ देशका धर्माना 📖 हुवा । वह भक्तिपूर्वक तारकहादर्शका 🚃 किया करता था। 🚟 प्रभावसे बहुत समयतक ------ गुण्यार, मानेवर उसने विकालोकको प्राप्त किया।

**ाः वृधिद्विरने पूछा---कृष्णकड् ! इस स्टब्से किस** 

चाहिये ?

मगवान् श्रीकृष्यने बद्धा--- एकन् । 📰 सुक्त पक्रको हादशीको सांस्काहदशी-वत करन पाहिने। प्रात:बढक नदी अधीरने कानकर तर्पन, पूजन आदि सन्दर्भ कर सूर्यास्तरक 📖 🚃 रहे । सूर्यास्त होनेक परिण चुनिके अपर गोमवसे लगुओंसहित एक सूर्य-मण्डलका 📟 करे । आकारामें चन्द्रको मुक्को भी अञ्चल करे। अनकार त्वप्रके अरब्देपातमे पुष्प, फल, अश्वत, गन्ध, सुवर्ण स्थ्य कल 🚃 🚃 उस अर्थपानसे 🚃 देनों अनुग्रेको भूमिया टेककर पूर्वीपम्स 🔤 'स्कूक्क्कि' इस मन्यते

का प्रचलको आर्थ प्रदान करे। अनसर बाह्यण-पोजन कतना च्यहिने । पार्गशीर्व आदि 🚃 महीनोमें 🚃ः खन्द-खन्द्र, सोकलब्द, दिल-कन्द्रल, गृहके अपूर, मोदक, सामग्रेहक, सन्, पुरुषुक्त पूर्व, प्रधुशीर्व, पावस, मृतपर्ण (करंब) और कारारका फेबन ब्रह्मणको कराये। तदनशर **क्षम-प्राचेन 🖿 मीन-पारपपूर्वक 📰 🖩 पोजन क**रे । व्याप्त करें। बेदको ताम बाद्ध गढे एक दक्षिणके 📖 का गण्डल महानको निवेदित का दे। इस विधिसे जो पुरुष और की इस क्षाकारको करूको पास 🐧 🛮 सुर्वेक स्वयान देदीन्यमान **ावारी मैठकर नहण-लोकको जाते हैं। यहाँ अनुत पर्णेतक म्यान कर विका**लोकको करा करते हैं। इस प्रताको सती, कर्वते, औरंत, राजी, ध्यमको, स्विमकी, सराधामा अवदि शेष नारियोंने जिल्हा था। इस बहुको करकेरे अनेक अन्तिये किये 🔤 🚃 नह 🖺 🔛 🛊 (अच्याप ६५)

# अरण्यक्रवानी-प्रतका विचान और पाल

पुनिक्रिये अस्त — केप्रभावतः । आएपहादको जनका व्याप्त वतन्त्रये ।

भगवान् श्रीकृष्य बोलं—गौलेव । बांग पहल जिस अंतर्के एमण्डाजीको आक्षासे धनमें संतर्कने किया धा और अनेक प्रकारके भश्य-योज्य **व्यक्त** प्रनिविधयोको र्वतष्ट्रं विदया था, उस अरज्याद्यदेशी-अर्थ्या विश्वार में बतरहरू है, 📖 प्रीतिपूर्वक सुने । इस वतमें मार्गशीर्व भारत्यी शुक्तक एकादशीको प्रातः स्थानकर भगवान् कनार्यनको भनिनकुर्वक गन्ध, पुष्पादि उपचारोसे पूजा करनी चाहिने और उपजस रखना चाहिये । गतिये जागरण करना चाहिये । दूसरे दिन स्थान आदि करके वेदक्र बाह्यपाँको उपकारों से व्यक्त प्रयः 🚥 आदि भोजन कराना चाहिये । अनन्तर पहान्यका प्रारम 🖿 स्तर्य भी भोजन 🚃 व्यक्तिये।

इस 📟 एक वर्षतक इस करे। प्राप्तन, कार्तिक, माध तथा वैत्र मासमें वृक्षदिसे सुरोपित किसी सुद्दर कार्ने अरण्यवासियों, मुनियों तथा अन्तर्योंको पूर्व यो उन्तरपुरा बैजनर मण्डक, पुत्रपूर, सम्बन्धिक, स्वयः,

प्रकार, पहल 🚃 🚃 भोज्य पदार्थीसे संसूह करे और धीवन्य प्रदान करे । कर्ष्, इस्तयको, करत्ये आदिसे सुगन्धित च्या चाहिये । क्यमें रहनेवाले भूनिगान एवं उनकी भीरचे, एक 💹 अध्य 🔚 📑 गृहस्य आदि 🗪 व्यक्तनोको 🔣 कोवन करान भाडिये। वासुरेव, जनार्दन, ट्रामेटर, मयुस्टर, परायम, विष्यु, गोवर्षन, त्रिविकान, श्रीचर, इनीकेल, पुष्परीकाश तथा वराह—इन वसह 📟 कारकारपूर्वक एक-एक ब्राह्मणको योजन गणान्य वस और दक्षिण देवर 'विष्णुने प्रीक्ताम्' यह वावर कहकर अपने भित्र, राज्यन्थी और बान्धवेकि शाध रूपी भी मोजन करे । इस

🚃 👊 अरण्यद्वदर्श-वत करतः है, वह अपने परिवारके

साथ दिन्य विमानमें बैठकर भगवानुके बाम केराद्रीपमें निवास

काता है। वह वहाँ प्ररूपपर्यन्त निवासकार मुक्ति बार करता

📗 विदे कोई की भी इस मतला आकरण करती है तो वह भी .

संसारके सभी सुखोका उपयोग कर मगवानकी कृतासे

🚃 🚾 ऋष 📉 है। (अपसम् ६६)

# रोहिजीचन्त्र-व्रत तथा अवियोग-व्रतका विधान

मीठी-मीठी केली केलने लगते हैं। मेरकोब्दे प्यत्रि भी कड़ी सुहावनी सपती है, इस समय कुलीन कियाँ किसको 🔤 दे तथ्य कौन-सा सल्हर्ग करें और के किस सिकिंग कीन-सा जत करें ? अरप इसका वर्णन करें।

भगवान् श्रीकृत्वाने व्यक्त--- महायन ! वेह कियेको इस समय रोडिजीचन्द्र-वर्तमः पालन काला चाहिने । सामा मासके कृष्ण प्रसुक्ते एकादशीको परिवा होकर सर्वोत्तिविभिन्नेत जलसे जान करे, अनन्तर उद्भरके आटेक्ट एक 🔣 रुपुरिका और पाँच पत-मोदक बनाये : सभी इसम् कलारायपर बाथ और उसके करूपर विकास प्रकार रचना बारे, हेर्सी रोहिपीके साथ चन्द्रभाको अञ्चल कर गण, पुष्प, भूप, श्रीप, अश्रत, नैयेख आदिसे उन्हर्ध अर्थेक करे 📟 🚃 🚃 उन्हरी आर्थना को —

सीमराज नवसूच्यां रोहिन्दी ते व्यक्ते वयः। महोत्रांति न्यूनेही सन्तर्भ संतरिकानी ॥ (Speed to La)

प्रीयताम्' ऐसा कहते हुए पुजन-प्रमा महानके दिन्ये निवेदित m दे । अनुसर कमरतक असमें उत्तरकर पनमें **विका**रणा तनुमाका ध्यान करते हुए वन इन्दुरिकाओका भक्तन कर ले। अनुनार जलसे कहर 🚃 कहान्येले 🚞 कारकर यबार्शके दक्षिण है। पुरुष मातिपूर्वक 📖 📖 है, बह धन-कन, पुत-कैपदिसे

गोवसमूद्रशीका विधान, गौओवा ह्यांक्य मुनियों और राजा जतनपादकी कथा

महाराज कुरिक्षिरने कहा—भगवन् । 🐺 राज्यको प्रारितेत सिमे अद्वारत असीतियो सेनाई वह वह है, इस पापने मेरे क्रिया बहुत पूजा करका हो गयी है। साल सक्ता, क्षत्रिय, वैरुप तथा सुद्र आदि सभी मारे गने हैं। चीमा, दोना, काँरेगराज, कर्ग, पारच, दुवाँचन सबीदेके मरनेसे मेरे इट्चमें महान् हेन्त्र है। हे जगरपते ! इन फ्लॉसे कुटबार फ्लेके टिले किसी वर्णका आप वर्णन करे।

चीपूर्व होकर बहुत 🚃 📺 पोगकर तीर्व-स्थानमें प्रस्केट 🚃 करता है और सहलोकको 🚃 🐧 अनन्तर विष्युत्येक, सदनका शिवलोकमें जाता है।

महाराज मुक्तिहिरने पूजा — मगमन् । आस यह नताये कि अभियोगका किस विधिसे किया जात है ?

व्यवसन् अविकास भोते—महाराज । अविकासम सन्ते 🔤 📑 है, मैं उसका विश्वन 🚃 हैं, आप व्यवसूर्वक सुनै।

च्यापद मासके शुक्त पक्षकी हादशीको प्रतः उदका अस्थासकर जकर कान करे, शुद्ध शुक्त क्या भारतकर सुन्दर दिन्ये-धूने स्थानकर शोकरसे एक मज्जराका निर्माण कर, क्रियु, गैंग्रेसीत रिल, व्यापा महार, सूर्वकरक्यकी प्रतिमा स्थित पुन्, जून, और असरे 🚃 इन करें देवदम्पतिसंकि नाम-मधीने 🚾 'ब्रोड'बार तथा अन्तमे 'क्क' 🚃 पंचनकर पृत्र **ए**व प्रर्थना करे। अनकर age को अने करान कहिये। फिर विविध दान देकर साथे वी भोजन करना वामिये। इस अवियोगसतको से करता है, उसका कभी भी इंडअने (शिश, पुत, पत्नी आदि)से विपीप 🐙 क्रेश 💹 बहुत समयतक हुन स्त्रंस्वरिक मुख्येका भोगकर प्रान्तरः किन्तु, दिख, ब्यून और सूर्यलोकमें निवास 📺 अन्तरे सेवा पान करत है। जो वी इस वतको करती 📗 🛥 🖛 सची अचीह फलोको 🚥 🗰 विकालोकको अन्य करती है।

(अभ्याम ६७—६८)

क्रकान् सीकृष्ण कोले—हे 📖 । गोनसस्यदशी नम्बद्ध 📖 असेव कुन्य प्रदान करनेवाला है।

व्यक्तिक्षेत्रे पुरा-पारवन् । यह गोवरसध्यदशी बहैन-सा तत है ? इसके कालेका क्या विकास है ? इसकी कब और कैसे उत्पत्ति हुई है ? ये नरवारणंत्रमें सूब रहा है, 📰 ! 🛲 मेरी स्था कीजिये ।

व्यवस्था कोले—पर्व ! सत्वपुगरे

पुण्यसाली जन्मुकर्ग (महीच) में नामारकर समक 📰 रंशनि 🚃 रमनीय 🚃 पगलन् रांकरके दर्शन करनेकी इध्धारी करोड़ी मुनिगन तपस्य 📰 खे थे। 📰 क्रपेकन अतसनीय दिव्य काननोसे 🚃 🚃 🚾 भूगुका आक्षमनम्बद्धनं या। विभिन्न मृतकान और बंदछेसे सपन्तित् था। 🔤 🔤 सपी जंतली पत्, आकरपूर्वक निर्यय होकर वर्डी साथ-साथ 🖩 🗯 वरते थे। उन अनियोको दर्शन देनेके व्यावसे धनवान् शंकारने एक नुश्च अञ्चलका वेश 📖 शिया। कर्यर-देशकले वे 🕬 🚃 इच्चे 🔤 दिने कॉको हुए का त्कान अले। जगनाता पार्वती 🔣 सुन्दर समस्त्रा गीवा छन करनवर 📟 श्ववस्थित हो । पार्थ । गीका के 🚃 है, 📰 📖 सुने—प्रयोग 📖 क्षेरसगरके मध्यके समय अणुक्ते 🚃 📰 🚾 उत्पन दुर्ग—रूदा, सुच्छा, सुर्याप, सुरहेता 🚃 🛗 सोधमान 🕶 गव 🕯 । 🚃 🚟 📖 🚃 देवताओंको हरियके लिये हुआ है। देवताओंने अधीर कामनाओको पूर्वि करनेवाली हुन यांच मीओको व्यक्ति प्रमाणि, भारतान, समित्र, अभिना तत्त्व गीतप्रमुक्ति आस्य किया और 19 मधुभागोर्ने एके प्रकल निरुप । गीनोंके क असू—गोमव, रोक्स, सूब, दुख, दवि और कृत—वे असम्ब प्रमित्र और संसुद्धिके सामन भी है। गोमानके शिवंतिय सीमान् विरमणुश्च उत्पन्न हुआ, उसमें परवहरूत जीतावर्ग 📟 है, अमेरियों इसे मेन्स बक बात है।

📺 गुण्युल 🔤 🔤 आहार है। विशेवरूपसे 🔤 🚃 🕯 । शंसारमें जो पुरु भी 🚃 बीज हैं, वे सभी नोटुन्बरे 🚃 है। प्रयोगनार्थ 🌃 🚾 सभी मानुसिक 🚃 दक्षिसे उत्पन्न 🛊 । भूतसे अमृत उत्पन्न 🔤 है, जो ···· विकास सामन है। साहाय और मी एक ही कुलके दो 🚃 🖟 व्यक्तकोके इट्यमे से बेट्सन्य 📖 करते 🛘 और 📟 इदक्तें 📰 खती है। मानके से यह प्रकृत होता है 🔤 कोरे 🔛 📖 देवनम्ब प्रदिक्षित है। गायने 🔛 📟 स्त्रोतकेत सन्दर्भ केंद्र **सामा** हैं<sup>द</sup>ा 🚃 📖 अक्रमें सद् 🚃 और निष्णु प्रतिक्रित 🛊 । नालेर अजधानमें 🔤 चराचर एवं समस्त तीर्थ 🚃 है। सभी व्यवस्था महादेव 🚾 मध्यमें 🚾 है। 🌃 🚾 गीरी, व्यक्तियाने व्यक्तिया 🛅 गामिकाने दोनी कुटोंने 🚃 📟 में दो मान अतिविक्त 🖁 । दोनो जरीवनीक्यारं, नेवीने 🚃 💹 सूर्य, प्रीतीने आठी क्तुनन, निकृते 🚃 नुक्रमें शरकती, 🚾 यम 🚟 ६७, ज्ञाहरू देवे संभागे, संख्ये हम, मनुद् (मेर) में राजस, पार्टिन-पारामें 🔛 और 💹 🔛 🖼 चरणेसे 🔝 क्य 🚃 📉 📳 श्रुपेक बध्यमे गर्भाव, अवसागरे क्ष 🔤 प्रीक्ष्य-भागमे राजसगण प्रतिहित 🕯 । 🔤 पृष्ठदेशमे पुरुष्टर 🚃 📰 संचित्रीये जरुग, श्रीणितट (स्थर) हे

गोमक्से 💹 कमलोह 🔤 🚃 हुए हैं। गोरीचन अविशय

📰 है, वह परित्र और सर्वार्थसाधक है। गोमूबसे

गुणुलको 🚃 📕 है, जो देखनेमें प्रिय और सुगम्पियुक्त 🖥 ।

१- विरोधित सम्बद्धः यः पूर्ण्याक्षे । यह व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त । यह व्याप्त प्रति । यह व्याप्त व्यापत व्यापत । यह व्यापत व्यापत । यह व्यापत व्यापत । यह व्यापत व्यापत । यह व्यापत व्यापत व्यापत । यह व्यापत व्यापत व्यापत । यह व्यापत व्यापत

पिता, अखेलोमें मानव तथा अखनमें स्वाध-रूप करावारक आदिता कर 🔳 अवस्थित हैं। आदित्वररिक्कों केश-समुद्रोंके विष्यीपत हो अवस्थित हैं। गोन्त्रमें 🚃 गहर 🚟 गोमवर्षे यमुना विका है। केसानुहमें तिक्षंस करोड़ देवनव प्रतिहित है। उदरमें पर्वत और जंगरबंकि साथ १५वी 🚟 🚟 है। चारों पर्यावरोंने करों महासन्द्र स्थित है। मेथ, कृष्टि एवं अस्त्रीक्टु है, किली गर्वकार्यात, इटब्से दक्षिणाप्ति, कण्डमें आहक्तीवापि और क्लूमे सम्बद्धि विका है। गौओंको अस्थियोंने पर्वत और मध्याओंने यह विका है। सभी बेट भी गीओंमें | | वै हे व्यक्तिर ! भगवती 🔤 😑 सूर्यपर्वते 📟 अपना भी 🗪 वैसः 🛮 📖 दिनवा । 🕾 📖 रामंत, प्रोप 🚃 निया, मन्युक्तनेता, सुन्दर पूरानाती, तासके सम्बन रक इत्यक्ती, 🏬 सन्दन उत्तनक काँदे-भागवाली, सुन्दर कुर 📰 सुन्दर मुख्यपती, 🚞 मुतीला, पुत्रकेहवरी, यपुर दृष्यक्ती, शोधन पर्याधस्त्रक्ती-इस प्रकार सभी शुभ शक्षणीये सम्बन्ध सम्बन्ध प्रकारका इस 🚃 पुद्र विकासकारी भगवान् शंकर प्रसम्बन्ध क्रेकर परा रहे थे। प्रे पार्व । पार्ट पर में अब अवसम्में 🖼 📰 कुलवर्ति पृतुषे पास जाकर उन्होंने उस गायको न्यास्टब्यों के दिनतक उसकी सुरक्षा करनेके रिध्ये 🚧 रे 🔤 और क्क्स—'मने ! मैं यहाँ कानकर कन्युकेली कारीना 🚟 🖫

दिन बाद लौट्रेगा, तबतक अरप इस प्रकार रखा करें। मुनियोनि भी उस गीकी सभी प्रकारते रक्षा करनेकी प्रतिका ६-मुहलूरो एवं नित्रं आह रिच्छू। अस्मिति मुहले मार्वनेची प्रत्यक्षी कार्यन पार क्षित्रे प्रथ्ने महर्देशः सर्वेद्यसम्बद्धानस्य । अस्तरे 🚃 🗐 मस्तरे ने व वस्तुतः । कारपुरामधीलो । कर्नकर्तको 🔠 चलुन्त । स्रोतकरको । करी रपोपु काम: सर्वे विद्वार्थ करणः स्थितः। सरस्ती भ दूसरे 🚃 प गणाने: ४ givereit ermigene unter un gegebateffen unge im militere ernfleten a महत्त्वसम्बद्धे क्षत्रे नितं प्रमुख्य निवृति । सुरम्पतेषु १८०वर्थः 🚃 व प्रस्याः । कुरून प्रोडो पूर्व व्हान: सम्बद्धित:।सा एकास 📗 सत्त्व. स्रांतिका : क्षेत्रीतहरूकः विद्वार क्षावेतीत् व सहस्त्वः स्रीत्यते कर्ण वित्ते अञ्चलनकारकीरतः । अविद्या रहता 🚃 विद्योग्य स्थापिक । सभाद्या व चेक् 📶 व्यून विद्या ॥ प्रविदेशम् देखानेटाते केमपूरे व्यवस्थितः। इतरे पुरिचते वर्णा स्त्रीतस्थानसम्बन्धः। परवारः सामतः श्रेष्ठर गर्व ने तु प्रकेशरः। वर्षणः श्रीतकरम् 🔣 विज्ञानसम्बद्धः ।

की। धनवान दिख वहीं अन्तर्शित हो गये और फिर धोडी देर वे एक व्याध-रूपमें प्रकट हो गये और नहवेसिंदत भौको दर्जन समे । ऋषिएमा भी व्यक्तके भवसे आकार हो आर्रनाद करने समे और जानका जानको इटानेके उपाय करने स्त्रो : म्हास्त्रे चथरो सवत्स्य वह गी भी कृद-कृदश्य रैपाने लाने । व्यक्तिर ! व्यक्ति प्रथमें इंग्रे वृद्धे गौके मागनेपर चार्पे क्रोभ 🔤 शिल-मध्ये पर गया। अक्टरमें देवकओं एवं निकारेंने 🚃 (थनवान् शंकर) 🔜 सकतंत्र गी. (माता पर्वती) की कदन की। शिलाका यह विश्व आज भी सस्पष्ट देखता है। यह करंदाओका उत्तम तीर्थ है। यहाँ शासुतीर्थके रिरामीसक्रमा को स्पर्श करता है, वह गोहरवामें मुक्त हो जाता है। राजप् ! जन्मकानि 📖 उस महातीकी जान कर मानव 📰 📰 नीतं नित सारी है। क्क व्यक्तके सवस्त्र में सम्मीत हो रही भी तब मुनियेनि

बद्धारे प्रपा क्रमान 🚃 किया। उस अध्यक्ते व्याप यी सकता गीको

क्षेत्रकः चल्य गया । स्वयुन्तिः उसका गाम रखा युग्वामिरे । हैं चार्च ! को धानम इसमान दर्शन चला है, में स्ट्रांसकप से हो जाते हैं, इसमें संदेश नहीं है। कुछ ही सामेंने भगवान् क्षेत्र अवस्थाति क्षेत्रकर वहाँ साकार अवट हो गये। वे

कुरकार अवस्य के 🚃 🚃 उनके वान भागने 🚃 📰 समा विकास स्वास्तित्वक 🚃 गन्दी.

महामार्थः, सुन्ने, 📟 , चामुच्या, सन्दानार्गा आदिसे परिकृत और पालुका, भूतरामुह, यक्ष, राजवा, गुहाक, देव,

वर्षकोडीक्टीक्यांक्टि (स्था: : का) अनुकरिकेटी: समोदीक्यांट्री रिगा: 8 अधिकारकोत्साः तील मजान् प्रत्यः विका । प्रत्येकेकविद्यः सामोद्ये समुद्रम् । (सारक्षं ६९ । २५—६७) दानव, यन्त्रवं, पूनि, विद्यापर एवं चन तथा उनकी प्रक्रियोंसे दे पुजित थे। सनकादि 📕 उनकी पूजा कर रहे थे।

राजन् ! कार्तिक 🔤 शुरात 🚃 (मतासासे कृष्ण पक्ष) 🔳 इत्यसी सिविधे बहत्वादी ऋषियेनि 🚥 भोक्षपधारिको उमादेवीको मन्दिनी नामसे भक्तिपूर्वक पूजा की

थी। इसीसिये इस दिन गोकसकुदरांबत 😎 जान है। तभीसे उस वतका पृथ्वीतलपर प्रधार हुआ। एका उत्तनस्वदने

जिस प्रकार इस प्रतको पुष्पीपर प्रकारित किया तथे आप

समे— उत्तरपद अपक एक 🔤 📹 थे। 📟 सुर्वय

और शुप्नी (सुनीति) नामकी दो स्थियों में । शुर्वितिसे 🚃 नामका पुत्र कुआ। सुनीतिने अवने उस पुत्रको सुनरिकको सीप दिया और कहा—'हे सरित ! तृम इसकी रक्ष करे । मैं सदा

स्वयं सेवामें तत्तर रहेगी।' सुरुषि सदा गृशकार्य सेवासती अप्रैर व्याप्त सुनीति प्रता व्याप्त सेवा करते यो । रूपमी-देवके भग्रया किसी समय क्षेत्र और 🎟 सुर्वको

स्पेतिके शिलुको मार् बाला, मिटु वह 📟 🗷 होकर हैसता हुआ 📟 गोदमें स्थित थे गया । इसी अध्य

सुरुषिने कई बार पर कुकुरुर निज्या, निजु का कार्यक बार-बार कार्यते हो ३५७ । उसको सीवित देखकर अध्यर्ध-

· सुर्रापने सुनीरिसे पूछा—'देवि ! यह फैसी विकास बद्धम् 🖁 और यह किस 🚥 पत्त 🖺 तुमने किस इका म अनुसार किया है? जिससे तुसार कुछ कर-कर

हो जाता है। m तुन्हें मुससंजीवनी विच्या शिद्ध है ? रह, महारह या चौन-सी विशिष्ट विका कुसने पन 🖫 नद

सत्त्व-सत्त्व बताउते ।'

सुनीतिने कहा – कहा ! 🖣 कर्तिक मसक्ष ह्यदरीके दिन गोवसकात 🔤 है, उसके प्रपापके मेरा पुत

पुन:-पुन: जीवित हो जाता है। जन-जन मैं उसका लाल

**पता** है, यह मेरे फस ही तब ज़ला है। प्रवासमें स्ट्रनेपर भी इस प्रतके प्रभावसे पुत्र 📖 हो जाता है। इस खेकसद्भारती-

ज्ञयन नामक प्रतक्ष वर्णन कर 📺 हैं और कटियन, समूचक

वरके करनेसे हे सुर्खन ! तुन्हें भी सब कुरू प्राप्त हो जायगा

🔤 तुष्पर परस्यम् होया । सुनीतिके कहनेपर सुर्वचिने 🖷 इस बतका प्राप्त किया, जिससे उसे पुत्र, घन तथा सुख ऋष

हुआ । सुष्टिकर्द्धा बहाने सुरुविको उसके पति उत्तानपादके साथ प्रतिद्वित कर दिया और प्राप्त भी वह आनन्दित हो रही

🕯 : दस नक्षणेते 🌉 पुत्र 📖 🖩 आकाशमें दिखायी देते है। पूर्व रक्ष्मको देखनेसे सभी प्रयोगे विमृक्ति हो जाती है।

**बुविधिरने कहा —हे भगवन् ! इस प्रतयर विधि** धी समये ।

भवकान् औक्ता कोले—हे कुरुवेह हे नवर्तिक

मृक्त प्रकृति हादशीको संकलपूर्वक शेह जलारायमें 🚃 बर पूज्य का 📰 एक समय 🖪 भोजन करे। अनन्तर 

बुंकुरर, अल्लाक, रीप, उद्धरके बढ़े, पुन्ते तथा वृक्तकाओं हुए इस अन्तरे पृत्र करे— 🖎 🚃 श्रामां सून्ति ससुनं समावितानाममृतस्य

वरिक्यु क्यो क्यः समझा ((११०८ । १०१ | १५) इस प्रकार पुजाबर गीको प्राप्त प्रदान करे और अवस्था अवस्थे 🔤 स्पर्श करते हुए अर्थभ एवं

नाचिः । 🛪 पु 🔤 विक्रित्युचे 🚃 मा गामनागामस्त्रिति

सम्बन्धाः स्टो---क्षेत्र व्यवस्थितम् हेर्कि सोम्बरणां सुमनन्दिन ।

न्यवर्गन्तिन्तिको संबर्ग क्रुठ निर्दार ।। (असरको ६५ । ८५)

🚃 प्रकार 🔤 एवाकर जलसे 🚃 पर्युश्चण करके चरित्रपूर्वक जीको 📟 करे । उस दिन 📟 पकरपा हुआ

📰 🖪 को और अक्रवर्वपूर्वक पृथ्वीपर शयन करे। 📰 तनके प्रभावते 🔤 📖 सुखोको घोगते हुए अन्तमे गौके

बिको रोवे हैं, क्को क्वीतक 📰 📟 📆 है, इसमें संदेश नहीं 📳

(अध्याय ६९)

# देवशयनी एवं देखेलानी ह्रदरक्रितोका विधान

भगवान् श्रीकृष्य कोले—एवर् ! अन मैं गोविन्द- एवं चतुर्गस्थातका भी वर्षन 🚥 है, उसे आप सुने । युविहिसने पुता-सहराज ! 📰 देव-शवर 📰 🛚 ? 🕶 देखता भी सो जाते हैं तब संसार बैसे कराता है ? देख वर्षों सोते हैं ? और इस सरका कर विधान है—इसे कहें।

मगकार् श्रीकृष्णने कहा—मगकार् सूर्वेड मिथुन पश्चिमे आनेपर भगवान् मयुक्तको मूर्तको राजन कर दे और तुल्बपशिमें सूर्यके जानेकर पुनः भगवान् बनाईनको सदनसे उठावे। ज्यानस्य आनेकः भी वही विधि है। अन्य प्रकारसे न तो हरिको शबन करावे और न उन्हें निहासे उठावे।

अवाद मासके शुक्ल पक्षकी देवलयनी एकादशीको उपवास

करे । भक्तिमान् एरम् सुकल वससे आवस्त्रदेश तकिनेसे यक्त

उत्तम सम्बद्धपर पीताम्बरपारी, सीम्ब, 🚃 🚃 पगवान् विकालो सपन करावे। 🚃 और पुराचेता

विष्णुभक्त पुश्च दही, दूब, राहद, 🔣 और जलसे प्रशस्त्रकी प्रविभान्ते 🚃 🚃 गन्द, धूद, कुंकुम 🚃 🚟

भलंकृत 📰 📉 भन्ता प्रत्येत करे— भुन्ने 🚃 जनवाच जनम् सूच्ये क्रवेदिन्।

विसुद्धे 🕮 सुधीन जनम् 🛅 परास्तम् ॥ (aural on the)

भे **व्यक्ता !** आपके से जनेपर वह सक जनत् भूक हो जाता है और आपके जग जानेपर समूज वशकर जयत महत्व हो जाता है।"

महाराज ! इस बाला पाम्बान् विकासी अतिथाओ सम्बाद्याः स्थापितं कर वस्त्राच्याः सम्बाद्याः भागीवर जिवनाम

रखनेका और अन्य नियम्बेका कह प्रकृत करे। कृतिः का मासतक देवाभिदेशके 🚃 और 📰 🐠 ३०,४००००

विधि कही गयी है। राजन् ! इस अवके स्थानने एवं 🚃 करने केन्द्र

पदाचेकि व्यान्तराज्ञान निक्नोको आप सुने । पुरुष्य परितान कर्मसे अवी अगले जन्ममें मधुर 💹 🚻 राज होता 🛊 :

इसी मकार बार 🚃 तेलका परिश्वम करनेवाल सुन्दर रापित्वाला होता है। कटु हैलक स्थाप करनेसे असके

राषुओंका नारा होता है। यहएके तेलका स्थान करनेसे उद्धाल सौमानकी प्राप्त होती है। एवा आदिके होनका परिस्कृत करनेसे त्वर्गमें विद्यापर होता है। इन चार मासंगे को केनक

अभ्यास करता है, वह बहायरको जान 🚃 है। कहुक,

बहुत, बीख, मचुर, श्रम, कमाथ आदि रसोंका जो त्वाग करता

🕏 व्यक्त विकास और दुर्गितको कभी भी प्रान्त नहीं होता। कन्तुसके त्यागरे बेह योगोको प्राप्त करता 🛮 और मधुर

क्रक्करच होता 🛮 । कुतके स्थागसे रमणीय लावच्य और सभी प्रकारकी सिर्दिहको ऋप्त करता है। फलका त्याग करनेसे मुद्धिमान् क्षेत्रव है और अनेक पुर्देश्व प्राप्त होती है। प्रतंका

स्मा कानेसे रोगी, अवस्य साम सामेसे निर्मल शरीरसे युक्त होता है। तैल-मर्दनके परिस्थानसे बली दोलिमान, दोलकरण,

क्तानक अञ्चलक कुनेरके सायुष्यको प्राप्त करता है। दर्ग, दुब, तक (महा)के स्थापका नियम<sup>1</sup> लेमेसे मनुख भीरकेकको पान्त करता है। स्थानसम्बद्धाः परिस्थान करनेपर

**्वाम अतिथि क्षेत्र है। तहप्रथा बाहुके प्रशासक नियम** लेनेक दीर्थापु संदानको प्राप्त होती है। पृथ्वीपर हायनका निर्मय 🚟 निरमुका धरा 🚾 🛊 ।

हे वर्मनद्व ! इन वश्तुओंके परित्वापसे वर्म 🔚 है। न्छ और केलोंके **कार्य करनेकर, प्रतिदिन ग**शुन-लान क्सनेकर 🔫 चीनवती रहनेपर 📖 आक्रमः कोई 🖫 उल्लाहन नहीं कर सकता । जी कदा पृथ्वीयर जीवन करता है, वह पृथ्वीयति होता 🕯 । 😘 वर्षः नारायकानाः इस अञ्चलः मन्त्रकः निराहारः

श्राच्य कर करने एवं चगवान् विष्णुके व्यवस्था करने हो गोदानसम्ब फल प्राप्त होता है। भगवान् विष्णुके फरनोदकके संस्थानीरे भनुष्य कृतकृत्य हो 🚃 है। चातुर्वास्त्रमें भगवान्।

विष्णुके मन्दिरमें उपलेख और अर्थना करनेसे मनुष्य करूक्पर्यक्त स्थापी 🚃 होता है, इसमें संशय नहीं है। सुविषयं काल कुछ से सी बार भगवान् विकासी प्रदक्षिण

करता है एवं पूच्य, माला आदिशे पूजा करता है, कह हंसपूक्त 🚃 विष्णुलोकको असा है। विष्णु-सम्बन्धे 🚃 🚃 बाह्य करनेवाला गन्धर्वलोकान्त्रे 🚃 होता 🛘 । प्रतिदिन

साम-वर्जाने 🖫 सामान ज्ञान प्रदान करता है, वह व्यासकर्पा क्लक्क्षे रूपमें साथ होता है और असमें विकालोकको है। निल कान करनेवाला मनुष्य कथी नरकोमें नहीं

करा । चोजनका संबंध करनेवाला पतुष्य पुकार-क्षेत्रमें साद कानेका कल 🚃 करक है। भगवत्सम्बन्धी लील्व-नाटक अदिका अपोजन करनेवाला अपस्तुओका राज्य प्राप्त करता

१-सक्तमें पदा, पास्तमें की और अधिनों 🚃 🛗 🚃 चौते।

है। 📰 वोदन करोजला हेह सक्ती 🔤 कुँग बनानेका फल प्राप्त करता है। दिनके कठे (अन्तिम) चार्की अञ्चे पहाल करनेसे अनुष्य स्वयंक्रमा सर्ग प्राप्त करता है। पारतमें भोजन करनेवाला अनव कुम्बोक्से बास करनेवर पाल आप्त करता है। शिलापर निस्न मोजन करनेसे स्वामन कान कानेका कान प्रान्त करता है। यो प्रकारक कानका त्यान करनेसे कभी रोगी नहीं होता।

🛮 पार्थ | चार्यास्त्रमें इस क्लाल्के वस 🙌 व्यवस्त्र पालनसे साथक पर्व 🌃 🚾 करता है। जर्जात् संभी प्रकार सक्ती एवं संसूष्ट 🖩 जाता है। गणवाना जनकानो रायन करनेपर बारों क्लोंबी विकार, यह 🎹 सभी क्रिकर्र सम्बद्धित नहीं होती। विकाद, क्रान्सकुल सरकार व्याप प्रहण, यह, गृह्यवेशादि, गेट्स, प्रविद्ध एवं मितने भी सुन का है, वे सभी चतुर्गासमें स्थान है। विकास का अर्थात मलमासमें देवता एवं वितरोसे सम्बन्धित कोई भी किया सम्पद्धित नहीं की जानी पादिने । पहापद मारके सुनत पक्षकी एकादर्शाको चगवान् विच्युचा बरिस्टन होता है अर्चात् करकट बदलनेको क्रिया 📖 करनी चारिने । 📰 🛗 महापूजा करती चहिने।

राजप् ! अस्य प्रेसं विक्यु-सम्बद्धाः 🚃 🚃 समय - प्रमानसे हरिको संशुक्तार चेपन्छिने -🜃 कि भगवन् । 📖 नक्षे भी अपने **अवस्थि** स्थान **ग**रास्थ 📖 मैंने देखा कि 🔛 सन्पूर्ण शरीर 🕍 📟 आदिके द्वार अधिदेत है। संस्थेके 📹 उध्यास, रहा, 🖦, राज्येक्ट्र तथा असिके प्रथ बाहु, व्यास्त्री प्रथ कविके लेकेंट अहु, मक्टरो सिए, कुन्डलीसे कम अन्यस्य है। इसलिये की संसुट होकर नेबॉमें अदरसे योगन्धिको स्थान दिख और कहा कि रुम क्वेंने चल साल मेरे क्वाच्या रहेगी। पार सुन्यन जनम होकर योगन्दितने मेरे नेताँने बास बिवारी में उस मनश्चिकी काव्य देख है। योगनिक्रमें क्या में बीरसायरमें इस महान्द्राक्षणे शेवराञ्चल रामने काळ है, उस समय सहाके **ार्था करता सक्ये अने करकारोंसे के देने** चरजेंचा पर्दन करती है और औरसामस्की लहरें की चरणोंको घोती है। हे पाणकांद्ध । यो मनुष्य इस चतुर्वासके समार

<del>जनक वर्त निवयपूर्वक</del> रहता है, वह अल्पपर्यंत्र विक्शुलेकर्ने निवास करत है, इसमें संशय नहीं। शह्न, कह, गदाधरी क्रमान् विच्यु 🚃 पासके 🚃 पश्चकी एकादशीने 🖛 🐌 उसकी वस-विधि 📖 सुनिये। मगवानुको इस बनके बनाव चाहिने—'इदं विच्हतिं चाहमे त्रेया नि दमे **बहु। समूब्यम प**्रमुद्धे स्वक ॥ (वक् ५ । १५) अपने विक्को आगनेपर 🚃 🚾 धार्मिक क्रियाएँ 🚃 हो 🔤 है। 🚃 पृदेश आदि 🚃 प्रति पूर्व **ाव्या** साथ परावस्को राजिने १४पर वैठाकर युवाना 🚃 । देवदेवेतके उठनेपर नगरको दोपहिसे देवीयमान 🚃 मूब-मीर-बांच ब्रिस्ट्स म्हलोत्सव करना चाहिये। धरणीधर ्याचा चनवान् विच्यु उठकर विसर्गतसको देखते हैं, ३स संबंध तथे प्रदेश सभी करतुरै यानको कार्नि प्राप्त होती हैं। एकदर्शके 📰 श्रीको विक्ता जागरम बरे । श्रवसीमे प्रकार पान बलसे सामग्र विक्तुओ पूरा करे। विक्रिय कुत आहे. क्रम हम्बोरी क्रमन करे, अनगर बातकर बादकाको विकार जन्मा थेवन कराने। थे, रही, यथु, 📖 आदिके क्य निर्मित <sup>स्</sup>रूपकार योजनो रिस्मे समर्पित करे। मजनान 🔜 जनसङ्घ्यंक संयोगत होकर 🊃 दश, आत, पाँच पा टो 🚃 पूज, सन्ध आदिसे विधिवस पूज वरे। 📰 📉 📰 📑 भग्ने 🔛 संसरको काळ पदार्थ तक अभीष्ट का-पुन आदे दक्षिणके साथ देकर उन्हें किस को । कारकर कार्य चोजन करना चाहिये । जिस कहाको चार माराज्य क्रोडा है, उसे भी साना नाहिये । ऐसा करनेसे वर्णकी 📖 📶 है। अरलने 🔛 किन्तुपूर्व (वैकुन्छ) 🖏 प्राप्त करात है। विका अधिनक अपूर्णकारत निर्वित सन्धन होता है, क्य कुरुकुरू से बाता है, उसका पुरर्जन्य नहीं होता। है 🔤 ! 🔳 देवसायन-वसको विधिपूर्वमः सम्पन्न 🚥 हुन्स असमें भगवान् विष्णुको बनाता है, यह विष्णुकोकको प्राप्त करक है। इस पहलबको से मनुष्य प्यानसे सुनता है, लुति 🚃 💹 प्रकृत है, का किन्युक्तेशको प्राप्त करता है। बोलागरमे चरवान् अनन किस दिन सेते है और जाते है. तस दिन अनन्यभिक्तमे उपकास करनेवाला पुरूष सहसिको क्रम कात है। (अञ्चय ७०)

### नीराजनकुद्रशिक्त-कमा एवं इत-विवान

भगवान् श्रीकृष्यने सहा-- उद्धाः श्राचीन कारामें अञ्चलित नामके स्थानित के। एक सर स्थानित कारो पुःश्वीमते दूर करनेकी कारी आर्थक स्थे, तम स्थानित प्राचीरतापूर्वक विस्तर किया और स्थानित स्थानित

च्या वा, रस == एक्क्टिंक स्थानि एक्ल 🚾 क्या 🖘 । निमुक्त कर लिया था। उपन्ये पण्डमाने एक, इन्हरूने मेनापति, वापको पूल सत्य करनेवाला, कानको अस्परिका, कुमेरुको धन्तरहरू, परम्को शतुको संच्या करनेपारक तथा राजेन्द्र मनुष्ये मनाव्यके दिन्ते नियुक्त किया। मेन अस्त्री इच्छानुसार शीवतः अन्य बृद्धि काते थे। बहुक्के साम सन्दर्भिगम 🔛 🔤 🚃 करते रहते थे। रामणने गन्धवर्षको 🔤 रित्ये, 🔤 🕬 नुरस-गीराके लिये, ज्यानिक सामे, अपूर्णी वरियोको क्षिये, व्याप्य पूर्वपन-प्रमुख शिये, किश्रमार्थको अस-संस्कारके 📉 🚃 🚟 कार्थीक रितमे नियुक्त 🔤 और धुर्मर एकागण 🔤 **विधानमें तस्स राते थे। राजनो ऐसा ....... प्रचा** देखका अपने 📖 नगर महिलासे क्या---'क्यां 🔛 रेखके सिथे कौन अस्य है ?' प्रमाण कर निराम्बरने कार-'प्रमो ! ककुरस्य, मन्याता, कुनुस्तर, नता, अर्जुन, सम्बद्धा, नहुष, चीम, राधव, विदृश्य—वे सची तत्त्व आन्य बहुतसे राजा आपनी सेवाके शिये नहीं आने हैं, किंतु राजा अनकश **ा रोगार्ने नहीं आधा है।' राजनने हुन्द्र होकर स्थेन ही** वृक्षस्य नामक राष्ट्रससे कहा—'वृक्षस्य ! 📰 और अवपालको भेरी आञ्चके अनुसार वह सुवन हो कि तुन आकर मेरी सेवा करो, अन्यवा क्लबारले तुमको मैं कर कार्तुग्ड ।' राज्यके हारा ऐसा कवानेपर चुसारा गराहके सम्बन हेन नावस् उसको रामधिय नगरीमें गया और राजकुराने पहुँचा। धुमाधुने रावणके द्वारा कही गयी बाते उसे सुनायी, विन् अञ्चलको मुवासको अक्षेपपूर्वक अन्य कारणीको बळते हुए विश्व । तदक्तर व्यरको बुराक्षर राजाने कहा—'तुम संकेशर राजाके कस कालो और वहाँ मयोजिय भाग सम्मा करे ।' अश्वक्तके क्रम नियुक्त मूर्तिमान् एवर वहाँ गया और आयो क्योंके साथ बैठे हुए राशस्त्रविको प्रकाणित कर दिया । राजाको उस परम प्रकार व्यरको आया जानकर कहा कि अञ्चक्त राजा वहाँ यो, मुझे उसकी बकरत नहीं है । उसी बुदियान् राजानि अञ्चक्तको द्वार करनेवाली है । सभी

कार्रिक कार्यके सुबल प्रश्नाची हादर्श तिथिमें सार्यकाल क्यान् विकास 📖 जनेके 🚃 सहजेकि हार विकास इन्स करे। 🚃 (ए.च्य) वृक्षीते मान तेलपुरः व्यवस्थातम् भवनम् सम्मुकः और-बीर नीतकन करे । पुन्य, क्यान, बलोकर, बच्च एवं रण आदिले उनकी पूजा करे । साम हो लक्ष्मे, चन्द्रिका, लहा, आहेरम, संकर, गीरी, भवा, गुरुबाँद, हार्च, व्यास्त्री 📖 या 🔛 बीरायम (आरक्षे) को ( गी, महित्र अवस्थित भी गीधमन करे ) 📟 कार बच्चे कवने । गौओंना मिन्द्र आदिसे तथा पित-विकार क्यांने शृहार करे और महक्के साथ उनको से 🔤 🔤 उनके 🔤 भोषाश भी ध्यति करते वर्ते। बहुलब्बनिसे युक्त 🚃 नेएका-उत्सवमें केही आदिको भी से करे । अपने करके ऑफनको राजविक्तिने सुसोपित कर पुरेक्टिलेंक साथ मन्त्री, नीकर आदिको लेकर एक शहा, तुरही 🛲 📆 हर। एवं 📖, पुन्प, 📖 🎮 आदिसे पुन्न करे। पुरेशित 'ज्ञानितस्तु', 'समृद्धिरस्तु' ऐसा भडते छै। यह 🚃 नामसे 📖 नीरावन किस राष्ट्र, उत्तर और वॉवसे सन्तर 💹 🛊, 📖 💳 धेम 🔛 दुःख नह हो जते हैं और भूमित के बात है। तब अजवलने इसी नीरावन-उर्जाकर अपने कहकी कृदि 🔣 बो और सम्पूर्ण प्राणिबीको वेक्से पुरु क्या 🔤 था। इसलिये रोगादिकी निवृति और अपन 🔛 चहनेवाले न्यान्य 🔤 मानावाची स्मृहान 🚃 बाद्य चाहिये। पगवान् विकास जो नीराजन करता है, वह भी, अक्षण, रथ, घोड़े आदिसे युक्त एवं नीरीम हो सुवाने बीवन-व्यक्त करता है। (अध्याय ७१)

#### भीकापातक-जतकी 🚃 एवं परिपत

युविदीयने बाह्य-के बहुनेक कृत्य । विवास

श्रीपीयपत्रक नामका जो लेह वर होता है, अब कुरूक तसका जिल्हा बताइये ।

भगवान् श्रीकृत्यः बोले — महस्य ! वै 📖 📖

सर्वोत्तम भीव्यपञ्चक-जतका वर्णन कर रहा है। मैंने पहले इस वतका उपरेश मृतुर्वाको 📖 था, किर पुगुरे सुकावार्वको और मुख्याचर्यने 🚃 आदि 🚃 📰 अवने जिल्ह

माइरगोंको मताया । जैसे तेजनिक्योमें अधि, सीधरापिकोके पवन, पुत्रनीयोमें बाहाय एकं दानोंने मुकर्य-दान बेह है, 🔡

दी वरोंने भीनापक्षक-वर्त केंद्र है। 🚃 पूर्वोक, 🚃

अध्येष, सम्बोने 🔚 तथा 🔛 अञ्चलका जैसा स्थान है, ठीक उसी प्रचलते 📖

भीवपञ्चन सर्वोत्तम है। 🖫 इस दुन्बर भीवपञ्चन-ज्ञानम अनुद्वान कर हेता है, उसके द्वार सभी धर्म सम्बद्धित हो सके

हैं। पहले सरवपुगरे बरिया, पुग, गर्ग अबरि स्थिपेंगे, रिज

नाभाग, जिल्ला आदि राजधीन और ग्रायसे सीरमा विकास स्था प्रतिसुरामे इतम विकास विकास

इस जनका अनुहान दिन्या । ब्राह्मणीने ब्रह्मणी-करान, जप तथा हवन-कर्मके हारा और स्थियों एवं वैक्वेंने सत्व-सीच

आदिके पालनपूर्वक इस करावा अनुद्वान निस्य है। मुद्र मनुष्यंकि शिवे इस 📟 अनुहान असम्बद्ध 🕼 🛍 भीव्यपञ्चल-वतः 🔤 दिनतक होता है । 📺 भीव्यपञ्चल-वतमे

असरवधानम्, 🌃 सेलने आदि अनुषितः 🛗 त्यान

करना साहिये। पाँच दिन किन्तु धनवान्त्वा पुत्रन काते 🚃 शासमाजका ही आहार करना चाहिये। परिची जाक्रमें भी भी स्व-प्राप्तहेत् इस 🚃 आवरण 🚃 📰 है। 🐃

नारी भी पुत्र-पौत्रोकी समृद्धि अभवा भोजार्य इस करको कर सकती है। इसमें कार्तिक पासपर्वन नित्न प्रत:-सान, कन, मध्याह-स्तान और भगवान् विष्कृषे पृजनक विष्यान है। नहीं,

प्रस्त, देवसका या किसी परिक्र जरशासको सरीको गोनप लगकर 📖 📰 बी, जकल तक शिलीसे देवता, ऋषियो

और पितरोका सर्पण 📖 पहिले। पगवान् विष्कृते 🔣 मधु, दुख, यी तथा कदनमिश्रित क्लसे प्रतिपूर्वक पान कराना चाहिये। कर्पूर, प्रशासका, कुंकुम (केसर), चन्दन तथा

स्वन्धित पदाचेकि 🚃 मध्यान् गरहध्यम् विन्युका उपलेपन क्यम क्यांत्ये। उसके सत्यने एक दौधक 📰 दिनीतक अनवरत दिन-गर 🚃 🚃 चाहिये । मगवानुको नैवेदा

निवेदित 📰 '🗱 क्यो कासुवेदाव' 📰 आहोतरशत-जय,

तदनका बढका-यनमे हका कहा वाहिये तथा विधिपूर्वक

क्षरकार्यन संध्य करने चहिये । वर्धनक सोन चहिये । ये

सब्दे कार्य चौर दिनोतक किये जाने चाहिये। इस कार्ये पहले 📟 प्रकार विष्के वरबोंकी कमस-पूर्वके द्वारा क्या करनी

**व्यक्ति । इसरे दिन जिल्लापत्रके द्वारा उनके पूटनीकी, तीसरे** हिन अधि-स्थलपर केमहेके पुरस्कार पूजा करनी चाहिये।

🌃 दिन 📖 एवं जप-पृथ्वेसे भगवानके स्वन्ध-प्रदेशकी कृत 🔤 📷 और पाँचवें दिन मालवी-पूर्वोक्षे भगवानुके

रित्रोकामके पुत्र करने 🚟

इस 🚃 इविकेशका पूजन करते 🥅 🚃 एकदर्शके 🔤 🚥 📨 अधिमन्तित गोमय 🚃 इदशीयरे

गोबाका प्राप्तन करना चानिये : व्यक्तिया दूध तथा चतुर्दरहेको दक्षिण जारान लाला चाहिये। धायसुर्विके लिये

करें 🔤 इनक ऋतन 🚃 कहिये । पौषरे दिन सानकर 🔤 🚾 विधिवत् पूजा 📖 चाहिये । तत्पक्षात् जादार्गको

परिवर्षक केवन 📟 दक्षिया देनी बाहिये। 🔣 प्रकार प्राप्त-व्यवस्थिते में बरमाधूमण प्रदान करना चाहिये। छेत्रिने

पहले पहणक-पन करके पेंद्रे आह भोजन करे। इस प्रकारसे धीन्यवस्थान-मञ्जय सम्मान्य चलता चाहिये । यह भीन्यवस्था-

क्रा परम परित्र और सम्पूर्ण पायोगत नारा करनेवाला है। एकर् ! इसी वीधानकक-असना कर्गन शरशयापर पढे हुए बहारक प्रोत्तने हतां किया या । इसे की आपको बता दिया ।

🔳 🚃 भक्तिपूर्वक 🚃 🚃 क्या करता है, उसे कारकत् अच्युतः भूकि अदान करते हैं। अदारकरी, गृहस्थ,

······ अपना संन्यासी के कोई भी इस तकको करते हैं,

🔤 बैन्जब-स्थान प्रत्य होता है। 📖 शुक्ल एकादशीसे हत ऋरण करके चैनंधररोधी 📰 पूर्व करना चाहिये। जी

इस कराको सम्बन्ध करता है, 🚃 बहाहत्वा, गोहरवा आदि बड़े-बड़े फ्लोसे भी मुक्त हो 🚥 🖥 और शुद्ध सद्वतिको प्राप्त

📰 है। ऐसा 🚃 पचन है। (अध्याप ७२)

### यरसङ्ख्या एवं भीनक्षदती-प्रतका 🚾

युविधिरके प्रश्न मललाप्रशिक्षे विश्वमी पूछे कारेका भंगंधन् श्रीकृष्णकन्त्रने कहा—स्वाराज ! 📖 मेरी 📖 स्व कार प्रस्ति थे, का समय कमूत-तरफ श्राव्योत-कार्ने बट-मुक्षके नीचे एक विद्यासकार पूर्व बैठाकर सुरख्य, कव्यतीक, योगवर्धन तथा वक्षेत्रमा आदि को-को 🔤 🔚 गोपाली, धन्या, विशासत, व्याननिविषय, अनुगन्धा, सुसार कादि गोपियोने रही, इब और फल-फुल 🚟 मेरू पूजन किया । तत्पक्षात् दीन सी साठ मरलॉने परिवर्षक मेरा प्रका अन्ते हुए यस्तपुद्धको सम्बद्ध निमा तथा इनारी जनसङ्ख्य लिये बढ़ा पारी उत्सव समाया। इस बहोतलको भारि-पारिके भश्य-भोज्य, गोदान, गोडी सका पूका कार्य कार्य सामा किये गये थे। प्रकार्यक अक्षानीक पूजन मी हुआ था। स्ट विनमें यह मरलहादानी 🚃 हुई। इस क्वाची कर्नवर्तन ----शुक्ल पश्चमें हादसीवक करना चाहिये और प्रतिकास प्रापसे केमल, अध्ययन, माधव, गोविक्ट, विष्णु, मणुसूदन, विविद्यान, बामन, श्रीकर, इम्बेकेस, प्रयास्थ समा दावीदर—इन 🚟 गम्भ, पुष्प, भूप, दीप, गीत-भक्ष, कुरम-सर्वित 💬 🛗 और 'कुम्बो मे प्रोपताम्' इस प्रकार उच्चरण करे । महश्वादरहरूम् नुते बहुत प्रिय है। पूँकि अल्लोने इस बनको अरम्प किया था, असः इसमा अन्य अल्लाह्याची है। किन गोवेकि हारा इस प्रतामो सम्पन्न निम्मा गम्ब अने गाम, महिलो, बुटीव अबीद प्रश्नुद मात्रामें पान्त हुआ। 🖩 कोई कुछ इस कान्यो सन्दर्भ करेगा, मेरे अनुमहरो अह जारोज, 🚃 ऐक्टां 📰 🚃 विष्णुलोकको 🚃 कोना।

चरावान् श्रीकृष्य पुषः बोले—महत्वय ! कालमे विदर्भ देशमें भीन नामक एक प्राची रामा थे। थे। दमस्त्रीके दिता एवं व्या नामक एक प्राची रामा थीन को पराप्तमी, व्याच्या और प्रमाधनक विश्वते थे। वे शब्दोक विश्वते राम्य-कार्य काले थे। एक दिन वीर्यक्या कार्य हुए प्रकारीके पुष पुलस्त्रमुनि उनके वहाँ प्रवारे। रामाने अवर्य-प्राचीदिहारा उनकर बाग्न आदर-सरकार किया। पुलस्त्रमुनिने प्रसाप केकर रामाने कुराल-केम पूछा, व्या रामाने अस्मन् विनकपूर्वक कहा—'महाराम! यहाँ अस्प-नैसे महानुकारक अस्माना संभ पर वा शंभ १२है, वहाँ सब कुराल है होता है। अपने वहाँ पनारोसे मैं पना । जा तरहसे जा अपल्या सेहकी बाते तबा तथा पुरस्तकपृत्ति बीच होती रहीं। कुछ समयके पहात् जा क्या पीको पुरस्तकपृत्ति पूछा—प्रमो। संसारके

अनेक प्रकारके दुःखोंसे सदा पीडित रहते हैं और उसमें कहा दुःख है, शामी अनेक अकारके रोगसे कहा है। कावाबी ऐसी दरावने देखकर मुझे आक्त कह होता है। कहा ऐसा कीन-सा उचाव है, जिसके हारा चीड़ा परिश्रम दुःखोंसे हुटकारा पानेंसे समर्थ हो

कोई क्ल-दानादि हो तो आप पुछे बतलावें ।
 कुल्कावपुषिये कहा—स्वयू ।

चरे। मन्द्रसके मध्यमें कार्यकारे कार चीवचीवपुर चपुर्वृत चपवान् कन्नदंतको प्रतिम व्यास्त्र वर पुष्प, पूष, दीप क्षा भागि-भन्निके उपवारी तथा विकास सम्बद्धानिकारी अञ्चलोद्धार क्रकी पूजा करानी

व्यक्ति । अध्यक्ति समुख दो साम्य गढ्यार उनके उत्तर एक अस्म क्ष्म स्वा उसमें एक इस वीका वर्षिक वर्षिक वर्षिक

मुर्जा, चौदी, तक अवन मृतिकास्त सहस्र, तत अनवा एक अवन कलत जल, दूध अवना भीसे पूर्ण कर

रकाम कविने । परक्रमको समिका, सारा, पृत, 📖 और राजी-कांसे प्रहेकि साने आहुति देनी वाहिये । हंशान-कोणमें

व्यक्तिम पीठ-स्थापन कर <del>वह-वहविश्वन</del>से प्रहोकी पूजा करनी

चाहिये। पूर्व आदि दिरहकोमें इन्द्र, यम, काण और कुनेत्स पूजन कर शुक्त कस तथा चन्दनसे पृथित, हाथमें कुन लेकर सजमानको एक पीढ़ेके उत्तर मणकान्ये आमने बैठन चाहिये। स्वमानको एकामिता हो कलासो शिखी जलकात (असोर्यास) को निवानका चाठ चारते हा मणकान्यो प्रकानपूर्वक अपने सिरपर चारण व्यास चाहिये—

नकते व्यक्ति कालो पुणनेश्वर । स्रोतकोच मां व्यक्तिकान् स्रोतकान् से ।।

(कारक्र भर १४५)

वस प्राहित । पान ही राजित्वस्थाय और विक्रुपुरामा प्रश्न विस्था जान प्राहित । प्रमु- कार्न करनी प्राहित । वार्षाको कथा। पहिते । पुरस-अपनेक प्राहित । मञ्जूषिक सुनि-पार प्राहित । पुरस-अपनेक प्राहित । मञ्जूषिक सुनि-पार प्राहित । एक अपने (मुक्तिपुर्व ) अस्यान और महापारत प्राहित । प्रमुक्ति क्रम्स निर्द्ध पूर्व प्रमुक्ति करनी प्राहित प्राहित करनी प्राहित । प्रमुक्ति क्रम्स निर्द्ध पूर्व प्रमुक्ति करनी विक्रियोंको प्रदान करनेकाली है । दुनरे दिन प्राह्म स्मान अक्षुलेक प्राहम क्रम्स प्रमुक्ति करना महान्यका पूर्वपूर्ण दे। यहमे उपस्थित सभी बाह्यजॉका शब्दा, पोजन, गोजन, यहा, आकृष्य आदिहार पूजन को और आवार्यक्र विशेषकपरी पूजा करे। येसे बाह्यज एवं आकार्य संतुष्ट हैं वैसा यह को, हिंदी आवार्य सकार्य देवतुस्य गुरु है। दीनी, अनार्यों तथा अध्यानसंख्ये भी संतुष्ट करे। अनन्तर सर्य हैं

कन्। इस प्रकार 🎟 इस भीन्छदरजितका विभाग करणाय, इससे चरिष्ठ 📟 भी प्रथमुक हो जाते हैं, इसमें क्या की। का विभागाय सैकड़ों क्याय एवं उत्तरका कार्येसे किसेन करण्याचे हैं। इस कीन्छ्यदरक्षित्र वस करनेवाले भी-पुरूव स्वय क्याया अञ्चल सौचाया, आधु, आरोग्य तथा 🕮 सम्बद्धओंको प्रयक्त करते हैं। ह्याया मृत्युके कद क्याया विभागुद्ध, करलोक तथा सहस्तोकको प्राप्त करते हैं। इस पृत्तीकोको अञ्चर पुनः यह सन्पूर्ण पृथ्वीका अधिवाति एवं क्याया क्याया समाव राज्य होता है।

हम मक्त्रे अचीन करतां महतन सगर, अस, पुंकुतर, दिलीय, प्रवाद तम अन्य कहन् ब्रेड एकऑमे मिना था और की, प्रवाद हम अन्य महत् ब्रेड एकऑमे मिना था और मा। भूगू अर्थर शुक्तें और सभी नेदल मास्त्रवेदार भी इसका मार्क्स कुला था। है एकन्। सामके पूर्णपर मैंने इसे मारक्य है, अनः आवसे यह हादली असमेर (मीनहादली) पुंजीवर स्थान बरेगी। (अध्याद ७३-७४)

# शक्तकारणी-साके प्रसंधने 🚃 विवस्था 🚃

जुनिक्षेत्रणे जुल—नगकर्। ■ ■ उनकस भारतेमें असमर्थ हो उसके लिये कौन-सा तत 🖥 ? इसे 📥 मतलायें।

भगवान् पात्करको अर्घ्य है । पृथ्य, 🚃 📰 आहे ३०५००।

मगनान् पुरुषेतरमधी पूका करे। इसन करके चरित्रपूर्वक

प्रस्तान् श्रीकृत्याने संद्धः — रुवन् । प्रदायः सार्वकः शुक्तः पक्षमी द्वादशी व्या व्या अपन नश्ममो भूकः हो हो इसमें तत करनेसे साथे कामनाई पूर्ण व्या वादी है। इस व्या एवं महान् फल देनेकाली द्वादली है। इस व्या अवश्यक्त नदी-संगममें अकर कान करके द्वादलीये उपनास व्याविये। एकमान इस अवसद्वादशीके तत व्या लेनेसे द्वादश द्वादली-करनेका व्या अपन हो काता है। वदि इस रिकिये मुक्कारका व्या योग हो व्याच नो इसमें व्या को समस्त कर्म अक्षय के जाते हैं। इस प्रचले पश्चाकारका त्वथ होता है। इस असमें एक सुन्दर कराशको विकित्त एकपना कर असमें परावाद विकासी अतिया प्रवासिक स्वास्त करना व्यक्ति। असकार करावादकी अञ्चलक करनी व्यक्ति। राजिये कारण करे। प्रधानकाराने स्वास्त्र राजकारकी पूजा करे और पुजावाति देवर इस अकार प्रार्वना करे—

नवी नवको बोकिए कुकामणसंहकः। अस्त्रीकांकाने कृतक सर्वस्त्रीकाको प्रथा। (ज्यानां ७५।१५)

अस्तर वेदा एवं ह्या सहावेदी हा करे और प्रतिम हा सम पदार्व हाला से क्लाईक' सहकर माञ्चलको निवेदित कर दे।

बीक्षकने पुनः बद्धा---महत्त्व ! 🚃 प्रतके 🚃

🚃 📟 🚃 है, 🗎 अप सुरे—दश्चर्ग 🔤 पश्चिम चग्गरे सम्पूर्ण प्राणियोको चय देवेन्सस्य 📺 कादेस है। यहकि भूमिकी बालू निरक्तर राजनी रहती है, भनेकर साँप गुम्तो रहते हैं। यहाँ काम सहुत 📖 है। कुओंने परे कम रहते हैं। क्रमी 📖 मरे-जैसे ही खते हैं। हमी,

बैर, प्रसारा, करील, पीलु 🚟 केटीले वृक्त 🐯 🕏 वर्ज भव और 📖 बहुत कर 📟 है। वृक्षेत्र 📟

व्यक्ते 🖹 मर जाते हैं। 🚟 🔤 यश-धुमिने जलकी इंग्लबो श्रीड स्लाही रहते 🖥 🔤 📖 न

取 動力

उस मकत्थलमे देववहा एक 🚃 व्यंच गय । 🖦 अपने सामिमोसे निवृद्ध 🚥 🖿 । उपने 🚃 📆 नुमरे 🚃 भगेका रिशाचीको 💹 देखा। यह जीवक् भूका-प्यासके व्यक्तरः हम्पर १५११-४५१ कृत्ये समा। वदाने समा—क्या शर्ल, सर्वा कर्ड, सर्वास पुढ़े 🚃 📖 हो । 🚃 बसने एक 🔤 स्वन्धप्रदेशस बैठे 🚃 🔤 🔛 । बारी ओरसे अन्य के। 🔣 धूर ने । अध्येतर बन्ध हुआ बन् के विभिन्नको देखकर उसके पास आया और कहने रहण --- 'सुन इस मिर्जल प्रदेशने 🌃 श्रा 🜃 ?' 📶 कारण—'धेर साबी कुट गये हैं, में ब्राह्म किसी पूर्व-कुल्लक कराती 🛍 संमोगसे यहाँ पहुँच गना है। पूरा 📶 प्यससे 🗏 प्राप 🚃 रहे हैं। 🖣 अपने 🚟 कोई अपन नहीं देश छ। है। इसपः 🔤 प्रेत भीला—-'तृम इस पुतरम वृष्के 🚃 🚃 फ्तीका करे। यहाँ तुन्हें अमीह-लाभ होगा, 🚟 धट कुर वयेका क्ले जाना ।' क्लिक वहाँ उहर गया । ट्रेफ्करके समक कीं व्यक्ति पुत्राग वृक्तसे 🚃 कसोरेने बल तथा दूसरे कसोरेमें दही और पात लेकर 🚃 📺 और 📰 🚌 विभक्तमे प्रदान किया । श्रीकरू उसे महत्तकर संतुष्ट हुआ ।

व्यक्तिने प्रेत-समुदायको भी mm और दारि-चय दिया, इससे वे सभी संतुक्त हो गये। शेव जगब्दे उस 🎟 📟

पी 🚃 किया। इसपर अक्षर्यचकित होकर चलिक्ने उस प्रेताविपसे पूछा—'ऐसे दुर्गम स्थानने उत्तर-जलकी प्राप्ति आपको कहाँसे होती 🖁 ? घोडेसे 🖺 अन-जलसे बहुतसे 🔤

कैसे तुन्त हो बाते हैं। मुझे सहाग्र देनेबाले इस स्वानमें आप कैसे जिल गये ? हे शुष्त्रवत ! आप यह बतलाये 📟 जसम्बन्धे ही अवस्थे संतुष्टि बैसे हो गयी? इस मोर 🚃 अपने अपन त्यन वहाँ 🚃 है ? मुझे 🚃 चीतुक्त के रक्ष है, मेरा संसम आप दूर बरे।'

जेतान्त्रिके कहा—हे नह ! मैंने पहले नहुत दुक्ता 📟 🚃 बृद्धिकला में पहले रमधीय शाकल नगरमें पुरु ह्या व्यवस्थे हैं की अपन अधिकांश कृष्य जिल दिया। प्रमादयस मैंने चनके लोपसे कथी भी पृक्षेको न अप 🚃 🐺 न व्यक्ति प्रकार हो बहुतवी। मेरे 🛮 परके पास 🏬 गुजबार् सहाग रहता था। 📰 भारतद 📰 अवग नकारों 🚃 हादशीके योगमें कथी 🔣 📖 होश नामसे नदीने गया। क्षेत्र पहला संगम बन्द्रपामासे इस्त है। क्यापान क्याक्को तथा होना सुर्वको अन्य 🖁 । उन दोनोका 🚟 📖 बद्धा मनोहर है। 🗯 🚟 अवद हमलोगीन 🚃 📖 और 🚃 प्राप्त । इसने वहाँ द्रध्योदन, 📺 कता लिए उपयोग्स परावान् विकासी प्रतिमानी पृत्र) की । इसके कार्यक्त इक्लोग वर 🛍 गये। मानेके अवसर गासिका क्षेत्रेके 🗏 प्रेतलको प्राप्त हुआ। इस कोर अदबोने जो 🖫 स्हा है, बद तो जान देखा हो हो है। ये वी जन्म प्रेतगण आप देखा क्षे है, इनमें एक बहागोंके 📖 अवहरण करनेवाले, कोई परदायरत है, बाह जन्म सकतिये ग्रीह करनेवाले तथा कोई निक्कोड़ी है : मेद अल-पान करनेसे ये सब मेरे सेवक बन गये है। भगवान् सोकृष्ण अधाव, सन्ततन् परमारुव है। उनके उदेखारे जो कुछ भी दान किया जाता है यह असम होता है। 📗 म्हाराग ! 🚃 क्षिमालयमें जानर 🚃 जन्त बरेगे, जनकर भूतकर कुरकार अवप इन प्रेतोको मुस्तिके दिवे गयाने काश्रा पाद्ध करें। इतना कहकर वह वेताविप मुक्त होकर विकास वैद्वार सर्गलेक क्या गया।

वेद्याचित्रके बले कलेक वह बरिक् हिमालयमें गया 🗮 वहाँ पन प्रान्त कर अपने घर आ गया और वस धनसे जाने गया तीर्वमें आक्षपद्धके समीव इन प्रेसंके उद्देश्यसे बाद किया । इह विभिन्न जिल-जिल प्रेसकी मुस्तिके विभन्न 🚃 करता 🚃 वह पेत बिजकुको स्वप्नमें दर्शन देकर बकुता च्य कि हि महाचारा ! आवन्त्री कृताले मैं फ्रेस्टाले मुक्त हो रावा

और पुत्रे परमापि प्राप्त हुई।' इस सामा वे सभी प्रेस मुक । एउन् ! सा विभक् पुतः घर लौट आया है। सामके अवग इदर्शके योगमें भशका सम्बद्धकी

कां. कां. कें-दान किया। जिलेन्द्रिय होकर प्रतिवर्ष नदीके संगमीक वह साथ कार्य किया और अन्तमें उसने मानवर्षिक किये दुर्लग स्थानको प्राप्त किया। (अध्याम ७६)

### विजय-भवण-श्रद्धवितमें बावनावतारकी कथा 📖 📰

धगवान् औक्रमाने बद्धा-मधिहर ! **प्र**भदशी तिथि बदि **क्या** नशक्ते कुछ हो तो उसे विजया तिथि कहते हैं, यह पत्तोको विजय प्रदान करनेवाली है। एक बार दैत्पराज 🚃 पर्शनिक होफर साथै 🚃 भगकन् विकासी रारवर्गे पाँचे और काने लगे— वाले । सभी देवताओंके एकपात ब्यास आप 🖫 है। आप महान करने हमारा उद्धार कोजिये । इस देश बोलबर असर विकास विकास । । विकास भगवान्त्रे कहा--- 'देवकारे ! मैं का व्यास 🛊 🎮 विशेषन-पुत्र वरित 👭 🛗 करण कर हुआ है, पर उसने तपस्यकारा अवनी व्यवस्था विश्वी प्रवास कर सी है, तक सामा है, जिमेरिया है और मेच पता है, क्ला प्राप मुक्रमें ही लगे हैं, कर सत्यभरित है। बहुत दिनेके कर उसके तपस्याध्य सामा होग्ड । सम्ब मैं इसे अधिननशान्त्रत सम्बद्धीया, तम उसका आपीष्ट क्ष्म कर होता और आपको दे हैंगा। पुरुको इच्छाने देशभाग भाषित 🖫 📆 कर उपन 🎼 देवलको ! मैं उनका भी करपान कर्मना, अवतार लेकर देवताओंका संस्थान और अस्ट्रोक्ट विकास करीना । प्रतास आपलोग निक्षित्त क्षेत्रर 🔤 और समक्त्री प्रतेक्ष करें।" देवगण चनवाम् विक्युको समस्य काते हुए सहका जा गये। 🚃 🚾 पा भगवान् विष्कृतः 🚃 📹 वी । 🥌

वसने भर्मने घगणान्तरे चाल कार्या को कार्य जमन भगणान् अदितिके गर्भसे अदुर्भूत हुए। उनके च छोटे, सरीर छोटा, सिर बढ़ा और छोटे बच्चेके सम्बन्ध हाथ-पैर, उदर आदि थे। जायनकपमे का अदितिने पुरुष्टे देखा और बच चह कुछ कहनेको उच्चत हुई तो देखनाक्यो उनकी चाली अवकड़ हो गयी।

निर्माण । स्थाप समके अपन नश्चारे कुक एकभ्दरी विभिन्ने का व्यासान समन मगवान्त्र पृथ्वीपर अवतार हुआ तब पृथ्वी हमारणने सभी। दैत्योने का सा सा और देवगण प्रसन्न हो गये। महासूनि काव्यने विस्तुके

संस्कार स्वयं ही विश्वे । 🚃 भगवान् इच्छ, मेखारत, यहोवर्यात, कम्बन्धल् तथा छत्र धारमकर एका व्यक्तवस्थे गये। **व्यक्तिः कहा—'यह**पते । कुले 📰 पण भूमे अद्भाग भागे ।' वरिपने कहा—'मैंने दे दिया है अभी अस्पर भगवान् बायमने आपना राजर बक्रमा करण किया। जनवानुने अपना शरीर इंदना विशास बना क्ति 🗷 एक पगसे सन्दर्ग पुन्नीलोकको पान लिया तथा क्रिकेच प्रश्ते 🚃 जान शिया । तीवस पग रक्तनेके शिये का 📆 स्का 🗈 मिला 🗟 देवतथा, बिन्दा, अभि-मनि इस कुरक्को देखकर साथु-साथु भड़ने लगे और पगवान्तरि सुनि 📨 समे। 🚃 समी दैस्मामोनो 🏬 उन्होंने 🚃 🚃 क्या — हुम 🚜 परिवर्गक साध मुक्तरावेकने वहाँ सक्षो । वेरे द्वार पूर्वचेत एका तुम वहाँ अभीन्तरः चीपीका उपचीप करोगे। वर्तकामे जो इन्द्र है, अनेक 🚃 हुन 🚃 📆 जन्म करोगे 🖰 बांत भगवानुको प्रकारकार बाज्य के शुक्तारक्षेत्रकारे 🚃 📖 भगवान्ते देखकाओं क्या — 'आयलोग अपने-अपने स्थानपर निक्रिल क्षेत्रर रहें।' करवान भी संस्तरक 🚃 शक्तपान से गये।

स्वन् । वे सची कर्म एकाइसी विविक्ते हुए थे । व्याः वा विवि देकाइओको विश्वविद्याय मानी गर्ना है। यही एकाइसी विवि पत्तल्युन मासमें पुष्प नक्षत्रसे युक्त होनेपर विवक्त विवि वर्षो पत्र । एकाइसीके दिन उपवासकर पत्रिमें वरकान् कामनको प्रतिना बनाकर पूजा कासी वाहिये । प्रतिमाके वर्षा ही कुंक्किक, कप, करमासदुका, यहि, बड़ोपकीत, कम्मकस् तथा मृगवर्ष आदि स्थपित कामा व्यहिये । अनक्तर विविकत् उनकी पूजा करनी कहिये । निज्ञ मन्त्रोसे उन्हें नमस्कार को और प्रार्थन को —

चलसावितम् । नकेसीन वस्तुवनसं चलकं प्रमुख्यस्य ॥ नयो वाधनकयाय नगरकेऽस्तु 📟 🔠 नगरी प्रशिक्षन्याय बास्त्रेष नमोऽस्तु से स नमो नमले गोर्किट क्रम्बेल क्रिकिय । अर्थपराध्ये करण सर्वकारको

(उन्हर्का ७६ । ४८-५१)

इसके व्याप्त भगवान्त्रो ज्ञवन कराये। मीत-वर्षः,

स्तृति 🚃 द्वरा 🚃 करे । प्रातःकाश दस 📖 पुज्यकर पन्तपूर्वक दसे वाहायको निवेदित कर दे । बाह्ययोको 🎹 🚃 📰 🗷 मीन होकर, पोबन करे। इस वर्तक करनेसे बरीका एक मन्वन्तरफर्वन्त विष्णुलोकमें वास होता है, कदम्बर वह इस लोकमें आकर चक्रवर्ती दानी राज्य होता है। क मेरेन, एंखंद को क्वान होता है। (अध्यय ७६)

### समाप्ति-प्रदर्शी एवं नोविन्द्-प्रदर्शातत

भगवान् श्रीकृष्यने च्या — वैन 📖 📖 हादशीसे ज्येष्ठ मासकी हादशीवक अनेक मासकी कृष्ण हादसीको पाण्यासिक सन्परित-सदसीका 📖 🗀 🕯 🛚 प्रत्येक मासचे क्रमशः क्ष्यरेकाशः, ह्या विश्वरूपः, पुरुषेत्रम, अस्पूत तथा वस्य—इत 🔤 उपनासपूर्वक भगवानुको पूजा करनी चाहिये। कुनः आवाद कृष्ण द्वारतीले 🚃 पहणकर मार्गर्शर्थतक 🚃 मिकर 🚟 चाहिने । पूर्वविधानसे क्ष्यक्षसपूर्वक 🜃 श्रामेसे कावतः धरावानूका पुत्रम करना चाहिये। प्रतिनास बाहानारो 🐃 कारकर दक्षिणा देनी चाहिये। तेल एवं भार पदार्थ नहीं प्रहल करने च्चीहर्षे । इस प्रकार 🚃 📟 इस 📟 📟 📟 कानमाएँ पूर्व हो आसे हैं और असमे का भगवानुके अनुप्रकृते उनके लोकको प्राप्त कर लेखा है :

भगवान् अविकासने युनः सद्धा-न्याका । प्रते प्रकार गोविन्द-इत्यारी चल्का एक अन्य वस है, विसर्क करनेसे सभी अभीड़ सिद्ध हो 🞹 है। फ्रेंच मासके शुक्त पश्चमी श्रद्धशीको उपवास कर पूषा, जूप, दीप, वैचेश आदिसे

# अखण्ड-ग्रदशी, मनोरब-ग्रदशी एवं निल-ग्रदशी-व्रतीका विधान

राजा बुधिविरने पुष्ठर--श्रीकृष्ण ! वर्तोपकार, श्रन, धर्म आदिने जो क्या वैकल्प अर्चात् किसी कारकी न्युनसा 📰 जाय तो क्या फल 🚃 🛮 ? इसे आप कतलायें।

भगवान् श्रीकृष्ण खेले—महाराज ! ४०० प्रका 🖩 जो निर्धन, उत्तम रूप पाकर भी काने, अंधे, लेगड़े हो अंधे है, वे सब वर्ग-वैकरपके प्रमावले हो होते हैं । वर्ग-वैकरपसे 🖀 सी-पुरुषोपे वियोग एवं दुर्भगत्व होता है, उतन कुरुषे जन्म पन्धर भी लोग दुःशील हो जते हैं, ....... होन्बर भी धनका भोग 📖 दान नहीं कर सकते गया कक-आयुक्तोंसे

🚃 चरकान् नोविन्दका पूजनकर असर्पनमें 🗏 इसी उच्चारण 🔤 एहमा चाहिये । इस दिन चय नहीं करनी 🔛 । 📰 प्रयासिक दक्षिण देनी च्छित्रे । 🛲 गेमून, गोसब, 🔛 💴 गोहुन्यका 🚃 करना 🚟 🚟 इसरे दिन कानकर उसरे 🔤 गोकिएका 🚃 🚃 महानको घोजन 📺 छन्। भी भोजन सरना च्चित्रे । इसके 🚃 ही इस दिन 🔚 तुन्तिपूर्वक मौजन कराना वाहिने । इसी प्रकार प्रतिमास 📖 🚃 हुए वर्ष सम्बन्ध 📰 📰 📖 साथ सुकर्णको भगवान् प्राप्त प्राप्त प्राप्त पूर्व, दीव, माला, नैवेद उनका पूजनकर का गौरवंद्रत का देना चाहिये । प्रतिस्थस नौओको 🚃 तथा उन्हें मासादिसे गुप्त व्यक्ति । परणके दिन व्यक्ति क्षेत्रा-परित करनी चाहिने । इस किया करनेसे बही फल जान होता है 🚟 सुवर्णन्सुही 🔣 गीओके 📖 🚃 उत्तम वृषका दान देनेसे होता 🗦 : इस 🐭 सम्बद्धकरमे 🚃 📉 भोगकर **व्यक्ति गेरबेकके प्राप्त होता है। (अस्त्रम्य ७७-७८)** 

हैन रहते हैं। वे सुख प्राप्त नहीं कर पाते। अतः पश्चमें, कराने और भी अन्य पर्य-करवीने कभी कोई बृटि नहीं होने देनी चाहिये।

**बुधिद्विरने पुन: कहा---कगळ**् । यदि कदावित् **ा विशेष कोई दृद्धि हो हो हा हो उसके निवारणार्थ** करन चहिये ?

**स्वीकृ**ष्ण चोले—मतायतः! असाम्ब छदशी-तत करनेसे सची प्रकारकी चार्मिक बुटियाँ दूर हो जाती है। अब अस्य उसका भी विकास सुने । पार्गशीर्य मासके शुक्ल पश्चकी श्रदशीको जानकर जनाईन पानकन्त्रा परित्रपूर्वक पूजा कर स्थान रखना चाहिये और सम्बद्धाः स्थान स्थान

महिने। जिलेन्द्रन पुरुष कारण करारे

और मीहि (कत) से परा पन अक्टनको दान को और फिर भगवान्से यह प्रार्थन करे—

सरावन्त्रीः वर्षितिकस्य व्याप्तः कृतन्। धरावन् स्वयस्तिन सर्वकन्त्रन्त्रम् वे स धवायस्य जनम् सर्वं सर्वेव पुरस्तेतस्। स्वादिकसम्बद्धान्त्रीः क्रमति स्व सन्तु वे स

> (काराने घर । १४-१५) हे भी जत करवेरें स्थलत

'सगवन् ! मुझसे सात अन्येमें को भी सात करनेने म्यूनता धुई हो, वह साथ अन्यक्ते अनुमानके परिपूर्व हो उत्तय । पुरुषोत्तम ! विका प्रमार आपसे ब्ला सारा जनात् परिपूर्व █ इस्ते ब्लाब्ल मेरे सामित्त सभी असे पूर्व हो उत्तर्थ ।'

इस प्रतमें चार 📉 🚃 🚃 📆 च्योगे ।

वैद्यदि बार मासके अनवार दूसरी पारक मा सन्-वान सहामको देनेका मार्च है। अनवादि बर स्मान तीसरा स्था कर करायणका पूजन करते हुए स्मान अनुसार सुवर्ण, स्था मृतिका अचना प्रकार-पार्क पार्ट्स

भूत-दान करना कहिने । मेशस्य पूर्व हेमेचर विसेन्द्रव हाता शाक्षणोको काला भोकन स्थापन वसामूनन देकर बुटिकेंके लिपे सम्ब प्राणनी कहिने । इसमें अन्यार्थकर विधिन्तिक भूकन करनेका मी विधान है । इस तरकते भी कालाक्ष्य कर

करता है, स्था सात बन्धतक किये कुए इस सम्पूर्ण करादायक हो जाते हैं। अतः औ-पुरुषोको समीक वैकरण दूर करनेके लिये अकस्य ही इस समाने सम्पादित करना चाहिये।

धराबान् सीकृत्यने पुरः कहा—महराज ! अवशा पुरुष दीनोको परस्पुन मासके शुक्त वसकी एकदरशीको उपयास ■ जगरपति भगवान्त्रा पुका-मका और उउते-बैठने ■■ इरिका स्मरण काने धना व्यक्ति । इदरशिके ■ प्रभातमें ही कान-पुका तथा मुक्ते इकाके कद

सहायको दक्षिण देनेका स्था है। स्था क्यकन्से अपने अपीष्ट सनोरघोकी संसिद्धिक रिक्ने प्रार्थन करनी

च्चहिये। तत्स्यात् हिन्य-मोजन ज्ञान व्याप्ति । व्याप्ति । व्याप्ति कारणुमसे क्येष्ठकः व्याप्त चर चहीनेमें स्टमूल,

मुनुस-पूर और इकियान-वैदेशसे मगवान्त्री पूजा-अर्चनाके •••• गोनुसुक्तित बल तक इकियान प्रकृत करनेक विधान

है। फिर आक्रमुक्ते आविज्ञास कर महीनेमि कमेरीके पुण, जून और सामा (साठी कन) आदिके नैनेचोंद्वारा कक्रमुक्ते कूम-स्टूरि कानेके कद कुरुवेदकका सामा तथा

निवेदित नैवेद्य पात्रा करना पादिये। कार्तिकसे मान पासतक तैमारी पारणाचे करानुष्य (अस्तुरुत), उत्तम धूप और कसारके

नेतेवये व्यवस्था पृजनेपत्तत्त गोमून-प्राप्तन तत्त्व कालत्त्व करनेवर विभान है। स्थान सक्तानंबरे दक्षिण देनी व्यक्ति । स्थान अन्तर्वे स्थानवर्ष (मासा) सुवर्णनी भगवान्

पूजन कर, हो जो। और दक्षिणासहित कारको हिन्सी करना चाहिये। इसीके शांध चारह कारको यो कोजन करकर जिल्लामी अन्न, जराका घट,

क्याँ, जुल, बाब और दक्षिण देखे बाहिये। इस हादशी-सतके कावेशे सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। इसीरे इसका बाब मनोरव-हादस्ये हैं। इन्हरूके जैलोकाका राज्य भी इसी

व्यक्ति कोव्यने निर्मित्र विक्ता प्राप्त की है। अन्य केंद्र पुश्चीन तथा विक्रवेदि की इस बतके प्रचायके अपने आवेद पनीरचीको प्राप्त किया है। क्रि कोई भी जिल-विक्री आंधलावासे इस बतको अस्ता है, उसे वह अवस्थ प्राप्त होती है। क्रि पुरुष

भवनाम् पुरुषोत्तमकः पूजन नहीं भरते, गी. सत्तमः आदिकी रोजा नहीं करते और मनोरण-हादशीका वत नहीं रखते, वे विक्रों 🎛 स्थारते 🚥 अभीष्ट-पन्त प्राप्त नहीं कर समेते ।

राज्या कृषिहिरके बाहा—भगवन् ! बोहेसे परिक्रमसे अथवा सरफ्ट्रमसे सभी पाप कट आवे ऐसा कोई उपाय आप सरकारे ।

व्यवसन् स्रोकृतक बोलो—महरएव । तिल-हादशी नामक श्वा तत है, वो परम पवित्र है और सभी पापीका नाश करनेवाला है। साथ मासके कृतम पश्चारी हादशीको जम सूथ अवस्य पूर्ववाद नवात अपने हो, तम उसके एक दिन पूर्व अवस्य एकादशीको उपनास रहाकर अंत महण करना चाहिये। हादशीको पापतान् श्रीकृत्यका पुजन सा बाह्यकारी कृत्य

्राम्य दान करना चाहिये। वर्तीको भी छानकर काले तिसका ही चोजन करना चाहिये। इस ==== एक वर्षतक प्रत्येक कृष्ण द्वादशीमें प्रतक्तर अन्तमें विश्वेते पूर्व कृष्णवर्षिक कुम्प, पकवान, स्त्र, जुता, क्या और दक्षिण करह अहाजोंको देना चाहिने । उन विलोकि बोनेसे जितने दिल कारण होते हैं, उतने वर्षपर्वना इस वतको कानेकाल सर्वते पृथित होता है और किसी जनमें अंच, चचिर, कुछी आदि नहीं होता.

सद्य क्रिकेन 🚃 है : 🚃 जिल-रहनसे बड़े-बढ़े पाप 🗪 असे है। इस जलमें न कहुत परिचन 🛮 और न 🔣 महुत अधिक 📖 । इसमें तिलोसे ही 🚃 तिल-दान और तिल ही भोजन कारेका अवस्य सहित मेराती हैं।

(अच्याय ७९—८१)

# सुकृत-स्वरंतिके उसंगर्वे सीरच्छ बैहचकी 🚥

राजा युधिक्रिये प्रका— जोक्रम्यन्त ! ऐसा कीन-सा कर्म है, जिसके करनेसे सची कह दूर हो करी उन्हा कोई संस्थाप भी न हो।

धगवान् श्रीकृतको पद्मा---महाराज । आपने 🗏 पूछा है, उस विकास एक 📖 🚾 🛊 🛊 पूर्वकारोने 📟 (शैलका) नगरीने सीरन्त 📟 📰 बैहर सुन्न था। का कुर-बैह, काल 🖬 🖦 भरून-पोबनामें हो लगा पहला था, फलकरून करने भी उसे पालोकाको विकार नहीं होती थी। यह ब्यावसम्बद्धाः इर ब्यावस हो उपार्थन करता, सभी द्वान, इसल, देवपुरान नाम नाम भी नहीं शेख था। निरव-नीमिक्क क्योंका श्रीप रुसने 📶 नर 🌃 था। 🚃 १५१को अनगर 📺 🗰 मृत्युको साता पुर्भा और विश्वास्त्रको चलन-देवने केरकको रहने एका एक दिन बीच अनुमें विचेत नामके केटलेक बाह्यणने उस मेराको देशा कि वह सूर्व-विद्यानेसे संख्य वर्धके बालुमें लोट 🚃 है, 🔤 सब अमुर्गिने 🔤 📺 पने 🖟 र प्रकारते करूठ 🚃 📺 है और विद्या लटक नकी है। यह लगी-लगी सार्थ है सा है। इसकी का दश देखकर प्राह्मणको बढी दश्य अपनी और उसने उसका कृताना पूका ।

प्रेत कहने लगा—बहन् । मै पूर्व-जनमें पालोकके रिस्पे किसी 🚃 कर्म न करनेके कारण 🖫 दश्य 🖥 रहा है। मैं निरन्तर धन, पर, स्रोत, पुत्र, 🖷 आदिको चिन्ताने ही आसल 🚃 या और मैंने अपने वास्तविष कभी 🔤 विज्ञा । इसीसे चढ़ कर भोग वह 🐒 🔫 🕶 कर शिया और 🏬 बरान करना है' —इसी उचेक्युको सम्पूर्ण जीवन व्यक्तित करनेका ही यह फल है। स्टेक्वर में स्क्रीत-उन्न सभी प्रकारके कहाँको होता रहा है। मैंने 📖 📟 किंकित भी कह नहीं होता, उससे अन बाबाब हैं। देवता, निहर, 🚃 📖 भैंने कची चूमन 🚾 📟 और 🔤 🚃 🛮 🗷 🗪 पुत्रे स्थापनाम्य नहीं मिल रहा है।

अध्यक्षेत्र हतः एका किन्दे गर्भ चनका उपयोग दूसरे 🔤 🚥 🚟 🔙 🚃 सोध-सोचकर मुझे पैन नहीं 📖 । येने अधी 🚃 📰 📰 और 🛮 ही कभी देवार्थन ही मिला ( स्वाप्तास्थाः 🕮 🔠 दश्य 🔡 है । ब्रीक देने पार्येका

हे 🔤 १०व, अतः मै 🔤 फलके 📟 🖥 भोग रहा 📳 मै अपने 🔣 दुवल्पीक 🖩 📖 मोग दहा हूँ। अतः 🖥 पुर्वभार । 🔤 ऐसा 🔤 🚃 हो 🗎 🚃 उसे बताये, 📟 इस धुर्गियमे 🔛 बद्धार हो ।

विजीतजुनि कोले—सेरफा । दस 📖 📖 तुस्मे परमञ् अभ्युतको 🚃 इच्छाने सुनुन-प्रदर्शका उपन्यस 🔤 🖦 🔤 प्रन्यवसे इस 🔤 बहुत कड़े भागका 🚃 हो 🚃 📗 🚃 तुन्हें अरुपकाराने 🗒 उत्तम गरित प्राप्त 🔤 । 🖦 सदरी-सर प्रचीक 📖 तक पुण्यक 🛲 🚃 🐧 है, इसी भारण इसका नाम भूकत-हादसी है। इस

ताव 🚃 🚃 कर विचेतमुनि अपने आश्रमको 🥌 गर्ने और स्वेरमह भी छदारीयरके ब्यासका नेदे कालके अस्पर व्याप

इतक कहकर जीकृत्य भववान् होते—हे महस्य I 🚃 🚃 प्रचान 🛮 🔛 इतना चाप केहे 🗎 कालमें सथ हुआ, प्रमुखको पुष्पके 📉 📹 का करना चाहिये और अपने करूबानके सिम्बे क्षणासादि बरते 🚃 खडिये ।

एका चुनिहिरने पूका—श्रीकृत्यकरः । प्रशेषे 🚃 कुल नरककी करना भोगनी पहली है। ऐसा कीन सा 💷 है, 📖 सन 🚃 ऋ हो 🔤 और मोस 🚃 हो।

पगवान् श्रीकृष्ण बोले — वहाराव ! फारणून पासके सुकल पश्चमी एकारशीको उपवास कर काम, जोच, लोच, मीह, राम आदिका रामपाल सरक्ता कर काम, जोच, लोच, मीह, राम आदिका रामपाल सरक्ता कर काम, जोच, लोच, करता हुआ 'उठे नामे नारामणाल' इस अष्टाधार-मनामा वाच करना चाहिये। और इसी पाँती हादकीको । पासमा चाह (फारणुनसे पदेह) — काम चाह वाहिये। पासमा पदेश — काम चाह वाहिये। पासमा पदेश — काम चाह वाहिये। आपाद्या पासमा पासमा प्राचन वाहिये। आपाद्या अर्थन करना चाहिये। पासमा सिलायम जानामा अर्थन करना चाहिये। पासमा सिलायम जानामा अर्थन करना चाहिये। पासमामा सिलायम जानामा अर्थन करना चाहिये। पासमामानी पुराचन अनुसार अर्थन करना चाहिये।

# धरणी-तत (अर्जावतार-क्रत)

10

राजा धुनिहिरने कहा—भगन् है स्थित वह कहा है कि विधिपूर्वक यह करने, बहे-बहे का देने कि करिन परिचय करनेसे परवेकरको का कि है. क्या करिन्युगंक प्राणी, कि न दान दे सकते हैं कि न कि का समर्थ है, स्था पुरिस्त कार्य के कि है.

🚟 🚃 🛮 🖟 अ्वर उसे बसाये :

सर्गवान् सीन्धाः बोले-एसन् मे अवस्थे एक रहस्तृत्वे कत बतराता है। प्रस्ताके समय का करणे (पृष्णी) बराने स्था होकर समय करणे गर्थ, स्था उस समय करणेदेवीन जपने उद्धारके स्थि इत स्था का व्यक्ति प्रमाणसे स्था स्थानकम् न्याकाने स्थानकर उसे पुनः अपने स्थानकर स्थार स्थान कर दिखा। उस सरस्य विश्वान इस सम्बद्ध है—

नतीयमे स्थान स्थान स्थान दश्यां साथःवरण नित्य-स्थानदे क्षिन्याओको स्थान दश्यांन स्थान विधिपूर्णक करने चाहिये। उस दिन परित्य,
अत्याप्य इतिकास-पोजन करना चाहिये। उसन्तर पुनः चीवः
पन करनार हाच-पाँच घोष्टर परित्य हो सीर-कृतको स्थान स्थान दश्यांक दश्यांक स्थान कर आवापन स्थानिये।
अञ्चलको दश्यांक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक नित्रहर स्थानिक स

प्रसंके प्रसंक करनी कहिये। उद्देशकर पोक्रम करना वाहिये। वर्ष , लोग, पूरा क्रोनेश सुकर्वकी विक्रमु-प्रतिम्ब बनवाकर उसे पूजित कर करा, सुकर्ण, दक्तिमा-सहित सकताचेनु अध्योको देना करा कर व्यक्ति । इस विक्रिये को पूज्य अववा की इस सुकृतदादशीका इस करता है, व्यक्ति सक्ता नहीं प्रस्त होता। नारायको व्यक्ति कभी नरककी व्यक्ति होती। विक्रमुका नाम उत्पादन करते ही समस्य कम नष्ट हो जाते हैं, फिर नरकके व्यक्ति । ध्यक्ता से प्रश्न ही बदला। इसी प्रकार वासुदेव नरायको विक्रिये। ध्यक्ता से प्रश्न ही बदला। इसी प्रकार वासुदेव नरायको विक्रिये। देखला। असः प्रश्नवादके अपनेवस अस्तिवस अस्तिवस्ति विक्रम

> अस्ति प्रतिक असमें काल करना माहिते। सानके पूर्व नदी, सरका अवन्य सुद्ध एवं परित्र स्थानको मृतिका प्रतृत करनी व्यक्ति, मृतिका प्रतृत करते अन्य इस अभवत उपारण करे----

कारनं केवनं समी पूरशां हेरि श्लीव । केर क्या मां कवी पायन्योचन सुमते ॥

(उन्तर्क ८३ । १५) 'देनि सुनते ! प्रतितके प्रता अन्य समल उन्तरकारक प्रकितीका धारण-पोधन करती हैं, उसी प्रता धुनो सन्तिके मुक्त वर्गीको सथा शास स्थापिक

पुनः इस विद्विको सूर्वको दिसालय सरिएने लगावस कान को । गटनगर कार्यानावस देवनविदाने जावस मगलान् करायाको अनुनेवने पूजा करे । नारायाको आगे चार बालपूर्ण कटोने कार समूर्यको वरिकरप्यनाकर स्वापना करे । उन कटोपर किस्सूर्ण पूर्वपात स्वापित करे । कटोके मध्य एक मीठके उत्पर करायाको सुवर्ण, बाला कहे । मन्द्रिय उपयासिके उत्पर करायाको सुवर्ण, बाला कहे । मन्द्रिय उपयासिके उत्पर पूजावस अर्थना करे । समिने वही जागरण करे । प्रधाराने करें कटोको अन्येदी, बजुर्वेदी, सामवेदी बाल अर्थवेदियो चार कहारायेको पूजावस उन्हें निवेदित करे । जस्स्यावने स्थापित आह्मणोको पायसाप्रसे संतृत कर पश्चात् सर्व भी भोजन करे। राजन् 1 इस विधिसे को मार्गातीने कृष्ण टाइप्रोका कर करता है, उसे दीर्घ आयुक्ते हाता होती है। जन्मानस्में किये गये सहाहस्या आदि महापातकोसे उसकी मुक्ति हो जाती है। यदि निष्यामधानसे क्रम करता है है असे क्रमणेक्सी क्रमी हैं।

इसी प्रकार कारादि कर भैग मासके पुत्र प्रकार इस्त्रीको उपवास कर भगवान् कार्यनको कुर्गकपमे पूरा करनी चाहिये। याथ मासके शुक्र प्रकार इस्त्रीको उपवास-पूर्वक मारवान् वराहकी प्रतिमाका पूरानकर

प्राप्त विशेष । इसी प्रकार परलपुर । प्राप्तीको उपयासपूर्वक भगवान् अधिसम्बद्धाः, कैन भारतके मुद्रा पराक्षी प्राप्तानिको भगवान् कामानी प्रतिप्तकाः, वैशास

पृत्र हादशीको धगवान् एक-रूक्काकी प्रदेशका, आवाद स्तुत हादसीको घगवान् वासुदेव (कृष्ण) का प्रतिमाका, शावण महसको सूत्र हादसीको कुद्ध घगवान्त्री तथा नाहकर महस्त्री शुक्ष पक्षको हादशीको उपकारपूर्वक

भगमान् करिकाको प्रतिमाधक क्याधिक अञ्च-पूजन हैं स्वर पटोंकी स्वरणना करके पूजित प्रतिमा शादि स्वयुक्तिको निवेदित कर देनी व्यक्तिन ।

विसोक**हाय्यो-स्त और गुरुधेन्<sup>र</sup> आदि दस** धुविहिरने पूर्वा—मण्यन् । इस कुरुस्य कीन देख

उपबास 🖿 📖 🖟 यो मनुष्यके आधीह वस्तुओके 🚾 इरफा शोकसमृहसे उद्धार कानेने समर्थ, 🌃 🚾 जुड़िस

कानेवास्त्र और संसार-मनका नाक्षक है।

भगवान् श्रीकृष्याने सद्धा — महाराज ! कारने 🔤 मतके विषयमे 🚥 🛗 है, वह समस्य कार्युचे 🛗 राज

इतना महस्वकारी है कि देवताओंके रिव्ये भी दुर्राण है। वदापि इन्द्र, असूर और mm भी उसे नहीं जनते क्यांपि

अप्रप-जैसे परित्यान्हे 🔛 में 🚃 इसका 🚾 ।

इस प्रकार दस मासोने पगवान्के दशायतारीका पूजनकर पूर्व-विधानसे अभिन शुद्ध हादशीको उपवास-पूर्वक भगवान्

पुरानवाकारत उक्कार शुक्त हादरातका उपवास-पूर्वक माग्यान् प्रकारपाठी राज्य कार्तिक हादरातिको वासुदेवको पूजा करनी चारिये । अन्त्रये प्रतिमा तथा **पाल्या** साहायको निवेदित कर

दे । उन्हें चेत्रन कराकर, दक्षिण प्रदान को तथा दीनों, अनाधेको चेत्रन-कम आदिसे संगुष्ट व्यास चाहिये और फिर स्वयं चे विक्री कम चाहिये ।

राजन् ! इस प्रकार हादश मारोगे से इस मराको करता का सभी करोगे पुरत होनार विज्यु-स्तपुण्यको आह करता

है। वरणीदेवीने इस करको किया था। इसीकिमे यह बरणी-सरके कासी प्रसिद्ध हुआ। प्राचीन कारको दश्रामकारतिने इस

कारणा अनुसारकार प्रकाशीका अधिपतिस्य प्राप्त किया था। कथा मुक्ताको इस काले अनुसारसे मान्यता नामक लेड

पुरुषो सामा विकास प्रश्ना प्राप्त प्राप्त पा । हा प्रित्यपित्यो पृथ्वपीरीने इस सहके प्रचारको महान् सामान्य प्राप्त प्रथम सहकार्तुनको प्रयुक्तमें प्रश्ना किया

वा । अनुस्थालने भी इस अवके प्रभावसे राजविं दुव्यक्तको व्यक्तिन्त्रम् तथा केन्न भारतको पुत्र-कथमे प्राप्त विश्वा था । इसी अवका अन्य वर्षा केन्न व्यक्तकों राजाओं तथा केन्न पुरुषेति इस

त्रतके प्रभावके त्रवाम करू प्राप्त व्यक्ति था । यो वि इसे करता है, भगवान् राजनम् उसका उद्यक्त कर देते हैं<sup>है</sup> । (अध्याय ८६)

वेनुओंके कुनकी स्थाप स्थाप महिना स्थापन स्थापन विशेक्तप्रती-मा है। विहास्

अस्य आहार करके निकापूर्वक इस जात्मा । प्राप्त प्राप्ति । पुनः एकादक्षीके दिन । उत्तर्याणमूच अस्या पूर्वाणिमूच बैठकर

करून करे, क्लि (काम आदिसे निवृत होकर) निराहार रहकर करणान् केलव और रुक्कोको विकिष्ठक घरणेशीत पूजा करे

्रिस्टे दिन क्षेत्रन कर्नेना'—ऐसा ह्या लेकर पत्रिमें स्थाप करें । प्रतःकाल ह्या हिन्स और प्रश्नाव्यमिले करने हुए हैं नक्ष है वस हैं है पूर्वोकी मार्स्स धारण

१-कारानुस्को १९वें अध्यक्तो ५०वे 💷 🔛 🔛 प्राप्त १२ छाउ अस्ती-कोची 🚥 एवं विश्वासी विश्वासी 🔛 हुआ है। १-का विश्व मत्त्रपुरंग ८२, परमु: १।२१, परमुक्त १०२, कृष्णान्यांत ६, व्यास्ता कृ १४१ व्या स्वस्त्रपुरं, सम्मानसीने विशेष सुरक्षणमे स्वृत है। सनुस्कर को 🗎 सुर 🔤 📹 है।

करके पाएकन विष्युकी कमल-पृत्योद्वारा पुन्न करे। पुनन करनेके प्रधान एक 🚃 बनकर मिहीसे 🎹 निर्माण कर्यने। 📰 बेदी 🞹 अंतुल राज्यी-बेदी, करे 🚃 चौकोर, उत्तरको और बालू, किकनी और सुन्दर हो। तस्पतान् बुद्धिमान वरी सुपमें नदीको बालुकासे लक्ष्योची मुर्ति अहित और उस स्कृति वेटीनर (क्वा 'देव्बे क्वा', 'क्वाचे बनारे, 'लक्ष्मे नवर', 'लिये नगर', 'सुन्ने नगर', 'सुन्ने नमः', 'बहुई बनः', 'हहुई नमः' के उपारमपूर्वक राज्येन्द्र अर्थना करे और में प्रार्थना करे—'विशोधन (लक्ष्मीदेवी) में द:बोंका नात करें, विश्लेका के लिये करदायनी है, विशोधन को 📖 दे और विश्वन को सन्दर्भ स्थित्य प्रदान करें<sup>र</sup> ।' तदनकर 🎟 वकोसे सुकको 🎟 पटन कर करा प्रकारके पार्टों, बच्चों और सर्वोपय 🔤 🛗 लक्ष्मेयी पूजा करे । चतुर वती सची पत्रिचीने कुशोदक-पत 📰 🚟 📖 एक मुख्य-मीत् अवद्यस्य जान्यस्य कराचे । जिल्हे 📖 एड कातीत होनेपर हाते पतुच्य रूपं गीद त्यागकर पण कप और अपनी 🚃 अनुसार 🚃 सेते हुए 🚾 व एक द्विप-दम्पर्रावे 📟 📟 🚃 प्राप्तास्य 🚟 📥 पूर्वकृषा 🚟 अंतर पैराकरणे समस्ता गीन्य 🚥 अंते । भार आदिसे 'जलकारिके वधीउला' जलकार्यः भगवान्त्ये नगवार भारी गुढ़के लगा हुई युद्ध-चेतु सदा उत्तम भागी गयी है। है— में बहबर करने पूजा करे। इस मनद सामें पीय-बदा आदि कारकार जागरण करे 📖 प्रतःश्वरः 📖 वर पुरः विज-सम्परिका पुरान 🚾 📰 कृतनात क्रोहकर 🚟

प्रत्येक माराने इसी विधिसे सारा कार्य सम्बन करना चाहिने ( इस प्रकार काली सम्बक्ति अधारापर भा), पाटर, स्वयस्य अवदि उपकरणीसे मुक्त एक सुन्दर राज्या युव-बेनुके साथ दान करके इस प्रकार पार्थना करे--- 'देनेज ! किस प्रकार लक्ष्यी आपका परित्यान काके अन्यत नहीं कर्ती, उसी प्रकार सीन्दर्भ, नीरोगवा और निःशोकता सदा मुझे निरविकासकारी बार हो-पेर परिसाम न करें और मनवान केशकके सरी उत्तम भक्ति प्राप्त हो ।" व्याप्ति अभिक्रका रखनेकारे अधिको समन्त्र गुढ-बेनुसहित सच्या और 🔣 📆 सुन-दान

सामच्यक अनुसूर्ण इन्हें भीवान कराये। 📰 📰 🔤

करके पुरानोको कथाएँ सुनते हुए वह दिन वनकेश करे।

करन च्यारिये । इस बलमें समाल, 🚃 (कनेर), मीण (नैसकुत्पुर 🖿 अगस्य-वृक्षक पुन), कथा (चिन कुम्बरमय कुत्रा) कुंकुम, केसर, सिटुकर, मरिएका, क्रम्बद्धारः कदम्ब, **व्यापः और क्रम्ये**—मे पुन्न सदा प्रशस्त माने गये हैं।

चुनिहित्से पुनः पुन्न-जगरको िञ्च अप सुहे स्थानकारण प्रसार्थे निर्देश गुड-केनुसा विष्यत कारभार्य । साथ ही यह भी कारणनेवर कृत्य कीनिये कि गुर-केनुका कर कैसा होता है और उसे किस समाध पाठ **ार्थि दार स्थाप पार्टिये** ह

भगवान् बीकृष्य चेले—मध्यम । इस लोकरें नुद्ध-केनुके विकानका को कप है और उसका दान करनेसे को 🚃 📻 होता है, उसे 🖣 बदल यह है। गुब-बेनुका दार सम्बद्धाः 🚟 🚟 🛊 : गुन-चेनुसर दान 🚟 📰 नेवर्ग चूनियो स्वयान्यकार सम्बन्धाः सुधी निकास उसका चार हाम रक्ता काला पुरावर्ध कावित कर है, जिसका अञ्चल कुर्व दिश्यकी और 🖩 । सदयक्त एक कोटे मृगवर्गमें **बहुदेवी क**रण्या **पर्या** स्थान समार रचा है। पिर उसमें

इसका बढ़का एक धार गुरुका करावनकारिकेन अपने गुरुकी सम्बन्धिः अनुस्तरं इस (गी)का निर्माण कराना चाहिये । इस ···· में और ···· करनत काके उन्हें सा एवं महीन बक्रके अध्यादित 📖 है । 📖 बोसे उनके मुक्की, सीयसे क्यमेंकी, नोबे केंक्स, 🔚 📖 नेवेंकी, 🔛 सूतरे न्हिक्केट, 💹 कन्यतमे गत-कन्यतम्है, लाह रेनमे विद्यसे पीएकी, 🔛 रेनके मृगयुष्यके 📟 🔛 मैरीसे 🔤

बीहोकी, बारकारको दोनी क्षानीयाँ, रेजानके कांगेसे पूराणी, चेड्नेक, इन्तिस्थित आँबोकी तारिकाओकी, सुकारि 🔤 अस्पूरकोकी, चौदीसे सुरेकी और करा 🚃 🐃 मार्गि कसपूर्वको स्था 📖 पूप, दीप आदिद्वारा

उनकी अर्थन कानेके पक्षत् में प्रकंत करे-'बो समस्य प्रतियो तथा देवताओंमें निष्यस करनेवाली

चेतारे विश्ववेदा प्राथीतद्वारेत (अवस्था द्वार ) १६) १-विशेषा एक्स्प्राय विकास में विशेषा

२-दो 🚃 पल अर्थात् तीन वन्नेद्र 📟 🐃 📑 🕼

लक्ष्मी है, येनुरूपसे हिया मेर पाणेका है, हिल्लास्त्रमें स्थानिक प्रश्नी प्राप्त क्ष्मी स्थानिक है, हिल्लास्त्रमें स्थानिक प्रश्नी स्थानिक है, हिल्लास स्थानिक प्रश्नी है, ये येनुरूपसे मेरे लिये सम्प्रतिक्षीकी है। हिल्लास हिल्लास है, हिल्लास स्थानिक स्थित स्थानिक स्थानि

यस-चेतु, 📖 बीर-चेतु, 📖 सर्वय-चेतु, आवर्षी

# विमृतिहरूको <sup>१</sup>-सतमे राजा पुरस्काहनको सांग

मगमान् औक्तमने बाह्य-न्तराव ! 🚃 वै भगवान् विष्णुके विभृतिहादकी कारक समाता सतवा वर्णन कर रहा है, जो सम्पूर्ण देवगणेहारा अभिनान्द्रत है। बुद्धियन्। भनुष्य कार्तिक, वैद्याक, मार्गजीर्व, प्रस्तुत अवक मासमें 🚃 पक्की 🚃 🚟 सल्यक्त का संभ्योपसनासे निवृत्त हो इस प्रकारक निवृत्त प्रहण करे--'प्रयो । मै एकस्टारीको निराहर राज्यस पान्यम् जनदंत्रको परतनात अर्थना पत्रना और दादकोके गरा ब्राह्मणके साथ बैठकर भोजन कर्जणा। केड्स ! मेर 🖦 **ाः निर्मितवपूर्वक पूर्ण हो जाम और फरलदायक हो।' कि**र स्तमें 'के 🚟 नाराकनाक' मन्त्रका जन करते हुए से कव । पुण्येकी माला एवं भारत अहिंदो परस्कत् पुण्यकेकासका पुजन करे। एक वर्षतक 📟 जनसः भगवानुके दस 📗 तथा दत्तात्रेय और 📉 सर्वपनी प्रतिपका

च्छिने। को पहुच्च कर्म्युक्त विभिन्ने निमृतिहादसी-जानका अनुहान करना है, 🔤 🔤 चलने मुक्त होकर अपने सी

विद्वित्रोतको 📟 🚾 छ। उसे एक त्यस जनीतक

दक्षि-भेतु, नवी रस-भेतु और इसमी समयतः प्रत्यस भेतु है । सदा वर्ष-पर्वयर अपनी श्राह्मके अनुसर मन्त्रोत्तरमण्डक

तको भोग और मोशकम करूको प्रदान करनेवाली है। मे

सबी सन्पूर्व पञ्जेबा पास १९३२ कालेकाली, कल्यानकारिणी

और व्याप्त हैं। कुँके इस रक्षण विज्ञेकदारधी-मध स्थापित प्राप्त करा है, इसकिये उसका अनु होनेके

नुब-चेनु को प्रकार भागी गयी है। उत्तरावण और

दक्षिणको दिन, पुरुषद विपुत्रनोग, ध्वतीधातयोग अधवा

कुर्व-कड़के प्रकृत अवदि पर्वोग्द इन गुड-चेतु आदि गौओकः द्वार क्यां प्रकृति । व्या विशोकहरूदरी पुरुवस्थिते,

पानकृतिको और महत्त्वकारिको है। इसका वत 🚃 मनुष्य

विक्तुके परमण्डको सह हो जला है तक इस लोकने सीपान्य,

कैवेपना और दीर्वायु जातकर अन्तमें औद्धरिक्ट स्वरण करता

📰 इत श्रीओंका दन 🚃 चाहिये. 📰 🗉

१-इस इक्का वर्गन सरस्युत १९-१००, व्यक्त सूर्युत्तक २० । १—४२, विष्णुत्तके, स्वास्त्रसम्बद्धाः स्वास्तरसम्बद्धाः स्वास्त्रसम्बद्धाः स्वास्त्रसम्बद्धाः स्वास्त्रसम्बद्धाः स्वास्त्रसम्बद्धाः स्वास्त्रसम्बद्धाः स्वास्त्रसम्बद्धाः स्वास्तिः स्

न से सोककप फलका भागी होना पहला है, न 🎟 और दिख्ता ही भेरती है तथा न ककाने 🔣 🚃 पहल है। 📖 प्रत्येक जन्ममें विच्यु अच्चा 🌉 भक्त होता है। एकर् ! 🚃 एक 📕 आठ सहस्र युग नहीं बीत जाते, उपलब्ध 🚃 सर्गलेकने निकस 🚃 🖥 और पुष्प-ब्रॉम होनेपर पुरः भूतरूपर 🚃 📰 🛊 । धगवान् श्रीकृष्यने पुतः सद्या--प्रायतः ! पहले स्वकारकरपरे पुजराहर 🚃 📰 राज 🕬 👊 🗐 सम्पूर्ण लोकोने 📟 तथा 📖 सूर्वेड समान 🔳 । उत्पन्धी संतुष्ट होकर ब्लाने उसे एक खेनेका 📖 (का विकास) अक्षान विकास का, जिससे 📺 इच्छानुसार 🚃 🚟 भी साहार समाप्त सा । 🖾 प्रमार 📖 कुम्ब 🛌 पुरुष्कार क्षपने नगर एवं जनपदकारियोंके साथ उसका हाताल होकर लेकानुसार देशकेकने 🚃 सत्तों 🔚 🛤 📟 करते 📖 करनके आदिये पुन्तरनिकारी इस पुन्नकारण सारवे द्वीपपर अधिकार चा, विकास विकास थी और आगे 🚃 वह द्वीप पुल्लाद्वीरके जनमे 🚃 🕮 लगा । भूँकि देवेकर कहाने इसे सामाना स्थान प्रदान किया 📺 इसरिवर्ग देवता एवं 🚃 उसे कुवाबद्धत 🚃 करहे के 🛚 तप्रवाके प्रधानमे सहाद्वार प्रदेत स्थानक विमानक गरेन्द्र ! उसकी 🚃 नाम लावज्यकरी 🖘 । 🚃 सुन्दरी थी तथा रूक्यों करियोद्धर। करों ओरसे सम्बद्ध 🎆 📰 थी। वह राजको उसी प्रकार अस्पत्त 🔤 🔳 🖼 इंकरजीको 🚃 परम 📰 है। 🚃 दस इका पुत्र के, जो परम 🎟 और अनुवारियोंने 🚃 वे । अकी इन सारी विभृतियोधर बारेबार विकारकर 📖 कुम्बाहर 📨 विमुन्य हो जाता था। 🎹 यह (प्रभेतको पुत्र) सुनिका वालमीकि<sup>र</sup> 🚃 यहाँ पधारे। उन्हें अल्प्स देशकर 🚃

राजा मुध्यक्रकाने पूछा--- मुर्गन्द ! 📖 बारकरे मुहे

उनसे इस अकार प्रश्न किया-

सीन्दर्वसे सम्बद्ध देवाहुनाओंको पर्यातत 📖 देनेवाली सुन्दरी फर्ज बक्र हुई है ? 🔣 केंद्रे-से तपसे 🚃 होकर बहाने मुझे ऐसा कमल-एड क्यों प्रदान किया, जिसमें अभाव, हाथी, ल्याच्या और सन्बद्धांसयोसहित वदि सी करोड़ राजा बैठ नामें को भी ने कर नहीं पहते कि कहाँ चले यमे। यह विमान करुम्मे, ब्राह्मित तथा देवताओंके 💹 🗷 अलक्षित-सा कार है। क्या: ! की, वर्ष पूर्वाने कारका मेरी पास्त्रीन पूर्वक्रमध्ये बर्जन-सा देखा कर्म किया है, जिसका प्रपाय आज दिवारकची पड़ 📖 है, इसे आप बतलायें। सद्यानार 🚃 भारतीयेक राजानेक इस आवशीलक एस अबुद्ध प्रथमपूर्व मृतासको जन्मकासे सम्बन्धित जनकर 📖 🚃 कुलने इक्ष्य 🖦 एक तो तुम तस कुलमे पैटा हुए, 🔤 दिन-एव चरकर्ममें भी निरत 🌃 ये । तुन्हाय 🔤 भी 🔤 🚾 संबिद्धः तथा 🔤 था। तृष्टारी लागा दुर्गन्यपुटः भी और नक कहत कहे हुए थे। उससे दुर्गन्थ 🕶 📰 🗃 🧰 क्षम भद्रे पुरुष थे। इस सम्बर्धे न ती तुष्पण कोई दिलेके मित्र था, न पुत्र और न भाई-सब्धु ही थे, न विकारमाना और बहिन हो भी । भूपाल | केशल तुम्हारी यह फाम क्रियतचा चली हो शुभ्हाचे अचीह परवानुकृत्व संगिती थी । एक पार काची चर्चकर असावृद्धि हुई, जिसके कारण अकारत पद गरा । कस समय भूकते पीदिश होकर तुन आहारकी कोको निकते, परंतु तृष्टे कुछ भी जंगली (कन्द-मूल) कल आदि कोई काल वस्तु कर न हुई । इसनेमें ही तुन्हारी दृष्टि एक क्लेक्ट्स पड़ी, जो कमलसमूहसे व्यक्ता था। उसमें बढ़े-बढ़े कमरू किले हुए थे। तक तुम उसमें प्रक्रिष्ट होकर कहरंकाक <del>कमल-पूर्णको लेकर वैदि</del>श<sup>†</sup> नामक तगर-(विदिश नगरी-) 🖩 चले गये। वहाँ तुसने उन कमल-पुष्पोको नेशकर मृत्य-अक्षिके हेतु पूरे नगरमें 🚃 लगाया । स्तर दिन मीत गया, पर उन कामरू-पुर्व्योकः कोई सरीददार 🛮 भिरत्र । उस 🚃

क देवों तक मञ्जोद्धारा पुजनीय निर्मल विभूति 📖 अपने

१-व्यक्तिया स्थापन, ज्ञास्त्रा १३।१७, १६।१०, १६११६ तथा आव्यक्तिया ७।७।११, व्यक्तियान्, उत्तरस्थान, उत्तरस्थान,

340

पुन भूकते अत्यन्त व्यकुल और धकावटसे अधितन 🞟 होकर प्रश्रीसहित एक पहलके प्रश्लममें बैठ गये। वहाँ स्क्रिमें तुम्हें महान् पश्चल सम्बद्धां पद्धाः 🔤 🚃 सुम क्रिक्टर एस स्वातपर गये, वहाँ वह प्रमुख्यस्य 🗷 🖿 वा । वहाँ मध्यपंके मध्यप्रापने पणकन् विज्ञानी पृत्र 🐺 🚾 थी । तुमने उसका अवलोकन किया । कार्रे अन्द्रुकती नामकी वेह्या माप यसकी विपृतिश्वदर्शी-शक्की समाप्ति 💷 अधने गुरुको मध्यान् इयोकेराका विकियत् नुप्तार कर सर्वातन करुपवृत्त, बेह शबजाबल और समक्ष श्राद्याका 📰 कर रही थी। इस सकार पूजा करती 🐙 अनुस्तानको देखकर तुम दोनोके भन्मे यह विकार सामत् हुआ 🔚 हा कमलपुर्वासे क्या केना है। अच्छा दी यह सेना कि इनसे चगवान् विकास श्राहर किया स्थान नरेकर । उस सन्य हम दोनो पति-पर्नाके मनमें ऐसी 🕮 उरका कुई और इसी अवस्थि प्रसङ्घमे तुन्हारे उन पुन्नोसे धानवान् केपना 🔤 लवजायलको अर्थना सम्बन्ध हुई 📖 देव पुण-समूकेने हुन दोनोने प्राप्यक्ये भी सब ओसी मुख्येकट व्यक्ती शन्तारी इस क्रियाने अन्त्राचली बहुत प्रशत्न वृर्द । उस समय असने तुम दोनोको इसके कदले तीन भी अलाकियाँ देनेका आरेश दिया, 🞟 तुम धेनोने 🌉 दुक्तको 📟 धन-राशिको सरस्यकारं कर दिश्व । भूगते । तम अस्तुकारीने कश्चनुस्तर सात कार्य 🚃 किया। संसन्। इस तुन्ते (घरूप, गोन्य, हेश्च, बोन्य) कर जकरूव अत लावन

दिया और महा—'फ्रेजन क्षींक्ये', सिन् तुम रोनेंनि उसका भी परिस्थान कर 🔤 और कहा—'बक्षभने । अमस्येन करू मोजन कर होंगे। दुवारों । इस दोनों सन्तरे 🖥 📟 📟 और क्यार्ग करोवाले हैं, पर इस समय कुत्तरे उच्चासंक प्रसङ्गरी हमें विदेश अपनन्द आह हो रहा है।' उसी प्रसङ्गरी तुम दोनोंको धर्मका लेकांचा प्राप्त हुआ और तुम दोनोंने राजभर कारण भी किया था। (दूसरे दिन) ब्राह्मकार अनुस्वतीने पश्चिपूर्वक अपने गुरुको लक्क्चनलस्त्रीय प्रस्था और अनेही ग्रीहे प्रदान क्रिकेट उसी प्रकार उसने अन्य बाद्ध **अदान्योग्दे** भी सर्वर्ण, बस्र, अलंबसपदिसहित करह केर्द् प्रदान की। ह्माक-दापरिको चोवन कराया और विशेष आदर-सरकारके 🚃 🔚 बिद्ध किया (

राजेन्द्र । 👐 🚃 लुक्क तुन्हीं थे, जो इस समय क्रमान्यकार्क क्रमाने उत्पन्न हुए हो। उस कमल-समूहसे कनवान् केराकका 🊃 होनेके कारण तुन्हारे सारे पाप नष्ट हो गर्ने तन्त्र दृढ़ त्वम, 📖 एवं क्लिंगितके न्याल तुन्हें इस भी प्राप्ति हुई है । स्थन् ! तुम्हारी उसके 📟 🖷 काल्यमं, तुषारे धोड़े-से 🐺 तपसे अहारूपी चनकान् अन्तर्दन तथा रचेकेन्द्रर बहुत भी संतुद्ध हुए हैं। इसीसे पुष्कर-पन्दिर संप्रवानुसार वर्ड-अर्ज भी जानेकी 🚃 है। 🚃 अनुसूचर्वी बेदमा मी 🔣 शतय

🚃 🚃 🛗 सीतकपूर्व उत्तवा हुई है। 🗪 इस सम्बद्ध 📰 भूगति 🔤 🛮 और समस्त 🚃 सक्को · • • • दक्षे तथा सम्पूर्ण देवताओंद्वार समृत है। इस्रोक्त राजवनेशा ! तून इस पूथम-गृहको भूतरूपा श्रीह हो 💹 🚃 लेकर विश्वविद्वादयी-जलकर

क्यो । उसमें तुन्हें 📰 ही बीधाकी महीत . **ाकुरमाने काहा**—महाराज । ऐसा सामा प्रचेतानुनि 📰 अल्लीक 📱 गये। 📰 🚃 पुन्तवहन्ते सुनिके

विकृतिकादावी-मारावा अनुसार काली स्थाप कालाकानाताका वालन करना अववश्यक है। जिस किसी भी प्रकारने हो सके, बाह्रो इन्द्रीप्रयोक्त का कमल-कुचेद्वार सन्दर्भ करना व्यक्तिये । अन्य । अपनी प्रतिके अनुस्थर अक्षणीको दक्षिणा

👊 देनेका विभाग है। इसमें कृतनाता नहीं करनी चाहिये, **व्यक्ति** व्यक्तिमे ही प्रमुक्ति केन्नाथ क्रम्म होते हैं। जो मनुष्य प्राचेको विद्येन करनेवाले इस वतको पदता क अवन करता

🛊 🚃 इसे कानेके किये सम्पति प्रदान करता है. 🥅 भी भी करोड क्वेंडक देवलेकने 📖 करण है। (अम्बर्ग ८५)

१-वरिश्व 🔤 🔤 पुरुषे 🔤 🔤 🚾 मान्य 🗷 🗷 मान्य देश 📆 🚾 दूसरी पत्नी 📰 उत्पवित्रने पूरी 📟 🔣 है।

#### महनकुद्वी-जनमें महभूजीका आस्वान

युधिहिरने कहा— घगवन् ! दिति (दैलोक्ट करने) ने जिस वतके करनेसे उनकास मरुद्रणोको पुन-रूपमें प्रक किया वा, अब मैं आपसे वस मदनहादनी करके क्रिया सनना कहता है।

भगवार् श्रीकृत्या कोले—महरूव ! पूर्वनासमे

कारत आदि महर्षिकोने दिशिसे किस उत्तम मदनदादारी-मतनम वर्णन व्हिया था, वसीको अन्य मुहस्से विस्तारपूर्वक सुनिये। ब्रह्मशहरीको चाहिये 📰 यह 📰 वासके पुरु प्रकारी हारानी तिविको श्रेत चावलोसे परिपूर्ण एवं 🚃 एक घट स्वापित बरे । 🚃 बेत कदनक अनुसंग 🚃 हे तथा मा 🚟 वसके से दुकाईसे आकारित हो । उसके 🔤 🚃 प्रकारके प्रशुक्तन और 📖 टुक्ये रखे आपै। 🚃 📟 प्रकारकी बाह्य-स्त्रमधेसे शुक्त हो तथा व्याप सुवर्ण-कष्क भी दाल जान । तत्स्वान् उसके क्रफ्र गुरुसे नर कुंक्स स्वकेच्य पात्र स्थिति करे : 🚾 🚃 🚾 श्लोक इसके भाग-भागमें व्यवस्थान व्यवस्था करे । 🔤 गम, यूप मादि उपवारोधे 🚾 पूज करे और गीत, काल तक भगवान् विक्कुको कथाका आयोजन करे। प्राप्त:बद्धक वह यह ब्राह्मणको सन कर दे। युनः चरित्रपूर्वक सहायोको मोजन कराकर स्वयं 🛡 नमकावित भीकर 🌃 और ब्राह्मणीको दक्षिणा देकर इस प्रकार उक्षरण करे—'कें सम्पूर्ण प्रतिपारिक इट्यमे 📰 स्कर अनन्द नमसे को है, वे कामभंदी काश्वान कवर्षन मेरे इस अनुवानसे घसमा हो (

इसी विधितं प्रत्येक पासमें पदनहादशी-वंत्रांत कर्नुक्षन व्याप व्यक्ति । त्रदीको चाहिने 🎞 वह द्वारांत्रिके 📼 आमरुक-पास कावार पूरत्यंत्र द्वारा को और अधेरप्रीके दिर अविनाशी भगवान् विच्युक्त ह्वा को । तेरहर्ज महीन आनेपर पुराचेनु-सहित एवं सम्प्रत सामामिकेसे सम्पन प्रत्यः कामरेक्सी राजीनिर्मित प्रतिम्ब और बेत रंगकी दुध्यक में बाह्यक्षी सामित को । उस समय शक्तिके अनुसार क्षम एवं अस्पूर्ण आदिद्वारा सपत्रीक सामामिके स्वाप्त करके उन्हें सम्बा और सुराम्य स्वाप्त प्रदान करते हुए ऐसा कहना चाहिने— 'आद प्रसार हों।' तरहानात् उस धर्मक स्वीको कामकेको कारोबन कीर्टन करते हुए गोटुम्पसे हुई हवि और चेत हकत करता चाहिये। पुनः कृपणता खेककर क्रिक्ट करान चाहिये और उन्हें समावाति गमा और पुन्पधारम स्वानकर संयुद्ध करन है। जो इस विधिके समुख्य हार करतहादसी-क्रिक्ट अनुहान करता है, समस्य चारोसे पुन्न होकर भगकान विष्णुकी समसाको मार हो क्रिक्ट पुनौको महस्य

सीयान्य-फलका उपनेप करता है।

वितिके इस वक्षनुवालके प्रभावने व्यास्त हैन्सर पहाँचे कर्मण विश्व विश्व पत्रों और पत्र प्रसम्बद्धपूर्वक कर्मने उसे पुनः क्ष्म-वौधनसे सम्पन्न तक्य क्ष्म दिया तथा कर प्रभिनेके क्षिमे कहा। दिकिने कहा— 'प्रसिदेव ! मैं आपसे एक ऐसे क्ष्मा करदान पाइले हैं, जो इप्यक्त क्षम करनेमें समर्थ, व्यास्त क्ष्म करनेमें समर्थ, व्यास क्षम करनेमें क्षम करनेमें क्षम 'प्रस्त हो सेगा।'

वर्षेतक तुन्हें इसी वर्षेणनमें एका है और अर्थन गर्थकों शक्ते क्रिये ब्राह्म कृतन है। बरविमी । गर्मिकी ब्राह्म संस्था-कारूमें खेळन नहीं केरन शिक्षि । व न तो कभी कृतके सूरकर किसा कार्यन मुसल, ओकारी आदिक में हैते, जरूमें कुरवार कार्य न करे सुनसान घरमें न जाय, लोगोंके साथ कार-विकार न करे और अर्थिक सेंग्रे-मरोड़े नहीं। कह करू खेळकर न बैठे, कभी अपवित्र म रहे, उत्तर दिख्यों सिरहान करके एवं कहीं भी नीचे सिर करके न सोये, म मान होका रहे । उद्विपतिस रहे, न कभी भीये चरणींसे अर्थन करे, अस्महरूक्त कार्यी न बोले, अधिक खेरसे हैसे नहीं, नित्य पश्चिक्त कार्यीय तर्यर ब्राह्म पुरुवनोंकी सेवा करे किसा (अक्ट्रॉन्ट्सा गर्थकीके स्वास्थ्यके स्थित उपयुक्त

स्तान करे। बुधे सित्योंसे शतकीत न करे, कपहेंसे हवा न छे। कृतक्ष्य मोके साथ न बैठे, दूसरेके परमें न जाय, अस्टी-अस्टो न चरे, महानदिवीको पर न 🌃 । भवंकर और स्टिंग दूसर न देसे। असीर्ज भोजन न करें। कटिन

करकथी गर्था) सम्पूर्ण ओपवियोसे युक्त गुनगुने गरम बर्सनी

स्वयम्पदि न करे। ओपियोग्रस गर्भमी रक्षा व्यास हो, इदयमें मारसर्व-पाद न रसे। जो गर्मियी को विशेषक्यों इत विशेष को कि है, ब्राह्म कर्मसे हैं हुए व्यास होता है, वह प्रीएकान् एवं दीवांचु हैं। इन विशेष पाटन न करनेपर निस्संदेह गर्भपतको अपस्कृ हैं। इस विशेषी है। विशेष । इसियमें तुम इन निस्मोक्ष पासन करके अपने गर्मकी

रक्षाका प्रयान करे । तुन्हार 🚃 🛊 🖟 हो, अन 🖥 📖 छा ै (

# 

(पक्टम) प्रश्न हर्।

करेगी। (अस्मान ८६)

भगवान् श्रीकृत्वाने बद्धा-नवतन । वर्तनकृत भगवती औदुपविश्वेका सरका करनेका पुरूष 🗺 🖷 🛬 🚓 और पथको प्राप्त नहीं होता । प्राप्त । 👊 🖣 और कल्ट्रेक्की अपने गुरु बंदीपनि युनिके यहाँ कर विका पह चुके 🖫 उस समय हमने मुख्यविकाके किये मुख्यके प्रार्थन की। तक गुरुजीने हमारा दिवय प्रभाव जानकर वही कहा—'प्रश्ले । 🞹 पुत्र प्रधायक्षेत्रमें गया वा, वहाँ इसे समूक्ष्में विवर्ध प्राचीने कर दिया, उसी प्रकार गुरुवादिकाले कपने पूर्व कर कराओ है 🕮 इस प्रमाणको गये और बहारि गृहपुरको रेकर गुरुको समीप आवे और गुरुदक्षिणांके रूपमें उनका का उन्हें समर्पित वार दिया। तदनकर गुरुको प्रकारकर कव इस बलने समे, तब पुरुवीने बजा-- 'एते ! इस स्थानमें तुम अपने परप्येका चिद्ध बना दो', हमने भी गुरुको आधुको अनुसार केरत ही किया, फिर हम कापस घर का गये । उसी दिवसे बटराक्यकी दक्षिण पदका, मध्यमें सर्वमङ्करका और 🗏 📖 परक-**ाः** पुत-प्राप्तिकी कामनाचे अथवा अपने इच्छाओची

कृत, दीव, नैवेच, मयु आदिसे जो को आवना पुरुष पूर्णन करता है, यह सम्पूर्ण करोसे मुक्त हो सामि निवास करता है। ब्राह्म क्षितिस्थे कृत: कुछ — प्यूरवर्ष्ण ! ऐसा कौत क्षितिस्थे अस्वरागसे सामित्वा दुर्गमा यह हो जाय और दीकांग व्य दूर व्य जाय । अभवाष्ट्र अस्वरागसे कहा — यहराज ! हमी सभको क्षित्र किम्पूर्णिके असुकर्मानुकिसे क्षित्र जा, क्षा उन्होंने उनसे कहा — देशि ! जोश विस्तित्त हुछ क्षावा प्रयोगकोंने पवित्र अस्वरागमी कान गरे और शहर स्थानी उत्या कीर अस्य, रक्त

🚃 तथा 🔛 वृक्तको 🊃 बरे । ये तीनी वृक्त पगवान्

पूर्वको अस्वत्त विष्य है। असःकाल सूर्योदय हो जलेपर भगवन्त् सूर्वका दर्जनकर उनका अपने इदयमे ध्यान करे।

जनकर कृष्य, नैबेच, पूर 📖 उपचारेंसे का सुबोधी पूर्वा

ठकन् । इस विधिने को सी-पुरुष इस वतको करते हैं,

💹 प्राच्या दुर्वन्य तथा उत्तव दौर्यान्य दोनों 🔛 हो जाते

🖁 🔤 वे सीमामहाहाँ 📗 💴 है। (अञ्चाप ८७-८८)

🚟 🚃 परिच्छी ठाइक स्वीकार कर सेनेपर महर्षि 🗈

बहीं असर्थान है को । 🖿 दिति निवर्षोका पाएन 📟 🖷

···· व्यक्तीत कले रूपी । बारहाकामें दिसको ···· पुत

🚃 🚃 बहेती, बह का प्राप्त कर परिके सुकारो 📷

🚃 ! 📺 प्रकारते को भी नहीं इस मदनद्वदर्शन-

क्षित्रे सची वहाँ पूजन 🔤 हैं। प्रस्तेक प्रत्सको शृक्ष

क्ष्मा हे क्षापुरवाको एक पुरत, नातकात अध्यक्ष अध्यक्ष उपयक्त रहकार

पुरिच्या आकार सुवर्णकी इनकी प्रतिया कना करके गत्थ, पुष्प,

📰 और पुजनके अनन्तर उन्हें नगरकार करे।

धर्मराज्यातः ।

मुमिहिरने पुत्र--नगवन् ! ऐसा कॉन-सा सत

मार्थिक करनेसे) यमधन प्रसाम हो जायें और क्यान्य दर्शन न हो।

<sup>🛡 🚃 📖</sup> सन्दर्भनके जनते ज्ञोक सा-निवर्णने संस्तात है।

और उनके मुखके तपस्तेजसे दिशाएँ उन्हरिक हो स्त्री थीं। तब मैंने उनका अर्थ, पदा आदिसे सतकर का आदरपूर्वक उनसे पूछा-- 'महाराज ! प्राणियोके सिन्धे अस्कन्त प्रकारक नरक तथा वपदुतो आदिका मिससे दर्शन न हो ऐसा कोई वट 🚃 मुझसे बरालये।' यह सुनकर मुहल्युनि 🗏 🚃 🚃 हर्। किंतु बदमें झन्त-यन होकर 🖣 बोले— 'अभे । एक बार ऐसा हुआ कि युद्धे अकस्मात् मूर्या आ क्यी और मैं पृष्पीपर गिर पड़ा, उस स्वितिने मैंने देखा कि हायने लाती लिये कुछ लोग आगसे वस्पेंड हुए-से के प्रतिस्थे ····· महर सड़े हर में और में। इटवरो एस अंशुटेके मान्या व्यक्तिको बस्तपूर्वक बीचका तथा र्यसम्बेसे बीचका यमपुर्वकी और के जा को हैं। फिर में कलाक क्या देखता है कि पमग्रको सभा लगी है और लाल-फैले नेजोक्टरे क्यावय समामें विधानका है तथा कप, बात, फित, क्यर, पांस, क्रोच, पोदे, पुंची, पर्गदर, श्रांक्षिकेन, विश्वविका, महावाद 🔤 अनेको प्रकारके होग और कुछ हुन्हें सेंद्र हुए हैं और है साम मृतिमान् श्रेमत् यमदेवको अपासका कर यो है। क्याद्रत यकेकर 🚥 पारन किमे हैं। हुक उक्तर, दानव 🌃 भी क्यों कैंडे है। सिंह, ब्याम, बिच्चू, एंज, शिका, सीर, उल्लू, मंदि-मन्द्रेहे आहे. प्रवेशर वीव-जन्म कहाँ उपनिवत है।" मंपराको अपने व्यास्त्र पूछा—'दृतो । कुमलेग वहाँ दृत मुहलमुनिको विकेषि 🎚 आवे ? मैंने तो मुहल श्रीत्रको स्वर्गेक लिये कहा या, यह क्षेत्रियनगरका निवासी वीकाकका पूर्व है, उपकी आयु समाप्त 📕 कुली 🖟 इन मुनिको उत्कारक केंद्र 🖒 और 🕅 🖫 🗑 आओं ।' यह सुनकर ये दूश ब्हेंबिज्यनमा स्थे, किंतु वहाँ एक मुद्दसमें मृत्युके कोई लक्षण न देखकर प्राप्त होकर पुनः यमकोकमें वापस आये और उन्होंने साद कृतान वमराजको बता दिया । इसपर यमरायने असे कहा-'एके । विन पुरुषेनि नरकार्ति-विनादिली क्वोदासीका कर किया है, वन्ते यमकिकार नहीं देख पाते, इसोरियर तुमलोबोर एक

पूरी जानेस करराजने उनसे बदा—'मार्गवर्धि मासके मुझ पश्ची प्रवेदमंखो जब एकिकर एवं मंगलकर न हो तब उस दिन केल व्यान् और प्रवेद बाहाओं वसा एक पुराजवानंशका करण करके पूर्वहरूकरूमें इन बाहाओंको उसरापिमुस प्रविध शासनपर बैठाये। तिल-कैलसे एनवा अध्यंग करक कर्मकावान क्या इलके मारा बलसे उनो पृथक्-पृथक् शास कराने और उनकी सेचा-सुमूना करे। बाहाला पूर्विपमुस बाहान आदरानुंक विलाये।

पुनः वर्ता प्रवित्र होस्तर आस्यमन करे और उन बाह्मणोकी अर्थन करे। तासकामें प्रत्यकाम (एक पसर या एक सेर) तिल-तन्त्रुक, दक्षिता, करा, यलपूर्ण कलना अर्थि करें अरुम-जलन कटन कर विसर्थित करें।

इसी प्रवार वर्षपरतक बा करे। बा मानव परि अस्टरपूर्वक एक कर की इस विस्ता कर ले ही का गर कम्मोकका दर्शन नहीं करता। यह मेटी मानाम अदृष्ट छता है, असमें विकानद्वारा अर्थमान्यलमें प्रवेश कर कह विक्षुपुर और विकादकों का करता है। यमवृतों। इस एक पुरस्ते इस प्रवेदकों-वरतको पहले किया था, इसोलिये तुम सब इस व्यक्ति-वेदका दर्शन नहीं कर पाये।

अंकृतन ( व्या शत मेरे मुच्हां दूर हो व्या और ने परम के गया। भगवन्। मैं आपने दर्शनकी इच्छाने यहाँ व्यास का, कैस करने कृतान पुत्रत, यह सब की आपने कारकात।

भवकान् श्रीकृष्णा पुनः बीखे—एकन् ! वे मुनि मुक्तते काल् कवाता अपने स्थानको बारे गये। बर्गलेय। अपने भी इस प्रताने करें। इससे आपको पमलोक नहीं जाना पहेंगा। इसी प्रकार जो कोई बी-पुरुष इस प्रपोद्दरी-असका अक्टापूर्वक व्यावस्य करेंगे, वे सभी मानोसे मुक्त होकर अपने पुष्क-कर्मक प्रधावसे स्वर्णने पूजित होंगे और उन्हें स्था समस्वरूग नहीं सहनी पहेंगी। (अच्यान ८९)

# अन्य-प्रचेदरी-प्रत

मुमिहिस्ने पूरम — संसारते उद्धार करनेवाले स्वामिन् ! •••• स्थ एवं सौमान्य प्रदान करनेवाला कोई इत बहावे :

मुहल्को 🚃 नहीं ।' एतः धमदलेक्टर अरके विकासको

चनवान् **धीकृष्यने कहा**—महाराज ! ऋरिको हेश देवेच्यते बहुत-मे वर्षोके करनेसे **व्या**टसभ ? अकेटी

अनुस्त्रवोदशी ही 🖿 रोकेका 🚃 📑 समस्त महस्त्रेची वृद्धि करनेवारी है। आप इसकी विधि सुने। पहले 🚃 पगतान् शंकरने कामदेवको दन्य 🖘 📰 तम 🔤 🔤 अनुषेत्र ही समके शरीरमें निकास करने रूप । कापदेवने इस व्रथमें 🔤 था, इसीसे इसका 🚥 अन्तु-पहा । 🚃 इतमें पार्गतीर्थ प्रसक्ते 📆 प्रवेदशीको नदी, 🚃 आदिने कान कर, विवेतिहर हो, पुण, धप, दीप, नैकेस और कालोदान फलोसे भगवान् जंकरूट 'शशिकोक्स' आपसे एकन करे और निस्मतीहरू अधनीसे हाता बरे । राजिको सब-प्राप्तन 🔤 से 🚃 । 🎆 वर्ता व्यवस्थिक समान ही सुन्दर हो जाता 🛮 और दश अधानेश-पत्रोका ४०० प्राप्त करता है। इसी प्रकार 🔤 प्राप्तके गुरू 🚟 प्रकेटसीने भगवान् प्रोकास्य 'मेरीका' 🚟 पुरुत् 📰 कन्द्रनकः प्राप्तन करे हो इस्टेरने चन्द्रको 🚃 गन्द हो 🔤 🛙 और 🔤 राजसूय-पञ्चन फल तत करता है। याथ 🚟 🚃 🚃 त्रयोदद्वीको चगवान् इंध्यत्कः 'स्केकर' जन्मे यूका 🚃 मेतीका पूर्व भक्षण 🔣 से उत्तर सैधान्य प्रक्र 🚥 है। 🔣 🚃 फल्पुनमें 'हेरेशर' नामसे पूचन कर 🚟 🖼 स्नान बारनेसे अतुरु सीन्दर्य ग्राप्त 🔚 🛊 । केवले 'स्कृष्यक' 🚟 पूजन काने और कर्यूर-प्राचन करनेने वर्ती कन्नके कुल्य कनेकर हो 🚃 है और महान् सीचान्य जत करक है। बैरक्करें 'महरकप' मध्यमे पूजनं 🚃 🚃 (अन्वक्तः) स्र प्रदूष करे, इससे उत्तम कुरूपरे 🔤 होती 🛮 और 🔤 सम स्वयः सकल हो बार्त 🛘 तथा 🦏 सहस्र मोद्यानका परू कर कर प्राप्तलेकमें निवास करता है। ज्येष्ठमें 'प्रयुक्त' नमसे 🌉 🔙 और रावेगका प्राचन करे, इससे राज्य स्थान, 🔚 🚃 और

सर्व सुव-सन्दर्र 🖿 होती 🛮 तथा 📰 एक सी 🚃 क्षावेद-क्ष्मेक करू बार 📖 है। अवसूने 'क्यापती' 🚃 🚃 कर शिलोदक्का 🚃 करे । इससे 🚃 रूप प्राप्त 🚾 🖟 तथा 📟 सी वर्षतक सुन्धे 📟 व्यक्तीत 🚃 है। आवनमें व्यास्त्री नामसे पूजन कर तिलोका प्राप्तन करे, हतसे चैन्द्ररोक-काम करु का होता है। 🚃 मासमें ाविका नामसे पूजन कर अगरका 🚃 करे, इससे वह व्यक्तिहरू 🚃 पुरु बनता है और युग-पीत्र, धन आदि 📷 वट बहुद दिव **व्यास्त्र क्षा विका**लोकों · । अन्ति व असमे 'तिदश्राविषयि' नामसे पूजन प्रकार करे हो अही बतन रूप, सीधाय, 🚃 और 🛗 निष्यदासका फल 📖 करता है। 🔤 (देनेक् चायरे पुरुष 🖿 देवन (दीना) 🚥 प्राप्तन करे 🕅 इसी अपने पहलूबलसे समस्त संसारका भागी the state of the s प्रश्न वसम् । प्राप्ति कर् करने पाहिने । चित्र व्याप्त स्थापित कर 🔤 उत्पर तालपात उसके क्ष्मर 📖 स्थापित कर श्रेत 📟 🚃 📶 । गांधा, पूचा, धूप, दीप, नैवेध आदिसे इसका पूर्वात कर 🔝 🚃 ब्राह्मणभी 🚃 कर दे। स्थान ही प्रवासिको स्थासक मी, काला और पंचायतिक दक्षिणा 🔣 चाहित्रे । इस 🚥 जो इस अनवूत्रयोदती-स्थापी करता 🖁

न्नस्करून पारपी-त्रत' एवं रच्चा-(कर्ली-) ■

राजा **बुधिहिरने पूजा** — मगकर् । तेह किथे कश्यूर्ण और सरोक्योंने किस **मान्य** कार्यः कार्यः कार्यः अस्तो है ? इसे आप कसमें ।

भगवान् श्रीकृष्य बोले—महारवः ! सहस्य महके सहस्री चतुर्दशीको क्याली, कुर्व, मुम्बरियी तथा

बड़े-बड़े जरभारायों आदिके बाद पवित्र होकर भगवान् क्रम्बदेवको अर्थ्य प्रदान करना चाहिये। वर्ताको चाहिये 🔣 सहस्रको सटक् चाकर करक, पुरु, बाद्या दीव, चन्दन, महावर,

और प्रत-परन्यके 🚃 महान् इत्सव करता है 📰

एक्य, स्थान । व्यापा सीभाग्य प्राप्त करता

(अध्याम ९०)

📗 🔤 अन्तमे क्रिक्टोको 🎹 🚥 है ।

सहस्रान्य, जिस्से अधिके स्पर्शसे प्रका हुआ अत्र, तिरू,

१-पाली प्राप्त प्रदिश है, जा कोसीने काथ जो निराम । इसका मार्ग कृप, काल जाते जानकारोची एसके दिने को बेरी है। उसीपर बैठकर विरादों इस प्रदानों सम्बद्ध काली है। समाज स्था साम का साम साम साम साम की बैठकर सामा प्रतिके।

(कारार्थ १२ १७)

सूर्यारी व्याप व्यापका प्रकारमञ्जूषा स्वर्णात्मा स्व जल्महाक्की विविध्वेक पूजा को और उन्हें अर्थ्य प्रदान कर इस्र अकार 📆 आर्थना करे—

eteaner नमञ्जूष अवानको नवलोऽस् रहानाथको काः॥ 📟 📰 ना 🖃 रोगीनवे निवस्त्रं ना मुखेळाडू मे ।

करने व्यास्त्र स्थान कर क

\$3 (9-6)

imm: वीचेंके साथी कानदेव ! आएको अगस्तर है। सभी जल एवं जलमे उरका रस-इल्लॉक 🚃 धरणदेख ! आपको नमस्त्रम है। 🔣 प्रारंखे पर्यान, पूर्वन्य

📟 विरसक्त<sup>र</sup> मादि 💹 मुख्यमें न हो । 🌃 🚾 📖 करणदेव । 📖 मेरे लिये सदा प्रसन्न एवं करदावार को रहें ।'

अरोको पाहिने 🌃 इस दिन किन 🚟 पहे 🚃 भोजन अर्थात् फल ब्राह्मी फोजन करे। इस ब्राह्मी से पाली-मतको करता है, यह तरभूक सभी वर्षोहें भूका हो जाता है। आनु, पन्न और सीवान्य 🚃 🚃 🖥 वन्य सनुबन्धेः परनम् पारि उसके नाम 🔤 🚃 होता ।

धरामान् श्रीकृष्याने पुनः सङ्गः—एकन् । अत्र 📗 बद्धाजीको सभागे देवस्थिक द्वारा पूर्व व्यक्तिर देवराम्ब्रीकोस्त रम्बा-जनक वर्णन 📾 रहा 🛊 । यह 🗏 प्रकार सुर्ह चतुर्दशीको 👭 🐯 🛊 । सम्ब देवताओ, गन्धनी सम्ब अप्सराओंने भी इस वराधर अनुहान कर कदली-वृक्तको सहर

अर्थ्य प्रदान किया था। 🚟 पाहिचे 📰 इस पहर्दश्रीको

का विकास पर, अंबुरित अजी, सहवान्य, दीय, चन्द्रन, 🎹 दुर्वा, अक्षर, बक्र, पहला, व्यवस्त्, इताववी सम रुमंत 📰 उपनारोसे कदली-कुशका पुजनार उसे निवारितिका प्रकारे कार्य प्रदान करे--

विकास वर्ष पान्युरस्पूर्णः प्रामूली पहान्युर्गतिन । क्रारीयारेण्यायाच्यां केंद्री 💹 प्रयोज्ञा ने 🗈

'कदली देनि ! 🚃 अपने प्रतेसे चपुके न्यायसे ज्ञान 🤜 📟 संबद्ध करती हुई शची अध्यनकोंको देवी है। अप मेरे प्रतियों 🚃 त्याच्या आरोग्य प्रदान करनेकी मुख क्षेत्र करूक करूक से वि

इसके अन्यक्त साथं चके हुए कहा आदिका घोणन प्रकृत करे । को 🔣 पुरुष अध्यक्ष 🜃 महिन्दे इस महत्त्वे करती है, उसके बेजने एकंट, एरेडा, कम्बा, परियो, क्यांपवारेणी, कुलाह, कुर्ग्न, हुन और चीतने मेरोनिन चोई क्या नहीं 🚥 क्षेत्रे । इस बदको करनेपर करी सीव्यन्य, पुत्र-पीत्र, का, अवस्था तक कोर्स आदि आह कर भी वर्षपर्यंत अपने चरिके साथ अवन्यपूर्वक रहती है। इस रम्थ-मतको पापतीने 🚃 🔛 भा : 쨰 जनार 🔤 बेरलसमें, इन्हार्यने नक्शकने, लक्की बेल्हीको, छडीने रविमाधाली, अयोज्याने, स्टब्स्ट्रान अव्ययक्तरर और धानुमरीने नागपुरमें इस स्तानो वित्या वा १

(अध्यय ११-९२)

### आहेवी दिल्लाहर्द्द्धी-इसके 🖩

पुषिष्ठिरने पुष्ठर—भगवन् ! अधीन करतमे 🚃 अभिदेव अदृश्य हो गर्वे, उस 🚃 🔤 🔤 किया और कैसे अफ्रिने 📰 🚥 सक्य 🐅 फिन्मु 🕻 इसे

🚃 बताये ।

धराजान् श्रीकृष्णने अञ्चा—महत्त्व ! 🚃 🚃 उत्तर्थमृति और अङ्गिरामुनिका किवामे और तमने परसर

# 📑 **महर्षि** अक्रिसका आरक्षान

प्रकार विकासी पहल पायाद हुआ। इसका निश्चय कालेके किने दोने बहरलेक गर्ने और उन्होंने ब्रह्मचीको सार कुलन प्रकार । मुख्या 📖 पहर 🍽 पुरा दोनी जाकर सभी देवताओं और लोकपारोंको यहाँ बुटन रहतो, तब समीके समझ इसका निर्मय किया जायगा (" प्रदानीक यह बचन सुनकर दोनो ककर सनी देवता, 🎹, गन्मर्व, विक्रम, मध्र, राह्मस,

१-व्यर अस्ति पुरस्य 📖 विषय 📖 है, उसे 📖 🛗 है।

२- परहरीके अवतये सर्वदरीकाओ दुर्वाचे "विकेक्ष्येत क कुरावरेकद् व्याप विकासकत् । जनसूर्वर"-यो ही कारण करते पुर कार्यक की गये है ।

दैत्य, दानव आदिको बुला त्वचे। किंत् मणवान् सूर्व नहीं आये। बहुतजीके पुनः कहनेपर उत्तथ्यपुनि सूर्यन्तगुरावके समीय जावत बोले---'भगवन् ! अध्य औन्न ही हमारे सहक ब्रहालोक चले।' भगवान् सुर्यने ब्रह्म--'मूने ! हमारे चले जानेफ जगतमे अन्यकार का कारण, इसकिये हमात बहुना किस प्रकार हो सकता है, हम नहीं चल सकेने ।' वह शुकार उतन्यमुनि बहाँसे चले आये और अध्यक्षीको सम वृत्तन्य सुन दिया। 📰 प्रकृतका अक्रिसपुनिसे सूर्यपानकाले क्रानेक रिन्मे क्षांता अक्रियपुरि जद्माजीकी हुएला प्रकार सुर्वकारकाले समीव गये और उनसे म्हालोक चलनेको सहा । सूर्वकारकारे वहीं बक्त इनको 🖫 दिया। 🚾 अहिएने कहा-- 'प्रयो ! अप महालेक जाये, में 📖 स्थानस वहाँ क्यार प्रसात कर्मणा।' 📺 सुनकर सूर्यनगणना 🕍 🚃 📹 वसे यये और अमृत्य प्रमुख रेखरे शुने लगे। इक्त प्रमुखन सुपी अञ्चलको पुरत—'सहस् ! अवने विस्तितिको 🔛 पर्धा मुख्यमा है ?" स्वानीने कहा— देव ! अहर होता ही अपने स्थानक वार्ष, पहाँ तो अञ्चलकुन सन्दर्भ सहस्थाओ दाय कर डालेंगे। देखिये उनके तामने सभी लोग दाय हो हो है। जनतन में सम कुछ भरम न कर हाते उससे पूर्व है अपन प्रतिदित के नामै।' यह भूतते ही सूर्यप्रकान पुनः 📰 मिदा किया। 🎆 पुनः देवताओं के भवीप असे। देवताओंने ऑक्स्पुनिको स्तुति की और कहा—'पणकर् ! अधिको देवे, कीविये।' देवताओंका ऐसा क्या सुनकर 📖 अक्रीय मिक्यमें देवकार्यदिको सन्धाः काले छने । का 📆 🚾 आपे तो उन्होंने देशा कि अद्विरायमि अप्रि बनवार किछ है। (सपर वे बोर्ल-'मूने ! आप मेरा स्थान क्रोड़ दें । मैं उक्कारी

शुप्त नामको स्वीसे ज्येष्ठ एवं प्रिय पुत्रके रूपमे उत्पन्न होरीज्य और तब मेरा कम होया बृहस्की । आयके और भी बहुत-हे पुत्र-पीत्र होंगे ( 🖏 🖿 🚃 🛗 📑 महर्षि अक्ट्रियने अधिका स्थान संद दिया।

राजन् ! अस्टिकको चतुर्दरहै तिचिको ही हाला स्वान बाइ हुआ बाद इसरियों बाद सिधि अधिकों असि प्रिय है और अक्षेपी बहुर्दशी तथा रेडरे बहुर्दशीके नामसे प्रसिद्ध है। क्रांची देवता और पूर्मिपर मान्यता, मनु, ततुष आदि बढ़े-बढ़े राजकोने इस विकिये पान है। जो पूरव युद्धमें मारे आर्थ, सर्व आदिके काटनेसे मरे हो और जिसने आजवात किया हो, उनका इस अपूर्वश्री क्रांक्न प्राद्ध करना चाहिये, जिससे ने सर्व्यान्त्रे प्राप्त हो जाने । इस रिन्थिके बरावा विचान इस प्रकार 🕯—चतुर्दश्रीको 🚃 🔚 और गभ, पूर्ण, भूप, शीप, अविदर्भ व्यक्ति औरस्तावित्यस्य पूजन करे, राजिये कल्ला को । राधिने पहारककर प्राप्तन कर पूर्विपर ही शयन करे। तैल-कारमे पंक्रित एकावाक (स्त्रीय)का भोजन करे। ज्यानि तम-मनोद्धार पाल तिलोके १०८ आहरियाँ प्रदान की। दुसरे दिन जनः साम कर प्रवास्ताने जिन्नीकी साम करकर चरित्रकंक उनका पुत्रन 🔣 और पूर्वेक पैतिसे इम्पनकर उनको अर्थन भरे : स्थि अरती कर सम्बन्धको चेंकर करने । उनको एकिया दे और पीन हो सर्थ यी मीअन करे : इस प्रकार एक वर्ष बात कर सुवर्णकी जिल्लेकन भगवान् इंकरको प्रतिम धनाये। अहिमानो परिके स्थापर स्थितकर 🛡 का व्यक्ति क्वान्यत्वा कर तालकामें स्थापित करे। तदनका गन्य, बेत एन, भूग, दीप, नैवेच आदिसे उसका पुनन कर अञ्चलको दे है । को एक वर्षतक इस जतको करता है, का राज्यी अवयु प्राप्त कर अन्तमें तीर्थमें प्राप्त परिस्थान कर मानविका देवताओंके साथ विद्यार भारता है। यहाँ महुत धारत्यक सहकर कह पुरुषेये आकर ऐपार्थ-सम्पन्न भार्यिक क्या होता 🖣 । पूत्र-चौत्रोसे समन्त्रित होता है और विश्वसालतक आर्नान्टत रहता है तथा अपने अभीह मनोरधीको प्राप्त करता <sup>81</sup>। (सम्बद्ध ९३)



#### अनन्तवतुर्दशी-व्रत-विधान

भगवान् श्रीकृष्णने सद्धा--राजन् ! सम्पूर्ण स्थानस्य, करपापकारक तथा सन्य सम्बद्धाः पूर्ण करनेवास्त्र अनलकर्तुर्दशी नमक एक त्रत है, जिसे महत्वद्धाः सारके तृह पश्चकी वर्षुर्दशीको सम्बन्ध किया आता है।

युभिष्ठिश्ने पूका—पगवन्।आपने ﷺ अनल अप रित्या है, क्या में अनल सेवनग है या कोई जन्म नाम है या परमारक ∰ या कहा है ? अनल सेवा किसावी है ? इसे आप असकायें।

भगवान् सीमुख्या केले — रावन् ! व्यास 🛗 है नाम है। करण, भाषा, मुहुर्ग, दिन, पवा, मास, मानु, अधन, संवत्सर, सुग रावा करण आदि करण-विष्यागीक कराने में 🗒 अवस्थित है। संसारका पार जिल्ही तथा द्वानकेक विश्वास करनेके रित्ये वसुदेवके कुरुवं में में उत्पन्न हुआ है। वर्ष ! आए मुझे में विष्णु, विष्णु, घर, दिख, सहस, भारतार, सेंग, सर्वकाची ईवार सम्बद्धिये और अन्त्रक भी में ही है। 🔜 सामको विश्वास उत्पन्न करनेके रित्ये हेना कहा है।

मुखितिको पुषः भूका—पण्यम् । मुक्ते अस्य अनवा-सर्वत मासस्य और विविध्यो तथा इसे विद्याने व्यक्ति विश्वा Ⅲ और इस सरका क्या पूरुव है, इसे कालाये ।

भगवान् श्रीष्ट्रकाने बद्धा — मुध्यितः । इस सम्बन्धे एक प्राचीन आक्ष्मान है, इसे आप सुने । क्रानुत्रमे विश्वानकेत्री सुमत्तु नामके एक ब्राह्मण थे । इन्यान अर्थि पृत्तुकी करण दीशासे वेदोक्त-विधिसे विश्वाह हुआ था । व्या सम्ब हुआ स्थान व्या श्रीता स्थान एक कर्मण उत्तम हुई, विस्तान कर श्रीता व्या गया । कुछ क्ष्मण श्रद इसकी महा दीवाला करसे देशक से गया और उस परिक्रताको त्यांत्रोक प्रष्ट हुआ । सुमत्तुने पूनः एक कर्मश्रा नामकी बन्धाने विश्वाह कर तिल्या । श्रीत कर्मश्रे प्रता हुई दीवाला देइसी तथा साम आदिमें प्रतान कर्मश्रे स्थान हिन्द स्थान हिन्द स्थान स्थान हुई दीवाला देइसी तथा साम आदिमें प्रतानिक स्थान हुई दीवाला देइसी तथा साम आदिमें प्रतानिक स्थान करती रहती । सुमत्त्रुकी श्रीत्वके विश्वाहकी विश्वाहकी विश्वाहकी स्थान होने रहती । उन्होंने शीलावन विश्वाह कर्मिन्वमृत्रिक साथ कर दिया । विश्वाहके अन्तर स्थान विश्वाहकी साथ कर दिया ।

दम्बदर्क लिये ब्राह्मक स्पूर्ण कुळ दहेव हत्य देना व्यक्ति।' यह सुरकर कर्कश्च कुळ हो उठी और उसने परमें ब्राह्मक उस्काद कारण लगा मोजनसे बचे हुए कुळ पदार्चिको पानेक्क रूपने प्रदान कर कहा—वहे काओ, पिर ब्राह्मक स्पूर्ण ब्राह्म स्वयं

क्यीदन्य 📕 जीत्सको 🚃 लेकर बैलगाडीसे पीर-पीर

साल वर पहें । प्रेयहरका समय ¶ गया । वे एक नदीके किसी चतुर्वतिक दिन कि सुम क्योंको पहने हुए कुछ किसी चतुर्वतिक दिन विकार्यक जनाईनकी व्यास्त्र पूछा— 'देकियो । आक्टोन वर्षा किसाक पूछा वर रही है, इस प्रतका क्या क्या है ।' इसकर में किसी बोली—'यह जत अनल-कहुईसी क्याने प्रसिद्ध है ।' होला बोली—'ये भी इस बलको कर्मणी, इस बलका क्या क्यान है, किस देवनाकी इसमें पूछा की करते है और दानमें क्या दिया जाता है, इसे आवलोग कर्मणी ' इसकर व्यास्त्र क्या दिया जाता है, इसे आवलोग कर्मणी ' इसकर व्यास्त्र क्या दिया जाता है, इसे आवलोग

विश्वास विश्वास विश्वास पान, पुन, पुन, दीप आदि व्यक्षित हुए करे कि कथा सुने। उन्हें नैवेच अर्थित करे। नैवेदका आवा पान करनेके लिये एके। पानवान अनक्षके स्वयने चौदह स्वीवपुक्ष एक दीएक (बीच) स्थापित कर उसे पुनुकारिसे चाँचत करे। पानवान्त्रों यह दोरक निवेदित करके व्यक्ति क्रायमें और को क्राये हायमें बीच ले। दोरक-क्ष्यान्त्रा पान इस क्यार है—

अनगर्ससारम्बासमुद्रे नमान् सममुद्धः प्रापृदेशः। अनगरम्ये विनिजेतिसम्बद्धः द्वानगरम्बद्धाः नामे नपसे ॥ (जनगर्मः ९४।३३)

है सामुदेश ! अनया संसाधकथी महासमुद्रमें मैं दूश रही हूं, आप मेरा उद्धार करें, साथ ही अपने अनन्तरसम्पर्धे मुद्रो भी अपने विनिमुक्त कर हैं। है सामानामा ! आपनो मेरा सार-भर प्रकास है।'

चेरक बॉक्नोके अनसर नैवेच प्रहण करना चाहिये। अन्तर्वे विकासनी अनसदेव मगवान् नारायकका ध्यान कर

अपने घर जाय । सीले ! हमने इस अनन्तवतका वर्णन किया । तदनकर प्रीकाने भी 🚃 इस काका अनुकार विका प्रथेय निवेदित कर 📟 📖 परा अञ्चलको अञ्चल कर 🚃 रहमं 🚃 🚾 और दोरक भी भीषा। उसी समय प्रीतनके पति काँकिन्य भी वर्ता आये । वित्र वे 💹 वैतनकाँके अपने परकी ओर बल पड़े : यर पहुँचते 🖫 अतके ब्रह्मको उनका भर प्रमुर भा-भाग एवं गोधनसे सम्बन्ध हो गण । यह शीरम 🔳 मणि-भुक्त तमा स्वयंक्तिके इसी और प्राप्त सुरवेभित को गयी। 📰 साधात् स्तविक्येक समान दिवासाची देने लगी। 📰 समय 📰 📰 औरत्रके झख्में 🛗 अनन्त-दोरकको उसके धीरने हुन्द्र हो लेड दिया। उस विपर्रत कर्मविपाधने उनकी सही राक्ष्ये यह हो गयी, गोधन आदि चोरीने 🚃 किया । सभी कुछ नड हो गया । 🔤 सेने शया। भगमन्दे विस्कार करनेसे उनके करने करावा 🐯 गांवा। तुःची होकर क्षेत्रियन एक गांक दक्षने चले गांवे 🚟 विकार काने लगे कि मुझे क्या अस्ताधारकार्क दर्जनका सीमान्य प्राप्त होगा। रुव्हेंनि पुनः 📰 रहकर 📟 महाचर्मपूर्वक परमान् अनस्तवा वट एवं 🚟 नामेक वन किया और उनके दर्शनीको लालकारी विद्वार होका वे कुर दूसरे 📟 भनमें गये। यहाँ 🚾 एक फले-कुछे आस-वृक्तने देका और उससे पूछा 🛅 🖚 तूमने 🚃 भगवानुको देखा 🛮 ? तम उसने बद्धा---'बाह्मल 📖 ! वै अनलको नहीं कानक।' इस 🚃 पूर्वा आदिसे अन्छ-भगवान्के विक्यमें पृष्ठते-पृष्ठते पास 🔤 ह्यं एक सकता गीको देखा। क्यीकेन्यने गीसे पुछा---'केनुके ! क्या सुनने अनक्तमे देख है ?' गीने कहा—'विमो ! मैं अनक्तमे नहीं जानती ।' इसके पश्चात् कॉस्टिन्य 🔤 आगे कहे । वहाँ उन्होंन देशा कि एक क्वभ पासपर बैठा है। पृक्रनेपर क्वमने 📰 बताया 📰 🗗 अनन्तको नहीं देखा है। 📰 आगे आनेपर क्रीडिन्यको हो राज्यीय तास्त्रव 🚃 महे। ब्रॉडिन्को उनसे भी अनुसामानानुके विषयमे पूजा, किंतु उन्होंने भी अनिवास प्रकट की। 🌃 प्रवास कीहिन्यने अनुसके सिक्को गर्दम तथा हाथीसे पूछा, उन्होंने भी नकारत्मक उसर दिया। स्तपर वे **कींग्रे**न्य अल्पन निराश हो पृष्टीपर गिर पहे । उसी

समय भौकिन्सुनिके सामने कृषा करके मगवान् अनल वृद्ध भारतके रूपमें प्रकट हो एवं और पुनः उन्हें अपने दिख कर्मुम् विकासका दर्शन कराया । भगवान्शन दर्शनकर भौकिन अस्पन प्रसान हो गये और उनकी प्रार्थना करने लगे असने उत्पन्नकेंद्र लिये साम माँगने लगे——

पाने प्राप्त प्रमुखाँ।
पादि को पुष्परिकाश सर्वकारों भग ।।
वे प्राप्त स्था व्याप्त स्था ।।
(आहर्स १४ । ६०-६१)

क्ष्मीक्ष्यने व्यवस्तानुने पूनः पूजन—धगवन्। धोर कार्ये पुत्रे को अस्थवृत्तः, कृष्यः, गी, पूज्यरिकी, गर्दभ तथा इस्के सिलं, में व्यवस्थितः के शब्द स्वास्त्र इसे कालाये। व्यवसम् कीरो--- विश्वदेव । वह आसम्बर्धः पूर्वजन्मी

एक नेदर विद्वान सद्धान था, किल् उसे अपनी विद्यालय बहुत का उसने शिल्केकं क्रिक-दान नहीं क्रिका, इसलिये वह कुथ-बोनियरे प्राप्त कुछ । किस भीको सुमने देखा, वह उपजाक प्रकृतकृतं वसुन्तर यो, यह पूर्वि 🔛 थो, 🚃 🖦 मी समी : कृषण सत्य 📖 आश्रय 🚃 धर्मसङ्ख्य 🟥 था । 🗄 पुष्पदिशिष्यं वर्ग और अध्यवेश्वे व्यवस्था करनेकार्य से कावनियाँ की। 🛮 🖂 🚾 थीं, 🎆 वर्ष-अवस्थि विक्रिये हिन्से परस्य अनुधित विवाद होता रहत्व था। उन्होंने किसी अध्यक्ष, अतिथि अध्यक्ष पूर्वको दान 👊 आँ किया । इसी कारण के दोनों बहिने कुकरियों हो गयी, नहीं की त्यारेकि रूपमें आपसमें उनमें संपर्व होता एइसा है। 📖 📖 तुमने देखा, यह पूर्वजन्ममें महान् ओपी व्यक्ति 👊 और हाजी पूर्वजन्ममें कर्मदुक्क या 🖫 वित्र ! 🔣 तुन्हें स्वरी करें कारण हीं। अब तुम अपने घर ककर अनल-वत करे, 🗪 मैं कुने उतम नक्ष्मक पद प्रदान करूँ गा। तुम सार्थ संसारमें पुत्र-पीत्रों एवं सुक्तको प्रश्नकर अन्तमें मोक प्राप्त करेने। ऐसा वर देकर भगवान् अन्तर्धान हो गये।

विकेत्यने भी भर अवसर पश्चिपूर्वक अनसावताका पासन और अपनी पत्नी पश्चिमी साथ के धर्मास्त साम सुक महत्त्वर अपनी सामि पुनर्वसु भागक नक्षत्रके कपमें प्रतिष्ठित हुए। में समाजन्ते सक्यमें किस कहा है। (अक्वाय ९४)

# शवभिकासम-कथा एवं इत-विधि

राजा बुधिष्ठिरने पूक्क-भगमन्। संसारमे 📟 नामकी जिन देखियोंका नाम सुना 📖 है, वे कौन हैं और उनकर 🚃 धर्म है तथा वे 🚃 करते हैं? इसे 🚃

समा करे।

भगवान श्रीकृष्णने व्यक्त--प्रश्वनकेत ! व्यक्ति इत क्रवणी देवियोकी रचना की है। संस्तरमें मानन जो पूजा भी पूथ अथवा अञ्चय कर्म करता है, वे सावनी देवियाँ उस विश्वमध्ये स्थाना प्रवेश ही अक्षाओं चानक नाइसी हैं, इस्वेरिकी वे ब्रावणी कही गयी हैं। संसारके प्राणियोका नियमन करनेके कारण ये पूज्य है। ये दुरसे ही जान-सून-देख लेखी है। कोई भी ऐसा कर्म नहीं है जो इनसे अबुहर हो। इनमें ऐसी विरुक्षण प्रतिष्ठ है जो अर्थ, हेनु व्यक्ति अगन्य है। विश्व क्कार देवता, किहाबर, सिद्ध, गम्बर्व, विम्यूका आदि पूजा एवं प्रचारत है, उसी प्रकार ने शावनों देनियाँ भी कर्तनंत्र क्वे पुरुषमधी हैं। बी-पुरुषेको इनकी प्रमानको दिनो क्रव करक चाहिये तथा जल, कदन, पुन्न, क्य, पद्मक अवदिसे इनकी पुत्रा करने चाहिये और मिन्नो तथा पुरुषेको योजन करावर सतन्त्रे परणा करनी प्लाहेये।

इनका ज़र न करनेने मृश्यू-बद्ध होता है और यन-बतन सहन करनी पहली है। एकर् | इस विकास आवको एक

अवस्थान सुनाता 🛊— प्राचीन नवराने नकुत नामके एक राज्य थे। उनकी राजिका 📖 'जमश्री' था । 🏬 अरक्त सुन्दर, शीलक्ती एवं परिवास

थी। एक बार गहामें स्थान कार्यक बाद प्राप्त व्यवस्था के समीपनमीं आवयमें गयी, नहीं उसने देख कि कहा जरूकते

मुनियमियोको विविध प्रकारका योजन कर स्त्री है। जनसीने उन्हें प्रणाम कर पूछा—'भगवति ! अस्य यह ब्हेन-सा अत कर रही है।" अध्यक्षी बोली---"देवि। मैं प्रवन्धिकावद कर

रही है। इस करको मुझे महर्षि वसिष्ठने 🚃 है। 🚃 🚃 गुप्त और ब्रह्मवियोका सर्वका 🛮 तथा 📾 🕬 वेह एवं उत्तम पति प्रदान कलेकाला है । तुम धाई शहरों, मै

अतिष्य करेगी।' और उन्तेंने वैसा ही विम्ता।

क्ट्रनन्तर जमनी अपने नगरमें चली अपी। कुछ 🚥 🚃 🕶 🚃 🌃 🚃 अरूपरीके पोजनको पुरु गयी। सनद

आनेपर कम यह महासरी ....... हुई तो उसके गरेमी

कर्वतहर 🔚 रुगी, ४०७ अवध्द 🖥 गया, मुखसे फेन एवं त्कर टक्कने तन्त्र । इस 🚃 दक्तन कह पीमते हुए उसे

भारत हम ज्यान हो गये : उसका मृत्य देवानेसे मन १९गता

मा ६ सोस्क्रवे दिन अरूथती वयसीके घर आयीं और उन्हेंने वैसी कहानद विवक्तियें उसे देखा । तथ अवस्थातिन राजा नतुवसे स्वापनारको शिक्यों वतराया। यका नहुपने भी **पन** 

अवन्यतीके निर्देशनुसार जनशोके निर्मित तत्कारू सर्वाचिका-अक्का आयोजन किया त्यार प्रतके प्रथमको जयसीने सुस-पूर्वक पुरस्का करण विश्व और इंपरनेशको आह किया।

क्षीकृष्यने युनः यदा—स्वर्! व्यक्तिकाक हाएश अस्तेको चतुर्वको अध्यक अष्टमी तिथियोने व्यक्तिपूर्वक यह जत करना चाहिये। प्रवश्यक नदी आदिमे

कारकर प्रवेत हो, बेट करह ब्राह्मण-उम्मतियों अच्छा अपने नोप्रमे ३८का अस्य दन्यतियोको ब्रह्मकर गन्ध, पूच, पेचना, क्षा, अर्थकार, सिट्ट आदिसे उनका चरितपूर्वक पुत्रन करे।

सुबर, सुबील, अध्वित, कलसे को हर, सुत्रसे आवेडित तथा पुष्पकारः आदिने विभूकित सर्गपुक्त वारह वर्षनिकी (जलपूर्व करन्त्र) को जाहानियोंके स्तमने पृथक्-पृथक् रहो ।

उनमेरी मध्यकी एक चर्चनी उठाकर अपने सिरफ रखे तथा अन्यानकोरो भारत्यकारक, कुमारावरका तथा वृद्धावरवाचे गये क्योंके धनका, सुकर्शक भृत्यु-प्राप्ति तथा

संस्का-सागरसे का होने और मगकनके परमण्डको पानेके रिल्ने प्रार्थना करे । वे अनुस्मियाँ भी बहें — ऐसा ही हो ।' बहुएनोसे पापके विभाशके रित्ये प्रार्थमा करे। बहुएन उस 🚃 उसके 📟 उत्तर 🛭 और उसे आशीर्वाद प्रदान

करें। का सर्थ विकास सहरू-पत्रियोको 🛚 दे। हे 📰 । इस प्रमस्य 🌉 📟 चलियूर्वक

करनेकला 🔤 केगोका रूपमोग 🚃 सुसपूर्वक मृत्युवर 🚥 करता 📗 उद्यम 📁 📰 करता है । (अध्याय ९५)

१-गतवपुरन, स्वाप्ता क्षा कि में मह नियम निरात है स्वाप्ता में मह निरात है। स्वाप्ता में विभाग कि महाने स्वाप्त

### नक एवं किवचतुर्दशी-अतकी

भगवान् श्रीकृष्य केले-महराम ! अन अस · विभाग सुनिये, जिसके करनेसे क्लूबर मुक्ति का कर लेख है। किसी 🔣 मासकी कुछ चतुर्दकीको अञ्चलको भोजन कराकर नतावा बाह्य करना चाहिये । प्रत्येक महाने दे अरुपियाँ और दो पतुर्दीदायाँ होती है। उस दिन प्रतिकृतिक तिकारीका पूजन करे और उनके प्राप्तमें तत्त्वर रहे : समय पुणीको 📖 बनावर उसीचे 🎟 को । 📟 🛲 🖷 उत्तर 🛡 नतः-भोजन् । इस्रतिने परम्या करण चाहिये। पूर्वक्रमें देवता, मध्यक्रमें मुनिगन, अन्यक्रमे प्रितर भीर सार्थकालमें गुरुक आदि भोजन करते है। इसलिये 🚟 🕶 नतः-भोजन करना चाहिये। नवसंत करनेकरः पुरुष 📰 कान, भारत हविष्याच-मोजन, प्रायाजनस मिल-हमन और पुनिवासन करे। इस प्रकार एक क्यांक सह काल अन्तमे पुतपूर्ण करमाने अपर पामान् लावक मुनिकासे बनी मनिका स्थापित करे। स्वयंत्रत गाँके प्रकारकारे प्रतिमानवे कान करावर फल, पुन्य, यव, श्रीर, दन्ति, दुर्वेहुर, 🔤 तथा चलक जलमे क्षेत्रकर अहात-अर्थ 📖 करे। धेनो पुरुनेको पुर्वापर रक्तकर पहाली सामा उद्यावर महादेवजीको अर्घ्य है। अन्तरह अनेक प्रकारके पहल-बेटक नैकेश निवेदित करे । एक ३६भ सकता मी और कृत्य बेदकेल माहरणको दक्षिणसमित दे। इस 📰 🚃 🚃 दिव्य 📆 बारण कर उत्तम विमानमें बैठकर 🌃 🖼 कहा 🕯 । वहाँ तीन सी कोटि वर्षपर्यता 🊃 प्रेगकर इस स्वरूप महान् रामा होता है। एक बार भी मो इस विधानने नाहता कर औसवादिकका पूजन करता है, जो अर्गलोकको प्राप्त

भगवान् श्रीकृष्याने पुनः बह्य-स्हाराज ! अव 🖣 तीनों लोकोपे प्रसिद्ध शिक्चतुर्दशीकी विधि बद्ध रहा है। यह माहेशकात दिव्यवतुर्देखे न्यमसे प्रसिद्ध <sup>हैरे</sup>। इस कर्मे

करता है।

**ार्थिक प्रश्ना एक में उपोदशीको एक बार मोयान को**र और चतुर्दश्लेको निराहर 🚃 पार्वतीसहित भगवान् प्रांकरकी गन्ध, कुम, कुम, दीन आदि उपचारिसे पुआ करे। सर्गाका कुरूप सम्बद्ध 📟 👊 कुछ करे। 🚃 वह कुरूप 🚃 स्थापिक करपूर्ण करपा कारणको प्रदान 🖿 दे 🚃 प्रकारके कथ्य क्यार्थ भी दे और कहे—'जीवता वेपवेद्योज्य स्कोचकः विकासकृत् (\* अनन्तर इत्तर्गमृत्य 🔣 मृतकः **बारान अन्य पुलिपर समय को । प्रतिसासकी 📖 पतुर्दपीको** नहीं कि करे कि कि कि प्राप्त के प्र के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप इस प्रकार कर्पन करे—

र्शकारण रणसूर्ण क्यूडी कार्करकः । प्राच्यात्व स्थापनि प्रतिवरमतः परम् () क्याकेश्च महादेव स्थानने स सतः परम्। कर: पश्चकी नाम नगरी सम्बद्धे मन:॥ क्वले परमाक्य १४: सोमार्जवारिये । क्ये भीका केवन सामां सर्व गा: ॥

(क्करणे ६७ । ६५—६७)

🚃 🚃 🔤 ग्रेमून, गोमव, दुन्ध, दक्षि, युत्त, कुरतेटक, प्राप्ता, विरुद, मधागू (मक्की कवि), कारल तथा वरते तिसमा जञ्जन करे और मन्दार, मालती, धतुर, सिदुक्तर, मारोक, मरिल्ला, कुम्मक, पाटल, सर्व-पुन, करण, रक्त एरं जेलकथल तथा कोर---इव 🚃 एकोसे क्रमकः 📰 भतुर्वेशियोमे उन्त्रमहेकरका पूजन करे। अनेक क्रमारके भोजन, क्या, अवभूकन, श्रीवाना उन्हरे देकर म्बदल्येको संयुष्ट कर नीले (कृष्ण) रंगका वृत्र छोड्डे और एक चै उक एक वृत्र सुकर्वका 📖 काके आह मोदिबॉमे कुक ा सम्बद्धाः **व्यक्ति ।** अल-कृष्ण, प्राति-कवल, युत्त, मान सामग्री चेद-मत-परायम, दान्तवित सम्बद्धिक बद्धानीको पदान 📰 दे। इस असको जो पुरुष भक्तिपूर्वक करता है, उसके माता-पिताके भी सभी पाप नष्ट

१-तम आहे 📟 पुर्भाव 🖥 धेकामाने रूपने वरिवर्ग को हुई है। यहते की, बैद, विद्यु, संबद्धी उन्हेंने 📾 शहित 🔛 📟 भेजन करते में और मुख्य लोग प्रापने लेकर भेजन 💴 थे। 🔛 📟 बढ़ते से 1 इसने 📖 📰 लक्षक 🔤 स्वीत्रमुख क्रम विकित सी ।

२- 📖 🚃 वर्गन गरहर 🔣 प्रान्तेने 🖩 🖘 🔛 है ।

🔳 जाते 🛮 और 📖 स्थ्ये हवार अध्योष-प्राच्या फ्रस्ट जात 🔛 विन्यूरोकादिये विद्यार 📖 हुउस अन्तमें शिवलीकको 🚃 🛮 तथा दीर्पाय, ऐकर्ग, आरोग्य, संजन एवं 🔤 प्राप्त करण है। आदि प्राप्त करता है। कहत दिनोंडक 📖 🚃

(अभाग १६-१७)

सर्वकललाग-चतुर्वतीतव अनवान् श्रीकृष्य केले—चलः ! 📟 अन इयरवे, विज्ञावरको, बृटकारपरिषय, महुआ, कारवेरस, अध गृहपटोलक—ये सोतन कर तकिके आपाति सर्वकररूवान-चतुर्वदक्षिणसम्ब न्यास्त्राः सुने । न्यः सन्पूर्ण कामकओंको पूर्व करनेवाला है। इस बतका निवम वार्गतीर्थ 📰 परनेका वरूपर्वतः प्रश्नाम 🛭 📰 आर्थात् इत परलेके रक्षणाः 🔤 संकरण करे । अस्मी पूर्णसार अमेराज एवं मासके शहर पश्चार्थ पहुदेशीको अध्या अन्य 🚟 🚃 🚃 तथः सर्ग, वैष्य 🔛 🚃 बनाये एवे इन अष्टपीको प्रहण 🚃 व्यक्ति। 🚃 दिन मार्डपोजी पायस-भोजन करावर 🚃 है। इस सहस्य अग्रन्य 🖦 वेदा, जन्म, ब्यांच ब्राह्मको पण्डानुसर् अर्थभर कोई 📖 फल-मूल तथा अरावद कारके कन्द 🚃 📰 प्रश्नेसर्गक दल 📼 देश सभी पूर्वन, दक्षिण थे बाह्यजनो भक्षण र करे। वर्गके अन्तमें चलुईती अभन्त अध्योके दिन सुरुर्गके 📰 💹 📉 🚃 📆 देकर मकार्तक अञ्चल-भोजन कराये। सर्व भी हैल-करवर्जित केवन करें। भीद सभी करतेको न त्वाग सके अध्य स्थापित कर उनका कुला 📰 । क्षेत्रेके सीराव कुल्याका और प्राप्त केंग्स, प्राप्त नाम, प्राप्त केंग्स, वर्गिन 🗎 एक 🛊 पाराका स्थान 🔚 और सुवर्ण आदिका बनकार शिक्षको अध्यक्तो दे । इन फलोमें जिल्ले परमाणु होते (तरहरू), समाग्रे, श्रीपाल, बद, अध्यक्ष, उन्हां चैत् 🖷 📖 🚃 🚃 इस जलके ब्रह्मेशास्त्र 📖 केला, केर 🖮 दार्गिय (अनाम)—ये 📖 🎟 📖 🚃 😅 के । 🚾 भी भी भी भी सर्वा औवला, ज्यम्न, कमलगञ्ज, करीदा, गृहरू, श्रीपल, अंसू, ( इस अंतर्के कंटनेक्क्षणेक्ट्रे किसी जनमें इहका विशेष्य दो बन्धेटा, केबोल, 🚃 📸 और, करील, कुटब स्था 🚃 🚃 💹 अनुमें 🖚 सामि निवास करता है। श्रामी—पे सोलट फल चोठीके 🚃 और करा, अगस्त् विकार, कार्यूर, स्थान, केटक, कटहरू, राजुन्त, कींपका, (अध्याप ९८)

## पौर्णवासी-इत-विचान एवं असवासाने साजु-सर्पणकी पहिमा

ध्याबान् ब्रीकृष्या बहुते है—एकन्। पूर्णन चनुरमुखी प्रिय साथ है। विस्ति इसी दिन चनुरम <sup>र</sup> सोटक करवरोंसे परिपूर्ण होते हैं । इसीरिवने यह पीर्णनसी कही करी है। इसी शिविको बाजना सामसे सुन जनक पुरुषो अहनत

पूर्व करनेवासी है। बन्हमने सर्व 💵 📰 📰

पूर्णिया-शिक्षिमे परिवर्षक विधिवस् मेरी पूजा करेगा, मैं प्रसम क्रेकर इसकी 🕮 कायराई पूर्व कर देंगा।' ब्राहिको चाहिये कि पूर्णियके दिन पालः नदी आदिमें स्थल कर देवता और क्या 🔛 । तदनतः वर 🚃 🚾 प्रवास वस्यो और उसमें नवाजेसहरू चन्द्रमध्ये 📖 कर 🔣 गन्ध,

🚃 केत चूच, चूप, दीष, मृतपक नैतेष और 🔣 🚃

१-मे शहरह व्यय---व्यवस्थान्त- १ । २०८ की अवस्थे नकरम्, नकरत्वसम्बद्धानन्त ५ । २ । ४, व्यवस्थान्त व 🚃 🚃 अस्ति अनुसर 🚃 प्रधान है—सम्बं, कार, 🖫 पून, साल, 🊃 (केनरी), 🚃 नेंट्रं, 🔤, पूनकी, सरीन (केरी पटर), रोग, अनुम्मी (अराहर) म 🚃 (उनले पहर), 🚃 पनवर, नटर, बैन्सू (सरले, स्त्री च डॉपुन) और मसून। अन्य भरते मसूर्यदर्श जगह अससी और नेकर 🚃 है।

२-पाम प्रवरमा अर्थ प्रमान 🔤 है, विन्दुओंके महीने 📟 📟 🔛

आदि उपकरोंसे चडायाका पूसन का उससे क्या-प्रार्थन की और सार्थकारू इस मन्त्रसे चडायाको अर्था प्रदान करे— सारायाक्याया विभी स्थिति स्थित नः कुछ ।

25140

#### 

राजा सुविद्याने सूक्त-भगवन्। विकास कीन-सिविजी आन-दान अवदिने अधिक पुण्याद है। उनका आप वर्णन करें।

धनवान् श्रीकृत्या केले — महत्त्वव ! वैज्ञान, 📖 और मार-एन तीन व्याप्त पूर्विकार्य साम-दाय व्याप्त क्रिये आति वह है। इन विधियोमें कान, यन स्थाप कानान करने चाहिने । इन सिचिनोमें सीचोंने सान करे और पानाप्रक्रि दान दे। वैद्यापरिको उज्जानित (विका) में, पुष्परामें और मानीको करागसी (गङ्गा)में सान चाहिये। इस दिन जो पितरोका 🔤 🚃 🐛 🚥 पाला । और विलयेक्ट 🚃 🐞 वैद्यास-पूर्णियाको अस, सुवर्ण और सक्तमधित करुपूर्ण कलक आहालको दान करनेसे उसी सर्वध्य प्रोक्क्यूक हो बात है। इस अतमें सुन्दर मचुर फेकनसे परिपूर्व का, ले, 🚎. हुँको तथा एक आदिका दान करना चाहिने । साथ-पूर्णिनाको देवता और वितरोका तर्पण कर सुवर्णसंदित दिस्त्याच, कम्बल, रुकि तस, कपास, रत साम कारणेको है। कार्तिक-पर्शिमको व्योत्सर्ग करे। भगवान् विष्कृतः नीरामन करें । श्राणी, भोड़ें, रच और मृत-चेनु आदि दक्त चेनुओका दन है।

| स्वाप्त व्यवस्था स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त सिम्बा स्वाप्त है। वर्ष स्वाप्त स्वाप

कैन्न, कोस्स, 🌉, कुम्पण 🛲 फलेक रान करे। 🕫

कुम 🚟 को कान, दान 🔤 🔛 करते, ने अन्यालसमें

हैन 🔐 शहर होते 🕩 🚃 धन देनेका तो पता 🛭

ही, परंतु भारत, पास्त्रो, पुत्रा 🚃 तथा दरिङ कथुओंको

तन देनेसे बद्ध पुच्च होता है। मित्र, कुलीन अपीतः,

कारित कार्यक कार्यक कार्यक व्यक्ति व्यक्ति कार्यक व्यक्ति विकास

दान देशेले 🚃 📹 होती है। सम्बन्। 🛅 और

स्थापनसीत अपनवन 🚃 अन वर्छ गये थे, उस समय

बरतको अपने विश्वालयं थे। 🚃 लेगॉन मात्र क्रीसल्याको

उनके 🚃 सर्वकित कर 📰 🖿 ब्रीएमके वनगपनमें

🚃 🛊 पूर्ण हेतु है। 🔣 🚃 🛮 नमिहालसे वापस आये

और उन्हें 🔤 महीं अत 💹 🗎 इन्होंने भाराको अनेक

प्रकारते सम्बद्धन और 🚃 पी 📶, 📰 मातको 🚟 प

हुना, किंतु जब परतने 🚃 🔣 'माँ ! पगवान् श्रीरामके

का-गमामें ब्रि मेरी 🚃 रहे हो ते देवताओंद्राय पुनित

तवा अलेक पुरुषेको 🚃 करनेवासी वैशास, वार्तिक तथा

पूर्वकार्य मेरे विना स्थानदानके ही 🚃 🖺 और

क्ट्रो निसं 🔤 कह हो ।' इस महान् रायवको सुनते ही माठाको

विश्वास हो गया और उन्होंने परतको अपने अञ्चले हे सिना तथा अनेक प्रकारसे आवास किया। महत्क्य ! इन हीनी तिथियोका सम्पूर्ण महत्वस्य बहैन वर्णन कर सकता है। मैंने संक्षेपमें बाह्य है। इन दोनों तिथिकोंको जल, अल, चल, सर्वचन, कव आदि दान करनेवाले पुरूष इन्द्रस्थेयको मध काले हैं। (अक्टाब १००)

#### बुगादि तिकियोकी विधि

राज्य युविद्विरने युक्त-नगरून्! अस्य छन तिथियोका वर्णन करें, जिनमें सस्य में किया गया कान, रान, जय जाइ, युक्तकर्म अस्य हो करते हैं और महान् धर्म तथा भूभ करत प्राप्त [[[]] हैं।

भगवान् श्रीकृष्ण केले—गाउव ! में
अल्पन उहरपरी वात व्या है, विसे व्यवक मेंने व्या
महीं व्या था। वैद्या व्या प्रकर्ण कृति क्रिक्त व्या
माने हुए प्रकर्ण न्या, बहुद व्या प्रकर्ण कृति व्या
प्रयोद्दी और सक्ति पूर्णिय — ये वार्ष प्रकर्ण कृति विश्व है।
अशीत् हुन तिविवों विवास सम्भ हुआ है। इन विश्व है।
अशीत् हुन तिविवों विवास सम्भ हुआ है। इन विश्व है।
वाति — वार्ष पुर्णिय प्रमा हुआ है। इन विश्व है।
वात् कृति वात् हुआ हुन क्रिया वात् पुर्ण क्रिय क्र

कृत्य विकास विद्यालया कर सहद और पृतवुक्त अनेक प्रकारके प्रकारते अञ्चल-धोजन कराये तथा दूध देनेकाली सुदर सुबुट सकरता प्रस्था भी बाह्यजोको द्यन करना चाहिये। बाह्य-पृत्यिकाको व्यापना बाह्यजोका पृत्रन कर सुवर्ण, का अनेक व्यापना व्यापना नकरीत-चेनुका द्यन करना चाहिये।

प्रमन् ! स्वाप्त करने स्वाप्त

(अञ्चल १०१)

#### साविती-जालका एवं जरा-विधि

राजा युनिश्चिरने श्रह—भगवन् ! ...... सारिती-तरके विधानका वर्णन करें।

मनवान् श्रीकृष्य बोले—स्वरंग । सारित्री नामनी एक एक्कानो कामें जिस क्रका वह इस किया था, कश्यामार्थ में उस प्रतक्त कर्नन कर यह है, उसे आप सुने। प्रतीन कालमें महरेश (पंचाव) में प्राच्याकार्थ एक थी, सरकादी, सुपाशील, क्रिक्ट्र करक क, उसे केई संतान न थी। इसलिये उसने प्रतास करक क, उसे केई संतान न थी। कुछ कालके अनकर क्रिक्ट प्रयासके क्राव्योकी सावित्रीने प्रसार हो एकको वह दिया कि 'ग्रावन्। सुन्हें (मेरे अंत्रसं) एक व्याप क्रमा होगी / हांगा करकर व्याप
 अन्तर्वत हो गर्थे और कुक व्याप क्रमाने हुए दिव्य

उसके बोध्व किसी श्रेष्ठ व्याप्त न देखकर पिता अवपनिने बाह्य—'पृति | तुम कदकनों तथा अन्यस्मेक साथ

जाकर 📹 ही अपने अनुरूप कोई 💷 हैंड ले ।' सर्वित्री भी विरायधे काल स्वीकार कर व्यवस्थित साव चल पदी। साल्य कारुने ही राजवियोक आसमो, समो क्षेत्री और तपोषनीमें भूगते 📰 तथा वृद्ध प्रश्निकोक्त अफिनन्दन करती हा वह पन्तियोसहित पुनः उत्पने जिलके पास त्येट आयो । सावित्रीने देखा कि राजसपाने देखर्ने नरद की हुए है । स्त्रविज्ञीने देवर्षि नरद् और विश्वको प्रणालकर अधना कृताक इस कवा बताय-'महाराज ! शास्त्रदेशमें शुक्रदेन कवके एक पर्यास्त्र राजा है। उनके सत्यवान् नायक 📖 की करन 📖 है।' लिस्सा 📟 सुनका 🌉 नगर 📟 लगे—'द्रबन् ! इसने बल्य-संध्यनक 🔤 🕬 🦷 किया। यदापि द्वापासेक्का एव सभी गुलोसे सम्बन्ध है, परंतु इसमें एक 🚃 पाएँ दोव 🖥 📰 अनुबन्धे से दिन तीक एक वर्षेक्ष बाद प्रस्ता मृत्यु ही कराने ।' एका हाला लाग भूगकार धनाने साविधीसे विस्ती जन्म बरको ईवनेके हिन्दे सामित्री बोली—'राजभोन्द्र अदल एक हो बार होती

46d है। पश्चितका एक ही बार बोलते हैं और 📖 भी एक 🛊 बार दी जाती है--- वे 🔤 🚾 🚃 🙌 होती : सरकान दोषाँय हो अथवा अर्थल, निर्मल 🖟 वा गुल्कार, मैंने हो उसका गरण कर ही लिया; अब मैं दूसरे परिचये कर्या नहीं चुनुँगी। यो चहा जाता है, उसका पाले विचारपूर्वक 🔤 निश्चय कर सम्बद्ध करत है और जो क्यान कह दिख जाय, अधी अपना चाहिये। इसरितने मेरे जो मनमे निवास कर 🚃 है, मैं बड़ी कर्मगी (\* 🎞 देश देश निश्चकुर प्रका सुनकर भरद्वीने कहा--'एअन् ! आपकी कन्यको पही अभीष्ट है तो इस कार्बमें शीधन करनी चाहिये। अपन्या यह दान-कर्म निर्विध सम्पन्न हो ।' इस तरह कहकर करश्वनि सर्थ वर्छ गये और एक्टने भी शुध मुद्धती स्ववित्रीका स्वकानुसे विवाह कर दिया। सावित्री भी मनोवहविवत परी \*\*\*\*\*\* असमा क्रांस हो। दोनी अपने असमध्ये स्टानुर्वक हाने लगे। परंतु नास्टम्निकी काणी सावित्रीके इट्यमे कटकती रहती थी। जब वर्ष पूर्व होनेको आया, तम सामित्रीने विचार

यह सोवका साकितीने ........ मासके उत्तर प्रस्तकी दादजीसे की प्रमुख करें हुए। यह एक 👭 👊 📖 साविजीका जब, ब्यान, पुजन करती रही। उसे वह निश्चय था

बिका कि अब मेरे परिको मृत्युका समय समीप आ गया है।

📟 🎟 🏥 कैने दिन सरक्कन्त्वी मृत्यु होगी। सावित्रीने तीन दिन-एत नियमसे व्यतीत किये। चौथे दिन देवता-पितरोको संबुद्ध 🚃 🔤 अपने ससूर और लासके चरलोंने प्रजान

क्षत्रकन् नकी कहा रकत करता था। इस दिन भी यह

बाह लेनेके लिये जाने लगा । सावित्री भी उसके साथ जानेको कार हे गर्छ। सुरक्ष सरकान्ते स्वापना रहा—'वनमें 🔤 🔣 अपने माम-समुख्ये पुरु को (' यह पुरुने गयी। 🚃 से सास-समूर्त का किया, कियु साविवीके करन्युर मनक करनेका उन्होंने जनेकर अच्छा दे ही। दोनों साथ-साथ कारो गये। सरकारते कही कहा काटका 📰 बीक, परंतु क्सी पाल क्लके पहल्को पहल् वेदन करून हुई। उसने स्वविकास कहा — प्रिये | मेरे सिरमे बहुत काथा है, इसलिये व्यक्त देर विकास करना व्यक्त है।' सबीवी अपने परिके निस्को अपनी गोटमें लेकर बैठ गबी। क्रानेमें ही यमराज वहाँ का पने । सामिता उन्हें देशका प्रमान किया और कहा— प्रभो । आप देखला, देखा, गुन्धर्व आदियंत्रे धर्मन है ? मेरे पांच को उसरे हैं ?"

**व्याप्त अपूर्ण स्थापती ! मैं सम्पूर्ण स्थेनतेना** निकान करनेकल हैं। मेध नाम का है। तुन्हरे परिकी आमु समात हो गयी है, परंतु तुम परिवास हो, इसलिये मेरे दूत इसको न के का सके। अतः मैं सको ही वर्षा जाया हूँ। इसना कारक वयराजने सत्ववान्के प्रारीको अनुस्थानके पुरुवको सींच रिम्पा और उसे हेकर अपने त्येकको चल पढे । सावित्री भी उनके भीके चल पढ़ी। बहुत धूर ऋकर थमराजने साथितीसे करा— 'परिवर्ते । अस तुम लीट पाओ । इस मार्गमें इतनी 📺 कोई नहीं मा सकता।' **ब्लाइट विकास अपने हुए** 

मुझे न यो उल्लिन हो रही है और न चुन्छ अन हो हो रहा है।

१-सकृष्यरचीत समानः सकृष्यरचीत 📖 । सन्त्र्य् प्रदेशके ६००। 🔛 सम्बद्धानुस्य ॥ (उक्कार्य १०२ । २९)

२-वह क्या अन्य वेपानीर अनुसार जेता 🚃 उपा 📷 प्रदारीने पूर्वपालक करनेको परणता 🔣 🚃 है।

मैं सुसपूर्वक चली आ रही हूँ। जिस प्रकार सजनोबी 🞟 सेत हैं, वर्णाभ्यवेदा आधार चेद है, जिन्मोचा अक्चर कुरु और सभी प्राणियोंका अक्षाय-स्थान पूच्यो है, उसी प्रकार विक्वीस प्रकारक आक्रय-स्थान **व्यास्थ्य पति ही है अन्य कोई न्ह**िं। इस 🚃 सचित्रके वर्ग और अर्चनुक क्वानेको सुनकर कृत्युज प्रसन्न होकर कक्षत्रे लगे—'पानिनि ! 🖩 तुमारे बहुत संतुह हूँ, तुन्हें जो कर अन्त्रीह हो वह नाँग हो।' 📖 स्त्रवित्रीने विनयपूर्वक प्रीध वर मणि—(१) 🔣 समुख्डे नेत अबके हो जायें और उन्हें राज्य मारा ==== (२) मेरे पिताके सौ पुत्र हो कर्ष । (३) 🛗 🔡 सौ पुत्र हो । (४) फेर र्थत दोर्चपु प्राप्त करे तक (६) इसमें सदा कमि दुई शरह बनी हो। धर्मराजने साविजीको ये सारे कर दे दिने 🛅 सरकारको भी दे दिया। साविती जनसङ्ख्येक अपने परिचरे 📖 रेक्टर अप्रसम्भे आ गर्छ। महस्त्रस्थे पूर्णिकको 🛗 उसने सामित्री-प्रत किया था, यह सब उसीका कर है ! भुनिविष्यमे पुनः सङ्गा---चगमन् । अस स्वाचित्रो - व्रतस्थी निधि किस्तारपूर्वक बलस्थि : भगवान् सीवृध्धने सदा—महत्त्व । तीनानकी प्रकाशको स्था भारत पासके श्री

होकर तीन किया स्थापिती-जलको किया पहल कुरना चाहिये । यदि तीन दिन अपकास रहनेकी शक्ति न हो तो त्रमोद्रदर्शको 🚃 सर्गुर्गतिको 🚟 📆 और पूर्णमको प्रकार को । सीधानको स्वयक्ताली 🔤 📖 राद्वारा आदिने मिल-कार्ग भरे और पूर्णियको लागोका कारण लगाकर स्थान करे।

यशासिक मित्री, सोने या **परिषये महत्त्वशित साविश्वी**यी

# महाकार्तिकी-क्रतके प्रशंगमें राजी कलिनभड़का आख्यान

भगवान् श्रीकृष्ण करते हैं—महसंध ! पूर्ववालमें मध्य देशके वृषस्यल नामक न्यानमें महस्राव दिलोपकी क्रिंतमञ्ज्ञ नायकी एक सर्वपूर्णसभ्यक महारानी के। बर सरा अक्राणीको 💷 देती तथा देवार्चन 📟 छती। एक

· । तसने कार्तिक भागमे छः महोकेक कृष्टिक करून

प्रतम् बनकर बाँछके एक पाउँ स्वतित को और दो रक काकि कारोंसे उसे अध्यादित को । फिर गन्ध, पुरुष, भूप, दीव, 🎟 पूजन करे । कृष्यक, महियल, ककड़ी, तुर्य, कवा, केव, अवर, जापून, कचीर, नांगी, असरोट, कटकर, गृह, रूअम, जीरा, अंसुरीत अस, सप्रधान्य तथा भरेका होरा (सक्तितो-सूत्र) आदि सब पदार्थ भीसके पत्रमें अर्थन कर है। स्त्रीके समय जागरण

करे। गीव, बाब, 🚃 अदिका उत्सव करे। मासण 🚃 🚃 क्वें। इस प्रकार सारी रात्रि उत्सवपूर्वक 🚃 🕳 📹 वर्षी नहीं 📂 समधीसहित है सेट विद्वान् सहायको दार कर दे। यथात्रातिः स्वकृत-चेत्रन **व्याप्त स्था** से इतिचाल-धीवन करे।

रुवन् ! 📰 🚃 जोड महत्त्वी अधानास्त्रको कार्यको वर्षे काइपारसंक्षित शतकान् और महामती क्रांसिकेको प्रतिस्थ स्थापित कर उनका विश्विकत् पूजन करना काहिये। सामान कामान स्थाप कर प्राप्तः कह सामा स्क्रामुको द्वार कर दे। इस विधानसे जो कियाँ मह

स्वविधी-सार करती हैं, वे पुत्र-पीत-चन आदि पदार्थीको जार

कर किर-कारपाक पृत्तीपर सब सुक्त घोग कर परिके साथ मान्त्रोकको प्राप्त 🔛 👣 पर्व गत 📟 स्थि कुम्बर्केक, प्रान्तरक, दुःस्त्रान्त्रश्चक 🔳 वन प्रदान करनेकारण है। 🔣 नारी चरित्रसे इस 🚟 करती है, यह

च्या चीत दोने कुलोका उद्धार कर प्रतिसंतित व्यवस्थान पूर्व भीवती है। 🔣 इस शहरूकारे प्यूते अवंक सुनते हैं, वे की भनेकान्वात फल प्राप्त करते हैं।

(सम्बद्ध १०२)

संस्कृत्य क्रिया । यह प्रत्येक प्रत्यामे नित्य पुश्रन, दान, ब्रह्मय-भोजन, हमन आदिमें तत्पर रहती। एक संस् व्रतमे जब विशेषक् वरत्यवरोष था, तब वह रहिये अपने पतिके साथ विकास कर रही थी। उसी 🚃 अचानक एक भन्नेकर सपीने को देव लिखा। फलसक्य उसके पाण निकल गये और गा

१-सता सन्ते परिर्माण 🔤 वर्त सद्ध गरिः । वेदो वर्षक्षकाम व 🔤 व परिर्म् । क्षेत्रकेष असून्त व्यवस्थात व्यक्तित्रम् । कर्क एक व्यक्तिको सन्त्र सरक्रमः ॥ (उत्तरको १०२ । ५५-५६)

(अध्याय १०३)

अध्यानसमें बकरी बनी, परंतु सतके अध्ययसे उसे अपने पूर्वजन्मको स्मृति बनो हुई थी। उसने अपना कृतिका-कर किस प्रहण किया। यह अपने यूक्से असमा होकर उपकास करने समी।

एक भार विहास पासने किसी दूसरेके केलने जन ना चर रही थी, 📰 उस चेतका स्वमी उसे स्कड़कर असने पर ले आया । जातिस्मर अजिज्ञानिने उस नकारिको देखा और यह वान रिज्या 🎮 यह उनी करिंग्यमदा है। क्वाल्य उन्होंने उसे बन्धनसे मुक्त करा दिया। यहाँहे सुटकर उसने केल्के को **व्याप**र ज्ञीतक जल पिया और कृतिका-सक्का पारण किया । प्राप्ति आहि 🚮 योगजानका उपदेश देशर अपने आधानको वले गये और वह चेरोधरी अपने बतने परः तरफ हो 🞹 तया कुछ कालके अभवत उसने योगनतन्ते अपने प्रकारपण रिये। दाया। पूर्व । उस समय 🚃 नाम कोनलक्ष्म पृथ्व । गीतमञ्जीने पहर्षि इविद्यालकर्तनके योगलक्ष्मेका 📖 🚃 दिया। 📰 भी ऋषिक्त्यके वरमें 🚃 साहा, साही, अस्त्रातं, गौरो, 🔛 गामधे, पहालक्ष्मे 💳 📠 🚾 भारत सुरोतिक हुई। 🖿 देवता, 🔤 📟 🚟 सरकारने निरुप रूपी रहती । आहरूपेको जन्म परवरी :

एक दिन महार्षे वहाँ आये और उन्होंने योगयहासे स्वरा कृतांना जान हिना और पूछा— महान्यांने योगराधिया! कृतिकाएँ कितनी हैं ?' वह मुनकर महासती योगराधनीयो भी पूर्वपृत्त स्वर्था हो स्वाम और उसने कहा— 'न्यायोगिन् ! कृतिकाएँ छः हैं।' वह सुनकर स्थान्तु अधिमृतिने पृतः उसे मन्य और कृतिका-पत्तका उपदेश दिशा, विसक्ते करवेसे उसने विद्याहरूतक संसारका सुका योगकर मोबा प्रशा कर रिज्य।

राजा कृषिहिरने पूजा—पगवन् ! कृतिका-आस्ट क्या 🜃 है ? इसे आप बसकें।

धगतान् व्यक्ते लगे—महरूवः! पृथिनको कृतिका नक्तमें कृत्यकी व्य सोमधः

सक्वेकालके 🕬 पुर 🔚 दुरुपसे पूर्व छः पात्रीये सुवर्ण, चौदी, राम, नवनीय, ........ तथा विष्टमे सः मृतिकाओंको वृति बनकर 📖 🛗। फिर उन्हें रक्तसूत्रसे आवेष्टित कर सिंदर, ब्रेस्ट्रम, बन्दर, ब्रिस्सक पुन्न, भूप, दीप, नैश्रेष च्या प्रश्निकाओको मृतियोको ब्राह्मणको था का है। इस 📶 समय यह 📹 पहे— सम्बद्धाः प्रक्रियमेति पुरुतः । 16-1 वकर्वकारो 12.14.3 THE PERSON मनम् (( (बसर्पा २०३ (३०) स्थापन की मूर्ति **स्था** करते **स्था** इस प्रकार क्लोकरण करे-प्राचीताः कालकाः सन्तु कृता नश्कामातरः। कृतिका वृत्तिकारम् सारपन्याकयोः कृतन् ॥ (क्ल्प्सर्व ५००।३६) सदनकर 🚃 🗰 समग्री लेकर पर जाप और छ बदमहरू क्यापन उसके पैक्षे चले। इस 📟 🗏 पुरुष कृतिका-जत 📖 है, यह सूचिक 📖 प्रकाशमान विमानने 🚃 नक्तालोकमें जाता है। जो 🔀 📰 वसको करती है, 🐷 🌣 अपने पतिसहित नक्षत्रहोशने 🚃 बहुत 🚃

दिव्य चोगीका उपयोग करती है।

महाकार्तिकोका योग होता है। महाकार्तिकी तो महुत 🔚

और बढ़े पुण्यसे 🚃 होती है। इसिएमें सम्पारण कार्तिकी पूर्णिक्यों 🛗 उपवास करें। 📷 🚾 पूर्णिक्यों 📖 ही

दक्षकार अवश्वासका

**व्याप्त को । पुष्पार, प्रकार, कुलक्षेत्र, नैमिन, इहलमाम,** 

कुरावर्त, मुलल्यम, जलसूल, गोकर्ग, अर्थुर, असरकण्टक

अबद्दे किसी 📖 सेवींने 🚃 अपने धरमें ही स्वान करे।

विद्य देखला, ऋषि, पित्रर और असिधिका पूजन कर हवन करे ।

#### मनोरवपूर्णिया 🚃 असोअसूर्णियास्त-विधि

-CBC-BC---

भगतान् श्रीकृष्ण कोले—एकन्! परस्पुनकी व्यवेश्वपृत्तिको जनसे विश्वात है। इस मतके करनेरे पूर्णिमारे संवस्तरपर्यस्त किया कलेकला एक ■ है, ■ ■■ सभी मन्देरय पूर्ण ■ वाते ■। अतीको चाहिये ■ वा

फालपुन मासकी पूर्णिमाको कान आहि 🚃 सक्सीसहित भगवान् जनार्यनमा पूजन करे और जलते-किस्ते, उठने-बैठरे 🔳 समय जनार्दनका स्मरण करता 🐯 📰 🚃 📰 नास्तिक, ब्यास्ट आदिसे सम्बन्ध न बरे, वितेन्द्रिय रहे । र्यानके 🚃 चन्द्रमाने नारायन और सम्बोकी 🚃 कर अर्थ्य प्रदान करे। बादमें तैल एवं समापाईल फोजन करे। इसी प्रकार चैत्र, वैशास, ज्येष्ट—इन होन क्योजॉर्ने की कुवन एवं अर्च्य प्रदान कर बती प्रकम पारक करे। सामग्री चारक और आधान-इन चार महीनोको पूर्णियाको श्रीसहित भगवान् श्रीभावत पुत्रन 🚃 बन्तुमान्ये अर्था प्रदान करे 🔚 पूर्ववस् दूधरी पारण करे । कार्तिक, मार्गदार्थ, फेर 🚃 माध-इन 🔤 निर्माण भृतिस्थित भगवान् केरायका पुरान चन्द्रमाको अर्थ्य प्रदान भरे और सोसरी परचा सम्पन्न करे । प्रत्येक प्रश्यक्रक अन्तर्भ ब्राह्मकोको 🚃 है । ऋथम परणांके चार महीनोंने पद्मगच्य, दूसरी परणांके चार महीनोंने कुरतेदक और सीसरी पारवामें सूर्वीकरवेंसे रात बरावद प्राप्तन करे। रातिके समय गीर-आवहारा पणकन्त्र कीर्तन करे। प्रतिमास जलकृष्य, जुल, क्रास्ट सुवर्ग, बच्च, घोरून और दक्षिणा ब्राह्मणको सन को । देवलाओंके स्वामी पनकानुको मार्गशीर्व आदि काल महीनोमें प्रान्तकः केशान, करावनः माधव, गोविन्द, विन्तु, मधुसूदन, त्रिनिकार, वायन, औधर तथा हपीकेश, राम, क्षणाल और दामोदर—इन नामोका कीर्तन क्रांक्ट है। यदि अनियस वान देनेमें समर्थ न हो तो वर्गक अन्तमें बच्चाहरिक स्वर्णका चन्द्रविष्य बनावर फल, यस आदिसे अभ्या पुत्रन कर माक्रणको निवेदित कर दे। इस प्रकर वत करनेवाले प्रकारो अनेक जन्मपर्वन इष्टका वियोग नहीं होता। उसके सनी

मनोरम पूर्व 🔣 जाते हैं और वह पूरम रारायणका स्मरण करता हुआ दिव्यत्येक प्राप्त करता है।

धनवान् श्रीकृष्यने पुनः बद्धा—महरूतः ! 📖 पै अरकेक्क्विया-बदका वर्णन पाला है। इस बदको करनेसे मनुष्यको कपो स्रोक नहीं होता । फाल्युनको पूर्णमाको अनुर्दिम युक्तिक राज्यार करी आदिने जान करे । पृत्तिकाकी एक बेटी क्यकर उत्तरर धनकन् सूधर और अक्षेक्र नामसे भरपोदेवीका पुन्न, नैवेदा उद्यदि उपकारीसे पुजन करे। पुजनके अनगर हाच ओड़कर इस एका। प्रार्थना करे — 'धरणीदेवि ! 🚃 सम्पूर्ण कराकर जगलको धारण करनेवाली है। आपको 📟 व्यवस् वागधान् अनार्दनने रसाहरूसे साकर प्रतिवित करके खेकर्राहद किया है, उसी प्रकार आप मुझे भी सभी क्षेत्रेसे पुरु कर दें और येरी समल कामनाओंको पूर्व करें। इस प्रवास प्रार्थना कर राष्ट्रिये कन्द्रमानदे आर्थ्य प्रदान करे । उस दिन अध्यक्ष रहे। अध्यक्ष रहिके समय हैल-कारवीरत मोजन करे। फल्पन स्टब्स् चलच्या स्टब्स एक-एक पाणा सर और सर्वेक परकार्क अनावे विशेष पुता और जागरण करे। प्रका परकार्य करकी, हितीयमें मेटिनी और इतीयमें बसुन्यरा कमले कुम्ब करे । विकास अन्तर्भ सवतरा गी, धुपि, वका, आधूमण अर्थार सक्कानेको राज को । यह वह पातालये विश्वत क्या उद्भार विकास और प्रसन्न होकर कहा 📆 'धरणी-देवि ! कुछारे इस बदासे में परम संसुष्ट हैं, जो कोई भी पुरुष-को भक्तिसे इस बहुको करते हुए येए पुजन करेंगे और बचाविधि पहला करेंगे, वे कम-जनमें सब प्रकार केरोंसे पुरु हो बार्येचे और तुम्हारे समान हो बहुन्युपके भाजन हो आपेने 🖹 (अरम्बाच १०४-१०५)

#### अनन्तवन-महारूपमें कार्तवीर्यके आविर्माकका वृत्तान

राजा युचित्रियने कहा---मगत्रम् । धनिस्पर्कक भागभाकी आरम्बन करनेसे सम्बे मनोवाधिक परू प्राप्त है। जाते हैं, किंतु सी-पुरुवंकि रूपे संतानहीन होनेसे अधिक कोई दुःस और शोक नहीं है, परंतु कृष्णता तो और भी महान् दुःखका 🚃 है। योग्य संतान सब मुखाँका हेतु है। जगतने 🗏 थन्य 🕽, जो सर्वगुक्तसम्बद्धः आरोग्यः बल्डबन्, धर्महः

रामानेन्त्र, टीन-अनायेकि आवाय, वास्त्रकृत, प्रदेशको असन्द देनेवाले और दीर्जनु एत 🚃 करते हैं। प्रमो । मै ऐसा 🖿 मुनना चाहता है कि जिसके करनेसे ऐसे शुप लक्कोरे कुळ पुत्र 📖 हो।

मनवान् औकृष्ण बोले-महाराज ! इस सम्बन्धरे प्रसिद्ध है। हैहयवंदामें महिन्मती

(महेश्वर) न्यान बुलवीर्य सम्बद्ध एक महान् राज ६३४। उसकी एक इकार एनिकेंमें प्रकार तका सभी क्रूप सम्बन्धेरी सम्पन्न जीलवना नामकी एक रामी थी। उसने एक दिन कुन-प्रक्रिके रिव्ये बहुतव्यदिनी यैत्रेक्से पूछा । वैत्रेक्ने उसको 🕎 अनुस्तरका उपदेश दिया और कहा— 'इंक्रिकने ! व्यो वा पुरुष भी कोई भी भगवान् जनसंख्या कारायन करता है. इसके सभी पनोरम पूर्व हो आते है। मर्गासर्व मासने 📖 🔤 मृगद्विय 🚃 हो उस दिन सान कर गन्य, पुण, शृद, दीय आदिसे अनन्त भगवानुके 🚃 🚃 पूक्त करे 🚟 प्रार्थना 📟 एकामधिन हो 🔤 प्रस्तव कर 🔤 दक्षिण दे। राष्ट्रिके समय शैल-कारवर्धित 📖 करे। 🌉 विभिन्ने 🚾 मानमें पूर्व रखकों परावर्त्ते को 🛶 🛶 🛶 पूजन होरे । याच भारते प्रचा नशको समयन्त्री व्यर्गे पुजास पूजन करे। पहलपुर्व्य पहलपुर्वे नश्चक्रमे व्यये क्वान्थका पूजन बरे । इन चर महीनोर्ने गोनुकार जातान को और सुवर्णस्थित हिल बाह्यभन्ने दल दे। पाल क्या नवामरे जनकर्षे पाल क्या पूजा को, केलाको विकास नकामे राधनी मुख्या पूक्त की, क्षेत्रमें क्षेत्रा नक्षत्रमें दाहिने कटिजरेजना कुका धरे । हाल प्रकार आयोष माराजे आयाहा नशतके राजिने पैतक कृत्य करे। इस कर महीजेंमें प्रधानमध्य प्रकार करे। स्वर्ण-दान दे और 📖 चेवन करे।

शायण पासमें शायण नश्चमें पगव्यम् विल्युके विशे बर्गिका पूजन करें। पहरपर मासमें उत्तरापहरपद नवाली पुद्ध-स्थानका पूजन करें। आधिकारे व्यक्ति नवाली व्यक्ति पूजन करें और कार्तिक पासमें कृतिका नश्चमने व्यक्ति भगवान्के मिरका पूजन करें। इन भर महीनोने पृतका आकृत करें और पृत ■ व्यक्तिकों दान दें।

केलिके उपदेश कर कर और कर भौतिपूर्वक वस करने

रूपी । बर्क्ड प्रथमके मगम्बन् अनन्त संबूष्ट सुद् और बन्हेनि

🌃 एक 🔛 पुर प्रदान किया। युक्ते जन्म होने 🖥 🚥 🚾 मार्थ । एकः न्यास्त्रात्व क्यु स्थात हर रागे। हेकाल शुद्धीय ककने 🔚 । पुन्तकृष्टि होने सनी, आरे जनात्में सहरू क्षेत्रे स्त्या । गर्न्बर्व गर्ने लगे और अवस्पर्य गृहय गरने (सोड साथ सम्बद्धा हम क**ंदे** आसक है गया। सम कृतकोची अस्ते कुरूत याम कार्युत १५० । कृतकोचीक मुक्त होरेके च्यी अर्थ्-र वर्कवीर्य बद्धत्वया । कार्तवीर्यार्युनने वर्धदेन क्षेत्र विकासमान्त्रेः स्वयंत्रः स्रोदस्तोत्रयंत्रीकी अवराजन 🔤 चनवान् दत्तत्त्रेयने यह वर दिया कि 'अर्जुन ! कुन भूतावर्ती समाद होओंगे । यो प्यस्ति सार्यकारः और मातः 'अबैद्रश्रु व्यापनावाक' का ज़ाका समाज करेगा, उसे प्रस्थापर तिल-दानका पुरूष बात होना और से तुन्हारा स्मरण करेंगे, उन पुरुषेका हुन्य कामी नष्ट नहीं होगा।' मगवान्से वर 🚃 कर राजा कर्सवीर्थ धर्मपूर्वक सप्तारीया वसुमतीका पालन 🚃 तमे । 🚃 बढ़ी-बढ़ी दक्षिणायोहे 🚃 सम्पन्न किमे 🔚 इच्छोपर 📖 📖 की । 🚃 तरह शनी शीरूधनाने अरुक्तकोके प्रवासको असी उत्तम पुत्र प्राप्त किया, पिताको

पुरवस्ति कोई भी दृश्य नहीं कुछा। यो पुरव अधवा सी इस

**ब्राह्मक ब्राह्म अपन करते हैं, वे स्वत जन्मपर्यत्त** 

संवानका दुःका ऋह नहीं करते । यो इस अनन्त-जतको प्रकिले

करता है, वह उक्तम संवान और ऐसर्वको प्राप्त करता है।

(अम्बाय १०६)

#### मास-नक्षत्र-क्रतके महारूपमें साम्परक्रमीकी कथा

राजा बुधिष्ठिरने बाह्य — प्रयो ! ऐश्वर्य आदिके प्रया न होनेसे इतना करू नहीं होता, जिसना प्राप्त होका वह हो आनेके होता है। इसरिज्ये आप ऐसा कोई प्रश्न बदाये, जिसके करनेके ऐश्वर्य-भंग्र और १४-क्यिंग न हो।

भगवान् श्रीकृष्या केले—पहरान् । यह 📟 📟 दुःस 🖣 🕫 जल हुए सुकका फिर शहा 🛊 भारत है। इसके किये ब्रेड पुरुवोको शाहिये कि वे बारड महर्तेक बारड नवाजेंने भगवान् अभूतको विविध 🚃 📹 को। इस नश्रीप्र-मतको 🚃 🌃 📖 कृतिकाने करना चाहिने । इसी क्यार मार्गहोर्व मासके मुप्तिश नकारें, चैव कारके 🚃 नश्तरमे तथा माच मासके मना नकामे करना चाहिने। कर्तिक, मार्गश्रीके, चैव तथा मध—इन कर 📟 किमहीका भोग समाधे 🔚 📖 🚃 🚃 कराये । फाल्नुम अबदि कर 🚃 सक्कोने 🚃 (गोहिया) का नैनेच समाये और शासक शाहि चार महोनोके नक्षत्रोमें पापरावर नैवेद रूपाये । पश्चमान्यक प्राप्तर को 🔤 नरायगाका करने वह इस अध्या कर्मन करे---श्मी नमस्रोऽस्कृत से अयोऽस्तु पायस्य सृद्धि समुद्धेतु पुरस्यत् । ऐक्किमारि सकाउक्का के क्कि 🗈 मा संस्थितकर्कीत स यक्षान्तुलार्थं करतः परलात् स अक्षान्तः करतः करतकः : सभाग्युतं ने पुन्न साम्बन्तं से इरला वर्ण क सम्बन्धान ह

अञ्चलका गोरीका आहि व्यक्तिस्त् । सद्भावकोगासम् ज्ञाता पुरस्तेतसः ॥ (अस्तर्व १०७६ १२ —१४)

'अन्युत ! अवस्थे व्यास्था नमस्यर है। मेरे प्रश्रीक्ष नाम हो जाय, पुण्यकी कृदि हो, मेरे ऐसर्थ, विश्व अवदि अक्षय है देख मेरी संस्ती कर्णी यह न हो। स्थित प्रकारते आय परसे परे बहरपूत और उससे भी परे अध्युत प्रवास्थ है, उसी प्रकार आप मुझे अध्युत कर दे। अवस्थित ! हमान हिं प्रापीको नह कर दे। पुरुषोत्तम [ अध्युत, अनगा, मोर्किन्द अमेपारमन् ! मेरी समस्ता अधिरक्षणाओको पूर्ण करें, मेरे उसर अम प्रसार हो।'

अनन्तर **व्यक्ति समय गमकन्**या प्रसाद **आग धरे । वर्ष** होनेपर **व्या** गमकान् अञ्चल जग जावे, **व्या पृत्रपूर्ण**  व्यवस्था और शिक्षा अद्यालको देकर 'अव्युक्तः प्रीवसाम्' पर व्यवस्था कहे । इस प्रकार सात वर्षतक नहाजात करके सुवर्णको अस्पुत्रको व्यवस्था व्यवस्था कहे और व्यवस्था अस्पुर्णको कार्यक्ती प्रश्न करून और प्रतिवस्त स्वान्यक्ष्म अस्पुर्णको प्रय-पुण्यदि अप्रवर्णके पूज्यकर क्षमा-अस्पुर्णक हत करता व्यवस्था द्वार कर है । इस विविध्ये को अञ्चापुर्णक हत करता व्यवस्था अस्पुर्णक पूजन करता है, उसके पन, संतरित, ऐक्स्म व्यवस्था क्षम नहीं होता । उसका समस्य अस्पुर्णको पूजी के व्यवस्था है । असः मनुष्णको पाहिये कि

मुनिहिस्ये पुष्ण—भगवन्। अपने साम्भगवनीयो भाषा सामन्य पूज्य कर्मका कहा है है साम्भगवनी देवी कौन है ? अपन इसे क्सरवर्षे।

भागवान् श्रीकृष्य बोले—नदारमः । ऐसा सुन्न जाताः

के कि सार्गने साम्यापानी कामाने एक तारोधान करिन वारोधाः
कामाना वार्गमानी प्रकार सिद्धा चर्चा थी, भी देवताओको
भी प्रकारवेशा सम्बन्धान कर देती थी। एक समय देवताः
अपने देवगुर कृष्टवर्थनिसे पृक्षान—'पागवन् ! इसीर पहले

कामाना में स्था है उनका वक आवरण और चरित्र था,

📖 पृत्याकर इसका वर्णन भौतिये ।

केन्युक क्षारंगति कोरो--'देवेन्द्र! सन इन्होंका कृत्यन तो मुझे नहीं मार्म्म, केन्यल अपने समयमे हुए इन्होंके विकाम सुझे व्यानकारी है।' इन्होंने कहा--'पुरे! उदापके किना हम यह कृत्यन विकास पूछे।' वृहस्पति कुछ वहल विकास करने लगे-- 'पुरन्दर! इस विकामके हपस्तिको वर्षाता सम्बद्धनानी देवीसे ही पूछो।' यह सुनकर वृहस्पतिको वाल लेकर देवराज इन्ह साम्परायणीके वाल गये। साम्परायणीने बड़े सरकारसे उनको बैठाया और अध्यक्तिसे पूजन क्षा विनामपूर्वक आगमनका प्रयोजन पूछा। हाला कृतस्पतिको कोरो--'साम्परायणि! देवराज इन्हाको प्राणीन वृत्यन्त सुननेका कहा कीतृहरू है। यदि स्था विगत इन्होंका

साम्परायकी खेली—'देवगुरे ! 🚃 📰 📦 है, 🚃 वृदान्त में अच्छी दरह जनती है। मैंने बहुद-से मनुओं, देवसृष्टियों और 🌃 देवा है। मनुष्ट्रोको 🖩 वानती हूं और 🔤 🚟 चरित्र 🌉 🚃 है। 🗎 अन्ह पूर्व, 📰 में 📟 📰 व्यक्त सुरक्त देवराज इन्द्र और देवगुर नृषदर्शको स्वयन्त्रुप, स्वयोधिक, उत्तम, तामस, रैक्स, चान्तुन 📖 मनुओ, 📖 और इन्हेंका कृताना उसके पूका। विकास अन्तर्ग कृतानीका अधावत् वर्णन किया । राजन् । उसने एक अस्तरा आवर्षकी कर पर कररूपी 🔣 पूर्वकरूपे संयुक्तनं नामक 📺 📺 मतानी देख हुआ । 🚃 📖 📖 इन्हरूने जोतने अस्या और निर्मय के इन्हरूने प्रकास ब्रीवट के गया । अंकुमध्येको देखकर इन्द्र कमधील होकर 🔤 गर्ने और वह इन्द्रके अप्रसम्बद्ध 📰 गया : 📰 सम्बद्ध 📰 📖 विष्णु भी वहाँ आये । भगवानुको 🎟 शंकुकार्ग आवस्य प्रसम्म हो गया और उसने बढ़े बोहसे काल्यालय अवस्त्रिय किया । परस्यान् उसकी विकास सम्बद्धा 👭 के, असः 📰 भी उसका आलिवृत्त का ऐसा विभीक्षत विश्व कि उसके सा अस्थिएंजर क्र-भूर हो गये और का केर 🚃 🚃 मृत्युक्षे प्रप्त हो गया। दैत्यको 📖 जानकर हन्द्र 🔡 उत्पत्तक

📕 गर्वे और विन्तुमगबन्त्वी स्तुति करने सन्ते।

साम्बरायकीने पुनः सदा—देवराम ! यह वृतास मैंने अपने नेवीसे देशा था।

कृत्यने सम्बन्धरायाणीसे पूजा—देवि । इतने आर्थान वृक्तपायो अवर कैसे व्यवसी हैं ?

स्थानशास्त्रकोने कहा—देवेन्द्र | सर्गका |||||| ऐसा कृष्टक नहीं है, को मैं न कारती होऊँ ।

हुनुत्री पूजा — वर्गते ! आपने ऐसा वर्गन-सा सरवर्ग विकास है, विकास प्रभावने अस्त्रादे अक्षय वर्ग प्राप्त हुआ ?

(अध्याम १०७)

#### 

विस्पोको उत्तम क्या किस कार्नि कारोसे क्या होता है ?

सर्वास्तुन्दर तेष्ठ क्यांची अभिका व्याप्त क्यांचे ।

धरावान् वीकृष्णने क्यां — महाराज ! वही व्याप्त अठन्यतीने विस्तु जी होर प्यार्थि विस्तुने असी क्यांचा — 'प्रिये ! विष्णु परावान्त्री किना कारावना और पृथे विस्तु परावान्त्री किना कारावना और पृथे विस्तु नहीं हैं

अत्म क्यां, देखर्ष और सेवानको क्यांचा करे उसे नश्चापुरव्यव्यव्य परावान्त्र विष्युत्व पूक्त कार्य — विस्तुनि कार्युव्यव्यव्य विष्युत्व पूक्त कार्य — विस्तुनि कार्युव्यव्यव्य विष्युत्व क्यांचा क्यांचा विस्तुनि कार्युव्यव्यव्यव विष्युत्व कार्य व्यव्यव्यक्ति कार्युव्यव्यव्यक्ति पूजन करे । कार्यादेशे — होकर नश्चापुरव्यव्यक्ति परावान् विष्युत्व असिम्य — वार्युव्यव्यक्ति प्राप्त करे करते

क्षेत्र पर पुरु और १३—

विश्व के अनुविक इस विधिते पूजन करें। पूल नवामें देलें

पे, विज्ञ के विश्व के विश्व होने पुटने,
कार्यकों कि करने, देने करनुतीने गुडास्तान, कृतिकारे
करिकरेस, विश्व क्रिक्ट के प्रतिकारों प्रतिकारों करिकरेस
करिकरेस, विश्व क्रिक्ट के प्रतिकारों पीठ, विश्व क्रिक्ट के पुन्त क्रिक्ट के पुन्त क्रिक्ट के पुन्त क्रिक्ट के पुन्त क्रिक्ट के प्रतिकार पुन्त करें।
क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट के प्रतिकार पुन्त करें।
क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट के प्रतिकार पुन्त करें।
क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट के प्रतिकार पुन्त करें।
क्रिक्ट क्रिकट क्रिकट क्रिकट करें। महाकों देवताओं और
क्रिकट क्रिकट क्रिकट क्रिकट करें। महाकों देवताओं और
क्रिकट क्रिकट क्रिकट क्रिकट करें। महाकों क्रिकट क्रि

मासमें पत पूर्व हैं अनेपर स्थापन को । समय स्थाप अनुसार सुवर्णका नशतपुरम क्यापत को अरंप्यूत को, एक स्थापत को और स्थापन-दन्तिको प्राप्यपर बैटाकर क्याप्यूचन आदिशे उनका पूर्व ....

स्वयस्ता भी, इसवे, प्राप्त पृत्यस्त प्रि इक्षिणसहित यह नक्षत्रपुरमधी प्रतिया उन्हें दार कर दे। श्रद्धापूर्वक इस सक्ते स्थापित सर्वसृत्युद्धर रूप, प्रमुख

आरोग, उत्तम संतान, मनुर का जा पानपानसराता समाप एक आ क्षेत्र है और धनी कर निवृत हो जाते हैं। इतनी करा बरुवर पानवान् कीवृत्य बोले—'महाराज! इस प्रवाद स्थापुरम-सरका विका

वरिक्रणीने अस्थातीको बतरसमा : नहीं मैंने अस्थाने सुनाय । इस विधियो स्थानकम पामकन्त्र पूर्वन करेते हैं, के असदम ही उत्तम रूप फोर्ड हैं।'

रासा युविद्वित्ते पुतः पुतः—कावत् । वायनस्थाः कल्पानोः स्थि भाग क्षेत्रसम्बद्धान्तनःसस्य विश्वन वसने ।

धराबान् श्रीकृष्णने कहा— महाराज । सैननका-पुरुष-सरके दिन मगबान् संकारें अहींचा कृत्य और उच्चार अथवा नतातत हाता कहिये। परस्तुत कालें हात यहाँ थय इस हात हो, उस दिनसे सैकाशकपुरुष-महस्त हाता

प्राथा भारते और राज्ये भगवान् व्याप्त पूरण

राजा मुमिक्कियो मुक्त — नगवन् ! मह म्यून्य नश्चत्रपुरम-तराको प्रतया कर उसे न कर सके हो किस कर्यके व्या गीर्ज (कुरा) === === है, इसे श्वरताने ।

सराबान् सीकृत्या बोले—एकन् । ■ व्याप्ता रहा है। अपने अपन्य में ■ अपने रहा है। अपने अपन्य में च अपने प्राप्ता रहा है। अने प्राप्ता स्पाप्ता में च अपने प्राप्ता रहा है। अने प्राप्ता स्पाप्ता में उत्तरी पूर्णताके दिन्य यह का करना चारिये। इस असे करनेसे अध्यात-कत पूर्ण परू देनेवाले हो जाते हैं, इसमें संदेश नहीं। जिस देवी—देवताया सर पार ■ वाय, उसकी सुवर्ण अपने चौदिनी बीना बनावर असे सतके दिन बाद्यणको बुरस्कर प्रतिमाको प्राप्ता से वाय वस्तो स्थापत स्था

च्चीरने । 🚃 🔤 खर्जास नक्त्रोंने भगवान् संकाले सक्ता प्राप्त उनके बरणसे टेकर सिक्षकारी क्रमशः असु-पूजा करने चाहिये : राजिके समय तैल-सारपीत पोजन को। धरिनधानमें संस्थार शास्त्र-चायरू और मृतपान म्ब्युन्स्स्य इत्युप्त करे। यो नक्तम एक दिन 🖫 🛶 तो यो असुरेका हो पालेंसे एक ही दिन पूजन करे । इस अधार जतकर व्याप्त क्याप्त के क्याप्त करना च्यादिने । सुनर्वकी तिल-पार्वकीकी प्रतिभा बनाकर उसे ज्ञान इच्छार 🚃 करे। बहरे सभी उपचारेसे पुरानकर करियक भी, करोन, करा, चायर, दर्गल, जुला, चयल आधूमण, अनुरोचन आदिश्रीत वह प्रविक श्रद्धानको निवेदित कर है। करमें क्टॉक्ट कर विसर्जन करे और ऋष्या, मी आदि सब भागमे अक्षयके पर पहेंचा है। महाराज । दुवसील, दानिया, कुरुकिंक, निर्देश, 🔤 🚟 🚃 📹 नहीं बताय व्यक्ति । इस्तान्यकान्य, सद्भूषी, सर्वन्यतः इस असके अभिन्धारी है। इस प्रत्येत करनेसे महत्यातक भी नियुत्त हो जाते ीं और की **प्रतिकों अपन्न करने कर इस सराको** सम्पन करती है, 🔤 📰 इष्ट-विकोण नहीं होता । जो इस वतके भाइतव्यको 🚃 🛮 अध्यक्ष काल करता 🕯 📖 यो वितरीका मरकारे

(अभ्याय १०८-६०९)

भाग्रतकी जामकित-निनि तका पण्यकी-जत

उद्यक्त 🔣 🗪 🕏 ।

ति तथा प्रकाशि-प्रत विद्या स्थान प्रत करे। कार्या देवताके स्ट्रिक्से शास्त्रा (के अनुस्र देवाच करः) द्वारा अर्थ प्रदान करे व्यापना (के अनुस्र देवाच करः) द्वारा अर्थ प्रदान करे व्यापना प्रत प्रतास करे और प्रमाणकृष्टी संस्थ विद्या करे---

कारता दीना प्राथितनुगाहालेः । प्रत्ये च अवस्था कुरावात दर्या प्रणे ॥ वटा स्वामीतस्य मञ्चलकारत्य च । कुरु असर्व सन्पूर्ण सर्व सम्पूर्णमस्तु ये ॥ वयदिकतं कार्यक्षतं यक्तितं प्रस्ते प्रसे । वह अवस्त्रेतेत्र सर्वविकत्तमस्

कर्ल्स 🚃 है 📰 'प्रणे ! 🗏 करवरी दरण हैं, 🛭

अरप दया करें। 📖 🗎 प्रकारसे 🗐 द्वारा किये गये वरा, तप इस्स्मीद कर्मोंने को कोई की ब्रुटि, अक्टाब एवं व्यक्ति 📗 गयी हो, हे देक्देवेश ! अपने अनुप्रहरों 🚃 सन देन 📰 हो 📰 और मेरा क्रत पूर्ण हो जान । आपको जनस्कर है ( 🚃 हिकालेको अर्थ 🚃 कर मुख्य अम्ब-पूजा करे और अन्तमें फिर प्रार्थना करे । अम्बरणका पूजर करे और 🚃 🖩 वसकी पूर्णसके रिज्ये इस 🚃 अवर्गिर्वाद प्रदान को----

बाबसञ्जूषी सनः पूर्ण पूर्ण कञ्चातेन हे। सम्पूर्णका प्रकारित क्या पूर्णकोरक: अ प्राप्ताच्या च्याचायके स्मृत्येक्ट वेस्टः । नैत्रपुष्णकारमञ्ज्ञ ॥ Person कारकिः शास्त्रो मेतः पाकवः कर्णकानम् । सङ्ख्याचेत्रः एसस्रोऽनि पृत्रके विरोधीक्रमानिः ॥ प्राञ्चलानी तु कवनातु प्रद्यक्रमा प्रकारकी । अनुविध्यक्तने प्रताते प्रत्यक्ते पान संस्थाः ।। कासकारणीकिकामम् इक्शानकारकः गर्नकीतन-पराकरभौग्याक्षिरसम्बद्धिनास्कृतिन्द्रीत्यसम्बद्धाः सम्बद्धे न्यस् (4med 12+124-24) ने जतम् ॥

> कुलान्द-स्वाग एवं प्रदु-नश्चवातको 📟

समयान् ब्रीकृष्णः केले—महाराज । अय मै कृतकः (बैगन) के स्थानको 📟 बता एक है। अधीको च्यहिने कि एक वर्ग, कः मान अधवा 📶 📖 कृत्तकका स्वर्ग कर तकायन को । उसके 🚃 संकरमध्यंक भागी 🚃 🕶 नक्षत्रमे उपवासका एक ---- उसमा असन-प्रयोसे 🚃 🚅 हरके 🚃 आवाहनकर कथा, पुर्व, नैवेच आदि उपचारोंसे क्य, ब्राह्म नैक, विक्युत, वैवस्तत, मृत्यु तथा फरमेडी—इन पुष्पक्-पृष्पक् 📟 विधिपूर्वक पूजन करे । तदनकार अग्रिस्थापन कर जिल और बीसे इन्ही नाम-पन्नोंके द्वारा इका करे । तदनका किस्कृत् एवं प्राथकित होय करे। आयुक्त, कस, 🚃 पूजा करन कम्बल, काला बैल, काली गांप और दक्षिणके स्वथ सोनेका क्य हुआ कुत्तक आहाणको दान कर दे और अपनी सक्तिक अनुसार प्राप्तण-चेवन कराये । ऐसा चर्नसे चैकरीक-चत्रका

करपान 🔚 अञ्चलको निदा 🚃 सम सामग्री उसके 📟 🔤 है। 🔤 🚃 मोजन करे। इस सम्पूर्ण वतकी जो 📺 बार पी प्रसित्ते 📟 🕽 📰 व्यक्ति-ज्ञाका सम्पूर्ण कल यह कर रोता है और बहमान्के पापसे मुक्त हो जाता है । इस 🚃 🗷 करता है, 🚃 घन, रूप, आरोग्य, 🌃 आदि 🚃 कर 📕 🚃 भूतिया 🚃 चोगकर स्वर्ग 📖 करता है और अन्त्रमें पोक्रको ऋत होता है। महाराज । प्राथमितरूप इस सम्पूर्ण बालको प्रसाव हो 🔤 गर्गजीने मुद्दे। 🚃 था 🔤 📰 📰 📰 हमे 🔤 इस्रहिन्दे शयन् ! अप की इस करावें करें, किससे सम्बन्धोंने भी 🔤 सम्बन्ध सर पूर्व 📗 कर्य । राजन् । इस्ते काला एक अन्य परमाजी-वर्त है, जो क्षेत्र 🚃 है एक 🔤 विकित्तंक विक्**रास्त्र** 🚟 🚟 कुछ 🚃 बाल है, अन्तमें 🛅 उपनवर्गीसे मुक्त शब्द 🚃 निज्ञानीया बाह्यवर्ग दन पर दी जाते है । 🔤 📟 🚃 📰 वह सद्भवाके 🚟 प्राप्त करती रहे। इस काहे करेले पञ्चित्वे नेत्री अच्या विकास है। - ti - tt+-ttt)

परंत प्रका 💹 है। साम 📗 🚃 शार्त अन्यतम 🚃 पक्षेत्र नहीं करना पहला और वह दोवें **:::::::::** लागि सन्दर्ध होकर शिक्स करता है।

भागवान् श्रीकृष्यने पुनः शक्षा—भग्नराज । अन में पह-नवान-करानी विकि **स्थान हैं, स्थान** करनेसे सभी कूर प्रह स्वन्त 🕍 🔤 🖥 और सम्बंधी, भृति, तुष्टि तथा पुष्टिकी प्रक्री होती है। जिस प्रीवासको 🚃 🚃 से हो दिन क्याबान् सूर्वका पूजन कर नत्तकत 🚃 साहिये। इस नतकारको सार रविकारतक परितपूर्वक करके अन्तमे मगवान् सुर्वेकी सुवर्णनकी 📟 कन्नकर तहमपत्रमें स्थापित करे । नित क्से 🔤 साम 🚃 रक्त कदर, रक्त कुम, रक्त क्रम, सूप, 📰 आदिसे पूजनकर रुतुका भोग रुगाये । बूता, स्थता, दो 🚃 📠 और दक्षिणके साथ 📖 प्रतिमा मास्रणको दे । 🚃

क्रकचे करनेसे अधेग्य. 🚃 और संदानको अपि 🚾 है ।

नक्षणसं पुक्त भीषवारसे आरण व्याप्त भीरमसंस्तक परावार करके अपनी सुवर्णको विकास अपनि व्यापत सामग्री स्थापित व्यापत स्थापत व्यापत व्यापत सामग्री स्थापित व्यापत व्यापत स्थापत व्यापत व्याप

करके बिह्न योग ब्यास सब सम्पन्ने एवं सूर्ते जाह्मणको प्रदम्भ कर दे। इसी अक्षण ज्येहायुक्त सुक्रवारको जतका उक्षण्य कर ब्या सुक्रवारकक नक्षणत करके अक्षणे सुवर्णकी सुक्रको प्रदिम्भ क्षण्यतः ब्या अध्यक्ष अध्यक्ष प्रतमे स्थापित ब्या ब्यास स्थापना ब्यास अध्यक्ष अध्यक्ष कर यो और प्रयस्का योग सम्बन्धे। सम्भ पदार्थ एवं प्रतिया ब्याह्मणको प्रदान करे।

इसी विधिसे मूळ नक्षत्रपुक्त सनिवारसे असम्भ कर सात अनिवारकक नक्ष्यत करके अन्तर्थ प्रति, यह और केतृका पूजन करक व्यवसीयी अरिवाडोंसे प्रत्येक प्रहको अपसे एक अवड अथवा अपूर्वस आ अतुति है। प्रतिबार आदियी अथवा सुवर्णको क्यापे। कृत्याक्ष्य योग अथवा सुवर्णको क्यापे। कृत्याक्ष्य योग से प्रतिमाद व्यवस्था अयान कर है। इससे सभी स्था

विश्वपूर्वक करनेसे कृत यह भी सीव्य 🔣 असुकुरू हो जाते

है और उसे जारित प्रदान करते हैं।

(अध्याच १११-११३)

#### —अक्टार-सनैश्वर-प्रतके प्रसंगमें पश्चमूनि विचारमञ्जा साम्बन्ध

धगवान् जीवरका कक्षते है—राजर्! एकं कर वेलपुगमे अन्तवृष्टिके कारण भवंकर दुर्विश यह गण । उस चेर अध्यक्तमें कौड़िक्रमुनि अपनी भी तक पूर्विक साच अपन्य निकास-स्थान क्षेत्रकर दूसरे प्रदेशमें निकास करने निकाल भड़े। कुट्राक्कर भरण-चेक्य दूधर हो जानेके करक बड़े कहुमें उन्होंने अपने एक सलकको मार्गमें ही सोड दिया। वह बारुक अकेटर पृष्ठ-प्याससे तहपक हुआ रोने रूपा। उसे अकरमात् एक पीपलका वृक्ष दिलापी पदाः जन्म समीप ही एक मानावी भी भी। बारम्बाने पीपरूके पारचेको साकर दंबा जल भी लिया और अपनेको स्वरण प्रकर यह पता पतान तपस्य करने लगा तथा शिलकी पेपलके फलोको सकत समय व्यक्ति करने लगा। अन्यनक वहाँ एक दिन देवर्षि नारद प्रभारे, उन्हें देवकर बालकने प्रवास किया और अदरपूर्वक मैठाया । दयान्तु नारदणी उसाधे अवस्था, विनय और नप्रताबने देशका बहुत ही प्रसान हुए और उन्होंने बालका भौतीयका आदि सब संस्था कर पर-प्राम-

कारमाहित केदबर अध्ययन काइस तथा साथ ही हादशासर कैम्सकरण (के क्यो कामती कासूरियान) III उपदेश

अस यह प्रसिद्धन विष्णुमनकान्त्र शहन और मन्त्रक यम करने रूपा। नश्टजी भी वहीं रहें। धोड़े समयमें ही सालके उपसे संतुष्ट होकर यमकान् विष्णु मरुद्धपर सकत हो कहीं पहुँचे। देवपि जारके यसनसे वारकाने उन्हें पहचान रिच्या, तम उसने भगकान्त्रे दृह मिलको सीम की। भगवान्ते प्रसाध होन्य क्रम और भोगका उपदेश प्रदान किया और अपनेचे मिलका आजीर्काद देकर के अन्तर्धन हो गये। मगकान्त्रे उपदेशसे यह बारक महाहानी महर्षि हो गया। एक दिन कारकाने नगदगीसे पुक्त— महाराज ! यह

किस कर्मका फल है के घुड़े इतन कह उठाना पद्म । इतनी कोटी क्रक्काने भी मैं क्यों महोंद्राय पीड़ित हो रहा हूँ । मेरे

पाया-पिराका कुछ भी परा नहीं, वे कहाँ है। फिर भी मैं

अरक्त कहते जी द्या है। दिखेतम ! सीभाष्यवदा आपने

द्या करके मेर संस्कार किया और मुझे स्थानक प्रदान किया।' नारदर्श पण वचन सुनकर बोले—'बालक ! सर्वेश्वरपहने तुन्हें बहुत पीड़ा पहुँचयी और अध्य यह सम्पूर्ण देश उसके मन्द्रपतिसे चलनेके बाला उत्पद्धित है। देखों, बाह अधियानी शर्वश्वर यह आधारामें प्रमानित स्थान

यह सुनवर वारका आवा समा समा समान इस । उसने तम दृष्टिये देशकर स्त्रीवरको अववस्त्रको पूजिकर गिरा दिवा । प्रतिवार एक पर्यक्तर थिर और उनका पैर दृष्ट गया, जिवास ये पंतु हो गये । देवनि नारद पूजिकर गरि पूज प्रतिवारको देशकर अववन्त प्रसारको नाथ उसे । उनके समी देशको मुख्यमा । बहार, सह साथ अपि सादि देशक वहाँ साथे और नारदयीने प्रतिवारको दुर्गीत स्थानि स्वादकन

प्रशासीने बारस्क से कहा — महत्वार । सुन्ने केन्द्रके कहा प्रथम हा अहिन तथ किया है। उस्त कर स्वेन कुछा। विपास है। उस कर से कुछा। विपास है। उस हा विपास है। उस हा विपास है। उस हा विपास हो। विपास हो।

प्रकार प्रकार निवृतिके दिन्ये इतिवादको स्वयं तैरक्षण्यम् करके महार्ग्यको भी अञ्चलके रिज्ये तैरा देश पाहिये। इतिवार स्वेत-प्रतिमा करावर तैरायुक्त स्वैत-पानने

प्रदान करते हैं।

पुष्प, क्षेत्रक प्रति शनिकारको पृष्प करनेके बाद कृष्ण पुष्प, क्षेत्रका करा, करा, तिल, पात आदिसे उनका पूजन कर करानी पाप, काला कराए, पाता तिल और पदार्थ भारतको प्रदान प्रति पादिये। पूजन व्यक्ति प्रतिके इस सन्त्रका प्रयोग प्राणा पादिये— भ्रां से वैकीनिकार आयो भारतु दीतये। में केरिय सामग्रु कः म(क्यून १६)(२)

राज्य नह बुद राजा नतनको अनिदेक्ते सामग्रे अपने एक प्रार्थमा-कावक उपदेश दिया हा। उसी माम-स्मृतिसे उन्हें युक्त राज्य उपरच्या हुआ या। उस स्मृतिसे अनियी पार्थन्य कावी पार्थिक। सर्वकारपाद हात स्मृति इस प्रथार है—

कोई नीरकारकार नीरवार्गरावारकार्। स्वापार्थाकारकार्थ नारकारि सर्वेश्वरम्॥ नकोऽर्शनुसाय सर्वेश्वराय वीहरसर्वाश्वरकेषकारम्॥

श्रीमा रहता अवनास्त्रहात सरमाने से सम सुर्वश्री श क्योज्या कैसरमान कृत्याहित में गरः । इत्याहित हरून सुरक्षिक्रमानिये । य सुरिक्तांनीयः स्त्रीति तस्त्र हुन्ते सम्बन्धान् । स्त्रीतं सु अनं तस्त्र व्यवस्ता स अविकास ।

(उस्तमार्थ ११४ । १९-–४२) औ भी व्यक्ति प्रत्येक शनिवारको एक वर्षतक इस असको \*\*\* है और इस विधिसे उद्यापन \*\*\*\* है, \$\bigsim कमी दनिकी

 अहं ब्या पहले । यह कहकत व्या सभी देक्काओं के अपने परमधामको चले गये और निम्मस्करमुनिने भी महाचीके आज्ञानुसार सनैश्ररको उनके
 अस्ति का दिया । महायनि विच्यक्षदेने सनिम्हकी

१-वर्ष व्या व्या स्था सुद्ध है। इसके पहले प्रतिकारी केह के बात विश्व की कार्य स्वयंत्र के व्या है। इसके क्षण प्रथ स्वयंत्र के व्या व्या व्या प्रथ स्वयंत्र के व्या कार्य व्या प्रथमित के देश कार्य का प्रथमित कुर । सभी कार्य की प्रथमित कुर कर्मकारी है। व्या कर्मकर है, व्या केंद्र की व्या व्याप्ति । २-वर्षण व्याप्तिकार व्याप्ति व्याप्तिकार । क्रम्याच्या व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्यापति व

इस प्रकार प्रार्थना की-

कोक्स: विक्रुले बच्च: कुम्ले रीवेश्यको का: । क्षेतिः सम्बद्धाः स्रोतातं ये व्योक्तः ॥

(क्षरा ४५५ निजात)

💻 🚃 समैक्षरोपास्थानको परितर्शक सुनवा 🖣 तथा प्रतिको लेक-प्रदेश काकर 📖 धरे 📷 लैह-कलदाने रककर ब्रह्मचको दक्षिणासहित दान देवा है, उसको कभी भी 📖 पेक् 🔛 हेती। (अध्यय ११४)

राजा मुकिश्वरने पूज-पन्धान् | व्याप कोई ऐसा इस बसरकारे, जो सन्पूर्ण कार्येका 📖 करकेकरण, अरोप्यवायक और अनन्त फराबद हो।

चगवान् श्रीकृत्या चोले-- एकर् ! को परम समातम भाग है, वह संसारमें सूर्व, 📰 🚥 कर्—१२ तेनोमे विश्वक श्रीहर रिश्त है। कुलबुत ! का परमात्मको आरावम कर मनुष्य का नहीं जो कर सकत ? इसलिये रविवारके दिन नतावत करना चाहिये । मनवान् शुकी अभव्य भीत रक्षकर व्यवस्था 📰 अत करन व्यक्ति । ब्राह्मणीको विधिवार् पूजकर स्वयंकाल स्वापाल स्व श्रदसदल कमलकी एवन को और उसके प्रदश दलोने सुर्व, दिवानार, विश्वपान, चार, वध्य, महेना, व्यापान सुर्वेक ३०४, यम, मार्गण्ड 📖 रोक्सी स्थापक करे 🔤 🚃 पूजन 📰 तिल, स्तायन्दन, फल तथा अवतारे पूज अर्थ अञ्चल गरे । अनुसार विकारित कर दे । स्वर्ण भागवान् पासकाका समाप करता हुका हैत्यदित कोवन करे। सतके पूर्व दिन प्रानिकाको सैल्यन्त्रम् २ करे । इस क्वार 🚃 🎟 🚾 क्त करके उद्धापन करे और स्थानकि गुरुसे पूर्व एक ताप्रापामें सर्गकमर स्वपित को तथा उसके उत्तर सर्वन्त्री भगवान् सुर्वेकी द्विषुध प्रतिम 🛲 🖷 📰 📰 सुवर्गमधी समस्ता मी भी स्वाधित करे। इनक पूजा कर विद्वान् सहाजको यह सब सामग्री निवेदित कर दे।

इस प्रकार जो भी-पुरुष इस मतको वर्षपर सम्पन्न कर विकिपुर्वक 🚃 करते हैं, वे जीरेग, पार्मिक, धन-धान, पुर-पीत्रसे ........ हो बाते है और अन्तमें शुर्वशेष्टको प्राप काते हैं।

धगवान् श्रीकृष्ण पुनः कोले—स्वन् ! जब 🗓 रंक्रानिके समय किये जानेवाले उद्यापनकप अन्य त्रवका वर्णन कर रहा है, जो इस लोकमें समझा कामकानेके फलका

आदिरक्षार 📺 सामान्य स्वाप्ति । अपने 🛶 रूपना विधि

🚃 और परलेक्ष्में असूच फलदावक है। सूर्वक उत्तरायण य दक्षिणकरके हुए समा विज्ञवरोगमें इस सामाना अस्त्य करना चारिये । इस सराये 🚃 पहले दिन एक 🚃 🚃 करणेर (राजिये ज्ञायन 🔤 ।) संस्थानिको 🛄 इक्ट ब्यास द्वारा 🚟 🚃 विल्लंगीयत प्रकार जान करना वाहिये : सूर्व-संबद्धांतके 📰 शूनिया कदनसे क्यासको एकन करे और उसका सुर्वका 🚃 करे । 🚃 'सुर्वाब नवः', पूर्वदरूपर

'आवित्याम काः', व्याप्तिक दलपर 'सहाविके नमः', नमा', नैव्यासकोणमारी दलपर च्या:', व्याप्तास्य 'वक्तावः नवः', वायम्यकोण-

**ा** दलक 'सन्तरको नग', उत्तरहरूप 'कार्नकाय 🖚:' 🔚 (साम्बनेनकले दलक 📟 म्यः'—[न मन्त्रेसे सुनीरको स्थान कर 📖 हारूकर अर्थना भीर । क्रत्यक्षात् केदीपर भी भन्दन, कुथभारत, फल और साध

🚃 🚾 पुनः 🔤 📰 और अर्थ प्रदान करना 🚃 पुरः अपनी इत्तिके अनुसार 🚃 कमल करकार उसे कृतपूर्व 📖 और कराउन्के साथ अस्थानके दान दे। तस्थात् चन्न और पुन्यपुक्त जलसे भूमिका

सुर्वदेशको अर्च्य प्रदान करे (अर्च्यक मन्त्रार्थ इस प्रधार 🖫 ) व्यक्ति । जान ही विश्व है, विश्व व्यवस्थ सक्य है, आप किश्रमें सर्वाधिक तेजस्मी, सार्थ उत्पन्न होनेवाले, श्राता

और ऋषेट, समस्वेद एवं यज्ञवेदके त्यापी हैं, आपको **परवा**र जनसङ्घर है।' इस 📟 वन्त्रवाचे प्रत्येक मासमें साद कार्य सम्बन्ध करना चाहिने काचक (यदि ऐसा करनेमें असमर्थ हैं।

तो) वर्षको सम्बद्धिके दिन बह स्तरा कार्य बारह बार करें

(थेनेका फल सन्बन ही है)।

वर्ष व्यक्तित होनेपर पुत्रमित्रित स्त्रीरते अपि और केंद्र व्यक्तिको मस्त्रेणाँव संतुष्ट को और बाउ गी एवं

स्वसित सर्पमय कमरूके साथ करूजोंको दान कर दे १ हरी सोने, भीटी अथवा रिक्नागमहित पृष्टीकी साम दानणस्य चाहिते। यो ह्या बर्टामे असमर्थ हो, वे आटेवी शेवसहित पृष्टीकी प्रतिया नगम्बर सूर्यके साथ दान ह्या सबता है। इस पृष्टुकोक्ये प्रोन्द्र आदि देवगमी, हिम्सस्य

पुष्प श्रीण होनेपर यह सृष्टिके आदिये उत्तम कुल और शीलके सम्बाध होकर भूतलपर साथ द्वीपोका अधीवर होता है। यह सृष्टर स्था और सुन्दर प्रमंसे युक्त होता है, बहुरा-से पुत्र और पाई-बागु उसके करणोंकी करना करते हैं। इस मन्तर स्था सूर्य-संवर्धनारी स्था पुष्पपत्मी आणित विधिको पाँकपूर्वक पहला वा श्रमण करता है अपन्य इसे करनेकी स्था है। (अध्याम ११६-११६)

## +स्ट्रिक्ट्रिके+ भारत्वा च्या एवं उसके प्रत्यो 📟

राजा सुधितिसने पुत्रम—सगवन् ! हिम्मान का निर्देश नामसे प्रसिद्ध है, यह कैसी है, मॉल है, यह विकास पुत्री है, उसका पूजन विका विधिसे किया जाता है ? कृतक आप वास्तीका कहा करें।

यगवान् श्रीकृष्या थेले — बहुत्तव ( परा प्रगानन्

अभिन्तः गन्धवंसमृत् 🚃 🎟 पर्वन्तित पुना करते हैं ।

सूर्यनाग्यमको 🚃 है। यह पनवान् सूर्यको 🔤 🚟 हरपात है और इन्देबरको साथै बहिन है। यह काले वर्ण, सन्ते केरा, को-को दति और अपूर्व स विकास करवाल है। जनाते ही वह संसारका जास करनेके दिग्पे दीकी, ब्लॉम्पे विद्या-माध्य पर्वृत्याने 🔤 🛗 🚃 तथा प्रमुक्त-माध आदिमें उपरांच करने लगी और क्रे. काल्के 🌉 व्यूचने लगी। उसके हुन्यान समामको बेसकर कान्यन् सूर्य া 🗎 🖟 के अपने के अपने का 🗗 का 🗷 🚃 🚃 विक्या । 🚃 विरस्-विका भी देवता, असूर, विकार आदिसे सूर्यनारायणने विकासका प्रतास रका, तम उस पर्यकर कन्यारी कोई भी विकाह करनेको तैयार ॥ हुन्य । दुःचित हो सूर्वनारामकने अपनी कन्ताके विश्वहके किये ...... बनवाया, पर उसने मण्डप-तोरण उन्नीर सक्को उन्नादकः पेक दिवा और सभी लेगोंको कह देने सभी। सुर्वकारकाने सोवा कि इस दुष्टा, कुम्पा, लेक्सकरिनी कन्यका निवाह किसके साथ किया जाय। इसी समय प्रकारे द्वाकरी देखकर

बहाजीने भी सुर्वके पास आवार उनकी कन्याद्वारा किने गये

टुकारोंको कारकता का सुरक्तर सूर्वत्रपक्तने करा-'सहार । अहर हो हो इस संस्तरक कर्ता तथा पर्या है, 🕮 अप पुरसे ऐसा क्यें का से है। जो भी आप असित कार्यों को करें।' सूर्वनस्थानका ऐसा बचन सुनकर सहाजीने विक्रीको कुलका कहा—'ध्ये ! यम, लालक, कोल्प आदि करचेकि असमें तुन विकास भरों और 🗈 व्यक्ति पात्रा, प्रचेश, प्राप्त करन, **वर्षा**, प्राप्त उद्योग आहे. कार्य तुन्हारे क्रमध्ये भूदे, प्रकृति क्रुप त्यात करे । तीन दिनतक सिन्त प्रकारकी काचा न करने । चौचे दिनके आधे भागमें देवता और 🚃 तुमारी पूज कोंगे। 🖫 तुमार कारर न की उनका बंदर्व तून व्यक्त भार देश ।' इस प्रवार मिष्टिको उपयेश देशन 🚃 🚾 अपने 🚃 चले गये, इचर विश्वि भी देकता, दैत्य, बनुष्य सब अभियोक्ते कह देती हुई चूनने रागी। यहाराज ! इस तरहको पराको उत्पन्ति हुई और यह अति दृष्ट प्रकृतिकी है, इसरिये पहारिक कार्योंने अलग अवद्य 🚥 🚥 स्ववित्रे । पत्न वर्ष पद्मी मुख्ये, से पद्मी कच्छमें, स्वरत पद्मी

इरकरें, चर कही अधिमें, चाँच मही कटिमें और तीन मही

पुष्पाने रिक्श 🚃 है। यह पदा मुखने रहती है तब कार्यका

कुछ होता है, करूपने 🚃 नाश, हदयमें प्राप्तक नाश,

न्यपिये करूड, ब्राटिमें अर्विभेश होता है पर पुष्पारी

निवित्तकलमे जिल्ला एवं कार्य-सिद्धि हो जाती है<sup>र</sup>।

र-पूर्व पु विकास है करते हैं कर किया विकास विकास विकास है। बहुत पूर्व विकास पुरत सम्बद्धाः पुरते सम्बद्धिताल क्षेत्रक सम्बद्धित है। पहाके बारह नाम हैं—(१) धन्ता, (२) द्रवियुक्ती, (३) भटा, (४) महामाठे, (५) करानत, (६) कास्त्रती,

(७) महस्त्रा, (८) विहि. (९) कुलपुरिसर, (१०)

भैप्नी, (११) महाकाली तथा (१२) असुरक्षकार्धः

इन बारह नागोंका अतः काल उठकर को स्वरण करता है, आ आ भी व्यवस्थित पन नहीं होता। रेगी रेगसे मुक हो आता है और सभी वह अनुकूल हो जाते हैं। उसके कार्योंने कोई जिए नहीं होता। पुद्धने तथा एककुलने वह कियम का करता हैं। जो विधिन्तुक दिस्य विद्वित्य पुष्टा पाता है, निःसंदेह उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। अब मैं महाके बतकी साम बता हुए हैं—

राजन् । जिस दिन पदा हो उस दिन उनकास करने बाहिये। यदि व्यक्ति समय पदा ही ती हो दिनतक एकपुक इस करना बाहिये। एक अहरके कद भए हो तो तीन प्रहातक उपकास करना बाहिये अधना एकपुक्त एइन व्यक्ति व्यक्ति अधना पुरुन इसके दिन सुगन्य व्यक्ति करणार समीविध-युक्त विक्री उसन करे अधना हिंदी अहरका जावर विधिष्ट्रीय कान करे। देशता एवं विक्रोका वर्षण तथा पूरान कर कुत्रकरी महावदी मूर्ति बनाये और गम्य, पुन्न, यून, रीन, विक्र अवदिन्ने उसको पूजा करे। मारके काल कमोसे एक ■ आठ बार इका करनेके बाद तिल और पायस झाइएको भोजन कराकर ■ भी जैन होकर किल्लिकित क्रमापका चोजन करना च्योंने। किर पूजको असमें इस ■ प्रार्थना करनी च्योंने---

क्रमण्युर्वसूत्रे देशि विश्वतिहार्यदाधिकः। चौत्रवारि स्माप्ताः स्था

(उत्तरको ११७ । ३९) इस **व्याप सम्ब** भद्रमत सर अन्तमे उद्यापन को ।

विशेष कराकी मूर्तिको स्वापित व्या वस प्रश्नकर गन्ध, पुण आदिसे पूजन कर प्रार्थन करे। रहेश, तैरु, तिरु, काद्मस्त्रीत कार्य गम्प, कारण कन्मरु और प्रश्नकीत एकिवर्ष भाग वह पूर्ति क्षाप्रकरे दान कर देन व्यक्ति प्रश्नकीत करना चाहिये। इस विभिन्ने जो भी कार्यन प्रश्नक और मत्त्रज क्रान्य करता है, उसके किसी भी कार्यने किस नहीं पहला। भारतात करनेवारे विश्वी मेत,

विज्ञाण, विक्रियां जानिको राजा 📰 आदि कह नहीं देते। उसका इससे विकोग नहीं होता और अन्तमें उसे सूर्वकोककी साथ होती है<sup>7</sup>। (अध्याय १९७)

महर्षि व्याप्त कथा और उनके अर्थ-शनकी विधि

राजा युविद्याने पूछा—चरावम् ! .... अस्य सभी सूर कानेकाले अगरूपमृत्यिक परित्र, अर्माद्यस्यो स्था और अगरकोटय-काळका कर्मन

भगवान् श्रीकृत्यने कहा—महाराज ! एव कर देवत्रेष्ठ भित्र और करण दोनों मन्द्रश्यक्तम कठिन तसका कर रहे थे। उनकी तपस्त्रामें बाधा ठालनेके किये इन्द्रने ठर्वत्री अस्माराको भेजा। उसे देककर दोनों सुध्य हो ठठे। अपने मनके विकास समावन उन्होंने अपना तेज एक कुश्मारे स्थापित कर दिया। राजा निर्मिके स्थापने उसी कुल्यमे अध्य व्यक्ति चरित्राका अध्यक्त दिव्य त्योधन महत्या अगस्यका व्यक्तिया हुआ।

अगस्त्रजुनिका लोगानुगरी हुआ। विक्रोरे क्षित्र अगस्त्रभूति अपनी पंजीके साथ सकर यस्त्रपर्यक्ते एक प्रदेशमें वैकानस-विधिके अनुसार अस्त्रना

पूरे जन्मते हेन जन्मे हैं करनान्त्र । स्टब्स्ट्रिक्ट सूर्व मान्य मान्य मान्य । स्टब्स्ट्रिक्ट सूर्व मान्य मान्य मान्य मान्य । स्टब्स्ट्रिक्

२-प्रत्ये द्वार्थित क्योंनि क्याने विद्याले काँन विकास है, विकेशन पूर्व कियानीको सेनुकार व्यवको । प्रास्तिते 🔤 व्यवक हा है। 🔛 अन्य अनेक 💹 दुर्वन, 💹 💹 💹 व्यवक्ति क्योद्धानो कर्ग 💹 🖺 हाला पूर्व क्या अन्य २४ केल हेत है। 📷 अध्यकों असे कुराको क्षेत्रके क्यानेक करणा 🔀 एक है और अध्यक्ति अध्यक्ति में अन्य स्थाला है।

कठोर तप करने रूगे। वे बहुत ===== रुपस्य === रहे, उसी समय बढ़े 📕 दराबारी और 💹 🚾 🚜 🗷 यहाँका विश्वास करनेवाले दो देख जिनका नाम इत्याल और वावापि था, वहाँ उपस्थित हर । ये दोनों कई हो कवाची ये । इन दोनोंका प्रतिदिनका कार्य यह था कि एक भई मेन बनकर · प्रकारके भीजनीका कप भारत कर लेखा और दुसक भाई श्राद्धने मोजन करने-हेतु ब्रह्मलोको निमन्त्रण देकर बुल्पता और पोजन कराया। फोजन कर 💏 तुरंख कद ही इत्यक अपने भार्मिय नाम लेका पुरस्ता । देखारी पुरस्त सुनते ही असम्ब दूसरा पाई महानोंके पेटको चौरता हुआ बाहर निकल जाता था। 📺 🚃 📹 छेने देखेंने अनेक सहरणो तथा मुनियोको पर 🚃 एक दिनको 🚃 📱 इस्करने पृतुक्ताने 🚃 लक्षणीके साथ अगस्यपृतिको 🚟 🛗 🚟 च्या भोजनके समय अगसवनुनिने **व्याप** छत कराय शवा भोजन कारा-स्व-सारा 📰 🚃 पर पनि 🎟 होकर शुद्ध हो गये थे। इत्यालने पूर्वदेशियो 📰 भर्द वातापिको पुकरस्कर कहा—'धाई ( अस धर्म मिशन्स कर स्हे हो, भृतिके अरीरको चीरकर बाहर 🛍 व्यक्तो 🖰 इसकर अगरूपपूर्विने कहा---'करे दूह दैख ! कुहारा पर्क करापि के बदरमें ही भाग होकर समाना हो एक, अब वह बहार कार्यि आयेगा। यह पुरस्तर 🚌 बहुत है 🚃 🖥 📖 परंतु अगस्त्वपृत्तिने उसक्ये भी कावा हुन्द्र हृष्टिसे करपका भस्म बर धाला। उन दोनों देखेके बारे क्रमेवर रोग देख 🔣 मुनिके जैरको समरण करते हुए भगभीत होकर समुद्रमे कका किय गये । ये राधिके समय समूहते बाहर विकालका मुनियोका भक्षण करते, यहपात्र फीड़ हारुते और पुनः समुद्रमें तकर छिप जाते। दैलॉके इस प्रकारके उत्पातको देखका बहा,

इस प्रकार महर्मि अगस्त्रने इस संस्कृतको निकारण कर

विष्णु, शिव, इन्द्र आदि सभी देवता आपसमे विश्वस्कार महर्षि

अगस्यजीके पास आकर बोले-'ब्रह्में । अन्य सम्बद्धके

जलको सोज लेकिये।' 📖 स्टब्बर अगस्यवीने 🔙

आमेथी भारणका 🚃 📰 समुद्रके करुका पन का

रिन्या । समुद्रकं 🚃 जानेपर देवलाओंने 🚃 सभी दैखोंका

संत्रार कर डाल ।

दिन । उसके कद गमुखाँके करूमे समुद्र पुनः घर गया लाग देवता और देखेने जिलकर मन्द्रस्वल पर्वतको मधानी तथा बगराम कस्थिको रस्ती भनकार समूहका मन्यन किया । उस समय समुद्रते चनाम, रुश्मी, अमृत, कौत्युक्पणि, ऐरावत हानी अबदि उत्तम-उत्तम रहा निकले । समृद्रसे ही अति भर्पकर 🚃 🖛 भी निकला, किसके गन्यमञ्जले ही देवता और 🔤 सबी भृष्णिय होने रुगे । इस कारुक्ट विषका कुछ भाग र्मकरने 🚃 कर रिज्या। निकर्स ये 🌉 क्कार्यने, तक व्यापना बढ़ा वि 'भगवान् प्रकारके अतिरिक्त न्त्रस्य ऐसा किसीमें सामर्थ्य नहीं है, 🖫 इस देव विकास पान क्ष्में, ज्याः देवरायो । आप सम दक्षिण दिश्तमे संबाके समीप **ार्ज कर्मा** अनक्ष्यमुनिके पास साथै, वे हमलोगोंके इसमञ्जा है। महस्या 📰 प्रकर सभी देवता जनसम्बद्धिके पास गर्ने । सुनिशेष्ठ अगस्त्रने स्थिति पास चकर रुद्धे वह अस्तरासन दिया कि मैं उस विवक्ते अपने ज्येक्टके प्रकारते क्रियालय 🚃 प्रविष्ट कर देंगा। तब 📰 📖 🔛 हिमालयके शिक्को, निकृती एक क्षोमें कियर शक्त और देश बंधे हुए **ाष्ट्रिया अस्त्र अर्थः अर्थार पश्चीम उन्होंने बांट दिया। उसी** विम्बरम्य पर्वतके विकसे पुरत बायुके प्रभावसे प्राणियोगे अनेक क्रकारके ग्रेग उत्पन्न होते हैं, जिससे प्रारंगियोंको कह सहन करन पहला है। उस विषयुक्त कामुका प्रभाव कुवती संस्थानिसे लेकर स्था है। **स्था** शास है। पाल है। इस क्यार संप्रतिकृत विक्के विवासकारी प्रकारते मगरकाभिने समस्य पाणियोकी रक्षा की।

पूर्ववालमें प्रवासी शहुत वृद्धि हुई : उस समय शह्मजीने अपने सर्गरसे मृत्युको उत्पन्न किया और मृत्युने प्रजावत पर्वकर विकास किया । एक दिन वह मृत्यु अगस्त्यम्भिके की सम्बद्धाः अस्त्रियाः अस्त्रियाः दृष्टिसे मृत्युको सम्बद्धाः परम कर दिया । पुनः सद्धानीको दूसरी व्याधिकय मृत्युको उत्पत्ति करनी पद्मे । प्रवासकरण्यने म्हिस्स स्वास्त्रियाः व्याह्मकरण्यने

वानेका श्री ■ प्रतिदिन सुकके कारण अपने पंसको ■ कार्कर कष्ट कोग का वा। चा दिन दुःसी हो ■ अगस्त्वकृतिसे कहा—'महाराज! ■ वस्तुओका दान तो मैंने किया है, परंतु करू और बलका कुन में नहीं कर सका और न मैंने ताद्ध ही किया। इसरिल्ने मुझे इस क्याने अधिदिन अपना 📰 मोरा 🚥 पढ़ रहा है। प्रयो ! 🚥 🚥 करके कोई क्यात अंक्रिये, जिससे 🕬 দ इस विपर्धिसे 🚃 प्राप्त हो ।' राजाहारा इस प्रकार दीन क्यान सुनग्रह अगसम्बाह्नी इयाई 📗 📰 और उन्हेंने खोंग्रय ऋष करना। श्रास्टक ······· सहसा वह हिम्म देह करनकर नगरकेको हिन्स योग योगने समा। 🚃 बार विन्याचरा पर्वतके इदयने वह जब ३ठा 🗎 सर्वनस्थान मेरपर्वतन्त्रे परिक्रम्य से नगरे 👢 पर पेरी 📖 करते । क्यें न मैं उनका मार्च वेश्व है। करने का 📖 कर विश्वयागिरि **व्या** वहने **व्या** विश्वयासको कामे 🙉 देशका सभी देशक मानुस्य 🛮 उठे 🚟 🚃 अगस्त्वमुनिके पास जाका निष्या निरमा—'प्रध्ये ( अस मुखकर सुर्वके 🎟 अवरुद्ध करनेवाले उस विज्वानिको 🚧 🔤 💴 बार् दे 🖰 🚟 विश्व विश्ववर्षक करन कहा—'पर्वतोत्तम । मैं तीर्वपात करने का पह 🐧 कुम केहा नीचे हो जाओ, हो इस यह चला करें।' युनेकी आक्रमे विकासक नीवा हो गया। अगस्त्वपृथ्नि पर्यक्षके व्यक्तिक क्यू — 'जनतक मैं तीर्थचक्रसे चपस नहीं ३३ जाता. 📖 क्त इसी व्यक्ति रहता । इत्या कहकर अगरस्यकृति व्यक्ति

आकारामे दक्षिण दिसमें देवीन्यमान 📕 छे हैं। 🔙 सोपानुहाके 🕮 मार्चि 🚃 📉 📉

एक समयको बात है, अपने पत्ने लोकपुरूबी हजारार अगस्त्रजीने कुमेरको बुलाकर सम्भदके सभी ऐवर्ष महरू, प्राप्त, वस्त्रपूरण कि उन्हें का कर कि लोपामुक्के साथ अगस्त्रजी बहुत समयक

दिश्वको चले गये और फिर वापस नहीं लीटे। अस्य भी

गुजन् । इस प्रकार अगस्त्वमृतिके अनेक अञ्चल दिवा बाह्य हैं। आप भी मगवान् अगस्तके तिये अर्ध्व प्रदान करें, इससे आपको मसम् पुण्य प्राप्त होगा। उनके अर्ध्वक्रकी विभिन्न इस सामा है—

जब करना रुद्धिमें सूर्यके सात अंश (५।२२) रोप क्ते हैं, उसी दिन पहर्षि अगस्यका पूर्वने उदय होता है, 📖 समय 🛲 नामर अर्थ देन चहिये। इतीको चहिये 🖿 कतः केत तिलोसे स्कानकर केत वका, 🛅 पूर्णोकी पाला विकृतित होकर पहरत्यसहित एक शुनर्ण करूका **ार्ज को । उसमें कार अनेक प्रकारके चोन्य पदार्थ और** स्कुक-अमहित क्षेत्र का रहे । उसके उत्तर कटाकरी, हाक्यें कम्म्यत् करम् 🌃 हुर, शिल्बेके 🚃 अगस्यमुनिस्र **ब्यापाली कार्यन (व्याप्त करना पाहिये।** तापश्चात् श्रेत कदन, क्योलीके पुष्प, उत्तम भूप, दीप, नैमेश आदिसे उन्नरी 🚃 करनेके 🚃 अर्ज देश चाहिये। कव्, नारेवल, कुम्बर्क्स, सोट, सम्बद्ध, कार्योटक, असरवेरस्ट, बीजपूर (किक्रीय), बैपन, अन्तर, नरंगी, केला, कुशा, नास, दूपकि अंकृत, नीरावासर तथा अंकृतित अन-पत्त सभी सामग्री एक व्यक्ति व्यक्ति एकाल सुनर्ग, चंदी अधक संबंध अवस्थित का हो निरामें सन्ताबर प्रकार-चित्तसे बानुओंको कृष्णेक स्वयत् दक्षिणाविक्षा हो इन अन्त्रोते अकित्र्वेक धनकर् अन्यस्यको 🔤 प्रदान 🚃 चहिये wing-makeng. अस्तिम्बन्धासम्बद्धाः ।

विकास दिवसम्बद्धः नेक्सेयविश्वयम् । व्यापालकः संग्राज्यस्य नविञ्च ते ॥ व्यापालकार्यस्य वेश्व अनुद्धः सोविताः पूरा । लोकपुद्धावतिः सीन्त्रम् कोलती सस्तै नवी नयः ॥ वेश्वेदिकेन स्थापालकार्यः । वार्षे क्योद्धावनकार्यः सिक्त्याकं सुद्धाविते ॥ (क्याप्यं ११८ । ६१—७२)

विकासकरकोः 🏢 कुम्बन्धेने नमोउन्हा ते ।।

देवर्षे । अवस्था वर्षे कारा-पुत्रके समान है, आप अपि और वस्त्से उन्द्रव हैं। निजावरमके पुत्र कुम्मपोने ! आपको साम है। आप पृष्टिमें अमृतका संवार कानेवाले हैं, आपने सिम्म हुए विकासिको निवृत्त किया था और आप समान दिश्यमें निवास करते हैं, आपको नमस्वार है। आपने वासापि स्वारकों असा साम तथा समाहको सोस लिखा, लोकपुद्रके चीर पानदान् आगस्य ! आपको काल्यार कारबार है। आपके उदय होनेवर सारी व्याधियाँ नह हो जाती

(कारणे १२+(Y)

■ किन्यों और पुत्रेके ■■ भगवन् ! आपको नमकार है ।' इस ■■ अर्घ्य प्रदान कर का ■■ विद्यान् केंड अक्षापको दानमें दे है ।

निस्ती एक फल अथवा बात व्यक्तिक एक स्थान करे। इस निविसे वदि बाइल बात वर्गनक अर्थ दे बा सारी बात और सभी प्रायोग्य मनेत्र विवास है।

सुतिय समस्त यूथ्योको स्थाप स्थाप करता है। स्थाप सन साम्य स्थापन सुरुको एवं सनुम्बाको स्थापन है स्थापन स्थापन

म् बेस शहर-मृद्ध तथा पुरसी आगि होती है। विश्वनको अनन्त पुण्यमी आहे होती है, जन्मना तह पति आत होता है तथा येगी अन्तरमृत्रिको अर्थ देशर रोगसे सुरक्षय पा जाता है। दे दे हिंदा अर्था है, वहाँ कमी दुर्विस, अस्मार आदिका पम निर्म है। दिना अर्था है, वहाँ कमी दुर्विस, अस्मार आदिका पम निर्म होता। अनुस्था श्रीको आक्ष्यको सुननेवाले सम्पूर्ण पापेसे हा बन, मुक्त हो सर्गरनेकाले हाई सहते हैं। (अञ्चाम ११८)

सम्बन्, उत्तरोज 🚃 करता 🛮 और स्तियोको सौभाग्य,

# नवीरित कह, गुरू एवं सुधको अर्घ्य देनेवी विवि

नको वर्गातीय व्यापनी प्राप्तकारः पुरः पुरः । आप्यापना स ने सेन्स्रे सोन्यास नको ननः ॥ (अपानी १९९ । ६)

को व्यक्ति इस विश्विते क्यून्यको प्रतिन्तात कर्ना देश है, इसे पुत्र, पीत्र, धन, पत्तु, आरोग्द कादिको प्रति होती है तक स्त्री व्यक्ति हुन्न मोतका व्यक्ति हुन् क्यून्टकेको व्यक्ति हुन्

राजार् । जुलके दोषको निवृक्षिके दिन्ने बातके आरम्परे, गमनकालमें और जुलकेदयके समय सुकदेवकी पूजा अगदय करनी चाहिये । सुकको पूजन-विश्विको में बात बात हूँ, उसे आप ब्यानपूर्वक सुने—

सुकर्ग, 📖 अन्छ। 📖 पान्ते नेरीपुरः 💳

प्राप्त स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

स्थानकर प्रत्याकर्त्यक वृतिको विकार्थत कर सकता गीके साथ यह प्रतिका तथा अन्य सभी समयी आहानको दे दे। इस स्थान सुकटेककी पूजा करनेसे सभी प्रशःकायनाओंकी पूर्ण के साथ है और फसार अन्यों होती है।

स्विक्यसम्बद्धिः अञ्चलको दान कर दे। बाजासम्बद्धः, बृहरविश्विः व्यक्तिः जीर उनके उद्यक्ते समय जो हनका पूजन करता है, उसके स्था क्योरक पूर्व हो बाते हैं। हुन्य तथा बृहरविश्वः इस विश्विते क्या करनेसे पूजकके कर्म उनका दोन नहीं होता। (अञ्चल ११९-१२०)

-X=C>X+

१-इस व्यक्ति । १ के रोजर अधि, गरह, मृहदार्थ व्यक्तिकारी व्यक्ति को को है। व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति ।

प्रकीर्ण व्रव<sup>१</sup>

धरावान् अक्षिक कोले - महाराज ! अन में अध्यत गृह विविध प्रकीर्ण क्रतेषा वर्णन कर रहा है। यो प्रक 🚃 🚃 वृक्षका पूजनकर महाजोको 📖 मरे कुर

पालका दान 🚥 है, उसे कृत-अनुना किसी कार्कि 🔤 शोक नहीं करना पढ़ना। 🕶 कावल 🕶 🕬 दूर

करनेवाला है। सुवर्णकी कुडररहिकी प्रतिक बनावर उसे पीत अर्रमृतमार पुण्य दिनमें महासको 🚃 शहरा चहिते। 📰 व्यवस्थितः 📟 💹 बुद्धिन्दरस्य ै।

एकपुरः रहमर समय, मट्ट, विश्व, औरक, मरिय, प्रीम और सोंत्रसे कुछ पदार्थ तथा शिलाकोन—ने सन्द पदार्थ सन बुद्धम्बी बाह्यकोको दान 🚃 🚃 इस बैक्स्सानको

लाभीलोकनी 📰 व्यवस्था 📰 👯 🟗 । भाजात्वर गाय, बस और सुवर्णक सुदर्शनका देखे तिसूत गुरुष बहु।ज़ब्दे दानमे दे और उन्हें प्रणम कर 'क्रिक्केक्सके श्रीवेताम्' परास्त्राः यहे । ह्या दिस्कोनकारः

भी नष्ट 📰 देता है। एक वर्गतक एकपुरत 📖 तुवर्गक। बना हुआ पाल और अपरक्तोस्तरित निरूपेनु कदानको दन

💹 । ब्रह्म जलको पहलस भवते हैं । यह जल सभी प्रकट के पाप ए। प्रोक्तको पुर 🚃 🕯 और वर्गानी 🔚 बन्धाः है ।

प्रमुची विधिक्ते देश अधीपविधिक्तेतः 📖 स्वास्थ्यः गृहस्थाश्रमके सात उपलायें—यर, उपला, सूप, सिल, बारते, बड़ा 📖 भूत्राका 📖 गुरुव क्यानको देव वाहिये। इसे पूछात करते है। इस मान्य बार्ग्स सम्ब सुन्ह प्राप्त होते हैं । इस मरान्य उपदेश अविश्वामि अनस्याको किया या।

सुवर्णका कमल राधा श्राप्तस्य गुरुस्य प्रारम्पको दान देना चाहिये । यह मीलका है । इस तराको जो कोई भी व्यक्ति 🚃 है, उसे विष्णुलेकानी महि होती है। उस्पाद आदि घर महत्त्वा रीकाप्यक्त नहीं करन चाहिये। अन्तमें पारकारें विलब्धे तेलसे परा हुआ नवा पदा ब्राह्मणको दे और भी तक फदमकुक फोजन काले, 📰 महको 📟 बहते है। इसे बरिल्युक्ट 📟 विश्वपुरकेषको प्राप्ति होती है।

देश भारतमें दहाँ, दब, भी और गुरू, स्ट्रींड, ईसके हारा

को पदार्थीका त्यम करना साहिये और बादमें हो जाहानीकी कुमकर दही, दुष तक दो क्या, रससे भरे पत्र आदि पदार्थ 'बीरी में श्रीकरान्' करकर सहायको देन चारिये। 🕶

नीरिक्रक है । इस जलको को करता है, 🔤 गीरीकोककी प्राप्ति den ibn

इनोदारीके एक वर्षतक नतकत करनेके बाद परणामें हो क्कोसदित मुक्केन अक्षेक 🚃 तथा प्राप्तकारे दक्षिण 🔤 'ब्रह्मः प्रीयसम्' पर प्राप्त 📖 पहिचे। यह

कारकाव 🕯 । इस बतको करनेसे सभी प्रकारके खेक दूर 🖩 वाते है तथा विकारनेशको प्रति होती है। व्यवक् आदि पार अस्यो नवा नहीं काटने चाहिये और वैगनका भोजन भी

🖏 करन चाहिरे। अन्तमे बातक पूर्णमाने दिन 🖫 और प्रकार से कुए बटके रहथ सुकर्मका बैगन आहरणको शह है। इसे विकास करते हैं। जिल्लाव बरनेवाल व्यक्ति रहालेक्स

प्राप्त करता है । इसी प्रकार पूर्णियाको एक पुश्चात करनेके बाद क्याको पूर्णिकारी पूर्वि क्याकर 📖 ह्यान करे। अनुसर तून, दाहे, यो, उत्तर और बेट जनंदा—इन पाँच सामीमोंसे

भी कुर पाँच यहे पाँच क्राइएलोको दानमें है। इस सतको पहाला कहते हैं। इस सरको करकेने समस्त मंत्रीरथ पूर्ण हे 🔤 है। 🔤 🚾 विकास अनुषे उन्तृत पुर्णाका त्यागका परल्याको पूर्णकाने बचारतिः सुवर्णके अने हुए तीन पुण

बहुलको दन 🔤 'विक्योतको प्रोमेतम्'इस प्राच उक्तरण करना 📟 । इसे सीचनकात करते हैं । इस वतके करनेसे फिए अंदेशसे सुपन्ति उत्तन होती रहती है और मसिके

🚃 सोककी अधि होती है। परल्युन प्यानके पुरु प्रस्तुवी तृतीकाओ नमक नहीं सहन

च्यक्तिये । 💹 🔣 एक वर्षताक नियमपूर्वक इस होप्यान्यकानो पारंग असमे समाज्ञ प्राहमको पुत्र क गुरुके साथ पुरुषके उपयोगी सामाप्रियो तथा उत्तम अय्याक द्भा देकर 'प्रकारी प्रीक्तान्' इस वाक्क्को कहता है, उरे

🚞 📰 📰 🐧 🛊 । यह तक्ष्म श्रीश्वरपको 🚃

करनेवाला है।

संभ्या-समय एक वर्गतक मैन्यता रक्षकर प्रस्ताकर तथा पृतकुम्प, दो वका और पच्छ बाह्यको दान करना चाहिये। इसे सारस्वताला कहते हैं। यह तह विद्या और संपन्नो देनेवास्त है। हा विश्व करनेसे सरस्वतंत्रकेकनी बाह्य होती है।

विष्णुक्तिकारी महि होती है।

यो 📆 🚾 सरसरे आरम्भ कर विकास (सारावास) एक वर्षतक जलका धन करे और (सगवान् सूर्यके निविद्य) जलभारा अराम 🔣 🛗 आको कृतपूर्व अकेन

क्षरप्रकार दान करे ता उसे सीचान्य प्राप्त हैं। इसे बाराइन करा गया है। यह सभी रोगोवर नासक, हा है। सीधान्य-प्रदायक तथा हिल्ला दर्शको नास कानेश्वरक है।

गौरीसहित कर, जिल्लाकार्ती किन्तु के रहास्त्रका भगवान् सूर्वको मूर्तिको विकिन्नुके स्थापित कर उनका पूजन करे, पण्टानुक गौ, जिल्ला और दक्षिणको साथ उस कुरावी सारामको साथ है। जा अन्यो केन्स्त्र साथ उस कुरावी

माक्षणको दान दे। 📖 जराको देखाल गणते है। इस उराको स्थान प्रापेत 🔤 हो 📖 है।

भेत करत, चेत क्ष्म आदिसे विकाला, और विकासी मूर्तिका भितिदेन एक काँतक उपलेखन करनेके क्षा करको करे हुए घटके क्ष्मा सुन्दर भाग कांत्रजंको क्षा है। क्षा सुकाल है। यह तर सात स्थात क्षिप्ता है। क्षा क्षमा

है। यह त्रव संकुत व्यवस्था है। 📖 व्यवस्था करनेकरण विकलनेकको मात्र करता है।

विकास है। इतिहित गोवरका मण्डल क्याबर सामें अक्षतिद्वार कमल बनाये, उसके साम दिख, विष्णु, बहा, सूर्य, गीरी तथा गणपरिको **मा** स्थान करका एक वर्षतक प्रतिदित पूजन क्याब्य कर सामेन्द्रका गान करके अन्तमे 📖 अंगुरुके सुवर्ण-कमरूसहित उत्तम गाय प्रद्याणको दान दे । 🔛 🌃 🚃 कार्रो हैं । 🚃 वतको करनेवास

द। । वतमर करनव विकलोकमो 📰 करता है।

एकपुरसर 🖿 अन्तवे बन्याओको भोजन जन्म 🕶 क्यूनो, दो लग्न प्रदान को एवं सुवर्णका

भी कारणको दे। इस असको गोराक्त कहते हैं। 🗔 📰 इस असको करती है, उस जनका 🚟 सुन्दर कप्

च्या सीच्या और सुकानो प्राप्ति विच्या एउटी है। प्रतीको विकारोकोको प्राप्ति विच्या है। अञ्चलकारको जो एक वर्षपर्यक्त कार करण विकार शहरपूर्वक प्राप्त व्यवस्था सगरसा है, व्या क्यांक

अपने पूर्वजीका उद्धारकर विष्णुत्वेकको साम सामा है। यह विद्याल कहरका है।

ा ची एक वर्षतक कन्यूराका स्थानकर असमें सुवर्गक जन्यूर हास्या असमें चूनेकी जगह मोती स्थान तथा जन्मक साथ गणेतको निवेदित कर स्थानी राम

है, 🔝 📟 🖪 दुर्धानाकी आसि नहीं होती, साम ही पुराने 🚃 हाता 🔛 सीचानाकी 📖 होती है। यह कारण है। केंग, कैन्सक, जेट तथा अवस्थ — धून पार

क्षा अवस्य एक साथ अवश्य एक प्रकार्यन स्था अवस्थितकः करम श्राहिते। अन्तमे मलपूर्ण कलदा, अत्र, स्था सी, स्थापन्य सिरम्बन और सुवर्ण क्रमुणको दे। इस

सरको स्थापन बहुते हैं। वाधिमतको करनेवाला जाति एक करपर्यक बहुरक्षेक्ष्में निकास करनेके बाद मुखीनर स्थापन

🚃 केल है ।

ि एक वर्षतक पद्धापृतसे धनश्चन् क्षिय और पगव्यन् विष्णुको कान व्याच्या अन्तमें व्याच्या और सुवर्ण व्याप्तको दान करता है, वह शहुत कारणका जिनलोकमें

निकास करता है और राज्यका पर प्राप्त करता है। यह बृतिहास कारणता है। जो व्यक्ति सर्वका मंस्स्त्रास्त्र मस्तिया कर अक्ष्में सुवर्णका संस्था और सकस्ता में प्राप्ताणको दान करता है, उसे अक्षमेचकाका करण प्राप्त होता है। इसे क्याबुसालक करते हैं, वह सम्पूर्ण शामिकोको देनेकाला है। जो मान मासमें

स्थानका अन्तर्थे आहम-द्रव्यतिकी पक्ष, आयूक्ण,
 पुरागस्त्र आदिसे पृजका उनको स्थान भोजन कएता है,

वह अरोग्य और सैभागको प्रश्न करता है और कल्पपर्वच सूर्यक्षेक्में निवास करता है। इस ततको सूर्यका करते है।

जो आवद 🛲 🖿 यसीने 🚃 स्वनकर कार्तिक पर्विभाके दिन वृतकृष्य और गी गृहस्य 🗫 🖚 देवन अपनी रासिके अनुसार सहाग-चेकन करता है, 📖 समी मनःकामनाएँ पूर्व हो जली है और 🚧 सन्तरें विकासिकारी प्राप्ति होती है। यह वैकासका अवस्थात है। जे एक अधनमें दूसरे अवनक्षक गांचु और चेका रूपन करके असमें 📕 और में बहुत्ताओं दानकर के और काश्स बाह्यभोको भोजन करता है, उसे प्रीतः और 🚃 🚃 📰 है। इस मल्बे 🚃 न्यने हैं। 🖩

(नियतकारकाक) प्रतिदित कार्य कार्य 🗰 तक अध्यक्ष्य पदार्थ 💹 हेतला सेवन 📰 व्याप्त विर प्रत समझ होनेपर ब्रह्मानको धैयक, सुक्रकि को पक, विसूत्त और दो बका दान करता है, वह महान् रेजरके 📖 है। का कारित प्रदेश करनेवाला सत्त क्षेत्रकत व्यवस्ता है।

📰 को एकपुत्त राजर एस साम्रातक गण, 💬, रतः कदन कार्यी भगवती गीरीओ पृथ्व करते हैं, साथ है प्रतेक दिन संध-समसे कुनुदा, मायबी, गीरी, चवाने, व्यवसी क्या तथा करली---इम स्थल नामोसे एक-एक सुव्योशनी सीचा पुष्प, चन्दर, कुंबुन्प, साधूल तथा चरिकेल एवं जरांच्यांकी पुरुषक 🚃 प्रीपतार्' 🚃 प्रकारो बसकर विसर्वन करते हैं तथा आठमें दिए उन्हें चूनित सुवसिनी किनोको निम्निति कर 🚰 बहुस मोजन अवदिने सुरकर करन अस्त तथा आकृतम एवं दर्पण आदि प्रदान करती है, साथ है एक बाहरणकी भी पूजा करती है, उसे सुन्दर देह और सीधान्य भार होता है, इसे सारसुव्यक्ताल कहा जाव है : 🔤 🖛 सर्व क्रमरके स्ताबित प्रधानिक त्यान करना चाहिये और अन्तरी सुगम्बद्धकासे पूर्ण एक सीपी, दो सफेद बचा अपनी सकिके अनुसार दक्षिणके साथ ऋकुणचे दन देन चक्रिके। इस **बहुते 🛮 । इसको करनेसे मधी व्यवसार पूर्ण** होती हैं और परणलोककी असि होती है।

वैकास माराने नामका त्यानका अन्तने समस्य मी बाह्मणको दे : यह कान्सिमा है । इस लटको कानेसे कीर्त और काशिकी वृद्धि होती है तथा असमें विष्णुखेककी व्यक्ति

होती है। यो क्षेत्र पत्तरो अधिक व्यवस्था सोनेका नहाय बनकर उसे तिलको देवीने रखे तथा 'मै आंकारकपी 🚃 दान करनेकारत 🧗 ऐसी च्याचन करके भीसे आधिको 🚥 ्रिक्यसे महत्त्वको दुर को एवं दीन दिनतक तिल्याती रहे। किर महरा, वक तक आयूक्नोद्धरा असाग-दम्परिका पूजन श्रिकालको तृक्षिके उद्देश्यते किसी श्रुम दिनमें विश्वसदिन सहस्य बाह्यसम्बद्धे दान करे तो ऐसा करनेवास्त्र 🚃 कुर्साचारे चीत सहायस्थे जन होता है। इसका नाम **ार्थात है। का मनुष्येकों मोशा देनेवाला है।** को होन दिनसक दुष्पका आहारकर सुवर्गसहित सकता

मैं तथा एक पराने अधिक सुवर्णने करपवृक्ष 🚃 कारलेके बेरपर स्थापित कर उत्तम थया और पुण्यालाओंसे क्षाबर 📰 😅 व्या करता है, 🔳 भरूपभर स्वर्गमें निवास-स्थान 📟 है, हरे। 📟 करते हैं। 🗏 अर्एका एक नेव दान 🚃 🔣 उसे परलोकनधनमें खेर्च कह नहीं होता तथा उसका कर्ग मुख्याची होता 📆 इसे द्वाराजन व्यक्ति 🕏 । 🚵 एक वर्गतक अञ्चलको शतिमे एक बार भोजन करता

है राज्य अन्ताने प्रधाननको पर्याचनी गौरक दान करता है, यह इन्हरतेको कता है। इसे सुनविकत करते हैं। जो हेमचा और ज़िज़िस ज़कूने ईक्तका दान करता 🖥 और अन्तने की तक गाय 🚃 🖛 करता 🖁 , वह आरोग्य, चुनि, 🐃 🚥 स्कृतक्ष्ये प्रद्र करता है। यह वैश्वानकार सभी पर्शेष्य गुरुष है। से एक्ट्स्ट्रेक्ट्रे नसमस्कर के मसके किय नक्षत्रमें सुवर्णका जंबा और शक ब्राह्मणको दान भरता है, यह कल्बक्वंस विकारकेवार्थे निकास कर पृथ्वीपर राजाका पद आर करका है। यह किन्युक्त हाल्यात है। भी हुक वर्गतक पहानेको दुरबाहर कर अस्तरे हो 📖 ऋहामको दान करता 🐧 वह एक करपतक राज्यों होकों निकस ळता है। यह हेवीक्स कहरूरा है। यो एक वर्षतक सप्तमीके दिन नतकार कर असमें पर्याचनी नाम जासणको दान करता है. 🔤

सुर्वलोकारी 📰 होती है। इसे मानुकत करते हैं। 🗏

चतुर्विको 🚃 वर्षतक 🔤 घोतन 🚃 है और असमे

and जीवे अधिकोणी साहाराको दान करता है, उसके सर्थ

तराके विश दूर हो जते हैं। इसे विशायकाय साथे हैं। बि चातुर्गास्त्रमें फलोका स्थान कर कार्तिकों सुवर्णका फल, दो मौ, दो बेत पक्ष और धीसे पूर्व पट इतिकासहित व्यक्तकों दान करता है, उसके सभी मनोरम पूर्व होते हैं। इसे प्रमुखा कहते हैं।

एक वर्गतक साम्योको उपकास कर अनाने सुवर्णका कारण कारण और कारणकी रोहनीसदिव सकावा की पीराणिक माझालको दान करनेसे पूर्वत्रनेकानी जाति होती है। यह सीरावा है। जो बारा इन्हरिक्तीको उपकास करके अपने बचाइति वक्तादित जरुपूर्ण कारह यह साम्राजेको सुन बच्चा है, उसके सभी कार्य सिद्ध हो अही है। यह नोजिन्ह्यात धारावान् गोविन्द्रके पहलो जार

कार्तिक पूर्णिकको कृषेत्वर्गका द्वाँको स्थात । कार्तिये । इस स्थाति कृष्णक कार्ति है । इस स्थाने अर्तिने

गोरनेकामी आहे बिला है। कृष्णु-प्राथमिक के बिला गोरान कर प्रधारतिक अञ्चलको स्वाम करान स्वाहित । यह प्राथमिकास है। इससे प्रपश्चित होती है। यो एक वर्षकक समुद्रियोंको नकामत करके अन्ताने से स्वास्थ्य सन करक है, यह सैय-पद्चरे जात करता है। यह स्वास्थ्यका है। स्वत्र स्वी अपन्यस कर बाह्यकाने कृतपूर्ण करका सन ध्वरे । इसे स्वास्थ्य कहते हैं, इससे स्वास्थ्यक स्वास्थ्य है।

वश्रीक शासके शुक्ष करावी बहुदंशीको उपवास कर राजिके कराव प्रधानक-पान की अर्थात् करिया लिए पूर, कृष्णा गीवर गोवर, केर गीवा दूब, स्नरू गीवा दवी क्षण भवती गीवर भी तेकर मनोसे कुबोदक मित्यवर प्राप्तन करे। दूसरे दिन प्रसः कानकर देवता और विश्वपेक वर्षण

होकर भेजन करे। इसे स्वास्तुर्वास्त कहते हैं। इस स्वास्त्रेसे बाल्य, मीवन और मुहापेने किये गये सभी स्वास्त्र वारा हो खाता है। या एक कांक्क तृतीयको किया प्रकार कांक, फल इस्वादिका कोजन करता है और अनाने सुन्दर भी ब्रह्मकको दानमें देखा है, वह

करात है। इसे ऋषितान कहते है।

एक वर्षतक तान्यूल आदि मुखवासके प्रश्निक स्थान-अक्षेत्रे सहस्वको मानका दान करे। यह समुख्याह है। इससे कुनेरलेककी गाँउ होती है। स्तिपर जलमें निवास कर अक्ष्मक को गोदान करता है, उसे करगलेककी गाँस होती

ि। ||||| बक्रमात करस्य || || || वो चन्द्रावणात करनेके नाद पुर्वका |||||||| वचकर बक्रमको दान करत है, ||||| बन्दलेकार प्रति केरी है। यह बन्दाल है।

कोष्ट सहस्की अष्टको और चतुर्दशीको प्रशासि-सेधन स्वर्णसहित गौका साधानको दान करे, यह स्थानत है।

हिन्द्रकार का अस्ति है। यो एक वर्षतक पृतीसको विकासको स्थानी करनेके हा गोदान करता है यह सर्वत्येक प्राप्त अस्ति है। यह प्रस्तानीका है।

ा मान पासनी सक्षमी विभिन्ने स्थानी आई स्थान बार्ल किने बारा है जिसे उस्तास कर बाह्यलंके पीना दान बारता है, वह करणकरतक जार्नि निवास करता है। यह सामाना बाह्यलंक है। को तीन पति अनवास कर कारणुसकी

पूर्णकाचे हातान करता है, 🛅 सूर्यरोकामी प्राप्त 🛗 है। यह हातान है। पूर्वकारोको उपचासकर सेनी संध्याओंने कर्मा, अवस्थान, योजन आहे देवर सक्तीक सहस्थानी पूजा

प्रमुख्य करिये। हा स्थानि इन्द्राल कर्न्स है। इस कराके प्रमुख्य उसे प्रमुख्य कर्ना होता है। यो पुत्र प्रकार दिर्शकको नगवाने परे हुए क्षतिके प्रमुक्त साथ क्या और प्रमुख्य क्षता है। है और अन्तर्भे

अस्ति क्षेत्र क्ष्म एक मेश्व एक होता है। इसे मोमाला क्ष्म है। एक मर्थतक प्रत्येक प्रतिपदानों एक समय मोजन कानेक बाद कांपरम में क्ष्मणको छन करे। यह असोबाला है। इसके कानेके अधिकोकको असे स्था है।

विकामिक्से केदन करक हैं का करपमाल जिवलेकमें

भिन्न प्रस्तिक प्रमुक्ति और अष्ट्रमीको एकपुक ग्रस्त है तथा प्रस्त, कृत्य, कंगल, वर्ग आदि प्रीत वस्तुओक हा है तथा पैश्रमें इन्हें विविधोंने हुए, पर्च आदि उन्हानकरक प्रदासीक सम

स्वैक्ष्माण है। एक वर्षतक दक्षणी प्रकपुतकार करके जन्में सुवर्णनी सी-कम मा दिखाओंकी पूर्ति प्राप्त गमसहित बाह्मको दान करनेसे

म्बरमारक 📰 हो 🔤 है। 🔤 विश्वतम है। इसे 📖

बहायहरू आधिपत्य मिलता है। यो स्क्रह पहली सक्त्री तिथिको नतावत करके सूर्वनग्रायकक वृत्रनकर सरायान्य और लवण बाह्यमध्ये दान देता है, यह अपने सात कुलोका उद्धार 🚃 है। यह बार्यास है। एवं पास व्यासमा 🕏 सद्दालको गाय प्रदान करता है, उसे विष्णुरकेकमी प्रक्रि होती है। इसे भौमात 🚟 है।

जो श्रीस प्रक्रसे अधिक वर्षत् और समुद्रेसदिव स्वर्पकी पृथ्वी कराकर तिरुपेची ग्रतियर रक्तार कुटुच्ची सक्तानको दान करता है तथा दूध 📟 🚃 है, यह साथ करफाक रहरलेकमें प्रतिद्वित होता है। 👊 📲 माजन महरलता है।

मान आवना केंद्र मासके होता प्रशासी तृतीकको मुक्का भक्षण करे तथा सभी वक्रमानाका गुरुवेनु सक्रमाचे दन दे, उसे बनाइस करते हैं। इस इसको करनेकाल गाँधेसकेको 🚃 करता है। 🗎 एक सर्वतक लिए 📺 🛭 अञ्चन थेवन करता है 💹 भश्य ग्रह्मात साथ मरामा पर उन करता है, यह कल्प्यर्पेस दिवालेको निकास करता है। इसे प्राप्तिकत कहते हैं। जो कार्तिको अस्टब्स कर अस्टेक कारकी तुर्वधको 📶 गोमूमर्ने पकायी गयी रूपनीका सक्तर करता है, 📺 गैरीलोकने एक कल्पलक निवास करके है, अनका पश्चीपर राज्य होता है । यह महान् करन्यानवारी बहुता है 🕮 पुरुष कन्यादान करता है अध्यक्ष करता है, यह अपने इसीस कुलोसहित महारोकाने 🚃 काता है। कावादानसे 🚃 कोई 🖩 दान उत्तम नहीं है। 🗱 दानको 🚟 अवन स्वर्गमने महिर्देशी है। 🗰 🚃 🙀 है। दिस्स्वित्या

उसको जनक नया समस्त्रमे स्थित 🔤 🚥 वद्यानुसम् आदिसे फॉस्सिइत ब्रह्मनक हुन्त करके गतेनक जलमें स्वित होकर कर शामी काला दन कर दे। यह कारतारकत है। इस करको कानेसे जंगल आदिसे सम्बन्धित

हाची 🚃 दो 🚃 स्क्र, अंकुश, चलर, 🚃 🔚

समस्त संकट और प्रयोगे सुटकार मिल जला है। जो ज्येष्टा नक्षत्र अनेपर "प्रतासमिकानीमार्गिमान्" आदि मनोसे एडऐक्ताका वत-पूजन तथा स्थान करते हैं, वे प्रकारमंत्र इन्द्रलेकमें निवास करते हैं। इसे नुस्वकार 🕶 इक्का बहुते हैं। जो पश्चमीको दूधका आहार करके सुवर्णकी नाग-प्रतिमा 📉 🚾 देता है, उसे कभी सर्वका मन 🔤 रहुत । शुह्न पक्षमा अष्टमीको उपकास कर दो श्रेत वस और 🚃 पूनित बैश सहामको दान दे । इसे कुछात कहते हैं 1 इस 🚃 करनेवास एक कल्पाक दिवलोकमें निवास करता है 🚃 पुरः राज्यका पद प्राप्त 🚃 🛊 । उत्तरायणके दिन एक सेर बीसे सूर्यकरायनको कान कराकर उत्तम पोढ़ी अञ्चलको दे। 📰 वयको स्त्रतीयन क्यूने है। 📷 वतको करनेकरे व्यक्तिको अमीह फराबर्र प्रति होती है तथा अनामें 🞟 पूर, पाई, भी आदिसदित सूर्यलेकमें निकस करता है। - Contraction Village विक्रके 📖 सुवर्णका शुरू कार्यको प्रदान करता है, उसे क्रम क्रमी और अन्तर्ने अधिरचेकारी प्रति होती है। इसे कारेपाल स्थिति है। **व्याप्त अवदि सर्व्या**क चोनोंने असमत करके जनसे

थे, बेल, फल, ईस, थे, नेई, 🚃 सेम, शांति-पामल. कम्ब, रहा, दूब, बका, सुकर्व, बंजरा, ग्राम, बैरा, करारी, कुछ, असूर, कुंबुस्य, कन्दर, पुन्ध, लोका, ताव, कांस्व और 🔤 स्कूलको देन पहिचे । यह केमाल है। इस स्वरूप 🚃 🚃 📰 क्रोड़े युक्त हो बात 🕯 और उसकी कुर्व 📖 इट्टले वियोग नहीं होता। यो कार्तिकी पूर्णियासे आत्म 💷 अधिनको पूर्णिमतक काह पूर्णिमध्येमें 🔤 केव, कुब, शिकुर, कर्फ, शिंव, कन्या, तुल्ल, वृक्षिक, धनु, 🚃 भूमा 🖿 मैन--ान बाह राशियोकी सर्प-क्या, 🚃 अल्लाहरू एवं पूजितकर साथ अञ्चलको दान 📖 है, उसके सम्पूर्ण

प्रमुख्य औक्षम्य केले--- महराज ! मैंने इन विविध सर्वोको करराज्य है, इन प्रसोंकी विकि सकत करने या पढ़ने-📖 ही फलक, अञ्चयतक और उपप्रतक नह से जाते हैं। को कोई भी व्यक्ति इन करोंको अक्तिपूर्वक करेगा, उसे धन, सीक्य, संतान, सार्य आदि कोई भी पदार्थ दुर्लम नहीं होगा। (अध्यय १२१)

उन्हर्जेच्य असन हो जाता है एवं शरी आशार्य पूर्ण हो जाती

है और उसे सोमरोकस्थ 📰 📰 है। 📰 राविकार

श्राहरूका है।

a larger of the larger of the

भगवान् **शीकृष्य खेले**—महत्तव ! कलिकुगी मान-स्थानके 📷 करनेवाले जतीको माहिये 🔣 🚃 🔤 संपद-नियमक्षे रहे, दुष्टीका साथ नहीं करें । मनुष्योको स्नान-कर्ममे शिक्तिका स्मा 🖫 फिर 🖫 🚃 प्रकारके निकारिक दुइतासे पालन 📟 सूर्य-चन्द्रके माय-सामका विद्रोप फल होनेसे इसकी विधिका क्षर्यन कर समान उत्तम देशवंदी 📖 होती है। रहा है। जिसके हाथ, पाँच, वाणी, पन अच्छी तरह संबद हैं कैक-कारणुमके मध्य 🚃 सूर्वने सीस दिन 🚃 और जो विच्या, तय तथा अधितेंसे समन्त्रित हैं, उन्हें ही सीर्च, कान-दान आदि पुण्य कार्योका साम्बोधे निर्देश कल पक्र होता 🚃 🚃 करनः चाहिये। ये 🔤 दिन विशेष पुण्यवद है। 🚃 प्रकार दिन ही संकल्पपूर्वक माथ-सानका 🚃 है। परंतु श्रद्धाहीन, पापी, नाशिक, संस्थ्यन्त्र 🚟 हेतृष्टि प्रकृत 🚃 व्यक्ति। सार काने कते 🚃 वर्गाको विना (क्यार्किक) इन 🖿 🚟 सामान सम्बोध रोपी-सान आदिका फल नहीं मिलक<sup>र</sup> । क्का 🛗 🚃 जो 🚃 लहन करना पहला है, उससे उसे सक्तमे परा-पराकर अञ्चलेन पक्तका करू प्राप्त होता है। प्रयाग, पुलार तथा कुरुक्षेत्र आदि श्रीकॉर्ने अन्यक्ष पर्यक्र **व्याप्त स्थापन व्यापन पिट्टी स्थापन पूर्वको अपर्य जिले** स्थानपर माध-कान करना हो तो प्रतःकार ही कान 🔤 📰 को । जलसे बाहर 📟 इहदेक्की करना चाहिने । माच भारामें प्रतः कुर्वेदश्यो पूर्व कान करनेसे इंग्ल-कारवारी प्रकोतम मनवाद श्रीमध्यवकः सभी महायातक दूर हो जाने हैं और प्राथमधा-धाला करा पुजन करे। अपनी - अनुसार वदि हो सके ही भार होता है। जो ब्राह्मण सदा अत-काल कान करता है, 👊 सभी पानोंसे मुक्त होकर परवदानवे जह कर लेख है। उन्न प्रतिदेश 🚃 करे, 🚃 📖 भेजन करे, अग्रवर्ध-प्रत धारण 🔳 🔚 पृथ्यित प्रापन करे। असमर्थ होनेपर जिल्ला कराते कान, 🔤 जनके 🚃 कर, लेविय 🚃 व्यक्त 🕍 🍱 🚃 🖟 करे, परंतु 🚃 विना श्राद्ध और सार्वकालके समय पोकन व्यर्व 🕅 🖫 कारण करेला कारिये। विकास उपटन, व्यवस्था जलमे कारण, करण, बाह्य और दिश्य- ये चार प्रचारके उद्या होते बान, जिलोसे दिन-तर्पन, जिल्ला एकन, जिल्ला दान और है। पायोंके रजसे वायक्य, मन्त्रोसे हाहा, सन्द्रर, नदी, सल्सन पुरवादिके जलसे कारण तथा काकि जलसे कार काम दिला क्षा 🔠 💹 🚾 भीवन 🚾 🚾 📆 🖚 होता । वीकी शीलके व्याप्त करनेके लिये साम कहलाता है। इतमें 🚃 साम विदेश कर है। 🚃 🚃 करनी चारिये। वैल और 🚟 चान प्रक्राचारी, गृहत्व, कनप्रत्य, संन्यसी 👭 🖛 तरू, बुद्ध, को तथा नपुंसक आदि सभी माथ पासने तीकेंपि स्कर कान करिये । इस 🚃 एक महत्तक स्त्रमकर असमें 🚃 🚃 🚾 🔤 देवन बाह्मणका पुजन करे और करनेसे उत्तम फल प्राप्त करते हैं। सहान, सहिय और बैदन कंपल, मृगवर्ग, 🚃 रव 🚃 अनेक प्रकाके प्रधानीवाले मञ्जूषंक जान करें और को तथा रहतेंको मन्त्रीन कान कपढ़े, रबर्द, जुल तथा 🛮 🗎 श्रीतनिवारक 📖 👢 🚃 करना चाहिये। माथ मासमें क्लब्ब वह बहना है कि बो दम का 'मानवा:बीवलाम्' यह वास्य 🚃 शहिये। इस सुर्वोदय होते 📱 पुहर्ने 🚃 करता 📗 इसके 🚃 🚃 📺 प्रसमें 🚃 करनेवालेके आगम्यागमन, सुवर्णकी सरापान आदि बड़े-से-बड़े पाप भी हम तत्कार क्षेकर उसे 🚃 🌉 👚 🚃 🚾 भी 🚃 🗓, समी नह सर्वया शुद्ध एवं पष्टित कर ग्रास्त्री हैं ।

१-नस इसी व पार्टी व पार्टी व पार्टी क्रिकेटर्गिका प्रथम स्थापिक स्थाप

(सार्क्ष १२३ । १२-११)

हो जते हैं। माथ-कार्यी पिता, पितामह, प्रपितामह स्था माता, अधिका स्था कर और सभी आमन्दोको स्था असमें मातामह, कृद्धभारामह आदि हमीस कुटोसहित समस्य स्था विम्युलोकानो प्रश्न स्था है<sup>र</sup>। (अध्योप १२२)

> मा और एक लोडे किया ना दोनों इस्त्रोंको जोड़कर अलो वह है। तीन, चर, पाँच या

मगवान् श्रीकृष्णने कहा—एकन् १ कानके निया न तो शरीर ही निर्माण होता है और न पायकों ही मुद्धि होती है. शरीरकी मुद्धिके दिल्ये समसे पारे कान पायकों स्थान है। बरने रखे हुए आक्ष्म मुस्तके निकाले हुए जलके स्थान करना चाहिये। (किसी जलकाम का नदीका कान मुस्तक हो तो और उत्तम है।) मनकोसा विद्यान् पुष्टकको मुस्त कनको हाए पायकों कर देनी चाहिये। 'अं क्ष्म नदाकामार्थ'—यह मूल मन्त है। स्थान हाकने पुरा देकर विधिनूर्वक कावानर गरे क्या कर और मिन्नविध स्थाने रखते हुए वाहर-मीतरसे परिवा सो। किर कर सम्बद्ध क्ष्में

प्राच्या करे—'गहें । तुम अगव्यम् विशिष्युके प्रकट हुई हो, श्रीवित्तु ही तुम्हरे देवता है, इस्वेटिन्ये हुन्हें वैकाली बहते हैं। देवि । तुम कन्यसे लेकर मृत्युक्तक मेरे हारा किमे गर्म समझा पार्थिसे ■ 100 वर्ष । वर्ष, कुन्छे ■

अन्तरिक्षमें हुन्तु सावे **व्या**क्षिक तीर्थ हैं, इसे **वाप्**रेक्सणे (गिनकर) शहा है। माता क्यापि ! व सब-के-सब **व्या** तुन्हरें जरूमें स्थित हैं। देवल्लेकमें तुन्तर कम व्यादक और

📰 है। इनके 📟 सम्ब, पुरुषे,

विश्वकरण, शिका, अपृता, विश्वकरण, सुरस्तक, व्याह्म प्रसादिनी, शेष्णा, अञ्चली, स्वत्त्व और व्याह्म आदि हा तुस्तुले सम्बद्ध नम हैं<sup>2</sup>। वहाँ कार्यक सम्बद्ध स

पवित्र नामीका मीर्तन होता है, वहाँ विकासकी अवकती गङ्गा उपस्थित हैं। बाला है।

सहत बार उपर्युक्त नामेका जप करके सम्पुटके माकारणे

कर उसे अपने काले, फिर विधिपूर्वक पूरिकाको अपने असूने छान्ये। पन एस कहि— व्यक्तिको स्वापनो विष्णुस्तको बहुवरै। पूर्विके हर व्यक्तिक कुलेन प्रत्याहुत।। स्वापनि वर्णान कुलेन प्रत्याहुत।।

ंपसून्यरे । तुन्तरे उत्पर कथा उत्तेर एवं चरंत चरते हैं । भगवान् अधिकपूने भी कमनकपते तुन्तें एक पैरते जान बात पृथ्विके । पैने के कुरे कर्म किये हो, उन सब्देको दूर कर हो । वित्य । भगवान् अधिकपूने सम्बद्धी मुखाओंबारे कराइका कम बारण कार्यक दुन्ते जरानो साहर निकारण था । तुन समूर्य

रवेकोंके समस्य प्रान्थिकोंने प्राप्त संस्थार सरनेवाली है। सुनते । विद्या नवस्थार है।' इस अवस्था मुस्तिको समावन पुतः स्वाप करे। पितर

विकियत् आकान करके वहे और सुद्ध शंकेद बोती एवं कहर

ध्याण कर (तरमव्यक्ती दूस करणा तत्त्वी तर्पण करे। संबंधी पहले बहुत, किन्तु, कर और कंपांपतिका तर्पण करे। तरप्रकर् 'देवता, बढ़ा, बाग, गन्वर्थ, श्रेष्ठ अन्यराओं, कूद सर्प, गक्ड कर्ती, कृक, अन्यक आदि असुर, विद्याधर, सेव, आक्ष्यश्चारी और, निराधर क्षेत्र, पानी बीच तत्त्व धर्मप्रवर्ण जीवोंको दूस स्वाक्ति हो में स्वाच देता हूँ---यह (स्ववन्त्र स्वाच संवक्ते अस्तव्यक्ति दें : देवताकोंका तर्पण करते समय सहीववीतको

१-यम-बार-मासकको करते 📟 कुल्के कई स्थाप क्रम है। 📟 🚃 अंत इस अध्यक्ते स्थार है।

र-विक्युक्तासमूर्यासः विक्युक्तिका । पारि स्थानिकारकारकारकारकारकारकारकारकार्यकारकार्यकारकार्यकारकार्यकारकार्यक तिकाः कोटकोटकारकोरो = विकास कामुस्तानेत् । दिशि प्रकृतकारको च ति विकास वित

त त्राच्या प्रतिकार वर्षा व्याप्त वर्षा वर्ष

देश 🚃 🚾 गर्मानस्त्रं एक । हुन्दे 👰 🖼

बांदे कंचेपर डाले रहे, तस्प्रहात् इसे गरेजे 📟 पर्वत कर ले और मन्त्र्यों, 🔤 तथा ऋषिकृतेश्व भक्तिवृर्वक 📟 करे । 'सनक, सनन्दन, सनावन, क्रीएए, असुरि, केंद्र 📰 पद्धशिक 🕌 में सबी मेरे लिये जलमें मदा 📺 हो।' ऐसी माथना करके 📖 दे। इसी इकार मरीचि, अपि, अप्रिट. पुरुक्त, पुरुब, क्रम्, प्रचेता, वसिंह, मृगु, नारद 📖 सम्पूर्ण देशवियों एवं सहावियोकः अकतस्तितः 🚟 🚃 तर्पन करे । इसके बाद बड़ीपर्वातको दावें कंछेक्ट रकका 📶 बुटनेको पृथ्वेपर टेककर बैठे, फिर ऑग्निका, संबंध्य, इतिस्वान, ठकाव, सकाली, चीम, सोवय तथा आव्यय-संक्रक विक्रकेंध तिल और कदनकुत जलसे चौतुर्वक 🚟 को। इसी · इस्पेपे कुछ लेकर **मा** भावसे परकेक्यकी वित पियामह आदि और ------ जन-गोलक -----करते 🚃 तर्पण करे । हम 🚃 विशेष और 🎫 🚃 सबका तर्पण करके 💮 💮 📫 📫 देशास्त्रम् सामान्य सा देशसम्बन्धिः शर्मानः । है। सुरिवारिका पान्तु यक्कारान्धेऽविकारकृति ।। CHREMITER LINES जो स्टेश 🕰 बायन २ 🛅 जो मेरे पार्थ्य हो दन्ह 🛗 दुसी 🔤 जनमें मेरे बान्धन को हो, वे सब 🛅 दिये 📧 जलको दुस हो । उनके 📖 और 🕮 🗷 चंदेई 📟 धुक्रमे 🚃 अधिकाय रकते हो, 🖩 🗎 श्रीत-काथ करे हें (ऐस्स

कहकर उनके वहेपयसे जान गिराये।) तत्वज्ञात् विधिपूर्वक आध्यम का अपने आगे पूष्प और असतीसे कमलकी आकृति बनाये। • वजपूर्वक सुण्डिकके इस्सोक्त उज्जारण करते हुए असत, पुष्प और श्रापन्दनीयित

कर जलसे 🔤 है। अर्थ्यक्तका पन्त्र इस 🚥 है—

विश्वस्थान कास्ते विश्वासस्थान में ।।
स्थानस्थाने विश्वासस्थान में ।।
स्थान सर्वानपुर्व नगरो सर्वासस्यो ।।
स्थानपुर्व नगरोऽस्यु दिन्यसम्बर्धान्य ।
स्थानपुर्व नगरोऽस्यु दुन्यसम्बर्धानिय ।।
स्थानपुर्व नगरोऽस्यु सुन्यसम्बर्धानिय ।।
स्थाने प्राथमित्र सर्वास्थानस्थान ।
सुन्धानं कुन्यानं केश सम्बर्धानानानि सर्वाप् ।।

कारोडम् स्थित नवीडम् हे । कारोडम् स्थापन स्थापन स्थापन हो।

विकास नवसेऽस् प्रकार वयेऽस् है ।। (इसस्य १२६१२०--१९)

हे परमान् धृषे ! अस्य निकास और परामान् निर्माणे समा है, इन दोनों क्योंने आपको नमस्त्रार है। आस सकतों विवासीने सुरोतिस और बार्स तेमस्य है, आपको सदा कार्यकर है। अर्थशिक्षान् धर्मान् । सर्वस्थ्यमारे बार्स प्रोतेश्वरको सार-सार नमस्त्रार है। दिस्स सन्दनसे पृत्तित और संस्कारों स्वासं भरतन् ! आपको नमस्त्रार है। कुण्यक और आहट जाद आपूर्ण सारम सत्त्रीताले समान्य ! आपको नमस्त्रार है। धर्मान् ! आप सम्पूर्ण लोकोंके ईस और सभी देवोंके हुन्य अस्थित है, अर्थकों मेरा प्रमान है। आप सदा सम प्रय-पुण्यको प्रतिकतीत जानते हैं। सत्त्रदेश । आपको नमस्त्रार है। सर्वदेश ! आपको नमस्त्रार है। दिसाकर । अवको नमस्त्रार है। स्वास्त्रार है। अर्थको नमस्त्रार है।

इस क्लारं क्षेट्रेक्को जनसार कर तीन कर प्रदक्तिया को । साम सामा यो और शुक्तका कारों साम अपने पर जाय और वहाँ भगवानुकी प्रतिकाका पूजन करे । (अध्याम १२३)

#### सद-कानकी 🖩

म्हाराज पुतिहिरने कहा — मगकर् । अब अबर सधी दोबेको शास करनेवाले करू-स्थानके म्हान्या वर्षन करे । भगवान् श्रीकृत्वा बोले—सहस्य ! इस सम्बन्धी महर्षि अगस्यके पूर्णपर देवसेन्द्रपति चगकन् स्थन्दने जो

१-सनकः

सम्बद्धीय

ही ■■■■ चा, उसे आप सुने। जो मृतवस्ता (जिसके रूड्के अस्य अवस्थाने सर बाते हो), वश्या, दुर्पमा, संतानहीन ■ केवल ■■■ कहती हो, ■■ सीको चाहिये ■ वह रह-सान करे। अष्टमी, चतुर्दशी अवना रविवारके दिन नदीके तटपर मा

nerstander i de designe de

विकारण १२६।१५—१७)

तृतीचा व्याप्ता।वर्गतसमुधिन जेडुः नाविवसम्बः। च्या ते वृत्रिकसम्ब महोकमुक सरा। (स्वरणं ११३।१८-१९) महान्द्रियोक्त संस्काने, दिल्लास्यमें, मोहमें अचवा अपने पाने स्योप्य बाह्मपद्धरा 🚃 परिवासका स्नान करे । वर्ड गोबरहारा उपलिप्न स्थानमे एक उत्तम मण्डप बनकर उसके मध्यमें अष्टदल कमल कराये । उसके मध्यमें व्यक्तिकके उत्तर भगवान महादेवकी, उनके बाम तथा दक्षिण भागमें क्रमक पार्वता एवं विकासकती और कमलके अस्ट्रालीने इनाईर दिक्यालोकी 🚃 करे । तदनन्तर भन्धदि उपचारेसे 🕬 पत्रा करे । मध्यपंके चारों कोजोने करून स्परित करे : करें दिशाओं में भव-बरिस 🖿 दे। 🚟 🚟 विकास सुरक्त बनाकर नमक, सर्वप, बी और मधुने 'या सक्तेक करने-' (यक् १६ (१६) इत्यदि वैदिक सकते इक्ट करे। आचार्य, बहुत एवं ऋत्विक्षेके साथ जानकता भी वरण करे। एकादया सहयाह भी कराये । १स प्रथार दूसरे व्यक्तका निर्माण कर देश वस्ताओं 🛗 📹 वैद्यापर स्तापुर्वक 🚟 -01/03/0-

उसे 🚃 इन्हर्ये। अर्थ-पत्रके दोनेमें 🚃 हेकर रहेकार्यासनेका 🚃 कर उस 🚃 जरुसे सीका अभिषेक को । अनन्तर सप्तमृतिकामित्रित जल, रद-कलशके वह एवं इन्द्राट देकालेंक पूजर कललेके विकासका उलमे उसे 📖 कापे। इस प्रकार छट्-जान-विधि पूर्ण हो **ल्यां** सर्वापकी पेत्, **व्या पेतृ व्या व्या**समारी 📰 🚟 दम 🞬 और बहायोंको भोजन 🚃 क्स, 🖼 🙀 🚾 🗫 नाम प्राप्त करें । जो की इस विधिसें कान करते है, यह सीमान्य-भूस प्राप्त करते है और पुरुषते होती है। इसके ज्ञारंको रहनेवाले सभी दोव बन्हाणीको आहासे, कर-कान करनेहे दूर हो जाते हैं। पुत्र, तक्ष्मी तथा सुककी इच्छा करनेकरने करेको यह तर हाता वारण चाहिये, हारते यह विकास्तरता हो वाली है।

(अभ्याप १२४)

## प्रकृष-कारणका प्राकृतस्य अतेर विश्वान<sup>६</sup>

क्षित्रिको कहा — इत्य और यत्योधी विधियोके इस्त (पूर्णवेदयिद्। भगवन् । सुर्वं एवं यन्त्रके महणके मनस्तरक भागको जो विभि है, मैं उसे स्वया कारता है।

भगवान् श्रीकृष्य बोले---रावन् ! जिस पूरवर्षः श्रीरामा 🚃 प्रापन (छगना) होता है, उनके दिन्ने 🗪 और औषधन्तित जानका जी विधान है, उसे मैं बगरंग एए हैं । ऐसे अनुभावते शाहिये कि चन्द्र-प्राहणके अकस्मपर कर ग्राह्मणीद्वारा स्वस्तिवाचन व्याप्त गृन्ध-वास्य आदिमे 🔤 पुत्र। क्षेत् । ब्रह्मकोर पूर्व ही औषध आदिको एकब कर ले । फिर सिद्धरित चार कल्योकी, इसमें समुद्रकी प्रकास करके ञ्जापना करे । फिर उनमें सारमृतिका—हामीसार, मुहस्कल, वन्धीक (बल्बोट-दिवाड्), न्टीके संगम, मनेका, गोउनल और राजदारके मिट्टी काफर दाल दे। तरफारत् उन करकोनी प्रक्रमध्य, मोती, मोरोसना, कमल, रस्क, कहरक, स्कटिक, श्रेत कर्दर, तीर्च-जल, सरसी, एजदन (एक ओविय-

विशेष), कुमुद (कुई) ससं, गुगुल—कर सब झलका स्थ

समुद्र, बॉटबॉ, क्ट और अस्त्राद तीये युजमानके प्रयोक्ते यह करनेके रित्ये वृष्टि पचारे । इसके बाद अर्थना करे- 'जो देखकाओंके स्वापी करें गये हैं तथा जिनके एक हमार नेते हैं, वे बदाधारी इन्हरेज मेरी प्रहणशन्य पीडाको दर करें। ओ स्थात 🚃 🚟 मुख्यसम्ब, स्वत विद्वार्थीसे पुरू और अबुक कानित्यके हैं, वे अप्रिटेश यन्त्र-प्रहणसे उत्पन्न हुई मेरी 📖 ह स्वयुक्त करें । जो समस्त प्राणियोके 🕬 सामी 🖥 तका भविष जिल्ला कहन है, वे धर्मकरूप यम कर-यहणसे उन्हर हाई बेर्र बीहाको मिटाये। जो राशसगणीके अधीधर, सक्तात् करुवाधिकं सन्द्रश प्रधानक, समुध्यत्। और अत्यन्त

करेका है, 🛮 📖 देव मेरी प्रहमकन्य पीक्षको दूर करें।

<u>जो जगराहा करण करनेकाले हैं तथा मनद जिनका वाहन है,</u>

वे अस्त्रबीकर स्वयूक्त करुपदेव मेरी चन्द्र-प्रहणजनित पीढाको

न्छ करें। के प्रावस्थाने समस्त प्राणियोकी रक्ता करते हैं,

हरूमा क्रम्पुन किन्द्रश विव **१००० है, वे वायुदेव मे**री

करुक्तेच क्रिकेट आजारन इस प्रकार को — 'सभी

१-वह 🚃 मतरपुरायके ६८ वे 🚟 🛗 🛗 📆 मा 🛣 है, वेबीन परिव्यक्तरण 📹 📺 पुरिपूर्व 🔛 अगुर है, 🚥 🗮 सुर कारनेके किये मस्त्रभूकणार्थ 🚃 📰 💺 ।

क्तरमहणसे उत्पन्न हुई पीदाका विनादा को ।

'जो (नव) निध्यंकि' स्वत्य तथा सहन, विज्ञुल और गटा थरण करनेवाले हैं, वे कुनेस्टेव चन्द्र-महणसे उत्त्य होनेवाले मेरे प्रापको नष्ट करें। जिनका लत्यट चन्द्रमसे सुरोधिक है, क्यम किनका चहन है, जो विनक समक चनुव (फ विज्ञुलको) थरण करनेवाले हैं, वे देखियदेव इंक्स मेरे चन्द्र-महणकन्य पीकाक स्वाच्या करें। हस्तर क्या किन् और सुर्यसित लिटोकीमें जितने स्थावर-व्याप खनी है, वे संबंधिर विव्यापना खनी स्थावर-व्यापन खनी है, वे संबंधिर (चन्द्रप्राप्त) खपको परम कर है। इस क्यार देवलाकोको अग्रामिक साथ-साथ उन क्यानका करें। इस क्यार देवलाकोको अग्रामिक साथ-साथ उन क्यानका महाने अपने स्थावन करें। पित क्षेत्र पुर्वाको माला, बन्दन, बच्च और मोदानक्षण उन बाह्यकोको सवा प्राप्त है। विवयर स्थावनका प्राप्त प्राप्त करें। विवयर स्थावनका स्थावनका प्राप्त करें। विवयर स्थावनका स्थावनका प्राप्त स्थावनका स्

अपने इष्टदेवकी पूजा कर उन्हें सामान करते हुए बहल-कालकी वेस्सको व्यतीत करे। चन्द्र-प्रहणके निवृत्त हो कारेक **प्रमृत्तिक कर्य कर ग्रेट**ान करे और उस (प्रज्ञश्वर अञ्चित) पष्टको कानादिसे सुद्ध हुए ब्रह्मको दान कर दे।

(शाध्याय १२५)

### मरजासक (कृतुके पूर्व) प्राणीके कर्तव्य सका ध्यानके चतुर्विध भेद

राजा युनिविद्यने युक्त-भगनन् । गृहरभ व्यक्तिको रुपने अन्य समयमें क्या करना चाहिते<sup>ते</sup> । गृप्तकर इस विधिको आप मतायें । मुझे यह सुननेको बहुत हो अधिरकक है ।

भगवान् श्रीकृष्ण बोले—अहराज ! जन सनुष्णां यह शत है जम कि उसका अन्य समीप आ गवा है हो उसे गठदध्यम भगवान् विष्णुका स्मरण अरना धारिने । बान करके परित हो सुद्ध केंद्र कवा बारण कर जनेक जनसके पुष्पदि उपवारों से नाययणकी पूजा एवं लोकेंद्राण उनकी सुन्ति करें । अपने प्रतित्वे अनुसार क्या, भूमि, सुवर्ण, क्या आदिका दान करे और कर्यु, पुत्र, चित्र, की, केंद्र, घन, धान्य तथा क्या आदिसे विस्तियो हटाकर समस्वका परित्यण बार दे । चित्र, राह्य, उदासीन अपने और बार्ण बार्ण उपवार और अन्वारके विकार विकार व करे अर्थात् साला हो जाय।
जन्मकृतिक संग्री शुंध एवं अंशुंध कार्मीका परित्याम कर इने
स्त्राच्या अस्त्रा करे — मेंने समस्त भोगो एवं मिन्नीका परित्याम कर दिया, भोजन भी खेड़ दिया तथा अनुरोपन, मारत, अवनुष्ण, गीत, दान, अग्रसम, एवन आदि कित्याएँ, पदार्थ, नित्य-नैमितिक और काम्प्र सभी कित्याओंका उत्सर्जन कर दिया है। वाज्याव्योंकर भी मैंने परित्याम कर दिया है, अवनुष्पण और पर्यावर्थ मी मैंने कोड़ दिये हैं। अवत्रक मेरे एका-पैर करु छो है, उत्सरक में स्वयं अपना कार्य कर सुंगा, मुक्तो सभी निर्मय रहे, कोई भी पाप कर्म न करे। अंक्यांश, बाल, पूर्णी, कियर, बिल, पर्यंत, व्यावर्थ मार्थ, कार्यादि परात्मी

१-पुरलें तक महामारतियों निविधी कारक पुलेले कर से मिनिवेंके साथ ही उत्तर होनेजी कर विरुत्ते हैं। कर, महत्व, संब, महत् कारक, मुक्त, कुट, नेल और वर्ष—में से सिविधी हैं।

२-इसी करूनी कर्ष परसपुरण, ब्यास्त १ (१९ ) ३७-३८ व्यक्ति ब्यास्त परिस्तृत्व पार्टी सुरुदेवनी व्यक्ति पूर्ण गरी है सक मनुष्येत व्यक्ति कर ब्या हो कर, ब्यास्ति पक्त व्यक्तिया व्यक्ति व्यक्तिया व्यक्ति व्यक्तिया व्यक्ति व्यक्तिया समस्य सर्वत है।

अवस्थित हैं, वे मुझंसे निर्भय होया सुन्नी खें। कन्दुर भगवान् विष्णुके अविरिक्त मेरा खेई कथु नहीं। मेरे नीचे-कपर, दाहिने-वर्षि, मसक, हदय, बाहुओं, नेजें कथा बार्जिने मित्र-कपूमें भगवान् विष्णु हैं विषय खे हैं<sup>र</sup>।'

इस प्रकार सम कुछ होद्रकर समेंदा भगवान् अन्युक्तो इद्रवर्गे धारण कर निरम्तर कासुदेशके कामक मोर्तन करता हो और जब कृत्यु अति समीच का जान, ता दक्षिण्या भूदते विकासर पूर्व अभवा सरकार और सिरकर जान करे ग्रमा जगराति भगवान् नियुक्त इस प्रकार विभाग करे—

विन्तुं विन्तुं 🚃 📰 सीरी कार्युक्त अवस्थान् स **व्याप्त प्रमाणकार्यः** । कारने व्यवस्था कृष्यं नृतिकृषयक्तिसम् ।। क्रिकेट्स क्रिकेट वर्ष přighyt gyprot fogodove, a परित्यं गरितं सान्तं प्रश्लितं नवकानन्त्। विश्वीसकी सुरुवर्ग स्वयन्त्राह्म ।। अञ्चलि सरकाश पनि बार्स कुरु पुन्त्। आववीरकार्व मासू सर्वीतन्त्रकानेतित ॥ तस्य विकास्य सौरित्यं कृष्णः पूरो स्वरः। पक्षकानोक्षभः । मेले (राज्यान समाप) एव पर्वत् भागीतः परवास्त्रात्रकोशनम्। **ः वर्षे**कानमाः स्तरम् सर्वेत्तरं हरिष्**त**ः (arred easite-au)

'भगवान् विष्णु, विष्णु, इसीकेन्द्र, केन्द्रव, समुसूदन, नारायण, नर, जीदि, कसूदेव, अनार्दन, कारह, यङ्गपुरन, पुण्यतिकास, अञ्चल, वायन, वीयर, कृष्ण, नृतिह, अपराधित, पर्यनाथ, अञ्च, श्रीच, सम्बेटर, अध्येक्टब, सर्वेचरेकर, शुद्ध, सनन्त, विस्तवयी, मार्ची, साम, इंग्ली, गरुरकान, किरीटकीस्त्रुपानर तथा अञ्चय परमात्मको मैं प्रचान करता हूँ। सामा । मार्चा आवश्यको है, आप शीव मुझ्में निकास करें। मार्चा एवं आवश्यको तरह मुझमें और आपमे कोई समस न रहे। मैं नीले समलके समाम श्यामवर्ण, सरकान विस्ता मार्चाम्

व्यक्तर् क्यां है व्यक्तर् स्थानित है व्यक्तर्थ स्थान् क्रीकृत्य अपन्यों अपने व्यक्ति है व्यक्ति हैं व्यक्ति प्रश्नित देवों ।'

हुन सन्त्रोको पहुंचर चनकान् विष्णुको प्रशास करे और प्रशास दर्शन विशे तथा 'उन्ने बसो चनको नास्क्रोकाय' हरा सन्दर्भ निरसर का सन्त्रा ग्री । जो न्यांस प्रसादमुक, शंक, का, गरा तथा पर्य चारण किये हुए, केस्ट्र, करक, कुम्बल, बीधसर, विश्वास अवदिसे विश्ववित, नवीन सेवके समान व्यासकात्रा चरकान् विष्णुका ध्यान कर प्राणीका परिस्थाग

राजा मुनिविष्ये पुनः पूजा—धगवन्! शता सम्बद्धी तो यह विषि व्या बतायी, यह स्वस्थित रहनेपर म शब्दा है, पांतु व्यावस्था तहन और वीरोगी पुरुषेकी विकासि मोहम्स्त से असी है, साथ और व्यावस्था तो

बत है का है। अस्तिहरू और रोगमत व्यक्तिक 🔣

करता 🖟 🚌 सबी पायेसे एक हो परावान् अच्युतमें लीन हो

कुरतके स्थानकर कान करना हो असम्भव ही है। इसकिये प्रणे ! दूसरा के कोई सुराय अपन बतानेका कह करें, जिससे स्थान निकास न हो।

सम्बद्धम् सीकृष्ण बोले—महातव ! यदे और करन सम्बद्ध न हो तो सबसे हात है कि तरकसे विश्ववृत्ति इटाकर गोविष्यक स्मरण करते हुए प्राणका त्याग करन बहिने, क्योंकि व्यक्ति निस-विस श्ववक स्मरण

ए-परिस्तासम्बर्धः योग्यंक्तवानि द्वारोशीयसम्। योग्यं विः व्यवेत्रहमुन्द्वस्त्रीयसम्। विः व्यवेत्रहमुन्द्वस्त्रीयसम्। विः विश्वास्त्राम् । विष्णास्त्राम् । विश्वास्त्रम् । विष्वास्त्रम् । विश्वास्त्रम् । विश्वास्त्रम् । विश्वास्त्रम् । विष्वास्त्रम् । विश्वास्त्रम् । विश्वास्त्रम् । विश्वास्त्रम् । विष्वास्त्रम् । विष्वस्त्रम् । विष्वास्त्रम् । विष्वस्त्रम् । विष्वस्त्रम्यः । विष्वस्त्रम्यः । विष्वस्त्रम्यः । विष्वस्त्रम्यः । विष्वस्त्यस्त्रम्यः । वि

क्त प्राण स्थापता है, उसे कही भाग जा होता है। सनः 🚥 प्रकारते निवृत्त 🔛 निरस्तर वासुदेवना 📟 🚃 चारिये ।

रुपन् । अब आर पश्चाम्के विकान व्यानके राज्योंकी सुने, व्यक्ति महर्षन्यक्रेयजीने मुहस्ते कहा या - कन्त, ठरमोग, जपन, मोजन, बहान, मांच, ब्री, गन्य, मांच्य, बर्ख, आभूषण आदिमें बदि अस्पन केंद्र खता है तो यह उपार्यका 'अक्ष्य' स्थान है।

यदि जलाने, यहने, ठवपाने, व्याप्त तमा प्रकार करनेकी देवपूर्व कृति हो और 🚃 व 🐖 ते इसे 🖩 होधकीत 'तैर' प्यान करा गया है। बेठकी विकास

- विकास क्षेत्रको विकास प्र**ा**पियोके कल्पाणकी थक्त 🛲 🛢 कांकुं स्तरिक ('कवे') ध्यान है। समस इन्द्रिकेट अपने-अपने 🚃 निवृत हो जान, इरयमें किसीको मी फिला नहीं बतना और 📟 🖚

क्रेक्ट क्टम्बर क्रिक्टक प्राप्त करना, परमाधनित हो क्क - क 'कु - व्यक्त सरुप है। 'आवा' प्यानसे क्रिकेट-बेटि एक स्थानसम्बद्धाः प्राप्त होती है, 'देर' ध्यानसे

नुस्क क्या क्रेस्ट है। 'बर्च्य'(स्त्रस्थिक) स्थानसे स्वर्गकी प्राप्ति 🌃 है और 'सुभर'-स्थानसे मोधन्ये मान्ति होती है। इसलिये देश प्रका करन चाहिने विश्वते करणानमधी 'शुक्त' व्यानी

📰 धन-वित्त लढा समा यो । (अध्यय १२६)

## स्कर्त की 🖷

धावान् श्रीकृष्याने सञ्च-तसर्। विक्रिकृतिः बाचे, कृप, तकाग, कावली, कृत्तेस्तन तका निर्माण करानेवाले 🚃 हत 🚟 स्त्राचेती—कर्मका विसयी, सुत्रकार आदि सची पुरवकर्मा पुरुष अपने इहार्सक्ति इधावसे सूर्य एवं क्यूप्राची प्रकृते समझ कारितान् विधानमें बैटनार दिव्यक्तेकाते यह वस्ते है। भी उत्तम गति जात होती है । पायके प्राप्तिने जितने भी रोकस्थ है, हिंही स्थान करिया स्थान आदिया निर्माण करनेवारम स्वामि निवास करता है। बाँद उसके निवर दुर्गतिको जात 🏢 हों तो उनका भी वह उद्धार कर देख है। विदायन का गांध गाते हैं कि देखें । हमारे कुलमें एक पर्याका पूर उत्पन हुआ, विसने जलाशनका जिल्ला और हो। 🚾 सन्तर्यके बलको पीकर गीर्ष संदूत हो 📰 है, उस सरकार कार्यानेवारोके सात कुरनेका उद्धार हो जात है। सम्बद्धा वर्षी, देखालय और 🚃 हाबाबले प्रयू—ने 💖 इस संस्तरते उदार 📗 ।

निस 🚃 पुर्गर देवलेसे महा-वित्तके 🚃 🖼 हम 📖 🛊, 🔤 प्रसर 🚃 🚟 🚞 🚃 🖼 रहके 🚃 सुन्धपुर्वाच प्रान केता है। इस्तरिपरे न्यायसे प्रत्या कारण 🔤 🚃 चारिये। यूप और 🚃 हरू पर 🔛 और

कृष्टेको 🚾 🔤 🔤 संध्य करता दुआ विश्वास अरेका करनेवाल अर्थ अर्थ 🚃 🔤 विशुद्धरम्बर बद्धार चंद 🔤 🖫 सूत्र 📖 करोत 🖟

इहापूर्वकर्म करनेवाला पुरूष कृतकृतन 🗏 आहा है। इस 🚟 🖁 🚃 📹 🛊 📥 📹 सक्छ 🛭 और 🚃 🚃 महराती है। 🧱 🚃 है, वहें 🥌 है। अपने स्थान स्थान स्थान है अपने स्थान स्थान

प्रचार-प्रसार 💹 यात्रा 🛊, स्थातक वह 📖 सर्गकस्क 🚃 १६२ करत है। यो व्यक्ति हंस आदि पश्चेको 🚃 और

🚃 पुन्नेसे पुक्त 💹 तदागरें 🚃 पीता दुश्य 🚃 📱 और 📖 सालक्ष्में पट, अज़ाहि, 🚃 तथा चेतु अहरेते अनेक बीच-बाहु कर पीते हैं, उसी 🚃 🚃

t-fact gart men release endormersmalleads वंशरेक्टनचे र्थ पे प्रति शहर 🔤 स्थापने करेनाहार 📟

(क्वरको १२५।॥५--४०) २-व्यक्तिकृतको 👑 मिरन दीर करि केर कर सम्बर्ध और स्थाप स्थाप कृति । स्थाप सम्बर्ध प्रति में स्थाप सम्बर्ध है । स्था

और व्यक्तिके जानो निकास है। एको नररकर, पूछ, सकत स्वीर संप्योधो क्योंपर पुण्येक साम नराय साम है। नर्स साम चेदा-स संकेत 🖂 🔛 🚐 के गर 🚃 🚟 🖫 🔛

सफल है, उसकी कड़ीका प्रशंसा की जाय । 🖥 तहाग 📖 बनाबर उसके किनारे देखालय बनवातः है तथा उसमें देवजीतहा करता है, उसके क्ष्यका बढ़ातक वर्षन किया पान ? देशरहकारी हैट जनतक साम्यान्य र 👭 साथ. तमतक देवालम मननेवाला क्यात कर्गने निवास करता है। पुत्र ऐसे स्थानपर करवाना चाहिये, नहीं बहुत-से बीच कल पी सकें, कृपका जल कादिह हो से कृप करकनेकलेके सात

कुलेका 🚃 हो बात है। विकास करने हुए कुपना कर मनुष्य पीते हैं, यह सभी प्रकारका पुरुष प्राप्त कर लेख है, देख मनुष्य सभी 🚃 अपन्य करता है। 🚃 🚃 आके १८५१ वृज्योंके बीच जान देवालय बन्या उठ

व्यक्तिको कोर्ति सर्वत्र व्यक्त रहतो है और शहर सम्बद्धान दिव्य भोग भोगकर 📖 कामदी तकका पर जार करता है। औ स्थापित बांधी, कुल, तकाल, 🚃 🛲 स्थाप प्रकार

- अर्थ प्रता । और **- अर्थ** क्या और न्यूर |

उसका नाम काराज भी भागे लेहे।

वै वृक्ष धन्य 🖁, जो परत, पुरत, पर, 🌉 बरक्रह, काल, लक्ष्मी और क्रम्बद्धार 🚃 उपका करते है। वस्तुओंके बाहनेकालेको 🖩 कवी निग्रा नहीं करते। भर्म-अर्थसे शीत बहुतसे क्योंसे तो मार्गमें लगावा क्या हरू ही युक्त श्रेष्ठ है, जिसकी प्राप्ताने परिषक विश्वान करते हैं। सका समावारे के पुत्र अधनी साथ, परस्क 🞹 🚟

हार प्राणियोंको, पुन्तिक हारा विकासका और फरवेके हार। पितरोंको प्रसार 🔤 है। पुत्र तो निश्चित नहीं है कि एक वर्षपर भी श्राद्ध करेगा या नहीं, परंदु कृष 🖩 🎹 अपने

फल-पूर्व, पत्र कादिका दानकर वृक्ष रुग्यनेकलेका 🚌 करते हैं। यह फल न हो अग्रिहोक्राद्दे कर्म करनेसे और न ही

पूर उत्पन्न करनेसे प्राप्त होता है, जो फूर क्योंने सामग्रहर कुकके लागतेसे आस होता है।

क्रफट्रर कुछ, पूर्व देनेवाले कुछ, 📖 देनेवाले कुछ तमा वृक्षमध्या कुरीन भीकी भाँति अपने वितुक्तर तथा

परिकृत दोने कुलाँको उसी प्रकार सुख देनेवाले होते हैं, जैसे रुक्ते एवं कुछ अबंदि अपने रुक्तनेवाले तथा रक्षा आदि करनेवाले दोनोंके कुलांका उद्धार कर देते हैं। जो भी मगीचा

📰 रुपक है, उसे अवस्य ही उत्तम खेककी प्रति 📰 है और वह व्यक्ति नित्य राजकेनपार, नित्य दानका और नित्य

🚃 🎫 फल परा है। जो पूछा एक पीपल, एक नीय, 🚃 जलाद, दार हमाले 🚃 एक-एक कैया, मिल्य और

आकरण 🚃 💹 आसके युग्न रूपाता 👣 🚃 🚃 न्तका पृष्ट 🔤 देवता<sup>र</sup> । जिसने नत्त्वाय न कनवाय हो और एक 🖫 पृथ्व न रुप्तया हो, उसने संसारमें क्रम्प रेजर

मनैन-स्व कार्य विज्ञा । कुर्वेकि समान कोर्व भी परोपकारी नहीं है। एक कुरने कहे खबर दूसरोको झामा प्रदान करते हैं तथा चल, कुम 🚃 सक्का संस्कार करते हैं। मानवीकी शुभ 🔤 पुर्विक 🚾 नहीं होती—यह 🚥 हो 📟 ही है,

भिन्नु 📰 पुत्र कुपुत्र 🖁 📖 हो 📖 अपने विहाने हिन्दे 📟 🚾 🚾 हेतु 🖥 📟 🚾 है। इसकिये

निक्षान् व्यक्तिको 🚃 🏗 विशिष्ट्रकेस जुनसरोपण 🚃 क्तक पालन-पोपन करे। इससे शहारण न तो पहाण होता है और न निन्ध नहि ही जात होती है, चरिक कोर्ति, यदा एवं

इसी प्रवार 🖩 📟 थन्त देव-मन्दिर करवापर उसमें देक्जुर्तिन्त्रेश्ची प्रतिमान्त्रेश्चे स्थापित करता है, मन्दिरमें अनुरोपन, देवरक्षणीया अभियेक, दोवदान तथा विविध

उपन्यवेद्वारा 📟 अर्था करता अभवा करणाता है, वह इस 🚃 🚃 प्राप्त कर जन्तमें परमध्यक्ते प्राप्त 🚃 है ान इस लोकमें चौर्ति एवं ब्याची सरीरवे ब्याची उसा

**‡1 (579—175)** 

<del>व्याप्त पुरु पति का होते हैं।</del>

वीपदानकी महिमा-प्रसंगमें व्यक्तिसार राजी लक्षिताका ॥

मुभिक्किरने पुश्रा—भगवन् ! 📺 कीन-सा 📖 तप, निक्य अषक 📖 है, 🔤 करनेसे इस 🚞 वनकम् सीकृत्य कोले—महराज ! 📖 🚃

विगल भावके एक तपस्त्री मधुरामे आकर प्रवास कर स्त्रे मे ।

उन देवी कामवतीने भी गति प्रश

विवयको 🚥 सुने—पिगरामुन्ति का मा—'देवि ! संक्रान्ति, सूर्वभरूप, बन्दकरण, वैकृति, व्यक्तिपाराचेण,

उत्तरायण, दक्षिणावन, विजुल, एस्प्रदाती, सुत्र विशेष बतुर्दशी, तिथिक्षय, सतमा तथा सहयी—इन पुन्य दिनेने

स्तान कर, अतपराधन की अध्या पुरुषारे अपने औनकी पाद प्रत-कृष्य और जलता हुआ दीपक भूमिटेक्टो दान देना

चाहिये । इससे ब्राह्म एवं ओजली शरीर का क्रिये है । सवा युधिहिरने पूछा-अववृत्दन ! भूगिके देवता

कीन है ? भेरे इस संज्ञक्को दूर करे। भगवान् श्रीकृतम् केले—महाराजः । पूर्वकल्पे सरवपुर्णके आदिने त्रिप्तंक् चायका एक (सूर्वकंडी) सञ्ज था. 🖷 सदारीर स्वर्गको जाना चहता था। पर महर्नि चरित्रको ठेवे बाजारू क्या दिया, इससे विशेष्ट्र बहुत दु:बी हुआ और ३सने विश्वामित्रकीसे समस्त कृतान 🚃 इक्के 🞉 🚃 विश्वापित्रने धूसर्वे मुक्तियो 🚃 🚌 🚾 🖒 । उस स्वीत्रेपे सभी देवताओंके कार्य-साथ विशंकुके लिये दूसरा सार्य करना प्रस्थ कर दिया और 🚃 (सिथवा), जरिक्ट, 🔤 कुम्बान्द, रीट, पेट ज्ञानात स्थान स्थान 📶 को स्थान तया देवताओंको प्रतिभाषा थी निर्माण कर दिया। उस समाव इन्हर्न आधार इनको प्रार्थना और विश्वविकानीले सुद्धि रोक्लेका अनुरोध विश्वा तथा टीपदान करनेकी सम्बंध थे। जो प्रतिमार्ग इन्होंने कवर्षी जीं, इनके सहस, निक्लू, 📟 🔤 सभी देवताओका कास हजा और वे 🖩 इस 📟 प्राणिबोक्त कल्याण क्या लिये क्या प्रतिकारकी मुर्तिमान् क्यामें स्थित हुए और नैवेक्क्सिको ऋत्य करते हैं सक अपने भक्तीपर ब्याम होकर ब्रास्टन देशे है, वे 🔣 भूमिदेव कहरतते हैं। एकन् | इसीरियो उनके सम्पूक दीपदान करना वाहिये । भगवान् सूर्यके रिज्ये प्रदत्त दीवकी रकत्वकसे निर्मेत 📟 'पूर्ववर्ति' कम्रस्त्रती है । इसी प्रकार दिक्को 🛗

निर्मित क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र क्

'पूर्णवर्शिका' कहरमती है। ऐसे ही बहाकि दिन्ने प्रदेश वर्शिका 'प्रावर्शि', जागेके दिन्ने प्रदेश वर्शिका 'प्रावर्शि' तथा प्रदेशिक दिन्ने प्रदेश वर्शिका 'प्रावर्शि' कहरमती है। इन देवताओंकि दिन्ने हैसे ही वर्शिकायुक्त दोन्नेम्बर दान करना चाहिने। पहले देशिकाय पूजा विश्वर्थि कहर कई चहारे में भरकर दीपदान करना चाहिने। इस विविद्धर को दीपदान करता है, ब्राव सुन्दर देशिकाय प्रावर्थि वर्शिकार को दीपदान करता है, ब्राव सुन्दर देशिकाय चाहिने हैसे करने प्रवर्शिक को प्रवर्शिका होता है। दीपके सुन्दर दीपदान करनेकारण व्यक्ति में प्रवर्शिका होता है। दीपके सुन्दर चाहिने करने चाहिने, करने, क्या अवदि तरसारण-पुक्तके नहीं। जानने हुए दीपको सुन्ना कहीं चाहिये, म ही दास स्वारंगे हटना चाहिने । दीप कुत देशिकाय करना होता है और सुन्दर कुत की दास सुन्दर कुत की हुए दीपको सुन्ना कहीं चाहिये, म ही दास स्वारंगे हटना चाहिये। दीप कुत देशिकाय करना होता है और सुन्दर्भ कुतनेकार कुत चाहिये। दीप कुत देशिकाय करना होता है और सुन्दर्भ कुतनेकार कुतने हिन्दर्भ कुतनेकार कुतने होता है और सुन्दर्भ कुतनेकार कुतने हिन्दर्भ कुतनेकार कुतने होता है। दीपका कुतनेकार कुतने हिन्दर्भ कुतनेकार कुतने होता है। दीपका कुतनेकार कुतनेकार कुतने हिन्दर्भ कुतनेकार कुतने होता है। दीपका कुतनेकार कुतनेक

स्वन् । अस्य द्वैनदानके महास्त्यमें एक आक्ष्मान सूने—निद्धारं देशमें विकास नामका एक राजा रहता था। उस पूत्र विकास नामका थे, स्वास्त्र था। उस स्वरित्ता । स्वास्त्र महत्त्व द्वार त्यक्तोंसे सम्बद्ध अस्वन्त सुन्दर थो। एका स्वास्त्र अनुसरण करनेवाले व्यक्तश्र

करवर्णको का अवस्थ एने हुई। यह किया-मीदारें सहको प्रव्यक्तित दीवक प्रतिदेश सत्त्रवा करती थी। विजेशकपरे अधिक-व्यक्तिको को समापेशपूर्वक दीवदान करती थी। यह चौरको, मिलको, मन्दिरो, पीपतको युक्तके पास, मोबाला. पर्वविज्ञकर, नदीतहो एक कुम्मेंपर प्रतिदेश दीय-दान करती थी। एक कर उसको सर्वक्रियेन उससे पूछा—'लक्तिने । तुम

दीसदानका फल क्यें की बतालओं । तुम्हारी चरित देवताओं के पूजन आदियें ≡ होकर दीक्दानमें इतनी अधिक करों है 7' Ⅲ सुनकर व्यक्तियों कहा — 'सकियों । तुमलोगोंसे मुझे Ⅲ

तिकाका नहीं है, न ■ दियाँ, इसिक्ये में तुमलोगोसे क्रिक्यका चल कह रही हैं। महाजीने मनुष्येंके उद्धारके रिज्ये सामान् पर्यक्षिकीको महदेशमें क्षेत्र देविका नदीके रूपमें पृथ्वीयर सामान्त किया, चल पापीका नशा करनेवाली है.

उसमें एक कर भी सान करनेसे मनुष्य शिवकीका गण हो जात

है। 🖿 नदीमें अर्ह्न मगवान् विच्युने नृतिहरूको 📖 सान किया या, उस स्थानको नृतिहरीर्थ अहते है। नृतिहरीर्थने

🚃 🚃 सभी पाप 🚃 🖺 जाते हैं : सौबीर नामके एक 📖 थे, जिसके चुटेशित से जिल । रजाने देविकाके 🚃 एक विष्णुपन्दिर 🚃 🚃 मन्दिरमें 🚃 🚃 पुण, पुण, दीप, नैवेश आदिसे पुजन और दीपदान किया करते थे। वे एक दिन 🚃 🧰 पुर्णियको वर्ता दीपदानका ब्लूत कहा 🚃 🚃 🖹 है। राविके समय सभी क्षेत्रीको नींद जा गयो। उस परिदर्श पूर्वजनमें मुस्किक्यमें मुनवर्तिको कानेको 🚃 हुई। 📟 🚃 🙀 🌃

सुनायी दी। 🔣 भवभीय होकर 🚃 वर्ता 🎆 दी और दिय गर्ना, 📖 दीवल पुरने 📰 📟 📟 पूर्वकर् अस्तरा 🛮 🚃 🚃 कल कर केट वृत्यु हो करे. पुनः 🖩 विदर्शदेशमे चित्रस्य श्रमानी 🚃 📗

वर्गात्रका चारपर्याको सै पटरानी हुई। स्त्रीवयो ! कार्तिक मार्क्स विकास देखें स्वयं कर होता है। 🏰 में मुक्तिक की, येश दीपदानका कोई 📖 नहीं 📰 🎮 भी मुझसे 🚃 🖩 मन्दिमें भववदा दीप प्रमासित हुना 🚃 में 📖 📰 न कर संकी, इस समय किना 🎟 पुरसे को दौपरानका कृष्यकर्म हुआ था, 📰 पुरुव-कार्यके कारणसक्त्य अग्रज में 🔣 महारामीके पद्यद विश्वत हैं 🔚 📕 अपने पूर्वजनक 📰 🕯 । हसी 🚃 मैं आप 🔲 🚃 📖 भरती रहती है। 🛮 दीपदानके फरव्यो 쨰 🚾 अन्त्री 🐔 इसलिये 🔤 देखलयमें दीप जलाती 🛊 ं त्वरित्वास 🚃 📖 सुनकर सध्ये स्क्रेडियाँ यो दीपदान 📟 रूपी 🔚 🚃 सम्प्रतक राज्य-सुद्ध चोगकर समी 🕮 📰 साथ विष्णुत्वेकको चल्पै नवी : इस प्रकार 🖥 🔳 🚃 🔤 दीप-दान करते 🛊, वे 📖 तेज 🚃 विष्णुलेकारे का करते हैं। (अध्याप १३०)

### कुकेतरर्गकी महिमा

मामको पूर्णिक, 🌃 पूर्णिक तक तुलेक और 🌉 🌃 पुर्निम 🔛 📰 📰 शुभ लक्षकीचे सन्तर कृषकर्ण 📰 गौओंके साथ फोब्रेनेसे 🚃 कुल 🚃 होता 🜓 🚃 क्वोत्सर्गको 📟 गर्गाचाकी मुससे इस प्रकार कारणक है—सबसे पहले बेडप्रमामका प्राप्तार माहबाद 📖 फिर अध्यद्भिक बाद्ध करना चक्किमे। किर एक 🚃 स्कापित कर 🚃 ठहकर पूका 🚾 पुरत्ते हका 🚃 चाहिये । उस सर्वाभुसुन्दर तरूप न्यूक्रेके 📖 चापने विञ्चल और दक्षिण पागमें पानपुक्त 🚃 📖 🚃 आहेशे अनुसिख को, गरोगे पुष्पक्ष मश्त्र पश्च दे। अनका 🚃 क्षरण नक्षियाओं को भी भूषित कर उनके 📖 कहे 🗞 'आयके 🚃 🚃 एवं सुन्दर कृषधे में 🚃 🚃 📰 है, 📖 इसके साथ सम्बन्दतापूर्वेश प्रसात क्षेत्रर विद्वार करें।' पुर: उनको कसारे आन्धादिकार एवं स्वादिष्ट भीवनसे संतुष्ट 📖 देवासन, गोष्ठ 🚃 नद<del>ी संग</del>न

🔤 अन्तरे प्रोक्त प्रतिवेश 🛮 प्रत्य 🖦 🐧 🛍 न्यक्रकार, गरमते हर, क्षतुरमन् तथा आहंकारसे पूर्व युव क्षेत्रमें हैं। इस विधित्ते को क्षेत्रसर्ग करता है, उसके दस पुरा फलके और दस पुस्त अरोके भी पुरुष सहतिको जात करते है। यदि कुन नदीके जलमें प्रवेश करता है और उसके सींगसे चा पूँकरों जो करू उद्धारमा है, उस तर्पकाण अरुसे क्योसार्ग **ार्ज्यारे व्यक्तिके पितरोको असम्पत्ती पाप होती है। अपने** सीमसे था क्रोमे क्द्र कर निही कोइता है हो क्वोत्सर्ग 🛶 📖 भार जानेक मयुक्तक का 🛲 है। बर ध्वार हाव रूपो-चौहे स्वान अअनेसे फिल्केंको उवनी वृति नहीं होती, जितनी हुति एक वृत क्रोब्रोसे 🚃 है। प्रयु और 🚃 ५६ ह्वच मिहाका विन्ययन बन्लेसे विवर्धेको जो तुसि नहीं होती, यह तुसि एक कुकेलर्ग करनेले 🚃 होती है। को व्यक्त अपने व्यक्ति उद्धारके रिज्वे कु**व कोड़ता है, यह सार्य भी सार्यरोकको** आह करता है। (अपनाय १३१)



### फारपुन-पूर्णियोत्सव

महाराज युविहित्ने पूजा— मन्त्रम् ! प्रश्लम्स्यः पूर्णिमको प्राप-प्राप्त तथा स्थर-नगरमे उत्सव क्याँ क्या जाता है और गाँवों एवं नगरोमें होत्ये क्यों जल्मयों कर्ता है ? क्या क्षारण है कि बालक उस दिन पर-पर अन्तर-इस्तप शोर प्रचार है ? अहाड़ा किसे क्यते हैं, उसे सीसोच्या क्यों कहा जाता है तथा क्रिस देवशाया पूजा क्या क्या है। अस क्या है तथा क्या है। अस क्या है तथा क्या है। अस

धगवान् श्रीकृष्यने ब्रह्म---प्रार्थः। सत्यपुर्णे स्पृ नामके एक शुरुकोर जिल्लाम् सर्वगुणसम्बद्धः 🔤 📹 वे । 🚃 समस्त पृथ्वीको औतकर सन्नै शुक्तओको 🔚 🚃 कर्णे पुरुषे भौति प्रयास्त्र कारून-पारम्न किया । स्मा राज्यमें कभी दुर्मिस नहीं दुशा और न किसीकी अकरत कृत् 'र्ह्म । अधर्मने विस्तीयो संद नहीं थी । 📰 एक 🔣 नगरके रवेग राजहारपर सहस्र एकत्र होका 'बांड', 🔠 'पुरस्तने लगे। स्थाने इस 📖 भवनीय सिल्ली पाला गुरु। स्थ कोरोनि कहा कि महाराज । होशा सहकडे एक तक्षमी प्रतिदेन हमारे शास्त्रकोच्ये कह देती है और उसक विसी अन्य-तन्त्र, ओवधि आदिका प्रभाव भी नहीं पहल, उसका किसी भी 🚃 निवारण नहीं हो पा रहा है। अधरकारितकेशा वह करन पुरुषात्र विदिसत राजाने राज्यपुरोहित महर्षि समितः धुनिसे उस राक्षसीके विषयमें पूछा। तब उन्होंने एक्सरे कहा — राजन् । 🞟 जपका एक दैसा है, उत्तीको एक पुत्री है, जिसका जम है होंचा। उसने बहुत समयतक उप तपरव करके दिलक्षको प्रसन्त किया । उन्होंने उससे करदान व्यक्तिया कहा ।' इसकर होदाने वह बरदान माँच कि 'प्रचे ! देवता, देख, मनुस्य आदि पुत्रो न मार सके तथा कालानाक आदिसे भी मेरा क्या न हो, साथ ही दिनमें, गुजिने, श्रीतकाल, उल्लाहरू हन्या वर्षकारूमें, भीतर जनव बहर कहीं भी भूते किसीसे यह र हो।' इसपर भगवान् संकाने 'तकान्' ==== भी भवा कि 'तुन्हें उत्पत्त 🚟 📹 होगा।' इस अन्तर कर देका भगवान् सिव अपने धामको चले गये। वही 🛗 नक्ती

कामकविणी एकसी नित्य मालकोंको और प्रमानने पेट्रा देखी है। 'अद्युटा' मन्त्रका समाम कानेपर वह क्रेंका प्रमान के

जाती है। इस्रक्षिये उसको 🚃 🗎 कहते हैं। यहरे 💳

द्यान् ! अवन परस्पान माराके सुक्त पक्षकी पूर्णिमा

विकास सभी लोगोंको निहर हैमार फ्रीडा करनी चाहिये और

| स्वाप्त पाना हां हैसन चहिये। महरक स्काइयोंके बने
| उस्त्राह सेन्द्र पार सैनिकोको महित हमेंसे पुद्धके | |

उस्त्राह | देहते हुए निकट पाई और आनन्द मनाये। सूची
स्वाप्त इक्टुकर | देहते स्वाप्त करनेते | | स्वाप्त स्वाप्त इक्टुकर | देहते स्वाप्त करनेते | | स्वाप्त स्वाप्त इक्टुकर | देहते स्वाप्त करनेते | | स्वाप्त स्वाप्त हम्मा करनेते | | स्वाप्त संवप्त संवप्त | स्वाप्त संवप्त संवप्त संवप्त | स्वाप्त संवप्त संवप्त संवप्त संवप्त संवप्त संवप्त संवप्त संवप्त संवप्त | स्वाप्त संवप्त संवप्

वरिश्वासीका यह क्यान सुनकार राजा रखुने शानुर्ण राज्यमे

**ब्राह्म के अला है।** 

लोगोंसे इसी प्रकार ठरसच धरनेचंद्र कहा और स्वयं में उसमें सक्कोग किया, जिससे वह राज्यों विनह हो गयी। उसी दिनसे इस लोकमें विकार उसमा माना दुर्ग और सभी देगोंसे इसना करावाद्या वसोगीरा- रोग इस दिन किया करा है, इसलिने इसको होरिकार भी कहा करता है। सन विविधीयन सर एवं परम जानन देनेवाली मा धरलपुनको पूर्णिया विधि है। इस मा एडिको माना विद्येनकपरे रथा करनी वाहिये। गोवरसे लिपे-पुरे बरके अध्यानमें बहुतसे खहुदस्त बाहक बुल्को कहिये और घरमें पितर बाहकोंको करहितियं सहसे करके उसको कर मा और बदिया स्थाना देवर बाहकोंको विस्तिर्गत करना सहिये। इस विधिये विस्तार देवर बाहका कुकिहिरने पूक्र — धगवन ! इसरे दिन कैन

च्यति ? चनवान् श्रीकृत्वने कक्क-महाराज ! होत्वेके दूसरे

माससे करन्त अञ्चल आगमा होता है, उस दिन 📖 करना

दिन प्रतिपद्भे । निर्माक्रयासे निवृत्त हो पितरों और देवताओंके लिये तर्पण-पूजन करन चाहिये और सभी दोनोंकी पानिक 🞮 पानकार विभूतिको बन्दना कर उसे अपने शरीरपे लगाना चाहिये। भरके अधिनको पोक्सो लोक्कर उसमे एक चौकोर कव्हल बनाये और उसे रंगोन असतीने अलंभूत करे। उसपर एक पीठ रखें। पीठपर सूवर्णसहित परस्कोंसे सर्वन्वित कराड़ स्थापित करें। 🔛 असर 🖑 क्यून ये 🚃 🚃 चाहिये। सीमान्यवती बीको सुन्दर क्या, आभूका पहनकर दही, दूब, अत्यत, गन्द, पूच, वसीपीट 🚟 📨

#### रक्तकोत्सव, खेलोताव तथा रथकोताव आविका वर्णन कुलको देवनार्थ तथा वितुषार्थय आजने प्राप्त नहीं बरेता।'

शका सुविद्वितने युद्धा-पनवन् ! इस संस्कर्षे बहुतसे सुगरिकत पुन्त 👣 स्तु उनके 🔣 दमनक (दौरा) जनक पूप देवलाओंको को 🚃 साथ है तथा दोलोसाम और रथपात्रोत्सम 🎹 📨 विशेष 🕏 इतथर वर्णन करनेकी आप कुरा करें।

यगसान् श्रीकृष्यमे सङ्ग-पर्थः। मन्द्रकाल पर्वतपर दलनक नालका एक जेड़ तथा अरचना सुन्धिना जुड राजन हुआ। उसके दिव्य गृजके प्रधानमे देवाहुकई विमुख हो गयों और क्षि-मृति भी जब, तम वेदान्यका आदिये जुल हो गये। इस प्रकार उसके गन्यसे सब लोग उन्पत्त हो गये। 🔤 गुप कार्वे एवं पहुल-कार्वेमें मित्र उपस्थित हो गया। यह देखकर सहस्रवेको 🚃 स्रोप करन हुना और वे दमनकरो बोले—'दमनक । मैंने तुन्हें संसार (के दोवें) 🖩 दमन (रहत्त) करनेके लिये अन्तर किया है, व्यक्त दुसने सम्पूर्ण संसारको उद्वेतित कर दिया है, तुन्हारा न्य कम्प ठीक नहीं है। सम्बन्धिक कहना है कि स्वतास्य साम क्या है। इसलिये ऐस्व कर्य कला चाहिये, किससे लोगोंने खोग न पैदा हो । एकका अपकार करनेवाला व्यक्ति जावन कहा जाता है, परंतु जो अनेकोका अधकार करनेने प्रकृत हो गया हो, 🐯 लिये क्या कहा बाव ? तुमने तो बहतमें खेगोंको दुःस दिया

**ार्जिक पूजा करनी चाहिये। फिर आश्रमंजरीसहित उस** प्राप्तन करना चाहिये। इससे आयुक्ती वृद्धि,

🚃 🚃 🚃 कस्मार्थ सफल होती 🕏 । चेककं समय पहले 🚃 🚃 धोक्र-सा 🚃 चोजन 📺 चाहिये। इस 🚟 जो

प्रत्यकृतेस्वय मनक है, उसके सभी मनोरम अन्यक्षस 🔣 लाब के करे हैं। उत्तरि-व्यक्ति संबंधित विनादा हो जाता है और कह पुत्र, चीत्र, चन-कन्यसे पूर्ण हो जाता है। यह परम 🚃 विकास्त्रक्ति पूर्णिय सम विक्रोको दूर करनेवाली 🖁

🚃 🚃 🌃 उत्तम है। (अध्याप १३२)

गते 📰 मुक्त दक्ताने बदा— 1988 | 1 THE REST. STATE | 1988 | 1988 भवीं विश्व है। आक्ष्मे के मुक्ते इतना सुराम्य दिया है कि उसके प्रकारते सभी लोग रूपं उत्पन्त हो बाते हैं। इसमें मेरा क्या

🔤 है। आपने ही मेरा ऐसा स्वयान बनाया है। जिसकी की अभूति 🚟 है, इसे यह त्यान नहीं समस्य; नगरी अनुसी

न्यापनेमें यह असमर्थ होता है'। निरम्पाय होते हर भी अपने 🌉 राज्य दिखा है ।' कुल्ब्युक्त इस तकेंसंगत बताको सुनकर ब्रह्माधीने बन्हा---'दानगर ! सुन्द्राश सम्बन ठीक है । मैंने तुन्हे

राप दिया है। उसका मुझे इव्देंक दृश्या है। उसकी निवृत्तिके लिये में हुई। अरदान देख है कि बसल-ऋतुमें तुम सभी देखकार्जेक मलकपर चढ़ोगे । जो म्हाँक भक्तिभावसे दमनक-पुन देवताओपर चक्रवेगा, उसे सदा सुख प्राप्त होगा। पैत्र

क्रमके सुक्त व्याप चतुर्दशी दमनक-चतुर्दशीके नामसे विकास क्षेत्री और उस दिन वस-निवयके पालन करनेसे

🚃 📰 पर यह 🌹 वर्षेगे । 🚃 पर्युक्त सहाजी अन्तर्भन हो गये और इंग्लब भी अपने गन्ममे तिभूवनको 

खने लगाः वसी दिनसे क्लेक्ने दमनक-पूजा प्रसिद्ध हु<sup>हर</sup>ः वक्कार् जीकृत्व कोले—व्हराज ! 🚥 में

१-५ वर्ग वर्गः महातः सुच व पद वेता त कालेव एकं पूज्ये सूत्री वर्णः (कार्प्य ११३ १५)

२-महि, परस 🚾 दिल्लुकार्ये 🚃 📟 📟 वर्णा है ह

है, इसलिये में लुन्हें शाप देला है कि कोई भी व्यक्ति कुछने

एक बार केंत्र मासमें मासकार देवताओं से समावृत

पगवान् 🚃 साजपावसे विश्वकान थे। इसी समय मृत्युक्तीकाने इपराज्यस पूचले हुए देवर्षि नारद बहालोकसे

भगवन् शेवल्के करा अस्य । 🎆 भगवान्त्रो प्रकास किया 🐙 व्यक्तनवर बैठ गये। सर्वत्र धगवान् शंकाने देववि

रवक्कम वर्गर 📖 🛊 ।

🚃 कोगा ('

दोलोत्सवका वर्णन कर रहा है। किसी समय कदकानी देलोसाय हुआ। वसन्त ऋतुमें देवानुनाएँ और देवता विस्कार दोला-प्रवेद्य करने लगे। सन्दर्भको व्या मनेदारी ...... देखकर मनवरी पार्वदीचीने संबद्धतीसे बात-'बरबन ! इस अधिकारे आप देखें। जान 🎹 रिन्ने 🔣 🚃 खेला कार्यात्मे, ब्राह्म 🛘 📰 साथ बैठका देला-संद्र्य कर स्कृत । पस बसाकर दोसा बन्दनेको करा। करनानुसार सुन्दर उत्तम इहार्युतस्य दो खन्म 🚃 🚃 सत्यत्मकप 📺 लक्ष्मीका चट्टर एका और चलुका 🖘 🖘 रक्षी बनागर उसके प्राचीत बैठनेके लिए समादिव पैठावी रचना की । यस पानके क्रमर अस्यना मृद्दर कमास और रेसकी **व्या व्याप्त व्याप्त रोज कार्यनं रोज योगवंद पूर्वा** और फूल-मालाओंसे उसे समा दिया। इस प्रयक्त देवकाओंने अति उत्तम दोला तैयार कर चनवान् संकरको आदार्चक प्रदान किया । अनुसार धरवान् सन्तुपुरूष पन्ता 📖 साथ दोलाक बैठ गये। जनवान् शंकाके धर्मर दोस्थ ब्रुलाने लगे तथा जया और विजयः होन्हें साँखवाँ चैकर बुलाने लगीं। रस समय पार्वतीओंने बहुत ही बधुर न्वरवे गीत गुन्द, निर्मा शिक्ष्यी अस्तरपद्मप्र हो गमे । गल्बर्ग गीव गाने शरी, अन्यक्षरी नवने लगी और 📖 🔤 प्रकारके पाने 🌃 सेला से गये। परंतु शिवनोके दोला-विकास सम्ब पन्न 🚃 लगे, समुद्रमें इलक्ल कब गया, प्रकल क्या करने रहता, लोक पता हो गया । इस प्रकार पैलोकाको आहे न्यापुरत रेक्गलेंने 📉 📉 करनेवाले रिक्रणीये पात जनकर 🚃 किना और प्रार्थन कहने लगे—'ग्राथ | जान दोला-लीलको निवृत्त हों, क्योंकि 🊃 क्षेत्र 🚃 🖁 रहा है । इस क्यार देवताओकी प्रार्थना सुनकर 📠 हो निकारीने दोलाते · व्याप्त करा कि 'अपनी कारत ज्ञाने के स्थल इस

करदंशे पूक्त--- 'सुने । ........ आगमन कर्डारे हो रहा है ?' कर बोले—'देक्ट्रेव । मैं मृत्युरकेकरे 🚥 रहा है। यहाँ कामरेकके 🗐 बरान्त अधुने साथ संसार अपने वसमें कर 🔤 है। यहाँ कर-सन्द सुर्शनित 📖 प्रवन बहुता है। कारत प्रत्ये सक्योगी—कोकिल, आध्रमप्रदी आदि सभी 🛲 🖛 सहयोग प्रदान कर रहे हैं। नगर-नगर और **ज्ञान-प्रापने कराना जात नह पोलना कर तार है कि इस** के का की अपन्त की स्थान करने एक जार कार्यक है। भगवन् । उसके शासको सभी लोग राजवारे हो से है। के 🚃 का 🚟 🚃 देखकर 🖥 अपने 🔤 अन्य 🛊 ।' 🚃 🚃 सुरक्त भगवान् 🚃 नवर्ष, 🚃 पुनिगण और सर्व देवसओको साथ 🔤 मृत्युरकेकरे 🕮 और उन्होंने देखा कि वैसा भारवजीने बद्धा था, बढ़ी दिश्रीत पृत्युत्वेकमें स्वाध्त 🕯 । सब लोग उपनत 📕 को है। अन्यदर्ग 🚃 है। 🌃 वसकार सोधा देख 🖩 के 🖩 👀 स्मिन साथ जो देवता 🕅 वे जाये थे, ये ची 🌉 📭 🏚 गाने-कवाने हारो । वसनाके प्रभावसे देवताओको भी ब्रुट्स देखकर शंकरने यह स्थान किया कि यह तो बड़ा के प्रा है । इसके प्रतिकारक कोई-न-कोई उपाय च्यानिये । जो अनुर्व होता पुरुष देखकर भी अस्के उपय नहीं करता, 📰 अधारत ही 📉 पहुंचा. ुक्को साथ करता है। अब मुझे इन समय उप्तदसे रक्षा करनी खड़िये और लांगियक वसन्त ऋत्वत्र भी सम्मान रहान। व्यक्तिये । यह विकासकर रिस्कवीने कसन्त ऋतुको अपने पास दोलोसावको कोगा तथा नैवेच अपित का उत्तद देवकाओंके ा । विकास के बार मानमें स्थास मूल मन्त्रीसे अन्ते दोलकार असोहन कहनेना, कोना, प्रचान 🚃 कहे, चैत्र मासके शुक्ल पक्षमें सभी जीवोंको असन्द मनायेगा और सुक्षि-यठ करेगा, यह सन्दे 🚃 🛒 और मिला रूपसे देवताओंको सुख देवेवाले हो जाओ।' 🚃 🚾 देवताओंको स्वस्थवित किया और यह भी 🚃 🗏 भगवान् औकृष्य पुनः बोले—मातन ! 📖 🗐 'से व्यक्ति कान्त ऋतुमें रचवात्रीत्सव करेगा, वह इस संसारमें दिव्य चोग्रोको धोगनेवाला तवा नीरोग होना ।' इतना काकर शिवकी सभी देवताओं के साथ अपने खेकारी बसे गये। क्सन्त ऋतु भी शिक्ववीके अञ्चानुस्तर करने विकार करता हुआ।

अन्तर्थान हो गया। उसी दिनसे सोकर्ने स्वच्यानेस्त्रका प्रवार-प्रसार हुआ। जो देवसाओंकी रक्षणा करता है, उसके बन, पशु, पुत्र आदिश्री पृद्धि होती है और अन्तने यह

सद्यविको ऋन्त करता है ।

तुलीयको गौरी, चतुर्वीको गणपति, महामेको लक्ष्मी अभवा सरकती, पहीको सम्बद, सन्त्रमीको सूर्व, अक्टबी और चतुर्देशीको हिना, नक्कीको चरिकका, दशकीको केट्रकास आदि शालांकत कृषि-मत्त्रोंने, एकादश्चे तथा इन्द्रश्चेको

राजन् । जल आप विशेष विशिष्णेक वर्णन सुरे।

भगवान् विभ्यु, प्रयोदशीको सम्बदेश और पुर्नियको सची देवताअर्थेका अर्थन-पूजन करन चाहिने। इस प्रकार देवताओंकी निर्देष्ट विधियोंने ही इस्त्रकोत्सक, रोलोताक और रभवाक आदि उत्सव करने चाहिने । इस जनार नसक करूपें

उस्तव करनेवाला जाँक बहुत कालाक कर्नवा सुख चेनकर पूरः **प्राथमी राजाका पद जाना नगण है।** 

सर्वान् ब्रीकृष्य पुरः खेले — उक् । सा भनक् र्शकामे अपने नेत्रकी प्रवासको कामदोकको करन कर उपन या, इस समय कामदेवनी प्रतिका ही। और बीते देनों ग्रे-रोकर 🔤 करने लगीं । इसकर 📟 इसकी 🚃

क्षणा हो गया और वे निक्तांने प्रजंब करने समी--'महाराज ! आप कृष्णका 📺 कामदेवको 🚟 🚾 दे और हाईर प्रदान कर दें।' यह सुनकर प्रसन 🖣 तिलाकी कहा—

'पार्वती : पद्मि 🚥 यह पूर्विकत् करने 🎟 जो से सकता, परंतु चेत्र मासके शुक्ल पक्षकी अवेदरवेको 📟 एक भर 📖 मनसे 📖 होशह 📟 होगा । कै।

जुक्ल पश्चनी प्रवोद्धलीको वो भी कामदेवका पूका करेगा,

🚃 वर्गमर सुनी रहेण। इतन 🚃 📖 कैरकसर

क्ले नवे । करन् ! इसकी विधिको सुने—चैत्र मासके शुक्ल पक्षकी प्रवेदर्शको सान कर एक अशोकत्वस बनाकर उसके

्संबिश मनिव्य**पुराणस्** 

नीचे रति, प्रीति और बसकासहित कस्पदेवकी प्रतिमाको सिंदूर 📰 हरदीसे सकता व्यक्ति 🚃 सूतर्गको मूर्ति 🚃 🚃 च्यक्ति। पूर्ति ऐसी होनी च्यक्तिये, जिसला 🚃

विकासीओं तथ जोड़े हों, उत्सराई जिसके करों तरफ कड़ी हों, तन्मर्थ कुल कर रहे हों । इस प्रकार मध्यक्रके समय गन्म,

पुण, जूप, अवत, सन्पूस, दोप, अनेक प्रकारके पटा, 🚾 अबदि उपश्रापेरे चानदेवकी राज्य अवने परिचर्च भी पूजा करें। 🔣 इस प्रकार प्रतिवर्ग कारोतसम् करता है, यह सुनिश्च, रोम,

आहेच्य, समय जिल्हा जान करता है। विच्यु, महा तथा सुर्व, कह आदि वह, कायरेय, कायर और गण्यर्व, असुर,

क्रकर, सुवर्ण, अन, पन्ति लाह उसका प्रसम हो 🞹 है। इसको क्यों होक नहीं होता। यो वी वसन्त ऋतुमें रहि, धराण, आदि प्राप्तिका

धोकपूर्वक पूजन करती है, 📰 सीमान्य, इन्य, पूत्र और gradi 🚃 Hill 🕯 i महाराज । इसी प्रकार क्येंड महसके प्रतिपद विधिसे लेकर

वृद्धिकारक वर्णाली पृक्षणात्रका पृत्रवेतसम् मणान चाहिये। लोक प्रकारके समेरिकोदपूर्व एवं हास्तपूर्व गीत, शटक अवस्था अवस्थित करन चारिये । नवामी अभवा एकार्डाचेके **ात्रा** सर्वाच्या सर्वाच चौतापूर्वक सम्बद्धाः सर्वाच से

व्यक्ति व्यक्ति । इस क्वल पूर्णभावक स्रोकके समय दोक्स्कोरसक करन

🚟 और हादसीके दिन मृत्यातका 🛗 उसाव पनान चाहिते। इस अच्छा अनेक प्रकारके उत्सवीसे भूतमाताक

पूजन 🔤 व्यक्ति सपरिकर 🚃 रहते 🛮 और उनके कर्षे किसी प्रकारक स्थित करून नहीं होता। 🚃 मृत्यास क्लकर पर्वतिक अंशसे समुद्रुत है।

(अध्याम १३३—१३६)

१-कारकारो इस राज्यकार स्थान का हो गया, 🌉 सम्बद्ध-सुरस विशेषको साथि स्थानकार स्थान है, विशेषक पुर्वमे ।

### नम्र निवेदन और क्षमा-प्रार्थना

धगवतुम्बसे इस 🔡 'कटवान'के विशेशकुके काले 'संविध पविष्यपुरायद्व' पाठमांग्री सेवाने सहात है। विशेषकुके रूपने पुरानोके संविध अनुवादके प्रकारताओं परापर। 'कटकान' में प्रारम्भ से हैं। कही अब स्त्री है। निक्रके कई क्षार एक महानुभवेक का विशेष **क्रमा** 🖛 🛤 'करकर'के विशेषकु कामें 'परिव्यक्ता'ल 🚃 बित्य कर । यह कर हमें 🖩 अच्छी रूपी; 📟 🚃 पद्मपुरानोके अन्तर्गत जीवकपुरान 🔣 📖 पद्मपुरानने चरिगरित है। 📖 🗏 चतुर्वर्ग-चिन्तवनीय, सार्थ्य, दनस्वत्य, प्रकारका, जनसंस्थानस्तुत । । । । प्रापेत निवाध-सन्देशे वय, दान एवं व्यक्तिक अनुवासके प्रकारको मृत इलेक्सेक संदर्ग 🖫 चीरणपुरुषक 🖫 🕬 पास है। इन सब कारणार्थं इस पुरानकी बेहता और पहला किलेन अपने परिलक्षित होनेन्त 🗷 सामानात हरून विकासक्ता अवधिक्र-वैसे ही हैं। इस्तिन्ते स्वाधिक्रकाले व्याप्तिक हों विकानुगुलको कामकानुको काला-अगर्रको क्ष्मेंके 📰 हुए कर हैंसे महापूरणका 📟 अपूर्वार निरोक्षुके कार्य प्रमुत निरम चान । इस केरकके अनुकार ही यह निर्णय व्यवस्था परिनत कुन्छ। बहुताने ध्रीकापुरान सीर-प्रधान मध्य है। हराने अधिहातु-देव चगवान् सूर्व है। सूर्वज्ञायन 📖 देवता है। हरते ही संसारको प्रकार, क्या, जनश्रीत, गृहे, अस और अन्य बीवनोपयोगी सम्बद्धार्थ उपलब्ध होती है, उनके विन्ह पूर किन्न काम्यादरने विश्तीन होतार सरामध्ये पात हो नामा । स्वीदयके कद 🖩 दिखाओं, उत्तर, काँठ, कम, समुख और परा-पश्चिम सम्बद्ध और उनकी सम्बद्ध 📰 🔡 है, अन्यवा सारा जगह दक्षिकहेन 📆 परिचयञ्च से 🕬 । इस पूरान तथा काम पूरानों एने विदेश संदिवकोंके व्यास सूर्य ही वृष्ट, लगा, गुल्प, पशु-पश्ची और देवता रूप म्कुमॅरिः प्राप है—'शूर्व अलब क्यासास्कृत्व ।' इसकिये उपस्ताने सभी 🚃 सिदियों का थे. अस्य-अस्रोप्पको 📟 हो, तो इसमें का अक्षर्य 🛊 ? 🔤

संभ्याओं में क्या उपसना की जाती है। भीकानुस्तानें 🚃

है दि संख्यों ऐर्वकारमाक सुर्वेकात

अभि-वनियोगे देवं 🚃 छन्त को यी—'श्रमको सैर्व-क्षेत्रास्त्रहेर्वकवृत्त्रसम्बद्धः ।' सन्पूर्व 🚃 और ज्येतिव-माँ को के बारिक मूल निरंशक सूर्व ही है। स्वित्वकी प्रक्रियका विस्तृत वर्णन इसी पुरावमें उपराद्धाः 💹 है। इसके सदायकी कई अवस्थारिक वर्णन का 📰 है, किन्द्रे कर-कर पहलेकर को असकीय गान 🔣 है। इस्से प्रकार व्यक्ति कर्णकाणीय सामग्री, ्रेरिकृतिक सामग्री और भरतेके चरित्र बढे परम और विकास है। विकास इस-वर्ग-दान, व्यास 🚃 देखेक्सन आदिक निर्देशक 🔤 🚃 बार-गर ार्क के विकास है। अवत ------ अपनी समात्य संस्कृति और सन्तर्भ 🚃 🔛 🛍 द्वेत्वर विकर्तन्त्रविकृत हो 🛍 है । यह अस्तर्भ विकास स्था सर्वभूतकावादके पवित्र हैरना पाने भूतकार 📺 देश-विकेशकी पार्थिक सीमाने व्यापन् कर मेरिक हे एक 🖥 और इसीके राष्ट्रियता 🍱 देशकेकं जनसे पुरस्ता 🖁 और 🕮 देश-विशेषकी 🚃 🚃 स्वयंत्रको 🖥 'स्वयंत्र' 🚃 उसकी अध्यमें 📗 अस्पने 🚃 इतिहाँ कानने रूगा 🕏 । 🚃 🚾 पुरुषार्थ-अञ्चल-अर्थ, 🔣, काम तथा मोश ata केवल हो—'वर्ष और क्वन' में ही सीनेत हो गया है और 🚌 अर्थ-सम्ब 🛊 प्रेक्तपुरानी 📶 वर्धसम्बद न होनेसे अस्ति 📗 स्था है। विकास असमा स्थास असूर मानव क्ता क रहा है। 🚃 क्रमंग 🚃 कीं, भगवान्तर विकास नहीं। भागवाना अस्वरण करनेने ही तरहे गीरकका कोय होता है। एक और आज नहीं चयेच्याचार और यही अधिकार तथा सम्बद्ध अच्छा रिक्स एवं व्यक्तिगत स्वार्वकी पापमर्थ अवृत्ति बदारी जा रही है। सभी प्रायः अमरा है। सुद्र स्वार्यकी सिद्धिके किये कुरता, निर्देशता, हिमा और हरवामा 🚥 अर्थकराष्ट्रके जनकर धड़ारहेसे 📖 ज रहा है। ऐसे नाजूक स्त्राक्षे प्रत्य केहे अवस्थातिक प्रत्येक प्रचार-प्रसार, कुत-पाठन और आलोहनसे ही देशमें सालियन वातकाण, सरिकात और सम्पार्गपर चलनेकी प्रमुक्ति बायत् हो सकरी है। प्राचीने पक्ति, इस, वैराम, सदावाके साथ-साथ यह,

'भविकापुराक'ने जनसम्बद्धाः निर्णय जिल्ली स्वर्त्याको हुआ, इसके सम्पादको उसकी हो कठिनाइमोकः में अनुका कुआ। परिवादपुराण अस्तिकिक महत्त्वपूर्ण होते हुए की कर्तृतः पहला है इन दिनों विद्योग-कपसे उपेक्षित-सा रहा। 'मेक्ट्रेश्वर देस'से सम्बद्धार एक ही सूच संस्कृत इस पुरानका उपाय अस्तिको मात्र थी। इसके अस्तिरिक इस पुरानका कोई संस्कृतन तथा इस पुरानको कोई दोना तथा विद्योग की भावने कोई अनुकाद भी स्वरासक नहीं हुआ। विद्योग स्वरूप पूरा पाठ-चेद आदिका निर्यय करना कठिन था। यो संस्कृतक उपायका हुए उनके मूल प्रत्येकोने असुद्धियाँ विकास अनुकाद व्यवस्था हुए उनके मूल

सकेंगे। आजा है, परकामा इससे स्वयन्त्र होंगे।

इस वर्षमे करवाण के वर्षमा आरम्प तीन सात पूर्व जनवरीसे व्या गण है। इस व्या व्याहते वे व्या करवाण के अङ्गु व्यावको व्यावको समयसे व्यावको वर्दे, परंतु इस अवस्थित व्यावको वृद् वे व्यावको के व्यावको इस मूर्य व व्यावको वृद् वे व्यावको के व्यावको इस निस्तानको अस्ति। धूम्म के व्यावको होना स्थावको व्यावको अस्ति। व्यावको अस्तिरिक्त सेरे वस्ता कोई दूसरा अका वो नहीं है। योकको इसस्य यह व्यावको अवस्थित कि सम्बन्धे अक्की सेक्टों 'करपाप'के 🚃 प्रस्तुत हों।

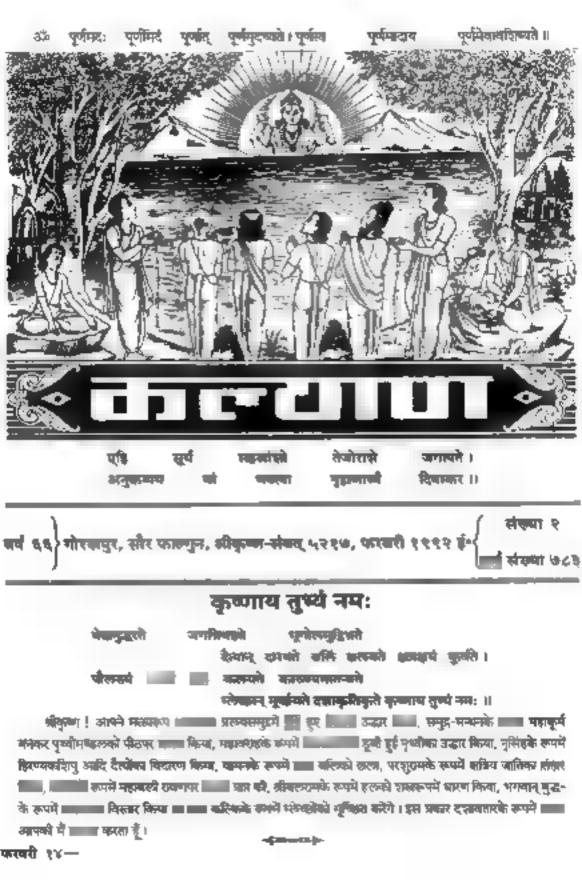
पविच्यपुरुषके इस 🚃 अनुवादका करेग्स विशेषकृष्ये प्रा-संस्थाने 🚃 🚃 🚾 वीन परिराञ्ज्योंने 👊 पूर्व 📕 सकेता : ये परिराञ्ज्य पाठकरेकी 🚃 🚃 🚾 🚟 होंगे । इस व्यक्तके सम्पादनमें 🔤 महानुष्यचेने इन्हर्य सहायक को है, उनके इस हदयते 🚃 है। अनुवादकः 📰 पृत्रकार 🐤 औमहाप्रगुलासकी ्राप्त — इस्ते — हुना — पुरुषे 🚃 अंहोंका अनुबाद पे॰ श्रीमृतर्शकरणे सामीके क्रम सन्दर्भ हुआ। इस इस दोनों महानुभाषीके प्रति इदयसे आपार मनक फरते हैं। जनुष्पदके संशोधन आदि कार्यमें क्याना र जा अपने 'करपहर्व'-सम्बद्धके विधानके के क्षेत्रजनकेत्रभवी दार्गने निकेर सहयोग प्रधान किया है। इनके प्रति भी प्रम सर्विक च्या परत है। इस विशेषक्रके सम्बद्धन, हर्माक्रेका, विजनिर्मण, युरू कार, प्राप्त विजनित लोकोरे हमें सहदयता जिल्हे हैं, वे सभी हमारे अपने हैं, उन्हें क्यक्य देकर इस उनके महत्त्वको बटाना नहीं बहते। इस कर चौक्कपुरानके सम्बद्धन-कार्यके क्रममें परमालयम् और 🚃 शरिक लीला-कवाओंका विकान-परान तथा ······· सीमान्य निरमार 🗪 होता रहा, यह हमारे रिपमे 🚃 यहरूको बात है। इमें 🚃 है, इस विवेक्श्वके बहन-बहनमें इको सहदय पहलोको भी यह सीभाप-राभ क्षां का लेका 🚃 इस 🔤 प्रदेशिक 📉 🚃 समसे पुरु

स्था हम व्याप्त वृद्धिके व्याप्त सकते पुरु स्था-आर्थन काते पुरु चम्चान् स्रोतेद्रव्यासनीके चरनोमे नमन काते हैं, विनके कृपासस्यक्ते स्थान हम सभी जीवनकः मार्गवर्धन कर व्याप्त है—

स्रिकः सर्वे 📉 निस्तिकः।

🚃 📰 प्रकृष् क व्यक्तिक्युः समाग्यवेत् ॥

—राषेश्याम क्षेपका



#### बावजपूर्णियाको रहाजन्यनकी 📟

भगवान् श्रीकृष्य बोले—वंदाएव ! ब्राह्म कालो देवासुर-संग्राममें देवताओद्वार दानव पर्यावत हो गये। दुःखी होसर वे दैरपराज बरिके साथ पुत्र शुक्राव्यक्षीके पास को और अपनी परावयका कृष्यक बरासाया ! इसपर शुक्राव्यक्षी बोले—'देवराव ! आपको ब्राह्म नहीं करना व्यक्षिते । देववहा बालावा गरिसे जय-परावय तो ब्राह्म ही वहणा है। इस समय वर्षभरके लिए तुम देवराव हम्मके साथ सीच कर लो, क्योंकि इन्द्र-पत्री शायित इन्द्रस्तो स्था-सूत्र बीचकर अवेय बना ब्राह्म है। बनाता प्रभावते इन्द्रस्तो स्था-सूत्र बीचकर अवेय हुए हो। एक वर्षभक्त प्रस्तिक कर्यो, उसके कर कुण्डर करणान होगा। अपने गुत्र सुक्राव्यक्षीके स्थानोको सुक्कर साथ बाता विश्वास हो गये और समयकी प्रशीक करने सले। राज्य ! यह स्थानव्यक्षक विश्वस्त्र प्रभाव है, इससे विश्वस, सुख, पुत्र,

आरोग्य और वन प्रमा 🔤 है। राजा युधिहिरने पूज- पगवन् ! किन स्मान विधिसे रक्तवन्त्र करने नाहिने। इसे नाहने।

धनावान् श्रीमृत्या मोले — मानवा । पूर्वितके दिन मारान्यास स्टब्स श्रीम माना माराज्या । निवृत्त माना मुद्दि-स्पृति-विविधे स्थान कर माना कौर विक्रोंक निर्मेल जलमे तर्वन कमा चारिके का उच्चकर्न-

महानवनी-(चित्रपादलनी-) 📖

भगवान् श्रीकृष्य सहिते हैं—महत्त्व ! महत्त्वकी श्रीविक्षीने हेंह है । व्यास्ति महत्त्व और क्लाव्यीकी सिर्ध सब लोगोंकी और विशेषकर

महानवसीका रुताव व्यक्ति मनाव वाहिने ।

क्या करें।

मुमिहिरने भूका—भगवन् ! इस महत्त्वनी-मानम आरम्प हुआ ! क्या वसीटके गर्भसे अदुर्गृत स्थापसे महानक्षी-मानम हुआ हुआ हुआ मूर्य सम्पर्स महानक्षी-मानम हुआ हुआ हुआ हुआ मुर्ग

प्रगतान् श्रीकृष्ण कोले—महरातः ! व्यः व्यास्ति सर्वकारिते, प्राथमम, व्यास्त और व्यास अपि कमसे देवताओंक जोरको 📰 करें। तदनसर अपराह-कालमें

वक्को अक्त, गीर सर्वप, सुवर्ण, सरसी, दूर्वा तथा पास स्टब्स पदार्थ रहाकर उसे बॉक्कर एक पेटलिका का ले तथा

्य एक क्रमणारमें एक ले और विधिपूर्वक उसके व्यास का हो। विशेष गोकामें लेकबर एक चौकोर मध्यल क्रमणार विशेष कर पीठ स्थापित करें और उसके करन

वन्यस्तित्व क्यान्ये पुरेष्टिकोट साथ मैठना चाहिये। उस समय सम्बद्धाः सन् प्रसम-चित्र रहें। प्रसूच-चानि करें। सर्वप्रथम

स्कारण राज्य सुध्यक्षिणी विकर्ष अध्यक्षिके हाए एकाकी अर्थना करे । अन्तरस्य पुरेतिस इस प्रतिश्चित रक्षापीटलीको इस मन्त्रका पाठ करते इस सम्बन्ध स्तिति सामाने वर्षि—

के स्वाचीनकारि प्रदेश व्याचार स

जनकार समाने चाहिते व्या सुन्दर व्या भीवन विकास दिवास विकास व्यापना पूजाबार अने संतुष्ट करें। यह स्थानका चाहिते। विकास व्यापना व्यापना विकास वि

(अध्यय १३७)

(कहा था १३० (२०)

है : इनका काली, सर्वमहत्ता, माधा, कालाधिनी, टुर्च, ह्याला तका संकर्धाता आदि अनेक नाम-कर्वोसे व्यान ह्या कृतन किया हाला है ।

देव, दानव, कबस, गम्बर्व, बाग, हता, विला, भर आदि

क्षा स्थाप करते है। कुलके सुर्वते स्थाप प्रस्के शुक्त प्रस्के अष्टमीको पदि

📺 नवात्र हो 🖥 उसका नाम महानकनी है। यह महानवानी 🔤 दीनो 📰 करकर, दुर्लम है। आसिन मासके सुकर

**ा परिवर्त, वर्ग और युक्तको देनेवाली है। इस दिन** 

मुख्यमस्तिनी चामुख्यका पुत्रन अकाश कारत खाहिये। सभी करूपों और मन्यक्तरोंने देव, देव आदि अनेक प्रकारके उपकरोंसे नवनी विधिको भगवदीको पूजा किया करते हैं 📰 तीनों लोकोंमें बाजाब लेकर पानको मर्बादकर पानन करती रहती है। राजन् ! यही परान्या जगन्यता करवती करोदके गर्पते 🚃 📕 भी और 🖥 🌃 मारुकार 🖥 🚃 अकारामें वसी गर्म और किर मिन्यावरणे स्थापन 🎹 🚃 पूजा प्रवर्तित हुई। भगवरीका यह उत्सव पहलेके 🛊 फ्रीस्ट्र था, परंतु सची प्राणियोके उपकारके 📰 तथा सभी विज्ञ-वाकाओंकी राणिके विषे विकासकारियो स्थाप विद्याल विद्यालका स्थाप स्थाप उपनास म 🚛 🛒 अध्यक्ष नतातात कर 🚛 🚃 उपकारेंसे पन्ता अवस्था करने पहिले। क्रम-क्रम, नगर-नगर और घर-घरमें सभी लोगोको कार कर प्रस्तानिक होकर भक्तिपूर्वक बाहाल, स्तीयन, बेरब, स्कूर, 🔤 📟 कृतन्त्र । अस्ति पृत्य करने चाहिने । अस्ति । हो यह पूजन अवस्य करना चाहिये। **व्यास्त्र १५०० एकोवारे एकको प्रतिकार अपूर्ण**-पर्यंत लोहापिहारिक वर्ग (अञ्च-लञ्च-पूजन) करक बाहिये । सर्वत्रथम पूर्वोत्तर हालवाली भूमिये नौ अभवा सारा 🚃 लम्ब-बौदा, पताबस्थोंने सुसबित एक पन्दर कशक चाहिये । इसमें ऑफ़्सेजमें तीन मेखला और पैपलके समान योनिसे युक्त एक अति सुन्दर एक क्षणके मुख्यको रचना करनी पाहिये । राजाके चित्र---क्रज, चानर, विकासन, अन्त, चान्छ, पताका आदि और सभी प्रकारके अन्य-तत्त्व, सन्वपने त्यकर रखे। इन सक्का अधिकासन करे। इसके अन्तरार कहानको भारिये कि वह शामकर चेत कहा चारणवर सम्बन्धदेवी कुछ करे और फिर ऑकारपूर्वक राजिकांक निर्देष्ट मन्बेद्धरा भूकरे संयुक्त पायससे हवन-कर्म करे । पूर्वकरतमें बहुत ही करावान्, 🚃 📆 लोड नामका एक देल 🔣 १३० च । देवताओंने मारकर खण्ड-खण्ड कर पृथ्वीपर निरा दिया। वही दैत्य आज लोहाके रूपमें दिखानी पहला है। उत्तीके अवोंसे ही विभिन्न प्रस्करके रुपेहेको 🚃 हुई है। 🊃 🚾

रक्षानक सिद्ध हुआ, ऐसा ऋषियोंने नतलाय है। हवनका हका रोग पागस हाथी और घोड़ोको खिलाकर अनको अलंबन कर मामुलिक पोप करते हुए रक्षकींक साथ सम्पोक्षपूर्वक नगरमे कुवना चाहिये। राजको भी प्रतिदिन **ार्डिं और देवताओं के पूजा करनेके बाद** 🗯 वसीपाँहिः पूजा भारती पाहिये । इससे राजको विकल, मुक्त, अस्तु, 🚥 अया बलावी स्वरित होती है। इस जकार लोक्सिकारिक कर्म करनेके अनकार अष्टमीके दिन पूर्वाह्में कान कर निकायपूर्वक सूचर्ण, चाँदी, पीपल, तमित्र, मुक्तिक, प्राचन, बाह्र अवदिको दुर्गाको सुन्दर मूर्ति बनावर उच्चा सुरक्षिण स्थानके चीच सिंहासनके ठानः स्थापित मरे। कुन्त, कदन, सिन्दुर आदिने उस मृतिको वर्षित कर कमल आदि पुन्य, पृथ, दीव तथा नैवेश आदिये अनेक वाले-गावेके साम करका पूजर करना चाहिये। कदीशन सुति करें। महुतसे लोग क्य-प्रापः 📖 राज्येषद्व लेकर पार्च और वादे होकर 🔤 हो। दीवायुक्त एका पुरेशियके साथ 🚃 🧰 यगवाधिको इस मन्त्रसे पृष्ट करे---**ार्थ । इस्ता व्यवस्ति वर्धानेको ।** पूर्व देशक क्षमा काले काला सामा मनोउन्तु से ॥ समुद्रोदानः वीधुक्ते 🚃 सम् किरमध्ये प्रमानि 🚟 हे सुनिवित्ति ।। (कारार्ग १३८ । ८६-८७) इस 🚃 पूजकर क्सी दिनसे होजपुर्वी (गूमा) से 🚃 🔤 च्यदिये। अस्तेषेत्र साथ 🚌 करनेसे जो 🚃 धनवर्तके रुपैरको हाँ 🎟ण पूर्व होगयुचीने ही हुई। इसरिक्ने होक्कृषी कावरीको अस्यत्त मिन है। 🔣 राष्ट्रअंकि वचके 📰 बहुको प्रणानका सुनिक्ष, 📰 और अपने विजयको प्रति-हेतु भगवतीसे प्रार्थना करनी जाहिये और उनका ध्यान तथा इस स्तृतिका पाठ 📖 प्रकृषे— सर्वव्यात्रसम्बद्धाः 📖 सर्वार्वस्तरिक्षे । इस्त्रे व्याप्त विश्व विश्व हो ॥ कुंकुनेन सन्तरको सक्तेर किलेतिने। **िक्रक्टब्स्ट्राक्टबरों पूर्वेंक् सर्व ग**नः त (क्वरणी १३८। ९१-९४)

सम्बद्धे लोहांपहारिक कर्म तथाओंको 🚃 🚃 करनेमें

इस प्रकार अष्टानिको सब प्रकारने नयकानिक पुजन कर रात्रिको जागरण करना चाहिये और नृत्यदिश उत्सव कराना चाहिये । प्रसारतापूर्वक वरिके पाए जनेक नक्कीको प्रतानकर मगनवीको कहे समावेको स्थव विशेष एक करने चहिये। अपराह-सम्बद्धे रक्षे अन्य मनवरी दुर्चनी प्रतिकारको स्थापित कर पूरे राज्य भरमे प्रमान कराना चाहिने । अपनी सेनासहित राजको भी साथ राजा भाषि ।

🚃 🚃 माना निर्माणक रिप्टे पुरस्तारित करनी -647340-

वसूच्या पुरावनी

परावान् **बीकृ**ष्य काले हैं—स्वाहः । पूर्वश्वसमें देवासर-संग्रामके समय 🚃 📉 📉 'इन्ह्ये 🚃

प्राप्त हो', इसलिये काजपहिना निर्माण किया : काजपहिन्छे देवताओं, सिज्-विकाधर तथा जग आदिने मेर 📟 स्वापित कर राजी उपको—पुष्य, भूग तथा द्वीपादिले उसकी

पूजा की और अनेक प्रकारके आयुक्त, छन, पन्टा, 🎟 🖽 आदिसे 🔤 अलंबुल विषय । उस 🚃 🚾 🚾 दैल

हो गये और पुद्धमें देवशाओंने उन्ने पंतितर का सर्गावः राज्य आह कर किया । दैस्य ब्याब्य कोकको बक्ते गये : उसी

दिनसे देवता उस इन्ह्रपष्टिका पुजन और उतस्य करने रहने । 🎹 समय अपने महान् पुन्य-प्राह्मके कारण 📰

उपरिकर वस् स्वर्गमे असे । उनका देवसाओंने हुन्स सम्बान किया। उससे प्रसम्भ होकर हजाने कह मध्य तनी दिया और कर

देते हुए बता कि मुध्योमें इस व्यवसी अपन पूजा करें, इससे आपके राजके सभी दोन दूर 📗 📖 और जो 🔛 राजा वर्ग-अतुर्ने (भारपद सुकत ग्रदर्श) 📖 नवाले इसक

पुरुत करेगा, उसके राज्यमें क्षेत्र 📰 सुनिया का योगा, किसी प्रकारका उपहल नहीं होगा, प्रजारी प्रकार को निरोध होंगी, सर्वत्र 📟 यह होंगे। राज्यमे प्रकृत का सन्तरित

होगी। इन्द्रका 📰 क्वन सुनक्षर राजा क्वरिकर कर् 🚃 ध्वजको लेकर अपने नगरमें चले आये और 📟 इन्हर-

🚃 पूजा कर 📖 मनने समे। इस कावर्जाहरू 📖 **ार्ज देवी माना** गया है।

अब मैं इन्हान्यज्ञके उत्सवकी विशेष भवा रहा है। बीस क्षय लेके, संश्वर, उत्तम काहकी एक बहि बनाबर उसे सुदर चाहिने । जिससे 🚃 निर्विद्ध पूर्व 🖥 । इस 🔤 जो राजा 🚃 समान व्यक्ति पर्यक्तीको यहा 📖 है, 📰 सभी

अवस्था 🚟 चुटकर यगवरीके लोकको प्राप्त कर लेख है 🔳 उस म्बक्तिको सनु, भीर, मह, 📟 🚃 📟 गर्ही

होता । 🔤 🚟 वक सदा नीरोग, सुखी और निर्धय हो जाते है। को व्यक्ति विकास करण करण है था

🚃 है, उसके 📕 सभी अध्यास दूर हो जते हैं।

(अभ्याय १६८)

रंग-विशेषे वर्षोति सुर्वाचल को । 🚃 💹 अत्रपूषण आपूर्ण पिटक चौकोर होता है, इसे

'सोमानस' 📟 📰 है, दूसरा आयुवन 📖 रेनका ्रे, इसी **ट्रांस** देशसम्बन्धी

🚃 🕳 तथा चहिने 🚃 पुष्पमाला, घष्टा,

अवदिसे इस वर्गे ।

इका 🚃 गृहने मुक्त मिहान और पायस 🚃 🚃 📰 बताये : 🚟 📰 डिक्का दे। उस ध्वनको

वरिते स्वकृतर स्थापत पर दे। में 🔛 😑 🚃 📺 इत्सम सनाम चाहिये। अनेक प्रकारके कृत्य, गायन, जादन कारते हुए महत्तनुद्ध 🔤 उसस्य भी कराने चाहिये।

कराज्यम् तथा 🚃 चोकमदिसे भयी शोगीको संतुष्ट कर कान पाहिने।
कर पास्त्री

पर्याचीत्र 🚃 करने पार्थि ।

इन्हरूबक्त पूजन, अर्थन तथा उत्सवादि कार्य सम्पन्न कारण चाहिये। यदि एक वर्ष कारनेके बाद दूसरे 🔣 📟 व्यवसारके 🚃 पुक्रवदि कार्य न हो सके तो पुनः बारह

धर्व बाद ही करक चाहिये । ध्वजके अञ्च-धङ्ग होनेपर अनेक क्कारके रुख्या 🚃 हो जाते हैं। यदि व्यक्रपर कीआ

🔳 🚃 तो दुर्पिश 🊃 है, उत्कृत बैठे तो राजकी मृत्यु 📕 चली है । क्लोल 🔣 से 📖 विभाग होता 🖥 । इसकिये

सावधान होकर इसकी हुए। करनी चाहिये और भक्तिपूर्वक उत्पक्तकर पुरुष व्या चाहिये । यदि व्या

ध्यक गिर पढ़े का हट 🚃 📕 सोने 🚃 चरित्रेका ध्यक बक्कर इसका 🚃 और अर्थनकर भ्रान्तिक-पैष्टिक आदि कर्म 🚃 कराये। सहस्यको परेतन आदिसे संसूर 🚃 चहित्रे। 🚃 🛗 🗷 📰 इन्द्रप्यक्की कड 📺

पूजा करता है, 🔤 📉 गृष्टि 🚾 है। मृत्यु 🔤

अनेक प्रकारके दिस-पीति आदि दुवीयों, कटोका पप नहीं रहता तथा राज शतुओंको पराणित कर विश भारतक राज्य-सुवा कोमकर अन्त समयमें इन्द्रलोकको प्राप्त कर लेता है। (अध्याप १९९)

#### क्षेपमारिकोसम् र्वकारके स्थापी अपने सम्बद्धि अनुसार अपने वस्के सम्ब

सरामान् श्रीकृष्णने सङ्ग्रा—स्वाराम ! पूर्वकारको भगवान् विष्णुने वाकनकप धारणकर दानकरम व्यक्तिको स्वाराम इन्द्रको राज्यका पार सीप दिया और एका प्रतास पातास लोको स्थापित पर दिया अन्यवस्ति व्यक्ति प्रश्नी स्वरा रहना स्वीनस्र किया। कार्तिकको अन्यवस्त्रको ब्रारा सारी पृथ्वीपर देखोंको यथेह चेहार्ग होती है।

मुमिहिरने पूजा — मध्यम् ! वहेमुद्देशिक्यदे विभिन्ने विज्ञेष रूपसे कवानेकी कृत्य करें । इस दिन किस क्यूका दान किया जाता है । स्था देवताकी पूजा सि स्था है स्था वहेन-से सिक्स करनी आहिये ।

मगनान् अविकृत्या कोनो—राजन् ! जनके दूर कृत्या विकृतिको प्रथमके समय जिल्ला भगके दूर करनेके जिल्ला समय समस्य करना कार्यः । जन्मान् (विक्रियः) के पत्र सिरके करन समा क्या दूर कुमने ! । इसके कर पर्वशासके नामों — यम, वर्णक्या, जन्मा कैकाका, अन्तक, काल जा सर्वशृतक्षका जाना जनके अहेशको दीर विवादकीको पूजा करनेक बाद दरकारो क्यानेक अहेशको दीर कलाने । पर्वाकके समय किया, विक्रमु, ब्राह्म अवदिके मन्दिके, कोहागार, वैस्य, सभामकाय, नदीतर, व्यास, तकाम, तकाने दीर वापी, भागे, इस्तिरहाला जा

अपनास्त्राके दिन प्रातःकाल कानका देखा और पितरीका परिवर्षक पूकन-तर्गन आदि भी तथा पर्यम सदद करे । अनकर प्राह्मणको दूध, दही, वृत और अनेक प्रधारके स्थादिष्ट मोजन करकर दक्षिणा प्रदान करे और उन्हें संसुद्ध करे । अपराह्मकालये राजाद्वारा अपने राज्यमें यह बोलित कराना चाहिये मा सामा दस लोकने बारेसका शहरान है । नगरके कानी सक-सुका करके नाम प्रकारक रंग-विरंगे तेरण-पताकाओं, पुष्पमत्त्रकों तथा बंदनकरेसे समान्य चाहिये। नगरके सभी लोगों अर्थाम् नर-वारी, बाल-वृद्ध व्यक्ति चाहिये कि सुन्दर उत्तम क्या चानकर कुंकुम, बन्दन आदिका लेग समाकर तम्बूलका

 करते कृत् अपनदपूर्वक कृत्य-पीतादिकोका आयोजन
 करे । इतः स्था स्था उत्त्वसस्य एवं प्रतिपूर्वक इतः हिन उमेलक कृता श्रीवि । प्रदेशके समय दीपमांशा प्रश्नातत

 अनेक प्रवसके द्विप-मुख कहे करने चाहिये। इस समय शक्स स्वाची विकल्प करते हैं। जिले अधको दूर करनेके लिये हेड कन्यक्षेत्रये द्विप-मुखोपर तामुल (यानका लाया)
 इस द्विपकेशे व्याच्या करना चाहिये। द्विपमालाओंके

आवित्रा प्रदेश-वेला दोकाहित हो जाती है और एकस्त्रदिकां यब दूर है जाता है। इस प्रकार क्वाल लोभासम्बद गारकी लोका देखानके अदेशकों शंजाकों अपने नित्र, मन्त्री आदिके साथ अर्थविके समय कीर-कीर वैदल हो चलक चाहिये। तमकार्थकारी सि क्षाओं प्रकारता दोकक लिके हो। पूरे गारकी

मेरे कमर आज प्रस्ता हो गये होंगे : फिर राजा अपने महलमें सिंह्या को स्थान

रक्तावर देखकर स्थान यह याना व्यक्तिये कि रामा 🔤

पान रात बीत कानेपर कव कव लोग निहाने हों, परवी क्षिकोंको काहिये कि वे सूध कवाते हुए परध्यमें कृती हुई ऑगन्सक व्यक्ति और क्षा प्रकार ये दरिहा— परवे निस्सारक कों। प्रतःबाल व्यक्ति

एकाको कविने कि हाता आयुक्त आदि देकर काहानी, सरपुरूकेको संसुद्ध करे और फोकन, सम्बूल देकर हाता कालोको प्रकारका सरसार करे तथा सामग्र, सियाही और

१-मन इस 📖 है—

क क

सर्वर 🚃 🚃 वर्गहः । सर्वार्णः सर्वोत्रम् 🚾 🚃 🚾 (स्वरार्ण १४० । १)

सेवक आदिको आपूर्वज, 📹 अहरि देकर संसूह करे 🚃 अनेक अवस्के मल्लाहीसा आदिका उपयोजन करे । मध्यक्रिके अनन्तर नगरके पूर्व दिशाने केंचे 🚃 अवस वृक्षीपर **पुरा और कामकी नवे मार्गकर्व<sup>र</sup> क्रमक** साम पत्र को । फिर हका को । अपनी प्रकारो केवन देवर संदुष्ट करे । 🔤 📨 एकाको मार्गकरीची आसी 🔤 चाहिने, यह आरही क्रांस्प प्रदान करती है। उसके बद नाग, बैस, हाकी, बोहर, राजा, कथपुत, सहस्य, सूद आदि सची लेग्सेस्से उस मार्गपालीके नीचेसे निकशन चार्विक व्यवस्थान व्यक्तिवाला अपने दोनों कुलोका उत्पार करता है। इसका लक्षण करनेवाले कर्वचर सुखी और विवर्ग रहते हैं। विवर चूपियर पाँच रंगोसे मच्छल लिखकर उसके कथको जनसम्बद्ध हिमुज, कुम्बर्स धारण करनेवाले कुम्बर्ग्य, कम तथा हुए आदि क्षेत्रकेके साथ सर्वायरणपूरित रावे विकास राजा बरितारी भूरियाँ कारफार करे और कमल, कुमूर, कहार, रक कमल आदि पुन्दें तथा गन्ध, दीन, नेनेब, 🚥 🔚 रीपको तथा अनेक इन्हारोमे 📷 🚟 पूर्व कर इस **प्रार्थन** करे—

व्यक्तिराथ प्रम्मुच्ये विशेषणम् प्राप्ते । व्यक्तिकार्यको पूर्वकर् जील्ह्यासर्।। (उस्तर्भ १४+। ५४)

া प्रमाद पुरान कर 🔤 जानाभाष्ट्रीय प्रक्रेस्टन कृत्व चाहिये । नगरके स्त्रेन अपने-अपने 🔤 राज्यने केव

हारितक एवं **पीतिक कर्मों 🚃 नवाक-का**न्तिकी 🎫 वर्णन <sup>४</sup> व्यक्तिहरने बद्धा — पगवन् ! अस्य सर्वत्र 🕏 📰

यह क्तेशानेकी कृत भी भा समूर्ण कामकानेकी

अविकल सिद्धिके लिये शामिक एश वैद्विष्क कर्मेका अनुहान विश्व प्रकार करना चाहिये ?

१-मार्गकरो दरवरोके पर तम पुना समामा है, ये दूरर, साम 🔛 🔤 🔤 लाइ उस महोचके च्छेने असंस्था पर पत्राची परी १-तिसूर 🔤 📟 🔤 पुर (सम्बद्ध) - स्टब्स्यूवर्च

🚃 समृत्ये 🔚 समूच क्येनुर्व पुरः।

३-वे **बहुरेत 🔤 दिल्ला पुर्वार एक्टिवरिल्ला** का वर्ष विकास है। पार्टी विकास पूर्व को को अपनी । पुन्ने चेक और को साम: समने मोदिन । (अस्ति १४० । ६८-६९)

४-भद्र प्रीप अवर्थन करवे--व्याप, वैतार, सीरवरिष, अधूरस एवं स्वीतनस्थाने जनन एवं 📖 साविकरणम समीका रूप है

इन्द्रल क्रिक्ट 🚃 बस्तिको उसमै स्थापित कर करन-क्वादिसे पुत्रन 📟 और ब्रिलिंग उद्देश्यसे दान करे, 🗫 क्रम महिन्के सिये जो म्बक्ति धान 🚾 है, उसका दिया हुआ द्यन असम्ब हो जाता है। मगवान किन्तुने प्रसन्न होकर चलिसे

पुर्वाको प्राप्त किया और यह कार्तिको अवस्वास्य विथि राजा 🚃 प्रदान की, उसी दिनसे यह कौमुदीका उसाव अनुस

हुआ 🕯 । यह विभि सभी उन्हरूव, सभी प्रश्नरके निम, शोक 🚃 दूर करनेवाली है। धन, पुष्टि, 🚃 आदि प्रदान करती है : 'कु' 📰 पृथ्वीका वायक शब्द 🖥 और 'मुदी'का

🔚 🎮 🎙 प्रमाना । इसलिये पृत्तीपर सबको 🏴 देनेके कारण इसका कथ कीयुटी पद्म । को राजा वर्षभरमें एक दिन क्रम बोलका उत्सव करता है, उसके राज्यमें रोग, शतु,

ब्ह्यानचे और दुर्विक्क चय नहीं होता । सुनिक, आरोग्य और सम्बंधिको कृदि होती है। इस क्षेत्रुदी विधिको 🖫 व्यक्ति किम कालो रहता है, उसे वर्षकर उसी पाककी मन्ति होती है।

बहै ब्यक्ति क्या दिन कदन कर रहा हो से कदन, हर्षित है से 🕪 दुःको है हैं दुःक, सुर्को हैं से सुरा, निवास मीग,

करवदारे स्वरूपक्ष तथा दीन रहनेसे दीनताकी प्राप्त होती हैं। इस्तीको इस विकित्तो हर और प्रसन रहना चाहिये। यह विकि 🚃 बो है, क्षत्रकों भी है और पैक्किंग भी है। चीपमालाके

📖 🗏 📖 प्रतिमे एवा भरिका पूजन-शर्वन करता है, वर्षक अन्दर्शक सुवासे न्यतित व्या । और वसके

पुष्टिकी इच्छासे पुरू क्युक्तको प्रश्नव्यक्ता समारम्य करना

स्को 🚟 पूर्व हो जहे हैं। (अध्यय १४०)

चनकान् श्रीकृष्य चोले — एउन् । लक्ष्मीकी ==== 🚃 🚃 शास्त्रिके अधिराची तथा वृष्टि, दीर्घासु और

व्यक्तिये । मैं सम्पूर्ण शास्त्रोधक अवलोकन करनेके प्रधार( पुराणी

(शासमी १४० । ५१-६०)

एवं इतियोद्धार आदिह इस वहराष्ट्रिका संविद्ध वर्णन कर 🚃 हैं। इसके 🔤 ज्योतिबीद्वात बतलाये गये शुभ म्हुली अञ्चलहार स्वतिकाचन काकर मही एवं महाविदेकेंकी

**ार्थित है** करने हुन करना चाहिने। पूछनी हुई तृतियोक 🚃 विद्यानी साम प्रकारके महत्वत महत्वत है।

इस हवार अश्वीतयोका अनुतहोन, उत्तरो नहकर दसव एक साख आहरियोंका सक्छोम नवा समूर्त वारामाना

फल प्रदान करनेवाला तीसरा एक करोड़ अध्योगवेका केटि-होग हैता है। दस एकर अस्तियोगाला पहचा नवनहच्छ

वक्लाता है। इसकी विधि जो पुराजो 🏢 श्रुतिकोने बतलको गयी है, प्रथम में उसका अर्थन कर एक है। (ककवन मण्डपनिर्माणके बाद) हकाकुन्काचे पूर्वोत्तर-दिशाने

लिये एक बेरीका निर्माण करावे, 🖼 🖥 बीक सम्बी-बीडी, एक पान केचे, 🛡 प्राचनका सुनोधित और पान्स हो। उपन्या मुख्य उत्तरको ओर हो। पुनः कुम्ब्यमें आदिको स्थापना करके उस वेदीयर देवताओंका अक्टब्रंट करे। इस प्रकार रुपण अलेस देवताओंकी स्थापन 🚟 चहिये।

सूर्य, बन्द्र, मंगल, बुध, कृषश्यति, सुक्रत् श्रमी, राष्ट्र, केलु-ये लोगोंक हिल्लाची प्रष्ठ अब्दे गये हैं। इन प्रहोंकी 

बनानी व्यक्ति । 🕍 व्यवस्थितः 🔛 शब्दने सुर्वकी, दक्षिणमें मेगलकी, उत्तरमें बुद्दारातिकी, पूर्वोद्धर-क्षेणपर मुक्की, पूर्वमे शुक्रकी, दक्षिण-पूर्वकोशका अनुस्थाकी,

पश्चिममे शस्त्रिम, पश्चिम-दश्चिमकोक्यर राष्ट्रकी और पश्चिमोत्तरक्षेणकर केतृकी सामना पाना माहिके। इन समा यहाँमें सुर्यके शिव, चन्द्रमाके पार्वती, धंगरको राज्य, बुक्के भगवान् विष्णु, श्रवस्थिके बद्धाः, रहाके इतः, जनैकाके काः, यहके हाता और केत्के विजयुक्त अधिदेवता धाने को है।

आपि, जल, पृथ्वी, किय्तु, हन्द्र, सीवर्ण देवता, प्रवासित, सर्व और ब्रह्मा—ये सभी 🚃 प्रस्तिपदेवता है। इनके असि-रिक्त विनायक, दुर्गा, वायु, 🚃 📰 लामी तथा

उनाको उनके परिदेवताओंके साथ और अभिनोक्ष्यकेका 🖩 प्याद्वतिष्येके उच्चरपपूर्वक अल्लाहन 🚃 साहिये। 🚃 🚃 पंगलसङ्गित सूर्वको लाल वर्णका, 🚃 और शुक्रको 🔤 वर्णका, 🧰 और वृहस्पतिको पीत वर्णका, रागि और क्टूबो कृष्ण वर्णका तथा केतुको पूरा वर्णका हाला और

🚃 करना चाहिने । बुद्धियम् यहकर्तः 🔣 यह 📖 📖 हो, उसे 🔛 🔛 बज और पुरल 📟 करे, सुगन्धित

भूप दे। पुनः कल, 🧰 अस्टिके 🚃 सूर्यको गुरू और कक्तरो को 🚃 🚃 (स्त्रीर) का, कन्द्रमाको 🛗 और दुधसे 🔤 🚃 पदार्थका, यंगसनको गोडीस्थाना, बुधको बीएवहिक

(दुषमें एके इन् साठीके चवल)का, बृहस्पतिको दही-करावा, सुकानो ची-करावा, 🏬 🚾 दिस्पद्रीका, राहको अञ्जूषी अवक शतके फलके गुराबर और केत्को विधित

रंगमले पतला 🔤 अर्थन 🔤 समी प्रवासे 🥌 पुरुष की। च्या पूर्वेताकोक्यर एक क्रियदित कलगर्ना **व्या** 

करे, उसे 🧮 🔤 अधातसे सुरोतियत, 🔤 परलवसे · अंद III क्योंके परिवेदित करके उसके निकट फल 📖 दे। 🔤 प्रकार 🚃 दे और 🔣 🚃

**ावारा** बरगर, पाकड़, गुला और आयंके परशद) से युक्त कर दे। बारक करूप, गहर आदि गदियों, सभी समुद्रों और · अवस्थान तथा स्थापन वर्ते । राजेन्द्र | धर्मक

पुरेक्षेत्रको 📰 कि वह हाचैकार, पुरुशाल, चीराहे, विमवट, ज्योके संगय, 🚃 और पोशासाकी मिट्टी 🚃 💹 🚟 अधिक्ति 🔣 यजनाके जानके

रिपने वर्धा प्रस्तुत कर दे 🚃 'मजमानके पापको तष्ट 🚃 🚃 सनुद, नदी, नद, बादल और संग्रेवा, यहाँ वक्षरें ऐस्स क्ष्मकर इन देक्तक्षेत्र हाताला करे । तस्त्रहात्

चै, चै, 🚃 🔣 हक्त प्रसम् 🛍 ( मदार, **व्याप्त और, व्यिपेक्ष, पोशल, गुलर, शुर्मा, दंश और** कुल-ने क्रमशः नवाँ जहाँकी स्थियाएँ है। इनमें प्रत्येक सके रिले वर्ष, में और इही 🚃 प्रयससे युक्त 🚃 सी

आठ जनन अदुर्दस आहुतियाँ प्रदान करनी चाहिये। बुद्धियन् पुरुषको सदा सभी कर्मोपै अंगुडेके सिरेसे तर्मनीके स्थितकमी मारवासी तथा करोंह, 🚃 और 🔤 📖

भीर अ**भनेनिरितः, व्यवस्थानृति १।२९५—३०८, स्थान्यः** ११**, व्यवस्य, वृत्तिकम्** ८२—८८, स्थान्यः ११५६, मासपुरम्, आंत्रिका २६४—२७४ 📰 🖈 प्रक है।

समियाओंको करपन करनी चाहिये। परपर्ययेका मञ्जान सभी देवताओंके किने उन-उनके पुरुक्-पुरुक् भन्तेका सन्द स्वरसे उच्चरण 💹 हुए समिधाओंका क्वन करे। अनकार प्रत्येक देवताके लिये असके मन्त्रहुए 🚃 🚃 जानिये। आहुणको 'आ कुम्मेन स्वसार' (यजुर ३३।४३) — इस मञ्जूका उच्चारण कर सूर्यको असूति देनी कविने। पुरः 'हमं हेवा॰' (यजु॰ ९१४०) इस भनारे चन्द्रमध्ये उस्तृति दे। मंगलके 🕮 'आंग्रिकृंबां- (मजु- १३ । १४) १स 🚥 आहृति दे। जुनके सिथे 'क्राह्मकार्यन' (क्यू- १५।५४) और देवगुर बुहरातिके हिन्दै 'कुहरको क्रांति-' (कर्यु-२६ (३) ये अला जाने गये हैं। सुक्रमेर सिमे 'असकामीर-' (पयु॰ १९।७६) और शनैक्षरके लिये जो के देवीरमीहरू' (वयु॰ ३६।१२) इस मध्यमे अब्दुधि दे। राहके लिये 'कामा महिला-' (यम्- २७ । ३९) यह यम समा राया है 📖 केल्की शामिको लिये 'केल् क्रम्बर्-' (यन्-२९ (३५) इस व्यक्त उच्चरण करना विकास चर आदि हर्तनेव पदार्थीने यो मिलला वन्त्रेश्वरसपूर्वक हका 🚥 चाहिये, तत्पक्षात् व्यापृतियोच्य ४०५१८७ व्याप्त योग्ये दस आहरियाँ अपिये दाले । पुनः श्रेष्ठ सदाय उत्तरपियुक्ष अध्यक पूर्वीपिमुख बैठकर प्रत्येक देशतके सन्त्रेन्करणपूर्वक कर आदि पदार्थीका हथन करे।

फिर 'आ जो समाजनकारक और' (बर्न ४) ३ (१. मुख्यादानुः तैः संः १।३।१४।१) इस भनावा उच्चारन कर रहके लिये हमने और वॉल देनी व्यक्तिये । तरपाल्यू उनके शिवे 'आयो 📕 हा॰' (वाजस॰ से॰ ११ । ५०) — इस मनामें, सामिकार्तिकेयके दिनने 'स्त्रो ना-' इस मन्त्रसे, निष्मुके रिज्ये 'हुई बिक्यु:-' (यकु- ५ । १५) इस मन्त्रसे, अवल्के रिज्ये 'तश्रीभारम्' (वानसः २५। १८) इस मनस्ये 🔳 इन्हरे लिये 'क्रमिनेक्साय-'-इस मन्त्रसे अवस्ति दाले । इसी प्रकार वमके लिये 'आर्च गी:-' (मकु ३ : ६) इस मन्त्रसे हवन बतलाया गमा है। कालके लिये 'माजाकरम्' (क्यु-१३ । ३) यह मन्त्र प्रकल माना गना है । अप्रिके लिये 'अप्रि हुत बृजीमहे॰' (ऋकृतं॰ १४९२१) वह मन्त्र गया है। वरूपके लिये 'क्यूनर्य करुपकानम्' (ऋको-१ | २४ | १५) 📺 मन्त्र कहा गया है। वेदोने पृच्छके सिवे 'पुरिकासरिक्षार्'—इस 📟 पठ है। विध्युके लिये 'स्वाकारीयां पुरुष: 🖟 (कांका:- सं॰ ३१ ।'१) यह 📖 वंडी कुदन समाप्त हो जानेपर चार बाहान अधिनेव:-म-ब्रोहारा उसी जलपूर्व करवलसे पूर्व अच्छा उत्तर मुख करके बैठे हुए 

करन संकृत्व, स्वयन्त्रंसाती संवर्तन (बलरम), प्रयुप्त और अभिकार-यो 🔤 🚟 📰 प्रदान करें । इन्ह्र, अप्रि, देशकेकाली कर, निर्द्धति, वस्त्व, प्रवन, कुकेर, बदासहित हिल, **लाला** और दिक्यलगण—ये सची आपकी रका करे । कोर्से, स्वभ्ये, पुनि, मेच्च, पुष्टि, ह्यान शिया, मति,

मोधर-- वे देवतः ==== अभिवेश करे । जगदीका वसुदेव-

पुरिः, 🚃 📖 पुरिः, क्वन्तिः, शुहिः—ये समी मातारै जो 🚃 🐂 🐛 🚃 माना अधिक्या मरे। सुर्यं, · संगल, युव, क्रस्थी, शुक्र, समैक्षर, पहु और केतू—वे सची 🗯 प्रसासापूर्वक अपनो अभिवेता करें। देवला, 🚃 गन्धर्य, यक्ष, ग्रथस, सर्व, अवि, गौ,

देककरूर्, देक्परिवर्ष, कृष्य, नाग, देख, अपसराओक समृद्र, 📠 अर्थ सम्र, नुकान, चहन, श्रीवय, श्रा, (कला, कार्र अवीद्) करलके अवस्था, नदियाँ, सारार, पर्वत, तीर्यस्थान, बादश, ऋ—ये सभी समूर्व कामग्राओको सिद्धिके लिये अक्षाके अधिकार करें हैं

इस प्रवास 📆 प्राथमित्रीय सर्वीयधि एवं सम्पूर्ण सुगरिका पदार्थींसे बुक्त जलसे बान कर दिये अनिके पक्षात 🚃 🙀 📉 भारम 🔤 श्रेत चन्द्रनक

अनुरोप करे और विस्त्यारहित होकर राज्य विसमार क्राल्यक प्रकार्वक दक्षिण आदि देकर पूजन करे तथ मुर्विद हिन्दे वर्गिस्स गौवद, चन्द्रमाके लिये श्रुपुत्रवा, मंगलवे रिन्दे बार कहन करनेने समर्थ एवं <mark>कैंबे डीलवा</mark>ले लाल रेग्बे बैराबा, बुचके सिने सुवर्णका, बृहस्पतिके सिये एक जोड़

पीले क्यापा, शुक्रके लिये 🚾 रंगके घोड़ेका, शनैक्सके लिये काली मौका, रुकुके लिये लोहेकी बनी हुई चस्तुका और केतुने लिये 🚃 बकोके दानका विधाद है। यक्पानको ये सार्व दक्तिको सुवर्गक 🚃 अकब सर्वनिर्मित मृतिक रूपमे देने

च्चरिये 🚃 किस 🚃 गुढ (पुरेक्ति) 🚃 हों, उनमें

अञ्चानसर सभी महानोको सुनर्गते असंपन्त गीर्व ...... केवल सवर्ग दान करना व्यक्ति । पर सर्गः। कन्नेव्यरप्यकृतिक

📕 इन सची दक्षिणाओंके देनेक 📖 है।

राम क्षेत्र समय सभी देन कहाओं ते प्रश्नान प्रमाह प्रसर प्रार्थन करने चाहिये—'कपिले । एन देशिनीरून हो,

🚾 एवं देवल कुन्हरे 🚃 🛚 📖 दुन सन्पूर्व 🔤

पूजीय हो, स्ताः मुते 🔤 🚥 क्ये : सङ्घ ! 📹 पुज्येक थी पूज्य और महस्तेक थी 🚃 हो । क्यान् विन्तुने दुनों अपने दावने चारण मिन्स है, इस्तरिने दुन जुले रहन्ति प्रदान करे । बगरहके स्वर्गप्तत करनेकले कृत्य ! दुव

वकारके धर्म मिर्ट आहवति रिज्यकेक बदन पूर्व असः यूहे रक्षीत प्रदान करे । सुनर्न ! तुम अक्रुके आस्त्रास्थ्य, स्टब्स

व्यर्थका क्षेत्र और अनन पुन्तके क्यात है, अरः पूर्व सार्थित प्रदान करो। ये किल क्या अन्तर्भ कार्यन्त जनकर् क्षेत्राच्यको परम दिन है, इस्त्रीतने विक्यो । उसको दान करनेसे कार मुझे साहित प्रदान गरे । अब ! तुम अध्ययको निष्णु हो, अनुतमे करन वृद् हो तथा पूर्व एवं चन्द्रध्येत निरम व्यक्त हो,

अतः मुक्ते सामि प्रयम् करे । पृथ्वी । दुल समका केनुस्त्रान्य, कृत्य (गीरिन्द) शक्ताती और सदा सन्तूर्ग सर्वाने प्रत्य करनवार हो, इस्सीराये मुझे इस्रीत प्रदान करो । 🐯 ! 🏙

विवर्क सभी सन्तरित हेनेक्ट रॉब-क्य कर एवं अक आदि सारे कार्य सद्य कुनारे ही अधीन है, इसरिल्ने तुन चुहै सानिः भद्यम् वरो । कारः । 🊃 📺 सन्पूर्ण 🔤 सुका

अञ्चलको निवास 🖫 🚟 अधिको निवा चळा हो. इसरियो मुझे प्राप्ति प्रदान करो । गी । ग्रीफ गीओंक अहाँनि चीदहों पुरूर निकास करते हैं, इसलिये दूस की लिये हरलेक

📰 एरलोकमें भी करकम प्रदान करें। 🔤 जनर केराय तथा रिमानी सामा कथी सून नहीं रहते, बहन तारणे तथा पर्णतीसे सदा मुस्तेत्रित वहती है, बैसे ही मेरे हाक

भी द्वार की गुर्वी शुक्क अन्य-जनको सुक्को सन्तव हो । बैसे सभी प्राण समस्त देशक निवास करते हैं, वर्षी के सम्पन्न

करनेसे ये देवता पूर्व स्वर्षित प्रदान करें । सभी दान चुनियनकी शेलहर्षे कलको पि सबस नहीं कर सकते, जार पुणि-दान करनेसे मुझे इस लोकने ऋति ऋत हो।' इस क्रमा कृष्णता होदकर परितर्शक रहा, सूचर्ग, क्यासमूह, 🚃 गुज्यस्य और करन अदिसे क्योंको एक करने कविये।

इका ! जब आप चंडिमुर्वक अहेंकि सरूपीयो सुने---(विश-प्रक्रियादे विध्यावेदि) सुरविष्याचे हो पूजाई निर्दिष्ट है, वे

क्याने जाताल विश्वपाल सहे हैं, उनके दोने स्वानी कार। सुरोधित क्ये हैं। उनमें करित कमराके भीतरे चनके-से 🛘 और 🗎 सक चेदों तथा 📖 र्वस्तपेंसे युर्त

रक्त 🚃 वहे हैं। काम ग्रेसमें, बेर 🚃 और 🔤 अवस्था 📗 ज्या 🚟 सामुख्य 🗐 🖼 📆 👣 करकेरपार नंगरको 📖 भुकाई है। वे अपने चारो हापोने

👊 . करा, गढ़ राज कार-मुद्रा करन 🚟 🕽, काके रावेरको व्यक्ति करेरके पूज-सर्वको है। ये रास्त रंगकी 🚃 🚟 🚃 चरन करते 🖫 पुत्र 📆 🖼

पुरुषक्त स्टि एक करन करते हैं। येत कर्यके अधुरित्य है। वे दिना क्षेत्रेके रचनर विश्ववादन है। देखाओं और देखेंक कुर कुरस्कंत और सुक्रको कीतवाई समारः पीत और

📟 हर्मन 🕅 काने । 🞆 कर पुस्तरे हैं, स्थान प दन्त, रहाक्रमी पाल, कमफल और बरमुख करन निमे

📰 है : 🚾 🚾 📳 🛊 । वे चैकल 🚃 📰 🖥 🚟 क्षभी धनुष-बान, त्रिश्चल और 🚃 बरन 🔤 यहे है। 🚃 तुब सिहर्क स्थान कावा है। उनके प्रथमि सरावृद्ध काव्य विश्वास और

करमूह रहेका चार्ड है तथा ने मेरी एके विकासकर नेपाल होंके हैं। सहार (प्रदिन्ध) में देने ही रहू प्रशस्त नारे गये हैं। केन कहारे हैं। इन सकती हो चुकारे हैं। इनके सर्वर साहर

पर्यक्त परन स्थित है और निस्त गीवनर समासेन रहते हैं। हत सभी लोक-दिरावारी व्यक्ति विरोटसे सुलोकित कर देना च्योंने एक इन सकते तैयाई अपने क्षत्रके प्रकारो एक सी

कारानींद्र है। उसके मुख विकृत है। ये दोनों हार्कोने गदा दर्श

लाह अपूर्ण (सब्दे चल इन्य) को होनी करिये। 🛮 क्रम्बुस्ट्न ! 🚜 मि 🕬 नामांना साम्प

बाराया है। विद्यान् पुरुषको भारिते कि ऐसी प्रतिमा समापार इनके पुरु करे। 💜 स्तुष्य उन्तुंतः 📟 स्त्रोपी पूना है, यह इस लोकों सकी काम्प्रसोधों प्राप्त कर लेता हैं क्या अन्तरें **व्यास्त्राण प्रता**हत होता है। वर्षः विस्त

निर्वत कार्यको कोई 😅 निरंप प्रोड़ा पर्देश 🚃 हो हो उस

- tu-

बुद्धियनको साहिये कि उस प्रहारी पलपूर्वक पर्शामति पूरा करके तरभात् रोग पहोंची भी अर्चना धरे, क्वींकि पह, मी, राजा और ऋद्वान—ये विशेषसम्बर्ध पृथित होनेशर रक्षा करते है, अन्यक समहेलन 🔛 📟 🖚 के है। इससिये वैचकारै अधिरता - म्यूनको दक्षिणारे रहित यह नहीं करन चाहिने, कॉर्के परवृह 📟 देनेसे (बक्षम प्रधान) देखता मी संतुष्ट 👭 पाया है। नवारहेकि पड़में यह दस हजार आधुनिक्क्स कार है होता है। इसी जन्मर विकास, बस्सम, यह, विकासका आदि कार्नि तथा बिताबी जीताज को आधीलक विचीतकोंने के का दस इज्ञार, अतहतिकोकातः 🚃 🗐 कारतानः 🚃 🛊 र 🊃 बाद अब 🖥 एक राज्य आह्रविक्रेक्टो बाहबी 🔤 नारक 📰 🕏 सुनिये । विद्वारोंने समूर्ण महस्यकारेची विद्याल वरण वर्णालया विकास किया है, क्योंकि यह स्तिरोको काम क्रिय और सारात् थीग 🎆 मेशक्ष्यी फलका प्रवास है। बुदिहरान् स्वयानको 

सहावहार। स्वतित्वकः जित्रं और अस्ते मुक्के पृत्येतः दिरहमें कावल (राज्यान्यतः स्वत्वका पृत्येतः विकारपूर्वकः एक सम्बन्धाः निर्माण कराने, जो दश हान अन्यवा अस्त हान शामा-बौद्धा चौन्येर हो तथा दसन्य मुख (अनेसहार) उत्त दिसान्ये ओर हो। अस्तरे पृत्येको कार्युक्त पृत्येतर दिसान्ये और वाल् बना एकं चाहिने।

स्त्रभर मध्यके पूर्वेतर धनमें कवर्ष सक्तेते हुए

एक सुन्दर कुम्ब<sup>र्</sup> तैकर कराने। परिवासने कम अवस्थ

अधिक परिवासमें क्या पुत्रा कुछ अनेको स्थानक अध् देनेकाल हैं बार्स है, इसलिये राजीनुस्वासे व्यवस्था अनुकृत हो करान करिये। कहाने राजकोचको अनुक्रोनले इसनुन अधिक करावांथक करावाय है, इसलिये इसे क्यान-पूर्वक स्मृतियों की दिवालकोद्धांथ सम्बद्धित करना करिये। सामकोपमें कुछ कर हान राज्य और दो हान कीस केटा है, उसके भी मुखानकारण योगि बनी होती है और कर कीन मेसालकोसे कुछ होता है। देवताओको व्यवस्था हैन्से एक वैदीका भी विधान करावाया है, जो तीन विधिकोसे कुछ हो। इनमें चाली परिष हो अनुसा देंची रोग दो एक-एक अनुसा दीवी होनी चाहिने : विद्यानी इन सम्बद्ध चौड़र्स हो अनुसामी •••••••• है। हेरीके उद्या कर असल होंगी एक होरास

 है। वेदीके उत्पर एस अनुस्त स्थि एक दीवास कर्मण साथ, उसीपर पहलेगी ही पाति पृश्व और अक्षतोंने देशकारोक अवस्ता साथ जय। स्थेन्द्र । अपिटेनकाओं

अविषयेक्याओस्त्रीत सभी वहीको सूर्यके सम्मुख ही
 अविषय कान व्यक्ति, उत्तर्शिमुख अवना पर्यसुख नहीं।
 अव्यक्ति सुन्त्रको इत वहारे (सभी देवताओं)

अवस्था । प्रस्ता प्रश्ति प्रश्ति । (उस समय प्रेसी प्राचन करनी चारिये—) स्थाप । तुन्तरे शार्टरसे साथवेदन्य स्थापन करनी चारिये—) स्थाप । तुन्तरे शार्टरसे साथवेदन्य

प्रदान करो ।'
स्वत्वारम् व्यानेकी कक्ष कलानकी क्ष्मंपना करके इक्स स्वत्वारम् व्यानेकी कक्ष कलानकी क्ष्मंपना करके इक्स स्वत्वारम्की । एक स्वत्वा अबुतिकीसे इक्स करके पक्षात् पुनः स्वत्वारम्की संस्थाके करकर और अधिक आहुतिकी उस्ते ।

(सा क्र है—) मुना-कराकर लागी मूलाकी लावज़ीये, को खोखानी न हो तथा सीची एवं मीली हो, शुक्त कनवाबर का के सिवास एककर इसके हाद श्रीतिक उत्तर सम्बक् जनारते सिवास क्षा निरुचे। सा सामा अधिकृत (अ॰ सं॰६। १).

फिर अप्रिके अवर कृत्युत्मको वातेर्यात गिराये । (अस्तेर्धातकी

विज्युक्त (कायके ५।१-२२), प्रश्निक (वर्ष १६) और इन्दु (सोम) सूक (श्रंत १।९१) पढ़ करना चाहिये तथा बाह्येकार साथ कर ज्यासम्बद्ध गर्म करना चाहिये। हदुक्कत पूर्ववर् कामन कान कर स्थापन काम करमे

अन्य श्रुटिके जनकर एवं शास्त्र सम्बद्धित हो स्ट जनकर नियुक्त करना चारिके अर्थ केसन चारिके।

्ति क्यार सम्बद्धियों अपने साथव्यकि अनुभूत भसार-वीत क्षेत्रर दश, कात अवना चर ऋतिकोको निनुक करने च्यापि । चन्यकोत । सन्यवस्थान क्याप्यको स्वासित कात पदार्व, आकृष्य, क्योरवीत सम्बद्ध, स्वर्णनिर्मित कहे,

कुम्बल और अंगुटी आदि सभी वसूर्य समझेममें नकम्-यक्से दसगुनी अधिक देवी चाहिये। मनुष्यको कृषणकारक दरिकारित का 📆 करन करिये। से स्वेच अकत अञ्चलसे भरपूर दक्षिण नहीं देख, उसका कुल नह हो कारा है। समृद्धिकामी मनुष्यको मननी शक्तिके अनुसार अनुसा दान करना कविये, क्येंकि अध-दानतील किया हुआ का दुर्विधकप फराक्ष दाव हो जात है। जाहीन यह सहस्रे, पन्त्रदीन प्रतिकृति 🔲 🗰 🚾 या स्वास्त्रीको जलाकर नष्ट कर देख है। इस अक्टर (विशिक्षीन) नाके समान अन्य कोई सञ्जू नहीं है। अल्य काव्यक्ते कनुवको कर्प लक्कोन नहीं करन काहिये, क्वेडिंड कामें (दरिक्त आदिके रिग्ये) अकट हुआ मिला सराने रिग्ये कड्कारक के जात है। **भरूप सम्बद्धिमाला मनुष्य केवल पुरेशितको अथना छै क** तेन सद्भगेंकी असिके साथ विकित्तंक पूजा को सकता एक ही केदन महाजबी परित्ये साथ चाँएना आदिसे प्रकार्त्यक अर्थन करे, क्यूनोकि कारमें व गई। आक्रिक सम्बंध होनेज्

लकारेन करन करिये, क्रमेंक यह अधिक लामदायक है। इसका विविध्येंक अनुसान करनेवाल अनुमा सर्थ कामकारेंको अप कर लेख है। यह आठ सी करनेताक विवर्णकारों समुग्य, अदिस्थापम और मस्ट्रालेंद्वार पृथित केख है तथा अन्तर्भ मोकको अप हो जाता है। यो मनुष्य विवर्ण विवेध कामकारें इस लामकेमको विविध्येंक सम्पत्त करना है, उसे उस कामकारें अपि हो हो हो बाती है, साथ हो यह कामकार्थ पटको में अप कर लेख है। इसका अनुसान करनेने पुत्राचीनो पुत्रको अधि होती है, बनावीं कर स्वाप करना है। इस अवस्थ अनुसार कामकार अधिकारों स्वाप करना है। इस अवस्थ अनुसार करता है, या प्राव्याची अप हो जाता है। यो

(अव्याग १४१)

#### कोरिहोमका 🚾

सरावान् श्रीकृष्य ब्यूने है—नहरातः । वासा वरसमे प्रतिद्वान (वैदान) नामक नाममे संस्था नामके एक महान् भाग्यशासी दांचा थे। वे साम व्यवस्थि शिक्षुण, व्यवस्थित क्षाता, विद्यालय साम देव-स्वद्वानके अञ्चलक थे। एक समयको बात है, अञ्चलके पुत्र महाकोची समय

एक समयम बात है, बहातकर पुत्र महाक्षण संग्रह एक संग्रह प्रस्त करें है क्षणार एक क्षणा हैए और उन्होंने पुनिको आसन देवर प्रमाण किया क्षण मार्थ, यह आहेर से उन्होंने पुनिको आसन देवर प्रमाण किया क्षण मार्थ, यह आहेर से उन्होंने से उन्होंने पी उन्होंने की को मार्थ कर्मिकर और सर्वकर के स्वीवसर किया। उन्होंने यह बहा क्षणा से उन्होंने स्वीवसर के से इंटिइस्टिंग संग्रह के से इंटिइस्टिंग क्षणा कर्मिकर के से इंटिइस्टिंग क्षणा कर्मिकर कराई कराई से इंटिइस्टिंग क्षणा कराई कराई उन्हें सुकारी। स्वाह्म क्षणा कराई कराई उन्हें सुकारी। स्वाह्म क्षणा क्षणा कराई कराई उन्हें सुकारी। स्वाह्म क्षणा क्षणा कराई कराई उन्हें सुकारी। स्वाह्म क्षणा क्षणा क्षणा कराई कराई सुकारी। स्वाह्म क्षणा क्षणा क्षणा क्षणा कराई कराई सुकारी। स्वाह्म क्षणा क्

जारकारको है उते। इसी अवसरपर एक संबरको कार्युक्त प्राणियोंके दिलको दृष्टिसे सन्तकारीने प्रार्थन कार्य हुए कार— दिलके ! प्रकृत्य, उपलब्धि, प्रकृत्य, अकर्ष्य, एक्केकाव आदि उरक्तीकी स्थानके दिले कोई अवस्य कार्योची कृत्य को, विससे कि यन-धा-कार्य कृति, आरोग्य, सुक्षा और सर्वकी विश्व के तं वात संस्थानको स्थानको स्थानक स्थानको नका—'एकप् । सार्थ कार्योको सिद्ध कर्यानको शामिकद व्याह्मका स्थानको सिद्ध कर्यानको स्थानक व्याह्मका स्थानक व्याह्मका स्थानक व्याह्मका स्थानक व्याह्मका स्थानक व्याह्मका स्थानको भी अभित होती है। इसका विवास इस अवाह है—
समस्यो पहले हाता सुवार्य देवाका देवालाय, सदीके तथार र

करने व्यक्ति सर्वप्रथम ज्ञानका करण कर गन्ध, अध्यत, पुष्प, मास्त्र, क्या, आकृत्य अधिते रूक्ता पूक्तकर इस प्रकार मार्चना करने व्यक्ति

श्री को पानिः निवा नाता स्त्रं गतिस्त्रं पराक्याः । स्वात्त्राचीतः वे श्रात्त्वनीत्रात्त् ॥ वे श्रात्त्रात्त्रात्त्रम् ॥ वे श्रात्त्रात्त्रम् ॥ वेशिक्षेत्रमञ्जात्त्रात्त्रम् ॥ (अस्त्रत्त् १४२ । १५-१८)

निवारेत ! काम ही इमलोगोंके नाता-विता है, अहर ही

हमारे अन्त्रय है और आप ही गति है। आपके अनुवासी हमारे सभी मनोरब परिपूर्ण हो जावै । आपनिसे शुटकाल जाना

करनेके लिये 📖 सार्वकारिक शानि 📖 करनेके लिये

आप क्येरिहोम जमक लाम यह 📖 दे।'

आचार्यको भी श्रेत वस आदिसे अलंगुल ग्रेस्ट विद्वान्

सहाजोंके 📖 पुण्याहकाचन करना सहित्रे । पूर्व और उत्तरकी

ओर डालकुरु समनत भूमियर 🔚 हर मन्द्रपद्धे प्राप्तन सुन-

द्वारा गेर दे । पण्डपका प्रमाण इस 📖 है—१५५ भी हाच

विस्तरका मध्यप उत्तय, एकक सम्बद्ध का प्राचीत

रायका मध्यप निकृष्ट है, सिन् सरित और समध्येक अनुसार

📗 मण्डप बनावर 🔤 📟 आह इत्थ संबा-चौद्रा, 🔤

मेश्रामारे 📺 बना अंगुलके विकारपुरः बेनिसरित एक

नीरस मुख्य नजना चाहिये। सम्बन्धे 🕶 हरूला कर स्था लंबी-चौद्यी वेटी बताये, को एक साथ डेबी हो। उसमें सची देवताओंको स्वापित करे। प्रणापको मुख्यके ग्रेकर-सिमुस्से

अच्छी तरह लीपकर प्रकारकानोंसे सुनाजित जलपूर्व 🚞 कलशोको स्थापित करना चाहिये । यन्त्रपके उत्तर विकल और

होरण लगाने व्यक्तिक 📰 सामग्री एकप्रित का पुरुषक्रकका, स्वतिकाचन, कपराव्यपूर्वक सुख व्यक्ति पूर्वेद्येतको इतन

प्रारम्भ करना चारीचे । अध्ययके पूर्वने सहस, मध्यमे किन्तु, पश्चिममें राष्ट्र, उत्तरमें कम्, ईश्वनमें मह, अग्रिकोलमें महत्

और होय विशाओं में लेकपलीकी (वेट्रिकेय) स्थापन वंदे । गन्द, अस्तर, पृष्प, धुप, दीप, 📰 आदिमे 📰

और पौराणिक मञ्बोद्धारा सथका अलग-अलन पुजन और प्रार्थना अहै ।

इसके प्रवात वेदपाठी प्रकानोसहित विधानपूर्वक कृष्यकः संस्कार करे । सृष्यमे अपि प्रज्वतिसकर इस 🌉 जप भूतर्थिव रखे । किवावृद्ध, वयोवृद्ध, गृहका, किसेन्द्रिय,

खकर्मीन्ह 🚃 और ज्ञानशक्तिसम्पन्न एक 🗏 🚃 📑 हबनके लिये नियक और अधवा जिस संस्कृती उत्तम ....... करतन्त्र हों, उनका ही वरण करता चाहिने। इसके कर

पञ्चमुख अप्रिका च्यान करना चारिये । नामसहित उनकी सात जिल्लाकोकी पूज करनी चाहिये। पुरुषेकुक सामिये इकर

**ः य**र्थ होता है। इसलिये प्रम्वनित अधिये हो हवन चाहिये ।

क केटी बाह्यजॉको पूर्वोपमुख, यज्ञेंदोको उत्तरापिमुख, सामनेद्रीको पश्चिमाधिक्या और अधर्यभवेदी साहामको

दक्षिणां क्युस बैदकर कावल और जान्यकारकी असुतियाँ देनी चाहिये । पहले सहास्य स्थापन कर इस कर्मको आरम्भ करना

🚃 अदिमे 'प्रका' लगावन अन्तमे 'खाडा' राष्ट्रका क्या क्या करना चाहिये । भी, शिल 🚃 जी भिलावर प्रशासकी समिकाओंसे कोटिहोम

करना चाहिये । एक इकार आहुति पूर्व होनेयर पूर्णाहुति करनी व्यक्तिये । ५२: उसी प्रकार क्षमा करना चालिये : इस विधिसे

प्राटक्त करण कहिये । इसमें दस स्वार कर पूर्णहरियाँ दी जार्थ है। इसमें सभी ब्यूडमों और प्रवासको काम, होथ नार्दः दोनोते 📰 🚃 चाहिये ।

· स्ट्रायन राजा संवरणने कहा कि **व्यक्त ! इस कोट्रिकेयमें काल अधिक समय लगेगा, इतने** 

दिकाक संबंधसे रहन बहुत ही कठिन कार्य है। इसकिये कृत्यकर अस्य बनेटिहोमको संक्षिप्त विशेष बसानेका कह करें,

🚃 कम सम्पन्ने यह निर्वित्र पूर्ण हो जाए। 🚃 इस प्रकारके कत्त्रकां सुनका 🚃 मृतिने कक्क-' एकन् ! कोटिहोम कर प्रकारका होता है---रातपुरत,

धरम्खः, दिव्या और एकम्बः। सम्बन्धार (१) बारोमेसे जी 🔳 होय 🖥 सके 📖 करना चाहिये। एक हाथ प्रमाणवाले जाम एक सी कृष्य मनकर प्रतेस कृष्यपर एक-एक

व्यक्तनोको इधनके रिवर्ष निकुत करे । एक भूष्याने आहिका संस्कार कर उसी अभिको 📖 कुन्होंने भी प्रश्वसित करना

क्कानको अवक समय कम गहनेपर प्रत्येक कुन्हमर दस-दस

च्चरिये । इस 🚃 जो 🚃 किया 🚃 है, उससे एक ही कोटिहोम होशा है, जो शतपृक्ष होय वन्हरातर है। यदि · अध्यय न हो से दल कुन्द बनावर मरोक कुन्द्रपर

हो से दो कन्द्र बनकर प्रत्येक कुम्हपर 📹 

🚃 🚃 स्वाप्त स्वयके 🔛 नियुक्त 🚃 चाहिये। यह

ट्राम्स नमक कोटिक्रेप है। यदि वहीने-दो-महीनेका समय

कोटिहोम है। अ<del>धिक से अधिक 📖 हो हो एक कुन्हमें</del> अभि-स्वपन कर उत्तम कुलोत्पन वेदकेता सदाचारी ब्राह्मणीसे एका कराना साहिते। इस 🚟 ब्रह्माणेकी 📟 कोई

नियम नहीं और समकार्थ सीमा भी निवित्त नहीं है। यह एकमुख कोटिहोस लेकाका कडलावा है। इस 🚃 🚃 बहुद समय 🚃 🛮 🔛 时 अनेक प्रकारके किस भी हो जाते हैं। धन और सर्वरको 🚃 🖺 मरोसा नहीं है। इसलिये संबोधसे ही 📖 करन पाहिये। यह सम्पन्न 📰 🔤 🌃 महोतान करूव चहिते। सभी ऋहाचेंको कटक, कुथरत, तथा, 🚃 🧰 📕 गव, एक 📕 चेहे और सर्व 🔙 प्रयम 📖 च्याँवे तथा पुरेष्ठिकमे 🚃 🚃 🔛 । दीनी, 🔤 तथा कुल्ली व्यवस्थित-विद्यान भगवान् श्रीकृत्य बाह्ये है—सन्द्। अस् है भगवन् संस्थाप्तय वही गयी महासारितक विपान कारणा 🖷 भड़ राजाओंके लिये करणायकार है तथा प्रमंकर विद्योगने क्रान्तका एक सुदा क्या कार्यने और या कृष्य तीन दूर करनेकली है। 🚃 विकास 🚟 अधिकेट, 🚃 मुक्ताका पुरा तथा पाला विश्ववेश होता चाहिये। तथा द:स्वरके समय, दुन्तिनतमे, 🚃 प्रीकृततमे, क्ष्यक्रको करून, करण, होरण आदिसे आतंत्रन कर गोकरसे विवासी और उत्पक्ति गिरनेक, जन्म-नक्षत्रमें केतुके करन होमेक्ट, पृथ्वी-कम्पन और प्रसृतिकारणे, कुरुगध्यापको, मिश्रम संतरिके उत्परिकालमें, एकके का अवन व्यवके अपने स्थानको प्रतनके भगन, काक, उत्तक और कानुसरके कार्ने प्रवेश करनेपा, हुए सहसी 🎆 पहलेक च जनके समय हर प्रशेष येग क्षेत्रेय, राज्युत्यकोने हरश, पहुर्व और अष्टम स्थानमें बहरूति, शानि, सूर्य एवं मेनशके रिनत होनेपर तथा युद्धके समय, 🚃 आयुष, मन्दि, केल, गी, अक्ते विभारके समय, एडिमे इन्ह्रपन्त 🚃 पहनेस. यस्के तुला-भंगके समय तथा सूर्य और कन्न-मान 📟 सम्पन्न करे । 📖 क्रोर' (मनु-१२ । १७) इस समयमें पर परस्कार प्रशास माने नवी है। इसके परसा क्यके 🚃 कुन्धर्मे 🚃 स्थापन सरे। 'हिरम्बनार्यः' सभी दुर्जिन्त राज्य हो जाते हैं। प्रश्वन ! क्कम कुराने दरका (यक् १३ १४) इस सम्बर्ध लहासनको स्थानित करे। त्यः 🚃 वैदिक सहाजीते 🚃 महाराजिको 🕬 चाहिते । विशेषकपरे अवर्षवेद, क्युवेद तथा अभेदके प्रता पवित्र ज्ञानसम्पन्, जप-होमपदायन और अनेक कुळाडूँ, विकास

इस शुद्ध व्यक्ति इसमें प्रशस्त याने गये हैं । प्रथम क्लकहरी

अदिको भोजन देकर अन्तर्गे कलारोकि बलासे अवसूध साम को और बहरू वक्पानका अभिनेक गरे। इस विधिते 🖩 🚃 य 🔤 लट्डन करता है, यह आरोध्य, पुत्र, रुष्णादि, ऐश्वरं, धन-चान्य प्राप्तकर सभी प्रकारसे संतृष्ट 🚃 🛮 वचा उसको चहर्षका भी नहीं चोगनी पहती। राज्यमें अन्तवदि, उत्पत्, महामारी, दर्भिक 🎹 कभी नहीं होते। समी तराके 🚃 और 🚃 पैकाको दूर 🚃 कोटिहोस है, इसको करनेपाल इन्हरोक्को जन्म 📟 🛗 👫 । (अञ्चल १४२) अग्राकत करके क्रियामा अग्राम करना पर्वापे । दल का काद्य क्रायान एक सुन्दर प्रकार कराकर उसके क्याने कर प्रधान केट करने और आहेब दिसामें एक प्रथ

📖 च्योने । पन्तपर्ये 🚃 रूपर आर्मपरि 🚃 🚃 चर् और 🔤 🚃 🚃 स्थापित करन च्यक्ति । चलालेको पहापरतको, सर्वोत्रीय, स्थात सेपान, कदन, सरामृतिका, काम 📖 पूर्व्य रीवेके अल, नार्किल **व्याप्त १०वित करना व्याप्त । सहस्कृर्व-विकासि** करे ( इसके अन्यतः विदेश नकार कुरुहोध्ये व्यवस्थातिक उत्तक पृथ्य करे । मध्य कुष्यको 🚃 कहा कहा है। इसके कर स्वीतवाधन करना चारिये।

कति-एकाके अगध्य आन्य (युर) का संस्कार करे, **व्या** विभिन्निक महीन हर्लोको नवानद् स्वपित 📖 व्यक्तिने। इसके बद हाराया (चनु-११। १-१६) का पर कार्त हुए

१-वर्णका सम्बंधि तिथे 🔤 विका असून 📟 है । सम्बंध कर्णन कर्णन कर 📟 🚾 🚾 🚾 🚾 विकास कोंने । ...... 🚾 🚾 ऐंगे और स्थापन अपने स्थाप है। स्थापन केरियानेकार-नाईर 🚾 ऑफ प्रम स्थापन है 

चरुका निर्माण करे । उसके सिद्ध होनेके बद पृथ्वीपर स्वापित करे। इसके पक्षात् रामीकी अञ्चल तथा परवासकी साठ समिक्तऑको अप्रि 🚃 🚃 लिये कुम्बर्गे सले। आचार और सान्य-पाग-संदाक द्वार पराण 🚃 'बावबेदरे-' (१६० १ । १९ । १) इस ऋजके छव 📟 सार अधिकार्य प्रदान करे। पुनः 'बारकेस्टेन' इस करेरी **ब्राह्म (क्रि.) 'प्रस्तु स क्ली-'** (श्र-९।५८। १-४) इस सुक्रमे कर कर कन को। इसके 🚃 🚃 सोर्च' (ऋ- १०) १४। १३) इस पन्तरे 'काहा' शब्दका प्रयोगका 📖 अवधिर्यं दे : वदकका 🏬 विष्युर्विन' (क्यून्य । १५) इस मन्यसे सत बार कार्यी है । फिर २७ नक्षमेंके लिये २७ आवृतियाँ दे। सरकार 'काकर्मना॰' इसके द्वारा 🚃 🚃 🚾 का विवर्टकृत् हवा करे । सदमन्तर पुरावरहित सिराय महत्वा करे । इसके कर श्रानिकार्गने दूर 🖟 🔤 है। आहेतक, इत्रिक्तंपनी, 📟 अवश्वित-निर्मितक हका काके क्षेत्र-कर्मको सम्बन्ध को । का अभित करनेकता, दक्ष और रहिकाने पुत्र व्यक्तिक तदर्गन्तर बेड दिन वयनकको दुन्तिन्तको राजनके रित्ने वीच रिन्ने प्रची गढ़ अनुसूरत हो जते हैं<sup>1</sup> : कलरोकि 🔤 धर्मिक द्वार प्रवाहम अभिवेक करे।

कलराके कलसे, 'लक्क्यूकर' 📷 द्वितीय क्लराके जलसे, 'सबोक्क' (३१ ३ । ४७ । २) इस मन्त्रसे तृतीय कलकके क्लसे, 'विकास हेक' (ऋन्५ (८२ ) ५).इस मजसे चतुर्थ करुएके विस्ति तथा 'बहुबाह्यू-' इस भनारे पहार करुएके **ा अधिके को । इसके बाद 'नवोश्व सर्वपूर्तेग्यः' इस** मनयो व्यासीय गरिन-नैपेय प्रदान करे। क्षक्रको स्थान सर्वके समय महानुगुण शास्त्रका पाठ करें ह 📰 ओर राज्य-जनमें 🔤 🚃 गिरामें । अनामें पुरुवाद्याचनपूर्वक सामित्रकाको सध्यत करे। सदार्गीको 🚃 पृथि, कर्ज, वक्ष, शब्दा, अवसन एवं दक्षिण दे। द्येन, अन्याय, विक्रिष्ट होटीक्वेंको नी धोजन आदि प्रदान करना च्यक्ति। देशः 📟 अनुको वृद्धि और शहुनर सशान 🚃 ऋष 🚾 🖁 🚃 पुत्र-त्याथ 🚃 🕯 । जैसे आस्रोकः 300 Maria | 100 Ma

(अध्याप १४३)

#### विन्याचन्द्र-शामि। <sup>१</sup>

🚃 विनायक-शासिकी 🔤 पूर्वे बताये, विशक्ते करनेसे सभी मानव समस्त 🚃 नुस्त 🖫 🚾 है। भगवान् श्रीकृष्य केले — एकेन्द्र ! 🚃 🖼 हेड शामिका में वर्णन करता है, इसके आकरणसे संबी अहि नह से जते हैं। पूर विनायक-राजि सम्पूर्ण दिखेंको 📖 करनेके लिये की जाती है । स्थाने उत्तरों 🚃 🛲 करना, मुक्ति सिर्धे तथा गेठका बकाको देखना, व्यास्त्रका सम्ब बिना 🎹 करको ही दुःखी होना, काकी असफस हो कन इस्बादि जिनायकदारा गृहीत होनेक 🖫 दिखानी देते है। विनायकद्वारा गृहीत हो जानेपर राजपुत राज्यको ज्ञात नहीं भर सकता, कुमरी पति नहीं 🚃 कर सकती, 🚃 फुल्को

'सहस्राक्षेण-' (मा॰ १०११६१) हम मनावे 🚥

भागाम युविद्यारने कहा—देवेहर । विनो : अन

और विद्यार प्राप्त कार्या के अपने कर करते । विद्यार्थी पह नहीं चल, व्यक्ति व्यक्ति लाग नहीं पाल और मुनक भूगीकार्यमे सम्बद्धः नहीं होता। इस्प्रीतने इन विक्रोंको दूर करनेके लिन्दे पुरूष दिन्दे

क्रपन-कार्य करना च्योपि । वाले सरलेकी कली, पुरा और क्षण्येक कुंतुम्पका उपटन लगायत कान कर पवित्र हो जाय । कार्यः। विधिपूर्वक कलाः-स्थापन

करे और सक्तम अभिनानित बलके हारा यजपानका अभिनेक

🛗 और इस 🚃 को— रक्षकाओं रक्षकारकृषिका 📰 कृतस् । केर रक्तविविद्यापि कामगणः पुरस्तु से ॥ कर्ग 🛮 📖 राज्य धर्व सूर्वे बृहरकी: ।

१-वर्दिकाम द्रमात 📟 🔳 व।रक्यकिन 🚃 सर्वे स्ट्रमा आः। (१४१-४५) रूप कार क्षेत्रको स्थापन कर क्षेत्रक स्थापन के पुरुषे स्थापन कर स्थापन है।

(अक्टापं १४४)

प्राप्तिकत सन्द्र यने स्टब्रंके स्ट्रा को केरोबू वैर्धानं सीमनो कब मूजीनः ल्लाहे क्योंनेदश्नेशक्तावृत्तु ते लग्नः

(कार्लर्व १९०८ । १२ -- १४) —मै तुन्हें अधिनक 🖿 एक 📗 📟 🔛 अधिवात्देवतः तुन्हे पवित्र करे। .......... वसन, चनकन् सूर्य, कृहस्पति, 📖 🚃 🚃 सर्व्याचन अवस-अवस्य देव तुमने ...... करें। तुम्हारे केलों, सीमना, कारक, रासकर, भागे एवं अश्विम को भा रौर्मान है, ब्याबी ने बन् देखा नह करें।

अन्यतः कुरान्ये दक्षिण हायने भाग का भारतीय हेलसे इवन करे। मित, समित, खल, कलकेटफ, कुलक्क तका राषपुरको असने प्रकार सम्मीयत कर कुमा करे।

धगराम् औष्ट्रमा सञ्जते है—शनन् ! एव 🖿

कीशकर्मान 🚟 🚟 🚃 स्वार्थक 🔛 🚃 ये । इसी **व्या** यहर्षि गरिने अनसे पूक्त—'व्यान् ! कंदीपुरने

निरुद्ध हैं। जनम निरूप परिनियदियोंने जनसद्ध, दल, संब अभवा हिम एक्ओसे विस् हो तथा व्यक्तियोसे पेट्रित से ऐसे

काकिको कैसे धृतित हो सकती है। इसे आप कृते कारको ।' क्रीतिक मुनि बोले—गर्मायनके 🚃 🚃 नसप्रये, मृत्यु-सम्बन्धी क्रान होनेपर विस्तानी देश-स्थापि स्थान

हो जाती है, उसे कह तो होता है है, उसकी मृत्यु भी सम्बन्ध है। यदि कृतिका नक्तमें कोई ध्यापि होती है तो यह पैक्क पै

यततक बनी रहती है। रोहिजीमें होन स्वतंक, मुनशिस्टों पीच और अर्थने रेग उसके

अध-वियोगिनी हो जाती है। पुरुषंत्रु और पुष्प नवाको 📖 यत, आरलेवामें नौ यत, मचामें बीस दिन, पूर्वाफालपुरीले दें) मास, उसरफार-पुनीमें 📰 पश्च (४५ दिन), इस्तमें

लस्पवजीतक पीडा, विश्वामें आये मास, स्वतीमें दो फास,

विशासामें बीस दिन, अनुस्थाने दस दिन, न्येहाने आये नास

वतुष्पवक कुत विकास सुपरे इनके 📖 वर्ति-नैनेश 🚃 बरे । 🧰 हर कुल 🚃 दुर्वासे अर्घ्य दे । मण्डलपें

कर्ष 🚃 📉 माल अध्वकक्षे पूजा बले और

क्ह पार्चन करे--वादः ! अवप मुझे रूप, यक्त, ऐसर्य, पुत 🚃 का प्रदान करें और येटी समस्य कामनाओंको पूर्ण

कोरे<sup>र</sup> । अनन्तर सम्बद्ध कवा, सरेद्य **====** और बेट कन्दन चरनकर सक्रमको चोजन कश्ये 🛗 गुरुको 🖥 🚥 🚃

बहे : इस 📖 🏬 और विश्वकारी विधिपूर्वक पूजा करनेसे सम्पूर्ण भव्यक्ति फलको 📟 होती 🖥 और लक्ष्मीकी

📑 🔛 📳 है। यगक्षर सूर्व, 🚃 एवं नक्षणन्त्रीको पूक्त मान्नि मनुष्य सची सिद्धियोग्ये जाना कर

लेख है।

नक्रमर्जन-विधि (रोगावरिकात)

और कुलमें कुल हो भारी है। कृतिबदामें केल दिन, करत्वकृषे 🔤 दिन, 📖 दो माम, पनिहामें माधा

कत, सरक्ष्य 📖 रिश, पूर्वाचारप्रध्ये में रिश, प्रात्तवार क अधिकी एक दिन-एत पदमें पंछा दिन, रेवरीमें द

三 田 和

थूने । भूक विकार कथानीने न्यापि उत्पन्न होनेपर मन्त्रके प्राप्तक भी वसे जाते हैं , इसमें संदेश नहीं । इसकी

मान्यक्रिके तिन्ये अमेरिकियोंके भी परामर्श करना व्यक्ति ।

रेनके अर्थनक रूक्षमा श्रान हो मानेपर उस नक्षत्रके निवित्त इन्योहर करनेसे

देग-व्यक्तिको रहति हो पहले है। व्यक्ति नक्षत्रके किल

करूपे उत्पन हुई है, इसका ठीक पता सगहकर आपविकास ल्लास्या व्यक्तिमे पृक्तिके लिये उस नक्क्षके सामीके पन्त्रीसे

अर्थात प्रमिष्यक्षरा एवन करना चहिये । अधिनी नश्कामें 🎹 (द्वकले--वट, पैपस, शिरनी आदि) वृक्षेकी समिधासे अविन्येकुमार्थेक 🚃 हमन 🚃 चाहिये। परणीये

१-रूप 🗱 वरो देंद्र पर्य कार्या देह में (पूजर 📰 वर देह वर्गकार्य 🏗 में 🛚 (१९४४ (११)

२-व्योतिर्विक्य 🔤 🔤 सम्बंधि अनुसा अर्छा, आलेवा, पृत्यः, न्यांचे, लेका पूर्वचका और फू कर में मृत्युका भये क्षेत्र है मा भीमारी विका 🖩 मही है। उसके 📖 🚃 विकास कर कर आहेका उस उसने करने महिल्ले

करनी पाडिये। पुष्पने कृतस्तिके स्था भी और दूसपुर, अस्तिनके देवता सर्व हैं, अतः सहके हुए और

दूबबुरा, आस्तेनके देवता सर्व हैं, अतः कार्क हून और पीसे मिनित असुति देनी चाहिते। इसी जनम स्वाही, मूल मूने ! जाता यह बराताया है कि विधिपूर्वक गायत्री-प्राप्त पी हार एक हाता (१,०००) मृतयी आसुतियाँ देनेस सम्पूर्ण प्यारी हो प्राप्तियोंका हाता उपरामन है है। हाता सम्पूर्ण प्राप्त अर्थ है है है गान, स्थन, पूजनहार। करनेपारी।

🚃 सची 🚃 भी-निक्रित आहति देनी चाहिये।

(अस्त्रीत ६४५)

महर्षि व्यापन समापन कर्म — उपन् ! समा आपको एक समा पालक का है, जिल्ला

प्राप्त होती है और सेकड़ों दोन—चनोंका रामन हो जाता है। राजा होवाकुने पूछा—बहान्। पुरस्तकनरे वि अपराध या दोन-पाप बर्धन-बर्धन है और यह बता ब्रीन-सा है, विश्लोह अनुहानपालने बता बता है बता है। इस बता

किस देवताकी पूजा 💹 है और विश्व करूर 📧 📧 किया जात है, आप विस्तारकों 🚃 करें।

अनुस्ति — कर्षे आक्रमेरे सहर एका लक्क् व्याप्ति वृति अपनान, अन्यित्त — अप्रिकेट, क्षण व्याप्ति सभी सभी क्षणें प्रतिस्थान, प्रतिस्थान — कोई भी सस्य, व्याप्ति व्याप्ति प्रतिस्थान प्रतिस्थान — कोई भी सस्य, व्याप्ति व्यापति व्याप्ति व्याप्ति व्यापति व्या

निर्देषता, लोग, समास्त्रका, अन्येक्ष, प्रस्कृते समास्त्रका, असम्बद्ध, असम्बद्ध, असम्बद्ध, असम्बद्ध, असम्बद्ध, असम्बद्ध, असम्बद्ध, कोर्थ, कोर्थ, इतिहर्य-प्रसंधनता, स्वास्त्रका मान्य, कोर्थ, हेव, द्व्या, रास्त्रका, पूर्वता, कटुआकन, प्रसद, को, पूर,

महता आदिका पालन न करना, अपूर्णको पूज करना, अज्ञास त्वाग, जर न करना, व्यक्तिकेट्रेय तथा व्यक्तिकार, स्वग, संस्था, तर्गण, हवन आदि नित्यकर्णेका परित्यण,

सुवाना, त्रशुकालके **व्या** ही सी-सम्पर्क, पर्व आदिये सी-

स्तानास, बुगरी, **दूरोसी व्या**गमा, वेश्यागमित, व्यागमा देव, व्यागमा अभ्यवसङ्ग, माता-पितासी

ा र करन, बाबा इनका करना, पुराम और श्रृतियोगा सम्बद्ध करना, स्टब्स्थ-मंश्रम, स्वाम-होड, स्वाम विचारे विकार कुमि-कार्य करना, पार्थसंबद, पनपर विकार ह

करण, जिल्हारी, राज्यका स्वाग आण जनस नजरण, चित्रकर्म करण, मदा कामनाओंका दास क्षेत्र, कर्म, पुत्र कृषे कच्च आदिका विकाय करना, पशु-

रेकुर, इन्यमर्थ प्राप्त शहरण, विलीध पता आहि शहरण, स्थान्यदिके जलको दृषित करना, विद्याप विकास, स्वयुक्तिका परिस्थान, प्राथमा; कुनिवान, स्थान्यभ, मो-यम, विश्व-यम,

करना, सूनका सम्बन्ध सम्बन्ध विकिथियोग कर्नमां निम्मदन, कुकुमा, विद्वान् होनेवर ध्यमना करना, व्यापाससा, प्रतिस्था सेना, भीत-संस्थारहोनसा, आर्त प्यक्तिमां दुःसा दूर न

कुर-कुरम, चैरोहित्स, इस्टेश्व 🛍 और शुरुषे अनन्त्रे प्रदर्ग

करक, अवकरक, सुराधन, सार्वकोरी, गुरुवतीगमन तथा स्वाक्रमान्द्र साथ लक्षमा स्वापित करना—ये अपराध है। अन्य तस्त्रवेताओन थी विविध प्रकारके राज्याचीको कहा है।

अनव १ पण्याम् सत्वेत्तकी पूज करनेसे रहण्य समी प्रकारके अपराध नष्ट हो जाते हैं। मुनल्पेद्वारा तत और पूजन करनेसे मण्यान् राजं उसके करामें हो जाते हैं। हैं पण्यान् किया सामग्रीके हाता सामग्री भागके उत्पर

रहते हैं। इसके पूर्णने कामदेव, दक्तिकमें मृशित भगवान्, परिवाले कामवान् कांग्रिल, उत्तरने करह तथा सम्बद्धन अध्युत रिकार रहते हैं। इन्हें की कहरपक्तक जनना चाहिये। ये ही

सल्बेश हैं, इन्हेंब्री सदैव पूजा करनी चाहिये। ये सल्वेश

भगवान् पद्य, वर्धमोदकी गद्य, 🚃 🚃 🚃 मृदर्शन 🗯 प्रवस प्रवंश करे— चक्र चर्च 📰 रहते हैं। उनके चरणकगलके अध्यानसे परित्र गञ्जनका प्राटुर्धन स्थ्य है। 📖 🚥 सरितर्ग है. विनोह 🚃 इस 🚃 है—जब, विकस, अवसी, 📖 नारिती, उप्पोलनी, चंत्रली, विकास और विवर्धन । 🖩 पानान् 📰 १७८३म्बरकार्यः, स्टेम्ब, कसकनुक, सनी आपरणीसे पुरु, शोपानमान और पुरिक-पुरिकादान है।

राजन् । उनको जिस विकिसे प्रकारपूर्वक एक करनी चारिये, उसे आप शुर्ने । मार्गेशीयें आदि बारह यारोजें खटाये. अमत्वास्य अक्ट अहमीके दिन 🚃 🚃 🚃

📟 🚟 🔛 🚃 🔛 उत्पासकृषेद का 📟 चरित्रे । सुरक्त और १९४२ 🔤 प्रतास कार्यस्य पूरा

🚃 📰 📰 । इस प्रकार नियम सहार करके दनास्त्रकापूर्वक दक्षण, पूज्क क्ष्मक करन 🔣 📰 🕬 नित्य-नैनिर्वाण कर्ष करने चाहिये। एक एता सुवर्गक पानके लक्ष्मीमहित

समन्दित पद्मसनपर स्थित हो। दुष्पसे पुरित कुम्पन 🎹 सुवर्ण-पद्मेक क्रमर उस व्यास्त्र स्वापित करे ( 🚃 🚃 मर्गियाओका देवाविदेशको आह 🎞 पूर्व करे।

क्ल्प्स्ट घरमान् सस्पेश (किन्द्) और 🚥 (राज्यी) 🗏

विभिन्नत् विभिन्न पर्वादि तरकारोते पृथ्व को । अल्ला इस 

कामनपुरीसत-विकि

भगवान् औकृत्य सहते है—गतवन ! एवं का ल्बल उत्पाद, पहल और सहरकाड़ अबर पुरुवेतन मगवान किया बेराडोको समापूर्वक बैठे हुए थे। उसी समय जनमात लक्ष्मीने 🔤 💳 🚃 🚃 का उनके पूर्व — 'भगवन् । कार नेपाल करूवन्य करावत है। महाचार । पुरावर भी दवा असके अस्य कोई ऐसा कव-सीमान्यक्रपक 📰 📰 कारणे, जिल्ला अकरको

भगवान् विका कोरो—देवि ! निस प्रकार 🔤 गुरस्कारम, विकास प्राह्मण, नदियोगी समुद्र, अरकारचीनी समुद्र, देवताओंने विष्णु (मैं) तथा कियोंने कुन (तथनी) तेत हो, वसी प्रकार प्राचीमें कावानपुरी कर उराम है । इस करका पहले

समस्य सीर्थ अबदि पृष्य कर्नोका करा ऋत 🖫 ऋत 🖰

🚃 ਦੂਕ ਸਬੰਦਰ ਦਸ 🚃 ਵਿਖੇ ਜੇ। कार्य के सर्वदर्शको स्थल 🚃 🚃 🔻 पूजा केवं रूपा दता विताश्च जगदूरो । नक्षम क्यांनान क्यांका नमेञ्च है॥ (क्लरमी एक्स (४४८-४९)

**मराका राज्**यत करना चाहिये। इस करको दोनों पश्चीमें करे और वर्ष एत होनेक उत्पादन करे । ब्रह्मानसे प्रार्थना करे 🚟 🛮 🚃 देवता ! मेरे सभी 🚃 हर 🖥 वार्ष । 🚃 कहे—'अवके सनी 🖦 एवं दुःख दूर हो जाये ।' सम्बद्धाः

बहुत्वको बहु मुर्ति सम्बर्धित कर सम्बर्धन करना चाहिये।

एकर् । बहुतकीने नक्त है कि इस प्रतानों करनेसे अनन्त पालको प्राप्त होती है। यो पाल संघी बेटॉफ अध्ययनसे 👀 हिंग क्या करने अप्त होता है, उसमें केटियना परा इस बतके कावरंपसे द्वीरा है और वर्ताको इस लोकने का, कान, का, केंद्र, 🕅 तथा सवाकी मार्थित होती है। बराबो करनेक्टो व्यक्तिको विद्या 🎹 अस्रोपको मी प्राप्ति **पारत है** तथा करें, अर्थ, करन और मेशको प्राप्त होती है।

इसमें बोर्ड संदेश नहीं है। 🚟 इसको पहला अथवा सुनल है,

काके नी राजी पान हर हो पारी है। (अपनाम १४६)

व्याप्त । अपने विकास स्वाप्त अनुस्ता विकास । 🚃 📰 भगवान् औराम्बेर स्वथ इसी असमा पालन 📰 🚃 सामन्य 🚃 किया 📖 इमक्तीके विधोगने ग्रम न्हरने 🔳 इस 🔤 📟 👊 (

प्रीपक्षीत पास पूरा प्रांता स्थानक प्रतिप और 100 स्थान 🚃 🚃 🚃 किया । पहे ! यह कर सर्ग और प्रदान करनेव्यका 🛮 । रम्पा, मेनवर, इन्द्राणी (शापी) सरकारण, सामिवरके, अस्त्याचे, विश्व

📰 🚟 इस 🚃 काके सीमान्य, सूख और अपने 🚃 प्रस्त 🔤 थे। फ्लाहमें नगसन्ताओंने और मान्त्री, सरलती एवं सावित्री आदि तथय देवियों तथा 📖 पूर्वियो अभितासरे इस

अनुहान किया था। यह तत सभी प्रकारके दुःखोंका नासक, विकास के असीमें उत्तम है, इसलिये 📰 सतक ये 🔤

च्या रहा हूँ। इसके अनुहानसे व्यास्ता अवदे यहानसकोंके करनेवाले, तील-अपने कमी करनेवाले, कन्या केवनेवाले, █

करनेवाल, तील-आपर्ने कमी करनेवाले, कृष्या केवनेवाले, 🎟 केवनेवाले, अगस्त्रागमनमें विश्वत, मोसध्यती, व्यवस्त्रकृते

यहाँ भेकन करनेवाले, भूतिका बात करनेवाले ब्याट

पापकार्यों भी पापेंके निर्कारेड 🚃 हो जाते हैं। इसकी विकि

पापकाम को पापका भागाहर हुन्या हो जाते हैं। हुन्यका स्थाप इस प्रकार है—

देनि ! यह कामान्त्री-सर किसी महिनेने गुरू वा कृष्ण पक्की तृतीया, एकदर्श, पूर्णमा, संस्थित, अनामात्व स्था

अष्टमीको उपनामपूर्वक किथा का सामा है। स्मि इस दिन काकनपुरी नगककर दान करे। यह कूर्यहर्ने नदी अदिके शुक्त

निर्मल जलमे ज्ञान करे। प्रश्ने मन्त्रपूर्वक 🛗 पृष्टिका मधुणकर उसे राग्नियों लगाये जिल कराने जिल समाने। इस

विकिसे जान कर सुद्धारक वर्ती अपने कर आने और उस दिश स्थान पराच्यों, विकर्ष, यूर्व, शंड आदिने कर्वाटक ह करे।

अपना द्वाथ-पैर पोकर पायण हो कावलन करे। एक उत्तन जलसे मरा नर्कायुक्त रांखा लेकर उस अस्थाने प्रदश्तकर-मन्त्रसे अभिनानित कर 'हमि' प्रस यनका कर बार कल पी से।

रामीवृक्षसे चार साम्पोसे युक्त एक 💹 🔤 से चार क्षण प्रमाणको हो । बेटीको पुणवास्त्र, विकास, सम्ब हुन स्थारण

अधिवासित और अलंकृत कर ले । वेदीके मध्यमे एक पराची बात करे : विकास संस्था स्थान स्थान

करे : जिस्से गोवसे सुन्दर एक प्राचीतकः करावे । प्राचीतके तक्षर सुन्दर जानाः जिस्से साथ मगवान् कर्मादनको स्थापना करे । जानाः अस्य भागां

जलपूर्ण कलाक्ष्मी स्थापना कर देशमें खेरकागरकी कल्पना करें। कलशायर चार पता, दो पता अवस्था एक पतानी बस्सान-

पुरीको स्थाप अस्ति को । उसके आने कदली-स्वम्भ और तोरण लगाने। किर स्वकृत्योद्धन

प्रतिहा करावे । प्रतिहा करावे ।

प्रतिहा करावे ।

प्रतिहा करावे ।

प्रतिहा करावे ।

स्थापना करनी स्थापने । पश्चामृतके देवेश स्थापन तथा लक्ष्मीको स्थापन करकर मन्त्रोंका क्षमाल करते हुए

कदन, पूर्व आदि उनवारीक्षर उनका पूजन करना च्याके। इत्हादि लोकपालोको पूजा पी कच्चाप्यक्षे करनी च्याकि। विविश्वसम्बद्धे लिये गणवति तथा नवप्रहोका पूजन 🚥 🚃 करना चाहिये। उत्पक्षात् चयस, सोहास, फेले, 🔤

अविका नैनेव अधितकर देश-कारके अनुसार करा

जनन करना काहिये। इस दिशाओं में क्ल कृतपृतित दीपक प्रकारिका करे। कुकारक, कटन आदि भी क्लामे, साथ ही

विक्युस्तकान, पुरस्कृत आदिवर पाठ करे। सोलह समझेक स्वापनि रुक्ती विक्युकी पावना पर पूजा करे। असमें पृथ्व सभी पदार्थ उन्हें निवेदित कर प्रार्थन करे कि 'सामा

 श्री वाल्यान् विष्णु सुक्राप्त प्रस्ता है आये।' श्रीध्या-दान तन्त्र गो-दान के करे। स्था काइनपुरी कादिको प्रसिता पूर्वित
 है, स्था देखा २ सके, इसस्तिके बजाते

अपने साथ व्यक्तार दीयके साथ स्थान है अपने और आयार्ग बहे—'आप सभी व्यक्तकोंको देनेकारी एवं दृश्या-दीजोग्यको हर मार्गवाली

क्षा वरणस्त्रवृतिका व्यवस्त्र (\* व्यवस्त्र सम्बद्धाः वर्षः (\*)

पुण्यक्राति देकर उस शुभ पुरंत्रा दर्शन को । सदगत्तर वर्षि,

अधान, रोपना तथा विकास असमें पनावर भगवान् विक्तुको करान विकास और प्रार्थना करे---'सभी वासनावनीको वर्ग विकास भगवान् लक्ष्मिनएयम । अस्य इस सुवर्णप्रीके

अध्य करोते कोजिक्त का पूर्व करें। तावक। सक्तिकस्त । जनकर ! अस्य इस अर्थको सहस्र करें,

and the second second

मा प्रतिकारी भगवान् विष्णुको आर्थ देवर परिम्पृतिक विष विकास ता अर्थ्य प्रदान करना चाहिये और स्थाप पाडिये कि 'देवि । आप नहा, विष्णु, शंकर, पाविती

एवं चनकान् कारिनेकारे पूजित है। कार्या वरमात्रसे मेरे द्वारा भी अक्षय पूजित है, अपन मुझे सीमाना, पुत्र, धन, पीत प्रदान करें। देवि ! अस्य मेरे द्वारा जदत इस अर्म्यको सङ्ग्य कर पुड़े सुखा जदान करें।' इस कक्षर वराको पूर्णकर महोस्सन मनाने

एवं र्कामे जनरण करे । निहारहित होकर जनरण करनेसे सौ जन्म पाल अन्त होता है । अवश्यकाल निर्मल जलसे जानकर

भितर और देवताओंकी पूजकर समाविक प्राह्मणोंको वस्त्र देकर चेवन करावे और क्यामण्डि दक्षिण प्रदान कर समाविक करे । दीन, अंध, बस्रिर, पंतु आदि सनको संतुष्ट करे । 🚥 करे । तदनकर मधुर परयसयुक्त व्यक्तकेंसे किए और बानवोक साथ पोजन करे । ऐसा 📖 📖 ब्यालोकको अप्त कर 📟 साथ आन्द्रका औरून करोत 📖 है।

# कृत्याद्यतः एवं प्राक्तानीकी परिकर्णकः 🚃 🚃

भगवान् श्रीकृत्वः काले है—राजन्। 🗟 📟 काने योग्य कन्याको असंगुजनत आर्जियको सुनोन्न 🚃 प्रदान भरता है, यह सात पूर्व और 📖 जाने जिल्ला पीरियोको 🚃 अपने कुलके 🔤 पनुष्येको पी इस क्षत्या-दानके कुम्परे 📖 देल 🕯, १४३३ 🛗 वर्ष । 🗎 प्रज्ञपत्य-विधिके द्वारा चन्या-राम करण है. दश्वप्रजापतिके लोकको अन्य करता है। यह अपना उद्धार कर अपूर पृथ्य प्राप्त करता है तथा अन्तमें अर्गलोक क्रम करता है। जो पुत्री, गी, अब, गजका दान हीन वर्गको करता है, 🚃 चेर नरकमें 🚃 👣 🚃 🚾 🚃 दन करनेवास्त्र और नरक जन्म करता है और इन्करें 🚟 अपनित्र लाला-प्रसम् करता हुना भएको स्थानका 🚃 है। इसलिये सक्यां कत्या व्यक्ता है प्रदेश करने व्यक्ति । सहराके 📖 अध्य 🔛 🚃 🖫 पुरुकरण, हरनयन आदि क्यान्यल संस्कृत करता है, वह अधनेक-🚃 पर 📖 करता है। अन्तर्थ चन्त्रका विकार करोने-बाला सर्वने पूचित होता 🕏 । पूर्वजीने कहा 🖁 👫 🖩

दानकी परिमा और 🚃 चेनु-दानकी 🚃

महाराज सुविद्याने पहा-भगभन् ! वीपुराक्षे मैंने पुरानोंके विक्लेको सूना। 📟 🛍 🔳 विस्तारपूर्वक सुना, संसारकी असारताको भी मैंने 🚃 अब मै दानके महारूपको सुनन चहता है। दन व्यत्न समय, किसको, किस विविसे देना चाहिये, यह तम कक्कोकी कृत्य करें। मेरी समझसे दानसे बदकर अन्य कोई एक्य कार्य नहीं है, क्वान धनिकोश का केंग्रेश क्राय जा सकत है अपना रजाद्वारा किनमाना जा सकता है, अर: पन रहनेपर

कन्मधनके साथ प्रदीन शुद्ध सर्वका दान करता है, वह दिगुनित कम्बाद्धाः यस्य ऋषा करता है। अस्यान्ते पूजासे रिन्द्री दुवके 📖 पूज्य होता है। महाराज ! पृथ्वीपर साहाग ही देवता है, साहा साहान

अन्तर रहलेक, उसके बद विष्युलेकको 🚃 🚃 है। देनि ! बाह्यनपुरी ...... यह कत पूर्वसम्बमे तुमने भी किया

👊 💹 पञ्चके प्रधानमे जैलोबवपुत्रित मुझे लागीके रूपमें

कुमें प्रश्त विमा है। (अध्यम १४५)

ही देवता है। इतका ही नहीं सेनी 📰 🕬 सहरूपरे केंद्र चोई 📶 🛊 : 🚟 वह राक्ति है कि वे मन्त्र-बलके प्रभावसे 🚃 अदेवता 🚟 अदेवताको देवता क्य देते हैं। इस्सीलये व्हारकार । 🚃 सदाः पूजा करनी चाहिये।

देवनन अञ्चलते ही पूर्वने उत्पन हुए देला स्मृतियोका कथन है। सम्पूर्ण बगाद बहाजले 📆 🚃 है। इसलिये स्वापन पुरवत्य है। देवगम्, दितृगम्, जुनिगम् जिसके मुखसे भीजन

वनते हैं, उस व्यवस्थित बेह और गाँव हो सकता है ? धर्मत ! ्राज्या करण्यानकार वेश्वरण स्थापन क्षेत्रत होता। है। अब प्रत्यक्ष देवता साहत्व संतुष्ट होकर बोलते हैं से 👊 सम्बद्धान 🌃 कि परेक्षमें देवताओंको 🖩 यह वाणी है।

उसीको मनुष्यका कल्यान्य हो जाता है, अतः सदा जाहागर्क 🔤 कानी च्हिये। (अध्याम १४८---१५०)

अवस्य करता चाहिये ।

धारान् बोक्स्य बोले—महश्य । मृत्युके उपरान्त यन आदि वैका व्यक्तिके साथ नहीं बाते, परंतु बाहाणके दिया क्या दान प्रत्योकमें पानेब बनकर उसके साथ जात है। 📺 👷, बलकन् शरीर पानेसे भी बोर्ड लाभ नहीं है, अभ्यतक

🔣 किलीका उपकार न करे। उपकारहीन जीवन व्यर्थ है। इसरित्रे 🚃 जारसे 🚃 अवन्त्र उससे 🗏 🚃 माजने

🚃 चहनेवाले 🔤 📰 📹 वर्षे रहीं दिव 🚃 🖰

र्माल्यक व कियानमार्थे । जन्म स्त्रोत्। अवर्थाः व्यापाः स्त्राः नक्त्रोके व्यक्तिः (कार्र्यः १४८ (७-८) चुकेन-स्वर्गात सोज्यमेण्यत

इच्छातुसार पन कम और किसको प्राप्त हुआ वह होगा<sup>र</sup> ? पर्म, अर्थ तथा कामके विकयमें सन्तेष्ट होकर विकार प्रकार नहीं किया, इसका जीवन लोहारकी प्रकारक भारत कर्ज ही चलता है। जिस व्यक्तिने न दान दिया, न हवन किया, तीर्य-स्थानोमे प्राण नहीं त्यागा, सकर्ष, अल-कक्ष तथा जल आदिसे आहरणीयन सरकार नहीं किया, वही व्यक्ति व्यय-अन्त्रने 🚃 क्सरीहत, रोगसे प्रसित, इ.धमें कक्षल लेकर दर-दर पाठकड हुआ याचन) करता रहता है। अनेक प्रकारके कहाँको सहकर प्राचीरे भी अधिक प्रिय जो भन क्वल किया गया है, उसकी एक 📕 सगति 📕 दान । रोज भोग और 📖 हो 🚃 विवर्षियों से हैं<sup>1</sup>। उपयोगसे और दानसे यनक तक 📆 होता, केवल पूर्व-पूरुपके श्रीण होनेले ही चंत्रका जात होता है। मरणोपराना धर्मपर अपना स्वाधित नहीं रह करा. अपने हायसे ही सुवक्को धनका दान कर लेख क्कीके। एकम् । दान 🜃 अनेक कप 🖥 इस 🔤 व्यवस् करपीकि, बधु आदि महापुरुपेनि पहले 📗 बहलाय 🖥 🔤 पूर्वअन्यये किये गये जल, दान एवं देवन्यतः 📰 प्रमाहर्य ही दूसरे जन्ममें फलीपुर होते है। राजा युधिविरने पूछर-- मगनर । भगवान विद्या, रिष्य एवं साहागीको हताता हिन्दे 🔝 राज विका विकित्त देन बाहिये आव उस 🔤 वर्णन बहे । धगमान् श्रीकृष्यने सदा — स्थापः ! गी, चून 📰

सरकारी—ये तीन का सभी दानोंने **व्या** मुक्क है। वि अतिदान करे गये हैं। गावेकि दुवने, पृथ्वीको जेतकर का उपजाने तथा विद्याके प्राने-प्रकृतिसे सात कुलोका उद्धार होता है। अब मैं दान देने योग्य गीके लक्षणों और गोटानको विश्व

और न्यानपूर्वक सर्वित चनसे प्रत्य में श्रेष्ठ ब्राह्मणको देना
व्यक्ति । युद्ध, योगकी, यन्त्र्या, अनुहोन, मृत्यस्त्रा, दुःशीला
और दुन्यरहित तथा अन्यायपूर्वक प्राप्त मौका कभी दान नहीं
करन चानिये । युद्ध, शिल्ती पुण्य दिनमें ब्राह्मक पितरोका
वर्गम व्यक्ति । युद्ध शिल्ती पुण्य दिनमें ब्राह्मक पितरोका
वर्गम वर्गम वर्गम शिल्ली और विश्वपुत्त मौका दुव्य आदिसे
परविचिति पूजन व्यक्ति स्वत्रस्ता मौका पुण्य आदिसे
अस्त्रिम क्ष्म है। मौको पूर्व क उत्तरमित्रस्त व्यक्त वर्गम वर्गम
वर्गमें । अनुष्य दक्षिणके व्यक्त व्यक्ति वर्गम वर्गम प्रदेशिय वर्गमें
वर्गमें । अनुष्य दक्षिणके व्यक्ति वर्गमें प्रदेशिय वर्गमें
वर्गमें । अनुष्य दक्षिणके वर्गमें व्यक्तिय प्रदेशिय वर्गमें

क्षान्त्रहरू। (क्षान्त्रहरू।

प्राचन 📆 🚃 अधीरत सेंह, खेडेका कार तथा

पन्न 🚟 क्य यह हो जल है। स्थल ! वह 📟

भगवान् विष्णुने कही है। गोदान कानेकाल कहुँदेश इन्हेंकि खनवता। सार्गमें निवास करता है। वह गोदान सभी क्योंको दूर कानेवाला है। इससे बहुकर और कोई भाषीबात नहीं है। गोदान ही एक ऐसा दान है, को काल-कामान्यतक करा देता रहता है। (अध्याव १५१)

#### रिलमेनु-शनकी 🚃

भगवान् अध्यान करते हैं—महत्त्वन ! स्था मैं सा हूं। विससे पात स्वास्तान महत्त्वतको तथा सभी भगवान् वायहके सा सि गये तिलकेनु-दानकी विकि सा उपकरकोसे मुक्त हो जाता है और सर्गार्थ निवास करता है।

१-मस्तर्यन्ति मसर्वर्षणः 🔣 🗈 टीको ११मानुवन्ते 🔚 🐯 अतः अस्तर् व्यवस्थितः (उत्तर्वा १५१३६)

२-मान्यसम्बद्धाः प्राचेनोऽपि वर्षानाः । वर्षाने व्यापाः विकासः । (३५१वर्षः १५१ (११)

<sup>ा</sup> भीगो कार्यनेकारे गतन्त्रे व्यक्त विश्व न स्थापि क पुद्धे कार्य पूर्विक परिर्णवर्धि = (सुन्ताविकासकार्यः) भी यन कार्यः व्यक्तिकार्यः व्यक्तिकार्यः व्यक्तिकार्यः व्यक्तिकार्यः व्यक्तिकार्यः व्यक्तिकार्यः व्यक्तिकार्यः

३-केप्पाकृतीकानानि पानः प्राणी सरकारी। (बारकार्ग १५१ (१८)

पहले पूर्णाको जनस सम्बद्ध स्टब्स बाला गुगवर्ग तथा उसके चारों और कुल किल ले । तदक्ता उसपर गावकी अकृतिके रूपमें तिसकी यति फैला से अर्थात् विसमयी बेन् क्या ले । सफेद, कृत्य, भूरे तथा फेलूक्यमंके शिलोसे बेलूब्ये रचना करनी चाहिये। चल अवकाके चानकी 🚃 और एक होण तिससे बहाईका निर्माण करे । पायके सुरके कर बाँदे, सींगके प्रश्न कर्ण, विक्रके प्रश्न सकर, मुखके प्रश्न पुत्र, गलकम्बलके पास कम्बल, कैल्के स्वापने 💹 🚃 सामान सर्वेच और 🔤 🚟 कुता 📺 प्राप्ति । 🚃 पुँक्तके स्थानपर पास्ता और सम्बद्धाः स्थानसर पास्तान रहे ह सिरके स्थानक सफेद बका, केन्क्रिक स्थानक सफेद सरखें स्था दे। सुन्दर फलो तथा मणि-मुख्यअसेसे उस विकासी करियत चेनुको सुराध्वत करे। किसी पुरुष 🔤 देश उस चेतुना पूजन 🚟 📰 जाइएको दान कर दे और 🚃 मन्त्रको पहुटे हुए अर्थकपूर्वक करे— म लहारीः सर्वपूर्णालां 🗃 🖩 देवेन्स्यविकतः । भेपूर्वाचेत्र सा 📰 मा 📰 भारते 🛊 (अस्तर्ग १५१) १५३ व्यक्तिमाहित 🖛 प्रकृतिको दे है। इस व्यक्ति 🖫

दक्षिणस्मित् सम्ब प्रमुक्तको दे है। इस विकास स्म तिलक्षेतुका दान करता है, तक म्यकि सभी क्योंने मुख क्षेत्रर परामकको प्राप्त कर 1888 है।

भी क्रिक्त एक क्रिक्ट्रिक के प्रतानिक क्रिक्ट्रिक क्र

जलबेनु-दानके प्रशंतने महर्ति मुक्तका 🛲 🖚

भगवान् श्रीकृष्य काले हैं—महरतम ! == हैं वंश्येनु-दानकी विधि कता रहा हूँ, जिससे देवाधिदेव भगवान् विध्यु प्रसन्त होते हैं। उद्यय जलसे पूर्ण एक कराश त्यापित करे, उसमें पद्माल, धान्य, दूर्वा, पद्मानस्मव, बुद्धसंद्रक ओवधि, दाश, जटामांसी, मुग, विश्वपु और आंकला होड़े। == उसे दें == वको, बहोनकीत और प्रमाणकाओं।

विलयेन्-दान करनेवाले व्यक्तिको तीन दिन बाबा एक दिन 🔣 🖫 च्येजन करना चाहिये : दान करनेसे मनुष्यके चाप नष्ट हो जाते 🖁 और उसके अंदर परिचला आ जाती है। 🚃 महान करना चन्द्रायणज्ञतसे अचिक श्रेष्ठ महना गया 🖁 । बहर्य, कुछ अथवा वृद्धावस्थाने मन, वचन तथा कर्मसे 📕 क्य हजा हो अवका अवश्य-धन्नव, अगम्बागमन, 🕶 🚾 🔳 पातक, महापातक और उपपातक किये गने हों, वे सन किलनेतुके दानसे दूर हो जाते हैं। प्रीवत पहुर अबंदि विदेशोंने कुलने तथा नत्र कान करनेसे जो पाप होता है. का 📰 वर्ष 📕 भारत है । शिलचेतुमध दान भारतेकाला 🚃 चतन्त्रभोकः अमित्रमणकर कुल्लेक 📟 📟 उत्तर 📖 📟 💼 🕏 स्वर् । विकास कथ-प्रसंगके समय मुनियोंने यह सुक्रकी 🚟 करदावीने मुझे इस विक्रिका उपदेश किया, वही रिलबेन्-दनको 📟 की आयरे 💳 है। तिलबेन्का दान 🚃 प्रतिहा, पुरूष और 🚃 तथा स्प्रेतिसर्थक 🖟 🛚 महास्यका अवन करानेसे 🚃 पुष्प 🚃 होता है। भी, घर, शाया और बन्या एक व्यक्ति है देने च्योचे, बहुत विश्ववस्य होनेको अभोजनिको प्रतिन होतो है और जिल्ला करनेसे सात कुल दुक्तिको 📖 🔛 है। इस दानके प्रमायसे दान करनेवाला क्का **व्यक्ति बैहक्त साधात् विक्**रुभगवान्**के समीव प**हेंच 🚃 है। याप 🚃 कार्तिकवी पूर्णिया, चन्द्र-सूर्य-महण,

व्यक्तिको असने कृत-अकृतका शोक नहीं करना पहला।

अर्लकृत को । कुराके अस्तमपर करासको रहाका उसके कारा-कार कृत, कारा आदि तथा चार्चे दिशाओंमे वदिके कार कार्मे शिल, दुसी, कुर तथा मधु भरकर रखे । कलाग्रें

रूपर स्टब्स्ट , शिदुव-बोग, व्यक्षेपत-बोग, 📖 🚃

कर्मनीर्वेकी, पूर्विका और मजनकाया-योगमें तिलयेनुक्य दान

बरास पान गम है। (स्थान १५२)

सकता बेनुको कल्पना कर उस ग्रेमपसे उपलिप्त कर है। कुछे स्कन्पर करना लटका है। समीकों दोइनका भी रखा । इसके स्कार समामा भगवान् विकास मधाराति

पूजकर उस कलवाने जलकेतुकी अधिकक्षण करे और इस प्रकार कडे-

किन्नेर्वक्षरित्वा रहातीः सामुन्या व विन्यानारेः । सोबहर्कानीशक्तियाँ बेनुक्तिय स्टब्स् वे स

'जो पीयाता पणवन् विन्तुके बचःस्वरूपे सककि कपने निवास करते हैं और अधिरेक्कों को कहा क्या चन्द्रमा, सूर्य एतं इन्हरूरी शक्ति-स्थ्यमे प्रविद्वात है में मेरे दिस्से इस जलकमी कलरामें क्रांबिंडत हों।'

(क्वरण १५३ १६)

इस मन्त्रने करनतमे चेनुको प्रतिद्वित कर करन-कर्णाका चलकेतुमा तथा जलकार्य मगवान् अञ्चल किल्प्यन भलोभीते पुत्रन करे । तदनकर केतवण और राज्यकित क्रेकर

मगवान विकासी प्रशासको 🚟 उस कारानाका करावेन्छ हान कर 🛮 और 📰 🚥 कड़े—

होनवर्षहरूपाः सीमान् शाहीरिश्वरिकः। सामानी क्रिक्ट मा केन्द्रका H

count excises

'रीवनागरूपी 🚃 राजन कटोकले, राष्ट्रीकरूपरे विष्युपित, जलसाधी, अपक्रीति । शीक्षर्यम चनव्यम् केराच ।

अवय (इस चानकपी कर्मसे) मुक्तपर प्रसन्त हो / क्षान भारतेके बाद उस दिन गोलत भारत पातिने । इस

व्यवस्य जलबेनुसा सन् कानेकला व्यक्त सन्त प्रकारके आरम्बको प्राप्त करता है तथा उसे सर्वकारिक असूरा शानित प्राप्त होती है 🔛 सभी क्लेरबोची सिन्धि हो बारी है, इसमें

कोई 📰 नहीं (

राजन् । इस विकामी 🚃 🚃 सुन्द च्या 🖥 🕮 इस प्रकार है—सिसी 📖 वसीस्तर 🚃 मुद्रत प्रति

🚃 📑 तुप् समल्बेकमें गये। नहीं सम्बद्ध 🚃 🚃

१-कृतस्य कृतिके केत् ने कृत्यार्वकृतिकः। केत् साम स्थान कृत्ये व ने व्यक्तिकः स कृत्यान्तुकारण मानुदेशेनुदेशिक्त्। वैत्रांतावाविक्रीत व वे व्यांताविकाः । स्त्रीवर्षण्यान्तुतः श्रीकानितः। स्टानुतः वीर्थितः ३ भौत्येक्ट ।

कर्म् । मार्गिक स्वरूपके परि

(June 143 | 30 -- 11) 🔛 🔛 'हरेगुरुक्तानेत्रीय 🗷 🚃 📟 कंकने 📖 निर्म्ह' 📖 कर्म फेट्र प्रत्येक विमुक्तानके विशेषिक है, जे 🚥:

वहनेव 🗓।

कि पार्च बीव अनेक प्रकारके कुल्लेचक आदि दारण नरकर्ने क्ट केन यो हैं और यनक्तके अंदि पर्वेकर एक उन्हें अनेक प्रकारके दृश्य दे रहे हैं। मुद्रलमुनिको देखकर नरकके मोबोक्ट पोड़ा रक्त हो गया और उन्हें नहीं प्रसन्ता हुई तथा वे सुख्यात अनुभव करने लगे । जीवीको सुद्धी देखकर मुनिको श्राह्म व्याह्म इत्या, उसपर उन्होंने पमगुजसे इसका चारण

कुछ । यमस्त्रको कहा—'मुने । जनको देखकर नरकके बीबोको को प्रस्थात हुई है, उसका बारण यह 🖥 कि आपने 🔤 🔤 विधिवत् असचेतुका दान किया है, 🔤

🚃 आवका दर्शन 🚃 आहादित कर रहा है। जें अपन्य दर्शन करेंगे, अध्यक्ष ध्वान करेंगे, आएकी चर्चा स्टेने 🚃 🚃 क्रिके देखेंगे, स्टल करेंने 🚃 भी

संदा-१५वित 🔤 🚃 होगा। जलयेनुसा दान भारते-🚃 💹 बच्चेस्ट क्यें 💹 🔛 होता। इससे 🚃 के अस्त्रसाद्यक 📖 🔛 कर्म नहीं है। जुने 🕽 🚃

📖 मेरे हारा आर्थ, पाद आदि Ⅷ 🖛 अपने धापको कहरे : **व्यक्ति जगक**म् **बोधनामः व्यक्ति प्रहण मि**त्रा है, वे मेरे 🚾 व्यक्तन करने योज्य नहीं है। की भगवान्

क्रीपुरुवाक्या पुरान-वात करता 🖟 📟 अनुका ध्यान करता है, क्रमा कृष्ण, अच्चत, अन्तरा, बासुदेव मार्च गांगीका निरक्तर

३५वरण करता है, यह इस लोकमें नहीं आता । जो 'अयहत: क्रीबरकप् ऐस्त करूकर हात देश है, वह मेरे लोकमें नहीं अस्त । वे भगवान् अकृतन सम्पूर्ण बगत्के स्थानी है और हम राजी अनके आञ्चाबारी हैं। मैं लोकोंका संख्यान करता है और

येत संययन यगवान् बीकृष्य करते है<sup>र</sup>।' यमराज्यन यह क्या स्वाप्तर अप्रि. शक आदिसे पीक्षत सब नश्यके क्या

पगवानुसी सुवि करते हुए उनके पवित्र नागेका सरण करने त्तरो। जिल्लामा करते ही उस पुश्यकर्मक

यमराज इस बाबा जाति कर है यो ने कि उनके देखते-ही-देखते नरकके सभी हैं हैं हैं कि उनके देखते-वरते गये। युवल श्रीचे भी वह सब हैं देखकर अपने बाते आये और मगदान् किन्युका क्षेत्रण सभा सलकेनु-दानके महास्थान हाता स्मरण हैं हैं हुए बाने समे—

शहे ! परवाद विकास भाषा 🜃 विका 🚟 📟

है, जिससे मोहित होकर प्राप्त परमेश्वरको नहीं पश्चिम प्राप्त करेंद्र स्थाप करेंद्र होता करेंद्र होता करेंद्र है, परमूर, हाल करता प्रमुख करता है और अपनी मुक्तिके हिन्में प्रमुख नहीं करते । हाल आश्चर्य है है स्थापन स्थापन हिन्में

अपना हित नहीं पश्चान पता । किन्युभगवान्त्री मान्य नवीर वदी 🖥 🚟 है, परंतु वगवान्त्र अंतर्थ 📼 व्यक्ति उस मायाची दूर कर लेखा है। जो व्यक्ति मानव-जन्म बाहर को पमधान्त्री आराधना नहीं करता, उसका पनुष्यके बाहरे क्रम लेखा हो व्यर्थ है। ऐसा बौन अपाण व्यक्ति होगा,

को प्रशासन्तरे अवराजना नहीं करेगा, जबकि श्रीतपूर्वक बोदों-सी भी क्षाराजना की जाव ही प्रशासन् विष्णु इस रहेक तथा परानोकने उसका करपाण कर देते हैं। भगवान्को धन, स्वाह आयुक्त क्षारी कुछ भी नहीं पहिले। उनो तो माद

हरकारी चर्क एवं शुरू देश बाहिये<sup>र</sup>। इसलिये जीव | तुम चनकात्में दूर क्यो रहते हो ! हरूरों बच्चेक बाद इस कर्मकृष्टिं दुर्सथ चानक-क्यमें क्या लेकर जो स्तास

श्रीकानुदर्भ अस्ताचन और अस्त्रिकुका दान नहीं करता, यस अस्त्रिक यह जन्म हो नार्च है। 📰 अस्त्रिक व्यक्ति अस्त्रिक स्थान है। युद्धल 🔤 अस्त्रे दीओं हाथ

कार कार कि 'पनुष्ये ! में पुकार-पुकारकर कारत हैं कि कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या लाव क्षेत्रिकपुर्वाधानुको आरायना और जलबेतुका द्यान करना कार्याचे । नरकारी मातमा असे दुःखदापिनी है, इसे

मैंने सबये अपनी आधिसे देखा है। विचार कानेगर सह संध्ये ही मालून हाता है कि उस दुःखारे क्यानेके लिये भगवान् विचाने मिला मनको लगाना चाहिये, यही क्षेपस्कर

ਰਚਕ 🏗 (\*

(अञ्चाम १५३)

#### क्तप्रेनुक्य-विकि

भूतभेनुदान और पृत्तभेनु-निर्माणकर विश्व का है, हमें आप प्रेमपूर्वक सुने। गायके पीते भरे क्रिक्त कार्यक्री आकृतिमें कनावन उन्हें गन्य, पुण उन्होंदेने अरंगुना कर क्रिक्ती पेश्वीपति केता दे और दोहन-स्थानक करंग्यकी दोहनी दे। पैरोकी जनावन ईक्तके हों, सुरकी क्रिक्त पीते, सोना, सीनोंक स्थानक अगरकता, दोनो

वगराने सर्वश्रान्त, गराकावराके स्वानवर दनी व्यक्तिकाके स्थानवर कुरुकादेशीय कपूर, सानिके स्थानवर प्रत्येत प्रकृत स्थानवर प्रत्येत प्रकृत स्थानवर प्रविधित पुत्र, विद्यान स्थानवर प्रविधित पुत्र, वृत्यके स्थानवर प्रविधित पुत्र, वृत्यके व्यक्तिक स्थानवर संवेद (और) सरसी और पीठवर्ष वगह तक्ष्मित स्थापित करें। इस प्रकारने कृतकेनुकी रथना करें। इसी प्रकार पृत्यकेनुके पास के प्रविधु-वरसकी भी करूपना करें। सदनकर विधिपूर्वक मृत्र-

१-वे प्र व्याप्तिक प्रार्थित प्रार्थित प्रार्थित प्रार्थित प्रार्थित प्रार्थित प्रार्थित प्रार्थित (स्वर्थित (स्वर्थित प्रार्थित (स्वर्थित (स्वर्य (स्वर्थित (स्वर्य (स्

२-भार्ति कुरतानेता हुन्या । उत्त्वानी का है और हुन पर पर पर अपना के ता है। ऐसे है गर्भवतुक्त में कुरत्भवक्ताने हैं। साथ अपनेत है। पर्भवे हुन बाद हुन का हुन का है ता है। ऐसे है गर्भवतुक्त में कुरता है ता है। हुन हुन हुन हुन करोग हुन करोग हुन करा बहुत करिये। वेनुकी प्रतिश्वासर मार्शाभाँति पूजन करे और इस प्रकार करें — आप्यं सेवः समृद्धिकारणं प्रकारं करन्। आप्यं सुरामाध्यक्षारः सर्वकाणे प्रतिशिक्षण्। सं वैद्यान्यकार्य देवि करिकालि क्या किस्स । सर्ववाकारकेक्षण सुराम क्या कारिकी ॥ (असर्व १५४ । ८-९)

'मृतको तेजीवर्गक ताल क्यान्यको सामाना गया है। देवलओंका अनुस् कृत ही है, सन्त कुछ कृतने हैं प्रतिदित है, इसरियो कृतक्यों देवि। तूम मेरे छक मृतकुम्बोने करियत हैं। गयी हो, मेरे चार्योको महत्त्वर मुझे अन्तर प्रदान करे।'

वाका पुरिविद्वरने कहा— पनवन् ! 📖 इस प्रकारके

### लक्जबेनुहान-विकि

प्राप्तिः विभिन्नः वर्णन् करं ।

प्राप्ताः । सम्मिन्नः वर्णन् करं पार्थिकः । सम्मिन्नः ।

प्राप्ताः । सम्मिन्नः । सम्मिन्नः ।

सम्प्राप्ताः । सम्मिन्नः । सम्प्राप्ताः । सम्प्ताः । सम्प्राप्ताः । सम्प्

मूनिको गोजरसे लीकार उसके उन्छ कुछ निका दे तथा उसके उत्पर निका वर्ग निका दे। उसकर पूर्व दिशाओं जार पुँह करके बैठे। बाहे कोई बनुष्य बनी हो वा भरीन उनके एक व्यक्ता अर्थात् बार सेर बाला रखकर उसमें बेनुकी कर्यक करनी बाहिये। सुवर्णमध्यित चन्द्रनक्षको सींग, बाँद्रिके खुर, ईखके पैर, फलोंके सान, सर्वन्यकी निका,

कान, क्यां के करवन कर सके कपोलमें समुधिक, मुख्यें जी, दोनों क्यां की और गेहैं—इस क्यां सन्त्रधान्य तस स्वक्येनुके अञ्चीन

दे और शिक्ष प्रमुख्ये श्री करें । उस दिन भूतमा ही आहार बस्य व्यक्ति । इसी श्री व्यक्ति (मनकार) बेनुका भी दान करना व्यक्ति । पृत्रकेनुका दान करनेकाला अवस्था और स्थेकने निकास अवस्था है, वर्षा भी और दूकती नदियाँ है । यह अवस्था कर देता है । यह अवस्था सम्बद्ध दान देनेकाले अवस्था है, स्थानिक व्यक्ति निकास कर देता करने किकास करा हान देनेकाले अवस्था है, सह निकासका पराम पहलो प्राप्त अवस्था है । पृत्त सर्वद्यमय है, इसलिये पुराक्ति विकास करा है । पृत्त सर्वद्यमय है, इसलिये पुराक्ति विकास करा है । पृत्त सर्वद्यमय है, इसलिये

ऐसा बहकर दक्षिणसहित प्राचेन्तर 📖 बहराको दे

करें। प्राप्त करें, गुरुषिकसे अपान-देश,
पृक्तक, अंगूरते व्या करने माहिये। इस
व्यास केन-देशको रकता करने माहिये। इस
व्यास करना करने कर्म संस्था ने प्राप्त नामको
करना करना करें। केनु सका अध्येक्षे
कर्म-आधूका आदिसे असंकृत करें। महनकार कर्म कान कर
देवलाओं और व्यास्त्रको पृज्य करें। वी-पुत्रके साथ गायकी पृज्य
क्षे अदिक्रक करें और इस मन्त्रको पहुंबर नामकार करें—
(अपने क्ष्मिक्रताः।
(अपने क्ष्मिक्रताः।

दे। स्वत् ! लक्ष्मचेनुका दान करूति सम्पूर्ण पृष्टीकी बरिताम और सन्धे यहाँ तका दानोंका थी फल अंधा से जात है। इस स्थान को व्यक्ति स्सानची लक्ष्मचेनुका दान करता है, उसे जीवाम, सुरा, आरोग्य, सम्पत्ति, बन-मान्यवर्ष माणि स्था है स्था का प्रसामकोन्त स्वर्गने स्थान स्थान है।

(अध्यक्ष १५५)

(अध्याप १५६)

#### सुवर्णयेतुहान-विधि

भगवान् शीकुम्म कको है—महातम ! अस 🛚 निकस करते 🖁 ने इस प्रकार हैं — नेप्रोमें सूर्व और चन्द्रमा, सुवर्णभेनुदानको निक्ष कता रहा है, जिससे सन्पूर्ण 🔤 विक्रमें सरकते, **स्था** परहण, **स्था** अधिनेकुमा, 🚃 🚃 📹 और स्थार, बसुद्दें गर्था और मुक्ति मिल जारी है। पचास पल (बाव: सेन बिल्हे), प्रयोग अथवा औं समर्थ हो उस करने शु≥ सुकांके अप्राच्ये, कृतिक्षेत्रे चार्चे 🚃 योनिये पक्षा, रेपकृतीये रमजटित सुन्दर अभिना सुक्षकेत्वी रक्त करनी चाहिये। द्धविगय, अकनदेशमें पृथ्वे, असिये जग, अस्थियोपे पर्यत, उसके चतुर्वांक्रमें उसका क्स्स करने। गलेने चौदीकी 📰 🔤 चतुर्वित पुरुषार्थ, ह्यारथे 🔤 वेद, कारतमें रह, लावये, रेरामी नवा क्षेदाये, इसी प्रकार डीरफे दाँध, वैदुर्वस्थ प्राचानमें के 🔤 समक्ष अर्थरवे चपवान विष्णु निवास भराकम्बर्ध, कार्य सींग, मोतीबर्ध कार्या और पैनेबर्ध जीव 🔤 है। इस 🚃 🖦 सुवर्णकेन् सर्वदेवमधी और परम बनाये। कृत्रममृत्यक्ति अपर एक प्रत्य गृह रहाकर काले करम स्वर्णनेतृको स्थापित करे। अपेक प्रकारके करानुक 🔤 🚃 सूचर्पकेनुस्य 🚃 कारता है, 🚃 मानो आठ करारा, अठसह 📖 चन्य, 🚃 🙀 अवस्य, 📰 📟 दान कर 🔛 🛊 । इस कर्मश्रीमधें 🚃 मोजन-सामग्री, स्थान देवनमात्, देवन, समन्त्र सम्बद् द्या कार इसेन है। इसरिन्दे प्रयानवर्षक कार्यन्त्रेनुका आदि स्थापित करे । तदनकर कान कर शुक्रजेंकेनुकी ऋषिकत 🚃 करण चाहिये। इससे संस्थासे उद्धार हो 🚃 🎚 🚟 🚾 तथा रहनियमें 🔤 होती 🖁 🚃 🚟 सम्पूर्ण कर इसकी पत्नीयति पूज करे । पूजनके अनकार वार्यजपूर्वक इस सुवर्णयेनुको 🚃 📖 इप्युक्तोके स्थाप क्येरथ पूर्व के बारे 🛮 और 🔤 📹 🚟 आणि बाबायको शन करे। in to राज्यम् ! 🚟 🖮 समृत्ये 🗐 देवता, समृ 🎆 📟

रमधेनुदान-विक्री

भगवाम् श्रीकृष्ण कक्षो है---एसर् । 📖 मै 💹 प्राप्त करानेवाले अस्तुसभ रजवेतु-दानकी विश्वि 📖 का है। किसी पुण्य दिनमें पूर्णिको 🚃 🚃 📺 इसमें बेनुकी ....... करे । पृथ्वीपर कृत्यभूगचर्ग विश्ववस्त स्थापर एक श्रेण लवण 📖 उसके क्या विधिकृषेक संकरपासीत रतामधी चेतु 🚃 करे। कुँद्धमान् पुरुष 🚃 मुख्ये इक्सासी प्रयस्तापनि तथा चरणोंने पृत्यसम स्वापित करे। 🚃 गीके 🚃 सोनेका शिलक, 🚃 होने 🚃 🗏 मोती, दोनों भीरोफर सी मैच और दोनों करनेकी हाला से सीने

लगर्ने । 🚃 सीन 🚃 होने चाहिये । 🚃 जगह 📮 **व्यक्ति । अर्थित नेत्र-परावधेने स्त्री** केनेटक, पृहक्तमधे सौ इन्द्रनील (बैलम), दोनो पार्शस्वानीने सी पैट्र (मिरलीर), उदरक 📟 📖 कटिरेशपर सी सैनन्दिक (अभिक-लाल) 📰 🚃 पाहिये। सूर्वेको सर्वकर, पुरुषे 🚌 (मेलिये) 🔳 लाइयेसे युक्त कर तथा निवास सर्वकार तथा विवास विवास राजना कर्ष्ट्र और कदनसे 🎟 को रें। ऐमोको केसर और नाधिको 🔤 बनकावे । गुद्धने 📕 लाख मनियोक्षेत्रे शराना चाहिये ।

१-नेजने प्रतिनि विक्रमं तु सरमाने एकेंद्र सबसे देखा करियेश सम्बन्धित न्याराणी तथा पारत देवी पार्टनानाहै। वन्यविकास्त्रीय अनुदेश प्रतिकारः। कृते अकुताको की रिकामिक

प्रमुखे केम्पूरीयु अपने कर्मुका विकास अनेतु कम विदेशः प्रवेदकारियम् विकास व्यक्तिकविक्रम् क्षेत् वीत्रीवतः। ह्यो व स्त्रीतः क्षते सः प्रीक्षेतः । पुरामाने विकार मेहर्तिक: वर्णमानिक: वर्णमानिक: वर्णमानिक: (अवस्थानिक: (अवस्थानिक: (अवस्थानिक: वर्णमानिक: वर्णम

२-इसने कापूरण रहिंका रहन करनेके उरलेकारे रहेना, शूर्वता का अध-काराची करफावार चरित्र जो होना चहिने, क्येंकि पूर्व

राज्य रहतेको संधिधारोपर लगाना चहिये।

गोवरको गुपुरते और गोपुत्रको भीते नगना चाहिये । दहाे-दुच प्रसाध 📕 रहे । पैछके अग्रमाननर 📖 तक सलॉर्फ सस तनिकी दोहनी रखनी चाहिये।

इसी 🚃 गीके क्युव्यंश्मी नक्का करून व्यक्ति।

इसके 🗪 चेनुको 🚟 करे । 📖 सम्ब गुरुकेनुकी वराः

आवादन कर यह कदन चाहिये--- देवि ! वैकि कर, 🚃 बन्द्रमा, सहा, विष्यु—ये सची तुन्हें देवकाओंका 🎞 🚟

व्यक्ते 🖣 तथा समस्य विभूवन कुमारे 🔣 सर्वरपे न्यान 🛊,

### उपयमुखी थेनु-क्षत्रका पाकृत्व

सहार। पुरिवृत्तिरने पुता—पने ! उपकारो अर्थात् फल केवल रूपकुर्या-वेतुके दानते ही साथ हो साथ 🛭 और

प्रसक्ते सम्बर्धे वैका द्वा 🔤 🚃 🚃 🚟

📟 रहनका करा 📖 है : 🔛 📖 कराने ।

भगवान् औक्तानने वाहा-स्थापन । उपन्यक्ती चेतृता हात करता है, यह मी और वक्तके रारीरने Ⅲ रेम

गौ-राजका संयोग कहे भागमें अन्त केल है। 🚃 📗 🔛 🔛 हमार 🚃 लगमें पृतित होल 🛚 📖 अपने सहादेके 💹 🚃 समय 📖 हो और 🚃 सेन सहार 🛗 उद्युप्त कर 🔜 है । को 🖼 सुवर्णसहित उभयपुर्वी

दिखलाची दे उस समय वह नी धनो सम्बद्ध -------पुष्पी हैं। ऐसी उपयम्ती मीके दानक 🚃 🚃

नहीं। यह और दान 🚟 जो फल क्रम 🛗 🚟 🖎 🖦 📾 महे करण करिये। (अञ्चल १५८)

महाराज युविशिक्ते पुत्र --- अगरीत ! अव गोरसमा-कुनक विचान पराये। यह मिल समय किस विधिने किथा

नाता है।

भगवान् श्रीकृत्यने कहा—प्रजेकर ! गीर्र सन्पूर्व

🚃 📰 🛮 और गीर्र हो लाग अस्थापरधान है। संसारको व्यापनाया शिये व्यापना इनकी सृष्टि 📰 है।

तीनों लोकोंक हितकी कामनाभे गौभी साह प्रथम की नवी है।

इनके मूल और पूरीवसे देवपन्दिर भी परित्र हो जाते है औरोक

कर्तकान, देखरका और देखरहरी क्रम कारण उनकाली नामको पान देख है सहुद क कि की बाहु दम तेकर नहीं नेची जारी

थी। इस बारको 'करवार्'के 'हिन्दु संस्कृति-अञ्च' से हेक्स १९६८ के वर्ग सम्बन्ध अञ्चले कर-कर अवस्थित सिद्ध किया गया है।

१-अन्य पुरस्कें के इसका सहस्र अन्य है और इसकी परिवारके संस्थितको पृत्योगी परिवारक पुत्र कारणा तथा है। मुल्यु है के ल

अक्षः तुम चवसागरसे पीहित मेरा शीव ही 🚃 करो । इस

अक्रिमुक्क साहानुः प्रचान करके उस रजयेन्द्रक दान बाह्यपक्षे 🚃 🚃 करे, असमें श्राय-प्रार्थन करे। 🚃 🚃

समूर्व 🚟 जननेवास जो पुस्त हस रहभेनुका दान

🚃 t, 📟 🚃 (केलास 🖿 सुमेरस्थित दिव्य शिवकाय) 📰 प्रप्त 🚃 🛮 📖 पुनः बहुत समयके बाद

इस पृथ्वीयर 📟 एक होता 🛮 और उसकी सम्पूर्ण कावार पूर्व हो जाते हैं। (अध्याय १५७)

क्ष्म पूर्वको 🚃 🚃 असंकृतका जी उभवपुर्वी

बेनुका राज काल है, उसके 🕬 गोलोक और बहालोक सुराध 🖺 🚃 📳 दुर्बल, अनुसीन वी और दक्षिणारे 🚃

गोरसस्यक्षान-विधि इनमें सभी देववाओंका निवास 🖥 । गोमकों साहात् लक्ष्मीका

PRES है। सहस्य और भी—दोनों एक **स** अलके दो रूप है। एक्टो क्या अभिद्यात है और एक्टो हक्किय-पदार्थ। इन्हें 🚟 पूर्वके 📺 सरे संस्कर और देवताओंक

भरन-केरन 🞹 है। स्कन्। 🚥 देशी विशिष्ट गुनमर्थी क्षेट्रे द्वारक विधान सुने । एकमात्र सर्वगृत्य तथा सर्वलक्षण-सन्दर्भ गीवा दान करनेपर समक्त कुटुम्ब तर जाता है, निर्म

🔫 अधिक गीएँ दानमें दी जाये तो उनके महरूपके विषयने का का 📰 🛚

हेरात्माकाचीः। सुर्वतिः स्तरकातः 🔣 पूर्वतिकः सः ॥ (कार्यते १५८ । ३)

प्राचीन केरलमें महाराज नहन और महामति क्यांकिने भी साओं मौओंका एवं किया था, विसके प्रधानने वे का-स्थानको 🚃 हो गर्ने । पुरुषी कामनसे देवी विकास 🕫 गङ्गाजीके तटपर अपन गोधन किया था, जिसके परसामध्य उन्होंने तीनी लिख्य स्तान नायक (अक्टन् कान--हपेन्द्र() को पुत्रकथमें प्राप्त मिता। राजन् ! ऐसा सुना जाना है 👫 वितृत्तन इस मन्तरकी गामा गाते हैं—का मेरे कुलमें ऐस्त कोई पुरुवस्य हुए केया. 📕 सहस्रों गौओंका दान करेगा, विसके पुरुषकरी क्या स्थ परप्रसिद्धिको प्राप्त कर समेशे, अधन्य इन्हरे कुलमें सकते गोदान करनेवाली कोई दुविता (कन्या) होगी ओ अपने कुन्य-कार्येक आचारपर मेरे लिये योक्षणी 🞆 तैयार 📰 देगी । राजन् । अत्र 🖣 शास्त्रोकः सर्वकारिकः गोरकासङ्ख्य पक्रको विधि कता रहा 🛊 । दत्ता किसी रीचॅनकन अध्या गोड था अपने मरपर 🖩 दश 🖜 बेरड हामकु रूक-चौड़ा एक सुन्दर भव्याप करवाचे । इसमें होरण लगाने वर्ण । उसके क्यों शायकी एक सुन्दर केरी कराने। १श केटीके पूर्वोत्तर-विराह (रियानकोम) में एक समके करणा वर्षायक व्याप करे । महावाली विद्यालये उसका कामसे प्रस्तेची स्वातंत्र की । सर्वप्रथम ब्रह्मा, किन्तु, संदर्भ अर्थन 🔤 कार्दिने । सहकि लिये जुलियोका बरण, पुनः केंग्रेके कुर्वेकर-जगमें एक रिल कुष्पका निर्माण कर धार-अदेशमें बल्लाको सुरोतिक छे-छे कलरहेकी स्थापना करनी चाहिये और उनमें सहरत दाल देख चाहिये । तदनगर इकन करना चाहिये । दुलाकुम्बदनके सम्बद इसमें यो लोकनालोंके निर्मत करणा प्रदान करणा बाहिये । सहयों गौठरेंमेंसे सबत्ता दस गौओंको अलग कर

🚃 वच्य जाशन विविद्वेक सबकी पूजा करे। इनके न्होंने 🚃 पंटी, तमिके दोहनका, खुरोंने जीरी और मसकको सु<del>वर्ण दिलक</del>से अलेकुत कर सींगोर्स भी सोना 🚃 दे। गोमालके कहरिक् 🚃 बुलाना कारिये। इसी आंध्यो मुन्दिन सुवर्णमय अन्दिकेसर (कृपभ) को सरकार्क क्रम 🚃 अथवा प्रत्यक वृषयके भी क्षा विचान कारकार है। इस कारक समाजात गीके क्रमसे मोसहस य मोरात दान करना चाहिये । यदि संख्यामें सम्पूर्ण गीर्ष उपलब्ध न हो सके तो दस मौजोंकी पुराकर होन गौओकी परिकरपना 🚃 उनका दन करना कड़िये<sup>र</sup>। पुरुष्णाल अवनेपर गीत एवं मासुनिक शब्दोंके 🚃 🚃 सर्वोचीविषत जलसे 🚃 कराया हुआ कार्यन विवासी पुर 🔤 📰 प्रथम 📰 को -- विकानिकारण विश्वानाताओको नमस्त्रत है। सीकोको भारत विकास विकास ग्रीओको व्याप प्रणाम है। गौओंक अनुस्थे कृतीसी भूवन तथा तहाति देवलाओंका निवास है, के देखिकीकारक अस्तर्ध केंद्र रक्षा करे । गीएँ मेरे असमागर्मे हों, बीर्ड मेर पहालामने रहे, मीर्ड नित्व मेरे बार्ड ऑप वर्तमान रहें मै नीओंक प्रथमें निवास करें "। वृंकि तुन्हों क्थलपरे सन्तान धर्म और मगबान् शिवके बाहन हो, इस्त मेरी रहा को !' इस काल आयन्ति कर बुद्धिमान यजपान सभी सम्बद्धिक साथ एक मी और नन्दिकेशरको मुख्यो दान कर दे 📖 उन दसों पीमेंसे एक-एक सका हजार पीओमेंसे एक-एक मो, प्रकार-प्रचार अथवा विल्लामा 🗎 प्रत्येक ऋतिकारी सम्बद्धाः कर दे । उत्पक्षम् उत्पत्ति आहारे सम्ब बाह्यजीको दस-दस था थीय-वीच गीर्द देनी चाहिये । एक ही गांप बहुतांको नहीं देनी चाहिने, नगोरिक वह दोनप्रदायिनों हो जाती है। बुद्धियान् सक्तवनको अस्पेन्स्बुद्धिके शिवे एक-एकको अनेक उन्हें प्रका और माला आदिसे सूच अलंकन कर से। इन दर्शों (क्क्स्पर्व १५५ । १४)

१-द्रोत म 🔛 वर्गस् चेत्रकारान्ति। श्रेष्टः 🌃 🚾 ॥ संस्थः ।

१-व्योक्स्युक्तमें कर-कर कैनोची अंकर 🎆 🛗 केवलस-देन 🗺 🕬 🛗 🛗 📆 वृद्धि करते 🖥 🗷 परत के-पठ देश वह और नहीं दुव-दर्शनी समान 🔤 नहीं 📟 कुमते 🔤 📟 🖦 और नहीं 🚃 गे-समाति 🖦 समान प्रसार प्रमान है। जान जो 📖 केनल-स का नवा है 📖 🚃 कुर्कपूरी 📖 गेदन 📖 🛗 बहुबक-से 📖 होते. म्ब 💷 समोदी 🚟 🕮 ये-परि-स्थानन हो परिवार है।

१-वरपोर ८१४१ अस्ति स्थान स्थानम् वैभोदो सम्बेद् 🔡 पुरितन्त 📖 स्थानि 🔛 मी परः स्था परित्र 🖼 है।

४-गाने कामतः ततु गांधे में 🚃 पुरुषः तानो ने काँतः 🚃 🎟 वन्ने वतनकान् । (कारवर्ष १५९ (३३)

गौर्य देनी चाहिये : इस क्रक्स एक हुन्कु गोदान करनेकस्स यजमान एक दिनके लिये पुनः प्रयोगत करे और इस महादानका अनुकीर्तन सार्य सुनाये आचवा सुने ।

वदि उसे विपूल समुद्रिको इच्छा 🗷 के उस 📖 ब्रह्मकर्य-ब्रह्मकर पालन करनाः चाहिये । इस विकिसे जो क्तुव्य एक 🚃 गीओंका दान करता 🕏 쨰 🚃 🚃

होकर सिद्धों 📷 कान्येद्वारा सेविस होता है। वह 📰 वेटियोसे सुशोपिट सुनिक समान 📟 विमानवर आरूद होकर सभी विकास किया देवताओं हारा पूजित होता है। 📺 नोस्ताक-शनमें पुरुष अपने इकीस पीढ़ियोंका उद्धार 🚃 देख है। गोदानमें मौ, पल, 🚃 एवं विधिका च्यीमे । (अध्याय १५९)

#### कुषक्रानकी पश्चिम

पुरिविद्याले स्वयूक् — जनार्टन । अस्त्रकी अमृतमयी 🚟 मुझे तुर्फा नहीं हो रही 📘 🚉 हरकने एक कीवृहरू है। शेनी 🚟 📰 प्रसिद्ध है कि गीजेंगर खामी—गोवति (वृषम) गोविन्दसक्य ै, 📖 प्रयो ! 🧮 भवनीय कृपभ-दानका 🚃 📰 कृप 🖎 ।

धगवार् श्रीकृष्ण खेले—एकर्। सुन्ति, क क्षभ-दान परिवर्षे परिवर्धम और दानीने 🔤 🚥 दान है। एक 🚃 हर-पुर क्यभके दानका फल दस केनुसंबंध दानसे अधिक है। इह-पुट, पुष्प, सुन्दर, सुरक्षेत, रूपधन्। और ककुद्वान् एक ही शुभ लक्षणसम्बद्ध कृष्टे 🔤 उस त्रुव करनेवाले ब्यालवी सभी कुलोबर उद्धार हो अल्ड है। पुण्यपर्वके दिन कृषभक्ते पूंछमे बढि लगाकर तथा व्यवस्थात उसे अलंकत कर दे, तरनकर दक्षिकके साथ इस कुक्स दन बाह्यणको देशर इस 🚃 प्रार्थन करे—

पुणकर्मका सम्बद्धानस्थाः : महम्मेरिक्टानकाः RETURN II

(कारणी १६० (९)

इस विश्विरे कृषध-दान करणात्री व्यक्तिके सात जन्म फलेके किने रुखे समझ पाप इसके प्रध्ववारे उसी 📺 नह हो जाते 📗 🚃 📟 बह व्यक्ति कुषयमुक्त १६४वाटे दिवा विमानमें बैठकर 🛲 चला जला है। महीपते । उस कृपके सकेटमें स्थान देन हैं, उसने हमार सम्मान का गोलोकने पुरित होता है, इसके बाद गोलोक्स अवसीर्ग होकर इस लोकमे अन्य कुलीन सहामके घरमें जन्म लेता है । यह व्यक्ति 📺 करनेकला, महान् वेजस्थी और सभी महामोद्वारा पृथित होता है । बहातज 🕆 आपने जो यह पूछा कि यह उत्तम मुख्यान मिले करवा च्यारिये, उसके निकाम में बतला रहा 📲 मी - वितेशिय, वेदवेता, अहिसक और अतिकारो अनेन्याला, सनुव्योका उद्धार करनेमें समर्थ तथा गृहत्व हो । उसे १५, पुष्ट, बलवान्, भार-बहन करनेपै समर्थ और सब गुनोसे 🚃 उतन कुर प्रदान 🚃 चाहिये। इस कारते एक वृष्यमा 📰 📰 चेषु-दानने भी 🚃 (अध्याम १६०)

#### कवित्रसम्बद्धी वरिया यहराज पश्चिमरने अक्ट----------

पार्षेक्द नाम करनेवाला एवं 📖 परम पुरस्कद 🛊 । धनवान् ब्रीकृष्या केले—महम्पते ! इस सम्बन्धे प्राचीन कालमें बिनताशने पणवान् करण 📑 परमंदिकी 📰 संबदको मुझे बताया चा उसे 📖 सुने। घरणीदेखीके पुरत्नेपर भगवान् वाराहने कहा कि 'भद्रे ! सामाज गीके 🕶 करनेसे सम्पूर्ण पापोका नाम हो साता है तथा यह परम पवित्र है। पूर्वकारकों अक्राचीने सम्पूर्व रोजीका सार एवळ कर क्लोने

क्यिला-दानका माहात्य कालानेकी कृत्र करें, 🗎 🚃

🛮 सन्तराहर्क 🔛 🔤 🚾 रचना 🖫 थी। विक करनेवारी, महरलेका महरू तथा परक पूज्यमधी है। तम इलीका रूप है, अरोमें यह उत्तम करा, क्रमेंचे इक्क कर 🚃 🌃 यह असम निर्म 🖥 । पृथ्वीमें गृह रूपसे 📰 🚃 रूपसे 🔤 🚾 📑 है एवं सम्पूर्ण होकोने पार्यकाल और प्रतःखाल अधिहोत्र आदि इवस्ता 🚟 भी क्रियाई है, वे सभी कपिस्त्र गामके पृत् 📰 त्या दक्षीने केवी है। 📰 ! कविरुपके सिर और 🚃 सम्पूर्व रीर्व निवास करते हैं। 📕 मनुष्य प्रातःकाल

मुक्त हो जात है।

ठठकर उसके गरे एवं यसकके गिरे हुए जरुको ऋदापूर्वक सिर शुक्तकर प्रवाम करता है, वह पाँचत्र हो जाता है और उसी क्षम उसके पाप भरम हो जाते हैं। प्रातःबाल उतकर निसने कपिला पीनी प्रदक्षिणा की, उसने मान्ते सम्पूर्ण पृज्यीकी प्रदक्षिण कर सी। यसुन्तरे । सामस्य मौको एक प्रावदान करनेपर भी दस जनके किये हुए पाप यह हो असे है। परिश वरके आचरण करनेवाले पुरुषको कविता गीके मुत्रते स्वान करन व्यक्तिये । ऐसा करनेवारण सम्बे गहा आदि सम्बे संबंधि ana पर पुरस । प्रतिपूर्वक एक अर कविरशके पोल्ससे स्थार करनेपर मनुष्यके जीवनधरके किये हुए प्राप तह हो जाते हैं। एक हजार गीके दानका फल एक कविटा गीके दानके समान है। गौओको समपूर्वक एक करने चाहिये। 📆 १५-रही, पुरा, गोम्हा, गोमान कारिको अवस्थित नहीं करना व्यक्ति । गौओंके शरीरको कुनल्बना और उनको सेवा करना परम केह धर्म माना गया है। गीके पर 🔣 रोगको 🚃 जाकी भर्तभाति सेम करनी चाहिते। 🔣 गीओके 🖼 हिन्दे हरी-परे पोषरभूनिका कुन करता है, यह विकास फरन बाह करता है। माधान अक्षानीने परिपक्त नीके दस नेद भारताचे हैं। इस सर्पिता गीवा जो ओरीय स्वयूपको दान 📖 है वह अपन्यओसे आएंक्स दिव्य विमानक हान्युल होकर सर्ग आहा है। सोनेके सम्बन रंगकारी कविरत प्रकम नेपांची है और पीर विज्ञालयर्गवादी द्वितीय 🚟 । 🖼 लाल-पीले नेक्बाली, चीची अधिके सकत नेक्बाली, जुरुके 🚃 वर्णवाले, प्रदेशे 🔛 स्थाप विद्वरत्वर्णकरी, 📟 उपले-पेले, आइमी इत्थलके समान पेली, 🔛 पाटकार्यवाली ..... दसवीं थेले पूँकपाली । वे नाथे कविलाएँ संसार-सागरसे उद्धार कर देखे हैं, इसमें संज्ञा नहीं । भी शह होकर कपिलाम्स दान लेख है और इसका दुव पीता है, क्यू पतित होकर व्यक्ता हो जल 🖣 और अन्तमें नरकमे जाता है। इसलिये किसी ब्राह्मणेशको कविश्यका दान नहीं रेजन भारिये । जोतिय, धनहीन, सदाबारी तथा अधिकेटी बाह्मणको एक कपिएन गीवम दन करनेसे दास सन्पूर्ण प्रापेश

वेन् ..... उसी समय उसे क्यानको 🚃 कर देश चाहिने। अन अग्रह होनेवाले बक्रदेका युक्त चेन्द्रिके कहा दीक्रने हमें और रोग अङ्ग अभी पीठर ही हों, अर्चात् अर्चा को गर्नमह उसने मोचन (बाहर) नहीं किन्छ, तबसक यह बेन् सम्पूर्ण पृथ्वीके समान भागी आही 🛊 । बसूबरे ! ऐसी पायका दान करनेवाले पूरव सहावादियों से सुपूर्विक क्रेकर अञ्चलनेको उतने करोड़ **व्या**लक स्थान करते है, जिल्लो कि चेन और कानेके रोनोकी संक्यार्थ होती हैं। 🚃 📰 🚾 गुरुदे सम्बन्ध करके करिएन गीवर दन 📰 सम्ब अर बेनुबन पुष्क सहायके हाथपर रख दे । वरः तेमल पुतः वाणीने वाहानमें संगरण पहचले । 📶 पुरुष इस प्रवस्त (उभयमुक्ते मौका) दान करल है, उसने वानो सम्बद्धते विद्ये शका धर्वले, बनो एवं स्वोसे वरिपूर्ण समृत्यी पृथ्वीका राज कर दिया—इसमें कोई संजय नहीं । ऐसा मनुष्य इस 🚟 🚟 है पृथ्वी-दानके तुल्य 🚃 भागी 🚟 🛊 i 🚃 अवने 🛤 🌃 📖 प्रकारतापूर्वक प्रशासन् विष्णुके परम 🔤 पहेच 🚃 है। बहाजका वन होननेवाला, गर्भगत कानेवाल, इसपेको ठगनेवाला, वेदनिष्टक, अस्तिक, अध्यानीक निष्टक और सामानी केन्द्रोट व्यवस्था पहान् याचे सन्द्रश कता है। निन्तु ऐसा चेर पत्र 🖩 ब्यूतसे सुक्जेंसे पुक्त तभवमुकी 🛭 🔤 सनल 📟 मुक्त हो 📖 🛊 । दावाको चाहित्रे 🎮 उस 📰 🚟 श्रीवन 👯 अथवा दृष्के ही सहारे रहे । को इस करक उपनयुक्त कवित्त गौना दान करता 🖥 वह सम्पूर्ण पृथ्वीके दानका फल पाप्त कर लेखा है। जो व्यक्ति आंक्षेत्रकाल उठकर समाहितिकितसे तीन 📖 भौतानुर्वकः इस करण—'गोद्यन-विष्यन'को पढ़ता 🛊, उसके वर्षभरके किये हुए पान बसी कुल इस प्रमास हुए हो 🚟 है, जैसे बायुके क्रोंकरे भूतके समृह । 🖿 पुरुष श्राद्धके अवसरपर इस परम पावन प्रसमुख्य 📖 करता है, इस बुद्धियन् पुरुषके असरमे रिका 🚃 📰 जाते हैं और पितर उसकी कहाओंको बढ़े

गृहस्य पुरुवको चाहिये कि एक देनेके दिन्ये व्यस्त 🖫

प्रसम्ब करनेवाली चेनुका पालन करे । जिस समय वह कपिला

प्रेमसे प्रकृत करते हैं। 🖿 अमन्त्रस्थाको अध्यानोंके सम्पुतः 🕴। जो पुरुष पन 📖 निरन्तर 🚃 📖 📖 है, इसका पाठ करता है, उसके पितर सी कवित रिने 🚃 🖺 जाते । उसके 📓 📟 पण 🚃 हो जाते हैं। (अंक्याय १६१)

#### महिनी एवं मेची-क्रमकी 📖

पराणान् श्रीकृष्य स्थाने हैं—राजन्! मा मैं पापनादाकः, पुण्यादः माम आनु और सुराज्याकः विकास शास्त्री विधि यता माम है। सूर्य-पन्दत्रकार, कार्तिकः-पूर्णिकः, अपनसंस्त्रीतः, हुन्न पत्तकी पतुर्दत्री व्यक्ति पर्य-दिनोमे व्यक्ता जय भी सामध्ये हो, उसी समय सोसारिक दुःक्यो निवृतिके रिज्ये महिनी-दान करना पाहिन्दे। हुन्य सम्बन्धेने सम्बन्धः साम अस्त्रिकः सामा इस मन्त्रको सामा प्रतिके—

इन्हरिकोक्तवालाको या सुर्थ । पहिनीदाक्तवाक्तकार, शासू वे सर्वकालक । प्रारंतकार साक्तको यक पुतः अधिकः । गरिवासुरस्य साथ । स्था प्रस्त परः । (कार्या १६२ । १-१४)

'यो हुन्यदि लोकपारनेकी करन्यनकारिके सामाना है और कर्मराजकी सहायता करनेके दिनो किसका पूर्व (प्रीहर) उनम्य बाइन बना हुआ है तथा जो महिचासुरकी करने हैं, का मैर लिये करदायिने हो। इस महिची-दानके केवे सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्व हो जाने।'

प्रविश्वाके पश्चात् पृष्ठ-भागते **व्या**ः दान करण पादिये। श्रेषा, त्यापूरण और द्वीतालके व्या ्या देवर विसर्वन वात्वा कहिये। इस विधिसे को प्राप्त प्रोप्तिका दान काश्य है, वह इस लोक तथा परलोकमें प्राप्तिक करू 💷 करता है।

महाराज ! इसी प्रकार मेथी-दान भी सभी पार्वोको दूर के के कि स्वाप्त स्वर्णनके जिल्ला का का का कि उद्यम पूर्वम, रेक्स्मी 🚃 चन्द्रम, युव्यमारां आदिसे अलेकुराक्ट अध्यक्ष प्रत्यक्ष 🚃 आलेकुराकट दास्ता दान करना च्यांटिये । अहन्य, विकृतकोग, स्वाह्यसम्बद्धमा अवदि प्रवित्र दिनोपे, दशका देखनेपर, व्यास्तिक अथवा जब पी 🖥 तम इसका कुन करना चाहिये। दानके समय दिख-पर्वती, सहा-काको, राज्यो-नाराचन तथा तीन-मामदेवको कुल करनी चाहिने, साथ ही रवेनावरने और महोन्दी भी पूजा शरणी काहिये । तदनकर इकन करना काहिये । ताहाकारी पूजा करनी पारिये। पुजनके क्षार नेपीयर प्रतिमानो निरूके करुतसर ल्बापित कर उसके सामने नगक रककर विविध्यंक पूजन करे **व्या** गुडरू **व्या**लमी उत्तरक दान कर दे। इस दानके भन्तकरे निःशंकनको पुत्र और निर्धनको धन बाह हो जाता है । 📑 ज्याचा इस राजवी 🚟 सुनता 🗓 🚃 भी अहोराओं 📰 गर्ने क्लेंसे हर नात है।

(अध्यय १६१-१६६)

#### धृषिदानकी महिमा

भगवान् ब्रीकृष्ण काले हैं— महस्ता है सा मै सभी
प्रापेको दूर करनेवाले भूमियानको सिच काला रहा है। वो
अपिकोणी, दरिर-कुटुम्बो तथा वैदिक कालाको दिवानकोता
भूमिका दान करता है, यह बहुत समकतक ऐक्पेका मोगकर
असारें दिव्य विमानमें बद्धान विम्मुलेकको काल है।
व्यक्तक उसके हमा प्रदश्त भूमिमा अंकुर उपको रहते हैं,
समस्ता भूमियाता विम्मुलेकमें पूजित होता है। पूजियानके
अतिरिक्त और कोई भी दान विशिष्ट नहीं मान क्या है।
पुरुष्कीम । अन्य दान

पृथिका स्था करता है, का कबराक भगवान् सूर्य रहेगे,
सूर्वरकेकमें का पृथित होता रहेगा। सन-धान्य,
सुवर्ण, रस, आपूक्य आदि सब दान करनेका फरू पृथिदान
कावेकाला स्था कर लेखा है। जिसने पृथिदान किया, उसने
साने समुद्र, नदी, पर्वत, सम-विकय स्वलं, गन्ध, रस,
सीरवृद्ध ओववि, पुण, फरू, कमरू, स्था आदि सब वृंध
दान स्था है। दश्यापको युक्त अग्रिकोन स्था यह करनेसे
को पुण्य प्राप्त होता है, वह पुण्य पृथिदान करनेसे प्राप्त हो जाता
है। सामानको पृथिदान देकर पुनः उससे वापस नहीं लेना
व्यक्ति।

सुवर्गतिका भूद्यनको व्यक्त

सहाराज पुरिक्षीरने पूर्ण — पंगवर् । पूरिश्वा दान वि श्रीवर है जर समसे हैं, व्यक्ति श्रीतम व पूरित्य व करनेमें, उसका क्या करनेमें और उसके बावा अवनेने होते हैं और स्ट्रेगोसे न तो पूरित्या दान हो व्यक्ति है, व ही उसका मारुन हैं हो सकता है। असे अस्य क्या देस का सतहये को भूगिदानके समकता हो।

जिस भौति मात्र अपनी संसानक और मी कैसे अपने करावा एथ आदिके द्वार फरान करते हैं, उसी प्रकर रखकी चृति

🔣 चूरि देवेवारेको रहा और पारण-वेदण 📖 है। 📖

श्रमवान् श्रीकृष्याने सदाः—महाराम ! ार्थः पूरिका दान सम्मय न हो तो सुकाकि हारा पूर्ण्यकारो अपूर्धिः सन्तकर और नदी-पर्वतीको रेकानून कर उसे हैं वा कर देव बाहिये । इससे सामूर्ण पृथ्विक दानश कर प्रश्नः वा वा है । वा में वा वा वा सह है ।

सूर्य-कह-महन, जनसभात, विकुतकेय, सुनारि स्थान तका अकरसंत्रप्रित आदि पुरूष समन्तेने प्रकार और स्थान प्रक्रिके किये इस दानको कहना चाहिने। साम स्थानक भी क्षेत्र क्षेत्र होते हैं, उसी भी भूभिद्यनके सब मनेरथ स्था क्षेत्र होते हैं। समारक सिद्ध होते हैं। विकास सुर्विक कदन होते हैं उनके प्रकासने स्थाप दूर

📕 **माठ है, 🛗 📖 मूनिके** दानसे सची प्रकारके पाप 🏬 🖟 📭 है।

मृतिको 🔤 देकर 🚃 लेनेकलेको कार्युत पाठण 🚃 मूच तक सोनिवसे गरे कुन्दोने कालते हैं।

अपने 🚃 हो गयी अथका दूसरे 🌉 📰 हो गयी पुरिचा 📕 च्यकि अवस्था करता है, 📰 प्रकारपर्यंत

है। प्राप्त पृथ्विता देवत वो काकि पुनः उस पृथ्वित इस्य करशं है, हैं। उस्य सरका है। कुम्मीयक स्थान करण करा है। दिका इसर हैं। कि स्वर्

कुन्येक्सले निकरणम् इत पूर्णियः सन्तः 🔤 🛙 और सात व्यवस्थि कहाँकी चीनतः रहतः है। इसकिये

हमयोगे जब बन एकत हो जाय, इस दावको किया जा सकता है। एक सी करको लेका कथ-के-कम वांच परस्तक अर्थात् अर्था साम्याक अनुसार सुवर्णकी जामूहिको आकारमें पृत्तकोगी प्रतिया कथाने कथिये। जिसके मध्यमें मेर पर्वत तथा कथानका अन्य वर्णत अहित हो। वह पृथ्वी सस्यसम्बन्ध सवा सोकवारों से रिक्त, सहा, शंकर आदि देवताओं से सुनोपित

का का का का का क्षेत्र के शहर है। कार्स हाय क्षेत्र-चौदा तोरमपुक चल द्वारोकार एक सुन्दर मण्डम कार्यप्र दर्श चर हायको चेटी बनानीवासीको ईशानकोणने चित्रकारोका समास करे और अधिकोणने कृष्य

बन्दि । प्रसम्बा-सेरण आदिसे प्रमाणको सम्बा है । अनग्तर प्रमाणेकपाल और नवामोंका चेंद्रकोपचार पूजन करनेके कर बाहाचोसे हका करावा चाहिये । बाह्यकवर्ग वेदध्यनि करने हुए तथा सहस्रकोकपूर्वक चेरी, कहा इस्पादि वासोकी ध्वनिके साथ

विकास केवर्ग दाव को भीको «(क्वरमाँ १९४(२६)

📖 सुवर्णमधी पृथ्वीकी प्रतिभावते सम्बन्धे स्वकट 🔣 🖼 हुई वेदीयर 🎟 करे। तरमञ्जू उसके करें और अठाउड प्रकारके कार्ये, राजनादि रहीं और परस्त 🔫 📖 स्कृतिक कलप्रोंको 🚟 🚃 चाहिने । उसे रेजनी चैद्रोक, 📟 प्रकारके फल, मनेकर रेज़मी 📖 और 🊃 नर्सभूत करना चाहिये। इस बकार अधिकासम्पूर्णक पृथ्वीका साव कार्य सम्पन्न कर रूपं 📰 बचा और पुन्धारन 🊃 🔤 अर्थनुक्लोसे विमृतित हो 🚃 पुरु रोजन धरे 🚃 पुश्चकाल असेवर इन 🔤 🚃 करे— नवाते सर्विवासं स्ववेच प्रकां काः। थावी जानीर पुरानानाः पादै बसुन्तरे ।। क्यु बारकरे चकरक् सर्वेशीयकारिकान्। क्रमुच्या वसे कहा तकाद सम् क्रमहरू श पत्तर्वकोशी से अवेक्श्यान्त्र क्याको । अनवार्य मनसूच्यं कहि संस्करकर्यक्यः ग क्षिय एक्पीनीसिन्दे क्षिके नीरीतिः संविकातः। गरको इस्तानः याचे कोकता कहे त्यो प्रकास इन्द्रिक्ताती क्याता तेवा पुनित् स्थितकः। विश्वं स्थाप्य विश्वता पदमान् तको निवास्तर पता ॥ पृतिः विक्रिः जना क्षेत्री पृत्रिको क्ष्मुका न्यूरे ।

(कारने १६५) ११—१६) 'कहुओ | क्रिंड दुवीं सभी देवकाने क्या समूर्ण

क्लांपर्वतिथिः पाने देनि संस्थरसम्बद्धाः ।

तुन्हें नगरकार है। 🌃 तून सभी प्रकारके सुन्न प्रदास क्यूओको 🚃 बहुते हे, इसेसे तुक्तर 📖 वसुन्वर है, कुम संस्कर-पनले मेरी एक करो। अधले | पृष्टि 🚃 🖫 कुरको अन्त्रको नहीं ऋह कर स्वतन्त, इसल्पिये हुम अनन्त्री हो, तुन्हें प्रमान है। तुन इस संस्करकप मरेमदसे मेरी रक्त करे। 🚃 शिक्तुचे स्थलो, 📖 गीरी, बहुतके श्रमीप गरपत्री, कहको न्योरना, 📖 हुना, कुरम्परीने सुदि और मुनिकेंद्रे केवा-करने रिका हो। केंद्र तुम समस्त विदाने करा हे, इसरिन्ने विकन्तर कही अली हो। पृति, सिति, श्रमा, ···· पृथ्वे, क्युक तक महे—ये तुक्तरी मूर्तियाँ है। 🔚 🛚 📻 अवनी 📰 भूतिनेद्वार दक्ष संस्करसागरसे मेरी 🚃 करे ।' ६० जन्म जनस्थान पृथ्वेको मूर्ति साह्ययोको निवेदित 🚃 है। 🚃 पृथ्वीका आधा अदक्ष चौभाई माग गुरुको 🚃 को । 📓 मनुष्य पुरुषकाल कानेपर सुवर्णनिर्मेत करपानमा पृथ्वेको सुक्तानुस्त्री इस विकास साथ दान करता है, यह कैन्स्स पदाने अने होता है तथा शहर मेटिकाओं (बुंबक) से सुरोतिक एवं सुर्विक समान 📟 विमानहरू बैकुन्छने आवर तीन अरूपनर्वत निवास करत 🖁 और पुण्य 🚃 🎆 इस 📟 🚃 वर्गिक व्यवसी एक

व्यवस्थल तथा भागी हो, 📖 मेरी रहा करें।

(अव्यक्षि १६५)

#### कुल**र्वक्रियान-विश्वेष** व्याप्ते सर्व- व्याप्तानम् वर्का साथ, क्षेट्रा सन् अथवा स्मितिवर्तन (सी

- Control of the Cont

केल है।

भगवान् अभिकृत्य बाहते है—महाग्य ! व्या में सर्व-वृत्यक्त तथा सर्वसंख्याद इस्त्येकि-दानके विधि करता रहा हूँ, जिससे सभी प्रकारके दानोंका करा आप हो जाय है। एक इसके सिपे चार बैसोकी आवश्यकता होती है और दस इस्तेकी एक पीक होती है। संस्थानी विकासी दस इस स्वाता उन्हें सुवर्ण-पह और रहतेने महस्तर असंबृत मा से। वंक, सर्व, पुष्प वचा करन अस्टिसे मध्यत उस्त्य, सुन्दर, इह-पुष्ट, उसम वृत्य का इसोने ओको काहिये। बैसोकि

केपोपर बुआ भी रखे, साचमें कील लगा हुआ अंकुल आदि

रपकारण 📕 रहने चाहिये। 🚃 हरापेकिके 🚃

विशेषक्यसे कार्तिकरे, वैस्ताची, अमनसंत्राची, अमनश्चन, ग्रहण, विश्ववकेणमें को । वेदलेशा, सदावारी, सम्पूर्णाङ्ग, अलंकुक दस व्यक्तको निमन्तित करे । दस स्था व्यक्तकाल देक शक्का वनाकर उसमें पूर्व दिसामें एक स्था मनागवाले हो अश्ववा एक कुन्य कनवारो । निमन्तित बाहागोंसे एकारामी समिका, भी, कारब दिल और सीरसे व्यवदियों, पर्वन्यसूक, अवदित्यसूक और कदमन्त्रोंसे हवन करावे । वदनन्तर यजमान साम कर मुख्या क्या आदिसे अलंकुत हो समावानको असर

🚃 अवज प्रकार निकर्तन भूमि देनी व्यक्तिये । इसका दान

हरापेकिको हिल्ला करे और उसमें बैरोब्बेओलेन उस समय प्रकारके याद्य-यन्त्रोको कञ्चन चाहिये और बद्यालवर्ग चेद-पाठ करें। कारण दानके समय पुरस्कृति ऋष कर 🛒 मन्त्रेको पढे---

पकार् देवकाः 🔤 📰 🚃 वर्षकः पुनक्ताने परनामा पुनिवासक 📖 साहित पेउसीन्। क्रमानकारि 🖟 🚟 व्यक्ति कास्तु 📂 🐯 🗵 164 (16-19)

'ब्रीक निकल कंपोल स्थित इसके साथ देवता सह नियत रहते हैं, अरः पान्यन् संबदमें मेरी परित्र हो । अन्य समझ यन भूमियानको स्वरूपक बस्त्रक भी सूर्य नहीं है, आतः वर्षने मेरे सुरुद्ध भारत हो (" इसके बाद भूमि और इस क्य महायोको है है। इस 🚃 यो व्यक्ति 🚃 🐯 एक करता है, वह अपने इस्तीस कुलोसहित सार्ग जाता है। सात बन्दरक उस व्यक्तिको निर्धनका, दुर्धम्य, व्यक्ति आदि दुःख नहीं 📖 चहुठे और 🚃 पृष्णीका अधिपति होता है। 🚃 । दम बस्ते समय 🖩 पश्चिपूर्वक 🚃 दानकर्मका दर्शन काल है, यह 🔣 क्यधर 📖 गये 🚃 पुरत 📗 बारा है। इस दानको कार्या दिलीय, यदारी, रिमि, निमि, परत अबदि सन्दे 📗 **व्यास्त्र किया, 📖** प्रपायसे 🖥 🚃 अब भी सर्गाना सूचा मोग को है। इसलिये भरितपूर्वक वी-पुरुषेको पद दान पाला व्यक्तिने। यदि दश इल्लंबिका दान करनेये समर्थ न हो तो पाँच, 🚃 अयब एक 🖩 इलका कन करे। इल-पंतिका दान कानेवाले हलारे विकास विक्री उठावी है और बैलोंके हारीरमें जितने भी रोम होते इको विकास क्रिक्ट विक्ट विकास क्रिक्ट विकास क्रिक क्रिक्ट विकास क्रिक्ट विकास क्रिक्ट विकास क्रिक्ट विकास क्रिक्ट विकास क्र पुर्वापर सेष्ट राज्य होते हैं। (अध्याप १६६)

## आयाक-राजके ज्ञांगरी

महाराज पुणिकेरने पुत्रा—चगकर्। १०००२ 📖 ऐस कोई शुन करावे, 🚃 मनुष्य 🚃 पुन 📰 सीव्याकरे सम्पन्न 🖫 सके ।

भागवाम् श्रीकृष्यः वेली—महाराजः । 🖁 इतः सम्बन्धने एक श्रीकाम 🚃 रहा है, 🚃 ब्रह्मपूर्वक सुनिये : 🚟 **व्याप्त क्रिक्ट अस्ति । व्याप्त क्रिक्ट व्याप्त अस्ति । व्या** 

असके राज्यमें न कोई उपस्था होता 🖿 और न 🔣 📟 राज् 📕 🛍 । 🚟 नीरोग रहते थे । यह 🚃 ऋत्वर्ष, सरक, 📖

और शतुओंपर विकय प्राप्त करनेकारत 🚃 परंतु पूर्वकायके अशुम 🔤 प्रमानसे 🔤 पास 🔛 🚃 📟 📰

🗐 राज्यको सुचारकपर्य चला सके तथा उसे बोर्ड पुत्र, विक 🔳 सहायक कन्द-कान्यव भी न व्य । उसे कभी समयशे 🚟

आदि भी नहीं 🎹 चता वा। इस कारण 📰 क्या 🚃

विनित्त रहता था। एक बार उसके यहाँ वियक्ताद यूनि कवारे। पटवर्ग सुमानवीने मुनिको श्रद्धापूर्वक पर्य, 🚃 🚃

पूजा 🔳 और आसनपर इन्हें बैठाकर निवेदन किया कि 'मुनीकर । यह निष्कण्टक राज्य 🖩 हमें 📖 है, परंदु मधी, मिन, 📰 आदि हमें 🔤 📰 प्राप्त 🗱 १९०० 🖦

🚃 इन्यवस्थानकी कांक **ार्जन कुल करें (**' राजेका करन सुनका निभासाद पुनिने

क्या कि- देवि । पूर्वजन्यने साथ गर्न पार्वण क्या हो अवले अवले क्राप्त होते हैं, यह कर्मभूमि है, अतः तुन्हें शोक 🖏 करण चहित्रे। विसे पदार्थका पूर्वजनमें व्यूचने सम्बद्धन नहीं किया है, उसे शहु, किया, काश्रव, राजा आदि 🛗 ची नहीं 🖟 समते । पूर्वकष्पी तुनने राज्यका दान किया

🚃 🚌 तुन्हें बाख हो एका, परंतु तुमलोगोने वित्र, मृत्य आदिशे कोई सम्बन्ध नहीं रखा, अतः इस बच्चने ये सम कैसे प्राप्त वंदि ?" इक्क एम जुनको केल-महस्य । पूर्वकाने जे

इंडब वह तो बीट नवा, अब इस समय अवप ऐसा कोई वत, दान, उच्चास, पाण अचका सिद्धायोग बळानेकी कृता करें, निससे मुझे पुत्र, धन, नित्र, धुत्व इरबादि प्राप्त हो सके। करीना वचन सुरका निमलाद मृत्रि बोले—'महे ! एक अपन्य 🔭 🚉 है, 📑 सभी 💹 📆 प्रदायक है। श्रद्धापूर्वक कोई भी कावानाम दान करता है तो उसे

महान् साम होता है। इसलिये तुम ब्रद्धारी आपाकदान करो।' मुनिके कर्ककर्तार 📖 शुभावतीने आपानदान किया। फलकः उसे पुत्र, शिव्र, यन और पुत्र 📖 हो गये।

भगवान् सीकृत्यने पुनः कहा—महत्त्व ! 🚥 मैं 📖 आपक-दानको विधि बता रहा है, बाद बद्धपूर्वक स्ते । बुद्धिमान् व्यक्तिको चाहिये कि 📖 और सरकलका शिकारकर शुप मुहर्तमें अगर, करन, पूप, पूष, धका, उत्पूचन, बैवेबर आदिसे भागव (कुनार) 📰 ऐसा सम्पार करे, विससे 🚃 संतुष्ट हो और उससे निवेदन 🔤 🔳 महामान ! अस्य विश्वकर्मात्वरूप है। आप देरे रिल्वे सुन्दर क्रेंटे-कडे प्रिकृतिक भड़े, स्पाली, कसोरे, कलरा आदि प्रश्लेक निर्माण करें। पार्गव भी उन 🚟 बनाये। तदनकर विधिपूर्वक एक अर्थि-भट्टी लाववे । अनुस्तर कर एक हजार निष्टीके पार्वेको **ा त्यपित कर सामंबदलके समय उसमें आहि प्रश्वतित** करे और प्राप्त वानुस्तक क्षेत्र, गीत, नृत्य 🚟

व्यवस्थाकर इसस्य क्याचे । सुरायात होते ही बक्यान स्वयंक्र आंत्रिको शास्त्रकर पाचेको बाहर निकास है। अशस्त्र क्वक्कर बेत बका पहरचार अनवेसे सोलाह पर्योको सामने स्वापित करे । रत्तवक्रमे उन्हे आकृतितकर पुरुवत्ताओंने उसका जिल करे और महाजोहारा स्वस्त्रिकायन आदि कराकर भागेशका थी पुश्रम नहें । में पात्र माणिका, सोने, 🔤 अचका निहीतको हो सकते है। सीधान्यवरी 🚃 🚃

> The second second नुबद्धन-विदि

नकाराज पुषिद्विरने कक्का—शनकन्। जान हन्त्र राजीके मर्मत है, जरु जरु गुक्कुनको विकि और महिन्क वतलानेकी क्रम करें।

भगवान् श्रीकृष्य धोले--महत्तव ! वर्डलकसी बहुकर कोई वर्ग नहीं और असलको बहुबाद कोई ऋष नहीं है। माखागरी बढ़कर कोई पुन्ध नहीं 🐙 गृहदानको बहुबार कोर्न दान नहीं है। यन, यन्त्र, स्वी, पुत, सबी, योड़ा, गी, पुरुष आदिसे परिपूर्ण घर लगसे भी अभिन्ह सूख देनेवाला है। जिस अकार सभी आणी मताने आज्ञयसे अधित राते हैं, उस प्रकार सभी व्यक्तम भी गृहस्थ-आश्रमपर ही आधृत है।अधने पर राविको 🔡 फैलकर सीनेने के सुक्ष है, का सुख कानि भी नहीं । अपने भरमें सक्कार चोजन करक 🗏 उत्तम सुख है, इसलिये 🚃 ! सृद्ध पर 🚃 देव बाहिये। यो 🚃 शैय, बैच्चन, योजी, दीन, उस्त्रण,

ज्ञानक करने चाहिये और इन 🚟 पहले हुए 📟 प्रत्येक दम करन चाहिये---

भाषानीयनि वसनः। अञ्चलक् ते अञ्चलक्षेत्रः सर्गश्चास्तु कम्बलकाः ॥ प्राच्यास्त्राचित वाच्या कारियात्तीन स्था 🔤 🛚 क्या व्यक्तिक विश

(कारवर्ष १६७१३२-६६)

निसर्प इच्छा जिस पात्रको लेनेको हो उसे वह साथ ही

👊 (अवि) 1 मान बहारून हैं और ये सची चना प्राचीरण है। आपके एक करनेसे पूर्व प्रजाओंसे पृष्टि क्रम हो, अक्रय कर्न ऋप हो । मैंने सित्ने पत्र निर्माण कराये 🖁 में साथ सरपाओं क्यमें मेरे समस प्रस्तुत रहें।"

🗏 ले, रेके नहीं । इस 🚃 को पुरुष सम्बन्ध की इस न्यक्रम-दाक्को करते हैं, ब्राह्म 📅 चन्यक्र विश्वकर्म संतुष्ट राते हैं और पुत्र, मित्र, भृत्य, का आदि सभी पदार्थ मिल जाते है। 🔣 🐗 इस दशको परितपूर्वक करती है,वह सीमान्यशाली 🚃 साथ एव-पीवादि 👭 पदाओंको प्राप्त कर 🌉 🕏 🔤 🔤 अपने पतिसहित शर्मको वाती है। शेखर । यह 🚃 पुनिद्धांके समान 🛮 🕯 । (अध्यय १९७)

क्ष्मान्त्र नेव्यान स्टब्स् गृह, वर्गसाला करावा है, कर न्यक्रिको सन्ने इस और सन्ने इन्यारके द्वान करनेका फल

मन्त हो अक्षा है। और हैटसे सुदृष, डीना, सुप्तवर्ग, जाती, इत्येखाः 🚃 कपाट 🚃 पुकः, मरपाराम और पुण-पाटिकारे पृष्टित, उत्तय अगिनसे सुसोविश शुन्दर बर

नका भारते। पुर क्यूएसी पान समान समा एवं करानदोंने मुसन्तित होना चाहिने। उसे नहीं मंत्रिशों शब महिसे संपन्तित होन चहिने। लोहा, सोना, चौदी,

र्वेच, राज्यी, मृतिका माहिके पत्र, बस, करे, क्रा हुन, कवन, पण, सन, आभूनज, गान, मैस, घोड़ा, मैस, सभी ऋक्षरके चन्य, भी, तेल, गुड़, तिल, चवल, ईख, मै्ग,

चेहैं, सरसों, मटर, अरहर, चना, उद्दर, नमक, 🚃 द्राक्षा, बीव, 📟 पुरुष, चली, करानी, उत्सार, मुसारा, सुध, होंदि, अवानी, प्राप्त तथा करलुक्य आदि ये सब गृहस्तके

उपकरण है, इनको परमें स्थापित करनेके बाद जुन मुहर्तन कुर्रीन एवं शीलसम्बन, वेदनक्रमके जननेकले, नृहर्शकर्यक पलन करनेवाले, वितेष्टिव यस, गन्ध, आयुक्त, युक्तमस्य अवदिते 📖 युक्त सह शासिकर्गके सिथे उनको नियुक्त करना चाहिये। परके ऑपनमें एक मेखलासहित कुम्बका निर्माण करवाना चाहिने । प्राप्तणोद्दरस सुरि-पुटि प्रदान करनेकाल उद्यापन को । प्राप्तण रशोपसूक प्रकृति का वासू-पूजाकर सची विश्ववीन पुरुवारि है। इसके बाद कवाबन पूजा परित खेबके साथ **ारित रानके निर्मा कराये गये उन 🔛 प्रमेश** और बार्ड राष्ट्राओपर 📉 🌃 🚾 🚾 विद्युष्टि । क्षा परको कि । क्षा अ**वस्था कि अपन** पर है उसे 'इदं गुढ़े गुद्धाना' 'इस गृहको महत्त करें' ऐसा 🚃 अञ्चलकी महिनको उसंगर्ने राजा 🔚 और 🚃 कैक्की कथा प्रत्याम् श्रीकृत्या वद्यो 🖟 महत्यः : 📖 सम्ब मुनियंने अनदाननः में ह्याला 📖 🗷, अरे में का रहा 🕏 🚃 एकार्याका 🚟 सुरे । 🚃 ) अन्य 🚃 को, जिससे तत्काल संतुष्टि 📟 होती है। कर्ज 🗏 दुःखी होकर राध्यानसे 🚃 च—'राध्यान ! सम्पूर्ण पृष्णी अन्नमे परिपूर्ण है, 🥅 भी हमलोगीको अन्न 📶 📖 रहा है, इससे पही जार 🚃 🖟 📰 इयरकेवीन पूर्वजन्ती कहरनेकी कमी 🚃 पेका नहीं कराया है पत्ता 📖 🚃 नीयको बोरा है, जैसा कर्न 📖 है, का उत्तीवर कर 📟 है। 🔤 अर्थ 📗 बदा 📖 🖁 🗷 🖂 हिने 🏬 नहीं मिलता । चीजन-चीम्ब निस्त अशका दान किया जाता है, वह रुप्त 🚃 📖 श्रेमस्त्रर है। फारत 🗆 📟 पदार्थीने बनुतसे पदार्थ है, बिन्तु असन्तर धान 📖 धनोसे 🚟 छन है । सरवरी 🚃 कोई पूर्ण नहीं, संतोचने बद्ध कोई 📠 नहीं और अन्नदानसे हाला चोई दान 🔣 है। 📖 जनुलेका और 🚃 मनुष्यंको 📉 तुर्व 🔛 🚃 मोजनसे होती है। 🚃 विश्वको 🚌 इतिहास है— रक्त् । पहले एक 💹 समके 📉 🚃 है, उन्होंने अनेक वह 🔤 और अनेक पुरुषे 📟 📟

प्रदान करे। कहान 'स्वसित' को और 'कोआहर् (यजुः ७ (४८) इस फलका पाठ करें। 👊 सामर्थ्य 📗 तो एक-एक कर सक्कानोंको दे काववा एक ही भर बनवाकर एक सलक क्यान्य देन चहिने। सक्त् । शीत, वापु और कुरते रक्षा करनेकाली तुन्त्रभयी कुटी महार्कोको देनेपर भी जब सची कावनाओंकी चूर्त हो जाती है और सर्ग अन्त होता है ते किर उत्तम पर दान देनेके परस्का पर्णन कामेरक किया जा सकता है ! चान्ह पृथि, सुवर्ग निवस्त दान और अनेक प्रकारके का-निकारिक प्रतान गृहदानके सोलहर्ने पानकी भी 🚃 📖 🖦 स्थाते । जो 🚃 सभी सामधियोंसहित 🚃 💹 सुन्दर 🖿 स्थापनको दान 🕬 है, वह प्राप्त करता है। (अभ्याप १६८) 🔤 अनेक 🚃 धन दिये और धनेवृत्तक राज्यकर सामन 🚃 हमाने 🚃 🚃 मोग मोगकर असमे राज्यात 🚃 🚃 कामे आबार तपाना की। अन्तमे ने अवस्य होकर 🔛 गर्य । यहाँ 🚟 🚟 🚃 🚃 📖 करने लगे । अपसर्ध् उनकी सेवामें खती वीं । पत्थार्ग 🎹 गीत सुरुषण दिशारे, हन्द्र भी बनका 🚃 सन्तर 🚾 थे : 🚃 📉 🚃 आयुक्त, पूर्ववाली 🚃 प्रकारके से पिश्ता था, परंतु 🚃 🚃 📉 मृत्येकमे अकर अको पूर्व-शरीएके मीमको प्रतिदित काम पहल मा : प्रसिद्धित 🚃 मोका करनेके बाद भी पूर्वजनके करिक कारण उस पूर्वशरीरका मांस पटता नहीं था। इस क्यार 🚃 नांस-महत्त्वसे 🚃 होकर पञ्चने व्यक्तवीसे कहा—'बहुत् ! आपके अनुमहसे पुढ़े सर्गका सुद्ध ऋषा 🚃 है, सभी देवता मेरा कादर करते हैं। सभी सामार्थ त्याचेगके रिग्ये प्राप्त होती रहती है, परंतु सभी कर्म करे .... में .... ..... कभी सात 🕊 होती, मुहे सद्य 🚃 रहती है। इसी चरत्व मुझे अपने पूर्व-शरीरके नोसम्बे अविदिन 🔤 🔛 मूलोकमें 🚃 पहरत 🛚 और इसमें मुझे बड़ी पूजा होती 🖥। मैंने कौन-सा ऐसा पत 📖

है, जिससे मुझे उत्तम भोजन नहीं मिलता। आप कृषाकर ऐसा कोई उपाय 📟 🔤 🗷 यह दुःसा दूर हो असा। **महाभी बोले-**-एजन् ! उनको अनेक प्रकारके दन दिने हैं, बहुत-से यह किये हैं और मुख्यनोको में संसूष्ट विज्या है, परंतु सहाजीको स्मादिह उत्तम व्यक्तनेका चेत्रक नहीं कराया । अकदान न करनेसे ही अरब अवस्थी का दक्त हो रही है। स्थान 🚃 🚾 व्यानमा नहीं। व्यान्य स्थानह पानना चाहिये। इसलिये अब अस्य पुण्णीक जाकर नेदलाका जाननेवाले क्लीन प्राप्तकोंको क्षेत्रन करने । 🔤 🚃 क्ट कुन्त दूर हो जबना। अक्रमंदिन अधन शुरुवर राजा चेतने पृत्यीपर जानार महर्षि अगहरपत्रीको परमयक्तिसे मोजन कराना और अपने गलेको दिव्य एकावली (माला<sup>4</sup>) 🖷 🐯 🕬 समर्पित किया। जगरूरमीको योजन करते ही एक केव संतुष्ट हो गये 💹 सभी देवता वहाँ अस्पर 📖 अदरपूर्वक राजाको विभागमे विशेषी अर्थलोक चले यथे । औरमावाहकोने जब रावणका यथ कर दिया, 📶 का एकस्पती जगवरपतीने बीरामचन्द्रसीको दे 🔡 । यह अलदानका दी महारूप है । मेरा वचन सत्य 🛮 📰 प्राप्तिनीके 📖 🕮 📆 कोई उत्तम पदार्थ नहीं है। 🚃 🚟 अन है। अंत 📗

कोई उत्तम पदार्थ गर्भी है। IIII विशिष्टी जन है। उस || तेम, IIII और सुक है। इसलिये अक्टमा मनदासा है। पूर्वा क्योंक जिस दूसरे व्यक्तिके पर IIIIII करके करते हैं और पहार्थ संसूद्ध होकर आता है से प्राप्ता देनेकरण न्योंक

धन्य हो जाता है, उसके समान पुरुषकर्ग 🔤 कीन 🔤 ? दीका-प्राप्त 🚃 कपिता मी, महिक, रुज, विस्तु तथा महोद्यां—ने 🚃 दर्शनमञ्जले 🚃 📖 है। इसलिये

परपर आने भूतो व्यक्तिको को धोनन न दे सके उत्तक गृहस्वातम व्यर्थ है। अजके किना कोई अधिक सम्बन्धक वीचित नहीं रह सकता। मनुष्योंका दुष्कृत अर्थात् किना हुन्य

दुवित 🔛 अलमें 🏬 📗 📉 इसरियरे 🗎 हेरी

व्यक्तिका अस्त साता है, का अस्त देनेक्टके दुक्कका **।** महाग करता है। इसके विपर्धत अनुवस्त **।।।।** पराच्छा भोजन करनेवाले **।।।।।** महानेका **।।।** पुष्प अन्यद्रश्यको प्राप्त 📗 📖 है। 📖 अनके 🚃 इतना 🚃 है, उसका दान 🔜 नहीं करते ? (अर्थ्यत धोडा-बहत

च्या है, उसका दान व्याप्त करते ? (अर्थत् धोड़ा-बहुत अधरण करे, च्याप चाहिये ।) जो व्यक्ति ब्राह्मण-अतिथि अर्थदेक्टे पोजन व्याप्त कराने च्या विका देनेके पूर्व विकास

कर हैं। है, यह कि पाप कि अक्षण करता है : कि व्यक्ति दस कि या कि अपना काइगोंको घोजन करता है, उसने कि सारकोकने अपना क्या करता तिया ।

व्यक्ति कार्यकार्य देवता और व्यक्तियोका पूजक भनेकर कार्यका क्या वैरच १९४६ व्या । उसकी दुकानमे एक व्यक्तियोक्ति व्यक्तियोक्तियावित्रित्तियोक्तियोक्तियोक्तियोक्तियोक्तियोक्तियोक्तियोक्तियावित्रित्तियोक्तियेवितियोक्तियोक्तियोक्तियिक्तियोक्तियोक्तियाचितियावितियावितियाचितियावितियोक्तियोक्तियोक्ति

केक्ट्रस्य अन्या पत्ते 🔛 । वैत्यने अंद्रेको देखा और अनुकार अन्या पत्ते 🔛 । वैत्यने अंद्रेको देखा और अनुकार कुम्प स्था करने लगा । 📺 समय 📰

🚃 🍱 प्रतिदिन 🚃 🚾 था। 📻 सर्व भी

प्रतिष्य स्थेटता, इसके अञ्चीको चाटता और पूरे परमें व्यास व्यास द्वारता। मैरप भी व्यास व्यास करता। व्यास समयमें यह भवंबर वर्ष विगय। व्यास करवा कर है, व्यासनेवर रहा-करन करनेके रिक्ट गया भा

अस्ति क्षा हा दुवसरक बैठकर सामान क्षा रहा था। उसी समय का सर्व इस त्यकृतिक क्षा क्षा विकास निवस्ता, क्षा का क्षा इस राजा और उसने सर्वको देवेचे कारा। चीट

🔤 🔛 🚾 🚃 वेरवपुत्रके सिरपर 🛗 गया और

हरेपिक होकर कराने लगा—'धूर्वा । व तुप्तरे व्यास्ति सरक्ष्में हैं और दुष्तरे पिताने ही केट पासन-पोक्स किया है, इस्तरिको व तुष्तरा व्याध्यक्ष पासना व्याध्यक्ष स्थापने क्या

भरों दुःखी हो सब रोने लगे। उसी बाबा अच्चुर, गोविन्द, अनन्त आदि भगवान्हे बाबा बारा करता हुआ बान कर बाब प्रनेकर भी

पर आ गवा। पुत्रको 🔤 🚃 🚃 उसने सर्पसे

नहीं कोईना है 🚟 🚃 🚃 कहनेके साथ ही वैरयके

१-महरूर केस्प्री २०० 🔛 💴 है, तेलू व्याप्ता समय 🔤 😑 छन 😑 💷 🔛 का 🖼 और समूर व्याप्ता 🔛 📑 है। वर्ष व्याप्ता व्याप्त केसूर कार्ट 🔤 क्यूक्तको का 🚟 है।

seemin \$34

जातन उत्पन्न प्राचीके साथ सम्बन्ध भरना अपने हाजसे जलता हुआ अंगार उठाना है'।' विश्वकृत्ये कर सुनकर साँपने कहा—'मनेका! तुन्हारे पुत्रने नुत्र निरक्षण है मा है, इसिएतो तुन्हारे सामने ही मै इसका प्राण से एक है, जिल्ला अन्य कोई भी व्यक्ति ऐसा बाम न करे।' यह मुनकर कनेकरने कहा—'सर्प। जो उपकार, महित एका केह अपने रास्तेसे भटक का अर्थात् अपने कर्मक्यार्थको केह दे, उसे कीन ऐक सकता है, परंतु शत्माना तुम उस करकको कोइ हो, दंश न करो, जिससे मैं क्यांत्रा कर सकू, बादमें मेरे पास कर्म उपने हाकसे कर सकू,

त्वनपर केरको जिल्ला और विशास एक एकर ब्राह्मणों तथा संन्यासको अस्पन्त थी, प्रकाससीय कपूर स्वादिष्ट केवन कराया। फेक्सरो संसुष्ट हो स्वयन्ति सरव स्वाद

विभिन्नपुत्र विदे जीतं शत्यम् तम् राज्यः । अर्थाद्वयसम्परित्वदृत्तम् ते प्रत्यमातस्य ।। (स्थार्ग १९९ । ६३)

'विषयपुर ! माहाचीको आक्रामे हुन विस्त्रीकी हीजी; दुष्पारे सभी राष्ट्र यह हो व्यप्तै और सुप्ताध मनेतम सिद्ध को आप।'

ऐसा जाता आदानंति तथात और पुण नैस्पपुतके महाकार कोदे । अस्तानंति वाणानी साहित होकर का सर्व

## स्वाररीदानकी महियामें हैपदीके पूर्वजन्मकी कथा

महाराज चुनिहिरने चक्- परावन्! अपने अप्रदानके माहाराज्ये सुनकर पुते भी एक बात स्मान बाती है। जिसे मैंने अपने बाता है, उसे बातानके सुनका है। जिस समय दुर्वोचन, बार्ल, राजुनि आदिने सुनकी अपने अपने अपने स्मान दुर्वोचन, बार्ल, राजुनि आदिने सुनकी अपने अपने समये स्माने स्माने स्माने स्माने साराज्ये का सरकार कर बन्नो

मस्तकसे शिए और घर गया। सर्पको सम हुआ देखकर भनेकरती क्या दुःख हुआ और कह सोको लगा कि मैंने इस सर्पको धुवको चौति कला था और आज यह मेरे ही किया घर गया। यह कथा है अनुषित हुआ। सन्ता। बारोकरोमें में सामुख रखता है, उसकी साभुताने कौन-सी विशेषसा सहते हैं। अर्थात् वह प्रशंसको योग्य नहीं है, कितु

को ब्लाइकेक्टी सामुद्रा स्टात है, ज्यारी सामुद्रा 🖬

इस प्रकार जनक जावार्त जावार्त करते हुए दु:खी होकर वैद्याने न हो उस जिल भोजन किया, न हो प्रतिमें से क्या । प्रसानकाल होते ही प्रमुक्ते काल कर देवता-पितरोंका पूर्वा-सर्वेत जावार्त कर जावा और पुनः एक हजार जावार्तिक जावार्त प्रकारके काल व्यक्तिक पोजन वर्त्वता सर्वेह किया । इसकर व्यक्तिने प्रसाव होकर कहा—'पनेशर । इसकीय तुमसे व्यक्ति से संदुष्ट हैं, इसकिये हुम का मौंगी ।' व्यव सुम्बार उसने कर भीगा कि 'यह पून सर्व पुनः जीवित हो काव ।' विद्यान वह कहनेयर व्यक्तिनों व्यक्तिकाल जाव होता उपर विद्यान प्रमुक्त वहां ही पहले हो क्या सर्व जीवित हो प्रया । वह देवाकर प्रनेकर बहा हो बसन हुआ और नगरके सोग प्रनेक्सनी प्रसंस्त करने लगे ।

। विद्यः पदायमः । यह सहस्य-अद्याग-भीतनः (अत्रदान) का संबोधके मैंने बाह्यसम् वर्णन विद्यः । यो व्यक्ति आहागोनो और पदावे आव्यागतीको अत्र देश है, यह बहुत दिनतक संसार-सृक्षको वह सर्प सोताल विष्णुलोकको प्रथा कर लेशा है। (अध्याप १६९)

> भोहरी हमारे बाब चलने लगे। उन्हें देखकर मुझे बड़ा दुःख हुता और व मह सोचने लगा कि जो बाब हाला, मिन, मृत्य बाब चेकन करता है, असेका बाब सफल है। अबना पेट व मनुष्य, जीव, बन्तु, पशु, पश्ची सभी भर लेसे है। अध्यापत, सुद्धार्थ और कुटुम्बको क्रोड़कर जो व्यक्ति

> चंद्रे थे, उस समा नगरके लोग और सदाचारी माताण

१-वृत्ते विशे क्यान्य क्रियादिको कि काक क्रोत्यकुकेत्रकात् य स्थापेत करिता (स्थापे १६९ १५६) १-अस्माति के साकु साकृते क्या को मुक्ता अस्माति के क्यान्य या साकृत क्रीतिको (स्थापिक) केवल ज्यान ही पेट भारत है, वह जिल्ला होते हुए भी मरे हुएके समान है। यही सोयकर मैंने उन ज्याननोरे कहा कि आपलोग जिवालाइ और इस-विद्यानने ज्यान है और जिल्ला बतानेकी क्या कवियों जिससे कि मार्ट, बन्धु, निज, पुस्पसहित आपलोगोंके लिये भी भीवन जाहिक ज्यान है। मेरे सके, जान इस निजंग कनमें हमें जादा वर्ष विश्वास है। मेरे इस प्रकारके वचनको सुनकर मैंनेय पुनिने पुत्रको चढ़ा जि व्योगोग! एक प्राचीन मुखाना मैंने दिन्ध पुत्रिनो देखा है, जिसे मैं कहा रहा हैं, आप व्यानसे सुने।

भिन्नी समय एक त्योगनमें कोई दुर्गना, श्रीता, सहाकारियों माहायों नियास कर रही थी। यह इस दशामें भी प्रतिदेन बाहायोंका पूजन किया करती। उपाधी शाय-दशके परिपूर्ण सद्धायों देखकर एक दिन माहायोंने प्रतास होकर उससे कहा—'सुनते! हमलोग तुनसे खुन प्रसास है, तुम कोई यर मांगी।' तब माहायोंने कहा—'माहायन! किसी कर अभवा दानकी ऐसी विशि बाहानेकी कृष्य क्षेत्रिकों, विश्वा करोसे में प्रतासी हिया, पुरुवती, सीधान्यकरी, बाहास हाला

महाजीका यह काम सुनकर विकास की का कि वाहर्ति । मैं तुन्दे सभी मनोरभेको पूर्व करनेवाले स्थालीदानको विधि बता रहा है। जी सी पल, यो सी प्रधास पल अथवा एक सी प्रधास पल तकिया पार करावे आवाल सामध्ये न हो तो मिहीकी उत्तम होंद्री बना ले। वह गहरी और प्रमुत हो। उसे मूँग वाल वावस्तते बने बद्धर्थते बहकर चन्द्रनसे वर्धित कर एक भव्यस्तके बच्चने स्थालक बार ले तथा उसके समीव बाब बातर राज्य, जलवाव, पीवह पार रही और पुन्प, धून, दीप, नैनेवा, वक्षा आदिसे उत्तमक पूजन करे और इस अवका उस प्रसुत्ते वार्धने बदे—

अशास्त्रकारावां सेवास्तुतीः सामीतीः। व प्रकेकोन्यसंसिक्षितानां विकास ल सिक्कि सिक्किमार्था जे पुष्टिः पुष्टिनिकासम्। अतस्त्रं प्रस्थानाम् सर्वं कृतं वको सम्। व्यक्तिकपुरसूर्वे क्षित्रं प्रेम्पनने तथाः। अधुक्तवति नार्शेकात् व्या धन वरात्।। (३६९वर्षः १७० । २२ — २४)

्रावना चना यह है कि समीप में प्रमासित अपि हो, व्यवता हो तथा जल भी हो, किंतु यदि स्थाली (बटलोई) न तो तो भोजन नहीं पद्मापा चा सकता। स्थाली! तुम सिद्धि व्यवनेक्वलोंके सिन्दे सिद्धि तथा पुटि व्यवनेक्वलोंके लिये पुटि-स्त्राम हों। में तुन्दे क्वाप करता है। येरी वातको सस्य करे। मेरे अस्तिकर्ग, सुधार्ण, कन्युवर्ग तथा पुरस्पर्ण आदि अस्तरभ विकास न व्यव हो, व्यवका तुन्दों-से व्यवहां की नहीं—ऐसा व्यवकार करे।

मान पहलर कर पत्र विक्रियां से पत्र कर दे। यह दम प्रियार, संक्रिय, क्यूर्ट्स, अहसी, एसदसी कावत द्वीकारे करन करिये। विक्रियोंका पर उपदेश मानकर कर कर्म ! उसी पुण्यके प्रयावके सम्मान्तरमें करी माहानी हीपदी-क्रिये कुकरी कर्म हुई है और यह देनेने हीपदीका हाथ कभी तृत्व नहीं दोगा; क्योंकि यह हीपदी, सती, हाथी, स्वहा, स्वावते, मूं, अवस्थती हथा सदसीके सम्बंग वहाँ रह रही हो, वहाँ किर कीन-सा पदार्थ दुर्लम हो सब्बता है। इतम कर्म्यर विक्य मुनिने कहा कि महस्यक कुविहार। यह हीपदी अपनी स्वावते अत दे तो सम्मूर्ण जगरूको दूसा कर सकती है, फिर क्या की का दे तो सम्मूर्ण जगरूको दूसा कर सकती है, फिर क्या की का दे तो सम्मूर्ण जगरूको दूसा कर सकती है, फिर

विकास देश वका सुरकर कावन् ! हमलोगोंने भी वैसा ही किया और सभी परिवर्गके साथ बाह्मलोको निस्ध पोका स्था लगे। प्रमो ! अवदानके प्रसंगसे सा स्थानाकारों विकि मैंने कही, इससिये अप मेरी पृष्टताओ बाग करें। जो व्यक्ति सुन्दर स्वाबंधी स्वाबंध कावल कावलोसे सा परवार पर्व-दिनमें इस विकिस बाह्मलाको देशा है, उसके बार बहुत् सम्बन्ध, कावन, मित्र, पृरव और सामित निस्थ मेनन करें हैं भी मोकान्स्य करी नहीं होती।

(अध्याप १७०)

# गीताप्रेससे प्रकाशित कल्याणके पुनर्मुद्रित पुराण-साहित्य

महाभारत-सटीका, समित्र, समित्र, क्षा खण्डोंमें केट [क्षांड र्ग० 728]—वर्ग, अर्थ, काम, मोसंक महान् उपदेशों एवं प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओंके उसेक्षासीति इसमें उन्न, पैरान्य, भांड, मोग, मीरि, सदाचार, अध्यारम, राजनीति, कृटरोति आहे मानव-जीवनके प्राचीनी विक्योंका किया वर्णन है। का क्षा संदित महाभारत (केवत भारत) (कोड र्ग० 39, 511), सचित्र, समित्र सेटिक क्षा (के क्षाणा) भी क्षाणा है।

संदित प्रस्तुराण स्थित, स्रीमान् ( श्रीष १० ४४ )—इसमें कामान् निक्युके सहस्त्राचके साथ भगवान् सीमान् तथा तीकृत्यके अवसार-परित्रों एवं उनके परात्रपरकारिक विकाद वर्णन, एकावती प्राहतन्त्र, वालासम्बन्ध वर्णन और उनकी महिन्स, तुलसीन्श्रकी वर्णन वर्णना वर्णना वर्णना वर्णना वर्णना है।

संदेश स्वत्यपुराणाङ्क स्वीवार, शांतिका ( कोड रे॰ टान )—इसमें भगवान् विकास महिमा, सती-परित्र, तिथ पार्वती-विवाह, कुमार व्यक्तिकार्व कनावी कना व्यक्तिस्था स्वयंत्र कर्णन है। कार्य व्यक्तिक अनेक व्यक्तिस्था एवं बहुत-से रोक्क, ज्ञान्तर प्रसंप बीचे आहर्त-परित्रोंका भी विस्तृत व्यक्ति है।

संदेश श्रीक्षेत्रीभागमा स्थित, स्रोक्षय [ वर्षेष्ठ ४० १०१३ ]—इसमें परासीच प्राथमीक स्थकप-तस्य-महिमा स्थादिक श्रामिक विदेशपासिक प्राणकीकी पनोरम सीका-क्षणकीका सरस है। व्यक्ति वर्षण है। इसके स्रोहित्य इसमें देशी-महत्त्वय, इस स्थापकी स्थापकी स्थापकीका सरस है।

संक्षित्र तिक्युराज्य सक्तित, सर्वेक्य (क्रोड कं० २४० )—शूर्वाक्य विक्युराज्यस यह संवित अनुवाद—परात्तर परमेश्वर विक्रम सक्तिक स्वापन-विकेशन, तत्त्व-स्वस्य, स्वापन विक्रम वर्णनेसे पुरु है।

संद्रित ब्रह्मनैकर्तपुरामाञ्च कथित, स्रीकर [ कोड के 631 ]—इसमें कार्यम् वीकृष्ण क्रिक्त कर्मा कर्मा है। प्रकृति-स्रीतधानी, क्रिक्त क्रिक

श्रीवद्धाराच्या स्वितं, श्रावित्तं वे क्षावित्ता सेट [क्षीव र्गं+ 26, 27]—इस महायुक्तमें साधन-भीत, निका-भीत, मर्थादा-नार्गं, पुष्टि-मार्गं, अनुवहसर्गं व्यक्ति सुन्दर सक्त्यन है। इस प्रत्यका कृत-अंग्रेचे अनुवाद से खण्डीनें (कोड र्गं+ 54, 57), भाषका सुक्तसावर (कोड र्गं+ 28), सुक्त-सुधा-सावर (चीड क्षि 252) समूर्गं भाषानुवाद, सूत-नोटा शहर (प्राव्यका) क्षाव कृत-महत्त्व संस्थान श्री उत्तरका है।

महाभारत-किराधाग हरिसंकपुराण सचित्र, स्रीतस्य ( क्षेत्र २० ३८ )—इस प्रत्यमें परायान् बीकृष्णको अर्गाणत रामानी ककालेकि साम संसानगोत्रसा-कन्य, अनुक्रम-विश्व कन्य अनेक विश्ववद सम्बद्धान्य अनुसम् संग्रह है :

सं- वहायुराया स्थित, ज्ञान्त [ कोह रं- 1111 ]—इसमें किया स्थाप, ज्ञान करित्र, सूर्य एवं यन्त्रवंशका तर्वत, बीकुम्बयदित, करकारातीने कर्ककोय मुक्ति परित्र व्यक्ति कर्वनमें ज्ञान आकार्यका अत्यना सुन्दर केवा विका गया है। कहाया ज्ञान क्रिका होनेके ज्ञान यह ब्रह्मपुराण ज्ञान है।

सं- माक्षेण्डेबयुराण समित्र, सर्वेणस् ( वर्षेड री॰ 539 )—इस पुरानमें दुर्गासभगतीको कथा एवं व्यक्ति देवीका माहातम्य, इरिश्चनको सभा, मरालसा-वरिष, आक्रि-अनुसूचाची व्यक्ति वर्षेका व्यक्ति, दक्तिय-वरिष्ठ आदि अनेक उपाद्यानीका विस्तृत वर्षन् है।

सं- नारत्युरास समित, ब्राह्म ( कोड नं- १ वड )—इसमें सरावार-महित्य, वर्णातय-धर्म, ब्राह्म तथा मराके शक्षण, विविध क्राह्म देवपूरण, तीर्ण-महारूप, दान-वर्णक साथ अनेक शक्तियाक आधारमंका बढ़ा ही मास वर्णन किया गया है। इसमें पुराजके पाँची क्राह्म सम्बद्ध रूपने परिपाक हुआ है।

शीविक्युब्राचा स्वीवत् (विन्दी-अनुवार) हावप [कोइ रंग 1964]--यह वैष्यव-भित्तका मृतायार है। इसमें सृष्टिवर्णनके प्रवासका, विवेचन, आद-निरूपण, सूर्व-चन्नवंशके राजाअंकि अनेक आख्यानीका मृत्य किवेचन क्या भन्नवन् वासुदेवके चरित्रका वर्णन वया पति विवेचन विवासका के अनेक आख्यानीका मृत्य किवेचन किया व्या है।

श्रीविष्णुपुराश-सामुखन, स्वीवत, समिल्द (कोट नै॰ 48) प्रकारतमें पहलेसे हो उपलब्ध है।

# गीताप्रेस, गोरखपुरसे प्रकाशित 'कल्याण' के पुनर्मुद्रित विशेषाङ्क

1184	(September 1997)	rĺ	10	431	1 1	ं प्राचित्रपंतुर	half	m (4		a.L	100)
749	(	M	10)			क्तवान-वर्षित					
			6)		1	तर्वन-सङ्क		-(	AF.	J.P	103
	and the second second		3)	572	1	tella die 34	day or	1	dP	(F	W)
	चोपाः ( ल	H	10)	\$17	7 1	विवर्गलीहरू -अ	-	-(	an .	48.	w)
	संत-श्राष्ट्र(	-	(8)	1113	13	Rice Street (-		-6	40	dF	$W_{i,j}$
	HUND	ы	(%)	657	1	तींगणेश-अह-		-(	el	de	16)
		eď	(6)	42	2 1	Description of the last		-(	0	48	¥5)
	संव महाभारत	-	(0)	291		-				g <sub>F</sub>	41)
	(दो खण्डोंचें)			284	13	le प्रविकार्य		-(	df -	dir	40
1002	प्रें वारचीविराधावणाङ्ग — ( =	le	(4)	506	1.6	THE REAL PROPERTY.		-(	71	19	(4)
		je.	(2)	428	1	विवयम्बीय-भा	-	-(	NA.	ji.b.	40)
		ų.	(95			विवेषा-अपू				25	(1)
		,-		448	1	rougher-lag		-(	H	70	44)
		48.	(88	1044	1	quing		-(	Nº	10	WI)
		4	(49	1109	H	do गतकपुरानाह		-(	N	P.L	W)
	No. of the Control of	-	(37)			165	die Transpir				
		10	(48			- 1/4	<u> 18 - 48</u>	-			
		49	(8)	1	h	तरि, भी उपरिचा	, जन्म, हैं	ĝ-1	-1-	Here	ij.
		-	(0)			accorded to					
1163	क्षेठ नारहपुरावा — ﴿ =	Mr.	14)	3	Ų.	योग्नेपीमम्	mgm, t	des	N. bal	dis	1
44	वी शीविष्णुपुराम			1	tin	त्वारकोचीनम् इ.स.च्या	साञ्चल, र	des	است	High	1
		jan.	96)	1	ŧ.	duline	सामुखर, १	<b>h</b> R	OIL S	ni je	7
667		-	(15	1	u	प्रेपिक्	समूचद, र	dus	d L	ded	ſ
			10)	- 3	W	रकृतयोगनितर्	सामुख्य, र	de.		dia (	1
636	तीर्घाट ( भ	A.E.	11)	1	Ŧ	<b>बक्तेपरिक</b> ्	Higury 1	1.3	نداة	nie e	1
660	tile-are( =	-	19)	1	W4	विविवय	Silgue, I				
		-	In)	1	部	त्रीयोचीयम्	सामुख्य, र				
	A A B	10	*1)	1	to	रवीयनिय	Hyur, I	, in	-	नांग	1
	- ( P	-	14)	1	ķ	<b>क्रमधेपरिवर्</b>	सानुष्यर, व	ų,ci	d wit	त्रक्ति	140